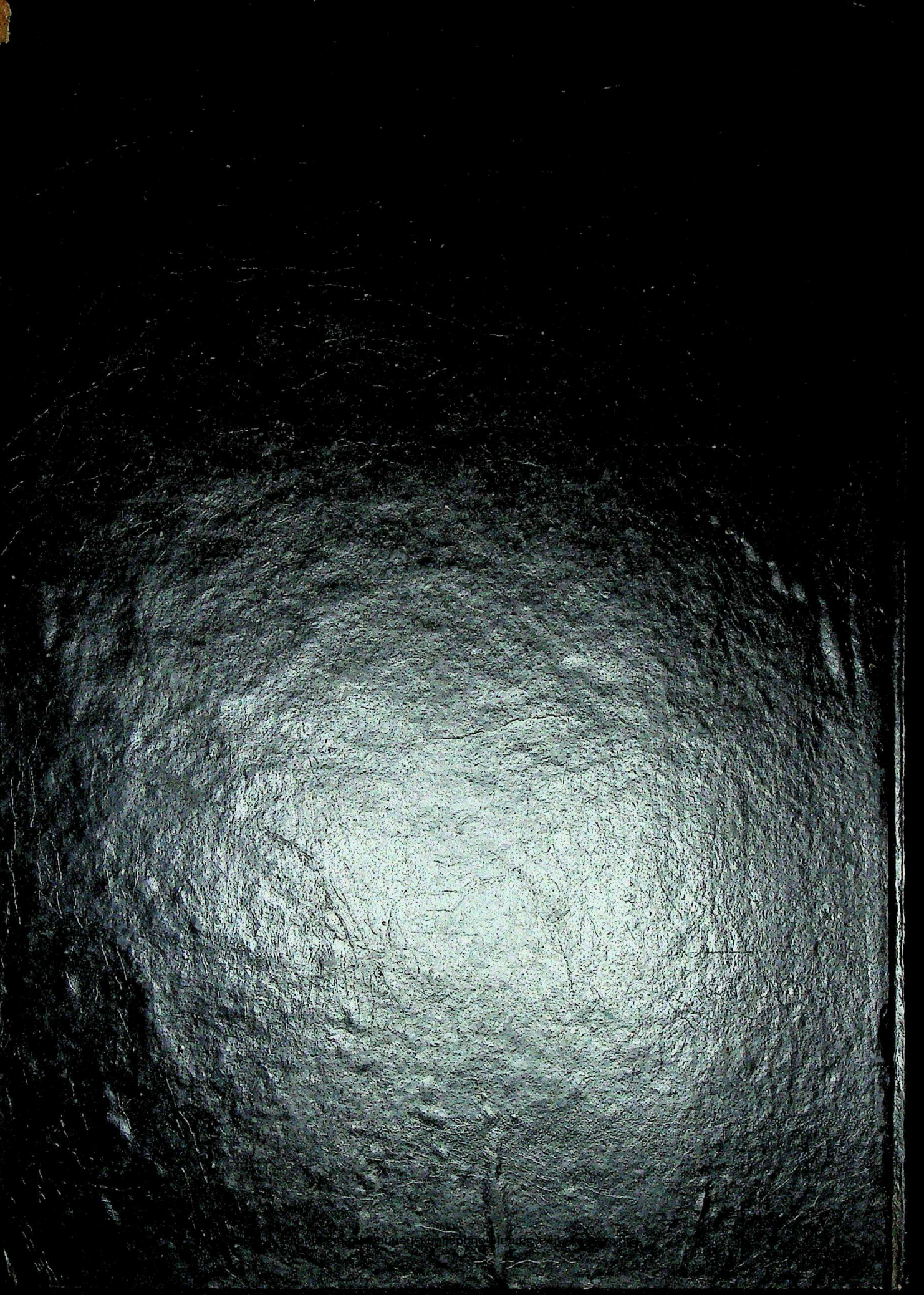

INDIA TODAY

1990 Aug-Nov

G K V LIB
DWAR

028600

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

RT-1313

028 600

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कश्मीर: मात देने के दांवपेंच ■ नेपाल: परिवर्तन की पीड़ा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

15 अगस्त 1990 7 रुपए

इंडिया टुडे

संपूर्ण समाचार पत्रिका

1990 AUG—Nov

078600

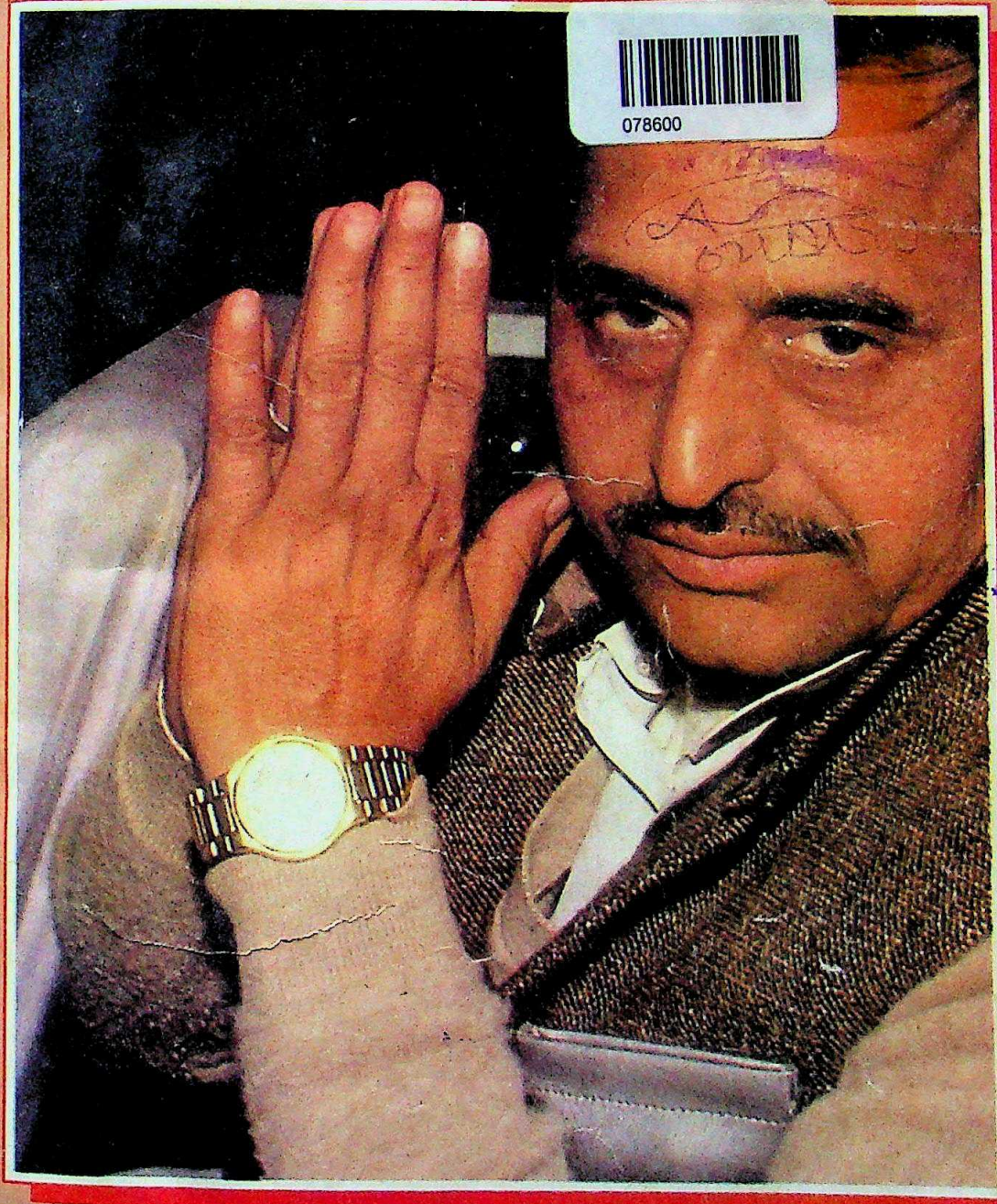

उत्तर प्रदेश

मुसीबत में मुलायम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Distinctive. Dashing. Highly individualistic. Strategically designed to keep you ahead. In fact, the smartest business move you can make.

THE DASH BUSINESS WEAR COLLECTION

Dash

SHIRTS & TROUSER

The only way to dres

Delhi Office: DWARKA MEN'S WEAR, New Delhi-110031. Tel.: 2201782-83, 2013886
Bombay Office: Chintamani Building, 44-Ram Wadi, Kalba Devi, Bombay-400 002 Tel.: 251590.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसीबत में मुलायम

सत्ता का गरूर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव के सिर चढ़कर कुछ इस तरह बोला कि उन्होंने किसान नेता महेंद्र सिंह टिकैत से सीधी टक्कर ले ली. लेकिन इसके बाद विधायकों ने जिस तरह बगावत कर दी उससे उनकी कुर्सी ही डगमगा गई.

आवरण कथा.....14

कगार से वापसी

राष्ट्रीय मोर्चा सरकार पर पिछले दिनों आए संकट ने जनता दल और प्रधानमंत्री की छवि धूमिल तो की ही, दल के अंदरूनी तनावों को भी उजागर किया. पूरे घटनाक्रम से उभरे संकेतों और संभावनाओं का विश्लेषण. साथ ही वी.पी. सिंह से बातचीत भी.

खास रपट.....22

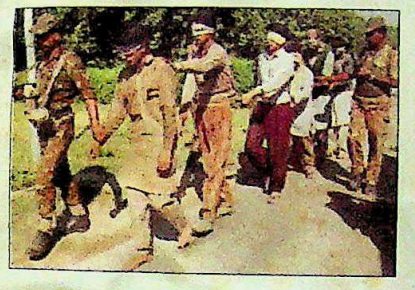

मात देने के दांवपेंच

कश्मीर की सरहद पर भारतीय सुरक्षा बलों और आतंकवादी घुसपैठियों के बीच लुकाछिपी की खूनी लड़ाई जारी है. भारतीय सैनिकों का मनोबल ऊंचा होने से बहुत सारे घुसपैठिए पकड़े गए हैं और गोला-बारूद बरामद किया गया है. मौके से भेजी रिपोर्ट.

खास रपट.....40

झुठलाए आरोप

अजिताभ बच्चन ने स्वीडन के अखबार 'डॅगस नाइटर' के खिलाफ मानहानि का मुकदमा जीतकर पहली जीत हासिल की है. अखबार ने स्विस बैंक के छठे खाते में अजिताभ का हाथ होने की खबर छापने के लिए माफी मांगी. अजिताभ को मुआवजा भी मिला है.

जगबीती.....44

परिवर्तन की पीड़ा

नेपाल की जनता लोकतांत्रिक बयार का मजा तो ले रही है, इसने उथलपुथल भी मचा दी है. वहां कानून और व्यवस्था की स्थिति बदतर होती जा रही है, कीमतें बढ़ रही हैं, सत्तासीन नेपाली कांग्रेस और संयुक्त वाम मोर्चा एक-दूसरे से कटते जा रहे हैं.

विशेष लेख.....48

हम किसी से कम नहीं

सुंदर दिखने की चाहत अब पुरुषों में भी जोर पकड़ती जा रही है. उनकी इस चाहत को भुनाने के लिए शहरों में पुरुष ब्यूटी पार्लर खुलते जा रहे हैं जहां फेशियल से लेकर मैनीक्योर तक की सुविधाएं उपलब्ध हैं. एक रोचक रपट.

रहन-सहन.....54

कसौटी.....9
तेवर.....10
राजरंग.....11
हिंदोस्तां हमारा.....12
आवरण कथा
उत्तर प्रदेश: मुसीबत में मुलायम.....14
खास रपट
विश्वनाथ प्रताप सिंह:
कगार से वापसी.....22
आजकल
राजस्थान: सिर्फ सजावट ही नहीं.....30
मध्य प्रदेश: प्रचारकों पर प्रहार.....32
बिहार: बाल-बाल बचे.....33
आंध्र प्रदेश: विरोध खामोश.....34
कर्नाटक: पुराना खेल.....35
सनद रहे.....36
खास रपट
कश्मीर: मात देने के दांवपेंच.....40
जगबीती
अजिताभ बच्चन: झुठलाए आरोप.....44
विशेष लेख
नेपाल: परिवर्तन की पीड़ा.....48
पुरुष ब्यूटी पार्लर:
हम किसी से कम नहीं.....54
रहन-सहन
बच्चों की पार्टियां:
पैसों का फूहड़ प्रदर्शन.....58
राज्य-दर्पण.....61
छाया-लेख.....62
व्यापार चक्र.....69
कारोबार
शेयर बाजार:
नए इरादे, नई बुलंदियां.....70
टिस्को: लालू की लाठी.....71
फेरा: कसता शिकंजा.....72
कूटनीति
भारत-पाक: बातें हैं, बातों का क्या.....76
कुछ अपनी, कुछ परायी.....77
अपराध
गजरौला: घिनौना कृत्य.....81
टीवी
कश्मीर: अब नया शगल.....82
खेलकूद
क्रिकेट: फिर फॉर्म में.....83
विश्वनाथन आनंद: एक और हीरा.....84
आरपार.....86
कहानी.....88
किताबें.....92
परदे के उस पार.....94
चर्चित चेहरे.....96

आवरण: प्रमोद पुष्करणा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमने जापानियों के ज़रा सा झींगा लेने क आग्रह किया

झींगा और क्रोम? यह मेल अजीब सा भ
लगे पर यही है टाटा स्टील के निर्यात-अभिया
कहानी।

भारत जैसे विकासशील देश में जहाँ वि
मुद्रा एक बड़ी समस्या है, वहाँ बहुमूल्य विदेश
एक राष्ट्रीय प्राथमिकता है। कम्पनी तथा दे
विश्व के बाजार में लम्बी अवधि तक क
लीडर बनाये रखने के लिये टाटा स्टील
इरादे पर अटल है।

छः वर्षों में टाटा स्टील बढ़कर देश के
निर्यातकों में से एक बन गया है। वि
व्यावसायिक परिमाण १४६ करोड़ रुपये है
इसके विस्तृत बाजार में शामिल हैं: यू ए
जापान, आस्ट्रेलिया, चीन, न्यूजीलैण्ड, बांगल
ताइवान, इंडोनेशिया, मलेशिया, सौदी अरब,

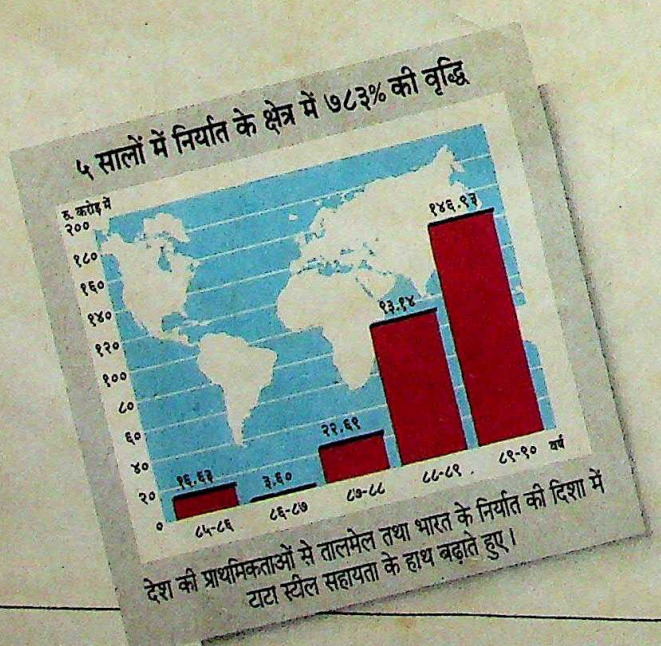

देश की प्राथमिकताओं में तालमेल तथा भारत के निर्यात की दिशा में टाटा स्टील सहायता के हाथ बढ़ाते हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रोम के साथ

क

स, टर्की, पश्चिम जर्मनी और दूसरे अनेक देश।
र आधुनिकीकरण के लिये प्रमुख उपकरणों तथा
चे माल आयात करने के बावजूद टाटा स्टील
तिया एक 'नेट' एक्सपोर्टर की हैसियत का बन
ा है। सन् १९८६-८७ में टाटा स्टील ने निर्यात
ब सा भ क्षेत्र में एक सम्मानीय 'रीजनल टॉप एक्सपोर्टर्स
-अभिया ल्ड' जीता।

एक बार फिर, एक अग्रणी अपनी विशेषज्ञताएं
जहाँ री दुनिया में फैलाकर भविष्य को सुनिश्चित रूप से
न्य विदेश धिक उज्ज्वल व सफल बना रहा है।
तथा दे
तक क्व टा स्टील एक्सपोर्ट्स :
स्टील

ल और स्टील धारित नियरिंग ाद	-वायर रॉड, रीइन्फोर्सिंग बार, स्ट्रकचरल्स, ट्यूब, वायर, बार, क्रेन, रोल्स, बेयरिंग आदि
चे माल	-क्रोम अयस्क कॉन्सेनट्रेट्स, मैंगनीज़ अयस्क, फेरो-मैंगनीज़, फेरो-क्रोम, चार्ज क्रोम, रिफ्रैक्टरीज़ आदि
य सामग्रियाँ	-गोलमिर्च, कॉफी और ब्लैक टाइगर झींगा।

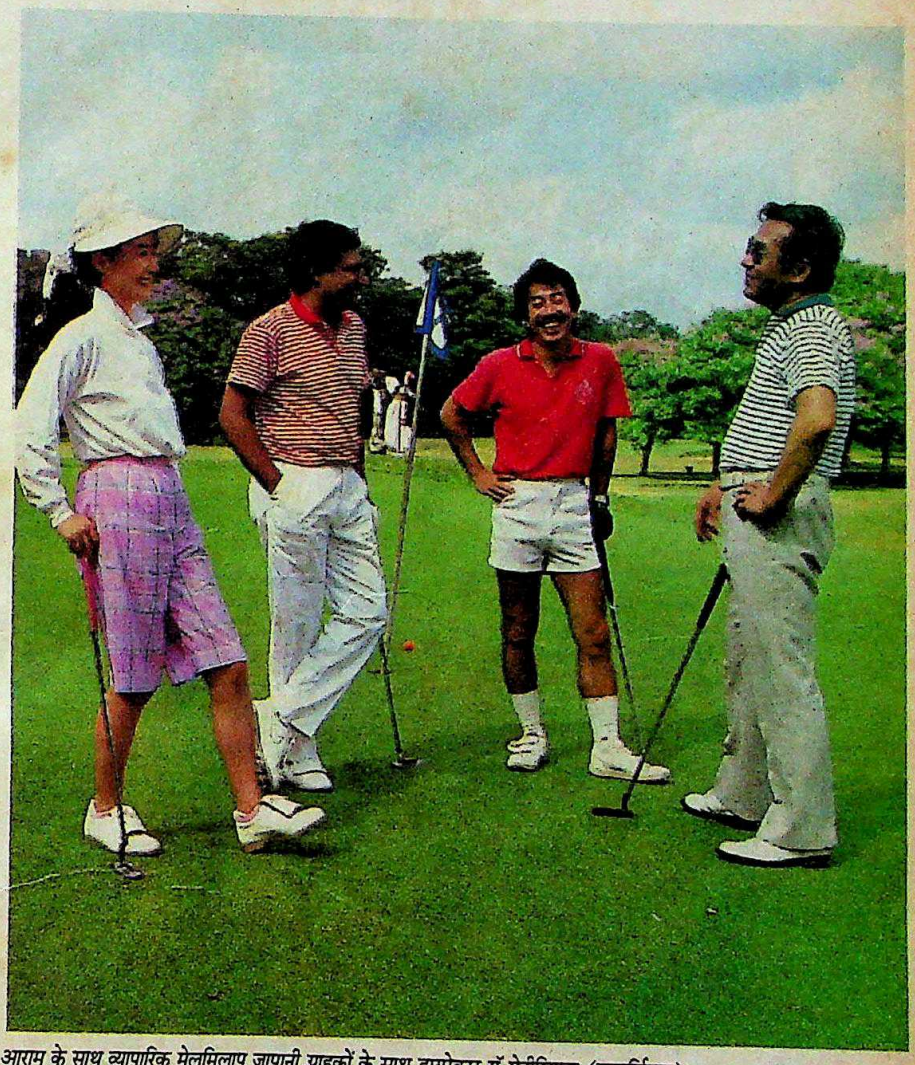

आराम के साथ व्यापारिक मेलमिलाप, जापानी ग्राहकों के साथ डायरेक्टर रॉ-मेटीरियल्स (कामर्शियल)

TATA STEEL
DECADE OF
EXPORTS
1990 2000

टाटा स्टील
सबसे पहले, अब भी सबसे आगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हीरो की अनमोल विरासत

HERO CYCLES LIMITED HERO

नई आकर्षक विशेषताये

नई हीरो जैट 2000 में सामान्य सभी विशेषताओं के अतिरिक्त कुछ अन्य नए आकर्षण

- ▶ चलाने में आसानी के लिए नई हैण्डल ग्रिप और रूपान्तरित हैण्डल
- ▶ अधिक शक्तिशाली फ्रन्ट ब्रेक
- ▶ उबड़-खाबड़ रास्तों के लिए अधिक आरामदेह मुलायम गद्दी
- ▶ अनूठा नया चेन गार्ड
- ▶ अधिक सुरक्षा के लिए पिछले पहिए पर रिफ्लैक्टर की व्यवस्था
- ▶ नए और चमकदार रंगों में
- ▶ श्रेष्ठ क्वालिटी वाले इलैक्ट्रोप्लेटिड पुर्जे

पीढ़ी दर पीढ़ी की चाहत

केवल एक अनमोल विरासत ही परिवर्तन की चुनौती के आगे अडिग रहती है और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी का उत्तराधिकार बनती है।

पिछले तीन दशकों से हीरो लोगों को सम्पूर्ण और विशिष्ट साइकिल देने में अग्रणी रही है।

नई हीरो जैट 2000 में लगे रगड़ खाने वाले सभी पुर्ज़े विश्व की अत्याधुनिक विकसित कोल्ड फोर्जिंग तकनीक द्वारा निर्मित होने के कारण अधिक टिकाऊ होते हैं।

इसकी कार्यकुशलता को भारत में ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में स्वीकार किया गया है।

समय बदल जाता है, विरासत बदस्तूर चलती है।

और हीरो को एक महान और अनमोल विरासत होने पर गर्व है।

हीरो आगे दौड़े समय को पीछे छोड़े

HERO Jet 2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

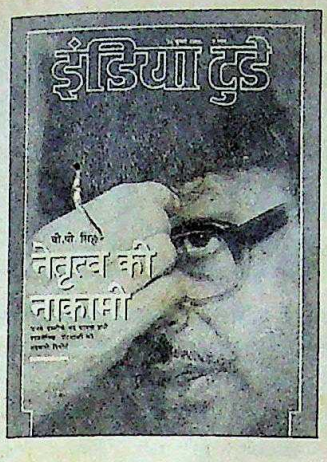

फिर वही कहानी

वी.पी. सिंह के 'नेतृत्व की नाकामी' (31 जुलाई) इस बार ही नहीं हर कदम पर परिलक्षित होती आई है. हर बार उन्होंने यही साबित किया है कि ईमानदार होना और कुशल नेता और प्रशासक होना दो अलग-अलग बातें हैं.

—**शशेंद्र कुमार भारद्वाज**, अलीगढ़ (उ.प्र.)

बरबाद हो जाएंगे

आवरण कथा 'विनाशकारी संघर्ष' (15 जुलाई) में विजेरत्ने की दृढ़प्रतिज्ञा और वहां की सेना के मुक्ति चीतों के प्रति आक्रामक रुख से अवगत होकर खुशी हुई. परंतु दुख की बात है कि मुक्ति चीते तमिलनाडु के शहरों में खुलेआम घूमते हैं, हथियारों का इंतजाम करते हैं और फिर जाफना लौट जाते हैं. और वहां की पुलिस और सरकार उनकी अनदेखी कर रही है.

—**अजय सक्सेना**, पटना (बिहार)

■ तमिल चीतों ने बिना सोचे-समझे प्रतिकूल वक्त में बर्र के छत्ते में हाथ डाल दिया है जिसे श्रीलंका के सैनिक लहूलुहान करके ही छोड़ेंगे. चीतों का अति आत्मविश्वास ही उनकी बरबादी का कारण बनेगा. इससे तमिलनाडु में शरणार्थियों की समस्या और विकट रूप धारण करेगी.

—**सुरेश बाटड़**, ठाणे (महाराष्ट्र)

■ श्रीलंका में बसे तमिलों की रक्षा भारत का नैतिक दायित्व है. तमिल शरणार्थियों का भारत आते रहना भयावह समस्या भी बन सकता है. श्रीलंका परिप्रेक्ष्य में वी.पी. सरकार की तटस्थता भारत के लिए घातक हो सकती है. यदि कोई और देश श्रीलंका में हस्तक्षेप की शुरुआत करेगा तो भारत की मुश्किल हो जाएगी.

—**सुबोध कुमार कढर**, नरसिंहपुर (म.प्र.)

■ मद्रास में ईपीआरएलएफ के सदस्यों की दिनदहाड़े हत्या इस बात का संकेत है कि यदि राजनैतिक दल अपनी साख बचाने के लिए किसी संगठन विशेष को इसी प्रकार शह देते रहे तो वह दिन दूर नहीं जब दक्षिण का यह शांत प्रदेश उत्तर की तरह पंजाब और कश्मीर में बदल जाएगा.

—**राजधर**, शिमला (हि.प्र.)

■ लिट्टे नेताओं को यह समझ क्यों नहीं आता कि जो असंभव है उसे प्राप्त करने के प्रयास वे क्यों कर रहे हैं. लड़ना ही है तो अपने संवैधानिक अधिकारों के लिए लड़ें. क्या 'ईलम' प्राप्त कर श्रीलंकाई तमिलों के हितों को वे पूरा कर लेंगे? देश का बंटवारा देश की समस्याओं का हल नहीं है.

—**प्रभुनाथ जायसवाल**, इलाहाबाद (उ.प्र.)

भूल गए?

श्रीलंका के रक्षा राज्यमंत्री रंजन विजेरत्ने का यह बयान कि श्रीलंका सेना का एक जवान भारतीय सेना के दस जवानों के बराबर है ('तेवर' 15 जुलाई) भारतीय सेना ही नहीं, सभी भारतवासियों का अपमान है. वे संभवतः भूल गए हैं कि जब उनके देश की अखंडता खतरे में थी तो भारतीय सेना ने उन्हें संकट से उबारा था.

—**चैतन्य सक्सेना**, रीवा (म.प्र.)

■ विजेरत्ने की टिप्पणी अपमानजनक तो है ही, आप जैसी पत्रिका का उसे छापना और भी आपत्तिजनक है. भारत शांतिप्रिय देश जरूर है लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि कोई हमें कुछ भी कहता रहे. हमारे पड़ोसियों को हमेशा याद रखना चाहिए कि भारत एक विशाल देश ही नहीं, एक क्षेत्रीय ताकत भी बन चुका है.

—**अमरदेव बहादुर सिंह**, भोपाल (म.प्र.)

ये तो होना ही था

'रखवाले ही खड़े कटघरे में' (15 जुलाई) में आपने न्यायपालिका की दुर्दशा

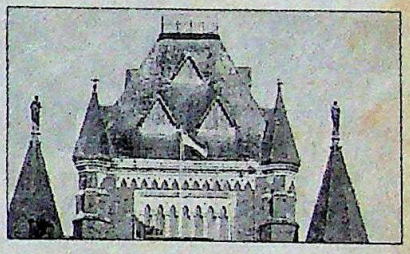

पर साहसपूर्वक प्रकाश डाला तो है लेकिन यह तस्वीर का सिर्फ एक ही पहलू है. दरअसल न्यायमूर्ति भगवती की चेतावनी कि भारत की न्यायिक व्यवस्था ढहने वाली है अब कड़वी सचाई बनकर लोगों के सामने आनी शुरू हो चुकी है.

—**पीयूष शर्मा**, प्रतापगढ़ (उ.प्र.)

■ भारतीय न्यायिक संरचना के अवमूल्यन की अंतर्कथा पढ़कर लगा कि लोकतंत्र स्थापना के चालीस वर्ष बाद भी कार्यपालिका और न्यायपालिका का अंतरसंघर्ष भारतीय लोकतंत्र के दुर्दिनों की आहट दे रहा है.

—**वरुण कुमार मिश्र**, गोपालगंज (बिहार)

■ न्यायपालिका में इस गिरावट के लिए राजनैतिक ढांचा भी जिम्मेदार है. अपने निजी हितों के लिए न्यायाधीशों के इस्तेमाल ने भी न्याय की देवी की उजली चादर को कलंकित किया है.

—**विनेश कुमार सिंह**, लखनऊ (उ.प्र.)

वर्ष: 4, अंक: 19, 1-15 अगस्त 1990

■ **संपादकीय कार्यालय:** लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001. फोन: 331 5801-4. टेलेक्स: 31-61245 INTO IN. तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली. ■ **मुख्य सर्कुलेशन कार्यालय:** इंडिया टुडे सर्कुलेशन मैनेजर, एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001. फोन: 3313076-8. टेलेक्स: 31-62834 INTO IN. तार: सर्कुलेट, नई दिल्ली. ■ **मुख्य विज्ञापन कार्यालय:** 28 ए और बी, जॉली मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. फोन: 2026152, 2029326, 2029435. टेलेक्स: 11-5373 THOM IN. तार: लिवमीडिया, बंबई. ■ **क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय:** के-9, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001, फोन: 3325378, 3323576, 3321323, 3321273; टेलेक्स: 31-62124 THOM IN. तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली ● फागुन चैंबर्स, 26 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105. फोन: 477188. टेलेक्स: 041-6177 INTO IN. तार: लिवमीडिया, मद्रास ● 74/1 सेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001. फोन: 568448, 579037, 579089. टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN. तार: लिवमीडिया, बंगलूर ● 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700016 फोन: 445398, 447726. टेलेक्स: 021-3138 INTO IN, तार: लिवइन-मीडिया, कलकत्ता. ● कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता. ● लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

■ संसदीय शासन प्रणाली के तीनों अंगों में न्यायपालिका पर ही लोगों को सबसे ज्यादा विश्वास था. यही ऐसा मंच था जिस पर सभी हिंदुस्तानी गर्व करते तथा उसके फैसलों का सम्मान किया करते. जब न्यायपालिका ही भ्रष्टाचार में लिप्त है तो न्याय के लिए किसका मुंह जोहेंगे?

—**सुरेशचंद्र,** पाली (राज.)

■ लेख पढ़कर कुछ नया या शर्मनाक नहीं लगा. निचली अदालतों में तो भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद हमेशा ही था. अतः इसने अगर दो कदम आगे बढ़ा लिए तो गलत क्या है? प्रशासन, राजनीति—हर जगह जब भ्रष्टाचार है तो फिर सिर्फ न्यायपालिका इससे कब तक बच सकेगी?

—**विमल संचेती,** हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

घर ठीक करें

'वापसी की राह कठिन (15 जुलाई) से लगा कि राजीव ने फिर मैदान में कूदने के लिए कमर कस ली है. लेकिन सबसे पहले उन्हें अपनी पार्टी की तरफ ही ध्यान

देना चाहिए जिसकी बेहिसाब गुटबंदी और अंदरूनी कलह ने उसे हार के मुकाम पर खड़ा कर दिया.

—**गोपाल प्रसाद,** फिरोजाबाद (उ.प्र.)

■ मौजूदा सरकार यदि पूर्ववर्ती इंका सरकार की गलतियां दोहराती रही तो राजीव गांधी की राह कठिन नहीं आसान ही होती जाएगी.

—**वीरेंद्र शरद,** रांची (बिहार)

■ पांच साल शासन करने के बाद राजीव गांधी का रेलगाड़ी के दूसरे दर्जे में बैठकर भारत दर्शन का कार्यक्रम सस्ती लोकप्रियता हासिल करने के लिए किया गया राजनैतिक स्टंट ही है.

—**अरुण कुमार चौरसिया,** धनबाद (बिहार)

■ यही राजीव गांधी जब सत्ता में थे तो उन्मादहोशी में उन्हें देश की गरीब जनता का कभी ध्यान नहीं आया. किंतु सत्ता के सतरंगी सुख छिनते ही दुखी-पीड़ित गरीब जनता के लिए उनके हृदय में असीम दुखदर्द उभर आया है.

—**सुनील कुमार झा,** सकरी (बिहार)

■ राजीव गांधी की सभाओं में बढ़ती भीड़ निस्संदेह इस बात का प्रमाण है कि देश की जनता पुनः उनकी ओर आकर्षित हो रही है. राष्ट्रीय मोर्चा सरकार पंजाब, कश्मीर की समस्याएं हल करने और महंगाई को रोकने में विफल रही है, हिंसा और अराजकता बढ़ी है इसलिए ऐसा होना स्वाभाविक है.

—**डॉ. शकुनचंद गुप्त,** रायबरेली (उ.प्र.)

अंधी होड़

कसौटी 'संकीर्ण हितों से ऊपर उठिए' (15 जुलाई) पढ़ा. हमारे देश में क्या सत्तारूढ़ दल, क्या विपक्षी दल सभी संकीर्ण हितों की वैतरणी में तैरकर सत्ता के इंद्रलोक पर कब्जा करने की अंधी होड में लगे हैं. वे लोकतांत्रिक आदर्शों को तिलांजलि दे चुके हैं. इसी से लोग राष्ट्र की मुख्यधारा से कटकर विद्रोही बनने को विवश हो जाते हैं.

—**श्याम बिहारी श्रीवास्तव,** शहडोल (म.प्र.)

गैरजिम्मेदाराना रुख

'वही पिटे नुस्खे' (15 जुलाई) पढ़ा. फारूख अब्दुल्ला से बातचीत से लगा कि वे एक गैरजिम्मेदार व्यक्ति हैं. भले ही उन्हें कश्मीर घाटी से गए कई महीने हो गए हों, घाटी की स्थिति से उन्हें अवगत होना चाहिए. आज कश्मीर से तो वे भी परिचित हैं जो कभी भी कश्मीर नहीं गए.

—**अशोक चौहान,** मेरठ (उ.प्र.)

झलक भर है

'इंसाफ के दर पे दस्तक' और 'इनका नहीं कोई तारणहार' (15 जुलाई) देश की खोखली हुई जाती और सड़ांध देती न्यायप्रणाली की छोटी-सी झलक मात्र है. पुलिस संगठनों से लेकर न्यायालयों और कारागारों तक फैली 'पैसों का बोलबाला और इंसाफ का मुंह काला' करने वाली बर्बर प्रक्रिया को हमारा सभ्य समाज जाने कब तक बरदाश्त करता रहेगा?

—**शिवाजी देवगम,** नई दिल्ली

जायज रुख

अरुण नेहरू की 'टेढ़ी भृकुटि' (15 जुलाई) जायज ही तो है. 'सत्ता का

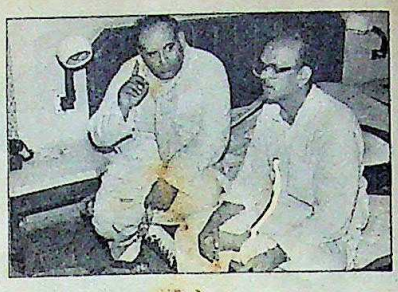

उपयोग भविष्य के लिए ही किया जाना चाहिए. भूतकाल के लिए इसका प्रयोग हानिप्रद होता है.' उनका यह कथन दूरदर्शितापूर्ण सोच का परिचायक है.

—**चंद्रप्रकाश बुद्धिराजा,** रोहतक (हरियाणा)

आदर्श परंपरा

विशेष लेख 'रिश्तों के मजबूत धागेडोरे' (15 जुलाई) रोचक लगा.

आज के भौतिकवादी युग में जहां संयुक्त परिवार की परंपरा विलुप्त होती जा रही है, ऐसे परिवार हमारे लिए एक आदर्श उपस्थित करते हैं. संयुक्त परिवार एक आदर्श संस्था है, भले ही समय के साथ इसकी प्रासंगिकता बदल गई हो.

—**महावीर आहूजा,** अररिया (बिहार)

■ आज जहां स्वार्थ, आपसी मतभेद,ईर्ष्या जैसी बुराइयां संयुक्त परिवार प्रथा को खत्म करती जा रही हैं लक्षमय्या परिवार ने पारिवारिक एकता व परस्पर स्नेह से एक अनूठी व आज के जमाने में अकाल्पनिक-सी लगने वाली मिसाल पेश की है.

—**गिरिजा व्यास 'अनु,'** मारवाड़ (राज.)

■ आज के व्यक्तिवादी युग में जब परिवार का मतलब सिर्फ मां, पिता और बच्चों से लगाया जाता है और कहा जाता है कि संयुक्त परिवार आज संभव नहीं है, लक्षमय्या परिवार एक मिसाल है जिसमें 109 सदस्य एक साथ रहते और अपना काम करते हैं. लोग अपने तुच्छ स्वार्थों से ऊपर उठकर रहें तो संयुक्त परिवार की स्नेहिल सुरक्षा का आनंद आज भी ले सकते हैं.

—**सुशील कुमार,** पटना (बिहार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व-प्रसिद्ध शृंखला

जनरुचि की 50 पुस्तकों की एक अनूठी संग्रहणीय शृंखला

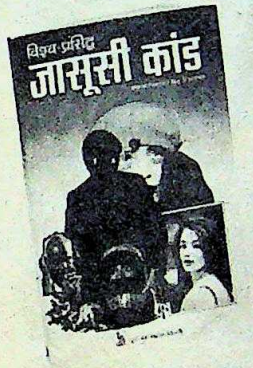

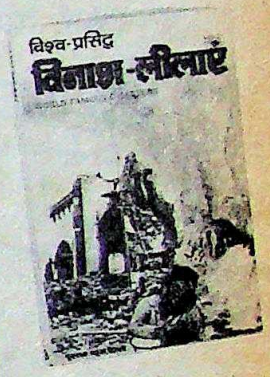

शृंखला की अन्य प्रकाशित पुस्तकें

मूल्य : 18/-प्रत्येक
डाकखर्च : 5/-प्रत्येक
छः पुस्तकों पर डाकखर्च माफ

- प्रामाणिक पाठ्य-सामग्री
- कलात्मक प्रस्तुतिकरण
- सैकड़ों दुर्लभ चित्र
- वाजिब दाम

1. नास्त्रेदमस के अनुसार सन् 1999 में दुनिया खत्म–*भविष्यवाणियां और भविष्यवेत्ता*
2. एक जनसंहार, जिसमें छः करोड़ से भी अधिक लोगों की निर्मम हत्याएं हुईं–*जनसंहार*
3. सोफिया लॉरेन, जैकलीन कैनेडी, मर्लिन मनरो जैसी यौन-देवियाँ–*विलासी सुंदरियां*
4. सरकंडे की नाव से 13,000 मील लंबी तूफानी समुद्र की यात्रा–*रोमांचक कारनामे*
5. जवाहरलाल नेहरु और एडविना माउंटबेटेन की प्रेम-कहानी–*हस्तियों के प्रेम-प्रसंग*
6. हत्यारा हेग, जिसकी प्यास मानव-रक्त पीकर ही बुझती थी–*क्रूर हत्यारे*
7. वीनस फ्लाइट्रैप पौधा, जो करता है जीवित प्राणियों का शिकार–*मांसाहारी पेड़-पौधे*
8. क्लियोपैट्रा, जो 10,000 से भी अधिक लोगों के साथ हमबिस्तर हुई–*कुख्यात महिलाएं*

–यह दुनिया आश्चर्यजनक, अविश्वसनीय, सनसनीखेज एवं रोमांचक चीजों एवं घटनाओं से भरी पड़ी है –इन सभी के विषय में दुर्लभ सचित्र जानकारी जुटाती है–**विश्व-प्रसिद्ध शृंखला**

–इसकी प्रत्येक पुस्तक अपने क्षेत्र से संबंधित सभी उल्लेखनीय पक्षों को उजागर करने वाला एक ऐसा मिनि एनसाइक्लोपीडिया है, जो परम ज्ञानी से लेकर एक औसत पाठक तक को अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रम से जोड़कर उसके ज्ञान-भंडार को बढ़ाता है।

विश्व-प्रसिद्ध.....

- * प्रेरक-प्रसंग * दुर्घटनाएं
- * खोजें * जनसंहार
- * जासूस * युद्ध
- * वैज्ञानिक * क्रूर हत्यारे
- * सभ्यताएं * ड्रग-माफिया
- * भविष्यवाणियां एवं भविष्यवेत्ता
- * बैंक डकैतियां व जालसाजियां
- * धर्म, मत एवं संप्रदाय
- * खोज-यात्राएं
- * हस्तियों के प्रेम-प्रसंग
- * तख्तापलट की घटनाएं
- * रोमांस-कथाएं
- * 101 व्यक्तित्व
- * भ्रष्ट राजनीतिज्ञ
- * अलौकिक रहस्य
- * गुप्तचर-संस्थाएं
- * राजनैतिक हत्याएं
- * आतंकवादी संगठन
- * चिकित्सा-पद्धतियां
- * सनकी तानाशाह
- * खेल और खिलाड़ी
- * कुख्यात महिलाएं
- * मिथक एवं पुराण-कथाएं
- * मांसाहारी व विचित्र पेड़-पौधे
- * भयानक रोगों पर विजय
- * आध्यात्मिक एवं शैतान-कल्ट्स

शेष 9 पुस्तकें प्रेस में

30 Titles available in English & 5 in Bangla

अपने निकट व एअरपोर्ट, व्हीलर के रेलवे व बस-अड्डों के बुकस्टॉलों पर भी अन्यथा वी.पी.पी. द्वारा मंगाने के पते :

पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली-110006 शोरूम : 10-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरर्थक विरोध

'दोस्त, दोस्त न रहा' (15 जुलाई) से साफ जाहिर है कि विश्व हिंदू परिषद और भाजपा मुलायम सिंह यादव और उनकी सरकार से सख्त नाराज हैं. पर उन्हें चाहिए कि अदालत के फैसले तक यथास्थिति बनाए रखें.

—राजू, फरीदाबाद (हरियाणा)

कैसी सिद्धहस्तता

'दहशत का सस्ता धंधा' (15 जुलाई) पढ़ने से प्रतीत होता है कि रामसे परिवार खुद को डरावनी फिल्मों का सिद्धहस्त निर्माता समझता आ रहा है लेकिन 15 वर्षों में बनाई फिल्मों में एक भी ऐसी नहीं जिस पर गर्व किया जा सके. उनकी बाद की फिल्में 'वीराना', 'कब्रिस्तान' आदि तो डरावनी कम हास्यास्पद ज्यादा लगीं.

—सुरेश तिवारी, झांसी (उ.प्र.)

सचाई के करीब

कहानी 'वितस्ता का जहर' (15 जुलाई) पढ़कर दिल भर आया. कहानी सत्य के बहुत करीब है. सच को उजागर करने के साथ-साथ लेखिका ने आशावादी दृष्टिकोण भी अपनाया है.

—राजेश खत्री, अलवर (राज.)

■ कथाकार और सब्जी लिए बैठे दुकानदार में एक ही फर्क होता है—एक मूक रहकर विक्रेता को अपनी ओर खींचता है और दूसरा हांक लगाकर. जहां कथाकार ने चीखना शुरू किया कि पाठक भागे. 'वितस्ता का जहर' में यही हुआ. कथाकार को आतंक की ऐसी लहर देनी थी कि पाठक की रूह कांप उठे. पर उबाऊ प्रस्तुति देते हुए आतंक-आतंक का शोर मचाकर वे चूक गईं.

—चंद्रभूषण, बोकारो (बिहार)

ले डूबेंगे ताऊ

इसे देश के लिए विडंबना ही कहा जाएगा कि उप-प्रधानमंत्री स्तर का नेता, मात्र अपने सनकी बयानों के कारण अखबारों में सुर्खियां पा रहा है. 'दूसरों के इलाज में जुटे देवीलाल' (15 जुलाई) ने इस दूसरी क्रांति को सर्वाधिक कलंकित किया है. यदि मोर्चा सरकार की विदाई होती है तो उसका एकमात्र कारण ताऊ का स्वार्थपरक रुख होगा.

—रवि जैन, जयपुर (राज.)

काला अध्याय

'बदला लेने का जुनून' (15 जुलाई) राजस्थान के इतिहास का एक काला अध्याय तो होगा ही, पुलिस, प्रशासन और सरकार के लिए शर्मनाक भी क्योंकि भीड़

जब कंजरों की हत्या कर रही थी तो पुलिस तमाशा देख रही थी. राष्ट्रीय मोर्चा सरकार ने सामंतशाही प्रवृत्ति के जन-प्रतिनिधियों को प्रोत्साहन दिया. यह उसी का नतीजा है.

—हरि एम. कृष्णात्रेय, श्रीगंगानगर (राज.)

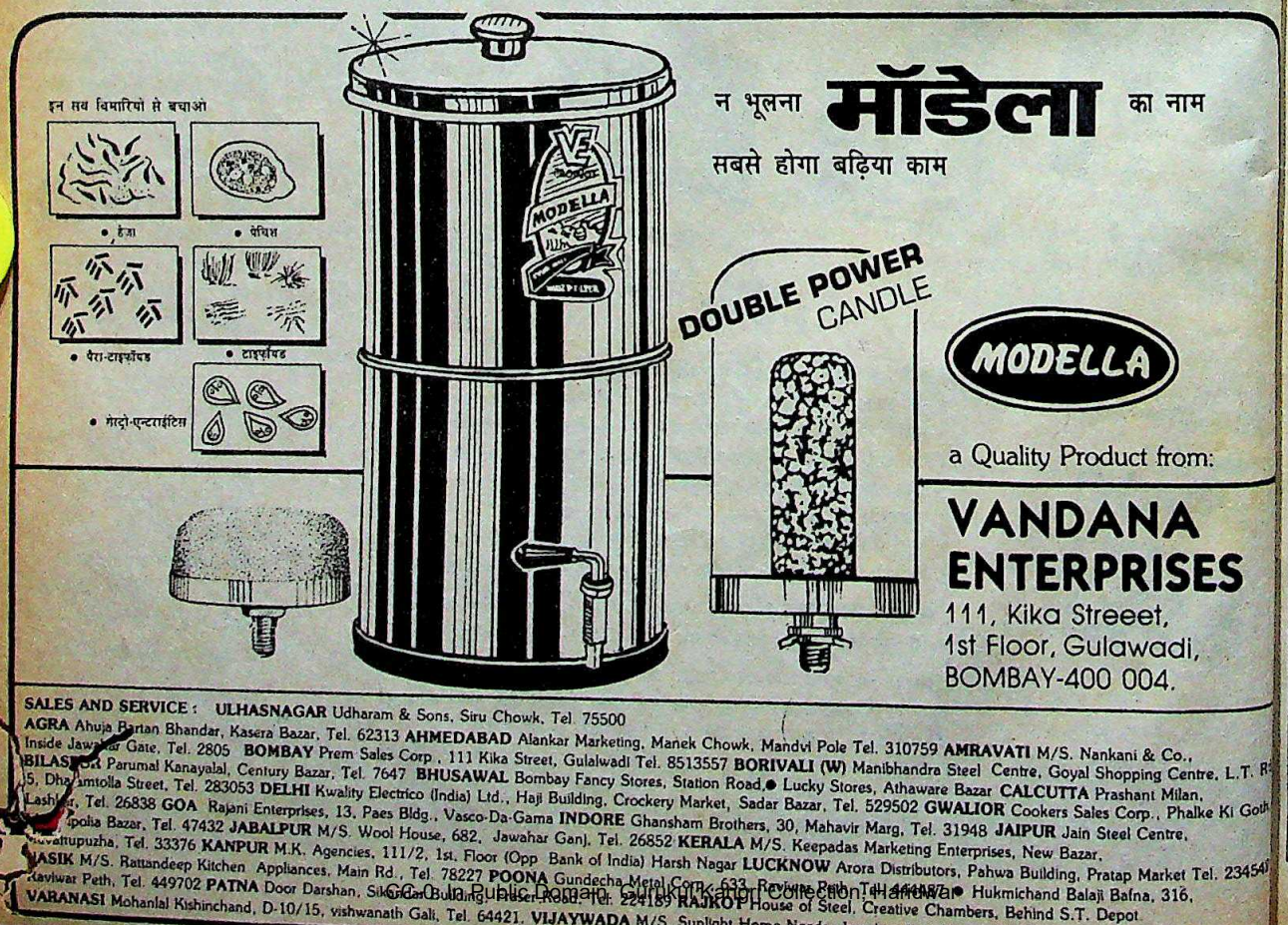

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कसौटी

विकल्प पर विचार जरूरी

सभी रेखाचित्र: अजीत नैनन

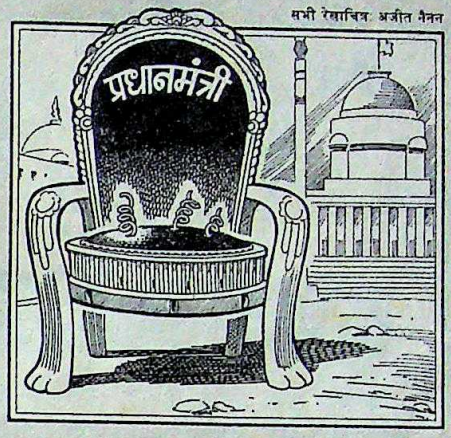

ताजा राजनैतिक संकट के बाद इस सवाल पर व्यापक बहस छिड़नी चाहिए कि ब्रिटिश शैली का संसदीय लोकतंत्र भारत जैसे विविधतापूर्ण देश के लिए कितना उपयुक्त है. आजादी के बाद यहां कई बदलाव हुए हैं. सबसे बड़ी, सबसे ताकतवर और सबसे पैसे वाली पार्टी करारी हार की चोट खाकर अस्त-व्यस्त है. क्षेत्रीय पार्टियां न केवल ज्यादा मजबूत हुई हैं बल्कि कुछ अहम राज्यों में सत्तासीन हैं और ज्यादा स्वायत्तता एवं विकेंद्रीकरण की मांग कर रही हैं. यह प्रक्रिया जबकि जारी है, हमें केंद्र में एक ऐसी स्थायी सरकार को बनाए रखते हुए विकेंद्रीकरण पर भी अमल करना होगा जो विभिन्न राज्यों की ओर से पड़ने वाले राजनैतिक दबावों को भी झेल सके.

देश की शासन व्यवस्था में परिवर्तन के बारे में सोचते हुए इस मसले को निश्चित तौर पर ध्यान में रखना होगा कि प्रधानमंत्री की पार्टी का कोई ताकतवर नेता या सांसद जब-जब उसकी कमजोरी का लाभ उठाने की कोशिश करता है तब-तब सत्ता के लिए संविधानेतर जोड़-तोड़ शुरू हो जाती है.

भारत में चुनाव व्यक्तित्व आधारित ही होते रहे हैं. लेकिन निर्वाचित प्रधानमंत्री को अक्सर दुर्भाग्य से अपनी ही पार्टी के क्षत्रपों की साजिशों से निबटना पड़ता है.

राष्ट्रपति शासन व्यवस्था लागू करने के सवाल पर जब भी बहस छिड़ती है तब लोग सहम से जाते हैं क्योंकि इसे अक्सर तानाशाही का पर्याय मान लिया जाता है. ऐसा मानने का कोई कारण नहीं है. अमेरिकी शासन व्यवस्था में चूंकि सत्ता का पूर्ण बंटवारा होता है इसलिए निर्वाचित शासनाध्यक्ष को दलगत जोड़-तोड़ या महत्वाकांक्षाओं के लिए बंधक नहीं बनाया जा सकता. फिर भी उस पर या उसकी सरकार के ऊपर विधायिका की नजर संसदीय प्रणाली के प्रधानमंत्री से कहीं ज्यादा होती है.

तमाम खामियों के बावजूद अमेरिकी शासन व्यवस्था पर विचार किया जाना चाहिए. इसमें विकेंद्रीकरण और स्थायित्व के साथ-साथ सरकार को ज्यादा जवाबदेह बनाने की बेहतर संभावनाएं निहित हैं. लोकतंत्र के लिए बेहद महत्वपूर्ण इन तत्वों के मामले में भारतीय शासन व्यवस्था फिसड्डी साबित हुई है.

इसकी तो उम्मीद न थी

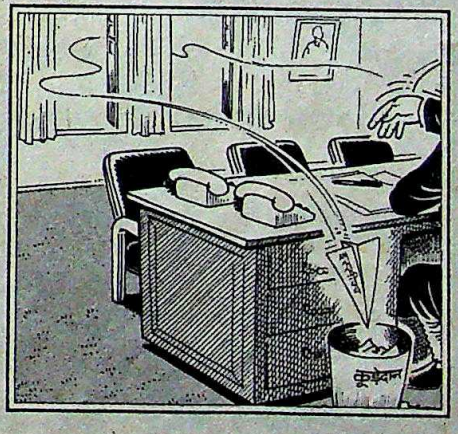

अपने इस्तीफे को उचित ठहराने के लिए विश्वनाथ प्रताप सिंह कई तर्क दे सकते हैं. मसलन यह कि इस्तीफा उन्होंने रणनीतिक कारणों से या गांधीवादी त्याग की भावना के तहत दिया. लेकिन इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता कि उनकी यह स्वच्छतावादी मुद्रा उनकी या उनकी सरकार की छवि को किसी आध्यात्मिक शिखर तक नहीं पहुंचा पाई. और तो और, उन्हें इस ऊंची कुर्सी पर बैठाने वाली जनता भी उनके तर्कों से प्रभावित नहीं दिखी. प्रधानमंत्री कहा करते हैं कि वे जनता के साथ उसी की भाषा में संवाद करते हैं, और यह कि उनकी कार्रवाइयों को सूक्ष्मदर्शी बुद्धिजीवी या सुविधाभोगी पत्रकार-चिंतक नहीं समझ पाएंगे. उनका यह दावा कुल मिलाकर खोखला ही साबित हुआ.

जनता यह कतई नहीं चाहती कि जब कुछ लोग अपनी अंधी महत्वाकांक्षाओं और सत्तालोलुपता के कारण पूरी राजनैतिक व्यवस्था को बंधक बनाने पर आमादा हों तब राष्ट्र का नेता उनसे जूझने की जगह अपनी भद पिटवा ले. विश्वनाथ प्रताप सिंह जनता की इन अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतरे.

पिछले आठ महीने से वे अल्पमत वाली सरकार का नेतृत्व करते रहे हैं. लेकिन इसके बावजूद यह भी सच है कि उन्होंने पूरी कमान अपने हाथों में रखी. ऐसा हो सका तो इसलिए कि उन्हें जनता का पूरा समर्थन हासिल था. चूंकि उन्होंने लगभग अकेले अपने बूते देश की सबसे शक्तिशाली पार्टी को चुनाव में बुरी तरह परास्त किया इसलिए जनता उन्हें एक साहसी व्यक्ति मानती रही. अब जनता सहसा यह यकीन नहीं कर पा रही है कि यही व्यक्ति चुनौतियों से सीधी टक्कर न लेकर उनसे आंखें चुराने, उनसे बच निकलने की कोशिश करता है और चाहता है कि उसके संकट का निवारण कोई और करे. इसमें संदेह नहीं था कि वे इस संकट से अंततः उबर जाएंगे पर लड़ाई उन्हें खम ठोककर लड़नी चाहिए थी.

यह सच है कि गांधी जी आमरण अनशन की धमकी देकर कई चुनौतियों को जीत लेते थे. मगर वी.पी. सिंह कोई गांधी नहीं हैं. और, लोगों को भी उनमें गांधी की कोई छवि नजर नहीं आती. अपनी चालों से — जैसे कि हाल का इस्तीफा — वे अपनी इस आलोचना को ही पुष्ट करते हैं कि वे 'रणछोड़' हैं.

मतदाताओं ने उन्हें पांच साल के लिए प्रधानमंत्री बनाया है. वे चाहते हैं कि वे अपना कार्यकाल पूरा करें. लेकिन उनके हाल के व्यवहारों से उनकी नेतृत्व-क्षमता पर संदेह होता है और उनकी सरकार की छवि धूमिल होती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी चहेती पत्रिका
आपके दरवाज़े पर
न खरीदने का झंझट...
न खत्म होने का डर

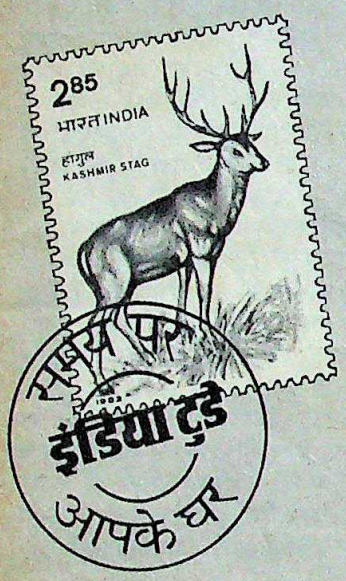

इस सुविधा का लाभ उठाइए.
अपनी चहेती इंडिया टुडे
घर बैठे – नियमित पाइए.
न खरीदने जाने की जरूरत...
न अंक खत्म होने का डर,
इंडिया टुडे
समय से पहुंच जाए आपके घर!

बस कूपन भर कर भेज दीजिए,
देर मत कीजिए!

नाम: _____

डाक पता: _____

मूल्य: वार्षिक रु. 132/-
भुगतान का माध्यम-चैक/मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट
(दिल्ली से बाहर के चैकों के लिए 5/- रु. प्रति चैक की अतिरिक्त राशि देय है।)
कृपया चैक निम्नलिखित नाम पर बनाएं और इस पते पर भेजें:
लिविंग मीडिया इंडिया लि.
पो. बॉ. नं. 706,
फरीदाबाद- 121 007
(हरियाणा)

इंडिया टुडे
देश की भाषा में देश की धड़कन

MILESTONES/IT/120

केशव, 'हिंदू'

● हम लोग आपस में नहीं मिलते तब आप लोग कहते हैं कि जरूर कहीं कोई गड़बड़ी है और जब हम राय-मशविरा करने के लिए मिलते हैं तब आप लोग कहते हैं कि कोई सौदा हो गया है. ■ **विश्वनाथ प्रताप सिंह,** संवाददाता सम्मेलन में

● देवीलाल निर्माता है, विध्वंसक नहीं. ■ **देवीलाल,** *राजस्थान पत्रिका*

● जनता दल और भाजपा सत्ता से ऐसे गायब होगी कि अरसे तक इनका पता ही नहीं चलेगा. ■ **अर्जुन सिंह,** *नई दुनिया*

● हमसे बड़ा किसानों का हितैषी कौन है? हमने छह महीनों में किसानों के लिए जो किया है वह 40 साल में नहीं हुआ. ■ **मुलायम सिंह यादव,** *जनसत्ता*

● आम जनता में यह राय बनती जा रही है कि ऐसी (उ.प्र.) सरकार और इस तरह के मुख्यमंत्री को लेकर वह क्या करेगी.
■ **राजेंद्र कुमारी वाजपेयी** (उ.प्र. इंका अध्यक्ष), *आज*

● अजी हम तो डमी से भी नीचे हैं.
■ **हुकुम सिंह** (हरियाणा के नए मुख्यमंत्री), *स्वतंत्र भारत*

● जरूरत पड़ी तो हम चोरों को ट्रक से बांधकर खिंचवाएंगे.
■ **लालू प्रसाद यादव,** *नवभारत टाइम्स*

● उसकी (अरुण शौरी) करतूतों से क्या जर्नलिस्ट कौम बदनाम नहीं हुई.
■ **ओमप्रकाश चौटाला,** *संडे ऑब्जर्वर*

● औरों की मैं नहीं जानता, किंतु मेरा व्यक्तिगत जीवन बहुत सुखी है... दाल-रोटी खाते हैं प्रभु के गुन गाते हैं. ■ **सुंदरलाल पटवा,** *माया*

● मेरे जीवन के सिर्फ दो लक्ष्य हैं—दुनिया का नंबर एक टेनिस खिलाड़ी बनना और एक भला आदमी बनना. ■ **लिएंडर पाएस,** *संडे ऑब्जर्वर*

● हां, यह सच है कि मेरे मन में अमिताभ कांप्लेक्स है. ■ **राज बब्बर,** *स्टारडस्ट*

● लोग शक्ति कपूर और अमिताभ बच्चन जैसे महान कलाकारों से जलते ही हैं. ■ **शक्ति कपूर,** *सिने ब्लिट्ज*

● मैं अपनी शर्तों पर ही शिखर तक पहुंचूंगी. ■ **रूपा गांगुली,** *सैवी*

● अमिताभ बच्चन ने संगीत की हत्या कर दी. उनकी फिल्मों में उनके अलावा और किसी चीज की जरूरत ही नहीं पड़ती. ■ **रऊफ अहमद,** (संपादक, फिल्मफेयर), *संडे*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कूद पड़ेंगे

● राजीव गांधी अपने दिवंगत भाई संजय गांधी की तरह लड़ाकू युवकों की फौज भले ही न खड़ी कर पाए हों लेकिन उन्होंने शोर-शराबा मचाने वाले ऐसे सांसदों

की फौज जरूर खड़ी कर ली है जो अपनी चिल्ल-पों से किसी की भी बोलती बंद करा सकते हैं.

संसद के पिछले अधिवेशन के दौरान कुछ ऐसा ही नजारा देखने में आया. वे उस हर बहस को अपने शोरगुल से दबा देते थे जिसमें उनकी पार्टी या उनके नेता राजीव गांधी की आलोचना की संभावना होती.

और अब कुछ ही दिनों में जब संसद का मानसून अधिवेशन शुरू होने वाला है, उनमें से कुछ सांसद थोड़ी अलग रणनीति बनाने में मशगूल हैं. ये लोग पता लगा रहे हैं कि राज्यसभा की वीआईपी गैलरी की बालकनी से लोकसभा के फर्श पर कूदने पर क्या दंड मिल सकता है.

राज्यसभा के ये कट्टर कांग्रेसी जो अनोखी रणनीति बनाते सुने गए, वह कुछ इस प्रकार है: वे वीआईपी गैलरी से चुपचाप लोकसभा की कार्यवाही देखेंगे. लेकिन यदि राजीव पर अनुचित हमला हुआ और उनके पार्टीवाले उनका बचाव करने में विफल रहे तो वे खुद उनके बचाव के लिए फर्श पर कूद पड़ेंगे, बिना पैराशूट के. लेकिन अपने साथ वे नारे और पर्चे जरूर लेकर कूदेंगे जिससे माकूल माहौल तैयार हो सके.

आखिर इन कांग्रेसियों को बिना सोचे-समझे कूदने का दोष तो नहीं ही दिया जा सकता.

जली-कटी भी

● लगता है चंडीगढ़ की जगह दिल्ली ही हरियाणा की राजधानी हो गई है. दिल्ली का कॉपरनिक्स मार्ग स्थित हरियाणा भवन सिर्फ राजनैतिक गतिविधियों का ही केंद्र नहीं है बल्कि यह मिनी राजभवन भी बन गया लगता है. इस महल के हरे-भरे लॉन में पिछले आठ महीनों में चार मुख्यमंत्रियों को शपथ दिलाई गई.

लेकिन शपथ ग्रहण समारोह के दौरान ताने जाने वाले शामियाने के लिए हर बार आयोजकों को एक नए टेंट हाउस की तलाश करनी पड़ी क्योंकि पिछले शामियाने का किराया नहीं चुकाया गया था. एक वरिष्ठ अधिकारी ने चुटकी ली—वस्तुतः हमने दिल्ली का कोना-कोना छान मारा. एक तरफ जहां हमें शपथ ग्रहण समारोह की व्यवस्था करनी

सभी कार्टून: अजीत नैनन

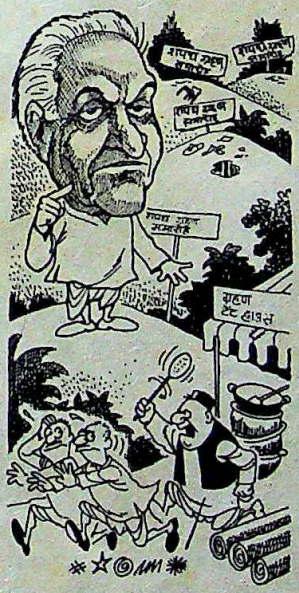

पड़ी, वहीं हमें तमाम तरह की जली-कटी भी सुननी पड़ी

गलती का सच

● लगता है रेलमंत्री जॉर्ज फर्नांडीस को अपनी आवाज से कुछ ज्यादा ही मोह है. वे खूब लफ्फाजी कर रहे हैं. पिछले महीने कोंकण रेलवे निगम के गठन के

लिए केंद्र और चार राज्यों के बीच हुए समझौते पर दस्तखत करते हुए जॉर्ज ने भावुकता से कहा, "पश्चिमी समुद्र तट के इलाके के लोगों का सपना पूरा हो गया." उन्होंने रहस्योद्घाटन किया कि इस निगम पर 1200 करोड़ रु. की लागत आएगी.

और फिर वह विवादास्पद बात बकौल 'डेक्कन हेराल्ड', सामने आई, "परियोजना के लिए समय सीमा का संकेत करते हुए मंत्री महोदय ने कहा कि 'करप्शन' (भ्रष्टाचार) इस महीने के आखिर से शुरू हो जाएगा."

'कार्पोरेशन' की जगह 'करप्शन' शब्द के छपने को प्रूफ की गलती कहिए, रिपोर्टर की शरारत कहिए या मानवीय भूल कहिए, हेराल्ड के पाठकों ने इसे मंत्री की स्पष्टवादिता की दुर्लभ मिसाल माना. 'इंडियन एक्सप्रेस' में तो हमेशा सच ही छपता है, दूसरे अखबारों में भी कभी-कभी सच के दर्शन हो जाया करते हैं.

संतुलन का कौशल

● हर वर्ग के लोगों से मेल-जोल बढ़ाने में रुचि रखने वाले कुलदीप नैयर को, जो ब्रिटेन में भारतीय उच्चायुक्त हैं, हाल ही में लंदन स्थित अपने निवास में राजनैतिक संतुलन के कौशल का प्रदर्शन करना पड़ गया.

हुआ यह कि उन्हें एक साथ दो ऐसे राजनैतिक नेताओं की मेजबानी करनी पड़ी जो शायद ही किसी दावत में एक साथ मौजूद रहते हों. भाजपा अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी और माकपा के दिग्गज ज्योति बसु उनके निमंत्रण पर भोज में एक साथ शामिल हुए और भोजन का लुत्फ लिया. अमजद अली खां का सरोद वादन उनके बीच के तनाव को दूर कर रहा था.

कश्मीर मसले पर भाजपा की तीखी आलोचना के शिकार

फारूक अब्दुल्ला भी वहां आश्चर्यजनक रूप से मौजूद थे. कुछ स्थानीय भारतीय पत्रकारों ने फारूक और आडवाणी के बीच गुप्त बैठक कराने की कोशिश करके अपनी कूटनीति का परिचय देना चाहा. लेकिन आडवाणी ने यह कहते हुए इससे इनकार कर दिया कि वे कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री से खुले में मिलना पसंद करेंगे और उनसे होने वाली बातचीत गुप्त रखेंगे.

...और एक चुटकी

पान की एक दुकान पर लगे टीवी सेट पर 'महाभारत' का आखिरी एपीसोड. धृतराष्ट्र ने संवाद बोला, "इस आत्मघाती युद्ध को और चलने देता तो इतिहास मुझे क्या कहता?"

भीड़ में से किसी ने जवाब दे दिया, "देवीलाल!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यमराज भी हैरान

■ जनता का विश्वास जीतकर सत्ता में आने वालों का आत्मविश्वास कई बार कुछ ज्यादा ही बढ़ जाता है. अपने इस आत्मविश्वास का प्रदर्शन वे कई तरह से करते हैं. इनमें से एक

सभी कार्टून: जयंतो

तरीका है चपरासी से लेकर छोटे-बड़े सरकारी अफसरों के ताबड़तोड़ तबादले करना.

तबादलों की यह बाढ़ आम तौर पर तो सिर्फ संबंधित कर्मचारियों को ही तंग करती है लेकिन मध्य प्रदेश की नई सरकार ने जिस मुस्तैदी के साथ अपनी इस जिम्मेदारी को निभाया है उससे खुद यमराज के सामने भी मुसीबत आ खड़ी हुई है. सत्ता में आने के बाद नई सरकार के मंत्रियों ने अब तक लगभग 50 हजार कर्मचारियों के तबादले किए हैं. प्रशासन में चुस्ती लाने के नाम पर किए गए इन तबादलों ने न सिर्फ हजारों अध्यापकों और डॉक्टरों को अपनी जगह से उखाड़ दिया है बल्कि सैकड़ों मामलों में नौकरी करने वाली पत्नियों को उनके पतियों से सैकड़ों किमी. दूर जा बिठाया है. लेकिन इस सरकारी कदम का एक सबसे रोचक पहलू यह है कि कम-से-कम पांच मामलों में बरसों पहले गुजर चुके कर्मचारियों को, और कई मामलों में रिटायर हो चुके कर्मचारियों के भी तबादले कर दिए गए हैं. दिलचस्प तो यह कि एक हायर सेकेंडरी स्कूल की प्रिंसिपल को तो मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल की जगह तबादला करके भेज दिया गया.

खुल गई आंखें

■ जिस तरह ताली दो हाथों से बजती है, ठीक उसी तरह ठगी का धंधा भी ठग और ठगे जाने वाले के आपसी सहयोग और आपसी विश्वास के ही बूते पर चलता है. एक ओर ठग अपनी होशियारी और चालाकी के साथ अपने शिकार को फांसता है और दूसरी ओर किसी लालच के वश में उल्लू बना हुआ शिकार खुद को इस उम्मीद में ठगा जाने देता है कि आखिरकार ज्यादा फायदा उसी को होगा. ऐसे में ठगे जाने और बच निकलने का मामला इस बात से तय होता है कि शिकार की आंख कब खुलती है.

पिछले पखवाड़े दिल्ली के एक निवासी समरजीत की आंख वक्त रहते खुल गई और इस तरह न सिर्फ उसके पैसे बच गए बल्कि दो ठगों को भी हवालात मिल गया. दरियागंज के एक बैंक से पैसे लेकर जब वह बाहर आया तो बाहर खड़े दो भगवाधारी साधुओं ने उसे हाथोहाथ शांति और समृद्धि का गारंटीशुदा रास्ता दिखा दिया. साधुओं ने उसे अपना बटुआ उनके हाथ में रखकर आंखें बंद करके बीस कदम चलने को कहा. समरजीत ने ऐसा ही किया लेकिन बीच में ही उसका माथा ठनक गया. और आंखें खोलते ही उसने पाया कि दोनों ठग उसके बटुए समेत दूसरी दिशा में भाग रहे थे. उसने

तुरंत शोर मचाया और लोगों की मदद से दोनों को धर-दबोचा. जांच-पड़ताल के बाद पुलिस को पता चला कि लियाकत अली और मकबूल हुसैन नाम वाले ये फरेबी साधु कई लोगों को चूना लगा चुके हैं.

दारू-बम

■ पिछले कुछ महीनों के दौरान बसों में बम फटने की घटनाओं के बाद दिल्ली पुलिस ने चलती बसों को रोककर अचानक जांच करने का अभियान शुरू कर दिया है. नतीजा यह है कि सड़कों पर बसें

रोककर एक-एक यात्री का सामान जांचने और सीटों के नीचे तलाशी लेने के दृश्य अब राजधानी की जिंदगी का सामान्य हिस्सा बनते जा रहे हैं. स्वाभाविक ही है कि ज्यादातर मामलों में पुलिस को कुछ भी हाथ नहीं लगता. उलटे देरी की वजह से परेशान यात्रियों के उलाहने और फब्तियां ही उसके हिस्से आती हैं. लेकिन पुलिस के सौभाग्य से पिछले पखवाड़े चांदनी महल इलाके में एक बस में उसे ऐसी तरावट भरी सफलता हाथ लगी कि हजार उलाहनों और फब्तियों का गम गलत हो जाए. शाम को दफ्तरी बाबुओं से भरी बस को बीच सड़क पर रोककर कुछ सिपाही अंदर दाखिल हुए तो एक व्यक्ति अपने ब्रीफकेस समेत बस से कूदकर भाग खड़ा हुआ. कूदने वाले की बदहवासी से पुलिसवालों को भरोसा हो गया कि इस बार उनके हत्थे बम चढ़ने ही जा रहा है. भागते चोर को आनन-फानन में पकड़ लिया गया और पूरी सावधानी के साथ उससे ब्रीफकेस खुलवाया गया. अंदर से जो कुछ निकला वह बम से भी ज्यादा जोरदार चीज थी—अंग्रेजी दारू की 16 बोतलें. ऐसे में पुलिस ने वही किया जो उसे करना चाहिए था. आदमी और दारू दोनों को अंदर कर दिया गया.

भैंस बड़ी या अक्ल

■ एक ऐसे दौर में जब अपराधियों और आतंकवादियों की जोर-जबरदस्ती के आगे हथियार डाल देने की परंपरा लोगों के दिल में घर करती जा रही है, कर्नाटक की एक गृहिणी ने अक्ल और हिम्मत के बूते जो मिसाल पेश की है वह सचमुच तारीफ के काबिल है.

यह घटना कोलार में पिछले दिनों घटी जहां अपने घर में बैठी इस गृहिणी को कुछ अजनबी लोगों ने दरवाजा खोलने को कहा. अजनबियों के व्यवहार पर उसे कुछ शक हुआ और उसने दरवाजा खोलने से इनकार कर दिया. लेकिन ये मेहमान भी कोई छोटे-मोटे चोर-उचक्के नहीं थे कि एक महिला के डर से भाग जाते. वे शायद घर लूटने का पक्का इरादा करके आए थे. लिहाजा उन्होंने दरवाजे पर धक्के मारकर उसे तोड़ने का फैसला कर लिया. उधर, सिर पर मंडराते इस खतरे से निबटने को तैयार बैठी महिला को जब कोई और रास्ता नहीं सूझा तो उसने तुरत-फुरत अपने लिए एक हथियार तैयार कर लिया. एक बाल्टी में पानी और रसोई का सारा मिर्ची पाउडर डालकर वह दरवाजे के सामने खड़ी हो गई. उधर, दरवाजा तोड़कर लुटेरों ने कमरे में कदम रखे और इधर घर की मालकिन ने अपना हथियार

पूरी मुस्तैदी के साथ दाग दिया. इस हमले से भौंचक लुटेरों की आंखों पर पानी और मिर्चों ने ऐसा रंग दिखाया कि घर लूटने की जगह हाय-हाय करके दुम दबाकर भागने में ही उन्हें सैरियत दिखी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्यान न दें

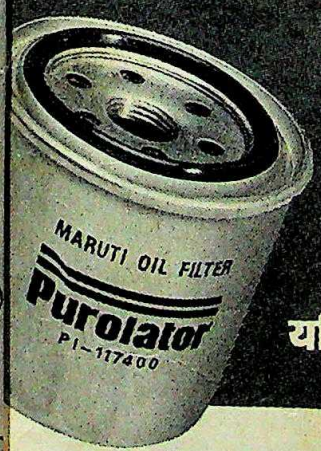

यदि रु.7000 का कार रिपेयर बिल आपके लिए ध्यान देने की बात नहीं

ऑयल, फ़्युअल और एअर फ़िल्टरों पर निर्भर करता है आपकी कार के इंजन का भविष्य. यदि फ़िल्टर काम करने में सक्षम नहीं हैं तो कार के वॉल्व्ज़ अपनी जगह से हिल जाएंगे, पिस्टन रिंग्स को नुक्सान पहुँचेगा, सिलिण्डर की भीतरी सतह नष्ट हो जाएगी, इंजन जाम हो जाएगा... और नतीजा, रु. 7000 का रिपेयर बिल.

और यदि आपकी कार के फ़िल्टर काम देते हैं, ऐसे जैसे कि प्यूरोलेटर—तो आपका इंजन चलेगा दुरुस्त, आपको मिलेगी शानदार माईलेज, सर्विसिंग और रख-रखाव पर होगा कम से कम खर्च.

इसलिए प्यूरोलेटर पर ही ज़ोर दीजिए. आपका मैकेनिक भी आपको यही सलाह देगा.

Purolator

दुनिया में सबसे ज्यादा बिकने वाले फिल्टर

A member of the ANAND group of companies.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर प्रदेश

मुसीबत में मुलायम

कहा गया है कि सत्ता भ्रष्ट करती है और निरंकुश सत्ता संपूर्ण रूप से भ्रष्ट कर देती है. इस कसौटी पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव को कसा जाए तो यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सत्ता ने उन्हें भ्रष्ट तो नहीं किया है मगर उसका गरूर शायद उनके सिर चढ़कर बोलने लगा है.

वैसे भी आम धारणा यही है कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री की कुर्सी देश में दूसरी सबसे शक्तिशाली कुर्सी होती है. शायद यह भी कारण रहा हो मुलायम के रंग-ढंग बदलने का. कुर्सी की कुश्ती में उन्होंने जिस तरह अजित सिंह को पटखनी दी थी और सत्ता की बागडोर अपने हाथ में ली थी, उससे भी जरूर उनका सीना फूला होगा. लेकिन सत्ता में आने के सात महीने बाद आज वे

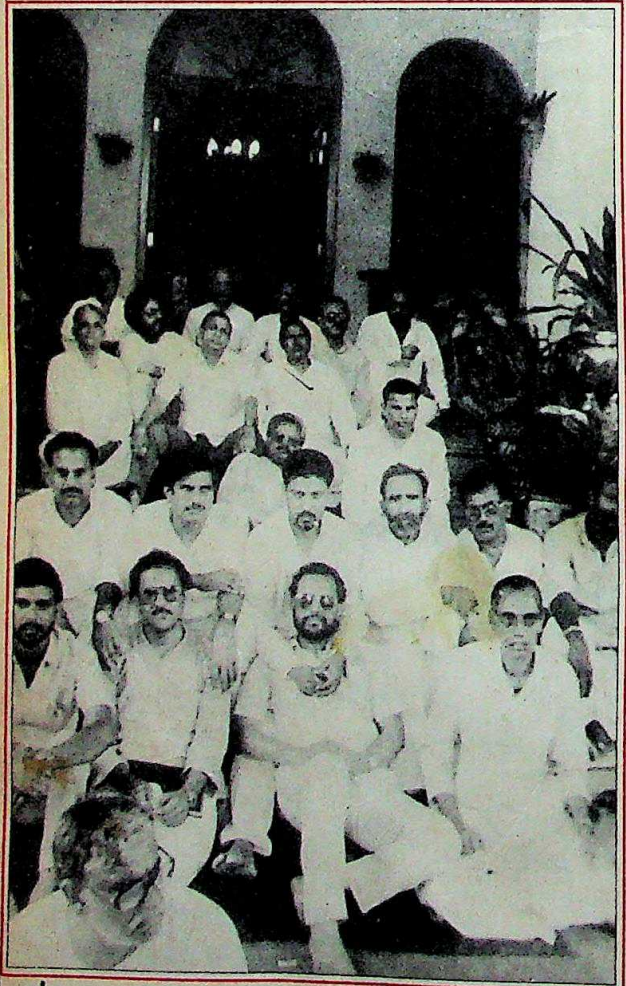
कृष्ण मेठ

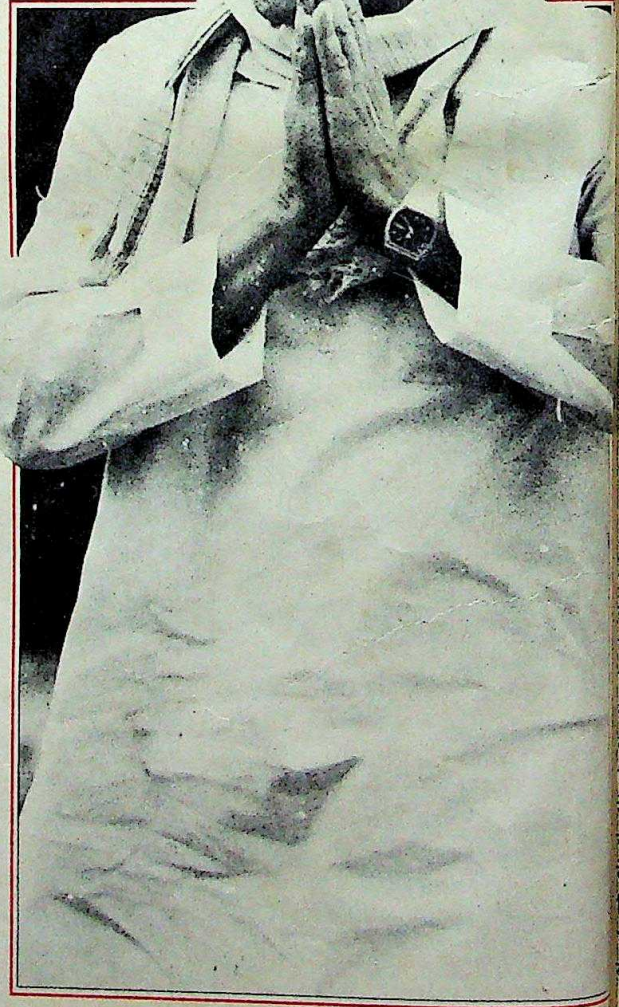
प्रशांत पांजियार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर के गुप्ता

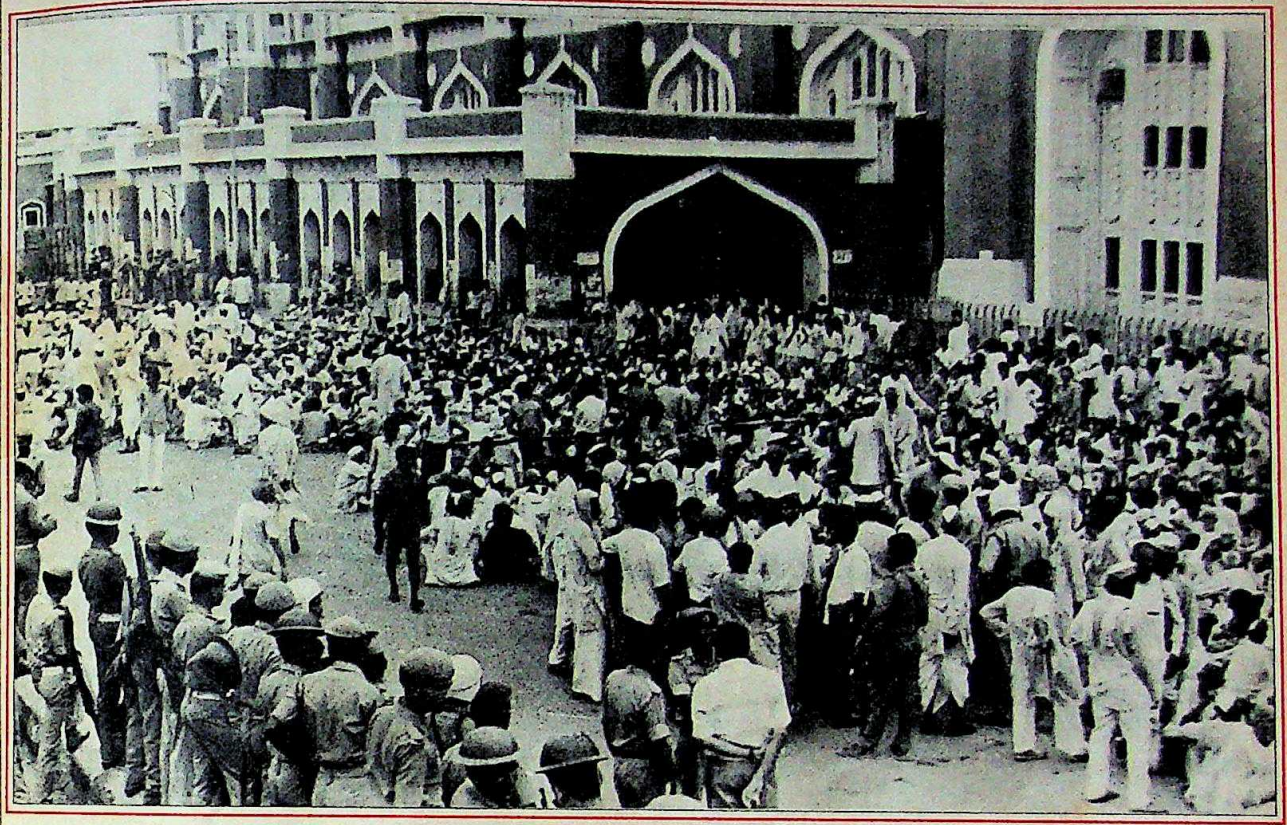

लखनऊ में किसानों का प्रदर्शन; (बाएं) राज्यपाल निवास पर भाजपा विधायकों का धरना; और मुलायम सिंह: मुश्किलें ही मुश्किलें

देवीलाल से लेकर राज्य के निर्दलीय विधायकों तक—जिन्हें वे अब तक बहुत सम्मान नहीं देते रहे थे—के आगे बिछे-से जा रहे हैं तो इसकी वजह यह है कि उन्होंने उस नाजुक डोर को ही बेरहमी से तोड़ डाला था जो किसी नेता को उसकी पार्टी और जनता से जोड़े रखती है.

अपने अब तक के कार्यकाल के दौरान मुलायम का व्यवहार उस मुख्यमंत्री जैसा नहीं रहा जिसकी सरकार महज दो विधायकों के मामूली बहुमत और भाजपा के 59 तथा वामपंथी पार्टियों के विधायकों के समर्थन पर टिकी हो. उन्हें खुद में एक ऐसे नेता के वे सभी गुण विद्यमान दिखने लगे हैं जिसे लाखों लोग आदर्श नेता मानते हैं. एक तो वे खुद पिछड़ी जाति के हैं. दूसरे उन्होंने मुसलमानों का विश्वास जीत लिया है. फिर, उनकी छवि एक धर्मनिरपेक्ष नेता की है. और सबसे बढ़कर यह कि उन्होंने एक ऐसे ताकतवर क्षत्रप से लोहा लेने की हिम्मत की जिसका दबदबा न सिर्फ उनके राज्य पर बल्कि पूरे उत्तर भारत पर माना जाता है. सो, मुलायम ने यह धारणा बना ली कि यदि उनके साथ

न सिर्फ भाजपा ने मुलायम सिंह सरकार से समर्थन खींच लिया बल्कि किसानों की गिरफ्तारी से उसकी किसान समर्थक सरकार वाली छवि को भी नुकसान पहुंचा

इतनी विशेषताएं जुड़ी हैं तो उन्हें और किसी चीज की जरूरत नहीं.

कुछ समय तक तो ऐसी धारणाओं और भाग्य के बूते वे उस राह पर बढ़ते नजर आए जो सही लग रही थी. उनके सत्तासीन होने के बाद राज्य में पहली बड़ी उथलपुथल छात्रों द्वारा छेड़ा गया आरक्षण विरोधी आंदोलन था जिसने हफ्ते भर में ही 50 जिलों को अपनी चपेट में ले लिया था. लेकिन जाड़े की छुट्टियां शुरू होने से नेतृत्व के अभाव में यह आंदोलन बिखर गया. मुलायम मजबूत होकर उभरते से लगे. उनका हौसला भी बढ़ा.

इसके बाद विश्व हिंदू परिषद (विहिप) के साथ झड़प का दौर आया जिसे वे सांप्रदायिक संगठन कहते हैं. विहिप ने घोषणा की कि अयोध्या में राम मंदिर निर्माण का काम 14 फरवरी से शुरू कर दिया जाएगा. इस बार किस्मत तो मुलायम के काम नहीं आई मगर प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह काम आ गए. प्रधानमंत्री ने विहिप के नेताओं को चतुराई से फुसलाकर यह तारीख आगे के लिए बढ़वा दी. मुलायम को इसका श्रेय तो नहीं मिला पर उनमें यह भावना घर करने लगी कि उनके साथ कोई गड़बड़ हो ही नहीं सकती.

इस बीच मुलायम ने अपने हाथ-पांव पसारने शुरू कर दिए और एक तरह से अपनी महत्वाकांक्षाओं को उजागर करने लगे. उन्होंने हिंदी को राजकाज की भाषा बनाने का अभियान छेड़ दिया और सरकारी कामकाज में अंग्रेजी के इस्तेमाल पर रोक लगा दी. इससे फिर वे राष्ट्रीय अखबारों की सुर्खियों में छा गए और उनकी छवि जमीन से जुड़े ऐसे नेता की बनी जो व्यापक तौर पर इस्तेमाल की जा रही संपर्क भाषा की दुर्दमनीय ताकत को चुनौती दे सकता है. उन्होंने अपने तल्ख बयानों से अंग्रेजी के पक्ष में दिए जाने वाले सभी तर्कों को धराशायी कर दिया.

इसलिए जब किसी हस्ती से सीधे टक्कर लेने का मौका आया तो उन्होंने जिस दिलेरी का परिचय दिया उससे किसी को कोई अचरज नहीं हुआ. द्वारिकापीठ के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर.के. गुप्ता

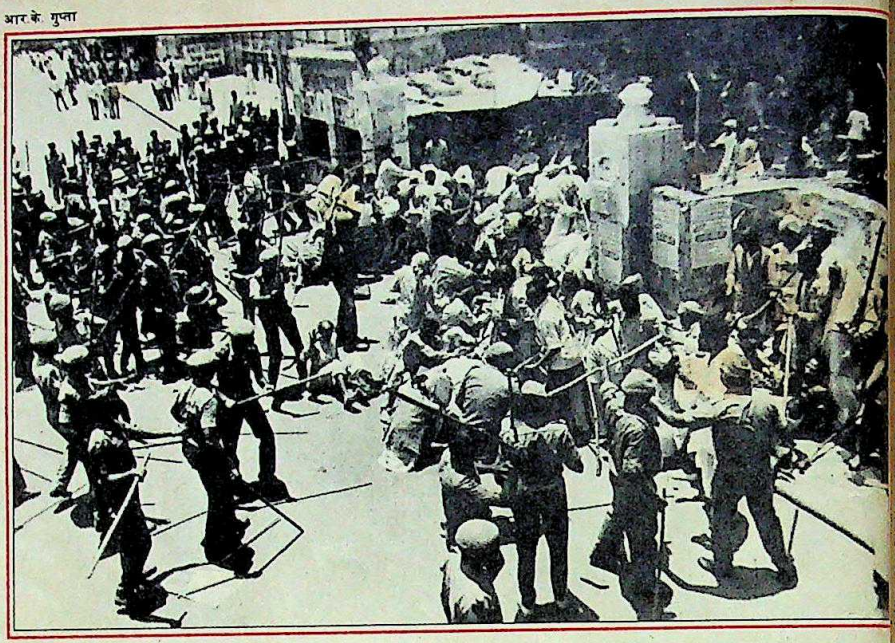

मुलायम सिंह सरकार ने भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज करके वामपंथी पार्टियों को भी नाराज कर लिया

शंकराचार्य ने घोषणा की कि वे खुद अयोध्या में दूसरी जगह शिलान्यास करने जाएंगे. 1 मई को सरकार ने तेजी दिखाई और शंकराचार्य को गिरफ्तार कर लिया गया. इस पर कोई सांप्रदायिक तनाव नहीं फैला. दरअसल विहिप ने भी इस गिरफ्तारी का कड़ा विरोध नहीं किया क्योंकि वह खुद नहीं चाहती थी कि शंकराचार्य दूसरी जगह शिलान्यास करें. हिंदूवादी संगठनों के नेताओं के बीच चाहे जो मतभेद रहे हों, मुलायम ने धर्मनिरपेक्ष तत्वों के बीच अपनी साख बढ़ा ली. साथ ही उन्होंने मुसलमानों को भी यह जता दिया कि वे उनके ऊपर भरोसा कर सकते हैं.

शंकराचार्य को गिरफ्तार करने का साहस दिखाने पर चारों ओर से उन्हें जो वाहवाही मिली, उससे उत्साहित होक मुलायम ने एक नितांत अलग किस्म क समस्या को भी इसी अंदाज से सुलझाने क कोशिश की. भारतीय किसान यूनिय (भाकियू) के लोकप्रिय नेता महेंद्र सि टिकैत जब 20,000 किसानों के सा लखनऊ में 15 जुलाई को पंचायत कर पहुंच रहे थे तो सरकार ने सख्

बरतने
लगभग
लिया ग
नहीं थीं
बिलों,
और बु
मूल्य की
थे. टिकै

मुलायम सिंह यादव

'कानून का पालन ही तो करवा रहा हूं'

इन दिनों साक्षात्कार के लिए मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव से मिलना खासा मुश्किल काम है. एक पैर दिल्ली में तो दूसरा अफसरों के बीच. और बाकी का सारा समय विधायकों, सांसदों और केंद्रीय नेताओं की मान-मनौवल में बीत रहा है. किसी तरह कार में ही दो-तीन किश्तों में उनसे ***शीतल*** *की बातचीत हो पाई. उसके अंश:*

प्रदीप शाह

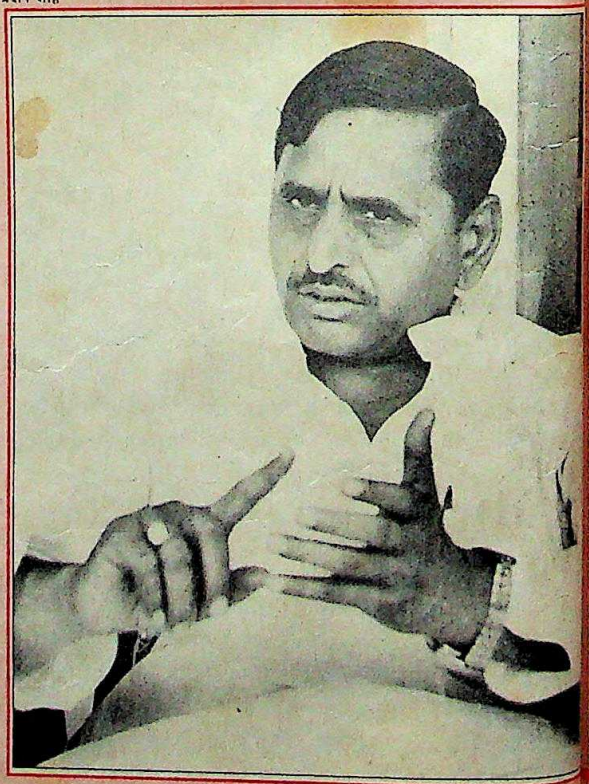

● ***आप जरूरत से ज्यादा सख्त क्यों दिखने लगे हैं?***

मैं कहां सख्त हूं. मैं तो बस कानून का पालन करवा रहा हूं. पिछले राज ने कानून-कायदा सब चौपट कर दिया था.

● ***आपका दोस्तों से झगड़ा क्यों शुरू हो गया. मसलन, प्रदेश भाजपा से?***

मेरा कोई झगड़ा नहीं हैं, वे तो अपने आप झगड़ा मान रहे हैं, स्थानीय निकायों के चुनाव की खिसियाहट मिटाने के लिए. मैं उन्हें चार सीटें दे रहा था: बेनी (सार्वजनिक निर्माणमंत्री) पांच की कह आए थे. मैं छह तक दे देता. पर वे अकेले लड़ गए. एक सीट मिली. मैं क्या कर सकता हूं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्ण मेठ

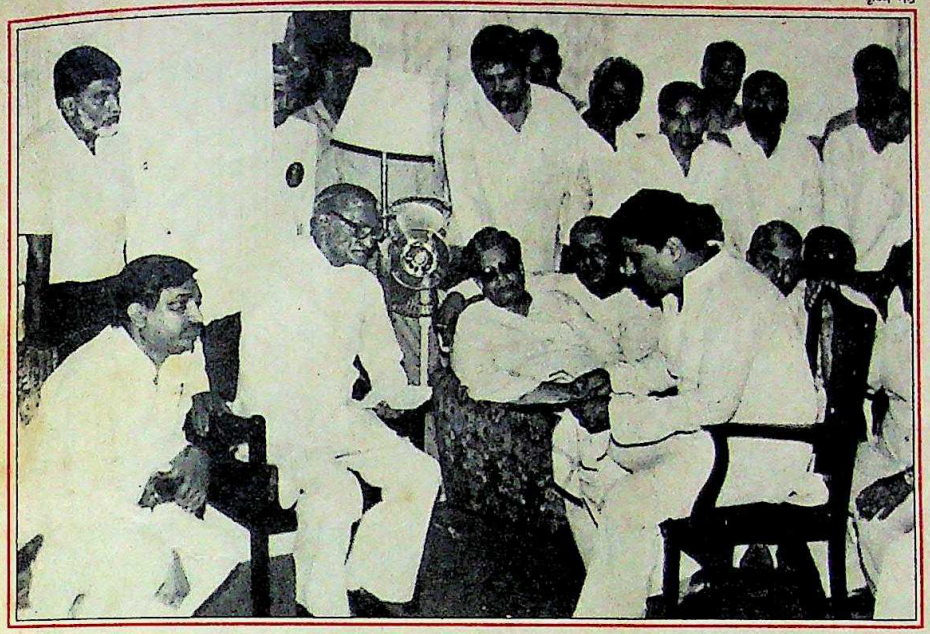

संवैधानिक मान-मर्यादा की अवहेलना के विरोध में विधानसभा भंग करने की मांग को लेकर इंका विधायक सदन से राजभवन तक पहुंच गए

बरतने का फैसला किया. टिकैत समेत लगभग सभी किसानों को गिरफ्तार कर लिया गया. उनकी मांगें बहुत असामान्य नहीं थीं. वे पानी और बिजली के बकाया बिलों, 10,000 रु. तक कर्ज की माफी और बुवाई के पहले उपज के लाभकारी मूल्य की घोषणा वगैरह की मांग कर रहे थे. टिकैत और उनके समर्थक किसानों को अपना सारा गुस्सा निकालकर अपने खेतों की ओर लौट जाने देना चाहिए था. लेकिन मुलायम ने इसे अपनी ताकत के प्रदर्शन का मौका मान लिया.

लेकिन एक दिन में ही मुलायम की चमक फीकी पड़ गई और उनकी यह छवि भी ध्वस्त हो गई कि राज्य की नैया के वे ही खेवनहार हैं. उनके लिए संकट अजित खेमे के विधायकों ने पैदा किया जिन्हें पश्चिमी उत्तर प्रदेश के सभी 66 विधायकों का समर्थन था. इस खेमे के एक विधायक ने कहा, "हम उत्तर प्रदेश में टिकैत के समर्थन के बिना राजनीति में बने रहने की बात सोच भी नहीं सकते." 59 विधायकों ने मुलायम को चेतावनी दे डाली—टिकैत को रिहा करो, नहीं तो हम

● ***पर प्रदेश भाकपा से क्या हुआ?***

नहीं, कुछ नहीं. विधायकों (भाकपा के) को चोट (पुलिस लाठीचार्ज में) लग गई थी, सो नाराज हैं. अब हमारी बात हो गई. अब कोई झगड़ा नहीं है.

● ***और टिकैत से भिड़ंत क्यों हुई?***

पहले तो वे हमारी तारीफ लिखकर भेज रहे थे. 10 जुलाई की चिट्ठी पढ़ लो. हम थोड़े ही जानते थे कि वे यहां (लखनऊ में) पंचायत लगाने आ ही जाएंगे. 11 जुलाई को फोन पर मुझसे बात भी हुई. फिर वे 13 को बिना टिकट रेल से पहुंच गए तो हमें कानून-कायदा देखना पड़ा.

● ***आपकी बात पर कैसे यकीन हो. क्या एकाएक ही आपने इतनी पुलिस-प्रशासनिक ताकत टिकैत के खिलाफ झोंक दी?***

पहले से सावधानी नहीं बरतेंगे तो कैसे शासन चलेगा?

● ***जैसा विद्रोह आपकी पार्टी के विधायकों ने आपकी इस कार्रवाई पर किया उसे देखते हुए आपको कुर्सी पर कब तक टिके रहने की उम्मीद है?***

कहां है विद्रोह? अरे, कुछ लोगों की नाराजगी-खुशी तो लोकतंत्र में होती ही रहती है. फिर आपने देखा कैसा समर्थन मिला. कांशीराम की पार्टी का समर्थन देने का बयान आया. निर्दलीय सारे के सारे सरकार के साथ खड़े हो गए, एक-दो को छोड़कर. सीपीआई-सीपीएम का समर्थन था.

● ***विधायकों के असंतोष की वजह यह तो नहीं थी कि आपने तीन दर्जन से ज्यादा विभाग खुद ही रखे हैं और मंत्रिमंडल का विस्तार रोके पड़े हैं?***

नहीं, यह बात नहीं. दरअसल, हम दोनों सदनों के सदस्यों की 'परफारमेंस' देखकर उनमें से लेना चाहते थे. विधान परिषद पहले पूरी नहीं थी. अब हो गई. अब बढ़ जाएगा मंत्रिमंडल.

● ***आप पिछली सरकार के भ्रष्टाचार की बात करते हैं. आपके कई मंत्रियों पर इस बार बजट सत्र में खासे गंभीर आरोप लगे.***

कौन-से आरोप?

● ***नगर विकासमंत्री पर महिला मित्र के साथ सरकारी हेलिकॉप्टर की सैर और स्वास्थ्यमंत्री पर काली सूची की दवा कंपनी को सहयोग आदि?***

मंत्री को हेलिकॉप्टर ले जाने का अधिकार है. अब साथ में कौन बैठ गया इसे छोड़िए. बहुत-से लोग बैठ जाते हैं. राजनैतिक आदमी की मजबूरी होती है.

● ***दिल्ली में आजकल आप किस केंद्रीय नेता के साथ हैं?***

मैं जनता दल के साथ हूं.

● ***अजित सिंह से कैसे रिश्ते हैं?***

बहुत अच्छे, आज ही टेलीफोन पर बात हुई.

● ***वी.पी. सिंह से?***

हमारे प्रधानमंत्री हैं.

● ***और देवीलाल से?***

आप क्यों पूछ रहे हैं ? मेरे सबसे अच्छे रिश्ते हैं. मैं पार्टी की अंदरूनी बातें प्रेस से नहीं कहता.

● ***इधर चंद्रशेखर से आपकी ज्यादा छन रही है?***

कब नहीं छनती थी? आप लोग जबरदस्ती कुछ-न-कुछ बनाने में लगे रहते हैं. .

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलग हो जाएंगे. इस अभियान के अगुआ, जनता दल विधायक भोपाल सिंह ने कहा, "हम सोचते थे कि यह किसानों की सरकार है. लेकिन मुलायम सिंह की कार्रवाई ने साबित कर दिया कि ऐसा नहीं है. अब इसमें बने रहने का कोई औचित्य नहीं."

विधानसभा में संभावित हार की शर्मिंदगी से बचने के लिए सरकार ने 23 विभागों की पूरक मांगों और विनियोग विधेयक को 17 जुलाई को सदन में पेश कर दिया लेकिन न तो सदन की उस दिन की कार्यसूची की पूर्व घोषणा ही की गई और न ही उसे सदन की कार्यवाही सलाहकार समिति के सामने रखा गया. जब संसदीय कार्यमंत्री बेनीप्रसाद वर्मा विनियोग विधेयक को पेश कर रहे थे तब इंका के अरुण कुमार सिंह और जनता दल के विधायक रिजवान-उल-हक तक ने मत विभाजन की मांग कर दी. अध्यक्ष ने इन पर कान नहीं दिया. और सदन को स्थगित करने का प्रस्ताव पास करवा लिया गया.

इन घटनाओं ने राज्य की सबसे बड़ी पार्टी इंका की कुंभकर्णी नींद भी तोड़ दी. सदन में इंका के 94 सदस्य होने के बावजूद वह शासक दल को झिंझोड़ने लायक एक भी मुद्दा नहीं उठा पाई थी. लेकिन 16 और 17 जुलाई को इंका ने सचमुच अपनी मौजूदगी दर्ज करा दी. पहले दिन वह किसानों की गिरफ्तारी और भाकपा के प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज के मुद्दों पर पूरे दिन का कार्य स्थगित कराने में कामयाब रही. 18 जुलाई को इंका के 60 विधायक विधानसभा भंग करने की मांग का ज्ञापन देने सदन से राजभवन तक पहुंच गए. लेकिन अंदरूनी कलह के कारण वह इस स्थिति का फायदा नहीं उठा पाई.

इस मामले में भाजपा उसे पीछे छोड़ती दिखी. भाजपा ने ज्ञापन देकर विधानसभा की बैठक बुलाने की मांग की ताकि "बजट संवैधानिक तरीके से पास हो सके." सदन में भाजपा के नेता कल्याण सिंह ने घोषणा की कि उनकी पार्टी सरकार से समर्थन वापस ले रही है क्योंकि "गैर-संवैधानिक तरीके अपनाने में इसने पूर्व इंका सरकार को भी पीछे छोड़ दिया है."

अभी सरकार अपना अस्तित्व बचाने के लिए हाथ-पैर मार ही रही थी कि मुख्यमंत्री ने जवाबी अभियान छेड़ दिया. उन्होंने सरकार विरोधी अभियान को पार्टी में जाट और पिछड़े वर्गों की लड़ाई का नतीजा बताने की कोशिश की. पिछड़े वर्ग के 50 से अधिक विधायक मुख्यमंत्री के समर्थन में आ जुटे थे. लेकिन पश्चिमी उत्तर प्रदेश के ज्यादातर जाट विधायक मुख्यमंत्री द्वारा 20 जुलाई को आयोजित रात्रिभोज में शामिल नहीं हुए. जनता दल के 210 विधायकों में 40 ठाकुर, 26 यादव, 24 जाट, 23 ब्राह्मण और 13 मुसलमान हैं.

मुलायम ने संकट से निजात पाने के लिए अंततः वी.पी. सिंह और अपने प्रतिद्वंद्वी अजित सिंह से संपर्क किया. साथ ही पूरे संकट को मामूली बताने के लिए उन्होंने पत्रकार सम्मेलन भी बुलाया जिसमें उन्होंने कहा, "विधायकों में से कुछ तो सिर्फ नाराजगी जाहिर कर रहे हैं. कोई गंभीर मामला नहीं है." इसके अलावा 25 विधायकों के हस्ताक्षर वाला एक ज्ञापन भी मुलायम के समर्थन में जारी किया गया. फिर, 18 जुलाई को मुलायम ने अपने समर्थन में 12 निर्दलीय विधायकों की परेड करवाई और दावा किया कि उन्हें 32 निर्दलीय विधायकों का समर्थन हासिल है.

उनकी इस हताशापूर्ण हरकत की वजह भी थी. उन्हें मालूम था कि भाजपा और भाकपा के साथ जनता दल के संबंध अब उतने मधुर नहीं रह गए हैं. उन्हें यह भी मालूम हो गया था कि उनकी पार्टी के कम-से-कम 45 से लेकर 60 विधायक मंझधार में उनका साथ छोड़ देने में कोई संकोच नहीं करेंगे. विहिप भी 15 अगस्त से राम मंदिर के निर्माण की तैयारियां शुरू कर आग को और भड़काएगी. सो, आश्चर्य नहीं कि कई विधायक महसूस करने लगे हैं कि बाबरी मस्जिद भले न गिरे, मुलायम सरकार तो गिर ही जाएगी.

पश्चिमी उत्तर प्रदेश टिकैत का गढ़ है. जनता दल के 210 विधायकों में से 66 इसी इलाके से हैं. इस क्षेत्र में कुल 101 सीटें हैं. बाकी सीटों पर भाजपा (13), इंका (18) और निर्दलीयों (4) का कब्जा है. पश्चिमी उत्तर प्रदेश के एक जाने-माने विधायक ने कहा, "अगर वे (टिकैत) हमसे इस्तीफा देने को कहेंगे तो हम इसमें कोई देरी नहीं करेंगे."

उत्तर प्रदेश सरकार के निरंकुश तरीकों से किसानों के आंदोलन को जितना लाभ पहुंचा उसकी शायद टिकैत ने भी कल्पना नहीं की होगी. इससे यह भी साबित हो गया कि राज्य की जनता और सत्ता पार्टी पर उनकी कितनी पकड़ है. इसके अलावा टिकैत की राजनैतिक समझ भी पैनी हुई है.

सरकार के लिए मौजूदा संकट अजित सिंह खेमे के लोगों की ओर से पैदा किया गया. पश्चिमी उत्तर प्रदेश के अधिकांश विधायक उनसे जुड़े बताए जाते हैं

आर.के. गुप्ता

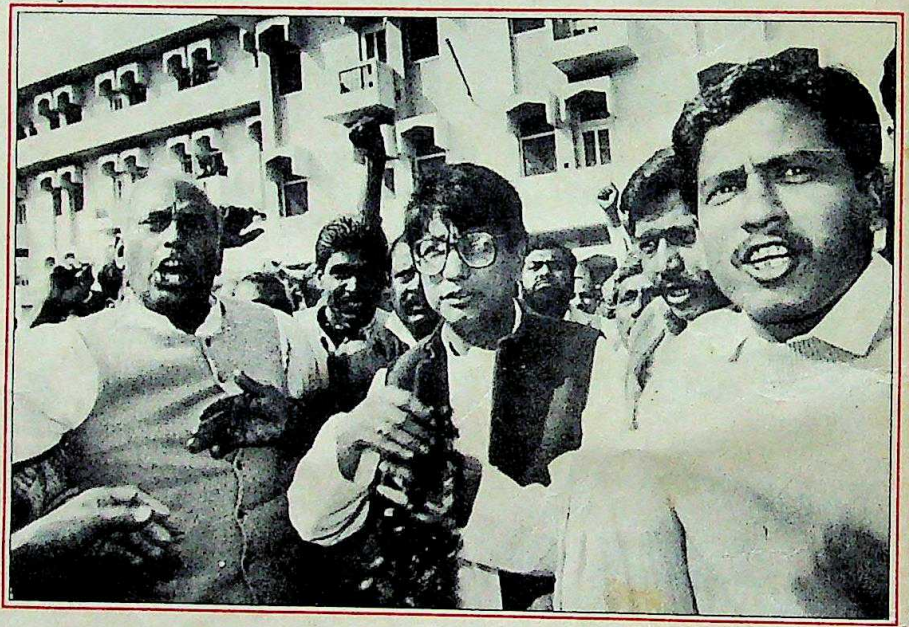

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महेंद्र सिंह टिकैत

कद ऊंचा ही हुआ

किसान आंदोलन के 1987 में क्षितिज पर उभरने के बाद महेंद्र सिंह टिकैत को सत्तारूढ़ दल में जबरदस्त समर्थन मिलने पर शायद पहली बार स्वयं पर गर्व महसूस हो रहा होगा. उत्तर प्रदेश में पिछले पखवाड़े के सात दिनों में जो कुछ हुआ वह अभूतपूर्व था. 56 विधायकों के एक गुट ने न सिर्फ अपने इस्तीफे की घोषणा से संबंधित ज्ञापन पर दस्तखत ही किए बल्कि ज्यादातर ने उन्हें मंजूर करने पर भी जोर दिया. प्रदेश के 15 सांसदों ने भी लोकप्रिय किसान नेता की गिरफ्तारी के विरोध में मुख्यमंत्री को हटाए जाने की मांग करते हुए ऐसे ही ज्ञापन पर दस्तखत किए.

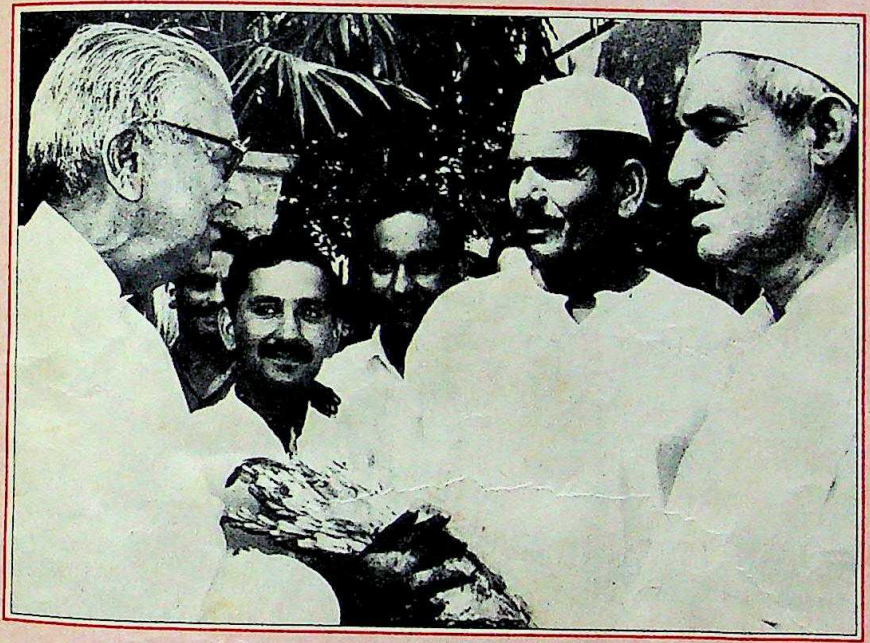

उप-प्रधानमंत्री देवीलाल से मुलाकात करने के बाद किसान नेता महेंद्र सिंह टिकैत का कद जनता दल के तथाकथित जाट नेताओं से भी ऊंचा हो गया दिखता है

भारतीय किसान यूनियन (भाकियू) के नेता का कद छोटा करने में मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव कामयाब रहे हों या नहीं पर टिकैत आज जनता दल के तथाकथित जाट नेताओं से भी ऊंचे हो गए दिखते हैं. उनका बुलंद हौसला 19 जुलाई को साफ दिखा. मुख्यमंत्री की ओर से फतेहगढ़ जेल में भेजे गए अधिकारियों के चार सदस्यीय शिष्टमंडल से उन्होंने कहा कि वे रिहाई के लिए तभी राजी होंगे जब किसानों पर 300 करोड़ रु. के बिजली बकाए माफ करने की मांग मान ली जाएगी.

बीमार और बूढ़े टिकैत इस कदर चमत्कारी व्यक्ति बन गए हैं कि 21 जुलाई को राज्य सरकार उन्हें रिहा करने पर मजबूर हो गई ताकि मुलायम सिंह की गद्दी सुरक्षित रह सके. जहां पहले यह सोचा जा रहा था कि लंबे अरसे तक जेल में रखकर टिकैत को सबक सिखाया जाए, वहीं उनकी रिहाई के आदेश तैयार करते वक्त अधिकारियों को आशंका थी कि कहीं वे बाहर आने से ही इनकार न कर दें.

टिकैत अभी तक तीन प्रमुख आंदोलनों की अगुआई कर चुके हैं. उन्होंने किसानों के बिजली बकाए माफ करने की मांग को लेकर 15 जुलाई को लखनऊ में 'पंचायत' करने की घोषणा की. राज्य सरकार को अंदेशा हुआ कि अगर टिकैत को पंचायत करने की इजाजत दी गई तो वे लखनऊ में अनिश्चितकालीन धरने की घोषणा करके दबाव डालने के दांवपेंच अख्तियार करेंगे. मुलायम सिंह ने इस अंदेशे में कि यह पंचायत कहीं विधानसभा के बजट सत्र में उनके लिए मुश्किलें न पैदा कर दे, 8 जुलाई को टिकैत को एक चिट्ठी लिखी जिसमें पंचायत स्थगित करने का अनुरोध किया गया. फिर, 11 जुलाई को उन्होंने इस बारे में किसान नेता से फोन पर बातचीत भी की. पर टिकैत ने इनकार कर दिया. उधर, मुलायम सिंह ने भी न झुकने का फैसला कर लिया. गृह मंत्रालय को आदेश दिए गए कि वह टिकैत समेत किसानों को लखनऊ के रास्ते में ही गिरफ्तार कर ले. सो, 14 और 15 जुलाई को बरेली, मुरादाबाद, मेरठ, कानपुर और लखनऊ में बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियां की गईं. टिकैत रास्ते में बरेली में 2,000 किसानों के जत्थे समेत गिरफ्तार कर लिए गए.

यह मुलायम सिंह के लिए संकट की शुरुआत साबित हुई. 20 जुलाई को बाराबंकी जेल में किसानों पर हुए पाशविक लाठीचार्ज से मामला और जटिल हो उठा. कुछ गरमागरमी के बाद जेल के सुरक्षा कर्मचारियों ने गिरफ्तार किसानों की जबरदस्त पिटाई कर दी. इनमें टिकैत की पत्नी 55 वर्षीया बलजोरी देवी भी शामिल हैं, जिन्हें लखनऊ में बलरामपुर अस्पताल में दाखिल करवाया गया. वे कहती हैं, "उन्होंने हमें बंदूकों के कुंदों और लाठियों से पीटा." उन्होंने पसलियों में जबरदस्त दर्द की शिकायत की जिससे लगता है कि उनकी पसलियां टूट गई हैं, हालांकि अभी डॉक्टरी रिपोर्ट आनी है.

बहरहाल, कुल मिलाकर टिकैत ने उलटे मुलायम सिंह को उनकी औकात दिखा दी. मामला अभी उलझा ही हुआ है. टिकैत ने मुख्यमंत्री के गृह जिले इटावा में अगली पंचायत करने की घोषणा की है. उन्हें पता है कि उन्होंने उस मुख्यमंत्री को संकट में डाल दिया है जो प्रदेश में सबसे सशक्त जनता दल नेता होने का ही नहीं बल्कि किसी दबाव के आगे न झुकने वाला व्यक्ति होने का भी दावा किया करता था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ.प्र. मंत्रिमंडल

वही रफ्तार बेढंगी

राज्य की जनता दल सरकार के बारे में कहा जा सकता है कि जैसे राजा, वैसे मंत्री. तमाम दावों और वादों के बावजूद अगर मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव खुद को अपने पूर्ववर्तियों से जुदा न साबित कर पाए तो उनके 13 मंत्रीगण भला उनसे आगे क्यों बढ़ते.

मुलायम के साथ 'सत्ता की त्रिमूर्ति' बनाने वाले रेवतीरमण सिंह और बेनीप्रसाद वर्मा से लेकर रातोरात इंका छोड़ जनता दल के टिकट से सीधे कैबिनेट स्तर के मंत्री पद पर पहुंचीं सुखदा मिश्र तक सभी इस सवाल से कतराते हैं कि पिछले मंत्रियों से वे किस मायने में अलग हैं.

बेनीप्रसाद वर्मा

सुखदा मिश्र

रेवतीरमण सिंह

अवधेश प्रसाद

सच्चिदानंद वाजपेयी

मुख्तार अनीस

उनकी ही पार्टी के विधायक जयशंकर पांडेय कहते हैं, "शुरू में यह फर्क था पर अब मिटता जा रहा है. अब तो सब आमोद-प्रमोद में डूब गया लगता है. वे हम लोगों से चेहरा चुराने लगे हैं." मंत्री लोग ऐसी टिप्पणियों पर सिटपिटा उठते हैं और उलटे विधायकों पर दोष मढ़ देते हैं. जैसे कि बेनीप्रसाद वर्मा ने कहा भी, "विधायकों को भी तो अपने और कांग्रेसियों में फर्क रखना चाहिए. ये लोग उसी तरह तबादलों और प्रोन्नतियों के मामलों में लगे रहें और हमसे फर्क चाहें, यह कैसे होगा."

सात महीने पहले जब यह सरकार नई-नई बनी थी तब उसमें और पूर्ववर्तियों में फर्क साफ दिखता था. विधान भवन के गलियारों में मंत्रियों के कक्ष और उनके आवास विधायकों और लोगों से अटे रहते थे. पर महीने-दो महीने बाद ही कई मंत्रियों के कक्षों में तख्तियां टंग गईं—"मंत्री जी बाहर गए हैं." फिर भी उस शुरुआती दौर में एक मंत्री ऐसे भी थे जो तब भी अनुपलब्ध थे, आज भी हैं. बरफिया लाल जुवांठा (पर्वतीय विकासमंत्री) अब ज्यादातर नदारद मिलते हैं. कुछ तो अपने बंगलों में ही गुम हो जाते हैं. कुछ ने अड्डे खोज लिए हैं. जद के युवा विधायक ओमप्रकाश सिंह के मुताबिक "अब इन लोगों को भी हवा लग गई है."

लेकिन श्रममंत्री आजम खां कहते हैं, "कुछ आप लोगों (पत्रकारों) की मेहरबानी और कुछ हमारी मजबूरियां कि चाहते हुए भी वैसा फर्क नहीं आया कि साफ झलकता. पर फर्क तो इसी में है कि मंत्रिमंडल में मैं अभी तक मौजूद हूं." दरअसल पिछले दिनों उनको लेकर बवाल ही ऐसे उठे थे कि मंत्रिमंडल में उनका कायम रहना सचमुच आश्चर्यजनक है.

हां, मंत्रियों को लेकर उठने वाले बवालों के मामले में निश्चय ही फर्क आया है. इंका विधायक और पूर्व मंत्री प्रमोद तिवारी चटखारे लेकर गिनाते हैं. "एक तस्करी करा रहा है, एक 'लव इन एअर' में मशगूल है, एक ब्लैक लिस्टेड दवा कंपनी को स्वास्थ्य विभाग सौंपे हुए है और एक और की शामें कानपुर सर्किट हाउस में गुलजार हो रही हैं." तिवारी के सारे आरोप तथ्यगत हों, ऐसा नहीं है परंतु कुछ मामलों में तो सरकार वाकई मुश्किल में पड़ी. मसलन, स्वास्थ्यमंत्री मुख्तार अनीस की 1980-81 के दौर में रासुका में निरुद्ध किए गए दवा निर्माता को लाभ देने के मामले पर सरकार को विधानसभा में जांच का आश्वासन देना पड़ा. एक और चर्चित मामला सिंचाईमंत्री द्वारा एक युवा आईएएस महिला अधिकारी को अस्वाभाविक संरक्षण देने से संबंधित है.

लेकिन इस सारी बातचीत को उत्तर प्रदेश के गन्ना विकासमंत्री रामशरण दास एकदम उलट देते हैं. वे ललकारते हैं, "इन कांग्रेसवालों को सुनो ही ना. झूठे हैं सारे के सारे. फरक कैसे नी आया जी. कितने अफसर निकाल दिए, कित्तों कूं ससपेंड कर दिया और कित्तों पे कार्रवाई करा दी है. कांग्रेस के जमाने में बी हुआ इत्ता? और किसान कूं कित्ता फरक आ गया है गाम में जाके देख आवो." शिक्षामंत्री सच्चिदानंद वाजपेयी का कहना है, "इस बार केंद्र और राज्य दोनों स्तर पर एकरसता से पहल करना आसान है. मसलन, प्राथमिक विद्यालय के भवनों के निर्माण के सवाल को जैसी प्राथमिकता आज मिली वैसी अतीत में संभव न होती."

लगभग सभी मंत्री इस सवाल से कतराते हैं कि वे पूर्ववर्ती कांग्रेसी मंत्रियों से किस मायने में भिन्न हैं

अपने बचाव में कैबिनेट मंत्री बेनीप्रसाद वर्मा के तर्क कुछ मौजूं लगते हैं. वे कहते हैं, "फर्क तो इसी में देख लेना चाहिए कि वे (कांग्रेसी) अपनी कुर्सी की हिफाजत के लिए महीने में दो-दो हफ्ते दिल्ली पड़े रहते थे जबकि हमारे साथी काम कर रहे हैं. हां, सदन में हमारे लोग उतनी सफाई से झूठ बोलना और मामला टालना नहीं जानते."

बहरहाल, मंत्रियों और विरोधियों के आरोपों-प्रत्यारोपों के चलते कहा जा सकता है कि बीतते समय के साथ 'वही रफ्तार बेढंगी' वाली उक्ति सच होती दिख रही है.

—शीतल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजयेंद्र त्यागी

मुलायम सिंह यादव को हिंदुवादी संगठनों के प्रकोप से भले ही वी.पी. सिंह ने बचाया, पर वे सरकार के गठन के बाद चंद्रशेखर से ही चिपके रहे

वें आंदोलन की योजना बना सकते हैं, उसे सही समय पर शुरू कर सकते हैं, उसकी सही तैयारी कर सकते हैं और आंदोलन शुरू होने के बाद उसका पूरे हौसले के साथ नेतृत्व कर सकते हैं.

ऐसी राजनैतिक उथलपुथल पैदा करने के बाद अब यह तय है कि टिकैत भी अपनी मांग रखेंगे. उन्हें दो किसानों की मौत और 20,000 किसानों की गिरफ्तारी का भी बदला लेना है. रिहाई के बाद देवीलाल से दिल्ली में उनकी भेंट भी मुलायम-देवीलाल-चंद्रशेखर समीकरण को नया आयाम देगी. मौके का महत्व समझते हुए देवीलाल अपने निवास पर टिकैत के पहुंचने का इंतजार करने के बदले उनसे मिलने ग्रेटर कैलाश पहुंच गए जहां टिकैत अपनी बहन के यहां ठहरे थे. मुलाकात के बाद दोनों ने सिर्फ यही कहा कि उनके बीच "हुक्का-पानी की बात हुई."

बहरहाल, इससे स्पष्ट है कि धनी किसानों की ताकतवर लॉबी के इन दोनों नेताओं को पिछले पखवाड़े की घटनाओं ने नजदीक ला दिया. संभावना यह है कि टिकैत अंततः धनी किसानों को अपने साथ करने की कोशिश कर सकते हैं जिनके एकछत्र नेता फिलहाल देवीलाल बने हुए हैं. पिछले चुनावों में टिकैत ने पूरी तरह से जनता दल का साथ दिया था. देवीलाल यह भलीभांति जानते हैं कि अगर वे साथ आ गए तो कितना ताकतवर गठजोड़ बन जाएगा. लेकिन देवीलाल चतुर नेता हैं. वे टिकैत को ज्यादा ताकतवर और धनी किसानों का एकछत्र नेता बनने देना तो कभी नहीं चाहेंगे.

इस लिहाज से मुलायम ने सबसे बड़ी गलती यह की है कि उन्होंने अपनी सरकार की किसानों की सरकार वाली छवि को नष्ट किया है. सरकार के गठन के तुरंत बाद के दिनों में मुलायम ने देवीलाल को उतनी अहमियत नहीं दी जितनी देनी चाहिए थी. वे चंद्रशेखर से ही चिपके रहे. अब स्थिति यहां तक पहुंच गई है कि वे चंद्रशेखर से नहीं, देवीलाल से ही अपने उद्धार की उम्मीद कर सकते हैं.

मुलायम की अपनी योजना के मुताबिक उन्हें करीब 100 पिछड़े और मुस्लिम विधायकों का समर्थन लेना होगा. उन्हें पूर्व लोकदल (अ) के 62 विधायकों और जनमोर्चा के 30 विधायकों का समर्थन भी जुटाना है. उनका दावा है कि उन्हें 32 निर्दलीय विधायकों और कांशीराम की बहुजन समाज पार्टी के 13 विधायकों का समर्थन हासिल है. लेकिन करीब 125 विधायकों का समर्थन दिखाकर अगर मुलायम सत्ता में बने रहने की जुगत भिड़ा भी लेते हैं तब भी उनकी सरकार का कामकाज जैसा रहा है वह उनकी स्थिति को कतई मजबूत नहीं करता.

सत्ता पर अपनी पकड़ मजबूत करने की कोशिश के साथ ही वे ज्यादा से ज्यादा विभागों को अपने अधीन रखना भी नहीं भूले. फिलहाल उनके पास 44 विभाग हैं जिनमें नियुक्ति, सूचना, गृह, बिजली, उद्योग, कृषि, आवास, सहकारिता, परिवहन और पर्यटन विभाग प्रमुख हैं. बाकी 13 मंत्रियों को (सभी कैबिनेट स्तर के) ज्यादातर महत्वहीन विभाग ही दिए गए हैं. चार मंत्री तो ऐसे हैं जो सिर्फ दो विभागों का काम देखते हैं और एक मंत्री के जिम्मे सिर्फ एक ही विभाग है. जाहिर है, मुलायम को अपने मंत्रियों पर भरोसा रखने का दोषी नहीं ठहराया जा सकता. और न ही यह लगता है कि उन्हें अपने दूसरे विधायकों पर भरोसा है.

उत्तर प्रदेश जैसे राज्य को महज 13 मंत्रियों के बूते चलाना कतई संभव नहीं लगता. पर वे दूसरे विधायकों को उम्मीद बंधाए रखने की पुरानी और भरोसेमंद नीति पर ही चलते दिख रहे हैं. उन्हें यह सबक जरूर इंका के पूर्व मुख्यमंत्री बीरबहादुर सिंह से ही मिला होगा. बीरबहादुर 1985 में साल भर तक सिर्फ 16 मंत्रियों से ही काम चलाते रहे.

इसलिए अंततः मुलायम ने अपने विधायकों और पार्टी के दिग्गज नेताओं के साथ जैसा बरताव किया, वैसा ही जवाब पाया. संकट की मामूली-सी आशंका पर भी ये विधायक मुलायम को गड्ढे की ओर धकेलने में कोई संकोच नहीं करते पाए गए. बहरहाल, मुलायम गड्ढे के मुहाने तक पहुंच गए हैं और नीचे न गिरने के लिए पूरी ताकत लगा रहे हैं. एक हल्का झटका भी शायद उनके लिए भारी पड़ जाए.

वैसे, संभावना तो यही है कि उन्हें बचने का एक मौका तब और मिलेगा जब बाबरी मस्जिद मार्च शुरू होगा. शंकराचार्य के मामले में जैसी सख्ती उन्होंने दिखाई वैसा ही संकल्प उन्होंने इस बार भी दिखाया, या प्रधानमंत्री ने जिस चालाकी से विहिप नेताओं को फुसला लिया था उसी चालाकी से मुलायम ने इस मार्च के नेताओं से निबटने का कौशल दिखाया तब शायद वे इस गड्ढे के मुहाने से वापस हो जाएं.

—दिलीप अवस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वनाथ प्रताप सिंह

कगार से चोट खाकर वापसी

इंद्रजीत बधवार और प्रभु चावला

इसे अजब-गजब नौटंकी कहें, जूतम-पैजार, तमाशा या फिर प्रहसन. बहरहाल, पूरा देश उस घिनौनी लड़ाई को देखकर सन्न रह गया जिसने भारत में दूसरी बार साझा सरकार के प्रयोग को लगभग तबाही के कगार पर ला खड़ा किया था.

आखिरी अंक का परदा गिरते-गिरते प्रधानमंत्री ने अपना इस्तीफा जिस भीरुता से दिया था, उसी प्रकार वापस भी ले लिया. केंद्र सरकार तो बच गई पर एक दुखदायी और विवादास्पद मुख्यमंत्री को औंधे मुंह गिरना पड़ा. हर किसी को जीवनदान तो मिला पर उसमें कलह के बीज भी थे. और वे सब प्रतिद्वंद्वी बनकर रह गए. ग्रामीण बनाम शहरी, जाट बनाम जाट. हर कोई एक-दूसरे के खिलाफ खड़ा था.

40 साल में पहली बार ऐसा लगा कि देश में न कोई केंद्रीय पार्टी थी और न उसका मान्य नेता. सारे पीर, भिश्ती, बावर्ची अपनी-अपनी राजनैतिक खिचड़ी पका रहे थे, जबकि मुख्य रसोइए की भूमिका निभाने की जिम्मेदारी ओढ़े विश्वनाथ प्रताप सिंह मूसल के डर से ओखली में सिर छुपाते फिर रहे थे.

उनमें नेतृत्व देने का अभाव दिखा. वे और उनकी सरकार बच गई तो इसका श्रेय उनकी ताकत या पुख्ता कार्रवाई को नहीं जाता. दरअसल, यह श्रेय जनमत, पार्टी के मुट्ठी भर प्रतिबद्ध नेताओं और राष्ट्रीय मोर्चे के सहयोगी दलों को मिलना चाहिए जो बढ़ते राजनैतिक शून्य पर रोक लगाने के प्रति दृढ़ रहे.

इससे भी अधिक खूंखार मुठभेड़ों का अंदेशा बढ़ गया है. घाव अभी हरे भी हैं और गहरे भी. जनता दल के लिए इस संकट का मतलब सिर्फ इतना था कि उसके दिन लद रहे हैं.

आगे वह घड़ी भी करीब आ सकती है जहां वादे निभाने की जगह अधिक खतरों और अधिक अनिश्चितता से जुड़ी मुठभेड़ें हों जिनसे नए समीकरण और खतरनाक संभावनाएं पैदा हो सकती हैं.

देवीलाल बनाम वी.पी. सिंह

क्या वे फिर लड़ेंगे?

गड़बड़ तो यह है कि एक राजपूत घराने में जन्मा और दूसरा जाट घराने में, यानी दोनों परंपरागत रूप से जुझारू जातियों में पैदा हुए. वर्ग भेद ने इस गड़बड़ी में और इजाफा ही किया है जिसके चलते सुलह की गुंजाइश ही नहीं बचती. राजा पब्लिक स्कूल में पढ़े सामंती राजपूत हैं और ताऊ भारी आवाज वाले ठेठ देहाती. दोनों अड़ियल भी बहुत हैं. पर इतिहास में संयोग की वजह से साथ-साथ चलने को मजबूर दोनों शख्स जब कभी टकराते हैं तो चकमक की तरह चिंगारियां छूटती हैं.

और ऐसा हो भी क्यों नहीं? दोनों ही राजीव के तख्ता-पलट का श्रेय लेना चाहते हैं. यह सही भी है कि देवीलाल के समर्थन के बिना विश्वनाथ प्रताप सिंह शायद ही प्रधानमंत्री बन पाते और विपक्षी एकता की बात नक्कारखाने में तूती भर ही होती. पर वी.पी. सिंह प्रधानमंत्री बन गए. देवीलाल ने यह स्थिति कबूल भी कर ली मगर वी.पी. सिंह का दंभ उन्हें खलता है.

अपमान का घूंट ही होता तो देवीलाल पी भी जाते पर जीती बाजी में से हिस्सा छोड़ना उन्हें गवारा नहीं था. इसी हिस्से की वे निरंतर मांग करते आ रहे हैं. ताऊ अब राष्ट्रीय स्तर की नेता ही नहीं, प्रचार माध्यमों के पर्याप्त आकर्षण के केंद्र भी हैं. हरियाणवी जाट अब हरियाणा का राज पाकर ही संतुष्ट नहीं, वे ताऊ के जरिए दिल्ली की सल्तनत में भी हिस्सा बंटाना चाहते हैं.

इसी मुद्दे पर आकर दूसरे मंत्री ताऊ की दखलंदाजी का विरोध करते हुए वी.पी. सिंह से उन पर लगाम लगाने की फरियाद करते हैं. और देवीलाल के पिछलग्गू अक्सर चौटाला के जरिए ताऊ के गंभीर रूप से आहत अहं को आसमान पर चढ़ा देते हैं.

वे उन्हें उकसाते हैं कि असली प्रधानमंत्री तो आप ही हैं. हमने आपको समर्थन दिया. पर बदले में आपने हमें कुछ नहीं दिलवाया. और देवीलाल आक्रामक हो उठते हैं. यहां तक कि ग्रामीण बनाम शहरी विचारधारा का भी वे ढिंढोरा पीटने लगते हैं. फिर वे पैंतरा बदलकर उन सभी नीतियों और व्यक्तियों की तारीफ शुरू कर देते हैं जिनकी पहले उन्होंने आलोचना की थी.

यही खतरनाक लक्षण है. अड़ियल होने के बावजूद वे बदल जाते हैं. यह मानना मूर्खता होगी कि उन पर काबू पा लिया गया है. क्योंकि झगड़ों को जन्म देने वाले कारण जस के तस मौजूद हैं. उधर, वी.पी. सिंह देवीलाल की तुष्टि के लिए पलटा खा लेंगे, यह मानना भी मूर्खता ही होगी. क्योंकि इससे जनता दल के दूसरे लोग उनके विरोधी हो जाएंगे. सत्ता में बने रहने के

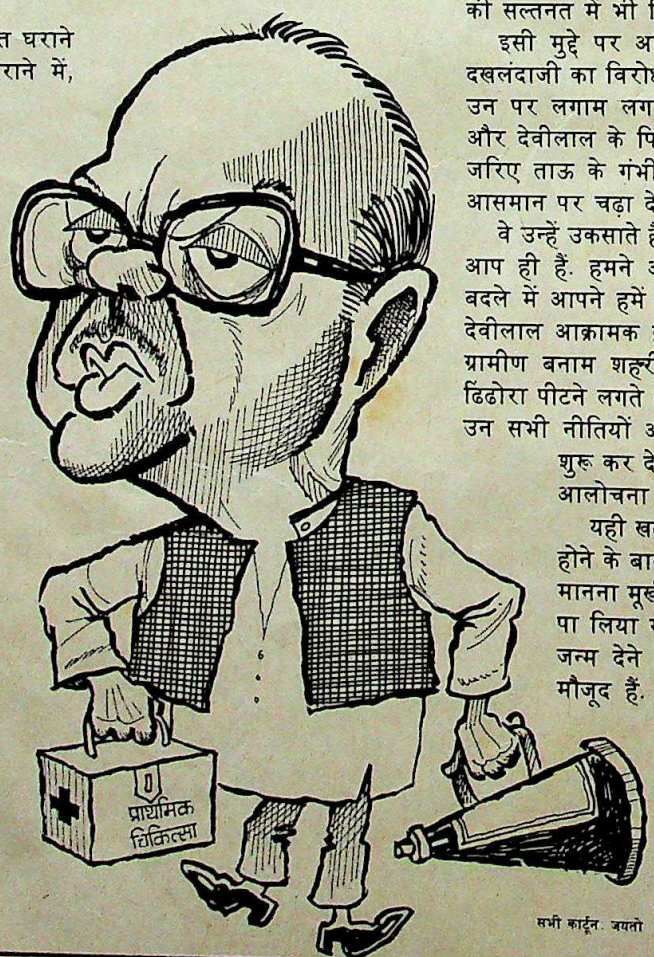

सभी कार्टून: जयंतो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए उन्हें उन लोगों की भी उतनी ही जरूरत है.

और सबसे ज्यादा आशंका तो इस बात की है कि दोनों नेता उन नीतियों पर ही भिड़ जाएं जिन पर वे मोटे तौर पर सहमत हैं. मसलन, देश के 50 फीसदी संसाधनों को कृषि क्षेत्र में लगाने का मामला ही लें. देवीलाल इसे सहायता, अनुदान, मुफ्त भोजन, कर्ज माफी वगैरह के रूप में अमली जामा पहनाना चाहते हैं जबकि वी.पी. सिंह के लिए इसका मतलब कृषि आधारित उद्योग लगाना, रोजगारोन्मुखी योजनाएं तैयार करना, सड़कें बनाना और ग्रामीण तकनीक अपनाना है.

जटिलताएं और भी हैं. वी.पी. सिंह जनमोर्चे के अपने जिन साथियों से अभी भावनात्मक लगाव रखते हैं, वे चाहते हैं कि देवीलाल को दूध से मक्खी की तरह निकाल दिया जाए. उनके मुताबिक देवीलाल सरकार की अस्थिरता के प्रतीक हैं.

अपने प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ फिलहाल वी.पी. सिंह की रणनीति यह होगी कि भाजपा और वामपंथी दलों को देवीलाल विरोधी खेमे में लामबंद किया जाए, देवीलाल समर्थक मुख्यमंत्रियों और सांसदों को निजी रूप से अपने साथ मिलाया जाए और पार्टी व सरकार के महत्वपूर्ण पदों पर उनके लोगों की नियुक्तियां रोकी जाएं. इससे ताऊ का खून ही खौलेगा. वे अपने शहर विरोधी नारों से विश्वनाथ विरोधी जहर उगलेंगे. और जातियों के उस असरदार गठजोड़ के बूते मैदान में डट जाएंगे जिसने पिछले आम चुनाव में जनता दल को इंका से बीस बना दिया था.

पर वे यह लड़ाई किस हद तक ले जाएंगे? हर बार की तरह बस एक ही आशा है. जब-जब वे हल्ला बोलने बढ़ते हैं उन्हें पीछे हटना पड़ता है. वे चाहते हैं कि इतिहास उन्हें चरण सिंह की संतान के बतौर नहीं, देवीलाल की तरह याद करे. उनके भीतर उठे बवंडर को यही एक तर्क शांत करता रहता है. वे इज्जत के भूखे हैं जो दंभी राजा उन्हें नहीं दे पा रहे. पर अगर वे अपने अहं को काबू कर पाएं तो इतिहास उन्हें जरूर सिर आंखों पर बिठाएगा.

अरुण नेहरू बनाम देवीलाल

कौन किसकी कब्र पहले खोदेगा?

प्रधानमंत्री अभी भी अपनी ग्रामीण छवि को उभारकर ताऊ पर अस्थायी जादू चला पाने में सक्षम हैं. पर अरुण नेहरू का क्या होगा जिनका नाम देवीलाल के राजनैतिक पैशाचिकी कोश में शैतान के अवतार की जगह लिखा हुआ है?

दोनों ही धर्मशाला और ओबेरॉय ग्रैंड की तरह एकदम एक-दूसरे से भिन्न हैं. अरुण नेहरू को देवीलाल आधुनिक चरण सिंह लगते हैं. उधर, देवीलाल को अरुण जवाहरलाल नेहरू के अवतार दिखाई पड़ते हैं उनमें वह हर 'शहरी' आदत मौजूद है जिनके खिलाफ ताऊ ने आडंबर रच रखा है.

उनकी समानताएं भी उन्हें जोड़ती नहीं, तोड़ती हैं. दोनों ही दबंग हैं और अपने आदेशों का तत्काल पालन चाहते हैं. अरुण नेहरू को यह शैली उस समय से विरासत में मिली है जब वे बेमुरव्वत कंपनी मैनेजर हुआ करते थे जिनका एक ही गुरुमंत्र होता है—अमल करो, अमल करो, अमल करो. पर देवीलाल के इस गुण में चौपाल की मुखियागिरी की झलक मिलती है. दोनों में एक महत्वपूर्ण अंतर है. देवीलाल मोर्चे पर खड़े होकर रणभेरी बजाते हैं जबकि अरुण नेहरू दूसरों के कंधों पर रखकर बंदूक चलाना ही समझदारी मानते हैं.

अपने आप में अरुण नेहरू किंगमेकर हैं. वे न सिर्फ राजीव गांधी की मात की रणनीति तैयार करने वाले जनमोर्चा नेता हैं बल्कि वी.पी. सिंह को प्रधानमंत्री बनाने के लिए आखिरी समय पर चौटाला और चंद्रशेखर को देवीलाल से अलग करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले जनता दल के घाघ नेता भी हैं.

देवीलाल भी किंगमेकर हैं. दोनों किंगमेकर सरकार पर अपना दबदबा चाहते हैं. अरुण नेहरू के पास इसके कई तरीके हैं—असरदार उद्योगपतियों के बीच वे खासे लोकप्रिय हैं, पार्टी के कोष पर उनका कब्जा है और सार्वजनिक क्षेत्र के ताकतवर नौकरशाह भी उनके साथ हैं. देवीलाल मानते हैं कि अरुण इंद्रकुमार गुजराल, मुफ्ती मुहम्मद सईद, आरिफ मुहम्मद खां और एम.एस. गुरुपदस्वामी जैसे अपने सहयोगियों के जरिए सार्वजनिक क्षेत्र में उनके लोगों की नियुक्तियां रुकवा दिया करते हैं.

दोनों एक-दूसरे को इस कदर घाव दे चुके हैं कि उनकी दुश्मनी खत्म नहीं हो सकती. देवीलाल अभी भी खार खाए बैठे हैं कि इस्तीफों की रणनीति अरुण नेहरू ने तैयार की थी जिसकी वजह से चौटाला को इस्तीफा देना पड़ा और हरियाणा में तथा देश की राजनीति में उनके सम्मान को बट्टा लगा.

और देवीलाल ने भी उन पर वैसा ही घातक हमला किया. उन्होंने अरुण और आरिफ पर बड़े सौदों में दलाली खाने का आरोप लगाया. यह पहला मौका था जब किसी मंत्री ने अपने ही सहयोगियों पर लिखित रूप से इतना गंभीर आरोप लगाया हो.

अरुण नेहरू की रणनीति यह है कि चुनाव और नए राजनैतिक समुद्र मंथन की ओर ले जाने वाले किसी भी संकट से पहले देवीलाल की छवि नष्ट कर दो. अगर देवीलाल अरुण पर भ्रष्टाचार, दलाली और विदेशी बैंक खातों का आरोप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगाते रहे तो अरुण भी हाथ पर हाथ धरकर नहीं बैठेंगे. दोनों दूसरों के कंधों पर बंदूक रखकर अपनी लड़ाई लड़ेंगे.

नेहरू कीचड़ उछालने में माहिर हैं ही, इसलिए वे इस बात का पक्का इंतजाम करेंगे कि महम कांड में सीबीआई की जांच ठंडी न पड़े. इसके अलावा वे चौटाला की बहू सुप्रिया की 1987 में हुई संदिग्ध मौत और जमीन के सौदों में देवीलाल के परिवारीजनों द्वारा ली गई घूस जैसे पुराने मामलों पर भी धूल न जमने देने की कोशिश करेंगे. फिलहाल, नेहरू खुद को सरकार तथा मूल्य आधारित राजनीति के रक्षक साबित करने और साथ ही देवीलाल को संहारक तथा भाई-भतीजावाद की राजनीति के संचालक के रूप में पेश कर पाने में कामयाब रहे हैं. इसलिए वे ऐसे विजेता हैं जिसका बाल भी बांका नहीं हुआ.

मुख्यमंत्री बनाम वी.पी. सिंह

दबदबा किसका?

सरकार पर अगर वी.पी. सिंह का सिक्का चलता है तो उनकी पार्टी के मुख्यमंत्री भी नाजुक संतुलन बिठाने में लगे हैं. वे सिंह की गद्दी तो सलामत रखना चाहते हैं पर उन्हें ज्यादा ताकतवर नहीं होने देना चाहते. उनका मानना है कि इससे प्रधानमंत्री पशोपेश में पड़े रहेंगे.

इन मुख्यमंत्रियों में प्रमुख हैं—चिमनभाई पटेल, मुलायम सिंह यादव, लालू प्रसाद यादव और बीजू पटनायक. उन्होंने अपने प्रदेश के पार्टी सांसदों को वी.पी. सिंह को प्रधानमंत्री बनाने के लिए राजी करके खासी भूमिका निभाई. अपने प्रदेश के पार्टी सांसदों पर अभी भी उनका खासा असर है. इसी के चलते वे अपने प्रदेश के हित में सीधे प्रधानमंत्री से संपर्क साधते हैं.

उन पर केंद्र का वैसा नियंत्रण नहीं, जैसा पहले होता था. इस नई आजादी को बचाने की वे जी-तोड़ कोशिश में हैं. इस अनुभव में जितनी नवीनता है उतना ही यह मजेदार भी है.

मसलन, इंका के मुख्यमंत्री प्रधानमंत्री अथवा उनके कैबिनेट सहयोगियों से मिलने की खातिर राज्य भवनों में महीनों डेरा जमाए रहते थे, जबकि पिछले पांच महीनों में मुलायम सिंह यादव दिल्ली में सिर्फ पांच दिन और बीजू पटनायक तीन दिन ही रहे.

कमजोर केंद्र की वजह से उनकी ताकत भी और बढ़ती है. और इस स्थिति में वे वी.पी. सिंह या देवीलाल में किसी एक के भरोसे नहीं रह सकते. और इसका सबूत भी हाल ही के संकट के दौरान दिखा जब लालू प्रसाद यादव को छोड़ कोई भी मुख्यमंत्री चौटाला के खिलाफ नहीं बोला. उन्होंने ऐसे मध्यस्थों और सत्ता के दलालों की भूमिका निभाई जिनकी सलाह और सहमति की सभी मुख्य खिलाड़ियों को जरूरत थी.

वी.पी. सिंह के प्रति झुकाव में भी उन्होंने सतर्कता बरती. आखिर वे अभी भी उन्हें सबसे ज्यादा वोट दिलाने में सक्षम हैं और ऐसे समय में उनसे नाता तोड़ना आत्महत्या के माफिक ही होगा.

हाल के संकट में उनका पूरी तरह बोलबाला भले ही न रहा हो पर अपने पूर्ववर्ती इंकाई मुख्यमंत्रियों के मुकाबले वे निश्चय ही ज्यादा सक्रिय रहे.

एक बात तय है कि केंद्र की राजनीति जैसे-जैसे गरम होगी राष्ट्रीय नेताओं को उनके समर्थन की जरूरत और ज्यादा महसूस होगी. इससे भविष्य में उनका दबदबा बढ़ेगा ही.

बोम्मई का आगमन

छुपे रुस्तम साबित हुए

पार्टी अध्यक्ष पद के लिए सोमप्पा रायप्पा बोम्मई का पहले समर्थन चंद्रशेखर, देवीलाल और अजित सिंह ने पूरे नफे-नुकसान का जोड़-तोड़ बिठाकर किया था. वजह—बोम्मई की पृष्ठभूमि तो ग्रामीण थी लेकिन उनका कोई आधार नहीं था और वी.पी. सिंह ने यह पेशकश मान ली.

बोम्मई लिंगायत जमींदार हैं और जिंदगी भर सफेद के अलावा कोई और रंग उन्होंने नहीं पहना है. मई में जिस दिन उन्होंने पार्टी अध्यक्ष का पद संभाला उसी दिन उन्होंने जाहिर कर दिया कि वे मजबूत इरादों वाले व्यक्ति हैं. पहले ही दिन उन्हें देवीलाल से कहना पड़ा कि चौटाला या तो इस्तीफा दें अन्यथा उन्हें निष्कासित कर दिया जाएगा.

यह तो पहल भर थी, जल्द ही सबको पता चल गया कि जनता दल में अध्यक्ष के रूप में एक अनोखा और अबूझ तत्व प्रविष्ट हो

गया है. 66 साल की उम्र में यदि किसी पर नैतिक दायित्व थोप दिए जाएं तो उस ऊंचाई तक वह उठ ही जाता है. कर्नाटक राजनीति का यह अनजान-सा राजनीतिक जब राष्ट्रीय राजनीति के मंच पर आ गया तो वह भी ऐसी ही उंचाइयों तक उठ गया.

राजधानी पहुंचने के बाद उन्होंने सबसे पहले वी.पी. सिंह से इस बात का प्रतिवाद किया कि उन्होंने चौटाला को दुबारा गद्दी पर बैठने क्यों नहीं दिया. फिर, उन्होंने चौटाला को खरी-खरी सुनाई और बनारसीदास गुप्ता के इस्तीफे के लिए फटकार लगाई.

वी.पी. सिंह को पार्टी अध्यक्ष के कुछ अप्रिय सवालों के जवाब भी देने पड़े. इनमें एक यह था कि उन्होंने हत्या प्रकरण में उलझे अपने नजदीकी रिश्तेदार संजय सिंह को किन परिस्थितियों और किस तरकीब से राज्यसभा का सदस्य बनवा दिया?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोम्मई की हठधर्मी निश्चय ही पार्टी में उनका महत्व बढ़ाएगी. पार्टी के भीतरी झगड़े भी शायद कम होंगे और पार्टी के चुनाव और नए पदाधिकारियों का चयन होने के बाद प्रधानमंत्री का राजनैतिक हमलों से बचाव भी हो सकेगा.

पिछले बीस वर्षों से परंपरा रही है कि प्रधानमंत्री सत्तारूढ़ पार्टी का अध्यक्ष होता आया है. बोम्मई की भूमिका पार्टी के भीतर एक नई राजनैतिक प्रक्रिया की शुरुआत है. वह है सत्ता का विकेंद्रीकरण.

चौधरी बनने की होड़

दोस्ती का दौर या दुश्मनी का?

पहला धोतीधारी, मुंहफट, चढ़-दौड़ने को उतारू और कुर्सी के लिए इस कदर बेताब कि जैसे कबड्डी खेल रहा हो. दूसरा, एकदम शहरी, विदेश में पढ़ा, आईबीएम जैसी नामी कंप्यूटर कंपनी में अधिकारी रह चुका और अपने पूरे रंग-ढंग से राजीव की दून स्कूल मंडली के सदस्य जैसा लगने वाला.

दोनों ही अपने पिता के उत्तराधिकारी हैं. चौटाला अपने 'बापू' देवीलाल की महत्वाकांक्षाओं के, तो अजित सिंह अपने पिता चरण सिंह की संपत्ति और पार्टी के.

दोनों ही अब अपनी इस राजनैतिक विरासत का 'चेक' भुनाकर जाटों का नंबर एक नेता बनने की फिराक में हैं. लेकिन अब तक किसी को भी सफलता नहीं मिली है.

अजित सिंह के पास आज काफी कुछ है: प्रभावशाली मंत्रालय, 30 से अधिक सांसदों पर नियंत्रण नहीं तो प्रभाव, उत्तर प्रदेश से 60 से ऊपर विधायकों का समर्थन और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के एक बड़े भाग में, जो हरियाणा से छोटा तो नहीं ही है, काफी असर.

लेकिन लगता है कि यह जोर आजमाइश कम-से-कम हाल के संकट के समय उनके नियंत्रण से बाहर हो गई है. यह वे अजित सिंह नहीं हैं जिन्होंने मुलायम सिंह यादव के खिलाफ मुख्यमंत्रित्व के संघर्ष में उतरकर वहां देवीलाल खेमे को ललकारा था. यह वे अजित सिंह भी नहीं हैं जो महम में हुई हिंसा के बाद वहां गए और चौटाला पर खूब बरसे.

इस बार के विवाद में उन्होंने चुप्पी लगा लेना ही बेहतर समझा. ऐसा लगा कि बड़े जाट नेताओं में संधि हो गई है. चौटाला विरोधी कड़ा रुख अपनाने और राजनैतिक फायदे लेने का यह उनके लिए अच्छा मौका था. मिलता लेकिन वे चूक गए.

इससे बढ़िया मौका शायद ही मिलता. पूरी दुनिया उनके पक्ष में हो जाती. लेकिन उन्होंने करीब-करीब आत्मसमर्पण ही कर दिया. और इस प्रकरण में अगर चौटाला हारे तो अजित सिंह भी हारे ही.

लेकिन अजित सिंह जानते हैं कि जाट आरपार की लड़ाई में भरोसा करते हैं और जब तक कि एक पक्ष चित न हो जाए, दूसरे को विजयी नहीं माना जाता. उनकी छवि पर चौटाला जितने दाग नहीं लगे हैं. उन्हें अभी यही फायदा है.

जब कभी भी जाट राजनीति की विवशताएं उन्हें लड़ने को मजबूर करेंगी यह बात उनके हक में होगी. उन्हें नंबर एक जाट नेता बनना है तो यह लड़ाई भी लड़नी ही पड़ेगी. और सच पूछिए तो 'जाट युद्ध' अभी समाप्त नहीं हुआ है.

महत्वाकांक्षी चंद्रशेखर

क्या दरकिनार हो रहे हैं?

रूखी दाढ़ी और जख्मी शेर-सी आंखों वाले इस व्यक्ति का मुखड़ा उसके मन की बातें बता देता है. ईर्ष्या, सत्ता न मिलने की नाराजगी और फिर व्यवस्था विरोधी समाजवादी इच्छाएं इस शख्स के कठोर चेहरे से साफ झलकती हैं. यह वह दूसरा राजपूत है जिसे गद्दी नहीं मिल पाई.

साठ के दशक में लोग उन्हें युवा तुर्क कहा करते थे क्योंकि उनका मानना था कि शास्त्री जी के बाद सत्ता के वे स्वाभाविक उत्तराधिकारी हैं. लेकिन इंदिरा गांधी ने उन्हें औकात बता दी.

जनता राज में जब उनके सरपरस्त जेपी ने प्रधानमंत्री पद के लिए मोरारजी देसाई का समर्थन कर दिया तो वे टूट गए.

कड़वाहट से भरा यह अकेला दुखी जीव पूरे ग्यारह बरस तक जनता पार्टी की मशाल थामे विपक्ष को एक करने की कोशिशें चलाता रहा. तभी उनके अपने उत्तर प्रदेश से वी.पी. सिंह नक्षत्र की तरह उभरे और इंका से निकलकर विपक्ष के नेता बन गए. बाजी फिर हाथ से निकल गई.

ऐसा नहीं कि इस व्यक्ति में कोई काबिलियत नहीं है. चंद्रशेखर सिद्धांतों के मामले में निष्ठावान और मुखर रहे हैं, भले ही सिद्धांत कितने भी पुराने हों.

बिहार, असम और कर्नाटक के निचले स्तर के कार्यकर्ताओं तक उनकी सीधी पहुंच है. वे वरिष्ठ राजनेता और कुशल रणनीतिज्ञ हैं, इसलिए सांसद उनका सम्मान करते हैं.

लेकिन सत्ता पाने की कोशिश का तरीका ठेठ समाजवादी है जो चाहता है कि सिर्फ उसी की बात सुनी जाए.

और बिना किसी अपराध बोध के वे अपने पक्ष बदलते हैं—आज देवीलाल का पक्ष लेंगे तो कल विरोध करेंगे. आज राजीव गांधी की आलोचना करेंगे तो कल प्रशंसा. जब चौटाला ने महम कांड के बाद शपथ ग्रहण की तो चंद्रशेखर ने वी.पी. सिंह के खिलाफ देवीलाल का समर्थन पाने के लिए चौटाला का पक्ष लिया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन उन्होंने अपने प्रबल प्रतिद्वंद्वी वी.पी. सिंह को नुकसान पहुंचाने का स्वर्णिम मौका गंवा दिया. अगर उन्होंने चौटाला के कड़े विरोध का रुख अपनाते हुए वी.पी. सिंह पर आदर्शों के हनन का आरोप लगाया होता तो बाजी उनके हाथ आ जाती.

राजनीति का मतलब ही है मौके न गंवाना. लेकिन चंद्रशेखर चुप रह गए और अरुण नेहरू वगैरह ने बाजी मार ली. जो काम चंद्रशेखर को करना चाहिए था—यानी वी.पी. सिंह पर बरसने का, वह उन्होंने किया. एक बार फिर वे हाशिए पर चले गए.

फिर भी संसद में सुबोधकांत सहाय और हरिकिशोर सिंह जैसे उनके प्रबल समर्थक हैं जिनका राजनैतिक जीवन उन्होंने निखारा है और जिन्हें वे ही केंद्र में ले आए हैं.

लेकिन ये भी उनके अंधभक्त नहीं हैं. ये नौजवान हैं और सरकार में तोड़-फोड़ करके अपने राजनैतिक जीवन को जोखिम में नहीं डालना चाहते. न ही वे चंद्रशेखर के साथ अपना राजनैतिक जीवन नत्थी कर देना चाहते हैं. इसके बावजूद चंद्रशेखर चुपचाप नहीं बैठ सकते. 1969 से वे कभी चुप नहीं बैठे. वे सैद्धांतिक मुद्दों, आर्थिक नीतियों, औद्योगिक नीति वगैरह पर वी.पी. सिंह पर बरसते रहेंगे और संसद में अपने कदमों का इंका से समर्थन कराके प्रधानमंत्री को परेशान करते रहेंगे. क्योंकि दुश्मन का दुश्मन आखिर दोस्त जो है.

आत्मकेंद्रित सहयोगी

वी.पी. सिंह के साथ, पर अनिश्चित

भाजपा और वामपंथी पार्टियों का जनता दल से अब कोई बहुत मधुर रिश्ता नहीं बचा. लेकिन आपसी फायदे के लिए ये सभी एक-दूसरे का हाथ थामे हुए हैं.

दोनों पार्टियों को इंका विरोधी लहर का काफी लाभ हुआ और वे मानती हैं कि राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के बने रहने से उन्हें अपना आधार बढ़ाने और चुनावी भविष्य सुधारने का मौका मिलता रहेगा.

इस्तीफे वाले संकट को टालने में सबसे साफ-सुथरी भूमिका लालकृष्ण आडवाणी और ज्योति बसु ने ही निभाई. उन्होंने जोर देकर कहा कि वे सिर्फ वी.पी. सिंह के नेतृत्व वाली सरकार को ही समर्थन दे रहे हैं. वे उनकी सरकार को चलते देखना चाहते हैं.

लेकिन इस संकट से भाजपा और वामपंथी दल भी हिल गए थे. 'बाहर' से सरकार को समर्थन देने वाली बात चाहे जैसी हो, आम आदमी उन्हें भी सरकार का हिस्सा मानता है और जनता दल की विश्वसनीयता में कमी आने का मतलब है उनकी भी साख गिरना.

सो, वाम और दक्षिण का यह मेल इसलिए नहीं हुआ कि वे जनता दल को देश का तारणहार मानते हैं बल्कि इसलिए हुआ क्योंकि वे अपनी स्थिति मजबूत करना और इंका को फिर से उभरने से रोकना चाहते हैं. दोनों ही पार्टियों की नजर काफी दूर तक लगी है—जनता दल के भी आगे तक. उनके नेता माने बैठे लगते हैं कि मौजूदा सरकार अपना कार्यकाल पूरा नहीं कर पाएगी.

भाजपा को यह रास आएगा कि जनता दल की सरकार स्थायी तो हो लेकिन कमजोर रहे. सरकार स्थायी नहीं रही तो इंका की तेजी से वापसी होगी और नुकसान भाजपा का होगा. लेकिन सरकार कमजोर रही तो भविष्य में हुए चुनाव में भाजपा को लाभ होगा. हरियाणा में चौटाला और उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह यादव की सरकार से अपना समर्थन वापस लेकर भाजपा ने अपनी इस रणनीति का प्रदर्शन भी कर दिया है.

वामपंथी इसी से परेशान हैं. उत्तर भारत में भाजपा का जनाधार न बढ़ पाए इसके लिए वे स्थायी व विश्वसनीय सरकार चाहते हैं.

दोनों ही पक्ष चाहते हैं कि वी.पी. सिंह सरकार तुरंत न गिरे. आगे की राजनैतिक लड़ाई के लिए खुद को तैयार करने के लिए दोनों को स्थायित्व और 'सत्ता के लाभ' की जरूरत है.

डांवाडोल प्रधानमंत्री

क्या उन्होंने कोई सबक सीखा?

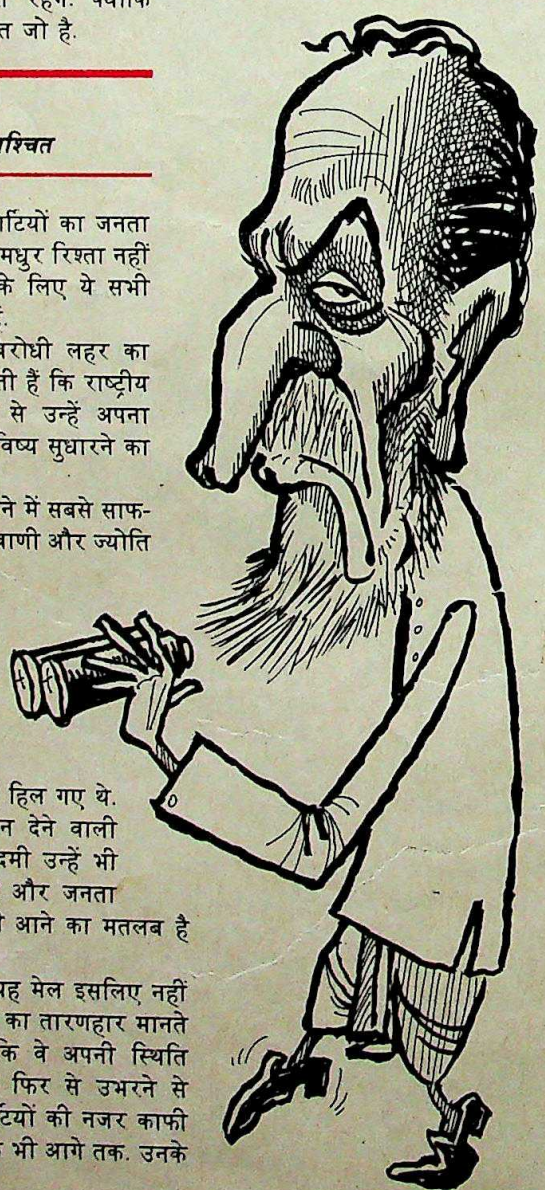

सच पूछा जाए तो विश्वनाथ प्रताप सिंह को दम लेने की फुरसत नहीं मिली है. जनता दल पदाधिकारियों की नियुक्ति, टिकटों का बंटवारा, अधिकारियों के तबादले-नियुक्ति. हर मोर्चे पर उन्हें जूझना पड़ा है. कुछ मोर्चे फतह किए तो कुछ गंवाए. लेकिन इस बार उनकी छवि को सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचा.

शायद ऐसा होना ही था. उन्होंने जो कार्यशैली अपनाई है उसमें वे कभी भी अपने सहयोगियों के सामने अपने विचार खुलकर नहीं रखते. वे अपनी राय खुद तक ही रखने लगे थे. वे नितांत एकाकी बन गए थे, राजनीति से परे, हर चीज से परे. किसी पर भी भरोसा न करना उनकी आदत में शुमार हो चला था.

लेकिन यह सब चल नहीं पाया. इस चक्कर में उन्होंने कुछ सबसे करीबी लोगों को जरूर अलग-थलग कर लिया. और जब मुश्किल बढ़ते-बढ़ते उनके इस्तीफे तक पहुंच गई तो कोई भी यह नहीं जान पाया कि उनके मन में क्या है, उन्होंने किस तरह के समझौते कर रखे हैं. वे किस पर भरोसा करते हैं, किस पर नहीं. या यह इस्तीफा भी किसी रणनीति का हिस्सा है या नहीं.

देवीलाल के साथ उन्होंने कौन-सा समीकरण बैठाया, इसे लेकर उनके साथी भी परेशान रहे. क्या वे उनसे मुक्ति चाहते हैं? क्या वे उन्हें पद पर रखना चाहते हैं? कोई कड़ा कदम क्यों नहीं उठाते?

वी.पी. सिंह की कार्यशैली की आज उनकी पार्टी में भी जबरदस्त खिंचाई हो रही है. लेकिन उनकी छवि को इससे भी बड़ा नुकसान इस वास्तविकता के जाहिर होते जाने से हुआ है कि वे देवीलाल के खिलाफ कोई कदम नहीं उठा सकते. अगर वे ऐसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करेंगे तो और बड़ा राजनैतिक संकट खड़ा हो जाएगा. और अगर वे उप-प्रधानमंत्री को खुश करने के काम करते जाएं तो शांति से सरकार नहीं चला सकते. दूसरे शब्दों में, हरियाणा का भीमकाय नेता उनके गले का पत्थर बन गया है.

चौटाला जैसे छोटे राजनैतिक 'संकट' से निपटने में तो पार्टी उनका साथ दे सकती है लेकिन उन्हें भरोसा नहीं है कि 'ताऊ' से मुक्ति पाने की कोशिश में पार्टी उनका साथ देगी. देवीलाल कोई कुम्हड़ बतिया नहीं हैं. वे जनता दल के एकमात्र असली राष्ट्रीय ग्रामीण नेता हैं. राजीव गांधी के परवान चढ़े दिनों में उन्होंने हरियाणा में इंका को पटखनी देते हुए भारी जीत हासिल की और बिखरी मध्यमार्गी राजनैतिक शक्तियों को एकजुट करके इंका का विकल्प तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

दूसरी बातों को ध्यान में रखना भी जरूरी है. देवीलाल को मनमाने ढंग से हटाने का मतलब होगा वी.पी. सिंह का खुद को एकमात्र केंद्रीय सत्ता के रूप में स्थापित करना. इससे पार्टी के मुख्यमंत्री और पदाधिकारी उनसे दूर होंगे तथा पार्टी की अंदरूनी गुटबाजी बढ़ेगी.

सचाई तो यही है कि तीन मंत्रियों के इस्तीफे के अलावा जनता दल का कोई भी मुख्यमंत्री, सांसद या प्रदेश पार्टी अध्यक्ष खुलकर चौटाला के खिलाफ नहीं बोला. हो सकता है कि वी.पी. सिंह को मौन समर्थन मिला हो लेकिन पार्टी खुले तौर पर देवीलाल से जोर-आजमाइश को तैयार नहीं दिखी.

इस बार प्रधानमंत्री को यह सबक भी मिल गया कि हर बात उनके नियंत्रण में नहीं है. साथ ही यह भी कि अगर उन्हें अपनी स्थिति मजबूत करनी है तो उन्हें अपने साथियों से मेलजोल बढ़ाना होगा, उनके साथ सलाह-मशविरा करना होगा और उनके सामने अपनी बात एकदम खुलकर रखनी होगी.

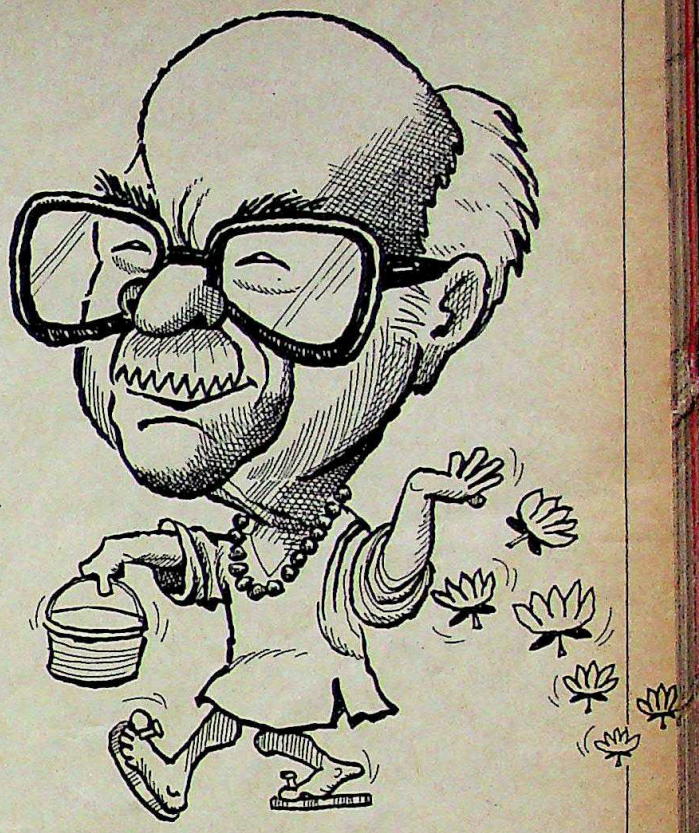

उन्होंने इस दिशा में काम करना भी शुरू कर दिया है. मुख्यमंत्रियों को पहले से अधिक बार रात्रिभोज देना, मंत्रिमंडल की अधिक बैठकें करना, महत्वपूर्ण सरकारी मसलों पर निरंतर संपर्क रखने के लिए राष्ट्रीय मोर्चा सचिवालय का गठन और हालात को इतना बिगड़ने से रोकने के लिए सर्वदलीय परिषद बनाने की वामपंथी दलों की राय पर अमल ऐसे कुछ कदम हैं.

शुरुआती हड़बड़ाहट और बेचैनी अब खत्म हो रही है. वी.पी. सिंह का यह कहना पूरी तरह गलत भी नहीं है कि जो कुछ हुआ वह पार्टी के विकास की प्रक्रिया का हिस्सा भी हो सकता है.

भारत की शासक पार्टियों में व्यक्तियों की टकराहट नई नहीं है. जवाहरलाल नेहरू ने भी आचार्य कृपलानी और राजेंद्र प्रसाद जैसे दिग्गज लोगों से जोर-आजमाइश की थी जो आजादी की लड़ाई में अपनी प्रमुख भूमिका के कारण सत्ता के बराबर के दावेदार थे. श्रीमती इंदिरा गांधी ने पुराने जमे कांग्रेसियों का सम्मान किया.

इसी तरह देवीलाल, चंद्रशेखर और यहां तक कि अजित सिंह भी खुद को सत्ता का बराबर का दावेदार मानते हैं. क्योंकि वे मानते हैं कि राजीव गांधी को हटाने के संघर्ष में उन्होंने वी.पी. सिंह से कोई कम योगदान नहीं दिया. वे नहीं चाहते कि सारा गौरव, सारी वाहवाही वी.पी. सिंह ही बटोर लें.

इसके बावजूद जनता दल जितने समय तक एकजुट रहता है, इसके नेताओं के साथ रहने, एक-दूसरे से संवाद करने और एक कार्यविधि विकसित करने की संभावना उतनी ही अधिक है. राजीव गांधी तो सर्वसम्मति से चुने गए नेता थे लेकिन वी.पी. सिंह की सरकार का जन्म ही जोड़-तोड़ और तिकड़म से हुआ है. और जब तक इसके नेता एक-दूसरे को नहीं समझेंगे और मेल-मिलाप से काम नहीं करेंगे, पार्टी अपने ही नेताओं के पैदा किए विवादों में उझलती रहेगी.

यही कारण है कि इसके नेताओं को खुद से ये सवाल पूछने चाहिए. अगर वे टूटते हैं तो कहां जाएंगे? क्या मतदाता उन्हें माफ करेंगे? अगर वे टूट गए तो क्या फिर एकजुट होकर सत्ता के लिए दावा कर सकेंगे? अगर इस बार वे सफल नहीं हुए तो क्या भविष्य में कभी विभिन्न पार्टियों के गठबंधन को केंद्र में सरकार बनाने का मौका मिल पाएगा?

राष्ट्रीय मोर्चा सरकार का सौभाग्य है कि अभी तक इंका अपना बिखरा शिराजा समेट नहीं पाई है. न तो इस विपक्षी पार्टी और न ही इसके नेता राजीव गांधी ने जनता दल की बदहाली का फायदा उठाने की ताकत या रणनीति प्रदर्शित की है.

यही सब देखते हुए वी.पी. सिंह के नेतृत्व की जिम्मेदारी और कई गुना बढ़ जाती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वनाथ प्रताप सिंह

'अधिक सख्ती से काम लेना होगा'

मॉस्को रवाना होने से एक दिन पहले दोपहर में प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह 7, रेसकोर्स के अपने निवास में कुर्ता-पायजामा में तनावरहित दिखे. अभी पिछले दिनों गुजरे तूफान की कोई शिकन उनके चेहरे पर नहीं दिख रही थी. संकट के समय भी शांतचित्त दिखने के मामले में वे अपने पूर्ववर्ती प्रधानमंत्री से टक्कर लेते नजर आते हैं. लेकिन दोनों के बीच समानता बस इतनी ही है. बातचीत के दौरान वी.पी. सिंह बार-बार इस तरह झुकते, उछलते, पैंतरा बदलते और नाचते जैसे मुक्केबाज मुहम्मद अली अपने प्रतिद्वंद्वी के वारों से बचने की कोशिश कर रहा हो. वे हर सवाल को शक की नजर से देखते और उसमें छिपी हुई मंशा को सावधानी से तौलते. उनसे कोई असुविधानजक सवाल पूछ लिया जाता तो वे मामले को उलझाते हुए राजनीति से अध्यात्म पर उतर आते. मगर किताबी तर्कों के बावजूद उनका हास्य-बोध कायम रहता.

पिछले दिनों पैदा हुए संकट के लिए उन्होंने जनता दल और राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के गठन की विशेष परिस्थितियों का हवाला दिया. उनके तर्क उनके आलोचकों के लिए ठोस जवाब हो सकते हैं. उनके चालकी भरे जवाबों के बावजूद इस बातचीत से एक बात तो जाहिर होती ही है कि उनके हौसले अभी पस्त नहीं हुए हैं. दरअसल लगता यह है कि उन्होंने अपनी कार्यशैली को बदलने की जरूरत महसूस की है. साथ ही उन्होंने उप-प्रधानमंत्री की छुट्टी करने की इच्छा का कोई संकेत भी नहीं दिया. प्रधानमंत्री से प्रधान संपादक ***अरुण पुरी*** *की बातचीत.*

● ***लालकृष्ण आडवाणी ने अपनी पार्टी से मध्यावधि चुनाव के लिए तैयार रहने को कहा है तो क्या इसलिए कि हाल के संकट के कारण आपकी सरकार के स्थायित्व पर प्रश्नचिन्ह लग गया है?***

श्री आडवाणी अपनी पार्टी को चुस्त-दुरुस्त करने के लिए स्वतंत्र हैं. यह उनका अपना राजनैतिक नजरिया है.

● ***क्या आपको विश्वास है कि जनता दल के अंदरूनी व्यक्तिगत और सैद्धांतिक मतभेदों के उजागर होने के बाद भी जनता दल अपने मौजूदा स्वरूप में कायम रह पाएगा?***

पार्टी का राजनैतिक अस्तित्व बना रहेगा. हो सकता है कि हमारे बीच आपस में तथा सहयोगी पार्टियों के साथ राजनैतिक तालमेल की कोई राह निकलेगी.

● ***क्या आप इस बात से सहमत हैं कि हाल के संकट ने पार्टी और सरकार को भारी झटका लगाया है?***

हां, इसका पार्टी के सभी लोगों पर असर पड़ा है.

● ***इससे तो आपकी व्यक्तिगत छवि भी प्रभावित हुई है.***

मैं अपनी छवि हर सुबह नहीं आंकता, यह काम दूसरों का है.

● ***अगर ऐसा है तो आपने एक दिन बाद ही इस्तीफा क्यों दे दिया? संकट को बिना इस्तीफा दिए नहीं सुलझा सकते थे?***

मैं संख्या की ताकत से प्रधानमंत्री की कुर्सी पर नहीं हूं. मैं वहां इसलिए हूं क्योंकि जनता दल, सहयोगी पार्टियों और दूसरे लोगों ने मुझमें भरोसा किया. और अगर लोगों के मन में मेरे नेतृत्व को लेकर गंभीर प्रश्न उठते हैं तो मैं उनके प्रति जवाबदेह हूं. दूसरे लोग चाहे जो कहें, सारी जिम्मेदारी अंततः मेरे सिर पर ही आती है.

● ***आपने यह कैसे सोच लिया कि लोगों का भरोसा आपके ऊपर से उठ गया है?***

राम से किसी ने नहीं कहा था कि वे सीता की अग्निपरीक्षा लें. यह तो लोगों में ऐसी भावना बन गई थी. लेकिन राम ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि यह एक राजनैतिक संदेश देने के लिए जरूरी था: जनता से संवाद करने का यह एक तरीका था. व्यक्ति का पद किसी 'करेंसी' की तरह होता है. उसका मूल्य इस बात पर तय होता है कि भंडार में सोना रूपी साख कितनी रखी है आपने.

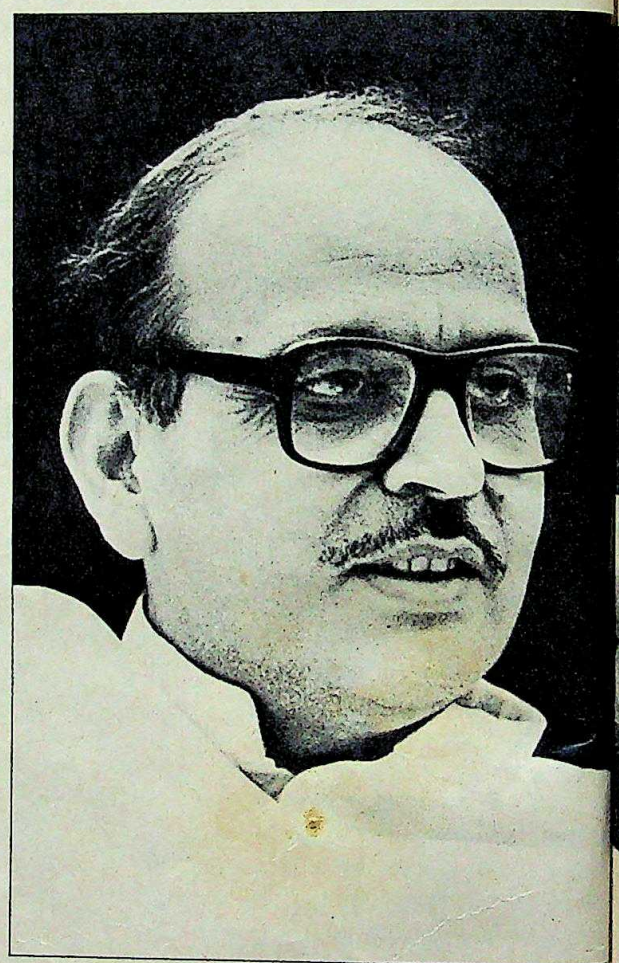

● ***आपका कोई गुट नहीं है इस वजह से इस संकट के दौरान क्या आप कमजोर नहीं पड़े?***

अपने राजनैतिक जीवन में मैंने खुद को कभी अकेला महसूस नहीं किया. और एकाकी होने के बावजूद मैं किसी मुद्दे पर चुप नहीं रहा. अकेलेपन से मुझे घबराहट नहीं होती, बल्कि जब आप सबके लिए होते हैं तो खुद को इकाई रूप में नहीं देख सकते.

● ***क्या इस संकट ने आपके नेतृत्व को बल दिया है?***

मैं व्यक्तिगत नेतृत्व के संदर्भ में नहीं सोचता. इस संकट से सामूहिक नेतृत्व मजबूत हुआ है.

● ***लेकिन हाल के संकट ने साबित कर दिया है कि आपकी सरकार अंदरूनी झगड़ों के कारण किसी भी दिन गिर सकती है.***

जहां तक अपनी बात कहने का सवाल है, हमें चाहिए कि कोई भी फैसला लेने से पहले हर किसी को खुलकर बोलने का मौका दें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि यही लोकतंत्र की ताकत है. अगर यह कलह जैसी लगे तो भी इसकी छूट होनी चाहिए. मैं मतभेद का आदर करता हूं. यह लोगों को उस बंद मानसिकता से निकालने के लिए निहायत जरूरी है जिसके अनुसार विरोध को अनुशासनहीनता माना जाता है.

● ***लेकिन लोकतंत्र की आखिरी हद क्या है और अनुशासनहीनता की शुरुआत कहां से होती है?***

अनुशासनहीनता तब शुरू होती है जब लोग पार्टी के सामूहिक फैसले का उल्लंघन करने की कोशिश करते हैं.

● ***क्या चौटाला ने फिर से मुख्यमंत्री बनकर पार्टी के सामूहिक फैसले का उल्लंघन नहीं किया? यह अनुशासनहीनता नहीं थी?***

परंतु उसके बाद पार्टी ने तुरंत कार्रवाई की और संकट का

भवान सिंह

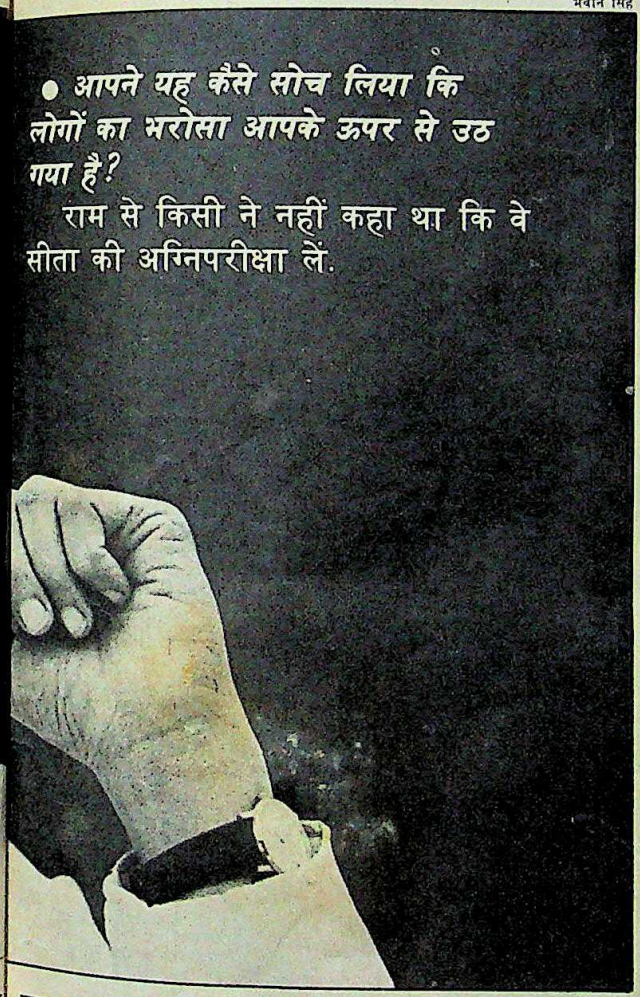

● ***आपने यह कैसे सोच लिया कि लोगों का भरोसा आपके ऊपर से उठ गया है?***

राम से किसी ने नहीं कहा था कि वे सीता की अग्निपरीक्षा लें.

समाधान किया. साथ ही चौटाला ने भी फैसले को स्वीकार किया.

● ***क्या पार्टी का अनुशासन उन्होंने नहीं तोड़ा?***

जो भी हो, जो कुछ हुआ उसकी जिम्मेदारी मैंने ले ली.

● ***लेकिन क्या आपने समस्या को जड़ से खत्म कर दिया है?***

समस्या की असली वजह क्या है यह हमें समझ में आ गया है. इस तरह की परिस्थिति से निबटने के लिए हमें कारगर व्यवस्था बनानी पड़ेगी. आपस में अधिक खुलकर बात करनी होगी.

● ***क्या वर्तमान समाधान कामचलाऊ नहीं है?***

कांग्रेसी संस्कृति से हम अभी उबरे नहीं हैं. हमारी पार्टी तो साल भर पुरानी है जबकि कांग्रेस 100 साल पुरानी है. उसने ऐसे झगड़ों के निबटारे की उपयुक्त व्यवस्था तैयार कर ली है.

● ***क्या आपको सचमुच एक उप-प्रधानमंत्री की जरूरत है?***

वर्तमान राजनैतिक हालात में यह पद चाहिए.

● ***क्या उप-प्रधानमंत्री का आप पर कोई राजनैतिक एहसान है?***

मैं जनता दल के प्रत्येक नेता और कार्यकर्ता का एहसानमंद हूं.

● ***देवीलाल के बिना आपकी सरकार टिक पाएगी?***

यह काल्पनिक सवाल है. वे कह चुके हैं कि वे पार्टी को एकजुट रखेंगे.

● ***अगर चौटाला महम से फिर जीत जाते हैं तो क्या आप उन्हें मुख्यमंत्री बनने देंगे?***

यह तो पार्टी और राज्य के विधायकों पर निर्भर है कि वे किसे मुख्यमंत्री बनाना चाहते हैं.

● ***अगर चौटाला मुख्यमंत्री पद के योग्य नहीं माने गए तो उन्हें जनता दल का महासचिव कैसे बने रहने दिया गया?***

उन्हें पार्टी का महासचिव उस समय बनाया गया था जब वे मुख्यमंत्री नहीं थे.

● ***लेकिन महम में हुई हिंसा की न्यायिक जांच का क्या हुआ?***

इसमें देरी इसलिए हुई क्योंकि भारत के मुख्य न्यायाधीश ने सुप्रीम कोर्ट के किसी भी वर्तमान न्यायाधीश को इस काम के लिए नियुक्त करने में असमर्थता व्यक्त की है. उन्होंने अवकाशप्राप्त न्यायाधीश को नियुक्त करने का सुझाव दिया है. इस बारे में हम जल्द ही फैसला करेंगे.

● ***वर्तमान राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में क्या आप अपनी मर्जी से किसी मंत्री को निकाल सकते हैं या नियुक्त कर सकते हैं? या फिर आपको सांसदों तथा दूसरे गुटों की निष्ठाओं के दायरे में बंधे रहना पड़ता है?***

इस समय तो मुझे किसी को निकालने का कोई कारण नहीं दिखाई दे रहा है.

● ***कभी अगर यह सवाल उठे तो?***

ऐसा मौका कभी आया तो मैं किसी को भी यह सवाल पूछने का मौका नहीं दूंगा.

● ***क्या आपको भविष्य में किसी भारी राजनैतिक फेरबदल की संभावना दिखती है?***

अव्वल तो ऐसी कोई स्थिति आएगी नहीं. लेकिन अगर ऐसा कुछ हुआ तो समूची पार्टी अधिक मजबूती के साथ फैसला कर सकने की स्थिति में है.

● ***देवीलाल ने अरुण नेहरू और आरिफ मुहम्मद खां के बारे में जो पत्र लिखा है उसका आप क्या करेंगे?***

मुझे इस बारे में फैसला करना है. मैंने उप-प्रधानमंत्री को जवाब भेजा है और उनके उत्तर की प्रतीक्षा में हूं.

● ***क्या इस संकट ने आपकी अपनी कार्यशैली बदलने को मजबूर किया है?***

हां, मैंने सबक लिया है. मेरे खयाल से मुझे अब अधिक सख्ती से काम लेना होगा.

● ***इसका मतलब है पहले आप कमजोर थे?***

हो सकता है मैं ज्यादा शांत और सहनशील था.

● ***लेकिन क्या आप अपना कार्यकाल पूरा कर पाएंगे?***

सवाल कार्यकाल का नहीं है. हम लोग जब तक अपने चुनावी वादों को पूरा करने पर कायम रहेंगे, तब तक सत्ता में बने रहेंगे. अगर हम सरकार में रहकर यह नहीं कर पाए तो बाहर रहकर भी यही काम करेंगे.

● ***क्या इसका मतलब यह है कि आप पांच साल कार्यकाल पूरा कर पाने के प्रति आश्वस्त नहीं हैं?***

मेरे कहने का मतलब यह नहीं था. अगर हम जनमत के साथ विश्वासघात नहीं करते तो हमें पांच वर्ष से ज्यादा का समय भी मिल सकता है.

● ***तब भी आप ही प्रधानमंत्री रहेंगे?***

मैं कभी अपने को आगे रखकर नहीं सोचता.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान

सिर्फ सजावट ही नहीं

मंत्रिमंडल की चार महिला मंत्रियों का कामकाज बेहतर

भ्रष्टाचार के खिलाफ जेहाद छेड़ने और सरकारी खर्चों में कटौती करने के मामले में राज्य सरकार ने पहल तो की ही है, वह अपने मंत्रिमंडल में दूसरे राज्यों के मंत्रिमंडलों की तुलना में सबसे ज्यादा महिलाओं को मंत्री बनाने में भी सबसे ऊपर है. इस मामले में वह केंद्र सरकार से भी आगे निकल गई है.

राजस्थान के 30 सदस्यीय मंत्रिमंडल में मुख्यमंत्री भैरों सिंह शेखावत ने चार महिलाओं को शामिल किया है. और चारों को कैबिनेट मंत्री ही नहीं बनाया बल्कि काफी महत्वपूर्ण और चुनौतीपूर्ण कार्यों वाले विभाग भी दिए हैं. इस समय 200 सदस्यों वाली राज्य विधानसभा में 11 महिला विधायक हैं. इनमें पांच भारतीय जनता पार्टी की, चार जनता दल की और दो कांग्रेस की हैं. लेकिन सबसे ज्यादा 17 महिलाएं 1985 के चुनाव में जीती थी. 1980 में 10, 1977 में आठ, 1972 में 13 महिलाएं चुनी गई थीं.

इसी वर्ष मार्च में हुए विधानसभा चुनाव में हालांकि शेखावत ने ज्यादा महिलाओं को टिकट नहीं दिए बल्कि कुछ महिला विधायकों के टिकट काट भी दिए लेकिन शायद यह उनकी चुनावी रणनीति का हिस्सा था. इसीलिए भाजपा ने जिन पांच महिलाओं को टिकट दिया, वे पांचों ही विधानसभा में पहुंच गईं, जबकि कांग्रेस की करीब 10 महिला उम्मीदवारों में से केवल दो ही विधायक बन पाईं. वैसे, इस मामले पर तब शेखावत को काफी आलोचना का शिकार होना पड़ा जब उन्होंने अपने 100 उम्मीदवारों में सिर्फ पांच प्रतिशत टिकट महिलाओं को दिए थे. यह तो चुनाव से पहले की बात है. सरकार के गठन के बाद भी शेखावत सरकार को महिलाओं की ओर से आलोचना झेलनी पडी कि उन्होंने अपना पहला बजट ही महिला विरोधी पेश किया. इस बजट के विरोध में इंका ने महिलाओं की एक रैली भी निकाली. रैली का नेतृत्व करने वाली पूर्व मंत्री और इंका नेता गिरिजा व्यास ने बाद में कहा, "यह महिला विरोधी सरकार है."

लेकिन कांग्रेस के ही एक वरिष्ठ नेता के अनुसार शेखावत मंत्रिमंडल की महिला मंत्री पुरुष मंत्रियों से बेहतर काम कर रही हैं और उन पर भ्रष्टाचार के मामले में उंगली नहीं उठाई जा सकती. जिन चार महिलाओं को मंत्रिमंडल में जगह मिली है वे चारों ही राजनैतिक दृष्टि से काफी अनुभवी हैं और उन्हें केवल सजावटी तौर पर शामिल किया हुआ नहीं कहा जा सकता.

मुख्यमंत्री ने जहां जनता दल की सुमित्रा सिंह को ऊर्जामंत्री बनाया है, वहीं मदन कौर को वन और पर्यावरण जैसा चुनौतीपूर्ण विभाग दिया है. इसी तरह, भाजपा की पुष्पा जैन को अकाल व बाढ़ राहत के साथ-साथ महिला व बाल पोषाहार विभाग की जिम्मेदारी सौंपी गई. आबकारी और सूचना व जनसंपर्क का विभाग भाजपा की ही विद्या पाठक के पास है. राज्य में कई महत्वपूर्ण बिजली परियोजनाओं को मंजूरी और

शेखावत ने मंत्रिमंडल में चार महिलाओं को शामिल ही नहीं किया बल्कि उन्हें महत्वपूर्ण विभागों के साथ कैबिनेट मंत्री का दर्जा भी दिया

शेखावत और पुष्पा जैन (बाएं); विद्या पाठक (दाएं); मदन कौर (नीचे बाएं); सुमित्रा सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्पादन व बिजली के क्षय को रोकने में जहां सुमित्रा सिंह कामयाब रही हैं, वहीं हाल ही में राजस्थान के पश्चिमी इलाके में आई बाढ़ से निबटने में पुष्पा जैन को आलोचना का सामना नहीं करना पड़ा है.

मौजूदा महिला विधायकों में राजनीति के क्षेत्र में सबसे पुरानी मदन कौर हैं. 1954 में वे समाज कल्याण परियोजना (जोधपुर) की अध्यक्ष भी रहीं और कांग्रेस की सक्रिय सदस्य भी. विधानसभा में प्रवेश की 1962 में की गई उनकी पहली कोशिश सफल नहीं हो पाई. वे राज्य के दूरस्थ सीमावर्ती जिले बाड़मेर के पचपद्रा विधानसभा क्षेत्र में मामूली वोटों से पराजित हुईं. लेकिन अगला चुनाव 1967 में उन्होंने जोधपुर संभाग में सबसे ज्यादा वोटों के अंतर से जीता और 1972 में ही नहीं 1977 में भी कांग्रेस विरोधी लहर के बावजूद वे कांग्रेस के टिकट पर भारी मतों से जीतीं. लेकिन 1978 में कांग्रेस (इ) बनाने पर उन्होंने इंदिरा गांधी का साथ छोड़ दिया था. फिर कांग्रेस (एस) और लोकदल (ब) से होते हुए वे जनता दल के शिखर प्रांतीय नेताओं की कतार में जा खड़ी हुईं.

जनता दल के सूत्रों ने बताया कि चाहे लोकदल (ब) का मामला रहा हो या फिर जनता दल के गठन का, उनकी प्रदेश अध्यक्ष नाथूराम मिर्धा से कभी नहीं बनी. पर मदन कौर कहती हैं, "मेरा उनसे कोई विवाद नहीं है. जनता दल के गठन के वक्त मिर्धा ने काफी अड़चन डाली थी, तब मैंने जोधपुर में जनता दल के राष्ट्रीय नेताओं का बड़ा सम्मेलन बुलाया था." उनके अनुसार जद प्रदेश अध्यक्ष के लिए उनका अपना नाम चला लेकिन "मैंने ही वरिष्ठ नेता के रूप में मिर्धा के नाम पर सहमति दी." मृदुभाषी मदन कौर कामकाज में पक्की हैं. घोटालों और अफसरों के आपसी झगड़ों के जंगल में उलझे वन विभाग को वे पक्की धुन से सजाने में लगी हैं.

इसी तरह के तीखे तेवर और सपाटबयानी के लिए प्रसिद्ध सुमित्रा सिंह से अधिकांश लोग घबराते भी हैं. एक बार तो उन्होंने पूर्व मुख्यमंत्री शिवचरण माथुर तक को विधानसभा में ही खरी-खरी सुना दी. सातवीं बार विधायक होने का गौरव पाने वाली सुमित्रा सिंह कहती हैं, "मेरे राजनैतिक जीवन की शुरुआत जागीरदारों के खिलाफ संघर्ष को लेकर हुई थी जिसकी प्रेरणा मुझे मेरे ससुर से मिली थी." सुमित्रा सिंह भी कांग्रेस से होती हुई जनता दल में आईं. लेकिन उनका मिर्धा से 36 का आंकड़ा नहीं रहा. सुमित्रा सिंह कहती हैं, "शेखावत की क्या मजबूरी हो सकती है महिलाओं को सरकार में शामिल करने की? उन्होंने महिलाओं पर कोई मेहरबानी भी नहीं की हैं. सब अपनी राजनैतिक योग्यताओं के आधार पर मंत्रिमंडल में शामिल की गई हैं." वे इन आरोपों का खंडन करती हैं कि शेखावत ने बजट में महिलाओं को कुछ नहीं दिया है, "बजट में 50 लाख रु. महिलाओं की उच्च शिक्षा के लिए रखे गए हैं. महिलाओं का नाम बजट में होना जरूरी नहीं है. सामान्य योजनाओं में भी तो उनकी बराबर की हिस्सेदारी है."

भाजपा की वरिष्ठ सदस्या विद्या पाठक भी मंत्री पद पर पहुंची हैं. उन्हें शेखावत विरोधी गुट में शामिल माना जाता है. शायद यही वजह रही है कि उनसे जूनियर पुष्पा जैन को शेखावत ने मंत्रिमंडल में पहले शामिल कर लिया, जबकि पाठक को ढाई महीने के इंतजार के बाद दूसरे विस्तार में मंत्री बनाया गया. उनके विभाग भी अपेक्षाकृत कमजोर माने जाते हैं, जिनमें मुख्यमंत्री के दखल के बिना कुछ नहीं किया जा सकता. पाठक कहती हैं, महिलाएं राजनीति में वैसे ही कम आती हैं, उस पर भी पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं को टिकट मिलना आसान काम नहीं है."

मंत्रिमंडल या विधायकों में महिलाओं की संख्या कम होने के सवाल पर वे कहती हैं, "हर बात को प्रतिशत में मत आंकिए, योग्यता भी देखिए." बजट में या महिलाओं के आरक्षण के मामले पर उनका कहना है कि वे इस प्रवृत्ति को ही नहीं मानतीं, "महिलाओं को 'जनता स्ट्रीम' में आना चाहिए. आरक्षण परेशानियां पैदा करेगा."

स्कूल और कॉलेज की राजनीति से डेढ़ दशक पहले बरास्ता जनसंघ राजनीति में आई पुष्पा जैन भी इससे सहमत हैं. वे इसे थोथी वाहवाही लूटने का कुप्रयास मानती हैं. राजनीति में महिलाओं की कम संख्या से भी वे संतुष्ट नहीं हैं पर उनके मुताबिक, "इसके कई कारण हैं. फिर भी, हम अधिकार में अधिकारों के प्रति संघर्षरत हैं."

इसी संघर्ष का नतीजा है कि राज्य मंत्रिमंडल में महिलाओं का प्रतिनिधित्व 14 फीसदी तक पहुंच गया है. यह अपेक्षित 30 फीसदी से कम तो है मगर राज्य की महिला मंत्री अपने कामकाज के बेहतर नमूने दिखाकर यह अंतर तो पाट ही सकती हैं.

महिलाओं के प्रति उदारता बरतने के बावजूद मुख्यमंत्री शेखावत को महिला विरोधी बजट पेश करने के लिए आलोचनाएं भी सुननी पड़ी हैं

रोहित जैन

शेखावत के महिला विरोधी बजट के खिलाफ इंकाइयों का प्रदर्शन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्य प्रदेश

प्रचारकों पर प्रहार

ईसाई मिशनरियों के खिलाफ भाजपा का मोर्चा

भाजपा पिछले कई वर्षों से मध्य प्रदेश के वनवासी इलाके में ईसाई मिशनरियों के खिलाफ मुहिम छेड़े हुए थी. लेकिन विपक्ष में होने के कारण पार्टी का विरोध शब्दों तक ही सीमित रहा. अब सत्ता में आने के बाद भाजपा सदस्यों और ईसाई समुदाय को मिशनरी गतिविधियों की रोकथाम के लिए ठोस कदम उठाए जाने की प्रतीक्षा ही थी. पिछले पखवाड़े पार्टी के एक वरिष्ठ सदस्य ने 'विदेशी मिशनरियों के हाथों लोगों के जबरदस्ती या प्रलोभन देकर ईसाई बनने से रोकने के लिए तुरंत कदम उठाने' संबंधी प्रस्ताव विधानसभा में पेश कर के पहल भी कर दी.

प्रस्ताव का समर्थन करते हुए मुख्यमंत्री सुंदरलाल पटवा ने कहा, "हालांकि जबरदस्ती धर्म परिवर्तन रोकने के लिए कानून है लेकिन मिशनरी अपने धर्म प्रचार के भ्रष्ट तरीके अपनाते हैं." हैरत की बात नहीं कि प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हो गया.

ईसाई अलबत्ता इस प्रस्ताव को भाजपा की मिशनरियों के खिलाफ लड़ाई का एक कदम मानेंगे. हाल ही में राष्ट्रीय एकता समिति की एक बैठक में पटवा ने विदेशी मिशनरियों पर 'राष्ट्र विरोधी' गतिविधियों में शामिल होने का आरोप लगाया. उन्होंने उन्हें 'गद्दार' का फतवा देते हुए कहा कि ज्यादातर मिशनरी समाजसेवा की बजाए लोगों को ईसाई बनाने में ज्यादा दिलचस्पी रखते हैं.

ईसाइयों की प्रतिक्रिया भी कम कड़ी नहीं रही. मध्य प्रदेश क्रिश्चियन एसोसिएशन की अध्यक्ष इंदिरा आयंगर ने 'ईसाइयों के खिलाफ नफरत फैलाने' के लिए राष्ट्रपति से पटवा के खिलाफ मुकदमा दायर करने की इजाजत मांगी है.

पटवा ने जवाब में आयंगर को चुनौती दी है कि वे उनका सामना 'कानून की अदालत में करने के बजाए' जनता की अदालत में करें. इस पर आयंगर ने प्रमुख न्यायाधीश को चिट्ठी लिखकर ईसाइयों की 'मुख्यमंत्री की धमकी से रक्षा करने' की मांग की है. उनका आरोप है कि भाजपा सरकार ईसाइयों के संवैधानिक अधिकारों में कटौती करना चाहती है.

देखने में ईसाई मिशनरियों के खिलाफ भाजपा की यह मुहिम बेवजह की घबराहट लगती है. राज्य में कुल 3.52 लाख ईसाई हैं जो हिंदुओं के लिए शायद ही किसी तरह का खतरा हों. लेकिन पार्टी की चिंता का असल कारण वनवासी इलाके में मिशनरियों का लोगों को ईसाई बनाने में सफल होना ही है.

दो जिलों—सरगुजा और रायगढ़ में तो खास तौर पर ईसाइयों की संख्या बढ़ी है. और इसका श्रेय धर्म परिवर्तन को ही है. 1951 में रायगढ़ में ईसाइयों की संख्या 14,354 थी जो कि 1981 में बढ़कर 1.44 लाख हो चुकी थी. पड़ोसी जिले सरगुजा में भी ईसाइयों की संख्या इस दौरान 545 से बढ़कर 28,210 हो चुकी है. इसके विपरीत इस दरम्यान दोनों जिलों की कुल आबादी सिर्फ सौ फीसदी ही बढ़ी है.

भाजपा की मुहिम का दूसरा आधार 1981 का वह आदेश है जिसके तहत ग्यारह बूढ़े पादरियों को देश से निर्वासित किया गया था. बाद में अदालत और सरकार ने उनका निर्वासन रद्द कर दिया. भाजपा का आरोप है कि ये मिशनरी 'राष्ट्र विरोधी गतिविधियों' में शामिल थे और सत्ता के गलियारों में अपनी पहुंच के कारण उन्होंने निर्वासन रद्द करवा लिया. मिशनरियों का कहना है कि भारत उनका घर है. सरगुजा से निष्कासन के बाद भोपाल के कैंपियन स्कूल में पुस्तकालयाध्यक्ष के रूप में काम करने वाले 76 वर्षीय बेल्जियाई पादरी लुई डि रेट कहते हैं, "भारत में 50 साल गुजारने के बाद मैं सिर्फ अप्रचलित फ्लेमिश बोल सकता हूं. मैं बेल्जियम में क्या करूंगा."

भाजपा की इस पहल का असर मध्य प्रदेश तक ही सीमित नहीं रहेगा. भाजपा और ईसाई यह बखूबी जानते हैं.

—नरेंद्र कुमार सिंह

आर.सी. साहू

पटवा (बाएं) और आयंगरः घमासान

पटवा ने मिशनरियों को 'गद्दार' का फतवा दिया जबकि ईसाइयों ने इसका कड़ा विरोध करते हुए कहा कि भारत उनका घर है

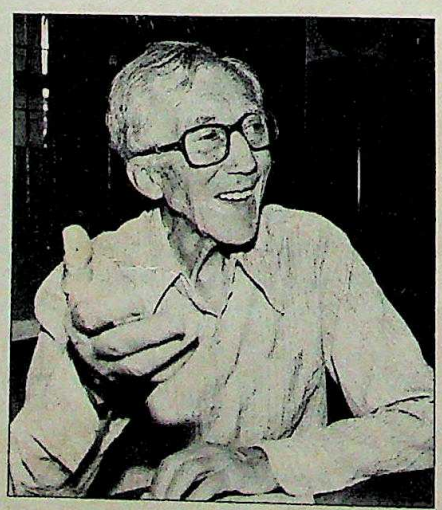

लुई डि रेटः आरोपों के घेरे में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार

बाल-बालबचे

भाजपा के सख्त तेवर

राजनीति विडंबनाओं का खेल है. वी.पी. सिंह के इस्तीफे की पेशकश से पैदा हुए संकट ने जहां राष्ट्रीय मोर्चा सरकार की लुटिया लगभग डुबो दी थी, वहीं बिहार में जनता दल सरकार पर से संकट टल गया.

उस दिन प्रदेश भाजपा की कार्यकारिणी की हजारीबाग में बैठक थी. उसे अंतिम फैसला लेना था कि राज्य में जनता दल सरकार को समर्थन जारी रखा जाए या नहीं. सौभाग्य से उसी समय केंद्र में संकट खड़ा हो गया. हजारीबाग पहुंच चुके लालकृष्ण आडवाणी को दिल्ली लौटना पड़ा. प्रदेश भाजपा अध्यक्ष ताराकांत झा का कहना था, "केंद्र में अचानक हुई घटनाओं ने फिलहाल हमें सख्त रुख अपनाने से रोक लिया है."

लेकिन पार्टी ने बढ़ती महंगाई, राज्य में कानून व व्यवस्था की बिगड़ती स्थिति और हर स्तर पर शैक्षणिक संस्थाओं की बदतर होती हालत पर अपनी चिंता जाहिर की. भाजपा इस बात से चिढ़ी लगती है कि यादव ने कभी उससे राय-मशविरा नहीं किया. इस खीझ की एक और बड़ी वजह सांप्रदायिक दृष्टि से नाजुक क्षेत्र हजारीबाग में यादव की कार्रवाइयां हैं. यादव ने प्रशासन से महुदी गांव में एक खास रास्ते से रामनवमी की शोभायात्रा गुजरने की इजाजत न देने को कहा था. पार्टी इसलिए भी नाराज है कि यादव ने समाधान ढूंढ़ने के लिए मौके का दौरा करने का अपना वादा नहीं निभाया.

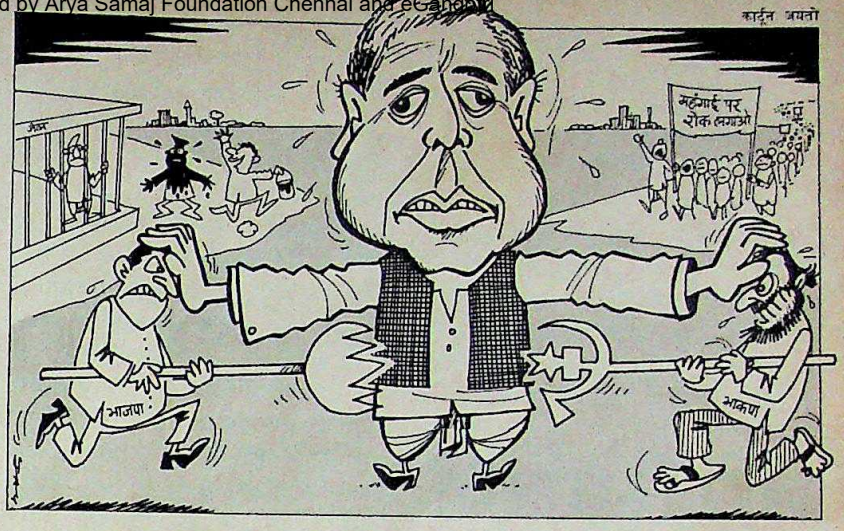

कार्टून अयतो

दो दूसरी घटनाओं से भाजपा की नाराजगी और बढ़ी. पिछले महीने एक नौजवान ने पार्टी के विधायक खगेंद्र कुमार पर उस समय काला रंग पोत दिया जब वे उपायुक्त के दफ्तर के सामने धरना दे रहे थे. पार्टी को इस घटना के पीछे सरकारी हाथ होने का संदेह है. फिर, पार्टी के एक और विधायक चुन्नीलाल राजवंशी जब पूर्णिया के बनमंखी थाने में कुछ पूछने गए तो उन्हें हवालात में बंद कर दिया गया.

कार्यकारिणी की बैठक के लिए हजारीबाग को चुनने का फैसला भी कोई संयोग नहीं था. इस क्षेत्र में पार्टी का आधार आशातीत ढंग से बढ़ा है. पार्टी महासचिव यशोदानंदन सिंह कहते हैं, "हमने सात लाख सदस्यों का लक्ष्य रखा था पर पता चला कि हम साढ़े सात लाख की सीमा भी पार कर गए हैं." पार्टी ने छोटा नागपुर और संथाल परगना को मिलाकर एक अलग वनांचल राज्य की मांग दुहराकर राजनैतिक चाल भी चली.

पर यादव का कहना है कि सरकार के गठन के समय भाजपा और भाकपा ने उन्हें अपना बिना शर्त समर्थन दिया था और "अब किसी को शर्तें थोपने की इजाजत नहीं दी जाएगी." उनके मुताबिक वे किसी भी सूरत में धर्मनिरपेक्षता की नीति पर समझौता नहीं करेंगे.

पर आज 39 विधायकों वाली भाजपा यादव के टिके रहने के लिए महत्वपूर्ण है. दूसरी बैसाखी, 23 सदस्यों वाली भाकपा अपने बूते पर उनकी सरकार को बचा पाने में सक्षम नहीं है. लेकिन यादव समर्थन जुटाने की तैयारी कर रहे हैं. पार्टी का दावा है कि विधानसभा चुनाव के बाद जनता पार्टी के तीन और करीब 30 निर्दलीय विधायक जनता दल के सहयोगी सदस्य बन चुके हैं. और जनता दल अध्यक्ष

खर्च में कटौती

अनोखी योजना

यह विचार भले ही हवाई लगे, लेकिन बिहार के 'छापामार' मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव ने फिजूलखर्ची रोकने के लिए एक अनोखी योजना बनाई है. उन्हें खयाल आया कि अधिकारियों के परिवार के लोग टेलीफोन को सचमुच 'खिलौने' की तरह ही इस्तेमाल करते हैं. वे एसटीडी सुविधा का जमकर दुरुपयोग करते हैं.

यादव ने तुरत आदेश दिया कि सचिवालय में उप सचिव स्तर तक के सभी अधिकारियों के दफ्तरों और घरों में लगे फोन काट दिए जाएं और सरकार के सचिवों और विभाग प्रमुखों के दफ्तरों और घरों में सिर्फ एक-एक फोन की सुविधा दी जाए. उन्होंने 'इंडिया टुडे' को बताया, "इससे सरकार काफी पैसा बचा सकेगी जो दरअसल गरीब जनता अदा करती है." यादव की योजना के अनुसार दूरसंचार विभाग सरकार द्वारा वापस किए जाने वाले टेलीफोन कनेक्शनों का इस्तेमाल जरूरतमंदों को नया कनेक्शन देने में करेगा.

अधिकारियों और मंत्रियों की पत्नियों और बच्चों द्वारा किए जाने वाले सरकारी वाहनों के दुरुपयोग पर यादव पहले ही रोक लगा चुके हैं. और अब वे सरकारी दफ्तरों में लगे 400 एयरकंडीशनरों में से ज्यादातर को हटाने की सोच रहे हैं. वे कहते हैं, "वातानुकूलित कमरों में बैठने वाले अधिकारी और मंत्री गरीब लोगों के बारे में कभी नहीं सोच सकते."

सरकारी सूत्रों का कहना है कि ये सारे अभियान यादव की उस योजना में शामिल हैं जो उन्होंने गैर योजना खर्च में 20 फीसदी तक की कटौती के लिए बनाई है. इससे सालाना 300 करोड़ रु. की बचत होगी. लेकिन अहम सवाल यह है कि बिहार जैसे राज्य में जहां मंत्रियों और अधिकारियों के ज्यादातर काम हवाई ही होते हैं, क्या यादव अपने मकसद में सफल हो पाएंगे.

—फरजंद अहमद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपेंद्र प्रसाद वर्मा के मुताबिक 25 और विधायकों ने यादव को समर्थन देने का वादा किया है. झारखंड मुक्ति मोर्चा के 19 विधायक यादव का समर्थन कर ही रहे हैं. वर्मा कहते हैं, "जल्दी ही हमारी ताकत 163 का आंकड़ा पार कर जाएगी जो सरकार बनाए रखने के लिए न्यूनतम जरूरत है."

यह कोरा गणित है. पर इस गणित के बूते यादव शायद भाजपा से कुट्टी करने का जोखिम मोल न लें. —फरजंद अहमद

आंध्र प्रदेश

विरोधी खामोश

चेन्ना रेड्डी नए मंत्री बनाएंगे

अमेरिका से गुर्दे बदलवाकर और आंख का ऑपरेशन करवाकर पिछले पखवाड़े नई दिल्ली लौटे मुख्यमंत्री मरि चेन्ना रेड्डी अपने राज्य में राजनैतिक सर्जरी करने की तैयारी में दिखे. यानी अब वे मंत्रिमंडल में फेरबदल करेंगे और गड़बड़ी करने वाले पार्टी सदस्यों को रास्ते पर लाने की कोशिश करेंगे.

इंका अध्यक्ष राजीव गांधी ने उनके लिए मुश्किलें कुछ आसान कर दी हैं. आंध्र प्रदेश के तूफान पीड़ित इलाकों के अपने चार दिवसीय दौरे में राजीव ने यह साफ कर दिया कि वे असंतुष्टों की गतिविधियों को बिलकुल नापसंद करते हैं. उन्होंने चेतावनी दी, "अगर हमें लगा कि असंतुष्ट लोग हद से आगे बढ रहे हैं तो हम कड़ी कार्रवाई करेंगे." उन्होंने यह भी साफ कर दिया कि मुख्यमंत्री बदलने का कोई सवाल नहीं है.

शिकायतों का पुलिंदा लेकर हवाई अड्डे पहुंचे पार्टीवालों को अच्छी डांट पिलाई गई. उदाहरण के लिए प्रदेश युवक इंका अध्यक्ष पी. सुधीर कुमार और सिकंदराबाद के विधायक रवींद्रनाथ से कहा गया कि शिकायतें करने की जगह पार्टी का काम किया करें. पहले भी पार्टी आलाकमान कृषिमंत्री एन. जनार्दन रेड्डी को मुख्यमंत्री को देखने के लिए न्यूयॉर्क भेजकर उनके प्रति अपना समर्थन जाहिर कर चुका है. विधानसभा चुनाव के बाद जनार्दन रेड्डी भी नेता पद की होड़ में थे लेकिन उन्हें अपना दावा छोड़ने पर मजबूर किया गया था.

अब कई दूसरे असंतुष्ट नेताओं को भी आलाकमान के दिमाग का पता चल गया. एक प्रमुख असंतुष्ट माने जाने वाले स्वास्थ्यमंत्री एन. श्रीनिवासुलु रेड्डी ने असंतुष्ट गुट से नाता तोड़ लिया है. वे कहते हैं, "मैं अपना एक प्रतिशत समय ही राजनीति पर खर्च करता हूं. बाकी समय विकास के कार्यों में लगाता हूं." लेकिन परिवहनमंत्री जी. वी. सुधाकर राव और एस. वेंकट रेड्डी जैसे नेता अपना असंतोष अभी भी जाहिर कर रहे हैं. वे चेन्ना रेड्डी द्वारा एम.ए. अजीज को पार्टी अध्यक्ष बनाए जाने का विरोध कर रहे हैं.

लेकिन 19 जुलाई को चेन्ना रेड्डी का नई दिल्ली के हवाई अड्डे पर जिस तरह स्वागत किया गया उससे वे जरूर खुश हुए होंगे. उनकी वापसी पर स्वागत के लिए तीन असंतुष्टों को छोड़ सभी मंत्री और 80 विधायक मौजूद थे. इसकी वजह भी थी. पहली यह कि मंत्रिमंडल में फेरबदल होने वाला है और दूसरी यह कि सरकार राज्य के 60 निगमों और संस्थानों के अध्यक्षों की नियुक्ति करने वाली है. मुख्यमंत्री ने यह साफ कर दिया है कि उन्हीं लोगों को प्राथमिकता दी जाएगी जो मुख्यमंत्री और पार्टी आलाकमान के प्रति वफादार होंगे. चेन्ना रेड्डी जानते हैं कि जब तक इन पदों पर नियुक्तियां टाली जाएंगी तब तक विधायक रास्ते पर रहेंगे. जाहिर है सख्ती बरतनी हो तो लालच देना भी जरूरी होता है. —अमरनाथ के. मेनन

वापसी के बाद विधायकों के साथ रेड्डी

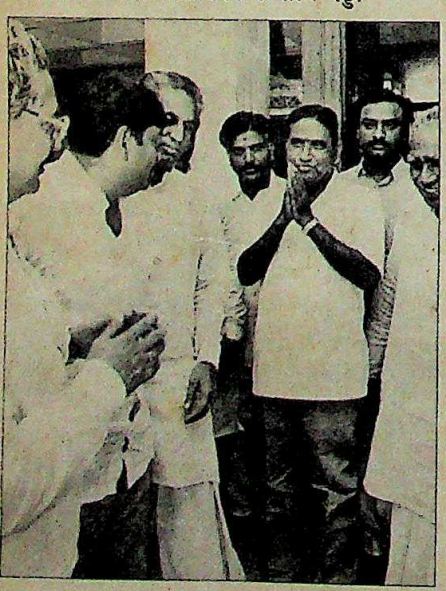

गोवा

भाषायी बवाल

मुख्यमंत्री बारबोसा भारी पड़ रहे

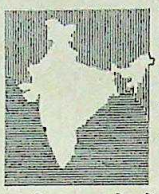

गोवा के 63 वर्षीय मुख्यमंत्री लुई प्रोतो बारबोसा राज्य में फिलहाल खेली जा रही राजनैतिक कबड्डी में अपने विरोधियों पर भारी पड़ रहे हैं. पिछले मार्च महीने में इंका विधायकों के एक गुट ने अपनी निष्ठा बदलकर जिस साझा सरकार का मार्ग प्रशस्त किया उसे वे बावजूद रस्साकशी के बखूबी हांक रहे हैं.

न सिर्फ विपक्षी कांग्रेसी बल्कि उनकी प्रगतिशील लोकतांत्रिक मोर्चा सरकार की वरिष्ठ सहयोगी महाराष्ट्रवादी गोमांतक पार्टी (मगोपा) के असंतुष्ट नेता भी उन्हें गद्दी से हटाने की साजिशें रच रहे हैं. इन खबरों पर बारबोसा की टिप्पणी इतनी भर है कि "जो भी सरकार सत्ता में होती है उसे हटाने की कोशिशें तो होती ही

नामस भोजानी

बारबोसा: विरोधियों को मात

रहती हैं. लेकिन मेरी सरकार इसलिए चलेगी क्योंकि हम अपनी मर्जी से एक-दूसरे के करीब आए हैं."

अपने नेता प्रताप सिंह राणे को सत्ताच्युत करने वाले इस शख्स पर हमले का ताजा मौका अभी हाल में इंका विधायकों को मिल ही गया. सरकार ने फैसला किया कि अंग्रेजी माध्यम से चलने वाली प्राथमिक शालाओं को सरकारी अनुदान नहीं मिलेगा. इससे ऐसी करीब 120 स्कूलों के बंद होने की नौबत आ गई है. दूसरे राज्यों के विपरीत गोवा में प्राइवेट स्कूल फीस भी कम लेते हैं और अपने शिक्षकों को तनख्वाह भी बहुत कम देते हैं. हाईकोर्ट ने फैसला दिया था कि निजी और सरकारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कूलों के शिक्षकों को एक जैसी तनख्वाह मिलनी चाहिए. इससे निजी प्राथमिक शालाओं के सामने वित्तीय संकट खड़ा हो गया क्योंकि उन्हें अब तक सरकारी अनुदान नहीं मिलता था. लेकिन मगोपा की शिक्षामंत्री शशिकला काकोडकर ने चालाकी भरा फैसला किया कि सरकारी अनुदान देने की जो योजना अब शुरू हो रही है, वह सिर्फ उन्हीं स्कूलों पर लागू होगी जिनमें क्षेत्रीय भाषाओं में पढ़ाई होती है. यह अंग्रेजी माध्यम वाले प्राथमिक स्कूलों के लिए ही नहीं, इंका के लिए भी सदमा साबित हुआ.

सरकारी फैसले से दक्षिण गोवा में बवाल उठ खड़ा हुआ. रास्ता रोको, जेल भरो और बंद वगैरह शुरू हो गए. पर विडंबना देखिए कि भाषायी आंदोलन ने कोंकणी समर्थक इंका में भी दरार डाल दी. विल्फ्रेड डिसूजा की अगुआई वाले इंका विधायकों का कहना है कि इस अचानक बदलाव से शिक्षा प्रणाली में मराठी के विस्तार को ही बल मिलेगा. डिसूजा गुस्से से कहते हैं, "यह गैरजिम्मेदार और नाकारा सरकार कोंकणी समर्थकों को ब्लैकमेल करने की कोशिश कर रही है."

लेकिन शशिकला काकोडकर इसका जोरदार प्रतिवाद करती हैं. पर इतना सच है कि कोंकणी समर्थकों में दरार डालकर उन्होंने मगोपा के गढ़ उत्तरी गोवा में अपना आधार मजबूत कर लिया है. मगोपा में उनके प्रतिद्वंद्वी, उपमुख्यमंत्री रमाकांत खलप के लिए यह बात काफी असुविधाजनक है. हालांकि बारबोसा को कुर्सी पर बिठाने में खलप की अहम भूमिका रही है लेकिन मुख्यमंत्री ने साझा सरकार पर अपनी मजबूत पकड़ रखने के लिए मगोपा के मतभेद अच्छी तरह भुनाए. उन्होंने खलप को महत्वपूर्ण पीडब्ल्यूडी विभाग न सौंपकर वित्त और दूसरे विभाग सौंपे जिनमें उनके पास ज्यादा अधिकार नहीं हैं. दूसरी ओर पूर्व मुख्यमंत्री काकोडकर को बारबोसा ने राज्य के बजट का बड़ा हिस्सा पाने वाला शिक्षा विभाग तो सौंपा ही, तटवर्ती गोवा के लिए महत्वपूर्ण यातायात और मछली-पालन विभाग भी दे दिए.

18 सदस्यों वाली मगोपा की महत्वाकांक्षाएं बारबोसा के लिए सबसे बड़ा खतरा है. पर उनके साथ दलबदल कर आए छह पूर्व इंका विधायकों और 40 वर्षीय साधनसंपन्न पर्यटनमंत्री चर्चिल अलेमाओ का जब तक समर्थन प्राप्त है, उन्हें चिंता करने की जरूरत नहीं. अलेमाओ के पास दादाओं की खासी फौज बताई जाती है जिसके सहारे वे असंतुष्टों को काबू में रख सकते हैं. अलेमाओ का कहना है, "सरकार के साथ तो यह सब चलता ही रहता है. दिल्ली में देखिए क्या हो रहा है. हमारी सरकार पूरे समय चलेगी." लेकिन साझा सरकार के भविष्य का फैसला फिलहाल सुप्रीम कोर्ट के हाथ में है. अदालत जल्द ही इस बात का फैसला कर देगी कि बारबोसा, अलेमाओ और दीगर पूर्व इंका विधायक दलबदलू हैं या नहीं.

—एम. रहमान, गोवा में

कर्नाटक

पुराना खेल

हर नई सरकार अपनी धाक बिठाना चाहती है. भ्रष्टाचार पर धावा बोलने का दांवपेंच तो उनमें हर कोई अपनाती ही है. पिछले पखवाड़े वीरेंद्र पाटील की इंका सरकार ने भी ऐसा ही खेल शुरू किया.

पाटील सरकार ने 25 साल का सेवाकाल पूरा कर चुके अथवा 50 साल की उम्र पूरी कर चुके 'क' और 'ख' श्रेणी के अवांछनीय अफसरों की शिनाख्त के लिए एक तीन सदस्यीय समिति नियुक्त की है. इसकी अध्यक्षता कर्नाटक हाईकोर्ट के जाने-माने पूर्व न्यायाधीश पी.पी. बोपन्ना करेंगे. इस तरह अब सरकार ने ऐसे अफसरों को जबरन सेवामुक्त करने के लिए सिविल सेवा नियमों को इस्तेमाल में लाने का फैसला किया है.

पाटील कहते हैं, "सरकार भ्रष्ट अथवा निकम्मे अफसरों को नहीं रखना चाहती." आठ माह पुरानी सरकार ने प्रशासकीय ढांचे को चुस्त-दुरुस्त करने के लिए कुशलता, लेखा परीक्षण और सतर्कता ब्यूरो भी स्थापित किया है.

इस समिति की स्थापना से भ्रष्ट और निकम्मे अफसरों को छांटकर बाहर करने के सरकार के अधिकार को सचमुच अमल में लाए जाने की उम्मीद है. पहले इस मामले में उदासीनता बरती जाती थी. एक वरिष्ठ आईएएस अफसर कहते हैं, "इमरजेंसी में बहुत-से अफसरों को जबरन रिटायर कर दिया गया पर बाद में उनमें से आधे बहाल कर दिए गए."

कर्नाटक में करीब 250 आईएएस और 100 आईपीएस अफसर हैं. 15 साल पहले चरित्रहीनता के आरोप में

पाटीलः सख्त रवैया

बरखास्त किए गए एक आईएएस अफसर को छोड़कर किसी को भी कभी जबरन रिटायर नहीं किया गया. मुख्य सचिव की अध्यक्षता वाली संवैधानिक समिति भी राजनैतिक इरादे के अभाव में कोई उपलब्धि हासिल नहीं कर पाई. यह समिति अफसरों के रिकार्ड की समीक्षा के लिए साल में कम-से-कम दो बार बैठक करती है.

अब मुख्य सचिव को अफसरों के सेवा में आने के बाद बनी उनकी संपत्ति की जांच करने को कहा गया है. कार्मिक और प्रशासकीय सुधार विभाग संदिग्ध अफसरों के बारे में आंकड़े जुटाने में जुटा हुआ है. एक युवा आईएएस अफसर कहते हैं, "अवांछनीय तत्वों की छंटाई करने से प्रशासन पर निश्चय ही अच्छा असर पड़ेगा."

सरकार से स्वतंत्र रहकर काम कर रहे लोकायुक्त ने पिछले सात महीनों में दो आईएएस अफसरों और एक-एक आईपीएस तथा आईएफएस अफसर के घरों पर छापा मारकर गुप्त आय का भंडाफोड़ किया है. 'क' श्रेणी के तीन दूसरे अफसर भी लोकायुक्त के जाल में फंसे हैं.

बहरहाल, इस कदम का परिणाम समिति की सिफारिशों के बाद ही पता चल पाएगा. लेकिन अफसर अब सतर्क हो गए हैं.

—सी.बी. यशवंत कुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

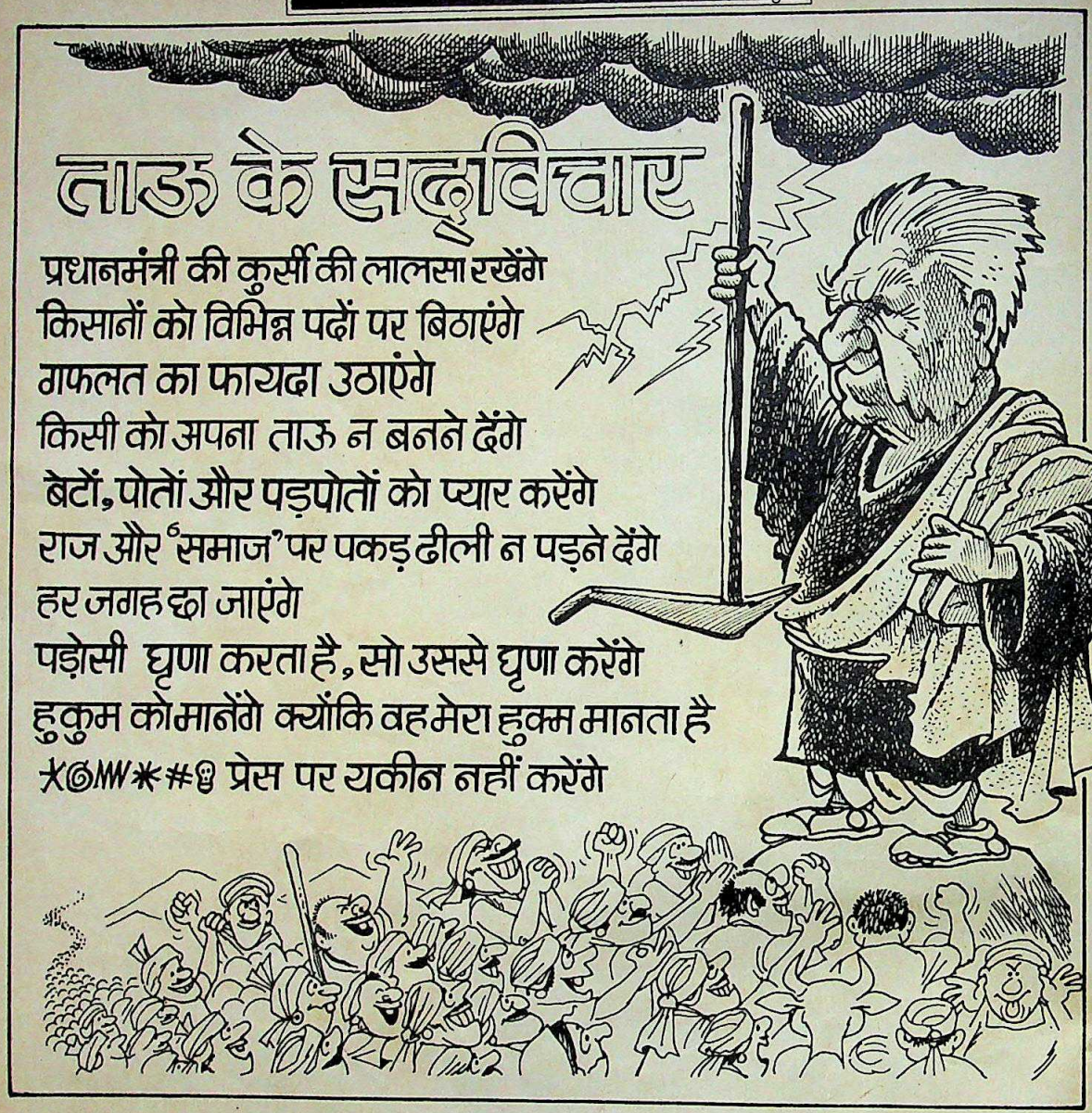

सनद रहे

अवसानः 93 वर्षीय **आर्देशिर फर्दोनजी सोहराबजी तल्यारखां** का. अंतिम दम तक हरफनमौला और कलम के धनी रहे तल्यारखां खेल पत्रकारिता की हस्ती थे. आकाशवाणी पर अपनी जीवंत कमेंटरी के जरिए खेल को मैदान से उठाकर करोड़ों लोगों के द्वार पर लाने वाले वे पहले व्यक्ति थे.

सम्मानितः तंत्रिका विज्ञान के जाने-माने प्रोफेसर **के. जगन्नाथन** और **एम. संबाशिवन** को ब्रिटेन में ग्लासगो के रॉयल कॉलेज ऑफ फिजिशंस ऐंड सर्जन्स से मानद अध्येतावृत्ति. यह सम्मान पाने वाले वे पहले भारतीय हैं. रॉयल कॉलेज का यह मानद सम्मान यूरोप में बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है.

छापेः विवादास्पद उद्योगपति **अभय ओसवाल** के दफ्तरों और कारखानों पर केंद्रीय उत्पाद-कर (अपवंचन निरोधी) निदेशालय की कार्रवाई. इस अभियान में 500 जासूस शामिल हुए. तीन शहरों में ओसवाल समूह के करीब 40 ठिकानों पर ये छापे पड़े. बताया जाता है कि इन छापों में जासूसों को उनके काम की काफी जानकारी मिली.

पेशकशः योजना आयोग के सदस्य **लक्ष्मीचंद्र जैन** की ओर से भारतीय तेल निगम के अपहृत महाप्रबंधक के बदले खुद को युनाइटेड लिबरेशन फ्रंट ऑफ असम के आतंकवादियों का बंधक बनने की. जैन कहते हैं, "अगर वे कोई बंधक ही चाहते हैं तो मैं तैयार हूं."

गलत उड़ेः दिल्ली हवाई अड्डे पर इंडियन एअरलाइंस वालों ने मुंबई जाने वाले यात्री **ए. जैन** को कलकत्ता की उड़ान पकड़वा दी. बाद में उन्हें मुंबई जाने के लिए एअरलाइंस का मानार्थ टिकट दिया गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

KINGFISHER
MINERAL WATER

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

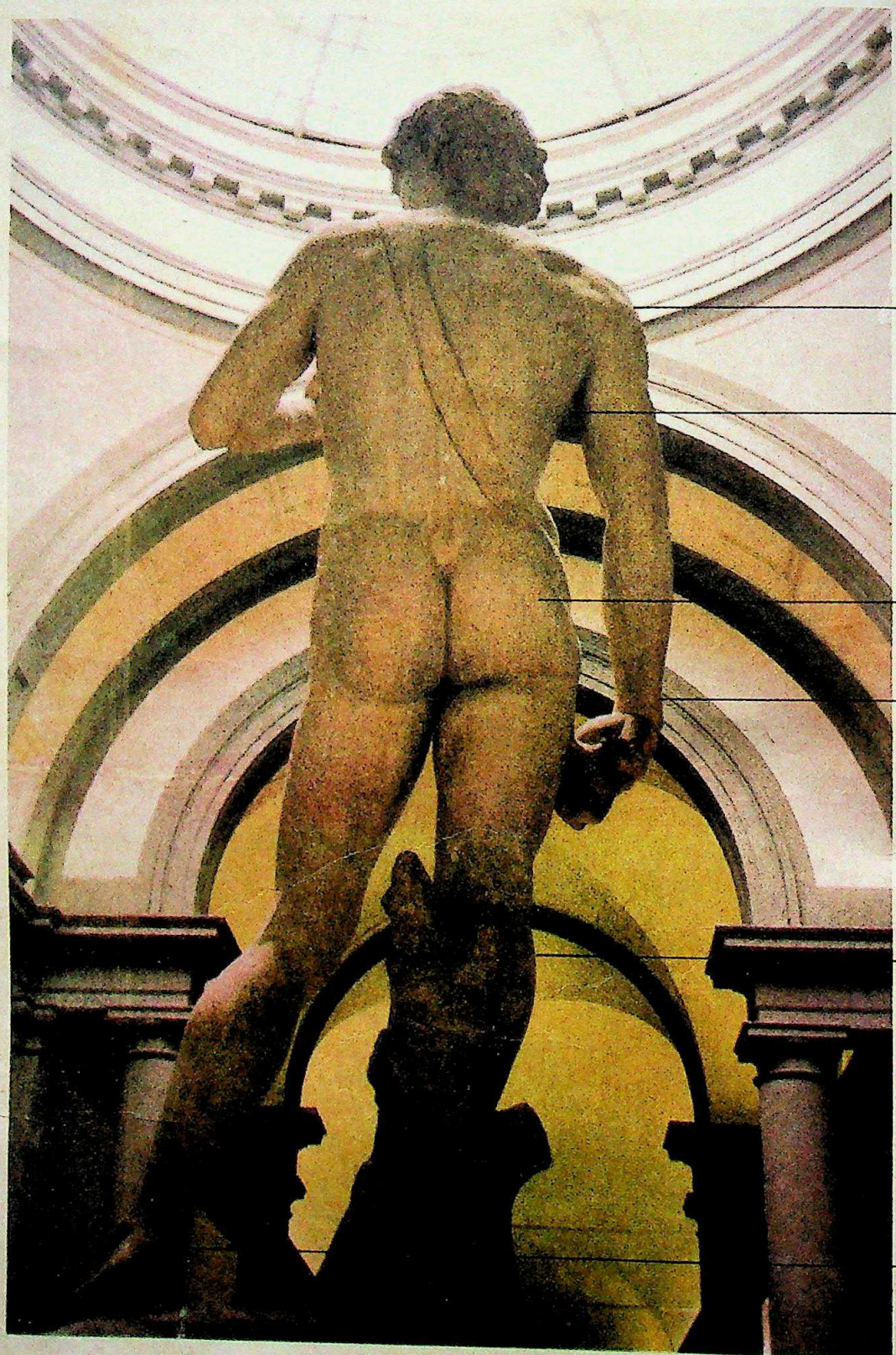

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

HATHAWAY

PACO RABANNE

Crystal

ROLEX

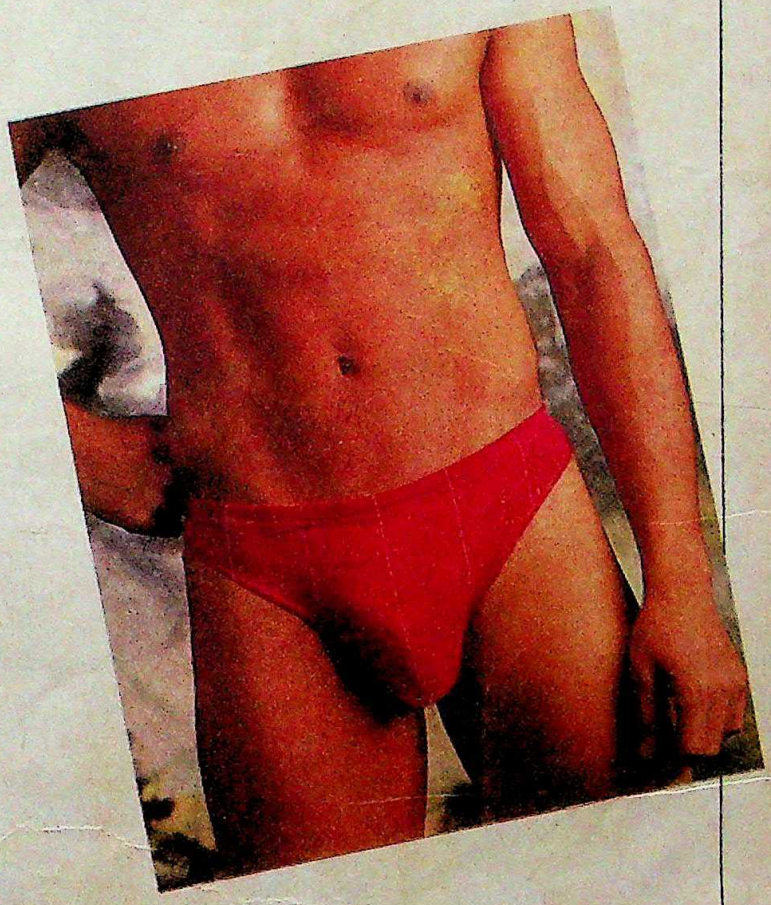

LEVIS

NIKE

निर्वस्त्रता की लालित्यपूर्ण कला

क्रिस्टल® की तरफ़ से डिज़ाइनर अंतर्वस्त्र

१००% मर्सराइज़्ड सूंती

LINTAS M CG C1 2435

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कश्मीर

मात देने के दांवपेंच

श्रीनगर के उत्तर-पश्चिम सीमा क्षेत्र में भारतीय सेना और पाकिस्तान में प्रशिक्षित घुसपैठियों के बीच लुका-छिपी का खूनी खेल जारी

पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में जमीन का ऐसा टुकड़ा पाना मुश्किल है जो इतने सैनिकों के खून से रंगा हो. श्रीनगर के उत्तर-पश्चिम में स्थित कटोरे की शक्ल वाले उड़ी को घेरे रहने वाली 10,000 फुट लंबी शिखर रेखा का हर दर्रा कश्मीर घाटी के लिए सामरिक लिहाज से बहुत महत्वपूर्ण है. दोनों देशों की सेनाएं पिछली तीन लड़ाइयों में हर दर्रे के लिए दो-दो हाथ कर चुकी हैं. हर पहाड़ी किसी-न-किसी रणबांकुरे की स्मारक है.

उड़ी नाले पर बने पुल की भी कहानी कुछ ऐसी है. इस पुल का नाम 1 सिख रेजिमेंट के जमादार नंद सिंह के नाम पर रखा गया है जिन्होंने *'बोले सो निहाल'* के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्घोष के साथ अपने घिरे हुए सैनिकों को दुश्मनों पर धड़ाधड़ गोलियां चलाने का आदेश दिया था. नंद सिंह को मरणोपरांत मिला महावीर चक्र इस बात का सबूत है कि दोनों देशों की सेनाएं इस महत्वपूर्ण क्षेत्र पर कब्जा जमाने के लिए किस कदर बेचैन रही हैं.

इस जगह के सामरिक महत्व का सबूत है 6,800 फुट की ऊंचाई पर बनी रुस्तम चौकी. इसके ठीक सामने 8,652 फुट ऊंचा हाजी पीर का दर्रा है जहां से पाकिस्तान पिछले चार दशक से

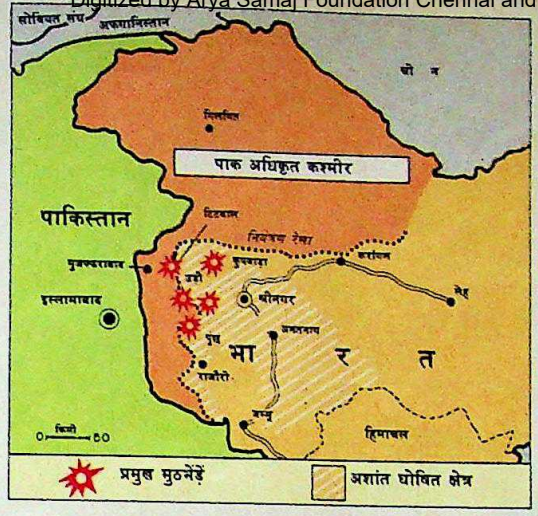

लगी है जिसे मेजर रंजीत सिंह के सैनिकों ने 1965 में खत्म करने की कोशिश की थी. वह खतरा है घुसपैठ का.

बर्फ पिघलने के कारण पाक अधिकृत कश्मीर से हथियारबंद प्रशिक्षित घुसपैठिए भारी संख्या में कश्मीर आ रहे हैं. एक वरिष्ठ भारतीय सैनिक अधिकारी ने कहा, "अगले आठ हफ्ते, जब तक पहाड़ों पर बर्फ नहीं गिरती, काफी महत्वपूर्ण हैं. वे भी यह जानते हैं और हम भी."

पिछले छह हफ्तों में आमने-सामने की कई लड़ाइयों में लगभग सौ घुसपैठिए मारे गए या पकड़े गए. हर मुठभेड़ के बाद श्रीनगर में सुरक्षा एजेंसियों के संयुक्त पूछताछ केंद्र का काम बढ़ जाता है और

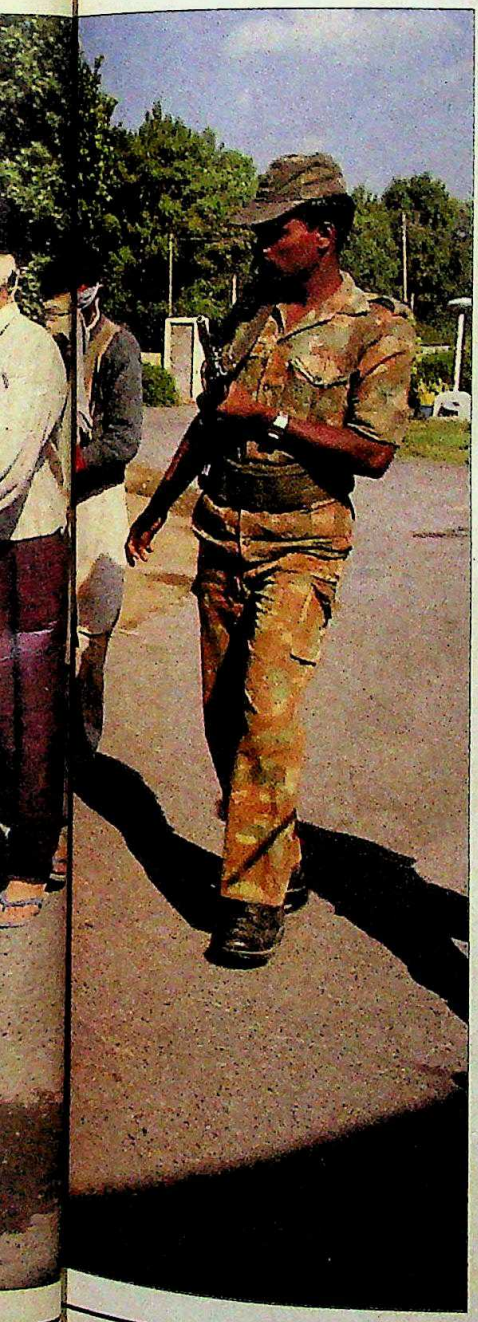

बरामद हथियारों और गिरफ्तार घुसपैठियों से स्पष्ट है कि पाकिस्तान ने घाटी में गड़बड़ी फैलाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है

कश्मीर में गड़बड़ी कर रहा है. 1965 में भारतीय सेना ने बड़े नाटकीय अंदाज में इस पर कब्जा कर लिया था. लेकिन सरकार ने ताशकंद समझौते के बाद इसे पाकिस्तान को वापस कर दिया. आज हाजी पीर से निकलने वाले बीसियों रास्तों पर फिर उसी खतरे के साथ चहल-पहल दिखाई पड़ने

सेना के चंगुल में आए घुसपैठिए (बाएं) और बरामद हथियार: खतरनाक साजिश

बरामद कलाश्निकोव, रॉकेट लांचरों, विस्फोटकों, टैंकों और सैन्य ध्वंसक बारूदी सुरंगों और अभी हाल से प्रचलित सायनाइड कैप्सूलों से उनका भंडार भर गया है.

लुका-छिपी के खूनी खेल में शामिल सैनिकों ने इस बात पर गौर किया है कि लड़ाई में शामिल होने की घुसपैठियों की इच्छा बढ़ती जा रही है. पिछले पखवाड़े उन्होंने टिटवाल के पास गश्त लगा रहे सुरक्षा बलों पर घात लगाकर हमला कर दिया जिसमें चार सैनिक मारे गए. बाद में सुरक्षा बलों के जवाबी हमले में उनके भी पांच लोग मारे गए. लेकिन सुरक्षा बल इसके पहले (8-9 जुलाई को) सुनसान गुलमर्ग हाइट्स में हुई मुठभेड़ को ज्यादा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महत्वपूर्ण मानते हैं.

जम्मू-कश्मीर राइफल्स की तीसरी बटालियन के 11 सदस्यीय गश्ती दल ने एक घाटी की झाड़ियों में कुछ हलचल देखी. गश्त का नेतृत्व करने वाले जूनियर कमीशन अफसर और उनके सहायक एक नायक ने हलचल के कारण का पता लगाने का फैसला किया. दोनों को कलाश्निकोव से भून दिया गया. गश्ती दल के बाकी जवानों ने पोजीशन ले ली, अड्डे पर रेडियो से संदेश भेजा और नई कुमुक आने तक इंतजार किया. घुसपैठियों से कई

उड़ी के पास हमला करने वालों में 16 वर्षीय मेहराजुद्दीन भी था. वह भागा तो साथियों ने गोली मार दी

बार आत्मसमर्पण करने को कहा गया लेकिन उन्होंने नहीं किया. वे कुल 17 थे. 28 घंटे के बाद उनकी हिम्मत जवाब दे गई और वे कलाश्निकोव चलाते हुए निकल पड़े. उनमें से 13 मारे गए और तीन भाग गए. पकड़ा गया आदमी कुली था. असली लड़ाकू लड़ते हुए मारे गए.

यह जत्था कट्टरपंथी इस्लामी और पाकिस्तान समर्थक संगठन हिज्ब-उल-मुजाहिदीन का था. फिलहाल पाकिस्तानी इंटेलिजेंस सर्विसेज इस संगठन की खूब मदद कर रही है. सुरक्षा बलों के हाथ आए मुश्ताक अहमद दर ने दस्ते की आत्मघाती यात्रा का ब्यौरा दिया. डर से कांपते हुए उसने बताया कि किस तरह उसके गांव करालपुरा के आतंकवादियों ने उसे पाक अधिकृत कश्मीर जाने के लिए उकसाया और फिर उसे ऐसे आदमियों ने प्रशिक्षित किया जो "नागरिक भेष में सैनिक लगते थे." दर के मुताबिक उसे फुसलाने वाले लोगों ने उसे बताया कि उनका मकसद एक लाख कश्मीरी लड़ाकुओं की फौज खड़ी करना और हथियार जमा करना है ताकि माकूल समय पर भारत पर हमला किया जा सके.

अफसरों का कहना है कि हाल की मुठभेड़ें, जिनमें पिछले पखवाड़े पुंछ के पास हुई मुठभेड़ शामिल है, एक विशेष संकेत करती हैं. पाकिस्तानियों के पास ऐसे छह से आठ हजार प्रशिक्षित आदमी हैं जिन्हें वे हथियारों के साथ अगस्त खत्म होने के पहले चोरी-छिपे भारत भेजना चाहते हैं. इनके चारों ओर ऐसे लड़ाकों का जाल बिछाया जाएगा जो लड़ाई छिड़ने पर भारतीय सेना को अस्त-व्यस्त कर दें या लंबे समय तक लड़ाई चलने पर उस पर कहर ढा सकें.

लेकिन यदि आज सुरक्षा बलों में थोड़ा-बहुत विश्वास आया है तो इसकी एक वजह यह है कि खुफिया सेवा चुस्त हुई है. चार दशक पुरानी खुफिया व्यवस्था के लोगों में से ही एजेंटों का एक जाल बनाया जा रहा है. राज्यपाल गिरीशचंद्र सक्सेना के शुरुआती कदमों में से एक है—आधा दर्जन सुरक्षा संगठनों के कामकाज में तालमेल बिठाना जो अपने-अपने खुफिया तंत्र के साथ प्राय: एक-दूसरे के विपरीत काम करते हैं.

इनमें से कुछ के कामकाज में सुधार हो रहा है. बागियों की पहचान में मदद के लिए गिरफ्तार संदिग्ध लोगों को बिना नंबरवाली कार में लेकर घूमना भी फायदेमंद साबित हुआ है. यह उम्दा खुफियागीरी का ही नतीजा था कि पिछले महीने सुरागों के आधार पर आधा दर्जन जगहों पर छापे मारकर बड़ी संख्या में हथियार बरामद किए गए. वरिष्ठ पुलिस अधिकारी और राज्यपाल के सलाहकार जमील कुरैशी कहते हैं, "खुफिया तंत्र शर्मीली औरत की तरह होता है. वह दूर ही रहता है. लेकिन एक बार शर्म खत्म हो

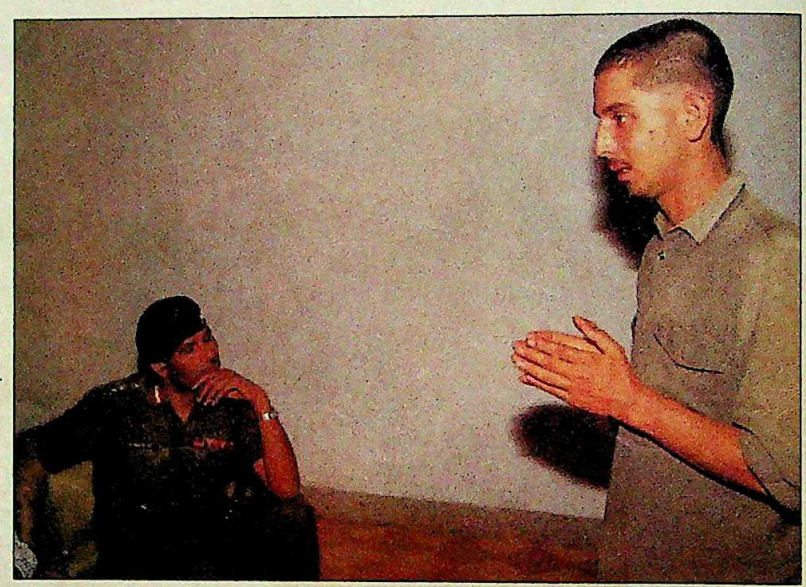

एक मुठभेड़ में 13 घुसपैठिए और दो सैनिक मारे गए. घुसपैठियों में से सिर्फ 19 वर्षीय मुश्ताक ही जिंदा बच पाया

जाने पर उसके लिए चीजें आसान हो जाती हैं."

लेकिन अधिकारियों का मानना है कि वे बमुश्किल दस फीसदी घुसपैठियों को रोकने में ही सफल हो पा रहे हैं. वे जानते हैं कि इस काम में चाहे कितने आदमी क्यों न लगा दिए जाएं और खुफिया तंत्र चाहे कितना उम्दा क्यों न हो, वे घुसपैठियों के एक छोटे हिस्से से ज्यादा को कभी नहीं रोक सकते. फिलहाल उनके सामने चुनौती इस हिस्से को उस स्तर तक बढ़ाने की है जिससे नए घुसपैठियों में खौफ पैदा हो जाए. —**शेखर गुप्ता,** कश्मीर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजीव गांधी, सलमान रुश्दी और खजुराहो के 'कुरकुट' ने इंडिया टुडे के लिए क्या किया?

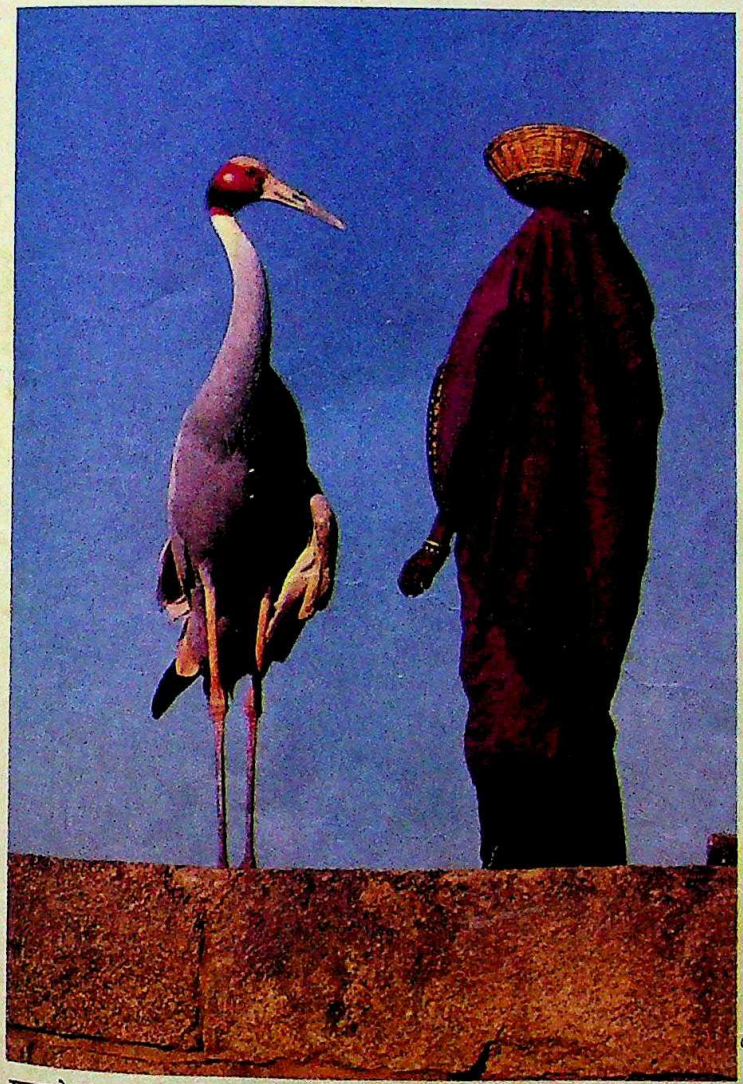

खजुराहो गांव द्वारा पाला-पोसा गया सारस 'कुरकुट'

फिर एक बार 'वर्ष की सर्वश्रेष्ठ एशियाई पत्रिका' पुरस्कार जीतने में इसकी मदद की.

विचारोत्तेजक संपादकीय, खोजपूर्ण खबरें, मानवीय संबंधों आदि के मर्मस्पर्शी लेख, मनमोहक मुखपृष्ठ और चित्रों का आकर्षक उपयोग—इंडिया टुडे इन तमाम चीजों के लिए अनवरत प्रयत्नशील रही है और इसी कारण वह आज इस शिखर तक पहुंच सकी है, और निरंतर वहां बनी हुई है.

अंग्रेजी इंडिया टुडे ने प्रतिष्ठित एशिया-प्रशांत विश्व प्रकाशन कांग्रेस से लगातार दूसरे वर्ष एशिया की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका होने का दुर्लभ सम्मान प्राप्त किया है.

जिन छायाचित्रों ने खजुराहो गांव द्वारा पाले-पोसे गए सारस 'कुरकुट' की (सारस का संताप, 15 मई'89) कहानी सुनाई, उन्हें छायांकन का द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ. सर्वश्रेष्ठ मुखपृष्ठ का पुरस्कार सलमान रुश्दी प्रकरण पर प्रकाशित आवरण कथा (किताब पर बवाल, 15 मार्च '89) को मिला. और राजीव गांधी के पांच वर्षों का मूल्यांकन (फीकी पड़ी चकाचौंध, 15 नवंबर'89) 'संपादकीय लेखन' वर्ग में दूसरे स्थान पर रहा.

इंडिया टुडे को मिली यह अंतरराष्ट्रीय मान्यता, उसकी उपलब्धियों का पुनःसम्मान है. लेकिन इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि है पाठकों द्वारा इसे 'नंबर एक' मानना. और यही एक कारण है जो इस पत्रिका को पूर्णता प्राप्त करने के लिए प्रयासरत रखता है, क्योंकि इंडिया टुडे मानता है कि श्रेष्ठतम होना तो अभी बाकी है.

इंडिया टुडे

रखे दो कदम आगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजिताभ बच्चन

झुठलाए आरोप

स्वीडिश अखबार ने माफी मांगी

किसी फिल्म के अंतिम अदालती दृश्य जैसा इसे नाटकीय बनाने की पूरी तैयारी थी. अभिनेता अमिताभ बच्चन मां तेजी के साथ लंदन पहुंच गए थे. उन्हें इस चरम दृश्य का नायक जो बनना था. वे अपने व्यवहारपटु भाई अजिताभ के लिए कटघरे में खड़े होने और जिरह का सामना करने को तैयार थे.

लेकिन अंततः स्वीडिश अखबार 'डॅगंस नाइटर' के खिलाफ अजिताभ के मानहानि मुकदमे में वह समां नही बंध पाया. राजनैतिक रूप से महत्वपूर्ण यह मुकदमा जब अजिताभ को हर्जाना दिए जाने का फैसला सुनाया तो अमिताभ आटोग्राफ लेने वालों की भीड़ को ठेलते हुए अपनी मां के गले लग गए. उन्होंने 'इंडिया टुडे' से कहा, "बच्चन बंधु जीत गए. आखिर सत्य की विजय हुई." लंदन में 19 जुलाई का दिन बच्चन बंधुओं के लिए उत्सव जैसा हो गया था. उनके वकील सरोश जईवाला के घर पर शैंपेन के साथ धूमधाम से रात्रिभोज हुआ.

अखबार का कहना है कि उसे बोफोर्स घोटाले की जांच कर रहे लोगों ने गुमराह किया इसलिए उसने बच्चन से बिना शर्त माफी मांग ली

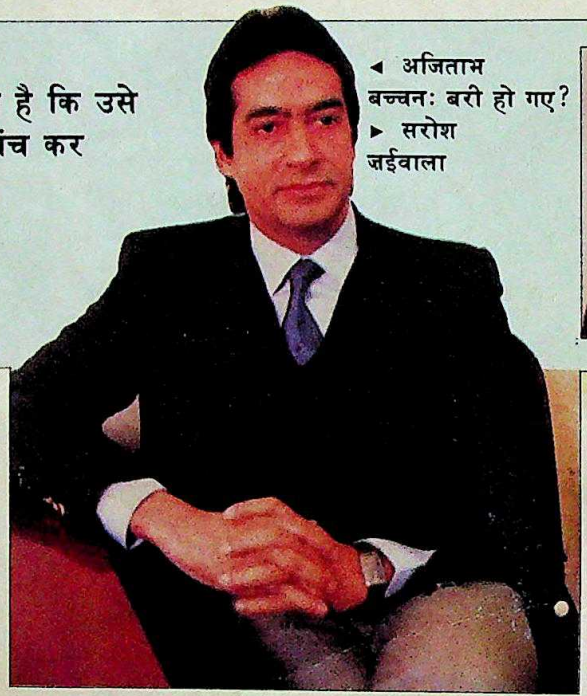

गारबी गुजारत

◄ अजिताभ बच्चनः बरी हो गए?
► सरोश जईवाला

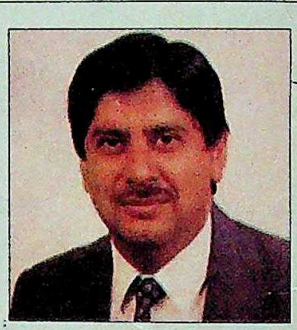

अजिताभ ने अखबार द्वारा बोफोर्स घोटाले में अपना नाम घसीटे जाने के खिलाफ दायर किया था. ब्रिटिश हाईकोर्ट में मुकदमा शुरू होने के पहले ही अखबार के वकील ने माफीनामा दायर करके अक्सर लंदन में ही रहने वाले आप्रवासी भारतीय अजिताभ के सामने समर्पण कर दिया.

नई दिल्ली में सरकारी सूत्रों ने माना कि इस फैसले और बोफोर्स सौदे में ली गई दलाली की रकम गोपनीय खातों में रखने वाले संदिग्ध लोगों के बारे में जानकारी मांगने के भारत के अनुरोध पत्र को नामंजूर करने के स्विस अधिकारियों के निर्णय से जांच प्रक्रिया को नुकसान पहुंचा है. लेकिन उच्च सरकारी सूत्रों के मुताबिक जांच का काम जारी रहेगा और सीबीआई के निदेशक राजेंद्र शेखर खुद एक दल के साथ नया अनुरोध पत्र देने स्विट्जरलैंड जा रहे हैं.

बाद में 11 नं. अदालत में बैठे अमिताभ ने कहा, "मैं यहां भिड़ने की मुद्रा में आया था. लेकिन फिल्म शुरू होते ही खत्म हो गई." पर भावनात्मक दृश्यों की कमी नहीं थी. न्यायाधीश मैकफर्सन ने यह मुकदमा स्टॉकहोम में चलाया.

उन्होंने हाईकोर्ट में 2 मार्च को याचिका दायर की. 25 मार्च को अदालत ने अजिताभ के दो देशों में मुकदमा चलाने के खिलाफ अखबार के आवेदन को खारिज कर दिया. 'डॅगंस' की दलील थी कि मुकदमा स्वीडन में ही चलाया जाना चाहिए क्योंकि ब्रिटेन में अखबार की सिर्फ 200 प्रतियां ही बिकती हैं. लेकिन न्यायाधीश माइकल डेविस ने यह दलील नामंजूर कर दी.

12 जुलाई को अखबार की दूसरी हार हुई. उसने अजिताभ की उस अपील की मुखालफत की थी कि सुनवाई 31 जुलाई को गर्मियों की छुट्टी होने के पहले ही हो जानी चाहिए. 'डॅगंस' की अपील खारिज करते हुए अदालत ने 19 जुलाई को सुनवाई की तारीख मुकर्रर कर दी.

जानकार सूत्रों का कहना था कि सुनवाई के दौरान अजिताभ के वकील ने दूसरे दस्तावेजों के साथ ब्रिटेन की एक प्रमुख जांच एजेंसी की रिपोर्ट पेश की जिसमें कहा गया कि छठे खाते की पूरी कहानी ही मनगढ़ंत है. इस रिपोर्ट के मुताबिक 'डॅगंस' में खबर छपने के समय संबंधित स्विस मजिस्ट्रेट समेत कोई भी यह ठीक-ठीक नहीं जानता था कि किस खाते को जाम किया गया है. एजेंसी की रिपोर्ट में कहा गया कि भारत सरकार के आग्रह पर खातों को जाम करने का आदेश देने वाले स्विस मजिस्ट्रेट आदेश देने के अगले ही दिन सैनिक ड्यूटी पर चले गए और तीन हफ्ते बाद लौटे.

लेकिन 19 जुलाई को खचाखच भरी अदालत में ऐसा दस्तावेज पेश करने की जरूरत नहीं पड़ी. 'डॅगंस' के मुख्य वकील डेविड एडी सुनवाई शुरू होने के पहले ही

यह मुकदमा 'डॅगंस' में 31 जनवरी को छपी खबर से शुरू हुआ. इस खबर में बोफोर्स घोटाले की रकम वाले स्विस बैंक के छठे खाते के पीछे अजिताभ का हाथ बताया गया. खबर का शीर्षक था, "भारत में बोफोर्स जांचकर्ताओं के लिए खुशखबरी—(राजीव) गांधी के मित्र को रकम मिली." खबर में यह भी कहा गया कि अजिताभ ने बोफोर्स से मिली रकम से स्विट्जरलैंड में एक घर खरीदा. चंद दिनों बाद ही अजिताभ ने लंदन में प्रेस कांफ्रेंस बुलाकर मानहानि का मुकदमा दायर करने का इरादा जाहिर किया. उन्होंने मानहानि का मुकदमा लंदन में दायर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

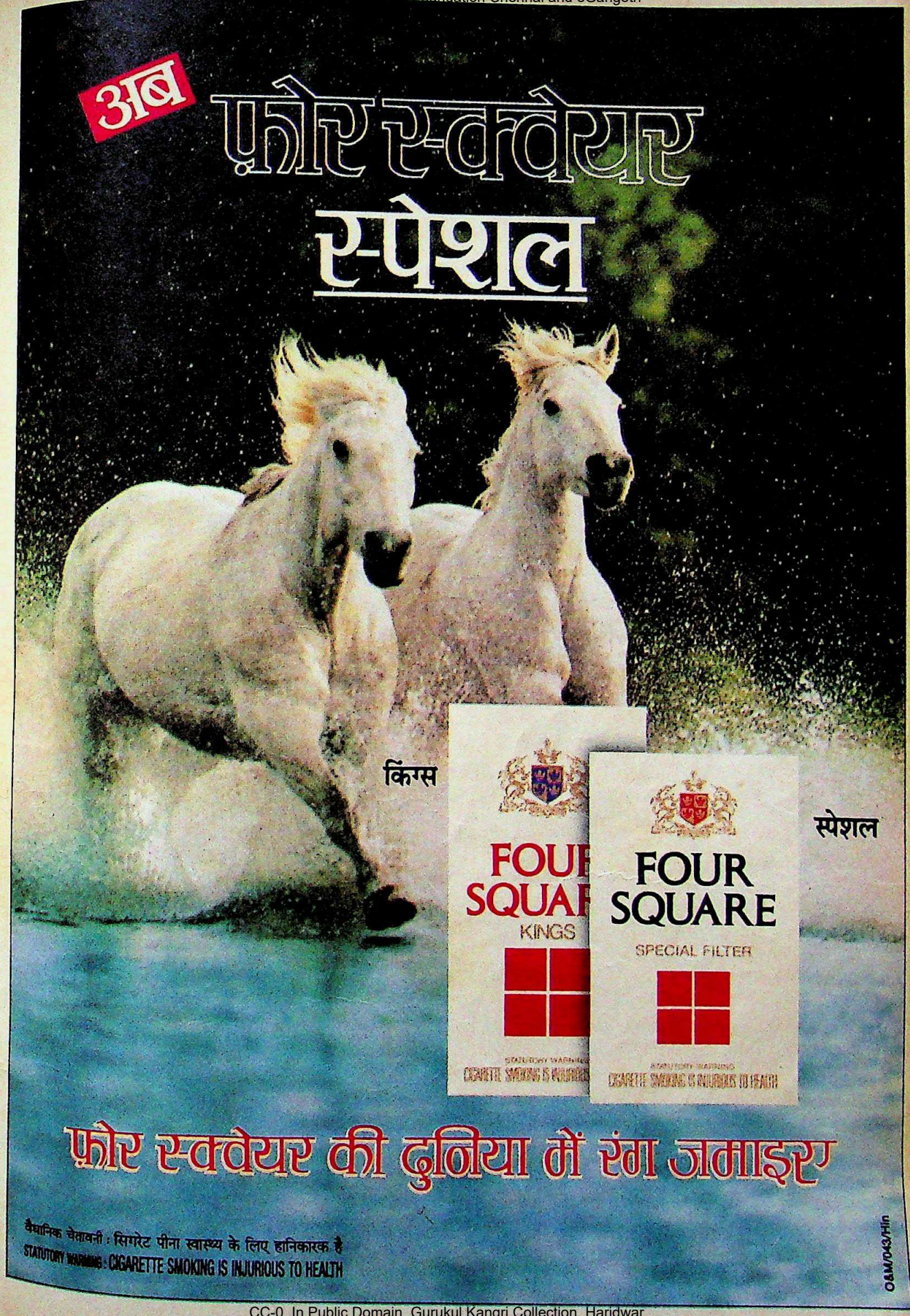

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खड़े होकर माफीनामा पढ़ने लगे. माफीनामा अखबार की संपादक क्रिस्टिना जटरस्ट्रॉम और उसके स्वीडिश कानूनी सलाहकार पीटर डॅनोवस्की की ओर से था जो लंदन पहुंच गए थे.

माफीनामे में कहा गया कि डॅनोवस्की को स्विट्जरलैंड से सुबह मिली 'ताजा खबरों' की वजह से उन्हें और जटरस्ट्रॉम को 'अब पूरी तरह यकीन हो गया है कि उन्होंने इस साल के शुरू में उन लोगों की सूचनाओं पर विश्वास करके भूल की जो भारत सरकार की ओर से बोफोर्स सौदे की जांच से सीधे जुड़े थे.''

इसके बाद अदालत अजिताभ को हर्जाना और खर्च की रकम देने की सुनवाई के लिए फिर बैठी. अजिताभ के वकील चार्ल्स ग्रे ने कहा कि 'डॅगंस नाइटर' के आरोपों से सिर्फ अजिताभ को ही दुख नहीं हुआ बल्कि ''इससे राजीव गांधी को भी परेशानी झेलनी पड़ी.''

फिर दोनों पक्षों के राजीनामे के एक अंश में कहा गया, ''इस मामले का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि प्रतिवादी पक्ष को भारत की मौजूदा सरकार के करीबी सूत्रों से जानकारी मिली जिस पर उनकी खबर आधारित थी.''

अजिताभ की योजना डॅगंस की खबर के सूत्रों के नाम जानने के लिए स्वीडन में मुकदमा आगे बढ़ाने की है.

बच्चन बंधु अपनी इस अदालती विजय का जश्न मना रहे थे. और ब्रिटेन में भारतीय मूल के वकील जईवाला ने आरोप लगाया कि अजिताभ की वकालत करने के कारण राष्ट्रीय मोर्चा सरकार की उन पर टेढ़ी नजर है. लेकिन उनकी शिकायत बच्चन बंधुओं द्वारा शैंपेन की बोतलें खोलने में कहीं दब गई. यह ध्वनि अब नई दिल्ली में भी सुनी जाने की संभावना है. —**दिपंकर दे सरकार,** लंदन में

अमिताभ बच्चन

'हमारी और सचाई की जीत हुई'

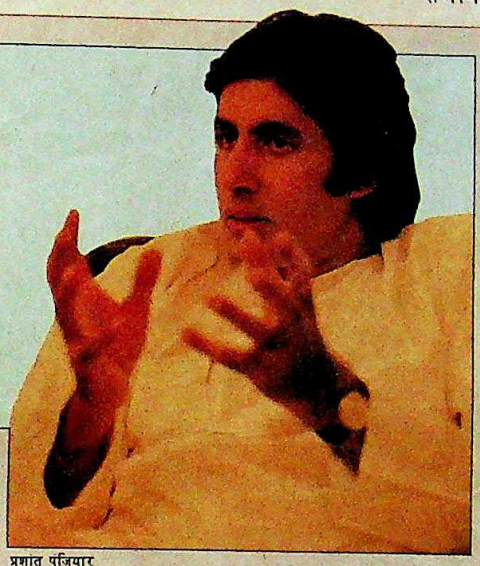

प्रशांत पंजियार

बोफोर्स सौदे से संबंधित एक विवादास्पद मामले पर ब्रिटिश अदालत के फैसले के कुछ घंटे बाद ***दीपंकर दे सरकार*** *ने लंदन में अमिताभ बच्चन से बातचीत की. अंश:*

● ***इस फैसले पर आपकी प्रतिक्रिया?***

हम खुश हैं. बच्चन बंधु जीत गए. लेकिन मैं अदालत में दिए गए इस बयान से परेशान और दुखी हूं कि स्वीडिश अखबार में दरअसल भारतीय जांच दल ने ही खबर छपवाई थी. मैं शुरू से कहता आ रहा हूं कि इस मामले में हम शामिल नहीं हैं पर साढ़े चार साल से हम पर कोई भरोसा नहीं कर रहा था. आखिरकार सचाई उजागर हुई. वे सभी राजनीतिक और उनके समर्थक गलत साबित हुए जिन्होंने अपने राजनैतिक खेल की खातिर हमें बदनाम किया. उन्हें सफाई देनी चाहिए और अब वी.पी. सिंह अपने जांच दल के खिलाफ एफआईआर दायर करें. उनके बदला भंजाने के इरादों ने देश को विदेश में बदनाम किया है.

● ***आपका अगला कदम क्या होगा?***

किसी राजनैतिक गतिविधि में हिस्सा नहीं लूंगा. सिर्फ यही कोशिश होगी कि भारत के लोग जानें कि मेरे और मेरे परिवार को सचमुच क्या-क्या सहना पड़ा. बच्चन विरोधाभासों से समझौता नहीं करते, उन्हें उजागर करते हैं. हम स्वीडन में मुकदमा चलाने जा रहे हैं ताकि हमें जांच दल के उन लोगों के नाम जानने का मौका मिले जो इसमें शामिल थे.

● ***स्विस सरकार द्वारा अनुरोध पत्र नामंजूर करने के मामले में अब आप क्या करने जा रहे हैं? अनुरोध पत्र में आपका, आपके भाई का नाम भी है.***

मैं जानना चाहूंगा कि मेरा नाम शामिल करने के क्या आधार हैं. हमारे खिलाफ कोई प्रथम दृष्ट्या सबूत नहीं हैं मेरा नाम एफआईआर में नहीं है लेकिन अनुरोध पत्र में है. क्या सीबीआई मुझे इसकी वजह बता सकती है? क्या यह सच है कि जब दिल्ली में विशेष न्यायाधीश आर. सी. जैन के सामने ये नाम रखे गए तो उन्होंने अनुरोध पत्र में ये नाम शामिल करना नामंजूर कर दिया? और उसके बाद उन्हें पद से हटा दिया गया. इसके बाद जो कुछ जोड़ा गया उसका मतलब क्या है? उस पर किसने दस्तखत किए और क्या वह दस्तखत करने का अधिकारी था? क्या यह सच है कि 26 जनवरी को 19-20 नामों की पहली फेहरिस्त भेजी गई और फिर 2 फरवरी को 22 से 25 नामों की दूसरी फेहरिस्त भेजी गई? इन नामों को सार्वजनिक क्यों नहीं किया गया जबकि एफआईआर में शामिल नाम उजागर कर दिए गए? क्या इस फेहरिस्त में शामिल किए गए लोगों को इसकी सूचना दी गई? मुझे तो सूचना नहीं मिली. और न ही मेरे भाई को या हमारी कंपनी या हमारे वकील को. ऐसे में कोई व्यक्ति अपना बचाव कैसे करेगा जब उसे यह पता ही नहीं कि उसके खिलाफ आरोप क्या हैं?

● ***इस फैसले का राजनैतिक असर क्या होगा?***

निजी तौर पर मैं वी.पी. सिंह से जानना चाहता हूं कि बिना सबूत के उन्होंने पूरे देश को क्यों बहकावे में रखा? वे ईमानदारी के पक्ष में और भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने वालों के प्रतीक बन गए, इसलिए उन पर कई बातों की जवाबदेही है. उन्होंने कहा कि देश का कानून ही फैसला करेगा. अब इंग्लैंड के हाईकोर्ट में कानून ने अपना फैसला सुना दिया लेकिन वी.पी. सिंह की बदला भंजाने की नीति नहीं बदली. उन्होंने मेरे भाई की फेरा संबंधित फाइल फिर खुलवा दी है जिस पर फैसला पहले ही हो चुका है. दरअसल वे अपना कानून लाद रहे हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेपाल

परिवर्तन की पीड़ा

लोकतंत्र की वापसी के बाद अराजकता के हालात से स्थिति विस्फोटक

नेपाल में लोकतंत्र की स्थापना से संघर्ष और आंदोलन भले ही दब गए हों लेकिन अभी भी भीतर-ही-भीतर आग सुलग रही है. यह सच है कि तीन महीने के आंदोलन के बाद राजशाही का दर्जा घटा है. एक तरफ लोग तेजी से आजादी के आदी होते जा रहे है, वहीं उन्हें यह डर भी है कि कहीं आजादी छिन न जाए. चिंतित प्रधानमंत्री कृष्ण प्रसाद भट्टराई कहते हैं, "हम संकटपूर्ण समय से गुजर रहे हैं और स्थिति उतनी सामान्य नहीं जितनी कि होनी चाहिए."

लोकतंत्र की हवा चारों ओर बह रही है. पिछले तीन महीने में कम-से-कम पांच प्रमुख राजनैतिक पार्टियों का जन्म हुआ और 30 नए प्रकाशन शुरू हुए. राजनैतिक रैलियां करना आम बात हो गई है. अंतरिम सरकार के खिलाफ पूरे काठमांडो की दीवारें नारों से रंगी जा रही हैं.

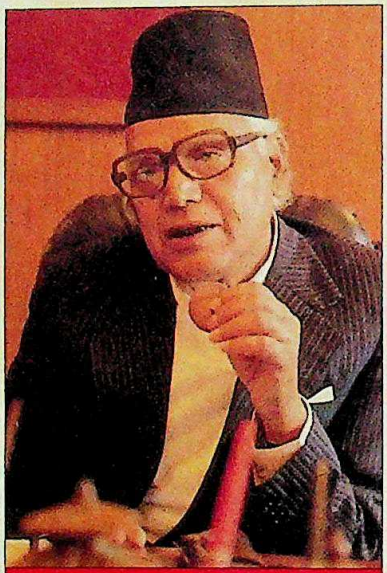

भट्टराई: घटती साख

कम्युनिस्ट नेता राधाकृष्ण मैनाली कहते हैं, "गोपनीयता का घूंघट हट गया है. नेपाली आजाद हो गए हैं. वे स्पष्टवादी और आलोचक हो उठे हैं. नैतिक रूप से यह बड़े मूल्यों वाली स्थिति है."

सतही तौर पर बहुत कुछ बदला नजर आ रहा है. मसलन, अब नरेश के गुजरने वाले रास्तों को सात घंटे पहले नहीं बंद किया जाता. सरकारी दफ्तरों में अधिकारी राजनीति की चर्चा करने और सरकार की आलोचना करने में भय नहीं खाते. पुलिस भी मनमाने ढंग से लोगों को गिरफ्तार नहीं करती. यही नहीं, जेलों में भी स्थिति सुधर गई है.

लेकिन दरअसल स्थिति उतनी अच्छी नहीं है जितनी कि ऊपर से दिखती है. साझा सरकार में शामिल नेपाली कांग्रेस और संयुक्त वाम मोर्चा के बीच चौड़ी होती खाई से लोगों की आशंकाएं बढ़ती

सभी फोटो: प्रमोद पुष्करणा

आंदोलन, पार्टीबाजी से अस्थिरता का माहौल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

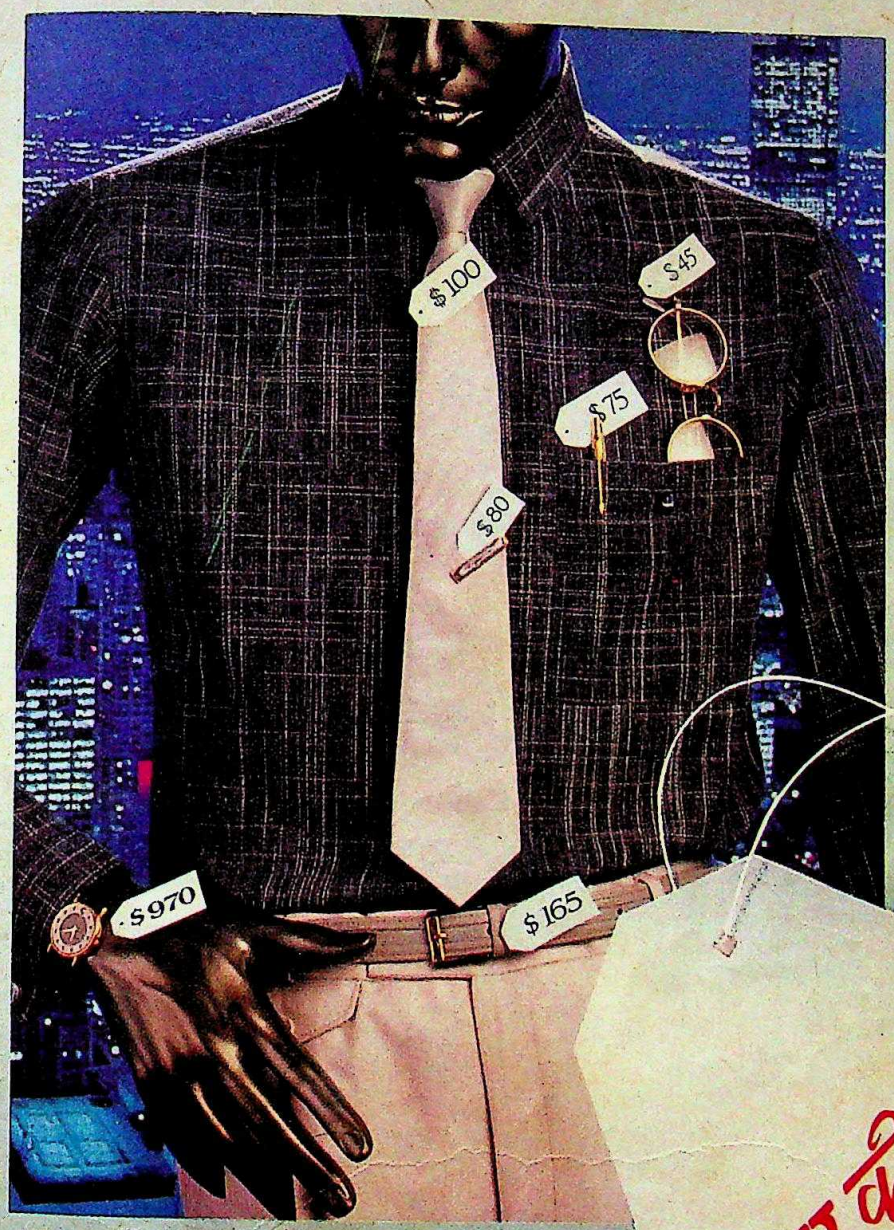

ब्लू चिप.
महंगी
आन-बान,
पर
मुनासिब
दाम.

डॉलर की ज़रूरत नहीं!

ब्लू चिप

शर्ट्स-ट्राउज़र्स

VIP का
एक उत्कृष्ट
उत्पाद

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संविधान संस्तुति आयोग: नरेश के प्रति नरमी

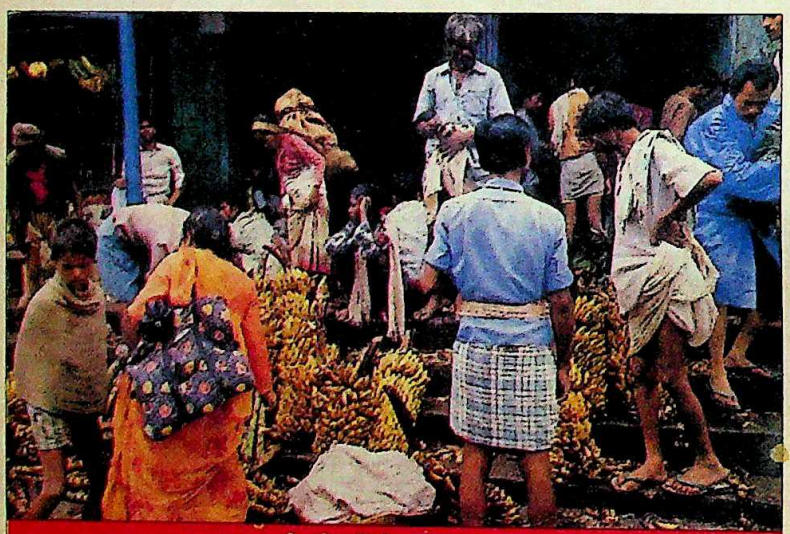

आसमान छूती कीमतों से सरकार मुश्किल में

जा रही हैं. इसी का नतीजा है कि कानून और व्यवस्था की हालत बदतर होती जा रही है. कीमतें आसमान छू रही हैं और पहली बार जातीय, धार्मिक और क्षेत्रीय मतभेदों की आवाजें मुखर होने लगी हैं.

पर सबसे बड़ा संकट सेना खड़ा कर रही है. नौ सदस्यीय संविधान संस्तुति आयोग, जिसे सितंबर के पहले हफ्ते में अपना मसौदा पेश करना है, लोगों के विचार जानने के लिए जब पूरे देश का दौरा कर रहा था तो सेना की स्थानीय इकाइयों ने लिखित में अपने सुझाव दिए. आयोग के सदस्य निर्मल लामा कहते हैं, "यह चौंकाने वाली बात है कि सेना की सभी इकाइयों ने एक जैसी भाषा में एक जैसे सुझाव दिए. जाहिर है यह पहले से बनाई योजना के तहत किया गया. संभवत: सेना के उच्चाधिकारियों के इशारे पर, जिनमें से ज्यादातर शाही परिवार से संबंधित हैं."

सेना के सुझाव तो और भी चौंकाने वाले हैं. उसका कहना है कि प्रभुसत्ता नरेश में निहित होनी चाहिए; नेपाल को हिंदू राष्ट्र बने रहना चाहिए और सेना तथा पुलिस नरेश के नियंत्रण में बनी रहनी चाहिए. नेपाली कांग्रेस और संयुक्त वाम मोर्चे के विचार इसके एकदम उलट हैं. दरअसल, वामपंथियों की मांग है कि मौजूदा संविधान के अनुच्छेद 20 और 80 खत्म कर दिए जाएं जिनके तहत नरेश को दूसरे अधिकारों के अलावा सरकार को बरखास्त करने का भी अधिकार मिला हुआ है.

फिलहाल, संविधान का मसौदा खुद उलझन और विवाद में पड़ा हुआ है. आयोग के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद उपाध्याय ने एकदम पलटा खाते हुए घोषणा की है कि संविधान का मसौदा नरेश को सौंपा जाएगा. इससे आयोग के तीन वामपंथी सदस्यों ने आयोग से हट जाने की धमकी दी है. वामपंथी अभी भी मांग कर रहे हैं कि एक अंतरिम कानून बनाकर चुनाव कराया जाए ताकि संसद में संविधान का अनुमोदन किया जा सके. लेकिन नेपाली कांग्रेस को यह मंजूर नहीं.

संयुक्त वाम मोर्चे की आशंका की वजहें भी हैं. सरकार नियंत्रित टीवी, रेडियो, संवाद समिति और अखबारों के बोर्ड में उसके किसी भी उम्मीदवार को नहीं रखा गया. कम्युनिस्ट नेताओं की मांग थी कि लोकतंत्र के आंदोलन को कुचलने वाले मुख्य कैबिनेट सचिव, गृह सचिव और पुलिस महानिरीक्षक को बरखास्त कर दिया जाए. लेकिन जहां पुलिस महानिरीक्षक अपना कार्यकाल पूरा होने पर रिटायर हुए, वहीं कैबिनेट और गृह सचिव अपने-अपने दफ्तरों में बने हुए हैं. नेपाली कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव विष्णु बहादुर मनंधार कहते हैं, "आंदोलन के दमन के लिए जिम्मेदार एक भी आदमी को दंडित नहीं किया गया. ऊपर से तुर्रा यह कि महारानी के चाचा को नया पुलिस महानिरीक्षक नियुक्त कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Your first strategic move for 1991

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

INDIA TODAY YEARBOOK 1991
Code: IT 101
Size: 20.9 × 27.9 cm
Price: Rs 275

POCKET DIARY 1
Code: IT 103
Size: 7.6 × 12.0 cm
Price: Rs 45

SLIMLINE DIARY 1991
Code: IT 102
Size: 8.2 × 17.1 cm
Price: Rs 70

INDIA TODAY DIARIES

The 1991 India Today diary set comes in a comprehensive range of a yearbook and compact diaries. Each diary is attractively produced combining excellence with efficiency, style with substance. Gold leaf embossing, gilt-edged pages, handy ribbon markers are just a few of the exclusive features of these diaries.

INDIA TODAY YEARBOOK 1991

The India Today Yearbook helps you to manage your time effectively and is much more than just a desk diary — it is a carefully selected compendium of information compiled in sections which include :

• A statistical overview of India • Data on the economy • Complete travel guide • City guides • International time • 16 pages of full colour maps.

The diary section is laid out with an easy-to-read format which includes Week-at-a-glance, half-hourly slots for appointments, current and forward year planner, ample space for notes and much more.

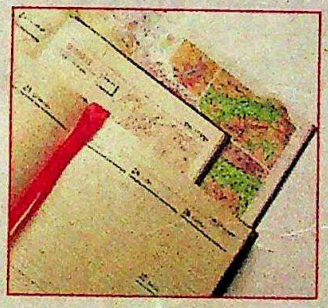

Slimline and Pocket Diaries

The Slimline diary is designed for your jacket or briefcase while the Pocket diary tucks away neatly into your pocket. Incredibly compact and convenient, yet packed with all the features you need, including quick information sections on hotels and essential ISD/STD codes. With these compact diaries you can now carry all the day-to-day information you need with you.

PERSONALIZE THESE BEAUTIFUL DIARIES

Whether you are ordering the diaries as a set or as singles, for yourself or as a gift for someone, you can add style and personalize them with gold leaf embossing of upto three initials and a company logo (logo embossing offered on the Yearbook), at a nominal charge.

HAND-CRAFTED ELEGANCE IN REAL LEATHER

Limited Edition Premium Diaries

The 1991 Yearbook, Slimline and Pocket diaries have also been produced in rich brown real leather covering. Meticulously finished to highlight the grain and texture enhanced by silken ribbon markers, gilt-edged pages and gold leaf embossing on the cover. Gold embossing of upto three initials on all these premium diaries and on the leather book-mark accompanying the Yearbook is offered free of cost. Gold embossing of a company logo is available only on the Yearbook at a nominal cost.

INDIA TODAY YEARBOOK 1991
Code: 201
Size: 20.9 × 27.9 cm
Price: Rs 475

POCKET DIARY 1991
Code: 203
Size: 7.6 × 12.0 cm
Price: Rs 90

SLIMLINE DIARY
Code: 2
Size: 8.2 × 17.1 c
Price: Rs 135

Make your selection now and send in your order before 15 September 1990 for a special pre-publication discount of about 15%. If the order form has been used. Mail your enquiry/order toLiving Media India Ltd., P B No 29, New Delhi 110001. Please add Rs 10 for gold embossing of each set of 3 initials per diary.

ORDER FORM 1991

Product Code	Product Details	Regular Price (Rs)	Spl. Price For Orders Recd. Before Sept 15, 1990 (Rs)	Quantity Ordered	Total Amount (Rs)
IT 101	India Today Yearbook 1991 (Regular)	275	235	___	___
IT 102	India Today Slimline Diary (Regular)	70	60	___	___
IT 103	India Today Pocket Diary (Regular)	45	38	___	___
IT 201	India Today Yearbook 1991 (Leather)	475	405	___	___
IT 202	India Today Slimline Diary (Leather)	135	115	___	___
IT 203	India Today Pocket Diary (Leather)	90	77	___	___

• Total Rs ___
• Extra for gold embossing of Initials on the regular diaries @ Rs 10 per unit per diary (This facility is free of charge for the premium leather diaries) Please give maximum of 3 initials per diary ordered on a separate sheet Rs ___
• Company logo (facility offered only for the Yearbooks viz product codes IT 101 and IT 201) @ Rs 15 per logo per diary Rs ___
• Add Rs 5 for outstation cheques (i.e., cheques outside Delhi) Rs ___
Grand Total Rs ___

Remittance should be drawn in favour of Living Media India Ltd. and mailed alongwith your name, address and the completed order form to Living Media India Ltd., P B No. 29, New Delhi 110 001

Please note:
- Cheques/drafts payable at Bombay, Madras, Calcutta and Delhi must be MICR only.
- Diaries will be home delivered by Registered Post/Courier. Deliveries will commence by early November and barring unforeseen circumstances will be completed by end December 1990.
- For gift instructions, please give recipients name and address alongwith details for embossing initials on a separate sheet.
- Facility for gold embossing company logo is offered only for Yearbooks (Product codes IT 101 and IT 201). Minimum order is 25 diaries per logo. Maximum area of logo is 6 sq cms. Artworks or positives will need to be supplied.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदमाश मोटू के लिए

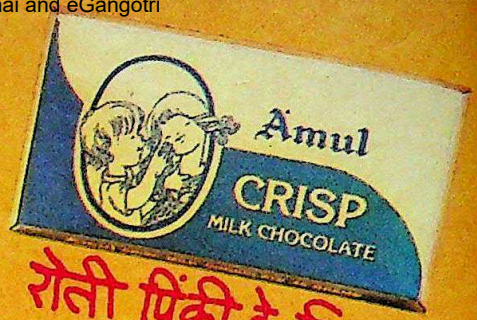

रोती पिंकी के लिए

शैतान छोटू के लिए

प्यारी प्रीति के लिए

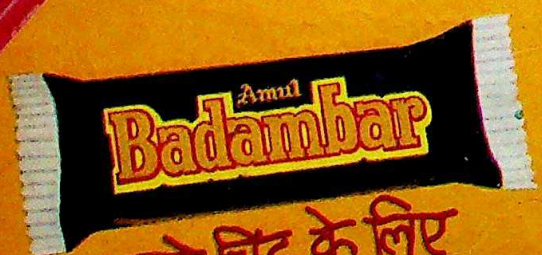

चम्चे चिंटू के लिए

मेरी टीचर के लिए

यह सारे ~~[illegible]~~ मेरे लिए

वितरक–
गुजरात को-ऑपरेटिव
मिल्क मार्केटिंग
फेडरेशन लिमिटेड,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अमूल चॉकलेट–प्यार की मीठी भेंट

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया गया. इस पर प्रधानमंत्री फलसफाना अंदाज में कहते हैं, "प्रतिशोध से कुछ नहीं होता. राजनैतिक पार्टी का मुख्य काम समाज सुधारना होता है."

वामपंथियों का मानना है कि भट्टराई सुधार के नाम पर कुछ ज्यादा ही उदार रुख अपना रहे हैं. उनका कहना है कि कई पूर्व पंच, मंत्री और राजशाही समर्थक नेपाली कांग्रेस में शामिल हो गए हैं. सबसे सनसनीखेज मामला परशुनारायण चौधरी का है जो पूर्व मारीचमान सिंह सरकार में मंत्री थे. उन्हीं की अध्यक्षता वाली कुख्यात 'प्रतिकार समिति' ने शासन के विरोधियों के खिलाफ कार्रवाई का आदेश दिया था.

कई लोगों का मानना है कि भट्टराई बहुत भोले और नरमदिल हैं. नरेश के साथ उनके मधुर संबंधों के कारण ही वामपंथियों की भृकुटि तनी है. कम्युनिस्ट पार्टी (एमएल) के 53 वर्षीय चंद्र अधिकारी, जो 18 साल तक जेल में रहने के बाद हाल ही में रिहा हुए हैं, का विचार है कि राजशाही के खिलाफ सख्त से सख्त रवैया अपनाया जाना चाहिए और नरेश को लोकतंत्र समर्थक आंदोलन कुचलने का जिम्मेवार ठहराया जाना चाहिए. नेपाल मजदूर किसान संगठन के महासचिव कामरेड रोहित कहते हैं, "नेपाली में एक कहावत है कि सांप का सिर कुचल दिए जाने के बाद भी उसकी पूंछ फड़फड़ाती रहती है. लगता है, नेपाली कांग्रेस ने इस पर ध्यान ही नहीं दिया है."

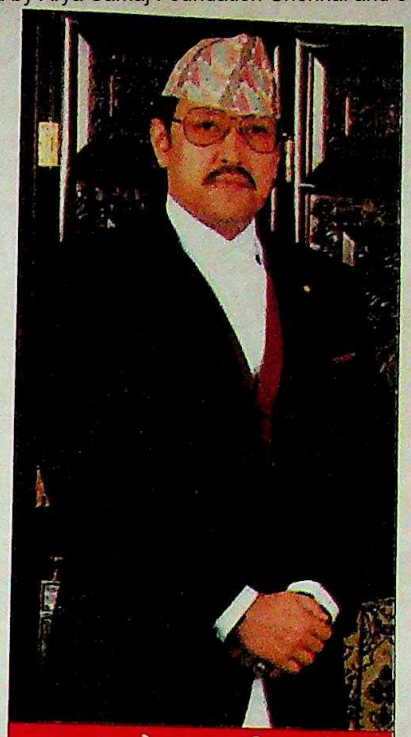

नरेश: मूक दर्शक

नेपाली कांग्रेस पूर्व शासन से जुड़े बदनाम लोगों के लिए अपने दरवाजे खोलना उचित ठहराती है. उसका कहना है कि यदि उन्हें यहां जगह नहीं मिली तो वे राजशाही समर्थक पार्टियों में चले जाएंगे और उनकी ताकत बढ़ाएंगे.

वामपंथियों और कांग्रेसियों के झगड़े से ज्यादा आश्चर्यजनक बात यह है कि कई लोक-लुभावन कदमों के बावजूद भट्टराई सरकार की तीखी आलोचना हो रही है. कानून और व्यवस्था की स्थिति बदतर बनी हुई है. प्रधानमंत्री इसके लिए पुलिस को दोषी ठहराते हैं.

इससे भी बुरी बात यह कि भारत के साथ पहले जैसे व्यापारिक संबंध हो जाने के बाद भी कीमतें नहीं गिर रहीं. पेट्रोल अभी भी 19 रु. प्रति लिटर बिक रहा है जबकि मिट्टी के तेल की कीमत में मात्र 90 पैसे की कमी आई है. यहां चावल, दाल और खाद्य तेल की कीमतें बढ़ने की वजह यह है कि भारत में भी इनकी कीमतें बढ़ी हैं. वित्तमंत्री देवेंद्रराज पांडेय महंगाई के लिए व्यापारियों को दोषी ठहराते हैं.

चारों तरफ असंतोष बढ़ रहा है. सरकार ने अपने कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि की घोषणा की है (इससे सरकारी खजाने पर सालाना 136 करोड़ रु. का अतिरिक्त बोझ पड़ेगा) पर सार्वजनिक क्षेत्र और निजी क्षेत्र के कर्मचारियों की अनदेखी की है. विदेशी सामान के आयात पर अंकुश लगाने के लिए उनकी कीमतें 50 फीसदी बढ़ा दिए जाने से व्यापारियों की शक्तिशाली लॉबी नाराज हो गई है. यही नहीं, संपत्ति कर लगा दिए जाने से अमीर और उद्योगपति भी सरकार के विरोधी हो गए हैं. फिर भी यह संदेह बना ही हुआ है कि फिलहाल पंचायत समर्थक पार्टियां, कांग्रेस की पकड़ को ढीली कर सकती हैं. सो पिछले प्रशासन के समर्थक चुनाव के पहले नेपाली कांग्रेस और संयुक्त वाम मोर्चे के झगड़े और नौकरशाही के समर्थन की उम्मीद लगाए बैठे हैं.

प्रेस को मिली नई आजादी से आरोप-प्रत्यारोप का दौर

इस बीच, नरेश वीरेंद्र मूक दर्शक बने हुए हैं. भट्टराई कहते हैं, "राजा के रवैए, उनके व्यवहार और सोच दोनों में बदलाव आया है." लेकिन प्राप्त खबरों के मुताबिक आजकल नरेश ज्यादा से ज्यादा लोगों से मिल रहे है. वे अपने सचिवों पर बिल्कुल भरोसा नहीं करते. खबर है कि वे हफ्ते के कुछ निश्चित दिन अपना महल दर्शकों के लिए खोलकर और 'जनता दरबार' लगाकर जनता का राजा बनने की सोच रहे हैं.

नेपाल में लोकतंत्र के प्रयोग के साथ उथल-पुथल जारी है. अनिश्चित राजनैतिक स्थिति के कारण नेपाल बारूद के ढेर पर बैठा दिखता है. —**उत्तम सेनगुप्त,**
काठमांडो में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरुष ब्यूटी पार्लर

हम किसी से कम नहीं

सफलता पाने के साथ भारत का पुरुष वर्ग रूप-सज्जा के प्रति भी सजग हो उठा है. सौंदर्य के प्रति यह चाह उसे देश भर में फैले ब्यूटी पार्लरों की ओर खींच रही है

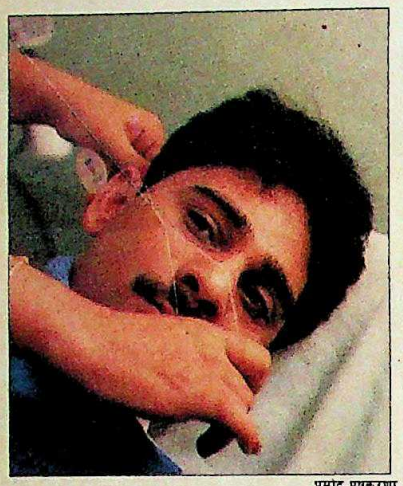

प्रमोद पुष्करणा

मुजफ्फरपुर (बिहार) के 40 वर्षीय डॉ. डी.एन. कुमार जब भी दिल्ली आते हैं फेशियल और हर्बल (जड़ी-बूटियों वाला) मास्क चेहरे पर लगाना नहीं भूलते. वजह : उनकी बेटियां उनसे कह चुकी हैं कि वे बूढ़े नजर आने लगे हैं.

अपने पिता की दिल्ली स्थित कंपनी के उपाध्यक्ष 27 वर्षीय रघु मेनन हर दिन बाद पेडीक्योर, मैनिक्योर, फेशियल, सिर की मालिश करवाते हैं. यही नहीं, भौंहों के बीच के फालतू बाल भी उखड़वाते हैं.

मद्रास के 'चोला ब्यूटी पार्लर' में साज-शृंगार के लिए दूल्हे भी आते हैं. यहां उनके लिए ब्लीचिंग, शैंपू, फेशियल और मेकअप का विशेष इंतजाम है.

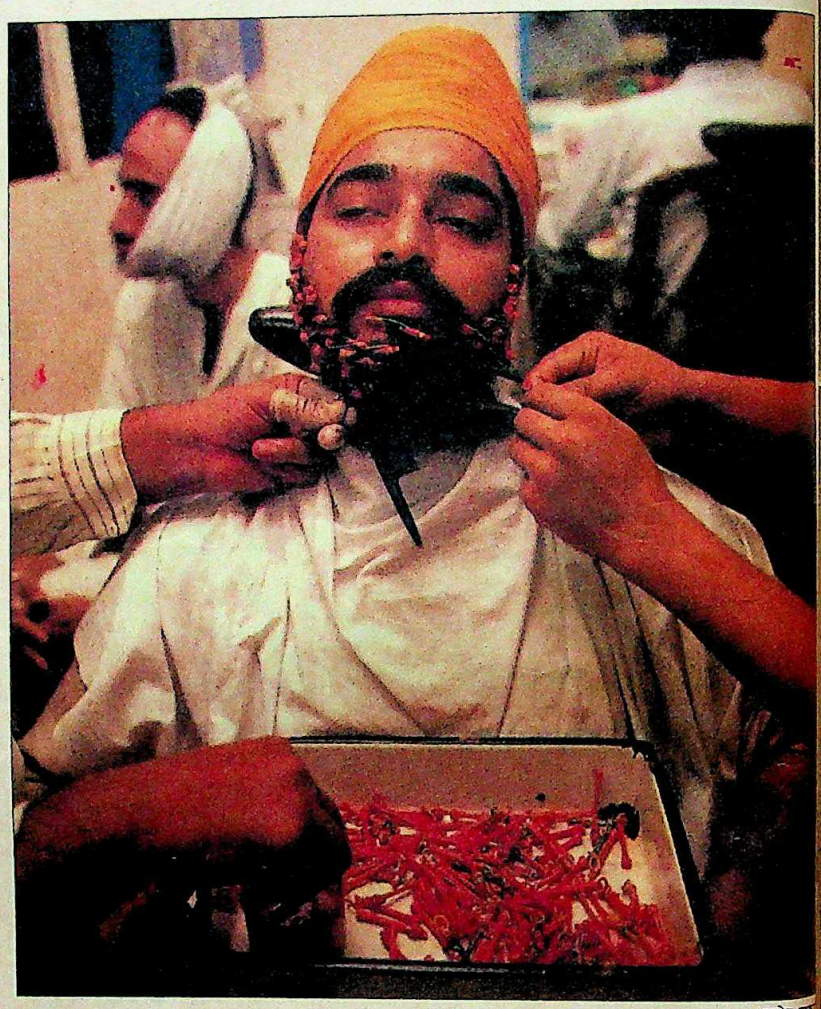

प्रमोद पुष्

थ्रेडिंग (बाएं); दिल्ली के एक सैलून में दाढ़ी की पर्मिंग: सुंदरता की चाह में

ये उदाहरण हैं इस बात के कि भारत के पुरुष यौवन और रूप-सज्जा में महिलाओं की बराबरी पर आ रहे हैं. इतनी बराबरी पर कि वे वही सब कर रहे हैं, जो महिलाएं करती आई हैं. मसलन, वे ब्लीचिंग करते हैं, घंटों फेशियल करवाते हैं, विदेशी मास्क लेते हैं, हाथों का मैनिक्योर करवाते हैं, पैरों का पेडीक्योर करवाते हैं, भौंहें संवारते हैं, बालों को घुंघराले करते हैं, एक लट ब्लीच करते हैं, उन पर मेंहदी लगाते हैं, गालों के अनचाहे बालों को थ्रेडिंग से निकलवाते हैं, आदि आदि.

वैक्सिंग और लिपस्टिक के इस्तेमाल पर अब तक महिलाओं का एकाधिकार रहा है. लेकिन पुरुषों ने इस क्षेत्र में भी सेंध लगा दी है. तैराकी के पहले वे छाती और पेट के बालों की वैक्सिंग करवा लेते हैं. प्रोफेसर हिगिंस के शब्दों को उलटकर कहा जा सकता है कि पुरुष आखिर महिलाओं की तरह क्यों नहीं हो सकते? और दूल्हे भला दुलहन की तरह सिंगार क्यों नहीं कर सकते? शादी की वीडियो फिल्म में खूबसूरत नजर आने के लिए अब वे भी ब्यूटी पार्लर जाने लगे हैं. फेशियल और मालिश तो आम बात है. अब तो अपने व्यक्तित्व को निखारने के लिए वे हल्के रंग की फाउंडेशन, रंगहीन लिपस्टिक और नाखून पॉलिश इस्तेमाल करते हैं.

सौंदर्य के प्रति पुरुषों की बढ़ती चाहत को बड़े शहरों के ब्यूटी पा खूब भुना रहे हैं. दिल्ली के हॉलिडे इन दो-दो ब्यूटी पार्लर चलाने वाली विनी सेठ कहती हैं, "पुरुष अपने रूप के प्रति म लाओं से भी ज्यादा सचेत होते जा रहे उनका ब्यूटी पार्लर जोड़ों के लिए दो सदस्यता की पेशकश करता है. कई पूरा परिवार ही छुट्टी लेकर पिकनिक तरह सौंदर्योपचार के लिए पहुंच जाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नख से शिख तक सुंदर दिखने की सनक पुरुषों में भी बढ़ती जा रही है

मद्रास के एक पार्लर में संवरती चेहरे की त्वचा; (दाएं) इलेक्ट्रोलिसिस

श्याम टेकवानी

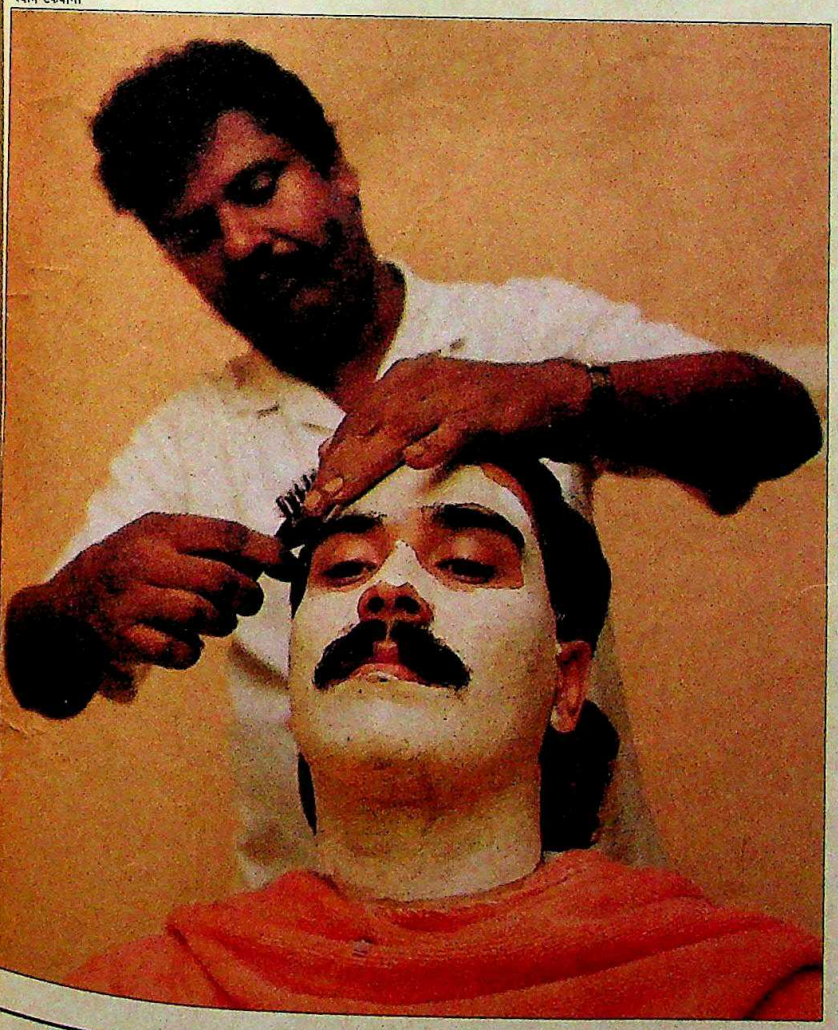

बड़े शहरों में 'केवल पुरुषों के लिए' ब्यूटी पार्लर बरसाती कुकुरमुत्तों की तरह उगते जा रहे हैं. मद्रास में ऐसे दर्जन भर पार्लर हैं तो दिल्ली की हर संभ्रांत कॉलोनी में एक पार्लर खुलने लगा है. और बंबई के पार्लर तो उच्च तकनीक से लैस हैं. यहां के 'सीजर्स ओवर काम्ब' पार्लर में कंप्यूटर पर व्यक्ति का चेहरा बनाकर तय किया जाता है कि उस पर बालों का कौन-सा स्टाइल या मेकअप फबेगा. एक दूसरे पार्लर 'टच ऑफ जॉय' ने इलेक्ट्रोलिसिस (अवांछित बालों को जड़ से निकालने की मशीन) का आयात किया है. अमेरिका में प्रशिक्षित सौंदर्य प्रसाधिका अबान खंबाटा कहती हैं, "पुरुषों में भी अब इलेक्ट्रोलिसिस बहुत लोकप्रिय होता जा रहा है. खासकर दाढी और भौंहें संवारने के लिए."

खोए यौवन की तलाश में भटकते पुरुषों के लिए भी इन पार्लरों में खास तरह के पुनर्यौवन चिकित्सा की व्यवस्था मौजूद रहती है. अपनी मशीनों को दुरुस्त रखने के लिए कुछ पार्लर विदेशों में प्रशिक्षित सौंदर्य प्रसाधक और हेयर ड्रेसर रखते हैं.

सौंदर्य के इन व्यापारियों को पुरुषों में संभावनाओं के नए क्षितिज नजर आ रहे हैं. और एक बार पुरुष इनकी गिरफ्त में आया तो बस उसकी शौकीन-मिजाजी की कोई सीमा ही नहीं. अमिताभ बच्चन और जितेंद्र के हेयर स्टाइल की नकल से शुरू हुआ यह बुखार अब के सौंदर्योपचारों तक पहुंच गया है. वेलकम ग्रुप होटल श्रृंखला में ब्यूटी पार्लर चलाने वाली कुसुम दत्ता कहती हैं, "आज पुरुषों को सजने-संवरने में महिलाओं से ज्यादा वक्त लगता है."

सौंदर्य उपचार और प्रसाधनों पर पुरुष ज्यादा नहीं तो कम-से-कम उतना पैसा तो खर्च करने ही लगे हैं जितना महिलाएं करती हैं. एक बार में 350 से 1,200 रु. तक खर्च हो जाते हैं. ज्यादातर लोग इस खर्च को मनोरंजन खर्चों की मद में डाल देते हैं. बंबई के हीरा निर्यातक राजीव शाह कहते हैं, "मुझे परवाह नहीं. जितना खर्च होगा मैं करूंगा." कंपनियों के अधिकारियों के लिए पार्लर जाना उतना ही जरूरी है जितनी बोर्ड की बैठकें.

सो, हैरत की बात नहीं कि हर्बल सौंदर्य प्रसाधनों की साम्राज्ञी शहनाज हुसैन जल्द ही कलकत्ता में पुरुषों के लिए ब्यूटी पार्लर खोलने जा रही हैं. पुरुषों के लिए बनाए गए उनके सौंदर्य प्रसाधन हाथोहाथ बिक जाते हैं. वे बताती हैं, "मेरे पास आने वाले प्रशंसा पत्रों में 40 फीसदी पत्र पुरुषों के ही हुआ करते हैं."

सौंदर्य के प्रति जागरूकता हर वर्ग में बढ़ती नजर आ रही है. यहां तक कि सिख भी इस दौड़ में किसी से पीछे नहीं रहना चाहते. अब वे भी घुंघराली, सुघड़ दाढ़ी पसंद करने लगे हैं. नतीजतन, दाढ़ी को पर्म करवाने का रिवाज चल पड़ा है. और अगर दाढ़ी घनी हो तो पर्मिंग के बाद कुछ-कुछ वैसी ही नजर आएगी जैसे अफ्रीकियों के घुंघराले बाल होते हैं.

दिल्ली के पूर्वी पटेल नगर स्थित महेश नारायण के सैलून में हर इतवार की दोपहर दाढ़ी में रंग-बिरंगे रोलर लगाए सरदार देखे जा सकते हैं. चूंकि पर्मिंग में लगभग तीन घंटे लग जाते हैं, इसलिए महेश नारायण वीडियो पर फिल्म लगाए रखते हैं.

सवाल है कि भारतीय पुरुष अपने रख-

नामस भोजानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

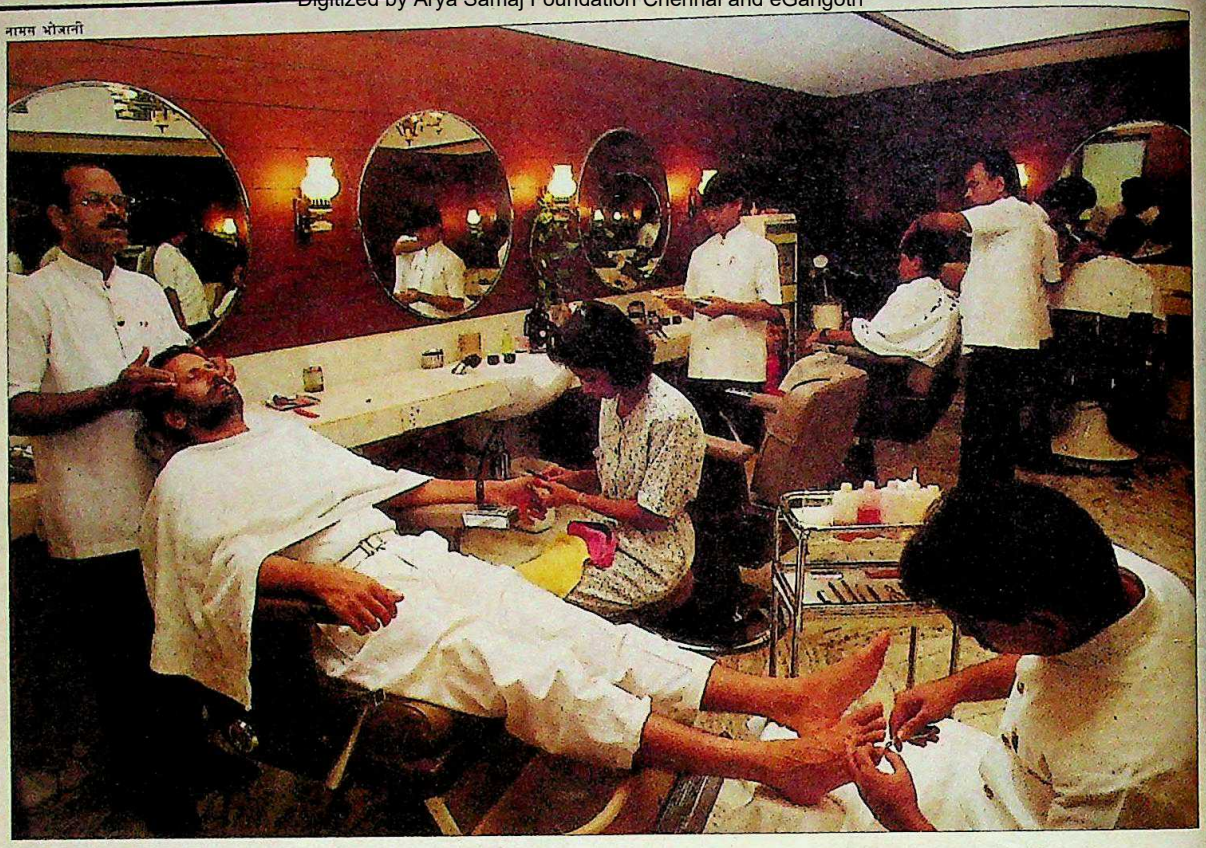
नामम भोजानी

पांच सितारा होटलों के सैलून में फेशियल, मैनिक्योर और पेडीक्योरः चाहत का खयाल

रखाव के प्रति अचानक इतने फिक्रमंद क्यों हो गए हैं? दिल्ली के 39 वर्षीय सुभाष गुलाटी को लें. अपनी आंखों के नीचे के धब्बों से वे काफी चिंतित हैं. वे युवा दिखना चाहते हैं. व्यापार की सफलता उनके यौवन को लील गई. वे कहते हैं, "25 वर्ष की उम्र से लेकर अब तक मैं व्यापार ही जमाता रहा. और अपने रखरखाव की और मैंने ध्यान ही नहीं दिया." अब उनके पास पैसा है, वक्त है और सबसे बढ़कर ऐसी सुंदर पत्नी है जो उन्हें और ज्यादा खूबसूरत देखना चाहती है.

जाहिर है, हमारी जिंदगी में व्याप्त तनाव हमारे रूप, यौवन का चोर है. आज की तेज-रफ्तार जिंदगी में सफलता की इतनी कीमत तो चुकानी ही पड़ती है. तनाव के मारे युवा प्रबंधकों और अधेड़ व्यक्तियों के लिए तो इन ब्यूटी पार्लरों में मालिश करने वाली नरम उंगलियां ही तनाव से राहत दिलाने का कारगर जरिया हैं.

ब्यूटी पार्लरों में बढ़ती भीड़ की दूसरी वजह अपनी नई छवि तैयार करना भी है. दुनिया को जीतने के लिए सात समंदर पार करने वाले 'ही-मैन' की छवि अब पुरानी हो चली है. आज तो जमाना चिकने-चुपड़े चेहरों का है.

पुरुष यदि ब्यूटी पार्लरों की ओर लपक रहे हैं तो इसकी एकमात्र वजह उनका आत्ममुग्ध होना ही नहीं है. सजे-संवरे व्यक्तित्व का जितना असर दफ्तर में पड़ता है उतना ही घर में पत्नी पर भी. रघु मेनन को ही लें. वे आठवीं क्लास में थे तभी से फेशियल कराने का चस्का लग गया. अब तो इसका नशा ही हो गया है. हर पखवाड़े वे फेशियल से लेकर पेडीक्योर तक हर सौंदर्य उपचार नियमित रूप से कराते हैं. लेकिन सौंदर्य प्रसाधनों पर किया गया खर्च अंततः उनके लिए फायदे का ही सौदा साबित होता है, क्योंकि उनका निर्यात व्यापार जापान से है, जहां सजा-संवरा व्यक्तित्व उतना ही महत्वपूर्ण है जितनी व्यापार बुद्धि. वे बताते हैं, "अन्यथा मुझे सुरक्षा गार्ड ही समझ लिया जाएगा. सारा कमाल व्यक्ति की छवि का है."

और महिलाओं को प्रभावित करना हो तो साज-शृंगार बहुत जरूरी हो जाता है. संभ्रांत तबके के पुरुषों का मानना है कि साथ में सजी-धजी महिला के मुकाबिल दिखने के लिए इतना सब करना ही पड़ता है. मेनन भी मानते हैं कि लड़कियां हर साल और ज्यादा खूबसूरत होती जा रही हैं. लिहाजा पुरुषों को सुधरना पड़ रहा है.

—मधु जैन, ब्यूरो रिपोर्टों के साथ

फैशन	फैशन से बाहर
बालः स्वस्थ, तरोताजा, करीने से संवरे, किनारे से छंटे.	**बालः** लंबे, उलझे गंदे और बेजान.
भौंहेंः कायदे से बनी, थ्रेडिंग या फिर इलेक्ट्रोलिसिस से तैयार	**भौंहेंः** घनी, चौड़ी, बीच में मिली हुई.
चेहराः फेशियल द्वारा चिकना-चुपड़ा, चमकदार, झुर्रियां गायब.	**चेहराः** रूखा, कील-मुंहासों से भरा हुआ, आंखों के नीचे काले गड्ढे.
छातीः कोमल, सपाट.	**छातीः** बालों से भरी हुई.
हाथ और पांवः मैनिक्योर और पेडीक्योर से निखरे	**दाढ़ीः** घनी, बेढब और उलझी हुई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्चे लोग सच्चा आनन्द

रेड एण्ड व्हाइट

वही न.१ स्वाद

एक चेतावनी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है।

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

everest/050/HMA/229 hin

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चों की पार्टियां

अमीरी का फूहड़ प्रदर्शन

अनोखे विचार और निराले ढंग

हवा में रॉकेट उड़ते हैं, उनमें विस्फोट होता है, रंग-बिरंगे टुकड़े वातावरण में बिखर जाते हैं. मिकी माउस और डोनाल्ड डक पहिएदार गाड़ी में ठाठ से बैठे हैं और उनके पीछे-पीछे हैं चीखते-चिल्लाते उनके चहेते. उधर, रॉबिनहुड किंग आर्थर को बधाई दे रहा है. खिलौनों के ऐसे तमाम तमाशों के बीच बच्चों में क्रीमयुक्त केक और आइसक्रीम के दौर पर दौर चल रहे हैं. यह नजारा हॉलीवुड की किसी फिल्म का नहीं बल्कि दिल्ली के किसी आलीशान इलाके के बच्चों की पार्टी का है. बच्चों की जन्मदिन पार्टियां जाहिर है, सिर्फ बच्चों का मामला नहीं रह गई हैं.

दिल्ली का अभिजात वर्ग बच्चों की इन पार्टियों का बड़े पैमाने पर और धूमधाम से आयोजन करने लगा है. पार्टियां चाहे गुड़गांव के फार्म हाउस में हो रही हों, या पांचतारा होटल में या अप्पूघर में, इनमें एक समानता जरूर रहती है—वैभव का जमकर प्रदर्शन.

एक बच्चे के जन्म की खुशी में मौर्य शेरेटन में दी गई एक ग़ज़ल पार्टी में तो 350 मेहमानों को आमंत्रित किया गया था. गायकों की फीस के अलावा इस पार्टी पर 1.5 लाख रु. खर्च हुए. मेहमानों को विदाई के वक्त चांदी का एक-एक चक्र बतौर उपहार दिया गया. इसी होटल की बैंक्वे मैनेजर गीता खन्ना कहती हैं, "होटल की ये पार्टियां अब ज्यादा भड़कीली, खर्चीली और नाटकीय होती जा रही हैं."

लोगों के ऊंचे होते जीवनस्तर, फैलती उपभोक्ता संस्कृति और पश्चिमी देशों की देखा-देखी बच्चों की पार्टियों में आडंबर और चकाचौंध बढ़ती जा रही है. जाहिर है, होटल इस सनक को खूब भुना रहे हैं.

बच्चों की इन पार्टियों को अब किसी खास रंग में रंगने का फैशन चल पड़ा है. किसी पार्टी में कृष्णलीला का माहौल बनाया जाता है, तो किसी में सिंड्रेला के पात्र को, तो किसी में एलिस इन वंडरलैंड की कथा को जीवंत बनाया जाता है. आजकल फैशन जंगल का माहौल बनाने का चल पड़ा है. ढेर सारे झरने, जानवर, हीमैन, स्पाइडरमैन की सहायता से जंगली वातावरण बनाया जाता है. बच्चों के सामान के स्टोर 'एलाइड स्टोर' के संजीव मेहरा कहते हैं, "अब तो लोग नए-नए विचार लेकर आते हैं." और इन विचारों को साकार करने में 15,000 से 40,000 रु. तक खर्च हो जाते हैं.

हाल ही में ऐसी ही एक पार्टी आयोजित की गई जिसमें छोटे लड़कों को

इन पार्टियों के माहौल से स्वप्नलोक का एहसास होता है

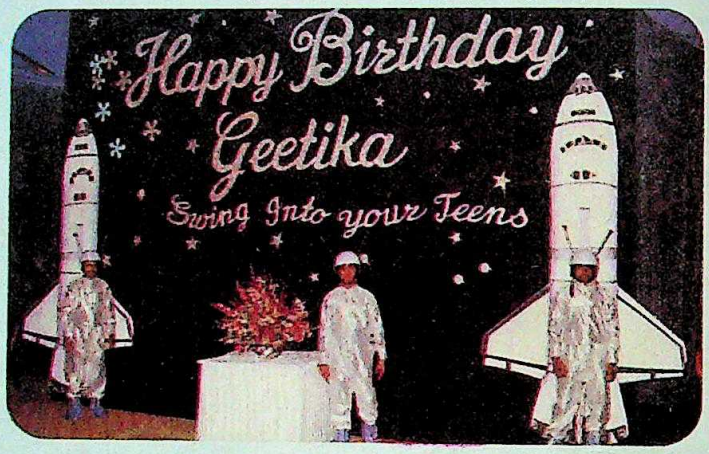

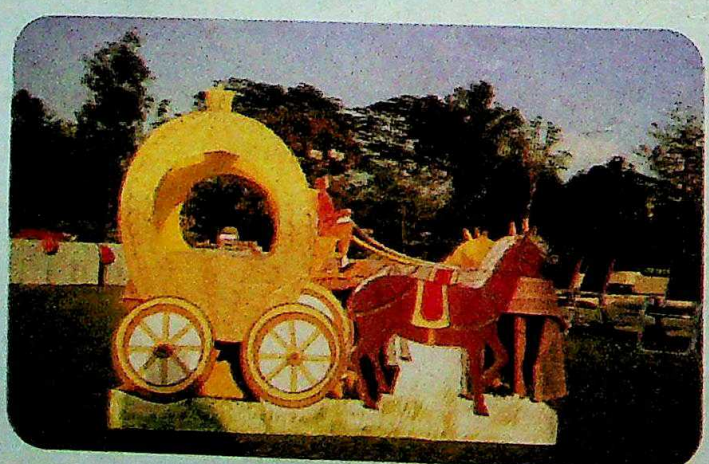

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभिन्न रूपों और आकार के केकः आडंबर की सनक

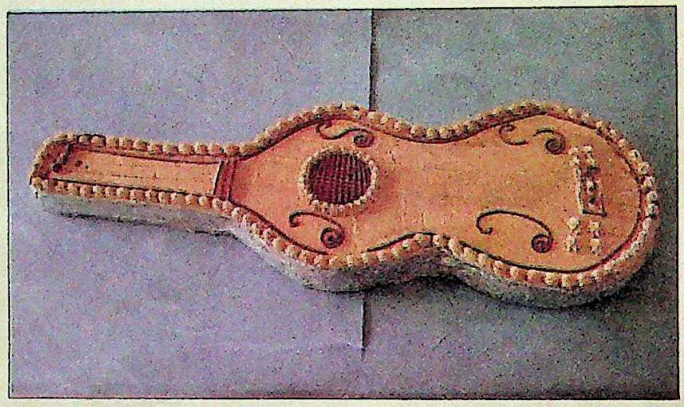

मिकी और लड़कियों को मिनी माउस की तरह तैयार किया गया. केक, प्लेट, गुब्बारे यहां तक कि मेहमानों को दिए गए उपहारों (टीशर्ट) पर भी मिकी माउस और मिनी माउस के चित्र छपे थे. ये उपहार और पार्टी के लिए सामान खास तौर से विदेश से मंगाया गया.

होटल वाले तो बच्चों को खुश रखने में और दो कदम आगे निकल गए हैं. मसलन मौर्य शेरेटन ने दो कुत्तों—बर्नी और बर्टी—को अपने शुभंकर में इस तरह बनाया है कि वे आगंतुक बच्चों का 'हलो' और 'नमस्ते' से अभिवादन करते हैं. महंगी होने के साथ-साथ ये पार्टियां अब नई-नई तकनीक अपनाने लगी हैं. मिसाल के तौर पर अभी एक पार्टी 'चांद' पर आयोजित की गई. 'चांद' के आकार का एक गुब्बारा 20,000 रु. की लागत पर बंबई से मंगवाया गया था. 'अंतरिक्ष' में हुई पार्टी पर 40,000 रु. खर्च हुए.

बच्चे तो बच्चे, बड़ों में भी इन पार्टियों का जुनून बढ़ता जा रहा है. पार्टी की तैयारी में नए-नए विचार लेने के लिए बच्चे और उनके माता-पिता 'हलो' और 'पीपल' जैसी पत्रिकाएं छान डालते हैं. नए-नए फैशन जानने के लिए वे वीडियो की दुकानों के चक्कर लगाते हैं या बाहर बसे रिश्तेदारों से फोन करके पार्टियों के लिए नई से नई तरकीब जानते रहते हैं.

इन पार्टियों में मां-बाप हर चीज सबसे निराली और अनूठी चाहते हैं. महारानी बाग में 'ट्रफल्स ऐंड फ्रिल्स' नाम से पेस्ट्री की दुकान चलाने वाली रश्मि खट्टर कहती हैं कि उनके पास ऐसा केक बनाने के आर्डर आते हैं "जैसा न पहले कभी बना हो और न बाद में बने." जैसे हाथी को केंद्र में रखकर की गई साजसज्जा वाली पार्टी में नहाने के टब की शक्ल का केक. 'सात बौनों' वाले केक भी बनते हैं, ड्रेकुला केक भी, पतंग केक भी और परी केक भी.

इन पार्टियों में परिधानों की भी होड़ रहती है. दिल्ली के 'हॉलिडे इन' की जनसंपर्क अधिकारी अंजलि चटर्जी कहती हैं, "दिल्ली के नवधनाढ्य और 'पप्पी' दिखावा ज्यादा करते हैं, जबकि पुराने रईस और शिक्षित लोग छोटी और सुरुचिपूर्ण पार्टियों को तरजीह देते हैं."

इस तरह की पार्टियों की ओर जैसे-जैसे ज्यादा लोग आकर्षित होते जा रहे हैं और प्रतियोगिता बढ़ती जा रही है, इन पार्टियों का सबसे अहम तत्व—मनोरंजन और खेलकूद गायब होता जा रहा है. किटी पार्टियों की शक्ल अख्तियार करती जा रही इन पार्टियों का असली मकसद यही रह गया है कि एक-दूसरे से बढ़-चढ़कर संपन्नता का प्रदर्शन और दिखावा. पार्टी में शामिल मेहमान बच्चों को पहले सीधे-सादे उपहार चॉकलेट, पेंसिल बॉक्स आदि देते थे. आज उनकी जगह महंगे बैग, फैशनेबल घड़ियों और वीडियो गेम ने ले ली है. हाल में 'ट्रेजर आइलैंड' का माहौल रचनेवाली पार्टी में वेटर डाकुओं और नाविकों जैसे कपड़े पहने हुए थे. बाद में मेहमानों को उपहार में असली चांदी की तिजोरियां दी गई जिनमें खूब सारे चॉकलेट भरे थे.

इनमें सजावट पर तो विशेष ध्यान दिया जाता है. झाडियां और गुब्बारे तो पुराने पड़ गए हैं. नाटकीयता के लिए रंग-बिरंगी रोशनी और कई किस्म के फूलों का इस्तेमाल होता है.

इन पार्टियों का असली मकसद—बच्चों का मनोरंजन—लुप्त हो गया लगता है. बच्चे इन पार्टियों में महज दिखावे की चीज बनकर रह जाते हैं क्योंकि ये पार्टियां असल में मां-बाप के लिए ही होती हैं, बच्चे तो बहाना भर हैं. मांएं इस बात का खास खयाल रखती हैं कि नौकरानियां जरूर इन पार्टियों से प्रभावित होकर लौटें.

चूंकि ऐसी पार्टियों के आयोजन में बहुत वक्त और मेहनत लगती है, इसलिए कई व्यवसायी अब इस नए शौक को भुनाने की तैयारी कर रहे हैं. बच्चों की पार्टियों से व्यापार शुरू करने की योजना बनाने वाली पूजा बहादुर कहती हैं, "यह धंधा तो सोने की खान हो सकता है."

इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है क्योंकि बच्चों की ये पार्टियां तो शुरुआत भर हैं. अभी तो इस तरह की कई पार्टियां शुरू होंगी. मसलन—शिशु नामकरण की पार्टियां, कॉलेज जाने की पार्टी, छुट्टियों की पार्टी, परीक्षा पास करने की पार्टी, दाखिला मिलने की पार्टी और सबसे बढ़कर ऐसी पार्टी जो सिर्फ इसलिए की जाए कि 'पार्टी देने को मन कर रहा था.'

—कुसुम साहनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुजरात
पत्ते हवा देने लगे

● राजनीति का स्वभाव कुछ ऐसा है कि दूसरों पर आरोप लगाने वाले राजनीतिकों को वह अक्सर ही उसी कटघरे में ला खड़ा करती है. भाजपा के तेज-तर्रार विधायक अशोक भट्ट के साथ भी यही हुआ.

अभी कुछ दिनों पहले तक भट्ट उपभोक्ता के अधिकारों की लड़ाई के सबसे बड़े प्रवक्ता हुआ करते थे सदन में भी और सदन से बाहर भी. दरअसल, उपभोक्ताओं के सहारे ही उनकी राजनीति चलती भी है.

तभी आए विधानसभा चुनाव जिनमें इंका का पत्ता साफ हुआ और भाजपा-जनता दल सरकार बनी और मुख्यमंत्री चिमनभाई पटेल ने बड़ी चतुराई से भट्ट को नागरिक आपूर्ति विभाग का जिम्मा सौंप दिया.

यहीं से भट्ट की अग्निपरीक्षा के दौर की शुरुआत हुई. वे मूंगफली तेल समेत कुछ जरूरी चीजों की

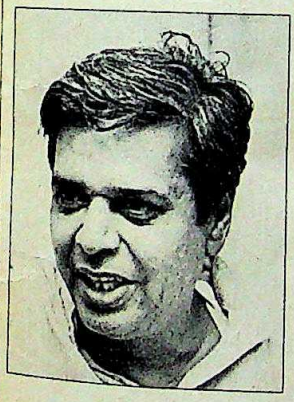

भट्टः जो बोया सो काटिए

कीमतों पर काबू नहीं कर पाए. गुजरात में यह तेल बहुत इस्तेमाल होता है. पिछले पखवाड़े तो तेल की कीमत सचमुच आसमान छूने की हद यानी 33 रु. प्रति किग्रा तक जा पहुंची और वे लाचार से देखते रह गए.

हालांकि गुजरात में महंगाई विरोधी रैलियां अभी आम नहीं हुई हैं लेकिन जनता में रोष बढ़ रहा है और वामपंथी उनके इस्तीफे की मांग कर रहे हैं. भट्ट के विरोध की बुदबुदाहट भी शुरू हो गई है. अगर बात बढ़ी तो उनके लिए यह भारी पड़ सकता है. कहना न होगा कि भट्ट अपना बोया ही काट रहे हैं.

उत्तर प्रदेश
नतमस्तक मुख्यमंत्री

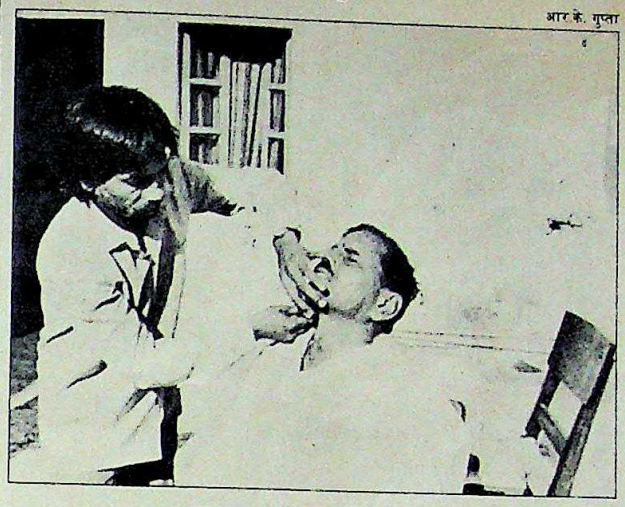

आर.के. गुप्ता

मुलायम सिंह यादव की दाढ़ी बनाते सुलेमान

● मुलायम सिंह यादव को हाल ही में अपने नाई के आगे झुकना पड़ा. लेकिन इस बार बाल बनवाने के लिए नहीं. यादव जब उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने तो पिछले दस वर्षों से उनके बाल काटने वाले 35 वर्षीय मुहम्मद हनीफ सुलेमान ने बरखीश में लखनऊ के हजरतगंज की जनपथ मार्केट में एक दुकान मांगी.

यादव मान तो गए लेकिन वादा पूरा करना भूल गए. सुलेमान ने कुछ महीने तो इंतजार किया. बाद में मुख्यमंत्री के घर जाना बंद कर दिया. तब यादव चेते और सरकार हरकत में आई. उस इलाके में कोई दुकान खाली नहीं थी. लिहाजा लखनऊ विकास प्राधिकरण ने सुलेमान के लिए बिजली विभाग का एक फील्ड कार्यालय खाली करवाया.

इस तरह 1250 उम्मीदवारों को लांघकर सुलेमान को दुकान दी गई जिसकी बाजार में कीमत लगभग पांच लाख रु. है. पिछले महीने जनपथ पर पहला हेयर सैलून 'बांबे हेयर ड्रेसर्स' खुला. सुलेमान मुस्कराते हुए कहते हैं, "सेवा की इतनी कीमत का हकदार तो मैं हूं ही."

पंजाब
अंततः भगोड़ा फंदे में

● पंजाब पुलिस पिछले छह महीने में जालंधर के नजदीक एक गांव में विदेश से लौटे एक ग्रामीण को पुलिस मुख्यालय से संदेश मिलने पर दो बार गिरफ्तार कर चुकी है. और दोनों ही बार उसने उसे छोड़ दिया.

लेकिन पंजाब पुलिस को जरा भी इल्म नहीं था कि वह 'ग्रामीण' कोई और नहीं, कुलदीप सिंह सामरा है जिसकी न केवल इंटरपोल को तलाश है बल्कि उस पर एक लाख कनाडाई डॉलर (तकरीबन 14 लाख रु.) का इनाम भी है. सामरा ने टोरंटो की अदालत में गोली चलाकर एक कनाडाई वकील समेत दो लोगों की हत्या कर दी थी.

विवादास्पद पुस्तक 'सॉफ्ट टारगेट' में भी उसका नाम कई बार आया है. पुस्तक में कनाडा में उग्रवादी हिंसा में भारतीय अधिकारियों के शामिल होने का उल्लेख है. भारत सरकार इसका खंडन कर चुकी है.

अंततः सामरा को 25 जून को सीबीआई ने उसके गांव से गिरफ्तार किया. उसने कबूल किया कि गिरफ्तारी से बचने के लिए वह कई देशों में रहा. वैसे उसने कनाडा या कहीं और उग्रवादी गतिविधियों में शामिल होने से इनकार किया है. सचाई तभी पता चलेगी जब उसे कनाडा भेजा जाएगा. दिल्ली हाईकोर्ट में प्रक्रिया शुरू हो चुकी है.

ओडीसा
धराशायी नेता

● बढ़ती उम्र और बॉयपास सर्जरी के बावजूद ओडीसा के मुख्यमंत्री बीजू पटनायक में पहले-सा जीवट बरकरार है.

लड़ाई के जमाने में पायलट रह चुके पटनायक पेट्रोल बचत के लिए एक बुधवार साइकिल पर ही सचिवालय जाने के लिए घर से निकले. अभी उन्होंने दरवाजा भी पार नहीं किया था कि साइकिल फिसली और मुख्यमंत्री की छह फुट चार इंच ऊंची काया धराशायी हो गई.

इसके बाद पटनायक ने एक पत्रकार के स्कूटर पर लिफ्ट ली और यात्रा जारी रखी. सचिवालय के नजदीक उन्होंने स्कूटर से उतरकर साइकिल रिक्शा ले ली.

लोग जहां इसे प्रचार का शगूफा मानते हैं, पटनायक का कहना है कि इस तरह वे पेट्रोल की बचत के महत्व पर जोर दे रहे

पटनायकः बचत का उपाय

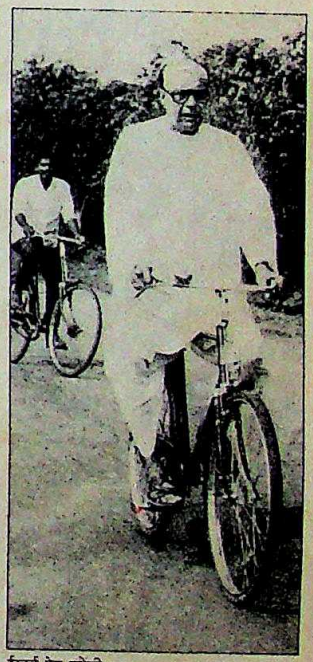

ईस्टर्न प्रेस एजेंसी

हैं. शुरू में सरकार ने आदेश जारी किए थे कि मंत्री या तो बुधवार को घर पर रहें या पैदल ही सचिवालय आएं.

लेकिन मंत्रियों ने भी तुरंत बचाव का रास्ता ढूंढ लिया. अब वे बुधवार को दौरे पर ही रहना पसंद करते हैं क्योंकि पटनायक का आदेश तभी प्रभावी होता है जब वे मुख्यालय में हों.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

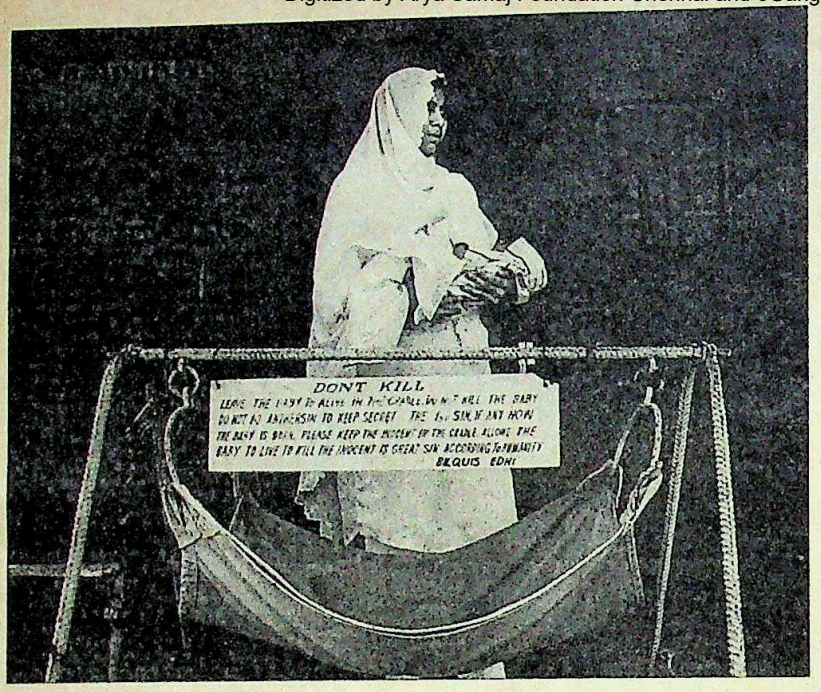

अब्दुल सत्तार एधी

मौत से जूझते शहर का मसीहा

हिंसाग्रस्त कराची में वे एक अपवाद सरीखे हैं. घायलों की मदद, लावारिस लाशों को दफनाने, बेसहारा औरतों तथा बच्चों को आसरा देने, नशेड़ियों का इलाज करने और पागलों को आश्रय देने का उन्होंने बीड़ा उठा रखा है. इन्हीं अब्दुल सत्तार एधी के जीवन में झांकने की कोशिश की है फीचर संपादक शेखर गुप्ता **और फोटोग्राफर** प्रशांत पंजियार **ने.**

वायरलेस के संकेतों से कमरे की खामोशी टूटती है. अगर यह सेट सुबह 3.30 बजे ही बोलने लगे, तो मतलब है बुरी खबर. इसका मतलब यह भी है कि कराची के 61 वर्षीय मसीहा अब्दुल सत्तार एधी के लिए काम आ गया है. इस बारे में गुजराती लहजे वाली उर्दू में वे कहते हैं कि शहर उन्हें जितना सोने देता है, उतनी देर ही वे सोते हैं.

कराची के पुराने हिस्से में समीपवर्ती खड़ादार में जातीय गिरोहों की गोलियों से तीन लोग मारे गए हैं. पुलिस कहती है कि इन लाशों का कोई वारिस नहीं आया है. दरअसल, पुलिस इतनी डरी हुई है कि ऐसी जगहों पर जाना नहीं चाहती, जहां गोलियों की बौछार हो रही हो.

तभी एधी आते हैं. एंबुलेंस का सायरन कुछ सेकंड बजता है और वे संकरी, गड़बड़ी वाली गली में घुस जाते हैं. गोलीबारी रुक जाती है. लड़ रहे पक्ष, संभवतः सिंधी और मुहाजिर, मौलाना द्वारा मृतकों और घायलों को उठाकर गाड़ी में ले जाने का इंतजार करते हैं. कलाश्निकोवों की गर्जना रात को फिर से बेजार करने लगती है.

उधर, मीठाधार स्थित एधी के मुख्यालय में एक और सामान्य दिन शुरू हो रहा है. एक और अनचाहा, एक दिन का बच्चा उनके घर के बाहर पालने में कोई छोड़

पागलों और नशेड़ियों के आश्रम में एक मरीज से मिलते एधी; और (बाएं) अनचाहे बच्चों के लिए पालना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

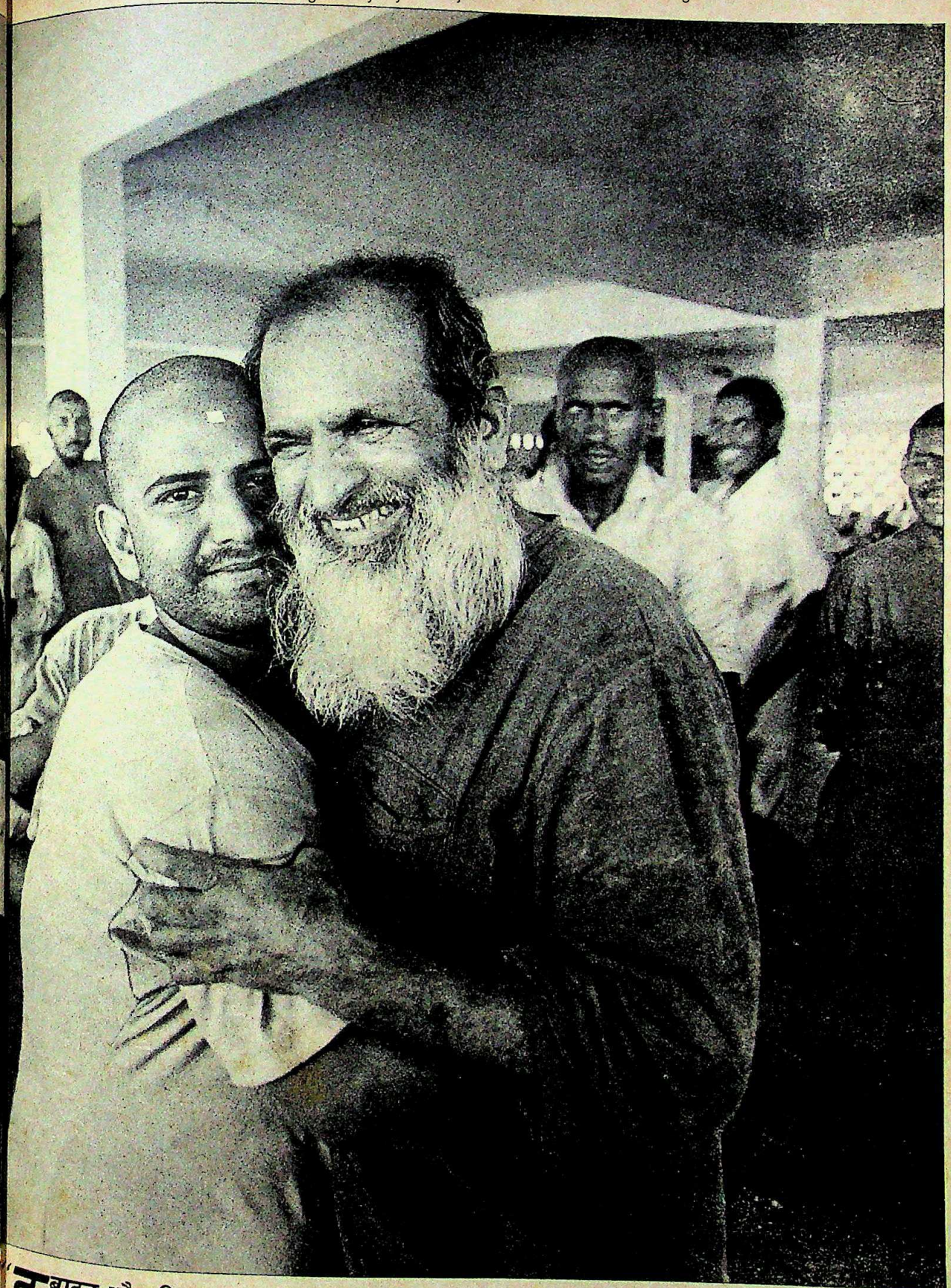

"इबादत और खिदमत का मेल ही अकीदत है. मुल्ला-मौलवी तो निजात के लिए नमाज अदायगी का रास्ता ही बताते हैं. मैं कहता हूं, खिदमत करो और वक्त हो तो नमाज पढ़ लो"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

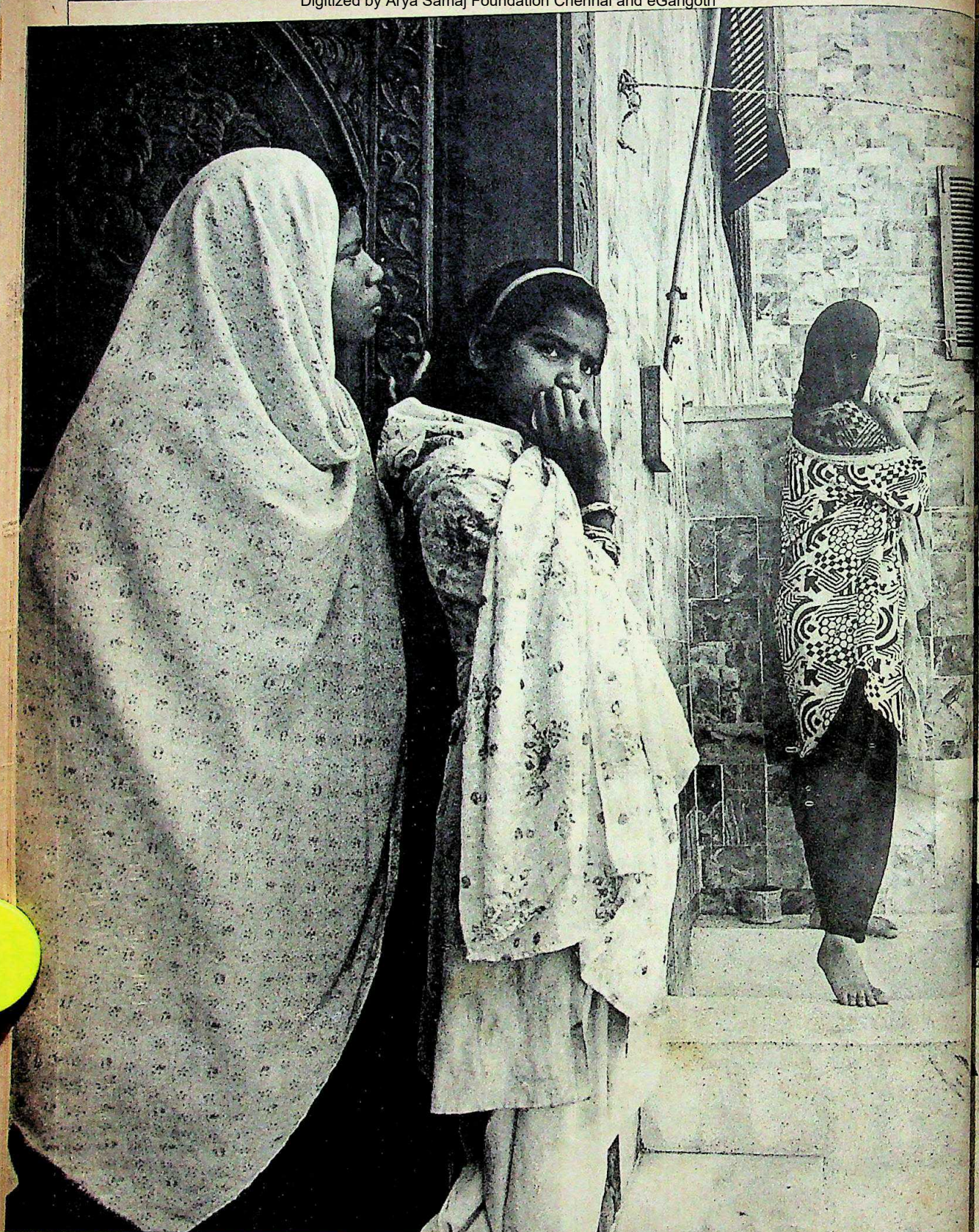

"मर्द अपना गरूर पूरा करने के लिए औरतों को बेइज्जत करते हैं, उन्हें ठुकरा देते हैं. औरतें शादी के बाद हुए या विकृत बच्चों का कत्ल कर देती हैं, क्योंकि वे बुजदिल हैं"

कराची के आश्रम; अं महिला श्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

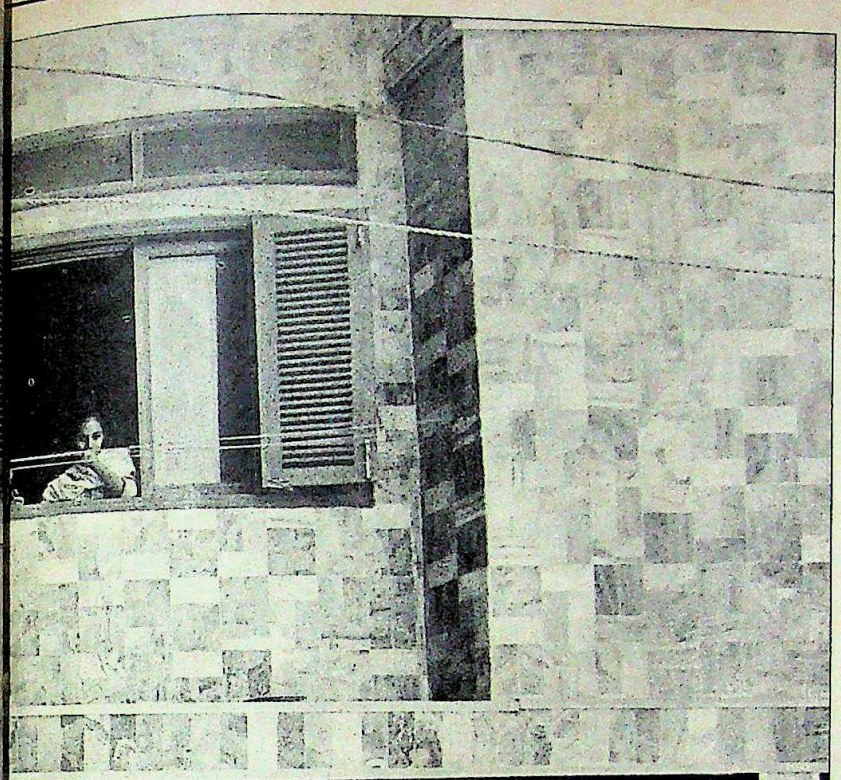

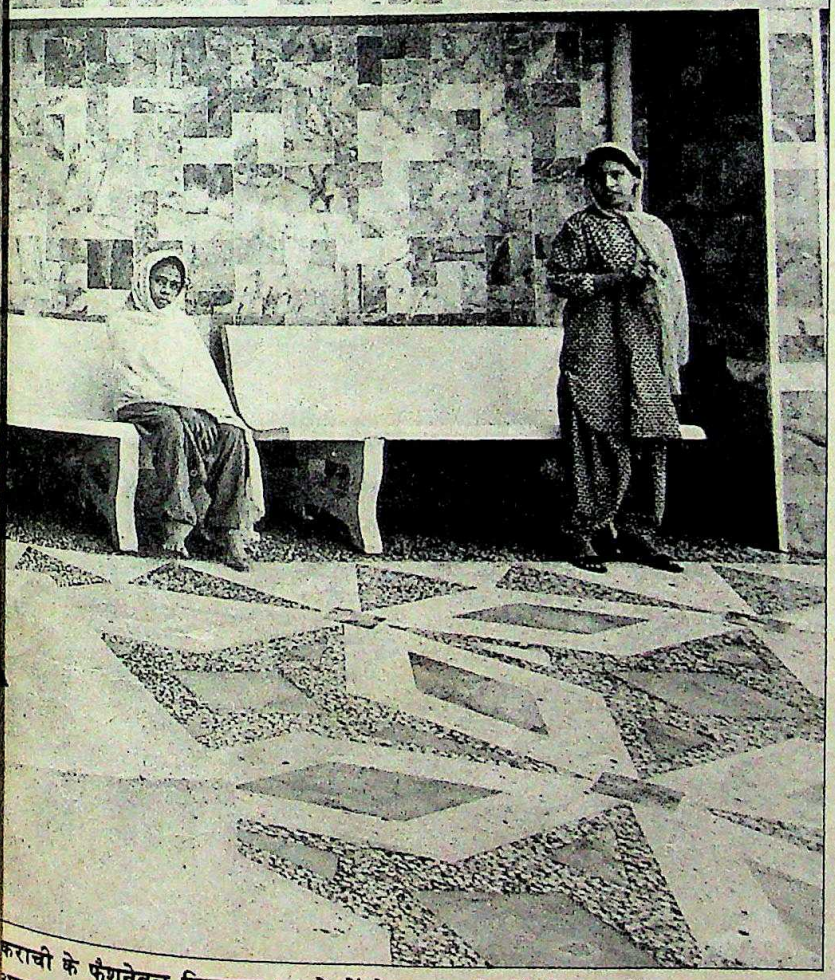

कराची के फैशनेबुल क्लिफ्टन इलाके में बेसहारा औरतों और बच्चों का आश्रम; और (दाएं) एक बेसहारा बच्चे को गोद में लिए जर्मन स्वयंसेवी महिला श्रीमती खां: सेवा का बीड़ा

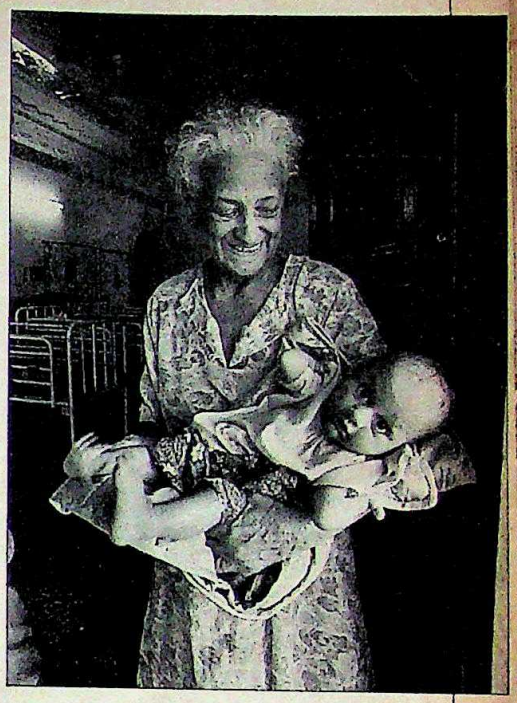

गया है. दूसरी तरफ वायरलेस रिसीवर पर बैठने वाली नाजुक-सी किशोरी 11 साल की सिसकती अफशां को ला रही है. वह रेलवे स्टेशन पर रोती हुई मिली थी और पुलिस ने उसे एधी के पास भेज दिया. अफशां सक्खर की रहने वाली है और बताती है कि वह आया बनने के लिए कराची आई थी. एधी उससे कहते हैं, "हम तुम्हें घर वापस भेज देंगे."

मजहबी कट्टरता के खिलाफ होने के बावजूद राजनैतिक क्षेत्र में प्रतिष्ठित और मैगसेसे पुरस्कार प्राप्त एधी पाकिस्तान के 'फादर टेरेसा' के नाम से लोकप्रिय हैं. छठी कक्षा की पढ़ाई छोड़कर वे 1947 में जूनागढ़ से पाकिस्तान आ बसे थे. तब वे साधारण किशोर थे. जिंदगी की शुरुआत उन्होंने ट्रक कारीगर के रूप में की. फिर एक घटना ने सब कुछ बदल दिया.

"मेरी मां को लकवा हो गया. हमारे पास न पैसा था, न दवा. वे उसी तकलीफ में मर गईं," बताते हुए उनके माथे पर शिकन आ जाती है और जबड़े कस जाते हैं. आज किसी भी चेहरे पर तकलीफ देखकर उन्हें प्राण छोड़ती अपनी मां याद आ जाती हैं. उनकी मृत्यु ने ट्रक कारीगर एधी को खत्म कर दिया. सब बेचकर उन्होंने एक हाफ बॉडी ट्रक लिया, जो उनकी पहली एंबुलेंस थी. आज ऐसी 350 गाड़ियां उनके पास हैं. ये सभी तेजरफ्तार सफेद सुजुकी वैन स्ट्रेचर, ऑक्सीजन सिलेंडर, सायरन तथा वायरलेस की सुविधा से लैस हैं. वे कराची और उसके आसपास सात पुनर्वास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

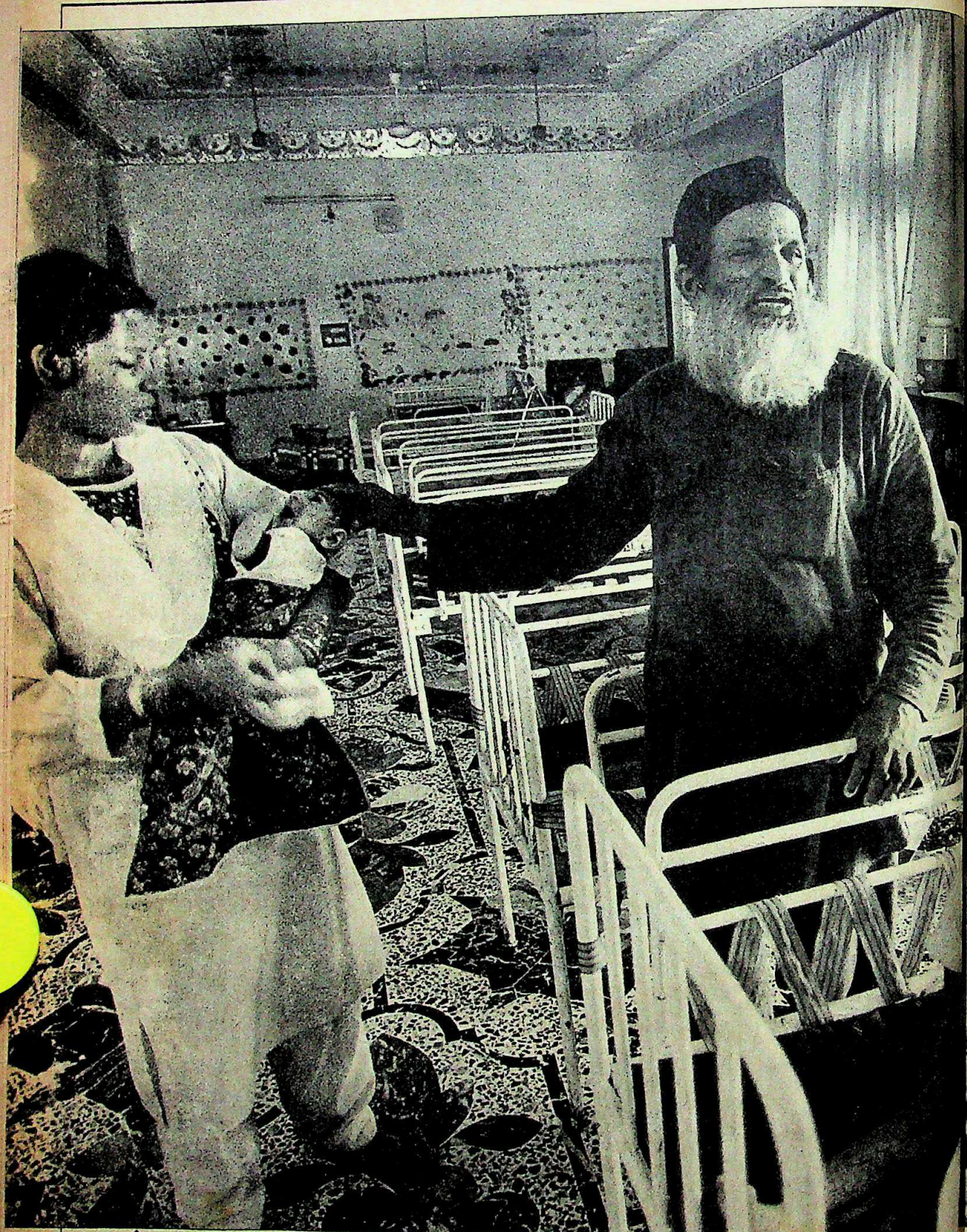

"कंगाल तो नहीं, मुझे भिखारी कह सकते हैं. मैं समाज के निचले तबकों से खैरात लेने की कोशिश करता हूं. आखिर मैं वहीं से आया हूं—फिर भी मेरे पास कोई कमी नहीं"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

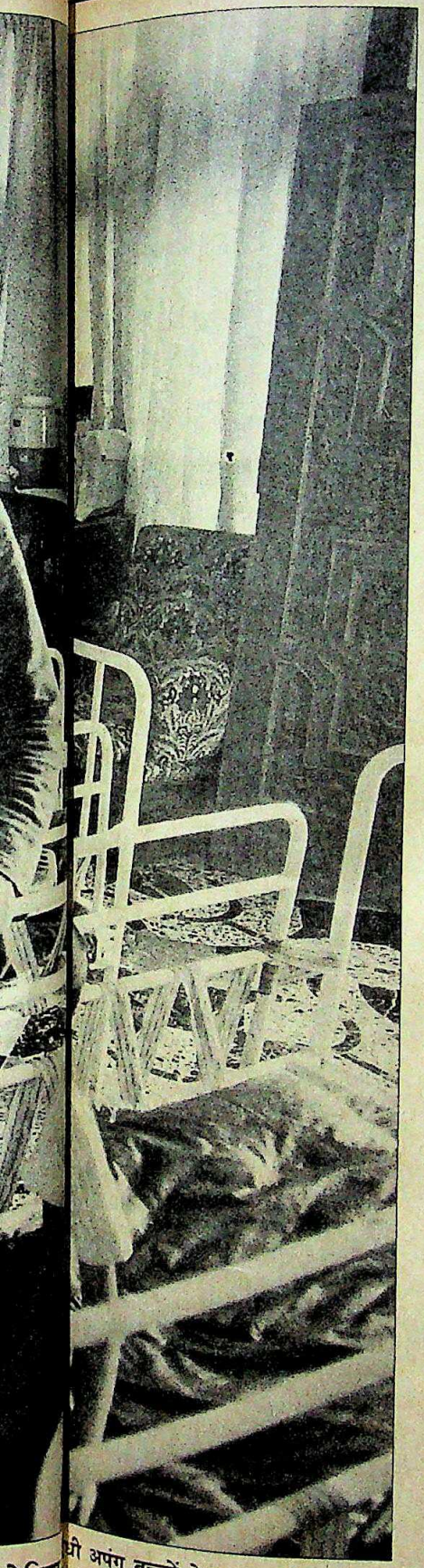

धी अपंग बच्चों के आश्रम में; और
पने हेलिकॉप्टर एंबुलेंस के साथ:
धनों की कमी जैसी बात नहीं

केंद्रों का संचालन भी कर रहे हैं. इनके अलावा छह केंद्र बाहर हैं.

वह युवक, जो 25 साल पहले दम तोड़ती अपनी मां के लिए दवा का बंदोबस्त नहीं कर पाया था, आज अपने केंद्रों पर 7,500 शरणार्थियों को खाना-कपड़ा देता है. उनकी दौड़ती एंबुलेंसों, बैल जेट रेंजर हेलिकॉप्टर और पाइपर सेनेका गाड़ी पर उनका नाम दूर से ही दिखता है. उनके नियमित स्टाफ में पायलट का दस्ता भी है जो सक्खर ट्रेन दुर्घटना, लाहौर बम विस्फोट या सिंध के दूरदराज गांव से अनपढ़ दाई के हाथों गंभीर रूप से बीमार हो चुकी गर्भवती महिला को लिवा पाने के लिए हेलिकॉप्टर से पहुंच जाता है. "प्रॉब्लिम उन तक पहुंचने की नहीं बल्कि उन्हें मदद पहुंचाने की है, वे अपनी गुहार आप तक कैसे पहुंचाए, इसकी है." एधी कहते हैं कि वे केवल वायरलेस स्टेशन ही तो स्थापित कर सकते हैं.

एधी उत्साह के साथ कहते हैं, "50 किमी वाली मेरी योजना के अमल में आने तक इंतजार कीजिए." 1700 किमी लंबे कराची-पेशावर राजमार्ग पर वे हर 50 किमी पर एक केंद्र स्थापित करना चाहते हैं, जिसमें वायरलेस, चार बिस्तरों वाला अस्पताल, जरूरी दवाएं, बेसहारों के लिए छत और हेलिपैड भी हो. यह कल्पना की उडान भर नहीं है.

और धन की कोई 'प्रॉब्लिम' नहीं है. "शुरुआत में मुझे 5 करोड़ रु. की जरूरत है. इसके लिए मैं 5 रु. वाले एक करोड़ कूपन जारी करूंगा ताकि लोग उन्हें खरीदे. इस तरह मैं एक करोड़ पाकिस्तानियों को इसमें हिस्सेदार बनाऊंगा. मैं चाहता हूं कि मुझे पैसा समाज के सबसे निचले तबके से मिले क्योंकि मैं भी वहां से आया हूं." उनके सामने अपने 12 करोड़ रु. सालाना के वर्तमान बजट के लिए भी पैसे की कोई समस्या नहीं है. उनके सुविधासंपन्न अनेक केंद्र तो मध्यम वर्ग के लोगों के लिए भी ईर्ष्या का विषय हो सकते हैं.

कराची के फैशनेबुल क्लिफ्टन क्षेत्र में समुद्र तट पर महिला संरक्षण केंद्र को ही लीजिए. दो एकड़ क्षेत्र में संगमरमर और सुलेमानी पत्थरों से बने इस विशाल भवन में एक दर्जन से ज्यादा भव्य शयनकक्ष हैं. हरेक में अखरोट की लकड़ी से बने सुंदर आधा दर्जन पलंग हैं. अलमारियों में ढेरों कपड़े पड़े हैं. इसके अलावा इनमें संतरे का शरबत, टमाटर की चटनी और चाय के डिब्बे भरे हुए हैं. ये उत्पादकों और व्यापारियों की ओर से मिले उपहार हैं. "जब तक कोई शर्त न हो, मैं यह परवाह नहीं करता कि देने वाला कौन है. मैं अमली काम पर यकीन रखने वाला शख्स हूं."

अमली काम पर यकीन इस कदर कि क्लिफ्टन के इस भव्य भवन को कुख्यात तस्करों के परिवार से—जिन्हें आज के पाकिस्तान में नशीली दवाओं के प्रेमी ही कहा जाएगा—भेंट के रूप में स्वीकार करने में भी उन्होंने कोई संकोच नहीं दिखाया. दरवाजे पर एक बेटे की हत्या हो जाने के कारण परिवार ने यह इमारत अपशकुनी मानकर छोड़ दी थी. लेकिन जनरल जिया जैसों के साथ उनका व्यवहार दूसरा है. एधी के मुताबिक, "वे मुझे 10 लाख रु. दे रहे थे. मैंने कहा कि मजहब के रंग में रंगे पैसे को मैं मंजूर नहीं करूंगा. उनका सोच था कि मैं पक्का मौलाना होऊंगा पर मैं महज दाढ़ी वाला मुसलमान भर हूं."

दरअसल, सचमुच के मौलाना तो उनकी मुखरता के कारण उनसे नफरत ही करते हैं उनका मानना है कि एधी न होते तो यह दान मस्जिदों और मदरसों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

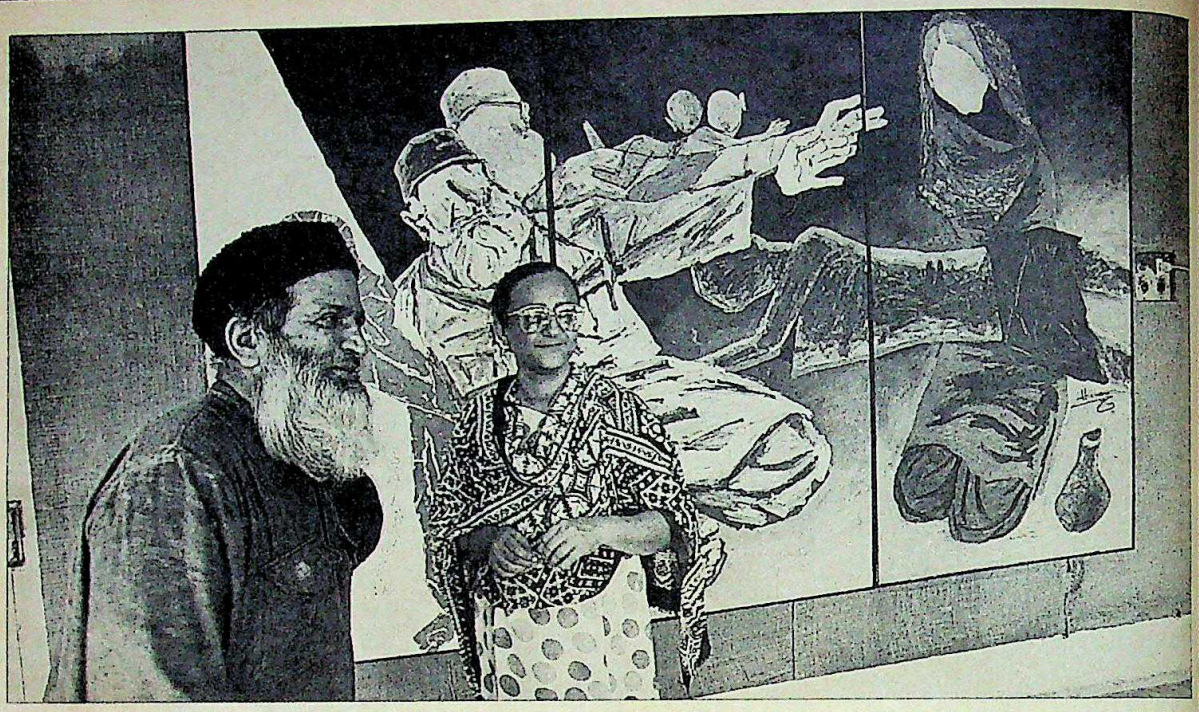

"एक बार मैंने हुसैन से कहा मेरे जैसे साधारण आदमी का चित्र क्यों बनाते हैं. पर कराची के लोग कहते हैं, ऊपर अल्ला है और यहां एधी, तो फिक्र काहे का"

को ही मिलता. अनेक मुल्लाओं ने तो उनकी निंदा की है और लोगों को दान देने से रोका भी है. एधी गर्व के साथ कहते हैं, "मुल्लाओं को मुझसे इसलिए नफरत है कि मैं उनकी दुकानदारी के लिए खतरा बन गया हूं."

कराची के दक्षिण में 90 किमी का रास्ता तय करके जब एधी एक और उपद्रवग्रस्त शहर हैदराबाद की आधी दूरी पर पहुंचते है तो क्लिफ्टन की भव्यता लुप्त हो जाती है. यहां 11 एकड़ में उनकी एक हवेली है. यहां सबसे गंभीर मरीज रहते हैं. मुस्कराहट बिखेरते वे जैसे ही आगे बढ़ते हैं, 'अब्बू, अब्बू' की आवाजें तेज होने लगती हैं. यहीं रोमानिया में बनी करीब 40 ऐसी एंबुलेंस पड़ी हैं, जो कुछ ही हफ्तों में खटारा हो गई थीं. वे कहते हैं, "क्या नाम था उसका, चाऊशेस्कू? उसने मुझसे धोखा किया. अब देखिए खुदा ने उसके साथ क्या किया. ये जरूर लिखिए, दूसरों को भी नसीहत मिले. एधी भले ही नमाज न पढ़ता हो पर खुदा मेरा ध्यान रखता है."

व्यक्तिगत तौर पर एधी को अपनी देखभाल की ज्यादा दरकार नहीं. वे अपनी पत्नी बिल्किस के साथ उसी एक कमरे वाले मकान में रहते हैं, जहां से 26 साल पहले उन्होंने शुरुआत की थी. अपने परिवार पर वे हर महीने कुछ सौ रुपए खर्च करते हैं. उनकी बेटी शादीशुदा है और दो बेटे अमेरिका में पढ़ रहे हैं. एधी नीला-भूरा मोटी खादी का कुर्ता-पाजामा 24 घंटे पहनते हैं और साल भर में 10 रु. से ज्यादा का साबुन नहीं खरीदते.

उनके व्यावहारिक सोच को लेकर असंख्य कथाएं हैं. कुछ सच हैं, तो कुछ मनगढ़ंत. लोग किस्से सुनाते हैं कि सड़क पर हुई लड़ाई में अभी मरे व्यक्ति के अपनी आंख दान में देने के जाली कागजात उन्होंने कैसे बना लिए. पर एधी का तर्क है. "अगर मैं लाश उठाने, उसे धोने, फातिहा पढ़ने और दफनाने का काम कर रहा हूं तो निश्चय ही उसकी आंखें लेकर किसी अंधे को देने का हक भी रखता हूं." यह किस्सा भी है कि वे अपने हिसाब-किताब की जांच सार्वजनिक रूप से करने से इनकार करते हैं. पर उनका तर्क है, "अगर ऑडिटर लोग ईमानदारी तय कर पाते तो पाकिस्तान सरकार दुनिया की बेहतरीन सरकार होती." वे यह भी बताते हैं कि पड़ोसियों को लूटने वाले डाकुओं को पहचानने में उन्होंने पुलिस की सहायता करने से इनकार कर दिया. एधी की बात में वजन है, "अगर मैं पुलिस की मदद करना शुरू कर दूं, तो सिरफिरों के इस शहर में मुझे जख्मियों की मदद कौन करने देगा?"

एधी की यह अकेले की उपलब्धि है. वे अपना हिसाब-किताब भी खुद ही रखते हैं और कोई बेहूदगी बरदाश्त नहीं करते. इनायतुल्ला शिकायत करने आता है कि एक हफ्ता पहले ही विधवा हुई उसकी बहन ने पति का शव लाहौर से ले जाने के लिए एधी से ताबूत लिया था. उससे जमानत राशि की रसीद खो गई है (गरीब लोग चूंकि लकड़ी के ताबूत का खर्च नहीं उठा सकते, इसलिए एधी ने लोहे के कुछ ताबूत बनवाए हैं. 1200 रु. की जमानत राशि लेकर वे ताबूत दे देते हैं और रसीद दिखाने और ताबूत लौटाने पर रकम वापस कर दी जाती है). एधी पूछते हैं, "रसीद के बिना मैं जमानती रकम कैसे लौटा सकता हूं?" पर इनायतुल्ला का तर्क है, "मेरी बहन ताबूत तो वापस ले आई थी." एधी कहते हैं, "अगर मैं रसीद के बिना रकम वापस देने लगा तो पाकिस्तान सरकार और अब्दुल सत्तार एधी में क्या फर्क रह जाएगा?"

इनायतुल्ला चिरौरी करता है, "लेकिन मुझे कुछ राय तो दीजिए, मैं क्या करूं?"

"इस दुनिया में प्रॉब्लिम यह है कि हर कोई सलाह देता है."

एधी का संयम टूटने ही वाला है लेकिन वायरलेस बोलने लगता है. एक बार और खामोशी भंग होती है. एक और मुठभेड़. एक और घायल. और कराची को यह मसीहा एंबुलेंस लेकर फिर निकल पड़ता है. दिन खत्म हो गया है. पर रात अभी शुरू ही हुआ चाहती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचियों का संकट

नई उद्योग नीति घोषित करने के बाद उद्योगमंत्री अजित सिंह ने विदेशी निवेश के लिए अनुकूल और प्रतिकूल उद्योगों की सूचियां बनाने की जो घोषणा की थी उसे लेकर काफी विवाद है. अजित सिंह के निर्देश पर उद्योग मंत्रालय ने सबसे पहले ऐसे उद्योगों की सूची बनाई जिसमें विदेशी निवेश को बढ़ावा दिया जाएगा. इसमें साइकिल की तरह की सामान्य उपभोक्ता वस्तुओं वाले उद्योगों की भरमार है. प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह ने इस सूची को अस्वीकृत तो नहीं किया लेकिन उद्योग मंत्रालय को पहले ऐसे उद्योगों की सूची बनाने को कहा जिनमें विदेशी मुद्रा के बोझ को कम करने के मकसद से विदेशी निवेश की इजाजत नहीं दी जाएगी. सूचियां बनाने की इस कवायद से नियमों को उदार बनाने का असली मकसद ही समाप्त-सा हो गया है. संभावित निवेशकों को तो इन सूचियों को देखने-समझने में ही काफी समय बरबाद करना होगा.

बंटकर बढ़े

श्रीराम घराने के लोग हाल के बंटवारे के बाद बड़ी तेजी से दूसरे क्षेत्रों में हाथ-पांव पसार रहे हैं. इसके एक धड़े—भरतराम समूह की प्रमुख कंपनी श्रीराम फाइबर्स नायलॉन टायर कॉर्ड बनाती है. अब यह उपभोक्ता वस्तुओं के क्षेत्र में प्रवेश करके वाशिंग मशीन तथा रसोई के उपकरण बनाना चाहती है. यह समूह अपनी दो नई परियोजनाओं के लिए विदेशी तकनीकी की तलाश में है. पहली परियोजना तमिलनाडु में इंजीनियरिंग प्लास्टिक इकाई की है और दूसरी गुजरात में सिंथेटिक ग्लिसरीन इकाई लगाने की. डीसीएम डाटा प्रोडक्ट्स के लिए 10 करोड़ रु. की लागत से नया संयंत्र लगाने की योजना पर अमल होने ही वाला है. यह कंप्यूटर कंपनी होगी.

बर्क्लेज को बुलावा

रिजर्व बैंक ने ब्रिटेन की प्रसिद्ध वित्तीय संस्था बर्क्लेज बैंक्स को बंबई में अपनी शाखा खोलने की इजाजत दे दी है. आजादी के बाद भारत में अपनी शाखा खोलने वाला यह पहला ब्रिटिश बैंक है. स्टेंडर्ड चार्टर्ड और एएनजेड ग्रिंडलेज—जिनकी मिल्कियत अब आस्ट्रेलियाई हो गई है—1947 के पहले से ही भारत में काम कर रहे हैं. लेकिन बर्क्लेज के लिए रिजर्व बैंक की अनुमति पाना 'छोटी लड़ाई जीतना' भर है. असली 'महाभारत' तो अभी बाकी ही है. यानी दक्षिण बंबई में ठीक-ठाक जगह दफ्तर ले लेना जहां जमीन की कीमतें आसमान छू रही हैं. इस साल के आखिर तक उन्हें अपनी शाखा खोल लेनी है.

द्वार खोलने पर आमादा

राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के सबसे अधिक भ्रमणशील (और इस कारण दुनिया देख चुके) मंत्री अरुण नेहरू की पक्की राय है कि जब तक सरकार निर्यातकों पर लगे प्रतिबंध बड़ी हद तक नहीं घटाती, विश्व व्यापार में भारत की हिस्सेदारी नहीं बढ़ सकती. इस मामले में वाणिज्यमंत्री चीन और विएतनाम के उदाहरणों से खास तौर से प्रभावित हैं. चीन में अब कोई भी राज्य सीधे आयात और निर्यात कर सकता है.

और यही कारण है कि चीन का निर्यात भारत से तीन गुना अधिक है. नेहरू का मानना है कि विएतनाम भी चीन का अनुसरण करता लगता है. नेहरू ने अपने मंत्रालय के अधिकारियों को विश्व की विभिन्न कंपनियों के निर्यात संबंधी आंकड़े तैयार करने को कहा है.

गरीबी रेखा का आकलन

देश में गरीबी रेखा के नीचे जीवन बसर करने वाले लोगों की संख्या का अनुमान लगाना हमेशा से झंझट का काम माना जाता है. हैदराबाद स्थित 'इंटरनेशनल क्रॉप्स रिचर्स इंस्टीट्यूट फॉर सेमी एरिड-एरिड ट्रॉपिक्स' ने भी हाल में एक

चार्ट: बी.के. शर्मा

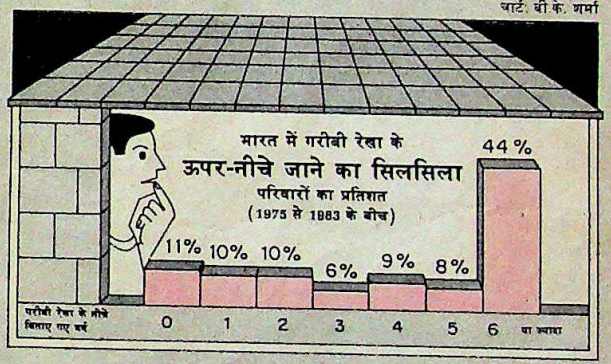

ऐसा ही अध्ययन किया जो गरीबी पर वर्ल्ड डेवलपमेंट रिपोर्ट में प्रकाशित हुआ है. संस्थान ने 1975 से 1983 के बीच 211 खेतिहर परिवारों की स्थिति पर नजर रखी और पाया कि इस दौरान मात्र 12 फीसदी परिवार पूरे समय गरीबी रेखा के ऊपर थे. दूसरी तरफ 44 फीसदी परिवार छह वर्ष या अधिक समय तक गरीबी रेखा के नीचे रहे. और करीब 90 फीसदी परिवार इन नौ वर्षों में से कम-से-कम एक वर्ष बहुत ही खस्ता हालत में रहे. उधर, विश्व बैंक का मानना है कि 2,000 ईस्वी तक सिर्फ 25.4 फीसदी भारतीय ही गरीबी रेखा के नीचे रहेंगे.

विदेशी बैंक खरीदेंगे

एक दशक पुराने इक्वेटोरियल बैंक, जिसकी एकमात्र शाखा लंदन में है (अनुमानित जमा: 300 करोड़ रु.), पर कुछ भारतीय समूहों की नजरें लगी हैं. कुछ महीने पहले शराब के व्यापारी विजय माल्या, सुदर्शन कुमार बिड़ला और एक प्रमुख प्रकाशक ने इस बैंक को लेने के लिए अलग-अलग पेशकश की. तभी इंग्लैंड के बैंकिंग कानूनों की बाधा सामने आ गई. किसी ब्रिटिश बैंक में 14.5 फीसदी से अधिक शेयर लेने की कोशिश कर रहे विदेशी व्यक्ति या समूह को पहले से अनुमति लेने की जरूरत होती है. चूंकि कानून कड़ा है और 14.5 फीसदी से कम शेयर लेने का मतलब नहीं, इसलिए इन लोगों ने हाथ खींच लिए. जानकार कहते हैं, सौदा अभी भी हो सकता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेयर बाजार

नए इरादे, नई बुलंदियां

आर्थिक वातावरण की अनुकूलता से शेयरों का उफान जारी

शेयर बाजार में विभिन्न शेयरों के लिए हाथ-पैर मारने वाले मध्यम-वर्गीय नए निवेशकों की जमात अब नहीं रही. इस बात का भी कोई संकेत नहीं है कि 1986 की मंदी में बाजार को नमस्कार कह गए लोग वापस लौट आए हैं. जब से यह साल शुरू हुआ है, कंपनी क्षेत्र के किसी दिग्गज ने कोई बड़ा निर्गम भी नहीं किया. और इस बात को मान लेने के पर्याप्त कारण हैं कि इस साल महानिर्गम करने वाली चार कंपनियां तमाम दावों के बावजूद 2,000 करोड़ रु. नहीं इकट्ठा कर पाईं. उनकी पोटली में सिर्फ 400 करोड़ रु. ही जुट पाए.

पर दलाल स्ट्रीट उत्साह से लबालब है. शेयर नई बुलंदियों पर चढ़ रहे हैं. और तेजड़ियों के वारे-न्यारे हो रहे हैं. मसलन, एसोसिएट सीमेंट कंपनीज (एसीसी) का शेयर 439 रु. की कीमत से उछला तो दो महीने में ही 810 रु. पर पहुंच गया. बाजार का पूंजीकरण यानी सभी सूचीबद्ध शेयरों की सकल बाजार कीमत जो इस साल के शुरू में 47,778 करोड़ रु. थी, पिछले पखवाड़े बढ़कर 54,239 करोड़ रु. पहुंच गई. मुंबई शेयर बाजार (मुंशेबा) का 30 शेयरों वाला संवेदनशील शेयर मूल्य सूचकांक पिछले पखवाड़े 926.92 के बिंदु पर पहुंच गया जबकि जनवरी के मध्य में यही सूचकांक 780.34 के बिंदु पर टिका हुआ था.

मुंशेबा के एक अधिकारी के अनुसार, "शेयर कीमतों में इस उछाल के लिए हम तैयार नहीं थे. पर बाजार में जरूरत से ज्यादा गरमी आ जाने का भी खतरा है इसलिए मुंशेबा सुधार के उपाय अपना रहा है." मुंशेबा ने तो एक दिन के लिए एसीसी शेयरों का कारोबार ही रद्द कर दिया और हर शेयर पर 400 रु. का पड़ता थोपकर उसके उछाल को रोकने की कोशिश की.

शेयरों के बादशाह जिन्हें खुशहाली के तीन कारण मानते हैं, इस बार वे तीनों एक साथ आ गए हैं. ये तीन कारण हैं—अच्छी आर्थिक नीतियां, अच्छा मानसून और कंपनियों का अच्छा कामकाज. 1989 के अंत में जब राष्ट्रीय मोर्चा सरकार ने सत्ता संभाली तो लग रहा था कि यह सरकार 'निजी क्षेत्र विरोधी' होगी. पर बजट, नई उद्योग नीति और विदेशी निवेश को आकर्षित करने के कदमों के साथ ही ये सारे अंदेशे उत्साह में बदल गए. और फिर मानसून की गर्जना तो बाजार में नई बहार लाती ही है. कंपनियों के कामकाज पर भी उसका खासा असर पड़ता है.

इसलिए इसमें हैरत की बात नहीं कि 1989-90 में कंपनियों के नतीजे काफी अच्छे रहे. 'ए' समूह में सूचीबद्ध कंपनियों के नतीजों के विश्लेषण से पता चलता है कि 1989-90 के दौरान ज्यादातर कंपनियों का मुनाफा बढ़ा है. बजाज ऑटो ने तो प्रतिशत लाभांश देकर अब तक के कीर्तिमान ही तोड़ डाले.

पर इस बात के भी संकेत हैं कि कीमतों में उछाल का असर चौतरफा मसलन मुंशेबा के 'ए' समूह में सूचीबद्ध कंपनियों के शेयरों का बाजार मूल्य 28 करोड़ रु. था. यानी कुल का 50 फी बाकी उन 1,000 कंपनियों में बिखरा था जिनके शेयरों का कारोबार बाजार सक्रिय रूप से नहीं होता. पर उपलब्धियां हुई हैं उसका फायदा बाजार को देना होगा.

शेयर बाजार का एक महत्वपूर्ण यह है कि वहां अभी भी यूनिट ट्रस्ट, बीमा निगम, भारतीय स्टेट बैंक और बैंकों के साझा कोषों की तूती बोलती निजी निवेशक बाजार के उतार-चढ़ाव

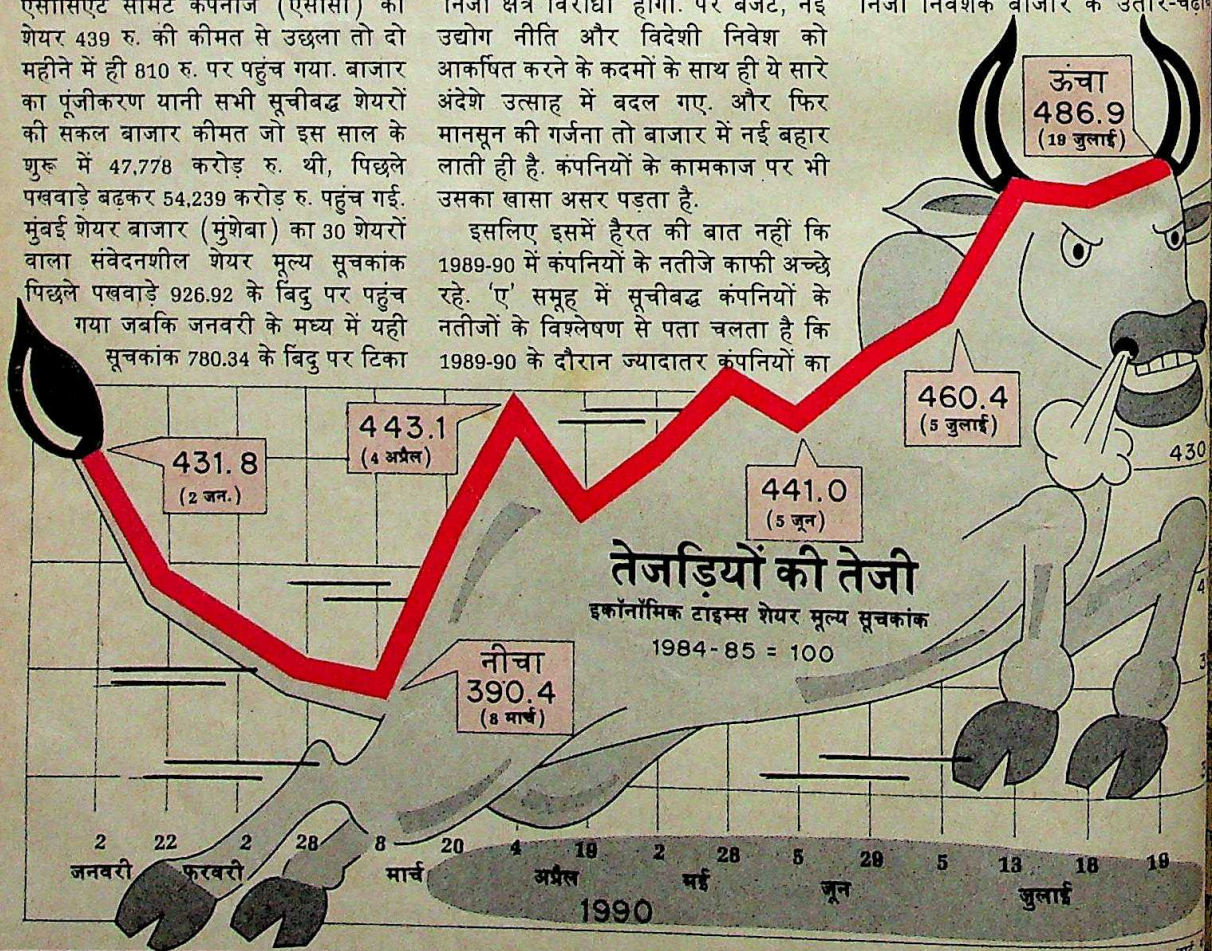

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोते खाने के बाद अब साझा कोषों में पैसा लगाना ही ज्यादा बेहतर समझते हैं.

बाजार के आका यूनिट ट्रस्ट ने सट्टेबाजी पर रोक लगाने की कोशिश में पहली बार अपनी खरीद-फरोख्त का खुलासा किया. जुलाई के शुरू में इसने घोषणा की कि वह एसीसी के 55,000 शेयर 600 रु. की कीमत पर इस गरज से बेच चुका है कि इसकी कीमत नीचे आए लेकिन कीमत नीचे आने के बजाए 800 रु. तक जा पहुंची. पिछले साल इस संस्था ने 900 करोड़ रु. के शेयर खरीदे जिसमें निर्गम भी शामिल हैं. यूनिट ट्रस्ट के अध्यक्ष एस.ए. दवे के अनुसार, बाजार का रुख तेजी का है. कंपनियों के

बुलंदियों पर पहुंचने वाले

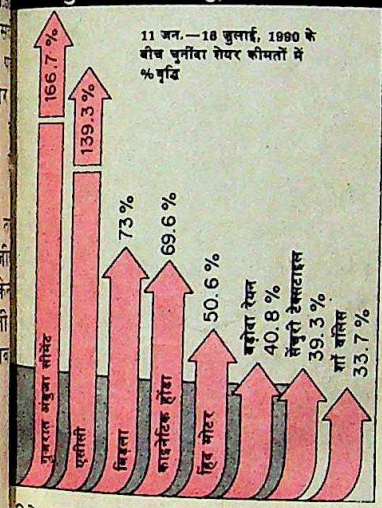

नतीजे उत्साहवर्धक हैं और पुख्ता कारणों से बाजार में उछाल आ चुका है.''

पर दलाल स्ट्रीट में 'सिर्फ दुख भरे दिन बीते रे भैय्या' वाला माहौल ही नहीं है, आशंकाएं भी मंडरा रही हैं. 1989 के अतिनिर्गम वाले दौर के बाद नए शेयर खरीदारी करने का माहौल ठंडा पड़ चुका है. रिलायंस, फिनोलेक्स पाइप्स और लॉयड स्टील जैसी नई कार्रवाइयों से स्थिति बदलेगी.

इस बीच सट्टेबाजी पर रोक लगाने की सेबी की कोई भी कोशिश कामयाब नहीं हो पा रही है. मुंशेबा के अधिकारियों ने कुछ सक्रिय शेयरों पर भारी बंदिश लगा दी है और शेयर दलालों के कारोबार पर भी कुछ पाबंदियां लगा दी हैं. बाजार के जानकारों का मानना है कि इसका खास असर नहीं होगा क्योंकि दलालों के पास भरपूर पैसा है. और फिर यह भी खबर है कि कुछ विदेशी बैंकों ने शेयरों की खरीद में 100-200 करोड़ रु. अग्रिम लगा दिए हैं. इससे उफान बढ़ा. ऐसे में अगर दवे जैसे लोग शेयर बाजार की प्रशासकीय संस्था का स्वरूप बदलने की बात करते हों तो आश्चर्य की कोई बात नहीं.—**एस.एन. वासुकि**

टिस्को

लालू की लाठी

कई मुसीबतें एक साथ

यह लड़ाई भी खूब चलेगी. एक तरफ बिहार के कंपनी क्षेत्र पर खास दबदबा रखने वाला देश का सबसे बड़ा व्यवसायिक घराना टाटा है. दूसरी तरफ उनके खिलाफ खड़ा है उतना ही असरदार व्यक्तित्व, राज्य के अदमनीय मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव. लालू ने जमशेदपुर की टाटा आयरन ऐंड स्टील कंपनी (टिस्को) के खिलाफ पूरी ताकत से जंग छेड़ दी है.

लड़ाई कितनी गंभीर है, इसका पता तो इसी से लग जाता है कि पिछले पखवाड़े टिस्को के अध्यक्ष रूसी मोदी ने असामान्य ढंग से पत्रकार सम्मेलन करके यह घोषणा की, "क्या मुख्यमंत्री उन मुद्दों पर बात करना चाहेंगे जो फिलहाल हमारे और सरकार के रिश्तों में कड़वाहट घोल रहे हैं. उनसे बातचीत करके मुझे काफी खुशी होगी."

उधर मुख्यमंत्री लालू यादव ने कहा कि टाटा ही देश के इकलौते उद्योगपति नहीं हैं और "हम उनके बिना भी काम चला सकते हैं."

टाटा के खिलाफ यादव सरकार की ये कार्रवाइयां हैं:

- टाटा द्वारा इस्तेमाल की जा रही सरकारी जमीन पर भूमि सुधार अधिनियम के तहत लगने वाला शुल्क माफ करने के पिछली सरकार के फैसले को रद्द करना.
- 18 मार्च 1989 में हुए कंपनी के स्वर्ण जयंती समारोह में लगी आग—जिसमें 43 लोगों की जान गई थी—के लिए इस साल 7 मई को टिस्को के प्रबंध निदेशक और महाप्रबंधक के खिलाफ फौजदारी मामले दर्ज किए गए.
- टिस्को की सहायक इकाई यादोगवा लिमिटेड ने मान्यताप्राप्त श्रमिक संघ के साथ समझौते पर दस्तखत नहीं किए इसलिए श्रम विभाग को निर्देश दिया गया कि उसके खिलाफ श्रम कानूनों के उल्लंघन का मामला दर्ज किया जाए.
- गैस लीक होने के बाद टिस्को की एक धमन भट्टी बंद करवा दी गई. मुख्यमंत्री ने जिले के अधिकारियों को जांच का आदेश दिया और रिपोर्ट आने से पहले ही इकाई को 13 दिन के लिए बंद करने का भी निर्देश दिया गया. इस अवधि में 15 करोड़ रु. मूल्य के 18,000 टन उत्पादन का नुकसान भी उठाना पड़ा.

ऐसे ही कुछ दूसरे मुद्दे भी हैं. मसलन, टाटा को दी जाने वाली विद्युत सप्लाई की दरें पुनरीक्षित कर दी गई और जमशेदपुर शहर का प्रबंध टाटा से लेकर उसे एक महापालिका के मातहत करने की कोशिशें शुरू हो गईं. इन सबसे यह तो जाहिर हो गया कि यादव टाटा के पीछे पड़ गए हैं. पर ऐसा क्यों? इसके कारण अभी तक जाहिर नहीं हो पाए हैं.

यादव ने टाटा घराने को औकात बताने की ठान ली है और कहा है कि बिहार उनके बिना भी काम चला सकता है

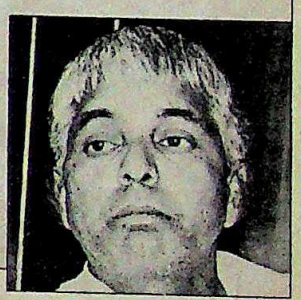

एक वजह पश्चिम बंगाल के अगुआ उद्योगपति रामप्रसाद गोयनका के साथ यादव की असामान्य बैठक भी बताई जाती है. इस बैठक के बाद गोयनका की विद्युत, पर्यटन, चीनी तथा स्वास्थ्य आदि क्षेत्रों की कई परियोजनाएं मंजूर हो गईं जिनमें 2,000 करोड़ रु. का निवेश होगा. सूत्रों का कहना है कि यादव टाटा से टक्कर लेने के लिए राज्य में गोयनका को आमंत्रित कर रहे हैं. आरपीजी इंटरप्राइज के उपाध्यक्ष सुब्रतो पॉल के अनुसार, "हर व्यापारिक अवसर व्यापारिक अवसर होता है. व्यापारिक घराने राजनीति में नहीं पड़ते."

पर राजनीति का खामियाजा एक व्यापारिक घराने को भुगतना पड़ रहा है. मोदी के अनुसार, "बिहार सरकार से झगड़कर बिहार में कोई उद्योग फल-फूल नहीं सकता. दूसरी तरफ बिहार सरकार के लिए यह अच्छा नहीं है कि वह उद्योग विरोधी रवैया अपना ले." लेकिन फिलहाल इसकी परीक्षा होनी बाकी है.

—**फरजंद अहमद**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फेरा

कसता शिकंजा

उल्लंघनकर्ताओं की सूची तैयार

जल्द आ रही है: भारत के विदेशी मुद्रा नियमों का उल्लंघन करने वालों की सूची. कुल प्रविष्टियां: एक हजार से ज्यादा. प्रकाशक: प्रवर्तन निदेशालय, लोकनायक भवन, नई दिल्ली.

हालांकि यह सूची आम जनता के लिए उपलब्ध नहीं होगी फिर भी कंपनी क्षेत्र इस सूची को पाने के लिए बेताब है. यह प्रकाशन विदेशी मुद्रा नियमन कानून (फेरा) को लागू करने वाले प्रवर्तन निदेशालय की रणनीति में परिवर्तन को रेखांकित करता है. अब खुफिया सूचनाओं पर ही निर्भर रहने के बजाए इसके गुप्तचरों ने अपने सूचना स्रोत बनाए हैं. इसकी वजह यह है कि पिछले वर्ष देश के विदेशी मुद्रा भंडार में 1,036.22 करोड़ रु. की कमी आई. यानी 16.4 फीसदी गिरावट जो इस दशक में सर्वाधिक है.

संदेह के आधार पर अंधाधुंध छापा मारकर उद्योग जगत को भयाक्रांत करने की बजाए वित्त मंत्रालय की विभिन्न शाखाएं, मसलन आर्थिक खुफिया ब्यूरो, भारतीय रिजर्व बैंक, आयात-निर्यात नियंत्रक और फेरा निदेशालय अब मिल-कर नई योजना बना रहे हैं. राजस्व सचिव आर. एल. मिश्र कहते हैं, "कड़े नियंत्रण और बेहतर परिणामों के लिए हम उल्लंघनकर्ताओं के काम करने के तरीकों का अध्ययन कर रहे हैं." मंत्रालय को भरोसा है कि इस तरह वे विदेशों में जमा भारतीय मुद्रा के काफी बड़े हिस्से को खोज लेंगे. एक अनुमान के अनुसार यह रकम 5,000 करोड़ रु. से 7,000 करोड़ रु. के बीच है. (पिछले वर्ष के अंत तक भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 5,041 करोड़ रु. ही रह गया था.)

शुरू में नमूने के तौर पर किए गए एक सर्वेक्षण के बाद पाया गया कि यह उल्लंघन तीन तरह से होता है—निर्यात किए माल की कीमत देश में न लाना, निर्यात किए माल की कीमत कम करके दिखाना और फर्जी आयात दिखाकर विदेश में पैसा जमा कराना. निर्यातकों को करार होने के छह महीने के भीतर विदेशी मुद्रा प्राप्त कर लेनी होती है. लेकिन कई ऐसे मामले भी प्रकाश में आए हैं जिनमें कई वर्षों तक निर्यात की रकम हासिल ही नहीं की गई.

निर्यात बीजकों में माल की कम दिखाई गई कीमत अधिकारियों की नजर से इसलिए चूक जाती है कि वे बाहर जाने वाली वस्तु की कीमत की इतनी बारीकी से जांच परख नहीं करते जितनी आने वाले सामान की क्योंकि आयातित सामान पर उन्हें सीमा शुल्क तय करना होता है.

कई मामलों में तो बीजकों पर कम दिखाई गई रकम के बराबर ही विदेशी मुद्रा भारत पहुच पाती है. बाकी रकम विदेशी बैंकों में जमा कर दी जाती है. फिर यह राशि विदेशों के मोटे मुनाफे वाले व्यापार में निवेश कर दी जाती है. निवेश न किया जाए तो भी विदेशी बैंक में जमा विदेशी मुद्रा स्वदेश के मुकाबले बहुत मुनाफे वाली रहती है. पिछले वर्ष भारतीय रुपए का अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 19 फीसदी, पौंड स्टर्लिंग के मुकाबले 50 फीसदी, मार्क के मुकाबले 64 फीसदी और जापानी येन के मुकाबले 70 फीसदी अवमूल्यन हुआ है.

विदेशी मुद्रा में घपले का एक और तरीका है—जंक इंपोर्ट यानी खुले सामान्य लाइसेंस नीति के तहत सामान आयात करना. सरकार ने जीवनरक्षक दवाओं और किताबों जैसी कुछ वस्तुओं पर कम आयात शुल्क रखा है. इन्हें मंगाने के लिए आयातक बैंक ऋण भी ले सकते हैं और सरकारी सब्सिडी और निर्यात प्राथमिकता लाइसेंस जैसी सुविधाओं का लाभ भी उठा सकते हैं. लेकिन यह आयातित सामान या तो कागजों पर ही आता है या फिर दर्शायी गई मात्रा के मुकाबले बहुत कम होता है. इनके बदले भेजी गई विदेशी मुद्रा वहां निवेश कर दी जाती है.

ऐसे ही एक फर्जी आयात का भंडाफोड़ इस वर्ष बंबई में हुआ. प्रबोध रावल नाम के एक व्यापारी और उनके छह सह-योगियों ने, जिनके अहमदाबाद और बंगलूर के छह बैंकों में अधिकारियों से संपर्क थे, पिछले तीन वर्षों में 36 करोड़ रु. के रेजिन (बैरोजा) का आयात किया लेकिन जब निदेशालय के अधिकारियों ने सीमा शुल्क विभाग में पड़ताल की तो पता लगा कि माल आयात ही नहीं हुआ. सारी कार्रवाई कागजों में ही हुई और पैसा बाहर जमा कर दिया गया. जिन फर्मों से माल 'आयात' किया गया वे नितांत फर्जी निकलीं.

शरद सक्सेना

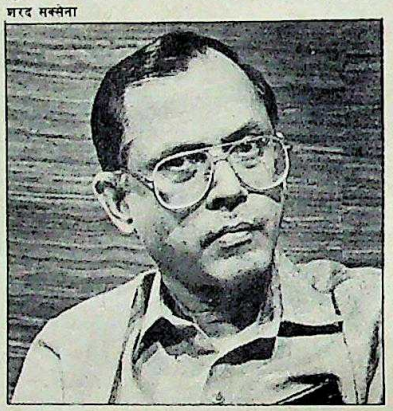

प्रमोद पुष्करणा

आर.एल. मिश्र (बाएं) और टी.जी. जोसेफ: असरदार रणनीति

विदेशी मुद्रा भंडार में भारी कमी आ जाने से वित्त मंत्रालय की विभिन्न शाखाएं विदेशी मुद्रा कानून तोड़ने वालों पर शिकंजा कस रही हैं

ऐसी कंपनियों पर शिकंजा कसने की पहल करते हुए फेरा निदेशालय के महा-निदेशक टी.जी. जोसेफ ने अपनी चौ-इकाइयों को कार्रवाई के विस्तृत ब्यौरे परिपत्र भेजा है. पहले निदेशालय प्र-निर्माताओं से संबंधित जानकारी ले-उनके बिक्री मूल्य की तुलना देश में उ-तरह के मामले से करेगा. इसके लिए देशों के सीमा शुल्क, कीमत सहित और आयकर विभाग से जानकारियों आदान प्रदान होगा. विसंगति पाए पर कार्रवाई की जाएगी.

निदेशालय के अधिकारी अपने क्षेत्र दस या बारह बड़े निर्यातकों को चु-और आयात और निर्यात नियंत्रक से में उनके किसी प्रमुख निर्यात का ब्य-मांगेंगे. तब वे निर्यातकों की बताई की-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की तुलना उस वक्त उस माल के बाजार मूल्य से करेंगे. यदि बाजार की तुलना में ये कीमतें कम हुईं तो विदेश में उस माल की कीमतों से इसकी तुलना की जाएगी. विदेशों के वित्तीय नियमों का भी विस्तृत अध्ययन किया जा रहा है ताकि विदेशी अधिकारियों को कार्रवाई करने के लिए पुख्ता आरोप सौंपे जा सकें.

उल्लंघन की संभावना वाले क्षेत्रों की भी पहचान कर ली गई है. ये हैं—कलकत्ता, पटसन और चाय; दिल्ली, सिले-सिलाए वस्त्र; बंबई, हीरे और सिले-सिलाए वस्त्र; मद्रास, चमड़ा; बनारस, गलीचे; आगरा, चमड़ा; बंगलूर, कॉफी; कालीकट, मछली और मसाले; गोआ, मछली; और जालंधर, खेलकूद और होजियरी का सामान.

ऐसे उल्लंघन के खिलाफ विदेशों में कोई कार्रवाई करने में एक बड़ी अड़चन यह भी रही है कि ज्यादातर देशों में विदेशी मुद्रा नियंत्रण संबंधी नियम नहीं हैं और भारत के जांच संबंधी प्रयासों में वे ज्यादा दिलचस्पी नहीं लेते. लेकिन जब एक बार निदेशालय उन्हें आश्वस्त कर देता है कि इन लोगों ने उनके वित्तीय कानूनों का उल्लंघन किया है तो वे कार्रवाई करने को राजी हो जाते हैं. मसलन कोई भारतीय कंपनी यदि बीजक में निर्यात मूल्य कम करके बताती है तो वह न सिर्फ फेरा का उल्लघंन करती है बल्कि आयात करने वाले देश को सीमा शुल्क, कीमत सहित कर और आयकर के मामले में भी धोखा देती है.

इसके अलावा, निदेशालय दूसरे देशों के सहयोग से 'हवाला' चलाने वाले गिरोहों पर शिकंजा कसने के लिए भी नीति बना रहा है. हालांकि इसके जरिए जितना व्यापार होता है, वह फेरा के उल्लंघन का छोटा हिस्सा ही होता है लेकिन निदेशालय इनकी ओर से आंख इसलिए नहीं मूंद सकता कि भारतीय बैंकों को मिलने वाले सर्विस चार्जेज इसकी झोली में चले जाते हैं. पिछले चार महीनों में निदेशालय इस तरह के दो दर्जन मामले युनाइटेड अरब अमीरात, सिंगापुर, ब्रिटेन और हांगकांग के अधिकारियों के पास ले जा चुका है.

फेरा अधिकारियों को ज्यादा अंदेशा इस बात का है कि सत्ता के गलियारों में उदार नीति की हवा के चलते विदेशी मुद्रा नियंत्रण के ये प्रयास कितने कारगर हो पाते हैं. उद्योगपतियों को अलबत्ता इस बात का डर है कि नई नीति कहीं वी.पी. सिंह के छापामार अभियान की पुनरावृत्ति तो नहीं.

—पंकज पचौरी

अन्य सभी डाई एक तरफ,
गोदरेज हेयर डाई दूसरी तरफ...
फिर भी गोदरेज हेयर डाई
इस्तेमाल करनेवाले ज़्यादा ही होंगे!

दो रंगों में उपलब्ध
कुदरती काला और गहरा भूरा.

३ खास कारणों से:

१ गोदरेज खुद-ब-खुद फैलने वाला हेयर डाई बालों को कुदरती रंग व छवि देता है. बाल इतने स्वाभाविक काले हो जाते हैं कि कोई जान ही न सके, जब तक आप खुद न बताएं.

२ गोदरेज खुद-ब-खुद फैलनेवाला हेयर डाई इस्तेमाल में आसान और सुविधाजनक है जबकि अन्य हेयर डाई में यह विशेषता नहीं. जी हाँ, आसान इतना, बालों में शैम्पू करने जितना.

३ आप गोदरेज खुद-ब-खुद फैलनेवाले हेयर डाई की क्वॉलिटी पर भरोसा कर सकते हैं पूर्ण-सुरक्षा-यही तो गोदरेज का वादा है.

Godrej® खुद-ब-खुद फैलने वाला पर्मानेंट हेयर डाई

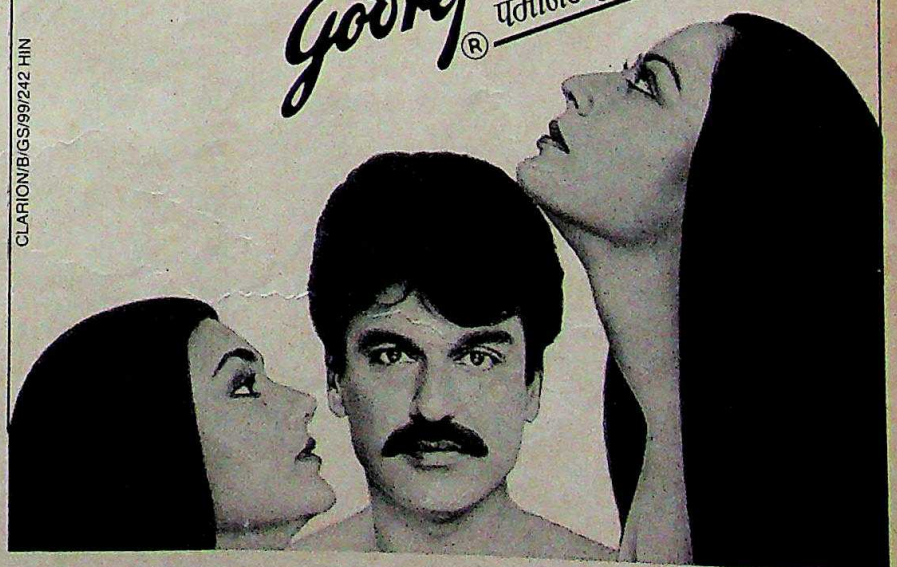

CLARION/B/GS/99/242 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेयर बाजार

सियासी असर

कई शेयर उछले

शेयर बाजार और राजनीति का कुछ अजीब रिश्ता है. अब तक यही माना जाता है कि अगर दिल्ली में बादल भी घिरें तो मुंबई के दलाल स्ट्रीट में छतरियां निकल आती हैं. और पिछले पखवाड़े जब नई दिल्ली में तूफानी राजनैतिक ड्रामा हुआ तब शेयर बाजार के पंडितों के लिए इस सिद्धांत की व्यावहारिक परीक्षा का मौका आ गया.

12 जुलाई को ओमप्रकाश चौटाला के फिर से हरियाणा का मुख्यमंत्री बनने के पहले तक मुंबई शेयर बाजार (मुंशेबा) का 30 शेयरों वाला सूचकांक 920.24 पर पहुंच चुका था और लग नही रहा था कि यह नीचे भी आएगा. लेकिन अगले तीन दिनों में जब अनेक वरिष्ठ मंत्रियों और बाद में खुद प्रधानमंत्री ने ही इस्तीफा दे दिया तो सूचकांक धड़ाम से गिरा.

मुंबई शेयर बाजार का यह संवेदनशील सूचकांक 886.33 पर आ गया और ऐसा

चार्ट: बी.के. शर्मा

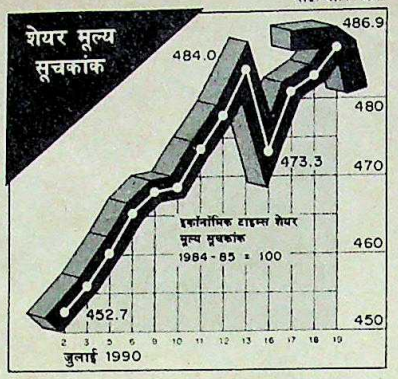

लगा कि बाजार में डेरा जमा लेने का इरादा दिखा रहे तेजड़ियों के तंबू भी उखड़ गए. लेकिन जिस तेजी से राजनैतिक संकट टला उसने बाजार को फिर उसके पुराने ढर्रे पर ला दिया. मंगलवार 17 जुलाई को जब सूचकांक अपने सर्वोच्च बिंदु 926.97 पर पहुंचा तो लोगों ने राहत की सांस ली. 19 जुलाई को यह 945 पर पहुंच गया था.

नई दिल्ली में बैठे शासक दल के नेता जिस तरह चौटाला प्रकरण से पैदा हुए तूफान को थामने की कोशिश कर रहे थे उसी तरह मुंशेबा के अधिकारी एसीसी के शेयरों में हुई अप्रत्याशित वृद्धि को थामने में लगे थे. 18 जुलाई को अधिकारियों ने इसके बंद भाव की सीमा 810 रु. तय की जो दो दिन पहले ही 730 रु. था. इसकी खरीद सीमा भी 500 शेयर तय हुई.

साथ ही कलकत्ता शेयर बाजार ने 18 जुलाई के हिसाब-किताब के बाद अग्रिम खरीद वाली पूरी राशि ही रोक ली. लेकिन अधिकारियों के इन कदमों से शेयरों की बढ़ती कीमतों पर लगाम नहीं लग पाई. जैसे मुंबई में एसीसी के शेयर अपने 810 रु. वाले तय मूल्य के ऊपर 40 रु. के प्रीमियम पर बिकते रहे. सेंचुरी इंडस्ट्रीज 200 से भी अधिक अंक चढ़कर 3825 और सेंचुरी एंका 325 अंक चढ़कर 4275 रु. तक पहुंचे. इसके अलावा दूसरे सक्रिय शेयरों में ग्रेसिम, हिंदुस्तान एल्यूमीनियम, हेक्स्ट, बांबे डाइंग और हिंदुस्तान मोटर्स शामिल थे.

पिछले पखवाड़े की एक खास बात यह थी कि 'ए' श्रेणी के वैसे शेयर भी लोग उठाने लगे जिन पर किसी तरह की पाबंदी नहीं थी. अब सवाल यह है कि मुंबई शेयर बाजार के अधिकारी इस खरीद के तूफान को कैसे थामते हैं. और इस बात के भी संकेत हैं कि लोग 'बी' समूह के शेयर भी उठाने लगे हैं जो अब तक बाजार के उफान से अप्रभावित ही रहा करते थे.

जमा स्टॉक

	1990 ऊंचा	नीचा	बंद 20.7.90	इस पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
अशोक लेलैंड	99.00	69.50	83.50	2.00 +
एसो.सीमेंट	835.00	825.00	810.00	143.00 +
एशियन पेंट्स	255.00	207.50	250.00	20.00 +
एटलस कोप्को	49.00	32.50	46.00	3.00 +
बजाज ऑटो	530.00	355.00	517.50	5.00 +
बड़ौदा रेयॉन	1135.00	617.50	1085.00	75.00 +
बाटा इंडिया	83.00	62.50	75.00	1.50 +
बल्लारपुर	185.50	120.00	179.00	9.00 +
बिरला जूट	107.50	50.50	105.00	12.00 +
ब्लो प्लास्ट	71.25	34.50	70.00	0.50 +
बांबे डाइंग	266.00	173.00	250.00	6.00 –
ब्रिटा.इंडिया	130.00	97.00	127.00	8.00 +
बुक बांड	123.00	91.00	116.00	—
कैडबरी इंडिया	181.25	133.75	177.50	30.50 +
सेंचुरी टेक्सटाइल्स	4150.00	2420.00	3950.00	370.00 +
कोलगेट पामो.	257.50	176.25	250.00	15.00 +
सायनामिड	123.75	87.50	110.00	11.50 +
डीसीएम	66.50	45.50	64.00	10.00 +
डनलप	75.50	51.75	67.00	8.00 +
ईआई होटल्स	65.25	55.00	60.00	2.00 +
एस्कार्ट्स	110.00	77.75	108.00	6.25 +
फिनो. केबल्स	290.00	200.00	260.00	30.00 +
गरवारे नाइलोन	69.00	48.00	56.00	6.00 +
जी.ई. शिपिंग	54.75	40.25	42.00	—
गुज.स्टेट फर्टि.	228.75	155.00	225.00	7.50 +
ग्रासिम इंडिया	152.00	106.00	146.00	8.00 +
हिंदु.एल्यू.	323.75	205.00	312.50	27.50 +
हिंदु.सीबा	1660.00	960.00	1525.00	115.00 +
हेक्स्ट	2670.00	1295.00	2600.00	400.00 +
हिंदुस्तान लीवर	137.00	101.00	134.00	10.00 +
हिंदुस्तान मोटर्स	47.00	19.80	40.00	1.00 +
आईसीआई	49.50	34.50	45.50	8.50 +
इंडियन आर्गेनिक	65.00	46.50	61.00	5.00 +
इंडियन रेयॉन	131.00	84.00	124.00	5.00 +
इंडाल	275.00	161.25	257.50	10.00 +
इंगरसॉल-रैंड	255.00	190.00	255.00	22.50 +
आईटीसी	96.00	48.75	94.50	2.50 +
जे.के.सिंथेटिक्स	76.00	50.00	72.00	4.00 +
काइनेटिक इंजी.	195.00	130.00	170.00	15.00 –
किर्लो. क्युमिस	90.00	65.00	79.00	4.00 +
केएसबी पंप्स	227.50	175.00	200.00	20.00 +
लार्सन-टुब्रो	122.00	57.00	94.00	10.50 +
लिप्टन	112.00	73.00	85.00	6.50 +
लोहिया-मशीन्स	33.50	15.00	32.50	2.50 +
मथुरा कोट्स	128.00	100.50	127.00	5.50 +
महिंद्रा-महिंद्रा	103.00	67.50	95.00	12.50 +
मिल्क फूड	280.00	115.00	185.00	47.50 +
मोटर इंडस्ट्रीज	1200.00	780.00	970.00	20.00 +
मुकुंद लिमि.	157.00	127.00	141.00	6.00 +
नेशनल आर्गे.	1660.00	1070.00	1360.00	130.00 +
नेस्ले इंडिया	140.00	101.75	135.00	15.00 +
निरलॉन	22.00	13.00	20.00	2.50 +
ओरके सिल्क मि.	29.00	14.50	25.50	3.00 +
पेइको इलेक्ट्रॉनिक्स	47.00	24.00	46.00	2.50 +
फाइजर	113.75	72.50	90.00	–
प्रीमियर ऑटो	74.50	53.50	67.00	3.00 +
रेमंड	104.00	70.00	90.00	–
रेकिट-कोलमैन	244.00	178.00	236.00	12.00 +
रिलायंस इंडस्ट्रीज	107.00	50.00	97.50	4.50 –
सीमेंस इंडिया	123.50	96.00	116.00	4.00 +
शॉ वैलेस	122.00	65.00	118.00	27.00 +
श्रीराम फाइबर्स	71.00	43.00	61.00	11.00 +
एसकेएफ बेय.	1700.00	1240.00	1630.00	40.00 +
स्पिक	67.00	50.75	66.00	4.50 +
टाटा स्टील	139.00	103.25	134.25	1.25 +
टेल्को	177.00	110.00	175.00	9.00 +
वाम ऑर्गेनिक	167.50	115.00	137.50	16.25 +
वीडियोकॉन	285.00	105.00	232.50	5.00 +
वोल्टास	107.00	63.00	104.00	14.00 +
विमको	32.50	15.75	24.50	3.50 +

भारतीय रुपए का मूल्य

देश	मुद्रा	इकाई	टी.टी. खरीद	टी.टी. बिक्री
आस्ट्रेलिया	डालर	1	13.8578	13.7118
आस्ट्रिया	शिलिंग	100	150.3138	149.6478
बहरीन	दीनार	1	46.8247	45.7868
बांग्लादेश	टका	100	55.7437	54.3478
कनाडा	डालर	1	15.2173	15.0658
डेनमार्क	क्रोना	1	2.8028	2.7718
मिस्र	पौंड	1	6.6012	6.4858
फ्रांस	फैंक	1	3.2310	3.1978
हांगकांग	डालर	1	2.2605	2.2358
इंडोनेशिया	रुपिया	100	0.9543	0.9468
ईरान	रियाल	100	25.5368	25.2568
इटली	लीरा	100	1.4560	1.4358
जापान	येन	100	12.0773	11.7978
केन्या	शिलिंग	1	0.7634	0.7458
कुवैत	दीनार	1	59.9292	57.5178
मलेशिया	डालर	1	6.4909	6.4258
मारीशस	रुपया	1	1.1477	1.1258
नेपाल	रुपया	1	0.6129	0.6058
हालैंड	गिल्डर	1	9.4557	9.3558
पाकिस्तान	रुपया	1	0.8283	0.8158
सिंगापुर	डालर	1	9.6665	9.5658
स्पेन	पेसो	1	0.1745	0.1718
श्रीलंका	रुपया	1	0.4401	0.4318
स्वीडन	क्रोना	1	2.9452	2.9158
स्विट्जरलैंड	स्विस फ्रैंक	1	12.4243	12.2958
तंजानिया	शिलिंग	1	0.0949	0.0938
थाईलैंड	बहत्त	100	68.5909	67.8558
ब्रिटेन	पौंड	1	31.8269	31.5058
अमेरिका	डालर	1	17.5593	17.3758
सं.अ.अमीरात	दिरहम	1	4.7832	4.7318
सोवियत संघ	रूबल	1	29.2986	28.9958
पश्चिम जर्मनी	जर्मन मार्क	1	10.8225	10.7078

स्रोत—बैंक ऑफ टोक्यो, नई दिल्ली, 19.7.90

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उचित गर्भनिरोधक के बिना विवाहित जीवन आखिर कब तक सुखी रह सकता है ?

कोहिनूर

बेहतरीन गुलाबी कॉन्डोम

आप दोनों का प्यार ही आपको एक-दूसरे के इतने निकट ले आया है । ऐसा प्यार जो विवाह के बन्धन में बन्धने व मिलकर ज़िम्मेदारियाँ निभाने से बढ़ता और सुदृढ़ होता है । किसी भी विवाहित जीवन को सुखी बनाए रखने के लिए आवश्यकता होती है ऐसे दो व्यक्तियों की जो उसे आपस के विश्वास, भरोसे व घनिष्टता से भर दें । साथ ही एक दूसरे को सुखी रखने के लिए इतने समर्पित हों कि एक ऐसे गर्भनिरोधक का चुनाव करें जो दोनों के अनुकूल हो ।

ऐसा गर्भनिरोधक जो सम्पूर्ण सुख व सुरक्षा प्रदान करने के लिए शरीर पर अनुचित प्रभाव नहीं डालता, कष्टकर डाक्टरी जाँच को आवश्यक नहीं बनाता व दिन गिनने और तापमान मापने की चिन्ता व तनाव को दूर रखता है । ऐसा सुरक्षित, आसान व विश्वसनीय गर्भनिरोधक है कॉन्डोम ।

विश्वसनीय कोहिनूर

हज़ारों युवा दम्पति अपने बच्चों के जन्म में उचित अन्तर रख अपने परिवार का नियोजन विश्वसनीय कोहिनूर के सहारे करते हैं । कोहिनूर आपके मिलन के सुख में बाधा डाले बिना बहुत सहज ढंग से आपको सम्पूर्ण आनन्द प्रदान करता है । यह उच्च कोटि के लेटेक्स रबड़ से बनाया जाता है । सम्पूर्ण सुरक्षा प्रदान करने के लिए इसकी इलेक्ट्रॉनिक जाँच की जाती है । कोहिनूर के निर्माता आपकी एकांतता व सुरक्षा की आवश्यकता को भलीभांति समझते हैं । कोहिनूर — इसे नाम लेकर ही खरीदिए और विश्वसनीय कोहिनूर के सहारे निश्चिन्त हो जाइए ।

कोहिनूर तीन कॉन्डोम व दस कॉन्डोम के पैकेटों में उपलब्ध है ।

परिवार नियोजन — विश्वसनीय कोहिनूर के संग !

HAA COMMUNICATIONS 1163

HLL उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत-पाक

बातें हैं, बातों का क्या

सचिव स्तर की वार्ता से रिश्ते सुधरने की आशा नहीं

भारत और पाकिस्तान के बीच वार्ताओं में दक्षेस शिखर सम्मेलन के बाद हुई राजीव-बेनज़ीर वार्ता के सुखद दौर को छोड़कर, अक्सर होता यह आया है कि दोनों पक्ष अपनी-अपनी पुरानी स्थिति दोहराकर उठ जाया करते हैं. सो, पिछले पखवाड़े जब दोनों देशों के विदेश सचिवों की इस्लामाबाद में बैठक हुई और वे पुरानी दलीलों और दावों को दोहराकर बिना किसी बात पर रजामंद हुए उठ गए तो किसी को कोई आश्चर्य नहीं हुआ. इसके बावजूद दो दिन की बैठक की समाप्ति पर दोनों पक्षों ने बातचीत में 'कुछ प्रगति' के दावे किए हैं.

बहरहाल, इस दिशा में कोई 'प्रगति' है तो वह यह कि दोनों पक्षों ने फिर से बातचीत शुरू की है. दोनों के बीच सरकारी संपर्क न्यूयॉर्क में भारतीय विदेशमंत्री इंद्रकुमार गुजराल और पाकिस्तानी विदेशमंत्री साहिबजादा याकूब खां की अप्रैल में हुई दुर्भाग्यपूर्ण बैठक के बाद टूट गया था.

भारत ने बातचीत का एक और दौर शुरू करने की पहल किसी किस्म की उम्मीद न होने के बावजूद की. वजह—साउथ ब्लॉक में यह एहसास गहरा रहा था कि पाकिस्तान राजनयिक संपर्क न होने का फायदा उठा रहा है. पिछले दो महीनों से पाकिस्तान ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तितरफा कूटनैतिक अभियान छेड़ रखा था. उसका कहना था कि भारत कश्मीर की मुख्य समस्या को हल करने से इनकार कर रहा है, कि वह युद्ध की तैयारी कर रहा है और वह तर्कपूर्ण बातचीत करने के लिए भी रजामंद नहीं है.

विदेश मंत्रालय के अधिकारियों का मानना है कि सचिव स्तर की बातचीत पाकिस्तानी प्रचार को कुंद और इस्लामी जगत में भी उसका खेल बिगाड़ देगी. इस तरह यह बातचीत ऐसी रणनीतिक कसरत थी जिसका मकसद हो सके तो छोटा-मोटा फायदा उठा लेना भी था.

शुरुआत में ही विदेश सचिव मुचकुंद दुबे ने पाकिस्तानियों को भारत के इस विचार से अवगत करा दिया कि जब दुनिया भर में दीवारें टूट रही हैं, ऐसे समय युद्ध करना मुनासिब नहीं है. भारत ने तनाव हटाने के लिए परस्पर विश्वास जगाने वाले उपायों के अपने सात सूत्रों को मानने की जरूरत पर जोर दिया. उसका कहना था कि पाकिस्तानी नेता पंजाब और कश्मीर में आतंकवाद की निंदा करें, पाकिस्तान सरकार कश्मीर कोष को बंद कर दे और देश में रह रहे सिख और कश्मीरी 'भगोड़ों' को निकाल बाहर करे.

लेकिन पाकिस्तानी प्रतिनिधिमंडल का मानना था कि ऐसे उपायों के बारे में सोचना अभी जल्दबाजी है. इसके बजाए उसने बार-बार सीमा पर सैन्य स्थिति का ही मुद्दा उठाया. उसकी मांग थी कि भारत अपनी सेना को हटाए. भारत ने जवाब में कहा कि सीमा पर सेना तैनात करने की जरूरत पाकिस्तान के बनाए हालात से पैदा हुई है.

भारतीय प्रतिनिधिमंडल का मकसद यह जांचना भी था कि पाकिस्तान के पेचीदा राजनैतिक हालात में सत्ता पर किसका कितना प्रभाव है. इसके मद्देनजर साउथ ब्लॉक का अब यह मानना है कि सदर गुलाम इस्हाक खां वजीरे-आजम बेनज़ीर भुट्टो के मुकाबले ज्यादा ताकतवर हैं. बताते हैं कि दुबे का खां के साथ बातचीत भी कोई सुखद अनुभव नहीं था. खां ने उनसे कहा कि "कश्मीर मसला मुल्क के बंटवारे के अधूरे पड़े काम का ही हिस्सा है और अब यह रियासत पाकिस्तान को सौंपकर यह काम पूरी तरह निबटा लिया जाना चाहिए." दुबे ने जवाब दिया कि "विभाजन के अधूरे पड़े काम को निबटाने की महत्वाकांक्षा का अंजाम खतरनाक हो सकता है."

बेनज़ीर भुट्टो के साथ मुलाकात में भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने इस बात की ओर संकेत किया कि दक्षेस शिखर सम्मेलन के सुखद दिनों के बाद द्विपक्षीय संबंध बिगड़े हैं. उसने पाकिस्तानी प्रधानमंत्री से अनुरोध किया कि वे सोचें, गलती कहां हुई है. दुबे का कहना था कि इसकी जिम्मेदारी पाकिस्तान की है जिसने प्रभुसत्तासंपन्न देशों के बीच संबंध बनाने वाले कायदों का उल्लंघन किया है. पर

बातचीत में व्यस्त दुबे और पाक विदेश सचिव तनवीर अहमद (बाएं)

बेनज़ीर ने इसका खंडन किया.

साउथ ब्लॉक को एकमात्र तब्दीली यह नजर आई कि आतंकवाद को शह देने के तमाम आरोपों का एकदम खंडन करने के बजाए पाकिस्तान को अब कई बार सुरक्षात्मक स्थिति अख्तियार करनी पड़ती है. पाकिस्तानियों का कहना था कि वे कश्मीर में घुसपैठ रोकना चाहते हैं लेकिन सरहद पार करके आने वाले कश्मीरियों पर गोलियां बरसाना मुमकिन नहीं. उनके मुताबिक, सब जानते हैं कि आतंकवादी सीमा प्रांत के हथियार बाजारों से गोला-बारूद खरीद रहे हैं. जवाब में भारत ने पाकिस्तानियों को 'राज्य की जिम्मेदारी के सिद्धांत' की याद दिलाई.

ऐसा ही शायद दिल्ली में बातचीत के अगले दौर में दोहराया जाएगा. लेकिन दोनों देशों के राजनयिक अपनी-अपनी पुरानी अड़े भी रहें, उनके बीच वार्ताओं के दौर सरहद को ठंडा रखने में सहायक हो सकते हैं.

—शेखर गुप्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुनहगार सिर्फ वह नहीं :

उच्च स्तर पर अनैतिक व्यापार के लिए विवश हुई विवाहिता युवती की कथा

रांची का कुजूर कांड :

पत्नी-हत्या के संदिग्ध अभियुक्त एक आई०ए०एस० अधिकारी

सिर्फ अपने सुख के लिए :

कानपुर के एक चार्टर्ड एकाउन्टेण्ट अपने दोहरे दांपत्य जीवन के कारण क्रूरतम दोहरी हत्या के अभियुक्त बने

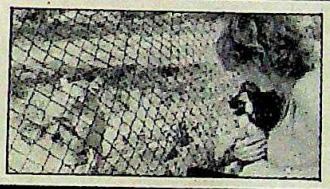

'जार्ज एडमसन का अनोखा सिंह-आश्रम

सौदा और मुकदमा

आगरा के एक अनाथाश्रम में रह रही तीन छात्राओं को बेचनेवाले तीनों माता-पिता सुप्रीम कोर्ट से भी मुकदमा हार गये

अन्य आकर्षण

अग्निपरीक्षा

•

अब इंतजार में है रीता

•

सुशीला की त्रासदी

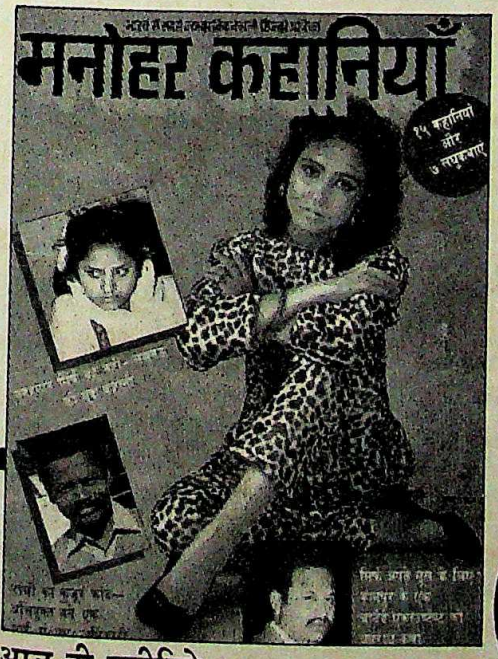

वास्तविक जीवन की सुरुचिपूर्ण कथा पत्रिका

मनोहर कहानियाँ

१५ कहानियां और १० से अधिक लघु कथाएं

आज ही खरीदिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदल गए रंग-ढंग

नई सरकार को आए हुए साल भी न हुआ और मुल्क के रंग-ढंग ही बदल गए. पंडित नेहरू का दौर खत्म हो गया. राम मनोहर लोहिया आजकल फैशन में हैं. इतालवी जूते भी पहनना अच्छा नहीं समझा जाता. कोल्हापुरी चप्पल और खद्दर का झोला लटकाने का जमाना वापस आ गया. जी हां, आजकल किसान राज है.

कल हमारे पास एक सम्मेलन में शिरकत करने के लिए दावतनामा आया. यह अखिल भारतीय अंग्रेजी विरोध समिति का अधिवेशन था जिसका उद्घाटन क्रांतिकारी मुलायम सिंह यादव कर रहे थे. वैसे पिछले दिनों जितने दावतनामे आए, सब हिंदी में लिखे थे.

इस सरकार को खुश करने के लिए हिंदी में बातचीत करना आवश्यक है. दिल्ली की दावतों में भी जबान बदल गई. हम क्योंकि हिंदी में लिखते हैं, हमारी इज्जत में इजाफा हो गया. आजकल तो अच्छे-अच्छे लोग हिंदी की ट्यूशन ले रहे हैं. एक हमारे व्यवसायी दोस्त गुर्रा रहे थे कि उनको कोई हिंदी शिक्षक ही नहीं मिल रहा. सुना है, उनके 'रेट' भी बहुत बढ़ गए. यह नहीं 'अखिल भारतीय हिंदी अध्यापक यूनियन' भी बन गई है.

आजकल कामयाबी के लिए सिर्फ हिंदी, समाजवाद और किसानों पर बोलना ही काफी नहीं है, गांव में घर होना भी लाजिमी है. अगर आपको इस सरकार से कोई काम हो तो फौरन गांव में एक पता ढूंढिए. जिस तेजी से तब्दीली आ रही है, उसे देखकर तो लगता है गांव में गांववाले कम और व्यापारी ज्यादा मिलेंगे. हमें लगता है बहुत जल्द थम्स अप, विमल, डीसीएम वगैरह के हेड ऑफिस गांव में खुल जाएंगे.

हाल ही में, उत्तर प्रदेश के एक अंग्रेजी स्कूल सेंट पैट्रिक्स के प्रिंसिपल दिल्ली आए हुए थे. हमारी उनसे मुलाकात किसी दोस्त के घर हुई. बेचारे, बहुत परेशान थे. अंग्रेजी स्कूलों को बंद करने की मुहिम का सामना करना उनको मुश्किल नजर आ रहा था. लाचार होकर वे अब अपने स्कूल बंद करने की जगह हिंदी मीडियम करने पर राजी हो गए. स्कूल का नाम बदलकर वे संत कृष्णा रखने जा रहे हैं. इसी तरह उन्होंने हमें बताया कि सेंट ऐन अब मां द्रौपदी हो रहा है.

पिछली सरकार के दौर में तंदूरी मुर्गे खाकर, यह कहना जरूरी था कि 'हिंदुस्तान को इक्कीसवीं सदी के लिए तैयार रहना चाहिए.'

आजकल सरसों का साग और मकई की रोटी खाकर यह कहना जरूरी हो गया है कि 'ग्रामीण भारत के साथ बड़ी नाइंसाफी हुई है.' हम तो शहरों का यही रंग देख रहे हैं. दावतों में दो-चार शुद्ध देहाती भी घूमते नजर आने चाहिए. मेजबान बड़े फख्र से उनका परिचय करवाता है कि वह किस गांव से हैं. बकरी का दूध भी एक जगह हमें नफासत के तौर पर पीने को मिला. अमूल का जमाना भी खत्म हो गया. घर में तैयार किया शुद्ध सफेद मक्खन खाने का दौर है.

देवीलाल ने एक नई बात भी शुरू कर दी. वे अपने गांव से दो-चार गायें दिल्लीवाले घर में ले आए. अब लोग कुत्ते पालने की जगह गायें पाल रहे हैं. यह एक 'स्टेटस सिंबल' बन गया है.

आजकल पेट्रोल पर भी तो राशन लग दिया गया है. सरकार को खुश करने के लिए बहुत से लोगों ने साइकिल चलानी शुरू कर दी. हम उस दिन साउथ ब्लॉक की तरफ टहल रहे थे तो देखा कि कई नामवर व्यापारी साइकिल से उस पथ पर आ-जा रहे थे. सब इस चक्कर में कि वित्तमंत्री मधु दंडवते या प्रधानमंत्री उनको साइकिल चलाते देख लें और खुश होकर उनका प्रोजेक्ट मंजूर कर दें.

व्यापारी तो जिधर रुख देखते हैं उधर ही फिर जाते हैं. कुछ अरसा पहले हमारे एक व्यापारी दोस्त ने बताया कि वह बेटे की शादी टिकैत के खानदान में करना चाहते हैं. किसान की बेटी को बहू बनाने का ख्वाब देखते हैं. देवीलाल के खानदान में 'मैरेज मार्केट' जो कमजोर है, नहीं तो इस खानदान के आगे बिछ जाते.

सरकारी दफ्तरों में तो चपरासियों तक के तेवर बदल गए. हमारे दोस्त जो फर्र-फर्र अंग्रेजी बोलती है, शिकायत कर रही थी "कमबख्त, अंग्रेजी में कुछ कह दो तो क्या चपरासी तक मुंह फेर लेता है. वाले के आगे चपरासी सिर्फ पानी गिलास रखता है और धोतीवाले के दौड़-दौड़ चाय लाता है."

सुना है कि बड़ी कंपनियां इस हिंदी में कलैंडर और डायरियां छपवाए एचएमटी वाले भी हिंदी के अक्षरों घड़ियां निकाल रहे हैं. हमें लगता है दूरदर्शन पर भी अंग्रेजी के इश्तहार बंद जाएंगे. हमारे दोस्त रमेश चौहान अपनी थम्स अप का विज्ञापन अं 'तूफानी ठंडा' कर ही दिया.

दूसरों का हमें पता नहीं लेकिन मैं यह है कि हमने विजिटिंग कार्ड हिं छपवा लिए हैं.

—साविया

रेखाचित्र : अयतो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and

"Few things withstand the pressures of powerful writing. Here's one that does."

Candid statement about Camlin Hi Par from Ms. Vimla Patil, Editor, Femina magazine.

ing her Fineta push button pencil she further said, "These 0.5 mm leads retain their uniform sharpness, no matter how much you
". We told her that these hi-tech leads are being made in collaboration with Pilot, Japan, by the Art Material Division of Camlin.
ow," she smiled.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

mlin Hi Par 0.5 mm leads in technical collaboration with Pilot, Japan.

'इंडिया टुडे' वर्ग पहेली-14

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नोकझोंक | बेफिक्र हैं | बूढ़ा हो चुका | चमक फीकी | न्याय नहीं | फिल्मों से दूर | जत्था भेजेंगे | नया नाम | तीसरे हैं | शब्दों से जादू | दबी जबान | लक्ष्मी आई | साख गिरा ली | धर लिए गए | दूसरे 'लाल' | चुनौती जारी | यादव के गुरु | पुरानी मान्यता | ठोस तर्क भी | ट्रस्ट की अध्यक्ष | करीबी दोस्त | कृपावृष्टि

नाम

पता

पिन

हल इस पते पर भेजें:

वर्ग पहेली-14, इंडिया टुडे, एफ-14/15, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि 20 अगस्त 1990

उत्तर के लिए देखें: 1-15 सितंबर 1990 का अंक

- यह पहेली शब्दशः इंडिया टुडे के 31 जुलाई 1990 के अंक पर आधारित है.
- वर्गों के भीतर दिए गए शब्द ही संकेत हैं.
- तीर के चिन्ह बताते हैं कि शब्द कहां से शुरू होकर किधर जाते हैं.
- तीर के चिन्ह के साथ दिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गों की संख्या दर्शाते हैं.
- वृत्त का अर्थ है कि उसमें आने वाले शब्दांश का प्रयोग पुनः होगा.
- मटमैले रंग वाले वर्ग रिक्त ही रहेंगे.
- शब्द वैसे ही लिखें जैसे पत्रिका में छपे हैं.
- सर्वप्रथम पहुंचने वाले **तीन सर्वशुद्ध हलों को पुरस्कारस्वरूप 500-500 रु.** दिए जाएंगे.
- लिविंग मीडिया इंडिया लि. के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते.

'इंडिया टुडे' वर्ग पहेली-12 का

पुरस्कार विजेता

जगत राम चंदेल द्वारा जीवन बीमा निगम मंडल कार्यालय, पो.बा. द माल, शिमला-171

रमेश कुमार गोयल म. नं. 6315/4, नवी करीम, पहाड़गंज नई दिल्ली-110055

तेजबली सिंह, एल.एल. आई.एन.एस. पांडिचेरी द्वारा एफ.एम.ओ. बंबई-400001

इन तीनों को 500-500 रु. के चेक भेजे जा रहे हैं. विजेताओं को बधाई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गजरौला कांड

घिनौना कृत्य

सांप्रदायिक रंग देने की कोशिश

दिल्ली-लखनऊ मार्ग पर स्थित गजरौला कस्बा पश्चिमी उत्तर प्रदेश के उन दर्जनों कस्बों में से है जहां आए दिन घटने वाली चोरी-डकैती की घटनाएं जिंदगी का अंतरंग हिस्सा बन चुकी हैं. लेकिन पिछले पखवाड़े वहां घटी ऐसी ही एक घटना ने न सिर्फ दिल्ली और लखनऊ की सरकारों को झकझोर डाला बल्कि उसकी गूंज धुर दक्षिण की विधानसभाओं और विदेश में भी सुनाई दी.

12-13 जुलाई की रात दो बजे के आसपास तीन सेंधमार स्थानीय सेंट मेरी कान्वेंट स्कूल में रहने वाली मलयाली कैथलिक ननों के घर में रसोई की खिड़की तोड़कर घुसे. निचली मंजिल में काफी देर तक तलाश करने के बाद कुछ हाथ न लगने पर वे पहली मंजिल पर सोने वाले हॉल में जा पहुंचे जहां उस रात मदर सुपीरियर समेत नौ ननें सो रही थीं. बाद में थाने में दर्ज कराई गई रपट के अनुसार छुरे, लोहे की छड़ों और लाठियों से लैस इन चोरों ने सोई हुई ननों को जगाकर धमकाया और अलमारी की चाबियां लेकर एक लाख रुपए से ज्यादा की नकदी बटोर ली जो फीस और किताबों की बिक्री से इकट्ठे हुए थे. उसके बाद उनमें से दो ने ननों को एक-एक करके उस कमरे में बुलाया जहां उनके संदूक रखे थे. रपट के मुताबिक संदूकों की तलाशी के दौरान ही दो युवा ननों के साथ बलात्कार भी किया गया. स्कूल की प्रिंसिपल, सिस्टर फ्लोरिना कहती हैं, "अगर हम जैसे सेवा के प्रति समर्पित लोगों के साथ भी ऐसा हो सकता है तो दूसरों का क्या होगा."

सुबह मामले की रपट स्थानीय थाने में दर्ज कराई गई और बलात्कार की शिकार दोनों ननों की मुरादाबाद अस्पताल में मेडिकल जांच कराई गई. आम अपराधों की तरह यह मामला भी दब जाता लेकिन स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों के अभिभावकों, अध्यापकों और स्थानीय नागरिकों की जागरूकता ने मामले को गरमाए रखा.

प्रमोद पुष्करणा

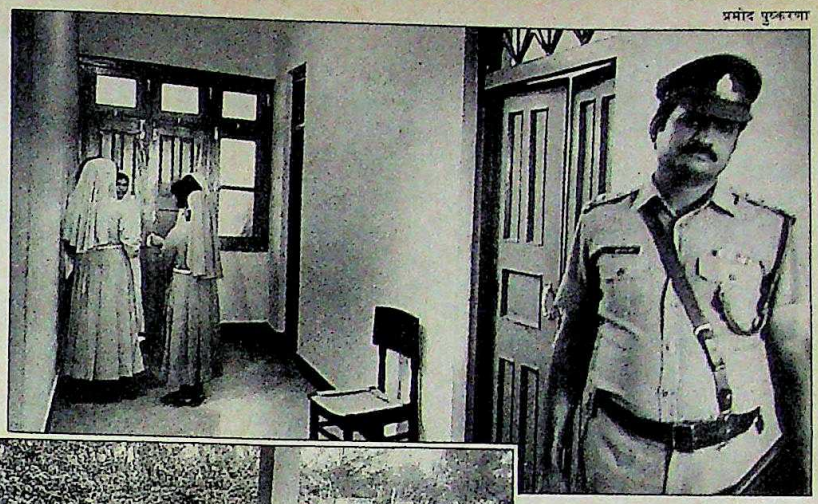

(ऊपर) स्कूल में ननें; घटना का विरोध करते अभिभावक: गंभीर मामला

एक हफ्ते बाद अखबारों की सुर्खियों में आते ही इस हादसे ने राष्ट्रीय स्तर पर हड़कंप मचा दिया. 23 जुलाई के दिन केरल विधानसभा के उत्तेजित सदस्यों को मुख्यमंत्री ई.के. नयनार ने बताया कि वे उ.प्र. सरकार से इस मामले को गंभीरता से लेने और अपराधियों को गिरफ्तार करने का आग्रह कर चुके हैं. माकपा सांसद विजयराघवन ने कहा, "चिंता की बात तो यह है कि दस दिन बाद भी लोग इससे अनभिज्ञ रहे." नई दिल्ली में सांसद एम.ए. बेबी तथा प्रमिला दंडवते, वी.आर. कृष्ण अय्यर और खुशवंत सिंह आदि कई बुद्धिजीवियों ने भी एक संयुक्त वक्तव्य जारी करके राज्य प्रशासन को उसकी 'उदासीनता और निकम्मेपन' के लिए जमकर लताड़ा. स्कूल की ननों के एक प्रतिनिधिमंडल को केंद्रीय गृहमंत्री ने आश्वासन दिया कि उन्हें समुचित सुरक्षा उपलब्ध कराई जाएगी और अपराधियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी. लेकिन ठीक उसी दिन स्थानीय पुलिस अधीक्षक ने यह जानकारी देकर मामले को नया मोड़ दे दिया कि मेडिकल जांच में बलात्कार की बात को गलत पाया गया है लेकिन ननों के साथ हुए दुर्व्यवहार की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता. इस दौरान स्कूल बंद रहा और अभिभावकों के प्रदर्शनों-सभाओं का क्रम जारी रहा.

दिल्ली के अखबारों और राजनैतिक क्षेत्रों में इस मामले के गरमाने का एक नतीजा यह हुआ कि कई प्रमुख ईसाई संस्थाओं को इसे भारतीय ईसाई समाज के खिलाफ चलने वाले 'सुनियोजित षड्यंत्र' के रूप में पेश करने का मौका मिल गया. ऑल इंडिया क्रिश्चियन काउंसिल और ऑल इंडिया कैथलिक यूनियन जैसी संस्थाओं से लेकर देश की सबसे प्रभावशाली ईसाई संस्था कैथलिक बिशप्स काउंसिल ऑफ इंडिया ने अलग-अलग वक्तव्य जारी करके इस कांड को ईसाई समाज और संस्थाओं के खिलाफ चलने वाले हमलों की कड़ी माना. खासकर लोकसभा में एंग्लो-इंडियन समाज के नामजद सदस्य पॉल मंतोष ने गजरौला में अपने संवाददाता सम्मेलन में इस कांड को मुलायम सिंह यादव की अंग्रेजी और कान्वेंट विरोधी पूर्वाग्रह की अभिव्यक्ति के रूप में पेश कर डाला. इस बीच पुलिस ने कुछ ठोस सबूत हाथ लगने और जल्दी ही अपराधियों को पकड़ लेने की आशा व्यक्त की है. पुलिस की नई मुस्तैदी भले ही अपना रंग दिखा जाए पर इस घिनौने कांड के माध्यम से उभरने वाले नए सांप्रदायिक मुद्दे ने राम जन्मभूमि, शिया-सुन्नी विवाद और जाट-जाटव संघर्ष जैसे संवेदनशील मामलों में फंसी मुलायम सरकार के सामने एक और कड़ी चुनौती पेश कर दी है.

—विजय क्रान्ति, गजरौला में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कश्मीर

अब नया शगल

दूरदर्शन पर दोरंगी तसवीर दिखाएंगे

कश्मीर मंडी हाउस का नया शगल है. लेकिन पंजाब के मामले में जहां इसने जख्मों पर मरहम लगाने की नीति अपनाई थी, कश्मीर पर दो-सूत्रीय नीति पेश की है. सूचना और प्रसारण मंत्रालय के एक वरिष्ठ नौकरशाह कहते हैं, "हम कठोर और नरम दोनों रुख बारी-बारी से दिखाएंगे." सूचना और प्रसारणमंत्री पी. उपेंद्र भी कहते हैं, "हम कश्मीरियों को बताना चाहते हैं कि पाकिस्तान कोई जन्नत नहीं है." शायद इसीलिए कराची में दंगों में मारे गए लोगों की फिल्म बार-बार दिखाई जाती है.

'परमवीर चक्र' जिसके पहले प्रकरण में स्वतंत्रता के तुरंत बाद कश्मीर पर कबाइलियों के हमले के दौरान मेजर सोमनाथ और कुमाऊं रेजीमेंट का शौर्य दर्शाया गया है. अंतत: वे कबाइलियों से लडते-लड़ते शहीद हो जाते हैं. यह भी विडंबना ही है कि अतीत का यह दु:स्वप्न आज भी कड़वी हकीकत है. सीमा पार से 'दहशत' इसी का सबूत है लेकिन छोटे परदे ने ज्यादा जोर पाकिस्तान के खिलाफ प्रचार युद्ध में ही लगाया हुआ है. सिंध में मरे मुहाजिरों को टीवी पर बार-बार दिखाया जाता है.

कश्मीर पर पाकिस्तानी प्रचार का माकूल जवाब देने के लिए बनाए गए विशेष कक्ष के प्रयास आखिर रंग लाए हैं. सरकारी प्रचार मशीनरी भले ही ठिठक-ठिठककर चल रही हो, नलिनी सिंह की 'आज का कश्मीर' और सईद मिर्जा की पीटीआई-टीवी के लिए कश्मीर पर बनाई गई फिल्म—जिसे दूरदर्शन ने नामंजूर कर दिया था—मानवीय दर्द की

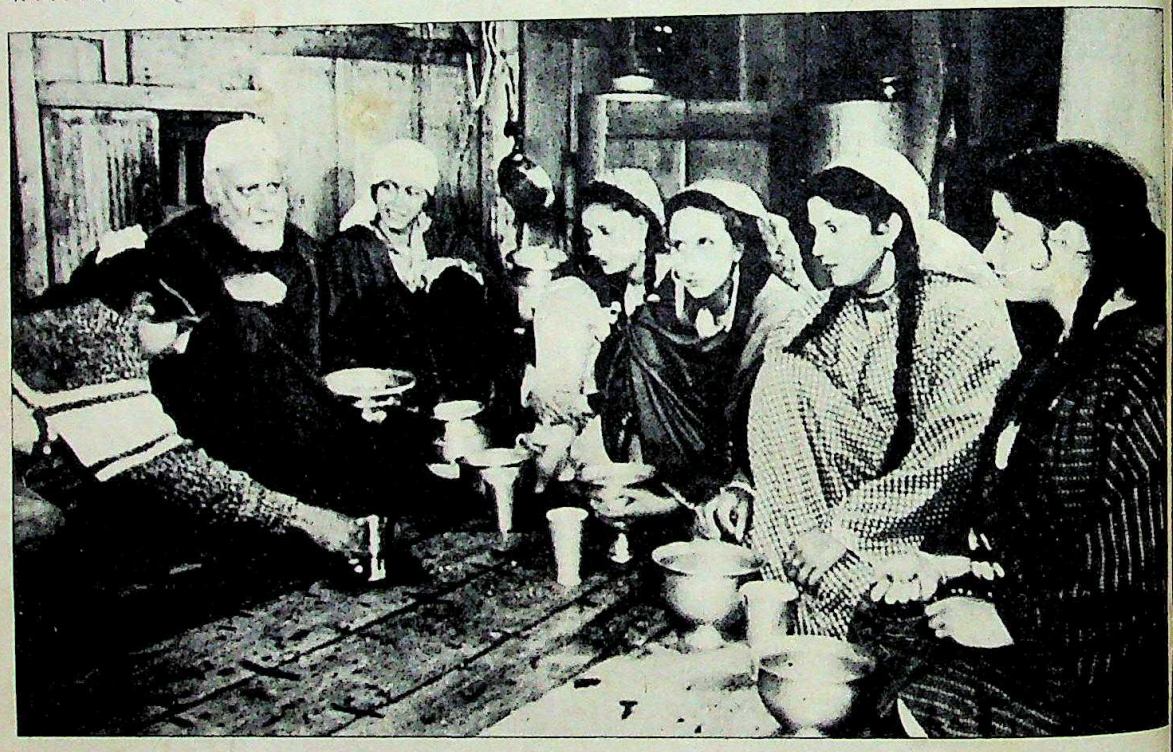

पहले नरम रुख: पिछले पखवाड़े शुरू हुआ धारावाहिक 'गुल, गुलशन, गुलफाम' हाउस बोटों के एक बूढ़े मालिक और उसके तीन बेटों की कहानी है. वेद राही द्वारा निर्देशित इस धारावाहिक में दिखाया गया है कि किस तरह पर्यटकों के न आने से शिकारेवालों की हालत खस्ता हो जाती है. यही बात कश्मीर के लोगों पर भी लागू हो सकती है. लेकिन धारावाहिक में पर्यटकों के न आने की वजह 'पंजाब में आई बाढ़' है. इस बदलते माहौल के प्रति तीनों बेटों की अलग-अलग प्रतिक्रिया होती है.

इसी नरम रुख का अगला चरण है—चेतन आनंद द्वारा निर्देशित धारावाहिक

धारावाहिक 'गुल, गुलशन, गुलफाम' का एक दृश्य: एक चेहरा

लोग आज भी उन्हीं दरों से इधर आ रहे हैं. नरम नीति के तहत निजी निर्माताओं और विज्ञापन एजेंसियों के बनाए वृत्तचित्र और 'मेरा भारत महान' कार्यक्रम भी दिखाए जाएंगे. सूचना और प्रसारण मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी कहते हैं, "हम कश्मीरियों को उनके सहिष्णु और सूफीयाना स्वभाव की याद दिलाना चाहते हैं."

हालांकि दूरदर्शन कश्मीर के बिगड़े हालात के चित्र पेश करने में भी नहीं हिचक रहा. कश्मीर पर बना वृत्तचित्र दास्तान है. मिर्जा की फिल्म में सड़क पर एक नौजवान का जब इंटरव्यू लिया जाता है तो वह जवाब देता है, "मैं हिंदुस्तान के खिलाफ नहीं हूं लेकिन हमें प्यार से रखिए."

कश्मीर के मौजूदा हालात को भले ही दूरदर्शन के परदे से हटा दिया गया हो लोगों की मानसिकता पर यह इस कदर हावी है कि दूरदर्शन का एक समाचार वाचक किसी से कराची के दंगों के बारे में बात कर रहा था लेकिन उसके मुंह से निकला, "कश्मीर में 4,000 लोगों को यातना दी जा रही है और सैकड़ों लोग मारे गए." ऐसी भूलें यों ही नहीं होतीं

—मधु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीटीआई

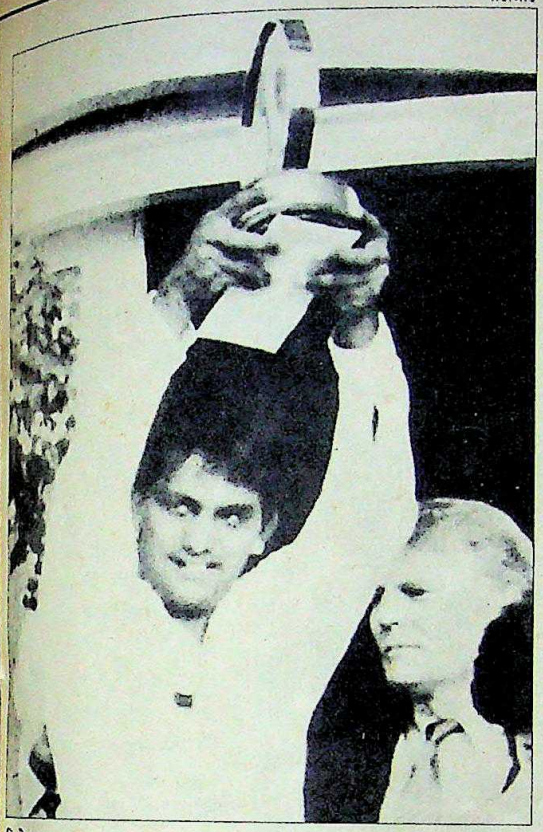

पीटीआई

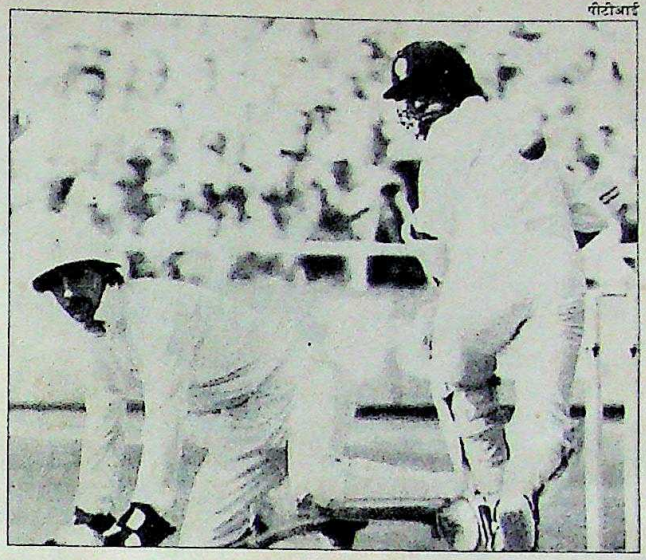

टेक्सको ट्रॉफी लिये अजहरुद्दीन; और (ऊपर) मांजरेकरः जीत का भरोसा

क्रिकेट

फिर पूरे फॉर्म में

इंग्लैंड में एकदिवसीय मैचों में भारत की शानदार विजय

भारत और इंग्लैंड के बीच पिछले पखवाड़े जब एकदिवसीय मैचों की टेक्सको श्रृंखला शुरू हुई थी तब अधिकतर ब्रिटिश टीकाकारों की टिप्पणी थी "भारतीय खिलाड़ी थोड़ी-बहुत हल्लेबाजी तो कर ही लेंगे, क्यों ?" लेकिन जब यह श्रृंखला समाप्त हुई तो ऐसे सवाल बेमानी साबित हो गए. भारत ने जिस तरह इंग्लैंड की धुनाई की उससे यही साबित हुआ कि भारतीय बल्लेबाजी फिर फॉर्म में आने लगी है.

इस भारतीय हमले का शानदार नेतृत्व किया कप्तान अजहरुद्दीन ने. कप्तानी के जिम्मेदारियों ने उनकी प्रतिभा को जैसे और निखार दिया है. इसका सबूत लीड्स और फिर नॉटिंघम में खेली गई उनकी पारियां हैं. लीड्स में उन्होंने 50 गेंदों पर 35 और नॉटिंघम में 44 गेंदों पर 63 शानदार रन बनाए. और, स्ट्रोकों की उनकी झड़ी में कहीं कोई खामी नजर नहीं आई. उनके इस प्रदर्शन के बाद यह भरोसा होने लगा है कि पूरी टीम उन पर भरोसा कर सकती है.

वैसे, टीम चयन समिति के अध्यक्ष राज सिंह डूंगरपुर के मुताबिक टीम का आत्मविश्वास मजबूत होने लगा है. वे कहते हैं, "पहले अक्सर यह होता था कि वे ठीक मौके पर लड़खड़ा जाते थे." लेकिन अब वे महसूस करने लगे हैं कि इस आत्मघाती रवैये से मैच नहीं जीते जा सकते. अब उन्होंने सामूहिक प्रतिभा का विकास किया है और नए हीरो उभरने लगे हैं.

ऐसे ही प्रतिभावान खिलाड़ियों में हैं कर्नाटक के 20 वर्षीय लेग स्पिनर अनिल कुंबले. वह कोई बहुत बड़े स्पिनर तो नहीं हैं लेकिन अपनी कद की सहायता से, वह गेंद को ज्यादा उछाल दे पाते हैं. टीम के मैनेजर बिशन सिंह बेदी कहते हैं, "वह सटीक, और हवा में गेंद को तेजी से फेंक सकता है. उसकी सबसे बड़ी ताकत है उसका शांत स्वभाव." कुंबले एक पढ़ाकू विद्यार्थी से दिखते हैं. इसलिए वे पोस्टरों में छपने का सौभाग्य शायद न पा सकें.

लेकिन 17 वर्षीय सचिन तेंडुलकर में यह संभावना है. ब्रिटिश अखबारों ने उन्हें 'माराडोना' तक की संज्ञा दे दी. सचिन पूरे फॉर्म में हैं और डर्बीशायर के खिलाफ खेली गई अपनी पारी में उन्होंने यह भी दिखा दिया कि वे अपनी प्रतिभा को सहेजने और संवारने भी लगे हैं. फिर भी नॉटिंघम में उन्होंने जिस तरह के शानदार स्ट्रोक लगाए उनसे यही सिद्ध हुआ कि वे किसी कमांडो की तरह धूम-धड़ाका भी कर सकते हैं.

'दूसरा गावसकर' संजय मांजरेकर को कहा जा सकता है. उनका खेल अपेक्षाकृत ज्यादा बेदाग नजर आया. और सबसे मार्के की बात तो यह है कि दिलीप वेंगसरकर जैसे पके हुए खिलाड़ी भी फॉर्म में दिख रहे हैं.

लेकिन चिंतित करती है तो गेंदबाजी. इंग्लैंड में खेले गए शुरुआती मैचों और नॉटिंघम वाले मैच में गेंदबाजी धारदार नहीं रही. खराब गेंदों के कारण गेंदों को दिशा देने में माहिर मनोज प्रभाकर जैसे गेंदबाज को भी परेशानी हो रही है. भारतीय टीम का दारोमदार बहुत कुछ प्रभाकर पर भी है. जहां तक कपिलदेव की बात है, उनमें अब वह जोश और उमंग नहीं दिखती जो उनकी खासियत रही है.

दूसरी ओर इंग्लैंड इस धारणा के साथ श्रृंखला में उतरा है कि भारत के पास तो ऐसे गेंदबाज हैं ही नहीं जो किसी अंतरराष्ट्रीय टीम को दो बार आउट कर सकें. इंग्लैंड यह भी मानता है कि उसके गेंदबाज डेवन मैल्कम और एंगस फ्रेजर मैचों को अपने पक्ष में कर सकते हैं.

बहरहाल, टेस्ट मैचों के शुरू होने तक भारतीय टीम एकदिवसीय मैचों में अपनी शानदार सफलताओं पर गर्व तो कर ही सकती है.

—हर्ष भोगले, इंग्लैंड में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरद सक्सेना

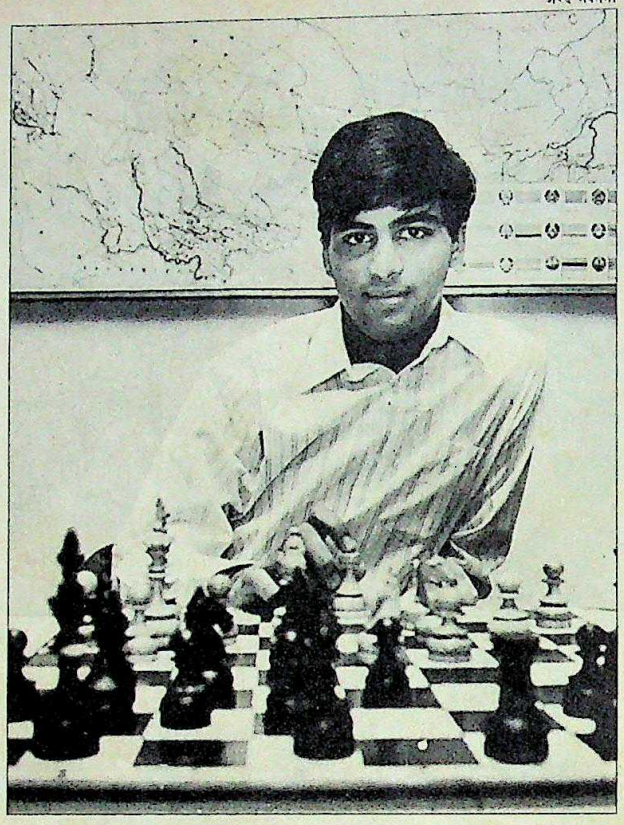

विश्वनाथन आनंद

एक और हीरा

मनीला में धमाकेदार जीत

भारतीय शतरंज के किशोर महाराजा के मुकुट में एक और हीरा जुड़ गया. शतरंज में भारत की बड़ी उम्मीद 20 वर्षीय विश्वनाथन आनंद पिछले पखवाड़े प्रतिष्ठित कैंडिडेट्स राउंड के लिए क्वालिफाई करने वाले भारत के पहले और एशिया के दूसरे खिलाड़ी बन गए. विश्व खिताब के खेल में पात्रता के लिए खेले जाने वाले इस मैच में प्रवेश के लिए उन्होंने अंतरक्षेत्रीय मुकाबलों में 55 महारथियों को हराया. प्रतिभाशाली आनंद कहते हैं, "मुकाबला बहुत कड़ा था. दुनिया के 30 चोटी के खिलाड़ी मैदान में थे. लेकिन मैं जरा भी विचलित नहीं हुआ."

इस चैंपियनशिप में आनंद की पहले से बनाई रणनीति काम नहीं आई. लेकिन आखिर में उन्हें विजय दिलाने वाला दांव मिल ही गया. बहुत तेज खेल खेलने वाले आनंद पहले दो चक्र जीत गए लेकिन अगले दो चक्र हार गए. फिर अगले तीन चक्रों की बाजी बराबर रही और वे आइसलैंड के मार्गाई पीटरसन के खिलाफ सातवें चक्र में पहुंच गए. यह चक्र बहुत महत्वपूर्ण साबित हुआ और उन्होंने पीटरसन को हरा दिया.

आनंद ने अगले दो चक्रों की बाजी बिना किसी खास मुश्किल के बराबर कर ली. दसवें चक्र में उनके प्रतिद्वंद्वी थे फ्रांस के जोएल लातिया जिन्हें हराने के लिए आनंद को कड़ी मेहनत करनी पड़ी. ग्यारहवें चक्र में उनका मुकाबला इंग्लैंड के एंथोनी माइल्स से था. इस चरण में कुल 14 खिलाड़ी मुकाबले में थे. आनंद इनमें से चार से आगे था. एक बार तो माइल्स पूरे हौसले से खेले. लेकिन फिर अचानक उन्होंने अपनी रणनीति बदल दी और वे बराबरी के लिए खेलने लगे. इससे माइल्स की स्थिति कमजोर हो गई और बकौल आनंद के "उन्हें मेरी हर मार सहनी पड़ी."

अगला मैच आनंद के लिए काफी अहम था क्योंकि मुकाबला सोवियत ग्रैंडमास्टर मिखाइल गुरेविच से था. आनंद 38 चालें जीत गए. लेकिन अनिश्चितता का वातावरण अभी खत्म नहीं हुआ था. आनंद को क्वालिफाई करने के लिए हर हालत में यह मैच जीतना था. और उन्होंने इसे जीत भी लिया. अब क्वालिफाई करना मात्र औपचारिकता रह गई. उन्हें अब सिर्फ सोवियत ग्रैंडमास्टर वेसिली इवानचुक के खिलाफ बाजी बराबर करने की जरूरत थी. उन्होंने 12 चालों में यह सफलता भी हासिल कर ली. जिस रात उन्होंने गुरेविच को हराया उसी रात उन्होंने मनीला से मद्रास में अपने माता-पिता को फोन किया. आनंद खुशी से पागल हो गए थे. वे कहते हैं, "उस दिन मैं बहुत उत्तेजित था. मेरे माता-पिता ने मुझसे क्या कहा, मुझे ठीक-ठीक याद नहीं."

आनंद की रणनीति बहुत आसान थी. पहले सात या आठ चक्रों में हर संभव उम्दा खेल खेलना और होड़ में बने रहने की गंभीर चुनौती पेश करना. उन्होंने अपना उम्दा खेल खेला भी. कई मुकाबलों में तो उन्होंने महज 15 मिनट में अपनी सारी चालें चल दीं जबकि उनके प्रतिद्वंद्वी निर्धारित दो घंटे तक संघर्ष करते रहे.

अंतरक्षेत्रीय स्पर्धा में आनंद पर भारी दबाव आन पड़ा था. पूरा देश उम्मीद लगाए बैठा था कि यह युवा ग्रैंडमास्टर ब्राजील में खेले जाने वाले कैंडिडेट्स राउंड के लिए क्वालिफाई कर जाएगा. लेकिन उसने अपने खेल की समृद्ध शैली पर इस दबाव को हावी नहीं होने दिया. आनंद कहते हैं, "मुझे अपने उत्साह को थोड़ा दबाना पड़ा. फिर भी मैंने बहुत धीमा खेल नहीं खेला." आनंद को अब क्वालिफाई किए हुए 11 दूसरे खिलाड़ियों, सेमीफाइनल में हारे दो खिलाड़ियों और कैंडिडेट्स के फाइनल में हारे खिलाड़ी के साथ नॉक-आउट आधार पर खेलना होगा. फिर इनमें से सात विजेताओं को कास्पारोव-कार्पोव खिताब में हारे खिलाड़ियों से भिड़ना होगा. फिर कैंडिडेट्स फाइनल का विजेता विश्व विजेता को चुनौती देगा.

शतरंज के खेल में, जिस पर परंपरागत रूप से यूरोपीय खिलाड़ियों का प्रभुत्व है, आनंद ने बहुत कम उम्र में ही अपनी साख बना ली. 13 वर्ष की उम्र में उन्होंने पहली बार मशहूर खिलाड़ी मैनुएल ओरोन को हराया. 15 वर्ष की उम्र में अंतरराष्ट्रीय मास्टर खिताब जीतने वाले वे सबसे कम उम्र के एशियाई खिलाड़ी बने. और 17 की उम्र में विश्व जूनियर शतरंज खिताब जीतने और उसके साथ ग्रैंडमास्टर का दर्जा हासिल करने वाले पहले एशियाई खिलाड़ी बने.

फिर तो आनंद ने पीछे मुड़कर नहीं देखा. वे फिलहाल दुनिया के चौदहवें नंबर के खिलाड़ी हैं. कैंडिडेट्स चैंपियनशिप में प्रवेश के पहले वे 18वें नंबर के खिलाड़ी थे. वे कहते हैं, "मेरा लक्ष्य 10 चोटी के खिलाड़ियों में शामिल होना और दूसरे नंबर पर आना है. इसके बाद ही मैं पहले नंबर पर आने के बारे में सोचूंगा." जाहिर है, यह ग्रैंडमास्टर सुनियोजित ढंग से अपनी चालें चल रहा है. —कविता शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माईक्रो ओवन की अपेक्षा 53% अधिक जल्दी पकाता है

यूनाइटेड®

प्रेशर कुकर व प्रेशर पॅन

उत्तमता में सब से आगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी शतरंज, जनता का रंज

लीडर पता नहीं ऊबे हैं कि नहीं. उनकी रोज की उठापटक, इस्तीफे के नाटक, मारामारी के मानक से हम जरूर ऊब गए हैं. अखबार खोलिए तो सुर्खियों में छाए या तो हत्याओं के हीरो आतंकवादी हैं या फिर नेता. उदासी के इस माहौल में विश्वनाथन आनंद की कामयाबी से थोड़ा चैन मिला. हमने अपने नेता मित्र को सूचित किया—

"आप लोग देश का कबाड़ा करने में जुटे हैं. अकेला विश्वनाथन विश्व में हमारा नाम रोशन कर रहा है."

"विश्वनाथ जी भी तो हमारे ही दल के हैं", नेता जी चहके.

"यह विश्वनाथन शतरंज खिलाड़ी है."

"हम भी तो सियासत की शतरंज ही खेलते हैं. कोई हमारे ताऊशोविच से मुकाबला करके तो देखे."

सही भी है. मुल्क की बिसात पर ग्रैंडमास्टर नेता को कुर्सी की तलाश है. आम आदमी तो महज प्यादा है. कभी उसे टेढ़ी चाल वाला पुलिसिया ऊंट पीटता है, कभी ढाई घर फांदकर मुहल्ले का दादा. ऐसी शतरंज का शौक नशे की लत है. हमने अपने दोस्त को आगाह किया— "यकीनन आपकी टोली में शानदार ग्रैंडमास्टर हैं. पर चालबाजियों को छोड़ कुछ कामकाज कीजिए."

"इतने अरसे बाद पूरा देश बतौर दर्शक मिला है. ताऊशोविच और शेखरोलिन उनके सामने अपनी दांव-पेच की प्रतिभा तो साबित कर लें. कामकाज का क्या! फिर हो लेगा."

हम उनके निश्चय से डर गए और शिकायत की, "हम तो आपकी राजनीति से तंग आ गए हैं."

"क्यों क्या हो गया", उन्होंने निहायत मासूमियत से सवाल किया.

"आज किसी की ताजपोशी होती है, कल उसका इस्तीफा."

"हम जनता को बता रहे हैं कि एक दिन के सुलतान की कथा कोरी कहानी नहीं असलियत है."

"इस्तीफों की पॉलिटिक्स ऐसे ही चालू रही तो लोग आप पर हंसेंगे."

"लोग महंगाई से त्रस्त हैं. निर्माता बोर फिल्में बनाने में व्यस्त हैं. ऐसे में जनता को हंसाने की सफलता ही तो असली जनसेवा है."

अवाम की खिदमत के इस अनोखे अंदाज से हम प्रभावित हुए. नेता ज्ञानी हैं. उन्होंने अपनी नई और नायाब थीसिस समझाई, "कभी सियासत में छुपकर दंगल होते हैं. हम खुलेआम करते हैं."

"इससे फायदा", हमने जानना चाहा.

"हमारे पहले नेताओं ने सिर्फ 'इमेज' बनाई. किसी ने गरीबी हटाने के इरादे

रेखांकन : जयंतो

जाहिर कर, किसी ने इक्कीसवीं सदी के वादे कर. हम तो भगवान के बनाए अपने असली स्वरूप में आकर जनता पर अपना सर्वस्व लुटा रहे हैं."

"वह कैसे?" हम उनकी संत-वाणी समझ नहीं पाए.

"जैसे साधु की पूंजी भगवान है, अपनी दौलत सियासत. अब झुमरीतलैया से झांसी तक लोग दाल-रोटी पाएं न पाएं, हमारे राजनैतिक विवाद के स्वाद के चटखारे लेते हैं."

उनके बयान से अपनी बोलती बंद हो गई. न साधु-शैतान की जात होती है, न नेता का आन-ईमान. दोनों जनता के ठेकेदार हैं. एक रूहानी कारोबार का, दूसरा फानी संसार का. दोनों अपने बारे में भ्रम पैदा करने की कमाई खाते हैं. मरियल काया से शुरू कर, सेवा के सतत संत्रास से फूलकर कुप्पा हो जाते हैं. अब निजी शीशे में उन्हें सब अप्पू पहलवान दिखें तो उनका क्या कसूर. हमने दोस्त के नाते उन्हें चेतावनी दी, "आप 1977 का इतिहास तो नहीं दोहराने पर तुले हुए हैं."

"हम नया इतिहास बनाते हैं."

"आप नया क्या रच रहे हैं."

"अब तक लोकतंत्र एक परिवार के कारागार में कैद था. हम जनता को जनतंत्र के जलवे दिखा रहे हैं."

"पर नैतिक मूल्यों और उसूलों का क्या हुआ."

"हमारा प्रयास है कि लोग गांधी की सादगी और आजादी के विचारों को अपनाएं. नमक-रोटी खाएं, लंगोटी लगाएं, फाके करें. और हर नियम-कायदे तथा अनुशासन से आजाद हों."

"उत्पादन घटा तो हालात और बिगड़ेंगे."

"सड़ी-गली व्यवस्था के सत्यानाश से ही तो नव सृजन संभव है."

"आप सामाजिक क्रांति लाएंगे."

"लाएंगे क्या, ला चुके हैं. हवा में बिचरने वाले गांधी तक सेकंड में सफर करते हैं. थोड़े दिनों में बकरी का दूध भी पिएंगे."

"जनता को उनकी सादगी की अदा भा रही है. कहीं वह फिर सत्ता में....."

"तो क्या हुआ. हम तो सनातन विरोधी हैं. वरना अपने ही दल में दूसरे का विरोध क्यों करते."

"हाल की क्राइसिस के बाद अब अमन चैन रहेगा", हमने उम्मीद जताई.

"यह तो महज मध्यांतर है. जोकर का तमाशा अभी खत्म नहीं हुआ है", उन्होंने हमें आश्वस्त किया.

हम समझ नहीं पा रहे. हमारे दोस्त को सियासत की शतरंज पसंद है या जोकर का तमाशा. हम इतना जानते हैं कभी यह सब चाव से देखते थे. खुश होते थे. अब शतरंजी चाल पर गुस्सा और जोकर के तमाशों पर रोना आता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

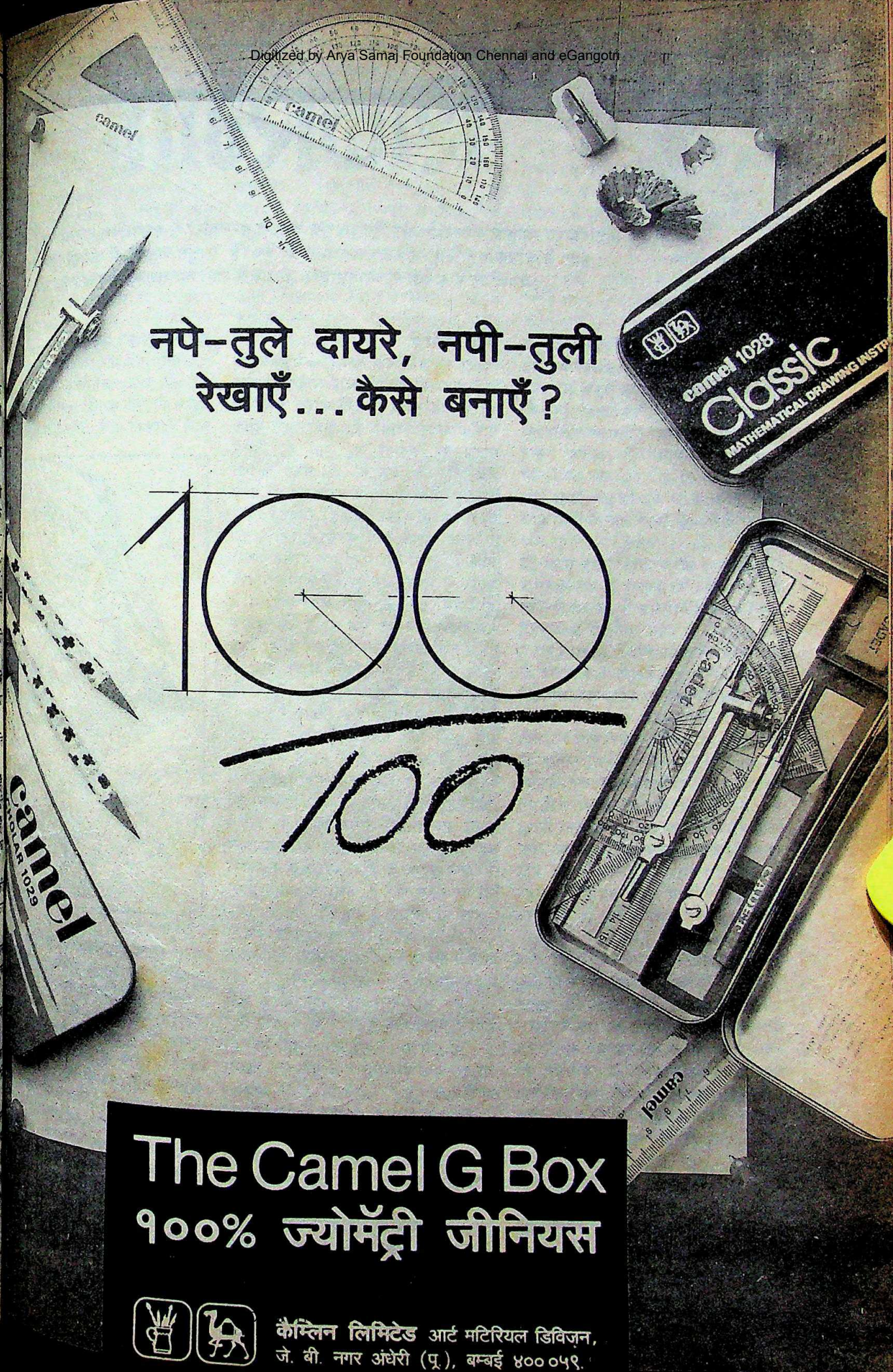

नपे-तुले दायरे, नपी-तुली रेखाएँ... कैसे बनाएँ?

The Camel G Box
१००% ज्योमॅट्री जीनियस

कैम्लिन लिमिटेड आर्ट मटिरियल डिविज़न,
जे. बी. नगर अंधेरी (पू.), बम्बई ४०० ०५९.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमला चमोला

शिकारगाह

हरियाणा साहित्य अकादमी और चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट के पुरस्कारों से सम्मानित कमला चमोला की 300 से अधिक कहानियां अब तक प्रकाशित हो चुकी हैं. प्रस्तुत कहानी में बदलते सामाजिक पर्यावरण में संबंधों के व्यावसायिक होते चले जाने का सशक्त रेखांकन है.

मेरा मित्र और शुभचिंतक होने के नाते उसने मुझे पहले ही आगाह कर दिया था कि ये सब जो आजकल मेरे साथ घट रहा है वह एक सुनियोजित साजिश है. मुझे किसी संदिग्ध व अस्वाभाविक-सी स्थिति में फंसाने की अवश्य कोई योजनाबद्ध चाल है. पर उस समय मैंने सोनी की बात पर मुंह बिचका दिया, मुझे लगा ये सोनी नहीं उसके मन की ईर्ष्या बोल रही है.

इस किस्से की शुरुआत दफ्तर से ही हुई थी. धर साहब को अफसर के रूप में हमारे दफ्तर का कार्यभार संभाले डेढ़ वर्ष होने को था. साहबों का अपने मातहतों से अमूमन एक औपचारिक-सा दफ्तरी रिश्ता होता है जो फाइलों से शुरू होकर फाइलों पर ही खत्म होता है. हमारे धर साहब भी इसी किस्म के आदमी थे. रौब-दाब से भरे व्यक्तित्व के स्वामी. और क्यों न होते —आखिर वे इस दफ्तर रूपी जहाज के कप्तान थे. शायद भगवान ने उन्हें अफसर बनाने के लिए ही पैदा किया था. तभी तो अफसरी के वांछित नुक्ते उनकी रक्त मज्जा में घुले हुए थे. जिस अफसरी भाव को आम अफसरान प्रयत्न से मुखौटे की तरह ओढ़े रहते हैं वह भाव हमारे साहब के चेहरे पर सहज स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहता.

हमारे धर साहब के चेहरे पर एक अभिजात्य किस्म का भाव था. गर्दन एक गर्वीले खम से तनी-तनी रहती थी. दफ्तर की चमचमाती राहदरी में जब वे अपने स्नेक लैदर के बूट ठकठकाकर चलते तब मुझे अपने टायरसोल के सैंडिलों की घिसटती-रगड़ती आवाज संकुचित कर जाती और अनायास मेरे अंदर एक वाहियात किस्म का खयाल कई बार जन्म ले लेता—अगर खुदा न खास्ता किसी चमत्कार से मैं अफसर बन जाऊं तो? मेरा अलग-सा ढीला-ढाला व्यक्तित्व तो अफसरी में तनिक भी मेल नहीं खाता. और तो और शक्ल से ही मैं जन्मजात बारह सौ रुपल्ली पाने वाला, टाइपराइटर खटखटाने वाला क्लर्क लगता हूं.

धर साहब से मेरा साबका कम ही पड़ता है. मिसरा जी ही मेरे और साहब के बीच पुल से टंगे रहते हैं. मेरी फाइलें उन्हीं के मार्फत अंदर जाती हैं. कभी भूले-भटके साहब का बुलावा आ जाए तो किसी अनहोनी की आशंका से मेरा कलेजा धड़कने लगता है क्योंकि व्यक्तित्व की तरह मेरा काम भी ढीला-ढाला ही रहता है. मेरी टेबल से फाइलें कभी साफ नहीं हो पातीं आज के काम को कल पर टालना मेरी आदत में शुमार हो चुका है. ऐसे में अभी जुमा-जुमा दो माह पहले जब चपरासी ने मुझे संदेश दिया कि मुझे साहब बुला रहे हैं तो मैं हड़बड़ाहट से खड़ा होकर कॉलर ठीक करने लगा. न जाने किस पैंडिंग काम के लिए तलब करें साहब मुझे? मैं उनके केबिन में घुसा तो वे एक फाइल में झुके थे. मुझे कुर्सी पर बैठने को कहकर वे फिर फाइल में झुक गए. फिर साहब ने फाइल खिसकाकर दो एक रस्मी-सी बातें मुझसे पूछीं जो मेरे हिसाब से हर अफसर को अपने मातहत से समय-समय पर पूछते रहना चाहिए. इससे दफ्तर का अनुशासन भी बना रहता है और अधीनस्थ कर्मचारी भी डरे सहमे रहते हैं. अचानक साहब बोले, "आप भी यूपी के हैं क्या?"

"ज...जी हां...जिला सहारनपुर का..." साहब के मुंह से इस प्रकार के नितांत व्यक्तिगत प्रश्न की अपेक्षा न थी मुझे.

"हम भी जिला सहारनपुर के हैं. वहीं हमारा पैतृक गांव है."

"ज...जी हां..." मुझे समझ नहीं आ रहा था इस बात के प्रत्युत्तर में मुझे क्या कहना चाहिए.

"श्रीधर बाबू, आप डिपार्टमेंटल एग्जाम्स में क्यों नहीं बैठते?" साहब के इस अप्रत्याशित-से सवाल से मैं अकबका-सा गया. ऐसे प्रश्न की उनसे मुझे उम्मीद नहीं थी. समझ नहीं आया क्या जवाब दूं. हकलाकर इतना ही बोल पाया, "जी वैसे ही....हजारों लोग बैठते हैं...तरक्की सिर्फ दो-चार की होती है...मैं भला कहां क्वालिफाई कर पाऊंगा."

"क्यों नहीं कर पाओगे...आदमी कोशिश करे तो क्या नहीं कर सकता. मेरे प्रारंभ से ही ख्वाहिश रही है कि वाले तरक्की करें लेकिन बाहर वा

सभी रेखाचित्र : जयंतो

सारी पोस्ट झटककर ले जाते हैं." झुकाए आज्ञाकारी मातहत की वाक्य के बाद 'यस सर', 'यस विराम लगा रहा था. साहब की मुखर मैंने पहली बार देखा था. उनकी जबान 'हूं' 'हां' से ज्यादा जहमत नहीं उठाती थी. "श्रीधर बार आप फार्म भर लेना एग्जाम अंतिम निर्णायक वाक्य बोलकर फाइल में डूब गए. स्पष्टतः यह का संकेत था. अंतिम औपचारि सर" बोलकर मैं भी बाहर आ ग

साहब की अव्यावहारिक-सी अगले दिन तक मेरे दिलोदिमाग की तरह उड़ चुकी थी. कभी पूछें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

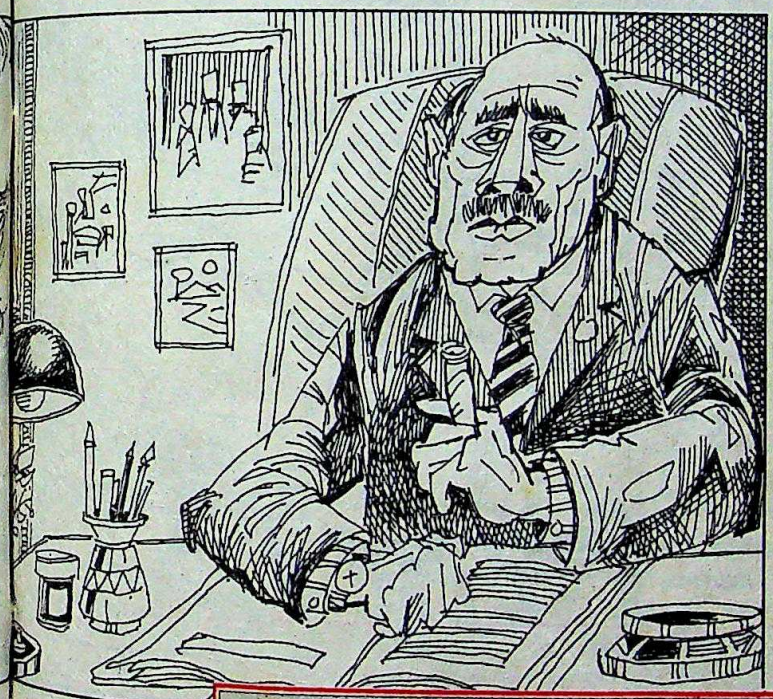

मेरा ढीला-ढाला व्यक्तित्व तो अफसरी से तनिक भी मेल नहीं खाता. शक्ल से ही मैं बारह सौ रुपल्ली पाने वाला क्लर्क लगता हूं

अजीब मुसीबत में फंस गया था मैं. पढ़ाई को अपने वजूद से गर्द की तरह झाड़कर मैंने तभी सलाम कर दिया था जब इस दफ्तर में क्लर्की से आ जुड़ा था. अब दोबारा किताब उठाने में बड़ी कोफ्त हो रही थी. मेरे लिए यह सलाह भी बॉस के दफ्तरी आदेश की तरह थी जिसका एक आज्ञाकारी मातहत के रूप में मुझे पालन करना था. फार्म भरने के लिए सोनी की मदद लेने गया तो सोनी बोला, "तुम तो कहते थे तुम्हारे बॉस खासे खुर्राट और घमंडी हैं. मातहतों को घास नहीं डालते फिर तुममें यह व्यक्तिगत रुचि कैसी? मुझे तो दाल में काला नजर आ रहा है. जरा संभलकर रहना, अफसर को रंग बदलते देर नहीं लगती." मुझे सोनी का स्वर ईर्ष्या में डूबा लगा.

फार्म भरकर अगले दिन मैंने भेज दिया और जैसे कर्त्तव्यमुक्त हुआ. मन ही मन मैं फैसला कर चुका था कि इम्तहान देकर अपनी छीछालेदर कराने से अच्छा है इम्तहान दूंगा ही नहीं. ऐन वक्त पर बीमारी का बहाना बना लूंगा. साहब को जब मैंने अपने फार्म भर देने की सूचना दी तो वे बोले, "कोर्स से संबंधित किताबें हमारे घर पड़ी हैं, जाकर मांग लो. स्टडी की टेबल में ही हैं. अब आज से ही पढ़ाई शुरू कर दो और जुट जाओ. दो माह ही काफी हैं तैयारियों के लिए."

साहब के घर दोबारा जाना पड़ेगा ये सोचकर ही मैं असंयत हो उठा. साहब के बारे में भी सोच-सोचकर मैं परेशान हो रहा था. उनके बारे में मेरी धारणा काफी हद तक परिवर्तित हो गई थी. स्वभाव से रूखे और घमंडी नजर आने वाले साहब अपने जिले वाले के प्रति किस कदर जागरूक व सदय हैं, ऐसे लोग आज के जमाने में कहां मिलते हैं.

साहब के घर जाते समय मन में एक अबूझी-सी घबराहट भरी हुई थी. कहीं उस दिन की तरह साहब की बेटी के रू-ब-रू बैठकर कड़वी फीकी, चाय गले से न उतारनी पड़े. साहब के घर पहुंचा तो उनकी चाय की ट्रे लाकर टेबल पर रख दी. साहब की बिटिया दो कप सरकाकर बोली—"कितनी चीनी...?"

"...जी मैं चाय पीकर आया हूं."

"मैंने पूछा कितनी चीनी लेते हैं आप चाय में..." उसने जैसे मेरी बात सुनी ही नहीं. मैं समझ नहीं पाया कितने चम्मच कहूं. मुझे पता भी कहां कि मेरी चाय में कितनी चीनी होती है. कहीं अंदाजे से जो बोला वो अनुपात हास्यास्पद हुआ तो? अंततः गोलमोल जवाब दे दिया—"चीनी कम ही लेता हूं मैं." मेरे जवाब पर उसने एक चम्मच चीनी मेरे प्याले में डाल दी और अपनी मोटी सांवली उंगलियों से चाय में चम्मच हिलाने लगी. मैंने चाय का पहला घूंट भरा तो चाय मुझे फीकी और कड़वी लगी. इसका मतलब है मैं कम-से-कम ढाई चम्मच चीनी तो लेता ही हूं एक कप में. हम दोनों के बीच एक अस्वाभाविक-सा सन्नाटा पसरा था. यूं साहब की बेटी के रू-ब-रू बैठकर चाय पीने में अजीब-सा संकोच हो रहा था मुझे. तभी मेम साहब अंदर से आ गईं और इस असहज से बोझिल माहौल से मुझे निजात-सी मिली. फार्म लेकर तेज कदम धरता मैं बाहर आ गया और चैन की सांस ली. उफ...इन बड़े लोगों के बीच उठना-बैठना भी किस कदर मुश्किल काम है—जैसे फांसी के तख्ते पर चढ़े हों.

दफ्तर आकर साहब के पास गया तो साहब बोले, "देखो श्रीधर...तुम दफ्तर के सबसे यंग और हौसलेमंद आदमी हो. आज ही फार्म भरकर भेज देना वरना लास्ट डेट निकल जाएगी. दो माह बाद परीक्षाएं हैं अब तैयारियों में जुट जाओ."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेटी से ही पहला साबका पड़ा. मैं संकुचित होकर बोला, "वो...साहब की स्टडी की टेबल में दो-तीन किताबें हैं. साहब ने मंगवाई हैं."

"अभी लाती हूं." अंदर से किताबें लाकर उसने मेरे हाथ में दे दीं. धन्यवाद देकर मैं बाहर आ गया और राहत भरी सांस ली.

साहब अब हर दूसरे-चौथे दिन मुझे केबिन में बुलवाकर पूछ लेते, "पढ़ाई कर रहे हो न?"

"जी हां," मैं तत्परता से मुंडी हिला देता जबकि हकीकत यह थी कि मैंने अभी किताबों के मुख्य पृष्ठ तक उलटकर नहीं देखे थे. बार-बार साहब के केबिन में मेरी आवाजाही से अब दफ्तर में दबे स्वर में खुसर-फुसर होने लगी थी. तरह-तरह की अटकलें लगाई जा रही थीं. पर इस उलझी गुत्थी का खुला सूत किसी के हाथ नहीं आ रहा था. लगभग एक माह बाद साहब मुझे केबिन में बुलाकर बोले—

"शाम छुट्टी के बाद घर आना, तुमसे कुछ बातें करनी हैं" साहब की बात से मैं और उलझन में पड़ गया. शाम जब मैं अपना टिफिन व फाइल बैग में ठूंस साहब के घर पहुंचा तो वे लॉन में अकेले ही बैठे थे. मैं भी साथ बैठ गया. साहब के साथ यूं बैठने में बड़ा अजीब-सा लग रहा था मुझे. कुछ पल सिगार के कश लगाकर साहब मुझसे बोले, "श्रीधर, हम जानते हैं परीक्षा के लिए तुम्हारी तैयारी जीरो है...."

"ज...जी..." मैं अचकचा गया. भला साहब को ये सब कैसे पता चला.

"पर मैंने जो बीड़ा उठाया है, उसे पूरा करना ही होगा. इस परीक्षा में तुम्हें सफल होना ही है." मैं खामोशी से अपनी चप्पलों से लॉन की मखमली घास को सहला रहा था. वैसे भी प्रत्युत्तर में मेरे कुछ कहने की गुंजाइश ही कहां थी. साहब बोले, "देखो श्रीधर अपनी हैसियत से मैंने पता लगवा लिया है कि पर्चे कहां बने हैं और किसने बनाए हैं. दस दिन में प्रश्नपत्र की एक नकल मेरे पास होगी. तुम्हें उत्तर तैयार करवा के दे दूंगा. तब ये इम्तहान तुम शत-प्रतिशत नंबरों से पास कर सकते हो...अब तुम स्वयं को अफसर ही मानों..."

मैं विस्मय से अवसन्न था...राज्य स्तर पर होने वाली प्रतियोगिता परीक्षाओं के पर्चे साहब ने पहले ही पता कर लिए. कितनी दूर तक पहुंच है साहब की, कितने लंबे हाथ हैं. साहब साक्षात् भगवान नजर आ रहे थे. समझ नहीं आ रहा था किन शब्दों में साहब को धन्यवाद दूं. तभी मेम साहब और उनकी बिटिया अंदर से आईं तो साहब बोले, "ये श्रीधर हैं—हमारे दफ्तर के भावी अफसर—इनसे पहले मिल ही चुकी होगी तुम दोनों."

साहब के घर से जब मैं निकला तो जैसे नशे में था. मेरे पांव जमीन पर नहीं थे. उत्तेजना से दिल जोर-जोर से धड़क रहा था. एक नामुमकिन और अविश्वसनीय घटना सत्य होने जा रही थी. साहब की मदद से तो अफसरी मुझे अवश्य मिल जाएगी. अब तो मंजिल फतह ही समझो. मेरे अफसर बन जाने की घटना एक धमाके की तरह होगी. दफ्तर वाले भौंचक्के-से जल-कुढ़कर रह जाएंगे. अगले दिन जब मैं दफ्तर गया तो सबको हेय दृष्टि से देख रहा था. सभी मुझे उजड्ड गंवार लग रहे थे. मैं अपनी कल्पना में खोया था—कल ये सब यहीं इसी तरह फाइलों में मुंडी गड़ाए बैठे टाइपराइटर खटखटा रहे होंगे और मैं किसी शानदार दफ्तर की केबिन में बैठा होऊंगा. पर ये बात अभी मुझे सबसे छिपाकर रखनी है. इस तरह की बातें सात परदों के पीछे हों तभी ठीक है वरना जलने वालों की कमी नहीं.

उस दिन मैंने खास रमुआ धोबी से प्रैस कराए हुए कपड़े पहने थे. जूतों को पॉलिश से चमका दिया था. जैसे ही जी की नजर मुझ पर पड़ी हैरत से गोल-गोल घुमाकर बोले, "आज जंच रहे हो, कहीं लड़की-वड़की देख प्रोग्राम है क्या?" जवाब में मैंने दिया.

शाम को घर आया तो मुझे पानी लाकर दिया. गिलास देख मुझे अचानक ताव आ में नहीं ला सकती क्या पानी? फूहड़ की." मेरी डांट से सकपकाकर गिलास टेबल पर रख दिया और नजरों से मुझे घूरती हुई चली

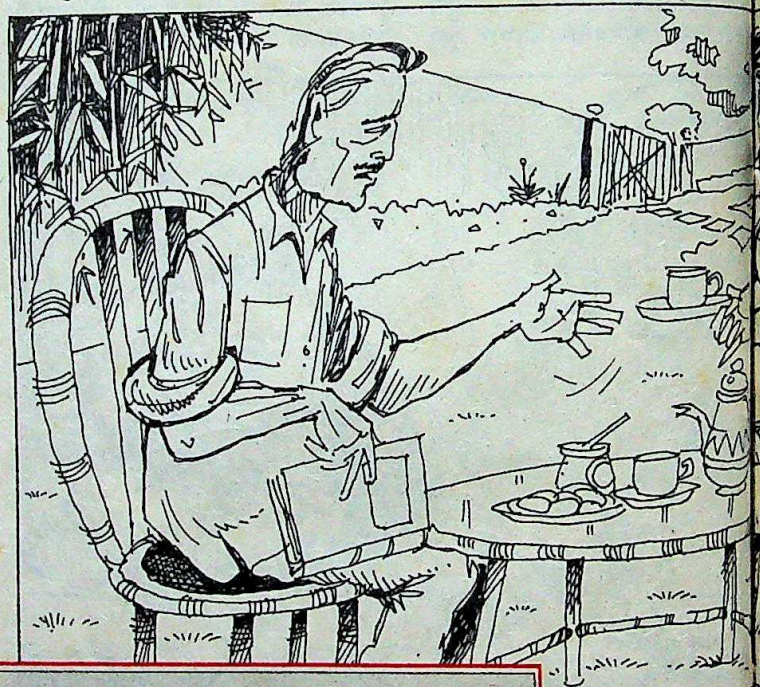

साहब की कूटनीति अब जाकर समझ आई. अफसरी की रंगीनियां दिखाकर उन्होंने मुझे फांस लिया. अब निकलना संभव नहीं

पहली बार एहसास हुआ था कि दिखावे में अनिर्वचनीय आनंद होता है. मुझे इस हालत में लगभग होने को आया था नजर में मैं अभी से अफसर था. साहब ने आगामी इम्तहानों के संबंधित बातें बताने के लिए शाम घर बुलाया था. प्रैस किए कपड़े मैं सोचता जा रहा था मुझ जैसे पत्थर को साहब तराशकर हीरा रहे हैं. मेरा कायाकल्प करने में

साहब के घर पर पहुंचा तो में भी साहब अपनी मेम साहब बाहर लॉन में बैठे थे. उनकी शाहजादी अलबत्ता वहां नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर साहब मुस्कराकर बोले, "तुम तो
भी से अफसर नजर आने लगे हो श्रीधर,
ओ बैठो." संकुचित-सा मैं तीसरी खाली
र्सी पर बैठ गया. इसके बाद साहब इधर-
धर की हल्की-फुल्की बातें करने लगे
का ये रूप देखकर मुझे पहली बार
हसास हुआ कि दफ्तर में तो साहब ने
हरी मुखौटा ओढ़ा हुआ होता है. असल
तो वे भी हम जैसे वाचाल और हंसोड़
म के इंसान हैं. साहब बोले, "अब
रे अफसर बनने में ज्यादा दिन नहीं हैं,
न-सात दिन में प्रश्नपत्र तुम्हारे सामने
ना बल्कि मैं तुम्हें हल करे हुए पेपर ही दे
ा. बाद में इंटरव्यू तो एक औपचारिकता
है. वहां तो सभी अपने आदमी होंगे?"

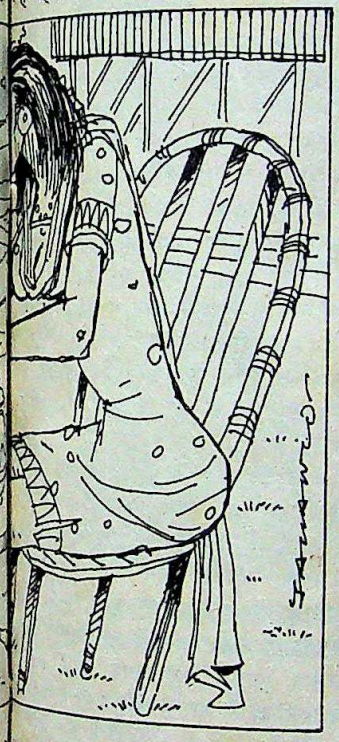

बहुत-बहुत धन्यवाद साहब." मैं गद-
ही उठा. साहब के चरण धोकर पीने का
ो रहा था. मुझे वे साक्षात् भगवान
आ रहे थे. अपने कृतज्ञता भरे उद्‌गार
करने के लिए मुझे शब्द नहीं मिल रहे
चानक साहब ने सिगार का एक गहरा
भरकर छल्ले के आकार का धुआं
उगला और बोले, "श्रीधर, क्या तुम
सोचते नहीं कि मैं तुम्हारे लिए इतना
ुछ क्यों कर रहा हूं?"
ज...जी?" साहब के इस अजीबोगरीब
पर मैं अकबका उठा — "वो...आपने
ना न कि मैं आपके जिले का हूं."
हाऊ फनी..." साहब हिकारत से बोले,
शहर में बीसियों अपने जिले के हैं.
कुछ लोग सगे संबंधियों से कन्नी काटते
ला तो बहुत दूर की चीज है. उस
गंवई-से गांव और जिले से संबंधित कोई भावना नहीं है हमारे अंदर. हमारा बस चले तो इस देश को भी छोड़कर हम विदेश चले जाएं."

मैं विस्मय से जड़ हुआ साहब के चेहरे की ओर देख रहा था. शाम के धुंधलके में साहब का अस्पष्ट-सा चेहरा मुझे पत्थर-सा भावहीन लगा. सारा माहौल भी मुझे बेहद रहस्यमय लगा था. मेम साहब इस सारे परिदृश्य से जैसी कटी हुई खामोशी-से अपनी ईरानी बिल्ली के मखमली बालों में हाथ फिरा रही थीं. मैं जैसे उलझनों के भंवर में डूब-उतर रहा था. साहब अगर जिलावासी होने के नाते नहीं कर रहे तो फिर किस लिए कर रहे हैं मेरे लिए यह सब कुछ. मैं तो एक अदना-सा क्लर्क हूं...बदले में उनका उपकार करूं ऐसी हैसियत भी नहीं... मेरा दिमाग चकराने-सा लगा.

"देखो श्रीधर," सन्नाटे को भेदती साहब की आवाज आई—

"तुम्हें अफसर बनाने के लिए मैं जी-जान से जुटा हूं, प्रश्नपत्र की नकल प्राप्त करने के लिए मुझे कइयों की जेबें गरम करनी पड़ेंगी, निस्संदेह ये सब मैं बिना मकसद के नहीं कर रहा हूं. इसमें मेरा भी स्वार्थ है."

"कैसा स्वार्थ?" मेरा कलेजा जोर-जोर से धड़कने लगा.

"बदले में तुम्हें मेरी बेटी से विवाह करना होगा."

"मगर उसकी सगाई तो पिछले साल..."

"वो टूट गई है." साहब सपाट स्वर में बोले. टूटनी ही थी. मैं मन ही मन सोचने लगा. सगाई के समय ही सारे दफ्तर वाले हैरान थे कि साहब की सांवली हिडिंबा को अमेरिका में सैटल्ड आकर्षक व्यक्तित्व वाला डॉक्टर वर आखिर मिल कैसे गया. सब पैसे के जोर से हुआ होगा, ये ही सोचा था हम सबने तब.

मगर फिर सगाई टूटी क्यों होगी. तभी साहब बोले, "दो लाख में खरीदा था हमने सपना का वर. विवाह एक वर्ष बाद होना था. सपना और लड़का खूब घूमे-फिरे. हमने भी सोचा लड़का विदेश में है. खुले विचारों का है सो घूमने-फिरने की आजादी दे दी. लड़का तो बाद में चला गया पर सपना के गले में मुसीबत बांध गया. वह गर्भवती हो गई, उधर लड़का विवाह से मुकर गया. बड़ी मुश्किल से उस जंजाल से सपना का पीछा छुड़ाया. बदकिस्मती से हमारे रिश्तेदारों में भी ये बात फैल गई. जहां भी सपना की बात चलाई, उसकी बदनामी उससे पहले वहां पहुंच गई. अब हम समझ गए हैं कि सपना की ये बदनामी कहीं उसका रिश्ता होने नहीं देगी. वैसे हम भी कुछ छिपाना नहीं चाहते. और सब कुछ जानकर कोई उसे कबूल करे ऐसा इंसान मुझे तो कहीं नजर नहीं आता. तभी मेरे मन में इस सौदे का विचार आया. अब फैसला तुम्हारे हाथ में है. अगर तुम सपना से विवाह करने को राजी हो जाओ तो सब कुछ वैसे ही होगा जैसा करने का मैंने आश्वासन दिया है वरना..."

मैं अवसन्न-सा बैठा था. साहब बोले, "तुम दो एक दिन सोच-विचार कर लो. यदि न चाहो तो बेझिझक ना कर देना, पर फिर उस दिशा में मेरी ओर से सब कुछ खत्म हो जाएगा. वैसे मेरे खयाल से तो तुम भावुकता छोड़कर व्यावहारिक हो जाओ. जिस ऊंचाई तक मैं तुम्हें पहुंचाऊंगा उसकी तुम कभी कल्पना तक भी नहीं कर सकते. भावुकता, सौंदर्य, प्रेम, पवित्रता ये सब गुजरे जमाने की बातें हैं. आज के जमाने में हर चीज को कसने की बस एक ही कसौटी है और वो है पैसा."

साहब चुप हो गए थे. मैं सोच में गुम था. साहब की कूटनीति अब मुझे समझ आ गई थी. अगर आज से एक माह पूर्व साहब इस सौदे की शर्तें मेरे सामने रखते तो मैं साफ मना कर देता. पर साहब खासे शातिर हैं, बड़ी टेढ़ी चाल चली उन्होंने. पहले मुझे वे सब ख्वाब दिखाए जो हम जैसे हजार रुपल्ली पाने वाले बाबुओं के लिए दिवास्वप्न हैं, अफसरी की रंगीनियां दिखाकर एक सुनहरे कल्पना लोक में विचरण करने का भरपूर अवसर दिया. और जब मैं इस काल्पनिक सुखद अनुभव के दलदल में गले तक धंस गया तब अपना मंतव्य स्पष्ट किया जैसे किसी प्यासे की ओर पानी डालने के क्षण भर पहले ही कोई शर्त रख दी हो.

अपनी तयशुदा स्कीम के तहत ही हांकते हुए साहब मुझे ऐसे बाड़े में ले आए जहां से निकलने का मुझे फिलहाल कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा है. या यूं कहना बेहतर होगा कि साहब ने मुझे निकलने लायक मनःस्थिति में ही नहीं छोड़ा. साहब ने मुझे सोचने को दो दिन का समय दिया है पर मुझे पता है इन दो दिनों में भी किसी फैसले पर पहुंच पाना मेरे लिए बड़ा मुश्किल होगा. अपनी भावी अफसरी और उज्ज्वल भविष्य की कल्पना में मैं इस कदर डूब चुका हूं कि सोच-विचार के लिए ये दो दिन भी कोई मायने नहीं रखते. अब लौटकर उसी पुरानी बाबुओं वाली मनःस्थिति में जाना मेरे लिए अत्यंत पीड़ादायक अनुभव होगा. साहब की सांवली, नाटी और धब्बेदार अतीत से लिपटी बेटी से विवाह के लिए मुझे हां करना ही पड़ेगा. और कोई चारा नहीं है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता संग्रह

सुहाना झोंका

सृजन का श्रद्धानत प्रयास

हिंदी कविता के चिंतनीय माहौल में युवा रचनाकार ध्रुव शुक्ल का पहला कविता संग्रह 'खोजो तो बेटी पापा कहां हैं' एक ताजे तथा प्राणवान झोंके की तरह है. हिंदी पाठकों के लिए यह कवि एकदम अपरिचित तो कतई नहीं है. छिटपुट कविताओं के अतिरिक्त एक सहयोगी संकलन में उनकी कविताएं प्रकाशित हो चुकी हैं तथा पिछले दिनों 'उसी शहर में' शीर्षक से आए उनके उपन्यास ने भी पाठकों का ध्यान खींचा है. मगर कवि की पहचान का सही सिलसिला उसकी समीक्षित किताब से शुरू होगा—इस बात में शक की गुंजाइश कम है.

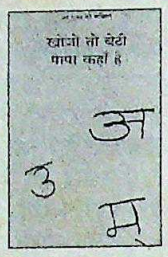

खोजो तो बेटी पापा कहां हैं
कविता संग्रह
ध्रुव शुक्ल
वाग्देवी प्रकाशन,
बीकानेर
कीमत: 45 रु.;
कुल पृष्ठ: 99

'प्रजा', 'पिता', 'प्रिया', 'चतुर्मुखम्' तथा 'खोजो तो बेटी पापा कहां है'—इन पांच शीर्षकों में संकलित 63 कविताओं में यदि कोई एक समानता दिखाई पड़ती है तो वह है कविता सृजन के लिए कवि का श्रद्धानत प्रयास. उदाहरण के लिए 'मन की संसद' शीर्षक कविता को देखा जा सकता है. 'सुख में सुमिरन/दुख में सुमिरन/करने वाले बदल गए/कारण सुख के बदल गए/कारण दुख के बदल गए/मन की संसद/मन की सत्ता/संविधान को करें निहत्था/मन का चोर पकड़ने वाली/पुलिस कहां से आए/हमने अवगुन के गुन गाए ?'

वस्तुत: इन कविताओं को पढ़ने के लिए एक खास स्तर का पाठकीय तापक्रम चाहिए. इन्हें ठहरकर पढ़ना पड़ता है चूंकि इनका काव्य रस छपे शब्दों में नहीं, उनकी अर्थ ध्वनियों की नसों में बसता है. कवि 'शब्द' और उसके 'अर्थ' को लेकर खासा व्याकुल भी है. अपवाद रूप में, दोहराव के आरोप को नजरअंदाज करके वह शब्द के विभिन्न ठिकानों पर जाकर उसका अर्थ तलाश करता दिखता है. शब्द के अर्थ पर आया संकट इन कविताओं का सर्वाधिक गुरुत्ववाला बिंदु भी है. इस पर उसने कविता के कसीदे नहीं पढ़े हैं बल्कि उसे बारंबार मथा है, उसकी शक्ति, टंकार से अभिभूत हुआ है. कवि ने केवल स्वभाव, देह, प्रेम, मन.... यानी कुल मिलाकर शाश्वत या लगभग शाश्वत तत्वों पर ही नहीं लिखा है. पातालकोट पर कविता लिखी है तथा 'वर्णाक्षरी' पर भी.

संभवत: शाब्दिक खिलवाड़ के प्रयास के चलते ये कविताएं पठनीय तो हो उठती हैं मगर अन्य 'स्वतंत्र' कविताओं की तरह गुणवान नहीं हो पातीं. प्रयोग के नाम पर, या शृंगार कला के नाम पर कविता के अपाहिज रूप को सामने लाने के लिए कवि पर करारा प्रश्नचिह्न लगाया जा सकता है. कवि की मूर्ति को ये 'प्रयोगशाला' की कविताएं क्षति ही पहुंचाती हैं. 'खोजो तो बेटी पापा कहां हैं' कविता में इस धरती पर संतान अवतरण के बाद रचे गए सवालों के खूबरसूत शब्द-चित्र हैं, जो अभी भी सही इंसान की खोज में व्यस्त हैं और उससे कुछ-कुछ आतंकित भी. कुल मिलाकर यह संकलन काव्य-प्रेमियों को आश्वस्त करता है.

—राजकुमार गौतम

उपन्यास

सामान्य प्रेम

'बोल्ड' कथा यात्रा

डॉ. वीरेंद्र सक्सेना काम संबंधों के गंभीर अध्येता के रूप में जाने जाते हैं क्योंकि शोध भी उन्होंने इसी विषय पर किया है. उनका उपन्यास 'खंडित राग' एक कस्बाई प्रेम कथा है, जो बाल्य प्रेम से ही अंकुरित होती है. उपन्यास का नायक है विनय. लेकिन यह विनय समाज से, परिवार से, किसी से भी नहीं घबराता, संघर्ष करने से पीछे नहीं हटता. लेकिन ऐन वक्त पर वह कापुरुष बन जाता है. निर्मला के साथ अपने संबंधों को वह ऐसे शिखर पर ले जाता है जहां से पीछे मुड़ना मुश्किल है. परिवारवालों की परवाह किए बिना वह निर्मला के साथ आगे बढ़ता चला जाता है और फिर एक झटके में वर्षों पुराने संबंध तोड़ देता है. वह जबरदस्ती उससे एक कागज पर हस्ताक्षर करा लेता है—"मैं निर्मला, चूंकि सेक्स से घृणा करती हूं अत: विवाह नहीं करना चाहती. विनय चाहे तो किसी से भी विवाह कर सकता है."

खंडित राग
उपन्यास
डॉ. वीरेंद्र सक्सेना
सामयिक
प्रकाशन,
नई दिल्ली
कीमत: 90 रु.;
कुल पृष्ठ: 239

यह है विनय का चरित्र जो विवाह पूर्व निर्मला से सब कुछ पा लेना चाहता है और उसके तैयार न होने पर उसे 'फिजिकल गर्ल' करार देता है. वह एक ओर अपने मामी उमा से संसर्ग करने का इच्छुक है और फिर ऐन वक्त पर पीछे हट जाता है. यही स्थिति उसके और कम्मो के बीच रहती है.

उपन्यास में विवाहिता सुशीला और नरेश, उमा और सुरेंद्र कुमार, महेश कुमार और संतोष हैं. एक ओर विवाहिता सुशीला को नरेश पूरी तरह अपने जाल में फंसा लेता है तो दूसरी ओर अनेक बच्चों की मां उमा घर से दूर रह रहे अपने पति से सेक्स के मामले में अतृप्त लगती है तभी वह विनय के उकसावे पर शारीरिक संसर्ग के लिए उतावली हो उठती है. कामिनी उर्फ कम्मो भी विवाहिता है. अपने पति से पूरी तरह संतुष्ट न होने की विवशता ही उसे विनय को उकसाने और समर्पित होने के लिए उस स्थिति तक पहुंचा देती है जो वर्जना की कोटि में आती है.

'खंडित राग' के माध्यम से डॉ. सक्सेना ने निम्न मध्यवर्गीय परिवारों में, जो कि कस्बाई मानसिकता में पूरी तरह से रचे बसे हैं, व्याप्त घुटन और सुसुप्त काम भावनाओं को व्यक्त करने का प्रयास किया है लेकिन अपने इस प्रयास में वे अनेक स्थानों पर अपने पात्रों को ही बेतरतीबी से तोड़ते चले जाते हैं. अस्थि पात्रों के ताने-बाने से बुना गया राग अब खंडित नहीं होगा तो क्या होगा?

यों प्रेम संबंधों को लेकर लिखा गया उपन्यास काफी रोचक बन पड़ा है. डॉ. सक्सेना ने वर्जना से भरे विषय को लेकर उपन्यास का कथा-सूत्र गढ़ा है. उनका तो यह 'बोल्ड' कदम कहा जा सकता है लेकिन कमजोर पात्रों पर टिका यह उपन्यास उसके पात्रों, विशेष रूप से विनय की निरीहता के कारण पाठकों की दृष्टि में महज एक साधारण प्रेम कथा बनकर रह गया है. प्रूफ की गलतियां भी खटकती हैं.

—देवेंद्र उपाध्याय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डैण्ड्रफ़ से छुटकारा पाने का एक ख़ूबसूरत उपाय.

ज़्यादातर लोग समझते हैं कि डैण्ड्रफ़ का मतलब है केवल सिर की त्वचा में होनेवाली खुजली की परेशानी. शायद वे नहीं जानते कि इसके कारण आपके बालों की रौनक भी जाती रहती है. डैण्ड्रफ़ के कारण बाल रूखे और बेजान नज़र आते हैं.

नया क्लिनिक स्पेशल बड़ी नरमाई से डैण्ड्रफ़ हटाये. फिर तो आपके बाल सचमुच शानदार नज़र आयें. जी हां, इसका नया अंतर्राष्ट्रीय फ़ॉर्म्युला सिर की त्वचा से डैण्ड्रफ़ को छुड़ा कर हटा देता है. इसमें है गुण भरा, क्रीम-सा कंडीशनर जिससे आपके बाल मुलायम व चमकीले बने रहते हैं. सारी डैण्ड्रफ़ से छुटकारा पाने के बाद भी आप इसका नियमित इस्तेमाल कर सकते हैं.

नया क्लिनिक स्पेशल अपनाइए ताकि डैण्ड्रफ़ दुबारा न आने पाये. और आपके बाल भी हमेशा सुंदर व शानदार नज़र आयें.

नया
क्लिनिक स्पेशल
ऐंटी डैण्ड्रफ़ शैम्पू

आप पायें डैण्ड्रफ़ रहित बाल, देखनेवाले सराहें सुंदर-सजीले बाल!

HTA 2724

हिन्दुस्तान लिवर लि. का एक उत्कृष्ट उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आखिर मौका मिल ही गया

जुहू के एक पांच सितारा होटल में हुई उस पार्टी में **अनीता राज** जिस शान के साथ आईं उसने नई उम्र की कई नवेली नायिकाओं को मुंह छिपाने पर विवश कर दिया. वजह सिर्फ इतनी थी कि नवेलियों में से कई जहां शरीर की भरपूर नुमाइश करके किसी को रिझाने की तैयारियों के साथ आई थीं शरीर के छरहरेपन से अनीता ने सबको ऐसी मात दी हुई थी कि दूसरी अभिनेत्रियां उनके साथ खड़ी होने से जैसे शरमाती रहीं.

लेकिन असली बात तो कुछ और ही थी जिसका मौका अनीता ढूंढ़ रही थीं. और यह मौका उन्हें जल्दी ही मिल भी गया. जब उनकी शादी नहीं हुई थी तब एक फिल्म शुरू हुई थी जिसमें उनके साथ हीरो लिए गए थे **राजीव कपूर**. दो-चार दिन की शूटिंग के बाद राजीव ने टालमटोल शुरू कर दी. फिल्म का काम रुक गया. खबर है कि फिल्म के 'रशेज' देखने के बाद राजीव ने कहा था, "अनीता मुझसे बड़ी लगती हैं."

लेकिन समय गुजरता रहा. अनीता ने खुद को ऐसा साधा, योग तथा भोजन संतुलन का ऐसा सहारा लिया कि उम्र जैसे घटने लगी. उधर राजीव ने भरपूर भोजन का ऐसा सहारा लिया और योग तथा संयम से इतना परहेज बरता कि उम्र एक साथ कई-कई साल की रफ्तार से बढ़ने लगी. राजीव के पास जब फिल्में नहीं रहीं और अनीता के कसे बदन की तस्वीरें पत्रिकाओं की शोभा बनने लगीं, राजीव ने वही रुकी हुई फिल्म फिर शुरू करने का संदेश निर्माता को भेजा. निर्माता दौड़ा गया अनीता के पास. शूटिंग शुरू हो गई और दो-चार दिन बाद बद भी हो गई.

लगता है अनीता इस पार्टी में इसी बात का इंतजार कर रही थीं कि कोई उनसे फिल्म फिर से रुक जाने की वजह तो पूछे ! और जब एक पत्रकार ने उनसे उनके मन का सवाल पूछ ही लिया तो अनीता जवाब देने में देर क्यों करतीं, "रशेज देखने के बाद सबको लग रहा है कि हीरो उम्र में हीरोइन से ज्यादा लगता है."

राजीव और अनीता: उम्र पर उज्र

उतरा शराफत का परदा

दुर्गा प्रसाद

किसी ने सोचा भी नहीं था कि जवानी भर शराफत का जो परदा इन दो मशहूर अभिनेत्रियों को इज्जतदार बनाए रहा वह उम्र बढ़ने के साथ यों उड़कर भीतर का इतना कुछ दर्शा जाएगा. मगर महत्वाकांक्षी मर्दों की संगत का असर जिस ओर इन्हें ले जा रहा है, उसमें तो अभी और भी जाने क्या-क्या देखने को मिल सकता है.

यह जिक्र है **आशा पारीख** और **हेमामालिनी** का. दोनों एक्टिंग में ठीकठाक होते हुए भी अपनी मेहनत, ईमानदारी और लगन की वजह से बड़ी-बड़ी फिल्मों के लिए चुनी जाती रहीं. शास्त्रीय नृत्यों में दोनों निपुण थीं. दोनों ने नाम कमाया और फिल्मों में नृत्यों से दर्शकों को खूब रिझाया. गांव की चुलबुली युवती और मॉड जेनरेशन की नारी, दोनों को दोनों ने साकार किया. जवानी में जब मुकाबले में फिल्में आती थीं तब इन्होंने आपस में एक दूसरी को कभी भला-बुरा नहीं कहा, जब इनके नाम और साथ जोड़े गए इन्होंने किसी की नहीं खोली...

डायरेक्टर बन महत्वाकांक्षा पारीख के मन में परम मित्र जगाते आ रहे ने 'नूपुर' बनाकर निर्देशिका-अभिनेत्री बनकर दिया तो आशा भी पीछे नहीं उन्होंने गुजराती सीरियल डायरेक्ट कर दिखाया.

इधर, हेमा ने अपने सीरियल की तैयारी की. आशा ने 'सरस्वती' बनने घोषणा करके 'हम किसी नहीं' का दावा पेश कर दिया अब हर कदम पर एक ऊंचा होने की कोशिश है. कदम पर नीचा दिखा कोशिशें जिस नीचे स्तर उतरने लगी हैं उस स्तर हम आपको कैसे कराएं भ

आशा और हेमा: महत्वाकांक्षाएं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

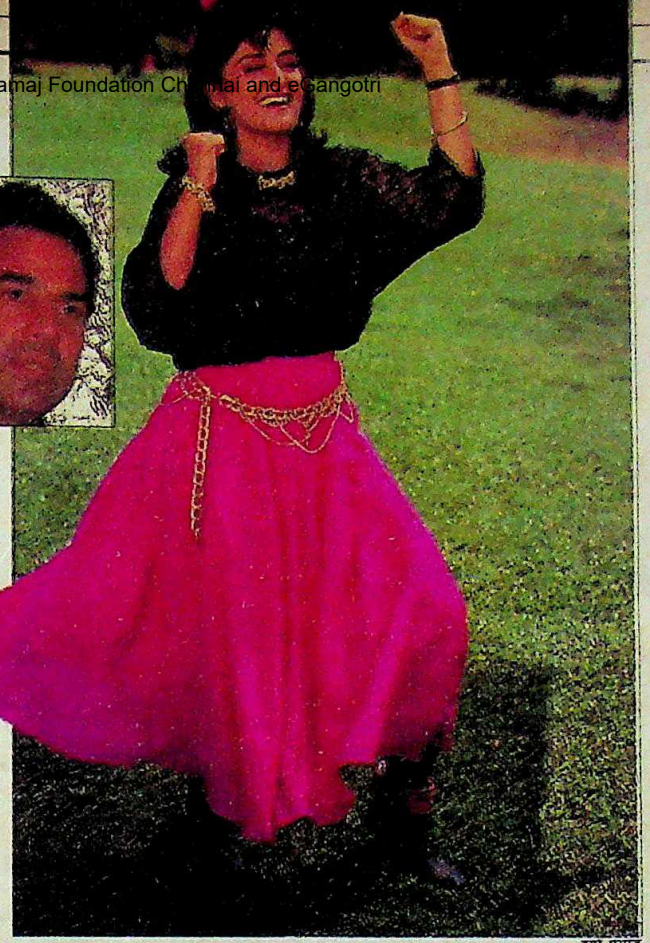

दुर्गा प्रसाद

...दुखाए दुख....

कहते हैं शीशे से ज्यादा शैतान दूसरी नहीं. यह कमबख्त जब तब तारीफ ही करता है. और जब यह शीशा **धर्मेंद्र** सा दार और शानदार हो और बेलौस तारीफों के पुल फ. रहा हो तो गुदगुदी तो होनी है. इस गुदगुदी को **जयप्रदा** ने बड़े संयम और समझदारी भाषा में बांधकर कहा है कि न जी बड़े सुलझे हुए इनसान रामों में अपनी शानदार जगह रखने के बावजूद उनमें जरा घमंड नहीं है. फिल्म के सीन बात तो छोड़िए मैं तो कई न मामलों में भी उनसे राय हूं."

जयप्रदा का बयान ज्यों-ज्यों बढ़ता जाता है त्यों-त्यों इस र विश्वास बढ़ता जाता है इक और मुश्क छिपाए नहीं . उधर, धर्मेंद्र तो किसी ाष पर विश्वास भी नहीं . इन दिनों वे इस नग्न सत्य को हर किसी तक पहुचाने के लिए लालायित हैं कि जयप्रदा से ज्यादा सुंदर और ज्यादा प्रतिभाशाली अभिनेत्री इस इंडस्ट्री में कोई दूसरी नहीं.

तारीफों के इस परस्पर आदान-प्रदान से शुरू हुए संबंध के मिलने-मिलाने से भी आगे बढ़ जाने की बातों का ही नतीजा है कि सनी देओल जैसे गूंगे का मुंह अपने पिता की हरकतों के खिलाफ खुलने लगा है. वैसे, सनी बेचारे भी कब तक सहें ? धर्मेंद्र के 'दूसरे परिवार' से उपजी उलझनें ही क्या कम हैं उनके लिए जो वे इस तीसरे को पनपने दें? और वह भी जयप्रदा के साथ जिनकी 'पति पत्नी और वह' वाली स्थिति ने पहले ही उनके लिए सौ उलझनें पैदा कर रखी हैं.

धर्मेंद्र और जयप्रदा:
छिपाए नहीं छिपता

...सीमित, मगर ...ती नहीं

मिस इंडिया **शिखा स्वरूप** सुंदर जरूर हैं लेकिन क्या नादां हैं? वरना क्या यह मुमकिन कि इंडस्ट्री में कदम रखे जुमा- आठ दिन हुए और पड़ गई ...ोहब्बत में.

लोगों का कहना है शिखा उस फीवर शिकार हैं जो ...लों में आजकल ...ारी की तरह हुआ है और का नाम है—घर के देखो. वे भी करना चाहती हैं ...सीलिए आज के ...ुंवारे निर्देशक ...ल शर्मा के उन सब ...यों पर फिदा हैं जो उनकी तारीफ में ...कर नहीं थक

...ुलिस पब्लिक' से ...न बनाने वाली

...ा स्वरूप: घर ...बाकर देखेंगे

नवेली शिखा ने अपने रूप की चांदनी 'आवाज दे कहां है' में क्या बिखेरी कि 'हुकूमत' से प्रसिद्धि पाए अनिल चकोर की तरह उनके दीवाने हो गए. यह दीवानगी इतनी बढ़ी कि अपनी प्रेमिका अभिनेत्री स्वप्ना के बार-बार इनकार के बावजूद अनिल ने शिखा को अपनी फिल्म 'तहलका' में ले लिया और घोषणा कर दी, "मेरी फिल्म रिलीज होने का इंतजार कीजिए, शिखा आसमान पर लहराती नजर आएगी."

गौतम राज्याध्यक्ष

अंदरूनी खबर यह है कि शिखा इतनी नादान नहीं हैं कि इतनी जल्दी शादी के फंदे में फंस जाएं. हां, आसमान पर लहराने का सपना जरूर उन्हें पसंद आ गया है कि वे अनिल के सपनों को तब तक तो टूटने नहीं देंगी जब तक यह देख न लें कि 'तहलका' क्या तहलका मचाती है?

खबर यह भी है कि अनिल की पूर्व प्रेमिका स्वप्ना के साथ शिखा का गुप्त समझौता भी हो चुका है—तू शादी के सपने संजोती रह, मैं रूप शिखा हूं, तेरे सपने जलाने नहीं, यहां अपना कैरियर बनाने आई हूं. क्या अब भी आप कहेंगे—शिखा नादां हैं !

शांति ने किया अशांत

नाम तो उनका शांति है लेकिन दक्षिण भारत में उनके डिस्को डांसों की इतनी धूम थी कि वहां उनका नाम ही रख दिया गया **डिस्को शांति**. हिंदी फिल्मों में उनका यही स्क्रीन नेम प्रचलित है.

इसी शांति ने उस दिन होटल में अशांति मचा रखी थी. शांति पर जो नृत्य फिल्माया जाना था उसमें हीरोइन भी शामिल थी. जब टेक शुरू हुआ, शांति भरपूर मांसल दमदमाते जिस्म पर सेंसर का आदर करने लायक ड्रेस के साथ कैमरे के आगे आ पहुंचीं. पहले ही टेक में हीरोइन को एहसास हो गया कि यह पूरा डांस गया उनके हाथ से. जहां ग्लैमर की इतनी चकाचौंध हो वहां उसकी तरफ भला कौन देखने वाला है? बस, वह अड़ गई—"शांति को पूरे कपड़े पहनाओ." मगर शांति ने भरपूर शांत रहते हुए हीरोइन की बात मानने से साफ इनकार कर दिया, "मेरी यह ड्रेस डायरेक्टर ने खुद बनवाई है." उसके इस तर्क में सचमुच दम था. आखिर वह डांस वैसे ही फिल्माया गया जैसे शांति ने चाहा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लीसा: चर्चे पर चर्चा

◆ ब्रिटेन के लाखों टीवी दर्शकों के लिए 28 वर्षीया **लीसा अजीज** का चेहरा अच्छी तरह जाना पहचाना है क्योंकि हर सुबह वे 'टीवी-एएम' कार्यक्रम लेकर प्रस्तुत होती हैं. पिछले पखवाड़े उन्हें एक खिताब दिया गया—'वर्ष का सर्वश्रेष्ठ एशियाई.' यह खिताब उन प्रकाशकों ने दिया है जो ब्रिटेन में बसे एशियाइयों का जीवन परिचय—"हू'ज हू ऑफ एशियंस इन ब्रिटेन"—प्रकाशित करते हैं. अजीज से पहले यह खिताब स्वराज पाल और सांसद कीथ वाज को दिया जा चुका है. अजीज को टीवी से कुछ ज्यादा ही मोह है. वे कहती हैं, "भारत की एक इत्र कंपनी मुझे 'परफ्यूम गर्ल' के रूप में पेश करना चाहती थी. यह पेशकश ठुकराना मुश्किल था. लेकिन यह समाचार वाचिका की छवि से मेल नहीं खा सकती." इसलिए उसकी जगह लेने की जोड़तोड़ करते हैं. अपनी इस ताजा फिल्म के बारे में कमलहासन कहते हैं, "मैं अपनी पिछली भूमिकाओं को भी मात देना चाहता हूं. मेरे लिए तो यह सब हंसी-खेल ही है."

◆ प्रतिभावान फिल्म अभिनेता **कमलहासन** एक-दो बार में संतुष्ट नहीं होते. वे तो करिश्मा बार-बार कर दिखाने में यकीन रखते हैं. उनकी डबल रोल वाली फिल्म अप्पू राजा के हिट होने की चर्चा अभी गरम ही है और वे एक ही फिल्म में चार अलग भूमिकाओं के साथ फिर आ धमके हैं. यह फिल्म है तमिल में, जिसका नाम है—माइकल, मदन, कामराजन. यह अगस्त के शुरू में रिलीज होने वाली है. इस हास्य प्रधान फिल्म में मदन नामक पात्र करोड़पति है. बाकी तीनों प्रमुख पात्र चूंकि उसी की शक्ल के हैं

कमलहासन: नया करिश्मा

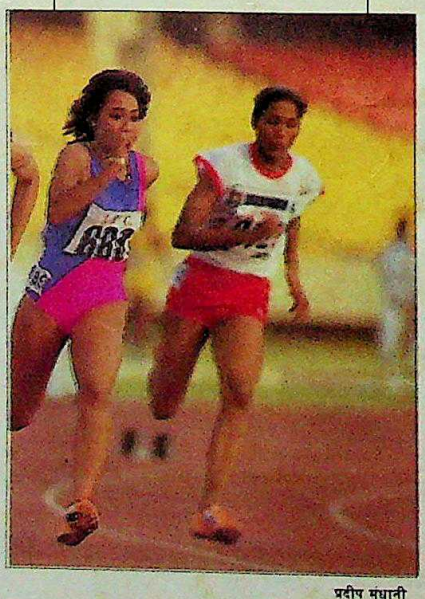

प्रदीप मंधानी

अपने साले के साथ अपनी 1913 मॉडल की रॉल्स रायस चलाते हुए अंतरराष्ट्रीय श्रेणी में प्रथम स्थान हासिल किया और उनकी टीम को 105 प्रतियोगियों में पांचवां स्थान मिला. 10 दिन की इस दौड़ की समाप्ति के बाद यूबी समूह के इस युवा कर्ताधर्ता माल्या ने कहा, "हम अपनी कार बस चलाते ही रहे और हर रोज ही सबसे आगे बने रहे."

◆ खूबरसूत और तेजतर्रार धाविका **अश्विनी नाचप्पा** की प्रतिभा पर उड़नपरी पी.टी. उषा की चमक-दमक का ग्रहण लगा था. परंतु पिछले पखवाड़े नाचप्पा ने अंततः ग्रहण की इस छाया से बाहर निकलने का करिश्मा कर ही दिखाया. नई दिल्ली में हुई अखिल भारतीय एथलेटिक प्रतियोगिता में 200 मीटर की दौड़ में उन्होंने उषा को पछाड़कर नया इतिहास ही रच दिया. उषा को उनके अब तक के कैरियर में किसी भारतीय ने परास्त नहीं

◆ मोटरगाड़ियों और रेस के घोड़ों के दीवाने, विख्यात व्यवसायी **विजय माल्या** ने एक बार फिर जीत का सेहरा अपने सिर बांधा. अभी पिछले पखवाड़े उन्होंने कैलिफोर्निया में हुई मोटर दौड़ प्रतियोगिता जीत ली.

नाचप्पा: उषा से आगे

माल्या: पुरानी कार से जीते

किया था. खुशी से भरी नाचप्पा कहा, "इस सीजन में मैं अ दौड़ती रही. यह तो शुरुआत आगे देखिए क्या-क्या होता है

जेतली: फुर्र से उड़े

◆ एअर इंडिया के लिए झटका अप्रत्याशित ही था महीनों से इसकी कमान थामे प्रबंध निदेशक 40 व **राजन जेतली** ने दि पखवाड़े अचानक इस्ती दिया. वे अब सिंगापुर ब्रिटानिया इंडस्ट्रीज अध्यक्ष और कंपनी एशिया-प्रशांत मामलो प्रमुख कार्यकारी अधि भी होंगे.

जेतली ने बिलकुल पर उड़ान भरी है. इंडिया ने 57 वर्षों के इतिहास में पहली रिकार्ड मुनाफा—वर्ष 90 के लिए 112 करोड़ कमाया है. बहरहाल, कहते हैं, "मुझे लगा मौका है." वे चूकते क्यों? सालाना 2 करो वेतन जो मिलेगा!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

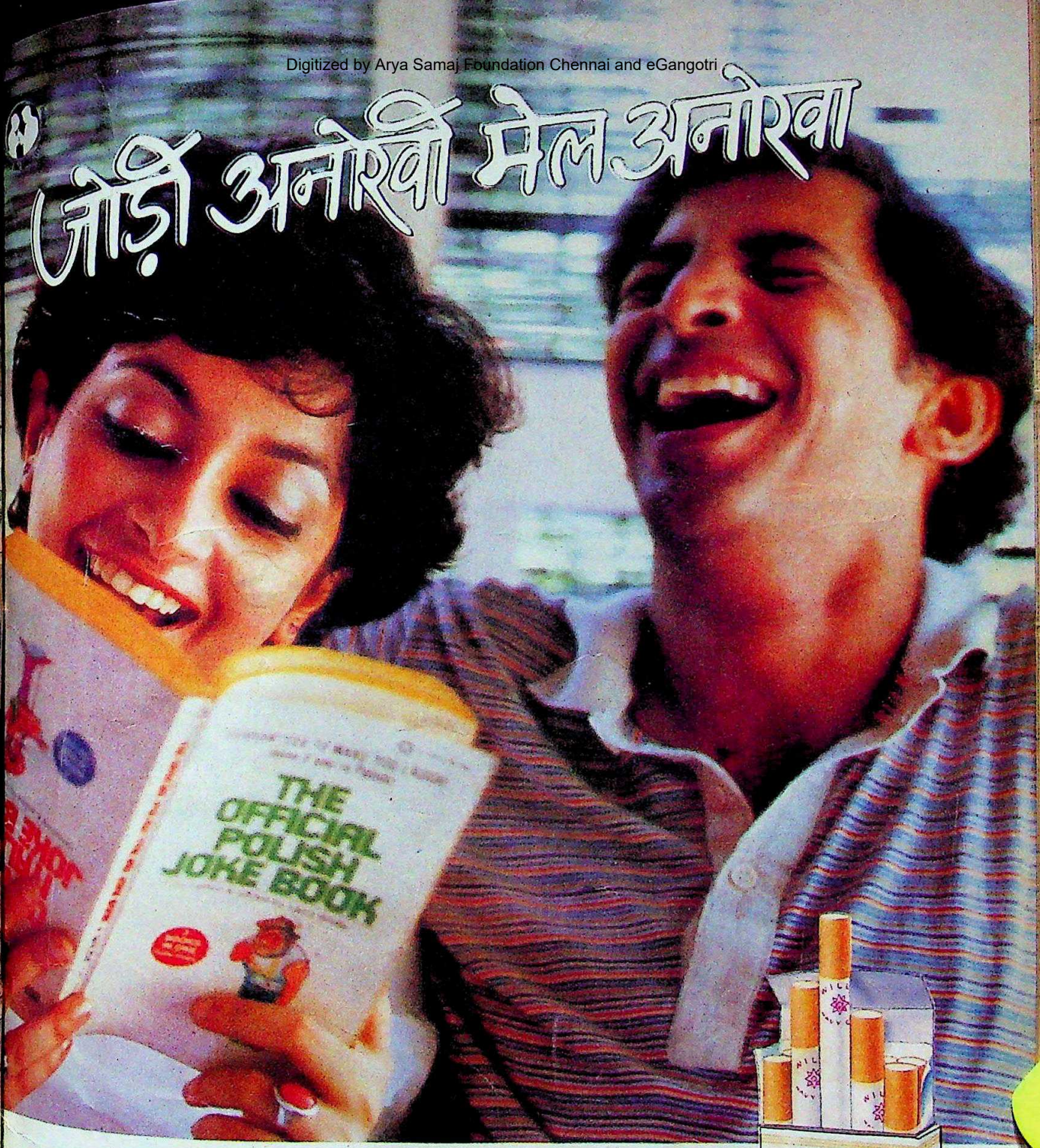

वर्षों पहले विल्स फ़िल्टर ने शुरू किया था सिगरेटों में फ़िल्टर का चलन। आज भी है वह सबसे बढ़िया। स्वाद में। तसल्ली में। हाथ से चुने वर्जीनिया तम्बाकू और शानदार फ़िल्टर के मेल का अनोखा संगम—विल्स फ़िल्टर। लाखों सिगरेट प्रेमियों ने इसे आज़माया...फिर हमेशा के लिए अपनाया।

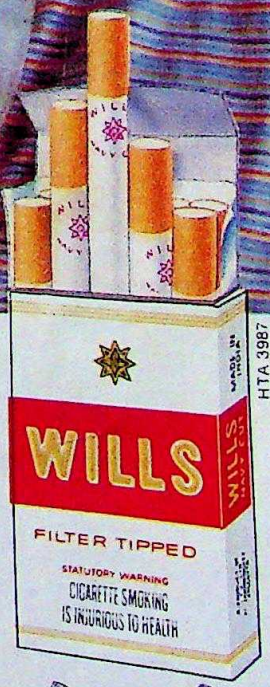

HTA 3987

WILLS
FILTER

फ़िल्टर और तम्बाकू का अनोखा मेल

STATUTORY WARNING
CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH

सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

REGISTRATION NO. R.N. 45823/86

REGISTERED No. L/NW/FBD/48/87
D—(C) 14/85

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कावासाकी RTZ. रुद्र आज़माइए, पूरा मरेसा पाइए.

चीता.
शानदार जानवर.
कावासाकी RTZ,
शानदार बाइक.
दोनों मज़बूत... शक्तिशाली.
कातिलाना अंदाज़.
सजीला... रौबदार.
कावासाकी RTZ.
अद्भुत संगम.

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधुरी दीक्षित : राजीव को शोक

इराक: साम्राज्यवादी मंसूबे

31 अगस्त 1990 7 रुपए

इंडिया टुडे

संपूर्ण समाचार पत्रिका

मौके से भेजी रिपोर्ट
और खास मुलाकात

पाकिस्तान

शिकंजे में बेनज़ीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

For the potential to weigh as much as 60 tons to the possibility of weighing 0.01 mg, organisations like B.A.R.C. Bajaj, Cadburys, Cipla, Colgate, Dr. Beck, Glaxo, Godrej, L&T, Parle, Reserve Bank, Tata, Tribhuvandas Bhimji Zaveri depend on ...

ATCO®

THE TRUTH BY WEIGHT

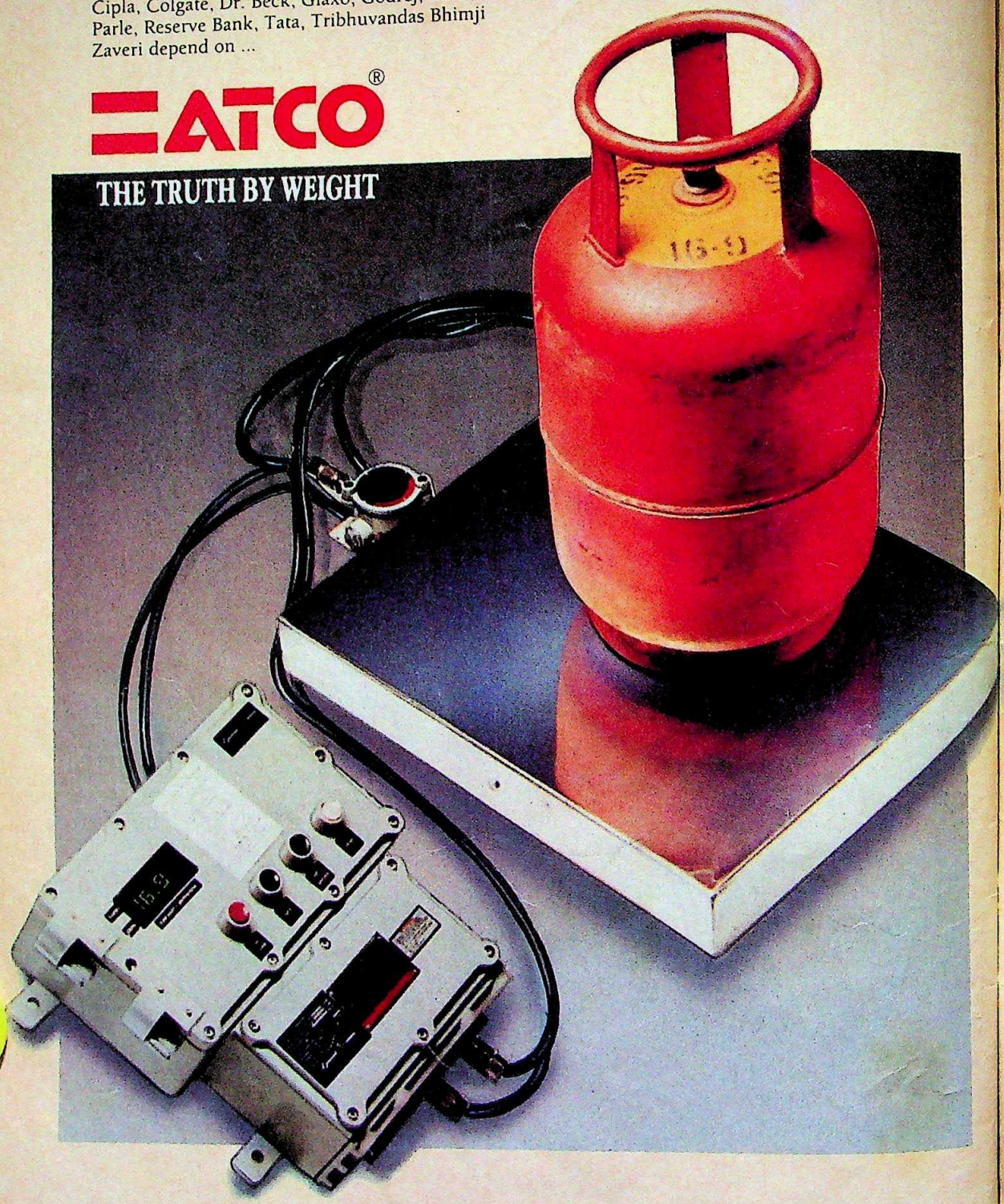

ATCO INDUSTRIES LIMITED

ENGINEERING □ ELECTRONIC WEIGHING □ INSTRUMENTATION

HEAD OFFICE: 6A, Lalwani Industrial Estate,14, G.D. Ambekar Road, Wadala, Bombay - 400 031. ✆ 4121295 □ 4121298 □ 4121982 □ 4122258
Telex: 011 - 73944 ATCO IN □ Fax : 022 4140250

BRANCHES: B-5/158 Safdarjung Enclave, 1st Floor, NEW DELHI-110 029 ✆ 608749 ■ 41, T. Nagar, Ramanathapuram, COIMBATORE-641 045 ■ No. 1 Main Road, C.I.T. Nagar, Nandanam, MADRAS - 600 035. ✆ 455912 □ 451986.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिकंजे में बेनजीर

बेनजीर भुट्टो की अचानक बरखास्तगी ने पाकिस्तान में पनपते लोकतंत्र को संकट में डाल दिया है. सेना का दबदबा फिर बढ़ा है. बेनजीर हाशिये पर चली गई हैं और उनके साथ-साथ पाकिस्तान का भविष्य भी फिलहाल अधर में लटका गया है.

आवरण कथा 14

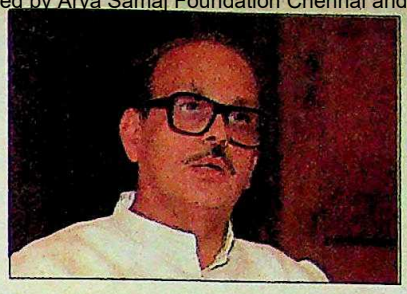

आज सुधरें तो कल सुधरेगा

जनता दल के संकट, जिसकी परिणति अंततः उप-प्रधानमंत्री देवीलाल की बरखास्तगी में हुई, से जाहिर होता है कि जो तत्व पार्टी की मजबूती के आधार ही हैं, वे ही इसे तोड़ भी सकते हैं. यदि यही हालात रहे तो मध्यावधि चुनाव भी कराने पड़ सकते हैं.

खास रपट 24

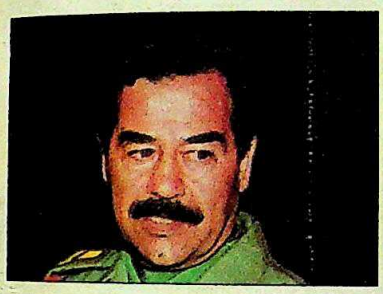

साम्राज्यवादी मंसूबे

कुवैत पर इराक का हमला और सद्दाम हुसैन द्वारा ढिठाई से इस हरकत को जायज ठहराते रहने से अरब देश सदमे में हैं और महाशक्तियों को कोई जवाब नहीं सूझ रहा है. मध्यपूर्व में बसे शांत, संपन्न जीवन में इस घटना से हलचल मच गई है.

खास रपट 34

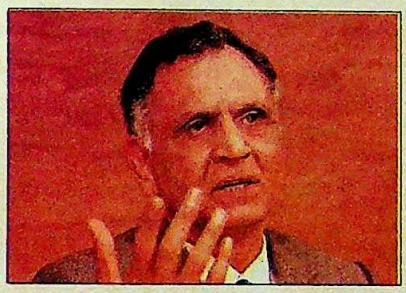

मशक्कत से खुलता रंग

कुछ रुकावटों और कार्रवाई में देरी के बावजूद बोफोर्स सौदे में दलाली की जांच में काफी प्रगति हुई है. दलाली की रकम कथित तौर पर जिन छह खातों में जमा की गई है उन्हें जाम कर दिया गया है. स्विस अदालतों में मुकदमे आगे बढ़ाए जा रहे हैं.

खास रपट 38

राम नाम की लूट है

मॉरीशस में 5 अगस्त को रामायण पर शुरू हुए छठे अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान यह देश रामायण के रंग में रंग गया. दो सदी पहले मजदूरों के रूप में यहां आकर बस जाने वाले भारतीय मूल के इन लोगों को उनका धर्म ही आज तक जोड़े हुए है. रोचक रपट.

जगबीती 78

ताजगी का सुहाना झोंका

पांच सुपरहिट फिल्मों और मधुबाला, जीनत अमान और नरगिस की खूबियां समेटे माधुरी दीक्षित नंबर एक रही श्रीदेवी के लिए खतरा बन गई है. उसके 'एक दो तीन ...' पर दर्शक अभी तक झूम रहे हैं और उसे सफलता की सीढ़ियां चढ़ते देख रहे हैं.

सिनेमा 80

अगले पन्नों पर

कसौटी 9
तेवर 10
राजरंग 11
हिंदोस्तां हमारा 12
आवरण कथा
पाकिस्तान:
शिकंजे में बेनजीर 14
खास रपट
जनता दल:
आज सुधरे तो कल सुधरेगा 24
इराक: साम्राज्यवादी मंसूबे 34
बोफोर्स जांच:
मशक्कत से खुलता रंग 38
आजकल
कश्मीर: बड़ी धरपकड़ 42
हरियाणा: उलटी बयार 43
उत्तर प्रदेश: गांवों की ओर 46
पटना: प्रतिमाओं का पार्क 48
मध्य प्रदेश: पहुंच का फल 50
पंजाब: मुश्कें कसेंगे 52
राजस्थान:
आत्मरक्षा की अलख 53
अंतर्कथा 54
सनद रहे 56
राज्य-दर्पण 57
व्यापार चक्र 58
कारोबार
आयात: कड़वी कटौतियां 60
शेयर बाजार 62
अपराध
बिहार: कब्र खोदने की कसरत 63
आरपार 69
प्रतिरक्षा
थल सेना: अजीब समस्या 70
खेलकूद
क्रिकेट: मजा किरकिरा 71
अंतरंग 72
स्वास्थ्य
दमा: दम घोंटने का दौरा 73
जगबीती
कनाडा: भारतीयों का बाजार 76
मॉरीशस: राम नाम की लूट है 78
सिनेमा
माधुरी दीक्षित:
ताजगी का सुहाना झोंका 80
जीवन शैली
शहजादा मुकर्रम जाह:
रूठ गई तकदीर 83
कहानी 86
किताबें 92
परदे के उस पार 94
चर्चित चेहरे 96

आवरण: प्रशांत पंजियार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉक्टर सुमेधा साहनी
एम.बी.बी.एस., एम.डी.

कम तेल यानि अधिक तंदरुस्ती

कम तेल के पकवान

क्या गेहूँ, चावल और सब्जियों में चिकनाई है?

बिल्कुल, क़ुदरती तौर पर। यह चिकनाई दिखाई तो नहीं देती, लेकिन यह प्रोटीन तथा विटामिनों की तरह ही स्वास्थ्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। समस्या तो तब शुरू होती है जब हम खाना पकाते समय तेल तथा चिकनाई का इस्तेमाल अधिक करते हैं।

चिकनाई तथा सेहत

राष्ट्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद के अनुसार भारतीय खाने में हमारे शरीर की असली ज़रूरत के मुकाबले दुगनी या तिगुनी चिकनाई होती है। कारण यही है कि हम खाना पकाने में बहुत ज़्यादा तेल इस्तेमाल करते हैं। संस्थान चेतावनी देता है कि ज़्यादा तेल शरीर के लिए खासतौर से हृदय के लिए नुक्सानदायक है।

इस समस्या से कैसे बचें

जो चिकनाई आपको अनाज, दालों और सब्ज़ियों से अदृश्य रूप में प्राप्त हो रही हैं, वही पर्याप्त है। केवल इतना करें कि जिस तेल या वनस्पति से आप अपना भोजन पकाते हैं उसकी मात्रा माप कर इस्तेमाल करें अर्थात परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिए प्रतिदिन केवल दो चम्मच। अधिक तेल या घी का अर्थ है शरीर के लिए कोई न कोई समस्या. भला इस की आवश्यकता ही क्या है। कम तेल से भी बेहद स्वादिष्ट खाना पकाया जा सकता है। इन स्वादिष्ट व्यंजनों को आज़माइए और स्वयं ही देख लीजिए।

कंडा बटाटा नी सूकी भाजी

भारतीय व्यंजनों के साथ परोसा जा सकने वाला हल्का गुजराती व्यंजन ½ किलो आलू (छिलके सहित तीन चौथाई उबालें, छील लें और काट लें); ½ किलो कटे हुए प्याज़; 1 छोटा चम्मच ज़ीरा; चुटकी भर हींग; एक बड़ा चम्मच तेल; नमक; ½ छोटा चम्मच हल्दी; ½ छोटा चम्मच मिर्च पावडर; 1 छोटा चम्मच धनिया पावडर; ½ छोटा चम्मच ज़ीरा पावडर; डेढ़ नींबू का रस

विधि : तेल गर्म करें। ज़ीरा और हींग डाल दें। ज़ीरा चटखना बंद हो जाए तो प्याज़ डाल दें। आंच धीमी कर दें और प्याज हल्के लाल होने तक भूनें। आलू डाल दें। बाकी मसाला भी डाल दें। धीमी आँच पर आलू पूरी तरह तैयार हो जाने तक पकाएं (तीन-चार व्यक्तियों के लिए पर्याप्त)

चना दाल

स्वादिष्ट और आसानी से पकाया जा सकने वाला दक्षिण भारतीय व्यंजन।

½ किलो चने की दाल रात भर भिगो कर रखें। 1 छोटा चम्मच हल्दी; 1 बड़ा चम्मच कटी हुई अदरक; 1 बड़ा चम्मच कटा हुआ लहसुन; ½ कप इमली का पानी, नमक

तुड़का : 3 छोटे चम्मच तेल; 3 तोड़ी हुई लाल मिर्चें, 1 बड़ा चम्मच कटी हुई अदरक; 1 बड़ा चम्मच कटा हुआ लहसुन; 1 छोटा चम्मच जीरा।

विधि : दाल और सारी सामग्री को उपयुक्त पानी डाल कर उबाल लें. पानी उतना ही डालें कि दाल और अन्य सामग्री डूब जाएं। दाल पक जाए लेकिन साबुत रहे. अगर दाल पकने के बाद पानी बच जाए तो गिरा दें। तेल गर्म करें, ज़ीरा डाल दें, ज़ीरा चटखना बंद कर दे तो तुड़के की बाकी सामग्री डाल दें। आधा मिनट हिलाएं और दाल में मिला दें (4-6 व्यक्तियों के लिए पर्याप्त)

मुफ्त

स्वादिष्ट तथा कम तेल युक्त पकवान तैयार करने की विधियां मंगवाने के लिए लिखें, पो.बॉ. नं. 55 नई दिल्ली-110001.

"कम तेल सेहत का साथी
सिर्फ़ दो चम्मच हैं काफ़ी"

तिलहनों के बारे में टैक्नालॉजी मिशन द्वारा जन हित में प्रकाशित

ASP-D/TMO/1/HIN/90-91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डैण्ड्रफ़ से छुटकारा पाने का एक ख़ूबसूरत उपाय.

ज़्यादातर लोग समझते हैं कि डैण्ड्रफ़ का मतलब है केवल सिर की त्वचा में होनेवाली खुजली की परेशानी. शायद वे नहीं जानते कि इसके कारण आपके बालों की रौनक भी जाती रहती है. डैण्ड्रफ़ के कारण बाल रूखे और बेजान नज़र आते हैं.

नया क्लिनिक स्पेशल बड़ी नरमाई से डैण्ड्रफ़ हटाये. फिर तो आपके बाल सचमुच शानदार नज़र आयें. जी हां, इसका नया अंतर्राष्ट्रीय फ़ॉर्म्युला सिर की त्वचा से डैण्ड्रफ़ को छुड़ा कर हटा देता है. इसमें है गुण भरा, क्रीम-सा कंडीशनर जिससे आपके बाल मुलायम व चमकीले बने रहते हैं. यानी डैण्ड्रफ़ से छुटकारा पाने के बाद भी आप इसका नियमित इस्तेमाल कर सकते हैं.

नया क्लिनिक स्पेशल अपनाइए ताकि डैण्ड्रफ़ दुबारा न आने पाये. और आपके बाल भी हमेशा सुंदर व शानदार नज़र आयें.

नया
क्लिनिक स्पेशल
ऐंटी डैण्ड्रफ़ शैम्पू

आप पायें डैण्ड्रफ़ रहित बाल, देखनेवाले सराहें सुंदर-सजीले बाल!

HTA 2724

हिन्दुस्तान लिवर लि. का एक उत्कृष्ट उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

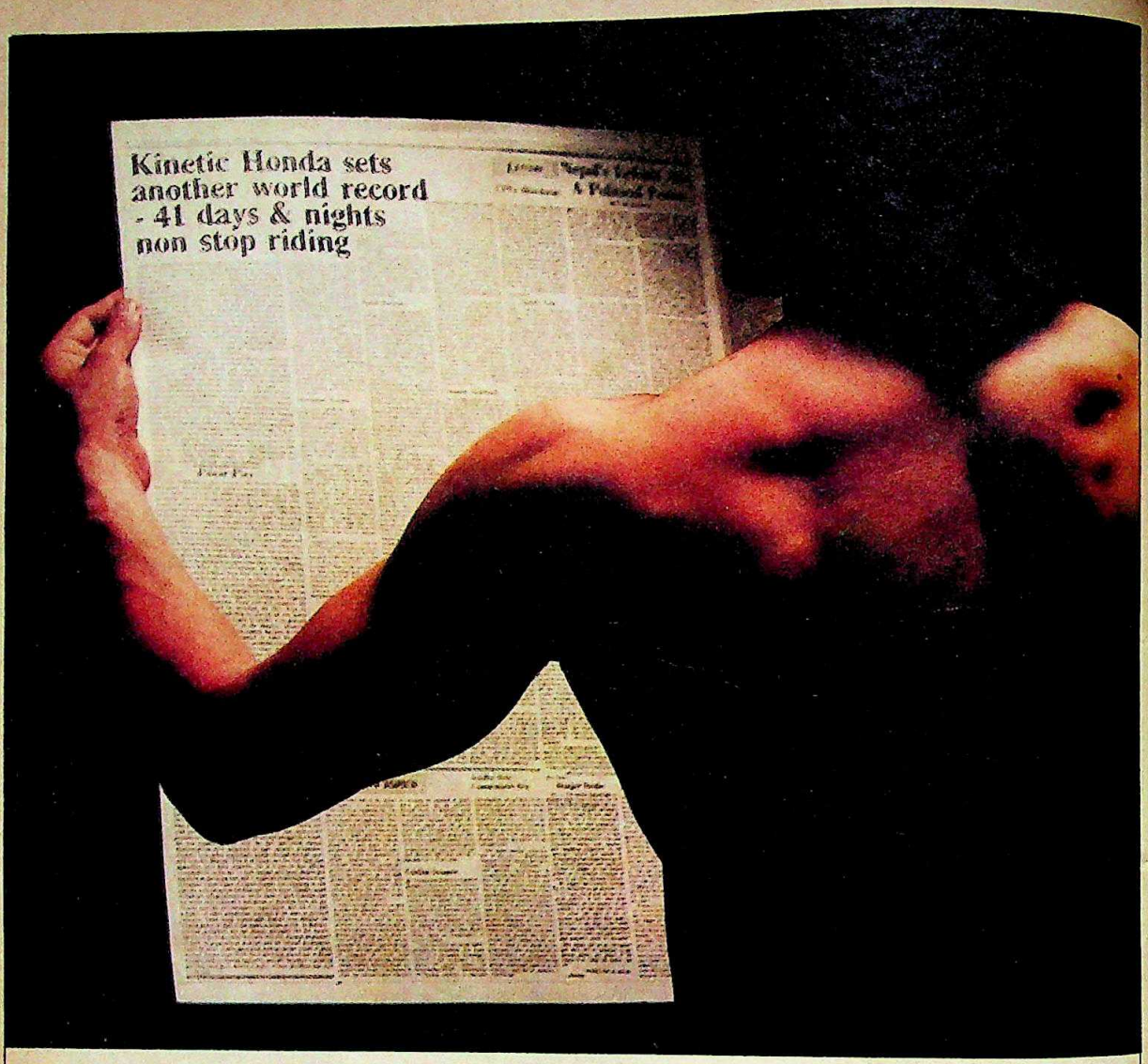

If you are a tough customer, you need a Kinetic Honda.

At Saras Baug Pune, at 11.45 A.M., on 3rd June, 3 men Mr. Har Prakash Rishi, Amarjeet Singh & Navjyot Chadda and one Kinetic Honda created Two Wheeler history ! For 42 days & nights (1001 Hrs) the men and one machine endured the test of time - Non-stop ! The durability and reliability of the Kinetic Honda was put to the ultimate test through scorching heat (40 degree celsius) in the end of April and torrential stormy rains in the mid of May. Through all this ordeal the Kinetic Honda came through unscathed and non-stop, proving to the world that its the world's Best Scooter ! KINETIC HONDA — Creating Two-Wheeler History

KINETIC HONDA
SIMPLER ■ SAFER ■ SUPERIOR

WAMS 091/90

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच को पहचानें

'मुसीबत में मुलायम' (15 अगस्त) पढ़ी. मामूली सफलता से इतराए मुलायम की भी वास्तविकता से पहचान अंततः उनके लिए फायदेमंद ही साबित होगी. क्योंकि अब वे फूंक-फूंककर ही कदम रखेंगे. —**शिवेश्वर,** गोरखपुर (उ.प्र.)

भूल जाते हैं फर्ज

'कगार से चोट खाकर वापसी' (15 अगस्त) पढ़ी. सचमुच आज जिम्मेदार पदों पर आसीन गैर-जिम्मेदार लोगों के कारण हताशा की हालत पैदा हो गई है मामला चाहे प्रधानमंत्री-राष्ट्रपति के संबंधों का हो या प्रेस जैसी गैर सरकारी संस्थाओं का. गैर-जिम्मेदार पदों पर आसीन होना लोग अपना अधिकार तो मानते हैं, पर कर्तव्य भूल जाते हैं.

—**महेश राजपूत,** सागर (म.प्र.)

वही रंग-ढंग

वी.पी. सिंह के 'नेतृत्व की नाकामी' (31 जुलाई) सत्ता पक्ष की उन खामियों की ओर इशारा करती है जिनके कारण 1979 में जनता सरकार का पतन हुआ था. जोड़-तोड़ की राजनीति देश को काम-चलाऊ सरकार ही दे सकती है, सफल नेतृत्व नहीं. चौटाला प्रसंग पर अस्पष्ट रवैये से उनकी छवि धूमिल हुई है.

—**ज्ञानशंकर प्रसाद,** पटना (बिहार)

■ सात महीने की अल्पावधि में वी.पी.सिंह कमजोर प्रधानमंत्री साबित हुए हैं. डॉ. रुबाइया की रिहाई के बदले में आतंकवादियों की रिहाई, जगमोहन की वापसी, चौटाला प्रकरण और बेकाबू होती महंगाई सब उनकी सरकार की साख मिटाने वाले हैं.

—**विजय एस. शेल्के,** अहमदाबाद (गुजरात)

■ जिसे आप नेतृत्व की नाकामी कह रहे हैं वह वास्तव में सत्ता का संघर्ष है. वी.पी. सिंह वास्तव में जिम्मेदारी से दूर भागते तो अपना इस्तीफा पार्टी अध्यक्ष को न भेजकर राष्ट्रपति को भेजते. यह वी.पी. सिंह के राजनैतिक चातुर्य को बताता है. उन्हें अच्छी तरह मालूम था कि उनके सिवा किसी और को इतना विश्वास प्राप्त नहीं है.

—**जुगल किशोर आहूजा,** श्रीगंगानगर (राज.)

■ आपकी पत्रिका, जो वी.पी. सिंह की प्रचार पत्रिका बन गई है, अभी भी पूरी जाग नहीं पाई है. फलतः आपके ज्यादातर लेख वी.पी. सिंह के ढोंग, झांसे और दोगलेपन को आदर्श, मजबूरियां, चाणक्य नीति, सबको साथ लेकर चलने की सदीच्छा आदि के रूप में प्रस्तुत करते हैं. आपको एकपक्षीय विवरण नहीं देना चाहिए. —**विनेश मोदी,** जोधपुर (राज.)

सिद्धांतों का मजाक

'तिकड़मों भरी वापसी' (31 जुलाई) पढ़ी. आखिर महत्वाकांक्षी देवीलाल ने चौटाला को पुनः हरियाणा का मुख्यमंत्री बनाकर जनता दल की मूल्य आधारित राजनीति की धज्जियां उड़ाकर रख दी. ताऊ पुत्रमोह में इस कदर अंधे हो गए कि दल की मर्यादा तले उसके सिद्धांतों को त्यागने में उन्हें जरा भी संकोच नहीं रहा.

—**विजय कुमार अग्रवाल,** भोपाल (म.प्र.)

■ पांच दिन चले इस नाटक की शुरुआत से पटाक्षेप तक मूल्य आधारित राजनीति तो कहीं नजर नहीं आई. अगर कुछ नजर आया तो वह था देवीलाल का पुत्रमोह, चौटाला की पदलोलुपता और कुछ ऐसे नेताओं की उच्चाकांक्षाएं जो सदा ऐसे मौकों की तलाश में रहते हैं. जब देश के सामने खड़ी समस्याओं की फेहरिस्त लंबी होती जा रही है, अल्पमत वाली मोर्चा सरकार का भविष्य उज्जवल नहीं है.

—**यतेंद्र कुमार,** दुर्गापुर (प. बंगाल.)

■ चौटाला प्रकरण ने वी.पी. सिंह की 'मूल्य आधारित राजनीति' की परिकल्पना की धज्जियां बिखेर दी है. अपने इस्तीफे की नोंक पर वे जो कुछ बचा लाए हैं, वह उस परिकल्पना की लाश भर है. जिस सरकार की शक्ति और समय एक के बाद दूसरी अंदरूनी कलह को निबटाने में खर्च हो रहे हों, उससे राष्ट्रीय समस्या सुलझाने या जनकल्याण के किसी काम की उम्मीद करना ही बेकार है.

—**आशीष माहेश्वरी,** ग्वालियर (म.प्र.)

■ राजनैतिक नाटकबाजी का जो दौर पिछले दिनों चला वह अप्रत्याशित नहीं है. जनता दल में अंदरूनी उठापटक के बीज सिद्धांत रूप में तो उसी दिन पड़ गए थे,जिस दिन इसका गठन हुआ. राजनीति में मूल्यों की स्थापना इतनी सहज नहीं है. निहित स्वार्थों और महत्वाकांक्षा की आग में जलते ये नेता सिर्फ राजनैतिक प्रतिशोध की राजनीति कर सकते हैं.

—**बीरेंद्र गिरि,** पटना (बिहार)

असमर्थ व्यवस्था

कसौटी 'दयनीय उलझन से उबरें' (31 जुलाई) बहुत ही सामयिक व व्यावहारिक लगा. अमीरी का शोषण करके गरीबी मिटाने वाली समाजवादी परिकल्पना व्यावहारिक नहीं है. पूर्वी यूरोपीय देशों की वर्तमान आर्थिक बदहाली इसका ज्वलंत प्रमाण है. यह सच है कि हरित क्रांति से केवल बड़े किसानों को लाभ हुआ लेकिन यह भी उतना ही सच है कि इसी क्रांति की वजह से इस सदी के भयंकर सूखों (1987) में भुखमरी से हम बच पाए.

—**नवल किशोर,** पटना (बिहार)

वर्ष: 4, अंक: 20, 16-31 अगस्त 1990

■ **संपादकीय कार्यालय:** लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001. फोन: 331 5801-4. टेलेक्स: 31-61245 INTO IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली. ■ **मुख्य सर्कुलेशन कार्यालय:** इंडिया टुडे सर्कुलेशन मैनेजर, एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001. फोन: 3313076-8. टेलेक्स: 31-62634 INTO IN. तार: सर्कुलेट, नई दिल्ली. ■ **मुख्य विज्ञापन कार्यालय:** 28 ए और बी, जाली मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. फोन: 2026152, 2029326, 2029435. टेलेक्स: 11-8373 THOM IN. तार: लिवमीडिया, बंबई. ■ **क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय:** के-9, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001. फोन: 3325378, 3323576, 3321323, 3321273; टेलेक्स: 31-62124 THOM IN. तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली ● फागुन चैंबर्स, 26 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105. फोन: 477188. टेलेक्स: 041-6177 INTO IN. तार: लिवमीडिया, मद्रास ● 74/1 मेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001. फोन: 568448, 579037, 579089. टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN. तार: लिवमीडिया, बंगलूर ● 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700016 फोन: 445398, 447726. टेलेक्स: 021-3138 INTO IN. तार: लिवइन-मीडिया, कलकत्ता. ● कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता. ● लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा थामसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हवाई उड़ान

'हर कदम पर गलतियों के निशान' (31 जुलाई) बेहद सटीक और निष्पक्ष लगा. मुख्यमंत्री की कुर्सी क्या मिल गई, पटवा जी उसे जीवन भर की बपौती समझकर इस्तेमाल कर रहे हैं. केंद्र में भाजपा के दावे का वक्तव्य, कुकड़ेश्वर में प्रधानमंत्री को निमंत्रण, भवनों पर चलते बुलडोजर, अनपेक्षित तबादले और सांप्रदायिक वक्तव्यों में बदले की भावना झलकती है जो स्पष्टतः पटवा जी की हवाई उड़ानों का संकेत देती है.

—**लीलाधर देशमुख 'सचेत'**, इटारसी (म.प्र.)

■ लेख वास्तविकता से परे है. लेखक स्वयं पटवा से मिले होते तो उन्हें आभास हो जाता कि वे न तो मुस्कराने की कला भूले हैं और न ही सत्ता का कोई गुमान उन्हें है. पार्टी के किसी भी व्यक्ति, सांसद या विधायक को उनके व्यवहार अथवा कार्यप्रणाली से असंतोष नहीं है.

—**डॉ. सीतासरन शर्मा**, इटारसी (म.प्र.)

■ मुख्यमंत्री पटवा का ईसाई मिशनरियों को गद्दार कहना व राम जन्मभूमि मसले पर मुसलमानों की आलोचना करना यदि अनुचित है तो क्या ईसाई मिशनरियों का हजारों हिंदू वनवासियों को ईसाई बनाना और मुसलमानों द्वारा श्रीराम की तुलना बाबर से करना उचित है?

—**प्रकाश**, भोपाल (म.प्र.)

कहीं दूसरे न आ जाएं

भारत भवन पर नरेंद्र कुमार सिंह ने 'प्रतिष्ठा पर आंच' (31 जुलाई) में ठीक ही लिखा है कि लगता है कि एक किस्म के ठेकेदार जाएंगे तो दूसरी किस्म के ठेकेदार आ जाएंगे. भारत भवन के मशहूर आलोचक शरद जोशी ने खुद अशोक वाजपेयी के साथ उत्सव '73 का संचालन व प्रबंध संभाला था. पुनर्जागरण लाने व निजी जागीर न बनने देने के नई सरकार के संकल्प का स्वागत है लेकिन रूढ़ विरासत संजोने के बजाए कलाकारों, साहित्यकारों, रंगकर्मियों को आजादी से काम करने की छूट मिलनी चाहिए. भारत भवन पर सरकारी अंकुश न हो. इसके भारी बजट और अधिकारों का उपयोग अपनों को रेवड़ी बांटने में न हो.

—**उषा सिंह**, दिल्ली

डर जो है

शेखावत के भ्रष्टाचार विरोधी 'अभियान से हड़कंप' (31 जुलाई) मचना स्वाभाविक ही है. लेकिन उन्हें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वे उन भ्रष्ट अधिकारियों की जांच पहले कराएं जो जिम्मेदार पदों पर कुंडली जमाए बैठे हैं. इसका विरोध तो होगा ही क्योंकि पूर्व मंत्रियों.. के कारनामे और उनके भ्रष्ट, चहेते अधिकारियों का कच्चा चिट्ठा खुलने का डर जो है.

—**संजीव कश्यप**, बुबकपुर (उ.प्र.)

ऐतिहासिक काम

किताबें स्तंभ में डॉ. रामजी पांडेय द्वारा संपादित पुस्तकें "परिचय इतना, इतिहास यही" की समीक्षा (31 जुलाई) पढ़ी. समीक्षक को पुस्तक में केवल खामियां ही नजर आईं. जबकि रामजी पांडेय ने महादेवी जी विषयक संस्मरण संजोकर ऐतिहासिक महत्व का काम किया है.

—**एहतराम इस्लाम**, इलाहाबाद (उ.प्र.)

ठोस उपाय जरूरी

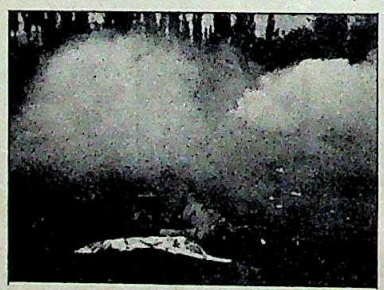

छाया-लेख 'कश्मीर: जीना मौत के साथ' (31 जुलाई) में एक ज्वलंत सचाई को हमारे समक्ष रखा गया है. हम आज शायद जमीन के टुकड़े भर के मालिक रह गए हैं. कश्मीरी तो कब के हमसे दूर हो चुके हैं. शासन को ठोस उपाय करने होंगे ताकि कश्मीरियों के दिल में भारतीयता की भावना जाग्रत हो सके.

—**एल.पी. विश्वकर्मा**, रायपुर (म.प्र.)

■ कश्मीर की स्थिति निश्चित ही भयावह है. लेकिन यह समझ में नहीं आता कि बार-बार फारूक अब्दुल्ला को कश्मीर की बागडोर सौंपने की बात क्यों की जा रही है. सब जानते हैं कि उन्हीं के कार्यकाल में हालात बिगड़े थे, तिरंगा झंडा जलाया गया, मस्जिदों से भारत विरोधी प्रचार हुआ.

—**दीपेंद्र सिन्हा**, जशपुर (म.प्र.)

■ लेख कश्मीर की मौजूदा स्थिति का आईना है. चित्रों को देखकर लगता है कि भारत सरकार के प्रति नफरत की भावना वहां के जनमानस के रोम-रोम में घर कर गई है. परंतु हमारे नेतागण कश्मीर और पंजाब जैसी समस्याओं को भूलकर पार्टी की अंदरूनी कलह में ही फंसे हैं.

—**अनुपमा सिंह**, गढ़ नोखा (बिहार)

■ लेख में विघटनकारी तत्वों को महिमामंडित करना अत्यंत लज्जाजनक रहा. विदेशी शक्तियों के इशारे पर भारत को खंडित करने का प्रयास करने वाले दया के पात्र हरगिज नहीं हैं.

—**हृदयानंद पांडेय**, पटना (बिहार)

मर्मस्पर्शी

कहानी 'पाप' (31 जुलाई) बेहद मर्मस्पर्शी लगी. कहानी अनाथालयों के ढोंग और ढकोसलों की पोल खोलती हुई ऐसी संस्थाओं पर तीखा प्रहार करती है. एक बात और सामने आती है कि भरपूर मानवीय संवेदनाओं के बावजूद व्यक्ति कभी किसी का छोटा से छोटा काम भी नहीं कर पाता.

—**वनिता सिन्हा**, पटना (बिहार)

■ 'पाप' कहानी काल्पनिक सही लेकिन वास्तविकता से बिलकुल दूर नहीं है. ज्यादातर अनाथालयों के कर्मचारियों और अधिकारियों की ज्यादतियां, सरकार की ढुलमुल नीतियां एवं कानून इन मासूमों को अंततः अपराध की प्रवृत्ति की ओर झुका देते हैं.

—**डॉ. चंद्रशेखर जैन**, जयपुर (राज.)

रोचक जानकारी

राजनैतिक खबरें पढकर कलुषित हुए मन को 'प्रकृति दर्शन' (31 जुलाई) से बेहद सुकून मिला. आप प्रकृति के बारे में इसी तरह की रोचक और उपयोगी जानकारी देते रहें.

—**मोहन कुमार**, समस्तीपुर (बिहार)

पांव दिखे पालने में

'खुशनुमा खबर' (31 जुलाई) टेनिस प्रेमी ही नहीं, सभी भारतीयों के लिए खुशखबरी थी. लिएंडर पाएस जब जापान के विरुद्ध डेविस कप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रैपिडैक्स® इंगलिश स्पीकिंग कोर्स

एक रिकार्ड

4,00,00,000 चार करोड़ से अधिक पाठकों द्वारा अपनायी गयी भारत की बारह भाषाओं में प्रकाशित सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तक

सभी कोर्सों में बड़े साइज़ के 400 से अधिक पृष्ठ

मूल्य: 36/- प्रत्येक
डाकखर्च: 6/-

'रैपिडैक्स' कोर्स सभी प्रमुख बुकसैलरों, रेलवे स्टेशन एवं बस अड्डों पर स्थित बुक स्टॉलों पर मिलते हैं। वी.पी.पी. द्वारा मंगाने के लिए लिखें:-

श्रेष्ठता की कसौटी

देशभर के प्रसिद्ध अखबारों की सम्मितियों में से कुछ के अंश:—

•....वार्तालाप शैली में लिखी हुई यह पुस्तक अंग्रेजी बोलना आसानी से सिखा सकती है... अंग्रेजी का सारा आवश्यक ग्रामर भी इस पुस्तक को पढ़कर स्वतः समझ में आ जाता है। **—नवभारत टाइम्स, दिल्ली**

•....बहुत दिनों से एक ऐसी पुस्तक की तलाश थी, जिसको पढ़ते-पढ़ते ही अंग्रेजी बोलचाल का अच्छा-खासा ज्ञान हो जाये और इस कसौटी पर रैपिडैक्स इंगलिश स्पीकिंग कोर्स खरी उतरी। **—बम्बई समाचार, बम्बई**

•....इस पुस्तक की विशेषता यह है कि इसमें चुने हुए, दैनिक उपयोग में आने वाले शब्दों की उपयोगी सूची अर्थ सहित दी गई है।... प्रत्येक पाठ के अन्त में भाषा व व्याकरण सम्बन्धी कुछ आधारभूत बातें अलग से समझाने का प्रयास भी निस्संदेह प्रशंसनीय है। **—जुगान्तर, कलकत्ता**

•....इसमें अंग्रेजी सिखाने की अभ्यास सामग्री इतने बढ़िया ढंग से दी गई है कि कान्वेंट स्कूलों में भी यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध हो सकती है। **—विनामानी, मद्रास**

•....अंग्रेजी भाषा को शुद्ध और प्रभावपूर्ण ढंग से जितना लिखना जरूरी है, उतने ही प्रभावपूर्ण ढंग से उसके शब्दों का सही उच्चारण तथा सही बोलना भी जरूरी है और ये सब गुण पुस्तक के क्रमवार अभ्यासों में मौजूद हैं। **—गुजरात मित्र, सूरत**

•....आकर्षक आवरण एवं सुन्दर छपाई से सुसज्जित, यह पुस्तक अल्प समय में ही अंग्रेजी सिखाने में सक्षम होने के कारण सभी स्त्री-पुरुषों, विशेषकर गृहिणियों के लिए अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होगी। **—डेक्कन क्रोनिकल**

•....वास्तव में यह एक बहुत ही उपयोगी कोर्स है। इसमें तमिल जानने वाले बगैर किसी परेशानी के ग्रेजुएट जैसी अंग्रेजी बोल सकते हैं। **—सण्डे स्टैण्डर्ड, मद्रास**

•....रैपिडैक्स कोर्स ही एकमात्र ऐसा विस्तृत कोर्स है, जो हर किसी को 60 दिन में अंग्रेजी बोलना व लिखना बिना किसी शिक्षक या स्कूल में गये, सिखाने में सक्षम है। **—नागपुर टाइम्स, नागपुर**

•....अंग्रेजी सीखने के लिए इसका क्रमवार अभ्यास अपनी एक विशेषता है। **—गुजरात समाचार, अहमदाबाद**

पुस्तक महल
खारी बावली, दिल्ली-110006.
10-B, नेताजी सुभाष मार्ग,
दरियागंज, नई दिल्ली-110002.
22/2, मिशन रोड, बंगलौर-560027

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैच में जीशान अली के साथ खेल रहे थे, तभी खेल समीक्षकों और टेनिस के जानकारों को लग गया था कि यह किशोर जरूर कुछ कर दिखाएगा.

—तबरेज महमूद खां, छपरा (बिहार)

खेल खेल में

'बहुत कठिन है डगर' (31 जुलाई) वास्तविकता के करीब है. मैं एक बीमा कंपनी में विधि अधिकारी हूं. जब मैं पुणे में नियुक्त था तो वहां हिंदी कार्यशालाएं आयोजित की जाती थीं. वहां से लौटे प्रशिक्षणार्थियों से जब मैंने पूछा तो उनका सपाट जवाब होता, "सीखना क्या था, पिकनिक मनाने गए थे." हिंदी के प्रति हम कितने गंभीर हैं, इसकी पुष्टि इससे हो जाती है. —नीरज अवस्थी, कानपुर (उ.प्र.)

■ लेख लेखक के पूर्वाग्रह और उसकी अज्ञानता ही जाहिर करता है. असलियत यह है कि हिंदी अधिकारियों ने एक लंबी लड़ाई लड़ कर हिंदी के लिए अनुकूल वातावरण तैयार किया है. अब अगर इसमें करोड़ों रु. खर्च हो रहे हैं तो हिंदी अधिकारियों का क्या दोष?

—सूरज प्रकाश, अहमदाबाद (गुज.)

कार्यक्रम की खिल्ली

लालू प्रसाद यादव का 'बड़ा परिवार' (31 जुलाई) देश के परिवार कल्याण कार्यक्रम की खिल्ली उड़ाने वाला है. पुत्र

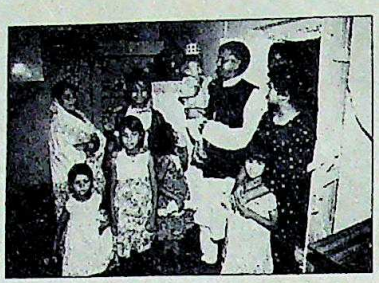

की कामना में यदि इसी तरह कार्यक्रमों को ठेंगा दिखाया जाता रहा तो देश के विकास कार्यक्रमों और जनसंख्या नियंत्रित करने वाली योजनाओं का क्या होगा?

—देविका, चंद्रपुर (महाराष्ट्र)

वही हाल

विशेष लेख 'घुन साफ करने की धुन' (31 जुलाई) पढ़ा. मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव ने शुरू में भ्रष्टाचार विरोधी कड़ा रुख अपनाकर और बिहार को सुधारने के लिए अनेक घोषणाएं कर इस राज्य के उज्ज्वल भविष्य की उम्मीद जगाई थी. लेकिन इन घोषणाओं के लागू होने की आशाएं क्षीण होती जा रही हैं. आज भी पहले की तरह रोजाना लूटपाट, अपहरण एवं हत्याओं का सिलसिला जारी है.

—राजीव कमल मिश्र, गोपालगंज (बिहार)

मजबूरी की इंतिहा

'मानव अंगों की मंडी' (31 जुलाई) में मानव अंगों के व्यापार का ब्यौरा दिल दहलाता है. बुनियादी जरूरतें पूरी करने के लिए खुद को विकलांग बनाना गरीबी और मजबूरी की इंतिहा ही है. निरर्थक योजनाओं पर करोड़ों रु. बहाने वाले हमारे राजनीतिक और समाज के ठेकेदार उसका आधा भी इन लोगों की रोटी, कपड़े, रोजगार जैसी जरूरतों पर खर्च करें तो मानवता इनकी ऋणी रहेगी.

—सुधीर 'समीर', शिवपुरी (म.प्र.)

■ अंग बेचने वाले और खरीदने वाले दोनों ही हालात के आगे मजबूर होते हैं. फर्क यह है कि एक पक्ष जमाने की मार खाया हुआ होता है, तो दूसरा कुदरत की.

—संजय 'कुसमीका' जैन, भोपाल

यदि आपका जन्म १९६५ से पहले हुआ है तो इस विज्ञापन को ध्यान से पढ़िए

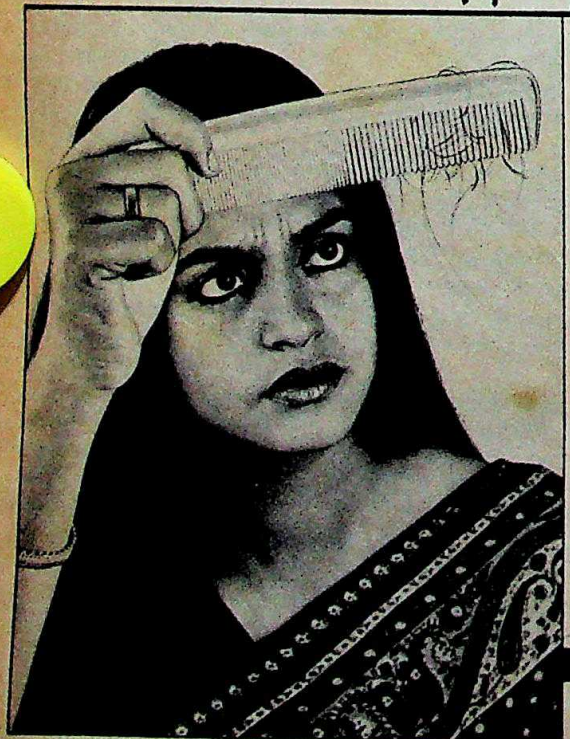

२५ साल से अधिक उम्र वाले १० में से ९ लोगों के बाल झड़ रहे हैं....लेकिन उन्हें इसका पता नहीं!

क्या आप उन ९ लोगों में से एक है? तब तो आज ही यह परीक्षण कीजिए.

अपने बालों को ज़ोरों से कंघी कीजिए. अगर कंघी पर बाल उतर आएं तो समझ लीजिए आपके बाल झड़ रहे हैं.

इसका हल है — प्योर सिल्विक्रिन

बालों के झड़ने का कारण है — ज़रूरी अमिनो एसिड्स की कमी — जो आपके बालों की कुदरती ख़ुराक हैं. केवल प्योर सिल्विक्रिन में ही वैज्ञानिक अनुसंधान से बना वह फार्मूला है जो इस कमी को पूरा करता है. इसके कारण हैं :

१. प्योर सिल्विक्रिन १७ अमिनो एसिड्स का अनोखा मिश्रण है — आपके बालों की कुदरती ख़ुराक.

२. रेडियो ट्रेसिंग का प्रयोग करने वाली विश्व प्रसिद्ध अनुसंधान तकनीक यह प्रमाणित करती है कि प्योर सिल्विक्रिन, बालों की जड़ों तक बहुत जल्दी पहुँचती है, बालों में कुदरती ख़ुराक की कमी पूरी करती है और बालों को फिर से स्वस्थ बनाती है.

उत्तम परिणाम के लिए प्योर सिल्विक्रिन को सर की त्वचा पर तब तक प्रतिदिन दो बार मलिए जब तक आपके बालों का स्वास्थ्य सामान्य नहीं हो जाता.

जल्दी कीजिए! आज ही प्योर सिल्विक्रिन आज़माइए.

प्योर सिल्विक्रिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौदेबाजी से नहीं चलती नेतागीरी

सभी रेखाचित्र: अजीत नैनन

किसी लोकतंत्र में नेता के बारे में जनता की राय बेहद महत्वपूर्ण होती है. उथल-पुथल के दौर में जनता को अपने साथ ले चलने की नेता की क्षमता इस राय से सीधे-सीधे प्रभावित होती है. यह राय किसी सैद्धांतिक या नीतिगत सहमति या मतभेद से नहीं बनती बल्कि समस्याओं और संकटों से निबटने की नेता की क्षमताओं के आकलन से बनती है. प्रभावशाली नेता वही होता है जो अपने कार्यक्रमों, नीतियों और निर्णयों के साथ जनता को ले चलता है. लेकिन जनता तभी साथ चलती है जब उसे विश्वास हो कि बागडोर जिसके हाथ में है वह ईमानदार और संकल्पवान है. नेता को यह भी साबित करना होता है कि परीक्षा की घड़ी में भी वह अपने लक्ष्य और अपने चरित्र के प्रति ईमानदार है.

अभी कल तक प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह की छवि दुविधाग्रस्त रणछोड़ राजा की थी. यह छवि उनकी सरकार की नीतियों के कारण नहीं बनी थी, बल्कि इसलिए बनी थी क्योंकि वे पार्टी में गड़बड़ी फैलाने वालों से सीधे-सीधे निबटने से कतराते रहे थे. लेकिन आज उनके बारे में धारणा बदल गई-सी दिखती है. देवीलाल की बरखास्तगी ने उनके कद को थोड़ा बढ़ाया ही है. लोग अब कहने लगे हैं कि उन्होंने सचमुच एक नेता की तरह कार्रवाई की. लोगों की इस मान्यता में एक संदेश छिपा है.

इस बात से कोई इनकार नहीं करता कि राजनीति में नेता को जोड़-तोड़, मान-मनौवल, टालमटोल करनी ही पड़ती है. लेकिन एक ऐसा वक्त भी आता है जब राजनीति और सौदेबाजी छोड़कर नेता को आरपार करने का फैसला करना पड़ता है. यह ऐसा वक्त होता है जब इस तरह के फैसले से बचने का मतलब आत्मघात होता है. तब नेता नेता नहीं रह जाता. लोग उसका साथ छोड़ देते हैं.

शाह बानो के मामले पर सर्वोच्च न्यायालय के फैसले के बाद राजीव गांधी ऐसे ही वक्त से रू-ब-रू थे. सवाल यह था कि क्या राजीव आधुनिक धर्मनिरपेक्षवादी की अपनी छवि के अनुरूप कार्रवाई करेंगे या राजनैतिक मजबूरियों के आगे घुटने टेक देंगे. मुस्लिम महिला विधेयक पेश करके वे कमजोर साबित हुए.

एक अच्छे नेता को मालूम होना चाहिए कि सौदेबाजी कहां हो सकती है, कहां नहीं. अगर वह मानता है कि हर चीज की सौदेबाजी हो सकती है तो उसे यह भी याद रखना चाहिए कि इस हर चीज में उसका नेतृत्व भी शामिल हो सकता है.

अराजकता से बचना है तो...

राष्ट्र को एकजुट रखने वाले नाजुक नैतिक और सामाजिक तानेबाने को आज सबसे बड़ा खतरा इस बात से है कि हिंसा, उद्धत अनुशासनहीनता और अराजकता को सैद्धांतिक जामा पहनाया जा रहा है. यह काम हथियारबंद आतंकवादी ही नहीं कर रहे हैं बल्कि आम लोग भी कर रहे हैं. आज बात-बात पर चाकू, बंदूक निकल आते हैं.

पिछले कुछ महीनों की घटनाओं को उदाहरण माना जा सकता है. राजधानी की सीमा पर लगी मारुति फैक्टरी के मजदूरों ने प्रधानमंत्री से गुहार की है कि उन्हें ओमप्रकाश चौटाला के समर्थन वाले प्रतिद्वंद्वी मजदूर संघ के गुंडों से सुरक्षा प्रदान की जाए. हरियाणा पुलिस पर उन्हें भरोसा नहीं है. इसी तरह जनता दल के एक विधायक के कुछ गुंडे एक प्रिंसीपल की इसलिए जानलेवा पिटाई कर देते हैं क्योंकि विधायक के बेटे को उस स्कूल में दाखिला नहीं दिया गया.

उधर मेरठ में भाजपा के एक नेता की हत्या राजनैतिक बदले की कार्रवाई के तहत कर दी जाती है. और इस हत्या की प्रारंभिक जांच भर करवाने के लिए लोगों को थाने को तहस-नहस करने की मुद्रा अपनानी पड़ती है. भुवनेश्वर में एक जिला अधिकारी मनमाने तरीके से एक विधायक की गिरफ्तारी के आदेश जारी कर देता है महज इसलिए कि विधायक ने स्थानीय प्रशासन पर कामचोरी के आरोप लगाने की हिम्मत की थी.

बंबई के सरफराज कुतुबुद्दीन ने पुलिस पर जो आरोप लगाया है वह भीतर तक कंपा देता है. उसने कहा है कि पुलिस ने हिरासत में उसे अपनी मां के साथ संभोग करने को बाध्य करने की कोशिश की थी. रांची में पुलिस हिरासत में होने वाली मौतों का सिलसिला जारी है. और राजधानी दिल्ली में प्रदर्शनकारी वकील प्रधानमंत्री कार्यालय तक पहुंचने के लिए निषेधाज्ञा का उल्लंघन करते हैं और पुलिस की घेराबंदी तोड़ने की कोशिश करते हैं.

निष्कर्ष यह कि व्यवस्था चरमरा रही है. इसका दोष नेताओं और सरकारी अधिकारियों के सिर जाता है. नेतागण गुंडों और ठगों को शह और संरक्षण देते हैं. सरकारी अधिकारी जीहुजूरियों जैसा व्यवहार करते हैं, पुलिसवाले नाजी सैनिकों जैसा. अदालतें भुक्तभोगियों को अक्सर अपेक्षित न्याय नहीं दिला पातीं. और आम लोग कानून को अपने हाथ में ले लेते हैं. इस घृणास्पद दुष्चक्र के कारण सरकार की नैतिक पकड़ कमजोर होती है. ऐसे में वी.पी. सिंह की मूल्य आधारित राजनीति और प्रशासन का फर्ज है कि वह देश की मृतप्राय संस्थाओं में जान फूंके और नेता-पुलिस-अपराधी की तिकड़ी को तोड़ने की कोशिश करे. वरना इसका विकल्प अराजकता ही है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैदान में

● केंद्र की सत्ता छिन जाने के बाद आशा की जा रही थी कि पूर्व रेलमंत्री माधवराव सिंधिया अपने विरोधियों से राज्य पार्टी का नेतृत्व छीनने की कोशिश करेंगे.

लेकिन लगता है कि सिंधिया इस बात में यकीन करते हैं कि बड़ी लड़ाइयां मैदान में जीती जाती हैं. सो, वे भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के अध्यक्ष पद की लड़ाई लड़ने की तैयारी कर रहे हैं.

सिंधिया पहले से ही क्रिकेट बोर्ड के सदस्य हैं. लेकिन इस संस्था के महत्वपूर्ण पद को हासिल करने की धुन में वे जनता दल से भी हाथ मिलाने से नहीं झिझके. हाल ही में उन्होंने प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के साथ रात्रिभोज किया और ग्वालियर में रेलमंत्री जॉर्ज फर्नांडीस से मिले.

इस भोज और मेलजोल की वजह सीधी-सादी है. क्रिकेट बोर्ड के संविधान में प्रावधान है कि पांचों क्षेत्र बारी-बारी से अध्यक्ष पद के दावेदार होंगे. सिंधिया के लिए यह व्यवस्था अड़चन है. उन्हें अपने क्षेत्र की बारी की प्रतीक्षा करनी होगी. मौजूदा अध्यक्ष चूंकि पूर्व क्षेत्र के हैं इसलिए जब तक संविधान नहीं बदला जाता, सिंधिया इस पद पर नहीं आ सकते. बोर्ड पर रेल विभाग का बहुत प्रभाव है, इसलिए सिंधिया रेलमंत्री फर्नांडीस से घनिष्ठता बढ़ा रहे हैं. इस मेलजोल पर कुछ लोग टिप्पणी कर सकते हैं कि क्रिकेट का यह खेल मैदान पर तो नहीं खेला जा रहा मगर इसका शोर जरूर सुना जा रहा है.

खत और भविष्यवाणी

● विश्वनाथ प्रताप सिंह शौकिया कवि हैं. और उनके भरोसेमंद सहयोगी विनोद पांडे कवि के साथ-साथ ज्योतिषी भी हैं. लेकिन अब पता चला है कि प्रधानमंत्री भी ज्योतिषी हैं, भले ही वे अवचेतन मन से भविष्यवाणी करते हों.

हाल ही में राजनीतिकों और पत्रकारों के साथ अनौपचारिक बैठक में वी.पी. सिंह से पूछा गया कि क्या विनोद पांडे ने पूर्व उप प्रधानमंत्री देवीलाल की फर्जी चिट्ठी से पैदा हुए संकट के नतीजे की भविष्यवाणी की थी.

वी.पी. सिंह ने इसके जवाब में एक कविता पढ़ी: *"खत उनका होगा/मजमून तुम्हारा होगा/लेकिन/लिफाफे की तरह मैं ही फाड़ा जाऊंगा."* उन्होंने यह कविता कई साल पहले रची थी.

सभी कार्टून: अजीत नैनन

उनसे ऐसी भविष्यवाणी की उम्मीद तो की ही जा सकती थी.

बीज और फल

● दीपक पहले अपने घर में ही जलाया जाता है. लगता है, देवीलाल इस कहावत से मूल्य के आधार पर नहीं तो गांव के आधार पर जरूर अभिभूत हैं.

ओमप्रकाश चौटाला को उन्होंने दोबारा मुख्यमंत्री बना तो दिया मगर जो बवाल मचा तो चौटाला को इस्तीफा ही देना पड़ गया. इस अपमान के बावजूद ताऊ अपने भाषण, प्रतीक, विषयवस्तु के जरिए यह दिखाने को दृढ़प्रतिज्ञ थे कि असली लड़ाई शहरियों और उन ग्रामीणों के बीच है जिनका कि वे प्रतिनिधित्व करते हैं. सो, अपने नई दिल्ली निवास को गंवई रूप-रंग देने के लिए देवीलाल ने राष्ट्रीय बीज निगम से शाही विलिंगडन क्रिसेंट कोठी के बाहर एक दुकान खोलने को कहा.

पिछले पखवाड़े केंद्रीय मंत्रिमंडल से उप-प्रधानमंत्री की बरखास्तगी के बाद भी निगम के तीन कर्मचारी सवेरे 9 बजे से शाम 4 बजे तक सब्जियों के बीजों से भरी दुकान में बैठे मिलते हैं. लेकिन इस दुकान पर शायद ही कोई आता है. चुटकी लेने वालों का कहना है कि अब देवीलाल के घर बीज खरीदने कौन आएगा.

मनके में रमा मन

● पूर्व गृहमंत्री बूटा सिंह ने अब सार्वभौमिक भाईचारे की शरण ले ली है. रामजन्मभूमि और बाबरी मस्जिद विवाद पर होने वाली समझौता वार्ताओं में वे प्रमुख व्यक्ति हुआ करते थे. उस दौरान उन पर कुछ लोग इंका के चुनाव प्रचार में मुस्लिम कार्ड के इस्तेमाल का, तो कुछ लोग हिंदू कार्ड खेलने की वकालत करने का आरोप लगाते थे. लेकिन बताया जाता है कि अपनी हार और अपनी पार्टी के सत्ता से हटने के बाद राजीव गांधी के इस भरोसेमंद बलाधिकारी ने काफी आत्मलोचन कर लिया है.

उन्होंने हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन सभी तरह के कार्ड खेलना बंद कर दिया है. बल्कि अब वे धर्म मानव संघ में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं और अपने

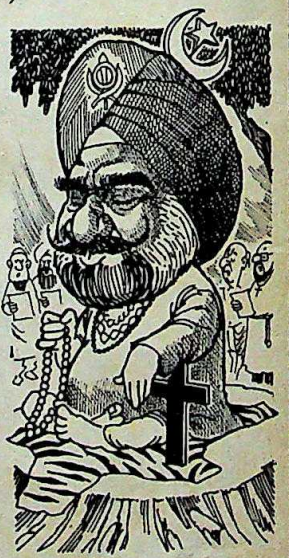

अशोक रोड निवास में पंडितों, ग्रंथियों, मौलवियों, पुजारियों और साधुओं के प्रवचन सुनते हैं. सार्वभौमिक भाईचारे का प्रचार करने वाली यह संस्था खुद उन्होंने ही बनाई है. उनके यहां किसी भी दिन तड़के पहुंचने पर उन्हें दो घंटे तक पाठ करते पाया जा सकता है. इसके बाद विभिन्न धर्मग्रंथों का पाठ होता है और बूटा सिंह उंगलियों से मनका घुमाते हुए समाधिस्थ हो जाते हैं.

...और एक चुटकी

देवीलाल की बरखास्तगी के बाद उनके सहयोगियों का वार्तालाप: "बंगलूर में देवीलाल को अपना आठ किलो वजन नहीं घटाना चाहिए था. दूसरों पर बोझ डालने के लिए वजन ही नहीं बचा!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

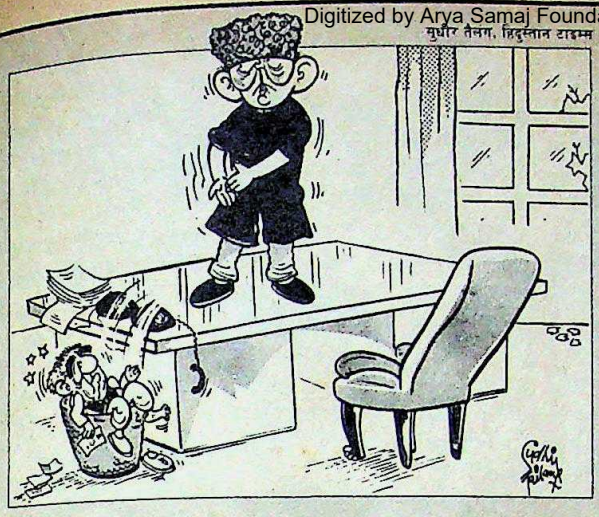

• अगर अरुण नेहरू ईमानदार है तो फिर इस देश में कोई बेईमान हो ही नहीं सकता.

■ **देवीलाल,** *मंत्रिमंडल से निकाले जाने के बाद पत्रकारों से*

• आखिर हम लोग भी आदमी ही तो हैं.

■ **शरद यादव,** *माया*

• चाहता तो मैं भी मंत्रिमंडल में शामिल हो सकता था. मगर उप प्रधानमंत्री के साथ जो बरताव हुआ उसी की आशंका से मैंने यह फैसला नहीं किया था.

■ **चंद्रशेखर,** *टाइम्स ऑफ इंडिया*

• जितना शोर मचाकर ये लोग आए थे हमें भी तो पता लगता कि इसमें सुर कितना है. इस बेसुरी ताल से तो लोकतंत्र बहरा हो जाएगा.

■ **बिरजू महाराज,** *जनसत्ता*

• जब मेरे 11 वर्षीय लड़के ने मुझसे कहा कि वह लोकसभा की कार्यवाही देखना चाहता है तब मेरे मन को यह सोच कर झटका लगा कि संसद की गतिविधियां उस दिन कहीं ऐसी न हों कि देखने के बाद उसके मन को भी झटका लगे.

■ **जगदीप धनकड़ (संसदीय उपमंत्री),** *राजस्थान पत्रिका*

• भारतीय किसान यूनियन की सारी मांगें मान ली जाएं तो राज्य में विकास के सभी कार्य ठप हो जाएंगे.

■ **मुलायम सिंह यादव,** *नई दुनिया*

• मेरे आठ बच्चे उस समय इस दुनिया में आए जब मैं विपक्ष में था तथा बिहार में कांग्रेस सरकार के नसबंदी कार्यक्रम के विरुद्ध लड़ रहा था.

■ **लालू प्रसाद यादव,** *पंजाब केसरी*

• कप्तान या उप कप्तान बनने की मैंने कभी चिंता ही नहीं की.

■ **किरण मोरे,** *स्पोर्ट्सवर्ल्ड*

• मैं अगर राज सिंह डूंगरपुर की जगह होता तो अब तक इस्तीफा दे चुका होता.

■ **मंसूर अली खां पटौदी,** *आज*

• मैं नहीं समझता कि मैं बच्चा हूं.

■ **आमिर खां,** *स्टारडस्ट*

• मैं लिपटने, चूमने या किसी के पैर पकड़कर उसे गुरु कहने में यकीन नहीं करती. मैं जनता पर भरोसा करती हूं. वही मेरी किस्मत का फैसला करेगी.

■ **वर्षा उषगांवकर,** *सिने ब्लिट्ज*

• जो बात मेरे दिल में उतर जाए मैं उसे अपने संगीत से दूसरे के दिल में उतार देती हूं क्योंकि मैं ओरिजिनल कलाकार हूं. यह मेरा दावा है, जब जिसके जी में आए मुझे आजमा ले.

■ **पार्वती खां,** *नवभारत टाइम्स*

आपकी चहेती पत्रिका
आपके दरवाज़े पर
न खरीदने का झंझट...
न खत्म होने का डर

इस सुविधा का लाभ उठाइए.
अपनी चहेती इंडिया टुडे
घर बैठे – नियमित पाइए.
न खरीदने जाने की जरूरत...
न अंक खत्म होने का डर,
इंडिया टुडे
समय से पहुंच जाए आपके घर!

बस कूपन भर कर भेज दीजिए,
देर मत कीजिए!

नाम: _____

डाक पता: _____

मूल्य: वार्षिक रु. 132/-
भुगतान का माध्यम-चैक/मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट
(दिल्ली से बाहर के चैकों के लिए 5/- रु. प्रति चैक की अतिरिक्त राशि देय है।)
कृपया चैक निम्नलिखित नाम पर बनाएं और इस पते पर भेजें:
लिविंग मीडिया इंडिया लि.
पो. बॉ. नं. 706,
फरीदाबाद- 121 007
(हरियाणा)

इंडिया टुडे
देश की भाषा में देश की धड़कन

MILESTONES/IT/120

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनोखा न्याय

■ अपनी ढुलमुल गति के लिए मशहूर पुलिस का अचानक मुस्तैद होकर नागरिकों की मदद के लिए तैयार हो जाना कभी-कभी कैसे गुल खिला सकता है इसकी मिसाल पिछले पखवाड़े

सभी कार्टून: जयंतो

गाजियाबाद में देखने को मिला.

किस्से की शुरुआत हुई एक रात में हुई दो चोरियों से. दो चोरों ने एक के बाद एक दो पत्रकारों के यहां अपना करतब दिखाया और एक के घर से चार दीवार घड़ियां तथा दूसरे के घर से कुछ नकदी पर हाथ साफ कर दिया. मगर बदकिस्मती यह रही कि उसी रात पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया. थाने में जब पूछताछ की गई तो उन्होंने एक झाड़ी में छिपाकर रखी गई घड़ियां और नकदी पुलिस के हवाले कर दी. चोरों के पकड़े जाने की खबर एक पत्रकार के यहां पहुंची और वे तुरंत थाने जा पहुंचे. उनके रसूख का चमत्कार यह हुआ कि थानेवालों ने उनकी घड़ियां उन्हें हाथोंहाथ लौटा दीं. पत्रकार महोदय ने यह सोचा कि नकदी भी शायद उन्हीं के यहां से चुराई गई है. लिहाजा उन्होंने नकदी की भी मांग की और पुलिसवालों ने तुरंत हुकुम बजा दिया.

लेकिन बात तब उलझ गई जब दूसरे पत्रकार महोदय को पता चला और वे भी अपनी नकदी लेने थाने आ धमके. बात हाथ से निकलती देख थानेदार ने फैसला किया कि यह तय करने का जिम्मा चोरों पर छोड़ दिया जाए कि कौन-सा माल किसका है. यह खबर आने तक मामला चोरों की ही अदालत में लंबित था.

इंसाफ की इंतिहा

■ लोगों को अक्सर पुलिस के बारे में शिकायत रहती है कि उसके नाकारापन की वजह से न तो चोर पकड़े जाते हैं और न चोरी का माल बरामद होता है. लेकिन दिल्ली के एक महोदय सिर्फ इस वजह से मुसीबत में फंसे हुए हैं कि एक चोरी के मामले में पुलिस ने मुस्तैदी दिखाकर न केवल एक चोर को पकड़ लिया बल्कि उनकी चोरी गई साइकिल भी बरामद करके उन्हें वापस दिलवा दी.

किस्सा पांच साल पुराना है. राजेंद्र नगर के महेश पंजवानी की साइकिल चोरी हो गई. लेकिन उन्होंने यह सोचकर पुलिस में रपट नहीं लिखवाई कि इससे कुछ फर्क पड़ने वाला नहीं है. लिहाजा, उन्होंने नई साइकिल खरीद ली. मगर वाह री दिल्ली पुलिस की मुस्तैदी! एक दिन उसने न सिर्फ चोर को धर दबोचा बल्कि उसके यहां से पकड़ी गईं साइकिलों के आधार पर पंजवानी के घर तक भी जा पहुंची. उन्हें कहकर ताजा पुलिस रपट दर्ज कराई गई और अदालत जाकर उन्हें उनकी साइकिल भी दिलवा दी गई. लेकिन इस शर्त के साथ कि भविष्य में वे जब भी अदालत में आएं साइकिल साथ लेकर आएं. टूटी-फूटी हालत में मिली इस साइकिल को ये सज्जन ऑटोरिक्शा में लादकर

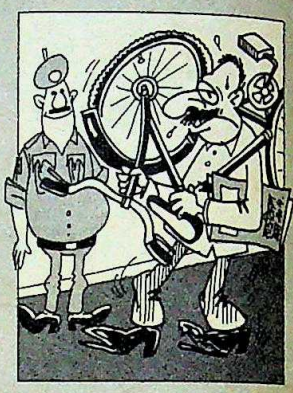

तब से बार-बार अदालत में हाजिर हो रहे हैं. अभी मुकदमे का फैसला होना बाकी है लेकिन अब तक इस अदालत यात्रा में उनकी जेब से जितना पैसा निकल चुका है उतने में शायद एक और नई साइकिल आ जाए.

उपकार का फल

■ ऐसा कई बार हो चुका है कि किसी कर्मचारी की मृत्यु के कई साल बाद भी उसके तबादले के आदेश जारी कर दिए जाएं या मुद्दत पहले गुजर चुके किसी व्यक्ति को अदालत में हाजिर

होने का आदेश दे दिया जाए. लेकिन ऐसा कभी-कभार ही होता है कि किसी अस्पताल की ओर से किसी को उसके मरने की दुखदायी खबर भेजी जाए.

पुणे नगरपालिका के एक पूर्व सदस्य शिवाजीराव आढव को पिछले दिनों अपने यहां के एक अस्पताल की ओर से तार मिला जिसमें उन्हें बताया गया कि अस्पताल में बीमारी से लड़ते हुए उन्होंने दम तोड़ दिया. तार के मजमून पर हैरान-परेशान आढव ने तुरंत अस्पताल जाकर तहकीकात की और तब कहीं जाकर मामला साफ हुआ. दरअसल हुआ यह था कि कुछ दिन पहले ही आढव को अपने इलाके के किसी गरीब बुजुर्ग के गंभीर हालत में बीमार होने की खबर मिली. उसकी हालत पर रहम खाकर वे उसे अस्पताल ले गए. उसे अपने रसूख के बूते पर वहां दाखिल कराया और दाखिला रजिस्टर में ही अपना पता लिखने के साथ यह टिप्पणी भी दर्ज कर दी कि थोड़े-थोड़े दिनों बाद उन्हें मरीज की हालत के बारे में खबर भेजी जाए. अस्पताल के कर्मचारियों की मुस्तैदी का आलम यह रहा कि मरीज की मृत्यु के बाद उन्होंने रजिस्टर से आढव का पता नोट किया और मरीज की जगह उन्हीं का नाम लिखकर उन्हें उनकी मौत का तार भेज दिया.

फौलादी चोर

■ अपने यहां रखे गए पैसे की रक्षा के लिए बैंकों द्वारा इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से लेकर बंदूकधारी चौकीदार तक कुछ भी तैनात किया जाना एक आम बात है. लेकिन छोटे बैंकों में आज भी मजबूत और वजनी तिजोरी को ही सुरक्षा की गारंटी माना जाता है. महाराष्ट्र में औरंगाबाद के एक सहकारी बैंक को भी अपने खजाने की तिजोरी के वजन पर भरोसा था. लेकिन पिछले दिनों चोरों ने अपने बाहुबल से जिस तरह तिजोरी समेत बैंक अधिकारियों के पैरों के नीचे की जमीन खिसका दी वह अब स्थानीय लोगों के लिए कौतूहल और हंसी का मुद्दा बन गया है.

इस बैंक के कर्मचारी जब एक सुबह काम पर पहुंचे तो वे यह देखकर दंग रह गए कि बैंक का दरवाजा खुला है और भीतर रखी रहने वाली भारी-भरकम तिजोरी अपनी जगह से गायब है. तिजोरी में उस रात तकरीबन पौने तीन लाख रु. की नकदी रखी थी. इत्तला मिलने पर पुलिस भी आ पहुंची लेकिन वह केवल इतना ही पता लगा पाई कि चोरों ने तिजोरी को खोलकर पैसे निकालने पर मेहनत करने के बजाए उसे उठाकर अपने साथ ले जाना ही बेहतर समझा. लेकिन पुलिस हैरान है कि 600

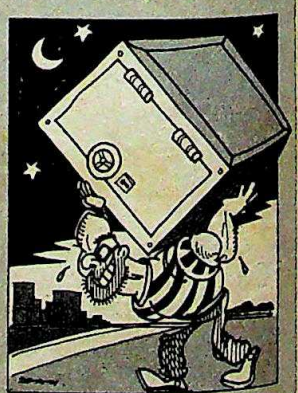

किलोग्राम से भी ज्यादा वजनी तिजोरी को चोरों ने बैंक से बाहर कैसे निकाला और उसे किस वाहन पर रखकर ले उड़े. उम्मीद की जा रही है कि चोरों के पकड़े जाने पर ही पुलिस को इस तकनीक का ज्ञान मिलेगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

BAT-MAN, जीता जूनियर विंबलडन !

ब्रिटानिया अमृतराज टेनिस (BAT.) योजना की ओर से लिएंडर पाएस को विंबलडन जूनियर एकल जीतने पर बधाई

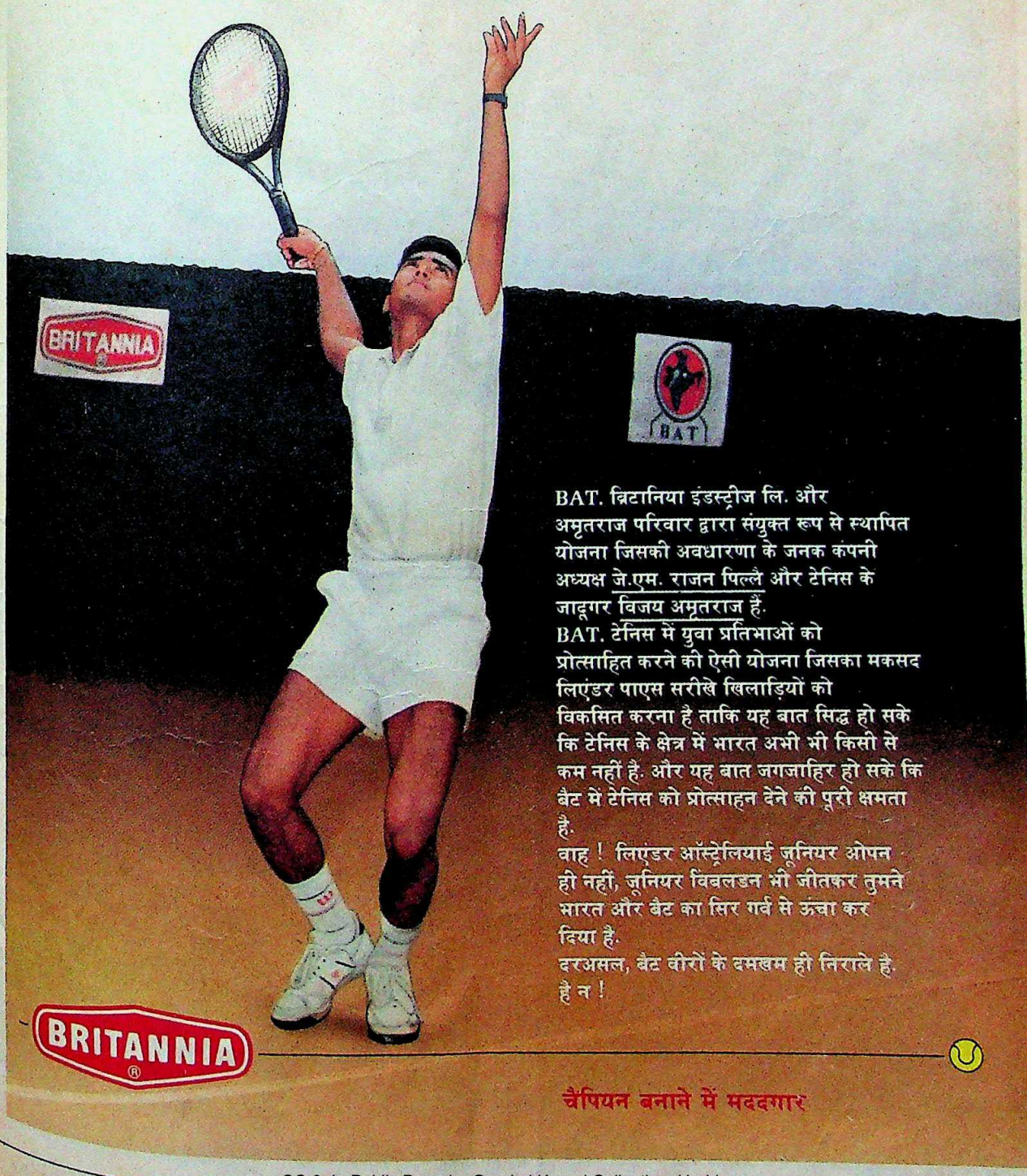

BAT. ब्रिटानिया इंडस्ट्रीज लि. और अमृतराज परिवार द्वारा संयुक्त रूप से स्थापित योजना जिसकी अवधारणा के जनक कंपनी अध्यक्ष जे.एम. राजन पिल्लै और टेनिस के जादूगर विजय अमृतराज हैं.

BAT. टेनिस में युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने की ऐसी योजना जिसका मकसद लिएंडर पाएस सरीखे खिलाड़ियों को विकसित करना है ताकि यह बात सिद्ध हो सके कि टेनिस के क्षेत्र में भारत अभी भी किसी से कम नहीं है. और यह बात जगजाहिर हो सके कि बैट में टेनिस को प्रोत्साहन देने की पूरी क्षमता है.

वाह ! लिएंडर ऑस्ट्रेलियाई जूनियर ओपन ही नहीं, जूनियर विंबलडन भी जीतकर तुमने भारत और बैट का सिर गर्व से ऊंचा कर दिया है.

दरअसल, बैट वीरों के दमखम ही निराले है. है न !

BRITANNIA

चैंपियन बनाने में मददगार

O&M3105

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाकिस्तान

शिकंजे में बेनज़ीर

शेखर गुप्ता और मुशाहिद हुसैन, पाकिस्तान में

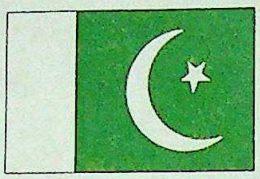

बहुत नहीं, सिर्फ पांच वर्ष पहले की बात है. स्वदेश लौटने पर उनका जिस शानदार तरीके से स्वागत हुआ था वैसा स्वागत पाकिस्तान के किसी दूसरे नेता का नहीं हुआ था. तब बेनज़ीर भुट्टो कमउम्र थीं और अपने मृत पिता की राजनैतिक विरासत के लिए लगभग अकेले ही संघर्ष कर रही थीं. मगर मन में दृढ़ संकल्प था. उनके पक्ष में दो बातें थीं. मुल्क को आजादी तो करीब 40 साल पहले ही मिल चुकी थी मगर लगभग इन तमाम वर्षों में लोगों को लोकतंत्र से वंचित रखा गया था और वे इस कारण नाराज थे. यह नाराजगी बेनज़ीर के लिए वरदान थी. दूसरा दैवी संयोग यह हुआ कि राष्ट्रपति जनरल जिया-उल-हक विमान हादसे के शिकार हो गए. इन्हीं अनुकूलताओं के सहारे वे इस्लामाबाद पहुंचीं और एक आधुनिक इस्लामी देश की पहली निर्वाचित महिला शासनाध्यक्ष बन बैठीं. यह आज से 19 महीने पहले की बात है.

लेकिन पिछले पखवाड़े वे फिर उसी जगह पहुंच गई जहां से चली थीं. आज फिर वे अकेली हैं, दहशतजदा हैं, चारों तरफ से जैसे घेरेबंदी में कैद हैं—फरेब और साजिश से पराजित लेकिन आज उनके लिए हालात में एक महत्वपूर्ण अंतर आ गया है. पहले जब वे राजनैतिक वनवास में थीं तब उनके लिए लोगों के मन में व्यापक सहानुभूति थी. आज वह सहानुभूति गायब है. जिया के वारिसों, सेना के जनरलों और अपनी ही पार्टी के बुजुर्गों के हाथों परास्त होकर जब वे इस्लामाबाद से कराची लौटीं तब कायदे-

बेनजीर वहीं पहुंच गईं जहां से चली थीं. फरेब और साजिश से पराजित होकर वे अकेली रह गई हैं

विदाई यात्राः बरखास्तगी के बाद इस्लामाबाद में प्रधानमंत्री निवास छोड़तीं बेनजीर

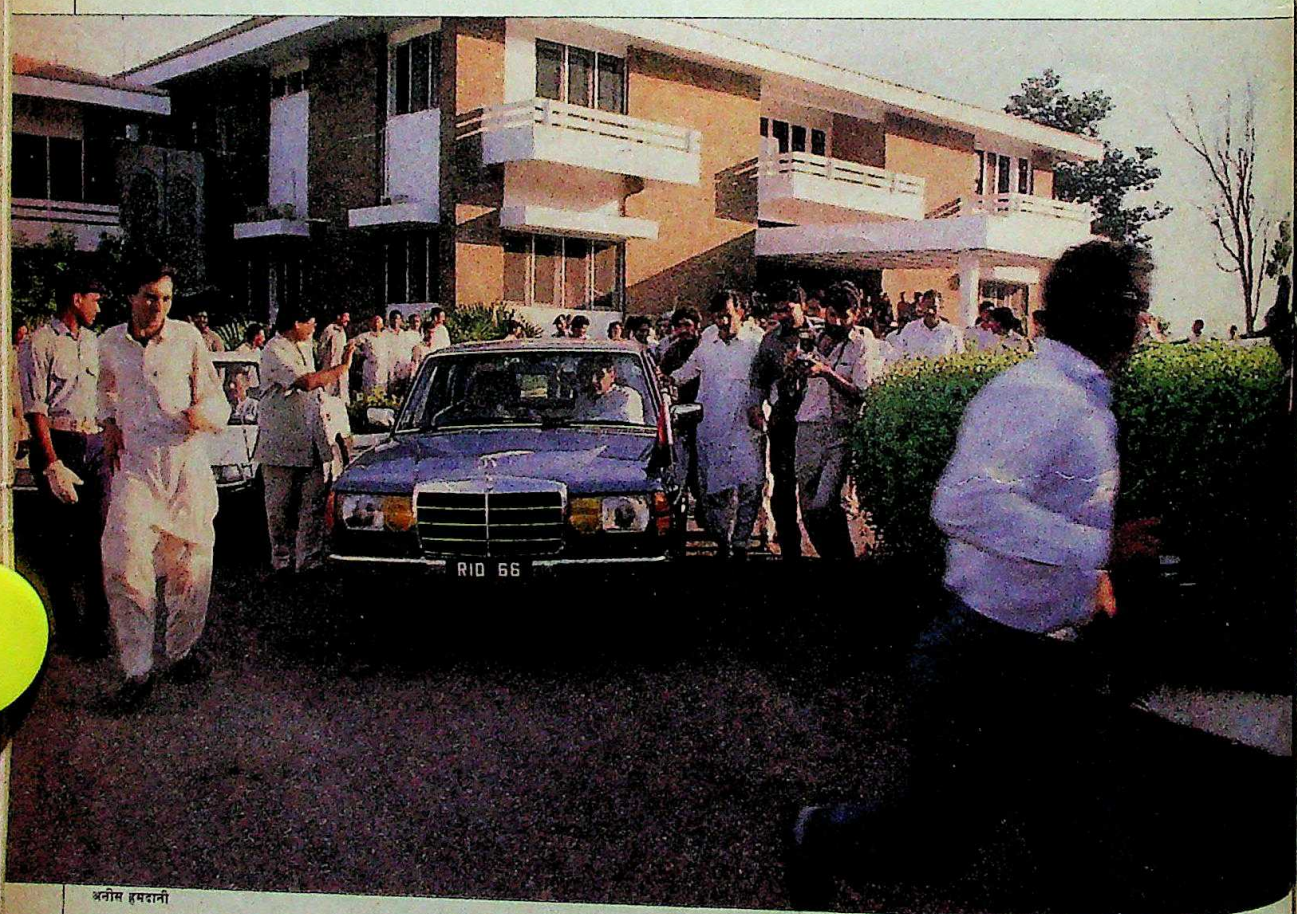

अनीस हमदानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमोद पुष्करणा

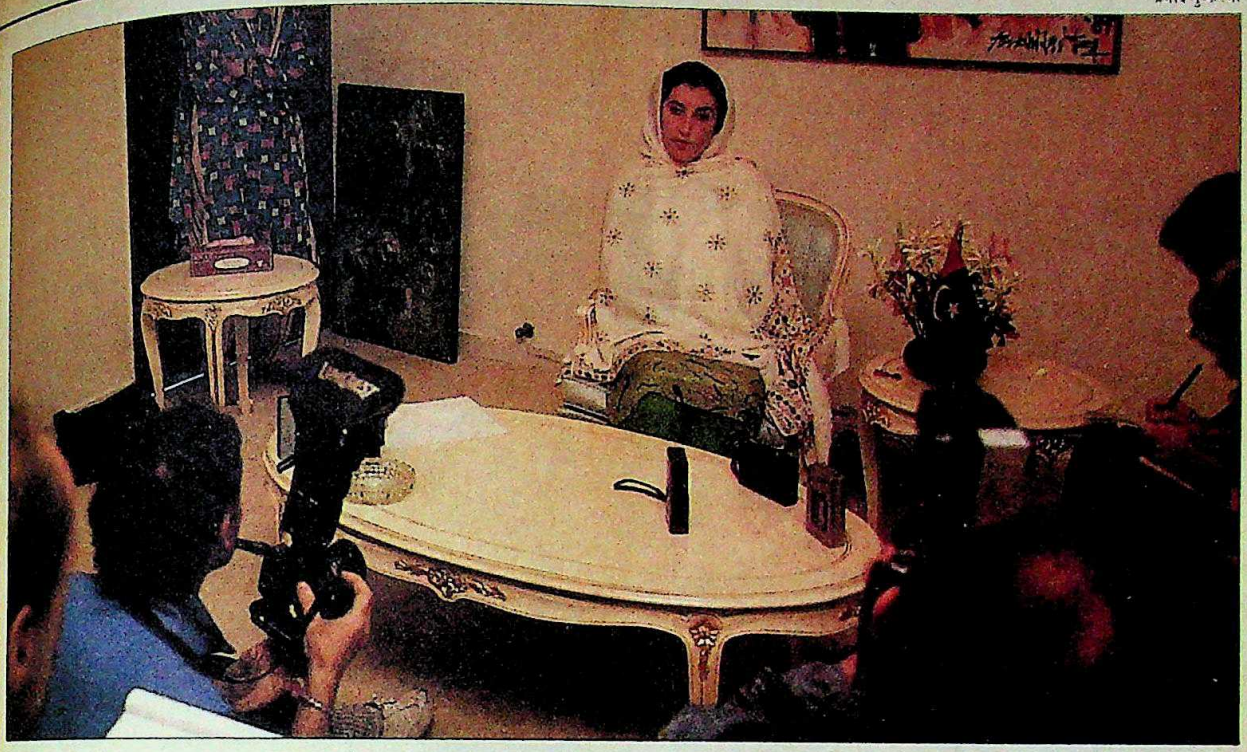

सख्त तेवरों के बावजूद आज वे 19 महीने पहले सत्ता में आईं बेनज़ीर की छाया मात्र भी नहीं हैं

अचानक बरखास्तगी के बाद अपनी पहली पत्रकार वार्ता में बेनज़ीर एकदम अकेली दिखीं

आजम हवाई अड्डे पर उनके स्वागत में इस बार लोगों का सैलाब नहीं उमड़ रहा था. लेकिन यह स्पष्ट था कि अपने शहर में वे सिर्फ अपने जख्मों को सहलाने ही नहीं, निर्णायक संघर्ष के लिए हौसला जुटाने के लिए लौटी हैं.

बेनज़ीर को एहसास था कि यह संकट आने वाला है. सेना के सयानों के खिलाफ जब वे लड़ रही थीं, उन्हें पता चल गया था कि राष्ट्रपति इस्हाक खां उनके नेतृत्व की असफलता, उनके तथा उनके पति के परिवार के भ्रष्टाचारों के सबूत जुटा रहे थे. लेकिन वार करने के समय के साथ ही जिस निर्ममता से उनकी सरकार को ही नहीं, नेशनल असेंबली, सभी प्रांतीय असेंबलियों, मुख्यमंत्रियों और गवर्नरों को भी बरखास्त किया गया, उससे भी बेनज़ीर सन्न रह गईं. इस साजिश के अनिष्टकारी पहलू तब उजागर हुए जब राष्ट्रपति ने, जिन्होंने इस कार्रवाई की वजहें सावधानी से तैयार किए गए आरोप पत्र में गिनाई हैं, नई कामचलाऊ सरकारों के गठन की घोषणा की जिसमें विपक्ष और खुद बेनज़ीर की पार्टी के उन्हीं लोगों को शामिल किया जो उनके कट्टर दुश्मन हैं.

बेनज़ीर के पिता के निकट सहयोगी रहे गुलाम मुस्तफा जतोई को, जो विपक्षी गठबंधन के नेता थे, नया प्रधानमंत्री बनाया गया. संघीय मंत्रिमंडल में बेनज़ीर की पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के प्रमुख पंजाबी नेता गुलाम मुस्तफा खर को शामिल किया गया. सिंध प्रांत के मुख्यमंत्री बनाए गए जाम सादिक अली, जो कभी भुट्टो के करीबी थे और हाल तक बेनज़ीर के विशेष सलाहकार थे. इस्लामाबाद में तैनात एक राजनयिक ने कहा, "इस बार बेनज़ीर के विरोधी कुछ कर गुजरने के मूड में हैं."

बेनज़ीर भी किसी मुगालते में नहीं हैं. कराची के बिलावल हाउस में, जिसकी 3 फुट मोटी और 30 फुट ऊंची दीवारों के कारण उनके विरोधी उसे 'ज़रदारी किला' कहते हैं, आकर बेनज़ीर ने दुनिया भर के पत्रकारों और अपनी पार्टी के लोगों से असंख्य बार

शाहनवाज

इस्हाक खां की नजर में बेनज़ीर 'सुरक्षा के लिए खतरा' थीं

शपथ ग्रहण के बाद जतोई से गले मिलते सदर इस्हाक खां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बातचीत

'तानाशाही टट्टुओं के लिए मैदान नहीं छोड़ेंगे'

*समाचार जगत उन्हें दुनिया की बेहद आकर्षक राजनेताओं में गिनता है. लेकिन पिछले पखवाड़े सदर गुलाम इस्हाक खां द्वारा बरखास्तगी के बाद बेनज़ीर भुट्टो के चेहरे पर असामान्य तौर पर विषाद की लकीरें उभर आईं. सदा रहने वाली मुस्कराहट की जगह तनाव ने ले ली. उन्होंने अपना ज्यादातर वक्त कराची के फैशनेबल क्लिफ्टन इलाके में अपने भव्य निवास बिलावल हाउस में बिताया. मनमोहक कशीदाकारी वाली पश्मीने की शॉल में लिपटीं बेनज़ीर ने अपनी बरखास्तगी से लेकर पाकिस्तान के भविष्य तक कई मुद्दों पर फीचर संपादक **शेखर गुप्ता** से बातचीत की. कुछ अंश:*

अनीस हमदानी

● ***आपको संवैधानिक तौर-तरीकों से ही हटाया गया है तो फिर शिकायत किस बात की?***

सदर को यह रुख अख्तियार करने पर मजबूर किया गया. संविधान का इससे कोई लेना-देना नहीं है. मैं इसे संवैधानिक कदम कतई नहीं मानती बल्कि कुछ हद तक सैनिक दखल या संवैधानिक तख्तापलट मानती हूं.

● ***तो आप इसे अदालत में चुनौती क्यों नहीं देतीं?***

हम इसे चुनौती देकर चुनाव की संभावनाएं खत्म नहीं करेंगे. सत्ता हमसे भले ही छीन ली गई है पर हम जम्हूरियतपसंद हैं. तानाशाही के टट्टुओं के लिए मैदान खुला नहीं छोड़ेंगे. हमें लड़ना होगा. आखिर हम बरखास्तगी को कब तक बर्दाश्त करते रहेंगे. ऐसा करने वालों का हमें भांडा फोड़ना होगा.

● ***फौज के बारे में आपकी राय हमेशा अच्छी रही है. अब आप उस पर खेल बिगाड़ने का आरोप कैसे लगा सकती हैं?***

फौज और फौजी खुफियागीरी में फर्क है. वे जम्हूरियत तोड़ने वाली ताकतों के नुमांइदे हैं. आपने यहां के अखबारों में खबरें देखी ही होंगी. कुछ ताकतें वजीरेआजम का टेलिफोन टैप करती थीं. वे वजीरेआजम की अपने वजीरों के साथ होने वाली बातें सुनती थीं ताकि अपने इल्जामात के सबूत पा सकें.

● ***आपके ऊपर, आपके खानदान और वजीरों पर भ्रष्टाचार के इल्जाम लगाए गए हैं. आपका क्या कहना है?***

पाकिस्तान की तवारीख में बरखास्त किए गए दूसरे पांच वजीरेआजमों पर भी ऐसे ही इल्जाम लगाए जा चुके हैं. क्या इससे कुछ जाहिर नहीं होता? लेकिन मैं या मेरा परिवार या मेरी कैबिनेट के लोग किसी आम अदालत या आम जजों के सामने पेश होने से डरते नहीं हैं क्योंकि हमने कोई गलत काम नहीं किया है. पर हम खास अदालतों, खास चुने हुए जजों और खास कानूनों को नहीं मानेंगे. और हमारे खिलाफ दर्ज हर मामले के बदले हमें भी उनके खिलाफ मामला दर्ज कराने की इजाजत दी जानी चाहिए. इस कामचलाऊ सरकार के कुछ लोगों की पिछली जिंदगी घिनौनी रही है. उनमें दो तो एक कत्ल के मामले में जमानत पर हैं. उनके इरादे इस बात से भी जाहिर होते हैं कि हमारी जगह उन्होंने किन लोगों को बिठाया है.

● ***चुनावों में आपके क्या आसार हैं?***

चुनाव हुए तो पीपुल्स पार्टी को बहुमत पाने से कोई नहीं रोक सकता. हमें लोगों पर भरोसा है.

● ***आप बहुमत पाएंगी या सबसे बड़ी पार्टी के रूप में लौटेंगी?***

मैं ज्यादा कुछ नहीं कहना चाहती. कहीं वे लोग चुनाव कराने से ही न डर जाएं.

● ***आपकी सरकार में क्या गड़बड़ी हो गई थी?***

बेखयाली में हमसे भले ही कुछ गलतियां हो गई हों. पर पहले दिन से ही हमारे साथ धोखा होने लगा. हमारे खिलाफ शुरू से ही साजिशें होती रहीं. खुफिया एजेंसियां ही आपके खिलाफ हों तो आप क्या कर सकते हैं? दरअसल यह जिया की परदे के पीछे वाली सरकार थी.

फौजी इंटेलीजेंस ने तमाम तरह की अफवाहें उड़ाईं. सदर या फौजी कमांडरों को कौन बताता कि ये बातें सही नहीं हैं? सदर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और फौज तक उन्होंने सही इत्तला नहीं पहुंचने दी. इत्तला ही इल्म है और इल्म से ही सरकार चलती है. और अगर इत्तला में ही खामियां हो तो सरकार का काम ठीक नहीं होगा. मैंने इस बारे में कई बार सोचा. पहले मैंने सोचा कि यह कुछ अफसरों का काम है. इस बारे में कई बार मैंने बात भी की. उन्होंने कहा कि चुनाव न जीतकर आए लोग पहली बार वजीर न बनें. तब मैंने कैबिनेट में फेरबदल करके ऐसे लोगों की छंटाई कर दी.

फिर उन्होंने कहा कि हमें फलां-फलां वजीर नहीं चाहिए. मैंने उनकी बात मानने से इनकार कर दिया. ऐसा हो तो वजीरेआजम को कौन पूछता? भ्रष्टाचार के इल्जामात के मामले में तो मैंने पूरी सफाई दी. कौमी असेंबली के बहुत-से मेंबर बातें करते थे कि वजीरेआजम और उनकी सरकार भ्रष्ट है. मैंने सदर को बताया. मुझे आती महीनों में मैंने इस बारे में चीफ ऑफ द आर्मी स्टाफ से बात भी की कि मेसों में मेरी सरकार के खिलाफ लिटरेचर बांटा जा रहा है.

• क्या इंटरसर्विसेज इंटेलीजेंस (आईएसआई) आपके काबू में नहीं थी? आपने हमीद गुल को तो हटाया था?

नहीं, गुल को (फौज ने) तरक्की दी थी. आईएसआई फौज की देखरेख में सिविलियन एजेंसी है. उसका काम फौजी इंटेलीजेंस ने संभाल लिया था. सारा मामला उलट गया. मेरा मानना है कि जिया हुकूमत के लंबे अरसे में यह सब हुआ.

• क्या आपने इस बारे में विरोध प्रकट किया?

मुझे चीफ ऑफ द आर्मी स्टाफ का भरोसा चाहिए था. मुठभेड़ की जगह मैंने उनसे बातचीत की. मेरा खयाल है वे जिया के वफादार अफसर ही थे जो दो महीने पहले खुलेआम बातें कर रहे थे कि मेरे अब्बा की बरसी पर मुझे बरखास्त कर दिया जाएगा. अखबार इस बारे में लिख रहे थे.

• पर चुनाव के बाद यह सब कुछ बदल नहीं जाएगा. इसलिए चुनाव लड़ने से आपको क्या फायदा होगा?

इसीलिए तो चुनाव के बाद सिविलियनों और फौज को बैठकर बात करनी होगी. अगर सरकार की अपनी खुफिया एजेंसियां ही उसके खिलाफ काम करने लगें तो जम्हूरियत इस मुल्क में कामयाब नहीं हो सकती. मैं कमजोर नहीं हूं. मुझे पाकिस्तान के अवाम की हिमायत हासिल है और पार्लियामेंट में मुझे बहुमत हासिल है. पाकिस्तान के लिए दो एटमी प्लांट हासिल करने पर मुझे नाज है. कश्मीर के मामले पर इस्लामी मुल्कों की हिमायत पाने का भी मुझे फख्र है. अंदरूनी और बाहरी दोनों महाजों पर अपनी सरकार की हदें होने के बावजूद हमने बहुत कुछ किया.

• खूबों के बारे में क्या कहेंगी? जैसे सिंध...

यह मसला हमें फौजी डिक्टेटरशिप से विरासत में मिला है, उस वक्त से जब मेरे सभी मुखालिफ एक सियासी प्लेटफार्म पर इकट्ठे थे. यही नहीं, जब पांच बम फटे थे उस वक्त हैदराबाद फौज के कब्जे में था. दहशतपसंदी के खिलाफ कोई क्या कर सकता है? यह मुश्किल भरा मसला है.

• आप कहती रही हैं कि फौजी इंटेलीजेंस कह कुछ रही थी और कर कुछ रही थी, उसके मद्देनजर भारत की इस मान्यता में क्या कोई दम है कि फौज पंजाब और कश्मीर के बारे में अपनी अलग नीति पर चल रही थी?

इस बारे में मुझे कुछ नहीं कहना है.

• यहां हुई तब्दीली से भारत-पाक रिश्तों पर क्या असर पड़ेगा?

आने वाले महीने ही बताएंगे.

कहा," वे हमें खत्म कर देना चाहते हैं. लेकिन हम खत्म नहीं हुए हैं. हम लड़ाई जारी रखेंगे."

लेकिन इस गर्जना के बावजूद आज की बेनज़ीर उस बेनज़ीर की छाया मात्र भी नहीं हैं जिसने मई 1985 में पूरे देश को झकझोर कर रख दिया था. उनकी चमक फीकी पड़ गई है. पार्टी के लोग कहते हैं कि यह उनके शक्की स्वभाव का नतीजा है. दूसरे लोगों का मानना है कि खुद उनके और खासकर उनके पति आसिफ ज़रदारी के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोपों की जांच शुरू होने के कारण उनकी यह हालत हुई है. जिया और भुट्टो के उत्तराधिकारियों की इस खूनी लड़ाई में दांव पर बहुत कुछ लगा हुआ है.

बेनज़ीर की बरखास्तगी कोई जल्दबाजी में उठाया गया कदम नहीं था. कई महीनों से इसकी तैयारी चल रही थी. यह जानते हुए भी बेनज़ीर ने जो गलतियां कीं उनके कारण उनके विरोधियों का काम आसान हो गया. वे इसी उलझन में रहीं कि उनके लिए खतरा किससे है, सेना से या राष्ट्रपति से. इसी उलझन में वे कभी एक को खुश करने की कोशिश करती रहीं तो कभी दूसरे को.

बेनज़ीर ने कश्मीर का शोर मचाकर कुछ वक्त तो निकाला. लेकिन जब उनकी पार्टी सिंध प्रांत में ही, जहां बेनज़ीर को जबरदस्त चुनावी समर्थन मिला था, दंगों को रोक नहीं पाई तो कश्मीर का पत्ता भी कमजोर पड़ गया. सिंध में जारी हत्याओं को रोक पाने में अक्षमता के कारण 'व्यवस्था' (राष्ट्रपति और सेना) को लगा कि उनकी सरकार को बने रहने दिया गया तो इस संवेदनशील सीमा प्रदेश के हालात और बिगड़ेंगे. सिंध में सेना बुला ली गई. उधर, भारतीय सीमा पर फौज का जमावड़ा बढ़ने से सेना को सारा कुछ अपने हाथ में समेट लेने का बहाना मिल गया. बेनज़ीर ने जोर दिया कि सिंध में सेना असैनिक अधिकारियों के साथ मिलकर काम करे. लेकिन सेना एकाधिकार चाहती थी.

बेनज़ीर की बरखास्तगी के दूसरे भी कारण थे. अनेक इस्लामी कानूनों को मिलाकर बना शरीयत बिल नेशनल असेंबली के अगले सत्र में पेश किया जाना था. इसके पेश हो जाने के बाद असेंबली को भंग करना राष्ट्रपति के लिए मुश्किल होता. इसलिए इस्हाक ने सत्र शुरू होने के ठीक पहले ही बेनज़ीर को बरखास्त कर दिया.

इतना ही नहीं, सेना अपने प्रधानमंत्री को ही 'सुरक्षा के लिए जोखिम' मानना शुरू कर चुकी थी. सुरक्षा से संबंधित संवेदनशील मसले राष्ट्रपति देखते थे या सेना के लोग. 7 मई को जब सेना के 54 प्रमुख जनरल सालाना प्रमोशन बोर्ड की बैठक के लिए इस्लामाबाद में जुटे तब बेनज़ीर में सेना का अविश्वास दिखा. बैठक में बेनज़ीर सरकार के एक प्रमुख मंत्री को भारतीय खुफिया एजेंसी 'रॉ' का एजेंट कहा गया. यह खबर बेनज़ीर तक पहुंची तो उन्होंने इसका विरोध किया. लेकिन उन्हें झिड़क दिया गया. 17 जुलाई को कराची में यह झगड़ा खुलकर सामने आ गया. वहां पहुंचे गृहमंत्री और विदेश राज्यमंत्री ने कराची के कोर कमांडर को संदेश भेजा कि वे मुख्यमंत्री निवास में आकर उनसे मिलें. कमांडर ने यह आदेश ठुकरा दिया और इन मंत्रियों को ही अपने यहां चाय पर आने का बुलावा भेजा. यह न्यौता भी ठुकराया ही जाना था.

इस बीच राष्ट्रपति कानूनी विशेषज्ञों से सलाह-मशविरा करते रहे और बेनज़ीर के खिलाफ सबूत जुटाते रहे. जिन लोगों को उन्होंने अपने भरोसे में लिया उनमें जुल्फिकार अली भुट्टो के सहयोगी और वकील रफी रजा भी थे जो अब मंत्री बनाए गए हैं. सेना ने इस्हाक से कह दिया था कि उसे तख्तापलट के उनके आदेश को पूरा करने में सिर्फ 24 घंटे लगेंगे. अब सिर्फ नए प्रधानमंत्री का चयन भर बाकी रह गया था. आखिर में कैंब्रिज में पढ़े और अमीर सिंधी वडेरा जतोई का नाम तय हुआ जो प्रधानमंत्री बनने की महत्वाकांक्षा पाले हुए थे. पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री नवाज शरीफ को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस्लामी जम्हूरी इत्तेहाद (इजइ) के नेतृत्व वाले संयुक्त विपक्ष का चुनाव अभियान चलाने को कहा गया.

लेकिन जब 6 अगस्त को अफवाहों का जोर बढ़ गया तो बेनज़ीर ने अपने विश्वस्त हैप्पी मीनवाला को राष्ट्रपति के पास भेजा. राष्ट्रपति ने व्यंग्य भरे अंदाज में कहा कि वे 'संविधान के खिलाफ' कोई भी कदम नहीं उठाएंगे. यह विडंबना ही है कि उस दिन की घोषणा से पहले राष्ट्रपति से मिलने वाले अंतिम व्यक्ति थे अमेरिकी राजदूत रॉबर्ट ओकले, जिनके समर्थन के बारे में बेनज़ीर पूरी तरह आश्वस्त थीं. बेनज़ीर के प्रमुख सलाहकारों का कहना है कि इस पूरे प्रकरण पर अमेरिका के रुख से वे सबसे ज्यादा हैरान हैं. कूटनीति के जानकार लोग भी अमेरिका के इस नाटकीय रुख परिवर्तन से हैरान हैं. एक अनुमान यह है कि अमेरिका ने इराक के खिलाफ संभावित कार्रवाई में पाक सेना का समर्थन मांगा जबकि सेना ने बदले में सत्ता मांग ली.

अब सवाल यह है कि बेनज़ीर से चूक कहां हो गई? चुनाव में उनकी शानदार सफलता की तुलना 1984 में राजीव गांधी की चुनावी जीत से ही की जा सकती है. राजीव की तरह ही वे भी पश्चिमी समाचार जगत की प्रिय थीं. उन्हें असेंबली में स्पष्ट बहुमत तो नहीं मिला था लेकिन निश्चित रूप से उनकी जीत का एक नैतिक पहलू भी था. बेनज़ीर के नाजुक कंधों पर उस पाकिस्तान को उदार लोकतंत्र के रास्ते पर ले जाने की जिम्मेवारी आ गई थी जो चार दशकों तक लोकतंत्र की चार दिन की चांदनी और तानाशाही की लंबी अंधेरी रातें काटता आया था.

और शायद इसी में उनकी सरकार की बरबादी के बीज भी छिपे थे. उन्हें पाकिस्तान को ले तो जाना था लोकतंत्र की डगर पर लेकिन इसके लिए उन्हें जिया द्वारा नियुक्त राष्ट्रपति और उनके द्वारा ही सत्ता का खून चख चुकी सेना को संतुष्ट करने वाले महंगे और असुविधाजनक सौदे भी करने थे. असेंबली के निचले सदन में बेनज़ीर को पूर्ण बहुमत नहीं मिला था. ऊपरी सदन में भी वे अल्पमत में थीं. सो, वे संविधान संशोधन नहीं करा सकती थीं. सेना के साथ मोल-तोल करना खतरनाक साबित हुआ. उन्हें सेना की पसंद के व्यक्ति साहिबजादा याकूब खां को अपना विदेशमंत्री बनाना पड़ा जिससे अफगान नीति पूर्ववत चलती रहे. साथ ही वे

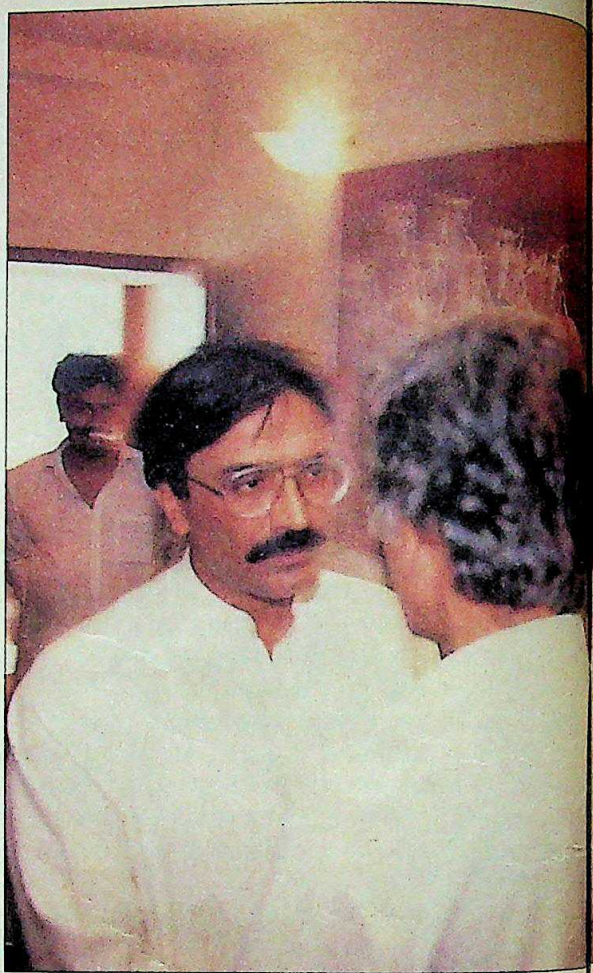

पति उनकी कमजोर नस थे जिनके खिलाफ भ्रष्टाचार के आरो

कराची के अपने घर में बेनज़ीर के सहायकों के साथ रणनीति बना

भारत-पाक संबंध

खास फर्क नहीं पड़ता

शिक्षाविद् से पाकिस्तान के विदेश सचिव बने तनवीर अहमद खां जब पिछले पखवाड़े भारत के साथ सचिव स्तर की बातचीत के दूसरे दौर में हिस्सा लेने के लिए एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल लेकर नई दिल्ली आए तो उन्हें यकीनी तौर पर प्रतिकूलताओं का एहसास तो रहा ही होगा. बेनज़ीर भुट्टो से उनके अच्छे संबंध की बात जगजाहिर है.

लेकिन पाकिस्तानी शासन व्यवस्था की एक बड़ी खूबी यह है कि बड़ी से बड़ी राजनैतिक उठापटक का भी उसकी विदेश और रक्षा नीतियों पर तत्काल कोई असर नहीं पड़ता. वैसे भी जिया की मृत्यु और बेनज़ीर के चुनाव के बाद विदेश नीति में अभी तक कोई अंतर नहीं आया था.

लेकिन दीर्घकालिक महत्व की दो बातें हैं. एक तो यह कि चुनाव नजदीक होने के कारण कश्मीर पर शोर तेज होगा. और दूसरा यह कि चुनाव के नतीजे चाहे जो निकलें, एक बात तो तय है कि पाकिस्तान में चुने गए शासकों के बावजूद सेना ही विदेश नीति जैसी गंभीर बातों का फैसला किया करेगी. पाकिस्तानी सेना को बखूबी मालूम है कि लंबी लड़ाई उसके बस के बाहर है. उसे यह भी लगता है कि युद्ध में विजय के लिए होने वाले खर्च को देखते हुए भारत पहले आक्रमण करने से कतराएगा. लिहाजा, नीति यह होगी कि कश्मीर और पंजाब में आग सुलगाए रखी जाए और सतही तौर पर कूटनैतिक प्रयास भी जारी रहें. पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) के एक वरिष्ठ नेता कहते हैं, "यह जानना दिलचस्प रहेगा कि चुनाव के समय सेना कश्मीर मामले को कैसे

पाकिस्तान में चुनाव नजदीक होने के कारण वहां सियासी हलकों में कश्मीर के मामले पर शोर और तेज होगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

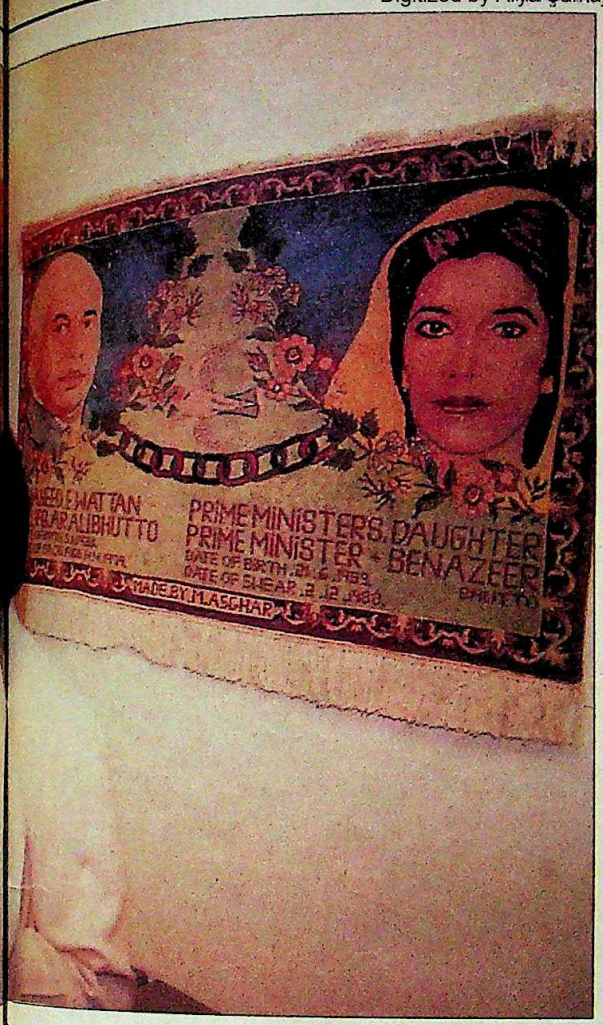

...ार के आ... उन्होंने इनकार कर दिया

...णनीति बन... ज़रदारी

...ने पर किस तरह की रोक लगाएगी.''

वैसे, सरकारी तौर पर तो भारत की प्रतिक्रिया यही रही है कि पाकिस्तान में हुई उठापटक उसका आंतरिक मामला है. लेकिन, विदेश और रक्षा मंत्रालय के अधिकारी निजी तौर पर इस बात से सहमत हैं कि इस फेरबदल से कुछ राहत आई है. एक वरिष्ठ अधिकारी के शब्दों में, ''अब तो जब तक उनके यहां चुनाव खत्म नहीं होते, उनकी ओर से गड़बड़ी की हमें उम्मीद नहीं.'' और, नवंबर में कश्मीर के दर्रे बंद हो ही जाएंगे.

लेकिन भारत में बेनज़ीर की बरखास्तगी पर अफसोस और उत्सुकता की मिली-जुली प्रतिक्रिया रही. अधिकारियों के अनुसार, उकसाने वाले भाषणों और नारों के बावजूद भ्रमित बेनज़ीर एक बेहतर विकल्प थीं और युद्ध में उनकी कतई दिलचस्पी नहीं थी. वे हर मुमकिन हद तक सेना के बिना भी काम चलाने के पक्ष में थीं. चुनाव के बाद जिया समर्थक लोग सत्ता में आ गए तो माहौल तत्काल बेहद कड़वा हो जाएगा. अगर बेनज़ीर किसी तरह मिले-जुले गठबंधन का नेतृत्व कर भी लें तो अब वे सेना पर कोई सवाल उठाने की जुर्रत नहीं करेंगी. जाहिर है, भारतीय नजरिए से यह दुखद ही होगा.

—शेखर गुप्ता

जिया की पसंदीदा सर्वशक्तिमान सैनिक गुप्तचर एजेंसी इंटर सर्विसेज इंटेलीजेंस के अधिकारों को भी काफी समय तक हाथ नहीं लगा सकीं. और अमेरिका ने भी सारा गुड़ गोबर कर दिया. शुरू से बेनज़ीर अमेरिका के समर्थन पर बहुत हद तक निर्भर रहीं. मगर जब अमेरिका ने उनके विरोधियों की हरकत पर चुप्पी साध लेने का फैसला किया तो उनका भविष्य अंधकारमय हो गया.

लेकिन 19 महीने के उनके शासन की उपलब्धियों को नकारा नहीं जा सकता, हालांकि ये गिनी-चुनी ही हैं. उनकी सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि यह रही है कि उन्होंने लोगों को लोकतांत्रिक कामकाज को समझने का अवसर दिया. उन्होंने प्रेस पर नियंत्रण ढीला किया, शिक्षा का बजट 70 फीसदी बढ़ाया और विदेश नीति में महत्वपूर्ण बदलाव लाते हुए भारत की ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाया. उन्होंने राजनैतिक बंदियों को रिहा किया और अर्थव्यवस्था को उदार बनाने की कोशिश में लगी रहीं. और फिर इस बीच उन्होंने दो बच्चों को जन्म भी दिया.

सत्ता में जितने भी दिन वे रहीं उससे लोकतंत्र को दीर्घकालिक फायदे ही हुए. सत्ता पर काबिज पुराने लोगों ने ही उन्हें मात दी लेकिन इसके लिए राजनीति और सेना के गठजोड़ को संविधान का ही सहारा लेना पड़ा, सैनिक तख्तापलट का नहीं. बेनज़ीर पाकिस्तान को वास्तविक लोकतांत्रिक व्यवस्था देने में असफल तो रहीं लेकिन वे कुछ हद तक लोकतंत्र लाने में भी कामयाब रहीं.

एक के बाद एक की गई गलतियों ने भी बेनज़ीर की किस्मत के दरवाजे बंद किए. कार्यक्रमों और नीतियों को लागू कराने में बेनज़ीर वह दिलेरी नहीं दिखा पाईं जो उन्होंने जिया शासन से टकराने में दिखाई थी. अनिर्णय से लेकर घालमेल के बीच ही वे फंसी रहीं. हां, भारत-पाक रिश्तों के मामले में उन्होंने अच्छी शुरुआत की थी. लेकिन दबाव पड़ते ही उन्होंने एकदम पलटा खाया. उन्होंने एक उदार इस्लामी व्यवस्था कायम करने का वादा किया था. लेकिन जैसे ही मुल्लाओं ने विरोध किया, उन्होंने टीवी समाचार वाचिकाओं को माथा ढंके रखने का निर्देश दे दिया. उन्होंने अफगान नीति में बदलाव लाना चाहा. फिर, याकूब खां और सेना को पुरानी नीति पर चलने देने पर राजी भी हो गईं. उन्होंने राजनीति में सेना की भूमिका सीमित करनी चाही लेकिन इजइ ने सेना के दबाव पर जब सीमा प्रांत में उनकी सरकार पर से दबाव हटा दिया तो इसे उन्होंने अपनी जीत समझा.

बहरहाल, आम लोगों की नजर में भ्रष्टाचार न रोक पाना उनकी सरकार की सबसे बड़ी कमजोरी थी. राजकोष को लूटने और निजी कंपनियों को ब्लैकमेल करने के आरोप उनके पति और ससुर हकीम अली ज़रदारी पर खूब लगे हैं और लोग इन आरोपों पर विश्वास भी करते हैं. उनके पति आसिफ ज़रदारी को तो लोग 'मिस्टर टेन पर्सेंट' कहने लगे थे. उनके ऊपर ये आरोप लगाए गए— कराची में कई हजार करोड़ रु. के भूमि घोटाले, पाकिस्तान एअरलाइंस के लिए एअरबसों की खरीद में दलाली और एक अमीर आप्रवासी पाकिस्तानी व्यापारी का अपहरण कर उसकी जांघ से बम बांधकर उससे 20 करोड़ रु. ऐंठने के आरोप. पीपुल्स पार्टी सरकार के एक पूर्व मंत्री कहते हैं,''मुद्दा यह नहीं है कि ये आरोप गलत हैं या सही. मुद्दा यह है कि लोग इन्हें सही मानते हैं.'' वे बताते हैं कि चेतावनियों के बावजूद बेनज़ीर ने ज़रदारी की गतिविधियों पर अंकुश नहीं लगाया.

अनेक लोगों का मानना है कि यह बेनज़ीर की मानसिक कमजोरी का नतीजा है. पिता और भाई की मौत, मां की बीमारी और खुद की नजरबंदी से त्रस्त बेनज़ीर को ज़रदारी का संबल मिला. और वे पूरी तरह पुरबिया बहू बन गईं जो पति की हर बात मानती है और उसकी गलतियां देख ही नहीं सकती.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

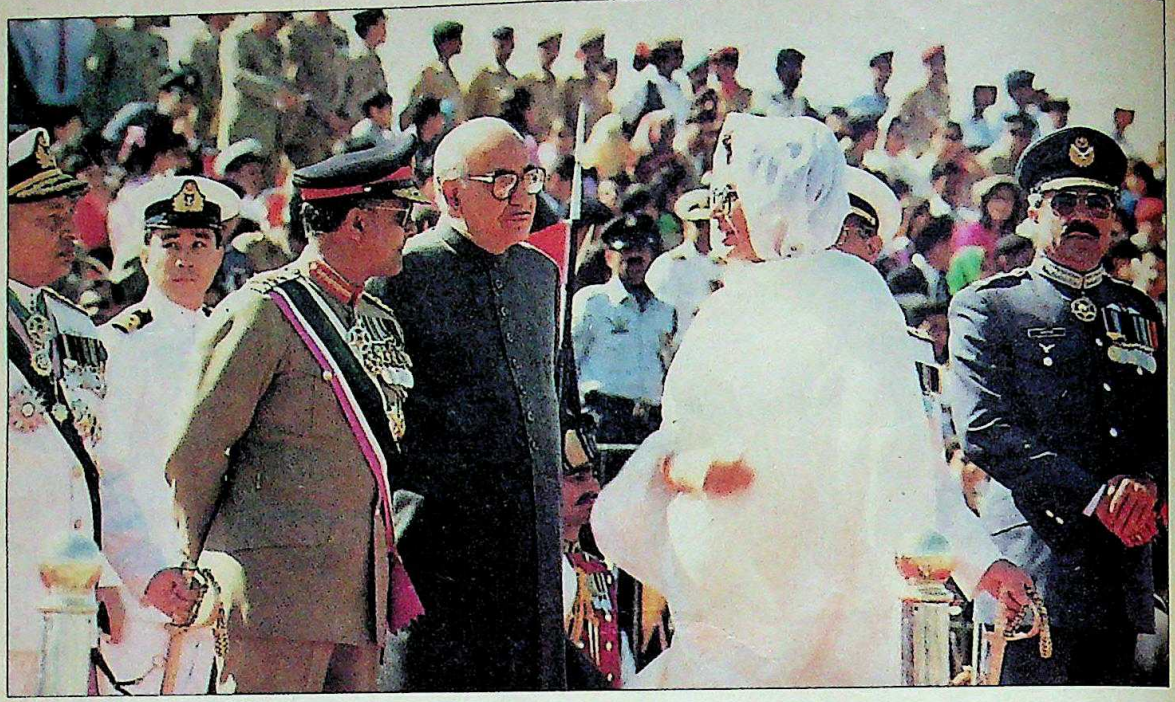

फौज और सदर इस्हाक खां उन्हें सत्ता में न लौटने देने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ेंगे

अमेरिका के मौन समर्थन से सदर और फौज के पास ही अब सारा नियंत्रण है

फिर, उन्होंने कई रणनीतिक गलतियां भी की. जैसे, प्रांतों में कठपुतली मुख्यमंत्रियों को नियुक्त करके वे वहां उनकी सरकारों को 'रिमोट कंट्रोल' से चलाती रहीं. ज़रदारी और उनके परिवारवाले अक्सर कराची में ही रहे और प्रांतीय प्रशासन में हस्तक्षेप करते रहे. अपने सिंधी समर्थकों के दबाव के चलते उन्होंने मोहाजिर कौमी महाज को, जो कभी उनका चुनावी सहयोगी था, अपने से दूर जाने दिया. इससे एक जातीय विवाद को राजनैतिक रंग मिला. यही सिंध उनके जी का जंजाल बन गया और यहां शांति स्थापित करने के मामले में ही सेना ने उन्हें नीचा दिखा दिया.

और फिर ठेठ भुट्टो शैली में उन्होंने लोकतंत्र बहाली आंदोलन में पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के सहयोगी रहे दलों को मटियामेट करने का अभियान-सा चला दिया. जिया की मौत के बाद उन्हें लगा कि आंदोलन में शामिल छोटे दलों के समर्थन की जरूरत नहीं रह गई है. सो, उन्होंने उनका साथ छोड़ दिया. इसलिए जब उन्हें हटाया गया तब इन पार्टियों में से किसी ने भी इसका विरोध नहीं किया. अब हालत खराब हो जाने पर उन्हें इन दलों को फिर साथ लेने की जरूरत है लेकिन ये दल उन पर विश्वास नहीं करना चाहते. संकेत मिल रहे हैं कि सेना और राष्ट्रपति के सहारे चलने वाली कामचलाऊ सरकार जल्दी ही बेनज़ीर और उनके घरवालों के खिलाफ भ्रष्टाचार की जांच शुरू कराएगी. अखबारों-पत्रिकाओं में बेनज़ीर को देश के लिए खतरा बताने वाले किस्से छपेंगे, राजनैतिक रूप से भी उनके विरोधी उनकी पार्टी के महत्वपूर्ण लोगों को तोड़ने की कोशिश करेंगे. खर और सादिक अली के रूप में उनके दो सहयोगी दूसरे पाले में जा चुके हैं. अली कहते हैं, "मैं दो दशकों तक पार्टी का वफादार रहा. लेकिन जब कोई पूरी तरह पार्टी को ही अपनी गिरफ्त में लेने की कोशिश करे तो कुछ-न-कुछ करना ही पड़ता है."

इस बीच, भविष्यवाणी करने वाले लोग कहने लगे हैं कि चुनाव कभी होंगे ही नहीं. या फिर बेनज़ीर और उनके खास लोगों को चुनाव में भाग नहीं लेने दिया जाएगा. बरखास्त सरकार में कश्मीर मामलों के मंत्री रहे हनीफ खां कहते हैं, "जिया ने 90 दिन के अंदर चुनाव कराने की घोषणा की थी लेकिन नौ वर्ष लगा दिए."

लेकिन नई सरकार इन आशंकाओं का खंडन करती है. इस्लामाबाद में सरकारी प्रवक्ता ने कहा, "जिया विमान हादसे में मारे गए तब भी उनके द्वारा घोषित तारीख पर चुनाव करवा लिए गए तो आगे ऐसा क्यों नहीं होगा?" जहां तक बेनज़ीर को चुनाव के लिए अयोग्य घोषित करने वाली बात है, पाकिस्तानी कानूनों के अनुसार अदालत से अपराधी घोषित होने के बाद ही किसी आदमी को अयोग्य ठहराया जा सकता है. लेकिन यह बात राष्ट्रपति और उनके सहयोगियों को राजनैतिक रूप से महंगी पड़ सकती है क्योंकि आज की दुनिया में कोई भी उस चुनाव को मान्यता नहीं देगा जिसमें सत्ता के मुख्य दावेदार को ही चुनाव नहीं लड़ने दिया जाए. लेकिन कुल मिलाकर बेनज़ीर का भविष्य अनिश्चित ही लगता है, बशर्ते उन्हें इतना न सताया जाए कि लोग उन्हें शहीद मान बैठें. उनके लिए उम्मीद की एकमात्र किरण यही दिखती है.

दूसरी किरण है इजइ में गुटबंदी और मतभेद, जहां प्रधानमंत्री पद के तीन-तीन दावेदार उभर रहे हैं. इतना ही नहीं, गद्दी छिनने के बाद बेनज़ीर अब फिर गलियों-सड़कों पर आएंगी. समर्थकों की भीड़ जुटाने और लोगों को मोहित करने की कला में वे अपने सभी राजनैतिक प्रतिद्वंद्वियों से कहीं आगे हैं. राजनैतिक शतरंज की बिसात पर उन्हें शह तो मिल गई है, लेकिन मात का फैसला फिलहाल 24 अक्तूबर तक ही हो पाएगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हीरो की अनमोल विरासत

नई आकर्षक विशेषतायें

नई हीरो जैट 2000 में सामान्य सभी विशेषताओं के अतिरिक्त कुछ अन्य नए आकर्षण :

- चलाने में आसानी के लिए नई हैण्डल ग्रिप और रूपान्तरित हैण्डल
- अधिक शक्तिशाली फ्रन्ट ब्रेक्स
- उबड़-खाबड़ रास्तों के लिए अधिक आरामदेह मुलायम गद्दी
- अनूठा नया चेन गार्ड
- अधिक सुरक्षा के लिए पिछले पहिए पर रिफलैक्टर की व्यवस्था
- नए और चमकदार रंगों में
- श्रेष्ठ क्वालिटी वाले इलैक्ट्रोप्लेटिड पुर्ज़े

पीढ़ी दर पीढ़ी की चाहत

केवल एक अनमोल विरासत ही परिवर्तन की चुनौती के आगे अडिग रहती है और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी का उत्तराधिकार बनती है।

पिछले तीन दशकों से हीरो लोगों को सम्पूर्ण और विशिष्ट साइकिल देने में अग्रणी रही है।

नई हीरो जैट 2000 में लगे रगड़ खाने वाले सभी पुर्ज़े विश्व की अत्याधुनिक विकसित कोल्ड फोर्जिंग तकनीक द्वारा निर्मित होने के कारण अधिक टिकाऊ होते हैं।

इसकी कार्यकुशलता को भारत में ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में स्वीकार किया गया है।

समय बदल जाता है, विरासत बदस्तूर चलती है।

और हीरो को एक महान और अनमोल विरासत होने पर गर्व है।

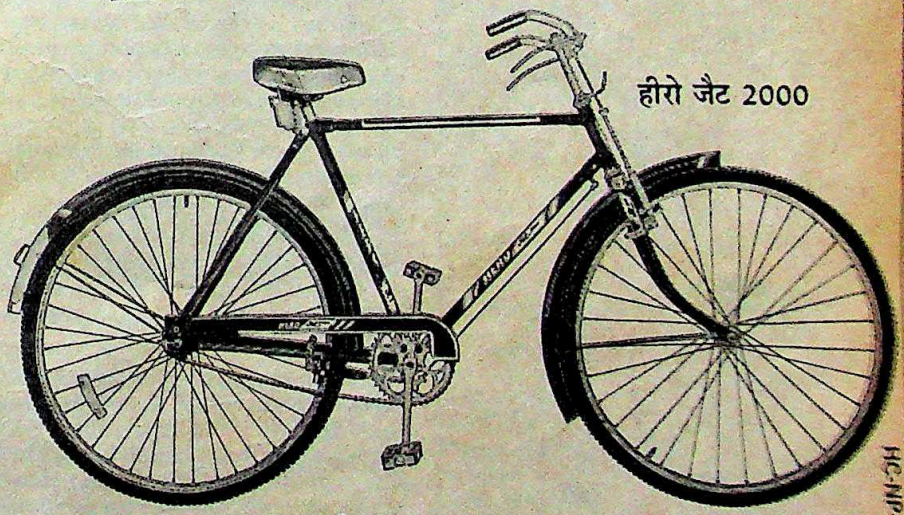

हीरो आगे दौड़े समय को पीछे छोड़े

HERO Jet 2000

HC-NP-216

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

New horizons, new hopes.

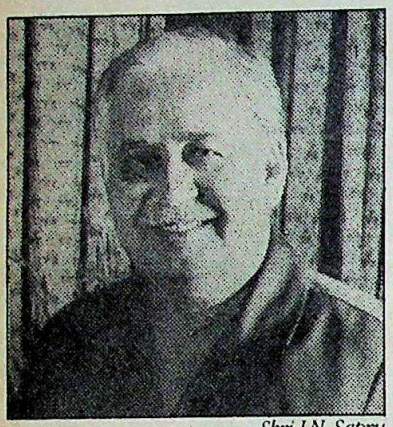

Shri J.N. Sapru

THE CHANGING FACE OF ITC

Right till the end of the sixties and the beginning of the seventies, ITC was merely a cigarette company. It was during the seventies which also coincided with the 'Indianisation' of the Company, that the profile of the Company started to change. Your Company entered the businesses of hotels (1974), acquired the Indian Leaf Tobacco Development Company (1975), promoted Bhadrachalam Paperboards Ltd. (1976), and made exports and foreign exchange earnings a part of its business strategy.

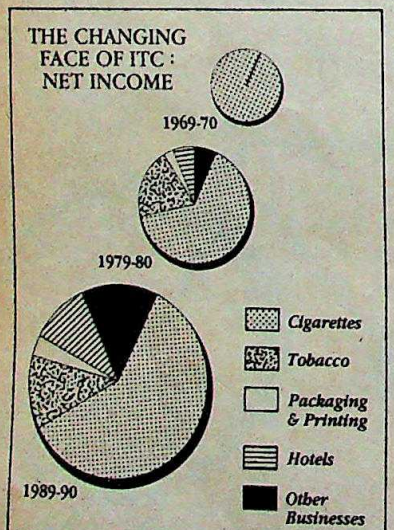

This decade, therefore, witnessed both the excitement and birth pangs of creating new businesses. It meant making mistakes and rectifying them. Most of all it meant listening, unlearning and then learning.

The eighties have therefore seen your Company consolidate its businesses started in the seventies first—and then branch out into new businesses with confidence and from a position of strength.

Hence a longer term analysis of your Company's performance is a better measure of your Organisation's health. The gross income of your Company in 1969-70 was a mere Rs. 145 crores. At the end of the next decade in 1979-80, it increased to Rs. 458 crores and 1989-90 saw it grow to Rs. 1827 crores. During the same period, net income increased from Rs. 65 crores in 1969-70 to Rs. 140 crores in 1979-80 and to Rs. 677 crores in 1989-90. The post-tax profits during the same benchmark periods increased from Rs. 3 crores to Rs. 6 crores to Rs. 53 crores in 1989-90. What is, however, even more significant is that today over a third of your Company's net income comes from activities other than cigarettes. Your Company has been transformed from a single-product Company twenty years ago to a multi-product, multi-business enterprise serving the national good in sectors crucial to development and growth.

PERFORMANCE HIGHLIGHTS

It has been a good year with a strong all-round performance by all divisions. **After a 1:1 Bonus declared last year, your Company has recorded a post-tax profit of Rs. 52.62 crores, which is an increase of over 35% on an annualised basis, and has enabled your Directors to recommend a 37.5% Dividend on the enlarged equity after retaining over 50% for future growth and expansion.**

Gross income at Rs. 1827 crores and net income at Rs. 677 crores scaled new heights, recording a 28% and 33% increase respectively over the previous year on an annualised basis.

Foreign exchange earnings at Rs. 146 crores are nearly Rs. 90 crores more than last year and represent a 95% increase on an annualised basis. They also represent 22% of your Company's net income and cover foreign exchange outgoings nearly eight times. To this if you were to add the Rs. 1188 crores paid by your Company by way of duties and taxes during the year, you will perhaps appreciate the full extent of your Company's contribution to the national exchequer. It makes your Company the largest single contributor to the nation in the private sector.

It is heartening to report the progress made by your Company's newest venture in the field of agri-businesses and edible oils. **In a short span of less than two years your Company's edible oil brands – SUNDROP, CRYSTAL and SUDHAM – have become household names throughout the country and we have not only become market leaders in sunflower oil, but a force to reckon with in other varieties of cooking oils as well. At the same time, your Company's ADARSH brand seeds have received an overwhelming acceptance from the farmers in Andhra Pradesh as a trusted high-germinating seed.**

PUNJAB ANAND BATTERIES LIMITED (PABL)

After receiving your and the Government of India's approval, under the BIFR package your Company made the necessary investment of Rs. 119 lakhs to participate as 50% equity holder in the revival of the sick company, located as you know, in the trouble-torn state of Punjab. After considerable hard work and persuasion by your Company, Toshiba of Japan have agreed to take an equity stake in PABL, subject to GOI approvals, and sign a Technical Assistance Agreement, assuring long term association in the onerous responsibility of reviving a sick unit.

With the finalisation of this agreement and the modernisation of production facilities, trial production of button cells and test marketing of all-purpose dry cells has commenced, and the quality is reported to be highly satisfactory.

It is, however, unfortunate that assistance promised by the the Central and State Governments and banks, under the BIFR package, still remains to be made available. This does raise a fundamental issue of whether we are serious about the removal of sickness, whether the present system is adequate and whether revival of sickness can be achieved without all parties playing their designated roles without loss of precious time. I hope the Government will give this matter their most serious attention, enabling productive utilisation of locked-in resources and protecting many possible jobs in the process.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Excerpts from the speech of Shri J.N. Sapru, Chairman, I.T.C. Limited, at the 79th Annual General Meeting held on 6.7.1990.

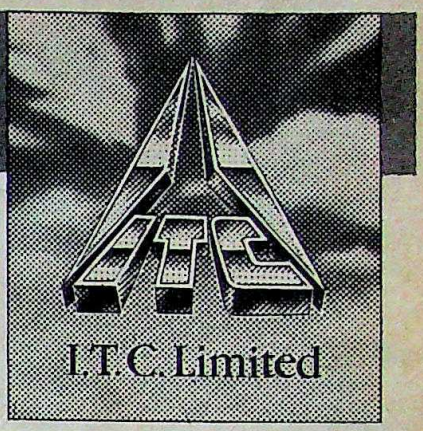

EXCISE

The position with regard to our disputes with the Central Board of Excise and Customs, spanning a period of over sixteen years, has been explained in detail in the Report of Directors before you. The status of this issue remains as reported and fresh hearings before the Collector of Central Excise, Delhi, are expected to commence shortly.

I would like to reiterate that your Company has not ever evaded excise duties, nor knowingly transgressed the law. In the opinion of your Directors, your Company accepts no further liabilities in respect of the disputed issues and will continue to take all appropriate steps for their early and satisfactory resolution.

FUTURE PROSPECTS

With a good monsoon in sight, the prospects for your Company can be considered bright, particularly with our major thrust into agri-based businesses.

ECONOMIC GROWTH: A BLUEPRINT

During the past few years, we have been hearing and reading a lot about the advent of the 21st century and how India should approach it—so that at least by the turn of the century we can hold our own in the comity of nations.

However, the most inelastic of all our resources — Time — seems to get converted into the most elastic. More time is getting spent on debating our own artificially created and beautifully articulated dichotomies than on getting down to implementing whatever we have planned effectively and efficiently. The crying need today is not who does it — the public sector or the private sector, the MRTP houses or the large and the medium-sector or the small, tiny and cottage-sector — but who does it well, cost effectively, and in time. Let us for a change close this debate and open the doors to the efficient sector as opposed to the inefficient.

After forty-three years of Independence, we still have nearly half our population living near or below the poverty line. We have seen what the centralised planning of the communist world has achieved. It has succeeded in sending man into outer space but has not been able to provide the mere fundamentals of livelihood — the *Roti, Kapda aur Makaan* — to its people. There are lessons to be drawn from the crumbling of the Berlin Wall and the upsurge of the people in Eastern Europe and the USSR, and in their basic demand for economic performance and political freedom.

The reality is that there are two Indias: one that is industrial, modern and progressive and largely urban, and the other which is agricultural, poor and somewhat primitive and largely rural. Both these disparate socio-economic sectors have to simultaneously develop. Neglect of one at the cost of the other has its own pitfalls. But what is good for the goose is not necessarily good for the gander. Therefore, two different plans, strategies and courses of action have to be simultaneously evolved and implemented, one to revitalise the weaker and impoverished India, and the other to enable India to hold its own globally. Modern industrial India will have to be capital intensive, technology driven, capable of producing quality goods at competitive costs, and not labour intensive if we are to be global players. The solution to our employment problem must be found through the rapid development of our agricultural, forestry and plantations, infrastructure and service sectors where both technology and vast manpower can be gainfully employed.

ITC's STRATEGIES FOR THE NINETIES

It is against this background, that your Company, with its avowed thrust on exports during the decade of the nineties, is setting its strategies and prioritising issues. Our International Business Division is being established for this purpose and your Company intends to be in the forefront of the internationalisation of India.

To this end, we have set up offices in New York, London and Singapore as bases for international trading to assist our export efforts. **We plan to establish more representative centres in strategic international locations. These offices mark the start of our direction for the nineties — that of becoming an Indian International in form and in spirit by developing pride in the label 'Made in India'. This label should compete with the best in terms of international parameters so that, as in all our other areas of diversification, we attain our own corporate goals through serving national priorities.**

Finally, in talking about local issues and trends, we must recognise that the human element will, and must, take precedence over all other considerations. Therefore, even the most sophisticated technology cannot find acceptance if it does not translate into meeting human skills and aspirations. **Your Company will always re-skill and re-contemporise its people so that obsolescene does not happen, and so that the human resource fulfils its role as a multiplier and synergiser of all other resources.** I have mentioned that the nineties will make increasing demands on corporations to be innovative and market oriented. ITC is playing, and will continue to play, a leading role here through all its divisions. We are targetting new horizons and have new hopes not only for your Company but for our country as a whole.

This does not purport to be a report of the proceedings of the 79th Annual General Meeting.

For the full text of the speech, please write to:
The Corporate Public Relations Manager, I.T.C. Limited, Virginia House, 37 Chowringhee, Calcutta 700 071

INDIA TOBACCO DIVISION · INDIAN LEAF TOBACCO DEVELOPMENT DIVISION · PACKAGING AND PRINTING DIVISION · WELCOMGROUP—HOTELS DIVISION
EXPORTS DIVISION · AGRI-BUSINESSES DIVISION · BHADRACHALAM PAPERBOARDS LIMITED—AN ITC-PROMOTED ENTERPRISE

Contract ITC 96.90

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनता दल

आज सुधरें तो कल सुधरेगा

कई बैसाखियों की वजह से पार्टी फिलहाल तो एकजुट है पर वी.पी. सिंह को नए समीकरण बनाकर अपना आधार मजबूत करना होगा

इंद्रजीत बधवार और प्रभु चावला

कांग्रेस से निष्कासित कोई राष्ट्रीय स्तर का नेता ले लें. उसके साथ चार-पांच कम उजड्ड जाटों और पिछड़ी जाति के नेताओं का समर्थन जोड़ लें. फिर 'चम्मच भर' चटपटे और कारस्तानी समाजवादी मिलाएं, कुछ कप मुस्लिम 'मसाला' डालें और ठीक से हिला-डुला लें. चुनावी आंच पर इसे पकाएं. और फिर आप एक ऐसी राजनैतिक बिरयानी बना लेंगे जो कांग्रेसी पकवान को फीका कर देती है.

लेकिन जब इसकी हर चीज अलग-थलग होनी शुरू होती है तो यह खुद-ब-खुद बरबाद हो जाती है. और एक दफा जनता दल के धुरंधरों का कीचड़ उछालू अभियान जब शांत पड़ने लगा और राजनैतिक पंडित इसके कारण देखने के लिए अपना पोथी-पतरा संभालने लगे तो हर किसी के दिमाग में यही आया कि यह जमावड़ा राजनैतिक नरकवास भोगने के ही काबिल है. 1977 वाले प्रयोग की असफलता की पुनरावृति होती लग रही थी.

दोनों प्रयोगों में समानता भी कम नहीं है. जनता पार्टी भी तुनकमिजाज जाटों के साथ पिछड़ी जातियों (यादव, कुर्मी, गूजरों) के चुनावी गठजोड़ से सत्ता में आई. इसने इंदिरा गांधी के चलाए नसबंदी अभियान से त्रस्त कांग्रेसी मुस्लिम वोट बैंक को भी अपनी ओर कर लिया था. और इंदिरा के विकल्प के रूप में इसने भी एक कांग्रेसी—मोरारजी देसाई—को ही आगे किया.

लेकिन यह प्रयोग असफल हो गया. वजह यह थी कि पिछड़ों का गठबंधन तैयार करने वाले जाटों के नेता चरण सिंह को लगा कि उनकी बिछाई बिसात पर कांग्रेस से टूटकर आया गुट काबिज हो गया है. आज वी.पी. सिंह भी ऐसी ही क्रूर विडंबना झेल रहे हैं. उनका और जनमोर्चा का—जो कांग्रेस से निकाले लोगों का ही है—आज जनता दल नेतृत्व पर कब्जा है जबकि पार्टी उन्हीं ग्रामीण ताकतों के गठबंधन से बनी जिन्हें चरण सिंह ने 1969 में भारतीय क्रांति दल बनाकर एक साथ लाना शुरू किया था.

इस बार यह गठबंधन तैयार करने जिस नेता ने सबसे बड़े उत्प्रेरक की भूमिका निभाई वे देवीलाल हैं. फिर बाबरी मस्जिद-राम जन्मभूमि मसले पर राजीव गांधी के गड़बड़झाले से नाराज मुसलमानों का नेतृत्व भी टोपी वाले 'मौलाना' वी.पी. सिंह की ओर झुक आया. इससे इस गठबंधन को मजबूती पाने में मदद मिली. लेकिन देवीलाल कभी यह बरदाश्त नहीं कर सके कि उनकी ग्रामीण क्रांति से उपजी राजनैतिक ताकत पर जनमोर्चा वाले कब्जा जमा लें.

सच पूछा जाए तो वी.पी. सिंह इस गुत्थी से परिचित हैं. इतना ही नहीं, उन्हें यह भी पता है कि उनका जनता दल मूलतः हिंदी (हिंदी नहीं) क्षेत्र की पार्टी है. उत्तर भारत की ग्रामीण पार्टी अपने बूते देश पर राज नहीं कर सकती. लेकिन यह पार्टी कुछ औपचारिक अनौपचारिक गठबंधनों के पूर्व में मार्क्सवादियों, भारत में भाजपा और दक्षिण में द्रमुक—के साथ ऐसा करने की कोशिश कर रही है. यह स्थिति बहुत नाजुक है.

यह सरकार कमजोर आधार पर खड़ी है कि सिर्फ 48 सांसद समर्थन वापस ले लें तो यह भरभराकर गिर जाए. लेकिन अभी तक यह एक होकर टिकी हुई है. और दक्षिण पंथ का समर्थन साथ-साथ मिल रहा है. सभी मुख्यमंत्री एकता बनाए

प्रमोद पुष्करणा

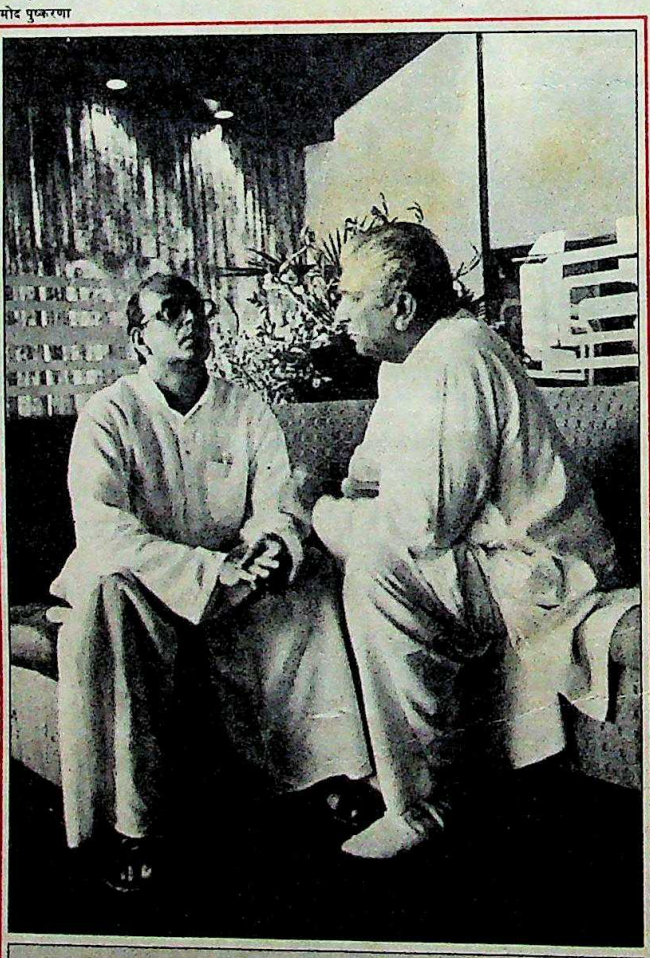

ताऊ देवीलाल यह बात बरदाश्त नहीं कर सके कि उनकी ग्रामीण क्रांति से उपजी राजनैतिक ताकत पर जनमोर्चा वाले कब्जा जमा लें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखने में सहायक हैं और शक्तिशाली मंत्रियों के बीच एकजुटता है.

करीब 70 सांसदों पर असर रखने वाले जनता दल के चार मुख्यमंत्री बीजू पटनायक, चिमन भाई पटेल, मुलायम सिंह यादव और लालू प्रसाद यादव पार्टी का स्थायित्व बनाए रखने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं. देवीलाल वाले संकट के समय वे वी.पी. सिंह का खेल आसानी से बिगाड़ सकते थे. लेकिन उन्होंने बहुत सोच-समझकर खुद को इससे निर्लिप्त रखा. वे जानते हैं कि केंद्र सरकार टिकेगी, तभी उनका भी अस्तित्व रहेगा. केंद्र का कोई धड़ा उनको परेशान नहीं कर रहा है और न ही वी.पी. सिंह की कार्यपद्धति से उन्हें शिकायत है, इसीलिए वे चारों सयानों की भूमिका में आ गए हैं.

वामपंथी दल और भाजपा दोनों ने ही वी.पी. सिंह के नेतृत्व वाली जनता दल सरकार को पक्के समर्थन का भरोसा दिया और यह भी स्पष्ट कर दिया कि अगर वी.पी. सिंह प्रधानमंत्री नहीं रहेंगे तो वे अपने समर्थन के बारे में पुनर्विचार करेंगे.

अरुण नेहरू, आरिफ मुहम्मद खां, इंद्र कुमार गुजराल, अजित सिंह और मधु दंडवते जैसे शक्तिशाली मंत्री पार्टी तोड़ने वालों के लिए मुश्किल बने हुए हैं और इनके दमखम के कारण सरकार को बल मिल रहा है.

लेकिन सरकार की स्थिरता बनी रहे इसके लिए वी.पी. सिंह इन्हीं सबके भरोसे नहीं रह सकते. मुख्यमंत्रियों की आजादी में इजाफा होता है तो वे धीरे-धीरे क्षेत्रीय क्षत्रप बन जाते हैं और इससे पार्टी की स्थिरता खतरे में पड़ जाती है. जनता दल के मुख्यमंत्री अभी से जिस तरह का व्यवहार करने लगे हैं और आपस में मेलजोल रखने लगे हैं उससे क्षेत्रीय सूबेदारी के नए बीज पड़ गए लगते हैं.

वामपंथी दलों और (खासकर) भाजपा का नजरिया बहुत स्पष्ट है कि अगर सरकार को समर्थन देने के राजनैतिक फायदे इससे होने वाले राजनैतिक नुकसान से कम हो जाएंगे

जोड़ और तोड़

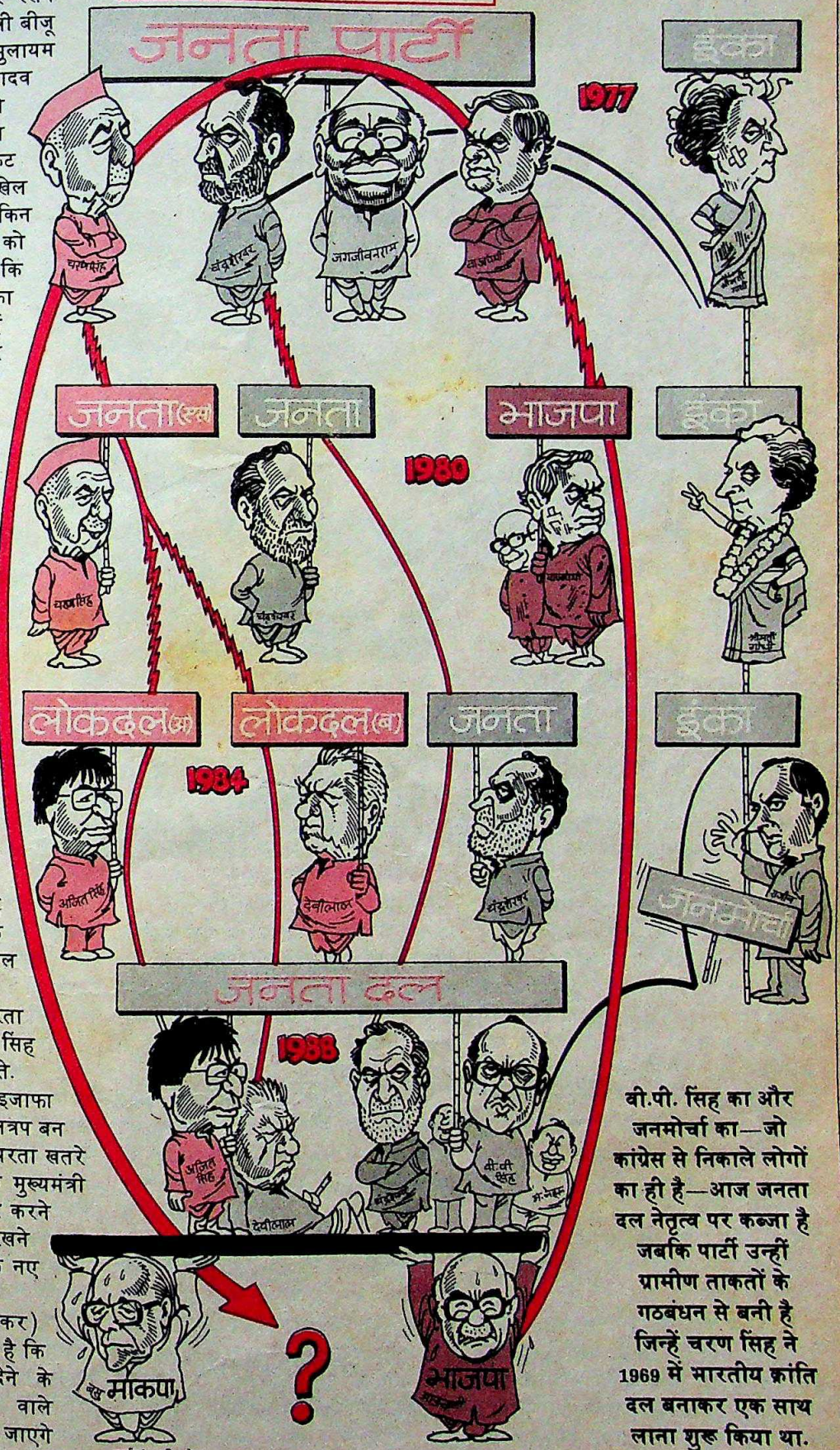

कार्टून: अजीत नैनन

वी.पी. सिंह का और जनमोर्चा का—जो कांग्रेस से निकाले लोगों का ही है—आज जनता दल नेतृत्व पर कब्जा है जबकि पार्टी उन्हीं ग्रामीण ताकतों के गठबंधन से बनी है जिन्हें चरण सिंह ने 1969 में भारतीय क्रांति दल बनाकर एक साथ लाना शुरू किया था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

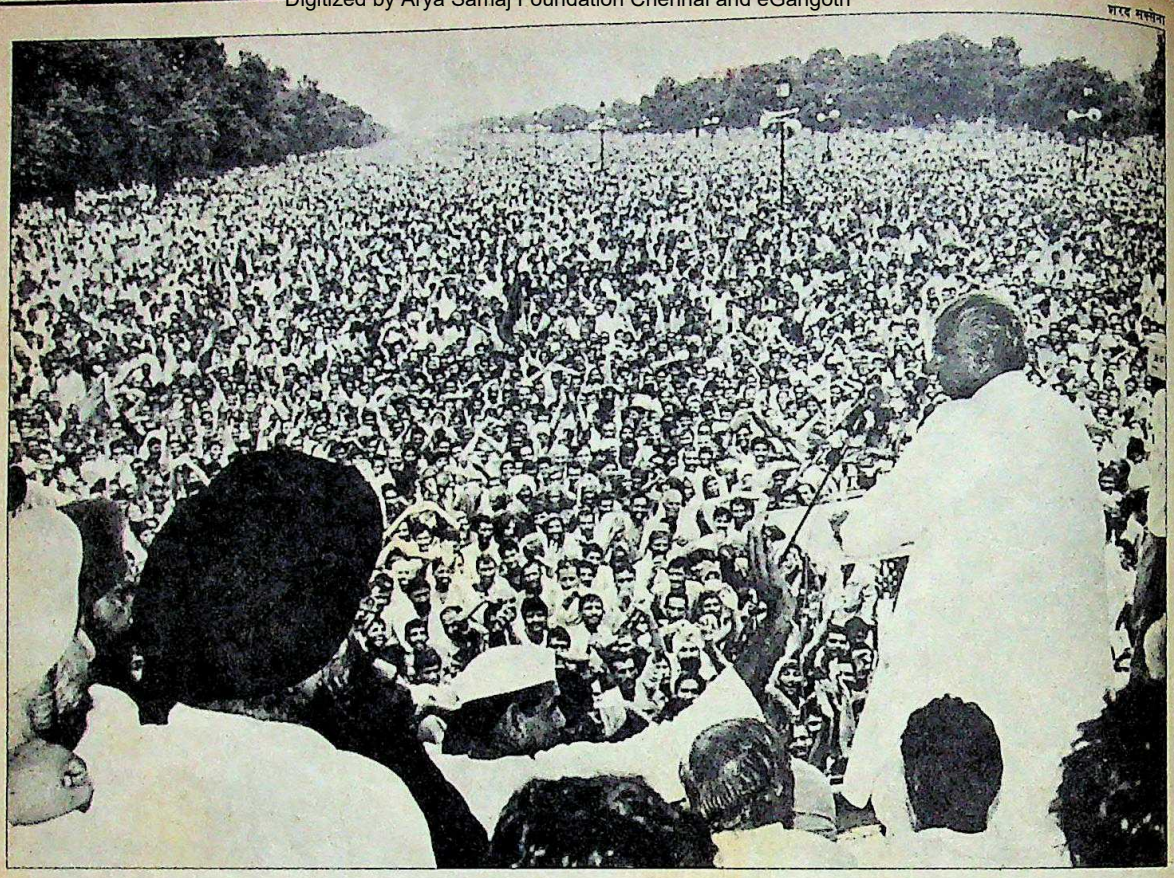
शरद सक्सेना

देवीलाल के गांव-शहर का मुद्दा उठाने से वी.पी. सिंह को अपने दल में परस्पर विरोधी जातियों को एकजुट करने और उसका आधार-विस्तार करने में कठिनाई होगी

तो वे मध्यावधि चुनाव कराना पसंद करेंगे. ऐसे में इन पार्टियों का समर्थन आखिर में वी.पी. सिंह के लिए बोझ ही साबित होगा. अगर वी.पी. सिंह को अपनी विशिष्ट पहचान बरकरार रखनी है तो उन्हें अपने गले में पड़े इन बोझों से मुक्ति पानी होगी.

मंत्रिमंडल में भी जो एकता दिख रही है शायद जल्दी ही उसमें दरारें आएंगी. अगर जनता दल को अपने छोटे आधार से उठकर वास्तविक वैकल्पिक मध्यमार्गी पार्टी के रूप में सामने आना है तो वी.पी. सिंह को दो काम जरूर करने होंगे जो असंभव जैसे लग रहे हैं. उन्हें पिछड़ी जातियों और मुसलमानों के बीच अपने समर्थन को पक्का करना और बढ़ाना होगा. इससे भी महत्वपूर्ण काम यह है कि नाजुक सत्ता समीकरण में अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए उन्हें दूसरी जातियों को भी अपने पक्ष में जुटाना होगा.

पर अभी तो जीत का 'आनंद' जाट और पिछड़ी जातियां ले रही हैं. आधे से अधिक मंत्री इन जातियों के हैं. केंद्रीय मंत्रिमंडल में पांच जाट हैं और दो मुख्यमंत्री अहीर है. निकट भविष्य में होने वाले संगठनात्मक चुनावों में पार्टी का आधार व्यापक करने के लिए वी.पी. सिंह को दूसरे वोट बैंकों पर भी ध्यान देना होगा. हरिजन, ब्राह्मण और ठाकुर जातियों को साथ लाना ऐसा ही कदम होगा जो परंपरागत रूप से इंका के वोट बैंक रहे है.

हो सकता है कि आज अजित सिंह अरुण नेहरू के साथ हों पर जब उनके सामने किसी एक को चुनने की नौबत आएगी तो इस बात में संदेह नहीं है कि अजित सिंह 'पूर्व कांग्रेसियों' के खिलाफ गांववालों के वकील हो जाएंगे.

ऐतिहासिक समानताओं के साथ ही अनेक असमानताएं भी हैं. वी.पी. सिंह की सरकार मात्र 48 सांसदों का समर्थन हट जाने से गिर जाएगी पर आज जनता दल के अंदर कोई भी एक गुट ऐसा नहीं है जिसमें 48 सांसद हों. इतना ही नहीं, जनता दल के युवा सांसदों में से अनेक आगे पार्टी तोड़ने की मंशा रखने वालों की सलाह सुनने को भी तैयार नहीं है. ऐसे लोगों में देवीलाल गुट में माने जाने वाले जगदीप धनकड़, अजित सिंह के करीबी अजय सिंह, चंद्रशेखर के खेमे के हरिकिशोर सिंह और सुबोध कांत सहाय शामिल हैं. देवीलाल को मंत्रिमंडल से हटाने पर धनकड़ ने प्रतीक रूप में इस्तीफा भले ही दिया हो पर अब वे उप मंत्री के अपने पद पर फिर से जुट गए हैं.

और सबसे बड़ा फर्क तो खुद वी.पी. सिंह की मौजूदगी से पड़ता है. जनता पार्टी के पास ऐसा कोई एक नेता नहीं था जो पूरे देश में वोट बटोर सके. 1989 के चुनाव में लोगों ने कम-से-कम उत्तर भारत के, भ्रष्टाचार के मुद्दे पर राजीव गांधी के खिलाफ ही नहीं, वी.पी. सिंह के पक्ष में भी वोट दिए.

लेकिन इतने भर से काम नहीं चलने वाला. पार्टी तोड़ने और कीचड़ उछालू होड़ में लगे लोगों को ठीक से जवाब देने के लिए इतना ही पर्याप्त नहीं है. देवीलाल का लगातार गांव-शहर का मुद्दा उठाना (जिससे वी.पी. सिंह को अपने दल में परस्पर विरोधी जातियों को एकजुट करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वी.पी. सिंह

सबक सीखने का समय

अभेद्य कवच उतारो, स्पष्ट राय जाहिर करो

राजनीति में आदमी हमेशा सीखता ही रहता है. किसी नेता के लिए सबसे खतरनाक बात यह भ्रम पाल लेना है कि राजनीति के गुर सीखने में उसने सबको पछाड़ दिया है. सो, पिछले पखवाड़े राजनीति के चतुर और मंजे खिलाड़ी समझे जाने वाले वी.पी. सिंह को भी राजनीति के ककहरे की शिक्षा दी जा रही थी. वे चतुर छात्र साबित हुए भी. पहला सबक उन्होंने यह सीखा कि अपने सहयोगियों को विश्वास में लो. दूसरा, अपने चारों ओर अकेलेपन के अभेद्य कवच को उतार फेंको. तीसरा, बिलावजह कुछ न छिपाओ और चौथा यह कि अति विवादास्पद मुद्दों पर भी स्पष्ट राय जाहिर करो.

वी.पी. सिंह में तेजी से आते बदलावों की पुष्टि उनके सहयोगियों ने भी की है. उनका कहना है कि प्रधानमंत्री की कार्यशैली में उन्हें भारी बदलाव नजर आता है. ये बदलाव करने पर विवश हुए लगते हैं, जो उनके चरित्र से भले ही मेल नहीं खाते पर अस्तित्व बचाए रखने के लिए वे हालात से समझौता कर रहे हैं. उन्हें जो राजनीति विरासत में मिली थी उसमें उन्हें सत्ता से बाहर करने को षड्यंत्र रचते महत्वाकांक्षी सहयोगी और अपने हिस्से का तकाजा करते कट्टर समर्थक मिले थे.

लेकिन उन्हें जल्द ही पता चल गया कि तटस्थ रवैया और उपदेशनुमा भाषण उनकी समस्याओं का हल नहीं है. उन्हें कमजोर, फैसले लेने में असमर्थ और स्वार्थी करार दिया गया. प्रशंसक उनका साथ छोड़ने लगे और विरोधी मौके की ताक में रहने लगे.

लेकिन घातक चोट लगने से पहले वी.पी. सिंह को अपनी गलतियों का एहसास हो गया. अब अपने मंत्रियो से उनकी अनौपचारिकता बढ़ गई है. सर्वसम्मति की भावना अब भी है लेकिन डगमगाहट पर उन्होंने काबू पा लिया है. अब वे जल्दी और निर्णायक कदम उठाते हैं. पिछले पखवाड़े उन्होंने मंडल आयोग की कुछ सिफारिशों को लागू करने का फैसला दो घंटे में किया और तीन घंटे के भीतर उसके नियम भी तैयार करवा लिए. ये सिफारिशें एक दशक से सरकार के पास लंबित पड़ी थीं. फिर और उसका आधार-विस्तार करने में सचमुच कठिनाई होगी) और सरकारी पदों पर गांवों के अधिक से अधिक लोग भरने की मांग आगे भी परेशानी का सबब बनेगी. अब चूंकि देवीलाल सरकार से बाहर हैं इसलिए वे जिससे-तिससे चाहे जैसे वादे करेंगे और लोगों को फुसलाने के लिए किसी भी हद तक तक जाएंगे. वी.पी. सिंह की सरकार में सिर्फ 40 मंत्री हैं और इससे बाहर रहने वाले सभी संभावित असंतुष्ट और लालच में टूट सकने की संभावना वाले लोग माने जा सकते हैं.

कांग्रेस ने अभी से उनके खिलाफ एक अच्छा नारा ढूंढ़ निकाला है—न काम करने वाली सरकार. अब वी.पी. सिंह के सामने सचमुच बहुत ही मुश्किल राजनैतिक काम पड़ा हुआ है. वक्त निकलता जा रहा है. अब तक पार्टी के विवाद निबटाने में ही वे इस कदर उलझे रहे हैं कि सरकार चलाने. राष्ट्रीय समस्याओं को सुलझाने, चुनावी वादे पूरे करने का समय ही नहीं मिल पाया है. फिलहाल तो उन्हें स्थायित्व प्रदान करने वाली ताकतों पर निर्भर होकर ही चलना, होगा. लेकिन दीर्घकालिक नजरिए से देखें तो उन्हें इसी तरह काम करने की जगह नया जनमत लेना पड़ सकता है.

लगता है इसके लिए वे तैयारी भी कर रहे हैं. अपना प्रभाव क्षेत्र मजबूत करने और उसे बढ़ाने की दिशा में उन्होंने एक महत्वपूर्ण कदम उठा लिया है. कुल आबादी के 52 फीसदी लोगों के लिए सरकारी नौकरियों में स्थान आरक्षित करने के पक्षधर मंडल आयोग की सिफारिशों पर अमल शुरू हो गया है. इससे न सिर्फ हरिजनों बल्कि दूसरी पिछड़ी जातियों को भी लाभ होगा. इतना ही नहीं, डॉ. भीमराव आंबेडकर को मृत्यु के इतने वर्ष बाद सम्मानित किया गया. वी.पी. सिंह कश्मीर जैसे नाजुक मसलों पर भी इमाम बुखारी जैसों की राय पर अमल करके उन्हें भी लुभा रहे हैं.

अब जनता दल में राजनैतिक परिदृश्य बहुत स्पष्ट हो चुका है. वहां जाट-कांग्रेसी गठजोड़ बहुत दिन नहीं चल सकेगा. बहुमत वाली पार्टी का नेतृत्व करने के लिए वी.पी. सिंह को इंका से बड़ी संख्या में दलबदल कराने पर निर्भर होना होगा. राजीव गांधी की तुलना में अधिक विश्वसनीय, मजबूत और स्थायी सरकार चला सकने की क्षमता प्रदर्शित करके ही वे ऐसा कर पाएंगे. नहीं तो उनकी गलतियों से फायदा लेते हुए फिर से सत्ता पर काबिज होने की ताक में राजीव बैठे ही हुए हैं. यह सब वी.पी. सिंह के लिए नए चुनाव कराने का ऐसा आधार है जिसकी वे उपेक्षा नहीं कर सकते.

भवान सिंह

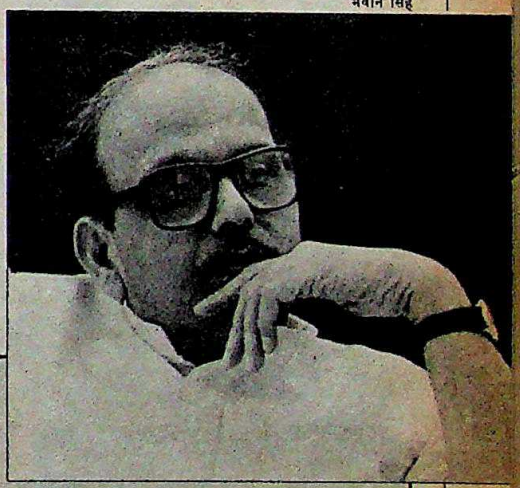

खासियत

- लोगों को बस सुनते रहते हैं.
- अहं तो है मगर इसका प्रदर्शन नहीं. लोगों से बेमतलब बात करना नापसंद.
- बेहद शक्की,किसी पर तब तक भरोसा नहीं जब तक उसकी निष्ठा पर यकीन न हो.
- अपनी छवि के प्रति बहुत सचेत. इसके लिए कुछ भी कुरबान करने को तैयार.
- अपने लाभ के लिए लोगों, प्रतिद्वंद्वियों तक के इस्तेमाल में माहिर.
- किसी मामले पर पहले अपनी राय देने से कतराना.
- दूसरों का अपने स्तर पर निर्णय करना पसंद ताकि खुद विवाद से बचे रहें.
- गोलमोल बात करना ताकि बचने का रास्ता रहे.
- रिश्ते का फायदा उठाने की कोशिश करने वालों से रिश्ता तोड़ना.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवीलाल ने उन्हें किसान रैली में शामिल होने का निमंत्रण भेजा तो उन्होंने दोटूक जवाब दिया कि वे ऐसी रैली में नहीं आएंगे जिसे इंका नेता संबोधित करें.

एक और बदलाव भी है जो कुछ समय बाद दिखेगा. उनकी सरकार पर निकम्मेपन का आरोप लग चुका है. अरुण नेहरू, अजित सिंह, मधु दंडवते, इंद्र कुमार गुजराल और राम विलास पासवान सरीखे कुछेक लोगों को छोड़ उनके बाकी मंत्रियों को अभी अपनी कार्यकुशलता साबित करनी है. वी.पी. सिंह ने अब मंत्रियों को सीमित स्वायत्तता देने और नियमित रूप से उनके कामकाज की प्रगति की जांच करने का फैसला किया है.

लेकिन उन्हें विश्वास है कि बड़े उद्योगपतियों और राजनेताओं का गठबंधन फिर उभरने से ही उनकी समस्याएं उपजी हैं. इसलिए उन्हें काबू करने के लिए उन पर हमले जारी रखेंगे. सहयोगी दलों ने उन्हें 'बदले की राजनीति' के खतरों से अगाह किया है पर वी.पी. सिंह शायद ही उनकी सलाह पर कान धरें. उनका मानना है कि बड़े उद्योगपतियों और भ्रष्ट नेताओं को निशाना बनाकर ही वे अपनी खोई चमक बहाल कर पाएंगे. —प्रभु चावला

देवीलाल

जलवा कायम

रैली ने दमखम का परिचय कराया

भवान सिंह

उप-प्रधानमंत्री का ताज भले ही छिन गया हो पर उनके सिर पर धरी देहाती पगड़ी का जलवा बरकरार है. 9 अगस्त को देवीलाल शायद यही दिखाना चाहते थे. बरखास्तगी के हफ्ते भर बाद पूर्व उप-प्रधानमंत्री ने राजधानी के बोट क्लब पर ज्यादातर हरियाणा से आए किसानों की भारी भीड़ जुटाकर यह जता दिया कि उनका दमखम अभी कायम है. रैली में आए जाट और पिछड़ी जाति के लोगों ने ताऊ की पगड़ी 'उछालने' पर एक सुर में अपनी नाराजगी जाहिर की.

मंच पर किसान नेता महेंद्र सिंह टिकैत, अकाली नेता प्रकाश सिंह बादल, बहुजन समाज पार्टी के प्रमुख कांशीराम, चिर असंतुष्ट चंद्रशेखर और लाल बुझक्कड़ सुब्रमण्यम स्वामी मौजूद थे. इन नेताओं की राजनीति में भले ही जमीन-आसमान का अंतर हो, उनके भाषण पर का सुर कमोबेश एक जैसा था. सभी का मत था कि देवीलाल को इसीलिए बरखास्त किया गया कि उन्होंने किसानों और समाज के कमजोर वर्गों का पक्ष लिया था.

इनमें अपमानजनक होने की हद तक सबसे ज्यादा कटु भाषण महेंद्र सिंह टिकैत का ही रहा. उन्होंने कहा, " यह सिर्फ देवीलाल पे नहीं, हम सबकी पगड़ी पे हमला है. किसान के मुंह पर थप्पड़ है." इसके बाद वे सीधे धमकी पर उतर आए, "जो देवीलाल की पगड़ी को हाथ लगाएगा, हम उसकी आंखें निकाल लेंगे."

रैली से एक बात साफ हो गई कि देवीलाल अब किसानों के मसीहा के रूप में उभरने की कोशिश करेंगे. 'पगड़ी की लाज' का अपना नया नारा वे शहरों, कस्बों और देहातों में ले जाएंगे. यह रैली इस दिशा में पहला कदम थी. इससे वे अपनी पार्टी को यह भी जता देना चाहते थे कि अरुण नेहरू, आरिफ मुहम्मद खां और मुफ्ती मुहम्मद सईद के, जो " इससे आधी भीड़ भी नहीं जुटा सकते," मुकाबले उनका व्यापक जनाधार है.

लेकिन 9 अगस्त के तमाशे से यह भी साबित हो गया कि देवीलाल अकेले किसानों के मसीहा नहीं बन सकते. उन्हें टिकैत का सहारा लेना ही होगा. और टिकैत ने स्पष्ट कर दिया है कि वे देवीलाल का समर्थन उसी वक्त करेंगे जब तक वे किसानों का इस्तेमाल अपने राजनैतिक हितों के लिए नहीं करते. उनका कहना था, "हमारी दिलचस्पी देवीलाल और अजित सिंह के बीच सत्ता समीकरणों के प्रति नहीं, अपनी इज्जत के प्रति है."

भारी भीड़ की ओट में कुछ वक्त के लिए इस बात पर भी परदा पड़ गया कि जनता दल में देवीलाल अब अकेले पड़ गए हैं, उनका कोई साथी नहीं रहा. केवल एक सांसद हुकुमदेव नारायण ही मंच पर आने की हिम्मत जुटा पाए.

हद तो यह हुई कि ताऊ ने इंका अध्यक्ष राजीव गांधी को भी रैली में आने का न्यौता देकर इन अफवाहों की पुष्टि की कि उनका इंका के साथ गुप्त संपर्क है. देवीलाल भले ही इसका खंडन करें लेकिन उनकी विश्वसनीयता पर आंच आई लगती है. उनके एक सहायक कहते हैं, "चौधरी साहब को देर-सवेर फैसला लेना ही होगा. वे वी.पी. सिंह को रीढ़विहीन भी कहते रहे और उनके समर्थक भी बने रहें, यह नहीं चल सकता."

दरअसल उनके पास और कोई चारा भी नहीं है. अपमान झेलने के बाद देवीलाल को अपनी पार्टी को जताना होगा कि चुनावी मैदान में उनका अभी भी महत्व है. इसका मतलब है सड़कों पर उतरना,भले ही इससे पार्टी की कितनी ही फजीहत क्यों न हो. —हरिंदर बवेजा

अरुण नेहरू

वजन बढ़ा

ताऊ के बाद तूती बोल रही है

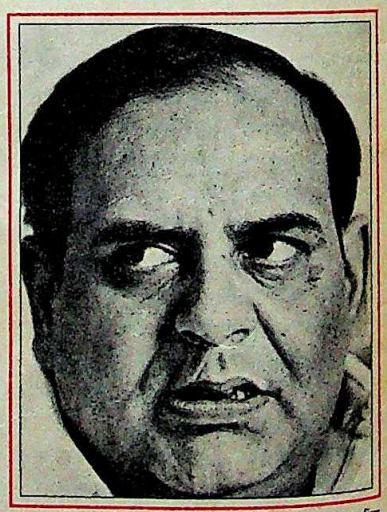

भवान सिंह

जनता दल को हिला कर रख देने वाले ताजा नाटक की पटकथा मानो भारी-भरकम वाणिज्यमंत्री अरुण नेहरू के लिए ही लिखी गई थी. और उन्होंने अपनी भूमिका निभाई भी खूब मजे लेकर. देवीलाल की आंधी जैसे ही वी. पी. सिंह की सरकार का तंबू उखाड़ने को आमादा हुई, नेहरू ने अपना चक्कर चलाया. जब आंधी थमी तब ताकतवर 'ताऊ' घायल शेर की तरह धराशायी नजर आए और नेहरू विजयी शिकारी की मुद्रा में.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

An Expression...

TIMELESS APPEAL,
EMBELLISHED WITH STYLE
FOR MOMENTS TO CHERISH
IN EVERY TIME!

Dora®

A CLASS APART

H.P. TEXTILE MILLS
CALCUTTA • NEW DELHI • AHMEDABAD • KANPUR • BOMBAY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटी छोटी उंगलियाँ
बनाएँ कलाकृतियाँ.

आर्ट मटिरियल का विशाल संसार
कैम्लिन लिमिटेड

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुनिए वही जो सब से जुदा हो

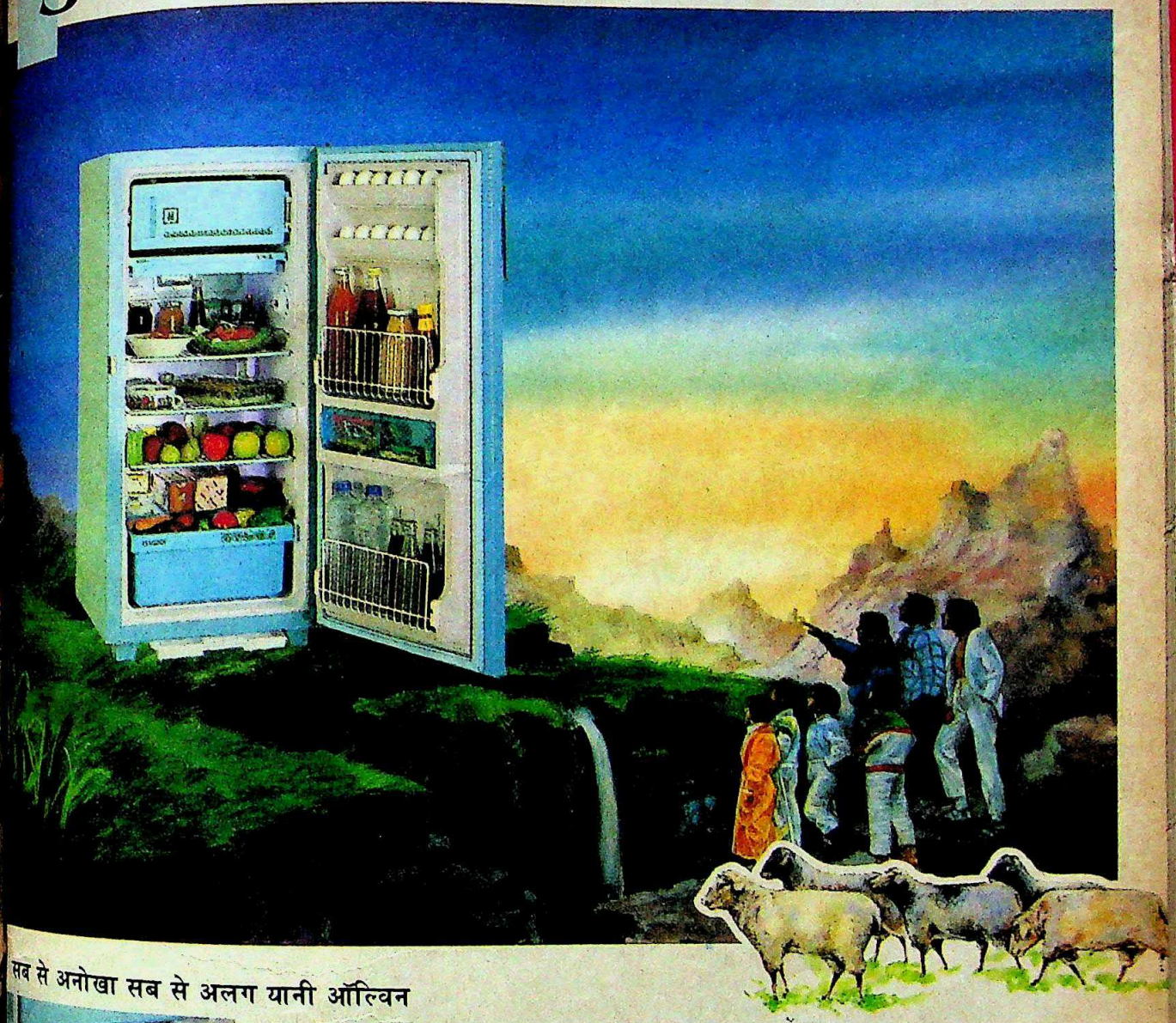

सब से अनोखा सब से अलग यानी ऑल्विन

▲ बेआवाज मज़बूत भरोसेमंद आल्विन कम्प्रेसर हिटाची तकनॉलॉजी से बना है। इसीलिए बेआवाज रहे., बिना झंझट काम करे, ▲ टिल्टिग बॉटल रैक्स ताकि बोतलें आसानी से सरकाई जा सकें ▲ डिफ्रॉस्टिंग इसके लिये है एक सक्षम, बिना घिचपिच किए, तुरंत "सेल्फे ड्रेनिंग सिस्टम" इससे रेफ्रीजेरेटर दोबारा खुद स्टार्ट हो जाता है ▲ वोल्टेज के उतार चढ़ाओ का इस पर कोई असर नहीं होता (170V से 250V) ▲ आल्विन भारत में रेफ्रीजेरेशन के अग्रगामी ▲ 165 लिटर सिगल डोर और 165, 300 व 380 लिटर डबल डोर मॉडल अनेक रंगों में सात साल की ग्यारंटी और सात साल के "प्रोटेक्शन कॉन्ट्रोक्ट" की अतिरिक्त सुविधा भी ▲ ISI

ALLWYN
REFRIGERATORS
QUIET · STURDY · FAITHFUL

अब इत्मीनान रखिए आपने वही चुना है जो सब से जुदा है. ऑल्विन.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Your first strategic move for 1991

CC-0. Digitized by eGangotri Foundation Chennai and eGangotri

INDIA TODAY YEARBOOK 1991
Code: IT 101
Size: 20.9 × 27.9 cm
Price: Rs 275

SLIMLINE DIARY 1991
Code: IT 102
Size: 8.2 × 17.1 cm
Price: Rs 70

POCKET DIARY 19
Code: IT 103
Size: 7.6 × 12.0 cm
Price: Rs 45

NDIA ODAY IARIES

e 1991 India Today diary set mes in a comprehensive range of a arbook and compact diaries. Each ary is attractively produced com- ining excellence with efficiency, le with substance. Gold leaf em- ssing, gilt-edged pages, handy rib- n markers are just a few of the ex- isive features of these diaries.

NDIA TODAY EARBOOK 1991

e India Today Yearbook helps you manage your time effectively and is uch more than just a desk diary — is a carefully selected compendium information compiled in sections nich include :

A statistical overview of India • Data the economy • Complete travel ide • City guides • International ne • 16 pages of full colour maps.

The diary section is laid out with an easy-to-read format which includes Week-at-a -glance, half-hourly slots for appointments, current and forward year planner, ample space for notes and much more.

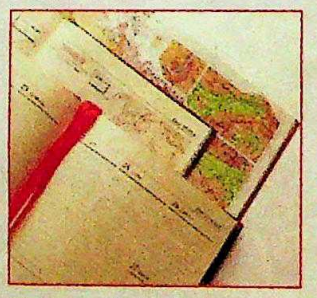

Slimline and Pocket Diaries

The Slimline diary is designed for your jacket or briefcase while the Pocket diary tucks away neatly into your pocket. Incredibly compact and convenient, yet packed with all the features you need, including quick information sections on hotels and essential ISD/STD codes. With these compact diaries you can now carry all the day-to-day information you need with you.

PERSONALIZE THESE BEAUTIFUL DIARIES

Whether you are ordering the diaries as a set or as singles, for yourself or as a gift for someone, you can add style and personalize them with gold leaf embossing of upto three initials and a company logo (logo embossing offered on the Yearbook), at a nominal charge.

HAND-CRAFTED ELEGANCE IN REAL LEATHER

Limited Edition Premium Diaries

The 1991 Yearbook, Slimline and Pocket diaries have also been produced in rich brown real leather covering. Meticulously finished to highlight the grain and texture enhanced by silken ribbon markers, gilt-edged pages and gold leaf embossing on the cover. Gold embossing of upto three initials on all these premium diaries and on the leather book-mark accompanying the Yearbook is offered free of cost. Gold embossing of a company logo is available only on the Yearbook, at a nominal cost.

INDIA TODAY YEARBOOK 1991
Code: 201
Size: 20.9 × 27.9 cm
Price: Rs 475

POCKET DIARY 1991
Code: 203
Size: 7.6 × 12.0 cm
Price: Rs 90

Make your selection now and send in your order before 15 September 1990 for a special pre-publication discount of about 15%. If the order form has been ed. Mail your enquiry/order toLiving Media India Ltd., P B No 29, New Delhi 110001. Please add Rs 10 for gold embossing of each set of 3 initials per diary.

ORDER FORM 1991

oduct ode	Product Details	Regular Price (Rs)	Spl. Price For Orders Recd. Before Sept 15, 1990 (Rs)	Quantity Ordered	Total Amount (Rs)
101	India Today Yearbook 1991 (Regular)	275	235	___	___
102	India Today Slimline Diary (Regular)	70	60	___	___
103	India Today Pocket Diary (Regular)	45	38	___	___
201	India Today Yearbook 1991 (Leather)	475	405	___	___
202	India Today Slimline Diary (Leather)	135	115	___	___
203	India Today Pocket Diary (Leather)	90	77	___	___

Total		
Extra for gold embossing of Initials on the regular diaries @ Rs 10 per unit per diary (This facility is free of charge for the premium leather diaries)	Rs	___
Please give maximum of 3 initials per diary ordered on a separate sheet		
Company logo (facility offered only for the Yearbooks viz product codes IT 101 and IT 201) @ Rs 15 per logo per diary	Rs	___
Add Rs 5 for outstation cheques (i.e., cheques outside Delhi)	Rs	___
and Total	Rs	___

emittance should be drawn in favour of Living Media India Ltd. and mailed alongwith your name, ddress and the completed order form to Living Media India Ltd., P B No. 29, New Delhi 110 001

Order now! And save 15%

Please note:

- Cheques/drafts payable at Bombay, Madras, Calcutta and Delhi must be MICR only.
- Diaries will be home delivered by Registered Post/Courier. Deliveries will commence by early November and barring unforeseen circumstances will be completed by end December 1990.
- For gift instructions, please give recipients name and address alongwith details for embossing initials on a separate sheet.
- Facility for gold embossing company logo is offered only for Yearbooks (Product codes IT 101 and IT 201). Minimum order is 25 diaries per logo Maximum area of logo is 6 sq cms. Artworks or positives will need to be supplied.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेहरू ने न केवल अपने पुराने दुश्मन देवीलाल को मंत्रिमंडल से निकलवाया बल्कि यह भी साबित किया कि असली किंगमेकर 'ताऊ' नहीं खुद वे हैं. देवीलाल की बरखास्तगी के बाद उनकी चांदी हो गई है क्योंकि अब वे पार्टी तथा सरकार के हर फैसले को प्रभावित कर सकते हैं. नवंबर 1989 में जब से राष्ट्रीय मोर्चा सरकार सत्ता में आई तब से नेहरू की भूमिका अपने विभागों या राजनैतिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति तक सीमित हो गई थी. उनके हर सुझाव को चुनौती देकर देवीलाल उन्हें कसे रहते थे.

करीब छह महीने तक दबे से रहने के बाद नेहरू ने हमला बोल ही दिया. जब 'ताऊ' की चलती थी तब नेहरू प्रधानमंत्री से 'रेक्स' पर हफ्ते में एक बार ही बात करते थे लेकिन अब वे शायद हर घंटे बात करते हैं. पहले वे प्रधानमंत्री के दफ्तर या निवास पर औपचारिक बैठकों में ही जाते थे मगर अब वे प्रतिदिन औसतन चार घंटे वहां होते हैं. वे अब प्रधानमंत्री के प्रमुख सलाहकारों में हैं. बैठक चाहे हरियाणा संकट पर हो या कश्मीर पर या कुवैत में इराकी हमले पर या तमिल चीतों के बढते प्रभाव पर, नेहरू की मौजूदगी जरूरी मानी जाती है. एक वरिष्ठ मंत्री का कहना है, "हम पसंद करें या नहीं, देश को नेहरुओं और गांधियों को झेलना ही पड़ेगा."

लेकिन नेहरू के दिन बहुत आसानी से नहीं फिरे हैं. उन्हें अपने तेवर को नरम करके ज्यादा दोस्ताना रुख अपनाना पड़ा है. पिछले कुछ महीनों से उन्हें समाचार जगत तथा राजनीति के अपने दुश्मनों को खुश करना पड़ा है. लेकिन उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि जनता दल के उन तत्वों को एकजुट करना रही जो देवीलाल की ज्यादतियों के शिकार बने. ये लोग 'ताऊ' से टक्कर लेने की हिम्मत जब नहीं जुटा पाए तब नेहरू ने चौटाला के मामले पर मंत्रिमंडल से इस्तीफा देकर तथा देवीलाल को चुनौती देकर कि वे उनके तथा आरिफ के खिलाफ भ्रष्टाचार के अपने आरोपों को सिद्ध करें, इन लोगों का हौसला बढ़ाया.

लेकिन नेहरू के दुश्मनों की सूची अभी भी लंबी है. कांग्रेस में अगर राजीव से उनकी नहीं बन पाई तो जनता दल में उन्हें चंद्रशेखर, देवीलाल, अजित सिंह और जॉर्ज फर्नांडीस से निबटना होगा जो उनकी कार्यशैली को पसंद नहीं करते. देवीलाल ने कहा भी है कि उनकी लड़ाई जनता दल में कांग्रेसी संस्कृति से है जिसका प्रतिनिधित्व नेहरू और जनमोर्चा के नेतागण करते हैं.

इसके अलावा पार्टी की भीतरी लड़ाई अगर शहर बनाम गांव का रूप लेती है तो नेहरू घाटे में ही रहेंगे. इसीलिए वे देवीलाल के खिलाफ अपनी लड़ाई को मुद्दों की लड़ाई बताते हैं. वे कहते हैं, "यह व्यक्तियों की लड़ाई नहीं है." अगर यह लड़ाई नेताओं और समाचार माध्यमों तक सीमित रही तो नेहरू इसमें सबको मात देने की क्षमता रखते हैं. मगर चुनाव के मैदान में शत्रुओं से निबटने की उनकी क्षमता संदिग्ध है. —प्रभु चावला

अजित सिंह

जगह लेंगे

जाटों का नेतृत्व संभालेंगे

भवान सिंह

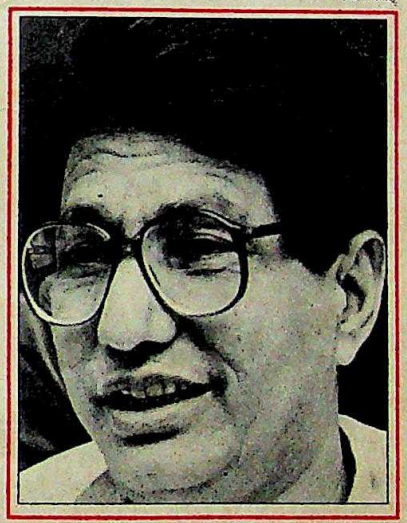

जनता दल को जाटों में उम्मीद की किरण उन्हीं से दिखती है. देवीलाल को वस्तुत: किनारे कर दिए जाने से केंद्रीय उद्योगमंत्री अजित सिंह उनकी जगह लेकर ग्रामीण ताकतों के एकीकरण का केंद्र बनने की राह पर हैं.

उनकी हैसियत में रातोरात वृद्धि का प्रमाण उस समय मिला जब संसदीय पार्टी की 3 अगस्त की बैठक में उन्हें वी. पी. सिंह में विश्वास व्यक्त करने वाला प्रस्ताव पेश करने के लिए चुना गया. और इस बात की पुष्टि अगले ही दिन हो गई जब यह खबर फैली कि राज्य सरकार को बदलने में रुचि रखने वाले हरियाणा के सभी विधायक अजित सिंह के निवास स्थान पर इकट्ठे होंगे.

वहां नाश्ते और चाय के बीच उपजा राजनैतिक संदेश यह था कि देवीलाल के लोग भी अजित सिंह को अब सलाम बजाने लगे हैं. इसलिए चौधरी चरण सिंह का बेटा जनता दल में सबसे ताकतवर जाट नेता के रूप में उभरने लगा है.

अजित सिंह की मुठभेड़ वाली फितरत न होने के कारण ढीले-ढाले जनता दल की अनेक श्रेणियां उनसे संतुष्ट हैं. और फिर अजित सिंह की कलाबाजी वाली राजनीति में आज का दुश्मन कल कट्टर समर्थक भी बन सकता है. मसलन, बताया जाता है जब वी. पी. सिंह ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री पद के लिए उनकी उम्मीदवारी का समर्थन करने से इनकार कर दिया तो दोनों में मतभेद पैदा हो गए थे. लेकिन जिस रात देवीलाल से कुर्सी छीनी गई, वे प्रधानमंत्री के इर्द-गिर्द रहे मंत्रियों में थे. उनके समर्थकों का यह तक दावा है कि प्रधानमंत्री ने देवीलाल के नाम लिखी चिट्ठी उन्हें दिखाकर उनके सुझाव भी उसमें दर्ज किए थे.

इसके अलावा वे चंद्रशेखर के क्रोध से भी बचते आए हैं. और फिर, चौटाला की बहाली पर इस्तीफा देने के सवाल पर उनके और जनमोर्चा वालों के बीच कुछ दरार पैदा हुई थी मगर देवीलाल की बरखास्तगी के समय दोनों ने हाथ मिला लिए थे. एक वरिष्ठ मंत्री ने यहां तक कह दिया, "लिख लीजिए, अजित सिंह कैबिनेट में जल्दी ही नंबर दो के रूप में उभरेंगे."

लेकिन उनकी ऐसी सधी राजनैतिक चालों का मकसद जनता दल में लोकप्रियता की बाजी जीतना नहीं बल्कि अपने बूते पर नेता के रूप में उभरना है. और इसके लिए वे जनता की ओर रुख करेंगे. उनका तुरुप का पत्ता अपने पिता का प्रभावक्षेत्र है. इसलिए अजित सिंह की जाट बहुल क्षेत्र का दौरा करने की तैयारी हो चुकी है. शुरुआत वे रोहतक में रैली से कर सकते हैं और फिर हरियाणा, उत्तर प्रदेश तथा बिहार तक पहुंच सकते हैं. रास्ते में खासकर मुलायम सिंह यादव की ओर से कुछ अड़चनें भी आ सकती हैं. उत्तर प्रदेश जनता दल के 61 विधायकों का अजित सिंह को समर्थन होने के कारण दोनों के बीच तनाव के संकेत अभी भी दिखते हैं.

और यहीं आकर वे फंस भी सकते हैं. अगर वे हिंदी क्षेत्र के राज्यों में सरकारें गिराने का लालच कर बैठे तो अपने पिता के प्रभावक्षेत्र को बांटने का ही काम करेंगे जो अंतत: राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के लिए घातक सिद्ध हो सकता है. अल्पकालिक फायदों की जगह दीर्घकालिक रणनीति अपनाकर ही अजित सिंह सचमुच ठोस नेता साबित हो सकते हैं. —सीमा मुस्तफा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इराक

साम्राज्यवादी मंसूबे

कुवैत को हड़पे जाने से खाड़ी के दूसरे देशों की प्रभुसत्ता को खतरा पैदा हुआ और यह क्षेत्र अंतरराष्ट्रीय तनाव का अखाड़ा बना

इराक के राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन ने जब कुवैत पर टैंक चढ़ा दिए और भयभीत दुनिया देखती रह गई तो उन्हें 'बगदाद का चोर' करार दिया गया. लेकिन अपनी सेना को वापस बुला लेने के वादे से विश्व जनमत के गुबार को शांत करने के बाद सद्दाम ने चोरी के साथ सीनाजोरी की इससे भी बड़ी गुस्ताखी की और छोटे-से मगर तेल संपन्न शाही राज्य को हड़प लिया.

एडॉल्फ हिटलर के बाद कोई भी शख्स अंतरराष्ट्रीय सत्ता संतुलन के लिए न तो इस प्रकार खतरा बना है और न ही किसी ने दुनिया के प्रति इस तरह की गुस्ताखी दिखलाई है. युद्ध में तपी और क्षेत्र में सबसे ताकतवर सेना को हरकत में लाकर इराक ने इस फुर्ती से तख्तापलट किया कि महाशक्तियां स्तब्ध रह गईं और अरब देश भी संज्ञाशून्य होकर रह गए. समूचे मध्य-पूर्व की तरह ही कुवैत में रहने वाले 1,70,000 भारतीयों के लिए सुख-चैन से समृद्धि पाने का सपना इस तरह टूटा जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी.

लेकिन सत्ता के लिए दीवाना बगदाद का शासक इसका अपवाद है. बेबिलोनिया के इतिहास के प्रति उनकी जो भी मान्यताएं हों मगर सद्दाम ने आज दुनिया की कमजोर अर्थव्यवस्था के लिए अति महत्वपूर्ण मध्य-पूर्व को अपनी बेलगाम महत्वाकांक्षाओं का बंधक बना लिया है. ओमान, बहरीन और संयुक्त अरब अमीरात—जहां भारी संख्या में भारतीय आप्रवासी रहते हैं—सद्दाम की सेना के लिए तो मानो हलुए की तरह हैं. ज्यादा भयावह बात यह है कि सद्दाम का अगला निशाना सऊदी अरब है जहां दोनों देशों की मिसाइलों से लैस सेनाएं आमने-सामने होने के कारणं अमेरिका के साथ मुठभेड़ तक की नौबत आ सकती है. विडंबना यह है कि अरब जगत पर हावी होने की सद्दाम की ख्वाहिश को रोकने की क्षमता सिर्फ इज्राएल में है जो अरब देशों का साझा दुश्मन है.

एक दुबईवासी ने पूछा, "आज कुवैत है तो कल किसकी बारी होगी? बहरीन की या अमीरात की?" अमीरात के एक वरिष्ठ सुरक्षा अधिकारी ने माना कि उनके देश पर हमले का सचमुच खतरा है. उन्होंने कहा, "हमसे बदला चुकाए बिना सद्दाम हुसैन चैन से नहीं बैठेंगे." वे इराकी नेता के उस आरोप का जिक्र कर रहे थे कि कुवैत समेत अमीरात भी अति उत्पादन के जरिए उनके तेल राजस्व की बर्बादी का जिम्मेदार है.

मगर सद्दाम की नजर अपने पड़ोसी को तेल निर्यात करने वाले देशों के संगठन (ओपेक) के नियमों का पालन करने के लिए मजबूर करने तक ही सीमित नहीं थी. उनके मिशन की जड़ें इतिहास और दीर्घकालीन सैन्य रणनीति में मौजूद हैं. चूंकि ईरान उन्हें शत-अल-अरब जलमार्ग का नियंत्रण सौंपने के लिए तैयार नहीं था इसलिए उन्होंने कुवैत की सीमा से लगे खोड़ अब्दुल्ला मार्ग पर कब्जे की कोशिश की. पर उसके मुहाने पर कुवैत के दो द्वीप भी थे जो अब इराक के कब्जे में चले गए हैं. इन सबसे भी बड़ी वजह पैसा है. सद्दाम को युद्ध से क्षतिग्रस्त अपनी अर्थव्यवस्था फिर से खड़ी करने के लिए इसकी सख्त जरूरत है.

ओपेक देशों में सबसे बड़ा तेल उत्पादक होने के बावजूद इराक को अपनी 1.4 करोड़ जनता का पेट पालने के लिए हमेशा मुश्किल पड़ती थी. ईरान के साथ युद्ध ने उसकी अर्थव्यवस्था को चौपट कर दिया था और सद्दाम पर 60 अरब डॉलर विदेशी कर्ज चढ़ गया जिसमें 40 अरब डॉलर सऊदी अरब और कुवैत ने उधार दिया था. इराक नाराज है कि ईरान के साथ युद्ध खत्म होने के बाद भी कोई विदेशी बैंक उसकी बिखरी अर्थव्यवस्था की मदद के लिए आगे नहीं आया है.

सो, इराक की हमलावर सेना ने सबसे पहले जब कुवैती सेंट्रल बैंक पर कब्जा किया तो किसी को हैरानी नहीं हुई. इसके बाद ही अमीर के महल पर धावा बोला गया. एक ही झटके में सद्दाम ने खाड़ी के तथाकथित आर्थिक पुनरुत्थान को ठेंगा दिखा दिया. हमले के कुछ घंटों के भीतर ही बेहद प्रतिष्ठित कुवैती दीनार अपने मूल्य का तीसरा हिस्सा रह गया.

कुवैत पर थोपे गए नए प्रधानमंत्री कर्नल हुसैन के साथ सद्दाम (दाएं)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	इराक-कुवैत	इज्राएल	सीरिया	बहरीन	ईरान	सऊदी अरब	ओमन	संअअ
आबादी	1.815 करोड़	45 करोड़	1.13 करोड़	613,000	5.28 करोड़	1.31 करोड़	14 करोड़	16 करोड़
सैनिक	1,020,300	141,000	404,000	2,850	604,500	72,300	25,500	43,000
टैंक	4,775	3,850	4,050	60	1,000	550	39	136
तोपखाने	3,776	1,361	2,150	15	865	505	138	232
विमान	570	577	448	12	50	182	51	88

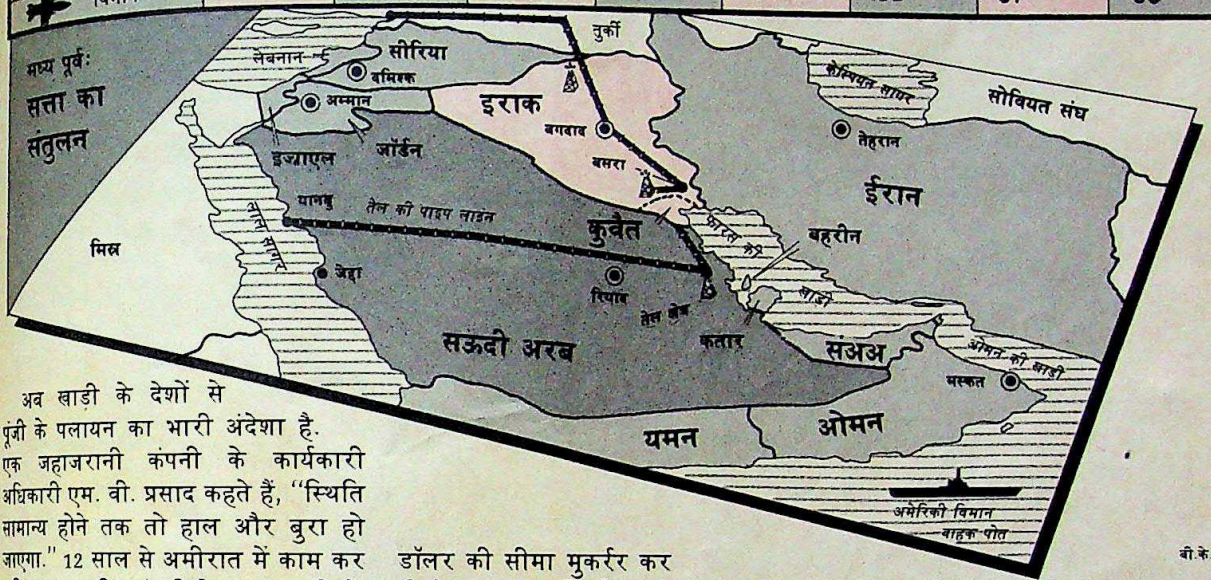

चार्ट: बी.के. शर्मा

अब खाड़ी के देशों से पूंजी के पलायन का भारी अंदेशा है. एक जहाजरानी कंपनी के कार्यकारी अधिकारी एम. वी. प्रसाद कहते हैं, "स्थिति सामान्य होने तक तो हाल और बुरा हो जाएगा." 12 साल से अमीरात में काम कर रही एक भारतीय कंपनी के प्रमुख कहते हैं, "लड़ाई भड़कने से खाड़ी के देशों में एक और आर्थिक पुनरुत्थान की संभावनाओं को बड़ा धक्का पहुंचा है."

इससे कुवैत में रह रहे 1,70,000 भारतीयों का भविष्य धुंधला नजर आता है. कुवैती दीनार और इराकी दीनार के बीच सममूल्यता बनाए रखने के इराक समर्थक सरकार के फैसले से उनकी कमाई एक-तिहाई रह गई है. नई सरकार ने देश से पैसा बाहर भेजने पर भी प्रति व्यक्ति 500 डॉलर की सीमा मुकर्रर कर दी है. इस बात की भी बहुत संभावना है कि कुवैत में रह रहे आप्रवासी भारतीयों से नौकरियां छीनकर बेरोजगार इराकियों को दी जाएंगी.

तनाव का नजला सबसे पहले निर्माण उद्योग पर गिरेगा. दुबई में खास तौर से मध्यम दर्जे का निर्माण कार्य तेजी से हो रहा है. इसमें ज्यादातर पूंजी हांगकांग छोड़ने वाले सिंधी व्यापारियों ने लगाई है. इस क्षेत्र में करीब 15 साल से रह रहे अहमद हुसैन ने कहा, "पैसा लगाने के लिए टैक्स की बचत वाली ही नहीं, सुरक्षित जगह भी चाहिए."

अमीरात के वस्तुतः कर-मुक्त कारोबारी माहौल में हाल के वर्षों में भारी पूंजी निवेश हुआ है. अगर खाड़ी में अनिश्चितता अनंत काल तक खिंची तो ये निवेशकर्ता हड़बड़ी में वहां से भाग भी सकते हैं.

अब महत्वपूर्ण सवाल यह है कि क्या सद्दाम कहीं रुकेंगे? लगता है नहीं. कुवैत को टैंकों तले रौंदे जाने के करीब 40 घंटे बाद जब अरब लीग हमले पर विचार करने के लिए जुटी तो आश्चर्यजनक रूप से कई सदस्यों खासकर जॉर्डन, यमन और फिलस्तीनी मुक्ति संगठन ने इराक की निंदा करने से इनकार कर दिया. खाड़ी सहयोग परिषद में कुवैत के पड़ोसी देशों—सऊदी अरब, बहरीन, कतर, ओमान और अमीरात—ने इराक की निंदा करने से पहले बेहद निष्क्रियता दिखाई. अनेक अरब देश कुवैत के हटाए गए अल-सबाह शासक परिवार के प्रति उतनी सहानुभूति नहीं रखते. जॉर्डन को उम्मीद है कि इज्राएली हमले की स्थिति में इराक उसका साथ देगा. फिलस्तीनी मुक्ति संगठन

लंदन में प्रदर्शन करते कुवैती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का नेतृत्व वस्तुतः बगदाद में ही कायम है और यासर अराफात इराक के मुहैया कराए निजी जेट विमान में ही सफर करते हैं. उधर, यमन अपने पुनः एकीकरण से नाखुश सऊदी अरब को प्रभावहीन करने में इराक सरीखे बड़े और ताकतवर देश का सहारा चाहता है.

इससे सद्दाम की आठ साल के युद्ध में तपी 10 लाख सेना से लोहा लेने के लिए सऊदी अरब ही बचता है. पर सऊदी अरब जानता है कि उसके 66,000 सैनिक इराक की तुलना में उन्नीस ही बैठते हैं. पिछले हफ्ते रियाद में अमेरिकी सेना के पहुंचने से यही जाहिर होता है. मगर अमेरिकी सैनिक सहायता का मतलब है कि उसे अपनी अरब बिरादरी की सहानुभूति से हाथ धोना पड़ सकता है. सऊदी अरब स्थित मक्का पर विदेशियों के 'कब्जे' की बात करके सद्दाम ने मुसलमान देशों को उससे अलग करने की भावनात्मक अपील भी की है.

खाड़ी के राजनैतिक विश्लेषकों का मानना है कि सद्दाम अब संयुक्त राष्ट्र संघ में पारित आर्थिक प्रतिबंधों से पैदा मुश्किलें भारी पड़ने से पहले कुछ कर दिखाना चाहते हैं. वे ज्यादातर अरब देशों को आतंकित कर पहले ही झुका चुके हैं. कुवैत के तेल कुंओं के अलावा उसके टैंक और लड़ाकू विमान पाकर वे बड़ी ताकत भी बन चुके हैं. कुवैत को हड़पने से इराक के तेल निर्यात की समुद्री नाकेबंदी अब उतनी कारगर नहीं रही. और फिर, प्रक्षेपास्त्रों के अपने घातक जखीरे से सद्दाम खाड़ी के चाहे जिस देश को आतंकित कर सकते हैं. सोवियत संघ के इस बखेड़े में पड़ने की अनिच्छा के कारण, अमेरिका और उसके पश्चिमी सहयोगी देश भारी असुविधा में हैं. उनकी दूरी इतनी अधिक है कि कारगर युद्ध करना उनके लिए मुश्किल है. उनके सामने एकमात्र विकल्प समुद्र और आकाश से इराक पर बमबारी करना है जिससे सद्दाम खाड़ी पर अपने प्रक्षेपास्त्रों और रासायनिक हथियारों का जखीरा इस्तेमाल करने पर मजबूर हो जाएंगे. पर ऐसी तबाही कोई नहीं चाहता. इसलिए बाजी अभी तक सद्दाम हुसैन के ही हाथ है. —**दिलीप बॉब,** खाड़ी से **राज अय्यर** के साथ

मलयाली आप्रवासी

चमन उजड़ गया

इराकी टैंक जब कुवैत में घुसे तो केरल के हजारों घरों पर वज्रपात हो गया. कुवैत में काम कर रहे एक लाख मलयालियों के परिवार युद्ध में फंसे अपने प्रियजनों की सुरक्षा के लिए प्रार्थना के सिवा कर ही क्या सकते थे. कुवैत में मलयालियों की करीब 6,000 करोड़ रु. की पूंजी लगी हुई है.

लड़ाई छिड़ने के तुरंत बाद मोजी जॉन ने कुवैत से मध्य केरल में कोझनचेरी के पास रहने वाली अपनी पत्नी को फोन किया कि वह सुरक्षित है. लेकिन दूसरे हजारों चिंतित परिवारों के पास ऐसा कोई साधन नहीं था जिससे वे स्थिति का पता लगा सकें.

वरकला, तिरुवला, कोझनचेरी, चवक्काड और कालिकट में, जहां के लोग कुवैत में भरे पड़े हैं, तनाव साफ देखा जा सकता था. लोगों को दीनार की नहीं, अपने संबंधियों की चिंता सता रही थी. इस अपुष्ट खबर से पूरे राज्य में आतंक की लहर दौड़ गई कि इराकी सैनिकों ने पालघाट जिले के हसन को गोली से उड़ा दिया. यदि स्थिति गंभीर हुई तो इस राज्य के लाखों घर तबाह हो सकते हैं क्योंकि नौकरी खोजने वाले मलयालियों का हित सिर्फ कुवैत से ही नहीं जुड़ा हुआ है. अमेरिकी बेड़े के रवाना होने से युद्ध की मानसिकता ने पूरी खाड़ी को जकड़ लिया है और आप्रवासियों के पलायन का खतरा पैदा हो गया है.

जान व माल के अलावा चिंता की दूसरी वजहें भी हैं. केरल के बैंकों ने कुवैती दीनार को रुपए में बदलना बंद कर दिया है. भारत में भुगतान के लिए कुवैती बैंकों से विदेशी मुद्रा में भेजे जाने वाले नकद दीनार और ड्राफ्ट अब स्वीकार नहीं किए जाते बल्कि वसूली मद के रूप में वापस भेज दिए जाते हैं. एक बैंकर का कहना था कि खाड़ी में युद्ध खत्म होने तक यही हालत रहेगी.

कुवैत का एकमात्र हवाई अड्डा बंद कर दिए जाने के कारण इस तेल संपन्न केंद्र के लिए हवाई टिकट जारी नहीं किए जा रहे हैं. कुवैत जाने और वहां से आने के लिए हफ्ते में आठ उड़ानें संचालित करने वाले एअर इंडिया को हर हफ्ते एक करोड़ रु. का घाटा हो रहा है. तिरुवनंतपुरम में एअर इंडिया के प्रबंधक जॉर्ज ठाराकन कहते हैं, "यह हमारी कमाई का समय था. कोई नहीं कह सकता कि उड़ानें कब शुरू होंगी."

कुवैत के लिए सब्जियों, फलों का निर्यात भी ठप पड़ गया है. वहां हर हफ्ते 100 टन सब्जियां विमान से भेजी जाती थीं जिससे 26 करोड़ रु. की आय होती थी. —**रमेश मेनन**

उल्लाल/स्टर्न

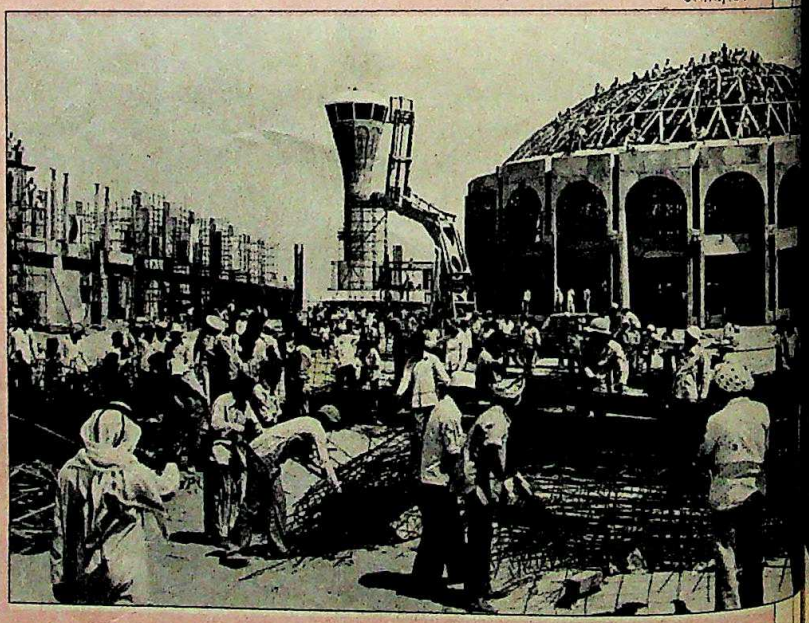

शारजाह में मलयाली मजदूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भूल जाईये

यदि आप भूल सकते हैं कि आपकी कार के इंजन की आयु घट कर 33% रह जाएगी

ऑयल, फ़्यूअल और एअर फ़िल्टरों पर निर्भर करता है आपकी कार के इंजन का भविष्य. यदि फिल्टर काम करने में सक्षम नहीं हैं तो कार के वॉल्व्ज़ अपनी जगह से हिल जाएंगे, पिस्टन रिंग्स को नुकसान पहुँचेगा, सिलिण्डर की भीतरी सतह नष्ट हो जाएगी, और आपके इंजन की आयु 1,50,000 कि.मी. से घट कर 50,000 कि.मी. रह जाएगी. और नतीजा, प्रत्येक ओवरहॉलिंग पर रु. 7000 का रिपेयर बिल.

और यदि आपकी कार के फ़िल्टर काम देते हैं, ऐसे जैसे कि प्यूरोलेटर—तो आपका इंजन चलेगा दुरुस्त, बिना रुकावट और परेशानी के, और आपके लिए रख-रखाव पर कम से कम खर्च.

इसलिए प्यूरोलेटर पर ही ज़ोर दीजिए. आपका मैकेनिक भी आपको यही सलाह देगा.

Purolator

दुनिया में सबसे ज़्यादा बिकने वाले फ़िल्टर

A member of the ANAND group of companies.

ULKA-O-PIL-210 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोफोर्स जांच

मशक्कत से खुलता रंग

स्विट्ज़रलैंड के सख्त कानूनों की जरूरतें पूरी करने से घोटाले की जांच के काम में अपेक्षित तेजी नहीं आ रही है

पहले विवाद उठा, फिर प्राथमिकी दर्ज हुई. और अब बोफोर्स दलाली की जांच पर एक बार फिर विवाद उठ खड़ा हुआ है. राष्ट्रीय मोर्चा सरकार को सत्ता में आए आठ महीने से अधिक का समय हो गया है पर फिलहाल उसकी मेहनत का कोई फल नहीं निकला दिखता.

इसके बावजूद प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह हाल ही में खुद मामले की प्रगति का जायजा लेने के बाद मानने लग गए लगते हैं कि जांच एजेंसियां सही रास्ते पर चल रही हैं. आलोचना को रद्द करते हुए रक्षा मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, "बोफोर्स का मामला फुटबाल मैच सरीखा है. हमने अपने प्रतिद्वंद्वियों के खिलाफ एक के मुकाबले छह गोल दाग दिए, फिर भी ऐसे पेश किया जा रहा है मानो हम मैच हार गए हों."

हालांकि एअरबस सौदे, सेंट किट्स घोटाले और एचडीडब्ल्यू पनडुब्बी मामले (देखें बॉक्स) की भी जांच हो रही है लेकिन सबसे ज्यादा जोर 1,437 करोड़ रु. के बोफोर्स तोप सौदे की जांच पर दिया जा रहा है.

बोफोर्स मामले की जांच करने वाले विशेष कार्यदल को शुरुआती सफलता के बाद सख्त स्विस कानूनी जरूरतों को पूरा करना पड़ रहा है जिससे जांच में देर हो रही है. इससे जांचकर्ताओं का उच्चस्तरीय दल—जिसमें प्रधानमंत्री कार्यालय के संयुक्त सचिव भूरेलाल, अतिरिक्त महान्यायवादी अरुण जेतली, सीबीआई प्रमुख राजेंद्र शेखर और उप-महानिरीक्षक के. माधवन शामिल हैं—कुछ समाचार पत्रों और इंका के हमलों का निशाना बन गया है.

स्विस कानून के अनुसार सीबीआई ने जांच में मदद के लिए अनुरोध पत्र देने की औपचारिकता फरवरी में पूरी कर ली थी. दरअसल, अनुरोध पत्र मंजूर कर लेने पर स्विस फेडरल पुलिस बैंक से दस्तावेजी सबूत इकट्ठा करने और जांच जारी रखने के आदेश के लिए क्षेत्रीय जांच न्यायाधीश के पास जाती है. इन दस्तावेजों के मिल जाने पर यदि न्यायाधीश पाता है कि किसी भी संदिग्ध व्यक्ति ने दलाली नहीं खाई है तो वह अनुरोध ठुकरा सकता है. लेकिन यदि वह दलाली से जुड़ा कोई सबूत पाता है तो संदिग्ध व्यक्तियों को आपत्तियां दायर करने के लिए 30 दिन का समय दिया जाता है.

आपत्तियों के दायर हो जाने पर सुनवाई की तारीख निर्धारित की जाती है. यदि

स्टॉकहोम में माधवन, भूरेलाल, और अरुण जेतली: पुरजोर कोशिश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ किया, कुछ छोड़ दिया

राजीव सरकार

अप्रैल '87-नवबर '89: घोटाले के लिए संदिग्ध व्यक्तियों के खिलाफ आपराधिक मामला दर्ज नहीं किया.
अप्रैल '87: स्विस खातों में दलाली के भुगतान से इनकार किया.
अप्रैल '88: संयुक्त संसदीय समिति कहती है कि दलाली में कोई भारतीय शामिल नहीं.
अप्रैल '88: जांच को ताक पर रख दिया गया जिससे स्वीडन में सरकारी वकील की जांच भी रुक गई.
जून '88: ऑडिट ब्यूरो की पूरी रिपोर्ट के लिए स्वीडन सरकार पर दबाव नहीं डाला.
अक्तूबर '89 : बोफोर्स के एजेंट विन चड्ढा को देश छोड़ने की इजाजत दे दी.
अक्तूबर 89: बर्न भेजी गई चिट्ठी में से घूस के आरोप वाले पैरा को उड़ा दिया.

वी.पी. सिंह सरकार

जनवरी '90 : 14 भारतीय अधिकारियों, कमीशन एजेंटों और बोफोर्स अधिकारियों के खिलाफ मामला दायर किया.
जनवरी '90: स्विस अदालतों में भ्रष्टाचार और दलाली के आरोप दायर किए और छह खातों को जाम करवा दिया.
फरवरी '90 : स्वीडन से अनुरोध कर सरकारी वकील की जांच फिर से शुरू करवाई.
मार्च '90 : सीबीआई को अनुरोध पत्र सीधे दायर करने का अधिकार देने के लिए संसद में विधेयक पेश किया.
अप्रैल '90: चड्ढा का पासपोर्ट जब्त कर लिया और उसके प्रत्यर्पण के लिए दुबई में कार्यवाही शुरू की.
मई '90: स्वीडिश सरकार से ऑडिट ब्यूरो रिपोर्ट के गोपनीय हिस्से हासिल किए.
जुलाई '90: नई कंपनी जुबिली फाइनेंस प्रकाश में आती है. हिंदुजा प्रतिवादी के रूप में सामने होते हैं.

न्यायाधीश आपत्तियों को ठुकरा देता है तो उसे फेडरल पुलिस को निर्देश देना होगा कि अदालतों के जरिए सीबीआई को सबूत सौंप दिए जाएं. लेकिन संदिग्ध व्यक्ति क्षेत्रीय कोर्ट के फैसले के खिलाफ 60 दिनों के भीतर फेडरल कोर्ट में अपील कर सकता है. यदि उसकी आपत्तियां फेडरल कोर्ट में भी नामंजूर हो जाती हैं तो अंततः दस्तावेज सीबीआई को सौंप दिए जा सकते हैं.

सीबीआई ने ज्यूरिख की क्षेत्रीय अदालत में पहली बाधा पार कर ली है. छह बोफोर्स खाते में से एक खाता इसी कोर्ट के न्याय क्षेत्र में आता है. न्यायाधीश ने एई सर्विसेज की आपत्तियों को ठुकरा दिया. एई सर्विसेज की दलील थी कि वह बोफोर्स रकम की एकमात्र लाभभोगी नहीं है. इसके बाद एई सर्विसेज को इसके खिलाफ फेडरल कोर्ट में अपील के लिए 60 दिन का समय मिल गया.

लेकिन जेनेवा की क्षेत्रीय अदालत में, जिसके न्यायक्षेत्र में बाकी पांच खाते आते हैं, सीबीआई को झटका खाना पड़ा. कोर्ट ने भारतीय अनुरोध पत्र में कई खामियां पाईं (देखें बॉक्स). जेनेवा से मिली खबरों के अनुसार अनुरोध पत्र का विरोध करने वालों में एस.पी. हिंदुजा भी थे. सीबीआई ने अब एक नया अनुरोध पत्र तैयार किया है जिसे 4 सितंबर के पहले स्विस अदालतों में दायर किया जाएगा.

फिर भी सीबीआई की जांच में काफी प्रगति हुई दिखती है; मसलन—

- बोफोर्स की दलाली वाले छह खातों को जाम करवा दिया गया.
- दलाली खाने वाले संदिग्ध व्यक्तियों के खिलाफ आपराधिक मामला दर्ज किया.
- स्वीडिश सरकार पर दबाव डालकर ऑडिट ब्यूरो रिपोर्ट के गोपनीय हिस्सों को हासिल किया.
- स्वीडन के सरकारी वकील की जांच फिर से खुलवाई.
- जेनेवा और ज्यूरिख की अदालतों में बंद खातों को खोलने की खाताधारियों की अपील को सिरे नहीं चढ़ने दिया.

वरिष्ठ अधिकारियों के अनुसार ज्यूरिख में उन्होंने थोड़ी बहुत सफलता हासिल कर ली है. चूंकि अदालत ने अनुरोध पत्र में उल्लिखित लोगों में से कुछ के खाते जाम कर दिए हैं, इसलिए उनमें से कोई भी रकम के हस्तांतरण की पर्ची नहीं छिपा सकेगा. सीबीआई अधिकारियों का मानना है कि चूंकि एई सर्विसेज के खाते में सबसे ज्यादा रकम गई है, उसके भंडाफोड़ से असली लाभभोगियों का पता चल जाएगा. दरअसल

अनुरोध पत्र

छोटी खामियां

जेनेवा स्थित बैंकों के अज्ञात खाताधारियों के वकीलों ने भारतीय अनुरोध पत्र को मुख्य तौर पर तीन बातों के आधारों पर चुनौती दी:

- फ्रेंच में अनुदित प्रतियों में त्रुटियां हैं.
- सीबीआई द्वारा स्विस अधिकारियों को दी गई लिखित सूचना को अदालत ने सत्यापित नहीं किया है जिसके मुताबिक भ्रष्टाचार के मामलों की सुनवाई करने वाले भारतीय न्यायाधीश विशेष न्यायाधीश नहीं बनाए गए और सरकार ने बोफोर्स मामले में किसी विशेष न्यायाधीश की नियुक्ति नहीं की.
- सीबीआई ने अनुरोध पत्र के संलग्नकों में जिन 47 संदिग्ध लोगों की सूची दी है, उसे अनुरोध पत्र पर दस्तखत करने वाले न्यायाधीश ने नहीं देखा.

इनके लिए निम्नलिखित स्पष्टीकरण मांगे गए:

- फ्रेंच अनुवाद में गंभीर गलतियां हैं. एक खास अनुच्छेद को तो दो बार लिखा गया है.
- एक दस्तावेज तो बैंकों के पास की मूल प्रति की अत्यंत गंदी फोटोकॉपी है.
- सौदे में शामिल दोषी अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई का ब्यौरा नहीं.
- इस बात का भी कोई उल्लेख नहीं कि स्वीडन सरकार ने सीबीआई की क्या सहायता की.

फिर से तैयार किए जा रहे अनुरोध पत्र में इन सभी खामियों को दूर किया जा रहा है और स्वीडन सरकार को दिया गया अनुरोध पत्र तथा उसके बाद हुई कार्रवाई का ब्यौरा भी साथ में जोड़ा जा रहा है.

राजेंद्र शेखर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्यूरिख की अदालत में चल रहा मामला अब अंतिम चरण में है. लेकिन खाताधारी शख्स फैसले के खिलाफ फेडरल कोर्ट में अपील कर सकते हैं.

लेकिन जेनेवा में अभियुक्त फेडरल कोर्ट में जाने से पहले नए अनुरोध पत्र को फिर से चुनौती दे सकते हैं. क्योंकि फेडरल कोर्ट का फैसला बैंकों को हर हाल में मानना होगा और उनके दस्तावेज भारत को सौंपे जा सकते हैं. यदि अभियोग पक्ष ज्यूरिख का मामला जीत गया तो इस साल के आखिर तक उसे ज्यूरिख बैंक खाते के दस्तावेज मिल सकते हैं. जेनेवा की प्रक्रिया में अभी दो माह का और समय लग सकता है.

एस.पी. हिंदुजा

जेनेवा से प्राप्त हुई खबरों के अनुसार बोफोर्स मामले में भेजे गए भारतीय अनुरोध पत्र का विरोध करने वाले लोगों में एस.पी. हिंदुजा भी थे

बहरहाल, खाताधारियों के पास इतनी ताकत और रकम है कि वे मामले को लटकाए रख सकते हैं. यह चर्चा भी है कि असल लाभभोगी तरह-तरह की भ्रामक सूचनाएं फैलाकर जांच में रुकावट डालने की कोशिश कर सकते हैं. देवीलाल मांग कर ही चुके हैं कि बोफोर्स सौदे की फिर से जांच कराई जाए. उन्होंने अरुण नेहरू पर इस सौदे में शामिल होने का आरोप भी लगाया है. ऐसे संकेत भी हैं कि स्वीडन के कुछ अखबारों में ऐसे दस्तावेज छपेंगे जिनमें नेहरू को इस सौदे से जोड़ा जाएगा.

यदि सीबीआई असली लाभभोगियों का पता लगाने में विफल रही तो मौजूदा सरकार के लिए इसके खतरनाक नतीजे निकल सकते हैं. सरकार को याद रखना चाहिए कि पिछली सरकार को विवादास्पद बोफोर्स तोप के कारण ही सत्ता से जाना पड़ा था. —पंकज पचौरी

दूसरे घोटाले

कच्छप चाल

चंद महीने पहले तक बहुत कम लोग ही जानते थे कि अनुरोध पत्र (लेटर रोगेटरी) क्या होता है. लेकिन बोफोर्स घोटाले की जांच के सिलसिले में सीबीआई ने स्विस अधिकारियों को अनुरोध पत्र क्या भेजा, यह शब्द आम लोगों की जबान पर चढ़ गया है.

सीबीआई सबसे पहले 350 करोड़ रु. के एचडीडब्ल्यू पनडुब्बी सौदे की जांच में मदद के लिए पश्चिम जर्मनी सरकार को अनुरोध पत्र भेज चुकी है. इसी तरह के पत्र 'एअरबस इंडस्ट्री' को 2,400 करोड़ रु. मूल्य के ए-320 विमानों की खरीद और सेंट किट्स घोटाले के सिलसिले में भेजे जाने वाले हैं.

ये सभी मामले हाल ही में बनाए गए सीबीआई के विशेष जांच दल को सौंप दिए गए हैं. यह दल संयुक्त निदेशक एन.के. सिंह के नेतृत्व में काम कर रहा है. सेंट किट्स प्रकरण में तो सीबीआई का दावा है कि प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह के ज्येष्ठ पुत्र अजेय सिंह के नाम के फर्जी बैंक खाते की जांच के काम में भी महत्वपूर्ण सुराग हाथ लगा है. जांचकर्ताओं के अनुसार पूरी योजना विवादास्पद धर्मगुरु चंद्रास्वामी के शिष्य देवकेतु के स्टैम्फोर्ड स्थित निवास और हथियारों के विवादास्पद सौदागर अदनान खाशोगी के न्यूयॉर्क स्थित ओलंपिक टावर्स होटल के सूट में बनाई गई. उधर, एअरबस घोटाले में सीबीआई ने करीब 10 अधिकारियों से 50 घंटे से भी अधिक समय तक पूछताछ की है. अब उसका दावा है कि इस बात के ठोस प्रमाण मिल चुके हैं कि संबद्ध अधिकारियों ने अपनी हदों से बाहर जाकर काम किया जिससे सरकार को "500 करोड़ रु. से भी अधिक" का नुकसान हुआ. उस टेलीविजन क्लिपिंग का भी अध्ययन किया गया है जिसमें जून 1985 के पेरिस हवाई प्रदर्शन के समय राजीव गांधी को एअरबस ए-320 के कॉकपिट में दिखाया गया था.

लेकिन सीबीआई इसे इतना ठोस कारण नहीं समझती कि राजीव का नाम भी प्राथमिकी में शामिल किया जाए. वह फ्रांस के न्यायिक अधिकारियों को अगस्त के अंत तक अनुरोध पत्र भेजने की योजना बना रही है ताकि विमान निर्माता से कागजात प्राप्त किए जा सकें.

एचडीडब्ल्यू पनडुब्बी मामले में भी भारत सरकार ने अपना अनुरोध पत्र पश्चिम जर्मनी के न्याय मंत्रालय और प्रधान अभियोक्ता के जरिए बोल्सतिएन के न्यायिक अधिकारियों तक पहुंचा दिया है. एचडीडब्ल्यू का मुख्यालय यहीं है. अगर आरोपों को सिद्ध करने में सीबीआई विफल रही तो उसकी छवि चौपट हो सकती है. —पंकज पचौरी

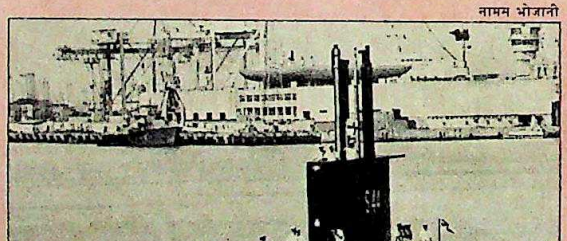

नामस भोजानी

प्रशांत पांजियार

एचडीडब्ल्यू पनडुब्बी (ऊपर) और एअरबस ए-320

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कश्मीर

बड़ी धरपकड़

उग्रवादियों के मंसूबों को धक्का

एक के बाद एक नाटकीय गिरफ्तारियां जिनमें प्रतिबंधित जेकेएलएफ के स्वयंभू कमांडर इन चीफ यासीन मलिक और उसके सहयोगी हमीद शेख का नाम शामिल है, और साथ ही भारी मात्रा में पकड़े गए हथियारों का जखीरा इस बात के प्रतीक हैं कि कश्मीरी उग्रवादियों के मंसूबों को भारी धक्का पहुंचा है. मलिक अपने गिरोह का सबसे कामयाब सरगना समझा जाता है. और शेख को तो सरकार ने रुबाइया की रिहाई के एवज में दूसरे आतंकवादियों के साथ छोड़ा था. लेकिन प्रशासन अभी हावी नहीं हुआ है.

पिछले पखवाड़े जेकेएलएफ के बड़े नेताओं के अलावा 40 प्रशिक्षित उग्रवादी पकड़े गए. प्रशासन का दावा है कि जेकेएलएफ के करीब दो तिहाई लोग पकड़ लिए गए हैं. गुप्तचर विभाग के एक अधिकारी जेकेएलएफ को 'गलित नख-दंत' बताते हैं. इसी तरह, कट्टरपंथी संगठन हिज्ब-उल-मुजाहिदीन के लोग भी पनाहगाहों में लौट गए हैं.

प्रशासन के आंकड़े प्रभावोत्पादक जान पड़ रहे हैं. केवल पिछले पखवाड़े के दौरान सुरक्षा बलों ने 40 एके-47 राइफलें, 3500 से भी अधिक गोलियां, 90 हथगोले, कुछ रॉकेट लांचर और करीब 20 रॉकेट बरामद किए. मगर उसके अनुसार बरामद हथियारों की संख्या घाटी में कुल हथियारों की 10 फीसदी भर है.

राज्यपाल गिरीशचंद्र सक्सेना का दावा है कि ये गिरफ्तारियां और हथियारों की हाल की बरामदगी बेहतर खुफियागीरी का नतीजा है. अनुमानों के अनुसार अभी घाटी में करीब 1,500 उग्रवादी हैं और हजारों उग्रवादी सीमा पार से घुसपैठ के लिए तैयार बैठे हैं.

सक्सेना के अनुसार वे तीन महीने के अंदर ही घाटी से उग्रवादियों को निकाल बाहर कर सकते हैं बशर्ते सीमा पार से होने वाली घुसपैठ को रोक दिया जाए. पिछले पखवाड़े की सफल कार्रवाई से प्रेरित होकर राज्यपाल ने यह घोषणा कर डाली कि अलगाववादी हथियारों की लड़ाई से बाज आ जाएं तो प्रशासन उनके साथ कड़ा रुख अख्तियार नहीं करेगा.

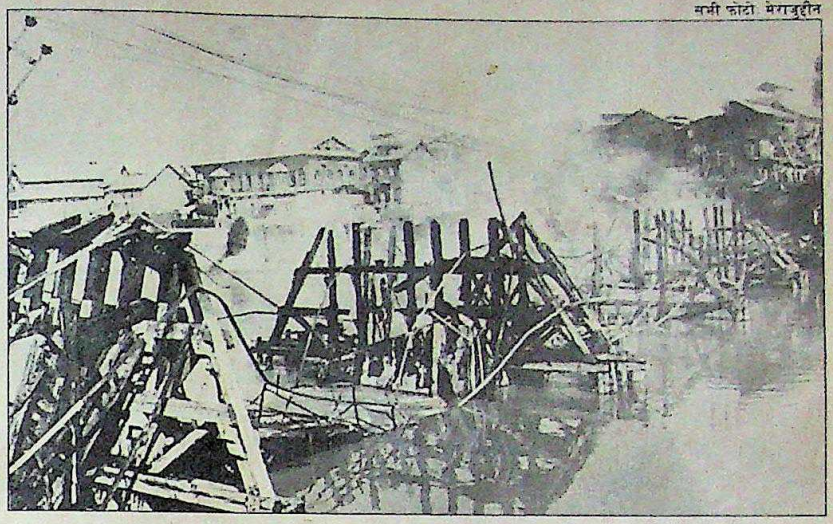

सभी फोटो मेराजुद्दीन

(ऊपर) उग्रवादियों द्वारा उड़ाया गया पुल; यासीन; और (नीचे बाएं) हमीद शेख

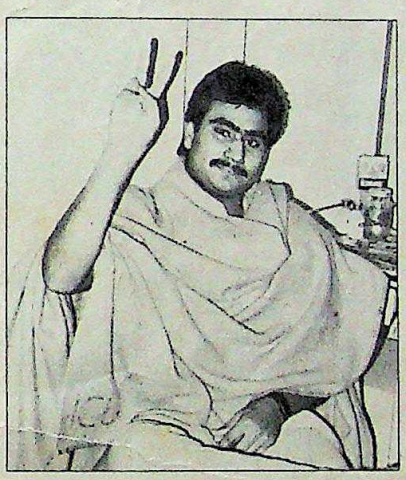

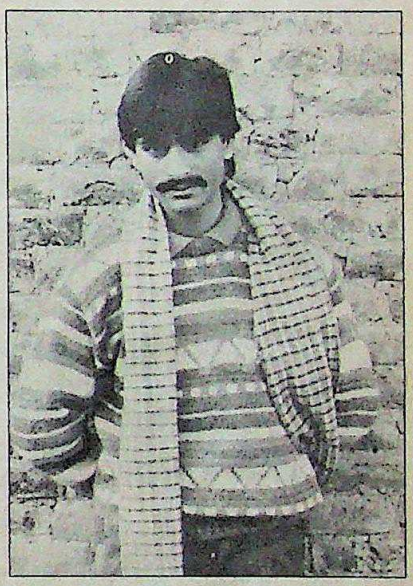

लेकिन उग्रवादियों ने 22 जुलाई से हड़तालों का सिलसिला शुरू किया जिसके परिणामस्वरूप समूची घाटी में सामान्य गतिविधियां ठप पड़ गईं. और फिर एक अप्रत्याशित घटनाक्रम में शीर्षस्थ नौकरशाहों सहित करीब एक लाख सरकारी कर्मचारियों ने अर्द्धसैनिक बलों की ज्यादतियों के विरोध में तीन दिन तक काम बंद रखा. उनकी मांग थी कि एक समिति का गठन किया जाए जो उग्रवादियों के साथ सहानुभूति रखने वाले करीब 120 सरकारी अधिकारियों की बरखास्तगी की समीक्षा करे. प्रशासन ने जवाब में तीन दिन का वेतन काटकर चेतावनी दे डाली.

लेकिन 1 अगस्त को व्यापारियों ने भी बंद रखा. कश्मीर चैंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष गुलाम मुहम्मद डग कहते हैं, "सुरक्षा बलों से बचाव का कोई रास्ता नहीं. नागरिक प्रशासन कोई मदद कर नहीं पाता." 3 अगस्त से तीन दिन के 'पहिया जाम' आंदोलन का आह्वान करने वाले ट्रांसपोर्ट ऑपरेटरों की शिकायत है कि ट्रकों के ड्राइवर और सफाई कर्मचारी अक्सर सुरक्षा बलों की बदसलूकी के शिकार होते रहते हैं. लेकिन राज्यपाल के सलाहकार वेद मारवाह के अनुसार, "हम तहकीकात और कार्रवाई के लिए तैयार हैं पर लोग ही सामने नहीं आते."

इस सबका कारण है प्रशासन और लोगों के बीच अविश्वास. यहां तक कि हाल में सोपोर और मागाम की ज्यादतियों की सरकारी जांच की घोषणा से भी प्रशासन में लोगों का भरोसा नहीं जम पाया है.

एक ओर जहां सक्सेना प्रशासन उग्रवादियों के खिलाफ कई मोर्चों पर फतह हासिल कर रहा है, वहीं दूसरी तरफ कश्मीर की आम जनता का दिल जीतने की प्रक्रिया अंतहीन ही नजर आती है.

—डब्ल्यू.पी.एस.सिद्धू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरियाणा

उलटी बयार

देवीलाल परिवार की साख घटी

इस ताकतवर परिवार के लिए बाजी इससे अधिक और क्या उलट सकती थी. राजनैतिक गुमनामी से बचने की कसरत में देवीलाल और उनके पुत्र ओमप्रकाश चौटाला सत्ता की उसी कुर्सी को बचाने में लगे हैं जहां से अभी हाल तक उन्होंने केंद्र सरकार को मुश्किल में डाल रखा था. वही विधायक जो अभी कल तक चौटाला की वफादारी की कसमें खाया करते थे और जिन्होंने 'सर्वसम्मति' से हुकुम सिंह को मुख्यमंत्री चुना था, आज उन्हें हटाने की खुलेआम मुहिम चला रहे हैं.

हुकुम सिंह सरकार को हटाने की मुहिम देवीलाल की बरखास्तगी के फौरन बाद जोर पकड़ गई. मुख्यमंत्री पद से अचानक हटाए जाने का तिरस्कार भोग रहे बनारसीदास गुप्ता, चौटाला द्वारा पार्टी विरोधी गतिविधियों के आरोप में निकाले गए पूर्व कृषि और बिजलीमंत्री वीरेंद्र सिंह तथा हुकुम सिंह सरकार में वरिष्ठ मंत्री हीरानंद आर्य ने दबाव गुट बनाने की कोशिश में हाथ मिलाए. आर्य कहते हैं, "देवीलाल की अवज्ञा करना हमारे लिए मुश्किल था. पर हम बिकाऊ माल जैसा व्यवहार कब तक सहते."

असंतुष्ट नेताओं को केंद्रीय उद्योगमंत्री अजित सिंह का खुला समर्थन मिला जो 'किसान नेता' का खिताब हथियाने की बेताबी में इस अभियान में कूद पड़े. उनका घर सारी गतिविधियों का केंद्र बन गया. विधायक प्रधानमंत्री के नाम उस ज्ञापन पर दस्तखत करने के लिए वहीं जुटे. ज्ञापन में मांग की गई थी कि हुकुम सिंह विश्वास मत प्राप्त करें.

फिर दोनों गुट अपने-अपने मोर्चे संभालने लगे. सांसद और कुख्यात ग्रीन ब्रिगेड के पूर्व प्रमुख जयप्रकाश की मदद से चौटाला ने अपने पक्ष के बचे विधायकों को वस्तुतः नजरबंद बना लिया. अजित सिंह ने भी असंतुष्ट विधायकों को एक तरह से बंदी बना लिया.

हुकुम सिंह विरोधी विधायकों की संख्या जल्द ही 29 हो गई. इसमें पहले पार्टी से निकाले गए 11 विधायक भी शामिल हैं. उन्होंने जनता दल अध्यक्ष एस. आर. बोम्मई से भेंट कर उनसे जनता विधायक दल की बैठक बुलाने का आग्रह किया. बदले में चौटाला ने अपने चार विधायकों से बोम्मई के नाम एक चिट्ठी लिखवाकर जवाबी धावा बोला. चिट्ठी में मांग की गई थी कि अजित सिंह ने चूंकि उन्हें अपने घर में बुलाकर हरियाणा के मुख्यमंत्री से नाता तोड़ लेने के लिए कहा है इसलिए उनके खिलाफ अनुशासन की कार्रवाई की जाए. उन्होंने लिखा, "हममें से हरेक को 25 लाख रु. के साथ मंत्री पद और दूसरे लाभों का लालच दिया गया." चिट्ठी में आगे कहा गया है कि जब उन्होंने इनकार कर दिया तो उन्हें धमकी दी गई कि "हमने देवीलाल को हटवा दिया. हम हरियाणा विधानसभा भी भंग करवा देंगे और तुम लोग सड़क पर आ जाओगे."

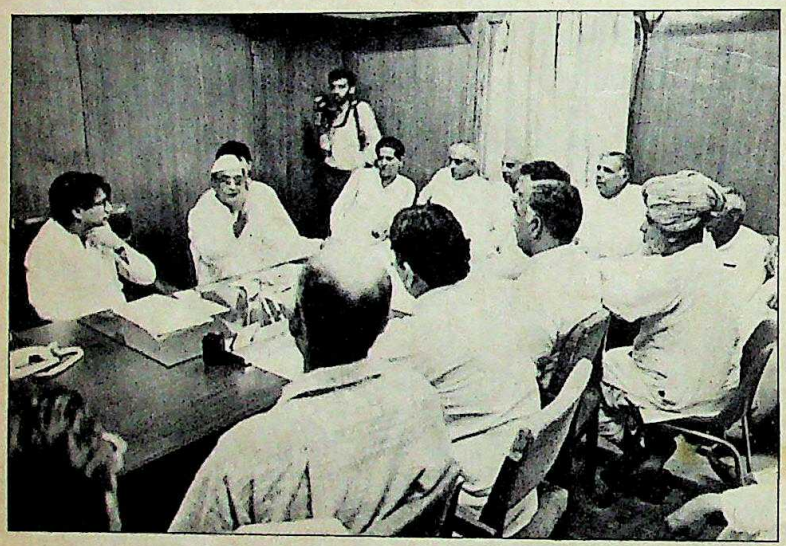

असंतुष्ट विधायकों के साथ अजित

बहरहाल, हुकुम सिंह के खिलाफ मुहिम मंद पड़ गई. इसकी जरूरत इसलिए पड़ी थी ताकि 9 अगस्त से पहले नेतृत्व परिवर्तन हो जाए जिससे हरियाणा की सरकारी मशीनरी देवीलाल के शक्ति प्रदर्शन, किसान रैली को सफल बनाने में इस्तेमाल न की जा सके. बोम्मई ने घोषणा की, "मैं नियम-कायदों का अध्ययन करने के बाद कार्रवाई करूंगा." उन्होंने यह मामला बाबुल रेड्डी समिति के सुपुर्द करके इस पर रोक लगा दी.

दरअसल, सत्ताहरण का यह मामला संख्या की समस्या के चलते खटाई में पड गया. चौटाला गुट ने अपने किले को बचाने की जी-तोड़ कोशिश में बोम्मई पर दबाव डाला और उन्हें सूचित किया कि 29 में से 11 हस्ताक्षरकर्ता पार्टी से निष्कासित किए जा चुके हैं इसलिए उन्हें वोट देने का अधिकार नहीं है. उन्होंने तकनीकी मुद्दे उठाते हुए कहा कि निष्कासन रद्द भी नहीं किए जा सकते क्योंकि पार्टी संविधान के तहत कोई निष्कासित सदस्य निकाले जाने के तीन हफ्तों के भीतर ही अपील दायर कर सकता है. इनमें आठ सदस्यों ने ऐसा नहीं किया है. सांसदों जयप्रकाश और कपिलदेव शास्त्री ने बोम्मई को पार्टी संविधान की प्रति भी दी.

महत्वपूर्ण मुद्दा देवीलाल और चौटाला की किस्मत का है. जानकारों का कहना है कि राज्य की राजनीति पर उनकी पकड़ लगभग खत्म हो चुकी है

हरियाणा सरकार की किस्मत अब बोम्मई के हाथ में है. पर अधिक महत्वपूर्ण मुद्दा शायद देवीलाल और चौटाला की किस्मत का है. हरियाणा पर नजर रखने वाले लोगों का मानना है कि राज्य की राजनीति पर उनकी पकड़ अब लगभग खत्म हो चुकी है. और अगर वे कठपुतली हुकुम सिंह सरकार को कायम रखने में कामयाब भी रहे तब भी यह पकड़ बेहद कमजोर होगी. चौधरी का ताकतवर परिवार राज्य पर अपनी पकड़ इतनी जल्दी खो देगा, ऐसा किसी ने सोचा भी नहीं था.

—हरिंदर बवेजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने मनपसंद कॉरफ़ोम गद्दे खरीदिये और

THE '90s

Corfom

MEGA BONANZA

में भाग लीजिए और

आकर्षक इनाम जीतिए

हर खरीद के साथ उपहार

मुफ्त

- 620 रु. कीमत का एक आकर्षक **TransAsia**
  6′ x 3′ 100% ऊनी कारपेट
- 100/- से 300/- रु. तक नकद छूट
- और इसके साथ आप प्राप्त करेंगे अन्य उत्पादों पर छूट के कूपन

मासिक प्रतियोगिताएं

प्रथम पुरस्कार	(एक)	रु. 5000/-
द्वितीय पुरस्कार	(दो)	रु. 2500/- प्रत्येक
तृतीय पुरस्कार	(तीन)	रु. 1000/- प्रत्येक
सान्त्वना पुरस्कार	(बीस)	रु. 250/- प्रत्येक

जितनी जल्दी आप गद्दे खरीदेंगे उतनी ही ज्यादा प्रतियोगिताओं में भाग ले सकेंगे।
एक ही प्रविष्टी सभी प्रतियोगिताओं के लिये प्रयोग की जायेगी

मेगा प्रतियोगिता

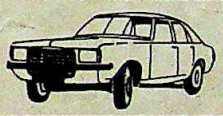

प्रथम पुरस्कार (एक)
Contessa Classic 1·8 GL

द्वितीय पुरस्कार (दो)
YAMAHA RX100
मोटर साईकिलें

तृतीय पुरस्कार (तीन)
SALORA
कलर टी.वी. रिमोट के साथ

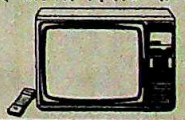

प्रश्न तालिका व एन्टाईटिलमेन्ट फार्म, खजाना कार्ड के साथ तुरन्त भेजिए और आकर्षक इनामों के हकदार बनिये।

•

एक फार्म हर गद्दे के साथ संलग्न है

चतुर्थ पुरस्कार (चार)
वीडियो कैसेट प्लेयर्स

विशेष पुरस्कार
LADY TOUCH
21 कुक एण्ड ग्रिल

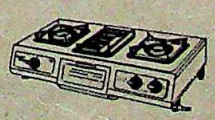

पंचम पुरस्कार (पांच)

165 लि.
रेफ्रिजरेटरस्

सान्त्वना पुरस्कार पांच सौ एक अन्य आकर्षक उपहार

कॉरफ़ोम-
सम्पूर्ण उत्तरी व पश्चिमी भारत में विदेशी मशीनों पर बने एकमात्र गद्दे

अधिक जानकारी के लिए अपने निकटतम डीलर से सम्पर्क करें अथवा हमें लिखें

क्वायरफ़ोम (इंडिया) प्रा. लि.

4 ई/ 7, झंडेवालान एक्सटैंशन, नई दिल्ली- 110055 फोन : 529662, 529638, 6844796, 6844797

कॉरफ़ोम-उपभोक्ता संरक्षण के प्रणेता

Trends/1866

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर प्रदेश

जब बाड़ खाए खेत

बाढ़ नियंत्रण की आड़ में अफसरों की चांदी

बहती गंगा में हाथ धोना भले ही एक प्रचलित मुहावरा है परंतु लगता है कि उत्तर प्रदेश के कुछ बड़े लोग सचमुच बाढ़ में हाथ धोने के आदी हो गए हैं. बाढ़ अब हर साल सरकारी पैसा हड़पने वाले संगठित गिरोह का प्राकृतिक उपकरण बन गई है और राज्य की भूमि इसके लिए सबसे उर्वर है. इस लूटमार में अफसरों, राजनेताओं और ठेकेदारों की त्रयी ने ऐसा जाल बुन लिया है जिससे उबरना संभव नहीं लगता.

दरअसल, लखनऊ तथा इसके इर्दगिर्द और पूर्वी उत्तर प्रदेश में गोरखपुर से लेकर वाराणसी तक बाढ़ से उत्पीड़ित होने वाले जिलों का एक पूरा समूह है. इनमें सीतापुर, रायबरेली, बाराबंकी, देवरिया, बस्ती, आजमगढ़, बलिया, गोंडा और बहराइच शामिल हैं. अब इनमें नए बने जिले मऊ और सिद्धार्थनगर भी शामिल हो गए हैं. इन जिलों के एक-तिहाई से ज्यादा चुने विधायक और इतने ही पराजित उम्मीदवार या तो खुद ठेकेदार हैं या उनके परिजन. कई लोग खुद अपना नाम नहीं देते पर ठेकेदार उनके संरक्षण में होते हैं. इन जिलों में कुछ ऐसे इंजीनियर भी हैं जिनकी पूरी नौकरी या उसका अधिकांश हिस्सा इसी इलाके में बीतता रहा है. सरकार बदल जाने के बाद भी इसमें तब्दीली नहीं आई है.

राज्य जनता दल के एक अग्रणी नेता कहते भी हैं, "प्राकृतिक विपदा में चांदी काटने का मौसम फिर आ गया है. हर बार की तरह इस बार भी शिकार तैयार है और शिकारी मुस्तैद. यों सरकार बदली हुई है पर असल में कुछ भी तो नहीं बदला."

पूरे देश में जितने हिस्से में बाढ़ आती है उसका पांचवां हिस्सा उत्तर प्रदेश में है पर नुकसान उत्तर प्रदेश में देश भर से ज्यादा होता है, सारे देश का करीब एक-तिहाई. यह तब है जब प्रति वर्ष 20 से 25 करोड़ रु. की राशि बाढ़ से बचाव में खर्च की जाती है.

बरसात के दौरान जब ये नदियां उफान पर होती हैं तो इन्हें नियंत्रित करने के लिए खर्च की जाने वाली रकम का अधिकांश हिस्सा भी चंद लोगों की बांहों में सिमटता जाता है. इस मौसम में अपनी नियुक्ति बाढ़ग्रस्त इलाकों में ही बरकरार रखने के क्रम में कुछ नाम तो खासे चर्चित हैं. इनमें एम.सी. गुप्ता (अधीक्षण अभियंता), एस.एन. दुबे (अधीक्षण अभियंता), केदार नाथ (अधिशासी अभियंता), नरसिंह (अधिशासी अभियंता), फिरेती राम (अधिशासी अभियंता), इंद्रासन (अधिशासी अभियंता), राणा प्रताप सिंह (अधिशासी अभियंता) आदि शामिल हैं. ये लोग इस काम के लिए मोटी रकमें चढ़ाते बताए जाते हैं. नई सरकार ने लखनऊ में ऐसे ही एक अभियंता सी.पी. सिंह का तबादला अज्ञात कारणों से बाढ़ बीतने यानी अक्तूबर तक बाकायदा फाइल पर लिखित आदेश करके रोक रखा है.

ऐसे अभियंताओं के सिफारिशी राजनेताओं की फेहरिस्त भी खासी लंबी है. सिंचाईमंत्री के कार्यालय के अनुसार तबादले के मौसम में अपनी भूमिका अदा करने वाले विधायक, सांसद गिनना असंभव है. करीब-करीब सभी इसमें दांवपेंच भिड़ाते हैं. पर खास भूमिका निभाने वालों में सांसद रामप्रसाद चौधरी और मुन्नन खां के अलावा विधायक हरिशंकर तिवारी, अर्जुन यादव, बलराम यादव, अमर मणि त्रिपाठी, दुर्गा यादव, राम छबीले, कृष्ण किंकर सिंह और गोपीनाथ वर्मा काफी चर्चित बताए जाते हैं. इनमें बलराम यादव, अर्जुन यादव, कृष्ण किंकर सिंह आदि ऐसे विधायक हैं जो खुद ठेकेदारों में शुमार होते हैं. इनके परिजन अब खुलकर खेलने लगे हैं.

खुद सिंचाईमंत्री रेवतीरमण सिंह स्वीकारते हैं, "विधायकों, सांसदों का इंजीनियरों के मामलों में खासा दबाव इस बार रहा पर हमने इसे कम से कम माना. साथ ही हमने भ्रष्ट इंजीनियरों की सिफारिशों के बावजूद बख्शा नहीं. पांच निलंबित किए, दो को नोटिस दिए गए और दर्जनों पर विभागीय कार्रवाई जारी है. कुछ से अवकाश प्राप्ति के बावजूद हड़पी राशि पेंशन से वसूल की जा रही है." लेकिन इतनी सफाई देने के बाद अंत में वे कह ही देते हैं, "फर्क तो पड़ा है पर सब कुछ नहीं बदल गया."

कुछ चर्चित इंजीनियरों के पिछले वर्षों के तबादलों का चार्ट देखना भी विस्मयकारी है. तीन-तीन सिंचाईमंत्रियों के समय में भी ये लोग लखनऊ-इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष	प्रभावित जिले	बाढ़ग्रस्त क्षेत्र (लाख हे.)	कुल क्षति (करोड़ रु.)	बाढ़ बचाव खर्च (करोड़ रु.)
1985	55	40.28	1216.26	16.06
1986	45	10.34	278.64	22.09
1987	9	5.81	186.14	23.28
1988	46	31.76	834.60	22.44
1989	25	10.03	अनुपलब्ध	18.25

विधायकों, सांसदों का इंजीनियरों के मामलों में खासा दबाव इस बार रहा. पर हमने इसे कम से कम माना''

वाराणसी-गोरखपुर के व्यूह से बाहर न किए जा सके. मसलन, राणा प्रताप सिंह नामक अधिशासी अभियंता इन तीनों के कार्यकाल में बस्ती-गोरखपुर और अब लखनऊ की शारदा सहायक परियोजना में मौजूद हैं. इन्हीं के समकालीन बी.बी.सिंह रायबरेली-प्रतापगढ़-इलाहाबाद होते हुए आजकल लखनऊ में आ विराजे हैं. एक अन्य अभियंता रामपाल सिंह का मामला खासा दिलचस्प है. सहायक अभियंता के रूप में नौकरी की शुरुआत करने वाले इस इंजीनियर ने अधिशासी अभियंता बन जाने के बाद भी रिटायर होने तक लखनऊ न छोड़ा.

उत्तर प्रदेश में बाढ़ संबंधी गणित भी काबिले गौर है. राज्य में छठी पंचवर्षीय योजना की समाप्ति तक बाढ़ से बचाव पर करीब 400 करोड़ रु. की राशि खर्च की जा चुकी थी. योजनागत नतीजों को सच्चा मान लिया जाय तो करीब 32 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल की भूमि को बाढ़ के खतरे से निजात दिला दी गई थी. इस तरह सिर्फ 11 लाख हेक्टेयर भूमि ही ऐसी बची जो बाढ़ के खतरे में थी. पर 1988 में बाढ़ के विषय में प्रदेश के सिंचाई विभाग के अधिकारिक ब्यौरे के अनुसार प्रदेश के 46 जिलों की करीब 32 लाख हेक्टेयर भूमि बाढ़ से प्रभावित हुई. आंकड़ों की बाजीगरी से बाढ़ से निजात दिलाने के योजनाकारों के करिश्मे ही अजीब हैं.

बहरहाल, बाढ़ और जलप्लावन की समस्या का सबसे ज्यादा असर पूर्वी उत्तर प्रदेश में है. इसी वजह से बाढ़ से बचाव का सबसे पहला प्रयास 1950 की भीषण बाढ़ के बाद देवरिया जिले में छितौनी बांध के निर्माण के साथ शुरू हो गया था. इसके बाद पंचवर्षीय योजनाओं में एक हद तक गंभीर काम भी हुए पर छठी पंचवर्षीय योजना की समाप्ति तक इस महत्वपूर्ण काम में अवरोध के लक्षण जाहिर हो चुके थे. केंद्रीय बाढ़ नियंत्रण कक्ष में बैठे एक खासे अनुभवी इंजीनियर एल.पी.भारद्वाज ने बताया, ''अगर वाकई हम प्रति वर्ष बाढ़ से होने वाले 500 करोड़ रु. के माली नुकसान को सीमित करना चाहते हैं तो एक बार युद्धस्तर पर 5-6 हजार करोड़ की योजना तैयार करनी होगी. वरना हर साल 20-25 करोड़ रु. 'डेंट-पेंट' पर खर्च होते रहेंगे.''

भारद्वाज ठीक ही कहते हैं. पिछले पांच वर्ष में बाढ़ से नुकसान कम-ज्यादा होना प्रकृति पर निर्भर रहा है. सारे बाढ़ नियंत्रण बाढ़ आ जाने पर खानापूर्ति में बदलकर रह गए हैं. और अब तो योजनाओं में भी इस मद की गंभीरता गायब है. सातवीं योजना की समाप्ति तक बाढ़ के लिए नियत राशि में 10 करोड़ रु. से ज्यादा की कटौती की जा चुकी है.

बाढ़ से फौरी तौर पर निबटने के फार्मूलों में भी राजनैतिक भेदभाव व्याप्त है. उत्तर प्रदेश में प्रति वर्ष जौनपुर शहर (गोमती नदी से), हमीरपुर [यमुना और बेतवा से) और मथुरा (गोवर्धन ड्रेन से) डूबता है. देवरिया का बिहार के बेतिया जनपद से सटा मीलों लंबा क्षेत्र गंडक नदी पर प्रशासनिक विवाद के न सुलझ पाने से हर वर्ष डूबता है. पर यह बात अब राजधानी लखनऊ पर लागू नहीं होती. पहले गोमती लखनऊ पर खासा कहर ढाती थी. सन 1960 और 1971 की बाढ़ में हजरतगंज में नावें चल चुकी हैं. पर अब वैसा खतरा नहीं. हां, स्थानीय भ्रष्टाचार से पंप फेल कर जाने से 1985 में कुछ पॉश मोहल्लों आदि में पानी जरूर भर गया था.

कुल मिलाकर कुछ वीआईपी हलकों को छोड़कर सारा राज्य राम भरोसे है. जिस साल बरसात कम होती है, नुकसान कम होता है. बाकी खाने-कमाने शगल बाढ़ नियंत्रण कार्यक्रमों हैं ही.

—शीतल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर प्रदेश

गांवों की ओर

अफसरों को नया अनुभव

प्रदेश के आवास सचिव एक गांव में, परिवहन सचिव दूसरे गांव में, नियुक्ति सचिव तीसरे गांव में, सचिवालय प्रशासन सचिव चौथे गांव में और मुख्यमंत्री के प्रथम सचिव किसी और गांव में रात गुजारने पहुंचें तो इसे किसी आफत का संकेत नहीं माना जाना चाहिए. ऐसा दो-चार अधिकारियों के साथ नहीं, देश के सबसे बड़े प्रांत उत्तर प्रदेश के सचिव स्तर के 61 अधिकारियों के साथ हुआ. वे मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव की एक घोषणा के तहत विभिन्न गांवों में 'रात्रि विश्राम' करने को बाध्य हुए थे.

मई के आखिरी हफ्ते में यादव ने ऐलान किया था, "इस बार गर्मियों में प्रदेश के आला अफसर पहाड़ों की सैर की जगह गांव जाएंगे और एक रात गांव में ही बिताएंगे जिससे वे गांवों की समस्याओं को समझ सकें." और मुख्यमंत्री की घोषणा के बाद अधिकारियों के बीच 'फर्स्ट हैंड इन्फॉर्मेशन' शब्द एकाएक काफी प्रचलित हो गया है.

आला अफसरों के गांवों में रात बिताने के कार्यक्रम ने अच्छा-खासा राजनैतिक रंग पकड़ा. जहां मुख्यमंत्री ने इसे अपनी सरकार की उपलब्धि कहा, वहीं विपक्षियों ने इसे नाटक और फिजूलखर्ची बताया. बजट सत्र में भी इस पर खासी नोंक-झोंक हुई. इका विधायक पंचानन राय ने कहा, "आला अफसरों का यह रात्रि विश्राम सरकारी पैसे पर पिकनिक मनाने का एक नया कार्यक्रम है." भाजपा विधायक दिनेश जौहरी ने आरोप लगाया, "अफसर अपने पसंदीदा जिलों में सैर-सपाटे करने और रिश्तेदारी निभाने के लिए रात्रि विश्राम के नाम पर गए." लेकिन मुख्यमंत्री पर इन सबका जरा असर न पड़ा. उनका तर्क था, "नीति बनाने वाले आला अफसर गांव के बारे में खुद जाकर अनुभव करें और तब नीति बनाएं."

कड़वी आलोचनाओं और सरकारी प्रोत्साहन के दौरों के बीच तमाम आला अफसरों ने इसे एक 'जरूरी अनुभव' माना. नियुक्ति सचिव नीरा यादव कानपुर देहात के चौबेपुर ब्लॉक के मरियानी गांव में एक रात रुकी. "मैंने आसपास के प्रधानों, ब्लॉक प्रमुखों और जिले के अफसरों को बुलवा लिया था. रात बारह बजे तक मीटिंग चली. यमुना किनारे के इस इलाके में पानी की भारी समस्या है. लोगों में प्राइमरी स्कूल के अध्यापकों से असंतोष है कि वे पढ़ाने में रुचि नहीं लेते." यह उनका अनुभव था. सचिवालय प्रशासन सचिव देवीदयाल इलाहाबाद के सादाबाद ब्लॉक के जोगापुर गांव में ठहरे. "गांव में कोई स्कूल न था. गांव के 70 प्रतिशत लड़के लिखते-पढ़ते नहीं थे. लड़कियां तो बिलकुल नहीं पढ़तीं. दो सरकारी ट्यूबवेल. एक खराब, दूसरी की नाली ऊंची. दोनों बेमतलब." उनका अनुभव था. मुख्यमंत्री के सचिव-प्रथम, नृपेंद्र मिश्र मुख्यमंत्री के गृह जनपद इटावा में रात्रि विश्राम करने गए. भरथना तहसील के विकास खंड चक्र नगर में बुन्नौल नाम का गांव था यह. उन्होंने बताया, "उस गांव में बिजली नहीं थी प्राइमरी स्कूल था. पास में ही यमुना के बीहड़ हैं जहां बीहड़ सुधार कार्यक्रम चल रहा है." सचिव ने पड़ोस के कुछ अन्य गांवों के, जहां बिजली थी, बिजली उपभोक्ताओं का एक काम तत्काल प्रभाव से कराया कि वे अब बिजली के बिल जमा करने के लिए 40 किमी भरथना की जगह पास के ही चक्र नगर ब्लॉक में ही जमा कर सकते हैं.

पर गांवों में एक रात भी गुजारने की मुश्किलें अधिकारी हफ्तों तक भुनाते रहे. किसी को वहां 'सेनेटरी प्रॉब्लम' से परेशानी हुई, तो किसी को नींद नहीं आई. सचिवालय प्रशासन सचिव देवीदयाल के साथ इलाहाबाद के जोगापुर गांव में आई अधिकारियों की टोली ने इंदिरा आवास योजना के तहत बने नए मकानों में मच्छरदानी लगाकर रात गुजारी. दूसरी ओर अनेक अधिकारी रिश्तेदारी निभाने या पिकनिक मनाने के अंदाज में भी आए. परिवहन सचिव सुरेंद्र मोहन अपनी गृह तहसील आगरा के एक गांव में गए. इस क्षेत्र के पुलिस अधीक्षक उनके दामाद हैं.

'फर्स्ट हैंड इन्फॉर्मेशन' लेकर ये आला अफसर कौन-सी नई नीतियां सामने लाते हैं ये देखना अभी बाकी है. पर प्रदेश के 1,12,500 गांवों में से सिर्फ 61 गांवों में आला अफसरों का यह रात्रि विश्राम कोई मूलभूत फर्क नहीं ला सकता. फिर भी, इससे स्थिर पानी में कंकड़ी फेंकने जैसी कोशिश तो जरूर हुई है. लखनऊ के जिलाधिकारी अशोक प्रियदर्शी ने कहा, "लखनऊ में ही मोहनलालगंज और मलिहाबाद के एसडीएम आजादी के बाद पहली बार तहसील में स्थायी रूप से रहने गए हैं. खंड विकास अधिकारी ब्लॉकों पर रहने को मजबूर हो रहे हैं. जब मुख्य सचिव गांव में सो रहा है तो ये कब तक छिपे रहेंगे."

प्रशासन के नए तरह के ढंग से आम लोग ज्यादा मुखर हुए हैं. लखनऊ के मस्तेमऊ गांव की सुमित्री पास के बक्कास गांव में विश्राम को पहुंचे जिलाधिकारी के पास झट आ पहुंची. पट्टे की जमीन पर कई वर्षों से उसे कब्जा न मिला था. आमने-सामने का मामला था. तत्काल कार्रवाई हुई. कब्जा भी मिला और प्रशासन ने जुताई और बुआई भी करा दी. लेकिन हर मामले में ऐसा नहीं होता और न हर गांव के पड़ोसी गांव में आला अफसर विश्राम करता है.

—शीतल

कार्टून: बक्शी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

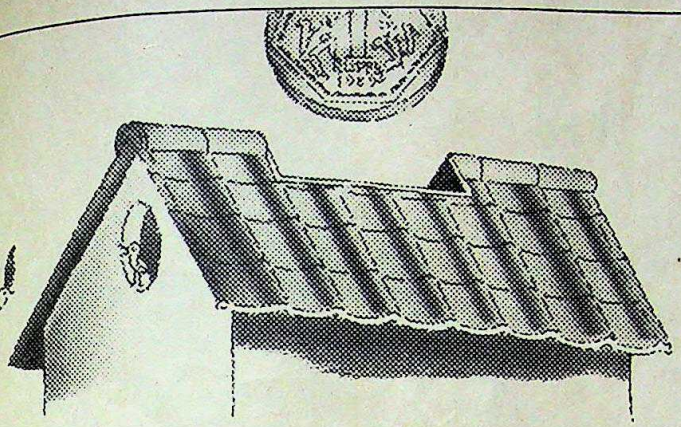

योजना बनाइए. बचाइए. और सिर्फ़ 25 महीने बाद घर के लिए ऋण हम से ले जाइए... $8\frac{1}{2}\%$ वार्षिक ब्याज पर!

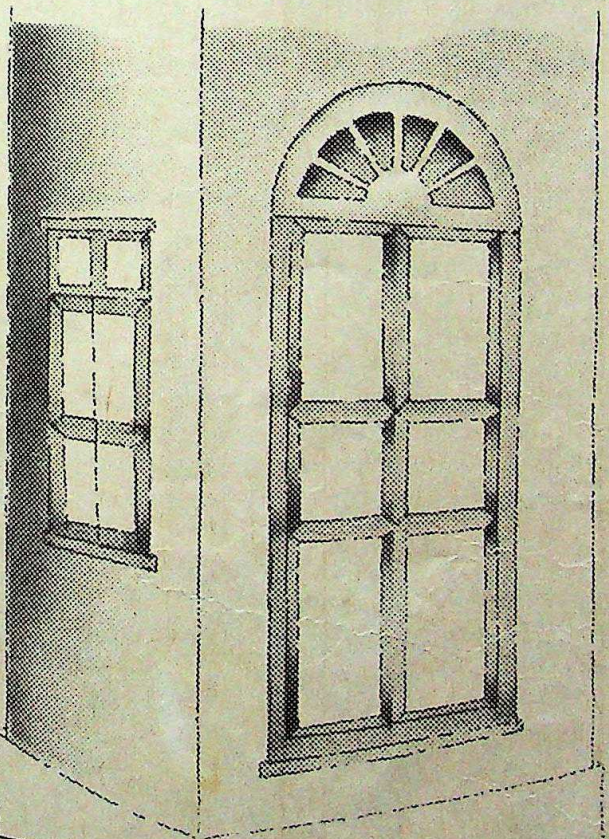

एचडीएफ़सी पेश करते हैं "गृह बचत योजना," एक अनोखी योजना.

आप तो बस इतना कीजिए कि 25 से 84 महीनों के दौरान सिर्फ़ रु. 3000 से रु. 1.05 लाख तक हमारे पास जमा कीजिए. इस बचत पर आपको 6% वार्षिक ब्याज भी मिलेगा. बचत-अवधि के अंत में हम आपकी कुल बचत का दुगने से ज़्यादा का ऋण (रु. 7000 से रु. 2.45 लाख तक) आप को देंगे. सिर्फ़ $8\frac{1}{2}\%$ वार्षिक ब्याज पर.

यह योजना उन लोगों के लिए भी लाभदायक है जो भविष्य में अपने बच्चों के लिए घर ख़रीदना चाहते हैं. अपने घर को नए सिरे से बनाना/बढ़ाना चाहते हैं. या फिर पहले ऊंची ब्याज दर पर लिया हुआ ऋण चुकाना चाहते हैं.

जल्दी कीजिए! अधिक जानकारी के लिए यह कूपन भरकर भेजिए.

कृपया मुझे एक गृ.ब.यो. मुफ़्त पुस्तिका भेज दीजिए.

नाम _____

पता _____

HIATH

HOME SAVINGS PLAN

एच·डी·एफ़·सी
हाउसिंग डिवेलपमेंट फाइनेंस कार्पोरेशन लिमिटेड

रजि. कार्यालय: बम्बई

ज़ोनल क्षेत्र, चण्डीगढ़: दूसरा तल, एस सी ओ 1110.1111, सेक्टर 22-बी, चण्डीगढ़ 160 022. फोन : 24843 इन्दौर: 9/1/1 एम.जी. रोड, निकट फिल एण्ड फ्लाई पेट्रोल पम्प, इन्दौर 452001. फोन : 7784, 7576 नई दिल्ली: एच डी एफ़ सी हाउस बी-6/3, सफदरजंग एन्क्लेव,डी डी ए कमर्शियल कॉम्प्लेक्स, (डीयर पार्क के सामने) नई दिल्ली 110 029 फोन : 603146, 603147 जयपुर: सी-96, जगन पथ, मालवीय पटेल मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर 302 001. फोन : 77557 लखनऊ: कोहली हाउस, 4-ई, रामतीर्थ मार्ग, पोस्ट बॉक्स नं. 394, लखनऊ 226 001. फोन : 35055, 247505.

Mudra:S:HDFC:498:254:HN:NZ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी फोटो: कृष्ण मुरारी कि

पटना

प्रतिमाओं का पार्क

जरा सोचिए: बदबूदार, कूड़े के ढेर में दबा हुआ एक प्राचीन शहर जिसकी सड़कें कीचड़ से भरी हों, अंधकार में जलमग्न और बीमारी के कीड़ों से लथपथ रिहायशी इलाके हों, वह राष्ट्रीय नेताओं की मूर्तियों के खूबसूरत पार्क में बदल जाए. अगर आप सोचें कि ऐसा हो सकता है तो वह जरूर पटना ही होगा.

पिछले पखवाड़े जब मशहूर चिकित्सक और विश्व स्वास्थ्य संगठन के काला अजार विशेषज्ञ डॉ. सी. पी. ठाकुर ने यह चेतावनी दी कि अब पटना शहर भी इस भयानक रोग की चपेट में आ रहा है और भारी वर्षा के पानी में डूबे हुए घरों से लोग सुरक्षित स्थानों पर भागने लगे तो बिहार के युवा मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव अपने अधिकारियों को यह याद दिलाने में मग्न थे कि उन विभूतियों की, जिन्होंने देश और राज्य का भाग्य संवारा है, आदमकद मूर्तियां शहर में साल के अंत तक जरूर लग जानी चाहिए. वे कहते हैं, "मैं ये मूर्तियां उन हस्तियों के प्रति श्रद्धा के तौर पर लगवा रहा हूं जिन्हें भ्रष्ट इंका सरकारों ने नजरअंदाज किया था. ये मूर्तियां नई पीढ़ी को प्रेरित करेंगी." मगर विपक्ष के नेता जगन्नाथ मिश्र कहते हैं, "इस मंसूबे के परदे में लालू जी बहुत ही चालाकी से अपने को बगैर कोई काम किए अमर बनाना चाहते हैं और बिहार के लिए कुछ करने के बजाए सिर्फ मूर्तियों का शिलान्यास कर पत्थरों पर अपना नाम खुदवाते फिर रहे हैं."

पिछले चार महीनों में लालू यादव देश की महान हस्तियों जैसे महात्मा गांधी, लोकनायक जयप्रकाश नारायण, सरदार पटेल, कर्पूरी ठाकुर, बी. आर. आंबेडकर, राममनोहर लोहिया और सुभाषचंद्र बोस की आदमकद मूर्तियों के लिए विभिन्न चौराहों और अहम स्थानों पर शिलान्यास कर चुके हैं. इसके अलावा मजहरुल हक, महान वनवासी स्वतंत्रता सेनानी बिरसा मुंडा जिन्हें लोग बिरसा भगवान के नाम से जानते हैं और कर्मठ समाजवादी नेता रामानंद तिवारी की मूर्तियों का शिलान्यास भी वे जल्द ही करने वाले हैं.

इतना ही नहीं, यादव ने फैसला सुनाया है कि देशरत्न मार्ग (जो पहले किंग जॉर्ज एवेन्यू के नाम से जाना जाता था) पर स्थित सरकारी बंगले को, जहां लंबे समय तक कर्पूरी ठाकुर रहे और जहां उनका देहांत हुआ था, 'कर्पूरी स्मारक' में बदल दिया जाएगा. फिर, हाल ही में गांधी मैदान के पश्चिम में स्थित पटना का मशहूर दे रोड 'बी. पी. कोइराला मार्ग' में बदल दि गया. नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री काफी अर तक इस जगह रहे और उन्हें बिहार

लालू यादव पटना को मूर्तियों के शहर में बदलने के काम में काफी मुस्तैद दिखते हैं

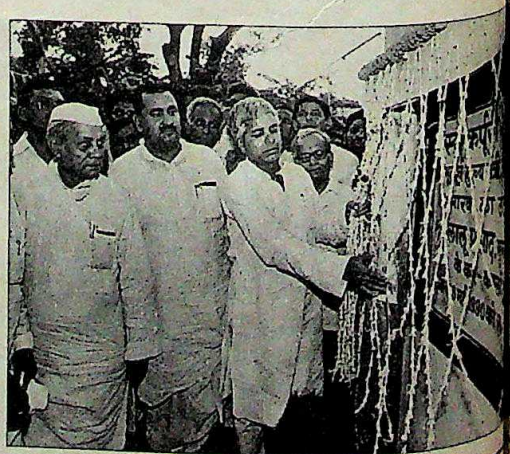

श्रीकृष्ण सिन्हा की प्रतिमा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिखावे लगाव था. इस कदम का स्वागत करते हुए नेपाल सरकार ने काठमांडो में एक मार्ग का नाम बदलकर जेपी मार्ग रख दिया. इस तरह लालू यादव ने एक छोटे-से कदम से बिहार-नेपाल के बीच भावनात्मक रिश्ते को और मजबूत कर दिया.

दरअसल, लालू यादव सरकार पटना शहर को 'मूर्तियों के पार्क' में बदलने के काम में काफी मुस्तैद दिखती है. बिहार के भवन और सड़क निर्माणमंत्री इलियास हुसैन ने बताया, "एक करोड़ रु. की लागत से मूर्तियां लगवाने का काम गांधी जयंती से शुरू हो रहा है और दिसंबर के अंत तक शहर पूरा हो जाएगा. निविदा और ऑर्डर देने का काम शुरू हो चुका है." उनके अनुसार केवल मूर्तियों पर ही 40 लाख रु. खर्च होंगे. इसके अलावा स्मारक बनवाने, मूर्तियों के लिए लॉन और चबूतरा आदि बनवाने पर भी खर्च होगा.

जब से लालू मुख्यमंत्री बने और उन्होंने गांधी मैदान के सामने जेपी प्रतिमा के नीचे शपथ ली तब से उनके मन में ये सब बातें उठ रही थीं. जेपी की प्रतिमा दरअसल ले. जनरल एस के. सिन्हा (रिटायर्ड) की मेहनत का फल था. शपथ लेते समय उन्हें एक बात खटकी कि ऐतिहासिक गांधी मैदान में अब तक महात्मा गांधी की प्रतिमा क्यों नहीं लगी?

इसी बीच जेपी आंदोलन के एक सिपाही सरयू राय ने जो जनरल सिन्हा वाली समिति कमेटी से टूटकर अलग हुए थे, अपने पुराने साथियों जैसे जाबिर हुसैन आदि के साथ लालू से कहा कि राजस्व भवन के सामने चौराहे पर जेपी की प्रतिमा लगनी चाहिए. जिस स्थान पर सरयू राय और उनके साथी प्रतिमा लगाना चाहते थे वह आंदोलन की एक अहम कड़ी है. 4 नवंबर 1974 को जब जेपी एक मौन जुलूस को लेकर उस स्थान पर पहुंचे तब पुलिस ने उन पर लाठी चलाई थी. यादव खुद उस जुलूस में थे. उन्हें सब कुछ याद आ गया और उन्होंने 5 जून को संपूर्ण क्रांति के अवसर पर जेपी की प्रतिमा का शिलान्यास कर दिया. सरयू राय ने कहा कि बस थोड़ा काम बाकी था और उसे पूरा कराने की दिशा में एक कदम उठाकर लालू यादव ने बड़ा काम कर दिया है.

इस तरह लोगों और विभिन्न राजनैतिक गुटों के दिलों को जीतने के लिए लालू ने फैसला किया कि राममनोहर लोहिया की प्रतिमा मुख्य डाकघर के कोने पर लगे. ठीक उसी स्थान पर 1966 में कांग्रेसी मुख्यमंत्री कृष्ण वल्लभ सहाय की पुलिस ने गोली चलाई थी. कर्पूरी ठाकुर की प्रतिमा विधानसभा परिसर में लग रही है जबकि आंबेडकर की प्रतिमा उच्च न्यायालय परिसर में लगाई जाएगी. रामानंद तिवारी की प्रतिमा कलेक्टर, पटना की कोठी के सामने चिल्ड्रेन पार्क में लगाई जा रही है और सुभाषचंद्र बोस की प्रतिमा गांधी मैदान के दक्षिण में इंडियन मेडिकल एसोसिएशन हॉल के सामने के रिक्त स्थान पर लगाई जाएगी.

शहर के दक्षिण-पश्चिम में चितकोहरा पुल के पास सरदार पटेल की प्रतिमा लगाई जा रही है. मगर लालू यादव के जेहन में एक ही नाम छाया रहता है और वह है जेपी का. इसलिए उनकी दो बड़ी मूर्तियों से उन्हें संतोष नहीं हुआ. उनकी नजर मजहरुल हक पथ के चौराहे पर खंडहर जैसे डाक बंगले पर पड़ी और उन्होंने फैसला कर लिया कि डाक बंगले की जगह पर जेपी स्मारक बनाया जाएगा.

पिछली इंका सरकारों ने भी कुछ मूर्तियां लगाई थीं मगर वह राजनैतिक दृष्टिकोण से ही किया गया काम था. लोकदल के महासचिव लक्ष्मी साहू, जो काफी अरसे तक कर्पूरी ठाकुर के निजी सचिव भी थे, के मुताबिक ऊंची जाति की राजनीति करने वाले कांग्रेसियों ने सचिवालय के दो प्रमुख स्थानों पर कब्जा कर दो प्रतिमाएं लगा दीं. पुराने सचिवालय के पश्चिमी द्वार पर बिहार के पहले मुख्यमंत्री श्रीकृष्ण सिन्हा की बड़ी-सी प्रतिमा लगा दी और विधानसभा के सामने स्वतंत्रता सेनानी अनुग्रह नारायण सिंह की प्रतिमा लग गई.

उसको लेकर कुछ विवाद भी हुआ था. कुछ लोग चाहते थे कि विधानसभा के पहले स्पीकर रामदयालु सिंह की मूर्ति वहां लगनी चाहिए थी. कई लोगों को इसके पीछे जातिगत राजनीति का हाथ होने का संदेह है. साहू कहते हैं, "नेहरू परिवार को खुश करने के लिए कांग्रेसी नेताओं ने जवाहर लाल नेहरू की मूर्ति रेलवे स्टेशन स्क्वायर पर लगा दी. उस स्थान पर राजेंद्र बाबू पर साइमन कमीशन का विरोध करते हुए पुलिस ने लाठी चलाई थी. मगर वहां नेहरू की प्रतिमा लगी." हालांकि राजभवन के सामने फव्वारों के बीच डॉ. राजेंद्र प्रसाद की मूर्ति सबसे पुरानी है.

राज्य की राजधानी को राष्ट्रीय नेताओं की प्रतिमाओं से सजाने की लालू यादव की कोशिशों से विवाद भी उठ खड़ा हुआ है. जगन्नाथ मिश्र कहते हैं कि उन सारी मूर्तियों की योजना उनकी बनाई हुई है पर लालू यादव उनके मंसूबों की नकल कर वाहवाही लूट रहे हैं क्योंकि उनके सामने बिहार की समस्याओं की कोई अहमियत नहीं है. भाजपा के वरिष्ठ नेता लालमुनी चौबे ने कहा, "लालू की सरकार गपबाजों की सरकार है जो सिर्फ हवाई किले बनाती है. लालू भी वही कर रहे हैं."

मगर मुख्यमंत्री अपने इरादे में दृढ़ हैं और अगर वे अपने मंसूबों में कामयाब हो गए तो इस साल के आखिर तक पूरा पटना शहर प्रतिमाओं का पार्क बन जाएगा.

—फरजंद अहमद

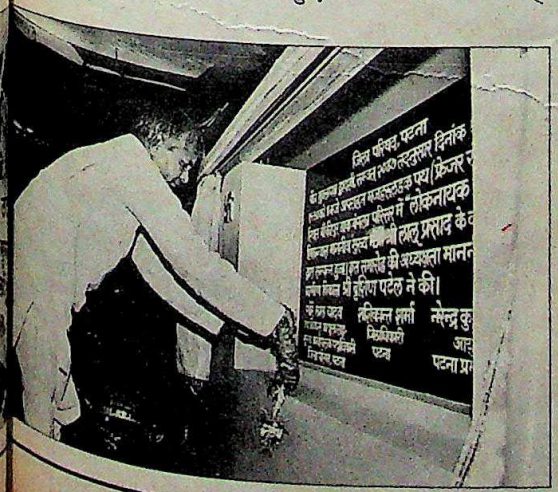

(बाएं से) लालू यादव कर्पूरी स्मारक तथा जेपी भवन का शिलान्यास और कोइराला मार्ग का उद्घाटन करते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्य प्रदेश

पहुंच का फल

भाजपा सांसद को भूखंड का तोहफा

मध्य प्रदेश से भाजपा के राज्यसभा सदस्य डॉ. जे.के. जैन के कई रूप हैं. वे अमीरों और प्रभावशाली लोगों के चिकित्सक भी हैं (नई दिल्ली के शानदार इलाके में उनका एक शानदार और महंगा क्लिनिक है), सूर्या पत्रिका के प्रकाशक भी हैं, और एक कामयाब वीडियो कंपनी के मालिक भी हैं. लेकिन अब उनका एक नया रूप भी सामने आया है. वे जमीन घोटाले से जुड़े पाए गए हैं.

मध्य प्रदेश की भाजपा सरकार ने पिछले पखवाड़े भोपाल में उन्हें 9,600 वर्ग फुट का भूखंड उनकी कंपनी जैन न्यूजपेपर्स प्रा. लिमिटेड के नाम कर दिया. बाजार दर के मुताबिक इस भूखंड की चालू कीमत 60 लाख रु. बताई जाती है. भोपाल के मास्टर प्लान के मुताबिक यह भूखंड हरित क्षेत्र में आता है. राज्य के अधिकारियों ने इस जमीन को किसी और काम के लिए आबंटित न करने की सिफारिश की थी. इस तरह राज्य सरकार ने अपने ही अधिकारियों और अपनी योजना के खिलाफ काम किया.

इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि जैन न्यूजपेपर्स प्रा. लिमिटेड को वीडियो सॉफ्टवेयर सेंटर लगाने के लिए दी गई यह जमीन खाली भी नहीं है. यह नागरिक आपूर्ति निगम के नाम आरक्षित की गई थी. इस जमीन पर बने जो दो शेड जैन न्यूजपेपर्स को दिए गए उनमें से एक इस निगम के कब्जे में है तो दूसरा सिंचाई विभाग के कब्जे में.

जमीन आबंटन का यह पूरा मामला एक ऐसी प्राइवेट कंपनी को फायदा पहुंचाने का दिखता है जो राजनैतिक प्रभाव रखती है. बहरहाल आपूर्ति निगम के अधिकारी और कर्मचारी सरकारी फैसले के खिलाफ हो गए हैं. निगम के कर्मचारी संघ ने धमकी दी है कि अगर निगम से यह जगह छोड़ने के लिए कहा गया तो वह आंदोलन छेड़ देगा. लेकिन सरकार अपने फैसले पर अटल दिखती है. आवास एवं पर्यावरण सचिव नरेश नारद ने दावा किया कि कोई घोटाला नहीं हुआ है. उन्होंने इंडिया टुडे से कहा, "वह जमीन निगम के लिए आरक्षित भर की गई थी, आबंटित नहीं की गई थी."

दिलचस्प बात यह है कि उक्त भूखंड का इतिहास रंगारंग रहा है. भोपाल के सबसे महंगे व्यापारिक इलाके की यह जमीन 1974 में नागरिक आपूर्ति निगम के लिए आरक्षित की गई थी और तत्कालीन मुख्य सचिव एम.एस. चौधरी ने आदेश दिया था कि वहां बने शेडों को दूसरे विभाग खाली कर दें. इसके बाद 1987 तक कोई कार्रवाई नहीं की गई. उस समय तत्कालीन मुख्यमंत्री मोतीलाल वोरा ने भी उक्त कार्रवाई का अनुमोदन किया. लेकिन इसके एक साल बाद निगम को आवास एवं पर्यावरण विभाग की ओर से एक अप्रत्याशित पत्र मिला जिसमें कहा गया था कि वह जमीन उसे नहीं दी जा सकती क्योंकि भोपाल के मास्टर प्लान के मुताबिक उस पर सिटी पार्क बनेगा.

इसी साल एक और अप्रत्याशित घटना घटी. जिस अधिकारी ने यह घोषणा की थी कि यह जमीन किसी को नहीं दी जा सकती क्योंकि इससे मास्टर प्लान का उल्लंघन होगा, उसी अधिकारी ने निगम को सूचित किया कि एक शेड 'हितवाद' का प्रकाशन करने वाली कंपनी जनसेवा प्रकाशन को दिया गया है.

अब जबकि आपूर्ति निगम ताजा सरकारी आदेश को वापस लेने की मांग

जैन को दी गई जमीन और शेड: प्रभाव और पहुंच का फल

आर.सी. साहू

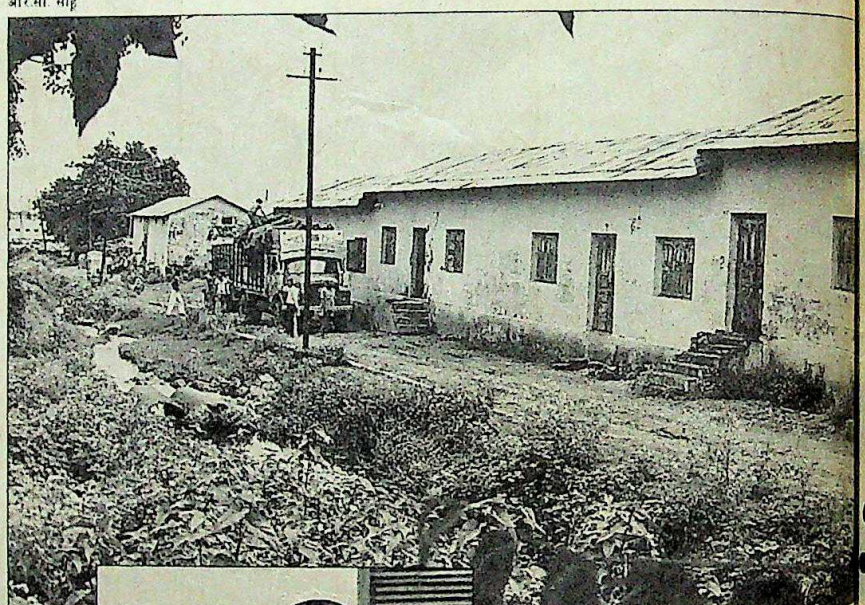

प्रमोद पुष्करणा

डॉ. जैन इस जमीन घोटाले से जुड़े न होते तो शायद ऐसे घोटाले की कहानी उनकी पत्रिका रोचक ढंग से छापती

कर रहा है, डॉ. जैन ने पिछले महीने मुख्यमंत्री सुंदरलाल पटवा से उनके निवास पर मुलाकात की. उनके साथ कुछ प्रभावशाली नेतागण भी थे. तत्काल ही आवास सचिव को मुख्यमंत्री निवास पर बुलाया गया और इसके बाद ही न्यूजपेपर्स को उक्त जमीन आबंटित करने का आदेश जारी किया गया.

डॉ. जैन इस जमीन घोटाले से जुड़े न होते तो शायद ऐसे घोटाले की कहानी उनकी पत्रिका बड़े रोचक ढंग से छापती

—नरेंद्र कुमार सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी भाषा में अंग्रेज़ी के इन्साईक्लोपीडिया ब्रिटानिका की तरह एक अनूठा सारगर्भित ग्रंथ

हिन्दी विश्वकोश

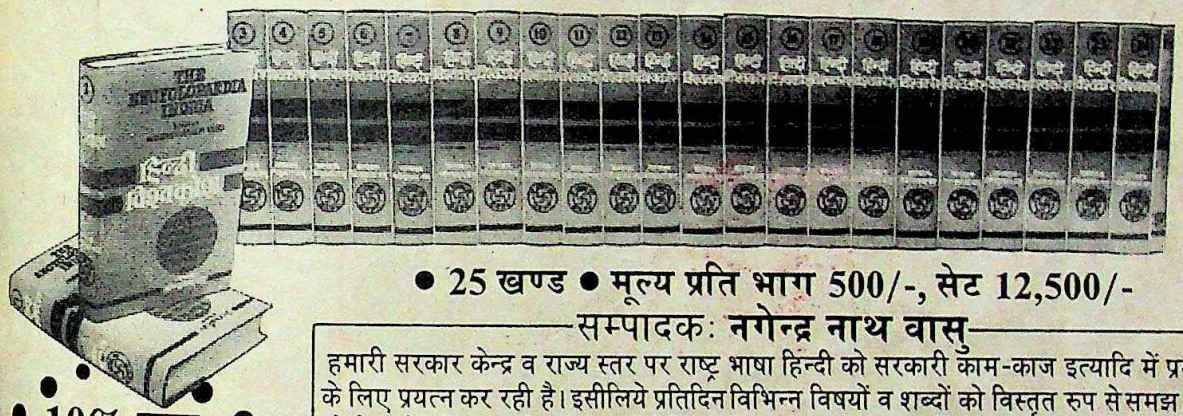

• 25 खण्ड • मूल्य प्रति भाग 500/-, सेट 12,500/-

सम्पादक: नगेन्द्र नाथ वासु

हमारी सरकार केन्द्र व राज्य स्तर पर राष्ट्र भाषा हिन्दी को सरकारी काम-काज इत्यादि में प्रयोग के लिए प्रयत्न कर रही है। इसीलिये प्रतिदिन विभिन्न विषयों व शब्दों को विस्तृत रुप से समझ पाने के लिए हिन्दी भाषा में इन्साइक्लोपीडिया की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी। हमने हिन्दी विश्वकोश, जो कि अंग्रेजी भाषा के इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका की तरह पूर्णत: सारगर्भित है, का प्रकाशन करके हिन्दी भाषा-भाषियों के स्वप्न को साकार करने का प्रयास किया है!

इस 25 खण्डिय ग्रंथ में भाषा एवं व्याकरण के अतिरिक्त भारत से सम्बन्धित कोई भी विषय अछूता नहीं रहा है।

यह ग्रंथ उन सभी के लिए उपयोगी है जो न केवल हिन्दी विभागो में एवं गैर हिन्दी विभागो में हैं बल्कि उन सभी बुद्धिजीवियों के लिए भी जो हिन्दी भाषा के गहन अध्ययन में संलग्न हैं।

• पुनःमुद्रित • 1,62,040 प्रविष्टियां • 18,527 पृष्ठ • 260 चित्र • 156 चार्ट • 93 रेखाचित्र

10% छूट
डाक खर्च माफ
जल्दी कीजिये
1250/- रूपये
बचायें
यह छूट केवल प्रथम 100 सेटों पर उपलब्ध है।

"इन्साईक्लोपीडिया ब्रिटानिका की टक्कर का हिन्दी में यह ज्ञान-कोष हैं।"—पाटलिपुत्र
"विश्वकोष सवर्था संग्रहणीय है।"—सरस्वती

योग द्वारा रोग का निदान
पूर्ण स्वास्थ्य लाभ के लिए शत-प्रतिशत सुरक्षित उपाय।

1. ASTHMA (दमा)
2. OBESITY (मोटापा)
3. DIABETES (मधुमेह)
4. TUBERCULOSIS (T.B.) (तपेदिक)
5. PILES, FISSURE, FISTULA (बवासीर, भगंदर, नासूर)
6. IMPROVING HEIGHT (कद बढ़ाना)
7. BLOOD PRESSURE AND HEART DISEASES (रक्त चाप और हृदय रोग)
8. RHEUMATIC ARTHRITIS (जोड़ों का दर्द)
9. EYES (आंखें)
10. INDIGESTION (बदहजमी)
11. BACKACHE (पीठ का दर्द)
12. URINARY & SEMINAL DISEASES (मूत्र और वीर्य विकार) AND HERNIA
13. CONSTIPATION (कब्ज)
14. SWEAT CONTROL (पसीना नियंत्रण)
15. FLATULENCE (पेट की गैस)
16. SKIN DISEASES (चर्म रोग)
17. WORMS (पेट के कीड़े)
18. NAVEL AND JAUNDICE (नाभि और पीलिया)
19. WOMEN DISEASES (स्त्री रोग)
20. HAIR (बाल)
21. THROAT DISEASES (गले की बीमारियाँ)
22. CONCENTRATION (एकाग्रता)
23. COMMON COLD, COUGH AND CATARRH (जुकाम, खांसी और सर्दी)

प्रत्येक का मूल्य : 8.00 रु.
सेट: 175.00 रु. (डाक खर्च मुफ्त)

सभी सर्वोदय बुक स्टालों पर उपलब्ध

पूरी रकम एवं डाक टिकट के 5.00 रु. अग्रिम भेजें। 100.00 रु. से अधिक या पांच पुस्तकें मंगाने पर डाक व्यय मुफ्त।

सूची पत्र एवं व्यापारिक पूछताछ के लिए सम्पर्क करें:
dk
डी.के. पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लि.
1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 फोन : 3261465, 3278368

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब

मुश्कें कसेंगे

पर बदलाव की उम्मीद कम

पंजाब के बारे में सरकार हालांकि अभी भी नरम रवैया अपनाने की बात करती है मगर उस पर सख्त रुख अपनाने का दबाव बढ़ रहा है. आतंकवाद पर काबू पाने और नवंबर से पहले विधानसभा चुनाव कराना संभव बनाने के लिए उसने अब सेना से सीमावर्ती जिलों में सैनिक अभ्यास कराने का विवादास्पद फैसला किया है.

आंतकवाद विरोधी अभियान के लिए निम्नलिखित नए पग सुझाए गए हैं:

- आंतकवाद विरोधी उपायों के लिए साप्ताहिक कार्यक्रम की रूपरेखा बनाना.
- समस्याग्रस्त गांवों में रात को घात लगाने का बंदोबस्त करना.
- पुलिस और अर्द्धसैनिक जवानों से गठित एक अतिरिक्त संघातक कंपनी 20 संवेदनशील थानों के थानाध्यक्षों को मुहैया कराई गई है.

मगर पुलिस के दावों के विपरीत इस मुहिम से बदलाव आने के बजाए हिंसा में वृद्धि ही हुई है. जुलाई में आतंकवादियों ने 200 से अधिक नागरिकों की हत्या की और करीब 150 संदिग्ध आतंकवादी सुरक्षा बलों द्वारा भून दिए गए या गिरोहों की प्रतिद्वंद्विता के चलते मारे गए.

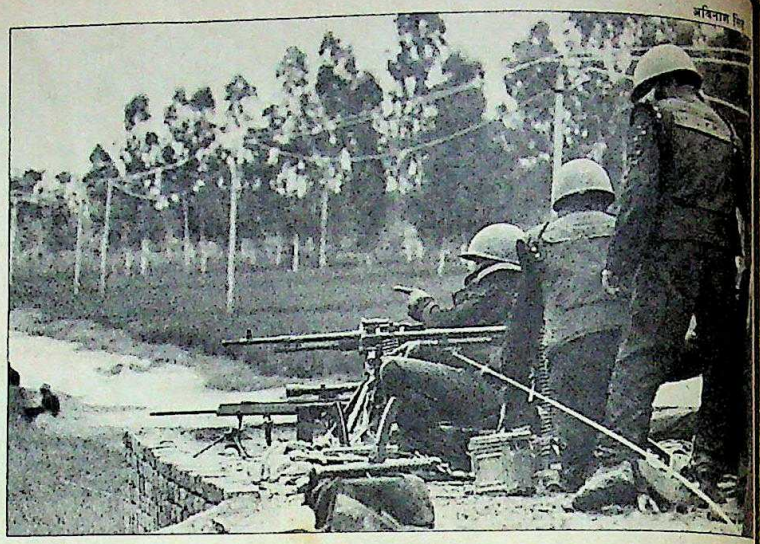

तरनतारन में एनएसजी कमांडो

उधर, सिमरनजीत सिंह मान और प्रकाश सिंह बादल की अगुआई वाले अकाली धड़ों के बीच एकता की संभावनाएं भी कम ही हैं. मान गुट खुद भी बंटा हुआ है. पटियाला से सांस अतिंदरपाल सिंह ने भी मान के खिला मुहिम छेड़ रखी है. लेकिन देहाती इलाक में मान की प्रतिष्ठा अभी बरकरार है.

इस बीच, राज्यपाल वीरेंद्र वर्मा ने ऑपरेशन ब्लूस्टार को भारी भूल करा दिया और सीमावर्ती जिलों में बेरोजगा को नौकरियां देने वाली योजनाओं मंजूरी भी दी. लेकिन नवंबर से पह चुनाव की संभावना नहीं है. हां, सरका ने 'चुनाव से पहले शांति' की अपनी नी बदल ली तो बात दीगर है. —कंवर

माकपा

सिर रेत में

घटनाओं ने कठमुल्लापन के प्रति भारतीय मार्क्सवादियों के प्रेम को भले ही पुरावशेष सिद्ध कर दिया हो पर वे शुतरमुर्गी चाल की तरह अभी भी अपने पुराने सिद्धांत से चिपके हुए हैं. हाल ही में माकपा ने एक लंबा दस्तावेज प्रकाशित किया जिसमें मिखाइल गोर्बाचेव के सुधारों को मार्क्सवाद-लेनिनवाद से भटकाव मानते हुए पूरी तरह रद्द कर दिया गया है.

यह दस्तावेज पूर्वी यूरोप में हुए नुकसान के लिए मौजूदा सोवियत नेतृत्व को जिम्मेदार ठहराता है, "सोवियत संघ में ग्लासनोस्त की नीति ने समाजवाद विरोधी ताकतों को समाजवादी मूल्यों की निंदा के लिए मीडिया के इस्तेमाल की छूट देकर पूर्वी यूरोप में समाजवाद के खिलाफ अभियान छेड़ने में प्रतिक्रियावादी ताकतों को बढ़ावा दिया."

और अंत में दस्तावेज कहता है, "हमारी पार्टी सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी से सहमत नहीं कि ये घटनाएं 'समाजवाद का पुनरुद्धार' हैं."

पर सोवियत पार्टी में इगोर लिगाचेव की रूढ़िवादी लाइन का परोक्ष रूप से समर्थन करने वाले इस दस्तावेज के प्रकाशन के तत्काल बाद वहां की पार्टी के 28वें अधिवेशन के दौरान सांगठनिक चुनाव में लिगाचेव को अपमानजनक हार का मुंह देखना पड़ा. इससे माकपा में फिर सोच-विचार हुआ. उसने सोवियत पार्टी को एक संदेश में कहा, "हमारी पार्टी भूतकाल की विकृतियों और गलतियों पर काबू पाने के लिए आर्थिक और राजनैतिक दोनों क्षेत्रों में सुधारों की जरूरत को मानती है."

माकपा के पोलितब्यूरो सदस्य एम. बासवपुन्नैया मानते हैं कि यह दस्तावेज न तो आखिरी फैसला है और न ही कोई प्रारूप. इसमें जोड़-घटाव भी किया जा सकता है.

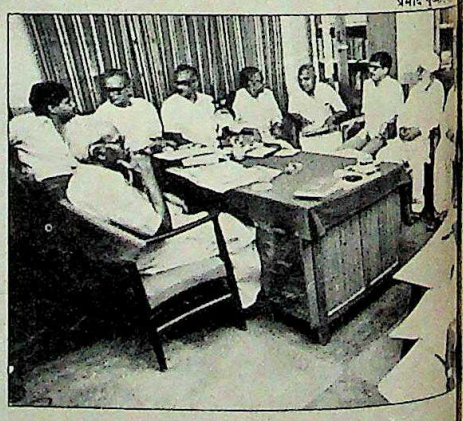

पोलितब्यूरो की बैठक

उम्मीद यही है कि माकपा कठमुल्लापन में श्रेष्ठता पाने के लिए अल्बानिया की कम्युनिस्ट पार्टी से होड़ नहीं लगाएगी. —भास्कर रा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान

आत्मरक्षा की अलख

युवा सांसद दस्युपीड़ित क्षेत्रों की पदयात्रा पर निकला

मानो वे अपना चुनावी कर्ज चुकाने के लिए ही वहां पहुंच गए हों. जन प्रतिनिधि के रूप में अपना दायित्व निभाने के लिए राजस्थान का एक युवा सांसद पिछले दिनों खुद डकैतों से भिड़ने जा पहुंचा. भाजपा के लोकसभा सदस्य डॉ. किरोड़ीलाल मीणा ने भयभीत गांववालों को आत्मरक्षा के लिए प्रोत्साहित ही नहीं किया, डाकुओं को भी उनकी मांद में घुसकर ललकारा.

राजधानी जयपुर के निकटवर्ती जिले सवाई माधोपुर में पूरा इलाका डकैतों के आतंक से भयभीत है. गांव की महिलाओं को डकैत उठा ले जाते हैं. दिन पर दिन बढ़ती फिरौती की घटनाओं से भी सारे गांववासी आतंकित हैं. खास तौर से करौली क्षेत्र तो दस्यु समस्या से ग्रस्त है. इस जिले के आठ पुलिस थानों में पर्याप्त संख्या में पुलिस दल-बल होने के बावजूद डकैती की घटनाओं में न तो कोई कमी आ रही थी और न ही पुलिस किसी डकैत गिरोह को पकड़ने में सफल हो पाई थी.

लोकसभा चुनावों के दौरान मीणा ने मतदाताओं से वादा किया था कि सांसद बनने के बाद वे इस इलाके में दस्यु समस्या पर काबू पाने के लिए राज्य सरकार पर जोर डालेंगे मगर तमाम कोशिशों के बावजूद उन्हें अपना वादा पूरा होता नहीं दिखा तो वे खुद मैदान में कूद पड़े. पर नाकारा पुलिस की कमजोरियों को छिपाते हुए मुख्यमंत्री भैरों सिंह शेखावत ने कहा, "मैं उनके अभियान की सफलता की कामना करता हूं."

दस्यु समस्या से छुटकारा दिलाने और एक पीड़ित परिवार को सांत्वना देने गए मीणा जब जिले के राहिर गांव में ग्रामीणों को यह संदेश देकर, कि डकैतों से डरने की कोई जरूरत नहीं और अब हमें खुद अपनी रक्षा के लिए तैयार होना पड़ेगा, लौटे ही थे कि डकैतों ने उसी गांव पर हमला बोल दिया. मीणा को भी जान से मारने की धमकी देते हुए उन्होंने गांव में लूटपाट की. इस घटना के बाद मीणा ने इस क्षेत्र में पदयात्रा का फैसला किया.

शेखावत को अपने इस अभियान की लिखित सूचना देते हुए वे निकल पड़े. घने जंगलों और दस्युपीड़ित इलाके की इस पदयात्रा में राज्य के पांच भाजपा विधायक—मदन दिलावर, हेमराज मीणा, अमृतलाल परमार, कन्हैयालाल मीणा और भरोसीलाल भी उनके साथ रहे. लेकिन डकैतों का आतंक इतना था कि गांववालों ने दर्जनों युवकों समेत इन पदयात्रियों को अपने घर से पानी पिलाने की हिम्मत भी नहीं दिखाई. पदयात्रा के बाद मीणा ने कहा, "मैं यदि अपने मतदाताओं के जान-माल की सुरक्षा भी नहीं करवा सकता तो मेरा जन प्रतिनिधि होना ही नहीं, जीना भी बेकार है."

दस्युपीड़ित करौली क्षेत्र में इन दिनों डाकू भगवान सिंह और राम सिंह के गिरोह मुख्य रूप से सक्रिय हैं. इनके भय से गांववालों का जीना मुहाल हो गया है. इस क्षेत्र से इंका विधायक जनार्दन सिंह गहलोत बताते हैं, "जब मैं करौली जाता हूं तो मेरे साथ 10 गाड़ियां बंदूकों से लैस आदमी होते हैं." डाक बंगले में ठहरने पर वे 20 आदमी साथ रखते हैं. गहलोत के मुताबिक दोनों डकैत गिरोहों में से इस समय भगवान सिंह ज्यादा सक्रिय है. वे कहते हैं, "पुलिस रात को गांवों में घूमती है लेकिन डकैतों को पकड़ने में सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि कुछ लोग डकैतों को संरक्षण दे रहे हैं."

पदयात्रा से लौटे परमार का भी आरोप है, "डकैतों को गांव के दो प्रधानों का संरक्षण मिल रहा है." उन्होंने बताया कि एक गांव में आठ महिलाओं को लाइन में खड़ा कर डाकुओं ने उनके जेवर उतरवा लिए. इसी तरह एक और गांव खेरवाड़ा में शादी में आई 40 महिलाओं के गहने उतरवा लिए गए. कुछ समय पहले वे लोग छह आदमियों को घसीटकर पहाड़ पर ले गए और उनकी हत्या कर दी. पांच दिन बाद लाशें मिलीं. परमार ने गांववालों को आत्मरक्षा के लिए हथियार

रोहित जैन

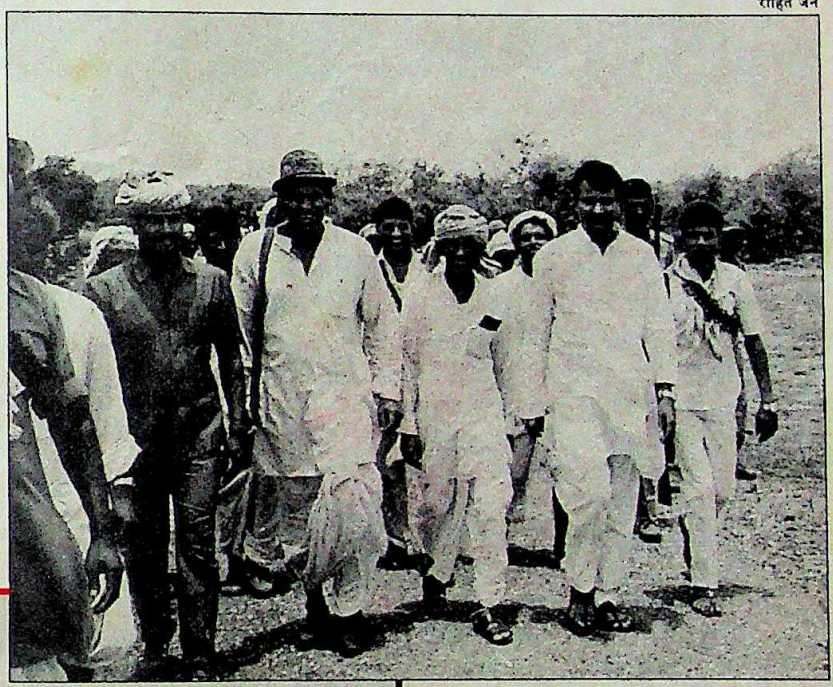

दस्युपीड़ित क्षेत्र में पदयात्रा करते मीणाः चुनावी कर्ज

सवाई माधोपुर का पूरा इलाका डकैतों के आतंक से पीड़ित है. उनके चलते लोगों का जीना मुहाल हो गया है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिए जाने की मांग की. भाजपा के एक और विधायक चुन्नीलाल खंडार भी एक प्रधान और दो सरपंचों पर डकैतों को संरक्षण देने का आरोप लगाते हैं.

डकैतों की बर्बरता के संदर्भ में इका विधायक रामनारायण वर्मा ने भी बताया कि सपोटरा के एक आदमी पर डकैतों को पुलिस का मुखबिर होने का शक हो गया. इस पर डकैतों ने उसका सिर धड़ से अलग कर दिया और उसके हाथ भी काट दिए. बाद में वे धड़ को काफी दूर तक घसीट कर ले गए. उन्होंने आरोप लगाया, "पुलिस डकैतों से मिली हुई है. यह उनसे पैसा लेती है. तभी वे पकड़े नहीं जाते."

पर शेखावत इस आरोप का खंडन करते हैं. वे कहते हैं, "अगर ऐसे प्रमाण मिले तो सरकार सख्त कार्रवाई करेगी." आत्मरक्षा के लिए हथियार देने के सवाल पर उनका मानना है कि यह काम इतना आसान नहीं. "हथियार उन्हीं हाथों में सौंपे जाने चाहिए जो उनका सही उपयोग कर सकें." उन्हें अंदेशा है कि करौली क्षेत्र में अवैध खनन करने वालों की वजह से डाकुओं को पनाह मिलती है. समस्या से निबटने का विश्वास दिलाते हुए वे चेतावनी देते हैं कि डाकुओं को पनाह देने वालों को इसका अंजाम भुगतना पड़ेगा.

लेकिन सत्ता दल के सांसद तथा पांच विधायकों की पदयात्रा और मुख्यमंत्री द्वारा दस्यु समस्या के समाधान के आश्वासन के एक हफ्ते बाद ही भगवान सिंह ने लक्ष्मी नारायण गुर्जर की गोली मारकर हत्या कर दी. डकैत भगवान सिंह को लक्ष्मी नारायण पर पुलिस की मुखबिरी का शक था. राज्य के गृहमंत्री संपतराम कहते हैं कि इस इलाके में "डाकुओं के अलावा भी और कुछ है जिन्हें दूर करना होगा." उन्होंने कहा कि प्रशासन न केवल उपलब्ध आरएसी के माध्यम से दस्यु उन्मूलन के लिए प्रयत्नशील है बल्कि वहां सादे कपड़ों में भी पुलिस लगाई गई है जिससे डकैतों और उन्हें पनाह देने वालों की समय पर सूचना मिले और उन्हें पकड़ा जा सके.

बहरहाल, सवाई माधोपुर और करौली क्षेत्र में डकैतों की समस्या नई नहीं है. शेखावत कहते हैं, "इस इलाके में कभी डाकू, तो कभी पुलिस उन पर हावी रही है. केवल एक-दो डाकुओं को पकड़ने से यह समस्या हल नहीं होगी. यह समझना पड़ेगा कि डाकू पैदा क्यों होते हैं."

शोध के इस विषय पर न जाने कितने वर्ष लगें, अलबत्ता दस्यु विरोधी पदयात्राएं इलाके के लोगों को आत्मरक्षा के लिए फिलहाल प्रोत्साहित जरूर करेंगी.

अंतर्कथा
इन्द्रजीत बधवार

लफ्फाजी के खतरे

लेखकों और विश्लेषकों की एक पूरी बिरादरी जी-जान से इस खोज में जुटी है कि वी.पी. सिंह का असली चेहरा कौन सा है. और प्रधानमंत्री हैं कि उनके काम को मुश्किल कर मजे ले रहे हैं.

हाल ही में एक निजी बातचीत के दौरान प्रधानमंत्री ने स्वतंत्र प्रेस के महत्व पर जोर देते हुए कहा, " इस बेहूदा से सरकारी गोपनीयता कानून को तो खत्म ही कर देना चाहिए." जब उन्हें बताया गया कि कैबिनेट सचिवालय ने एक नोट में इस कानून से छेड़छाड़ न करने के लिए आगाह किया है तो वी.पी. सिंह का जवाब था, "हमने व्यवस्था में बदलाव लाने और अपने वादे पूरे करने के लिए चुनाव जीता है, न कि बाबुओं की राय जानने के लिए."

इसके कुछ दिन बाद, प्रधानमंत्री के रूप में इलाहाबाद के पहले दौरे में जनसभा में अचानक उन्होंने प्रेस पर हमला बोल दिया. उन्होंने कठोर शब्दबाण तो नहीं चलाए पर जानी-पहचानी रूखी शैली और अपमानित करने वाले लहजे में वे बोले, " दिल्ली के पत्रकार न लोगों को समझते हैं, न असली मुद्दों को." फिर दिल्ली से अपने साथ आए पत्रकारों की खोज में सामने खड़ी भीड़ पर नजर दौड़ाते हुए बोले "आखिर ये लोग बैठे कहां हैं?"

रेखाचित्र: प्रणब दत्त

भीड़ से कुछ लोगों ने पत्रकारों की तरफ इशारा किया. वी.पी. सिंह ने पत्रकारों की ओर ताकते हुए इन शब्दों को दोहराया, "ये लोग समझ ही नहीं सकते."

यह घटना दर्शाती है कि प्रधानमंत्री स्तर के व्यक्ति भी लोगों को खुश करने का लोभ संवरण नहीं कर पाते. ऐसी हरकतों के अपने खतरे हैं क्योंकि ये वी.पी. सिंह की गैर-तानाशाही छवि को मलिन करते हैं जिसे उन्होंने इतने जतन से बनाया है..

उनकी सरकार पर हर समय डांवाडोल और अनिर्णायक स्थिति में रहने का ठप्पा लगने के बावजूद इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि मौजूदा और पिछली सरकार में एक भारी अंतर है. अपनी तमाम खामियों के बावजूद वी.पी. सिंह सरकार में खुलेपन की हवा है. सरकार लोगों की पहुंच से बाहर नहीं है. एक लंबे अरसे बाद जमीन से जुड़ी सरकार देश में आई है.

और वी.पी. सिंह को इन्हीं विशेषताओं को बढ़ावा देना चहिए. देश में पहले ही बहुत से खतरनाक तत्व मौजूद हैं जो अपने राजनैतिक स्वार्थों की खातिर देश को विखंडित करने के लिए बलि के बकरों की तलाश में हैं. टिकैत और ताऊ को शहरी पूंजीपति और पत्रकार ऐसे शख्स नजर आते हैं जो आम आदमी का गला घोंटने के लिए घात लगाए बैठे हैं. मुलायम सिंह यादव अंग्रेजी स्कूलों और अंग्रेजीदांओं को देश पर अभिशाप और हर तरह के भ्रष्टाचार का स्रोत मानते हैं. विश्व हिंदू परिषद को बाबरी मस्जिद इस्लामीकरण का खटका नजर आता है तो शहाबुद्दीन को उनसे सैद्धांतिक मतभेद रखने वाला हर शख्स स्तालिनवादी. ऐसी विघटनकारी राजनीति देश के टुकड़े-टुकड़े कर सकती है.

प्रधानमंत्री को ऐसी छिछोरी राजनीति से ऊपर उठना होगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिम्का आज

जब आप कहें
"मेरे सपनों की रानी
कब आएगी तू"

लिम्का कल

जब आप कहें
"मुझे मेरे हाल पे
छोड़ दो"

जब आप अपने सपनों की रानी के ख़यालों में गुम या फिर घर की रानी की शिकायतों से थक कर प्यास से बेहाल हो जाएं... तब प्यास बुझाने के लिए आयसोटॉनिक सॉल्टवाले किटाणुरहित लिम्का की बोतल उठाएं और अपनी प्यास बुझाएं.

Limca®
नींबू जल-सा मज़ेदार पेय
ठंडा बर्फीला
पिए-पिलाए

CONTAINS ADDED FLAVOUR. CONTAINS NO FRUIT JUICE/PULP

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

LIMCA IS A REGISTERED TRADEMARK OF PARLE (EXPORTS) LTD., BOMBAY

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सनद रहे

पुनर्ग्रहणः प्रधानमंत्री द्वारा उनका इस्तीफा स्वीकार न किए जाने के बाद संसदीय मामलों के उपमंत्री **जगदीप धनकड़** काम पर लौटे. राजस्थान के सफल एड-वोकेट और देवीलाल के वफादार माने जाने वाले धनकड़ ने उनकी तुरत-फुरत बरखास्तगी के विरोध में मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया था.

सेवानिवृतः जाने-माने क्रिकेट अंपायर **राम-बाबू गुप्ता.** 1987 में रिलायंस कप फाइनल में अंपायर रहे गुप्ता के खाते में 11 टेस्ट मैच और 24 एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच हैं. वे कहते हैं, "अंपायर की हालत किसी पंडित सरीखी है. मैच से पहले सभी की नजरें उस पर रहती हैं पर बाद में कोई पूछता भी नहीं. उम्मीद है मेरे साथ ऐसा नहीं होगा."

कार्यभार संभालाः भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश **ई.एस. वेंकटरमैया** ने थापर समूह द्वारा हाल में ही अधिग्रहित लखनऊ के अखबार 'पायनियर' का. मजे की बात यह है कि 1986 में ललित मोहन थापर की आधी रात के वक्त जमानत मंजूर करने के कारण विवाद में फंस गए थे.

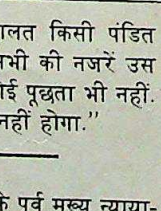

विवाह बंधनः तेजतर्रार फिल्म अभिनेत्री **फरहा** और दारा सिंह के पुत्र **विंदू** शादी के बाद खुशी से दमकते-चहकते इस दंपती ने दावा किया कि, "यह इस वर्ष का सर्वश्रेष्ठ विवाह होगा." शादी से पहले उनका इश्क तूफानी दौर से गुजरा.

पुरस्कृतः स्पेन के गिजोन में अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में फिल्म **'भूखा'** विशेष ज्यूरी पुरस्कार. एस. महापात्र के निर्देशन में यह ओडिया की एक और संबलपुरी में बनी पहली फीचर फिल्म है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्य प्रदेश

पति, पत्नी, वो

● पिछले पूरे महीने भर मुख्यमंत्री सुंदरलाल पटवा मध्य प्रदेश विधानसभा में एक दिलचस्प मजाक का निशाना बने रहे.

मामला उस समय शुरू हुआ जब पटवा ने भारतीय जनता पार्टी का समर्थन करने वाले दैनिक 'स्वदेश' के संपादक राजेंद्र शर्मा के साथ अपने झगड़े को पति-पत्नी के बीच की 'पारिवारिक नोकझोंक' का नाम दिया. पत्रकारों ने जब मुख्यमंत्री से यह जानना चाहा कि इस नोकझोंक में पति की भूमिका कौन

प्रकाश हनवालने

आर.सी साह

सुंदरलाल पटवा (ऊपर); और शर्मा: नोंकझोंक

निभाता है और पत्नी की भूमिका कौन, तब मुख्यमंत्री ने कहा कि पत्नी की भूमिका में मैं स्वयं हूं. फिर क्या था, मजाक का एक अच्छा-खासा सिलसिला शुरू हो गया.

मामला यहीं तक नहीं रहा. बाद में राज्य सरकार ने जब कुछ विदेशी प्रसाधनों पर शुल्क में रियायत की घोषणा की तो राज्य कांग्रेस अध्यक्ष अर्जुन सिंह ने भी चुटकी ली. उन्होंने कहा, "उम्मीद है आपने शर्मा जी को सूचित कर दिया होगा." सदन में इस हंसी-मजाक के चलते खूब रौनक रही.

कर्नाटक

राजनीति के आगे झुकी कला

मुश्ताक अहमद

विरोध प्रदर्शन में हेगड़े और गुंडुराव

● कन्नड सिनेमा अपने उग्र ब्राह्मण विरोधी तेवरों के बावजूद बहुचर्चित फिल्मों—'संस्कार', 'घटश्रद्धा' और 'फणियम्मा' के लिए मशहूर है. लेकिन फिल्म्स डिवीजन द्वारा 1989 में निर्मित एक अज्ञात-सी फिल्म के विरोध में पिछले पखवाड़े करीब 1,000 ब्राह्मणों ने बंगलूर दूरदर्शन केंद्र पर प्रदर्शन किया.

14 जुलाई को दिखाई गई कथित अपमानजनक फिल्म 'पुजारी कृष्ण' एक ऐसे पुजारी की कहानी है जो अपने निरंकुश बेटे के बदले एक धर्मनिष्ठ लड़के को अपना वारिस मुकर्रर करता है. बाद में यह पता चलने पर कि कृष्ण नीची जाति का है, गांववाले उसे अपमानित करते हैं. उसे तभी बहाल किया जाता है जब वह पुजारी के बेटे द्वारा चुराई नटराज की मूर्ति बचाने के लिए कुएं में कूद पड़ता है.

इसके बाद दूरदर्शन के गुलबर्गा केंद्र ने 21 जुलाई को दोबारा यह फिल्म दिखाई. तभी अखिल कर्नाटक ब्राह्मण महासभा को इसका पता चला. 30 जुलाई को उसने इसके विरोध में एक जुलूस निकाला जिसे जनता दल के रामकृष्ण हेगड़े और इंका सांसद गुंडुराव ने भी संबोधित किया. दोनों नेता ब्राह्मण आबादी वाले चुनाव क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं.

एक वरिष्ठ अधिकारी के मुताबिक मुठभेड़ टालने के लिए दूरदर्शन ने उसी शाम माफीनामा प्रसारित किया. है न राजनीति के आगे कला के झुकने की मिसाल.

केरल

इनकार और इकरार

● केरल भले ही देश में सबसे ज्यादा साक्षरता वाला राज्य माना जाता हो पर उच्च शिक्षा की स्थिति वहां अच्छी नहीं है. पिछले पखवाड़े माकपा की अगुआई वाले वाम लोकतांत्रिक मोर्चे को उस समय अजीब स्थिति का सामना करना पड़ा जब एक कुलपति ने मांगे जाने पर इस्तीफा देने से इनकार कर दिया मगर दूसरे कुलपति ने, जिसे मोर्चा सरकार बनाए रखना चाहती थी, इस्तीफा पेश कर दिया.

कोट्टायम में महात्मा गांधी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. यू. आर. अनंतमूर्ति ने मजदूर संघीय राजनीति से तंग आकर इस्तीफा दे दिया. उनका अनुभव था कि एक स्टेनो के तबादले से भी घेराव तक की नौबत आ जाती है. कन्नड के मशहूर लेखक अनंतमूर्ति मैसूर विश्वविद्यालय में शिक्षक पद पर लौट जाएंगे. इस इस्तीफे से जहां राज्य भर के लोग स्तब्ध रह गए, वहीं कालीकट विश्वविद्यालय में एक और नाटक चल रहा था. वहां के कुलपति को हालांकि सरकार ने बेहद अकुशल और वित्तीय गड़बड़ियों का जिम्मेदार ठहराया था पर उन्होंने इस्तीफा देने से इनकार कर दिया.

दोनों ही घटनाएं साक्षी हैं कि केरल में शिक्षा का किस कदर राजनीतिकरण हो चुका है.

बिहार

बिहारी जेम्स बांड

● बिहार के युवा और उत्साही मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव सरकारी दफ्तरों के अप्रत्याशित दौरों और भ्रष्ट अधिकारियों के यहां छापे डलवाकर संतुष्ट नहीं हुए तो पिछले पखवाड़े उन्होंने जेम्स बांड की भूमिका में ही आने का फैसला किया.

एक बार जब वे अपनी गाड़ी से कहीं जा रहे थे तो उन्हें अपने निजी सुरक्षाकर्मी के वायरलेस सेट पर एक लड़की की चीख सुनाई दी जिसे पटना के स्टेशन रोड की ओर एक सफेद मारुति में अगवा करके ले जाया जा रहा था.

इस चीख का सुनना था कि वे तत्काल हरकत में आ गए. उन्होंने अपने ड्राइवर को उस सड़क की ओर दौड़ने के आदेश दिए. अपनी कार की लाल बत्तियां बुझवाकर उन्होंने पायलट कारों के सायरन भी बंद करवा दिए.

जल्द ही उन्हें एक सफेद मारुति दिखी जिसे उन्होंने फुर्ती से आगे निकलकर रुकवा लिया. दुर्भाग्य से यह वह कार नहीं थी जिसकी तलाश वे कर रहे थे. इसके सवारों में जनता दल सांसद देवेंद्र यादव शामिल थे. लालू रुके नहीं और उन्होंने सफेद मारुतियों का पीछा जारी रखा. मुख्यमंत्री ने जो अगली कार रोकी उसमें सवार बेचारे एक एडवोकेट महोदय थे.

लालू यादवः अति उत्साह

प्रशांत पंजियार

पटना की भीड़ भरी गलियों की खाक छानने के बाद यादव को आखिर हार माननी पड़ी. मजे की बात है कि अगले ही दिन उन्हें राज्य की कानून व व्यवस्था पर भाषण देना था. जाहिर है, उन्हें इस बात का तल्ख अनुभव हुआ था कि कानून तोड़ने वाले कानून रक्षकों को कैसे गच्चा देते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चॉकलेटी चुनौती

देश के चॉकलेट बाजार पर छाए कैडबरीज और अमूल के एकाधिकार को जैसे-जैसे नई कंपनियों से चुनौती मिलने लगी है, वैसे-वैसे यह बाजार भी गरमाता जा रहा है. यह गरमी और बढ़ेगी ही. मंगलूर की कैंपको और दुबई में बसे भारतीयों की कंपनी वार्के समूह से जुड़ी बहुराष्ट्रीय स्विस कंपनी नेस्ले ने जैकब सुकार्ड की साझेदारी में दक्षिण भारत में कारखाना लगाने का फैसला किया है. यही नहीं, हैदराबाद के पास नरसापुर में लोटस चॉकलेट्स अपना नया कारखाना लगा रही है. यह कंपनी अभिनेत्री टी. शारदा की है. यह नया कारखाना, अगले साल तक उत्पादन शुरू कर देगा. लोटस अब गिरिजन कोऑपरेटिव कॉर्पोरेशन लि. के माध्यम से आंध्र के आदिवासियों के कोकोआ उगाने के लिए प्रोत्साहित करने की योजना भी बना रही है. यह कंपनी ऐसा चॉकलेट बनाने की सोच रही है जिसमें चीनी न हो, कम कैलोरी हो और दांतों को कम नुकसानदेह हो.

पैड पर पराक्रम

पैंतीस रुपए में 'सेल्फ स्टिक' नोट पैड खरीदने वाला एक ग्राहक उसके पैकेट पर यह छपा हुआ देखकर हैरान रह गया कि अगर आप इस चीज से संतुष्ट न हों तो इसे अमेरिका के फलां पते पर वापस कर सकते हैं. इतनी ही हैरानी उसे इस पैड पर चिपकी उस तिकोनी चिप्पी को देखकर हुई जिस पर बिड़ला 3एम का प्रतीक चिन्ह और बंगलूर का पता छपा था. बाद में एक डीलर ने स्पष्ट किया कि इस पैड से शिकायत हो तो इसे बंगलूर भी लौटाया जा सकता है. स्पष्ट है कि इस पूरे माल का खेप इस मकसद के साथ आयात करके बेचा जा रहा है कि बंगलूर की यह कंपनी जल्दी ही इसका उत्पादन शुरू करेगी. लेकिन उपभोक्ता हैरान हैं. क्या हमारी यह हालत हो गई है कि नोट पैड भी अमेरिका से आयात करने पड़ रहे हैं. लेकिन बाजार के जानकारों का मानना है कि बिड़ला 3एम देसी और इससे सस्ते नोट पैड बनाने में सक्षम है.

छोटे की बड़ी योजनाएं

अप्रैल में भारतीय औद्योगिक विकास बैंक से 4200 करोड़ रु. की शुरुआती पूंजी लेकर काम शुरू करने वाले भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक ने महत्वाकांक्षी योजनाएं बनाई हैं. यह बैंक छोटे उद्योगों को वित्तीय सेवा और उनके माल के विपणन में मदद देने भर का काम नहीं करेगा. बैंक छोटी इकाइयों के तकनीकी विकास के लिए उन्हें नई तकनीकी सुविधाएं मुहैया कराने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाना चाहता है. ऐसी ही एक योजना अलीगढ़ के ताला उद्योग को जर्मन तकनीकी सुविधाएं मुहैया करवा के उसमें नई जान फूंकने की है. साथ ही बटाला के कल-पुर्जा निर्माताओं, गुजरात के रंगसाजों और दक्षिण भारत के दियासलाई उद्योग के आधुनिकीकरण की भी है.

'सेकेंड हैंड' की तलाश

जिंदल समूह आजकल दुनिया भर में एक बढ़िया 'सेकेंड हैंड' इस्पात कारखाना तलाश रहा है. इसका उपयोग ओडीसा के दैतारी में 2,500 करोड़ रु. की लागत से लगने वाले विशालकाय कारखाने में किया जाएगा. इस 'सेकेंड हैंड' कारखाने के लिए यह समूह अभी कम-से-कम दो अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठानों—अमेरिकी इस्पात कंपनी यूएसएक्स कॉर्पोरेशन और आस्ट्रियाई कंपनी वोएस्ट आल्पाइन से बात कर रहा है.

निर्यात की राह के रोड़े

लघु उद्योगों में तैयार होने वाले इंजीनियरिंग सामान का निर्यात अक्तूबर'90 से सितंबर'91 के बीच काफी बढ़ने की उम्मीद है. यह भविष्यवाणी इंजीनियरिंग उद्योग संघ द्वारा कराए गए सर्वेक्षण में की गई है. सर्वे के दौरान

चार्ट: बी.के.

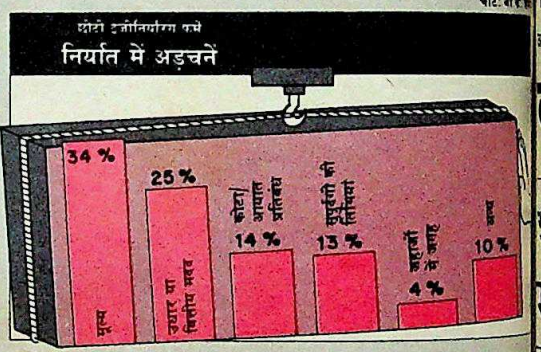

फीसदी लोगों ने बताया कि आने वाले महीनों में उद्योगों में [illegible] पूंजी पर मुनाफे की दर में कमी आएगी. बड़ी कंपनियां अभी [illegible] निर्यात बढ़ाने के मामले में बाधा हैं. सबसे बड़ी बाधा महंगाई को बताया गया और फिर कर्ज, कोटा/आयात पर पाबंदी, माल की डिलीवरी तथा ढुलाई की दिक्कत का नंबर आता है. उत्पादन तक उत्पादन की बात है, अपर्याप्त पूंजी, ऑर्डर की कमी और बिजली, कच्चेमाल तथा कुशल मजदूर का अकाल प्रमुख मुश्किलों में है.

तकरार खत्म होने के आसार

गोवा में 180 करोड़ रु. लागत से थापरड्यूपोंट नायलॉन-66 परियोजना पर जारी तकरार का इस महीने 'स्पेशल प्रोजेक्ट्स एप्रूवल बोर्ड' (पीएबी) की बैठक में फैसला हो जाने की संभावना है. बैठक की अध्यक्षता उद्योग सचिव ए.एन.वर्मा करेंगे. 14,000 हजार टन क्षमता वाले इस प्लांट को लगाने का विरोध छह दूसरी नाइलॉन कंपनियां पिछले दो साल से कर रही हैं. इनमें श्रीराम, जेके सिंघानियां और बिड़ला समूह शामिल हैं. पिछले महीने इस परियोजना को मंजूरी न देने पर पर्यावरण राज्यमंत्री मेनका गांधी की मंशा उनके विभाग के कैबिनेट मंत्री नीलमणि राउतराय ने पूरी नहीं होने दी. हालांकि इसके अनुमति पत्र की सीमा बढ़ाकर जून '91 तक कर दी गई. अब अंतिम बाधा 'पीएबी' की मंजूरी ही है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्टून अजीत नैनन और चार्ट बी के शर्मा

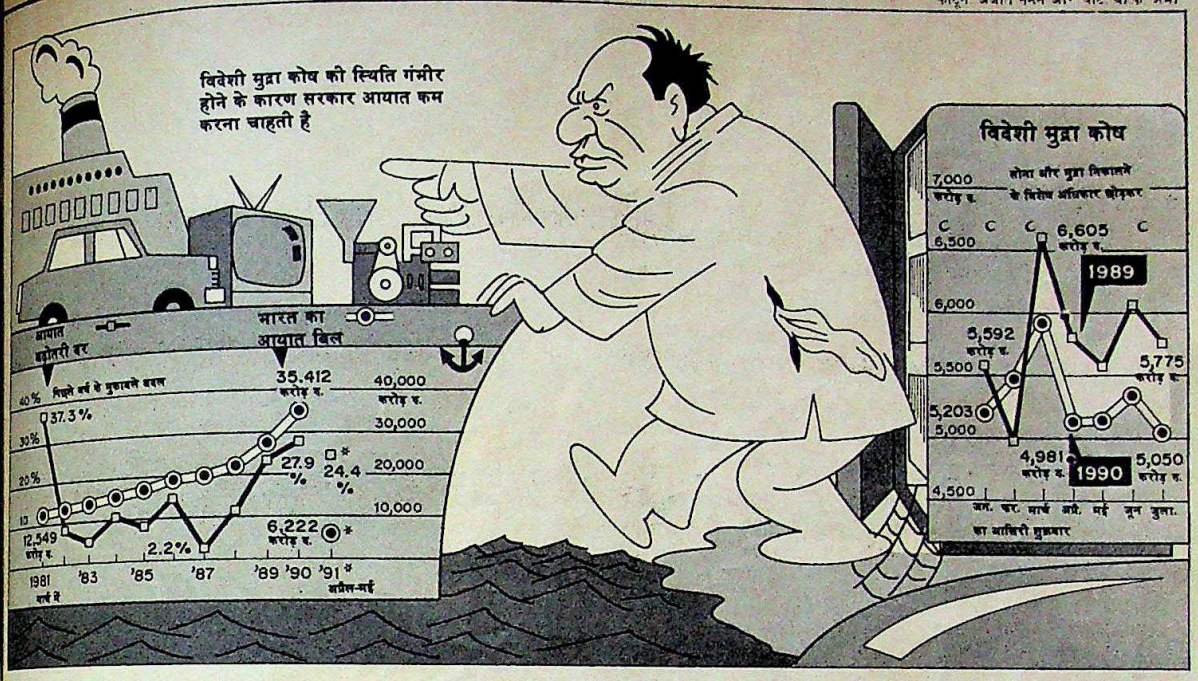

आयात

कड़वी कटौतियां

भुगतान संतुलन की डूबती नैया को पार लगाने की कोशिश

मोटरगाड़ियों के निर्माण में काम आने वाले पुर्जे, इलेक्ट्रॉनिकी उपकरण और दूसरे उपभोक्ता सामान के आयात में कटौती कर दी गई है. सरकारी प्रतिष्ठानों के विदेशों में स्थित कार्यालयों को बंद करने का फैसला भी हो चुका है. विदेशी मुद्रा की भयंकर कमी को देखते हुए ये वे चंद उपाय हैं जिनके सहारे राष्ट्रीय मोर्चा सरकार देश के भुगतान संतुलन की डूबती नैया को पार लगाने की कोशिश कर रही है. सरकारी नीति इस बात पर केंद्रित है कि जब तक निर्यात नहीं बढ़ाया जाता, तब तक आयात पर कुछ रोक लगनी चाहिए. और वैसे सरकार के पास दूसरा कोई चारा भी नहीं. इराक-कुवैत संघर्ष के बाद विश्व बाजार में पेट्रोलियम तेल के दामों में बेतहाशा बढ़ोतरी होने के आसार बढ़ गए हैं और अगर तेल का आयात बिल एकदम से बढ़ता है तो सरकार का समूचा गणित गड़बड़ा रह जाएगा.

कच्चे तेल का अंतरराष्ट्रीय मूल्य अगर और बढ़ता है तो भारत के पास अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से कर्ज लेने या बड़े पैमाने पर व्यापारिक कर्ज लेने के सिवा कोई और विकल्प नहीं रहेगा. और ये दोनों ही विकल्प न तो उचित हैं और न ही राजनैतिक दृष्टि से बेहतर. वैसे भी इससे देश के कर्ज भुगतान की ऊंची दर, जो 30 प्रतिशत के करीब है, और बढ़ेगी.

20 जुलाई को केंद्रीय वाणिज्य मंत्री अरुण नेहरू ने आयात नीति में महत्वपूर्ण परिवर्तनों की घोषणा की. इन परिवर्तनों का लक्ष्य 10,000 करोड़ रु. की 'मुक्त' विदेशी मुद्रा की बचत करना है. आयात की दो मुख्य श्रेणियां हैं, पहले में 'मुक्त' दुर्लभ विदेशी मुद्राओं का खर्च आता है और दूसरे में निर्यात से जुड़े आयात यानी आयात की भरपाई निर्यात से करने (आईईपी) और अतिरिक्त लाइसेंसों का मसला आता है. वित्त सचिव विमल जालान के शब्दों में,"हम निर्यात में बढ़ोतरी को आयात की मात्रा के साथ जोड़ना चाहते हैं." सबसे महत्वपूर्ण बदलाव मोटरगाड़ी उद्योग, उपभोक्ता सामान उद्योग और इलेक्ट्रानिकी जैसे तथाकथित प्राथमिकता भिन्न क्षेत्रों में इस्तेमाल होने वाले कच्चे माल और पुर्जों के आयात में 15 प्रतिशत की कटौती करने से संबंधित है.

पिछले साल ऐसी वस्तुओं के आयात पर 4,000करोड़ रु. खर्च हो चुके हैं, लिहाजा इन पर पूरी रोक लगाने से 600करोड़ रु. की बचत होगी. यही नहीं, 35 पूंजी वस्तुओं—जिनमें रंगीन फिल्म साफ करने के उपकरण और कागज काटने वाली मशीनें शामिल है—के आयात को भी ओपन जनरल लाइसेंस (ओजीएल) सूची से हटाकर लाइसेंस श्रेणी में डाल दिया गया ताकि 100 करोड़ रु. की बचत संभव हो सके. इसके अलावा, मशीनरी आयात करने के नियमों में भी फेरबदल किया गया है ताकि आयात करने वाले से अधिक निर्यात करने की शर्त मनवाई जा सके. उम्मीद है कि इससे इस साल 300 करोड़ रु. की अतिरिक्त बचत की जा सकेगी. साथ ही पेट्रोलियम उत्पादों के आयात पर भी कटौती पर विचार चल रहा है.

लेकिन आयात में कटौती के कारण क्या औद्योगिक उत्पादन में कमी नहीं आएगी? मुख्य आयात-निर्यात नियंत्रक तेजेंद्र खन्ना के अनुसार, "नहीं, यह जरूरी नहीं. बशर्ते कि आयात आरईपी या निर्यात संस्थानों को दिए गए अतिरिक्त लाइसेंस के तहत किए जाएं." सरकार का इरादा मुक्त विदेशी मुद्रा के एवज में होने वाले आयात के बदले ऐसी व्यवस्था लानी है जिसके तहत देश में निर्यात से होने वाली आमदनी पहुंचने के बाद ही आयात किया जाए.

कई उद्योग समीक्षक इस बात को लेकर सशंकित हैं कि ये कदम कहां तक कारगर साबित होंगे. कन्फेडशरेन ऑफ इंजीनियरिंग इंडस्ट्री के प्रवक्ता को इस बात का डर है कि इन उपायों के कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औद्योगिक उत्पादन की विकास दर में कमी आएगी.

नीतियों में परिवर्तन के पीछे उद्देश्य है ओजीएल के तहत होने वाले आयात में कटौती का. माना जाता है कि 1988-89 और 1989-90 के दौरान ऐसा आयात सीधे 50 प्रतिशत से भी अधिक बढ़ गया यानी 4000 करोड़ रु. से बढ़कर यह राशि करीब 6000 करोड़ रु. तक पहुंच गई. खन्ना के अनुसार परिवर्तनों का उद्देश्य इसी प्रवृत्ति को रोकना है.

आयात नीति में आए परिवर्तन लागू होने के तीन दिन बाद, नेहरु ने विदेशी मुद्रा में बचत के लिए कुछ और उपायों की घोषणा की. इनमें व्यापार निगम और परियोजना तथा उपकरण निगम जैसे विभिन्न सरकारी प्रतिष्ठानों के विदेशों में स्थित दफ्तरों को बंद करना शामिल है. साथ ही, वाणिज्य मंत्रालय में कई पदों को समाप्त कर दिया गया.

विदेश व्यापार में घाटे की समूची समस्या इस एक महत्वपूर्ण सवाल पर केंद्रित है कि तेल आयात पर कितना खर्च होगा? फरवरी में पेट्रोलियम मंत्रालय ने 8,600 करोड़ रु. के आबंटन की मांग की थी. इस पर वित्त मंत्रालय ने निर्देश दिया था कि इस राशि को पिछले साल की 6,400 करोड़ रु. की राशि तक ही सीमित रखा जाए. और अब बचत के इतने सारे उपायों के बावजूद पेट्रोलियम मंत्री एम.एस. गुरुपदस्वामी ने 7 अगस्त को लोकसभा को सूचित किया कि अंततः 9,700 करोड़ रु. तक की राशि खर्च हो जाएगी.

इस दुखद संभावना के मद्देनजर ये उपाय नाकाफी लगते हैं. भारतीय विदेश व्यापार संस्थान के प्रोफेसर विवेक देवराय के अनुसार, "हमारे पास अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष या वाणिज्य बैंकों से और कर्ज लेने के सिवा दूसरा विकल्प नहीं."

भारत ने आठ वर्ष पहले अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से कर्ज लिया था, तब कोष की शर्तें बैंकों की तुलना में अधिक अनुकूल थीं. तब से अब तक के हालात में काफी बदलाव आ चुका है. बैंकों की ब्याज दर ज्यादा जरूर होती है पर अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की 'शर्तों' की तो अपने यहां खासी नुक्ताचीनी होती है.कुछ आलोचक तो अभी से मानने लगे हैं कि विदेशी मुद्रा नियमन कानून और एकाधिकार कानून में किए जाने वाले प्रस्तावित परिवर्तनों का लक्ष्य अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के वाशिंगटन स्थित मुख्यालय तक का तीर्थाटन करना है. लेकिन अभी यह बात स्पष्ट नहीं हुई है. —परंजय गुहा ठाकुरता

इस्पात नीति

नए आयाम

निजी उद्यमियों को लाभ होगा

दशकों से इस्पात बनाने जैसे महत्वपूर्ण काम में सार्वजनिक क्षेत्र का एकाधिकार-सा था. उनकी अकुशलता का परिणाम ही है कि आज भारतीय इस्पात दुनिया में सबसे महंगा है. यह सही है कि निजी क्षेत्र भी था पर उस पर अनेक तरह की पाबंदियां थीं.

लेकिन अब लगता है सार्वजनिक क्षेत्र के एकाधिकार को तगड़ा झटका लगने वाला है. हाल में एक बड़ा नीतिगत बदलाव करते हुए सरकार ने निजी क्षेत्र के लिए भी बड़े इस्पात संयंत्र लगाने के दरवाजे खोल दिए. मौजूदा निजी कंपनियों को भी आधुनिकीकरण और अपनी क्षमता बढ़ाने की अनुमति दी गई है. इतना ही नहीं, सरकारी लालफीताशाही खत्म करने

चार्ट: बी.के. शर्मा

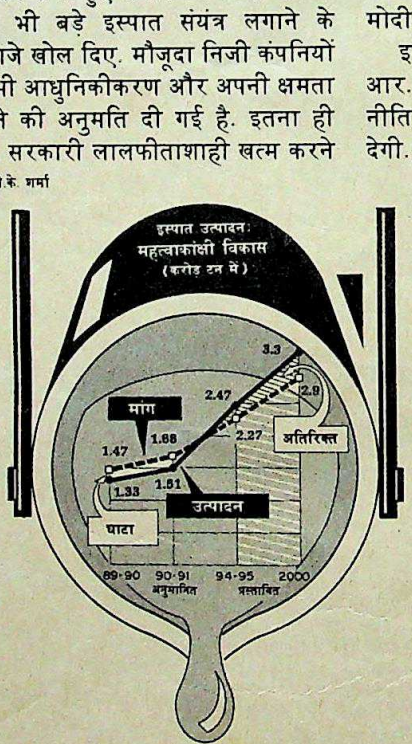

के लिए लाइसेंस की प्रक्रिया को आसान बनाया गया है.

जैसी कि आशा थी, निजी क्षेत्र ने इन बदलावों का स्वागत किया है. 500 करोड़ रु. कारोबार वाली जिंदल स्ट्रिप्स लि. के अध्यक्ष ओ.पी. जिंदल कहते हैं, "यह सही दिशा में उठाया गया कदम है. इससे इस्पात की तेजी वाला युग समाप्त होगा." टाटा स्टील के संयुक्त प्रबंध निदेशक जे.जे. ईरानी का मानना है कि इससे कम-से-कम दो या तीन नई कंपनियां मैदान में आएंगी.

यही इस्पात मंत्रालय भी चाहता है. उसका अनुमान है कि इस सदी के अंत तक 2.8 करोड़ टन अतिरिक्त इस्पात उत्पा क्षमता की जरूरत होगी. खुद सरकार पास पूंजी का अकाल होने से वह कारखाने नहीं लगा सकेगी सार्वजनिक क्षेत्र वाली कंपनियों आधुनिकीकरण के मौजूदा दौर के सम होने पर भी 50 लाख टन उत्पादन क्ष कम ही रहेगी.

यही सोचकर 10 लाख टन क्षमता कारखाने लगाने, इलेक्ट्रिक आर्क मौजूदा संयंत्रों की क्षमता 1.5 लाख ट बढ़ाकर 2.5 लाख करने की निजी क्षेत्र भी ब्लास्ट फर्नेस वाली तकनीक अप की अनुमति देने से अनेक नए लोग आएंगे ही. कई कंपनियों ने परियोजनाओं का खाका बनाना शुरू कर दिया है. अनेक अपने पुराने प्रस्त पर फिर से सोचने लगे हैं. मित्त मोदी,एस्सार ऐसे ही समूह हैं.

इन बदलावों के बारे में इस्पात सचि आर. वेंकटनारायण बताते हैं कि नीति अकुशल कारखानों की छंटनी क देगी. नई लाइसेंस नीति से भी यही हो

नई नीति की विशेषता रद्दी इस्पात उपयोग को हतोत्सा करना है—पिछले विदेशों से ऐसा स्क्रैप मं पर ही 800 करोड़ रु. खर्च गए थे. अब नया इलेक्ट्रि आर्क फर्नेस लगाने वाले आधा स्पंज आयरन उप करना होगा जो देश में तैयार हो रहा है.

लेकिन नई नीति से लोग खुश नहीं हैं. 10 ट टन उत्पादन क्षमता सीमा को अनेक लोग आ दृष्टि से बहुत फायदेमंद मानते. दूसरी तरफ दूसरे लोगों की शिकाय कि बड़े उद्योगपतियों के से छोटे-मोटे इस्पात कारखाने दम देंगे जिनकी आर्थिक हालत पहले से खराब है. उद्योग मंत्रालय इस शिक को वाजिब मानते हुए छोटे इ कारखानों को मदद पहुंचाने की यो बना रहा है.

ऐसी एकाध गड़बड़ियों के बावजू नीति सफेद हाथी बन गए सार्वजनि के प्रतिष्ठानों की अकुशलता को लाएगी. अगर थोड़ी प्रतिद्वंद्विता हो तो काले क्या, सफेद हाथी को नचवाया जा सकता है.

—सुरजीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेयर बाजार

तूफानी तेजी

बाजार का गणित उलटा

भारतीय शेयर बाजारों के इतिहास में इतनी तेजी वाला पखवाड़ा शायद पहले कभी नहीं आया होगा. बाजार के गणित के हिसाब से गिरावट लाने वाले सारे कारण मौजूद थे. उप-प्रधानमंत्री देवीलाल के मंत्रिमंडल से निकाले जाने के कारण राजनैतिक अनिश्चितता, कुवैत पर इराकी हमले के कारण तेल की कीमतों के आसमान पर चढ़ने का अंदेशा और बंबई शेयर बाजार के अधिकारियों द्वारा लगाए गए प्रतिबंध.

लेकिन बाजार के जानकार लोग देश के पूंजी बाजार की 'ताकत' को देखकर हैरान थे. पिछले पखवाड़े के शुरू में बंबई शेयर बाजार (बंशेबा) का 30 शेयरों वाला संवेदनशील सूचकांक 1000 के ऊपर पहुंच गया था. 25 जुलाई को इकॉनॉमिक टाइम्स का अखिल भारतीय शेयर मूल्य सूचकांक भी 500 अंक को पार कर गया और पांच दिन बाद ही 544.3 की नई

चार्ट: बी.के. शर्मा

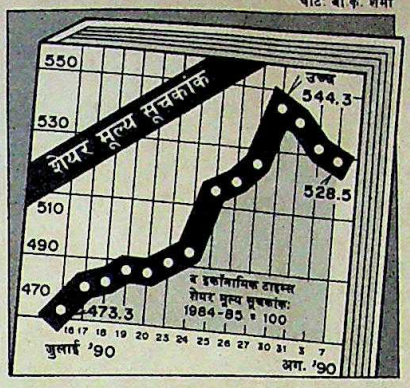

रिकार्ड ऊंचाई पर पहुंचा. 7 अगस्त को यह 528.5 पर आकर रुका.

इस उछाल को गति दी एसीसी के शेयरों ने. पिछले पखवाड़े इसके शेयरों की बड़े पैमाने पर हुई खरीद-फरोख्त को देखते हुए बंशेबा के अधिकारियों ने इसके मूल्य पर 810 रु. की सीमा बांध दी थी. इस पखवाड़े इस रोक के हटते ही ये शेयर 1,002 रु. पर पहुंच गए. इस वर्ष ये शेयर 325 रु. से चढ़कर 1,175 रु. तक पहुंचे और पखवाड़े के अंत में 1,110 पर रुके.

शेयर मूल्यों में बेहिसाब वृद्धि देखकर बंशेबा के अधिकारियों ने अपने हाथ दिखाने का फैसला किया. उनका मानना था कि बाजार में कुछ ज्यादा ही गरमी से आई अटकलबाजियों को रोकने के लिए कुछ करने की जरूरत है. और उन्होंने पूरे 'ए' समूह के शेयरों की अग्रिम खरीद पर ही रोक लगा दी जिससे दलालों के पसीने छूट गए. इसी प्रकार शेयर बाजार के अधिकारियों ने 'बी' समूह के शेयरों पर भी 20 फीसदी का भारी पड़ता थोप दिया.

पिछले पखवाड़े तक अच्छे शेयरों की उठापटक का कोई असर नहीं होता था. लेकिन मोल-तोल वाले भाव में सस्ते में ऐसे शेयर दिलाने का लालच दिखाकर दलालों ने इनकी कीमतों में भी पर्याप्त उठापटक शुरू करा दी थी. अब इन पर भी प्रतिबंध लगने से दलालों के हाथ-पांव सूज गए हैं. दिल्ली, कलकत्ता और अहमदाबाद के शेयर बाजारों में भी ऐसे प्रतिबंध लगे और अनेक दलालों ने तो बंबई के साथ ही यहां जाना बंद कर दिया. अधिकारियों ने उन्हें मनाने की कोशिश भी की. उम्मीद है कि दलाल स्ट्रीट में अगले कुछ हफ्तों में विभिन्न चरणों में ये प्रतिबंध उठा लिए जाएंगे.

इसका अर्थ होगा कि जब तक अधिकारी फिर से प्रतिबंध लगाने की सोचें, तेजड़ियों का दौर आएगा ही. फिलहाल तो तेजी का दौर है जो प्रतिबंध उठने से तेज ही होगा.

जमा स्टॉक

	1990 ऊंचा	1990 नीचा	1990 बंद 7.8.90	पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
अशोक लेलैंड	108.00	69.50	108.50	38.50+
एसो.सीमेंट	1175.00	325.00	1110.00	300.00+
एशियन पेंट्स	270.00	207.50	260.00	10.00+
एटलस कोप्को	52.00	32.50	45.00	1.00−
बजाज ऑटो	580.00	355.00	558.75	41.25+
बड़ौदा रेयॉन	1150.00	617.50	1120.00	35.00+
बाटा इंडिया	83.00	62.50	77.00	2.00+
बल्लारपुर	212.00	120.00	198.00	19.00+
बिरला जूट	130.00	50.50	122.00	17.00+
बेनो प्लास्ट	79.00	34.50	75.00	5.00−
बिरला इंडिया	272.00	173.00	260.00	10.00+
ब्रिटा इंडिया	134.00	97.00	134.00	7.00+
बुक बांड	138.00	91.00	134.00	18.00+
कैडबरी इंडिया	192.00	133.75	178.75	1.25+
सेंचुरी टेक्सटाइल्स	4150.00	2420.00	3850.00	100.00−
कोलगेट पामो.	295.00	176.25	277.50	27.50+
सावनामिड	123.75	87.50	100.00	10.00−
डीसीएम	79.00	45.50	70.00	6.00+
डनलप	75.50	51.75	69.00	2.00+
ईसाई होटल्स	65.25	55.00	57.50	2.50−
एस्कार्ट्स	115.00	77.75	112.00	4.00+
फिलो. केबल्स	290.00	200.00	270.00	10.00+
गरवारे नाइलोन	69.00	48.00	52.00	4.00−
जी.ई. शिपिंग	54.75	40.25	44.50	2.50+
ग्रुफ.स्टेट फर्टि.	262.50	155.00	235.00	10.00+
हालिम इंडिया	185.00	106.00	168.00	22.00+
हिंदु.एल्यू.	365.00	205.00	335.00	22.50+
हिंदु.सीमा	1800.00	960.00	1675.00	150.00+
हिंदुस्तान लीवर	2950.00	1295.00	2750.00	150.00+
हिंदुस्तान मोटर्स	145.00	101.00	137.50	3.50+
आईसीआई	52.25	19.80	48.00	6.00+
इंडियन आर्गेनिक	49.50	35.25	44.00	1.50−
इंडियन रेयॉन	73.75	46.50	69.50	8.50+
इंडाल	167.50	84.00	153.50	29.50+
	286.25	161.25	255.00	2.50−

	1990 ऊंचा	1990 नीचा	1990 बंद 7.8.90	पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
इंगरसॉल-रैंड	280.00	190.00	280.00	25.00+
आईटीसी	113.00	48.75	104.00	9.50+
जे.के.सिंथेटिक्स	80.00	50.00	70.00	2.00−
काइनेटिक इंजी.	195.00	130.00	176.25	6.25+
किर्लो. क्युमिंस	106.00	65.00	90.00	11.00+
केएसबी पंप्स	235.00	175.00	220.00	20.00+
लार्सन-टुब्रो	122.00	57.00	105.00	11.00+
लिप्टन	112.00	73.00	87.50	2.50+
लोहिया-मशीन्स	33.50	15.00	28.50	4.00−
मदुरा कोट्स	152.00	100.50	150.00	23.00+
महिंद्रा-महिंद्रा	107.50	67.50	100.00	5.00+
मिल्क फूड	280.00	115.00	195.00	10.00+
मोटर इंडस्ट्रीज	1200.00	780.00	940.00	30.00−
मुकुंद लिमि.	161.00	127.00	150.00	9.00+
नेशनल आर्गे.	1660.00	1070.00	1525.00	165.00+
नेस्ले इंडिया	150.00	101.75	140.00	5.00+
निरलॉन	22.00	13.00	19.50	0.50−
ओरके सिल्क मि.	30.50	14.50	26.50	1.00+
पेइको इलेक्ट्रॉनिक्स	60.00	24.00	60.00	14.00+
फाइजर	113.75	72.50	95.00	5.00+
प्रीमियर ऑटो	83.00	53.50	72.00	5.00+
रेमंड	104.00	70.00	94.00	4.00+
रेकिट-कोलमैन	250.00	178.00	238.00	2.00+
रिलायंस इंडस्ट्रीज	128.00	50.00	115.50	18.00+
सीमेंस इंडिया	139.00	96.00	128.00	12.00+
शॉ वैलेस	122.00	65.00	99.00	19.00−
श्रीराम फाइबर्स	71.00	43.00	63.00	2.00+
एसकेएफ बेय.	1925.00	1240.00	1800.00	170.00+
स्पिक	76.00	50.75	67.00	1.00+
टाटा स्टील	164.00	103.25	153.50	19.25+
टेल्को	214.00	110.00	200.00	25.00+
वाम ऑर्गेनिक	170.00	115.00	151.25	13.75+
वीडियोकॉन	285.00	105.00	207.50	25.00−
वोल्टास	122.00	63.00	110.00	6.00+
विमको	35.00	15.75	30.00	5.50+

भारतीय रुपए का मूल्य

देश	मुद्रा	इकाई	बिक्री मूल्य (रुपए में)	क्रय मूल्य (रुपए में)
आस्ट्रेलिया	डालर	1	13.8166	13.6730
आस्ट्रिया	शिलिंग	100	156.5705	155.1663
बहरीन	दीनार	1	46.5793	45.5290
बांग्लादेश	टका	100	55.4516	54.0657
कनाडा	डालर	1	15.1982	15.0470
डेनमार्क	क्रोना	1	2.9064	2.8763
मिस्र	पौंड	1	6.5666	6.4556
फ्रांस	फ्रैंक	1	3.3557	3.2733
हांगकांग	डालर	1	2.2468	2.2252
इंडोनेशिया	रुपिया	100	0.9493	0.9352
ईरान	रियाल	100	25.5368	25.2559
इटली	लीरा	100	1.5163	1.4992
जापान	येन	100	11.7647	11.4679
केन्या	शिलिंग	1	0.7661	0.7572
कुवैत	दीनार	1	59.6152	57.6701
मलेशिया	डालर	1	6.4722	6.4083
मारीशस	रुपया	1	1.1723	1.1534
नेपाल	रुपया	1	0.6097	0.6018
हालैंड	गिल्डर	1	9.8352	9.7306
पाकिस्तान	रुपया	1	0.8239	0.8123
सिंगापुर	डालर	1	9.6814	9.5840
स्पेन	पेसो	1	0.1803	0.1780
श्रीलंका	रुपया	1	0.4378	0.4325
स्वीडन	क्रोना	1	3.0158	2.9850
स्विट्जरलैंड	स्विस फ्रैंक	1	13.1630	13.0230
तंजानिया	शिलिंग	1	0.0970	0.0935
थाईलैंड	बहुत	100	68.2314	66.7994
ब्रिटेन	पौंड	1	32.6797	32.4412
अमेरिका	डालर	1	17.4672	17.3010
सं.अ.अमीरात	दिरहम	1	4.7582	4.7090
सोवियत संघ	रूबल	1	28.1503	27.8600
पश्चिम जर्मनी	जर्मन मार्क	1	11.2613	10.7769

स्रोत—बैंक ऑफ तोक्यो, नई दिल्ली, 7.8.90

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार

कब्र खोदने की कसरत

फादर टेटे की मौत की गुत्थी उलझी

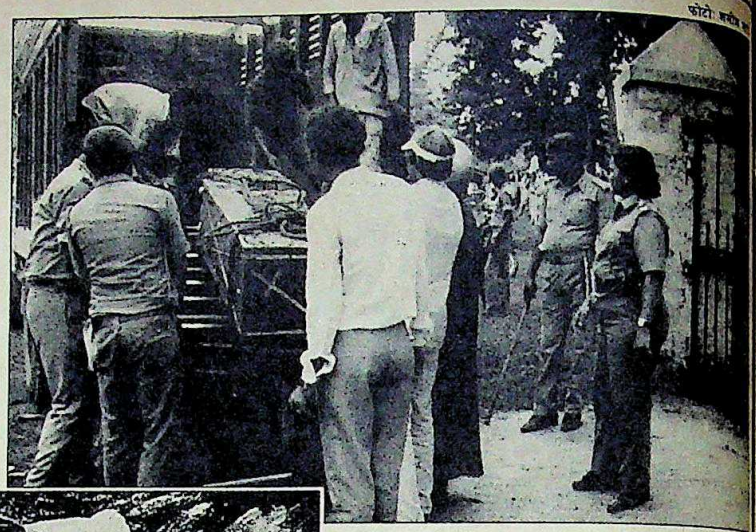

फादर टेटे का ताबूत, (इनसेट) शव

अखबार की खबर के आधार पर पुलिस ने महीने भर पुरानी लाश तो कब्र से निकाली लेकिन मामला आगे नहीं बढ़ पाया

रांची स्थित गोसनर एवांजेलिकल लुथरन चर्च के फादर मार्टिन टेटे की मौत के महीने भर बाद तक इसे कोई भी अस्वाभाविक मृत्यु नहीं मान रहा था. 10 जून को कलकत्ता में 'हृद्पेशी भंग' होने से उनकी मौत हुई थी. स्थानीय 'प्रभात खबर' अखबार के अंग्रेजी संस्करण ने जब इसे हत्या का संदिग्ध मामला बताया तब भी रांची के ही बहुत से लोगों को विश्वास नहीं हुआ.

लेकिन 7 जुलाई को जब इसी अखबार ने जाली मृत्यु प्रमाणपत्र की फोटो-प्रति छाप दी तब बवाल मच गया. और फिर जिस तरह से पुलिस ने इस मामले को उठाया उसने इसे और भी विवादास्पद बना दिया. कलकत्ता हवाई अड्डा आते समय रास्ते में ही फादर टेटे की मौत हुई. उस समय रांची के दो व्यापारी अनिल कपूर और रोशन लाल भाटिया उनके साथ थे. इंका नेता भाटिया का धंधा भवन निर्माण का है और वे रांची में गोसनर चर्च की जमीन पर एक व्यावसायिक परिसर बनवा रहे थे.

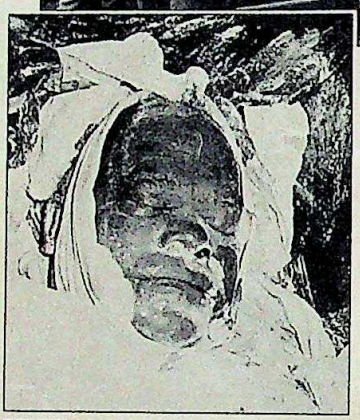

प्रभात खबर

खबर छपते ही पुलिस ने न तो कहीं मामला दर्ज किया, न अदालती अनुमति ली और महीने भर पहले दफनाई गई लाश कब्र से निकलवा ली. पुलिस ने दावा किया कि श्रीमती टेटे लाश की पोस्टमार्टम कराना चाहती थीं. इस एकदम गल गई लाश की पोस्टमार्टम रिपोर्ट में कहा गया है, "शरीर के अंदरूनी या बाहरी हिस्से में किसी चोट के निशान नहीं हैं. हृदय को देखने से हृद्पेशी भंग का कोई प्रमाण नहीं दिखता." राजेंद्र मेडिकल कॉलेज अस्पताल के तीन डॉक्टरों के पैनल ने निष्कर्ष निकाला कि मौत का कारण अनिश्चित है.

लेकिन इन सबसे यह मुद्दा शांत पड़ने की जगह और उभरा क्योंकि पुलिस ने भाटिया को गिरफ्तार कर लिया. भाटिया 'प्रभात खबर' के खिलाफ एक करोड़ रु. के मानहानि के दावे की तैयारी कर रहे थे. एसपी एस. बी. जयंत ने कहा कि पुलिस को पूरा भरोसा है कि फादर टेटे की हत्या एक सुविचारित षड्यंत्र के तहत की गई.

भाटिया को गिरफ्तार करने और हथकड़ी पहनाने से मामले ने राजनैतिक रंग भी पकड़ लिया. विधानसभा में इंका विधायकों ने डॉ. जगन्नाथ मिश्र के नेतृत्व में यह कहते हुए सदन की कार्यवाही ठप कर दी कि यह गिरफ्तारी राजनैतिक बदले की भावना से की गई है. नई दिल्ली में राजीव गांधी ने कहा कि यह घटना राज्य की इंकाइयों को सताने के अभियान का ही हिस्सा है. मामले के विरोध में चर्च भी आ जुटा.

जनमत के दबाव पर पुलिस मामले की जो जांच कर रही है उससे कोई पक्का सूत्र हाथ नहीं लगा है. कलकत्ता के चित्तरंजन अस्पताल के डॉ. तापस मुकर्जी ने पुष्टि की है कि मृत्यु प्रमाणपत्र पर उनका हस्ताक्षर है. फिर भी रांची के एसपी कहते हैं कि उन्होंने पारिस्थितिक साक्ष्यों के आधार पर कार्रवाई की और इस मामले में बातें उतनी ही नहीं हैं जितनी सामने दिख रही हैं.

बाद में दायर प्राथमिकी में भाटिया, कपूर, चर्च के दो पादरियों—इसके कार्यकारी अध्यक्ष सी.एस.आर. टोपनो और पूर्व चर्च प्रमुख एस. मोहन—तथा डॉ. तापस मुकर्जी पर अपहरण, हत्या आपराधिक षड्यंत्र और साक्ष्य नष्ट करने की कोशिश के आरोप लगाए गए हैं लेकिन भाटिया के वकील प्रेमशंकर दयाल कहते हैं कि प्राथमिकी में ढेर सारे पोल हैं.

इतना ही नहीं, पुलिस की बात पर यकीन करने वाले कम ही लोग हैं क्योंकि पुलिस न तो अब तक हत्या की मंशा बता पाई है, न मामला ही दर्ज कर पाई है. पोस्टमार्टम की रिपोर्ट ही ऐसी नहीं है कि मामला दर्ज हो. पुलिस अब एक ही संभावना पर काम कर रही है कि चूंकि भाटिया चर्च की जमीन पर भवन बनवा रहे थे इसलिए हो सकता है कि वे फादर टेटे से कोई गुप्त सौदा करना चाहते हों जिस पर टेटे राजी न हुए हों.

लेकिन भाटिया को लगता है कि उन्हें राजनैतिक कारणों से परेशान किया जा रहा है और विधानसभा में यह मसला उठाने वाले झारखंड मुक्ति मोर्चा के नेता सूरज मंडल उनसे बदला साध रहे हैं क्योंकि 1980 के चुनाव में उन्होंने इंका-मोर्चा गठबंधन का विरोध किया था.

अगर यह मामला है तो पुलिस के हाथ भी कुछ ठोस नहीं लगेगा और यह मामला फिर से दफन हो जाएगा. —फरजंद अहमद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने दिन की शुरुआत मुँह में रसायन भरकर क्यों की जाए?

प्राचीनकाल के ऋषि-मुनि सैंकड़ों सालों तक आयुर्वेद के बल पर रहते थे... रसायनों पर नहीं!

आयुर्वेद। २००० से भी अधिक सालों से समय की कसौटी पर खरा जीवन विज्ञान। भारत की पुरातन विरासत – आयुर्वेद – मानव जाति के कल्याण के लिए ऋषि-मुनियों ने प्रकृति के रहस्यों को जानकर जिसकी रचना की वही अनुभव सिद्ध ज्ञान पुनर्जीवित करते हैं – विको लॅबोरेटरीज़।

विको उत्पादनों को ही लीजिए। विको वज्रदंती पेस्ट और विको वज्रदंती पाउडर आपके दांतों और मसूड़ों की सुरक्षा के लिए हैं, इनमें प्राकृतिक जड़ी-बूटियों और छालों के घटक हैं। जिसके फलस्वरुप यह दांतों को प्राकृतिक व प्रभावशाली ढंग से निरोगी रखने में सक्षम है। और विको टर्मरिक क्रीम... एक अपूर्व उत्पादन जिसमें हल्दी व शुद्ध चंदन तेल का मिश्रण है। अब चाहे तन जलाने वाला गर्मी का मौसम हो या बदन ठिठुराने वाली सर्दी, विको टर्मरिक क्रीम आपकी त्वचा को रेशम जैसा मुलायम चिकना और प्राकृतिक रूप से कांतिमय बनाए रखता है।

विको उत्पादनों की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि अनेक रसायनों व कृत्रिमेटिक उत्पादन बनाने व निर्यात करने वाले अमेरिका, जर्मनी, इंगलैंड जैसे प्रगतिशील देशों के बेहतरीन पसंद वाले खरीददारों के बीच भी ये उत्पादन अत्यन्त लोकप्रिय हो गये हैं। विको उत्पादन मान्यताप्राप्त औषधियाँ हैं।

विको उत्पादन : प्राकृतिक होने से स्वाभाविकतया बेहतर.

विको
लेबोरेटरीज़

पुजारा, बम्बई-४०० ०१४. भारत.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

'इंडिया टुडे' वर्ग पहेली-15

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नए हीरो | घर जाना बंद | नाम रोशन | खुशी से भरी
कापुरुष | 'रणछोड़' | खासी फौज | कसीदे नहीं
कुंदों से पीटा | अब यकीन | नरम रुख | पहले से काम
दो की हत्या | सिर्फ दो लक्ष्य | पीछे नहीं रहीं | तर्क मौजूं
धर-दबोचा | खुद को साधा | उदार रुख | काम पर यकीन
हम खुश हैं | घूंघट हट गया | जेपी का समर्थन | लाचार से
उड़ान भरी

नाम

पता

पिन

हल इस पते पर भेजें:

वर्ग पहेली-15, इंडिया टुडे, एफ-14/15, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि 5 सितंबर 1990

उत्तर के लिए देखें 16-30 सितंबर 1990 का अंक

- यह पहेली शब्दशः इंडिया टुडे के 15 अगस्त 1990 के अंक पर आधारित है.
- वर्गों के भीतर दिए गए शब्द ही संकेत हैं.
- तीर के चिन्ह बताते हैं कि शब्द कहां से शुरू होकर किधर जाते हैं.
- तीर के चिन्ह के साथ दिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गों की संख्या दर्शाते हैं.
- वृत्त का अर्थ है कि उसमें आने वाले शब्दांश का प्रयोग पुनः होगा.
- मटमैले रंग वाले वर्ग रिक्त ही रहेंगे.
- शब्द वैसे ही लिखें जैसे पत्रिका में छपे हैं.
- सर्वप्रथम पहुंचने वाले **तीन सर्वशुद्ध हलों को पुरस्कारस्वरूप 500-500 रु.** दिए जाएंगे.
- लिविंग मीडिया इंडिया लि. के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते.

बेजान गठरी | तटीय इलाका | संबी आपु | अपने आप | रुचि | वही जवाब | दूसरे दिन गए | एक खोखे में | सन्नाटे में आ गए | मिनी स्कर्ट पहन | वक्त पर चोट | लपेट में लिया | करीबी रहे | खुद पत्र लिखे | कर्ज घट गया | नृत्य उत्सव | माल के साथ | रहे न रहे | मुख-पत्र | गले से काम | फंस गए

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-13 का हल

पुरस्कार विजेता

राकेश तिवारी
द्वारा डॉ. एस.सी. शुक्ला
विशंभर नर्सिंग होम राइ
जबलपुर-11 (मध्य प्रदेश)

राम कुमार जेरथ
1/252, मुक्ता प्रसाद नग
बीकानेर-334001
(राज.)

राखी तनेजा
एसबी-22, रतनलाल नग
कानपुर-208022
(उ.प्र.)

इन तीनों को 500-500 रु. के चेक भेजे जा रहे हैं. विजेताओं को बधाई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

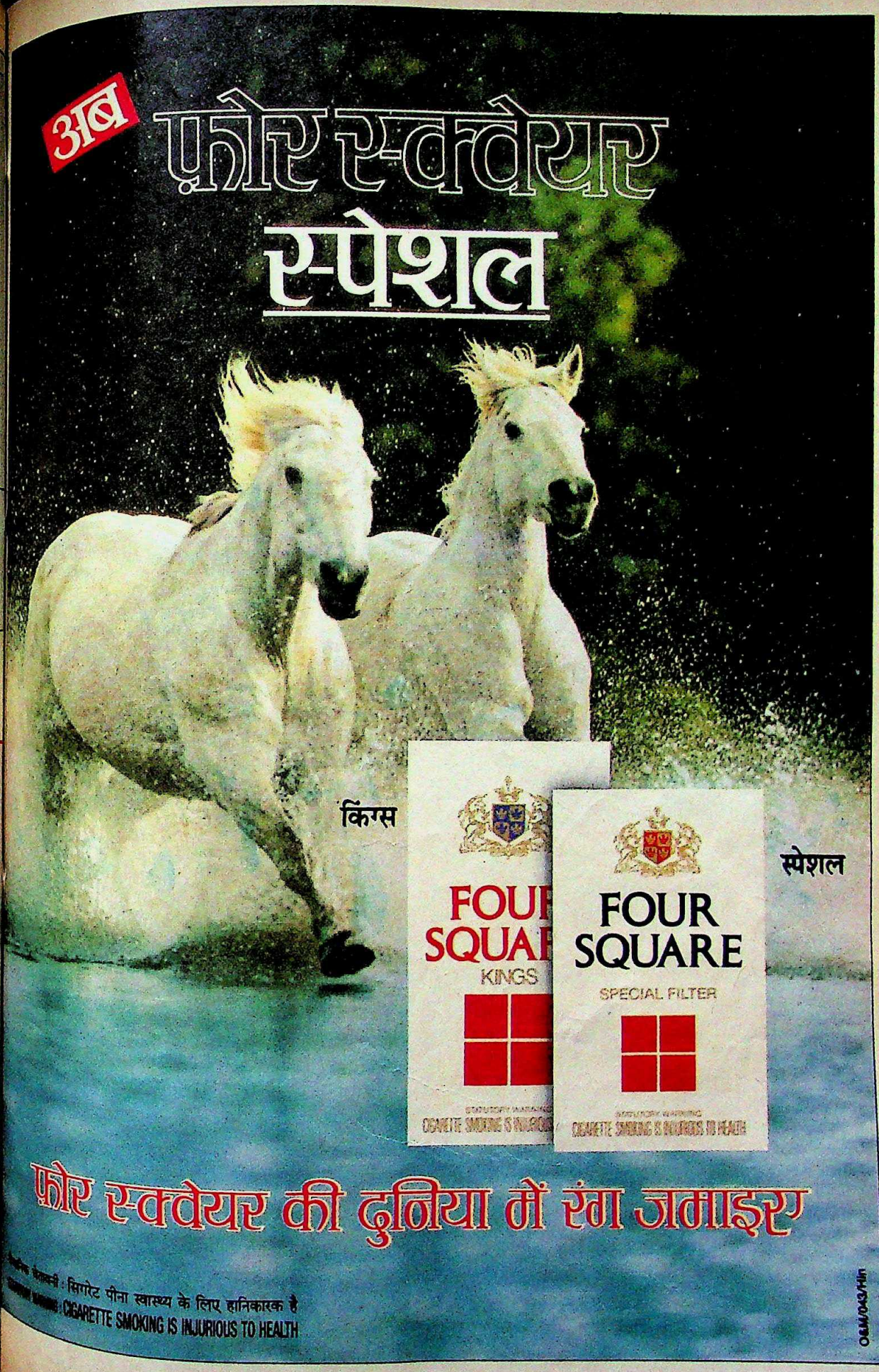

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अब से दस साल बाद सौ करोड़ भारती

ए बी बी, विद्युत् शक्ति उत्पादन में - तकनॉल

विद्युत् शक्ति के लिए भारत की बढ़ती मांग को पूरा करने में असेया ब्राउन बोवेरी का काफ़ी योगदान रहा है। परंपरागत तथा वैकल्पिक ऊर्जा तकनॉलजी के साथ। जैसे एन टी पी सी को उनके मुख्य कम्बाइन्ड साइकल गैस टरबाइन और भाप शक्ति संयंत्रों में सहायता देते हुए ; अन्ता, राजस्थान में 'टर्नकी' आधार पर; और तालचेर, उडीसा में भी।

भाटिया, गुजरात में, वायु से ऊर्जा उत्पत्ति।

आने वाले वर्षों में, राष्ट्र की इस विद्युत् शक्ति आवश्यकता को पूरा करने के लिए, प्रमुख किनारा ए बी बी का ही है। विद्युत् शक्ति उत्पादन में अग्रिम तकनॉलजी, संसाधन और निपुणता द्वारा।

ए बी बी। इलेक्ट्रिकल इंजिनीयरिंग के संसार में दो विशाल शक्तियों के अन्तर्राष्ट्रीय एकीकरण से उत्पन्न–असेया तथा ब्राउन बोवेरी। जिससे ए बी बी भारत को विशेष रूप से उपलब्ध है, विश्व भर की अग्रिम तकनॉलजी।

- विद्युत् शक्ति उत्पादन
- विद्युत् शक्ति संचरण
- विद्युत् शक्ति वितरण
- औद्योगिक इलेक्ट्रॉनिक्स
- औद्योगिक उपकरण व प्र
- परिवहन
- दूर–संचार

ए बी बी। विश्व का सबसे बड़ा इलेक्ट्रिकल इंजिनीयरिंग ग्रूप।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रती और अधिक विद्युत शक्ति माँगेंगे।

नॉलॉ हित तैयार।

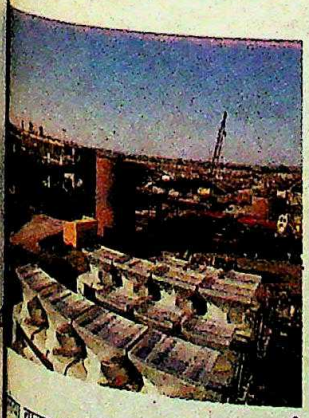

१

२

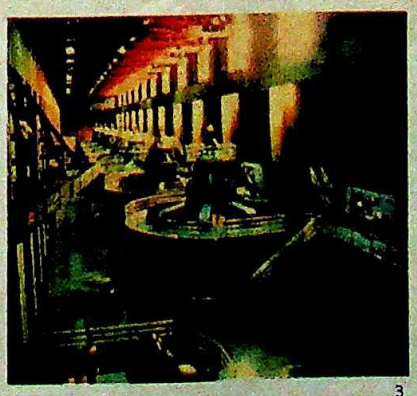

३

१. एन टी पी सी का कम्बाइन्ड साइकल पावर प्लान्ट, अन्ता राजस्थान मे
२. विन्ड फ़ार्म
३. जल-विद्युत् शक्ति उत्पादन

यादन
रण
रण
ॉनिक्स
ण व प्र

ASEA BROWN BOVERI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Gurukul Kangri Collection, Haridwar

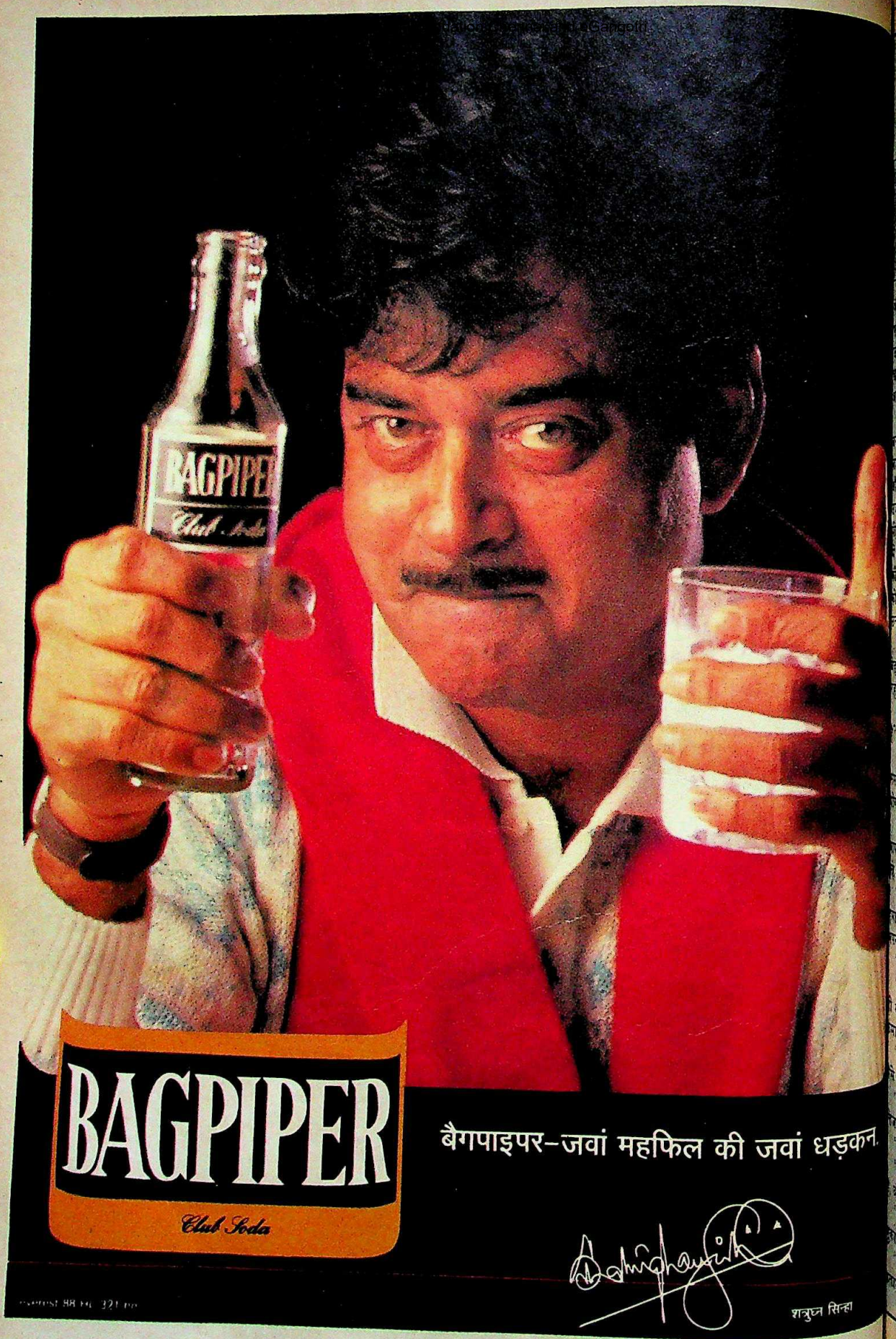

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेंढक, सियासत और बरसात

हमारे डॉक्टर दोस्त को बरसात पसंद है. बीमारों की बाढ़ आती है. बदरी छाई तो पकौड़े खाए. बारिश में भीगे-नहाए. फिर एक-दो दिन ...डॉक्टर को धाए. हमें इस मौसम से ...हेब है. बादल नहीं बरसे तो पसीना ...ता है. बरसे तो घर टपकता है. नया ...लेकर जाइए. पुराना उठाकर ...ए.

...नीमत है कि छाते ही बदलते हैं. ...सात में मन खुद-ब-खुद बेईमान हो ...ता है. सावन में जाने कितने घन घिरते ...र बरसते हैं. कितने घर बसते और ...बसते हैं. हर क्षेत्र में ...बड़ी हैं. इस अहम मसले ...मी ने रिसर्च क्यों नहीं ...है, हमने आततायी जी ...अपना सुझाव दिया. ...ने एतराज किया—

"मेरा एक छात्र इससे ...सर विषय पर शोध कर ...है?"

"उसका क्या सबजेक्ट ..." हमने जानना चाहा.

"बाढ़ और सूखे का ...कल्याण में ...दान."

"जिससे तबाही होती है, ...उसी की वाहवाही कर ...है."

"पिछली बाढ़ में ही ...रे परिचित इंजीनियर ने ...नी कन्या के हाथ पीले किए हैं."

"वह कैसे?" हमने पूछा.

"एक चीज है 'अर्थ-वर्क.' उसका अर्थ ...होती है कि गड्ढे खोदो, भरो और अर्थ ...ओ."

"हमारे ईमानदार नेता यह धांधली ...बरदाश्त करते हैं?"

"सूखा पड़े या बाढ़ चढ़े, वे राहत की ...रात से अपनी तिजोरी भरते हैं."

"कोई जनता की नहीं सोचता?"

"मेंढक को पोखर के पानी की आदत ...आम आदमी को परेशानी सहने की."

"आदमी और मेंढक में भी कोई ...समता है?"

"मेंढक और नेता में तो है," उन्होंने ...या.

"वह कैसे?" हमने सवाल किया.

"आप भी दिमाग लगाइए. हम छात्रों को भी सिर्फ पाइंट ही बताते हैं."

हम 'होम-वर्क' की तरह नेता और मेंढक की सोचने लगे. दोनों मौका मिलते ही टरटि हैं. एक जनसभा के मंच से, दूसरा कीच की तरंग से. कूपमंडूक सिर्फ अपने कुएं में मगन रहता है, नेता अपने स्वार्थ के भजन में. दोनों की खाल मोटी होती है. बच्चे मेंढक से खेलते हैं, नेता नारों से जकड़कर जनता की जान से. हमने आततायी जी को अपने गहन चिंतन का निष्कर्ष सुनाया. वह खुश हुए—

"आपने दोनों में काफी समानताएं खोज लीं. पर फर्क क्या है?"

रेखांकन : जयंतो

"नेता टोपी या साफा लगाकर टर्राता है, मेंढक बगैर सिर ढके," हमने सुझाया.

"टोपीदार मेंढक बिलकुल नेता लगता है. 'मेंढक में नेतृत्व के तत्व' पर हम शोध करवाएंगे." उन्होंने सहमत होकर हमें कृतार्थ किया.

बरसात का मौसम खासा मादक है. नगर बसें नागरिकों पर कीचड़ उछालती हैं, सियासत के समझदार एक-दूसरे पर. सच है, सावन के अंधे को हरा-हरा ही सूझता है. पुत्र मोह में बुजुर्ग नेता जाली कारतूस भरकर पत्रों की पिस्तौल दागते हैं. जब दुश्मन का बाल बांका नहीं होता तो गाली-गलौज का इंटरव्यू दे डालते हैं. जब उनकी कुर्सी खिसकती है तो शहर और गांव के मुद्दे उछालते हैं. हमने आततायी जी को मौसम के इस असर की खबर दी. उन्होंने शायरी सुनाई—

"चींटियों के पर निकलने लग गए. इस तरह मौसम बदलने लग गए."

"तो क्या हुआ? बारिश में तो कई कीड़े-मकोड़ों के पंख उगते हैं."

"यही तो. अपनी जमीन को छोड़ नेता परिवार की खातिर जनहित के पंख लगाकर खुदकशी करने पर उतारू हैं. रूठे नेता ने किसान के नारे देकर अपने कद की जंग छेड़ी है और भड़ास आश्रम के संत ने सर्वोच्च पद की."

आततायी की चर्चा से हम निराश हो गए. सियासत की बरसात यों ही जारी रहेगी. अपना घर ऐसे ही चूता रहेगा. जिनसे मरम्मत की पुकार करेंगे, वे और चूना ही लगाएंगे. खुदा न खास्ता अगर छत भरभराकर गिर भी गई तो उन्हें क्या! उन्हें कौन गांव की झोंपड़ी और शहर की झुग्गी को वाकई बचाना है? हर नेता को बस अपने दांवपेंच दिखाना है.

बारिश की लगातार फुहार सामने के गड्ढे को पोखर कर गई है. हमारे मन में अब भी मेंढक छाया हुआ है. बरसाती पोखर में एक बगुला ध्यानमग्न खड़ा है. उसकी सफेदी से त्रस्त मेंढक टर्रा रहा है—"इसकी चमड़ी मेरी से बेदाग कैसे?" फिर दूसरे को बताता है—

"सुनो संत! यह बगुला नहीं, शहर का बगुला भगत है. नालायक शहरी हर पोखर में टांग अड़ाकर उसे गटर बनाने पर तुले हैं. चलो, और मेंढकों को जुटाओ. बगुला हटाओ. पर यह आपस की बात है. हमारा नारा होगा—गटर मिटाओ, पोखर बचाओ!" संत प्रसन्न होकर टरटि हैं, "इस पोखर के आप प्रधान हैं और हम उप. यह चुप बगुला कहां से आ गया?"

"हमारे सपोर्ट से ही तो बगुला खड़ा है वरना कब का डूब जाता." तब से मेंढक टर्राहट की बयानबाजी में लगे हैं. उन्हें उम्मीद है कि जल्दी ही वे अपनी टर्र-टर्र से एक टांग पर खड़े बगुले की टांग खींचेंगे. फिर अपना कायाकल्प कर बगुला बन उभरेंगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थल सेना

अजीब समस्या

सामरिक यूनिटों के लिए अधिकारियों का अकाल

प्रणात पंजियार

भारतीय थल सेना के सामने आजकल एक अजीब समस्या आ गई है—सामरिक यूनिटों की अगुआई करने वाले अधिकारियों का सूखा पड़ गया है जबकि दूसरी यूनिटों में अधिकारियों की बाढ़ आ गई है. बटालियन कमांडरों की औसत उम्र अधिक होने तथा अधिकारी कैडर में प्रोन्नति के मामलों में जड़ता आ जाने से समस्या और भी गंभीर हो गई है.

पाक सीमा पर तनाव को देखते हुए अधिकारियों की कमी और भी चिंता पैदा करती है. सामरिक यूनिटों में कैप्टन और उससे नीचे स्तर के अधिकारियों की संख्या 25 फीसदी तक कम है. अनुमान है कि सामरिक यूनिटों और अन्य फील्ड यूनिटों के लिए 2,000 नए अधिकारियों को भरने की जरूरत होगी.

फिलहाल सेना कुछ कामचलाऊ तरीके अपना रही है जो आगे चलकर बेमतलब विवाद खड़ा करेंगे.

► वह उन अधिकारियों की सेवा ले रही है जो अवकाश पाने की उम्र पार कर गए हैं. अभी अधिक से अधिक ऐसे 1,000 लोगों की सेवा लेने की सीमा तय थी. थल सेना अब इसे बढ़ाकर 2,000 करना चाहती है.

► प्रशिक्षण संस्थानों और स्थायी ठिकानों पर तैनात अधिकारियों की संख्या घटाई जा रही है और इन्हें सामरिक यूनिटों में लाया जा रहा है. सारे नए अधिकारियों को पैदल सेना की बटालियनों में 12 महीने अनिवार्य रूप से रहना होगा.

► थल सेना मुख्यालय ने फैसला किया है कि 1991 से सिर्फ उन्हीं अधिकारियों को बटालियनों की कमान सौंपी जाएगी जो 42 वर्ष या उससे कम उम्र के हों. 1992 से यह उम्र 41 कर दी जाएगी.

इससे कुछ कमी तो पूरी होगी पर विवाद उठने का अंदेशा भी है. मसलन, अवकाशप्राप्त अधिकारियों को फिर काम पर लगाने के फैसले पर सेना के ही अनेक अधिकारी नाक-भौं सिकोड़ते हैं. उनका कहना है कि ऐसे अधिकारी नौकरी में लौटने पर भी अपनी पेंशन, प्राविडेंट फंड जैसे झमेले निबटाने में व्यस्त रहते हैं.

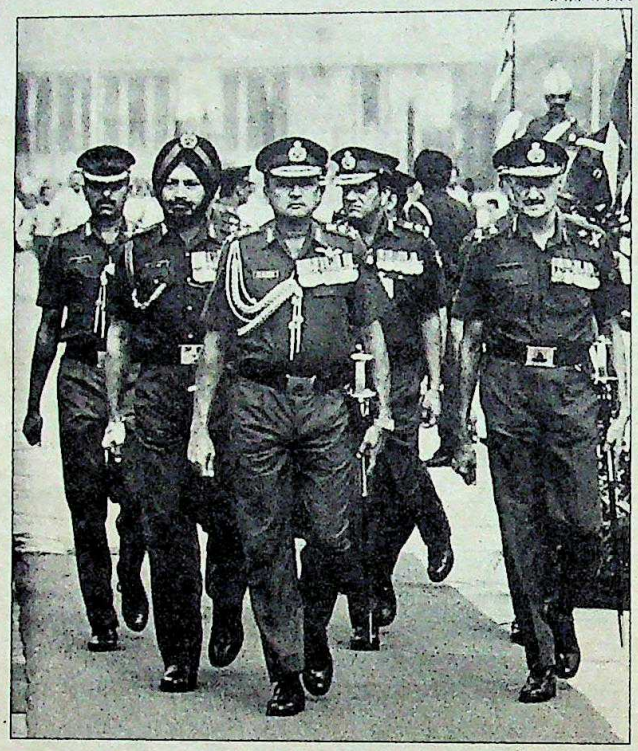

थल सेनाध्यक्ष एस.एफ. रोड्रिग्स

प्रशिक्षण संस्थानों में अधिकारियों की संख्या घटाने के फैसले से भी समस्याएं उठेंगी. इससे प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रभावित होंगे जिनमें सुधार और आधुनिकीकरण की जरूरत अब और बढ़ गई है. पैदल सेना की बटालियनों के साथ 12 महीने अनिवार्य रूप से रहने के कारण नौकरशाह अधिकारी अपने मनपसंद अस्त्र-शस्त्रों का प्रशिक्षण नहीं ले पाएंगे. आयु सीमा के कुछ वर्ष लांघ जाने के बाद अधिकारियों को बटालियनों की कमान नहीं देने का नियम अगर लागू हुआ तो इस मसले को काफी विवाद का रूप लेने में देर नहीं लगेगी.

सेना के सामने एक और बड़ी समस्या एक दर्जन लोगों में ही किसी को जल्दी और किसी को पीछे छोड़ने की है. सेना में मेजर तक प्रोन्नति स्वतः ही हो जाती है. पर इसके बाद एक-एक प्रोन्नति के मसले तय करने होते हैं. सेना द्वारा कराए गए अध्ययन के अनुसार 15 साल तक प्रोन्नति के लिए चुने हुए अधिकारियों की संख्या 7,500 तक पहुंच जाएगी. पर अभी सिर्फ 3,500 लोग ही प्रोन्नति पा सकते हैं. बाकी 4,000 अधिकारियों को बाहर करना होगा.

यह माना जा रहा है कि करीब 1,000 अधिकारियों को अध्ययन अवकाश पर भेजने के लिए प्रोत्साहित करने का सुझाव भी कारगर नहीं होगा क्योंकि ये लोग खजाने पर बोझ बने रहेंगे. सेना मुख्यालय भी अर्द्ध-सैनिक बलों में भेजने के लिए मोटा पैसा देकर 'अलविदा' कहने के पक्ष में नहीं है.

थल सेनाध्यक्ष एस. रोड्रिग्स ने, जब वे आर्मी कमांडर थे, कहा था, "सेना के रैंक और फाइल कैडर ढांचे में तर्कसम्मत बदलाव लाना और तात्कालिक जरूरतें पूरी करने के पहले दीर्घकालिक जरूरतें तय कर लेना ही असली समाधान हो सकता है." सेना के सर्वोच्च ओहदे पर आकर उनके सामने अपनी इस बात पर अमल करने का अब अवसर भी है.

उम्र का असर

सामरिक यूनिटों के कमांडरों की उम्र का ब्यौरा (बटालियन/रेजिमेंट)

उम्र	पैदल सेना	बख्तरबंद कोर	मेकेनाइज्ड पैदल सेना
50	1	—	—
49	5	—	1
48	8	—	—
47	29	3	3
46	35	5	2
45	42	4	3
44	71	10	4
43	76	9	4
42	63	19	2
41	46	6	3
40	22	1	1
39	1	—	—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

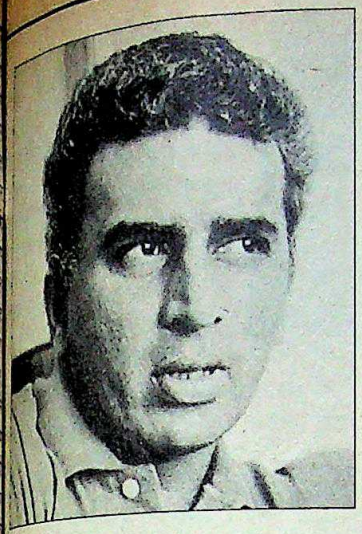

बेदी ने कहा कि गावसकर ने एमसीसी की मानद सदस्यता का प्रस्ताव ठुकराकर क्रिकेट का अपमान किया है

सभी फोटो: भवान सिंह

गावसकर ने बेदी की टिप्पणी को प्रतिक्रिया के लायक भी नहीं माना और टस से मस नहीं हुए

क्रिकेट

मजा किरकिरा

बेदी-गावसकर विवाद गहराया

भारतीय क्रिकेट टीम का इंग्लैंड का ताजा दौरा कई मायनों में उत्तेजक रहा है. टीम की घोषणा होने के कई हफ्ते बाद तक किसी को उम्मीद नहीं थी कि भारत की टीम इंग्लैंड के गरम माहौल में उत्तेजना पैदा करेगी. हैडिंग्ले और ट्रेंट ब्रिज के एक-दिवसीय मैचों में भारत की निर्णायक जीत के बाद लगने लगा था कि हमारी टीम अब 'सदा सुखी' रहने की स्थिति में है.

लेकिन पहले टेस्ट मैच की हार के बाद ही विवाद उठ खड़े हुए और इन सबके केंद्र में बहुत टीम के मैनेजर बिशन सिंह बेदी थे. इंग्लैंड की धरती पर बेदी को पहले भी कटु अनुभव हो चुके हैं. 1974 में कप्तान अजित वाडेकर के साथ गाली-गलौज तक की नौबत आ गई थी. कुछ वर्षों बाद जब मैनचेस्टरशायर ने उनके कांट्रैक्ट का नवीकरण नहीं किया तो वे फिर सुर्खियों में आ गए.

हां, इस बार विवाद उन्होंने खेल के मैदान के बाहर रहकर छेड़ा है. इसकी शुरुआत लार्ड्स में मेजबान टीम को पहले बल्लेबाजी का मौका देने के कप्तान मोहम्मद अजहरुद्दीन के फैसले से हुई. पहले दिन का खेल खत्म होने तक जब इंग्लैंड ने दो विकेट पर 359 रन बना लिए तो बेदी ने कहा, "आप कप्तान से इस बारे में पूछिए. दो विकेट पर हमारे बल्लेबाज पहले दिन में गेंदबाजी करना पसंद करते और मैं भी बेदी का यह वक्तव्य जिसके कई निहितार्थ हैं, हैरत में डालने वाला है. इसका एक अर्थ तो यह निकलता है कि इस फैसले में बेदी का कोई हाथ नहीं था. लेकिन इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण बात सामने आई कि ऐसे वक्त में जब उनकी टीम को कंधे थपथपाने के लिए एक अनुभवी हाथ की जरूरत थी, बेदी ने उससे किनारा कर लिया. और सारी नाराजगी के बाद भी अजहरुद्दीन ने प्रेस कॉन्फरेंस में कहा, "यह बात पुरानी हो चुकी, इसे भूल जाइए."

लेकिन बीबीसी के टीवी कमेंटेटर और 'डेली टेलीग्राफ' में स्तंभ लेखक सुनील गावसकर ने इस बात को इतनी आसानी से खत्म नहीं होने दिया. अपने सिंडीकेट कॉलम में उन्होंने लिखा, "यदि बेदी में थोड़ी भी खुद्दारी बाकी है तो उन्हें इस्तीफा दे देना चाहिए." उसी दौरान 'द टाइम्स' और 'द इंडिपेंडेंट' में खबरें छपीं कि गावसकर ने एमसीसी की मानद सदस्यता का प्रस्ताव नामंजूर कर दिया है. ऐसा करने वाले गावसकर पहले व्यक्ति हैं.

लेकिन एमसीसी की पैरवी नितांत अनपेक्षित सूत्र बेदी ने की. उन्होंने एकदम गलत मौके पर भड़काऊ बयान में कहा कि गावसकर ने 'दुनिया की सबसे ऊंची क्रिकेट संस्था' का अपमान किया है और उन्हें इस बात का पछतावा है कि वे 'कभी गावसकर के साथ खेले.'

मौजूदा विवाद में जन-समर्थन गावसकर के ही पक्ष में है. भारतीयों और पाकिस्तानियों ने तो गावसकर को नायक ही बना लिया है. ब्रिटेन के पत्रकार भी लार्ड्स के प्रबंधन—जिसे वे मजाक में 'गेस्टापो' कहते हैं—पर इस हमले का मजा ले रहे हैं. यहां तक कि 'द टाइम्स' ने भी गावसकर के मामले की पैरवी की.

गावसकर के सदस्यता नामंजूर करने की वजह नौ महीने पुरानी है. एमसीसी के द्वि-शताब्दी क्रिकेट मैच के दौरान एमसीसी के कारिंदों ने गावसकर को दोबारा पैवेलियन में जाने से रोका. हालांकि गावसकर मैच खेल रहे थे और उस वक्त उन्होंने ब्लेजर भी पहना हुआ था.

लेकिन गावसकर-बेदी विवाद के और उलझने का खतरा है क्योंकि बेदी ने गावसकर के खिलाफ लिखे पत्र में हस्ताक्षर करते वक्त लिखा, 'मैनेजर, भारतीय टीम.' इधर, टीम के सदस्यों का कहना है कि पत्र लिखते वक्त बेदी ने उनसे सलाह नहीं की.

इस विवाद ने एक ऐसे दौरे का मजा किरकिरा किया जो सबसे ज्यादा मजेदार और रोमांचक हो सकता था. भारतीय खिलाड़ियों ने जबरदस्त खेल भावना से वहां की जनता का दिल जीत लिया है. इंग्लैंड के कप्तान ग्राहम गूच बोले, "मेरे जीवन का यह सबसे अच्छा टेस्ट मैच रहा. दुख इसी बात का है कि एक टीम हारी." और इसमें कोई शक नहीं कि भारतीय टीम बहुत ही जोश से खेली.

फिर भी लगता है कि शृंखला के बाकी मैच जीतना भारतीय टीम के लिए मुश्किल ही है. लेकिन उसे जरूरत है ठंडे दिमाग से रणनीति तैयार करने की और अपनी कमजोरियों पर काबू पाने की. हालांकि यह काम अनुभवी और ठंडे दिमाग वाला व्यक्ति ही कर सकता है. और इसकी उम्मीद बेदी से ही थी. वे फिजूल विवादों में पड़ना छोड़ इस काम को अंजाम देंगे, इसी पर टीम का भविष्य निर्भर है.

—हर्ष भोगले, लंदन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

◆ देश के राजनैतिक मंच पर पिछले दिनों जो नौटंकी खेली गई उससे तो दूरदर्शन अनजान बना रहा. सरकार में उथल-पुथल मची रही और मंडी हाउस राष्ट्रीय कार्यक्रम के समाचारों में 'बग्स बनी' जैसी विदेशी कार्टून फिल्मों की कतरनें दिखाकर वक्त काटता रहा. अलबत्ता पिछले पखवाड़े इसने अपने राजनैतिक आकाओं को जनता की अदालत में खड़ा करने के लिए हिंदी में 'खुला मंच' या अंग्रेजी में 'ओपन हाउस' की शुरुआत की. करण थापर द्वारा संचालित इस कार्यक्रम में जनता के सामने सबसे पहले आए वित्तमंत्री मधु दंडवते. 'खुले मंच' पर बारी-बारी से वे सभी कैबिनेट मंत्री आएंगे जिन्हें आने में उज्र नहीं.

◆ बड़े शहरों की चकाचौंध अगले महीने शुरू होने वाले धारावाहिक 'आखिरी दांव' में भी भरपूर होगी जो भगवतीचरण वर्मा के इसी नाम के उपन्यास पर आधारित है. निर्माता सुरेश शर्मा भी इसे 'व्यावसायिक' धारावाहिक मानते हैं. बंबई फिल्मों के फार्मूले वाले इस फेमिली ड्रामा में प्रमुख भूमिका फारूख शेख की है. सुधीर पांडेय और शशि पुरी भी इसमें नजर आएंगे.

◆ 'इन सर्च ऑफ स्टीम' दूरदर्शन का तीन खंडों में दिखाया जाने वाला नया कार्यक्रम है. पहाड़ियों पर चलने वाली खिलौना गाड़ी दर्शकों को नीलगिरि से ऊटी, मैसूर से अरिसिकर और सिलीगुड़ी से दार्जिलिंग की सैर कराएगी. निर्देशक उमेश बिष्ट और निर्माता अशोक रैना ब्रिटिश राज की हर बात को भुनाना चाहते हैं.

◆ देश के विशिष्ट शास्त्रीय संगीतज्ञों पर तैयार कार्यक्रम 'साधना' एक हिट कार्यक्रम है. बांसुरीवादक हरिप्रसाद चौरसिया की पत्नी अनुराधा और एस. विठ्ठल द्वारा निर्मित इस कार्यक्रम को बंबई के कुछ जाने-माने फिल्मी सितारों ने प्रस्तुत किया है. मसलन कपूर बंधु—शशि और शम्मी, विनोद खन्ना और अमरीश पुरी—जो डर्टी डांसिंग और पॉप की धुन पर पली-पीढ़ी को मधुर रागों की खुराक देने की कोशिश कर रहे हैं. अमरीश पुरी जैसे फिल्मी खलनायक और विनोद खन्ना का ऐसे गंभीर कार्यक्रमों में क्या काम? जवाब चाहेंगे? विनोद ने पंडित जसराज से संगीत सीखा है और अमरीश जसराज के अनन्य भक्त हैं. कार्यक्रम की विशेषता है कि यह न तो पाश्चात्य संगीत और शास्त्रीय संगीत की बेसुरी जुगलबंदी है, न ही राग और रॉक संगीत का बेतुका मिश्रण.

◆ पिछली फरवरी में बंगलूर में एअरबस ए-320 के हादसे पर आधारित हवाई सुरक्षा से संबंधित वृत्तचित्र 'हू सेफ?' पिछले पखवाड़े मजाक बनकर रह गई. दूरदर्शन ने यह बताकर सबको हैरत में डाल दिया कि सुरक्षा हिदायतों की अनदेखी करने वाले यात्रियों और नख सौंदर्य संवारती विमान परिचारिकाओं की लापरवाही के कारण हवाई सुरक्षा को गंभीर खतरा बना रहता है. किसी विमान दुर्घटना में जीवित बच निकले दो व्यक्ति—बिशन सिंह बेदी और पद्मा सेठ—से बार-बार सवाल पूछे गए. लेकिन यह मूल जानकारी नदारद रही कि वे जिस विमान दुर्घटना के अनुभव बता रहे हैं, वह कब हुई और जहां तक इस अत्याधुनिक विमान की उड़ान क्षमता और इसकी 'फ्लाइ-बाइ-वायर' प्रणाली, इसके रखरखाव, जमीन की तैयारियों, चालक प्रशिक्षण आदि का सवाल है, उन्हें इस रंगारंग भ्रामक कार्यक्रम से अलग रख दिया गया.

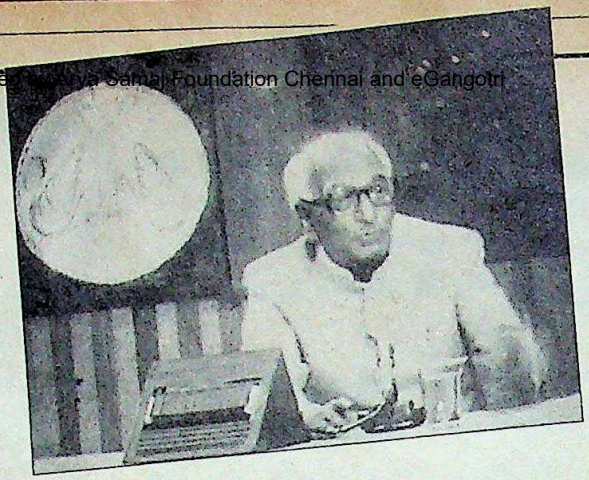

'खुला मंच' में मधु दंडवते

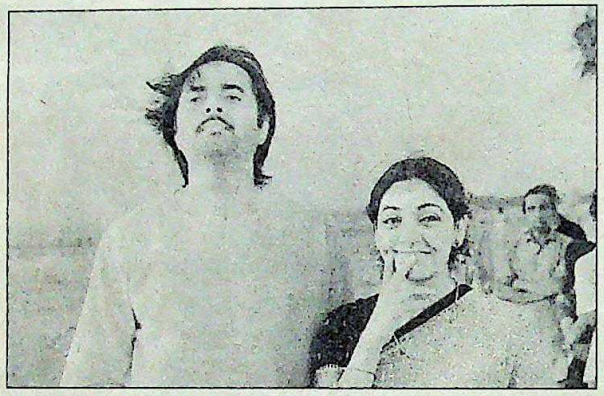

'आखिरी दांव' में फारूख और दीप्ति

उमेश बिष्ट

खिलौना ट्रेन

'साधना' के लिए चिब्बा, शम्मी चौरसिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दमा

दम घोंटने का दौरा

बढ़ते प्रदूषण का कुप्रभाव बच्चों पर सबसे अधिक

मानसी खन्ना की उम्र तीन साल ही है. लेकिन वह पुरानी मरीज है और अभी तक सात बार अस्पताल में रह चुकी है. उसे पड़ने वाले दौरे उसकी हालत खराब कर देते हैं. पहले उसकी सांस टूटती-उखड़ती है और फिर उसका रंग नीला पड़ जाता है. कई बार तो वह बेहोश हो जाती है. हर दौरे के बाद, जो कई बार 15-15 घंटे तक का होता है, वह इतनी बेहाल हो जाती है कि कुछ खा-पी नहीं सकती और उसकी नसों में नमकीन पानी चढ़ाया जाता है. उसकी मां दीपा ने अपनी बीमार बिटिया की देखभाल के लिए नौकरी तक छोड़ दी है.

पश्चिमी दिल्ली के एक मशहूर बाल चिकित्सालय के प्रतीक्षा कक्ष में मानसी जैसे अनेक बच्चों की भरमार है. इन 18 में से 11 बच्चों को सांस लेने में कठिनाई होती है. यह तकलीफ रह-रहकर उनके बुझे चेहरों से झलकती है. उनकी सांसों की घरघराहट लयबद्ध-सी सुनाई देती है.

मानसी और टूटती-उखड़ती सांसों के संग जी रहे ये सभी 11 बच्चे एक ही रोग—श्वसनिक दमा (ब्रोंकियल अस्थमा) से पीड़ित हैं. दमा कदाचित एक ऐसी बीमारी है जो युगों से चली आ रही है लेकिन महानगरों में यह महामारी का रूप लेती जा रही है. दिल्ली के बाल चिकित्सक डॉ. सुनील मेहरा बताते हैं, "तीन साल पहले तक 15 दिनों में ऐसा एक आध ही रोगी आता था पर अब हर रोज इस तरह के तीन-चार मामले हमारे पास आने लगे हैं."

डॉक्टरों का मानना है कि राजधानी में दमा के मरीजों की लगातार बढ़ रही संख्या वायु प्रदूषण के कारण है. नई दिल्ली में वाहनों की भारी संख्या के मद्देनजर यह देश के बेहद प्रदूषित शहरों में से एक हो गया है. जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में स्कूल ऑफ एनवायरमेंटल इंजीनियरिंग के डीन डॉ. जे.एन. दवे के एक अध्ययन के अनुसार राजधानी में प्रदूषण का स्तर पिछले दशक के मुकाबले 75 फीसदी बढ़ गया है. वायु में संघनित

प्रभात पंजियार

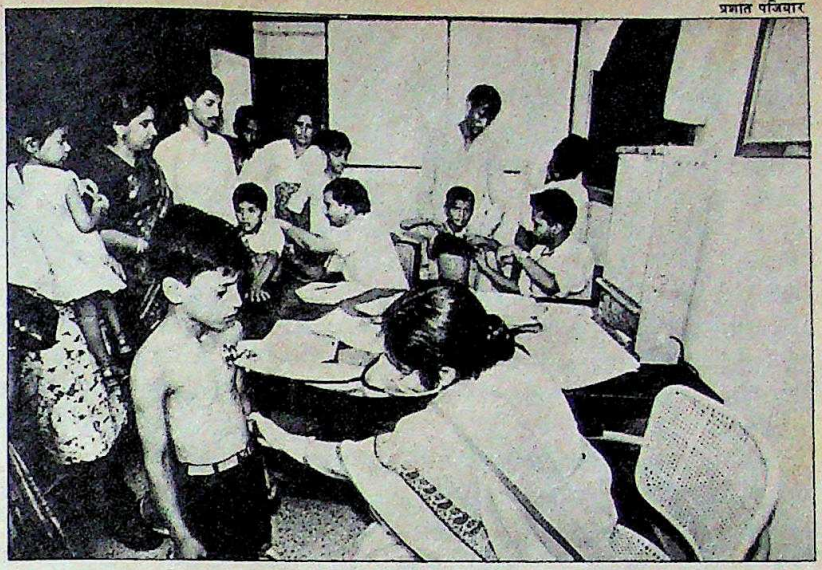

शरद सक्सेना

आयुर्विज्ञान संस्थान में मरीज और धुआं छोड़ती बस

कणों (धूल, राख आदि) की मात्रा 300 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर तक पहुंच चुकी है जो कि विश्व स्वास्थ्य संगठन से तय सुरक्षा सीमा से दोगुनी है.

इसलिए हैरत की बात नहीं कि दिल्ली की 30 फीसदी आबादी किसी-न-किसी तरह के सांस के रोगों से पीड़ित है. यह राष्ट्रीय औसत का 12 गुना है. इन लोगों में ज्यादा संख्या दमे के मरीजों की है. आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं. पर दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में चिकित्सा विभाग के प्रमुख डॉ. जे.एन. पांडेय के अनुसार, "पिछले दशक के दौरान हमारे संस्थान में आने वाले दमा-ग्रस्त बच्चों की संख्या दोगुनी हो गई है."

पर दिल्ली ही अकेला ऐसा शहर नहीं, जहां दमे के रोगियों की संख्या बढ़ रही है. कलकत्ता और बंबई भी इस महामारी के शिकार हैं. खास तौर पर यह रोग उन स्कूली बच्चों को पकड़ता है जो बसों में स्कूल जाते हैं और ज्यादातर वक्त मोटर वाहनों से निकले धुएं के बादलों से घिरे रहते हैं. चिमनियों का शहर कानपुर भी इस रोग से अछूता नहीं है. दिल्ली के बाल चिकित्सक डॉ. दीपक सहगल के अनुसार, "कानपुर में दमे के इलाज की सुविधाएं नाममात्र ही हैं इसलिए बहुत-से मरीज दिल्ली के डॉक्टरों के पास आते हैं."

दमा शरीर के दूसरे अंगों पर भी अपना असर दिखा सकता है. खांसी, घरघराहट और सांस की तकलीफ के अलावा इससे शारीरिक विकास रुक जाता है, दिल और फेफड़ों को नुकसान पहुंचता है मानसिक रोग भी हो सकते हैं. कभी-कभी तो इससे मरीज की मौत भी हो जाती है.

सब से ज्यादा परेशानी तो बच्चों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती है. इसके दौरे लगातार पड़ने की वजह से वे स्कूल नहीं जा पाते और सारी पढ़ाई चौपट हो जाती है. बच्चा इतना कमजोर हो जाता है कि अपने संगी साथियों के साथ खेल नहीं पाता इसलिए उसका सामाजिक विकास भी रुक जाता है. डॉ. मेहरा के अनुसार, "दमा की परेशानी किसी मरीज को आत्महत्या करने पर भी मजबूर कर सकती है." ज्यादातर लोग मानते हैं कि दमा हल्की-फुल्की बीमारी है. पर जब किसी बच्चे को यह रोग पकड़ लेता है तभी वे इसकी भयानकता को समझ पाते हैं.

दमा के दौरे में (देखें बॉक्स) श्वास पथ की मांसपेशियां संकुचित होकर श्वास नलिका को संकरा बना देती हैं जिससे ऑक्सीजन के प्रवाह में बाधा पड़ने से सांस लेने में परेशानी होती है, लगातार खांसी और सांस में घरघराहट होती है.

कई रोगी जन्म से ही दमा के शिकार होते हैं तो कई में इसके दौरे अनेक वजहों से होते हैं. धूल, पराग, तेज गंध, संक्रमण, यहां तक कि भावावेग भी इसका निमित्त हो सकता है.

दिल्ली के वल्लभभाई पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट में डिपार्टमेंट ऑफ एलर्जी ऐंड एप्लाइड इम्युनोलॉजी के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर एम.पी. एस. मेनन मानते हैं, "एलोपैथी में इसका कोई पुख्ता इलाज नहीं है." सिर्फ देसी दवाएं हैं जिनसे श्वसनीय मांसपेशियां शिथिल पड़ जाती हैं या फिर श्वासनलिका के बंद रास्ते खुल जाते हैं. सबसे ज्यादा और तुरंत असर स्टीरॉयड का होता है. डॉक्टर इनका सुझाव आखिरी हथियार के रूप में ही देते हैं.

भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद अब एक बूटी 'कंठकारी' पर शोध कर रही है. लेकिन ज्यादातर नीम हकीम जो दवाइयां देते हैं वे खतरनाक भले ही न हों पर किसी काम की भी नहीं होती. डॉ. पांडेय मरीजों को चेताते हैं, "यह जान लेना जरूरी है कि दवा में है क्या."

दिल्ली की श्रीमती एस. रॉय अब [illegible] सलाह की कायल हैं. उनके 13 वर्षीय [illegible] को पिछले नौ साल से दमा है. श्रीमती रॉय ने बताया, "एलोपैथी दवाओं [illegible] असर धीमा था इसलिए हमने एक आयु[illegible] वैदिक दवा 'दमा संजीवनी' का प्रयोग किया जो सिर्फ बंगलूर में ही मिलती है. एक चम्मच दवा ने ही चमत्कार दिखाया और जल्द ही उनका बेटा तकलीफों से मुक्त हो गया. पर 10 महीने बाद [illegible] बेटे के नितंबों पर बैंगनी रंग के दाग दिखे. डॉक्टर ने उस आयुर्वेदिक दवा की जांच कराने का सुझाव दिया. प्रयोगशाला में पाया गया कि उसमें स्टीरॉयड है.

ऐसी स्थिति में आशा की कोई किरण भी कहीं से नहीं दिखाई देती: करीब 30 फीसदी दमाग्रस्त बच्चे इस रोग के संग ही जवान होते हैं. और जब तक वायु प्रदूषण पर कड़ा प्रतिबंध नहीं लगता, वे यह रोग भोगने को अभिशप्त हैं.

—शर्मीला चंद्रा और फिलिप जॉ[illegible]

दमा के दौरे

कई कारण

दमा के दौरे के लक्षण किसी से छिपे नहीं हैं. दौरे के समय श्वास-नलिका की मांसपेशियां, खास तौर से अतिरिक्त श्वसनी सिकुड़ जाती है. इसके कारण वायुवाहक कोष्ठ संकुचित हो जाते हैं और ऑक्सीजन की पर्याप्त मात्रा नहीं पहुंच पाती. नतीजतन, सांस लेने में तकलीफ होती है और लगातार खांसी और घरघराहट भरी सांस चलने लगती है.

वैसे, यह रोग कैसे लगता है इसका अभी ठीक-ठीक पता नहीं चल पाया है. माना जाता है कि दमे के एक नहीं, अनेक आंतरिक कारण हैं. इनमें एक आनुवंशिक कारण भी हो सकता है.

अगर माता-पिता में से किसी एक को दमा हो तो उनके बच्चे को यह बीमारी होने की संभावना उस बच्चे की तुलना में दोगुनी होती है जिसके परिवार में किसी को कभी दमा नहीं हुआ हो. और अगर माता-पिता दोनों को दमे की शिकायत हो तो उनकी संतान को यह बीमारी होने की संभावना चार गुना बढ़ जाती है.

यह भी माना जाता है कि जिन लोगों को दमा विरासत में मिलता है वे अनुवांशिक तौर पर ऐसे असामान्य

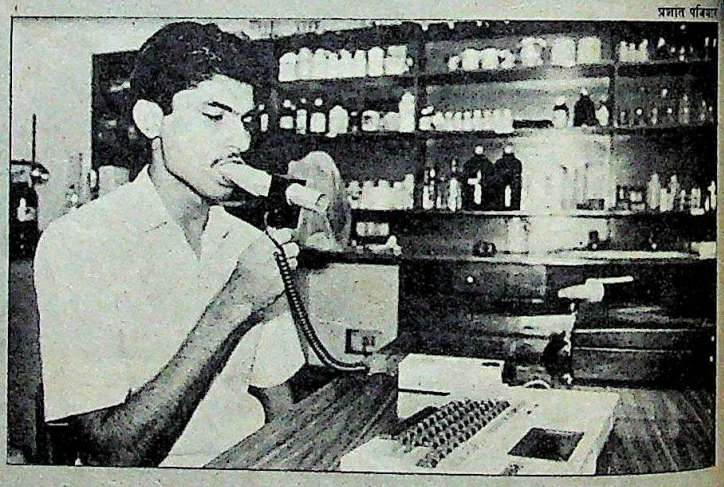

प्रभात पित्रिका

रोगी का परीक्षण

प्रकार के इम्यूनोग्लोबिन पैदा करने के लिए प्रवृत्त होते हैं जो दमे को बढ़ाने में सहायक माने जाते हैं.

लेकिन इसके दौरों के वास्तविक कारण बाहरी हैं. मसलन धूल, धुआं, भावनात्मक उतार-चढ़ाव या हंसी तक भी इसका निमित्त बन सकती है. दमे के कुछ मरीज धूल, पराग, पशुओं के बाल, पक्षियों के पर, कीड़े-मकोड़ों, पुराने कागज पर जमी धूल, कीटनाशक छिड़काव वगैरह से भी प्रभावित होते हैं.

कुछ दूसरे मरीज सल्फाइड या मोनोसोडियम ग्लुटामेट जैसे परिरक्षक रसायनों के प्रति भी संवेदनशील होते हैं. समुद्री भोजन, दूध, नींबू प्रजाति के खट्टे फल, अंडे, कोला, मटर, सेम, सुअर का गोश्त, चॉकलेट, सूखे मेवे, टमाटर और एस्प्रीन जैसी दवाओं से भी दमे का दौरा पड़ सकता है. धूम्रपान भी इसका एक कारण है.

लेकिन कुल मिलाकर आज दमे की शिकायतों, खास तौर से बच्चों को होने वाली, का एक प्रमुख कारण वायु प्रदूषण है. दमे को उभारने वाले तत्वों में सल्फर डाइऑक्साइड, हाइड्रोजन सल्फाइड और नाइट्रोजन डाइऑक्साइड प्रमुख हैं. यही नहीं, प्रदूषित वातावरण में हजारों ऐसे रासायनिक तत्व हैं जो दमे के दौरे का कारण बन सकते हैं.

—शर्मीला चंद्रा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Cash flows

from Canbank Mutual Fund

INTERIM INCOME DISTRIBUTION

CANSTOCK	Rs. 7.50 per Canstock
CANSHARE	10%
CANGROWTH	10%

CANSTAR

Attractive High Income-Cum-Growth Scheme

Earn 50% or more return per annum for a lifetime on initial investment after 10 years.

CANBANK MUTUAL FUND
Orient House, Adi Marzban Path (Mangalore Street), Bombay 400 038
Principal Trustee : CANARA BANK
Always a step ahead

OFFER OPEN

Concept

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

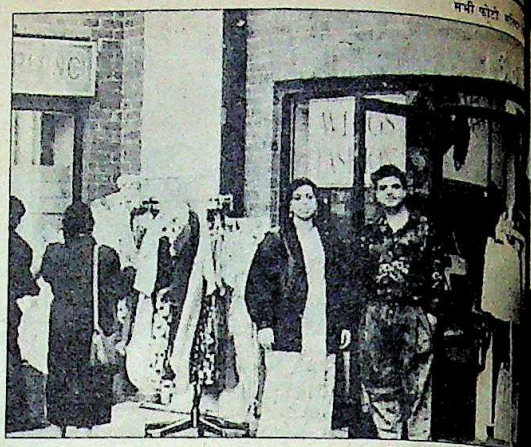

कनाडा

भारतीयों का बाजार

टोरंटो का साउथॉल है जेरार्ड स्ट्रीट

टोरंटो के चहल-पहल वाले जेरार्ड इंडिया बाजार से तंदूरी मुर्ग और करी की उड़ती खुशबू भूख को बढ़ा देती है और लोग यहां उमड़ पड़ते हैं. सप्ताहांत में ओंटारियो के 100,000 भारतीय आप्रवासी झुंडों में यहां आते हैं और भारत से भेजे गए ताजा आम, पापड़, चाट, भेल और करेले के स्वाद लेते हैं.

जेरार्ड स्ट्रीट भारतीय विस्तार का ताजा प्रतीक है और वह लंदन के साउथॉल और न्यूयार्क के जैकसन हाइट्स को तेजी से पीछे छोड़ रहा है.

अभी कुछ साल पहले तक यहां शायद ही कोई रहने के लिए आना चाहता था. वह तो 1970 में जब दक्षिण अफ्रीका, भारत, पूर्वी अफ्रीका, इंग्लैंड और अमेरिका से भारतीय यहां पहुंचने शुरू हुए तो यहां की कायापलट ही हो गई. इंडियन रेकॉर्ड शॉप के मालिक अशोक नवाणी कहते हैं, "जब मैंने यहां व्यवसाय शुरू किया तो यहां अड़ोस-पड़ोस में लोग धीरे-धीरे बस ही रहे थे."

आज इस क्षेत्र को 'लिटिल इंडिया' कहा जाता है. यहां की 150 दुकानें, जिनके मालिक मुख्यतः सिख और गुजराती हैं, हर भारतीय जरूरत पूरी करती हैं. यहां मैकडोनाल्ड और केंटकी फ्राइड चिकन के साइन बोर्ड की जगह कुतुब मीनार और मोती महल रेस्तरांओं के नियोन साइन बोर्ड जगमगाते हैं.

दुकानों के बाहर शो-केस में साड़ी में लिपटी महिला मूर्तियों को देखकर विश्वास ही नहीं होता कि यह टोरंटो है. मिलंस डिपार्टमेंट स्टोर, जो खुद को उत्तरी अमेरिका का सबसे बड़ा डिपार्टमेंट स्टोर होने का दावा करता है, में खरीदारों की भीड़ लगी रहती है. यहां तबला, सुपारी और रेशमी साड़ियों से लेकर सलवार-कमीज सब कुछ मिल सकता है.

यहां पंकज उधास और मल्कियत सिंह के कैसेट बहुत लोकप्रिय हैं. फिल्मी पत्रिकाएं तो पहुंचते ही बिक जाती हैं. पत्रिकाएं खरीदने के लिए यहां नियमित रूप से आने वाले 18 वर्षीय खुर्शीद कहते हैं, "मुझे कपिल देव और क्रिकेट के बारे में पढ़ना अच्छा लगता है."

जेरार्ड स्ट्रीट '220 वोल्ट' वाले इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं का केंद्र भी है. इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं की थोक विक्रेता 'हाउस ऑफ 220' के 20 वर्षीय सेल्समैन बलतेज सिंह का कहना है कि यहां की चीजें पूर्वी यूरोपियों, खासकर रूसियों में बहुत लोकप्रिय हैं. "वे यहीं उपहार खरीदते हैं क्योंकि शहर की दूसरी दुकानों में 110 वोल्ट की ही चीजें मिलती हैं."

इंडियन रेकॉर्ड शॉप में बिजनेस सूट पहने अधिकारियों और किशोर-किशोरियों की भीड़ लगी रहती है. वे यहां संगीत प्रेम के कारण नहीं आते. और न ही दुकान के मालिक अशोक नवाणी से जमीन-जायदाद का सौदा करने आते हैं. इस इलाके में नवाणी के 4 करोड़ कनाडियन डॉलर (लगभग 60 करोड़ रु.) मूल्य के 22 स्टोर हैं. अपनी ख्याति के प्रति

मिलंस स्टोर; नरेंद्र और चित्रा (नीचे) अपनी दुकान के आगे खड़े

उदासीनता दिखाते हुए वे कहते हैं, "मैं सिर्फ इतना ही जानता हूं कि व्यवसाय खूब फल-फूल रहा है."

इस इलाके में सबसे नए आए लोगों में 36 वर्षीय नरेंद्र अरोड़ा और उनकी वर्षीया पत्नी चित्रा भी हैं. इन्होंने हाल ही एक फैशन स्टोर खोला है. अरोड़ा दंपती कहते हैं, "हम यहां बहुत खुश हैं. यहां का माहौल बहुत अच्छा है. नशीली दवाएं और वेश्यावृत्ति जैसी बुराइयां नहीं हैं."

यहां पुलिसवाले भी कम ही दिखते हैं. पूरा इलाका शांत और व्यवस्थित है. लक्ष्मी ज्वेलर्स इनकार्पोरेशन के प्रमुख लोढ़िया कहते हैं, "यहां हमारे सामने कोई भारी समस्या नहीं है, मैं यहां चार गुना अधिक किराया देता हूं फिर भी ठीक है."

जेरार्ड स्ट्रीट के उद्यमियों के लिए सचमुच स्वर्ग से बढ़कर है.

—सतिंदर बिंद्रा, टोरंटो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मारुति
MARUTI

और अब चर्चा का एक नया विषय

▶ शानदार एयरकंडीशंड मारुति, अपने अति विशेष सहायक-सामान सहित, 16 अगस्त 1990 से बुक की जा सकेगी–केवल विदेशी मुद्रा में भुगतान द्वारा।

▶ अति विशेष अन्तर्राष्ट्रीय श्रेणी की ऐसी दस हज़ार कारों की डिलिवरी अक्तूबर 1990 के मध्य से लेकर अप्रैल 1991 तक की अवधि में की जाएगी।

▶ अतः, यदि आप विदेशों में बसे अपने रिश्तेदारों अथवा मित्रों से विदेशी मुद्रा का प्रबन्ध कर सकते हैं तो उनसे तुरन्त सम्पर्क करें।

▶ और इस सुप्रसिद्ध, बहुचर्चित कार का डॉलर मॉडल प्राप्त कीजिए।

1. बुकिंग राशि 3000 अमरीकी डॉलर है, जिसका भुगतान आप मारुति उद्योग लि० (न्यूयार्क में देय) के पक्ष में बैंक ड्राफ़्ट द्वारा,

अथवा

किसी नामांकित बैंक द्वारा ग्राहक के नाम दी गई एफ़.सी.एन.आर. डिपाज़िट द्वारा कर सकते हैं।

2. आप चाहें तो कार की पूरी कीमत–जो इस समय 20000 अमरीकी डॉलर है–एक साथ चुका सकते हैं।

3. प्राथमिकता सूची तैयार करने के लिए मारुति द्वारा समस्त भारत से प्राप्त बुकिंग फ़ार्म कम्प्यूटर में डाले जाएंगे, और उन पर एक 'ड्रा' आयोजित किया जाएगा।

4. बुकिंग की अंतिम तिथि 20 सितम्बर 1990 है।

▶ अधिक जानकारी के लिए अपने निकटतम मारुति डीलर से सम्पर्क करें। बुकिंग फ़ार्म (जिसकी कीमत केवल 10/- रु. है) डीलरों से अगस्त 1990 के दूसरे सप्ताह से मिलने आरम्भ हो जाएंगे।

MARUTI 1.0 GLX

हर जुबां पर है इसका नाम

HTA 6852 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

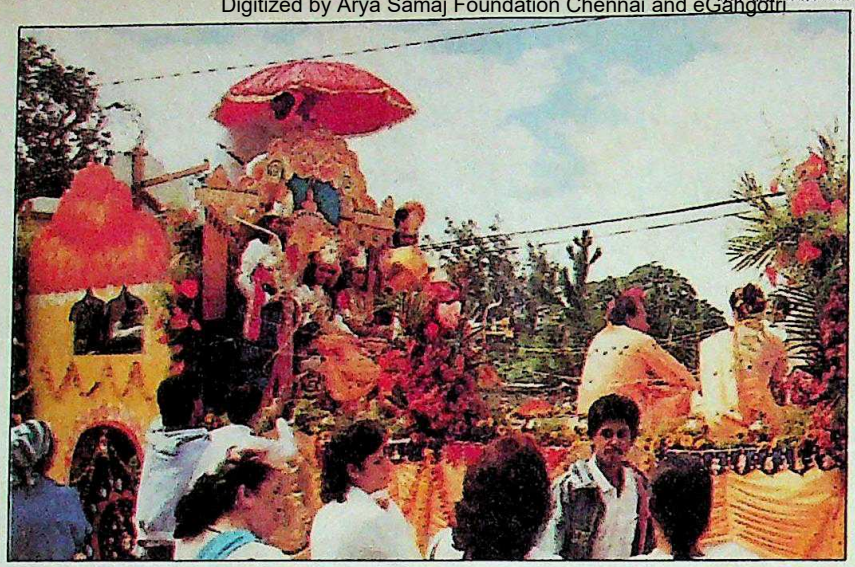

मॉरीशस

राम नाम की लूट है

भारतीय संस्कृति को पुनर्जीवित करने की कोशिशें

मार्क ट्वेन जब मॉरीशस से गुजरे तो बोले कि भगवान ने स्वर्ग बनाने से पहले जरूर मॉरीशस को देखा होगा. लेकिन मार्क ट्वेन यह नहीं देख पाए कि इस खूबसूरत प्रायद्वीप के अपने आदि पुरुष और अपनी आदि नारी भी हैं—राम और सीता. और शेष उनके परिवारजन.

मॉरीशस पूरी तरह रामायणमय हो चुका है और अब तो रामायण प्रेम चरम पर है. रामायण पर 5 अगस्त से शुरू हुए छठे अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में 250 प्रतिनिधि शामिल हुए जिनमें ज्यादातर भारत से आए साधुओं के झुंड, विद्वान और इस विषय से जुड़े लोग थे. मॉरीशस सरकार ने तो इस सम्मेलन को राष्ट्रीय पर्व का रूप दे दिया. भव्य महात्मा गांधी संस्थान में हुए उद्घाटन समारोह में मॉरीशस के गवर्नर जनरल, प्रधानमंत्री अनिरुद्ध जगन्नाथ और उनके कैबिनेट मंत्री तो आए ही, इस अवसर पर जुलूसों, पूजा समारोहों, मानस पाठ, चित्रकला प्रतियोगिता, प्रदर्शनी और नाटकों आदि का भी आयोजन किया गया. इनमें मॉरीशस के प्रसिद्ध साहित्यकार अभिमन्यु अनत का लिखा नाटक 'भरत सम भाई' भी था.

यह रामायण यात्रा हवाई अड्डे से ही शुरू हो गई. टू-इन-वन (एक यात्री तो वाशिंग मशीन के साथ था) बगल में दबाए यात्री सीमा शुल्क काउंटर पर लाइन लगाए खड़े हैं. वैसे तो लाइन कछुआ चाल से आगे सरक रही है लेकिन शब्द 'रामायण' जादू-सा असर डालता है और नीली वर्दीधारी सीमा शुल्क अधिकारी एकदम नरम पड़ जाता है, "अरे प्रतिनिधि महोदय राम आपका भला करें." और वह उन्हें जाने देता है.

यहां धर्म और राजनीति में कोई टकराव नहीं है. मॉरीशस की स्पेशल मोबाइल फोर्स (एक अर्द्ध-सैनिक संगठन) के जवान अपनी बंदूकें उतारकर प्रतिनिधियों को भोजन परोसने में व्यस्त थे. इनमें एक ने तो हनुमान जैसा ही रूप धरा हुआ था.

ये सारी कोशिशें भारतीय संस्कृ पुनर्जीवित करने की हैं. पिछले दिस मॉरीशस ने एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया था. अं अंतरराष्ट्रीय तेलुगु सम्मेलन होगा मराठी और उर्दू सम्मेलन होंगे.

सरकार तो रामायण से इतनी है कि भवनों और संस्थाओं का नाम रामायण पर किया जा रहा है. अभ के निर्वाचन क्षेत्र में एक सामुदाय हरमिटेज का नाम उद्घाटन समा दिन बदलकर 'पंचवटी' कर दिया

मॉरीशस के गांवों (यहां की 52 आबादी मूलतः हिंदू है) में जाक लगता है मानो समय बहुत पीछे सदी में—सरक गया हो. जब एक अनुबंध के तहत इन लोगों को गन्ने

उद्घाटन करते अनिरुद्ध जगन्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

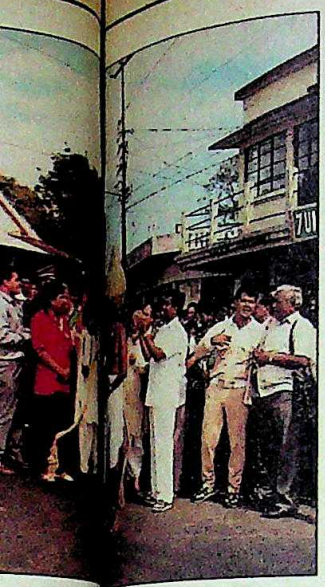

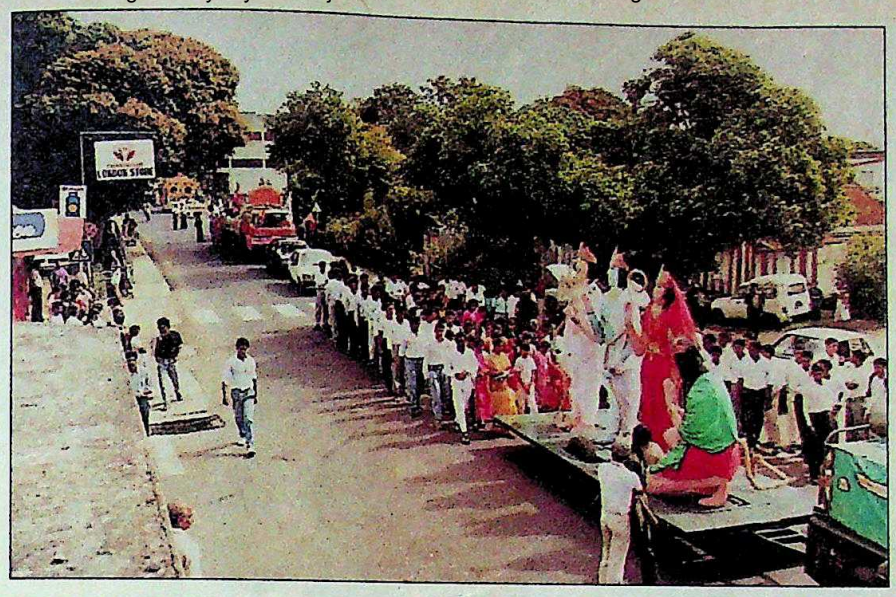

(बाएं से) रामायण के पात्रों की शोभायात्रा; भजन गाते श्रद्धालु; और साथ चलती झांकियां

धरा हुआ था
भारतीय संस्
हैं. पिछले दि
अंतरराष्ट्रीय
किया था. इ
सम्मेलन होगा
लन होंगे.
ण से इतनी
स्थाओं का
ा रहा है. अ
एक सामुदा
उद्घाटन समा
ी' कर दिया
(यहां की 52
है) में जा
य बहुत पीछे
हो. जब एक
ोगों को गने

करने के लिए लाया गया था, ये रामचरित मानस' अपने साथ लाए के गीत और इनकी जीवन शैली नई युग की है. केसरिया सिंदूर, पल्ले की साड़ी जो पूर्वी उत्तर दूर गावों से भी लुप्त हो रही है, रूप में देखी जा सकती है. अचंभे तो यह है कि इनमें से किसी ने किसी भारतीय को नहीं देखा है. रामचरित मानस इन्हें मुंहजबानी विदेशमंत्री ए. परसुरामन कहते हैं, ने दुख की घड़ियों में हमारे को संबल प्रदान किया."

आज भी ज्यादा नहीं बदले हैं. वतन और घर से दूर गन्ने के परिश्रम करते मजदूरों के लिए संबल थी तो आज भी कई व्याधियों की रामबाण औषधि

है. वैसे, मरहम की जगह गोंद अधिक उपयुक्त शब्द होगा. यह धर्म ही है जो मॉरीशस के हिंदुओं को जोड़े हुए है. वह भी ऐसे समय जब प्रधानमंत्री विपक्ष के नेता पॉल बेरेंजर (जो फ्रांसीसी मूल के हैं) से अगले चुनाव इकट्ठे लड़ने का लिखित समझौता कर चुके हैं. हिंदू समुदाय में कई गुटों का मानना है कि इस तरह तो मॉरीशस की राजनीति में उनका महत्व घट जाएगा क्योंकि बेरेंजर को कई दूसरे समुदायों का, जिनमें मुस्लिम और क्रिओल भी शामिल हैं, समर्थन हासिल है.

सुदूर फीजी में हुई राजनैतिक उथल-पुथल का असर यहां भी हुआ है और हिंदू समुदाय के कई राजनैतिक गुट हिंदुओं का आधार और मजबूत करना चाहते हैं यानी जो जितने ऊंचे सुर में रामायण का पाठ करेगा उसका उतना ही दबदबा बढ़ेगा.

भारत सरकार के लिए भी यह महाकाव्य कारगर कूटनीतिक अस्त्र है. एक अधिकारी कहते हैं, "रामायण मॉरीशस के लोगों को भारतीय संस्कृति का भरपूर ज्ञान देती रहेगी." 10 करोड़ रु. की लागत वाला इंदिरा गांधी सांस्कृतिक केंद्र, जो अफ्रीका के लिए महत्वपूर्ण साबित हो सकता है, अगले वर्ष तैयार हो जाएगा.

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद ने भी इस रामायण सम्मेलन पर पैसे खर्च करने में कंजूसी नहीं बरती. रंगश्री लिटल बैले ग्रुप की मानव कठपुतलियों का प्रदर्शन भी बहुत शानदार रहा. रामायण पर भारतीय हस्तशिल्प की प्रदर्शनी में कुछ उत्कृष्ट कलाकृतियां देखने में आईं.

रामायण की लोकप्रियता भुनाने में कुछ और लोग भी शामिल हो गए हैं. विश्व हिंदू परिषद के सदस्यों ने तो अयोध्या के चित्र और इस आशय के पर्चे बांटे कि भारत और हिंदू धर्म खतरे में हैं. अयोध्या में राम मंदिर बनाए जाने का मसला यहां जोर-शोर से उठाया गया.

रामायण के सहारे राजनीति करने की चाल को छोड़ दें तो भी पिछले महीने दक्षिणी फ्रांस का शहर एवीग्नो तीन हफ्ते तक छोटी-मोटी अयोध्या ही बना रहा. एशियाई देशों से आए आठ ग्रुपों ने, जिनमें मद्रास से आया 'कलाक्षेत्र' और कर्नाटक का 'यक्षगण' भी शामिल था, प्रदर्शन कर रामायण की धूम मचा दी. इसके बाद ये ग्रुप इटली और स्पेन के लिए रवाना हो गए. रामायण पर अगला सम्मेलन इन सर्दियों में सूरीनाम में होगा. दूसरे शब्दों में, भारत का यह पवित्र महाकाव्य विश्व भ्रमण पर रहेगा. —**मधु जैन,पोर्ट लुई में**

अनिरुद्ध जगन्नाथ

घाट का ज्योतिर्लिंग मंदिर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधुरी दीक्षित

ताजगी का सुहाना झोंका

हिंदी फिल्मों में यह दृश्य वर्षों से लगभग बार-बार आता रहा है. प्रेम में पागल हीरोइन अपनी सहेली को हीरो के पास यह कहने के लिए भेजती है कि वह उससे मिलना चाहती है. हीरो उस सहेली को भगा देता है. आज की फिल्म में इसके बाद का दृश्य बदल गया है. हीरोइन दुखभरा गाना गाने की जगह हिरणी जैसी कुलांचे भरती हुई अपने राजा के पास पहुंच जाती है और उसके होंठों पर चुंबन जड़कर उसे हमेशा के लिए अपना बना लेती है. दर्शकों में से एक, 19 वर्षीय राजीव गोयल आहें भरते हुए कहता है, "काश! मेरे साथ भी ऐसा होता."

गोयल की ही तरह आहें भरने वाले भारतीयों की संख्या लाखों में है. 23 वर्षीया माधुरी दीक्षित ने पूरे देश के सिनेमा दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर लिया है.

मधुबाला जैसी सेक्स अपील, जीनत जैसा शहरी रूप रंग और नरगिस जैसे प्रभावी व्यक्तित्व वाली माधुरी ने पिछले साल 'तेजाब' में अपने साथ लोगों को एक दो तीन...के धुन पर जो नचाया उसके बाद से पीछे मुड़कर नहीं देखा. उसकी कई असफलताओं के बाद उसे अपनी फिल्म में दोबारा अवसर देने वाले निर्देशक सुभाष घई कहते हैं, "मैंने उसे पहली बार देखा था तो उसमें मुझे उन्मुक्तता, लगन और स्वाभाविक अभिनय प्रतिभा दिखी थी."

भारतीय सिनेमा में ऐसी ताजगी एक अरसे से नहीं देखी गई थी. एन. चंद्रा का, जिन्होंने माधुरी को बेहद हिट फिल्म 'तेजाब' में निर्देशित किया, मानना है कि भारतीय सिनेमा में लंबे अरसे बाद सौंदर्य, समर्पण और प्रतिभा का ऐसा मेल देखा जा रहा है.

पिछले दो वर्षों में उसकी चार फिल्में — 'तेजाब', 'त्रिदेव', 'रामलखन' और 'दिल'—सबसे ज्यादा सफल रहीं. और इन चारों फिल्मों की सफलता के पीछे सिर्फ वही रही. 'दिल' में उसे निर्देशित करने वाले इंद्र कुमार कहते हैं, "[illegible] होश उड़ा देती है लाजवाब अभिनेत्री है

जीव विज्ञान की [illegible] अचानक ही फिल्मी [illegible] पहुंची इस बाला [illegible] सनसनी फैलाई है, [illegible] खुद चकित है. वह [illegible] " पिछले दो साल [illegible] के दिन रहे. लेकिन [illegible] अपने को एक विशाल [illegible] पर खड़ी पा रही हूं. [illegible] न तो शुरुआत [illegible]

मधुबाला जैसी सेक्स अपील और जीनत जैसे शहरी रूप-रंग वाली माधुरी ने देश भर में लाखों को दीवाना बना रखा है

अनिल कपूर के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न ही अंत. अभिनय
अथाह महासागर के
है."
उसकी सफलता से फिल्म
की तो चांदी हो गई
उसके निर्देशक उसे
एक हीरोइन मानने के
तैयार नहीं हैं.
लेकिन प्रसिद्धि और
को क्षणिक मानने
इस उद्योग के फिल्म
इससे सहमत नहीं
उसका मानना है कि
शिखर पर पहुंच
है क्योंकि उसकी
पूरे देश से भारी
खींचती हैं.
उसका चेहरा इतना
है कि उसके मन के
चेहरे पर बरबस आ ही
है. माधुरी को
को अपनी तरफ
के लिए मंदाकिनी
झरने के नीचे
की भी जरूरत नहीं
वह मुस्कान और
नजर से जो जादू
है, उसके लिए
हीरोइनें देह प्रदर्शन
सहारा लेती हैं. सबसे
बात तो यह है कि वह
गलतियों से सबक
है. वह न तो अपने सह
से ईर्ष्या करती है
ही सेट पर कोई नखरा करती है.
जो ठान लेती है, उसे करके ही
एक रूढ़िवादी मराठी परिवार की
वर्षीया लड़की से यह उम्मीद की
थी कि वह माइक्रोबायोलॉजी पढ़ने
पारले कॉलेज में दाखिला लेगी और
आनुवंशिक विज्ञान में शोध करेगी.
दिन वह स्कूल से लौट रही थी कि
प्रोडक्शंस के लिए काम करने वाले
गोविंद मुनीश से टकरा गई.
मुनीश उसके परिवार के
मित्र थे. उन्होंने उससे कहा
कि राजश्री प्रोडक्शंस को
अपनी नई फिल्म 'अबोध' के
लिए एक नए चेहरे की
है. वह चाहे तो उसमें काम कर
है. माधुरी बताती है, "मैंने इसे
से नहीं लिया क्योंकि मुझे कतई
नहीं थी कि मैं चुन ली जाऊंगी."
जब एक दिन अचानक बुलावा आ
पूरा परिवार असमंजस में पड़ गया.

नामम भोजानी

शुरू में माधुरी के भाग्य ने उसका साथ नहीं दिया. उसकी शुरुआती फिल्में फ्लॉप रहीं लेकिन वह अपने काम में जुटी रही. तभी सुभाष घई ने उसे कश्मीर में 'आवारा बाप' की शूटिंग पर देखा और 'कर्मा' में छोटी-सी भूमिका दे दी. माधुरी मानती भी है, "मेरे भाग्य ने इसी फिल्म से पलटा खाया."

माधुरी के आत्मनियंत्रण, उसकी कर्तव्यपरायणता, और विनोदशीलता ने ही उसे फिल्म उद्योग में टिकाए रखा.

'तेजाब', 'राम लखन' और 'प्रेम प्रतिज्ञा' के सफल होने के बाद से माधुरी आगे ही बढ़ती गई. जब उसने 'एक दो तीन....' गाते हुए ठुमका लगाया तो पूरा देश उसके साथ गाने लगा.

इस बात से कोई इनकार नहीं करता कि उसे सफलता की इस ऊंचाई तक उसके इस मादक नृत्य ने ही पहुंचाया. 'परिंदा' और अब 'संगीत' में उसके साथ काम करने वाले नृत्य निर्देशक भूषण कहते हैं, "उसे संगीत का ज्ञान है और वह तुरंत लय पकड़ लेती है." नृत्य में माधुरी का पारंगत होना कोई अचरज की बात नहीं क्योंकि उसने आठ वर्षों तक वसंतराव घटगे और पंडित हजारीलाल जयपुरवाले से कथक सीखा. उसे नृत्य के लिए राष्ट्रीय प्रतिभा छात्रवृत्ति भी मिली थी.

लेकिन हिंदी फिल्मों में असली परीक्षा तो अपने को बनाए रखने की होती है. माधुरी के आलोचकों का दावा है कि उसकी सफलता अनिल कपूर की सफलता से जुड़ी हुई है. माधुरी कहती है, "हमें एक-दूसरे के साथ काम करने में बहुत आसानी होती है." अनिल कपूर इससे सहमत हैं. यश चोपड़ा की 'लमहे' के लिए इंग्लैंड में शूटिंग कर रहे अनिल ने 'इंडिया टुडे' को बताया, "वह बहुत अच्छी सह कलाकार है. उसने अपनी सफलता को जज्ब कर लिया है जो उसे एक दिन महान बना देगी. वह बेहद नेक है."

उसकी भूमिकाएं भी अब पहले की अपेक्षा अधिक जोरदार और अलग किस्म

निर्देशकों को लगता है कि अलमस्त थिरकन के कारण ही उसे ऊंचाइयों तक पहुंचने का मौका मिला

आमिर खां के संग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की होती जा रही हैं. वह कहती है, "मैं कुछ अप्रत्याशित करके दिखाना चाहती हूं, जैसा कि मैंने 'परिंदा' में किया. इस फिल्म को मैंने बुर्का पहनकर सिनेमा हॉल में देखा. दर्शक मेरे नृत्य की बेचैनी से प्रतीक्षा कर रहे थे. लेकिन फिल्म में मेरा कोई नृत्य था ही नहीं पर, दर्शकों ने इसका कतई बुरा नहीं माना."

'संगीत' में उसने बेटी और अंधी मां की दोहरी भूमिका निभाई है. 'जमाईराज' में उसने ऐसी भारतीय पत्नी की भूमिका निभाई है जो वर्षों तक प्रभुत्वशाली सास के नियंत्रण में रहने के बाद पूर्ण रूप से स्वतंत्र हो जाती है. 'जिंदगी एक जुआ' में उसकी भूमिका चुनौतीपूर्ण होगी. इसमें वह नशीले पदार्थ बेचने वाले अपने पति (अनिल कपूर) को खुद नशीले पदार्थ खाकर दंडित करती है. उसके काम को देखने वालों का कहना है कि यह उसकी अविस्मरणीय भूमिका होगी. वह कहती है, "अब मैं ज्यादातर अपनी पसंद की भूमिकाएं ही करती हूं."

वह अफसोस जाहिर करती है कि 80 फीसदी पटकथाएं हीरो प्रधान होती हैं. वह शर्मिला, राखी और नरगिस की प्रशंसक है और चाहती है कि वह भी उन्हीं की तरह अच्छी अभिनेत्री के रूप में याद की जाए. वह कहती है, "मैं समांतर सिनेमा में अच्छे निर्देशकों के साथ काम करना चाहती हूं."

अब सवाल यह है कि माधुरी का जादू कब तक कायम रहेगा? क्या वह आज की सेक्सी हीरोइनों की तरह घर बसाकर फिल्मों से संन्यास ले लेगी? माधुरी कहती है, "अभी शादी के बारे में मैंने कुछ नहीं सोचा है."

यह सही भी है क्योंकि उसके लाखों प्रशंसक यही

उ से बड़े हीरो के साथ और बड़े बैनर की फिल्मों में काम करने का मौका मिला पर वह स्टार नहीं कलाकार बनना चाहती है

चाहते हैं. माधुरी में एक ही चीज की कमी और वह चीज है कि की स्वाभाविक प्रति नंबर वन मानी जाने श्रीदेवी में यह प्रतिभा कूटकर भरी हुई है. इस कमी के बावजूद माधुरी के रूप में सिनेमा को अरसे बाद वेहद आकर्षक अभि मिली है.

—सलिल त्रिपाठी, मुंबई

गोविंदा के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहजादा मुकर्रम जाह

रूठ गई तकदीर

निजाम के वारिस भारी आर्थिक मुसीबतों में फंसे

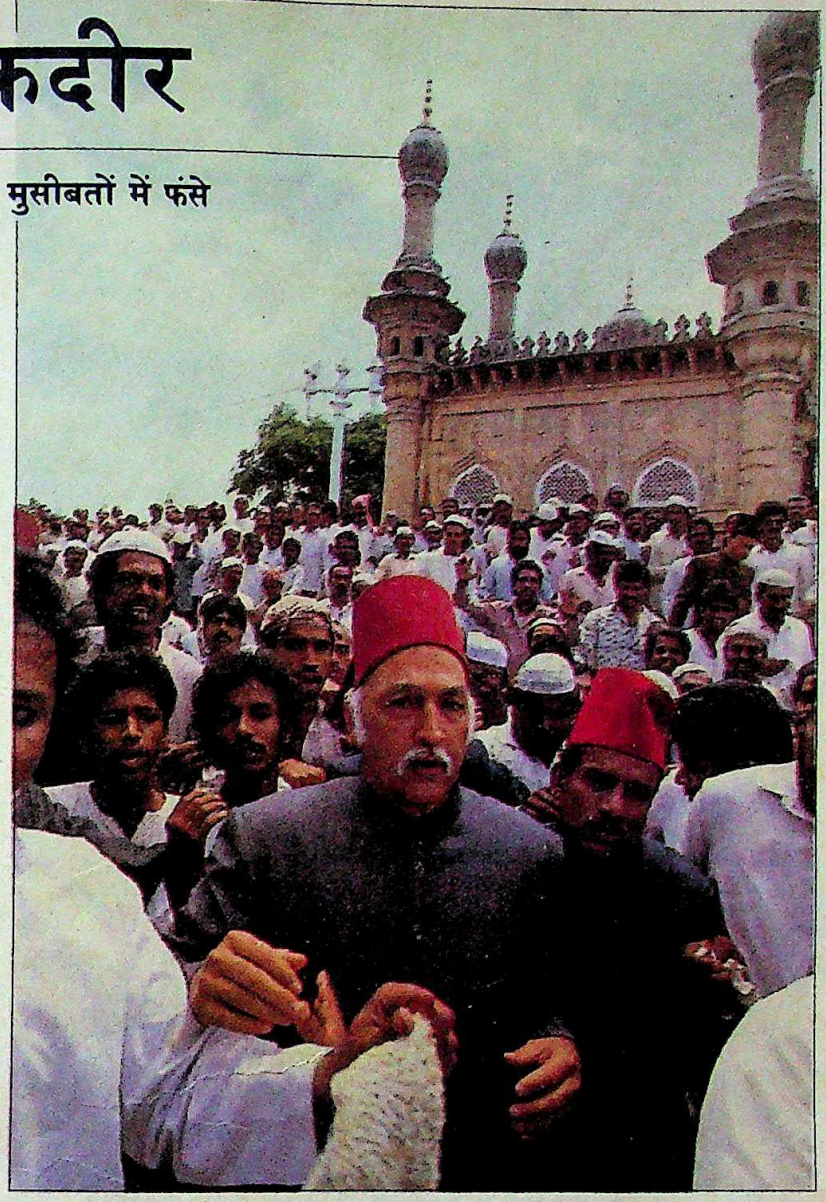

तकदीर तो चंचल प्रेमिका की तरह
है. हैदराबाद के निजामों पर जब
इसकी नजरे-इनायत रही,उनकी
दत का कोई अंत नहीं था. अब यह रूठी
ऐसी कि उन्हें दिन में तारे दिखा दिए.
तकदीर के इस बदले मूड का अनुभव
वर्षीय शहजादा मुकर्रम जाह से ज्यादा
हो सकता है, जो अपने दादा और
खिरी निजाम उस्मान अली खां की
लत के सबसे बड़े वारिस हैं. लेकिन अब
भारी आर्थिक मुसीबतों में फंस गए हैं.
पर भारत, स्विट्जरलैंड और
ट्रेलिया जहां वे पिछले 18 वर्षों से बसे
हैं, बढ़ते जा रहे कर्ज को चुकता करने
लिए भारी दबाव पड़ रहा है.

जाह पर एक स्विस बैंक का 10.06
ोड़ रु. बकाया है और उसे चुकता करने
हैदराबाद की अदालत ने उनकी
ट्जरलैंड और भारत स्थित जायदाद
ब्जा कर रखी है. पिछले महीने जाह छह
बाद हैदराबाद पहुंचे, इस उम्मीद में
शायद यहां उनके आर्थिक संकट का
हल निकल आए. लेकिन यहां आकर
झमेले में फंस गए. सीबीआई और
राबाद पुलिस को उनसे पूछताछ करनी
जाह ने मुगलकाल के सोने के दो सिक्के
ल की कोशिश की थी. ये सिक्के दुनिया
सबसे बड़े सिक्के माने जाते हैं. यदि ये
के 1947 के बाद भारत से बाहर ले
गए हैं तो इन्हें राष्ट्रीय
मानकर सरकार को
ना पड़ेगा.
यही मानो काफी

हैं. माधुरी में
चीज की कमी
ह चीज है कि
ाभाविक प्रति
न मानी जाती
में यह प्रतिभा
भरी हुई है.
मी के बावजूद
के रूप में
को अरसे बाद
आकर्षक अभि
.
ल त्रिपाठी, नई

हैदराबाद में जाह; और मुगलकालीन सिक्के

नहीं था. उनके अपने वकील आर. बालासुब्रमण्यम ने हैदराबाद की पुलिस को एक लिखित शिकायत भेजी है कि किंग कोठी का नजरी बाग हैदराबाद के एक व्यापारी मोहन रेड्डी को 65 लाख रु. में बेचने का सौदा तय होने के बाद रुपए लेकर जाह बाग बेचने से मुकर गए. यही नहीं, जाह ने बालासुब्रमण्यम को उनकी फीस और बाकी खर्च के पैसे भी नहीं दिए. इस वकील ने उन पर आस्ट्रेलिया में मुकदमा दायर किया है.

मोटे अनुमान से भारत में ही जाह की संपत्ति 50 करोड़ रु. आंकी गई है. लेकिन कुप्रबंध और गलत सलाह के कारण वे कर्ज और समस्याओं के मकड़जाल में फंस गए हैं. उनके एक पूर्व सचिव शिकायत करते हैं, "उनके चाटुकारों ने उन्हें इस हालत में ला खड़ा किया है."

तहकीकात से पता चलता है कि जाह के स्टाफ ने उनकी साख को नाजायज तरीके से भुनाया और उनकी संपत्ति को फिजूल के धंधों में फंसा दिया. दिसंबर 1981 में उनके स्टाफ ने चिरान पैलेस के 250 एकड़ भूखंड को एक सहकारी आवास समिति को बेचने के समझौते पर दस्तखत किए. शहरी भूमि परिसीमन नियमों के अनुसार जाह जितनी भूमि रख सकते थे, यह उससे ज्यादा थी. समिति इस बात पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

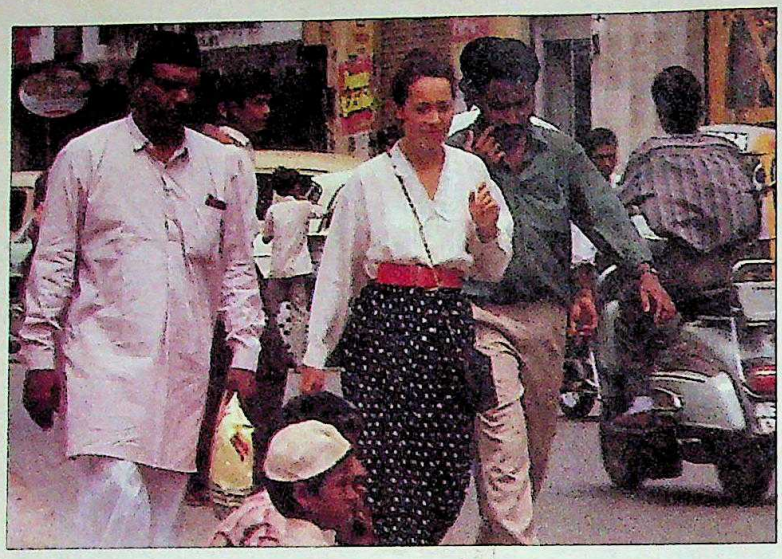

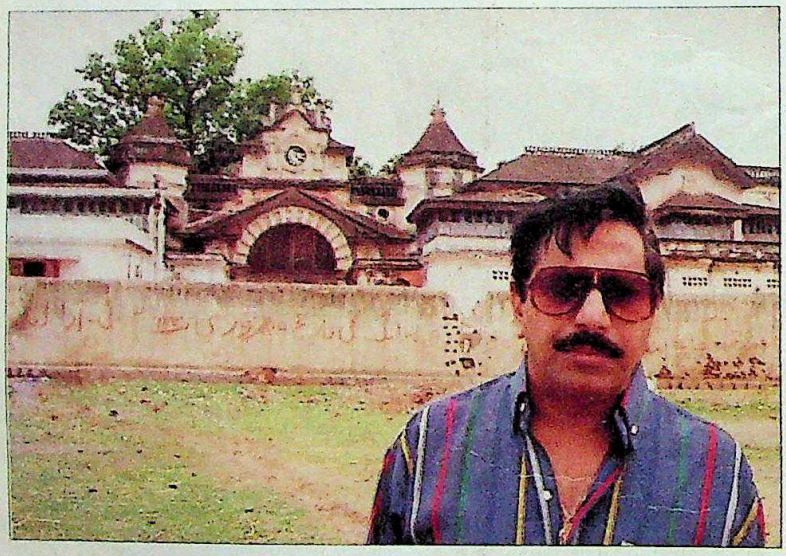

राजी हो गई कि सरकार इस जमीन का जो मुआवजा जाह को देने के लिए कहेगी वह उसे मान्य होगा. हैरत है कि सरकार ने इस बारे में अभी कोई फैसला नहीं किया है.

तब जाह के वकीलों ने महाबलेश्वर (महाराष्ट्र) में मैल्कॉम पर्थ में उनकी खूबसूरत 15 एकड़ वनस्थली को आगे पट्टे पर देने का फैसला किया. यह जमीन महाराष्ट्र सरकार ने पहले ही 1953 से सुरेश करिश्मा ठक्कर ऐंड कंपनी को 70,000 रु. हर महीने की दर से पट्टे पर दी हुई थी. इससे उन्होंने तीन लाख रु. कमाए. अगला निशाना था हैदराबाद के बीचोबीच 6,335 वर्ग गज में बना परेड विला. अप्रैल 1988 में उन्होंने डेरा लीजिंग ऐंड कंस्ट्रक्शन कंपनी से एक शॉपिंग परिसर का निर्माण करने और बदले में जाह को 9,000 वर्ग फुट बिक्री योग्य भूखंड देने के लिए करार किया.

इसके तीन महीने बाद जाह के स्टाफ ने बंगलूर खोडे समूह के के.एल. स्वामी से ऊटी में छह एकड़ जमीन को होटल में तब्दील करने के लिए समझौता किया. इस जमीन पर कुछ छोटी इमारतें बनी हुई थीं. योजना यह थी कि इससे जाह को हर साल 1.80 लाख रु. का मुनाफा होगा. अब दो वर्ष बाद हालत यह है कि जमीन फिल्म की शूटिंग के लिए किराए पर देकर जो आमदनी होती है वही मुनाफा है. कुछ प्रबंधकों की लापरवाही और कुछ की बेईमानी की वजह से जाह को औरंगाबाद की कुछ संपत्ति से भी वंचित रहना पड़ा.

भारत में संपत्ति के इस कुप्रबंधन की वजह से ही जाह को 1987 में जेनेवा में मुगलकाल की दो दुर्लभ मुहरों की नीलामी की कोशिश करने को विवश होना पड़ा. ये मुहरें जेनेवा के एक बैंक लॉकर से लाई गई थीं. यह लॉकर जाह का बताया जाता है. लेकिन नीलामी की

हैदराबाद में खरीदारी करती औ
और नजरी बाग के बाहर मोहन

न्यूनतम कीमत 14 करोड़ डॉलर की
न लगने के कारण इनकी नीलामी नहीं
सकी. लेकिन इनकी बदौलत जाह
9.82 करोड़ रु. का कर्ज मिल गया जो
समेत 10.06 करोड़ रु. बैठता था
मार्च '89 तक यह रकम उन्हें चुकानी
वे तय समय पर जब कर्ज चुकता नहीं
पाए तो कोर्ट ने भारत और स्विट्जर
में उनकी संपत्ति जाम कर दी.

आस्ट्रेलिया में भी जाह भारी आ
संकट से घिरे हैं. उनकी 260 टन
ऊर्जा- चालित नौका 'कलबारी' को
जब्त कर लिया गया है. उन पर 20
डॉलर का कर्ज है. जाह सोने, पन्ने
हीरे मढा एक हार भी बेचना चाह
जिसकी कीमत 12.50 लाख डॉलर
लेकिन उन्हें खरीदार नहीं मिल
उनका पर्थ मैंशन और हैवलॉक हाउ
30 लाख डॉलर में बिकाऊ है.

विडबना तो यह है कि स्थूलकाय
एकांतप्रिय जाह 1972 में आराम
सुकून की जिंदगी बिताने आस्ट्रेलिया
थे. वहां उनका आलीशान हैवलॉक
है और मचिंसन नदी के किनारे 20
हेक्टेयर में फैला भेड़ फार्म भी
आर्थिक झमेलों की वजह से ही
महिलाओं से संबंधों के कारण भी
में आ रहे हैं. उन्होंने अपनी पहली
शहजादी एसरा को तलाक दे दिया.
पत्नी हेलेन सीमोन एड्स की
होकर चल बसीं. उनका ताजा प्रेम
दो बार टर्की सुंदरी रह चुकी 35
मनोल्या ओनुर के साथ चल
सीमोन की मृत्यु से अटकलें जोरों
कि जाह भी एड्स से पीडित हैं.
मृदुभाषी और शराब को हाथ न
वाले जाह बार-बार रक्त परीक्षण
पर मजबूर हो गए. उनके इतने
हुए कि डॉक्टर मजाक में कहने लगे
यदि वे एड्स से न मरे तो खून की
जरूर मर जाएंगे.

जाह के शुभचिंतकों का कहना
यदि वे मुसीबतों के मकड़जाल
आना चाहते हैं तो एक तो
सलाहकार चुनें. दूसरे, दो-एक
संपत्ति बेचकर कर्ज चुकता करें
अलावा उन्हें अपने महलों को
दर्शन के लिए खोल देना चाहिए.
इतिहास उन्हें ऐसे व्यक्ति के रूप
करेगा जिसने दुनिया के सबसे
में से एक को लुटा दिया.

—**अमरनाथ के.मेनन**, मद्रास और हैद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माईक्रो ओवन की अपेक्षा 53% अधिक जल्दी पकाता है

यूनाइटेड®

प्रेशर कुकर व प्रेशर पॅन

उत्तमता में सब से आगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरिराज किशोर

आतंक

आतंकवाद के अभूतपूर्व अध्याय को जीते हुए भारतीय समाज, खासकर आतंकवादी हिंसा से सीधे-सीधे प्रभावित वर्गों का दर्द अब रिस-रिसकर साहित्य को भी सराबोर कर रहा है. हिंदी के चर्चित कथाकार गिरिराज किशोर की प्रस्तुत कहानी इसी दर्द की एक परत को उघाड़ने का सार्थक प्रयास है.

बस्ती में औतार को आए कुछ ही दिन हुए थे. यह बस्ती भद्र लोगों की है जिन्हें अंग्रेजी में 'इलीट' कहते हैं. उम्र होगी कोई आठ-दस साल. वैसे कम भी हो सकती है. काठी से उतना ही लगता था. पंजाब का पानी था. उसमें कुछ विचित्रताएं भी थीं जिन्होंने लोगों का ध्यान आकर्षित किया था. वैसे भी इस तरह का समाज बहुत ताकू होता है. जब से आया था घर के सामने वाले पार्क के बड़े बरगद के नीचे बैठा रहता था. कभी-कभी नजर उठती थी तो सड़क पर से गुजरने वाली बस, मोटर या राहगीर नजर आते थे. उस बरगद के साथ वह काफी हिल-मिल गया था. बरगद की जफ्फी भर लेता था. उसे हिलाता था. ऐसे उलझता था जैसे गिराकर उस पर चढ़ बैठेगा. फिर धीरे-धीरे शांत हो जाता था. पता नहीं उसके हमउम्र बच्चे उसे क्यों नहीं चिढ़ाते थे. या तो वे डरपोक थे या आदत ही ऐसी पड़ गई थी कि हमें किसी से क्या लेना-देना. उसके बारे में एक बात और फैली हुई थी कि वह गांव से किसी का खून करके यहां भाग आया है. लोगों का ध्यान तत्काल आतंकवाद की तरफ चला जाता था. कुछेक लोगों ने प्रकारान्तर से उसके फूफा से कहा भी—"कहीं यह आतंकवाद हमारी इस शांत और सुसंस्कृत बस्ती में न फैल जाए?" फूफा को बुरा तो लगा था पर हंसकर बोला था—"जो अपने मां-बाप को उसी में खो चुका हो उस बच्चे का आतंकवाद से क्या रिश्ता? वह बनेगा भी तो प्रति-आतंकवादी बनेगा."

वह घर तभी लौटता था जब शाम होने लगती थी और दरख्त पर अनगिनत पक्षी बसेरे के लिए लौटना शुरू कर देते थे. बच्चे चीं-चीं करके उनका इंतजार करते होते थे. उस कोलाहल के बीच उसकी बेचैनी बढ़ जाती थी. उसके फूफा या फूफी में से कोई आता था और उसे ले जाता था. उसकी रात भी बेचैनी में ही कटती थी. वह रह-रहकर चौंक उठता था. उसके फूफा-फूफी की भी नींद डिस्टर्ब रहती थी. उसके कमरे की बत्ती जलाकर रखी जाती थी. दोनों कमरों के बीच का दरवाजा खुला रहता था. कई बार फूफी उसके पास आकर लेट जाती थी. वह फूफी को कसकर पकड़ लेता था जैसे उसे कोई उठाकर ले जा रहा हो. उसे कभी किसी ने बोलते-बतियाते नहीं सुना था. खास तौर से जब से वह यहां आया था. वे लोग भी उसे आवाज देकर नहीं बुलाते थे. कोई न कोई आता और उसे छूकर या इशारे से चलने के लिए कहता—"चल खाना खा ले." खाना भी वह बड़ी मुश्किल से खा पाता था. जितना खाता उतनी ही तकलीफ उसके चेहरे पर उभर आती. कभी-कभी फूफी भावावेश में कुछ कहती तो वह केवल उसकी तरफ देखता. उसके चेहरे पर एक अपरिचित भाव आ जाता. कौन है? क्या कह रहा है? कई बार वह देखता कि लोग उसकी तरफ इशारा करके में बातचीत कर रहे हैं. वे एक बताते थे कि यह लड़का वकील सरदार जी के साले का 'पुत्तर' है. उसी स्टाइल में कहते थे जैसे टी सीरियलों में कहा जाता है. वे यह थे कि इतनी छोटी-सी उम्र में आदमी को मार डाला. वह चूंकि नहीं था और बोलता नहीं था इसलि फर्क नहीं पड़ता था.

वह लिखना जानता था. कभी कच्ची जमीन पर ही अपना नाम था—औतार सिंह. और फिर ि था. अंग्रेजी, हिंदी और गुरमुखी लिखता था. कभी वह एक खोत उसकी पीठ पर औतार सिंह लिख

सभी रेखाचित्र: जयंती

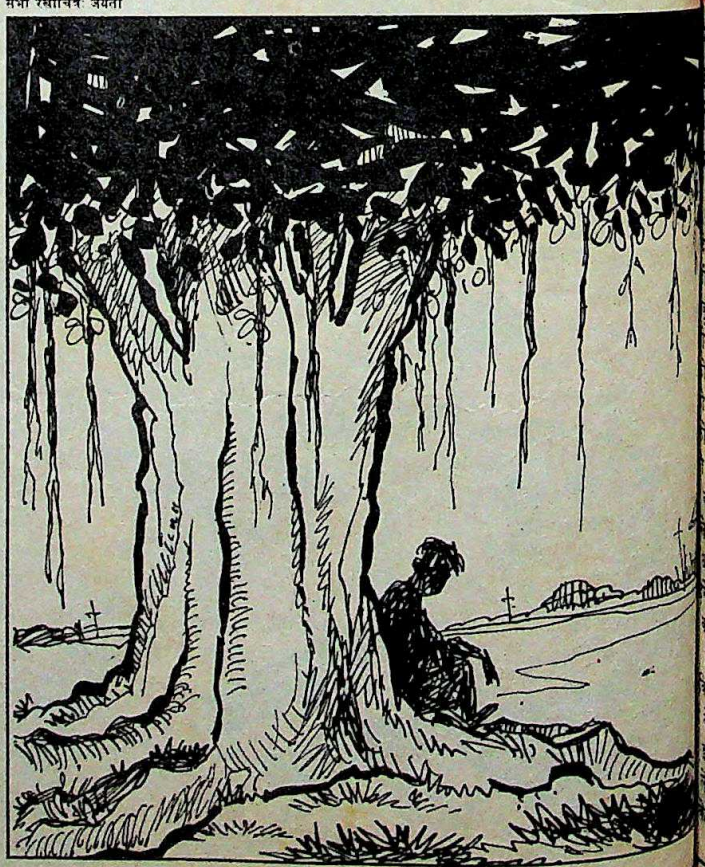

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

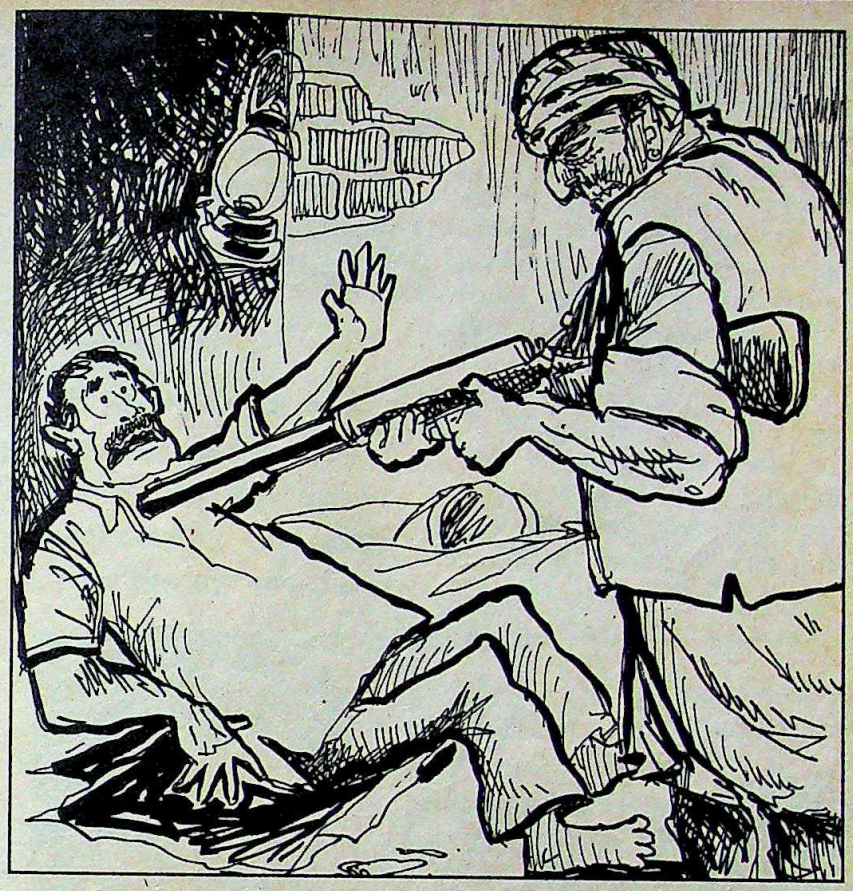

औतार सिंह के फूफा-फूफी परेशान थे कि आखिर इसकी इतनी बड़ी जिंदगी कैसे कटेगी. जो घर में इतना चहकता था वह गूंगा बनकर कैसे जिएगा? जिसके कान इतने चौकन्ने थे कि कीड़े की भुनभुनाहट भी सुन लेते थे, वह अब सुनेगा कैसे?

अपने गांव का वही बरगद बनाता
के नीचे उसका घर था. फिर उस
का सिवान इस बरगद से करता था.
बटाए बनाता था और उनमें अपने
बांधता था. फिर घर का दरवाजा
था एक औरत और मर्द बैठे होते थे
के पास खेलता हुआ एक लड़का.
उस लड़के को छोड़कर सबको
होता था और लड़के को पड़ी किसी
लकड़ी से गोदने लगता था. वह
बनाता जिसमें खून बहता होता.
ऐसे कुचल देता जैसे कंचे खेलने के
एड़ी पर घूम-घूमकर गीली
बनाई जाती है. उसे जुनून-
और वह बरगद पर ढेले फेंकने
मुंह से अजीब-सी आवाज
उसका मतलब या तो वह
या शायद बरगद. बरगद
बात माफ कर देता था.
सिंह के फूफा-फूफी परेशान थे
इसकी इतनी बड़ी जिंदगी कैसे
घर में इतना चहकता था वह
कैसे जिएगा? जिसके कान
थे कि कीड़े की भुनभुनाहट
वह अब सुनेगा कैसे? फूफी
छोटी-सी बेटी थी. कभी-कभी उसे

कर वह अनायास मुस्करा देता
देर तक उसके होंठ फैले रहते थे.
जाते थे और हंसी ऐसे गायब
जैसे आई ही न हो. फूफी
उसकी गोद में देने की कोशिश
वह पीछे हट जाता. कहीं छूने से
दाग न लग जाए. फूफी जिद
वह भाग जाता.
कभी-कभी घरवाली से कहता था,
तो आई—अगर उन्हें पता चल
औतार सिंह यहां है तो वे हमें भी
आखिर उनके एक आदमी की
कारण औतारा ही तो है."
ही बताओ मैं इसे कैसे छोड़
पर छोड़ आती? उन्हीं
के कारण इसके कान गए, जुबान
इसके पास भला रखा ही क्या है
माथे पर चिंता की लकीर खिंच

जाती. उसकी समझ में नहीं आता कि वह उसकी बात का क्या जवाब दे? वह उनका भी तो काल बन सकता है. वह चुप हो जाता. हां कभी-कभी उसके जबान पर ग्राम प्रधान की बात जरूर आ जाती. "गांववालों ने कहा था इसे यहीं छोड़ जाओ—करतारे के बेटे को हम यहीं रखेंगे, पढ़ाएंगे-लिखाएंगे. मां-बाप को तो वापिस नहीं ला सकते पर इसका बाल बांका नहीं होने देंगे."

फूफी बिखर पड़ती—"उन्होंने उसके मां-बाप को क्यों नहीं बचा लिया था. उनका बाल बांका कैसे हो गया." फिर फूफी गला भरकर कहती, "वहां रहेगा तो इसे अपने मां-बाप याद आएंगे और उन्हें अपना आदमी याद आएगा. गांववाले कब तक बीच में दीवार बनकर खड़े होंगे."

जब हत्यारे बंदूकें दागते हुए उसके घर में घुसे थे तो औतार अनाज की कोठरी में छिप गया था. उसने पहले अपनी मां की चीख सुनी थी. "कमबख्तो, इसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है. इसे क्यों मारते हो. क्या इसने तुम्हें अपने घर में पनाह नहीं दी?"

उनमें से एक बोला था, "जो हमारे बनाए कानून के खिलाफ जाएगा, दुश्मनों को पनाह देगा उसके लिए सजा-ए-मौत के सिवा कुछ नहीं. चाहे वह हमारा बाप ही क्यों न हो?" पहली गोली चलते ही मां बापू पर लेट गई थी. फिर तीन-चार गोलियां एक के बाद एक दगीं. उसके बाद बस सन्नाटा हो गया था और वे लोग खरामा-खरामा बाहर निकल गए थे. औतारे को और तो कुछ नहीं सूझा, उसने दीवार के सहारे खड़ा हल गिरा दिया. लोग बाहर इकट्ठे होने लगे थे. वे लोग निकल भागने की जल्दी में थे. एकाएक आखिरी आदमी हल से टकराकर गिरा और चिल्लाया. हल की नोंक उसके पेट को चीरकर पार निकल गई थी. खून का पतनाला फूट पड़ा था. फिर औतारे को कुछ पता नहीं रहा कि वह कहां है? गांववालों को वह सवेरे कोठरी में पड़ा मिला था.

बस, फूफा-फूफी ही बचे थे. वे बहुत दूर कानपुर में थे. जब वे पहुंचे तो गांववालों की गर्दनें झुकी थीं. औतारे की जबान और कानों की ताकत जा चुकी थी. कभी उसे होश आता था. और कभी बेहोश हो जाता

CC-0. In Public Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था. आंखें ऐसी पथराई कि आज दिन तक एक बूंद पानी नहीं छलका. फूफी अपना संयम खोकर बोलती चली गई थी, "मैं भी इसी मिट्टी से जन्मी हूं जिससे मेरा भाई जन्मा था और आप सब जन्मे हैं. मेरे भाई-भाभी मरने जोग हो गए और आप सब मारने वाले बन गए. उसकी क्या खता थी. उसने किसका खून बहाया था. इस बच्चे ने किसी का क्या बिगाड़ा...तुम्हारी बंदूकें और किरपाने क्या आदमी की पहचान ही भूल गईं?"

एक बडे बुजुर्ग बीच में बोले, "तू ठीक कहती है बीबी, खता हमारी ही है—करतारे को इतना समझाया, इतना समझाया... तू राम लुभाये के कुटुंब को घर में मत छिपा... वह भी यही बाणी बोला जो तू बोल रही है... कि जहर की यह कनी हमारे खून में कहां से आकर घुल गई? बहुत हाथ जोड़े, बिनती की. पर

फूफी के पास एक ही रास्ता था. अपनी भाई की इस निशानी को गले लगा ले. गांववाले गोहरे तक छोड़ने आए. बोले, "बीबी, औतारा तेरा भतीजा है, उस पर तेरा हक है. पर करतारे की जमीन हम सब जोतेंगे, उसकी पैदावार औतारे की—जब औतारा बड़ा होकर गांव लौटेगा तो उसकी अमानत उसे सौंप देंगे. वही उसका मालिक होगा."

फूफी बिना कुछ कहे सुनती रही. फिर औतारे को लेकर चुपचाप चली आई. जब तक हुआ, औतारा मुड़-मुड़कर उधर ही देखता रहा जिधर उसका गांव था, उसका घर था, उसके मरहूम मां-बाप थे. रेल में बैठकर वह उस ओर नहीं देख रहा था जिधर गाड़ी जा रही थी बल्कि उधर देख रहा था जिधर से आई थी. रास्ते में पड़ने वाला हर गांव और उसके चारों ओर घेरा डालता धुआं उसके अंदर एक हुमक-सी भर देता था. पर वह गांव उसका गांव नहीं होता था.

फूफी के घर आकर उसका सहारा बरगद हो गया था. ऐसा ही बरगद उसके आंगन में था. उसे देखकर लगता था वही रेल में बैठकर उसके साथ यहां चला आया है. वही चिड़ियां, वही उनके चि बच्चे. वह फूफी और बच्ची से हि था पर फूफा से नाराज था. फू डॉक्टर के पास ले जाता था. डॉक्टर गले में, कान में, नाक में, आंख डाल-डालकर जाने क्या-क्या देख उसे अच्छा नहीं लगता था. एक-द वह वहां से भागा भी पर फूफा उ पकड़कर ले गया. कभी-कभी

रेल में बैठकर वह उस ओर नहीं देख रहा था जिधर गाड़ी जा रही थी बल्कि उधर देख रहा था जिधर से आई थी. रास्ते में पड़ने वाला हर गांव और उसके चारों ओर घेरा डालता धुआं उसके अंदर एक हुमक-सी भर देता था. पर वह गांव उसका गांव नहीं होता था

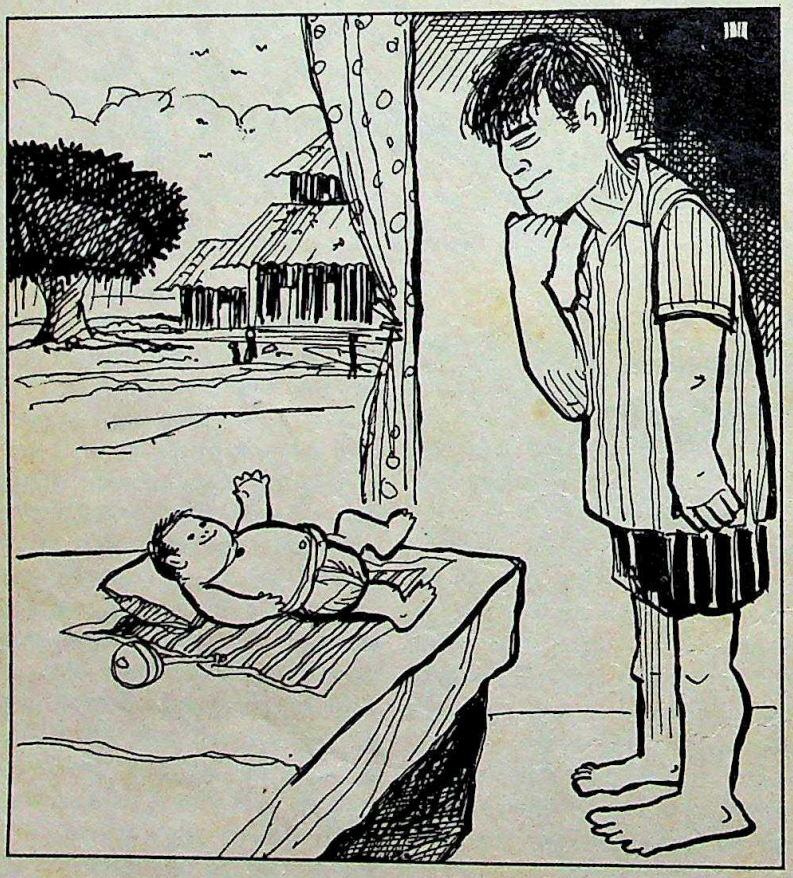

औतारा सोते-सोते पसीने से सरा जाता. उसके गले से वही आवाज निकलने लगती, जैसे कोई पड़ रहा हो. बुआ समझ जाती अंदर ही अंदर किसी गहरी तकली उसका दम घुटा जा रहा है. उसे चाहिए. पर वह उसके लिए जबान लाए. उसकी जबान उसे लग जाए खुशी से दे दे. जब कभी वह बच्चे छोटे हाथों से उसे पास बुला औतारा खुशी से नाच उठता. जि सबसे बड़ा सुख वही था.

उस दिन उसकी फूफी के घर आए हुए थे. वह बरगद के पास बैठा था. पता नहीं क्यों वह उस दि से बहुत डरा हुआ था. बार-बा बच्ची की शक्ल जमीन पर उसकी उपस्थिति अपने अंदर करना चाह रहा था. उसकी हाथ बुलाने वाली मुद्रा बनाता, पर पाता. हर बार वह अंदर ही उठता.

उसकी फूफी उसे लेने आई उसकी परेशानी समझ गई. धीरे से बच्ची को ले आई. फूफी को कृतज्ञता भरी नजर से देखा.

वह फिर अपने काम में लग ही देर बाद उसका फूफा भुनभु आया और बोला, "तुम मेह छोड़कर इस गूंगे के पास खड़ी हो. तो नहीं सका पर उसके तन-बदन की झोंक जरूर महसूस की. फूफा पर खिंची उस तस्वीर को डाला. बच्ची भी धक्के से लुढ़क रोने लगी. उस दिन वह चिल्लाया—एक भयावह 'चीख'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

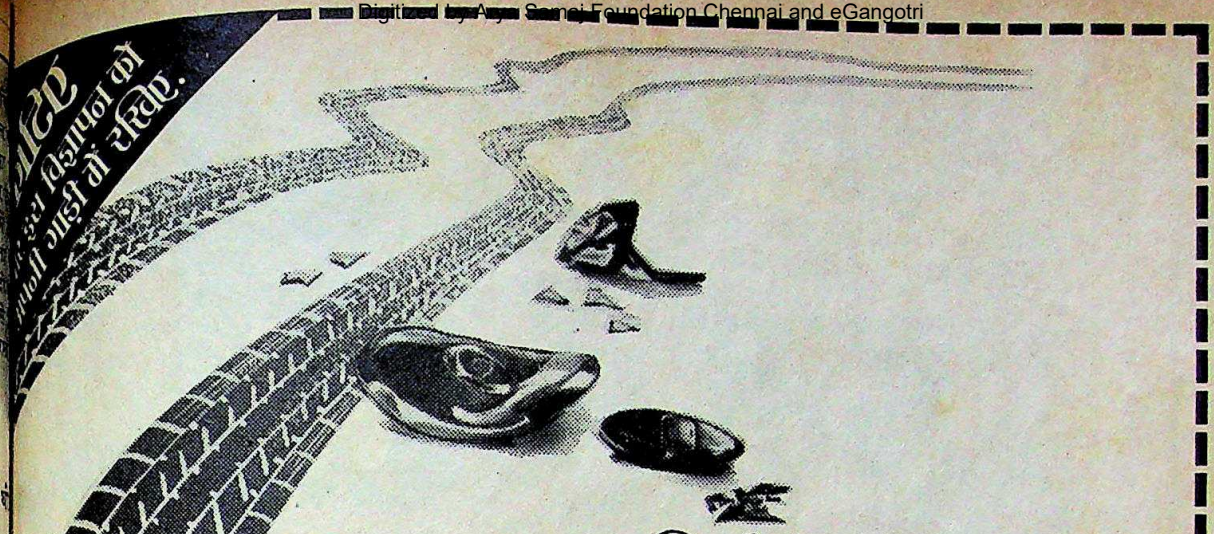

यदि कोई दुर्घटना हुई तो आपको इसकी ज़रूरत पड़ेगी.

दुर्घटना तो सावधान से सावधान व्यक्ति के साथ भी हो सकती है. आप सड़क पर गाड़ी चला रहे हैं, अचानक दुर्घटना हो जाती है. और आपकी गाड़ी को नुकसान पहुंचता है.

यदि आपके साथ ऐसा हो तो यह करें :-

- अपनी बीमा कंपनी के उस कार्यालय/शाखा को तुरंत सूचना दें जहां से आपने बीमा करवाया था. सूचना के साथ अपनी पॉलिसी का क्रमांक भी सूचित करें.
- दावा-फ़ॉर्म में सभी विवरण सही-सही भरें.
- किसी अन्य गाड़ी से टक्कर होने पर उसका नंबर लिख लें.
- यदि संभव हो तो चश्मदीद गवाहों के नाम और पते प्राप्त कर लें.
- यदि आपकी गाड़ी वाणिज्य-वाहन है तो उसे दुर्घटना-स्थल से तब तक न हटाएं जब तक कि घटनास्थल पर सर्वेक्षण पूरा न हो जाए अथवा बीमा कंपनी को सूचना देने के समय से लेकर 48 घंटे पूरे होने से पहले गाड़ी वहां से न हटाएं.
- मरम्मत में होनेवाले खर्च की अनुमानित रकम के कागज़ात अपनी बीमा कंपनी में दाखिल करें. खर्च की अनुमति मिलने के बाद ही मरम्मत करवाएं.
- सर्वेक्षण का काम समाप्त होने की प्रतीक्षा करें. आपकी बीमा कंपनी द्वारा नियुक्त सर्वेक्षक जब गाड़ी का सर्वेक्षण करें तब आप भी गैराज में उपस्थित रहने का प्रयत्न करें.
- यह सुनिश्चित कर लें कि गैराज को मरम्मत के जो काम सौंपे गए वे उसने उचित ढंग से पूरे कर दिए हैं. जहां संभव हो, बदले जानेवाले पुर्ज़ों के बिल ले कर रखें.
- जब मांगे जाएं तो निम्नलिखित दस्तावेज सर्वेक्षक के लिए प्रस्तुत करें: ड्राइविंग लाइसेंस, आर सी पुस्तक, रूट परमिट और फिटनेस प्रमाण-पत्र (वाणिज्य वाहनों के लिए) तथा बिल्ला (टैक्सियों के लिए).
- जब वाहन की मरम्मत संतोषजनक ढंग से हो जाए तो गैराज के "सैटिस्फ़ेक्शन वाउचर" पर हस्ताक्षर कर दें. सर्वेक्षक द्वारा निर्धारित किए गए मरम्मत के खर्च का भुगतान बीमा कंपनी सीधे गैराज को कर देगी, यदि गैराज के बिल आपने चुका दिए हों तो रकम आपको चुका दी जाएगी.
- गाड़ी के किसी पुर्ज़े अथवा पूरे वाहन की चोरी होने पर सबसे नज़दीक के पुलिस थाने में तुरंत रपट दर्ज करवाएं. जांच-पड़ताल की स्थिति जानने के लिए पुलिस से संपर्क बनाए रखें. इसीके साथ चोरी की सूचना अपनी बीमा कंपनी को भी दें.

महत्वपूर्ण निर्देश: यदि कोई तृतीय पक्षकार घायल हो जाता है अथवा संपत्ति को नुकसान पहुंचता है तो पुलिस तथा बीमा कंपनी को तुरंत सूचना दें.

अपने दावों का भुगतान शीघ्र पाने में आपकी मदद करने के लिए कृपया हमारी मदद कीजिए.

अपना दावा उचित रूप से भरिए ताकि उस पर कम से कम समय में कार्रवाई की जा सके.

आपकासमे रविश्वासि

भारतीय साधारण बीमा निगम

नेशनल इन्श्योरंस कंपनी लिमिटेड | दी न्यू इंडिया एश्योरंस कंपनी लिमिटेड | दी ओरिएण्टल इन्श्योरंस कंपनी लिमिटेड | युनाइटेड इंडिया इन्श्योरंस कंपनी लिमिटेड

R K SWAMY/GIC/167 A/HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम हैं नं.

फिर भी है आगे बढ़ने

लगन

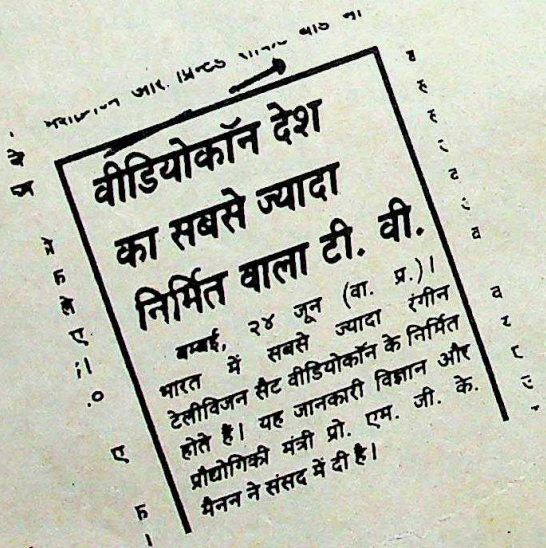

वीडियोकॉन देश का सबसे ज्यादा निर्मित वाला टी. वी.

बम्बई, २४ जून (वा. प्र.)। भारत में सबसे ज्यादा रंगीन टेलीविजन सैट वीडियोकॉन के निर्मित होते हैं। यह जानकारी विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री प्रो. एम. जी. के. मैनन ने संसद में दी है।

आगे बढ़ने की लगनः इसी ने तो बनाया ज़बरदस्त मुक़ाबले वाले टीवी बाज़ार में इसी ने तो दिलाया हमें देश भर में हर मौजूद हज़ारों ग्राहकों का विश्वास, उनका भरोसा.

आगे बढ़ने की लगनः यही सिद्धान्त तो कम्पनी की नीति, हमारी कम्पनी का

आगे बढ़ने की लगनः लगन अधिक से उन्नत तक़नीक को हासिल करके विश्व क्वालिटी के उत्पादों के निर्माण की, और तरह लोगों के जीवन को ज़्यादा आरामदे ज़्यादा रूचिकर बनाने की. और उनके ज़्यादा क़ीमत जुटाने की.

क्योंकि हमारा सोचना है कि हमारी लगन ज़िम्मेदारी है उनके प्रति जो हमारे परिवार अंग हैं.

और इसीलिए नं. 1 होने के बावजूद, आगे बढ़ने की यह लगन हमेशा बरकरार

वी डि

स र्व श्रे ष्ठ को ब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

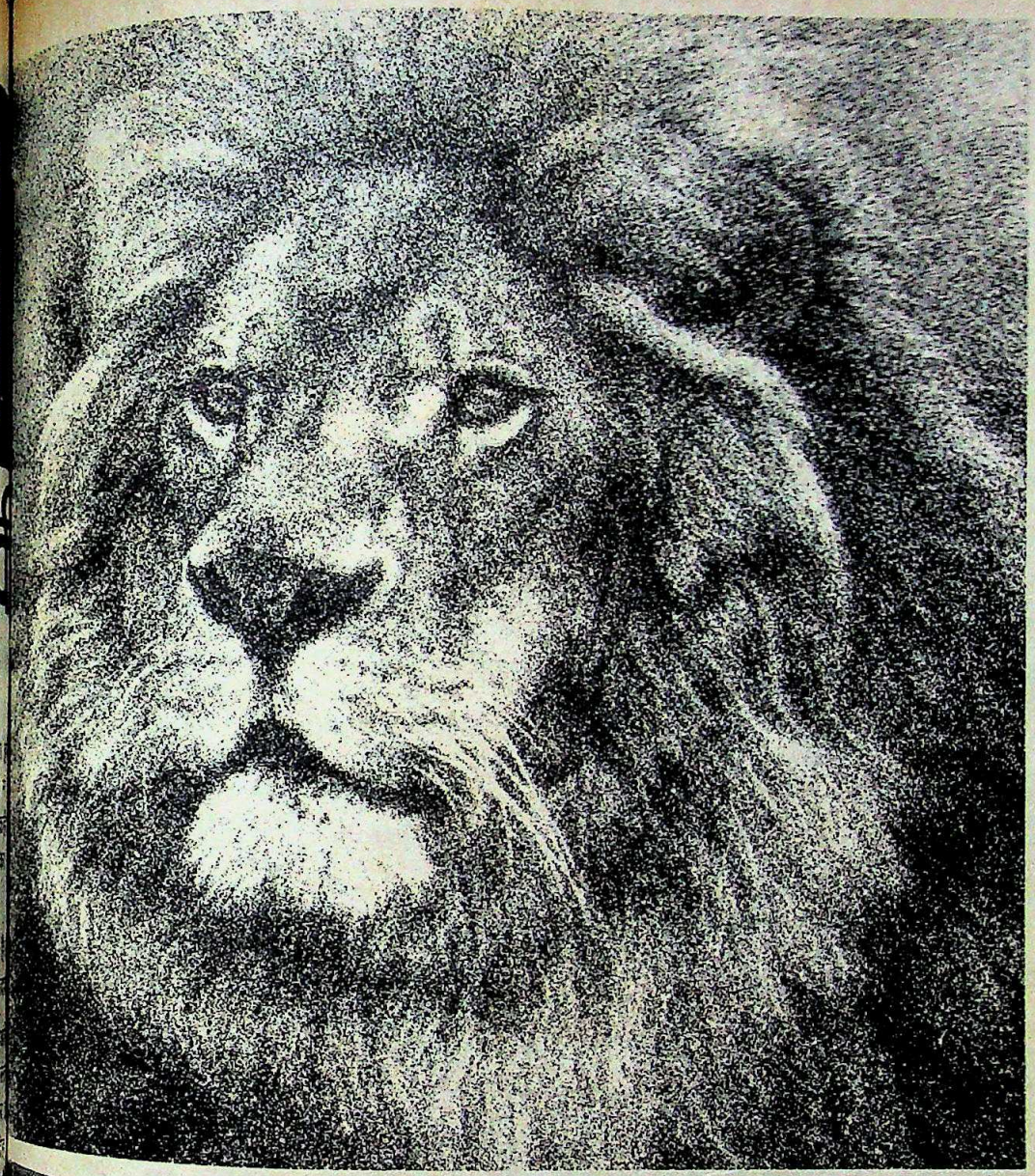

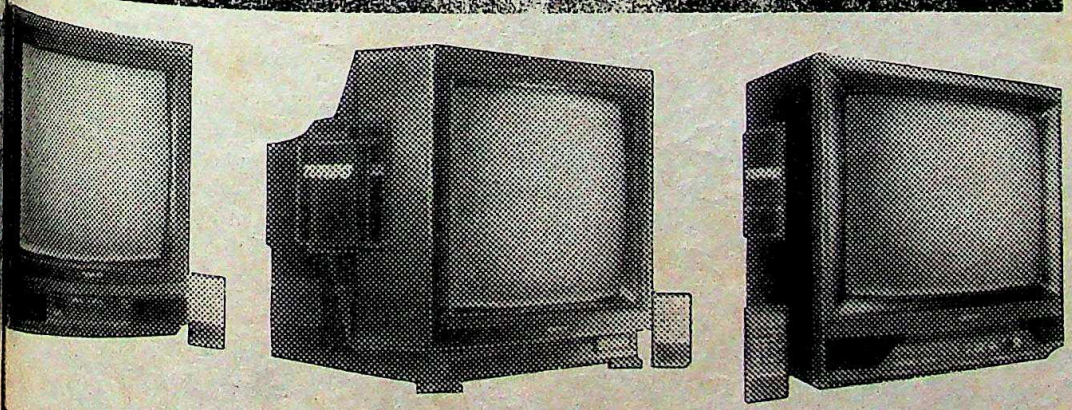

को न

घ र की शा न.

POUSH VC 15 00 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्मरण

रोचक बातें

देसी-विदेशी हस्तियों का परिचय

जीवन के किसी भी क्षेत्र में ख्यातिप्राप्त व्यक्तियों या राजनीतिकों के लिए अपने जीवन की संध्या में बीती बातों पर दृष्टिपात करना एक स्वाभाविक-सी बात है. इस मंथन के परिणामस्वरूप संस्मरण लिखे जाते हैं जो लेखक/लेखिका के जीवन या राष्ट्रीय जीवन के किसी युग विशेष पर प्रकाश डालते हैं.

बीती यादें
संस्मरण
राजन नेहरू
हिंदी प्रचारक संस्थान, वाराणसी
कीमत: 20 रु.;
कुल पृष्ठ: 236

विजयलक्ष्मी पंडित के बाद नेहरू परिवार में राजन नेहरू दूसरी महिला हैं जिन्होंने अपने संस्मरण 'बीती यादें' शीर्षक से भारतीय पाठकों के सामने रखे हैं. इस ग्रंथ को उनके जीवन की झलकियों से अधिक कुछ कहना उचित नहीं होगा. पिता कैलाश नारायण हक्सर के घर से लेकर पति की मृत्यु तक का लंबा काल 'बीती यादें' की विषयवस्तु है. छोटे-छोटे 71 अध्यायों में, जिनमें से कोई भी तीन पृष्ठ से अधिक नहीं है, उन्होंने अपने जीवन का परिचय दिया है और अलग-अलग घटनाओं पर प्रकाश डाला है. वे नेहरू परिवार में कैसे आईं, पति के साथ देश-विदेश कहां-कहां घूमीं, विश्व की किन-किन विभूतियों से परिचय और सान्निध्य हुआ, इन सब बातों का वर्णन उन्होंने रोचक ढंग से किया है. यह तो स्पष्ट है कि तीन पृष्ठ के एक छोटे-से अध्याय में किसी घटना का संक्षिप्त वर्णन ही हो सकता है.

राजन नेहरू को अपने जीवन काल में विश्व के जाने-माने व्यक्तियों से संपर्क साधने का अवसर मिला. उसका रोचक वर्णन पुस्तक में मिलेगा कि कैसे वे किससे मिलीं और उस व्यक्ति की भारत और भारतवासियों के बारे में क्या प्रतिक्रिया थी. यदि रत्न कुमार नेहरू विदेश में भारत के राजदूत के रूप में राजनैतिक दृष्टि से उसका प्रतिनिधित्व करते थे तो उनकी पत्नी भारत की सांस्कृतिक प्रतिनिधि की भूमिका में रम जाती थीं.

चीन में प्रवास के दौरान उनका संपर्क वहां के प्रधानमंत्री चाऊ एन लाई से हुआ. जब वहां पर विश्वविद्यालय में हिंदी के एक प्राध्यापक का स्थान रिक्त हुआ और उसके लिए भारत से नया प्राध्यापक नहीं भेजा जा सका तो चीन सरकार के आग्रह पर राजन नेहरू ने हिंदी का अध्यापन प्रारंभ किया. एक रोचक घटना उसी काल की है. जब वे पढ़ा रही थीं तो उन्होंने देखा कि चीन के प्रधानमंत्री छात्रों के बीच पिछली पंक्ति में दुबके बैठे हैं. शायद वे जानना चाहते थे कि भारतीय राजदूत की पत्नी कितनी योग्य हैं कि बिना किसी प्रशिक्षण के विश्वविद्यालय के छात्रों को हिंदी पढ़ा सकती हैं.

पुस्तक आम पाठकों के लिए रुचिकर सिद्ध होगी. इसकी भाषा और शैली सरल और मनमोहक है. आशा करनी चाहिए कि हमारे राजनैतिक और सार्वजनिक जीवन में सक्रिय अन्य महिलाएं भी अपने संस्मरणों को विस्मृति के गर्भ में नहीं जाने देंगी.

—धर्मपाल पांडेय

कविता संग्रह

विराट दृष्टि

जीवन के द्वंद्व की कविताएं

कारएसिन कुलिएव जैसे बीसवीं शताब्दी के महत्वपूर्ण सोवियत कवि की कविताओं से हम शायद अपरिचित ही रह जाते अगर हिंदी के इधर के महत्वपूर्ण युवा कवि सुधीर सक्सेना उनके काव्य संग्रह 'त्रवा इ कामिन' (अंग्रेजी में ग्रास ऐंड स्टोन) से चुनकर 24 कविताओं का अनुवाद हिंदी में न करते.

कभी न छीने काल
कविता संग्रह
काएसिन कुलिएव
अनु: सुधीर सक्सेना
मध्य प्रदेश प्रगतिशील लेखक संघ, भोपाल
कीमत: 5 रु.;
कुल पृष्ठ: 32

इन कविताओं से गुजरते हुए जो सबसे महत्वपूर्ण चीज हमारे हाथ लगती है वह है जीवन के प्रति उनकी विराट दृष्टि. जीवन के प्रति उत्कट आवेग उनके काव्य का वह महत्वपूर्ण प्रस्थान बिंदु है जहां से वे चीजों को एक नई रोशनी में देखते हैं. 'कभी न छीने काल' में संग्रहीत 'नदी में नहाती स्त्री' पर लिखी गई यह छोटी-सी युद्ध और अशांति के खिलाफ कवि की कविता है जिसने स्वयं फासिज्म के खिलाफ अपने देश की युद्ध में भाग लिया है. काएसिन कविता में जब तक एक औरत नहा तब तक जीवन अबाध है, तब महाद्वीप में कहीं कुछ गड़बड़ नहीं है.

कुलिएव की एक अन्य कवि उनकी काव्यगत संवेदना और विचार का अद्भुत प्रस्फुटन दिखाई देता है. कविता में उन्होंने प्राकृतिक बिंबों प्रयोग सहजता और कुशलता से किया बीसवीं शताब्दी के इस अंधेरे दौर में हम सब पूंजीवादी उपभोक्ता संस्कृति चलते व्यक्तिवादी प्रवृत्तियों के कोहरे गिरफ्त हैं, कुलिएव इस कोहरे के खिलाफ एक-एक कौंध से हमें रू-ब-रू करते हैं. *सिर्फ मृत चिंताओं से मुक्त हैं/वे अंधे ठूंगे हैं इसी लिए/उन्हें बख्शती चिंताएं/मगर हमारे पास आती हैं की बारिश की तरह/और भड़भड़ा हमारी खिड़कियां.*

जीवन और मनुष्य के प्रति जगाने वाली 'कभी न छीने काल' महत्वपूर्ण कविता है. यह एक कवि गुहार या प्रलाप मात्र नहीं है बल्कि दुनिया के बच्चों के प्रति एक सजग की व्याकुलता और व्यापक सोच को करने वाली हमारे समय की महत्व कविता है—*अपने जीवन में मैंने सब कुछ/सारे विषाद भरे अनुभव खाते में/तमाम लौकिक प्रार्थनाओं गुहारता हूं बस एक/किसी बच्चे न छीने काल.*

कुलिएव प्रकृति और जीवन के सरल और काव्य बिंबों अपने आसपास प्राकृतिक परिवे खास देसी मुहा रचने वाले समय के महत्वपूर्ण कवि उनकी बीसवीं शताब्दी मनुष्य के जय और पराजय की कविताएं हैं. सुधीर सक्सेना द्वारा इन कविताओं को पढ़ते हुए ऐसा नहीं लगता है कि हम एक विदेशी की कविताएं पढ़ रहे हैं. कवि संवेदना और करुणा को इन कविता सुधीर सक्सेना ने बरकरार रखा है.

—रमेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2 X 12 कजारिया फ्लोर टाइल्स

...स्पेन के सहयोग से

PERFECT FLOORS

Systems/929/90.

8 x 8 8 x 4

...में उपलब्ध

Kajaria

कजारिया सिरैमिक्स लिमिटेड

सी-7, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली-110065

...और डिजाइनों में ★ देखभाल की चिन्ता नहीं ★ लगाने में आसान (24 घंटों में इस्तेमाल के लिए तैयार) ★ टिकाऊ ★ सफाई में आसान ★ कीमत भी बहुत कम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल्मी पानी की तासीर

'मशहूर फिल्म छायाकार शांतनु की सुंदर पत्नी बरसात में भीगती हुई एक मशहूर फोटोग्राफर से अपनी तस्वीरें खिचवा रही थीं'—इस खबर ने आपको जरा भी चौंकाया नहीं. है न! अब आप इसी खबर को इस तरह पढ़ें—'जिस **किमी काटकर** ने शादी से पहले सौ बार यह बात दोहराई थी कि शादी के बाद वे फिल्मों में हरगिज नहीं लौटेंगी, वही किमी यानी श्रीमती शांतनु पत्रिकाओं को अपने भीगे शरीर के रंगीन चित्र सावन के नजारों के रूप में छपने भेजने के लिए फोटो सेशन करवा रही थीं.' पड़ा न कुछ फर्क? फिल्मों के पानी की तासीर ही कुछ ऐसी है.

'क्लोज फ्रेंड्स' को किमी ने बताया है कि उनकी सबसे बड़ी समस्या है, खाली वक्त. प्यार का बुखार उतरने के साथ शांतनु ने जब से अपने धंधे की तरफ ध्यान देना शुरू किया है, वे इतने व्यस्त हैं कि अक्सर बीवी तक को भूल जाते हैं. तो क्या किमी को पहले नहीं मालूम था कि होने वाले पति की आदतें क्या और कैसी हैं?

"कैसे पता चलता? उन दिनों शांतनु काम करते ही कब थे?" किमी का कहना है.

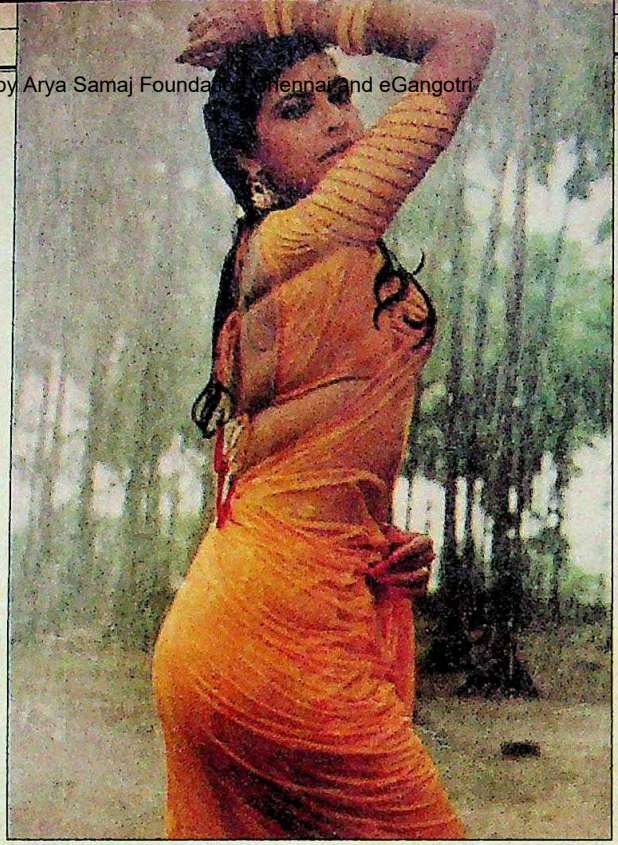

किमी: प्रेम का बुखार अब उतार पर

इंतजार और नाराजगी

संगीता बिजलानी चक्रवर्ती की जो दोस्ती तरह चढ़ी थी, वह भाटे की तरह बिखर लोग ऊपरी बातों से जाते हैं, उन्होंने मान वजह हैं सलमान रहा था कि कई दरवाजे लौटा दिए जाने के बाद के दर पर दस्तक दें संगीता के मन में फिर बज उठा अप्रसन्न हुए.

लेकिन तह तक मालूम हुआ कि माजरा है. उस शाम फिल्मिस्तान में शूटिंग इसीलिए खत्म कर दी गई कि अगली सुबह बाहर तैयारी, आराम और साथ रहने को थोड़ा जाए. लेकिन मिथुन उतारने और शूटिंग बदलने के लिए मेकअप घुसे तो बाहर ही बाहर उनके प्रशंसकों इंतजार करके बिखर

संगीता

मिथुन लौट गए

...हेराफेरी से न जाए

"मैं सिर्फ अपनी पत्नी का पति कैसा रहेगा यह नाम किसी फिल्म के लिए? है न बढ़िया! वैसे इस नाम की फिल्म के हीरो होने चाहिए.—**विनोद खन्ना**. हमारे इस सुझाव से विवाहिताएं जरूर प्रभावित होंगी और नवविवाहिताएं तो खास तौर से खुश होंगी. इसकी वजह यह है कि शिवजी के नाम पर छुट्टे छोड़ दिए गए सांड को जैसे मनमानी करने की छूट होती है वैसी ही छूट लिए हुए उन विनोद खन्ना को, जिन्हें भप्पी सोनी जैसा अनुभवी प्रोड्यूसर नकेल नहीं डाल पाया और जिन्होंने अपने साथ दोस्ती का दम भरने वाले रंजीत जैसे एक्टर-प्रोड्यूसर-डायरेक्टर को दौड़ा-दौड़ाकर उनके पसीने छुड़वा देने के बावजूद उनकी फिल्म समय पर पूरी नहीं कराई, उन्हीं विनोद को पालतू बनाकर आंचल से आंगन में बांध लिया एक छरहरी, छबीली छोरी ने. फिल्मों में यह काम गांव की गोरी के जिम्मे रहता है पर असल जिंदगी में यह करिश्मा कर दिखाया ठेठ बंबइया बबुआइन ने. और अब विनोद खन्ना ऐसी हर जगह, जहां से बात उनके घर पहुंच जाए, एक ही कसम खाते हैं, "अब मैं सिर्फ अपनी पत्नी का पति हूं." बताइए, विवाहिताएं खुश क्यों न हों? उनमें से हर किसी की चाह, अपने पति को लेकर आखिर यही तो होती है.

लेकिन जैसे फिल्म की कहानी परदे पर सच होते हुए भी सच नहीं होती, वैसे ही कई सच्ची कहानियां हर जगह सच नहीं होतीं. मसलन, विनोद खन्ना की ही बात लीजिए. पिछले दिनों उन्हें जहां विश्वास हो गया था कि यहां से कोई कसम कहीं नहीं जाएगी और जिस अप्सरा के कारण उनकी कई कसमें कई-कई बार टूटीं वही हमें मिलीं तो हंसती-मुस्कराती, उनकी तरफदारी करती हुई एक ही बात में कई-कई बातें कह गईं, "चोर चोरी भले ही छोड़ दे, हेराफेरी भला कहां छोड़ पाता है?"

विनोद: सिर्फ पत्नी के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

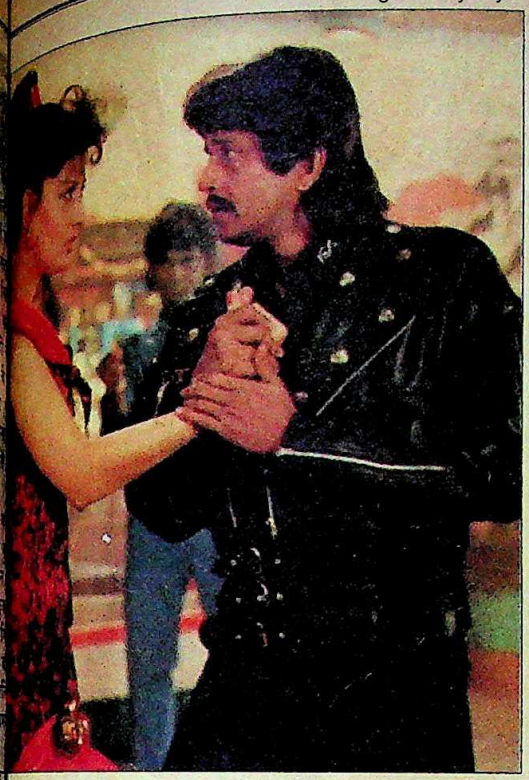

संगीता और मिठुनः इंतजार का सुख-दुख

...दूसर लौट गए. ...अंदर मिठुन अकेले थे?

यह बात तो सारी यूनिट ने देखी कि जब मिठुन मेकअप रूम में घुसे तब उनके साथ जो दो-चार लोग अंदर गए थे उनमें छोटी फिल्मों की ग्लैमर गर्ल साहिला चड्ढा भी थीं. 15-20 मिनट के अंदर बाकी सब बारी-बारी बाहर आ गए पर साहिला को लौटते किसी ने नहीं देखा.

मगर संगीता की नाराजगी की असली वजह तो कुछ और ही थी. यह उस इंतजार में छिपी थी जो मिठुन यहां कर रहे थे. विश्वस्त होने के बावजूद मिठुन का सेवक थोड़ा 'खुश कर दिए जाने पर' खास-खास लोगों को यह बता देता है कि "साब के इस तरह देर तक स्टूडियो में ठहरे रहने का मतलब है कि वे मेमसाब का इंतजार कर रहे हैं, द्रौपदी (रूपा गांगुली) मेमसाब का."

आज भी रूपा पास ही शूटिंग कर रही थीं और काफी समय से चल रहा यह क्रम आज भी चलना था कि रात गहरा जाने पर ये दोनों कलकत्तावासी बंबई के मड आईलैंड पर मिठुन के कॉटेज में बैठ दिल की बातें कह-सुन लेते. यानी मिठुन का सेवक जिनसे 'खुश' हुआ उनमें संगीता भी थीं.

खुल गई दृष्टि.....

इस चुनौती के बारे में **शबाना आजमी** ने पहले सोचा नहीं था. लेकिन हाल में जब 'दृष्टि' का शो हुआ तब से जिन लोगों की दृष्टि खुल गई है उसमें शबाना भी हैं.

स्टारों के नखरों से दूर रहने वाले निर्देशक गोविंद निहलाणी ने इस फिल्म में डिंपल कापड़िया को कैसे और क्यों ले लिया, यह चिंता शबाना को जाने कब से खाए जा रही थी. 'दृष्टि' के शो ने उनकी इस चिंता को और ज्यादा बढ़ाया ही है. इसमें डिंपल के काम की बहुत तारीफ है. शबाना की घबराहट इसलिए भी है कि अरसे बाद कोई फिल्म आई तो मुकाबला

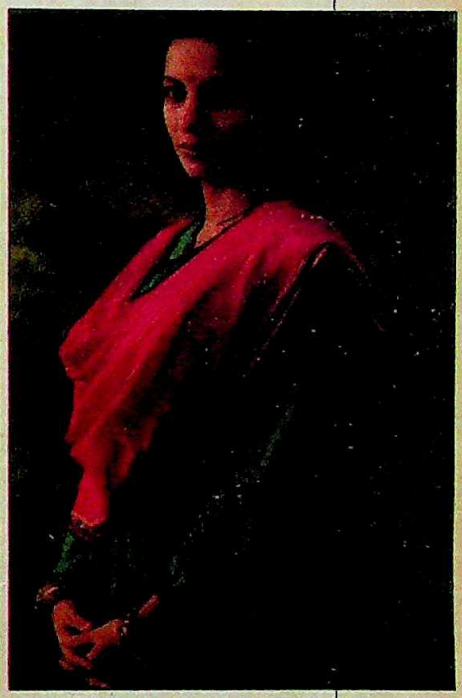

शबानाः दृष्टि-द्वेष

सीधे डिंपल से पड़ा.

दरअसल, अब तक शबाना 'डिंपल जैसियों' को किसी गिनती में ही नहीं रखती थीं. लेकिन इधर उनके ग्रह संकट में बताए जाते हैं. बाल फिल्म सोसाइटी की प्रेस कांफ्रेंस में शबाना ने भले ही कई सब्जबाग दिखाए हों पर कहने वालों का कहना अब यही है कि आर्ट फिल्मों के जिस इलाके की वे बेताज मलिका मानी जाती थीं उस पर 'डिंपल जैसियों' के जोरदार हमले के बाद अब खैर इसी में है कि वे बच्चों में रम जाने की 'असली' तैयारी शुरू कर दें.

...का इजहार

...ने पिछले दिनों एक ...गायक को इस बात के ...कर लिया कि वह ...फिल्म के लिए गाना गा ...ही बताइए, यह कोई ...भला? अरे, ढेरों लोग हैं ...के इंतजार में पलक-...बिछाए हुए हैं. लेकिन ...ने इस खबर को खूब ...करवाया.

...आप यह न सोच ...कि अपने नए प्यार के ...को धमाकेदार बनाने के ...ने यह तरीका ...उनका नया प्यार यह ...गायक नहीं है. गाने ...तभी बनती है जब ...राजी हों.

...के इस प्रचार का ...दरअसल यह था कि ...संगीतकार को अपनी बात ...लिए राजी कर लिया. ...कार हैं बाबुल बोस जिनके नाम का सितारा बड़ी तेजी के साथ बुलंदियों की तरफ बढ़ रहा है और जो सलमा आगा के इश्क में, या जिनके इश्क में सलमा आगा गिरफ्तार बताई जाती हैं. बाबुल बोस मितभाषी हैं. प्यार की खबर का खंडन नहीं करते. लेकिन सलमा नाक सीधी तरह न पकड़ कर घुमाकर पकड़ती हुई कहती हैं, "बाबुल इतने कोमल दिल हैं... मेरे कैरियर का इतना ध्यान रखते हैं....मेरे बारे में इतना सोचते हैं....मेरी राय की इतनी इज्जत करते हैं....हमेशा मेरी तारीफ ही करते हैं...मेरी कोई बात टाल ही नहीं पाते."

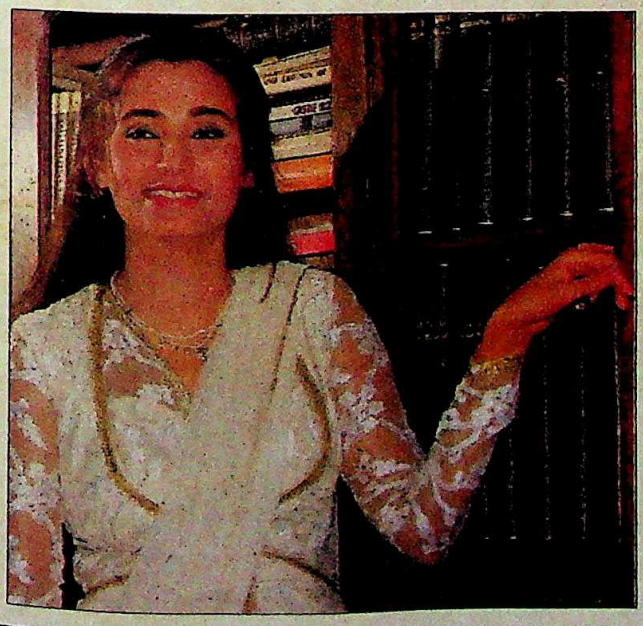

...प्यार का नया तरीका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नगमा मोरानी

टंडनः मॉडलिंग को बाइ-बाइ

◆ सनसिल्क,लिप्टन, ट्रीटॉप के विज्ञापनों में चमकने वाला हसीन चेहरा अब फिल्मों में भी चमकेगा. 18वर्षीया मॉडल **रवीना टंडन** के बचपन के सपने पूरे होने वाले हैं. जी.पी. सिप्पी की अगली फिल्म 'पत्थर के फूल' में वह सलमान खा के साथ काम कर रही है. युवा दिलों की धड़कन सलमान के साथ पहली फिल्म मिल जाए इससे ज्यादा कोई लड़की और क्या चाहेगी. रवीना कहती है, "मॉडलिंग को मैंने अलविदा कह दिया है. अब वापसी का सवाल नहीं है." बड़े नामों के साथ पांच फिल्में मिल जाएं तो कहीं और जाने की वह सोचे भी क्यों.

◆ अब 'एंटर द ड्रेगन' का भारतीय संस्करण. मार्शल आर्ट पर बनी फिल्म 'द ब्लू क्रिस्टल' में वेशकीमती पत्थर के लिए बंगलूर में ही धक्कमपेल शुरू हो जाती है. यह पत्थर हांगकांग और भारत के बीच कहीं है. अंग्रेजी और चीनी भाषा में डब होने वाली इस फिल्म के नायक 26 वर्षीय **कुमार बंगरप्पा** कर्नाटक के नेता एस. बंगरप्पा के बेटे हैं. उन्हें बंगलूर में लगे अपने कट-आउट की बदौलत यह फिल्म मिली. पर वे अपने प्रदर्शन से बहुत संतुष्ट नहीं हैं, "मैं मार्शल आर्ट में चीनियों का मुकाबला नहीं कर सकता. वे बहुत ही तेज और निष्णात होते हैं." आप मुकाबले में उतरिए तो सही लोगों को कुंग-फू पसंद आता ही है.

बंगरप्पाः मुकाबले में

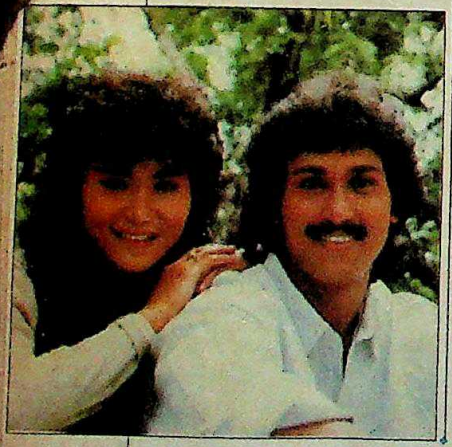

टेलीफोन बूथः अच्छा नमूना

है. निगम के एक प्रवक्ता बताते हैं कि इस खूबसूरत बूथ को सड़कों पर छोड़ दिया जाएगा.

जल्द ही पुश बटन और एसटीडी सुविधाओं वाले फोन भी राजमार्गों और बंबई तथा दिल्ली के हवाई अड्डों पर लगा दिए जाएंगे. लेकिन टेलीफोन निगम को खूबसूरती से ज्यादा गुणवत्ता पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए.

महाभारतः जयघोष

◆ भगवान का कभी अवसान नहीं होता. और एक बार वे पैसा बनाने का गुर जान जाते हैं तो फिर वे इस मामले में नश्वर प्राणियों को भी पीछे छोड़ देते हैं. **महाभारत** की टोली अपनी प्रसिद्धि को यों ही खो देना नहीं चाहती. सो, पूरी व्यापारिक बुद्धि का इस्तेमाल करते हुए वह लगभग दो साल चले धारावाहिक को साढ़े तीन घंटे की फिल्म में बदलने जा रहे हैं. इस फिल्म का प्रीमियर शो 26 अगस्त को बंबई में होगा. महाभारत के कृष्ण नितीश भारद्वाज कहते हैं, "यह हमारा आखिरी जयघोष होगा." निर्देशक रवि चोपड़ा पाकिस्तान में फिर जयघोष करना चाहते हैं बशर्ते अच्छी पेशकश हो.

◆ यह काली और पीली रंग और नाजुक बनावट की है लेकिन मारुति की टैक्सी नहीं, बल्कि यह महानगर टेलीफोन निगम की 'टेलीफोन बूथ का नमूना बनाइए' प्रतियोगिता में पुरस्कार जीतने वाला **टेलीफोन बूथ** है. खुद-ब-खुद जल उठने वाली बत्तियों से लैस यह बूथ पॉलीग्लास से तैयार हुआ

इंदी राणा

दीनबंधुः दाढ़ी के दम पर

● भागीरथी के किनारे दुंडा गांव के **दीनबंधु बाबा** अपनी दाढ़ी खोलते हैं तो वह 171 से.मी. तक लहराने लगती है. दाढ़ी को अगर कंघी से सीधा किया जाए तो इसकी लंबाई 10 से.मी. और बढ़ जाती है. लेकिन कंघी करना मुश्किल है सो बाबा इसे अपनी प्राकृतिक हालत में ही छोड़ देते हैं. कुछ शरारत से वे कहते हैं, "मैं आलसी बूढ़ा हूं. ईश्वर मेरे तुच्छ अहंकार को माफ करेगा." बाबा का नाम दिनों लिम्का रिकॉर्ड बुक में गया. बाबा का अपना विचार है कि दुनिया में 'बहुत कुछ जा रहा है' इसलिए वे इसके उलट यानी कुछ नहीं करते.

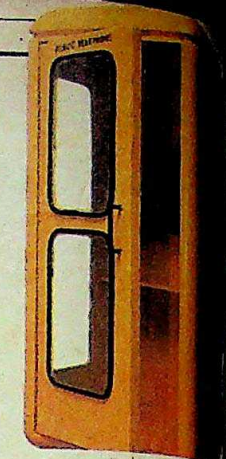

◆ पिछले एक वर्ष से दर्जन महिलाएं पुरुषों के वर्चस्व भारोत्तोलन में घुसपैठ की कोशि कर रही हैं. इस महीने पहली बार पेइचिंग में होने एशियाई खेलों में महिला खि भेजेगा. इन महिलाओं को रोज एक किलो चिकन, एक किल की खुराक और तगड़े शारी व्यायाम के साथ इस प्रतियो के लिए तैयार किया जा रह इनमें 21 वर्षीया **एन. कुंजरा देवी** जो फिलहाल विश्व की दो महिला भारोत्तोलक हैं प्रदर्शन देखने लायक है. वे किग्रा वजन उठा सकती है. चीन की भारोत्तोलक 165 वजन उठाकर पहले नंबर कुंजरानी की भविष्य योजनाएं? "मैं विश्व चैं बनना चाहती हूं. उसके बाद करके खेलों को अलविदा."

कुंजरानीः वजन की बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोड़ी अनोखी मेल अनोखा

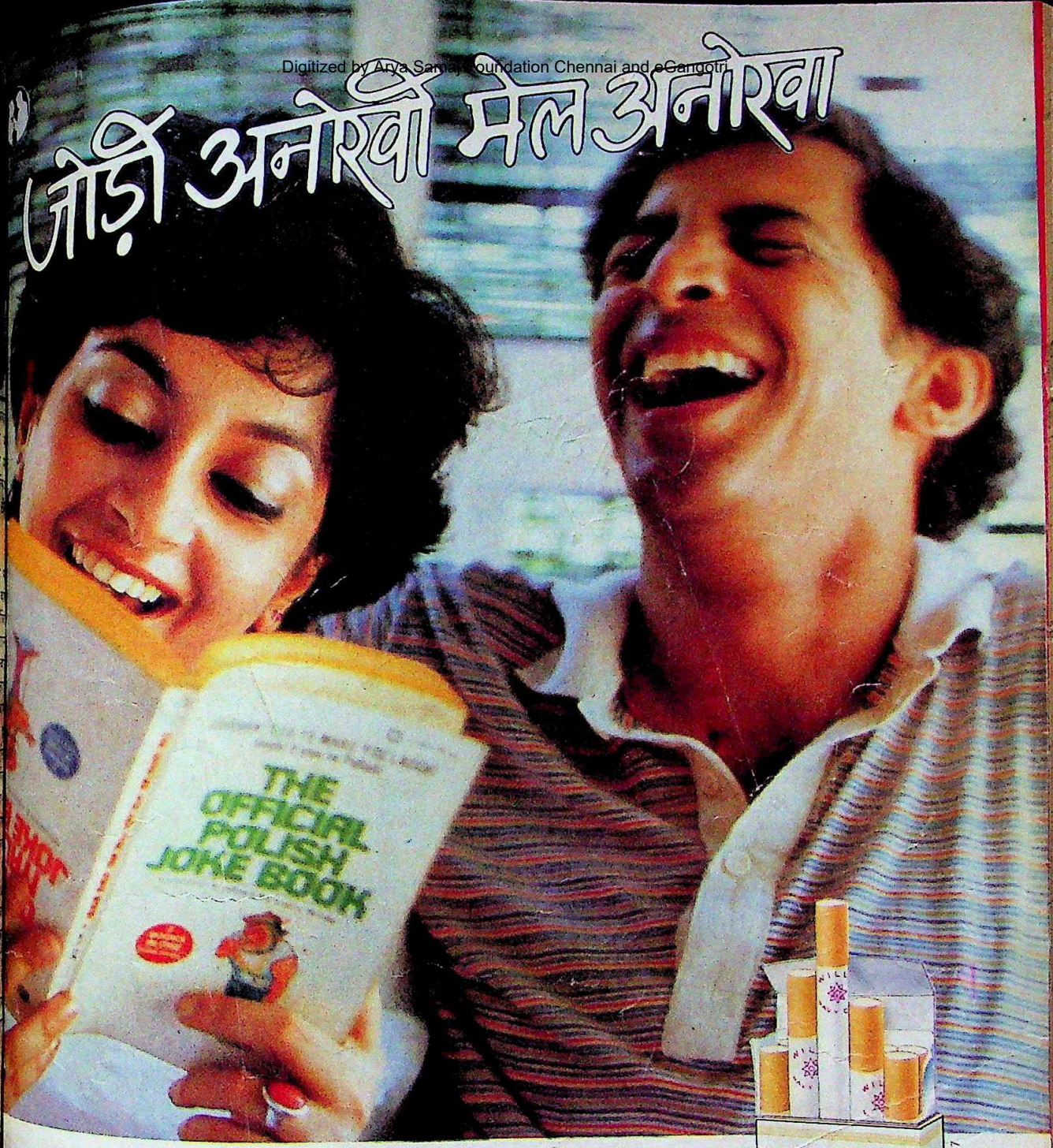

वर्षों पहले विल्स फ़िल्टर ने शुरू किया था सिगरेटों में फ़िल्टर का चलन। आज भी है यह सबसे बढ़िया। स्वाद में। तसल्ली में। हाथ से चुने वर्जीनिया तम्बाकू और शानदार फ़िल्टर के मेल का अनोखा संगम—विल्स फ़िल्टर। लाखों सिगरेट प्रेमियों ने इसे आज़माया...फिर हमेशा के लिए अपनाया।

HTA 3987

WILLS
FILTER

फ़िल्टर और तम्बाकू का अनोखा मेल

...टी सी लिमिटेड
...अपना एक ब्राण्ड
...में निर्मित

...चेतावनी:
...गरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है

STATUTORY WARNING
CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Some moments mean so much mo

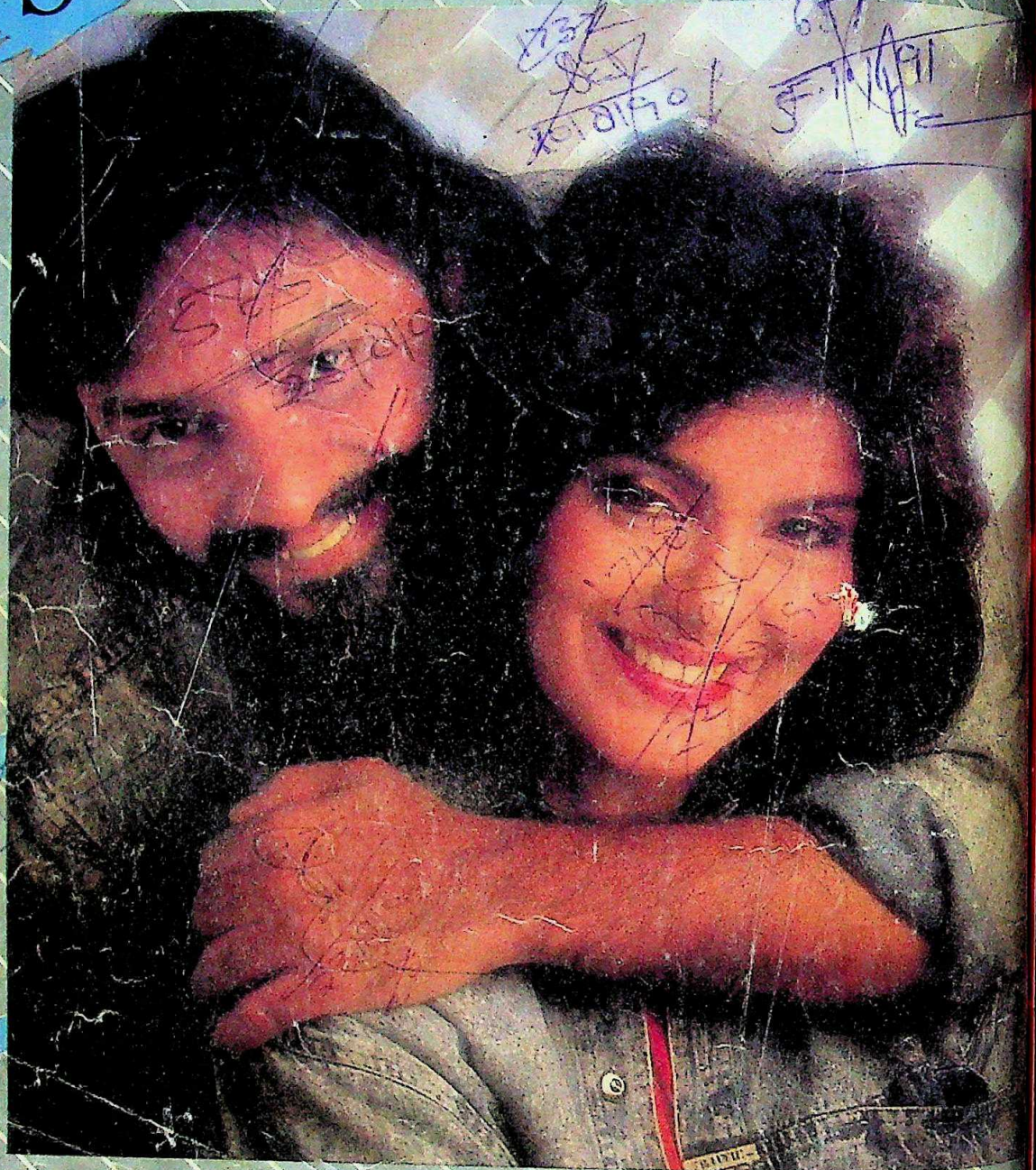

Moments of joy.
Moments of laughter.
Moments of togetherness.
Made more tasteful with Baba.
For complete tobacco satisfaction...
without lighting up.

The unbeatable great original.

BABA®
FLAVOURED CHEWING TOBACCO

STATUTORY WARNING:
Chewing Tobacco is Injurious to Health.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

संजय सिंह

जनमत सर्वेक्षण: सरकार के जमते-उखड़ते कदम

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोदी हत्याकांड: विस्फोटक अंत की शुरुआत

1-15 सितंबर 1990 7 रुपए

इंडिया टुडे

संपूर्ण समाचार पत्रिका

दिल्ली में आरक्षण विरोध

आरक्षण

ओट में वोट समाज पर चोट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

चुनिए वही जो सब से जुदा हो

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब से अनोखा सब से अलग यानी ऑल्विन

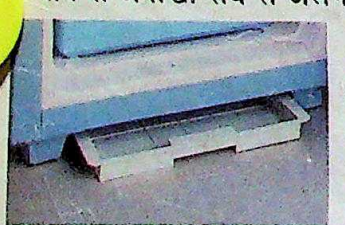

▲ बेआवाज मज़बूत भरोसेमंद आल्विन कम्प्रेसर हिटाची तकनॉलॉजी से बना है। इसीलिए बेआवाज रहे., विना झंझट काम करे, ▲ टिल्टिग बॉटल रैक्स ताकि बोतलें आसानी से सरकाई जा सकें ▲ डिफ्रॉस्टिग इसके लिये है एक सक्षम, बिना घिचपिच किए, तुरंत "सेल्फे ड्रेनिग सिस्टम" इससे रेफ्रीजेरेटर दोबारा खुद स्टार्ट हो जाता है ▲ वोल्टेज के उतार चढ़ाओ का इस पर कोई असर नहीं होता (170V से 250V) ▲ आल्विन भारत में रेफ्रीजेरेशन के अग्रगामी ▲ 165 लिटर सिगल डोर और 165, 300 व 380 लिटर डबल डोर मॉडल अनेक रंगों में सात साल की ग्यारंटी और सात साल के "फ्रेटॅक्शन कॉन्ट्रोक्ट" की अतिरिक्त सुविधा भी ▲ ISI

ALLWY
REFRIGERATO
QUIET · STURDY · FAITH

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अब इत्मीनान रखिए आपने वही चुना है जो सब से जुदा है. ऑल्विन.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाचार संकलन करने वालों के लिए घटनास्थल पर पहुंचना हमेशा से एक मुश्किल काम रहा है. संचार साधनों के विकास के कारण सिमटती जा रही दुनिया भर की खबरों की बढ़ती मांग को ध्यान में रखते हुए 'इंडिया टुडे' ने पेइचिंग, बुखारेस्ट, तेहरान और न्होम पेन्ह तक अपने लोग भेजे जिससे पाठकों को भारतीय नजरिए से वहां की घटनाओं की जानकारी हासिल हो सके. भारत को प्रभावित करने वाला खाड़ी संकट भी हमें ऐसा मामला लगा जिसका मौके पर जाकर जायजा लेने की जरूरत थी.

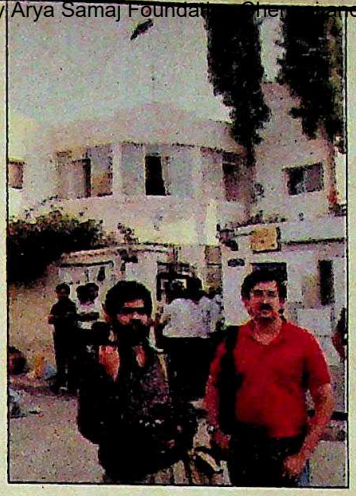

त्रिपाठी (दाएं) और भोजानी

लेकिन इसमें अजीब किस्म की मुश्किलें आईं. इराक, जो इस तूफानी संकट के केंद्र में है, और सऊदी अरब, जहां सद्दाम हुसैन को चुनौती देने के लिए बहु-देशीय सेनाएं खड़ी हैं, दोनों ही किसी भी भारतीय पत्रकार को अपने यहां आने के लिए वीसा देने से मना करते रहे. फिर मुंबई स्थित वरिष्ठ संवाददाता सलिल त्रिपाठी और फोटोग्राफर नामस भोजानी के लिए संयुक्त अरब अमीरात, जो इन देशों से एकदम साथ लगा है, पहुंचने के अलावा कोई चारा नहीं बचा. दुबई, अबू धाबी और बहरीन से गुजरते हुए और अनेक भारतीय व्यापारियों, अधिकारियों और राजनयिकों से बात करते हुए वे जॉर्डन के लिए वीसा पाने में सफल हुए जहां इराक और कुवैत से भागकर आए हजारों भारतीय ठहरे थे. मई में पहली बार खाड़ी में रिपोर्टिंग करने गए सलिल और नामस को इस यात्रा में एकदम ही अलग दृश्य देखने को मिले. कुछ ही महीने पहले की व्यापारिक गतिविधियों की गहमागहमी आज खाड़ी से गायब है. वह आज आतंक और अनिश्चितता की जकड़ में आ गया है. सलिल कहते हैं, "यह बदलाव हतप्रभ कर देता है, खास तौर से भारतीयों का मनोभाव, जिन्हें खाड़ी में बहुत ही उद्यमशील माना जाता रहा है." इस अंक में खाड़ी पर खास रपट के साथ ही केरल (जो इस संकट से सबसे अधिक प्रभावित हुआ है), नई दिल्ली और बंबई से भी रपटें हैं.

पिछले पखवाड़े 'इंडिया टुडे' का तेलुगु संस्करण शुरू हुआ. इस तरह इसके परिवार के सदस्यों की संख्या पांच हो गई. तमिल और मलयालम के साथ ही यह संस्करण 'इंडिया टुडे' को दक्षिण के अधिकांश हिस्सों तक पहुंचने में मदद करेगा. सदा की तरह हमारा उद्देश्य है भारतीयों की दिलचस्पी वाली घटनाओं की वस्तुपरक, विस्तृत और बहुआयामी खबरें देना. भाषायी संस्करण निकालना अधिक से अधिक पाठकों तक पहुंचने की हमारी कोशिश का ही हिस्सा है. इन संस्करणों की सफलता बताती है कि ये एक बहुत ही महत्वपूर्ण जरूरत को पूरा कर रहे हैं.

अरुण पुरी

इस पखवाड़े

ओट में वोट, समाज पर चोट

मंडल रिपोर्ट को लागू करने का प्रधानमंत्री का फैसला उनकी पार्टी के लिए भले ही वोट बैंक बनाएगा लेकिन देश को ऐसे जाति संघर्ष में भी झोंक देगा जो देश के सामाजिक तानेबाने को छिन्न-भिन्न कर सकता है.

आवरण कथा 42

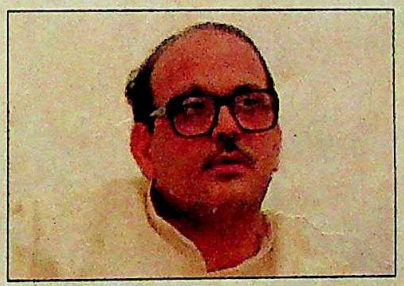

सरकार के जमते-उखड़ते कदम

'इंडिया टुडे' के लिए 'मार्ग' द्वारा कराए गए नवीनतम छमाही जनमत सर्वेक्षण से पता चलता है कि राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के कामकाज से देश भर में निराशा और नाराजगी का माहौल है.

जनमत सर्वेक्षण 20

सारे सपने चकनाचूर

कुवैत पर हुए इराकी हमले ने वहां से भारतीय मजदूरों को ही भागने पर मजबूर नहीं किया है बल्कि भारत के लिए विदेशी मुद्रा के एक महत्वपूर्ण साधन—तेल—के स्रोत को भी सुखा दिया है.

खास रपट 28

अगले पन्नों पर

कसौटी 9
तेवर 12
राजरंग 17
जनमत सर्वेक्षण:
सरकार के जमते-उखड़ते कदम 20
खास रपट
भाजपा और वामपंथी:
असमंजस में संगी-साथी 26
खाड़ी संकट: सारे सपने चकनाचूर 28
आजकल
पंजाब: शांति की मरीचिका 34
भारत-पाक झड़प: लापरवाही का नतीजा 35
बिहार: पुरस्कारों की रेवड़ियां 37
राजस्थान:
बुजुर्गों, 'बच्चों' में तनातनी 39
आवरण कथा
आरक्षण: ओट में वोट,
समाज पर चोट 42
अपराध
मोदी हत्याकांड:
विस्फोटक अंत की ओर 57
कुछ अपनी, कुछ परायी 74
आरपार 85
कहानी 88
परदे के उस पार 94
चर्चित चेहरे 96

आवरण: शरद सक्सेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

LIKE THE WARMTH IN YOUR HEART

TERENE/WOOL WORSTED FROM GWALIOR SUITING

GRASIM GWALIOR SUITING
IN A CLASS OF ITS OWN
A PRODUCT OF GRASIM INDUSTRIES LTD

40 DECADES OF CLASS

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनगिनत तहों से बना परिपूर्ण साप्ताहिक!

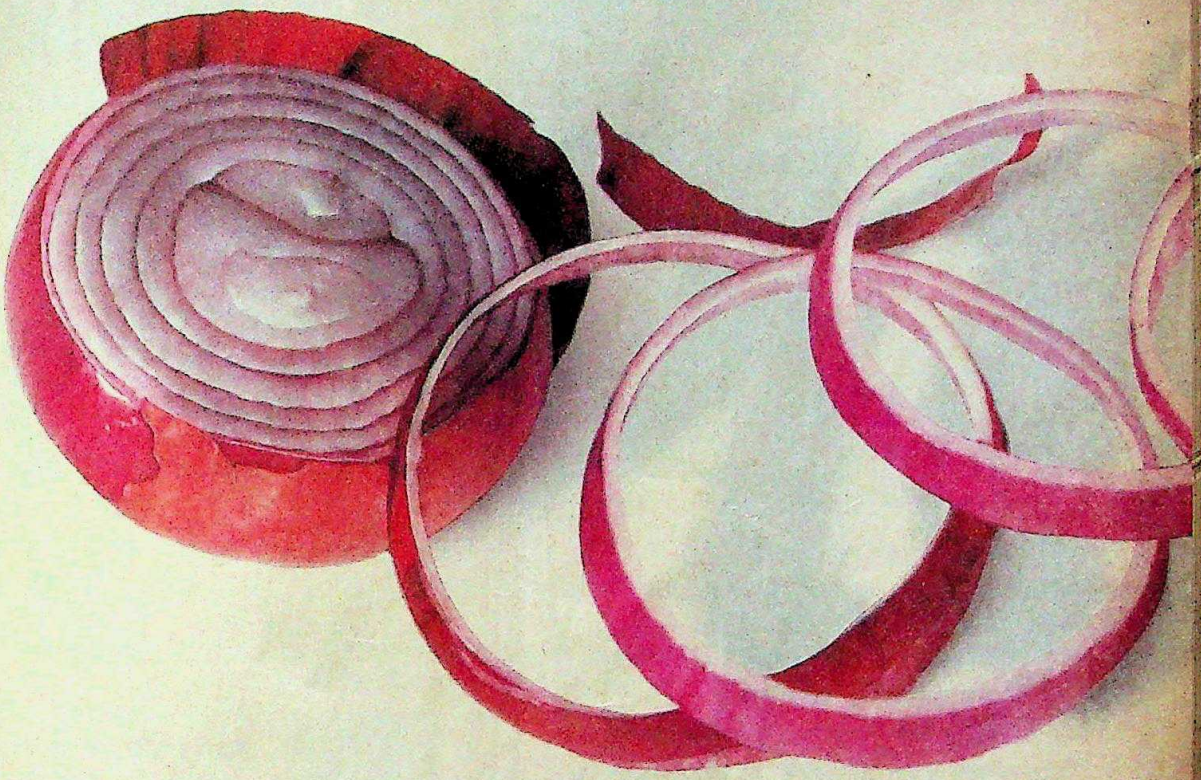

संडे मेल साप्ताहिक केवल समाचार पत्रिका ही नहीं, और भी बहुत कुछ... तह दर तह उभरता विविध रंगों का रोचक संगम.

समाचार टिप्पणियाँ, आलोचनात्मक लेख, सामाजिक गतिविधियाँ, खेलकूद, संगीत, कला, गपशप, हंसी-मज़ाक, हल्का-फुल्का व्यंग्य, शहर की हलचल और हर अंक के साथ एक खास, रंगबिरंगी पत्रिका!

यानी आखरी तह तक आपकी लागत का पूरा मूल्य.

सप्ताह भर की खबर, परिवार भर का मनोंरजन!

संडे मेल साप्ताहिक!

संडे मेल साप्ताहिक

सारे परिवार का एक ही अखबार

दिल्ली और कलकत्ता से प्रकाशित एकमेव साप्ताहिक

आप संडे मेल की प्रति स्थानिय पत्र विक्रेता से प्राप्त कर सकते हैं। या हमें इन पतों पर सम्पर्क करें:—
संडे मेल प्रसार व्यवस्थापक, प्रसार विभाग: नई दिल्ली: सी-43, नीति बाग, नई दिल्ली। फोन : 663243, 652916, 652923
कलकत्ता: फ्लैट नं. 5, 6 'चित्रकूट' 230 ए.ए.जे.सी. बोस रोड, कलकत्ता-700 020 फोन : 433247, 441017

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'डेनिम' जैसा वस्त्र न कभी बना, न कभी बनेगा. न वह दिन कभी आएगा जब यह फैशन में न होगा.

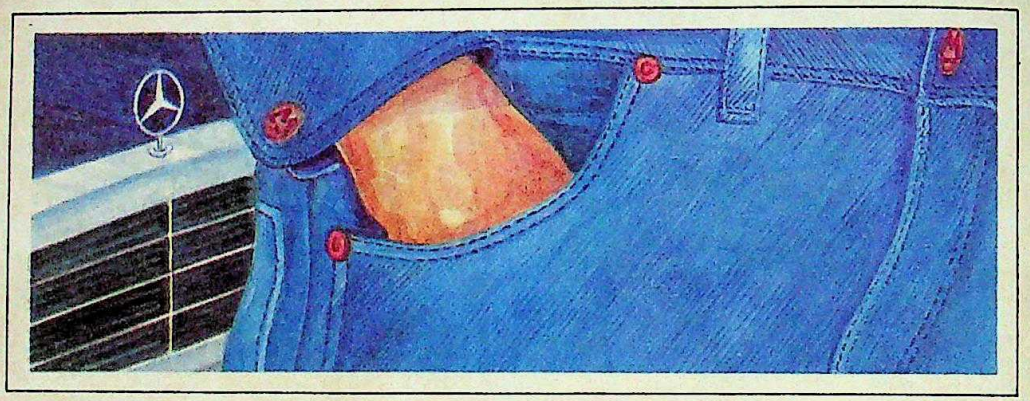

- फैशन तो बदलते रहते हैं पर डेनिम की चमक-दमक सदाबहार है.
- मॉडर्न सूटिंग्स अब दुनिया के जाने-माने फैशन डिजाइनरों को अच्छी किस्म का 'डेनिम' निर्यात करने के लिए एक नया, पूरी तरह निर्यात आधारित संयंत्र लगाने जा रहा है जिसका उत्पादन लक्ष्य 72 लाख मीटर होगा.
- मॉडर्न सूटिंग्स विशाल नीली लहर पर सवार होकर छा जाने के लिए पूरी तरह तैयार है.

Sobhagya/172/90

Modern
Suitings Limited
रजि. ऑफिस: डी-22, मोती डूंगरी रोड,
जयपुर-302004

आइए, मॉडर्न की नीली लहर में हम सब शामिल हो जाएं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिट्टी में ही खोट

बेनजीर की बरखास्तगी (आवरण कथा, 31 अगस्त) से इस तथ्य की पुष्टि हुई कि मुस्लिम देशों की मिट्टी पर लोकतंत्र का पौधा पनप ही नहीं सकता. नेपाल जैसे देश भी सदियों पुरानी राजशाही का जुआ उतारकर लोकतंत्र की कंटीली ही सही, डगर पर चल पड़े हैं. लेकिन पाकिस्तान को सैनिक तानाशाही के अलावा कोई और शासन प्रणाली रास ही नहीं आती.

—आनंद मोहन शरण, नई दिल्ली

■ बेनजीर सेना के हाथों कठपुतली बनी हुई थीं, यह तो मालूम था. लेकिन जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधि को इस तरह हटाया जाना यही साबित करता है कि सैनिक शासन पाकिस्तानी जनता की नियति बन चुका है.

—विनोद मढ़वाल, देहरादून (उ.प्र.)

अहंकार से मुसीबत

आवरण कथा 'मुसीबत में मुलायम' (15 अगस्त) से स्पष्ट हो गया है कि मुलायम सिंह यादव ने जो रणनीति अपनाई है, उससे उनकी नैया कभी भी डूब सकती है. धर्मनिरपेक्षता की दुहाई देते हुए उन्होंने पहले शंकराचार्य को गिरफ्तार किया और उसके बाद किसानों की उचित मांगों को कुचला. मुलायम सिंह के किसान विरोधी रुख का विरोध उनके ही दल के 66 विधायकों ने किया. इससे साफ है कि किसानों को दरकिनार कर पश्चिमी उत्तर प्रदेश में साख कायम नहीं रखी जा सकती.

—अरुण कुमार सिंह 'चंचल', पटना (बिहार)

■ आवरण कथा में मुलायम सिंह की सरकार के दोनों पक्षों का सही विवेचन किया गया है. टिकैत की चुनौती का उन्होंने ठीक तरह से सामना किया. जिस अलोकतांत्रिक तरीके से टिकैत अपनी जायज-नाजायज मांगें मंगवाने लगे हैं, वह ठीक नहीं. टिकैत को यदि गिरफ्तार नहीं किया जाता तो लखनऊ में भी वही हाल होता, जो बोट क्लब पर हुआ था.

—नवीन रावत, मुरादाबाद (उ.प्र.)

■ उत्तर प्रदेश जनता दल पर आए संकट के लिए मुलायम सिंह ही जिम्मेदार हैं. उनके दंभ और दूसरों को तुच्छ समझने की प्रवृत्ति से सब नाराज हैं. उनकी सरकार की किसान समर्थक छवि भी एक झटके में चूर-चूर हो गई है. हिस्ट्रीशीटरों को पनाह देने की वजह से उनकी सरकार बदनाम तो पहले से ही थी.

—सांवरमल मील, सीकर (राज.)

■ मुलायम सिंह अगर सोचते हैं कि वे सख्त शासक बनने के चक्कर में जनता की

आवाज को दरकिनार कर देंगे तो यह उनकी बहुत बड़ी भूल होगी. उन्हें शायद याद नहीं कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश में किसान यूनियन के समर्थन के बिना वे मुख्यमंत्री नहीं बन सकते थे. यूनियन के कार्यकर्ताओं पर लाठीचार्ज कर उन्होंने उनके दिलों पर जो जख्म दिए हैं वे कभी नहीं भरेंगे.

—रोमी खुल्लर, पुरकाजी (उ.प्र.)

आधार पर चोट

'कद ऊंचा ही हुआ' (15 अगस्त) शीर्षक रिपोर्ट में पुलिस द्वारा किसानों पर की गई ज्यादतियों का ब्यौरा पढ़ा. यह ज्यादती निंदनीय है. इस पिटाई में टिकैत की पत्नी बलजोरी देवी को चोट लगी. यादव सरकार को इस निरंकुशता पर शर्म आनी चाहिए.

—गैलेंद्र धर्माधिकारी, इंदौर (म.प्र.)

■ यादव की छोटी-मोटी सफलताओं ने उनमें अत्यधिक आत्मविश्वास भर दिया. और इसी के अतिरेक में वे अपने आधार यानी किसानों पर भी प्रहार कर बैठे. अपनी राह में जो कांटे उन्होंने बिछाए हैं, उसकी चुभन देर-सबेर उन्हें जरूर होगी.

—सुरेश बाटड़, वानगांव (महाराष्ट्र)

अमानवीय दिखावा

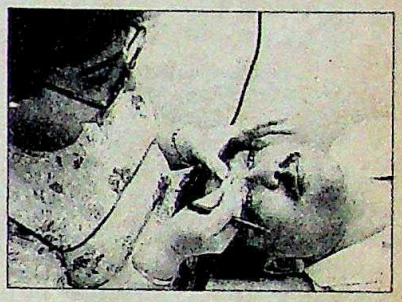

'अमीरी का फूहड़ प्रदर्शन' (15 अगस्त) कुछ-कुछ वैसा ही है, जैसा हिंदुजा तथा सिंघिया की बेटी की शादी में हुआ था. भारत जैसे विकासशील देश के लिए तो ऐसे अपव्यय दुखद ही नहीं, अमानवीय भी हैं. हमारे देश में ऐसी तड़क-भड़क शोभा नहीं देती.

—अजय सक्सेना, पटना (बिहार)

अपना रास्ता आप बनाएं

कसौटी 'विकल्प पर विचार जरूरी' (15 अगस्त) पढ़ी. यदि ब्रिटेन के संसदीय लोकतंत्र का प्रयोग भारत में आशाजनक फल नहीं दे सका तो उसके विकल्प में अमेरिका की अध्यक्षात्मक शासन प्रणाली (राष्ट्रपति शासन व्यवस्था) से भी आस लगाना उचित नहीं है. यह भी हमारे लिए एक आयातित शासन पद्धति ही होगी. जरूरत इस बात की है कि हम भी ब्रिटेन और अमेरिका की भांति अपनी परिस्थितियों के अनुकूल एक मौलिक शासन पद्धति विकसित करें, न कि दूसरे देशों की शासन पद्धतियों की

वर्ष: 4, अंक: 21, 1-15 सितंबर 1990

■ संपादकीय कार्यालय: लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001. फोन: 331 5801-4. टेलेक्स: 31-61245 INTO IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली. ■ मुख्य सर्कुलेशन कार्यालय: इंडिया टुडे सर्कुलेशन मैनेजर, एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001. फोन: 3313076-8, टेलेक्स: 31-62634 INTO IN, तार: मर्कुलेट, नई दिल्ली. ■ मुख्य विज्ञापन कार्यालय: 28 ए और बी, जॉली मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. फोन: 2026152, 2029326, 2029435, टेलेक्स: 11-5373 THOM IN, तार: लिवमीडिया, बंबई. ■ क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय: के-9, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001, फोन: 3325378, 3323576, 3321323, 3321273; टेलेक्स: 31-62124 THOM IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली ● फागुन चैंबर्स, 28 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105. फोन: 477188, टेलेक्स: 041-6177 INTO IN, तार: लिवमीडिया, मद्रास ● 74/1 सेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001. फोन: 568448, 579037, 579089, टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN, तार: लिवमीडिया, बंगलूर ● 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700016 फोन: 445398, 447726, टेलेक्स: 021-3138 INTO IN, तार: लिवइन-मीडिया, कलकत्ता. ● कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता. ● लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नकल ही करते रहें.

—श्याम बिहारी श्रीवास्तव, शहडोल (म.प्र.)

उपेक्षा कैसे जायज

ईसाइयों के प्रति म.प्र. सरकार के गुस्से का जो कारण 'प्रचारकों पर प्रहार' (15 अगस्त) में बताया गया है उससे सहमत नहीं हुआ जा सकता. क्या मुख्यमंत्री को पता नहीं कि वनवासी क्षेत्रों में शिक्षा और स्वास्थ्य की क्या व्यवस्था है. यदि स्कूल और अस्पताल हैं भी तो अध्यापक और डॉक्टर नदारद. ऐसे में मिशनरियां जो कुछ कर रही हैं, उनकी उपेक्षा भी तो नहीं की जा सकती.

—रानोराकेश पस्तारिया, हरदा (म.प्र.)

■ भाजपा ने ईसाई मिशनरियों के खिलाफ जो मुहिम छेड़ी है, वह स्वागत-योग्य है. देश के पूर्वांचल में ये संस्थाएं जैसा विष घोल रही हैं, वैसा पूरे देश में घोलना चाहती हैं. इसलिए उनकी हर गतिविधि की जांच की जानी चाहिए.

—राकेश कुमार, दिल्ली

घिनौना खेल छोड़ें

'मात देने के दांवपेंच' (15 अगस्त) पढ़कर सीमा क्षेत्र में भारतीय सेना के

चंगुल में आए घुसपैठियों और बरामद हथियारों से अवगत होकर खुशी हुई. परंतु कश्मीरी अवाम को हम अगर देश की मुख्य धारा में नहीं ला पाएं तो यह बहुत खतरनाक बात होगी.

—आई.डी. खजूरिया, कठुआ (जम्मू-कश्मीर)

■ राज्यपाल गिरीशचंद्र सक्सेना के नए कदम कश्मीर घाटी को कैसा रूप देंगे, यह तो वक्त ही बताएगा. लेकिन जब तक भारत के कर्णधार अपनी राजनीति का घिनौना खेल घाटी में खेलते रहेंगे और आतंकवादी पुलिस थानों से निकलते रहेंगे, तब तक घाटी का रंग लाल ही रहने की उम्मीद है.

—दिलीप चतुर्वेदी, कलकत्ता (प.बंगाल)

निश्चय का बयान

विश्वनाथ प्रताप सिंह से 'मुलाकात' (15 अगस्त) से लगता है कि उन्होंने

मोर्चा सरकार को नई एवं स्वच्छ गति प्रदान करने का निश्चय किया है. मंत्रिमंडल से देवीलाल की बरखास्तगी क्या उनके इस संकल्प की पुष्टि नहीं करती कि अब मुझे 'अधिक सख्ती से काम लेना होगा'. काश! ऐसा कदम उन्होंने सत्ता संभालते ही उठाया होता तो यह नौबत न आती.

—दिलीप कुमार, औरंगाबाद (बिहार)

टकराव का रास्ता

'परिवर्तन की पीड़ा' (15 अगस्त) नेपाल की अंदरूनी राजनैतिक उथल-पुथल को उजागर करती है. नेपाल की जनता अभी लोकतंत्र का भरपूर मजा ले भी नहीं पाई थी कि टकरावों की कड़वाहट वहां शुरू हो गई है.

—मधुरेंद्र कुमार कुशवाहा, चंपारण (बिहार)

संकीर्ण मनोवृत्ति

गजरौला का 'घिनौना कृत्य' (15 अगस्त) सभ्य समाज का कैंसर है जो तेजी से फैलता जा रहा है. लेकिन इसे सांप्रदायिक रंग देना संकीर्ण और घटिया मानसिकता का परिचायक है क्योंकि यह किसी वर्ग विशेष का मुद्दा नहीं है.

—ओ.पी.चौधरी, कुम्हेर (राजस्थान)

दुखती रग पर चोट

'कगार से चोट खाकर वापसी' (15 अगस्त) दिल्ली में चली राजनैतिक नौटंकी का निष्पक्ष आकलन है. आपने जनता दल और उनके 'सारथियों' की हर दुखती रग पर चोट की है.

—संजय जैन, देवरी (महाराष्ट्र)

■ जब-जब राजनीति में 'व्यक्तित्व' आपस में टकराते हैं, ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है. कोई भी व्यक्ति या पद देश से ऊपर नहीं होता. बरबादी की कगार से लौटने वाला या तो बहुत ऊपर उठता है, या फिर गर्त में मिलकर अपना वजूद खो देता है. मूल्यों का राग अलापने वाले राजनीतिकों को यह समझ लेना चाहिए. अपनी सरकार की 'अंतरिम कलह' को लोकतांत्रिक परंपराओं की संज्ञा देना वी.पी.सिंह का गलत सोच है.

—संजय कुमार दीक्षित, बरेली (उ.प्र.)

सही माने में महामानव

अब्दुल सत्तार एधी बेशक 'मौत से जूझते शहर का मसीहा' (15 अगस्त) हैं. जब वे जातीय गिरोहों के बीच हो रही गोलीबारी में घायलों को उठाते हैं तो गोलीबारी का रुक जाना स्पष्ट करता है कि प्रत्येक वर्ग वहां उनका सम्मान करता है. फिर वे ऐसा कुछ क्यों नहीं करते कि जातीय फसाद हों ही नहीं.

—चंद्रप्रकाश बुद्धिराजा, रोहतक (हरियाणा)

■ मौत से जूझते शहर कराची में एधी जैसे शख्स जरूर ही खुदा की देन हैं. आज जबकि हर देश हिंसा और आतंक के साये में जी रहा है, वहीं एधी और मदर टेरेसा जैसी हस्तियां प्रेम और दया की लौ जलाए रोशनी बिखेर रही हैं.

—रुचि तिवारी, इलाहाबाद (उ.प्र.)

■ आज के स्वार्थपरक समाज में जहां व्यक्ति लाशों के ढेर पर बैठकर भी धर्म और जाति के आधार पर खुद को बड़ा प्रदर्शित कर गौरवान्वित होता है, मजहबी कट्टरता से परे एधी साहब सचमुच बेजोड़ हैं. एधी जैसे कर्मठ व त्यागी व्यक्तित्व की जरूरत न सिर्फ कराची बल्कि हर शहर और हर गांव को है.

—रेखा अग्रवाल, धनबाद (बिहार)

■ मजहबी कट्टरता व सियासी दबाव के माहौल में एधी जैसे मसीहा का उदय व सफलता पाकिस्तान के लोगों के उनके प्रति विश्वास से ही संभव है. पाकिस्तान की धार्मिक कट्टरता की जो तस्वीर हमारे जेहन में थी वह इससे धुंधली हुई है. लेकिन ऐसे निस्वार्थ समाजसेवी अकेले ही कब तक समस्याओं का निदान करते रहेंगे.

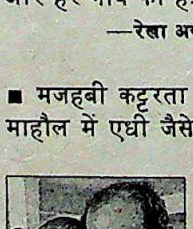

—मनोज कुमार पिल्लै, अमरावती (महाराष्ट्र)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकृत विक्रेता

उत्तर प्रदेश

☐ **इलाहाबाद:** मै० गुरु प्रसाद हीरा लाल जैन, जैन भवन चौक, • मै० गाबरटी हाउस, 6-C, कमला नेहरू रोड, • मै० अल्का इंटरप्राइसिस, 30 एम०जी० रोड, सिविल लाईन, • मै० जैन ट्रेडिंग कं०, 1143, कटरा क्रौसिंग, • मै० एस० नसीम अहमद एण्ड कं०, 144, चौक ☐ **आगरा:** मै० आगरा बर्तन भंडार, 30/113, आजाद गली, कसेरय बाजार, • मै० आहूजा बर्तन भंडार, कसेरय बाजार, • मै० ओसवाल बर्तन भंडार, दौलत मार्किट, जौहरी बाजार, ☐ **अनपारा:** मै० मोती रेडियो सेन्टर, ☐ **अलीगढ़:** मै० जय दीपक बर्तन भंडार, महावीर गंज, • मै० दीपक बर्तन भंडार, मृगाण बाजार, रेलवे रोड़, ☐ **बेहराइच:** मै० श्याम लाल एण्ड सन्स, चौक बाजार, ☐ **बान्दा:** मै० बंगाल क्रोकरी हाउस, गसी गंज, ☐ **बलिया:** मै० विजय गन हाउस, स्टेशन रोड, ☐ **बस्ती:** मै० सुशील कुमार बर्तन मरचेन्ट, मंगल बाजार, ☐ **देवरिया:** मै० ओम स्टोर्स, समीप कोतवाली, मोती लाल रोड़, ☐ **देहरादून:** मै० सत्य प्रकाश एण्ड कं०, 70/5, पलटन बाजार, • मै० कैपिटल स्टोर्स, 99 पलटन बाजार, • मै० बाता राम, विनोद कुमार, पलवाला, ☐ **फरुखाबाद:** मै० राज ग्लास एण्ड क्रोकरी स्टोर्स, नेहरू रोड़, • मै० सालिग राम भोला नाथ बर्तन स्टोर्स, चौक बाजार, ☐ **गोरखपुर:** मै० अमर क्रोकरी सेंटर, माया बाजार पर, • मै० गणेशरी लाल राम निवास अजेंसिस, गोल कोतवाली रोड़, • मै० गणेशरी लाल राम निवास अजेंसिस, गोल पर, • मै० मार्डन क्रोकरी मुजियम, 18 वाटर वर्क्स बिल्डिंग, गोल पर, • मै० फैन्सी बर्तन स्टोर्स, रेती चौक, • मै० विजय अजेंसिस, 16, 17 टाउन हाल मार्किट, • मै० गणेशरी लाल एण्ड सन्स, सिनेमा रोड़, • मै० श्री गणेश इंटरप्राइसिस, 16 वाटर वर्क्स बिल्डिंग, ☐ **हरदोई:** मै० श्याम लाल एण्ड सन्स, रेलवे गंज, • मै० काशी राम बनवारी लाल, रेलवे गंज, ☐ **हलद्वानी:** मै० सरदार क्रोकरी हाउस, नैनीताल रोड, ☐ **हापुड़:** मै० क्रोकरी सेन्टर, रेलवे रोड़, ☐ **झांसी:** मै० काशी प्रसाद मिथेले रारण, शराफा बाजार, • मै० बम्बई स्टील एम्पोरियम, 175 जवाहर चौक, ☐ **जौनपुर:** मै० ग्लास स्टोर्स, हर लालका रोड़, ☐ **कानपुर:** मै० एशिया लाईट हाउस, मैस्टन रोड, • मै० एस०एम० रशीद एण्ड सन्स, 43/205, मैस्टन रोड, • मै० गोपी लाल गुप्ता एण्ड कं०, 46/63, हटीया, • मै० लक्ष्मी बर्तन स्टोर्स, 108/130 सीसामऊ बाजार, • मै० नफीस क्रोकरी हाउस, मूलगंज, • मै० कुमार फैंसी स्टोर्स, 114 नवीन मार्किट, • मै० मौ० हनीफ मो० अनीस, मैस्टन रोड, • मै० कृष्णा कुमार, उमेश चन्द्र, 68/10 भूसा टोली, • मै० रस्तोगी स्टील सैंटर, 67/5 हुला गंज, ☐ **लखनऊ:** मै० कन्हैया लाल, पराग दास, पीली कोठी, याहिया गंज, • मै० इंदर चन्द जैन एण्ड सन्स, अभिनाबाद, • मै० राम सरन एण्ड कं०, अमीनाबाद, • मै० संसार एजेंसिस, मुमताज मार्किट, • मै० चमन लाल अग्रवाल एण्ड सन्स, नजीराबाद, ☐ **लखीम पुर खेरी:** मै० अम्बर लाल, राधे श्याम, चंपा भवन मैन बाजार, ☐ **मेरठ:** मै० शकुन बर्तन भंडार, बेगम पुल, • मै० बाता राम गुप्ता एण्ड सन्स, बेली बाजार, • मै० कृष्णा क्रोकरी एण्ड डिपार्टमेंटल स्टोर्स, सदर बाजार, • मै० सोना इलेक्ट्रीक एजेंसी, 184 सदर बाजार, ☐ **नजीबाबाद:** मै० श्याम लाल एण्ड सन्स, चौक, ☐ **मुजफ्फर नगर:** मै० मित्तल इंटरप्राइसिस, 101 भगत सिंह रोड, ☐ **रामपुर:** मै० अग्रवाल क्रोकरी हाउस, मिस्टन गंज, • मै० सैलकराज एम्पोरियम, 22 साफदर गंज, ☐ **रायबरेली:** मै० गुप्ता ट्रेडर्स, कापर गंज, • मै० राधे श्याम धनश्याम दास गुप्ता, मलखाना, • मै० राज बन्धु, मिलन सिनेमा रोड, ☐ **रुपायधिया:** मै० राम दूत स्टोर, पो०ओ० रुपायधिया, • मै० श्री राम स्टोर्स, पो०ओ० रुपायधिया, ☐ **सहारनपुर:** मै० निहाल चन्द हरबंस लाल, 15 नेहरू मार्किट, • मै० जसवंत राय नरेन्द्र कुमार, लक्ष्मी मार्किट, ☐ **शाहजहांपुर:** मै० सहगल गिफ्ट सेन्टर, गोविन्द गंज, • मै० सहगल क्रोकरीज, सदर बाजार, ☐ **शामली:** मै० सुगन चन्द सोहन लाल बड़ा बाजार, ☐ **सुल्तान पुर:** मै० कमाली चलनी हाउस, शाह गंज, • मै० दशरथ लाल एण्ड सन्स, चौक घटेरी, ☐ **वाराणसी:** मै० भारत ग्लास स्टोर्स, दाल मंडी, • मै० आइडियल ग्लास हाउस, दाल मंडी, • मै० मित्तल ट्रेडर्स, D-11/8 कोतवाल पुरा, बांस फाटक, • मै० गिरधर दास एण्ड सन्स, बांस फाटक, • मै० मोहन लाल कृष्ण चन्द, D-10/15 विश्वनाथ गली, • मै० स्टेनलेस स्टील सेन्टर, बांस फाटक, • मै० ग्लास एण्ड प्लाईवुड सेन्टर, CK/39/9, दाल मंडी, ☐ **मुरादाबाद:** मै० नवीन ग्लास एजेंसी, कटरा पूरन जाट, गंज बाजार, ☐ **गोंडा:** मै० पारस स्टील एम्पोरियम, उतरोली रोड,

कलकत्ता

☐ **कलकत्ता:** मै० कृष्णा ट्रेडिंग कं०, P-11, चितपुर स्पुर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वार्थ के खेल

कहानी 'शिकारगाह' (15 अगस्त) पढ़कर यह एहसास हुआ कि व्यक्ति अपने स्वार्थ के लिए कैसे-कैसे हथकंडे अपनाता है. ऐसी उत्कृष्ट कहानी के लिए लेखिका वाकई बधाई की पात्र हैं.

—**असलम खां**, धामणगाव (महाराष्ट्र)

■ कहानी गिरते सामाजिक एवं आर्थिक मूल्यों का दर्शन कराती है. समाज में व्याप्त कुरीतियां और बुराइयां जानबूझकर या प्रलोभन देकर युवाओं पर लाद दी जाती हैं जिससे समाज का एक क्रियाशील तबका विकलांग बनकर रह जाता है.

—**कु. मंजु बाटड़**, शेखावटी (राजस्थान)

कारगर कदम

लालू प्रसाद यादव ने सिद्ध कर दिया है कि वे एक स्वतंत्रचेता और दबंग मुख्यमंत्री हैं. 'अनोखी योजना' (15 अगस्त) के माध्यम से उन्होंने भारतीय लोकतंत्र में सबसे ज्यादा अनियंत्रित तथा उच्छृंखल नौकरशाही पर अंकुश लगाने की दिशा में एक कारगर कदम उठाया है. लगता है वे बिहार को सुधारकर ही दम लेंगे.

—**डॉ. रघुनंदन चिले**, दमोह (म.प्र.)

आरोप का पर्दाफाश

'झुठलाए आरोप' (15 अगस्त) पढ़ा. बोफोर्स मामले में अजिताभ बच्चन को

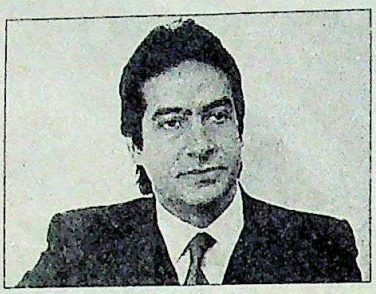

विजय मिली. विजय और स्वीडिश अखबार का माफी मांगना जाहिर करता है कि वी.पी.सिंह ने बच्चन बंधुओं पर जो आरोप लगाए वे राजनैतिक स्वार्थ के अलावा और कुछ नहीं थे.

—**उदय प्रकाश श्रीवास्तव**, गोरखपुर (उ.प्र.)

■ बच्चन बंधुओं पर बोफोर्स सौदे की दलाली का आरोप ब्रिटिश अदालत ने झुठला दिया है. अगर भारत सरकार के पास दलाली के प्रमाण हैं तो सिद्ध करे अन्यथा आरोप वापस लेकर जनता की गलतफहमी दूर करे.

—**हरीश शर्मा 'पप्पू'**, जोधपुर (राजस्थान)

एक और बहाना

पुरुष ब्यूटी पार्लर पर जानकारी 'हम किसी से कम नहीं' (15 अगस्त) से आश्चर्यमिश्रित दुख हुआ. यानी अभिजात्य वर्ग ने पैसा बहाने का एक और बहाना ढूंढ़ लिया है.

—**अविनाश वाबीकर**, सेंधवा (म.प्र)

यह बड़प्पन नहीं

राज्य दर्पण में 'नतमस्तक मुख्यमंत्री' (15 अगस्त) पढ़ा. मुलायम सिंह यादव ने अपने नाई को जिस तरह दुकान खुलवाकर दी है वह उनके बड़प्पन का नहीं बल्कि 'खुली तानाशाही' का परिचायक है. प्रधानमंत्री आखिर चौटाला से ध्यान हटाकर मुलायम सिंह यादव की हिटलरी तानाशाही पर कब अंकुश लगाएंगे.

—**कमल सिंह**, इलाहाबाद (उ.प्र.)

यदि आपका जन्म १९६५ से पहले हुआ है तो इस विज्ञापन को ध्यान से पढ़िए

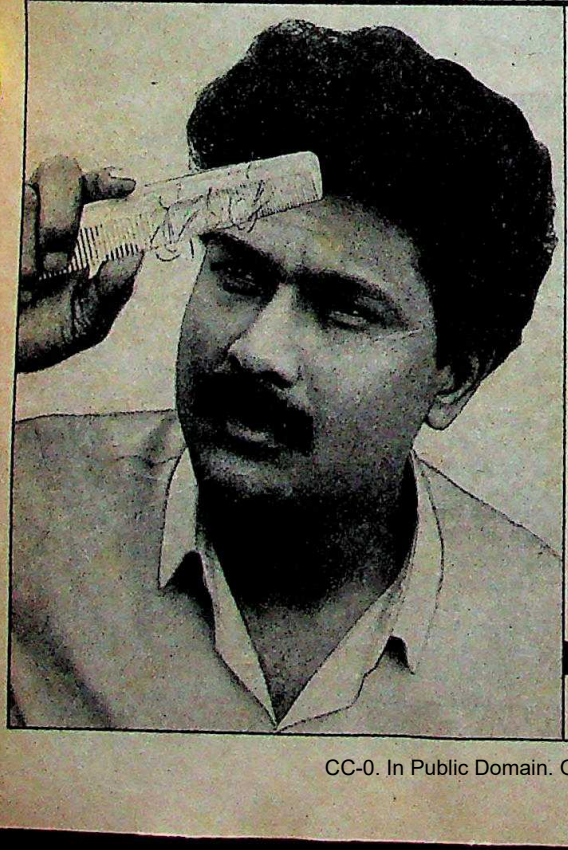

२५ साल से अधिक उम्र वाले १० में से ९ लोगों के बाल झड़ रहे हैं....लेकिन उन्हें इसका पता नहीं!

क्या आप उन ९ लोगों में से एक हैं? तब तो आज ही यह परीक्षण कीजिए.
अपने बालों को ज़ोरों से कंघी कीजिए. अगर कंघी पर बाल उतर आएं तो समझ लीजिए आपके बाल झड़ रहे हैं.

इसका हल है — प्योर सिल्विक्रिन
बालों के झड़ने का कारण है — ज़रूरी अमिनो एसिड्स की कमी — जो आपके बालों की कुदरती ख़ुराक हैं. केवल प्योर सिल्विक्रिन में ही वैज्ञानिक अनुसंधान से बना वह फार्मूला है जो इस कमी को पूरा करता है.
इसके कारण हैं:

१. प्योर सिल्विक्रिन १७ अमिनो एसिड्स का अनोखा मिश्रण है — आपके बालों की कुदरती ख़ुराक.

२. रेडियो ट्रेसिंग का प्रयोग करने वाली विश्व प्रसिद्ध अनुसंधान तकनीक यह प्रमाणित करती है कि प्योर सिल्विक्रिन, बालों की जड़ों तक बहुत जल्दी पहुँचती है, बालों में कुदरती ख़ुराक की कमी पूरी करती है और बालों को फिर से स्वस्थ बनाती है.

उत्तम परिणाम के लिए प्योर सिल्विक्रिन को सर की त्वचा पर तब तक प्रतिदिन दो बार मलिए जब तक आपके बालों का स्वास्थ्य सामान्य नहीं हो जाता.

जल्दी कीजिए! आज ही प्योर सिल्विक्रिन आज़माइए.

प्योर सिल्विक्रिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनैतिक बाजीगरी की बू

सभी रेखाचित्र: अजीत नैनन

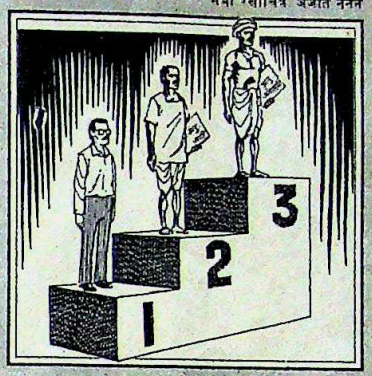

प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने विवादास्पद आरक्षण नीति को देश पर थोपने में जिस कथित दूरदर्शितापूर्ण संकल्प का परिचय दिया है उससे राजनैतिक बाजीगरी की ही बू आती है. मंडल आयोग की सिफारिशों के अनुसार पिछड़ों, हरिजनों, और अनुसूचित जातियों को शिक्षा, रोजगार और प्रोन्नति में आरक्षण देकर उन्हें एक विशाल वोट बैंक बनाने के अपने राजनैतिक मकसद में विश्वनाथ कितने कामयाब होते हैं यह एक अलग मुद्दा है. लेकिन इस फैसले की कितनी भारी कीमत पहले से ही तरह-तरह से विभाजित इस देश को चुकानी पड़ेगी यह सोचकर ही मन कांप जाता है.

एक ऐसी व्यवस्था को लागू करना, जो शैक्षणिक और पेशागत तरक्की के लिए जाति को आधार बनाती हो और उसे औपचारिक मान्यता प्रदान करती हो, द्वेष और दुराग्रह की उन भावनाओं को और भड़काना ही माना जाएगा जिनके कारण भारतीय समाज सदियों से दूषित होता रहा है. बिहार, गुजरात, और राजस्थान में जारी हिंसा भावी का ही संकेत है.

आज सबसे बड़ी जरूरत निष्पक्षता और कानून व व्यवस्था के सख्त पालन की है. बिहार के गांवों में अगर दलितों का शोषण होता है या उनका कत्लेआम होता है तो कानून को पूरी सख्ती से लागू करना चाहिए. शिक्षा और रोजगार में जाति, लिंग या धर्म के आधार पर भेदभाव के सभी मामलों के खिलाफ़ कानूनी कार्रवाई की जानी चाहिए. सरकार को जाति के आधार पर कोटे भरने की जगह यह देखना चाहिए कि शुरू से ही सबको समान अवसर मिलें. वंचित और दलित तबके को अच्छी बुनियादी शिक्षा तथा आपात आर्थिक सहायता की गारंटी देनी चाहिए, उनके छात्रों को सहायता और छात्रवृत्ति देनी चाहिए तथा उन्हें उनकी पसंद के क्षेत्र में आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए.

गरीबी मिटाने का उद्देश्य प्रतिस्पर्द्धा के स्तर में गिरावट ला कर पूरा नहीं किया जा सकता. कटोरी भर मलाई में से जाति के आधार पर झगड़े भरा बंटवारा करने की जगह मलाई की मात्रा बढ़ाना ही स्थायी समाधान हो सकता है. मगर इसके लिए संकल्प लेना होगा तीव्र आर्थिक विकास का, उत्पादन की बाधाओं को दूर करने का और तीव्र उद्योगीकरण का. समाधान ज्यादा से ज्यादा लोगों के लिए रोजगार मुहैया कराना है, न कि आरक्षित लोगों के लिए आरक्षित रोजगार मुहैया कराना.

ईंधन के लिए इल्म

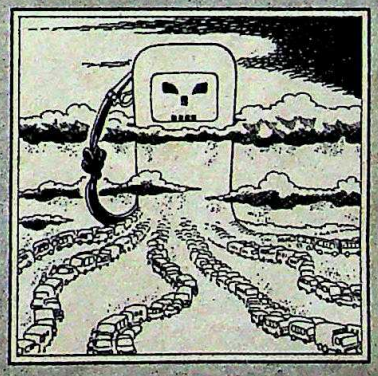

खाड़ी में माहौल जिस तरह गरमाता जा रहा है और भुगतान संतुलन के मामले में भारत की जो दुरावस्था है, उन सबके मद्देनजर हमें ईंधन की भारी कमी का सामना करना पड़ सकता है.

ऐसा हो गया तब कंजूसी बरतना बेहद जरूरी हो जाएगा. इस लिहाज से सरकार जिन उपायों पर भी विचार कर रही हो, उसे रविवारों को पेट्रोल पंपों को बंद रखने की अपनी नीति को दोहराना नहीं चाहिए. इस दोषपूर्ण नीति का नतीजा यह हुआ कि लोग पेट्रोल की बेवजह जमाखोरी करने लग गए. इसके कारण इसकी कालाबाजारी भी शुरू हो गई.

आज के भारत को हम मोटरों का देश कहें तो अतिशयोक्ति न होगी. पिछले दशक में यहां सड़कों पर दौड़ रही मोटरों की संख्या 51 लाख से बढ़ कर 1.6 करोड़ हो गई. अकेले दिल्ली में प्रतिदिन 700 वाहन रजिस्टर किए जाते हैं. पेट्रोल की खपत घटाने की किसी भी नई नीति में ईंधन की बरबादी रोकने के साथ-साथ उसके कुशल उपयोग का भी प्रावधान होना चाहिए. यही मौका है जब लोगों को अपनी जीवन शैली में उस तरह के बदलाव के लिए प्रेरित किया जा सकता है जो ईंधन की बचत के लिए अनुकूल हो.

शहरों और कस्बों में मोटर चलाना और उसे जहां चाहे खड़ी कर देना अब व्यापक अधिकार नहीं माना जाना चाहिए. दिल्ली जैसे बड़े शहरों में ऐसे स्थान क्यों नहीं बनाए जा सकते जहां वाहनों को खड़ा करने पर रोक हो. वास्तव में बेवजह ईंधन जलाने वाले वाहनों को शहरों में जाने से रोकने के लिए मुफ्त पार्किंग की सुविधाएं खत्म करनी होंगी. गाड़ी खड़ी करने की अनुमति सिर्फ गराजों और उन खास-खास इलाकों के लिए ही दी जानी चाहिए जहां पार्किंग मीटर लगे हों.

दूसरा उपाय यह हो सकता है कि मुख्य शहर और दफ्तरों के इलाके से दूर पार्किंग स्थल बनाए जाएं और वहां से बाजारों तथा दफ्तरों तक लोगों को पहुंचाने के लिए बसें चलाई जाएं. इससे शहरों में भीड़भाड़ तो घटेगी ही, निजी मोटरों को प्रतिदिन कम दूरी भी तय करनी पड़ेगी जिससे ईंधन की खपत घटेगी. इसके अलावा, सुबह और शाम के व्यस्त समय में कार में अकेले बैठकर घूमने वालों से फीस वसूली जाए. इससे पड़ोसियों को अपने वाहन में ले कर चलने तथा बसों में यात्रा करने की आदत को बढ़ावा मिल सकता है.

यही मौका है कि सरकार तेजी से फैलते महानगरों के लिए नई और तेज यातायात व्यवस्था पर विचार करने के साथ-साथ ऐसे सख्त निर्देश तय कर सकती है जिससे ईंधनखोरों पर प्रतिबंध लग सकता है. तब वाहन निर्माताओं को ऐसे वाहन बनाने ही पड़ेंगे जो कम ईंधन खाते हों.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Avenues:HH:1009:90

ये घुसे! ये घूंसे!!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Chennai and eGangotri

हमारे स्टाफ़ फ़ोटोग्राफ़र द्वारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी चहेती पत्रिका
आपके दरवाज़े पर
न खरीदने का झंझट...
न खत्म होने का डर

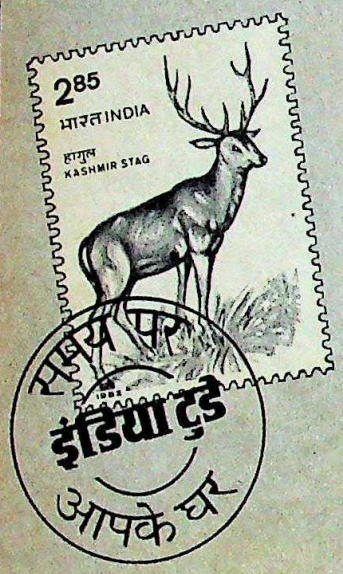

इस सुविधा का लाभ उठाइए.
अपनी चहेती इंडिया टुडे
घर बैठे – नियमित पाइए.
न खरीदने जाने की जरूरत...
न अंक खत्म होने का डर,
इंडिया टुडे
समय से पहुंच जाए आपके घर!

बस कूपन भर कर भेज दीजिए,
देर मत कीजिए!

नाम: _____

डाक पता: _____

मूल्यः वार्षिक रु. 132/-
भुगतान का माध्यम-चैक/मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट
(दिल्ली से बाहर के चैकों के लिए 5/- रु. प्रति चैक की अतिरिक्त राशि देय है)
कृपया चैक निम्नलिखित नाम पर बनाएं और इस पते पर भेजें:
लिविंग मीडिया इंडिया लि.
पो. बॉ. नं. 706,
फरीदाबाद- 121 007
(हरियाणा)

इंडिया टुडे
देश की भाषा में देश की धड़कन

MILESTONES/IT/120

● मेरी अपनी एक शख्सियत है...मुझसे बलराम जाखड़, अंतुले आदि की तरह बरताव नहीं किया जा सकता. ■ **रामकृष्ण हेगड़े,** *माया*

● या तो मैं आपका विश्वास प्राप्त करूंगा या मेरी लाश ही यहां से जाएगी..मैं चाहूंगा कि मेरी लाश पंजाब की पावन धरती पर ही रहे. ■ **विश्वनाथ प्रताप सिंह,** *लोपोके (पंजाब) की आमसभा में*

● मेरा स्पष्ट मत है कि उच्च जातियों के बच्चों को आर्थिक आधार पर आरक्षण मिलना ही चाहिए. ■ **मुलायम सिंह यादव,** *संडे ऑब्जर्वर*

● आरक्षण विरोध के नाम पर बाप की बताई फाइलों को बेटे आग लगा रहे हैं. ■ **लालू प्रसाद यादव,** *हिंदुस्तान*

● मुख्यमंत्री पद मेरे बाप-दादा की जागीर नहीं और न लोकतंत्र में नादिरशाही चल सकती है कि मेरे बाद मेरा बेटा राजा बन जाए. असंतुष्ट मुझे ही आश्वस्त कर दें कि मैं बहुमत विधायकों का समर्थन खो चुका हूं. उसके बाद मैं अपनी ओर से कोई विवाद ही नहीं रहने दूंगा. ■ **हुकम सिंह,** *दैनिक ट्रिब्यून*

● राम जन्मभूमि पर अगर मंदिर अयोध्या में नहीं बनेगा तो क्या लंदन में बनेगा? ■ **लालकृष्ण आडवाणी,** *राजस्थान पत्रिका*

● वास्तव में सरकार की अपनी राष्ट्रीयता और अपनी नागरिकता के बारे में कोई नीति न होने के कारण हर आदमी इस देश को धर्मशाला समझकर चला आता है. ■ **सुबोधकांत सहाय,** *पांचजन्य*

● ऐसा लग रहा है टीम में दो कप्तान हो गए हैं. ■ **मंसूर अली खां पटौदी,** *नई दुनिया*

● प्रेरणा जैसी कोई चीज मेरे खेल के साथ जुड़ी हो ऐसा मैं नहीं मानता. ■ **विश्वनाथन आनंद,** *राजस्थान पत्रिका*

● मैं फिल्मों में काम करता रहूंगा. मुझे मालूम है कि मेरा युग समाप्त हो गया है, लेकिन फिर भी. ■ **अमिताभ बच्चन,** *धर्मयुग*

● भारतीयों के बारे में मैंने एक चीज पाई है कि दस में से आठ औरतें आकर्षक होती हैं जबकि दस में से आठ मर्द अनाकर्षक. ■ **जीनत अमान,** *मोमाइटी*

● आदमी को अपने काम में दिलचस्पी लेनी चाहिए. जिस दिन मैं अपने काम से नाखुश हो जाऊंगी उस दिन उस फिल्म उद्योग छोड़ दूंगी. ■ **आएशा जुल्का,** *स्क्रीन*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्चे लोग सच्चा आनन्द

रेड एण्ड व्हाइट

वही न. १ स्वाद

चेतावनी सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है।

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाड़ी के देशों में हमने लोगों को के साथ भारी परिमाण में वायदा लेने के लिये उत्साहित किया

सिर्फ खाड़ी के देशों में ही नहीं, यू एस ए, [illegible] आस्ट्रेलिया, जापान व न्यूजीलैण्ड, बांगलादेश, चीन और पश्चिम जर्मनी तथा अन्य बहुत से देशों में अपना टाटा स्टील, विभिन्न प्रकार के उत्पाद निर्यात कर रहा है।

इसका उद्देश्य बिल्कुल स्पष्ट है। कम्पनी का देश को विश्व के बाजार में लम्बी अवधि तक क्वालिटी लीडर बनाये रखते हुए सुनिश्चित विदेश मुद्रा अर्जित करना एक राष्ट्रीय प्राथमिकता है।

केवल छः वर्षों में टाटा स्टील (कुल व्यवसाय १४६ करोड़ रुपये) देश के वृहत्तम निर्यातकों में से एक बन गया। इस श्रृंखला में सिर्फ इंजीनियरिंग सामान व कच्चे माल का निर्यात ही नहीं बल्कि खाद्य पदार्थ जैसे गोलमिर्च, कॉफी और यहाँ तक टाइगर झींगा भी शामिल हैं। आधुनिकीकरण के लिये भारी परिमाण में उपकरण और कच्चे माल

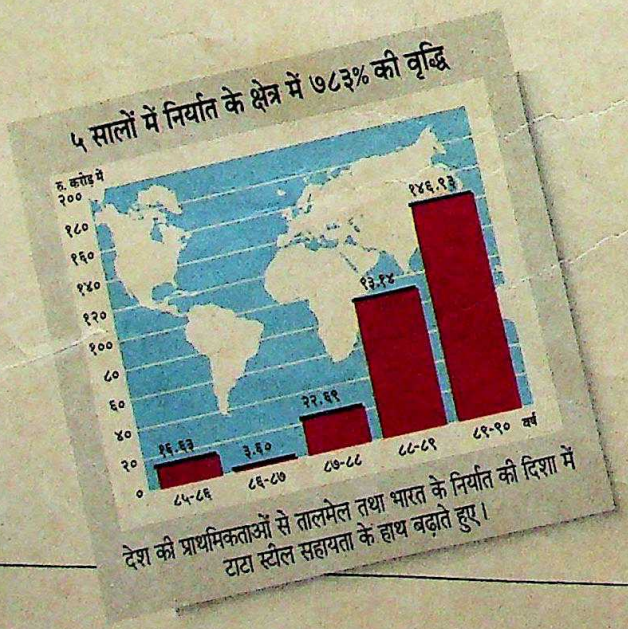

देश की प्राथमिकताओं से तालमेल तथा भारत के निर्यात की दिशा में टाटा स्टील सहायता के हाथ बढ़ाते हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ोगों का थोड़ी सी गोलमिर्च

...ायर रॉड

...या

...नहीं, यू एस ए त...
...ड, बांगलादेश, चे...
...हुत से देशों में अ...
...त्पाद निर्यात कर...

...ट है। कम्पनी त...
...लम्बी अवधि त...
...ए सुनिश्चित कि...
...प्राथमिकता है।
...ल (कुल व्यवस...
...त्तम निर्यातकों में...
...ं सिर्फ इंजीनिय...
...ति ही नहीं क...
...कॉफी और च...
...आधुनिकीकरण...
...और कच्चे माल...

आजादी के बावजूद आज टाटा स्टील पूर्णतया एक नेट एक्सपोर्टर की श्रेणी का बन गया है। सन् १९८५-८६ में टाटा स्टील ने निर्यात के क्षेत्र में एक राष्ट्रीय पुरस्कार जीता।

आज टाटा स्टील सागर पार देशों में अपनी ...दर्शी विशेषज्ञता प्रसारित कर रहा है, ताकि लम्बी अवधि तक के लिये सारी दुनिया में भारत की बुनियाद पक्की हो जाये।

टाटा स्टील एक्सपोर्ट्स :

प्लेट और स्ट्रक्चरल आधारित इंजीनियरिंग उत्पाद	- वायर रॉड, रीइन्फोर्सिंग बार, स्ट्रकचरल्स, ट्यूब, वायर, बार, क्रेन, रोल्स, बेयरिंग आदि
कच्चे माल	- क्रोम अयस्क कॉन्सेनट्रेट्स, मैंगनीज़ अयस्क, फेरो-मैंगनीज़, फेरो-क्रोम, चार्ज क्रोम, रिफ्रैक्टरीज़ आदि
अन्य सामग्रियाँ	- गोलमिर्च, कॉफी और ब्लैक टाइगर झींगा।

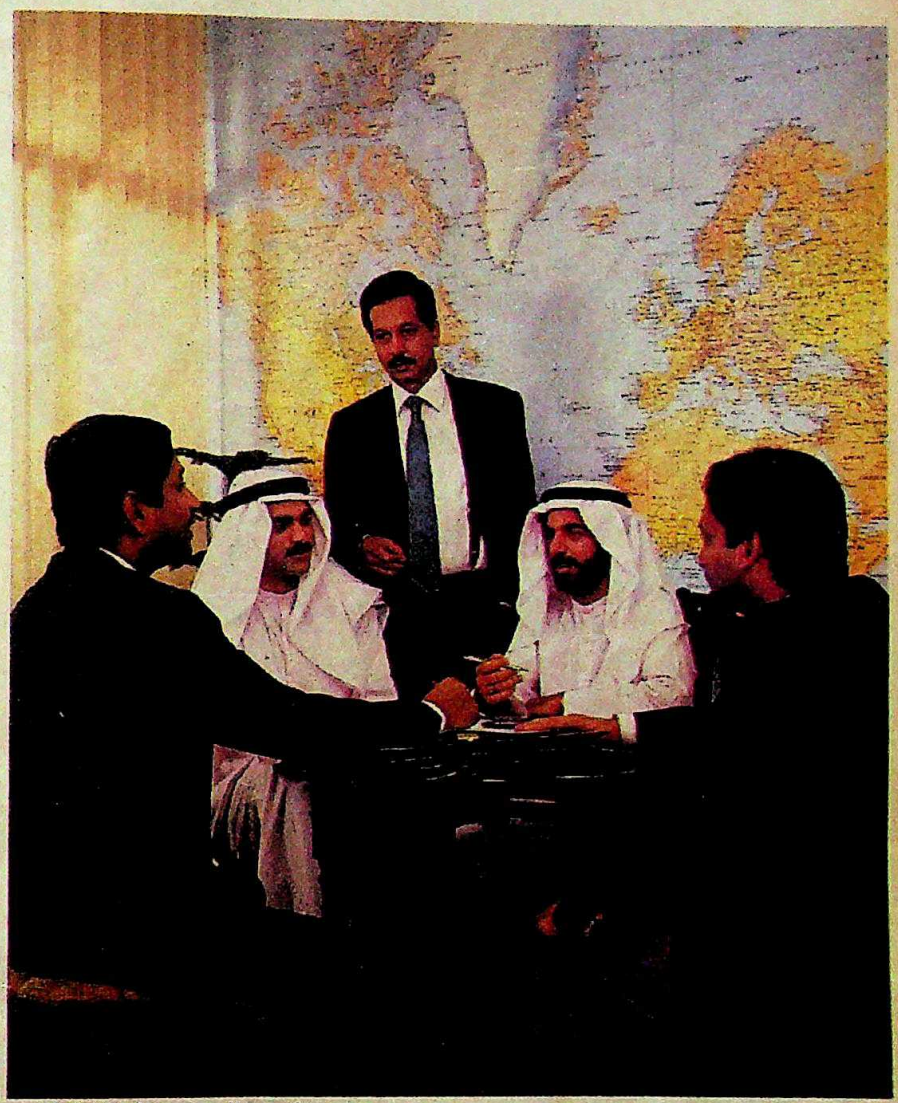

खाड़ी के देशों में नये बाजार खुलने पर वार्तालाप

TATA STEEL
DECADE OF EXPORTS
1990 2000

टाटा स्टील
सबसे पहले, अब भी सबसे आगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेज़ारी कलेक्शन्स के सूटिंग्स

पॉ लि ए स्ट र ब्लें डे ड सू टिं ग

CC-0. In Public Domain.

औ र अ ब रे डी मे इ् स, बॉ म्बे डा इं ग की ओ र से – वि वा ल्डी श र्ट

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संघर्ष का फल

● इन्फैंट्री के महानिदेशक लेफ्टिनेंट जनरल एस.सी. सरदेशपांडे को सेना के वरिष्ठतम अधिकारियों ने जिस तरह विदा किया, उसे लेकर सैन्य

अधिकारियों में काफी असंतोष व्याप्त हो गया है.

इन अधिकारियों को लगता है कि सरदेशपांडे के साथ ऐसा सलूक इसलिए किया गया क्योंकि वे अपने सैनिकों की भलाई के लिए संघर्ष करते रहे.

पिछले साल मद्रास में भारतीय शांति सेना मुख्यालय के प्रमुख के नाते इस सम्मानित सैनिक ने उन वरिष्ठ शांति सैनिकों की हिमायत की थी, जिन्हें मद्रास में सैन्य आवास सुविधा उपलब्ध नहीं कराई गई और नतीजतन उन लोगों को महंगे निजी मकान किराए पर लेकर रहना पड़ा था.

उन्होंने इस खर्च की अदायगी के लिए सेना मुख्यालय पर जोर डाला. समस्या का समाधान न किए जाने की स्थिति में उन्होंने जल्दी सेवानिवृत्ति लेने का प्रस्ताव भी पेश कर दिया.

इस साल मई में, सरदेशपांडे को लेफ्टिनेंट जनरल के रूप में पदोन्नति दे दी गई और सेना मुख्यालय में नियुक्त कर दिया गया. खर्च की अदायगी भी तब तक कर दी गई. लेकिन इस तंत्र की एक खासियत यह भी है कि वह ऐसे लोगों को मुश्किल से ही माफ करता है, जो उसकी खिलाफत करते आए हों. लिहाजा, पिछले महीने सरकार ने समय से पहले सेवानिवृत्त होने के उनके अनुरोध को 'स्वीकार' कर लिया.

विशिष्टतम दर्शक

● हर नई फिल्म जिस तरह रोमांस की धारा प्रवाहित कर रही है, उसे देखते हुए मानना पड़ेगा कि बंबई फिल्म उद्योग प्रेम की गिरफ्त में है. लेकिन कौन सोच सकता था कि यह बीमारी राष्ट्रपति भवन को भी गिरफ्त में ले सकती है.

पिछले पखवाड़े राष्ट्रपति आर. वेंकटरामन ने कई महत्वपूर्ण व्यक्तियों को छोटी-सी चाय पार्टी पर आमंत्रित किया. यह आम बात है. लेकिन चौंकाने वाली बात यह रही कि राष्ट्रपति प्रासाद में रोमांटिक फिल्म 'मैंने प्यार किया' का विशेष रूप से प्रदर्शन किया गया. विशिष्ट दर्शकों में फिल्म निर्माता बड़जात्या, श्रीमती शंकरदयाल शर्मा, मुख्य न्यायाधीश सव्यसाची मुकर्जी और उनकी धर्मपत्नी के अलावा दो

सभी कार्टून: अजीत नैनन

अपेक्षाकृत युवा हृदय, राजीव और सोनिया गांधी भी शामिल थे.

उनके गांधी

● पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की गतिविधियों, उनके राजनैतिक इरादों, उनके कार-दौरों और रेल तथा सड़क-यात्राओं में उनकी दिलचस्पी कभी कम होती दिखाई

नहीं देती. उनकी इन गतिविधियों को सुरक्षित रखने के संकल्प पर कायम शख्सियत हैं अभिनेत्री से निर्माता बनी सिमी ग्रेवाल. पिछले साल उन्होंने किसी से भी ज्यादा समय उनके साथ गुजारा.

इस सबकी देन थी 'इंडियाज़ राजीव', जो राजीव के कामकाज की दयनीय-सी झांकी प्रस्तुत करती थी और जिसे आलोचकों ने विभिन्न कमियां बताते हुए ठुकरा दिया था. लेकिन ग्रेवाल की अंधभक्ति पर इस सबका कोई असर नहीं हुआ. वे अपनी उसी योजना पर काम करते हुए कैमरे पर रोज कई घंटे लगा रही हैं. उनका इरादा अपने हीरो के विपक्षी नेता रूपी अवतार के बदलते हुए मूड की फिल्म बनाने का है. उन्होंने इस नए वृत्तचित्र का नाम तय नहीं किया है लेकिन यह तो समय ही बताएगा कि ग्रेवाल का गांधी उस गांधी की टक्कर का होगा या नहीं.

ताऊ के चहेते

● केंद्रीय मंत्रिपरिषद से देवीलाल का निष्कासन असंख्य प्रतिक्रियाएं पैदा कर रहा है. वह भी ऐसे स्थानों पर जहां उसकी उम्मीद नहीं की जा सकती. महत्वपूर्ण व्यक्तियों की सुरक्षा के लिए उत्तरदायी अधिकारी इस बारे में कानाफूसी को लेकर काफी परेशान रहे.

खुफिया विभाग ने उन्हें संकेत दिया कि हरियाणा कैडर के कुछ इंस्पेक्टर और सिपाही ताऊ को उप-प्रधानमंत्री पद से निरादर के साथ हटाने को लेकर गुस्से से लबरेज हैं. फिलहाल, डर इस बात का है कि वे अपनी ड्यूटी के पालन में कोताही दिखा सकते हैं.

लेकिन जहां श्रीमती गांधी की हत्या के बाद सभी सिख सिपाहियों और अफसरों की सघन जांच की गई थी, वहीं मौजूदा

स्थिति के कारण तंत्र थोड़ा तो सतर्क हो ही गया है. अब हरियाणवी पुलिस कर्मचारियों पर विशेष रूप से निगाह रखी जा रही है. एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने स्वीकार किया, "हमें किसी गंभीर स्थिति के पनपने की कोई संभावना दिखाई नहीं देती है." साथ ही उसने कहा कि इस बात की जांच की जा रही है कि क्या वर्दी वाले जाटों को राजनैतिक तौर पर भड़काया जा रहा है.

...और एक चुटकी

एक सवाल जगह-जगह सिर उठा रहा है. प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह नैतिक रूप से हमेशा देवीलाल से बाजी क्यों मार ले जाते हैं? इसलिए कि वे ताऊ से ज्यादा पाक-साफ हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैंक में सांप

■ अपने ग्राहकों के पैसे की रक्षा और बढ़ोतरी के लिए बैंकों में आपसी होड़ तो चलती ही रहती है, नए ग्राहकों को लुभाने के लिए वे आए दिन नई से नई योजनाएं भी पेश करते रहते हैं. और अब

सभी कार्टून: बयतो

लगता है कि कुछ बैंक अपने कर्मचारियों और ग्राहकों के हितों की सुरक्षा के लिए संपेरों की सेवाएं भी लेने जा रहे हैं. कम-से-कम हैदराबाद के एक राष्ट्रीय बैंक का पिछले पखवाड़े का अनुभव तो यही बताता है.

इस बैंक में पिछले महीने कम-से-कम चार बार सांप निकलने की घटनाओं से कर्मचारी इतने आतंकित हुए कि बैंक का काम अस्त-व्यस्त हो गया. हालात इतने बदतर हो गए कि लगभग रोज ही सांप देखे जाने की अफवाहें फैलने लगी. आए दिन सांप के नाम पर मचने वाले शोर और आतंक से कर्मचारी तथा ग्राहक बाहर भागने लगे. एक दिन तो फर्श पर रेंगते हुए सांप ने ऐसा आतंक मचाया कि आखिर हारकर बैंक मैनेजर ने एक संपेरे को बुला भेजा.

संपेरा आया और उसने थोड़ी ही देर में दो सांप पकड़ लिए. हालांकि इस घटना के बाद संपेरे और मैनेजर का दावा था कि बैंक में अब कोई सांप नहीं है लेकिन डरे हुए कर्मचारियों ने बैंक के भीतर बैठकर काम करने से इनकार कर दिया है.

कर्मचारियों ने अब यह मामला क्षेत्रीय कार्यालय को भेजा है और यह फैसला किया है कि जब तक वे आश्वस्त नहीं हो जाते तब तक बरामदे में बैठ-कर काम करेंगे.

वीडियो-लीला

■ वीडियो की दिन-ब-दिन बढ़ती लोकप्रियता का एक उदाहरण देश भर में केबल-टीवी का बढ़ता चलन है. लेकिन मनोरंजन का यह माध्यम कभी-कभी हास्यास्पद और मुश्किल स्थितियां पैदा कर देता है. पिछले दिनों गुजरात के जूनागढ़ शहर में भी कुछ ऐसी ही घटना घटी.

लगभग 200 घरों में वीडियो कार्यक्रम उपलब्ध कराने वाली एक केबल-टीवी कंपनी ने एक दिन घोषित किया कि उस रात 'रामायण' का प्रसारण किया जाएगा. रात हुई और घरों के बड़े-बूढ़े, महिलाएं और बच्चे टीवी के सामने आ जुटे. 'रामायण' शुरू हुआ. लगभग दस मिनट तक भगवान राम की लीलाएं दिखाने वाले परदे पर अचानक ही अश्लील फिल्म का प्रसारण शुरू हो गया और लगभग 15 मिनट चलता रहा.

केबल-टीवी कंपनी की इस हरकत से हैरान दर्शकों को सारा माजरा बाद में समझ आया. पुलिस ने जब कंपनी के मालिक से पूछताछ की तो पता चला कि खुराफात की जड़ में वह वीडियो लाइब्रेरी थी जो सामान्य फिल्मों के अलावा अश्लील फिल्में भी किराये पर देती थी. जांच से बचने के लिए ऐसे कैसेटों पर 'रामायण' जैसे लेबल चिपका दिए जाते थे और पहले 10-15

मिनट तक मूल फिल्म की रिकार्डिंग के बाद गरमागरम मसाला रिकार्ड कर दिया जाता था. इस मामले में दुकानदार की भूल से असली 'रामायण' की जगह नकली 'रामायण' का कैसेट इस कंपनी को दे दिया गया था.

रिकार्डतोड़ करामात

■ जब नौकरी के लिए उपलब्ध स्थान थोड़े हों और नौकरी पाने के इच्छुक उम्मीदवार बहुत ज्यादा हों तो स्वाभाविक ही है कि चुनाव करने वाले अधिकारी ज्यादा से ज्यादा होनहार

उम्मीदवारों की उम्मीदें बांध बैठें. पिछले दिनों मध्य प्रदेश के पुलिस विभाग में सिपाहियों की भर्ती के सिलसिले में उम्मीदवारों ने अपनी बहादुरी के जो रिकार्डतोड़ कारनामे दिखाए उन्हें संभाल पाना अब अधिकारियों के लिए जी का जंजाल बन गया है.

122 पदों पर सिपाहियों की भर्ती के लिए विभाग के विज्ञापन के जवाब में 4 हजार से अधिक उम्मीदवार सामने आए. इतनी बड़ी संख्या में उम्मीदवारों से निबटने का आखिर यह रास्ता निकाला गया कि लिखित परीक्षा के अलावा उन्हें 100 मीटर दौड़, मैराथन ' और गोलाफेंक जैसे मुकाबलों में भी उतारा जाए. मुकाबले हुए और इनमें अपने-अपने चहेते उम्मीदवारों की मदद के नाम पर कुछ अधिकारियों ने गजब के गुल खिलाए. इन परीक्षाओं की जांच करने वाले अधिकारियों के सामने होनहार उम्मीदवारों ने दौड़ और गोलाफेंक में राष्ट्रीय रिकार्ड से भी बेहतर प्रदर्शन किया और एक उम्मीदवार ने तो 8.4 सेकंड में 100 मीटर की दूरी दौड़कर बेन जॉनसन के विश्व रिकार्ड को भी शर्मिंदा कर दिया. उम्मीद की जा रही है कि अगले ओलंपिक खेलों में भारतीय टीम का चुनाव मध्य प्रदेश पुलिस विभाग में से किया जाएगा.

प्रेमी-प्रतिद्वंद्वी

■ राजनीति तेरे रंग न्यारे ! राजनीति में उभरने की आकांक्षा रखने वाले फिल्मी अभिनेताओं को अब अपने साथ काम करने वाली अभिनेत्रियों का चयन करने से पहले यह उक्ति मद्देनजर रखनी होगी. क्या पता कल को वह तारिका प्रतिद्वंद्वी राजनैतिक खेमे में खड़ी हो और दर्शक उनके प्रेम दृश्यों को बर्दाश्त न कर पाएं और हिंसक हो उठें जिससे थिएटर मालिक को लाखों का चूना लग जाए. इसकी एक बानगी पिछले दिनों मद्रास में सचमुच देखने को मिली.

हुआ यूं कि शहर के एक सिनेमा घर में करीब 20 साल पुरानी तमिल फिल्म 'राजा' दिखाई जा रही थी. विडंबना यह कि इस फिल्म में राजनीति के आज के प्रतिद्वंद्वी शिवाजी गणेशन और जयललिता नायक-नायिका की भूमिका में हैं. पिछले दशक में यह लोकप्रिय फिल्मी जोड़ी मानी जाती रही है. सिनेमा हॉल खचाखच भरा था जिसमें दोनों नेताओं-अभिनेताओं के प्रशंसक भी भारी संख्या में मौजूद थे.

पर दोनों ओर के प्रशंसकों में अचानक सिर फुटौवल मच गई. पता चला कि यह सारा हंगामा परदे पर आए एक प्रणय दृश्य से पैदा हुआ था. नायक ने नायिका की ओर बढ़कर उसे प्रगाढ़

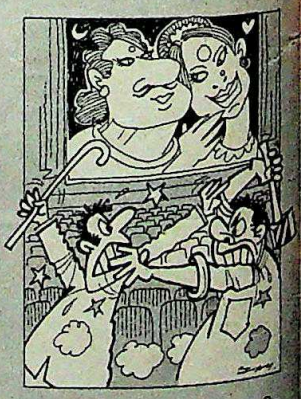

आलिंगन में बांधा ही था कि कुर्सियां उखाड़कर हवा में उछाली जाने लगीं और परदे को फाड़कर चीथड़े-चीथड़े कर दिया गया. प्रतिद्वंद्वी नेताओं के समर्थकों ने दोनों सितारों के प्रेम दृश्य पर ऐसा रोष दिखाया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Golden moments. McDowell moments

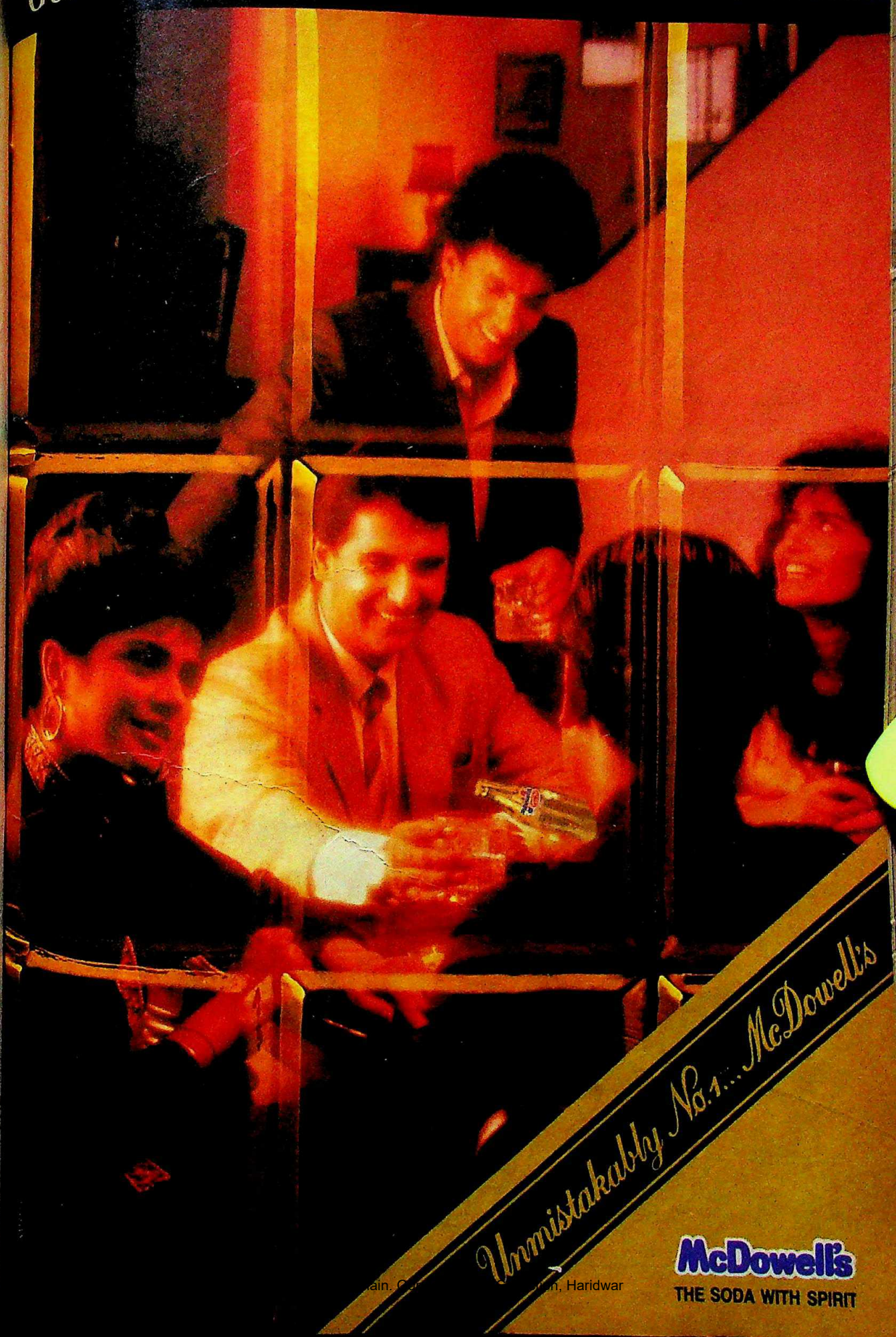

McDowell's
THE SODA WITH SPIRIT

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय मोर्चा सरकार

उखड़ते-जमते कदम

'इंडिया टुडे' ने बाजार अनुसंधान करने वाली स्वतंत्र कंपनी 'मार्ग' (मार्केटिंग ऐंड रिसर्च ग्रुप) को वैसा ही व्यापक राष्ट्रीय जनमत सर्वेक्षण कराने का जिम्मा सौंपा जैसा कि 1989 के आम चुनाव के पहले कराया गया था. उसके आधार पर की गई चुनावी भविष्यवाणी एकदम सही साबित हुई थी.

8 अगस्त से 16 अगस्त के बीच 'मार्ग' के 100 से अधिक सर्वेक्षणकर्ता देश के करीब 250 स्थानों पर गए और उन्होंने 10,239 मतदाताओं की राय पूछी. यह पूरा अभियान 'मार्ग' की ***गीता दास*** *की देखरेख में हुआ.*

सर्वेक्षण के लिए चुनाव क्षेत्रों का चयन प्रसिद्ध चुनाव विश्लेषक ***प्रणय राय*** *ने किया और उनकी मदद* ***नम्रता हरीश*** *ने की. राय ने आंकड़ों का विश्लेषण कर भविष्यवाणी की कि आज अगर चुनाव कराए गए तो इंका को कितनी सीटें मिलेंगी.*

इस बार भी सर्वेक्षणकर्ता छोटी-छोटी मतपेटियां ले गए थे और मतदाताओं ने इनमें पर्चियां डालीं जिनमें उन्होंने यह लिखा था कि आज वे किसे वोट देना पसंद करेंगे. 'पता नहीं' या पसंद जाहिर करने से इनकार करने वालों का प्रतिशत बहुत ही कम 9.6 फीसदी था.

जनमत सर्वेक्षण में वोट की पसंद के अलावा सार्वजनिक महत्व के तथा तात्कालिक मुद्दों पर भी उनकी राय पूछी गई.

सर्वेक्षण के निष्कर्ष प्रणय राय और 'मार्ग' ने निकाले हैं.

इंडिया टुडे-मार्ग के नवीनतम जनमत सर्वेक्षण से राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के कामकाज से राष्ट्रव्यापी निराशा का पता चलता है. लेकिन इससे यह भी जाहिर होता है कि इंका राष्ट्रीय मोर्चे की लोकप्रियता में आई गिरावट का लाभ उठाने में सक्षम नहीं रही है. इंका के पक्ष में मतदाताओं का रुझान सिर्फ 2 फीसदी और बढ़ा है जो उसे 40 अतिरिक्त सीटें दिला सकता है. जनमत सर्वेक्षण से पता चलता है कि अगर आज की तारीख में चुनाव हुए तो इंका को 236 स्थान मिलेंगे जो बहुमत के लिए जरूरी 265 से काफी कम है. पर अपनी सहयोगी पार्टियों के साथ राष्ट्रीय मोर्चा भी बहुमत नहीं पा सकेगा. इसका मतलब होगा सरकार बनाने के लिए नए राजनैतिक समीकरणों का उभरना.

अगर भाजपा और वामपंथी दलों के साथ राष्ट्रीय मोर्चे का तालमेल टूट जाता है तो इंका फायदे में रहेगी. ऐसी हालत में तो इंका अकेले 283 सीटें जीतकर राजीव गांधी को रेसकोर्स रोड में फिर जगह दिला देगी. अपने चुनावी सहयोगियों के साथ तो इंका के पास 300 तक सांसद हो जाएंगे.

सर्वेक्षण से वी.पी. सिंह अपनी पार्टी के निर्विवाद नेता के रूप में उभरते हैं और लोग उन्हें सक्षम भी मानते हैं. मतदाता उन्हें

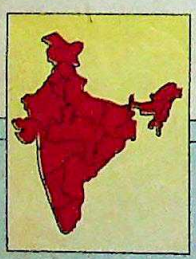

तालिकाए महेंद्र एटी

सीटों की भविष्यवाणी

*अखिल भारतीय: 529 सीटें

	गैर-कांग्रेसी पार्टियां		
	आज की स्थिति	एकजुट	बिखरीं
राष्ट्रीय मोर्चा	144	127	90
भाजपा	86	73	61
माकपा/माकपा	43	42	40
अन्य	11	10	10
कुल (रामो और इसकी सहयोगी पार्टियां)	284	252	201
इंका	194	236	283
इंका की सहयोगी पार्टियां	15	18	18
कुल (इंका और सहयोगी पार्टियां)	209	254	301
अन्य	36	23	27
कुल	529	529	529

*कुल सीटें (असम को छोड़कर): 529

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमजोर और बिना रीढ़ वाला प्रधानमंत्री नहीं मानते बल्कि लोग उनके तौर-तरीकों को चालाकी और सस्ती भरा मानते हैं. देवीलाल को निकालने से उनकी छवि काफी सुधरी है. लेकिन सीधे मुकाबले में मतदाता राजीव गांधी को वी.पी.सिंह से बेहतर मानते हैं.

महंगाई और जनता दल की भीतरी उठापटक से प्रधानमंत्री की छवि पर तो कोई धब्बा नहीं लगा है मगर राष्ट्रीय मोर्चा सरकार की लोकप्रियता में गिरावट आई है. निष्कर्ष यह है कि सरकार ने चुनाव के समय बंधी उम्मीदों को झुठलाया है. लेकिन राष्ट्रीय मोर्चे की असफलता को भुनाने में इंका असमर्थ रही है जो कि उसके पक्ष में मतदाताओं के रुझान में आए मामूली परिवर्तन से जाहिर है.

यही हालत भाजपा की भी है. उम्मीद के विपरीत वह भी राष्ट्रीय मोर्चे की असफलता का लाभ उठाने में असफल रही है. अगर कल चुनाव करा दिए जाएं तो वह भी अनेक सीटें गंवाएगी. फिर भी इस सर्वेक्षण से साफ जाहिर है कि पार्टी अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी ही इसकी सेना के अर्जुन हैं. उत्तर भारत में राजीव गांधी और वी.पी. सिंह के बाद वही एक महत्वपूर्ण राजनैतिक हस्ती के रूप में उभरते हैं. माकपा पश्चिम बंगाल की अपनी ताकत के चलते अपनी पूर्व स्थिति में ही है.

लोकसभा में इंका की ताकत

	126 सीटें उत्तर	132 सीटें दक्षिण	128 सीटें पूरब	143 सीटें पश्चिम	कुल इंकाई सीटें	कुल लोकसभा सीटें	सीटों का प्रतिशत
1990 के लिए भविष्यवाणी	48	101	34	53	236	529	44.6
1989 में मिली सीटें	26	108	21	40	195*	529*	36.9
1989 के लिए की गई भविष्यवाणी	28	80	24	63	195	529	36.9
1984	114	71	96	134	415	542	76.6

*इन 4 सीटों के लिए चुनाव स्थगित किए गए थे उनके उपचुनाव के नतीजों के साथ

वी.पी. सिंह का लेखा-जोखा

पिछले चार महीनों में प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह और उनकी राष्ट्रीय मोर्चा सरकार कई तरह के छोटे-बड़े झटकों और हादसों से पीड़ित रहे. सबसे बड़ा संकट, बरखास्तशुदा उप-प्रधानमंत्री देवीलाल और उनके पुत्र ओमप्रकाश चौटाला की कार-गुजारियों से खड़ा हुआ था. जिन दूसरी समस्याओं की वजह से प्रधानमंत्री के बारे में लोगों की मान्यताएं शायद प्रभावित हुई उनमें महंगाई और कश्मीर, पंजाब तथा असम में बढ़ते उग्रवाद को रोक पाने में सरकार की असफलता शामिल है.

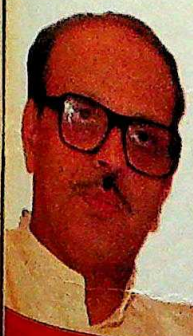

प्रधानमंत्री का कामकाज

	बेहतर	औसत	खराब
वी.पी. सिंह अखिल भारतीय (अग. '90)	29	42	29
राजीव गांधी अखिल भारतीय (अग. '89)	38	40	22

('पता नहीं' वाले शामिल नहीं) (सभी आंकड़े प्रतिशत में)

औसत कामकाज

सत्ता संभालने के बाद प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के नौ महीनों के कामकाज को केवल 29 फीसदी लोगों ने बेहतर माना. और इतने ही फीसदी लोगों ने उनके कामकाज को खराब करार दिया. यह अगस्त 1989 में पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के बारे में मूल्यांकन (जो संयोग से उनके बारे में बदतरीन मूल्यांकन था) से भी खराब स्थिति है. वी.पी. सिंह के लिए यह काफी चिंता का विषय है. जनमत सर्वेक्षण से एक और दिलचस्प तथ्य यह उभरा है कि जनता दल के गढ़ उत्तर भारत में जहां चुनावी दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण राज्यों उत्तर प्रदेश और बिहार में पार्टी की सरकारें भी हैं, वी.पी. सिंह की स्थिति और भी खराब है. संयोग से दल की आंतरिक गड़बड़ियों का मुख्य केंद्र भी उत्तर भारत ही रहा है.

कामकाज बनाम अपेक्षाएं

	अपेक्षा से बेहतर	अपेक्षा से बदतर	अपेक्षा के अनुरूप
वी.पी. सिंह अखिल भारतीय (अग. '90)	25	45	30
राजीव गांधी अखिल भारतीय (अग. '90)	40	32	28

('पता नहीं' वाले शामिल नहीं) (सभी आंकड़े प्रतिशत में)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजीव गांधी को ज्यादा समर्थन

भारत और विदेश के सर्वेक्षणकर्ताओं ने आम तौर पर पाया है कि किसी देश के शासनाध्यक्ष (राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री) को विपक्ष के नेता से ज्यादा अंक मिलते हैं.

यह रुझान राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री के कार्यकाल के प्रारंभिक दिनों में स्पष्ट दिखता है. इसलिए वी.पी. सिंह के लिए अगर सब कुछ ठीकठाक होता तो वे लोकप्रियता में सबसे ऊपर होते.

लेकिन उनके प्रधानमंत्रित्व के शुरूआती दौर में ही असंतोष बढ़ना इस बात का संकेत है कि आगे उन्हें मुश्किलें पेश आएंगी. राजीव गांधी सत्ता में भले ही न हों पर अपेक्षाकृत ज्यादा मतदाता इस मान्यता के पाए गए कि वे वी.पी. सिंह की तुलना में बेहतर प्रधानमंत्री होंगे.

इसके अलावा, राजीव को इंका समर्थकों का जितना जबरदस्त समर्थन हासिल है, उतना वी.पी. सिंह को जनता दल समर्थकों का नहीं. यह भी प्रधानमंत्री के लिए चिंता का विषय है. अगस्त 1989 में वी.पी. सिंह राजीव से बहुत पीछे थे. अब नौ महीने सत्ता में रहने के बाद उन्होंने यह अंतर तो कम किया है पर फिर भी वे राजीव से पीछे हैं.

वी.पी. बनाम राजीवः बेहतर कौन?

	वी.पी.सिंह बेहतर	राजीव गांधी बेहतर	दोनों बराबर
अखिल भारतीय (अग. '90)	36	44	20
अखिल भारतीय (अग. '89)	25	67	8

('पता नहीं' वाले शामिल नहीं) (सभी आकड़े प्रतिशत में)

पार्टी में कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं

बहरहाल, वी.पी. सिंह के लिए सांत्वना की बात यह है कि जनता दल में उनके बड़े प्रतिद्वंद्वियों को मतदाताओं का कम समर्थन ही हासिल है. न तो देहाती छवि वाले देवीलाल न ही युवा तुर्क रहे चंद्रशेखर वी.पी. सिंह के लिए कोई चुनौती हैं.

ताऊ को देहाती पतों वाले लोगों में अपेक्षाकृत बेहतर समर्थन जरूर हासिल है पर यहां भी वी.पी. सिंह उनसे कहीं आगे हैं. देवीलाल के 16 फीसदी के मुकाबले उन्हें 73 फीसदी ग्रामीणों का समर्थन मिला है.

दिलचस्प बात यह है कि देवीलाल और चंद्रशेखर दोनों को अपने पार्टी समर्थकों की तुलना में इंका के मतदाताओं के बीच ज्यादा समर्थन हासिल है.

एक दिलचस्प तथ्य यह है कि राष्ट्रीय मोर्चा सरकार की 'सहयोगी' पार्टियों- भाजपा और माकपा- के नेता देवीलाल या चंद्रशेखर के मुकाबले प्रधानमंत्री के रूप में ज्यादा मान्य हैं.

29 फीसदी मतदाता भाजपा अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी के पक्ष में हैं जबकि 19 फीसदी लोग प. बंगाल के मुख्यमंत्री ज्योति बसु के पक्ष में (वी.पी. सिंह को 55 फीसदी मतदाताओं की हिमायत हासिल है). दूसरे क्षेत्रों की तुलना में पूरब में बसु का पलड़ा स्वाभाविकतः भारी है पर वी.पी. सिंह भी वहां कड़ी टक्कर दे रहे हैं.

बेहतर प्रधानमंत्री कौन होगा?

	वी.पी. सिंह	देवी-लाल	वी.पी. सिंह	चंद्र-शेखर	वी.पी. सिंह	लालकृष्ण आडवाणी	वी.पी. सिंह	ज्योति बसु
अखिल भारतीय	75	14	70	16	55	29	68	19
ग्रामीण	73	16	68	17				
शहरी	78	9	72	14				
गैर-इंका समर्थक मतदाता	80	12	76	12				
इंका समर्थक मतदाता	69	17	61	22				

'दोनों समान' बताने वाले शामिल नहीं

('पता नहीं' वाले शामिल नहीं) (सभी आंकड़े प्रतिशत में)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj

ऊपरी कमजोरी के पीछे मकसद

कई टीकाकार प्रधानमंत्री को कमजोर और ढुलमुल बताते हैं. मगर दूसरे मानते हैं कि ऊपरी कमजोरी के पीछे भी एक मकसद है, यह सख्ती और चालाकी को छिपाता है. इंडिया टुडे -मार्ग के जनमत सर्वेक्षण के आंकड़ों के मुताबिक बहुमत इसी राय का है. इंका समर्थकों में इस बात पर मतभेद है मगर अधिकांश इंका विरोधी प्रधानमंत्री को सख्त और चालाक मानते हैं.

वी.पी.: कमजोर या सख्त?

	कमजोर और ढुलमुल	सख्त और चालाक
अखिल भारतीय	31	69

('पता नहीं' वाले शामिल नहीं) (सभी आंकड़े प्रतिशत में)

वी.पी.: गांव समर्थक/शहर समर्थक

	गांव समर्थक	शहर समर्थक	तटस्थ
अखिल भारतीय	19	25	56
ग्रामीण	18	30	52
शहरी	20	16	64

('पता नहीं' वाले शामिल नहीं) (सभी आंकड़े प्रतिशत में)

तटस्थ प्रधानमंत्री

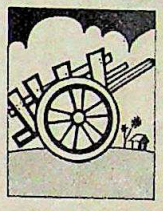

हैरानी की बात है कि प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह को आम तौर पर हालांकि शहरी नेता के ही रूप में पेश किया जाता रहा है मगर जनमत सर्वेक्षण के नतीजों से पता चलता है कि देश भर के 56 फीसदी मतदाता उन्हें न तो शहर समर्थक और न गांव समर्थक मानते हैं. बाकी करीब 25 फीसदी लोग प्रधानमंत्री को शहर समर्थक और 19 फीसदी गांव समर्थक समझते हैं. लेकिन उत्तर और दक्षिण में शहरी और ग्रामीण मतदाताओं का बहुमत उन्हें तटस्थ मानता है. दरअसल अधिकांश लोगों का विचार है कि प्रधानमंत्री को इनमें से किसी भी प्रवृत्ति से जुड़ा नहीं माना जा सकता. गौरतलब बात यह है कि शहर और गांव के बीच फर्क की धारणा का प्रचार पूर्व उप-प्रधानमंत्री देवीलाल ने हाल ही में तेज किया था.

सांप्रदायिक मसला

बहुत से राजनैतिक जानकारों के मुताबिक इंका ने चुनाव के पहले सांप्रदायिक स्थिति को बिगड़ने दिया ताकि उसे अल्पसंख्यकों का समर्थन मिले पर यह रणनीति उलटी पड़ी. राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद के माहौल में वी.पी. सिंह फिर निष्पक्ष नेता की छवि बनाए रखने में सफल रहे हैं. यह मान्यता जितनी व्यापक हिंदुओं में पाई गई, उतनी ही मुसलमानों में भी.

हिंदू समर्थक या मुसलमान समर्थक?

	हिंदू समर्थक	मुसलमान समर्थक	निष्पक्ष
अखिल भारतीय	13	8	79

('पता नहीं' वाले शामिल नहीं) (सभी आंकड़े प्रतिशत में)

रामो सरकार टिकेगी या नहीं?

	छह तक	6 महीने से 2 साल	पूरा कार्यकाल
अखिल भारतीय	22	29	49
इंका समर्थक मतदाता	10	23	67
गैर-इंका समर्थक मतदाता	36	37	27

('पता नहीं' वाले शामिल नहीं) (सभी आंकड़े प्रतिशत में)

राष्ट्रीय मोर्चा सरकार

इस सरकार को सत्ता में आए नौ महीने हो गए हैं. इस दौरान दो बार तो यह गिरते-गिरते बची. इंडिया टुडे-मार्ग जनमत सर्वेक्षण में इसके कामकाज के बारे में राय पूछी गई.

करीब आधे मतदाताओं को उम्मीद है कि राष्ट्रीय मोर्चा सरकार अपना कार्यकाल पूरा करेगी जबकि 22 फीसदी को अगले छह महीनों में इसके गिरने की आशंका है. जाहिर है, इंका समर्थकों को सरकार के ज्यादा चलने की उम्मीद नहीं. लेकिन गैर-इंका मतदाताओं में दो-तिहाई को सरकार का कार्यकाल पूरा होने की उम्मीद है, हालांकि जनता दल में कई गंभीर संकट भी उभरे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उम्मीदें पूरी नहीं

दो बड़े संकटों और फिर एक ऐसी स्थिति से, जब प्रधानमंत्री ने इस्तीफा देने की पेशकश भी की, बच निकलने के बाद स्वाभाविक है कि लोग सरकार से खास संतुष्ट न रहें. जिन लोगों से बातचीत की गई उनमें करीब 50 फीसदी सरकार के कामकाज से निराश हैं. लेकिन सर्वेक्षण के समय को देखते हुए यह तथ्य शायद सरकार के पक्ष में जाता है कि करीब 21 फीसदी लोगों ने राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के कामकाज को उम्मीद से बेहतर माना. लेकिन उलटा पक्ष यह है कि असंतोष और निराशा उत्तरी और पूर्वी क्षेत्र में सबसे ज्यादा है जो जनता दल के गढ़ माने जाते हैं.

गैर-इंका मतदाताओं के मुकाबले इंका समर्थक सरकार के अधिक आलोचक हैं.

कामकाज बनाम अपेक्षाएं

	उम्मीद से बेहतर	उम्मीद से बुरा	उम्मीद के मुताबिक
अखिल भारतीय	21	49	30
गैर-इंका समर्थक मतदाता	29	35	36
इंका समर्थक मतदाता	13	63	24

('पता नहीं' वाले शामिल नहीं) (सभी आकड़े प्रतिशत में)

सरकार बनाम विपक्ष

पंजाब तथा कश्मीर समस्याओं से निबटने और सांप्रदायिक सौहार्द बनाए रखने में राष्ट्रीय मोर्चा सरकार भी राजीव सरकार जितनी कारगर मानी जाती है. हैरानी की बात तो यह है कि सांप्रदायिक सौहार्द बनाए रखने के महत्वपूर्ण सवाल पर, जो पिछले चुनाव के दौरान मुद्दा बना, इंका सरकार का पलड़ा मौजूदा सरकार से थोड़ा ऊपर रहा. लेकिन महंगाई रोकने और बेरोजगारी घटाने के मामलों पर ज्यादा मतदाताओं ने इंका सरकार को बेहतर माना.

रामो सरकार बनाम इंका सरकार

	रामो सरकार बेहतर	इंका सरकार बेहतर	दोनों एक समान
महंगाई रोकने में	18	58	24
बेरोजगारी घटाने में	21	41	38
पंजाब समस्या सुलझाने में	33	33	34
कश्मीर समस्या सुलझाने में	32	34	34
सांप्रदायिक सौहार्द बनाए रखने में	30	36	34

('पता नहीं' वाले शामिल नहीं) (सभी आकड़े प्रतिशत में)

देवीलाल की बरखास्तगी

इंडिया टुडे-मार्ग जनमत सर्वेक्षण का एक आश्चर्यजनक और आम मान्यता के विरुद्ध परिणाम यह निकला कि शहरी और ग्रामीण दोनों प्रकार के मतदाताओं का भारी बहुमत केंद्र सरकार से पूर्व उप-प्रधानमंत्री देवीलाल को हटाए जाने के प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह के फैसले से कतई नाखुश नहीं है. इससे वी.पी. सिंह की छवि निखरी है.

देवीलाल का हटाया जाना

	प्रधानमंत्री से सहमत	प्रधानमंत्री से सहमत नहीं
अखिल भारतीय	74	26
ग्रामीण	72	28
शहरी	78	22

('पता नहीं' वाले शामिल नहीं) (सभी आकड़े प्रतिशत में)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation

देश के सामने मुद्दे

जनमत सर्वेक्षण से यह भी पता चलता है कि उत्तर और दक्षिण में भारी बहुमत बढ़ती महंगाई को देश के सामने मुख्य मुद्दा मानता है. मुद्रास्फीति के बाद भ्रष्टाचार दूसरी मुख्य समस्या है. दिलचस्प बात यह है कि देश के उत्तरी भागों में महंगाई को अक्सर मुख्य समस्या बताया जाता है. पर पुरुषों की तुलना में घर चलाने वाली महिलाएं इस समस्या के प्रति ज्यादा चिंतित हैं. सबसे आश्चर्यजनक बात तो यह है कि थोड़े-से ही लोग सांप्रदायिकता और आतंकवाद के ज्वलंत मुद्दों को देश की मुख्य समस्या मानते हैं.

सबसे अहम मसला

	सांप्रदायिकता	आतंकवाद	महंगाई	भ्रष्टाचार
अखिल भारतीय	11	13	54	22
पुरुष	14	15	46	25
महिलाएं	8	10	63	19

('पता नहीं' वाले शामिल नहीं) (सभी आंकड़े प्रतिशत में)

पंजाब समस्या से निबटने में

	बहुत अच्छी	अच्छी	बुरी	बहुत बुरी
अखिल भारतीय	6	44	37	13
अखिल भारतीय (अग. '90)	11	46	28	15

('पता नहीं' वाले शामिल नहीं) (सभी आंकड़े प्रतिशत में)

पंजाब समस्या

एक और दिलचस्प नतीजा यह सामने आया है कि आधे मतदाताओं के मुताबिक पंजाब समस्या से अच्छी तरह निबटा जा रहा है, हालांकि इस सिलसिले में आशा की कोई किरण भी नहीं दिखती. लेकिन यह रुझान एक-सा नहीं है. देश भर में मतदाता इस समस्या के प्रति अलग-अलग राय रखते हैं. उत्तर भारत के 40 प्रतिशत लोग उपर्युक्त मत के हामी हैं. यह समस्या सुलझाने में वी.पी. सिंह की व्यक्तिगत रुचि के बावजूद इस दिशा में पिछले साल राजीव गांधी सरकार की ओर से किए गए प्रयासों को राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के प्रयासों के मुकाबले कुछ ज्यादा समर्थन हासिल है.

कश्मीर समस्या

इस मुद्दे पर करीब आधे मतदाता सरकार के साथ हैं. इनमें तीन-चौथाई पाकिस्तान को दोषी बताते हैं. आम राय यह थी कि भारत को समस्या शांतिपूर्ण ढंग से सुलझानी चाहिए.

कश्मीर समस्या से निबटने में

	बहुत अच्छी	अच्छी	बुरी	बहुत बुरी
अखिल भारतीय	6	40	36	18

('पता नहीं' वाले शामिल नहीं) (सभी आंकड़े प्रतिशत में)

कश्मीर मसला: पाकिस्तान दोषी?

	हां	नहीं
अखिल भारतीय	76	24

('पता नहीं' वाले शामिल नहीं) (सभी आंकड़े प्रतिशत में)

कश्मीर: लड़ाई कौन जीतेगा?

	भारत आसानी से जीतेगा	भारत मुश्किल से जीतेगा	भारत हारेगा
अखिल भारतीय	61	37	2

('पता नहीं' वाले शामिल नहीं) (सभी आंकड़े प्रतिशत में)

कश्मीर पर पाकिस्तान से लड़ना चाहिए

	लड़ना चाहिए	शांतिपूर्ण ढंग से निबटाएं
अखिल भारतीय	36	64

('पता नहीं' वाले शामिल नहीं) (सभी आंकड़े प्रतिशत में)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाजपा तथा वामपंथी दल

असमंजस में संगी-साथी

राष्ट्रीय मोर्चा सरकार को समर्थन देने वाली पार्टियों ने कई मुद्दों पर अपने मतभेदों की तो अनदेखी की मगर जद के भीतरी झगड़ों से वे त्रस्त हैं

जनता दल मे जारी भीतरी तनातनी, व्यक्तित्वों की टकराहटों ने इसके दो मजबूत स्तंभों—भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और वामपंथी दलों—के भरोसे को भी जैसे हिलाकर रख दिया है. इन दोनों ने बहुत गंभीरता से सोचना शुरू कर दिया है कि अगर राष्ट्रीय मोर्चा सरकार गिर जाती है तो उनकी रणनीति क्या होगी.

भाजपा के अलंबरदार लालकृष्ण आडवाणी तो लगभग यह मान ही बैठे हैं कि आज नहीं तो कल यह सरकार तो गिरेगी ही. इसलिए वे यही सोचकर खुश हैं कि इस सरकार में शामिल न होकर इसे बाहर से ही समर्थन देने की उनकी नीति सही रही. वे कहते हैं, "अगर हम सरकार में शामिल हो जाते तो इन सारे झगड़ों के लिए हमें भी दोषी ठहराया जाता."

उधर, वामपंथी खेमे में भी ऐसी ही उदासी है. माकपा के सैफुद्दीन चौधरी यही कहकर संतोष कर लेते हैं कि लोगों को पता चल गया है कि इस सरकार को खतरा वामपंथ या दक्षिणपंथ से नहीं बल्कि खुद जनता दल से ही है. लेकिन उनके साथी सोमनाथ चटर्जी के स्वरों से निराशा झलकती है, "क्या हम वास्तव में इस सरकार को जिंदा रख सकते हैं?"

परंतु राजनैतिक मजबूरियां कुछ ऐसी हैं कि वामपंथी और दक्षिणपंथी दोनों ही फिलहाल तो इस सरकार की टांग नहीं खींच पाएंगे. भाकपा नेता इंद्रजीत गुप्त के शब्दों में, "विकल्प मध्यावधि चुनाव है पर इसमें राजीव गांधी की वापसी का खतरा भी ज्यादा है."

सरकार बनी रहे, इसके लिए भाजपा और वामपंथी दल अपनी पुरानी रंजिशों को दरकिनार करके आमने-सामने बैठकर साझा मुद्दों और कार्यक्रमों की पहचान कर रहे हैं. ऐसी बैठकें कई तरह से होती हैं. एक बैठक तो हर हफ्ते विश्वनाथ प्रताप सिंह बुलाते हैं. यहां राम जन्मभूमि और अनुच्छेद-370 जैसे विवादास्पद मुद्दों के अलावा सभी मुद्दों पर बातचीत होती है. इस बैठक के अलावा भाजपा और वामपंथी दलों के नेता कई मौकों पर अलग से भी मिलते हैं.

नतीजा यह है कि कभी एक-

जद के भीतरी झगड़ों से भाजपा और वामपंथी दलों की छवि पर आंच आई तो वे सरकार से समर्थन वापस ले सकते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे के दुश्मन रहे ये दल अब बहुत से मुद्दों पर एक ही स्वर में बोलने लगे हैं. ये मुद्दे हैं:

- उद्योग नीतिः बहुराष्ट्रीय कंपनियों को खुली छूट मिलने की आशंका पर दोनों ही पक्षों ने इस नीति का विरोध किया है.
- बढ़ती कीमतेंः दोनों ही पक्षों के नेताओं ने सरकार से कीमतों को काबू में करने का बार-बार अनुरोध किया है.
- देवीलाल व चौटालाः दोनों ही बाप-बेटे की राजनीति के विरोधी हैं.
- मंडल आयोगः दोनों पक्षों का दावा है कि वे आरक्षण में बढ़ोतरी के पक्ष में हैं पर वे यह भी कहते हैं कि इतने नाजुक मुद्दे पर फैसला करने से पहले सरकार को सभी दलों से बातचीत करनी चाहिए थी.
- दिल्ली को राज्य का दर्जा देने का विधेयकः भाजपा वामपंथियों की इस मांग से सहमत है कि निर्वाचन क्षेत्रों की सीमाएं फिर से तय की जानी चाहिए.

पर ऐसे मुद्दे भी हैं जिन पर दोनों पक्षों में मतभेद हैं और किसी भी समय इस तालमेल का बंटाढार कर सकते हैं. ऐसे मुद्दे हैं:

- कश्मीरः भाजपा कड़ा रवैया अपनाने और अनुच्छेद-370 को खत्म करने की हिमायती है जबकि वामपंथी चाहते हैं कि वहां पर राजनैतिक प्रक्रिया शुरू की जाए.
- अयोध्याः अब जबकि भाजपा मंदिर निर्माण के लिए विश्व हिंदू परिषद द्वारा घोषित 30 अक्तूबर की तारीख के पक्ष में खुलकर खड़ी हो गई है, यह विवाद दोनों पक्षों के तालमेल को तोड़ सकता है.

यानी जिन मुद्दों पर सांप्रदायिक विवाद भड़कने वाला हो उन पर भाजपा और वामपंथी कभी एकमत नहीं हो सकते. अयोध्या और अनुच्छेद-370 के मुद्दे पर वी.पी. सिंह पूरी मजबूती से माकपा और भाकपा के साथ हैं. इसलिए इन दोनों दलों ने साफ-साफ कह दिया है कि अगर इन मुद्दों पर सरकार ने अपना रुख बदला तो वे समर्थन वापस ले लेंगे. उत्तर प्रदेश में भाकपा कार्यकर्ताओं पर पुलिस के हमले पर पार्टी ने ज्यादा बवाल इसीलिए नहीं मचाया कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव इस बात पर अड़े हुए हैं कि मंदिर-मस्जिद विवाद पर अदालत के फैसले को ही लागू किया जाएगा.

हिंदी क्षेत्र और अधिकतर दक्षिणी राज्यों (केरल को छोड़कर) में संगठन न होने के कारण वामपंथियों ने खुद को सरकार के लिए एक दबाव गुट की तरह सक्रिय कर लिया है. अब उन्होंने सरकार के सहयोग से सांप्रदायिकता के खिलाफ अभियान छेड़ रखा है. फिलहाल इसी मुद्दे को वे अपना तुरुप का पत्ता मानते हैं. वामपंथियों को इसका फायदा भी मिला है. उनकी सरकारों को अब केंद्र के खजाने से बिना किसी हील-हुज्जत के धन मिल जाता है.

वामपंथी खुद को हालांकि राष्ट्रीय

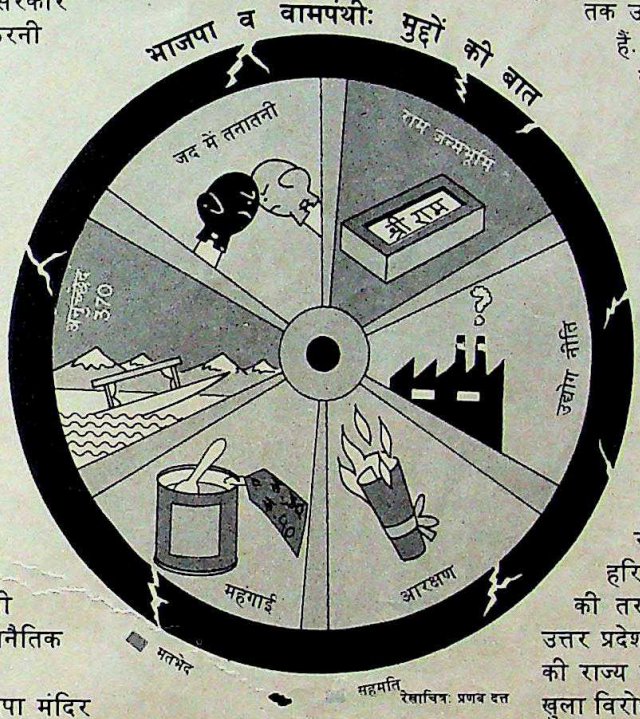

रेखाचित्रः प्रणब दत्त

मोर्चा का 'स्वाभाविक साथी' नहीं मानते, पर वे यह जरूर मानते हैं कि जनता दल का घोषणापत्र उनके घोषणापत्र का ही एक छोटा-मोटा रूप है. शायद इसी कारण जनता दल के भीतर जब जोड़-तोड़ का हिसाब लगाया जाता है तब हर खेमा वामपंथियों की ही जरूरत महसूस करता है. चंद्रशेखर, अरुण नेहरू व दूसरे नेता वामपंथियों को सहयोगी बनाने के कई फार्मूलों का हवाला देते हैं. परंतु वामपंथी इन बातों को 'बकवास' कहकर खारिज कर देते हैं. उनका कहना है कि वे नाव डुबोने के किसी खेल में भागीदार नहीं बनेंगे.

दूसरी ओर भाजपा की रणनीति यह है कि सरकार की समर्थक होने का फायदा उठाते हुए अपने आधार क्षेत्र को फैलाकर अपने बूते खड़ा हुआ जाए. वामपंथियों की तरह भाजपा ने सरकार से कोई खुशफहमी नहीं पाली है. आडवाणी स्पष्ट कर चुके हैं कि राष्ट्रीय मोर्चा सरकार को उनका समर्थन बिना शर्त नहीं है.

भाजपा नेता कहते हैं कि वे इस सरकार को नहीं गिराएंगे, पर वे यह मान चुके हैं कि यह सरकार खुद अपनी करतूतों के कारण अपना कार्यकाल पूरा करने से पहले गिर जाएगी. पार्टी मध्यावधि चुनाव, इंका या जनता दल में विभाजन जैसी स्थितियों के लिए आपात योजनाएं बनाने में मशगूल है.

और फिर भाजपा पूरब व दक्षिण में आधार बनाने के लिए सुनियोजित तरीके से काम कर रही है. इन जगहों पर अब तक उसके ज्यादा नामलेवा भी नहीं हैं. इसीलिए राष्ट्रीय कार्यकारिणी की हाल की बैठक मद्रास में हुई. इससे पहले यह बैठक कलकत्ता में हुई थी. मध्य प्रदेश, राजस्थान और हिमाचल प्रदेश के भाजपा शासित राज्यों के बारे में पार्टी को विश्वास है कि वह वहां कुशल प्रशासन देकर मध्यमार्गी दलों को दरकिनार कर देगी.

भाजपा और जनता दल के हितों का टकराव जनता दल द्वारा शासित दो राज्यों में जाहिर हो गया है. हरियाणा में भाजपा मजबूत विपक्ष की तरह काम कर रही है, जबकि उत्तर प्रदेश में अयोध्या के मुद्दे पर पार्टी की राज्य इकाई मुलायम सिंह यादव का खुला विरोध कर रही है. लेकिन फिलहाल उसने मतभेदों पर मुलम्मा चढ़ा दिया है. हालांकि भाजपा और जनता दल में अनुच्छेद-370 और अयोध्या जैसे मुद्दों पर भारी मतभेद हैं पर आडवाणी कहते हैं, "मैं अपने पार्टीवालों से कह रहा हूं कि अनुच्छेद-370 के मामले में सरकार पर दबाव डालना गलत होगा." यानी उनकी रणनीति यह है कि इन मुद्दों को लेकर जनता के पास जाओ और फिर उसे ही फैसला करने दो.

दक्षिणपंथी और वामपंथी दल हालांकि अपने अनुशासित कंधों पर जनता दल की खिचड़ी सरकार को ढो रहे हैं, पर वे जनता दल की आपसी लड़ाई का कलंक नहीं ओढ़ना चाहते. इस मामले में दोनों पक्षों ने तय कर रखा है कि ऐसी नौबत आते ही वे सरकार से समर्थन वापस ले लेंगे और फिर से जनता की अदालत में हाजिर हो जाएंगे.

—सीमा मुस्तफा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाड़ी संकट

सारे सपने चकनाचूर

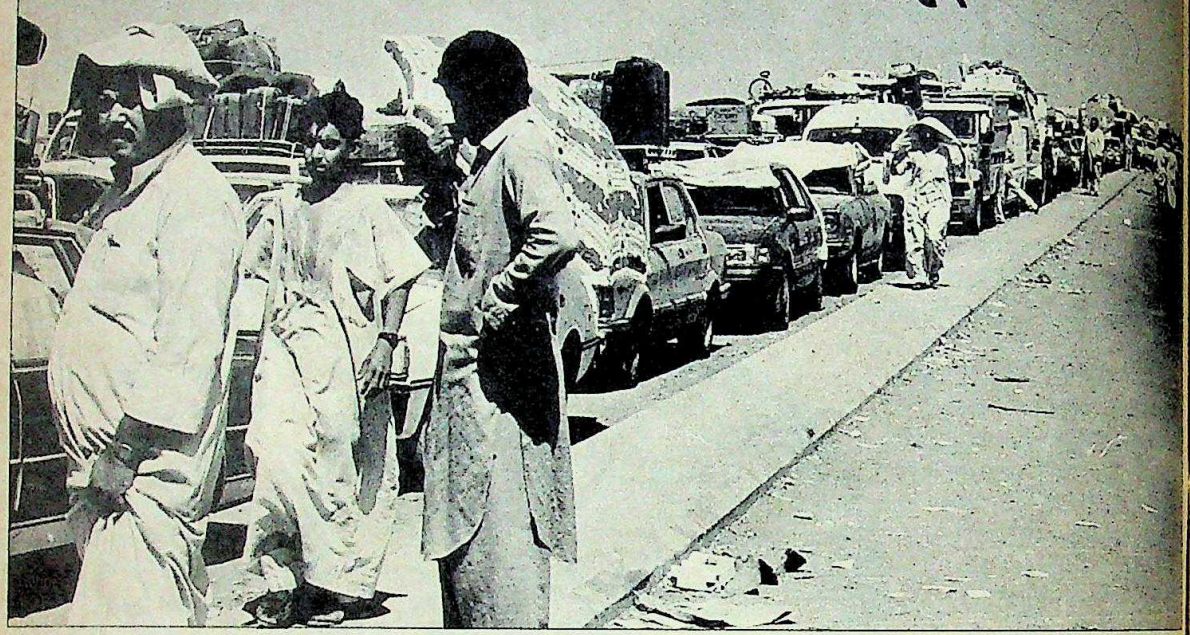

■ पसीने से तर-ब-तर हजारों भारतीय जॉर्डन में प्रवेश के लिए इराक से लगे रेगिस्तान में इंतजार करते हुए

जॉर्डन की एकमात्र अल रुविशिएद चौकी पर, जहां से हाशमी साम्राज्य और इराक के बीच वाला स्वामीहीन क्षेत्र शुरू होता है, बंबई के ट्रैफिक जाम जैसा ही नजारा है. वहां टोयोटा, निसान और मर्सीडीज की लंबी कतारें लगी हुई हैं. सूटकेसों और लोगों के बोझ से बालू में धंसी हुई इन कारों और ट्रकों को देखकर यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि बाइबल की धरती के उत्तरी किनारों से कितने बड़े पैमाने पर पलायन हो रहा है. यह महापलायन महायुद्ध का पूर्वाभास हो सकता है क्योंकि एक तानाशाह की महत्वाकांक्षाएं विश्व जनमत का निरंतर निरादर कर रही हैं और नतीजतन कुछ मुल्कों की फौजें हजारों मील दूर से उसके देश की सीमा पर इकट्ठी हो गई हैं.

सद्दाम हुसैन के इराक और उनके नए अधिग्रहीत देश कुवैत से भागे लोगों ने अपनी वर्षों की गाढ़ी कमाई—कारें, रेफ्रिजरेटर, टू-इन-वन—सब कुछ वहीं छोड़ दिया. यहां तक कि बंद बैंकों के खजाने में उनका सोना भी पड़ा हुआ है. फिर भी उन्हें सौभाग्यशाली ही कहा जाएगा कि उन्हें भागने का मौका मिल गया जबकि पश्चिमी देशों के हजारों नागरिक सत्ता के क्रूर खेल में बंधक बने हुए हैं.

जो भागने में सफल रहे उन्हें रेगिस्तान, रास्ते में लूटपाट करने वाले रंगरूटों और शरीर को झुलसा देने वाले 50 डिग्री तापमान का सामना करना पड़ा. वे हजारों की संख्या में जॉर्डन की सीमा पर खड़े हैं. उनमें मिस्रवासी, बांग्लादेशी, पाकिस्तानी और भारतीय शामिल हैं.

उन्हें कई दिनों से ठीक से खाना नहीं मिला है. उनके बाल रूखे और धूल से भरे हुए हैं. चमड़ी झुलस गई है. आवाज बैठ गई है और गले सूख गए हैं. रोजाना लगभग 26,000 लोग, जिनमें 2,000 के आसपास भारतीय शामिल हैं, इराक से भागकर रुविशिएद पहुंच रहे हैं.

खाड़ी संकट चाहे अमेरिकी नेतृत्व वाली सेनाओं और इराकी सेना के बीच लड़ाई से खत्म हो या सद्दाम हुसैन के पीछे हट जाने से, भारतीय हितों को काफी नुकसान पहुंच चुका है. तेल की तेजी से बढ़ती कीमतों से भारत के विदेशी मुद्रा भंडार के ही खाली हो जाने का खतरा पैदा हो गया है क्योंकि

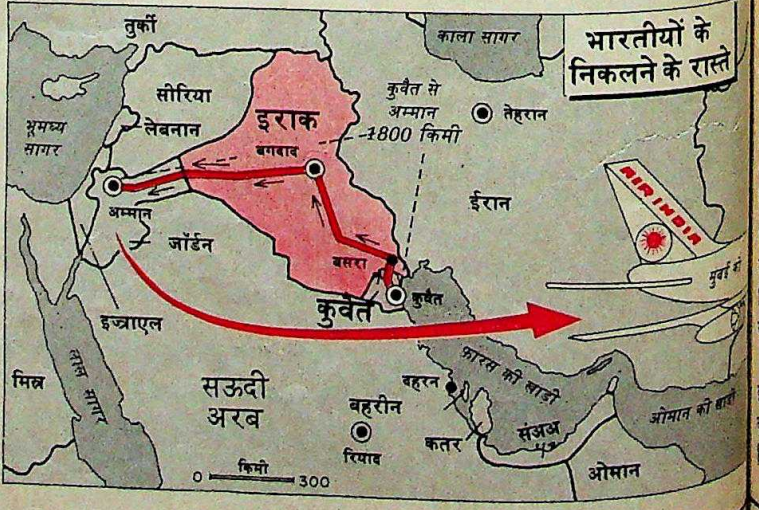

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

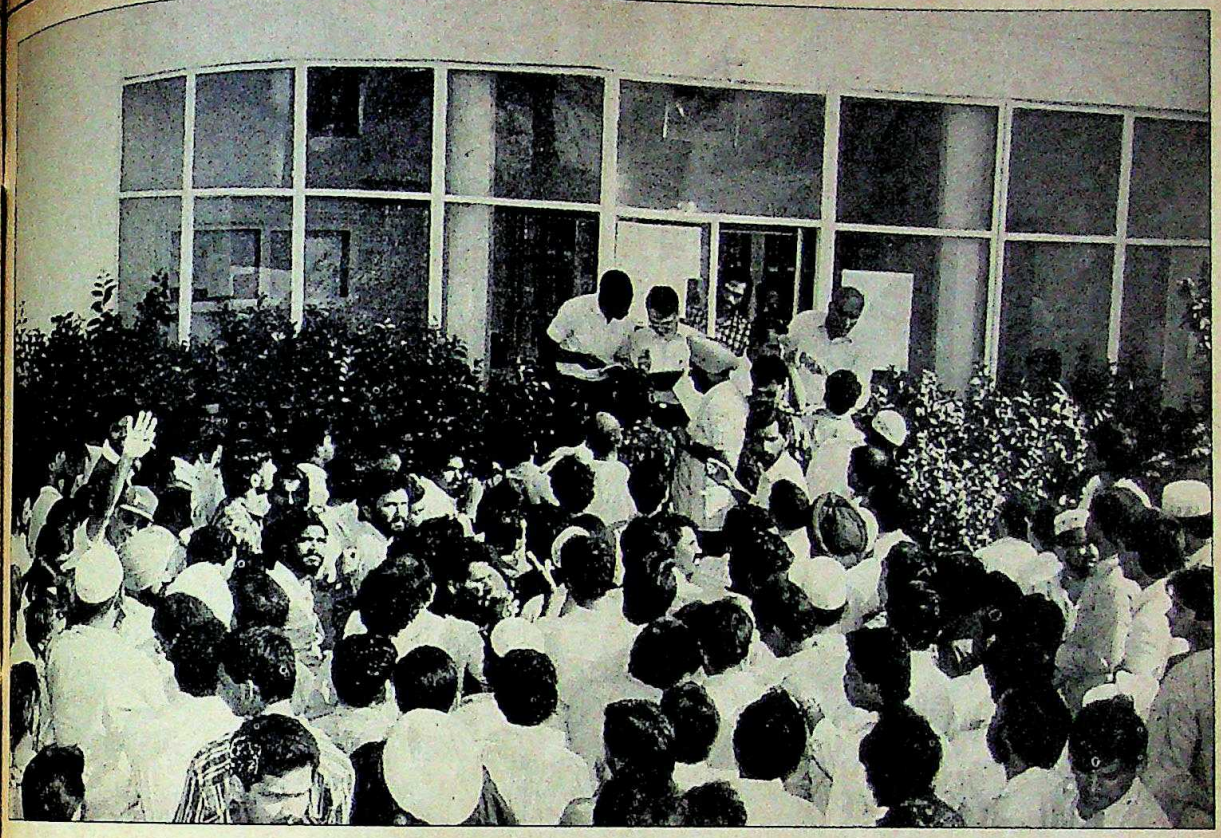

■ जॉर्डन पहुंचकर अम्मान स्थित भारतीय दूतावास में ठहरे हुए भारतीयों की मुख्य चिंता सुरक्षित घर पहुंचने की है

प्रवासी श्रमिकों का खाड़ी सपना चकनाचूर हो जाने के कारण भारत के विदेशी मुद्रा अर्जन का एक प्रमुख स्रोत बंद हो गया (देखें बॉक्स). और फिर इस्लामी दुनिया में फैले तनाव से भारत को अपनी विदेश नीति में भी फेरबदल करना पड़ा. पिछले पखवाड़े पाकिस्तान सऊदी अरब में अपने सैनिकों को भेजने का फैसला करके इस्लामी दुनिया में बहुत सक्रिय हो गया.

लेकिन भारत की सबसे बड़ी फौरी चिंता भारतीयों की सुरक्षा की है. इराक और कुवैत में लगभग 1,65,000 भारतीय अभी भी फंसे हुए हैं. उनके बैंक खाते बेकार पड़े हुए हैं. उनकी जीवन भर की कमाई मिट्टी हो गई है (क्योंकि कुवैती दीनार की कीमत पूर्व कीमत का 12वां हिस्सा यानी इराकी दीनार के बराबर कर दी गई है) और उनकी संपत्ति या तो चुरा ली गई या फिर नष्ट कर दी गई. जो लोग भागने में सफल रहे उन्हें कुवैत से बसरा होते हुए बगदाद तक की 1800 किमी और फिर 75 किमी लंबे स्वामीहीन क्षेत्र से अम्मान तक की मुश्किल भरी यात्रा करनी पड़ी.

अम्मान में रातोरात भारतीयों की इतनी बाढ़ आ गई कि भारतीय दूतावास को लॉन रेलवे प्लेटफॉर्म बन गया. बगदाद स्थित भारतीय दूतावास में प्रथम सचिव अरुण गोयल, जिन्हें राहत कार्यों की जिम्मेदारी सौंपी गई है, कहते हैं, "यह संसाधनों के बिना कुंभ मेले को व्यवस्थित करने जैसा है."

एक अस्थायी शिविर में ताश खेलते या आलू-मटर और खुबुस (अरबी रोटी) चबाते हुए सैकड़ों भारतीय दूतावास और विदेश मंत्रालय के अधिकारियों द्वारा अपना नाम पुकारे जाने का इंतजार कर रहे हैं. बगदाद, बेरूत, बहरीन के भारतीय मिशनों और यहां तक कि दिल्ली के अधिकारियों की भी छुट्टियां रद्द करके उन्हें इस आपात काम में लगाया गया है.

एअर इंडिया के क्षेत्रीय प्रबंधक माइकेल मस्करेंस ने यहां दुबई के कुछ एअर इंडिया कर्मचारियों को तैनात कर दिया है. जॉर्डन में न तो एअर इंडिया की सेवा है और न उसका कोई बिक्री एजेंट, इसलिए ये कर्मचारी दुबई, अम्मान और दिल्ली के बीच चौबीसों घंटे संपर्क बनाए रखते हैं.

इराक और कुवैत से भागने वालों में ज्यादातर अविवाहित नौजवान हैं. परिवार वाले लोग कुवैत छोड़ने के इच्छुक नहीं. हालांकि उनके खाने की सामग्री चुक गई है, पानी के नल सूख गए हैं और बिजली की सप्लाई बहुत कम हो रही है. रात भर वे मशीनगनों की आवाजों, नीचाई पर उड़ते सैनिक विमानों के शोर और टैंकों की गर्जना के बीच सो नहीं पाते.

वापस आने वाले हर भारतीय की अपनी करुण कहानी है. अब्दुल वहाब को 200 दूसरे भारतीयों के साथ महज इसलिए जेल में ठूंस दिया गया कि वे सीमा के पास कुवैती गृह मंत्रालय में काम करते थे. वे कहते हैं, "बसरा जेल में मुझे 10 दिनों तक खाना नहीं मिला." बेलगाम के इस्माइल जलाली की कहानी तो और भी कारुणिक है. उनके 25,000 रु. ही डूब गए. वे कहते हैं, "मैंने अभी पिछले महीने ही नौकरी के लिए यह रकम दी थी. मुझे पहला वेतन भी नहीं मिला. मैं भाग आया हूं लेकिन सबसे बड़ी चिंता यह है कि बेलगाम कैसे पहुंचूंगा."

कुवैत में भारतीय कई तरह से फंसे हुए हैं. संचार संबंध टूट जाने के कारण उनकी कोई खबर ठीक से नहीं मिल पा रही. लेकिन बहरीन से कुछ लोगों ने निजी तौर पर सेलुलर फोन के जरिए कुवैत से संपर्क साधा है. कुवैत के भारतीय दूतावास ने एक हैम रेडियो ऑपरेटर के जरिए साइप्रस के निकोसिया के एक ऑपरेटर से संपर्क साधा और उस ऑपरेटर ने वहां के भारतीय दूतावास से. अब अम्मान के दूतावास में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

■ दुबई में भारतीयों को संबोधित करते केंद्रीय नागरिक उड्डयनमंत्री आरिफ मुहम्मद खां

दिल्ली के राष्ट्रीय सूचना तकनीक केंद्र के चार इंजीनियर भेजे गए हैं जिन्होंने बगदाद और दिल्ली से कंप्यूटरीकृत संपर्क साधा है और उन्हें उम्मीद है कि अरबसैट उपग्रह के जरिए वे कुवैत से भी संपर्क कायम कर लेंगे.

भारत ने बिना कोई शेखी बघारे, शांत चित्त से इस काम को अंजाम दिया है. इसे अम्मान में भारत की राजनयिक कामयाबी माना गया. भारत पहला देश था जिसने वायुमार्ग से भारतीयों को लाने का काम काफी पहले ही शुरू कर दिया—मिस्र और पाकिस्तान से ठीक एक हफ्ते पहले. भारत के विदेशमंत्री पहली ऐसी विदेशी हस्ती थे जिन्हें कुवैत में जाने की इजाजत मिली. और दूसरे देशों के मुकाबले भारतीय नागरिकों को इराक से निकलने में ज्यादा दिक्कत नहीं आई. रुविशिएद चौकी पर ज्यादातर सीमा शुल्क अधिकारियों ने भारतीयों से हाथ मिलाते हुए कहा, "भारत जॉर्डन दोस्त हैं. कोई समस्या नहीं." जॉर्डन, सऊदी अरब और बहरीन का दौरा कर आए केंद्रीय ऊर्जा तथा नागरिक उड्डयनमंत्री आरिफ मुहम्मद खां ने बताया, "हमारे महत्वपूर्ण हितों पर असर पड़ा. हमारी चिंता उन भारतीयों को लेकर है जो हमारे दो दोस्तों की लड़ाई में फंस गए हैं. उन्हें बचाने के लिए कोई न कोई युक्ति करनी ही होगी."

सद्दाम को गद्दाफी या खुमैनी का अवतार बताकर उन्हें चुप कराने पहुंचे अमेरिकियों के युद्धोन्माद और सद्दाम के तेवर से चुप लगा गए खाड़ी देशों के विपरीत भारत ने इराक से साफ कह दिया कि वह आक्रमण और सैनिक हस्तक्षेप का विरोध करता है और चाहता है कि कुवैत के लोग खुद अपने भाग्य का फैसला करें. गुजराल की यात्रा और सद्दाम से उनकी मुलाकात के बाद

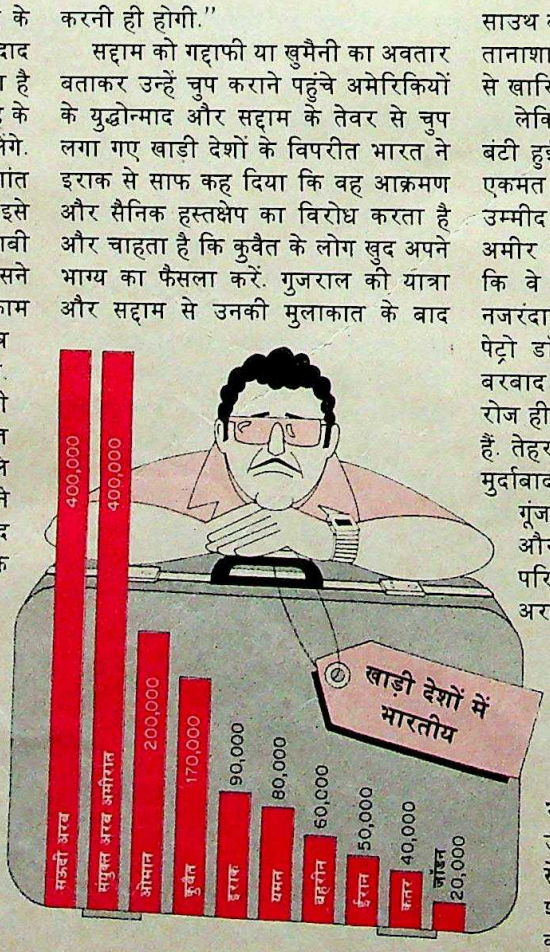

चार्ट: बी.के. शर्मा

साउथ ब्लॉक का नजरिया यह है कि इराक तानाशाह नियंत्रण में है और उसे आसानी से खारिज नहीं किया जा सकता.

लेकिन अरब देशों की राय स्पष्ट रूप बंटी हुई है. सद्दाम की निंदा उस तरह एकमत से नहीं हुई जैसी कि पश्चिम को उम्मीद थी. कई कम अमीर अरब देशों अमीर शेखों के मुल्कों पर आरोप लगा कि वे साथी अरबों की समस्याओं नजरंदाज कर अपनी जेबें भर रहे हैं और पेट्रो डॉलरों को पश्चिम के जुआघरों बरबाद कर रहे हैं. अम्मान की सड़कों रोज ही सद्दाम के समर्थन में जुलूस निकल हैं. तेहरान में सुनाई पड़ने वाले "अमेरि मुर्दाबाद" के नारे अब दूसरी जगहों गूंजने लगे हैं. सिर्फ अबूधाबी, बहरीन और कतर में ही कुवैत के शाही परिवार का समर्थन हुआ. क्षणभंगुर अरब एकता अब छिन्न-भिन्न हो चुकी है. इसलिए सद्दाम ने बड़ी चतुराई से इराक की कुवैत से वापसी को पश्चिम किनारे से इजराएल की वापसी की शर्त से जोड़ दिया.

अक्खड़ कुवैतियों के खिलाफ भारतीयों को भी कई शिकायतें उनमें से कुछ भारतीय नौकरानियों से बुरा सुलूक करते, बच्चों शोषण करते और कुछ तो भारतीयों को 'भारतीय कुत्तों' जैसे शब्दों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुवैत

पल भर में माहौल बदला

कुवैत में हुई घटनाओं का यह ब्यौरा विदेशमंत्री इंद्रकुमार गुजराल के साथ लौटे भारतीयों से बातचीत के आधार पर तैयार किया गया है.

बालूजा परिवार का घर एकाएक थरथरा उठा. उन्होंने खिड़की खोलकर झांका तो चारों तरफ टैंक ही टैंक थे और बम बरस रहे थे. लगता था जैसे दीवाली आ गई हो. कुवैत में ही जन्मी और पली 24 वर्षीय सीमा बालूजा बताती हैं, "जिस भी खिड़की से हम झांकते, धुआं ही उठता नजर आता." ऐसे माहौल में भी कुछ बहादुर भारतीय खाद्य सामग्री जुटाने के लिए सुपर बाजार की ओर दौड़े. चेकआउट काउंटर पर लगी लाइनें मीलों लंबी हो चुकी थीं.

इसके बाद जब सद्दाम हुसैन ने कुवैत को अपने कब्जे में ले लिया तो यह छोटा-सा देश बाकी दुनिया से कट गया. भारतीय परिवार समाचारों के लिए बीबीसी सुनने इकट्ठे हो गए. लेकिन कुवैत में भारी संख्या में भारतीय पर्यटक और विमान यात्री भी थे जो होटलों में फंसे रह गए थे. इन लोगों ने एक-दो दिन तो खूब मजा किया. केबल समाचार, नेटवर्क पर सद्दाम हुसैन ही छाए हुए थे, हिटलर की-सी मुद्रा में हाथ उठाए हुए. होटल के लोग भी इसी मुद्रा में एक-दूसरे का अभिवादन करने लगे थे. उन लोगों ने सद्दाम हुसैन का नाम बदलकर 'सदमा हुसैन' कर दिया.

कानून और व्यवस्था बिगड़ने के बाद कुवैत का अरबों रु. का सर्राफा बाजार लूट लिया गया. अगला धावा मर्सिडीज बेंज कारों और रोलेक्स के शो-रूम पर बोला गया. जल्द ही कुवैत वीरान नजर आने लगा.

वहां से बाहर निकल आए कुवैती भारतीयों का मानना है कि जो इराकी सैनिक वहां आए, वे 'बहुत अच्छे' थे. उनमें ऐसे छोटे लड़के भी थे, जिनकी मसें भी अभी नहीं भीगी थीं. उन्होंने टैंकों पर चढ़कर फोटो खिचवाई. कुछ गुनगुनाने लगे और अपनी बंदूकों के घोड़ों से छेड़छाड़ करते रहे. कुवैत की बाल मनोरोग चिकित्सक डॉ. सुषमा जॉन कहती हैं, "वे लोग हमसे भोजन और पानी की याचना करते. एक इराकी सैनिक ने एक भारतीय परिवार से भोजन मांगा और उसके बदले में उन्हें रोलेक्स घड़ी दे गया."

जब खाद्य सामग्री चुक गई तो 18 वर्षीय चारू ने कॉर्न फ्लैक्स के डिब्बे में जमा की दीनारें छिपा दीं. उसे डर था कि इराकी सैनिक आकर उससे जेवर मांगेंगे. वे बताती हैं, "मेरे पास तो कोई जेवर था नहीं लेकिन मुझे पता था कि मेरे इनकार से वे बौखला जाएंगे. इसलिए मैं कुछ जेवर उधार मांग लाई." कई भारतीयों ने तो अपने घर का सामान बेचने के लिए सड़कों पर दुकान लगा ली. वीडियो, टीवी, रेडियो आदि की कीमतें थीं—20 कुवैती दीनार (पुरानी विनिमय दर के हिसाब से एक हजार रु.).

अमेरिकी और ब्रिटिश लोगों को तो हिरासत में लिया गया पर भारतीयों को यह डर नहीं था. वे खिन्न ज्यादा थे. कई हफ्तों तक उन्हें बिना नहाए-धोए रहना पड़ा. इसके बाद इंद्रकुमार गुजराल वहां पहुंचे और औरतों और बच्चों को अपने साथ चलने को कहा. लिआन रोड्रिक्स बताती हैं, "किसी ने मुझसे संपर्क किया और कहा, 'भारत जाने वाली उड़ान में आपका नाम भी है.' तैयारी के लिए मेरे पास सिर्फ 30 मिनट थे." वे सिर्फ गिटार और मिनरल वाटर की बोतल ही ला पाईं. चारू अनेजा पुराने फोटोग्राफ ला पाई. अलबत्ता वे लाना अपने पिताजी को भी चाहती थीं.

कइयों के लिए तो यह वापसी बेहद दुखदायी थी. वे अपना सब कुछ गंवा बैठे थे. कुवैत के साधनसंपन्न उच्च जीवन स्तर के अभ्यस्त लोग यहां आकर एकदम साधनहीन बन गए. इससे भी ज्यादा कष्टप्रद यह कि कुछ लोगों का आधा परिवार कुवैत में ही रह गया है.

फिर भी जो भारत लौट आए वे भाग्यशाली रहे. वहां बचे कुछ भारतीयों ने जॉर्डन सीमा पार करने की कोशिश की लेकिन उन्हें पता लगा कि उसके लिए दस मील लंबी लाइन है. निर्जलन की वजह से कुछ बच्चे मर भी गए. बगदाद पहुंचने वाले लोगों ने राहत की सांस ली.

बगदाद हवाई अड्डे पर जब वायुसेना का विमान दिखा तो भारतीय खुशी के मारे चीख पड़े. एक महिला ने भारतीय अधिकारी से कहा, " मुझे भारतीय होने का गर्व है." इस विमान में 200 से ज्यादा लोग ठूंसे हुए थे. कुछ विदेश मंत्रालय के संयुक्त सचिव के.पी. फेबियन के साथ ताश खेलने में मशगूल थे. छह घंटे बाद ज्यों ही यह हवाई जहाज इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरा और यहां की गरम हवा वापस आए लोगों से टकराई, ये यात्री एक सुर में चिल्लाए—'भारत माता की जय.'

—सिमरन मार्गव

चारू अनेजा

वायुसेना के इल्युशिन में गुजराल के साथ लौटते कुछ भारतीयः सौभाग्यशाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थव्यवस्था

तेल और उसकी मार

खाड़ी संकट से देश पर दोहरी मार पड़ेगी. तेल आयात बिल बढ़ने से विदेशी मुद्रा कोष पर अधिक बोझ बढ़ेगा. साथ ही आप्रवासी भारतीयों से विदेशी मुद्रा की आमद में भी भयंकर कटौती आ जाएगी.

वस्तुत: तेल से ज्यादा ज्वलनशील तो तेल की कीमतें हैं. कुवैत में इराकी सेना की घुसपैठ के हफ्ते भर बाद ही खाड़ी में कच्चे तेल की कीमतें करीब 17 डॉलर से उछलकर 23 डॉलर पर जा बैठीं और फिर 27 डॉलर तक छलांग लेकर आखिरकार 30 डॉलर को पार कर गईं.

भुगतान संतुलन के गंभीर संकट से गुजरते भारत के लिए इसके नतीजे खतरनाक हो सकते हैं. इस साल फरवरी में पेट्रोलियम मंत्रालय ने सरकार से मौजूदा साल में कच्चे तेल और पेट्रोलियम उत्पादों के आयात के लिए 8,600 करोड़ रु. की मांग की. इस पर वित्त मंत्रालय अड़ गया और पेट्रोलियम मंत्रालय से कहा गया कि वह 1990-91 का आयात बिल 6,400 करोड़ रु. के पिछले साल के स्तर पर ही रखे.

अब सरकारी प्रवक्ता कहते हैं कि अगर तेल आयात बिल को 8,500 करोड़ रु. तक ही सीमित रखा जा सका तब भी सौभाग्य ही समझना चाहिए. उद्योग के जानकारों का दावा है कि अंतत: यह आंकड़ा 10,000 करोड़ रु. तक जा सकता है.

आयात बिल में भारी इजाफा होने के साथ ही विदेशी मुद्रा के एक प्रमुख स्रोत के भी सिकुड़ते जाने की आशंका है. मध्य-पूर्व में काम कर रहे भारतीयों का विदेशी मुद्रा भंडार में योगदान आप्रवासी भारतीयों की कुल जमा राशि का 40 फीसदी है जो इस साल के शुरू में करीब 18,000 करोड़ रु. आंकी गई.

बहरहाल कुवैत, इराक और सऊदी अरब जैसी कमाऊ जगहों पर बसे एक लाख से अधिक भारतीयों के स्वदेश लौटने की खबरों से आप्रवासियों से आने वाली रकम का भविष्य भी अनिश्चित नजर आने लगा. वैसे, थोड़े समय के लिए जमा राशि के बढ़ने की उम्मीद है क्योंकि आप्रवासी भारतीय खाड़ी से अपनी निजी बचत समेटकर भारत में विदेशी मुद्रा आप्रवासी जमा योजनाओं (एससीएनआई) में खाते खोल रहे हैं.

लेकिन बैंक अधिकारियों को आशंका है कि अगर तनाव जारी रहा तो स्वदेश लौट रहे भारतीय शायद फिर वहां न जाएं. नतीजतन जमा राशि घटने लगेगी. और भारत में जीवन-यापन फिर शुरू करने में वे उसे खर्च कर डालेंगे.

दूसरी चिंताजनक बात दिरहम, रियाल और दीनार जैसी मध्य-पूर्व की प्रमुख मुद्राओं की गैर-सरकारी विनिमय दरों में तेजी से गिरावट आना है. भारतीय रिजर्व बैंक ने इस समस्या पर कुछ हद तक काबू पाने की कोशिश की है. उसने कुवैती दीनार की विनिमय दर 25 रु. प्रति दीनार करने की घोषणा की है (मौजूदा स्थिति से पहले कुवैती दीनार की विनिमय दर 50 रु. थी).

लेकिन सबसे बड़ी समस्या तो यह है कि क्या देश अपनी जरूरत के मुताबिक पर्याप्त तेल का आयात कर सकेगा और वह भी किस कीमत पर? इस साल कच्चे तेल और पेट्रोलियम उत्पादों के आयात का जो 1.95 करोड़ टन का लक्ष्य रखा गया था, उसमें करीब 40 फीसदी इराक और कुवैत से ही आने की उम्मीद थी (इसमें इराक के मार्फत रूसी माल का आयात भी शामिल था). पेट्रोलियममंत्री एम.एस. गुरुपदस्वामी का मानना है कि इस कमी को पूरा कर लिया जाएगा. वे बताते हैं कि रूस, मलेशिया और सऊदी अरब पहले ही तेल निर्यात बढ़ाने को राजी हो चुके हैं. वे कहते हैं, "हम युद्ध स्तर पर काम कर रहे हैं."

लेकिन यह काम इतना आसान नहीं. पिछले साल पेट्रोल की खपत 14.5 फीसदी बढ़ गई थी जो अब तक सबसे अधिक है. आयात बिल भी 42 फीसदी से ज्यादा तक पहुंच गया.

तेल की खपत पर सरकार के अंकुश लगाने की कोशिशों की एक वजह यह भी है. अब अधिकारियों को सरकारी कामकाज के बाद गाड़ियों के इस्तेमाल का खर्च वहन करना होगा. छुट्टियों के दिनों में सरकारी गाड़ियों के इस्तेमाल पर प्रतिबंध लग जाएगा. पिछले पखवाड़े कारों पर उत्पाद शुल्क 10 फीसदी बढ़ा दिया गया था और अवमूल्यन की दर 13.3 फीसदी घटा दी गई. वित्तमंत्री मधु दंडवते कहते हैं, "हम धनी लोगों को और कारें खरीदने से रोकना चाहते हैं."

लेकिन तेल की कीमतों में वृद्धि से हर कोई इतना नाउम्मीद भी नहीं है क्योंकि भारत की स्थिति दूसरे तेल उत्पादक देशों से बुरी नहीं होगी. और अगर ऐसी परिस्थिति आई भी तो वह रूस और मलेशिया जैसे मित्र देशों से तेल आयात के भुगतान में कुछ मोहलत ले सकता है. इस तरह वह अपनी स्थिति सुधार सकता है. बहरहाल, यह तो महज डूबते को तिनके के सहारे जैसी ही बात है.

—परंजय गुहा ठाकुरता और एस.एन. बागुची

चार्ट: बी.के. शर्मा

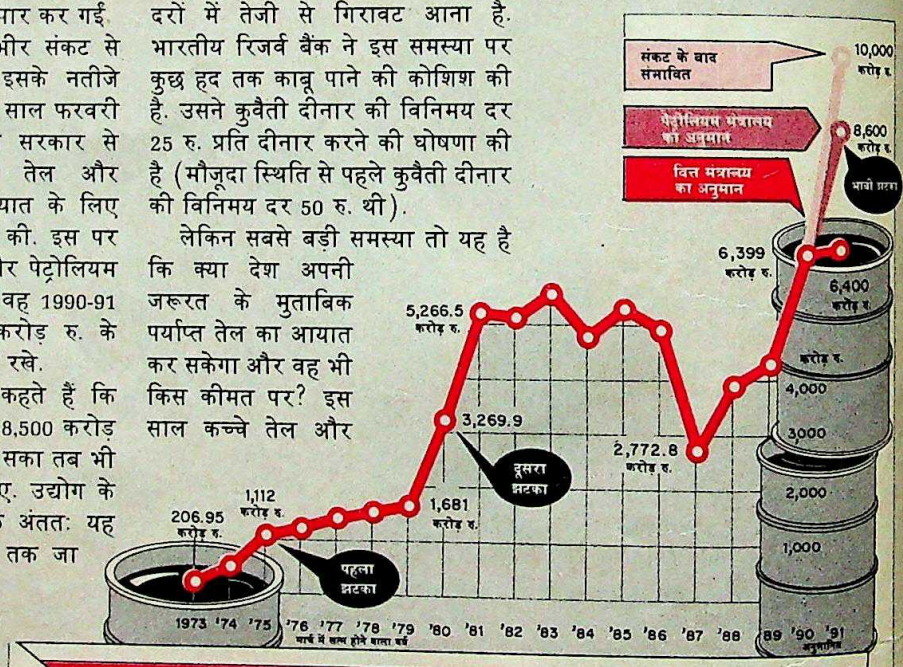

कच्चे तेल और पेट्रोलियम उत्पादों का कुल आयात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

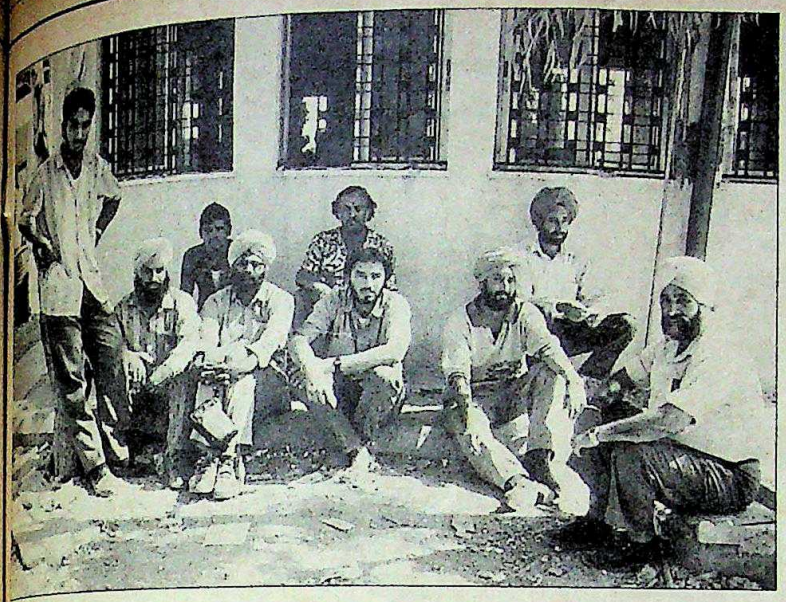

खाड़ी संकट के कारण भारतीय श्रमिकों का सुनहरा सपना चकनाचूर हो गया

...बोधित भी करते. पर भारतीय सब कुछ ...जाते थे क्योंकि उनकी तिजोरियां जो ...रही थीं.

लेकिन अब इस पर विराम लग गया है. कुवैत के अधिग्रहण के बाद जेद्दा से रस-अल ...माह तक के बैंकों में भारतीयों की कतारें ...गईं. पिछले दो दशकों में यह क्षेत्र लाखों भारतीयों के लिए रोजी-रोटी जुटाता रहा है. यहां रोजी कमाने आए लोग हर साल भारत में 315 करोड़ रु. भेजते थे जिससे ...की जिंदगी जीते कई परिवार ...रात अमीर बन गए. छोटे घरों में ...तक ही टू-इन-वन, टीवी, वीसीआर, ...एयरकंडीशनर जैसी चीजों और विदेशी मुद्रा का ढेर लग गया और विदेशी मुद्रा धड़ाधड़ यहां आती रही. (देखें ...).

पर अब यह सब बदल गया है. दुबई के व्यापारी और दहारन के राजमिस्त्री अपने दीनारों को डॉलरों और दोएशमार्क में बदलने लगे हैं. सबसे ज्यादा दहशत बहरीन में है. वह इराकी रासायनिक हथियारों की जद में है और सऊदी अरब से महज 150 किमी दूर है जहां अमेरिकी फौजें डेरा डाले हैं. यहां एक दिन में एक व्यक्ति के 2,000 डॉलर से ज्यादा के मुद्रा परिवर्तन पर रोक ही लगा दी गई है. सिटी बैंक के मध्य-पूर्व, अफ्रीका और यूरोप के क्षेत्र निदेशक राहुल पटकर के अनुसार, "इस पर कोई नियंत्रण नहीं लोग ढेर सारी मुद्रा लेकर हमारे पास आते हैं और कहते हैं कि इसे भेज दीजिए." संकट के पहले पखवाड़े में भारत में 40 करोड़ डॉलर की रकम आई.

पर दुबई के भारतीय व्यापारी परेशान नहीं हैं. कंपनियों पर काबिज होने की महारत रखने वाले मनु छाबड़िया हैं, "हर जगह उथल-पुथल है पर हमारे व्यापार पर कोई असर नहीं पड़ा." दुबई के इस आशावाद को समझा भी जा सकता है. सद्दाम का ध्यान सऊदी अरब पर है. अमेरिकियों के आने से दुबई के व्यवसायियों को नए ग्राहक फंसने की उम्मीद है.

आप्रवासी भारतीय आर्थिक मंच के अध्यक्ष राम बख्शाणी 31 साल से दुबई में हैं. उनका कहना है कि "फौज के आने से व्यापार तो बढ़ना ही चाहिए." एक भारतीय व्यापारी ने इसे कुछ यूं बताया: 50,000 अमेरिकी सैनिकों में से हरेक को 10 लिटर पानी चाहिए. और उन्हें जैसा पानी चाहिए वैसा सऊदी अरब के स्रोतों से नहीं निकलता. सो, संयुक्त अरब अमीरात के आपूर्तिकर्ताओं को अतिरिक्त क्षमता खपाने का बाजार मिल गया है.

फिर भी तुरंत खतरा न दिखने के बावजूद लोग कोई जोखिम मोल लेना नहीं चाहते. एअर इंडिया के अधिकारियों का कहना है कि बुकिंग और यात्रा का अनुपात 3 और 1का हो गया है. वजह यह कि लोगों की जाने की भले ही कोई योजना न हो पर वे सीट बुक करवा लेते हैं.

लोगों की निजी समस्याएं छोड़ भी दें तो खाड़ी का संकट भारत पर तितरफा मार कर रहा है. खाड़ी से आने वाला पैसा अब बंद होने लगेगा. फिर इराक ने भारत से 50 करोड़ डॉलर जो कर्ज लिया है उसकी अदायगी भी फिलहाल नहीं हो सकती. इसी तरह भारतीय कंपनियों का भुगतान भी अनिश्चित ही है. अब 32 डॉलर प्रति बैरल की कीमत पर बिकने वाले तेल की आपूर्ति भी कम हो गई है क्योंकि भारत का 40 फीसदी तेल कुवैत और इराक से आता है. इन दोनों पर लगे आर्थिक प्रतिबंध का भारत को भी समर्थन करना पड़ रहा है. ये सारे संकट मिलकर भारतीय खजाने को 3,000 करोड़ रु. की चोट दे सकते हैं.

इसके संभावित दीर्घकालिक सामाजिक नतीजे भी परेशान कर देने वाले हैं. सबसे ज्यादा असर शायद केरल पर पड़े. खाड़ी में तकरीबन सात लाख मलयाली हैं जिनमें एक लाख से ज्यादा कुवैत में हैं. वहां से आने वाले पैसे की बाढ़ पर अब लगाम लग जाएगी. खाड़ी से अमीर बने लोग अब गरीबी के चंगुल में फंस जाएंगे. घटनाएं कहां ले जा सकती हैं इसका एक उदाहरण पिछले पखवाड़े बंबई के सहार हवाई अड्डे पर मिला. खाड़ी से लौटने वाले एक व्यक्ति ने एक भिखारी से कहा, "अम्मा! मेरे पास तो अब बस ये कपड़े ही हैं."

—**सलिल त्रिपाठी**, अम्मान, दुबई और अबू धाबी में, साथ में **रमेश मेनन**, तिरवनंतपुरम में

अब्दुल शेखली

'करारा जवाब देंगे'

भारत में इराक के राजदूत ६० वर्षीय अब्दुल वदूद शेखली इराक की कार्रवाइयों का जोरदार समर्थन करते हैं:

कुवैत को मुक्त करने के सवाल पर: इज्राएल ने गोलन पहाड़ियों और जॉर्डन के कुछ हिस्सों पर, सीरिया ने लेबनान के कुछ हिस्सों पर, अमेरिका पाक जमीं पर काबिज है. इतिहास बताता है कि कुवैत हमेशा इराक का हिस्सा रहा.

लड़ाई की संभावना पर: अमेरिकी अगर लड़ाई चाहते हैं तो हम करारा जवाब देंगे.

पश्चिमी बंधकों पर: दूसरे महायुद्ध में अमेरिकियों ने जापानी मूल के एक लाख अमेरिकियों को बंधक बनाया था. अब वे हम पर उंगली कैसे उठा सकते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब

शांति की मरीचिका

राजनैतिक प्रक्रिया शुरू होने के कोई आसार नहीं

पंजाब में नवंबर में विधानसभा चुनाव कराने के लिए अगर शांति और सामान्य स्थिति को पूर्व शर्त माना जाए तो इस राज्य में निर्वाचित सरकार की बहाली एक मरीचिका ही लगती है. ऐसा नहीं कि इस दिशा में प्रयास नहीं किए गए. लेकिन अधिकांश सक्रियता राजनैतिक जोड़-तोड़ की ही रही, हिंसा पर काबू पाने की नहीं.

प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह भी पिछले पखवाड़े अचानक जैसे नींद से जागे और उन्हें लगा कि पंजाब मसले की ओर तो पिछले आठ महीने में कोई ध्यान नहीं दिया गया. सो, उन्होंने फिर से वही जादू जगाने की कोशिश की जो दिसंबर '89 के उनके बहुचर्चित अमृतसर दौरे से जगा था. और वे भारत-पाकिस्तान सीमा से लगे लोपोके गांव पहुंच गए, जहां उन्होंने जनसभा में घोषणा कर डाली कि संसद के मानसून सत्र के बाद वे पंजाब में एक सप्ताह की पदयात्रा करेंगे. और, एक बार फिर उन्होंने सर्वदलीय बैठक बुलाने का घिसा-पिटा नारा दोहरा दिया.

इस बीच राज्य प्रशासन ने युवकों को रोजगार के अवसर मुहैया कराने और हिरासत में पड़े सिख युवकों के मामलों की समीक्षा कराने की योजना घोषित की. इन घोषणाओं और उपायों के नतीजों पर केंद्रीय मंत्री नजर रखे हुए हैं.

लेकिन लोपोके की जनसभा में मौजूद भीड़ से जाहिर था कि लोगों में दिसंबर वाला वह उत्साह नहीं रह गया है जब प्रधानमंत्री खुली जीप में अमृतसर की सड़कों पर घूमे थे. जाहिर है, आठ महीने तक लगभग सोए रहने के कारण केंद्र सरकार की साख घटी है. तभी तो जनसभा के दूसरे ही दिन प्रकाश सिंह बादल ने घोषणा कर दी कि अकाली दल का उनका गुट प्रस्तावित सर्वदलीय बैठक में शामिल नहीं होगा. उनके मुताबिक यह 'कोशिश बेमानी' होगी.

उधर, दिशाशून्य अकाली राजनीति हमेशा की तरह ही राज्य के राजनैतिक माहौल को घालमेलभरा बना रही है. सिमरनजीत सिंह मान ने अकाली दल (मान) के अध्यक्ष पद से अचानक इस्तीफा दे दिया क्योंकि स्वयंभू पंथक कमेटी के बुजुर्ग नेता डॉ. सोहन सिंह ने उनकी आलोचना की थी. कमेटी ने ऐलान किया है कि वह उन सभी लोगों का विरोध करती है जो सत्ता में आने के लिए संसदीय राजनीति का रास्ता अपनाने का इरादा रखते हैं. यही नहीं, कमेटी ने मान की पार्टी के उग्र तेवर को भी "सत्ता हासिल करने का दांवपेंच" करार दिया. मान निश्चय ही इससे आहत हुए.

लेकिन अकाली दल (मान) का संकट उस वक्त और गहरा गया जब मान ने पार्टी की कार्यसमिति द्वारा सर्वसम्मति से उनके इस्तीफे को अस्वीकार कर दिए जाने के बाद भी उसे वापस लेने से इनकार कर दिया. मान की स्थिति को विकट बनाने में पार्टी के महासचिव गुरतेज सिंह जैसे उनके कई विरोधियों का भी हाथ था. गुरतेज ने बेबाक अंदाज में कह डाला, "मान चालाकी और फरेब करने की कोशिश में हैं. यह सब ज्यादा नहीं चलने वाला." इस बीच, मान ने प्रधानमंत्री द्वारा 15 अगस्त को पंजाब के बारे में की गई सद्भावना पूर्ण घोषणाओं की आलोचना कर डाली.

उधर, पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट में जारी एक कानूनी लड़ाई ने राज्य के मुश्किल हालात को और मुश्किल ही बनाया है. यह कानूनी जंग 1988 में भंग की गई विधानसभा को पुनर्जीवित करने के लिए है. अकाली दल (लोंगोवाल) विधानसभा को पुनर्जीवित करने के लिए लड़ रहा है, जबकि अकाली दल (मान) इसके खिलाफ है. और अकाली दल (बादल) इस मसले पर बंटा हुआ है. स्वयं प्रकाश सिंह बादल ने तो इसका विरोध किया है पर गुरचरण सिंह तोहड़ा और अमरिंदर सिंह ने केंद्र के साथ मिलकर विधानसभा को पुनर्जीवित कराने का ही प्रयत्न किया.

केंद्र सरकार के उलझन भरे रुख से तो यही संकेत मिल रहा है कि संभवतः वह भी यही समझती है कि पुरानी विधानसभा को पुनर्जीवित करना नए चुनाव कराने से ज्यादा आसान है. लेकिन अगर मकसद निर्वाचित सरकार की बहाली है, तो ऐसा करना गलत दिशा में उठाया गया एक और कदम ही होगा.

—कंवर संधू

लोपोके में लोगों से मिलते वी.पी. सिंह

करन सिह/द इण्डिया टुडे

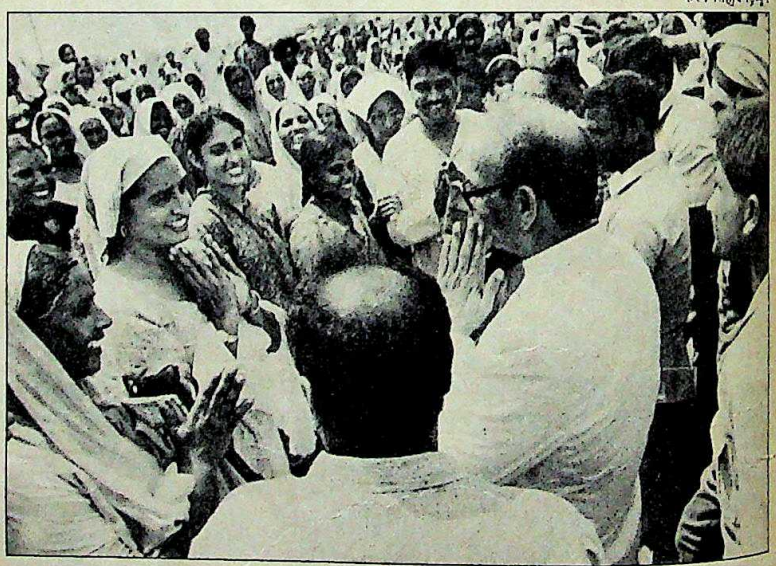

प्रधानमंत्री ने अचानक पंजाब का दौरा करके वही जादू जगाने की कोशिश की जो पिछले साल दिसंबर '89 में उनके अमृतसर दौरे से जगा था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फोटो शरद सक्सेना

भारत-पाक झड़प

लापरवाही का नतीजा

पाकिस्तान 5,000 घुसपैठियों को पार कराने पर आमादा

ऊंचे पहाड़ी दर्रों में शुरुआती जाड़े की बर्फ गिरने में अब एक महीने से भी कम समय रह गया है और नियंत्रण रेखा के दोनों तरफ बेचैनी फैल गई है. जहां पाकिस्तानी सेना के अधिकारी दर्रों के बंद होने के पहले हर कीमत पर 5,000 प्रशिक्षित कश्मीरी आतंकवादियों को सीमा पार कराने के लिए बेचैन हैं, वहीं भारतीय सेना के अधिकारी उन्हें दूर ही रखने के लिए कोई कोर-कसर बाकी नहीं छोड़ रहे हैं. पिछले पखवाड़े उत्तरी-पश्चिमी कश्मीर के कुपवाड़ा सेक्टर में दोनों तरफ से कई बार तोपें गरजीं.

हालांकि नियंत्रण रेखा पर दोनों तरफ से छोटे हथियारों का चलना आम बात है, लेकिन 20 अगस्त को पाकिस्तान का 80 और 120 मिमी तोपों का इस्तेमाल करना असाधारण बात थी. इस गोलाबारी में एक भारतीय जवान मारा गया और चार जख्मी हो गए.

इस सेक्टर में, जो भारतीय क्षेत्र में प्रवेश के लिए घुसपैठियों का प्रमुख मार्ग है, जून के आखिर से ही तनाव का माहौल बन रहा था. और पिछले महीने पाकिस्तानी सैनिक नियंत्रण रेखा पारकर भारतीय क्षेत्र में 200 गज भीतर तक घुस आए.

यही नहीं, 'घुसपैठियों' ने भारतीय जमीन पर पक्की खंदकें तक बना डालीं और सीमा पर तैनात भारतीय सैनिकों की गैर-जानकारी में उनमें अड्डा भी जमा लिया. इन खंदकों को रात में भगत और जंगल टेकरी स्थित भारतीय सेना के अग्रिम रक्षित क्षेत्र के ठीक सामने बनाया गया. भारतीय सेना ने इन दोनों अग्रिम रक्षित क्षेत्रों और गश्त के लिए वहां बने अपने बंकरों को छोड़ दिया था जो उनकी भयंकर भूल साबित हुई. अग्रिम रक्षित क्षेत्रों को खाली देख पाकिस्तानी सैनिकों का उत्साह बढ़ गया था.

वह तो एक महीने बाद पता चला कि घुसपैठियों ने वहां कब्जा जमा रखा है. सेना के एक अधिकारी कहते हैं, "सीमा के

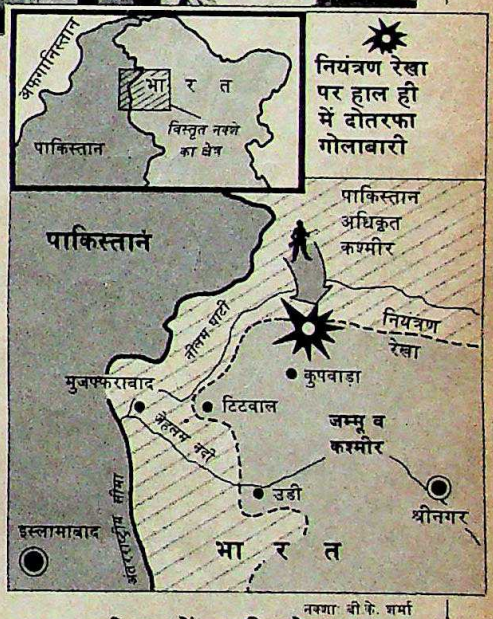

नक्शा: बी.के. शर्मा

श्रीनगर में बम विस्फोट के बाद लगी आग

भीतर 200 गज तक घुसपैठ करना मुश्किल नहीं है क्योंकि पहाड़ों के कारण हम ज्यादा दूर तक नहीं देख सकते." आखिरकार 12 अगस्त को 15 कोर के सैनिकों ने पाकिस्तानी बंकरों पर गोलाबारी करके उन्हें नष्ट कर दिया. सूत्रों का दावा है कि कार्रवाई में देरी इसलिए हुई कि नई दिल्ली में दोनों देशों के विदेश सचिवों के बीच बातचीत होने वाली थी. ऐसे नाजुक मौके पर तनाव बढ़ाना उचित नहीं था.

शुरू में कोशिश की गई कि दोनों देशों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सैन्य संचालक महानिदेशक ही हॉटलाइन पर मामले को निबटा लें. लेकिन जब मामला नहीं निबटा तो भारतीय सैनिकों ने अग्रिम रक्षित क्षेत्रों में, जो 10,000 से 11,000 फुट की ऊंचाई पर स्थित हैं, मझोली मशीनगनें और दूसरे हथियार ले जाने में ज्यादा जल्दबाजी नहीं दिखाई.

इस तरह 20 अगस्त की घटना, जिसमें पाकिस्तान ने तोपों से भारी गोलाबारी की, दोनों देशों की सेना के बीच बढ़ते हुए तनाव की परिणति थी. 20 अगस्त को सबेरे 11 बजे पाकिस्तानी सैनिकों ने, जो 12 अगस्त को पीछे हटने के लिए मजबूर हो गए थे, भारतीय अग्रिम रक्षित क्षेत्रों और तीन दूसरी चौकियों पर 120 और 80 मिमी की तोपों से गोले बरसाने शुरू कर दिए.

पाकिस्तानी सैनिकों के गोले बरसाने और अग्निबम फेंकने से कुछ भारतीय चौकियां नष्ट हो गईं, एक जवान मारा गया तथा चार घायल हो गए. सेना के एक अधिकारी ने कहा, "अगर जवान खाइयों में न घुस जाते तो मृतकों की संख्या और भी अधिक हो सकती थी." भारतीय सैनिकों ने भी जवाब में गोले बरसाए. दोनों तरफ से लगातार 12 घंटे तक गोलाबारी होती रही.

कूटनीति और संयम से विस्फोटक स्थिति थोड़ी-बहुत शांत हो गई. लेकिन कश्मीर समस्या, जिसमें हथियारबंद और प्रशिक्षित घुसपैठिए प्रमुख तत्व हैं, के मद्देनजर यह घटना खतरनाक हो गई.

पाकिस्तान में 5,000 प्रशिक्षित आतंकवादी नियंत्रण रेखा पार करने के लिए उपयुक्त समय का इंतजार कर रहे हैं. 15 अक्तूबर तक की अवधि काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि तब पहाड़ों के दर्रे बर्फ से पट जाएंगे और आतंकवादियों के लिए सीमा पार करना बहुत मुश्किल हो जाएगा. इस लिहाज से, पाकिस्तान ने सामान्य मशीनगनों और छोटे हथियारों के बजाए 120 मिमी की तोपों और मोर्टारों का जो इस्तेमाल किया वह काफी खतरनाक है. भारतीय सेना और सीमा सुरक्षा बल का मानना है कि भारी गोलाबारी यही दर्शाती है कि "पाकिस्तान सारी मर्यादाएं लांघ रहा है." पाकिस्तानी सैनिक न सिर्फ घुसपैठ होने दे रहे हैं बल्कि भारतीय सैनिकों को झड़पों में उलझाकर आतंकवादियों को सीमा पार कराने में व्यक्तिगत रूप से मदद भी कर रहे हैं.

भारतीय और पाकिस्तानी सैनिकों के बीच की झड़पें मुख्य रूप से उत्तर में कुपवाड़ा से लेकर नीचे पुंछ तक फैली हुई पहाड़ी सीमा पर केंद्रित हैं. पाक अधिकृत कश्मीर के ठीक सामने पड़ने वाला कुपवाड़ा बहुत संवेदनशील जिला है और वहां कट्टरपंथी जमात-ए-इस्लामी का प्रभुत्व है. इसलिए वहां के निवासी आतंकवादियों की खुलेआम मदद करते हैं.

राज्यपाल गिरीश सक्सेना कहते हैं, "अगले दो महीने सामरिक लिहाज से काफी महत्वपूर्ण हैं. जेकेएलएफ प्रमुख यासीन मलिक और उसके सहयोगी हमीद शेख की गिरफ्तारी के बाद पाकिस्तान ने इसलिए गोलाबारी की कि कहीं आतंकवादियों का मनोबल न गिर जाए." लेकिन दिल्ली में जहां चर्चा है कि भारत सरकार जेकेएलएफ से गुप्त बातचीत चला रही है, वहीं दूसरे आतंकवादी गुट झुकने को तैयार नहीं हैं. अपनाई है. वह उन्हें आगजनी का प्रशिक्षण दे रहा है और सुरक्षा बलों के छापों के समय घरों को जलाने के लिए पेट्रोल से भरे जैरीकेन दे रहा है. इसके अलावा वह यह दुष्प्रचार अभियान भी चला रहा है कि सुरक्षा बल अंधाधुंध लूटपाट कर रहे हैं. दरअसल, आईएसआई ने जेकेएलएफ के नाम से आतंकवाद पर एक पुस्तिका निकाली है जिसमें गलत सूचना और गलत प्रचार की जरूरत पर प्रकाश डाला गया है. जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल गिरीशचंद्र सक्सेना के सलाहकार (गृह) जे.एम. कुरैशी के मुताबिक पाकिस्तानी गुप्तचर संस्था के तैयार किए एक दस्तावेज में इस बात का संकेत है कि जब भी सुरक्षा बलों की कार्रवाई हो आतंकवादी अपने हमले शुरू कर दें. यह दस्तावेज हाल ही में

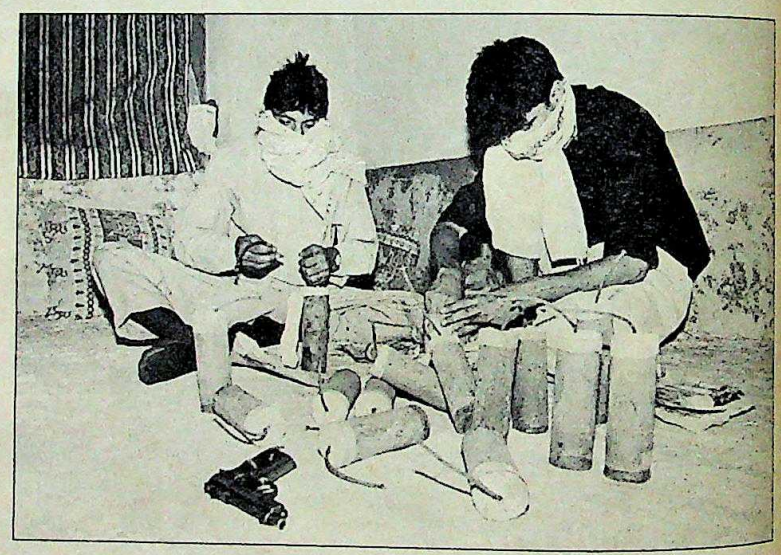

श्रीनगर में बम बनाते हुए आतंकवादी

जैसा कि हिजबुल्ला के उप-प्रमुख आसिफ इकबाल ने 'इंडिया टुडे' से श्रीनगर में कहा, "मैंने पाकिस्तानी कब्जे वाले कश्मीर में एक महीने का फौजी प्रशिक्षण लिया है. यह हमारे लिए जेहाद है."

भारतीय सेना और सीमा सुरक्षा बल पाकिस्तान में हुए उलटफेर से, जिसे वे 'जियावाद की वापसी' कहते हैं, बहुत चिंतित हैं. बेनज़ीर भुट्टो की बरखास्तगी के एक पखवाड़े के भीतर इंटर सर्विस इंटेलिजेंस (आईएसआई) के प्रमुख शम्सुर रहमान को हटाकर उनकी जगह जिया के पूर्व सहयोगी मेजर जनरल महमूद दुर्रानी को बैठा दिया गया.

पाकिस्तान ने आतंकवादियों की हर तरह की मदद करने और घाटी को जलते रहने देने के लिए अब एक रणनीति आतंकवादियों से बरामद किया गया है.

जाहिर है, पाकिस्तान और आतंकवादी पहाड़ों के दर्रों में बर्फ भर जाने के पहले हर कीमत पर अधिक से अधिक विध्वंसकारियों को सीमा पार भेज देने की फिराक में हैं. घाटी में हथियारों और विस्फोटकों की बाढ़ आ गई है. हाल के हफ्तों में बरामद हथियारों और विस्फोटकों में टीएनटी के 200 स्लैब भी शामिल हैं. एक वरिष्ठ सुरक्षा अधिकारी के शब्दों में, "यह श्रीनगर शहर को उड़ाने के लिए काफी है."

चूंकि सीमा पार करने के लिए पाकिस्तान में लगभग 5,000 आतंकवादी इंतजार कर रहे हैं और घाटी में हथियारों और विस्फोटकों की बाढ़ आ गई है, कश्मीर के लिए चल रही खूनी लड़ाई में अगले कुछ हफ्ते काफी अहम साबित होंगे.

—हरिंदर बवेजा, श्रीनगर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्टून: जयंतो

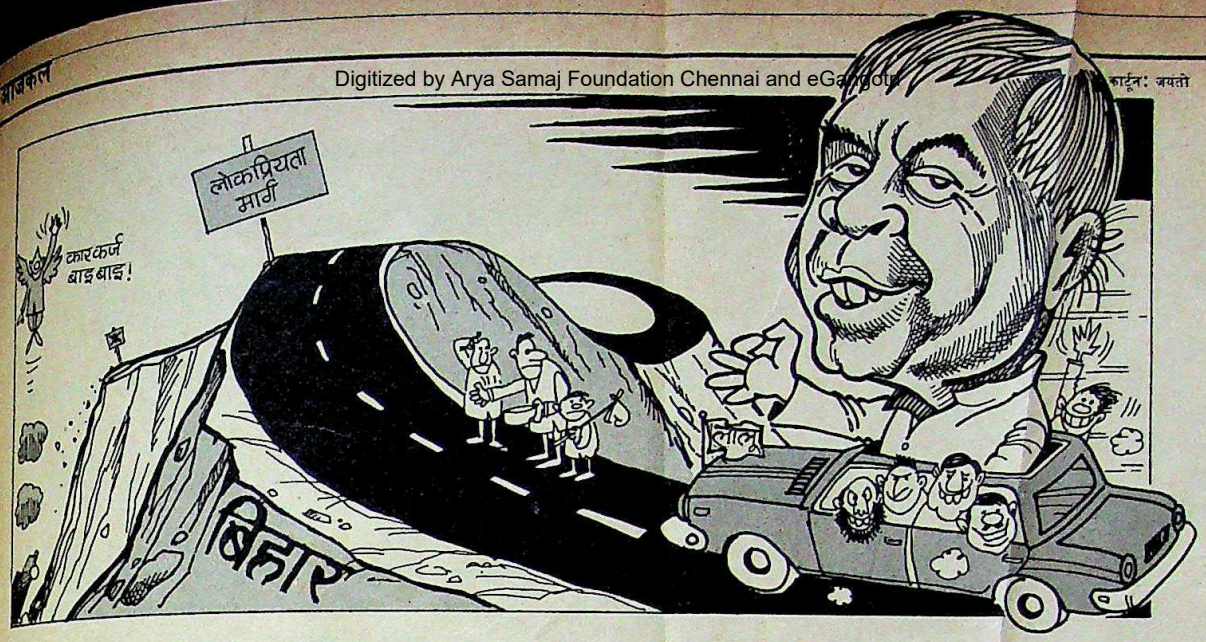

बिहार

नुमाइंदों को नजराना

विधायकों के लिए एक नायाब योजना

वे विनम्र स्वभाव के हैं और देश के दूसरे सबसे बड़े राज्य बिहार का मुख्यमंत्री होने के बावजूद अपने विशाल परिवार के साथ पटना के बाहरी इलाके में चपरासियों के एक कुटियानुमा क्वार्टर में रहते हैं. यह सिक्के का एक पहलू है. दूसरा पहलू यह है कि भ्रष्टाचार और सामाजिक-आर्थिक विषमताएं मिटाने के इरादे के बावजूद लालू प्रसाद यादव अपने मित्रों की संख्या बढ़ाने और अधिक से अधिक विधायकों को अपने पक्ष में करने की पुरजोर कोशिश कर रहे हैं, भले ही इस काम में उन्हें जन प्रतिनिधियों के सामने सरकारी सुख-सुविधाओं की बौछार करनी पड़े. पूर्व मंत्री और मोमिन नेता खालिद अनीस सावा का कहना है कि सिक्के का दूसरा पहलू यह दर्शाता है कि यादव कमजोर मुख्यमंत्री हैं और अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए हाथ-पांव मार रहे हैं. शुभचिंतकों की संख्या बढ़ाने और विधायकों को अपने पक्ष में करने की उनकी कोशिश उस समय स्पष्ट हो गई जब उन्होंने 325 विधानसभा सदस्यों और 60 विधान परिषद सदस्यों (विधान परिषद में 60 सीटें खाली हैं) को कार के लिए 1.65 लाख रु. का ब्याज-मुक्त ऋण देने का प्रस्ताव किया. अब तक इस कदम का कहीं कोई विरोध नहीं हुआ. पिछले पखवाड़े जब राज्य विधानसभा में विधायकों को और सुविधाएं मुहैया कराने वाले विधेयक पर बहस हो रही थी तो इंका के मुख्य सचेतक राजो सिंह और युवा विधायक तथा पूर्व मंत्री रघुवंश प्रसाद रंजन झा यह कहते हुए सुने गए कि इस योजना को जल्द लागू किया जाए. सभी पार्टियों के विधायकों की प्रसन्नता से उत्साहित यादव ने एक इंटरव्यू में अपने इस कदम को सही ठहराया. उन्होंने कहा, "निर्वाचन क्षेत्रों का दौरा करने और वहां काम करने में विधायकों को बहुत मुश्किल होती है." जल संसाधन और बिजलीमंत्री जगदानंद सिंह ने कहा," यदि विधायक दौरे नहीं करेंगे तो अपने निर्वाचन क्षेत्रों में काम कैसे करेंगे." उनके मुताबिक सरकारी सुविधाओं की कमी के कारण ही वे ठेकेदारों और इंजीनियरों का एहसान लेते हैं. लेकिन इस योजना से वित्त विभाग के अधिकारी उलझन में पड़ गए हैं. उनका कहना है कि इस योजना के सिरे चढ़ जाने पर सरकारी खजाने पर न केवल 6.5 करोड़ रु. का अतिरिक्त बोझ पड़ेगा बल्कि कर्ज की उगाही में भी मुश्किल होगी. लेकिन मुख्यमंत्री का कहना है कि सरकार कर्ज की उगाही के लिए एक ऐसी पुख्ता योजना पर विचार कर रही है जिसके तहत विधायक के वेतन से हर माह कम-से-कम 2,000 रु. काट लिए जाएंगे. और अगर वह अगले चुनाव में हार जाता है तो कर्ज की रकम उसकी पेंशन से काटी जाएगी.

विधायकों को अपनी कार खरीदने के लिए ब्याज-मुक्त कर्ज देने के फैसले से सरकारी खजाने पर 6.5 करोड़ का अतिरिक्त बोझ पड़ेगा

बुजुर्ग समाजवादी नेता और पूर्व मंत्री कपिलदेव सिंह के अनुसार दूसरी पार्टियों के विधायकों की बनिस्बत सत्तारूढ़ जनता दल के विधायक जन-समस्याओं की अनदेखी कर अपनी सुविधाओं में बढ़ोतरी के लिए ज्यादा उत्सुक हैं. देश में बिहार के निर्वाचित जन प्रतिनिधि को सबसे ज्यादा सुविधाएं मिलती हैं. उसे हर महीने वेतन, भत्ते और दूसरी सुविधाओं के रूप में लगभग 10,000 रु. मिलते हैं. इसके अलावा, पटना में नाममात्र के किराए पर पांच साल के लिए मकान, उसकी साज-सज्जा के लिए 10,000 रु. और रखरखाव के लिए सालाना 10,000 रु. भी दिए जाते हैं. उसे एक और विशिष्ट सुविधा भी मिली हुई है. हर विधायक को (विधान परिषद सदस्य को छोड़) अपने निर्वाचन क्षेत्र में विकास कार्यों के लिए सालाना तीन लाख यानी पांच साल में 15 लाख रु. दिए जाते हैं.

और अब सरकार उन्हें ब्याज-मुक्त कार ऋण भी देने जा रही है. पूर्व मुख्यमंत्री और विपक्ष के नेता जगन्नाथ मिश्र ने कहा, "हम इस मामले पर चुप हैं क्योंकि यह फैसला लोगों को करना है कि मुख्यमंत्री क्या कर रहे हैं और लोगों की समस्याएं सुलझाने के बजाए किस तरह सरकारी पैसे का दुरुपयोग कर रहे हैं." लेकिन विधानसभा में जनता दल के मुख्य सचेतक उपेंद्र प्रसाद वर्मा ने इस कदम का बचाव करते हुए कहा, "संसदीय लोकतंत्र में विधायकों को इतनी सुविधाएं तो मिलनी ही चाहिए कि वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरों का एहसान लिए बिना अपने निर्वाचन क्षेत्रों में बिना किसी बाधा के काम कर सकें." उनके मुताबिक विधायकों को इतनी सुविधाएं मिलनी ही चाहिए कि वे बिना किसी से प्रभावित होकर अपना काम निडरता से कर सकें.

कुछ अधिकारियों और विधायकों ने अपना नाम न छापने का अनुरोध करते हुए कहा कि बिहार के जन-प्रतिनिधियों को भारी-भरकम सुविधाएं और विशेषाधिकार देने का मकसद बिहार की यह छवि बनाना है कि यह संपन्न राज्य है. लेकिन सचाई बिलकुल उलट है. राज्य के 67,566 में से 23,648 गांवों में सड़कें नहीं हैं. 100 वर्ग किमी क्षेत्र में औसतन 10 किमी लंबी सड़क है जबकि इसका राष्ट्रीय औसत 22.23 किमी है. यही नहीं, 47,918 गांव अभी भी पेयजल की समस्या से ग्रस्त हैं. लगभग 270 गांवों में तो पेयजल का स्रोत ही नहीं है. इसके अतिरिक्त लगभग 50 फीसदी आबादी अभी भी गरीबी रेखा के नीचे जी रही है. एक अधिकारी ने कहा कि जब विधायकों के निर्वाचन क्षेत्रों में सड़कें ही नहीं हैं तो वे अपनी कार कहां दौड़ाएंगे.

वैसे, अभी वित्त विभाग पूर्व मंत्रियों से कार एडवांस का बकाया वसूल नहीं कर पाया है. कर्ज न लौटाने वालों में दो पूर्व मुख्यमंत्री महामाया प्रसाद सिन्हा और दरोगा प्रसाद राय भी हैं जिनकी मृत्यु काफी पहले हो चुकी है. इसी तरह कर्ज न लौटाने वाले लगभग 12 पूर्व मंत्रियों की भी मृत्यु हो चुकी है. जिन दूसरे दिग्गजों ने कर्ज लिया, लेकिन अब इस दुनिया में नहीं हैं, उनमें झारखंडी नेता जयपाल सिंह, समाजवादी नेता बसावन सिंह और तेज नारायण यादव, मौजूदा विधानसभा अध्यक्ष गुलाम सरवर, भाजपा विधायक दल के नेता ललित उरांव, पूर्व मुख्यमंत्री बिंदेश्वरी दुबे, रामानंद यादव, राजेंद्र प्रसाद सिंह, दिलकेश्वर राम, हरिहर महतो, दिलीप कुमार सिंह और युवा इंका अध्यक्ष श्याम सुंदर सिंह धीरज (सभी इंका) हैं.

उधर, प्रदेश इंका में भी वाहनों को लेकर मारामारी है. 38 नेताओं ने 70 लाख रु. मूल्य की जीपें अभी वापस नहीं की हैं जो उन्हें चुनाव प्रचार के दौरान दी गई थीं. जिन नेताओं को नई जीपें वापस करनी हैं उनमें दो पूर्व मुख्यमंत्री, चार पूर्व केंद्रीय मंत्री, राज्य के लगभग छह पूर्व मंत्री और 12 पूर्व सांसद शामिल हैं.

बहरहाल, अब कार और जीपें उपलब्ध हो जाने से बिहार के राजनेता गतिशील बनने को तैयार हैं. लेकिन जनता पर इससे करों का बोझ और बढ़ेगा ही.

—फरजंद अहमद

अंतर्कथा
इंद्रजील बधवार

आत्मघाती जुमलेबाजी

जिस समय आपको यह लगने लगता है कि उनका हथियार कुंद हो गया है और वे अलग-थलग पड़ गए हैं, ठीक उसी समय विश्वनाथ प्रताप सिंह अंधेरे से निकलकर अखाड़े में आ जाते हैं और अपने विरोधियों को ऐसा चकमा देते हैं कि वे दिग्भ्रमित हो जाते हैं. लेकिन दूसरों को चकमा देने में खुद चकमा खा जाने का खतरा भी हमेशा बना रहता है.

दिल्ली में देवीलाल की किसान रैली में भले ही 20 लाख लोग न आए हों, लेकिन इतने कम लोग भी नहीं आए कि रैली को विफल कहा जाए. प्रधानमंत्री के कुछ मंत्रिमंडलीय सहयोगियों ने निजी बातचीत में माना कि इस रैली के जो राजनैतिक नतीजे सामने आए उनसे वे उद्विग्न हो गए. लेकिन किसी को ऐसी उम्मीद नहीं थी कि वी.पी. सिंह अचानक इतनी तेजी से जवाबी हमला बोलेंगे. और इसके लिए उन्होंने चुना लाल किले को. टेलीविजन के सामने बैठी करोड़ो की भीड़ के सामने देवीलाल की तीन लाख की भीड़ महत्वहीन साबित हो गई.

दूरदर्शन से प्रसारित अपने स्वतंत्रता दिवस भाषण के दौरान विश्वनाथ प्रताप सिंह ने अपना हर रूप दिखाया—चाहे वह कवि, राजनैतिक और विद्वान का रहा हो या संवेदनशील विदूषक, बाजीगर या गंवई का. आप चाहें तो उनकी तुलना 10 महीने पहले चले चुनाव अभियान के दौरान रुंधे गले से किसानों के खून, पसीने और आंसुओं की बातें करते और गांवों की मिट्टी से अपने माथे पर तिलक लगाने वाले वी.पी. सिंह से कर सकते हैं.

रेखाचित्र प्रणव दत्त

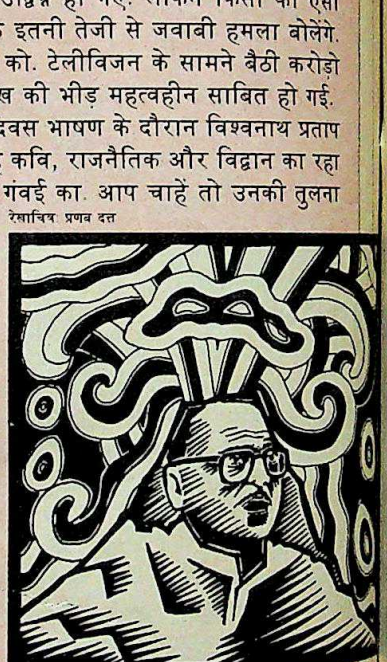

फकीर के रूप में राजा. वे फिर वही पुराना चुनावी जादू पैदा करने की कोशिश कर रहे थे जिससे उन्होंने मतदाताओं को सम्मोहित कर लिया था. लेकिन इस बार वह जादू चला नहीं. चुनाव के समय धूल भरे इलाके में व्यवस्था को चुनौती देते देख लोग उनकी तरफ ऐसे खिंचे चले आते थे मानो वे चुंबक हों लेकिन लाल किले से वे वोट बैंक की तलाश में लगे एक प्रधानमंत्री सरीखे ही दिखे.

इससे भी बदतर यह कि वे सिर्फ नारा देने वाले तिकड़मी कांग्रेसी नेता सरीखे दिखे. सबसे पहले इंदिरा गांधी ने 'गरीबी हटाओ' नारे से देश को चकाचौंध किया. फिर राजीव गांधी ने पंचायती राज का राजनैतिक मंत्र दिया. और अब वी.पी. सिंह ने वोट खींचने का दूसरा मंत्र दिया है आरक्षण.

वादे, सिर्फ वादे, महिलाओं और बच्चों के लिए विशेष कार्यक्रमों की घोषणा. किसान दशक की घोषणा. वी.पी. सिंह चाहे जितनी कोशिश कर लें, सत्ताविहीनों को रातोरात सत्ता नहीं सौंप सकते. और तेल संकट से अर्थव्यवस्था को खतरा पैदा हो जाने से वे अपने लोक-लुभावन वादों को पूरा करने के लिए रकम भी पानी की तरह नहीं बहा सकते. नारों के जरिए उम्मीदें जगाना और उन्हें पूरा न करना बहुत खतरनाक खेल है.

नारे के बासी पड़ जाने का मतलब होता है राजनीतिक की मौत की घंटी. कांग्रेस संस्कृति की यही तो खासियत रही है कि ठीक चुनाव के पहले (लोक-लुभावन) नारे उछाले जाते रहे हैं.

मध्यावधि चुनाव हों या न हों लेकिन एक बात तो तय है, प्रधानमंत्री प्रधानमंत्री पद के लिए दौड़ रहे हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान

बुजुर्गों, बच्चों में तनातनी

मगर अब इंका की नींद टूटी

कल तक जिनसे छड़ी के सहारे के बिना चला नहीं जाता था, आज उनके चेहरों पर ललाई है. और हुंकार भरने व लोगों की भीड़ से घिरे रहने वाले युवा चेहरे मुरझाए हुए हैं. राजस्थान में कांग्रेस की स्थिति इन दिनों ऐसी ही है. मगर राज्य सरकार ने नगरपालिका और नगर परिषदों के चुनावों की घोषणा करके कांग्रेस की नींद तोड़ दी है.

पिछले पांच महीने से प्रदेश कांग्रेस के दफ्तर पर कुहासा-सा ही छाया रहता था. कार्यकर्ताओं की बात तो दूर, कांग्रेस की प्रदेश कार्यकारिणी के पदाधिकारी भी वहां नजर नहीं आते. कहने को तो प्रदेश कार्यकारिणी में एक अध्यक्ष, 11 उपाध्यक्ष, 12 महासचिव को जोड़कर 80 लोगों की फौज हैं मगर मुश्किल से वहां आठ पदाधिकारी बैठते होंगे. परंतु स्थानीय चुनावों की घोषणा के बाद यह कुहासा छंटने लगा है और भीड़ जुटने लगी है.

वैसे, पिछले चार महीनों में प्रदेश कांग्रेस और इसके अग्रिम संगठन किसी भी कार्यक्रम में बड़ी भीड़ नहीं जुटा पाए.प्रदेश कांग्रेस की रैली और धरने फीके रहे, वहीं युवक कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश चेन्नीथिला के जयपुर आगमन पर हुई रैली भी कोई खास नहीं थी. विधानसभा पर अग्रिम संगठनों की ओर से जहां अच्छे प्रदर्शन किए गए, वहीं बुजुर्ग नेता और विधायकों ने विधानसभा में सरकार के खिलाफ मुंह नहीं खोला. एक युवा नेता ने तो आरोप लगाया कि मंडावरी में हुए हत्याकांड के मामले में भी बुजुर्ग नेता सरकार से मिल गए. कांग्रेस ने एक दिन भी विधानसभा में धरना नहीं दिया जबकि उसके अगले दिन राजीव गांधी मंडावरी जाने वाले थे और विधानसभा में बजट भी पेश होना था.

सभी फोटो: रोहित जैन

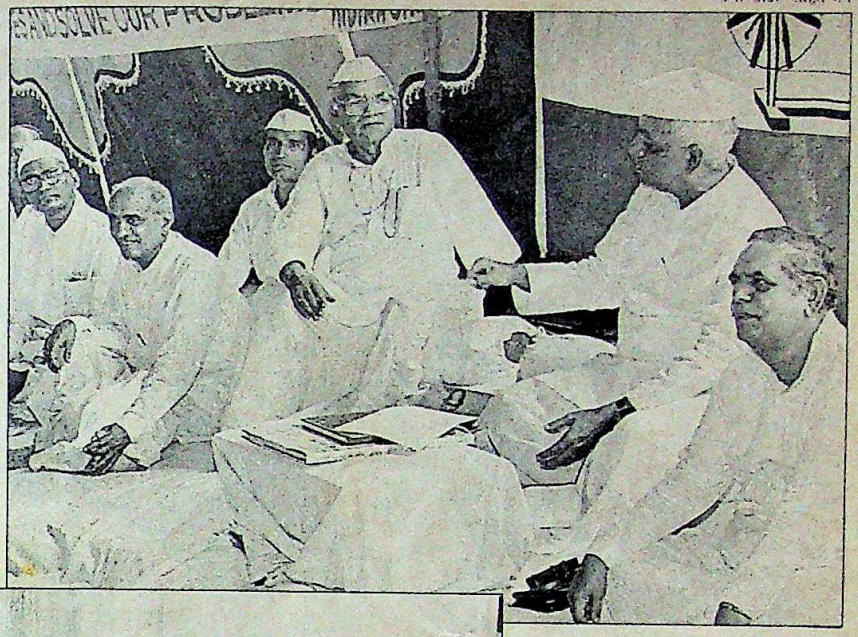

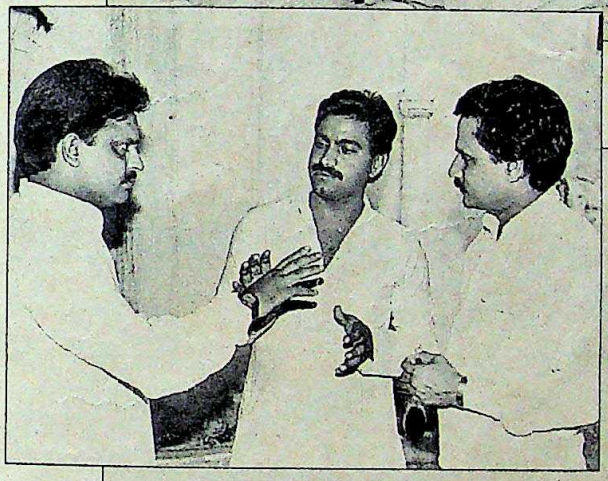

बुजुर्ग नेता; और रणनीति बनाते युवा नेता

प्रदेश इंका के युवा नेताओं का आरोप है कि पुराने नेताओं ने कुछ न करने की ठान रखी है

युवा नेताओं ने आरोप लगाया कि 'कांग्रेस फोरम फॉर एक्शन', समाजवादी संगठन आदि राजीव का विरोध करने और उन्हें ब्लैकमेल करने के लिए बने हुए हैं. प्रदेश कांग्रेस कमेटी की एक उच्चस्तरीय बैठक में अशोक गहलोत ने आरोप लगाया कि फोरम राजीव के खिलाफ साजिश है. उन्होंने कहा कि इस बैठक में शामिल एक पूर्व इंका महामंत्री ने इस संगठन को काफी बल दिया है. गहलोत का इशारा नवल किशोर शर्मा की ओर था.

इन आरोपों का खंडन करते हुए फोरम के प्रमुख कर्ताधर्ता और पूर्व केंद्रीय मंत्री शर्मा कहते हैं, "इस संगठन का मकसद पार्टी को मजबूत करना है. हमारी मान्यता है कि पार्टी में चुनाव होने चाहिए और आंतरिक लोकतंत्र को महत्व देना चाहिए." एक और वरिष्ठ नेता का कहना है कि कुछ लोग समानांतर संगठन चलाना चाहते हैं और उनकी कुंठाएं हैं, अन्यथा युवाओं की बराबर तरजीह दी गई है. इस नेता का कहना था कि दरअसल पहले सत्ता की वजह से इन लोगों को गाड़ियां, पैसा और अन्य सुविधाएं मिलती थीं, जो अब नहीं मिलने से उन्हें परेशानी है.

प्रदेश युवक कांग्रेस के अध्यक्ष रघु शर्मा कहते हैं, "हमारी मंशा समानांतर संगठन चलाने की कभी नहीं रही. हमने हरिदेव जोशी से भी कहा कि हम उनके नेतृत्व में काम करने को तैयार हैं, मगर हमारी सुनवाई तो हो."

एन.एस.यू.आई. के प्रदेशाध्यक्ष युवा विधायक जुबैर खां कहते हैं कि नगरपालिका चुनावों में उम्मीदवार तय करते वक्त युवा नेतृत्व से नहीं पूछा गया, उन्हें विश्वास में नहीं लिया गया. पूर्व मुख्यमंत्री शिवचरण माथुर का भी मानना है कि कांग्रेस के युवा वर्ग के साथ न्याय नहीं हो रहा है.

बुजुर्गों और 'बच्चों' की तनातनी से कांग्रेस का कितना भला हो रहा है, यह तो स्थानीय चुनावों के नतीजों से ही जाहिर हो पाएगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कटाक्षः अजीत नैनन

सनद रहे

जन्मदिनः राजीव गांधी का. वे 20 अगस्त को 46 वर्ष के हो गए. जन्मदिन समारोह में

बस इंका कार्यकर्ता और नेता ही थे, जो राजीव को हार पहनाने के लिए धक्का-मुक्की कर रहे थे. राष्ट्रपति ने बधाई का गुलदस्ता एडीसी के मार्फत भेजा, तो प्रधानमंत्री वी.पी.सिंह ने पूर्व प्रधानमंत्री को टेलीफोन से बधाई देना ही बेहतर समझा.

सफल परीक्षणः भारत के नवीनतम और अत्याधुनिक, जमीन से हवा में मार करने वाले बहुद्देशीय प्रक्षेपास्त्र **'आकाश'** का. ओडीसा के चांदीपुर में इसके सफल परीक्षण की वजह से ही शायद ये अफवाहें जोरों पर हैं कि इस परियोजना के सर्वेसर्वा अबुल कलाम को रक्षा मंत्रालय में बतौर वैज्ञानिक सलाहकार नियुक्त किया जा रहा है.

पदमुक्तः एल.पी. सिहारे राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली के महानिदेशक पद से. अब वे 'ऑफिसर ऑन स्पेशल ड्यूटी' बना दिए गए हैं. संग्रहालय क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सिहारे को पदमुक्त करने की वजह इतनी थी कि उन्होंने संग्रहालय परिसर में प्राचीन विरासत के बीच एशियाई विकास बैंक के प्रतिनिधियों को शराब पेश की.

डूबाः भारतीय नौसेना का युद्धपोत **आईएनएस अंडमान,** बंगाल की खाड़ी में विशाखापत्तनम के पास. रूस में बना पेत्या समूह का यह युद्धपोत अभ्यास करते वक्त खराब मौसम के कारण समुद्र में डूबा. इसमें सवार 118 लोग एक दूसरी नौका ने बचा लिए पर 15 लोग अभी भी लापता बताए जाते हैं.

नियुक्तः एस. जयपाल रेड्डी , जनता दल के अधिकृत प्रवक्ता. वी.पी. सिंह खेमे से संबंध रखने वाले रेड्डी भारी जोड़-तोड़ के बाद एकमत से इस पद पर नियुक्त किए गए. वैसे, पार्टी के अनधिकृत प्रवक्ता की भूमिका में वे खासे कामयाब रह चुके हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्लू चिप.
महंगी
आन-बान,
पर
मुनासिब
दाम.

डॉलर की ज़रूरत नहीं!

ब्लू चिप

शर्ट्स-ट्राउज़र्स

VIP

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओट में वोट

—इंद्रजीत बधवार

यह एक ऐसा फैसला है जो इतिहास के पन्नों में शायद एक शर्मनाक फैसले के रूप में दर्ज होकर रह जाएगा. यह एक ऐसा फैसला भी है जो विश्वनाथ प्रताप सिंह के एक राजनेता से एक राजनैतिक लफ्फाज बन जाने की मिसाल के रूप में याद किया जाएगा. दिल्ली में देवीलाल की रैली से दो दिन पहले 7 अगस्त को उन्होंने घोषणा की कि सरकार ने मंडल आयोग की सिफारिशें लागू करने का फैसला किया है.

विश्वनाथ जानबूझकर नई राजनैतिक फसल के बीज बो रहे हैं, यह उस समय उजागर हो गया जब उन्होंने स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले की प्राचीर को चुनावी मंच में तब्दील कर दिया. अपने भाषण में उन्होंने मंडल रिपोर्ट को लागू करने का वादा दोहराया, बाबासाहब आंबेडकर का नाम लेकर हरिजनों के नाम अपील जारी की और हजरत मुहम्मद के जन्मदिन पर सरकारी छुट्टी की घोषणा करके मुसलमानों को खुश करने की कोशिश की.

लेकिन पिछले पखवाड़े की घटनाओं से यह तो जाहिर हो ही गया कि विश्वनाथ ने दरअसल बदनामी मोल ली है. सत्ता के भूखे पहले के नेताओं की तरह वे भी अब वोट व सत्ता के भूखे उस नेता की तरह दिखने लगे हैं जो देश को बांटने वाले धर्म और जाति के हथकंडों का सहारा लेने में कोई शर्म नहीं करता. पिछले चुनाव में उन्होंने बाबरी मस्जिद विवाद से पैदा धार्मिक विभाजन का लाभ उठाया. लेकिन कम ही लोग यह उम्मीद कर रहे थे कि वे जातिवादी हथकंडे का इस तरह खुल्लमखुल्ला इस्तेमाल करेंगे. यह सही है कि उनकी पार्टी ने मंडल रिपोर्ट लागू करने का चुनावी वादा किया था. मगर एक अघोषित समझदारी भी थी कि इसे लागू करने से पहले राय-मशविरा किया जाएगा.

इसलिए इस फैसले की घोषणा करने का जो मौका चुना गया उससे जाहिर हो गया कि विश्वनाथ इस मुद्दे को कितने छिछले तरीके से लेते हैं. मंत्रिमंडल से देवीलाल की बरखास्तगी के बाद मंत्रिमंडल की राजनैतिक मामलों की समिति (सीसीपीए) में उनकी जगह शरद यादव को लाया गया जो पिछड़ों के राष्ट्रीय नेता बनने को बेताब हैं. यादव 6 अगस्त को पहली बार सीसीपीए की बैठक में शरीक हुए और इसी में उन्होंने मंडल रिपोर्ट को तुरंत लागू करने का सुझाव पेश कर दिया. इस सुझाव का समर्थन करने वालों ने यहां तक खुलकर कहा कि इससे एक 'वोट बैंक' बनेगा. कुछ सदस्यों ने भाजपा और वामपंथी दलों से मशविरा करने का सुझाव दिया जिसे विश्वनाथ ने मान लिया. पर उन्होंने लालकृष्ण आडवाणी और हरकिशन सिंह सुरजीत को सिर्फ सूचित भर किया.

और 7 अगस्त को घोषणा कर दी गई. बस, जैसे तूफान बरपा हो गया. उत्तर भारत के अधिकांश इलाकों में आरक्षण विरोधी आंदोलन फूट पड़ा. आंध्र प्रदेश को छोड़ पूरा दक्षिण भारत शांत रहा क्योंकि अधिकतर दक्षिणी राज्यों में अधिकांश जातियों ने खुद को पिछड़ा घोषित करा कर प्रादेशिक नौकरियों और कॉलेजों में आरक्षण की व्यवस्था कर ली है. आरक्षण विरोधियों का गढ़ रहा गुजरात भी लगभग शांत रहा क्योंकि सोलंकी को गद्दी से उतारने वाला आंदोलन चलाने के बाद पटेलों ने अहम पदों पर कब्जा कर लिया है. मुख्यमंत्री के पद पर आज वहां एक पटेल ही बैठा है. चिमनभाई पटेल ने केंद्र के फैसले का खुला समर्थन करके मुसीबत से बचने की ही कोशिश की है. राजस्थान में विश्वविद्यालय व कॉलेज का शैक्षणिक सत्र शुरू नहीं होने से छात्रों की संगठित शक्ति फिलहाल पूरी तरह से नहीं जुटी है. इसका असर राज्य में सबसे ज्यादा बीकानेर, कोटा, भरतपुर, अजमेर और जयपुर जिले के शहरी हिस्सों में है.

आरक्षण विरोधी प्रदर्शन: भविष्य की लड़ाई

आरक्षण विरोधी आंदोलन को कोई राजनैतिक समर्थन या संगठित नेतृत्व हासिल नहीं है

इधर, करीब सभी पार्टियों—इंका, वामपंथी, भाजपा—ने सोची-समझी चुप्पी साध रखी है. जिन वोट बैंक को फुसलाने में सभी पार्टियां भी लगी हैं, उन्हें लाभ पहुंचाने वाली किसी घोषणा का विरोध ये कैसे कर सकती हैं. लेकिन जैसे-जैसे आंदोलन तेज होता गया, वैसे-वैसे भाजपा और वामपंथी पार्टियां बेचैन होने लगीं. बंगाल के मुख्यमंत्री ज्योति बसु ने विश्वनाथ को पत्र लिखकर सुझाव दिया कि आर्थिक रूप से कमजोर तबकों को भी आरक्षण दिया जाए. भाजपा अध्यक्ष आडवाणी ने सवाल उठाया कि अल्पमत वाली सरकार इतना अहम फैसला अपने सहयोगियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाज पर चोट

इन दबावों के बाद सरकार ने जल्दबाजी में बीसीपीए की बैठक की और घोषणा कर दी कि वह आर्थिक आधार पर 5 से 10 फीसदी आरक्षण देने पर विचार करेगी. फीसदी आरक्षण देने पर कुल आरक्षित सीटों का प्रतिशत 59.5 हो जाएगा.

इन तमाम कवायदों से उजागर हो गया कि जनता दल हर कीमत पर राजनैतिक लाभ मारने को आमादा है. इसका उग्र तेवर दो केंद्रीय मंत्रियों—रामविलास पासवान और शरद यादव—के उन भाषणों से उजागर हो गया जो इन्होंने दिल्ली के बोट क्लब पर झुग्गीवालों की सभा में दिए. इंका के भ्रष्ट नेताओं की शैली में इन्होंने तो इन दोनों ने झुग्गीवालों को आरक्षण विरोधी ताकतों को 'करारा जवाब देने' की हिदायत दी. इस पूरे भाषण को दूरदर्शन समाचारों में जिस तरह प्रचारित किया गया उससे लगा कि यह सरकार क्षुद्र राजनैतिक स्वार्थों के लिए जाति युद्ध कराने से भी नहीं हिचकेगी.

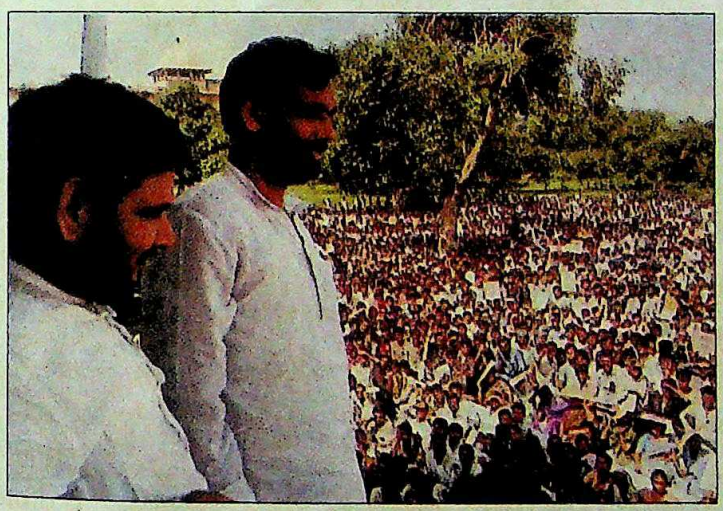

रैली में पासवान और शरद यादवः उग्र तेवर

लगा कि सरकार क्षुद्र राजनैतिक स्वार्थों के लिए जाति युद्ध कराने से भी नहीं हिचकेगी

उधर, सड़कों पर उतर कर आरक्षण विरोधी छात्रों को देखकर ऐसा नहीं लगता कि वे सबके सब ऊंची जातियों के ही छात्र हैं जिन्हें अपने निहित स्वार्थों पर हमले का खतरा महसूस हो रहा है. और न ही वे वास्तविक रूप से वंचित लोगों—अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों—के लिए आरक्षित कोटे का विरोध कर रहे हैं. आरक्षण विरोधियों में अधिकांश मध्यम वर्ग निम्न मध्यम परिवारों के लड़के-लड़कियां हैं जिनके लिए शिक्षा बेहतर भविष्य का साधन और उम्मीद है. अचानक इस उम्मीद पर उन्हें पानी फिरता नजर आया. अपना भविष्य उन्हें उस दुनिया के लिए गिरवी रखा जाता नजर आया जिसमें ऊंचे घरों को जाति और आरक्षण के जरिए नए विशेषाधिकार हासिल होंगे जो अभी ही गांवों और शहरों में पर्याप्त राजनैतिक और आर्थिक दबदबा रखते हैं. यह विशेषाधिकार विभाजन और कटुता की उन भावनाओं को और भड़काएगा जो इस देश को हमेशा से कमजोर करती रही है.

त्रासदी यह है कि दांव पर 1 लाख से भी कम नौकरियां हैं लेकिन मेहनती और मेधावी छात्रों के लिए ये रोजगार के अवसर तो जरूर हैं. अब जाति के आधार पर अगर उन्हें इन अवसरों के सिकुड़ने का खतरा पैदा होता है तो वे हताश ही होंगे. जाति को इस देश के मुख्य मंच पर स्थापित करके विश्वनाथ ने राजनैतिक अनैतिकता का आचरण किया है. उन्होंने उन्हीं भावनाओं और नफरतों को भड़काया है जो इस देश को कमजोर करती रही हैं.

समस्या की जड़ यही है. सवाल केवल चंद नौकरियों का ही नहीं है, कुछ बड़े मुद्दे भी दांव पर हैं. आजादी के बाद यह देश धीरे-धीरे यह सोचने लगा था कि भूमि सुधारों, आर्थिक प्रगति, शहरीकरण, और राजनैतिक प्रक्रिया के कारण शोषित वर्गों की बढ़ती ताकत और शिक्षा के कारण बढ़ती सामाजिक जागरूकता के चलते जातिवाद का असर घटता जा रहा है. लेकिन कौन जानता था कि इस देश की जनचेतना में जातीय भावना को पुनर्जीवित करने का काम कोई और नहीं बल्कि देश का प्रधानमंत्री ही करेगा?

लेकिन यह भी कुल मिलाकर चुनावी खेल का हिस्सा नजर आता है. भारतीय नेता 40 वर्षों से जाति और मजहब का खेल खेलते रहे हैं लेकिन मतदाता उनकी चालों को अक्सर अपने विवेक से विफल करते रहे हैं. इसलिए उम्मीद बंधती है कि वे विश्वनाथ के इस राजनैतिक खेल को भी विफल कर देंगे. लोग हमेशा साफ और सीधा फैसला सुनाते आए हैं. लोगों ने तो नेताओं को निराश नहीं किया मगर नेता हमेशा लोगों को कमजोर और निराश करते रहे हैं. पिछले 40 वर्षों से नेतागण ऐसा आचरण करते रहे हैं, मानो यह देश उनकी निजी जायदाद हो और वे उसे नतीजे की फिक्र किए बिना इस्तेमाल करते रह सकते हैं. आरक्षण का मौजूदा फैसला उनकी इस मान्यता को ही उजागर करता है कि जातिवाद को वे दुधारू गाय की तरह दुह सकते हैं.

इस देश के भविष्य की इससे अलग कल्पनाएं करने वाले लोग आज खुद को हताश महसूस कर रहे हैं. पिछले पखवाड़े दिल्ली के फैशनेबल कनॉट प्लेस में एक फटा-पुराना पायजामा पहने जो साइकिल सवार हाथ में यह तख्ती उठाए जा रहा था कि 'कृपया मेरे भविष्य के साथ खिलवाड़ न करें' वह इस हताशा का सबसे सटीक प्रतीक नजर आ रहा था. उसका यह छोटा-सा नारा आरक्षण के इस फैसले से उपजे पीड़ाजनित क्रोध और निराशा की सबसे सटीक अभिव्यक्ति मानी जा सकती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जातीय बंटवारे का बीज

आरक्षण विरोधी इस आंदोलन को देश में बेरोजगारी की भीषण समस्या के संदर्भ में देखना ज्यादा उपयुक्त होगा. इस लिहाज से देखा जाए तो यह झगड़ा वास्तव में रोजगार के बेहद सीमित अवसरों की मारामारी का झगड़ा है.

जो कुछ दांव पर लगा है

उपलब्ध ताजा आंकड़ों के मुताबिक, 1988 के दौरान सार्वजनिक उपक्रमों, रेलवे, बैंक, केंद्रीय सेवाओं समेत केंद्र सरकार की सभी सेवाओं में लगभग 2,04,290 खाली पद थे. अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए 22.5 फीसदी आरक्षण को छोड़ दें तो सिर्फ मंडल आयोग के 27 फीसदी आरक्षण के चलते 55,000 नौकरियां पिछड़ी जातियों के लिए आरक्षित हो जाएंगी.

इनमें अधिकांश निचली श्रेणी की नौकरियां ही हैं. उपलब्ध ताजा आंकड़ों के अनुसार स्थिति यह है—'अ' वर्ग (आईएएस, आईपीएस, आईएफएस, रेलवे, अवर सचिव, उप-सचिव और निदेशक आदि) के 3,572 स्थान; 'ब' वर्ग (विभागीय अधिकारी, उच्च श्रेणी लिपिक, सहायक लेखा अधिकारी और सहायक लेखा परीक्षक वगैरह) के 6,712 स्थान; 'स' वर्ग (कार्यालय सहायक, स्टेनोग्राफर और निम्न श्रेणी के लिपिक आदि) के 1,33,93[illegible] स्थान; और 'द' वर्ग (ड्राइवर, चपरासी वगैरह) के 60,072 स्थान हैं.

आम तौर पर शिक्षित वर्ग से आए जो छात्र आज आंदोलन पर उतारू हैं वे जाहिर है, चपरासी की नौकरी के लिए खुली प्रतियोगिता के अधिकार की मांग नहीं कर रहे हैं. मंडल ने उच्च श्रेणी की सिर्फ 38,937 नौकरियां दूसरी पिछड़ी जातियों के लिए आरक्षित की हैं. इसलिए आरक्षण का असर मामूली ही होगा.

(दाएं) आरक्षण का विरोध करते छात्र; लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री: हर तबके को खुश करने की कोशिश

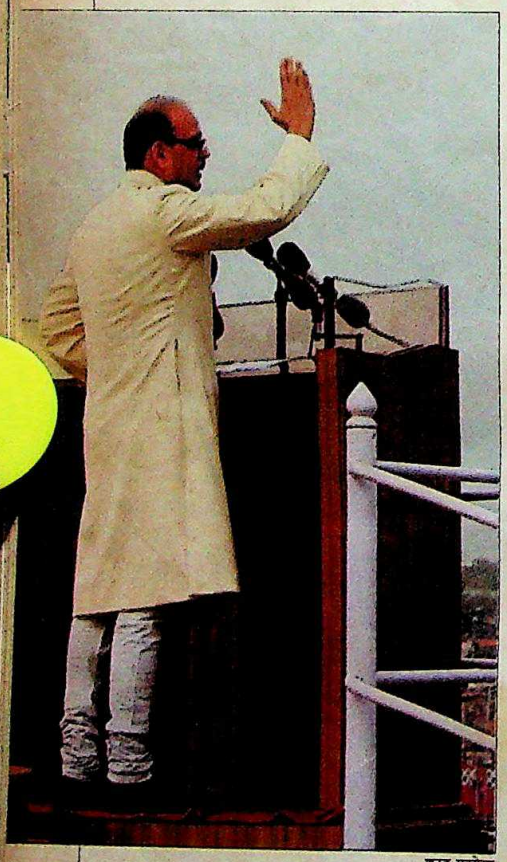

जरद सक्सेना

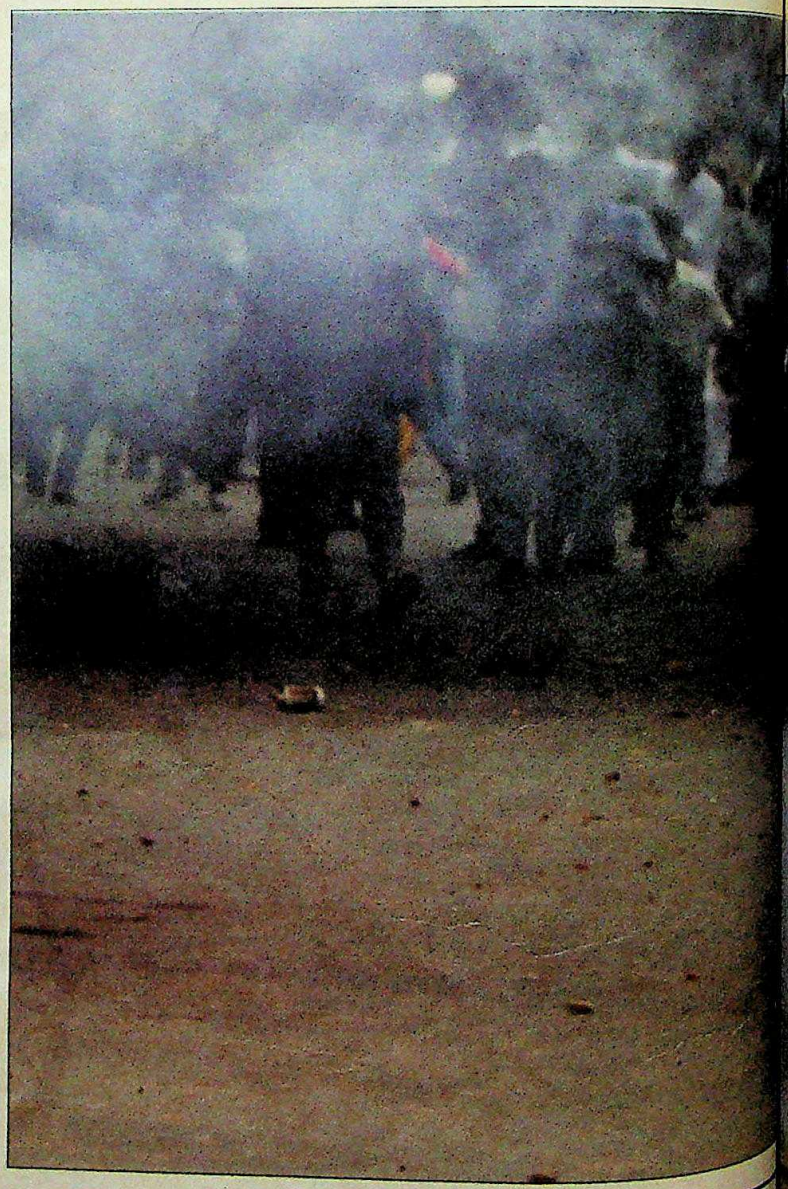

. CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरक्षण विरोधियों को भी संभवतः इन आंकड़ों की जानकारी नहीं है. फिर भी इन आंकड़ों से उन लोगों की नाराजगी का अंदाज नहीं लगाया जा सकता. अगर सरकार ने जाति के आधार पर 55,000 लोगों को वृत्तियां देने या उनके कल्याण के लिए नकद भुगतान करने का फैसला किया होता तब शायद विरोध का कोई स्वर न फूटता. लेकिन जाति के आधार पर नौकरियां आरक्षित करने से भयानक विस्फोट-सा हो गया है.

लेकिन देश में बेरोजगारी की विकट समस्या के चलते एक नौकरी भी जीवन-मरण का सवाल बन जाती है. रोजगार के अवसर घटते जा रहे हैं और रोजगार के उम्मीदवारों की संख्या दिन दूनी रात चौगुनी गति से बढ़ रही है (देखें चार्ट). सार्वजनिक उपक्रमों में 1971 में सालाना रोजगार वृद्धि दर 3.4 फीसदी थी पर वह 1988 में घटकर 1.7 फीसदी हो गई. अर्थव्यवस्था में सुधार और उदार आर्थिक नीतियों के बावजूद संगठित निजी क्षेत्र भी रोजगार के अवसर पैदा करने में नाकाम रहा है. 1971 में 41.7 फीसदी रोजगार मुहैया करने की इसकी क्षमता 1988 में घटकर 28.8 फीसदी पर पहुंच गई.

इस बीच देश भर के रोजगार कार्यालयों में पंजीकृत लोगों की संख्या 1971 में 51 लाख थी, जो 1988 आते-आते 3.02 करोड़ हो गई. इनमें से 28 लाख लोगों के पास स्नातक या स्नातकोत्तर डिग्रियां थीं. पिछले साल केंद्रीय लोक सेवा आयोग ने 4,522 नौकरियों के लिए विज्ञापन दिया तो इसकी प्रतियोगिता में बैठने का आवेदन 4.54 लाख उम्मीदवारों ने भर दिया. कल्याण मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी कहते हैं, "दरअसल, पिछड़े वर्गों के आरक्षण ने शिक्षित बेरोजगारों की हताशा और नाराजगी को तूल दे दिया." इस भावना की प्रचंडता को समझने के लिए एक उदाहरण ही काफी है. मंडल रिपोर्ट लागू होने से पहले आम श्रेणी की नौकरी में किसी उम्मीदवार के चयन की संभावना 1:129 थी, मगर अब यह 1:197 हो जाएगी.

प्रमोद पुष्करणा

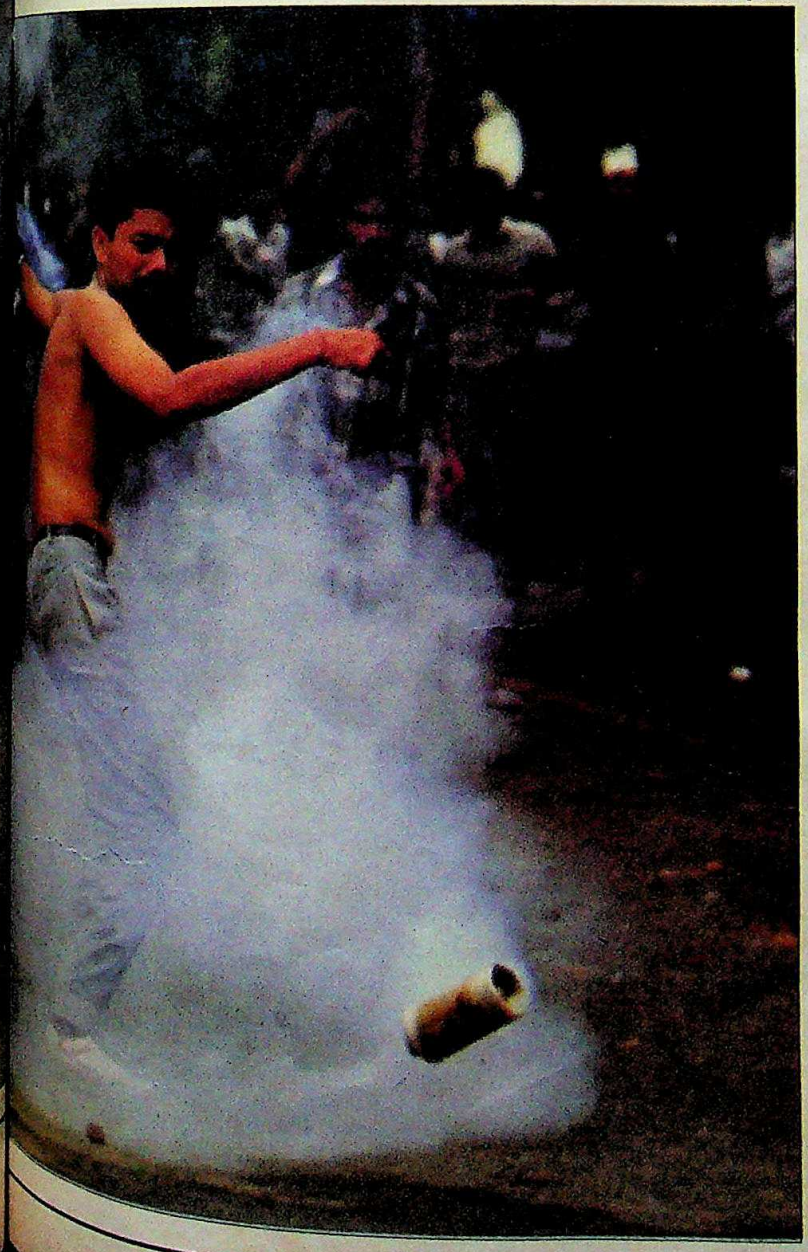

बांटो और राज करो

सहयोगी दलों से सलाह-मशविरा या राष्ट्रीय सहमति बनाने की कोशिश के बिना आरक्षण लागू करने के फैसले से जाहिर है कि शासक दल अपने राजनैतिक हितों को राष्ट्रीय हितों के ऊपर तरजीह दे रहा है. और कुछ केंद्रीय मंत्री जिस तेवर के साथ इस फैसले के पक्ष में बोल रहे हैं, उससे

खतरा सिर्फ जातीय संघर्ष के भड़कने और फैलने का ही नहीं बल्कि पूरी व्यवस्था के छिन्न-भिन्न हो जाने का है

जाहिर है कि वी.पी. सिंह की सरकार जातीय राजनीति का खेल खेलने को किस तरह उतावली है. जब भाजपा ने कल्याणमंत्री रामविलास पासवान को आंदोलनकारी छात्रों से बातचीत करने की सलाह दी तो वे गुस्से में बोले, "यह सिर्फ यही दिखाता है कि ऊंची जातियां व्यवस्था परिवर्तन की राह में अभी भी कैसे रोड़े अटका रही हैं. हर राजनैतिक दल ने अपने चुनाव घोषणा पत्र में मंडल रिपोर्ट लागू करने का वादा किया है. मगर अब वे चाहते हैं कि हम अपने कदम वापस खींचें."

पासवान के इस तेवर से जाहिर है कि उनकी अल्पमत सरकार अपना जनाधार व्यापक करने की सोची-समझी रणनीति पर चल रही है और वह अपने विरोधियों को उलझन में डालना चाहती है. मंडल रिपोर्ट को लागू करने के लिए वी.पी. सिंह के सामने तीन बड़ी मजबूरियां थीं.

पहली मजबूरी यह थी कि जाट नेता देवीलाल से अलग होने के बाद विश्वनाथ का राजनैतिक समीकरण गड़बड़ा गया. अहीर, जाट, गूजर और राजपूत यानी कथित 'अजगर' गठजोड़ का एक बड़ा पाया छिटक गया था. फिर, उत्तर प्रदेश और बिहार में जनता दल की सरकारें भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

American Express,
club class and jet lag.
Model No. 62-9011
Rs. 648.34*

Drucker & Murphy's
Law over burgers and colas.
Model No. 62-8341
Rs. 606.24*

Conferences,
collaborations and
boardroom battles.
Model No. 62-9021
Rs. 602.03*

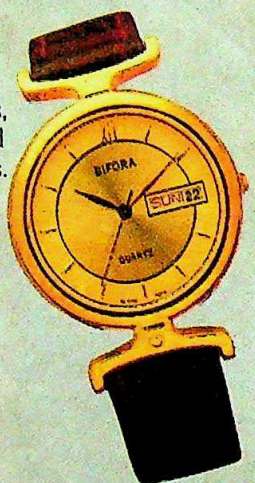

Bulls,
bears and blue chips.
Model No. 62-8631
Rs. 602.03*

Presentations,
PCs and endless cups
of black coffee.
Model No. 62-8581
Rs. 667.28*

Bifora brings out the best in you

BIFORA
QUARTZ

It's a watch to excel in. Bifora Quartz. Born of excellence. And an impeccable German lineage. With a hardy quartz movement that is a guarantee of perfection. And plating that will flawlessly outlast the years. Sold and serviced throughout the country. Bifora Quartz is from the people who pioneered quartz technology.

Bifora Quartz, with a 2-year confident guarantee.

Your time in your style.

Drafts, project reports
blunt pencils and razor minds.
Model No. 63-8591
Rs. 717.80*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुश्किल में थीं. दूसरे, वी.पी.सिंह को इंका की बेमानी बनाने के लिए उत्तर भारत में निचले स्तर पर इकाइयां गठित करने के लिए जाति के निहित स्वार्थ वाले नए गठजोड़ की जरूरत थी. और अंततः भाजपाई हिंदुत्ववाद के त्रिशूल को भोथरा करने के लिए भी उत्तर भारत में हिंदुओं में फूट डालना उनकी रणनीति का एक हिस्सा है.

पहले भी इस देश के नेता अपने राजनैतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए समाज कल्याण का दिखावा करते रहे हैं. 1972 से 1978 के दौरान कर्नाटक में देवराज अर्स ने ताकतवर लिंगायत जाति में फूट डालने के लिए उसकी उपजातियों का वोक्कालिगा जाति से गठजोड़ कायम करवाया और फिर इस नए गठजोड़ को 50 फीसदी आरक्षण दे दिया. तमिलनाडु में द्रविड़ आंदोलन ने वेल्लियाल, चेट्टियार, नायडू और मुदलियार जातियों का नया ताकतवर वर्ग तैयार किया जिसके लिए 31 फीसदी आरक्षण की व्यवस्था की गई.

खासकर उत्तर प्रदेश और बिहार के यादवों, कुर्मियों का समर्थन जुटाने की कोशिश में वी.पी.सिंह को विश्वास है कि सामाजिक विषमता दूर करने का नारा उछालकर आरक्षण विरोधी आंदोलन का सामना किया जा सकता है. और इसके सहारे मध्यावधि चुनाव भी जीता जा सकता है. उत्तर प्रदेश और बिहार में, जिन्हें वी.पी. सिंह देश का 'दिल और दिमाग' कहते हैं, यह रणनीति काम कर सकती है. उत्तर प्रदेश में मुसलमानों (जो अभी जनता दल के साथ हैं) और पिछड़ों की कुल आबादी 51 फीसदी है, तथा बिहार में 54 फीसदी.

रोहित जैन

जयपुर में सचिवालय के बाहर डिग्रियां जलाते छात्र और छात्राएं

आरक्षण का एक शोचनीय पहलू यह है कि इससे मेडिकल और इंजीनियरिंग कॉलेजों के स्तर में गिरावट आ सकती है

यह रणनीति राजनैतिक तकाजों को भले पूरा करती हो, इसे सामाजिक न्याय दिलाने की कोशिश बताना अतिशयोक्ति है. पिछड़ी जातियां ताकतवर खेतिहर तबका होने के साथ ही अब अपनी राजनैतिक ताकत भी जताने लगी हैं. मसलन, बिहार विधानसभा में इनके सदस्यों की संख्या 40 फीसदी, उत्तर प्रदेश में 30 फीसदी और कर्नाटक में 50 फीसदी से ज्यादा है. वी.पी. सिंह मंत्रिमंडल में उनकी संख्या 50 फीसदी है. बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्र कहते हैं, "जैसे आजादी से पहले मुस्लिम लीग ने देश में सांप्रदायिकता फैलाई, उसी तरह वी.पी. सिंह ने जातिवादी राजनीति का सूत्रपात किया है. दोनों ही समाज के लिए समान रूप से घातक हैं."

चार्ट: बी.के. शर्मा

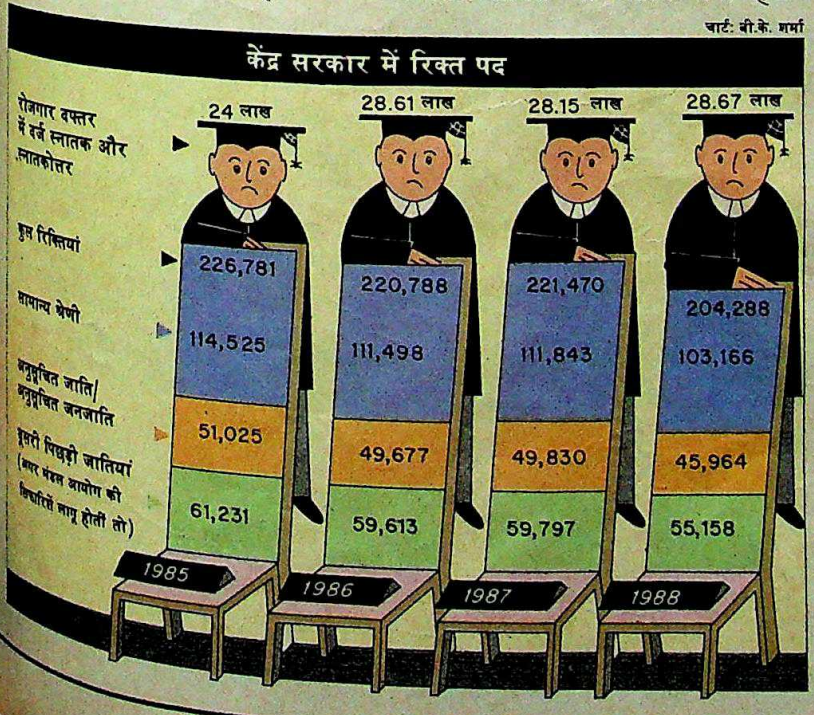

मेधावी पर मार

दिल्ली के एक स्नातक संजय भाटिया 1979 और 1980 में भारतीय प्रशासनिक सेवा की प्रतियोगिता में आम उम्मीदवार के रूप में बैठे और असफल हो गए. 1982 में दिल्ली के इंका सांसद सज्जन कुमार ने एक मजिस्ट्रेट से सिफारिश की कि भाटिया को अनुसूचित जाति 'आदि धर्मी' का प्रमाण-पत्र दिया जाए. मजिस्ट्रेट से वे यह प्रमाण-पत्र ले आए. बाद में उन्होंने यह परीक्षा पास की और प्रशिक्षण के लिए मसूरी की प्रशिक्षण अकादमी में पहुंच गए. सीबीआई ने उनके खिलाफ जाति बदलने की साजिश और धोखाधड़ी का मुकदमा शुरू किया क्योंकि उनके पिता शहर के राजपूत संगठन के पदाधिकारी थे. अब यह मामला अदालत में है और भाटिया हरियाणा पुलिस को अपनी सेवाएं दे रहे हैं. यह मामला अपवाद हो सकता है पर इससे पता चलता है कि उच्च

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अमाड्यूस' के निर्माताओं ने यूरोप के सबसे रचनात्मक फैशन डिजाइनरों का ध्यान अपनी ओर खींचा

- 'अमाड्यूस' जैसी उम्दा सूटिंग्स शृंखला के निर्माता मॉडर्न सूटिंग्स अब भारतीय डेनिम को गौरव के शिखर पर पहुंचाने की ओर बढ़ रहे हैं.
- मॉडर्न सूटिंग्स अब दुनिया के जाने-माने फैशन डिजाइनरों को अच्छी किस्म का 'डेनिम' निर्यात करने के लिए एक नया, पूरी तरह निर्यात आधारित संयंत्र लगाने जा रहा है जिसका उत्पादन लक्ष्य 72 लाख मीटर होगा.
- फैशन तो बदलते रहते हैं पर डेनिम की चमक-दमक सदाबहार है.

Modern
Suitings Limited

रजि. ऑफिस: डी-22, मोती डूंगरी रोड,
जयपुर-302004

Sobhagya/171/90

आइए, मॉडर्न की नीली लहर में हम सब शामिल हो जाएं

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्णमुरारी किशन

कृष्णमुरारी किशन

पटना में आरक्षण विरोधी प्रदर्शन (ऊपर); और प्रधानमंत्री का पुतला जलाते छात्र

श्रेणी की नौकरियों में भी आरक्षण का बेजा कैसे इस्तेमाल हो सकता है.

यह मामला आरक्षण के लिए अंधी दौड़ और लालच को भी उजागर करता है. हर जाति चाहे वह गांवों में भूमिपति वर्ग की हो या शहरों में अपने पारंपरिक धंधों से जुड़ी हो, आरक्षण की फेहरिस्त में अपना नाम जुड़वाने के लिए बेताब है. इस तरह पूरी सामाजिक संरचना में एक बदलाव आ रहा है. आरक्षण अब सामाजिक सुरक्षा की सार्थक व्यवस्था की जगह नौकरी पाने का 'शॉर्टकट' भर बन कर रह गया है. उत्तर प्रदेश के मेडिकल और इंजीनियरिंग कॉलेजों में लगभग आधी सीटें आरक्षित हैं. गैर-आरक्षित सीटों के लिए न्यूनतम अंक सीमा 60 फीसदी रखी गई है जबकि आरक्षित सीटों के लिए यह सीमा 40 फीसदी रखी गई है. पिछले साल मेडिकल कॉलेजों में भर्ती के लिए गैर-आरक्षित श्रेणी के लिए न्यूनतम अंक 77.6 फीसदी थे जबकि आरक्षित श्रेणी के लिए 48 फीसदी. इंजीनियरिंग कॉलेज के लिए प्रतियोगिता में आम श्रेणी के लिए न्यूनतम अंक 60 फीसदी, आरक्षित श्रेणी के लिए 25 फीसदी थे.

फिलहाल यह आरक्षण विरोधी आंदोलन पूरी तरह छात्रों के ही हाथों में है मगर इसके विस्फोटक रूप ले लेने की भी संभावना है

इसमें बदलती सामाजिक स्थिति का खयाल रखे बिना जाति को ही आधार बनाया गया. लोकसभा के पूर्व महासचिव सुभाष कश्यप कहते हैं, "हमारा लक्ष्य समतावादी समाज की स्थापना था. पर इस फैसले से क्या हम जातिवादी समाज की ओर नहीं बढ़ रहे हैं?"

संविधान में साफ-साफ कहा गया है कि आरक्षण का आधार शैक्षणिक और आर्थिक पिछड़ापन ही होना चाहिए. मंडल भी इसी विचार के थे कि सामाजिक और शैक्षणिक पिछड़ापन ही आरक्षण का 'युक्तिसंगत' आधार है. लेकिन बाल की खाल निकालते हुए उन्होंने दलील दी कि "जाति को आर्थिक कसौटी पर तौलने से भारतीय समाज में सामाजिक पिछड़ेपन के स्रोत की ही अनदेखी हो जाएगी." दरअसल, उन्होंने वर्तमान सामाजिक परिवेश को ही बेमानी बताने की कोशिश की. सामाजिक पिछड़ेपन के 'स्रोत' वाले युग से देश आज काफी आगे बढ़ गया है. ऊंची जातियों को मजबूती प्रदान करने वाली बड़ी जोत के अब टुकड़े हो गए हैं. उत्तर प्रदेश और बिहार में यादवों के पास आज काफी जमीन है. मंडल के परिवार के पास तीन गांवों में जमीन थी. माकपा नेता हरकिशन सिंह सुरजीत कहते हैं, "जमीन ही ग्रामीण पिछड़ेपन की जड़ है. बुनियादी भूमि सुधारों के जरिए ही हम न्यायपूर्ण और समतावादी समाज कायम कर सकते हैं." लेकिन सरकार ने भूमि सुधारों को लागू करने में ऐसा ही उत्साह नहीं दिखाया. मंडल ने इसकी जोरदार सिफारिश की थी. मगर सरकार इससे कतराती है क्योंकि इससे जातीय समीकरण गड़बड़ाएगा और एक बड़ा वर्ग उसके खिलाफ हो जाएगा जिसका आधार प्रायः सभी जातियों में होगा.

पैमाने ही खोटे

जातियों को चिह्नित करने का मंडल का पैमाना भी भ्रामक और अपर्याप्त है. उनके आयोग ने भारत की कुल आबादी के एक फीसदी का भी सर्वेक्षण नहीं किया. उसने देश के हर जिले में सिर्फ दो गांवों और शहर के एक मुहल्ले का ही सर्वेक्षण किया. हालांकि उसकी प्रश्नावली प्रमुख अंग्रेजी और भाषायी अखबारों में छपी पर उसे कुल 1,872 जवाब ही मिले. जातियों की हैसियत नापने के लिए आयोग ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1891 और 1931 में अंग्रेजों की कराई पुरानी, अवैज्ञानिक जनगणना को आधार बनाया. और तो और, पिछड़े वर्गों को चिह्नित करने के लिए उसने 1971 की जनगणना को आधार बनाया.

आयोग ने अनजाने में ही अपनी कोशिश की खामियों को भी गिना दिया है. रिपोर्ट में कहा गया है, "यह सर्वेक्षण अकादमिक शोध ग्रंथ होने का भ्रम नहीं पालना चाहता. इसे सरकार की प्रशासकीय मशीनरी ने तैयार किया है और सामाजिक तथा शैक्षणिक पिछड़ेपन को चिह्नित करने के लिए उपलब्ध तरीकों से ही एक सरल विधि अपनाई गई. इस सर्वेक्षण के दौरान हमारे कामकाज पर व्यावहारिकता, स्थानीय परिस्थितियों, संसाधनों तथा प्रशिक्षित लोगों की कमी तथा समय के अभाव का प्रभाव पड़ा. जाहिर है, इन कारणों से तकनीकी और अकादमिक रूप से संतोषजनक काम नहीं किया जा सका."

आयोग ने दूसरी पिछड़ी जातियों को चिह्नित करने के लिए अपना दायरा हिंदुओं तक ही सीमित रखा है. गैर-हिंदू समुदायों में पिछड़े वर्गों को चिह्नित करने के काम की मात्र औपचारिकता भर निभाई गई है.

आयोग ने यह व्यवस्था दी कि किसी गैर-हिंदू धर्म में धर्मांतरण करने वाले अछूतों और धोबी, तेली, नाई या बढ़ई जैसा परंपरागत व्यवसाय जारी रखने वाली जातियों को दूसरी पिछड़ी जातियों में शामिल माना जाएगा. इस पैमाने से

जातियों को चिह्नित करने का मंडल का पैमाना भ्रामक लगता है. उसने देश की एक फीसदी आबादी का भी सर्वेक्षण नहीं किया

कुछ राज्यों में आरक्षित नौकरियां

	उत्तर प्रदेश	कर्नाटक	बिहार	मध्य प्रदेश	गुजरात
अनु. जाति	18	15	10	14	6
अनु. जनजाति	2	3	14	23	15
पिछड़ा वर्ग	15	50	20	25	10
अन्य	15	—	6	—	—
कुल	50	68	50	62	31

(सभी आकड़े प्रतिशत में)

आयोग ने (और सरकार ने) यह दावा करने की कोशिश की है कि उसे अल्पसंख्यकों की भी परवाह है. पर इसकी वजह से मुसलमान, ईसाई, सिख, बौद्ध और जैन धर्मों के पिछड़ों का मामला खटाई में रह गया.

आयोग ने खुद स्वीकार किया है कि इस आरक्षण से औसत किस्म के लोगों की संख्या बढ़ जाएगी, "सामाजिक और सांस्कृतिक कमजोरियों के चलते दूसरी पिछड़ी जातियों के लोग आम तौर पर कम योग्य होते हैं."

यह भी विडंबना ही है कि जो पार्टी सत्ता में पहुंचते ही 'खजाना खाली है' की दुहाई देने लगी थी वह दावा कर रही है कि वह पिछड़ी जातियों के विकास के सभी कार्यक्रमों के लिए पैसा जुटाएगी. इतना ही नहीं, उसने उनके लिए अलग से एक वित्त आयोग भी बनाने का वादा किया है. अब सवाल यह है कि इन सबके लिए पैसा कहां से आएगा?

जैसा कि होना ही था, मंडल आयोग कई कानूनी पचड़ों में भी फंस गया. सुप्रीम कोर्ट में न्यायमूर्ति वाई.वी. चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ ने कर्नाटक के के.सी. वसंत कुमार की एक याचिका की सुनवाई में साफ-साफ कहा था, "अगर सरकार प्राथमिकता के आधार पर संरक्षण देने के लिए जाति को ही सामाजिक और शैक्षणिक पिछड़ेपन का आधार बनाती है, तो इसका बड़ा खतरा यह है कि सिर्फ इसी वजह से जाति व्यवस्था मान्य हो जाएगी और मजबूत होगी. यह धर्मनिरपेक्षता के उस सिद्धांत के अनुकूल भी नहीं है जिसका उल्लेख हमारे संविधान की प्रस्तावना में है." अदालत ने कर्नाटक सरकार से अपनी उस आरक्षण नीति को बदलने का अनुरोध किया था जिसका आधार जाति थी.

मंडल रिपोर्ट पर बवाल तो अभी शुरू ही हुआ है. मुख्य समस्या यह होगी कि उन 3,743 जातियों और

शृंखला बनाते आरक्षण विरोधी

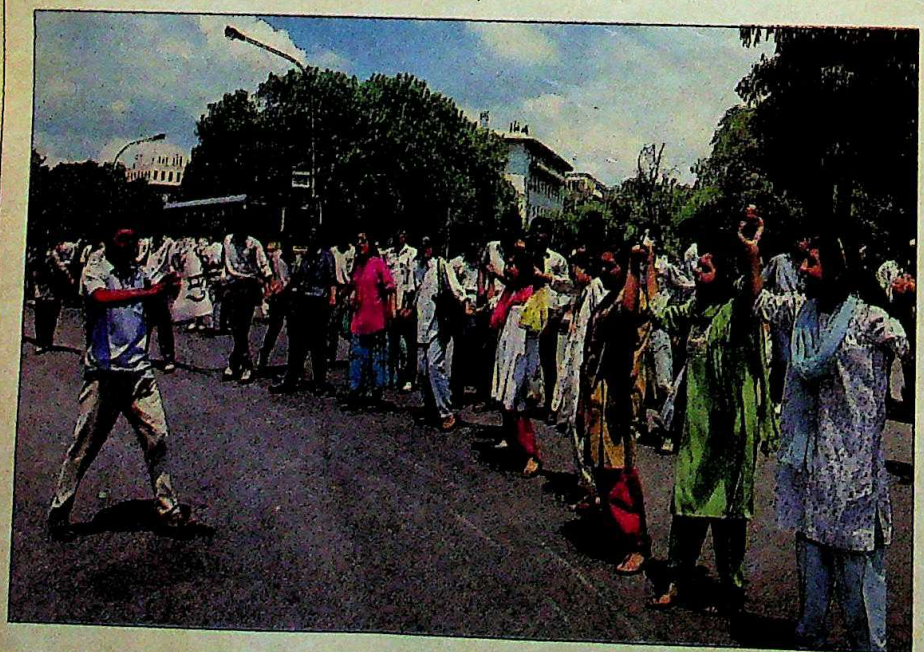

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

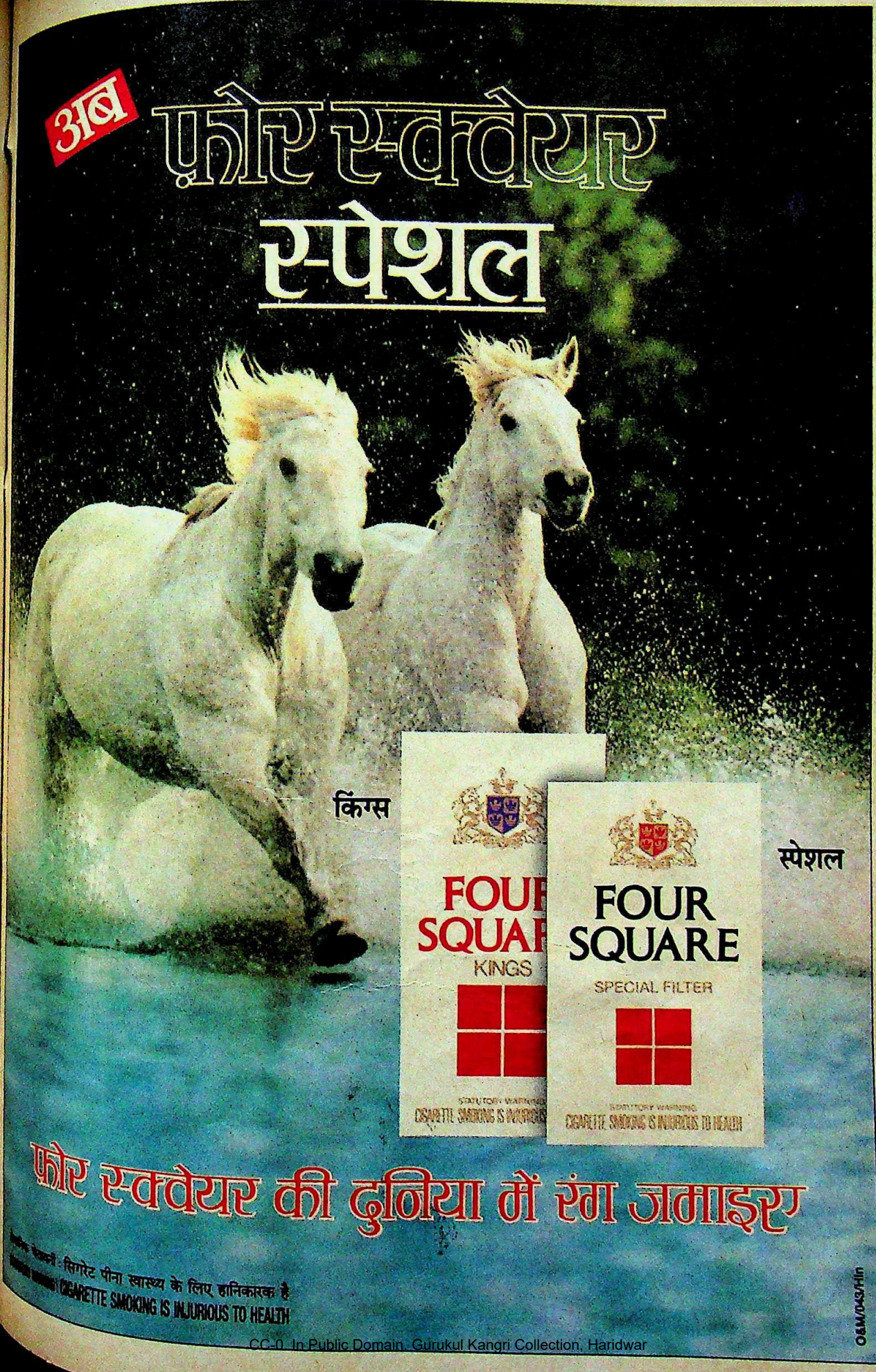

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

BAGPIPER GOLD

PRESENTS A SONG AND DANCE EXTRAVAGANZA

THE SHARON SPECTACULAR

First time ever

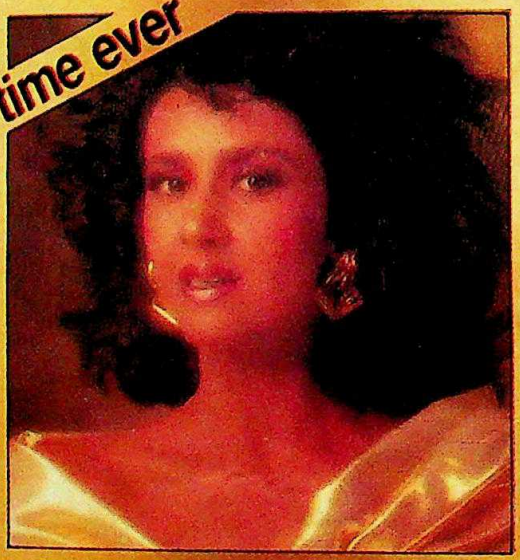

India's singing sensation live on stage in a series of show stoppers from her latest albums by Music India titled "Blow Your Mind" and "Jhoom Jawani".

Soon in your city

Delhi 8.9.90 • Madras 6.10.90
Lucknow 12.10.90 • Calcutta 21.10.90
Bombay 27.10.90

Directed by ALYQUE PADAMSEE
Dances specially choreographed by SHIAMAK DAVAR

HERBERTSONS LIMITED

In association with MIL MUSIC INDIA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमोद पुष्करणा

आरक्षण की फेहरिस्त में नाम जुड़वाने की मांग अब हर जाति की ओर से उठ सकती है. इसके संकेत अब उभरने भी लगे हैं

उपजातियों को कैसे व्यवस्थित किया जाए जिन्हें मंडल आयोग ने पिछड़ा माना है. फिलहाल, सरकारी विभागों में नियुक्ति और पदोन्नति में उपजातियों को उनके पिछड़ेपन के कारण प्राथमिकता देने के लिए तरह-तरह की कसौटियों वाले 40 अंकों के एक रोस्टर का इस्तेमाल किया जाता है. और राज्यों में पिछड़ी जातियों तथा आरक्षण की अपनी अलग ही सूचियां हैं. ऐसी जातियां एक राज्य की आरक्षण सूची में तो शामिल हैं तो पड़ोसी राज्य की सूची में नहीं. केंद्रीय नौकरियों में भर्ती के समय इस नीति के व्यवहार पक्ष को लेकर कई दिक्कतें आएंगी. अगर सभी 3,743 जातियों को 200,000 नौकरियों में समायोजित किया जाए तो हर जाति के हिस्से सिर्फ 14 नौकरियां आएंगी.

नफरत को न्यौता

सरकारी नौकरियों में आरक्षण का लालच देकर वी.पी. सिंह ने पिछड़ी जातियों के युवकों में मेहनत व लगन से काबिलदार बनने की क्षमता पैदा करने की जगह उन्हें आत्मघाती प्रवृत्ति के फेर में डाल दिया है. अनुसूचित जातियों व जनजातियों के युवकों ने लिपिकों वाली नौकरी में जाना ही बेहतर माना है. विज्ञान और तकनीक जैसे क्षेत्रों में उनका प्रतिनिधित्व 16 फीसदी है, जबकि परमाणु ऊर्जा विभाग में महज 13 फीसदी. परंतु राजस्व सेवा में वे 21 फीसदी और गृह मंत्रालय के सुरक्षा बलों में 19 फीसदी हैं. अब पिछड़े वर्गों के युवक भी ऐसी बाबूगीरी की नौकरियों के लिए ही भागेंगे, तकनीकी कुशलता वाले दूसरे क्षेत्रों की ओर नहीं. विकासशील अर्थव्यवस्था में उद्यमशीलता को कुंठित करना तबाही ही लाएगा.

और आखिर में ये युवक उन सरकारी विभागों में जाएंगे जहां पहले ही गैर-आरक्षित वर्गों के कर्मचारी अनुसूचित जाति/जनजाति के कर्मचारियों का मखौल उड़ाते हैं. इस तरह एक दशक बाद भारतीय दफ्तरों में भारतीय ढर्रे का एक रंगभेद पनपने लगेगा. बाहर से ये दफ्तर समता के प्रतीक दिखेंगे पर भीतर ये दो गैर-बराबर दुनियाओं में बंटे होंगे. और चूंकि तरक्की भी आरक्षित कोटे के हिसाब से होगी जिसमें योग्य उम्मीदवार कम योग्य उम्मीदवार से ऊपर पहुंच जाएंगे, सो रंजिश स्वाभाविक रूप से बढ़ेगी. इन रंजिशों के कारण ही संगठित सार्वजनिक क्षेत्र में ऊपर से नीचे तक सारे कर्मचारी दो भागों में विभाजित हो जाएंगे. जाहिर है, तब प्रशासन चलाना दूभर हो जाएगा.

खतरा यह है कि इससे चंद टुकड़ों के लिए भयानक संघर्ष छिड़ सकता है जिसमें गैर-आरक्षित श्रेणी के लोगों के अलावा वे लोग भी होंगे जिनकी आकांक्षाएं बेहिसाब बढ़ गई होंगी और जो यह मान बैठे होंगे कि अपनी जाति की वजह से नौकरियों पर उनका जन्मसिद्ध अधिकार है.

और यह संघर्ष सिर्फ ऊंची और पिछड़ी जातियों के बीच ही नहीं होगा. जातियों के भीतर भी भयानक संघर्ष उभरने का खतरा है. पिछड़ों में भी कुछ अगड़े हैं जैसे यादव, कुर्मी, कोइरी जातियां जो तेली, मुरांव, धीमर, गडेरिया जैसी जातियों से बलवान हैं. इन 'अगड़े बन चुके पिछड़ों' को आरक्षण का तुरंत ही फायदा मिल जाएगा और 'पिछड़े रह गए पिछड़ों' की कीमत पर वे नौकरियों में अपने निहित स्वार्थ कायम कर लेंगे. बिहार में ये तनाव उभरने भी लगे हैं. इससे नफरत और जलन का अकल्पनीय ज्वार उठेगा.

अब सवाल यह नहीं है कि वी.पी. सिंह अपने इस नए वोट बैंक के सहारे चुनाव जीत सकते हैं या नहीं; कि जातीय संघर्षों की वजह से यह वोट बैंक कायम भी रहेगा या भस्मासुर बन जाएगा; कि आरक्षण का फैसला राजनैतिक चातुर्य है या नहीं. अब मुद्दा यह है कि एक अल्पमत सरकार के मुखिया ने देश में ऐसा माहौल बना दिया है जिसमें आज भारतीय ही भारतीय के खिलाफ खड़ा नजर आ रहा है.

—**पंकज पचौरी** और **हरपाल सिंह** नई दिल्ली में, **फरजंद अहमद** पटना में, **विलीप अवस्थी** लखनऊ में और ब्यूरो रिपोर्टें

आरक्षण के हामी राजभरों की रैली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंडिया टुडे

अब पेश करते हैं

म्यूज़िक टुडे

आप के लिए मधुर संगीत भरे ऑडियो कैसेट

Satish Sud Graphics/

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, तो तैयार हो जाइए सुनने के लिए मनभावन

संगीत. म्यूज़िक टुडे मनोरंजक ही नहीं, चुनींदा संगीत का भी खज़ाना पेश करता है. गायन-वादन के एक नहीं, अनेक मिज़ाज़ और रंग लिए हाज़िर हो रहा है जिन्हें सुनते ही आपकी अंतरात्मा तृप्त हो उठेगी. इस खज़ाने के

माध्यम से आप संगीत विधा के प्रतिष्ठित कलाकारों तक तो पहुंचेंगे ही, नई उभरती प्रतिभाओं से भी परिचय पा सकेंगे. मूल रूप से अत्याधुनिक स्टीरियो उपकरण पर रिकार्ड किया गया और स्वर की विशुद्धतम समानता के लिए डिजिटल पद्धति से तैयार म्यूज़िक टुडे घर बैठे आपके कानों में रस घोल सकता है. देश के कोने-कोने में डाक अथवा कूरियर से पाने की सुविधा भी है. इसमें भी आप इंडिया टुडे जैसी विश्वसनीयता और गुणवत्ता पाएंगे. आपके लिए संगीत का नया उपहार.

अगली सूचना तक करें हमारा इंतजार.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपड़ा उद्योग के चहेते अब पूरी तरह ब्ल्यू डेनिम को अधिक लाभप्रद निवेश में बदलने के लिए तैयार

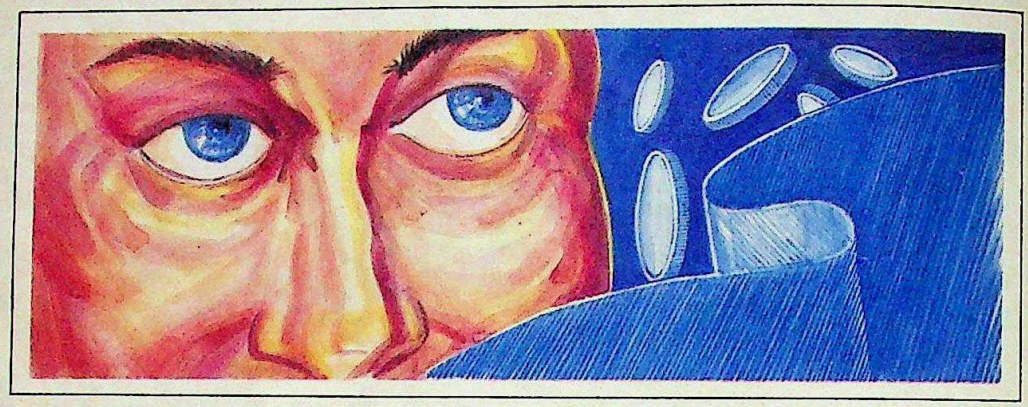

- डेनिम.
  दुनिया भर में लोकप्रिय! बच्चों से बूढ़ों तक, मजदूरों से फिल्मी सितारों तक, यह वस्त्र 200 से अधिक वर्षों से लोकप्रियता में अव्वल रहा है. फैशन तो बदलते रहते हैं पर डेनिम की चमक-दमक सदाबहार है.
- एक पूरी तरह निर्यात आधारित संयंत्र अब ब्ल्यू डेनिम को अधिक लाभप्रद निवेश में बदल देगा.

36.08 करोड़ रु. के 14% सालाना ब्याज के 82 लाख पूर्णतया परिवर्तनीय ऋण पत्रों का निर्गम 44 रु. प्रति ऋण पत्र के सम-मूल्य पर.

सार्वजनिक शेयर
तिथि: 10 सितंबर, 1990
राइट इश्यू. तिथि: 3 सितंबर, 1990

Sobhagya/170/90

Lead Managers to the Issue

The Industrial Credit and Investment Corporation of India Limited
Merchant Banking Division
Tower A Level 6, Jeevan Bharti, 124 Connaught Place, New Delhi-110 001

SBI Capital Markets Limited

SBI CAPITAL MARKETS LTD.
202 Maker Towers 'E'
20th Floor, Cuffe Parade
Bombay 400 005

Managers to the Issue

ANZ Grindlays Bank
Merchant Banking Division
H-Block, Connaught Circus,
New Delhi-110 001.

CANBANK FINANCIAL SERVICES LTD.
Atlanta, Nariman Point,
Bombay

Modern Suitings Limited
रजि. ऑफिस: डी-22, मोती डूंगरी रोड,
जयपुर-302004

आइए, मॉडर्न की नीली लहर में हम सब शामिल हो जाएं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोदी हत्याकांड

विस्फोटक अंत की ओर

मामले के कानूनी पहलू पर राजनैतिक पहलू का पलड़ा भारी

कहानी तो प्रेम त्रिकोण की ही है लेकिन इसमें इतना मसाला है कि कई बार इसकी सचाई पर संदेह होता है. इसका एक पात्र है, वह गंवई लड़का जो अपनी प्रतिभा और मेहनत के बल पर देश में बैडमिंटन का सुपर स्टार बनता है और जो इसके दूसरे पात्र, एक और नामी बैडमिंटन खिलाड़िन से मित्रता और बाद में शादी करता है. कहानी का तीसरा पात्र है एक महत्वाकांक्षी राजकुमार जिसकी राजनैतिक इच्छाएं और प्रधानमंत्री से जिसकी निकटता उतनी ही विवादास्पद है जितनी महिलाओं से उसकी मित्रता. कहानी का एक रंहस्यात्मक चरित्र इस महिला खिलाड़ी की मां भी है जो अपनी बेटी को सलाह देती है कि वह इस प्रेम त्रिकोण को कैसे चलाए. और इसी में एक हत्या होती है जो पूरे देश को झकझोर कर रख देती है.

लखनऊ की अदालत में आजकल इस कहानी का एक-एक अध्याय सामने आ रहा है. इसी शहर में दो साल पहले हुई बैडमिंटन खिलाड़ी सैयद मोदी की हत्या से शुरू यह ऐसी कहानी है जिसकी सीबीआई से कराई गई जांच भी खासी विवादास्पद रही. पिछले पखवाड़े जब देश के दो सबसे प्रसिद्ध फौजदारी वकील के.जी. सावंत (सीबीआई की ओर से) और सांसद संजय सिंह, अमिता मोदी और हत्या के मुख्य अभियुक्त अखिलेश सिंह की ओर से राम जेठमलानी टकराए तो इस प्रेम त्रिकोण के और भी दिलचस्प अध्याय सामने आए. संजय सिंह प्रधानमंत्री के रिश्तेदार हैं, इस कारण इसमें एक राजनैतिक पहलू भी जुड़ गया और वही मामले पर हावी है.

सुनवाई का यह दौर सिर्फ इतना तय करने के लिए है कि यह प्रथम दृष्ट्या हत्या के षड्यंत्र का मामला है या नहीं. इसके बाद ही अभियुक्तों के खिलाफ आरोप दाखिल किए जाएंगे और हत्या का मुकदमा शुरू होगा. लेकिन इस प्रकरण से जुड़ा राजनैतिक पहलू पहले ही इतना रंग पकड़ चुका है कि हो सकता है आखिर में वहीं मंचसे ऊपर आ जाए. सुनवाई शुरू होने के पहले ही सरकार पर आरोप लगाया गया कि वह न्यायपालिका के काम में दखलंदाजी कर रही है. खर्च में कटौती करने के तर्क पर सरकार ने इस मुकदमे के सभी प्राइवेट वकीलों को हटा दिया था जिसमें सावंत भी शामिल थे. यह बात भी सामने आई कि सावंत के अलावा कम-से-कम छह विधि-विशेषज्ञों ने सभी संदिग्ध अभियुक्तों के खिलाफ सीबीआई की तैयार की हुई चार्जशीट का अध्ययन करने के बाद कहा था कि उसका तैयार किया यह बहुत 'मजबूत केस' है.

सभी फोटो: आर.के. गुप्ता

संजय, अमिता और (इनसेट) सैयद मोदी: 'प्रेम का त्रिकोण'

संजय-अमिता के रिश्तों के बारे में अमिता की डायरी के हिस्से ही पूरी सुनवाई पर छाए रहे और उनसे अभियोजन के पक्ष का दावा मजबूत हुआ.

इतना ही नहीं, 21 जुलाई को लखनऊ के जिला सत्र न्यायाधीश आई.एस. माथुर का, जो इस मामले की सुनवाई करते, तबादला कर दिया गया और उनकी जगह ओ.पी. प्रधान को नियुक्त किया गया. 7 अगस्त को राज्यसभा में इंका के उत्तेजित सदस्य बाहर निकल आए. उसी दिन संजय सिंह ने राज्यसभा के सदस्य के रूप में शपथ ली. अगले दो दिनों तक भी इंका के सदस्यों ने सदन की कार्रवाई किसी भी तरह नहीं चलने दी.

प्रधानमंत्री भी तुरंत हरकत में आए और उन्होंने सावंत की सेवा बहाल कर दी. साथ ही उन्होंने 2 अक्तूबर 1986 को राजीव गांधी पर हुए जानलेवा हमले के मामले में भी प्राइवेट वकीलों की सेवाएं बहाल कीं. इंका के नेता पी. शिवशंकर ने कहा, "यह फैसला उनकी गलत मंशा को और भी जाहिर करता है. मोदी मामले को राजीव गांधी मामले से जोड़ने की क्या जरूरत थी."

लेकिन पिछले पखवाड़े सावंत ने जब संजय और अमिता तथा संजय और अखिलेश सिंह के रिश्तों को उजागर करते हुए सीबीआई द्वारा बताए जा रहे षड्यंत्र की पूरी कहानी अदालत में रखी तो वहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैठे संजय सिंह, अमिता मोदी, उनके भाई और अखिलेश सिंह सन्न होकर बैठे रहे. अमिता की डायरी में लिखे अंशों को उद्धृत करते हुए सावंत ने पहले तीन दिनों तक संजय सिंह और अमिता मोदी के बीच विवाहेतर संबंध का होना साबित करने की कोशिश की. उन्होंने इस संबंध के प्रति मोदी के विरोध प्रमाण भी पेश किए.

सीबीआई ने इसे हत्या का मामला बताने के पक्ष में जो सबसे सनसनीखेज सबूत पेश किया, वह है 19 फरवरी 1984 को अमिता की मां पुष्पा कुलकर्णी की उसे लिखी चिट्ठी. "डियरेस्ट मीतू (अमिता) ऐंड संजय" संबोधन से शुरू हुई इस चिट्ठी में लिखा गया है, "मैं बहुत खुश हूं कि संजय सिंह ही भावनात्मक रूप से जुड़ा है. लेकिन तुमको और संजय को कुछ परहेज और अपनी भावनाओं पर काबू रखना जरूर सीखना चाहिए. संजय मुख्यमंत्री बनना चाहता है और मेरा अनुमान है कि इसका मतलब होगा उसके जीवन में और अनेक (महत्वाकांक्षी, सत्ता की भूखी, खूबरसूत और मनभावन) औरतों का आना. उसे अपनी छवि खराब नहीं होने देनी चाहिए. उसे बहुत सावधान रहना चाहिए. मुझे लगता है कि तुम मेरे कहने का मतलब समझ लोगी. देखो, ऐसा लगता है कि मैं अभी से ही संजय को बेटा मानने लगी हूं."

अगर अमिता की मां की चिट्ठी 'असाधारण' लगती है तो खुद अमिता की डायरी में लिखी टिप्पणियां, जिसे सावंत ने अदालत में उद्धृत किया, तो हैरान करने वाली हैं. "आज एस 2 (संजय सिंह के लिए उसका तथाकथित कोड) ने एक बार आनंद लिया, दोबारा लिया. मैंने उसे पहले इस रंग में नहीं देखा. (23 फरवरी 1986)." 16 फरवरी 1986 का नोट है— "आज की रात यादगार रही. आधी रात को वह फिर मिलने आया. आज असामान्य काम हुआ जिससे आनंद का ठिकाना नहीं रहा..." सैयद मोदी से अपने तकरार भरे रिश्तों के बारे में अमिता ने डायरी में लिखा, "कुल मिलाकर यह साल मोदी और मेरे रिश्तों में तनाव भरा रहा. बार-बार हम झगड़ते रहे और कारण होता था एस-2."

सावंत ने इसके बाद संजय सिंह और अखिलेश सिंह के बीच के रिश्तों को उजागर किया. अखिलेश को उन्होंने ऐसा आदमी बताया जो कोई भी काम कर सकता है. 18 जून 1988 को इलाहाबाद के यात्रिक होटल में हुई संजय सिंह और अखिलेश सिंह की भेंट के दौरान ही हत्या की योजना बनने का आरोप लगाया गया. बाद में 20 जुलाई 1988 को अखिलेश ने संजय सिंह के घर पर भगवती सिंह को उनसे मिलवाया. सीबीआई के वकील ने कहा कि इसके बाद संजय सिंह ने यह हत्या करने के लिए भगवती सिंह को 50,000 रु. दिए.

सबूत देकर सावंत ने यह भी साबित करने की कोशिश की कि संजय, अमिता और अखिलेश हत्या के पहले और बाद में एक-दूसरे के संपर्क में थे. उन्होंने कहा, "पारिस्थितिक साक्ष्य के आधार पर षड्यंत्र साबित किया जा सकता है जिसमें षड्यंत्रकारियों की सदेह भागीदारी थी."

इससे रिश्ते सामान्य हो जाते. अमिता की चिट्ठियों को उद्धृत करते हुए उन्होंने बताया कि मोदी को जब कभी भी कोई महत्वपूर्ण मैच खेलना होता था तो वे उनका कितना खयाल रखती थीं. उन्होंने सवाल किया, "जो औरत अपने पति से इस बुरी तरह प्रेम करती हो उसी पर आप पति की हत्या का आरोप कैसे लगा सकते हैं?"

जेठमलानी ने चाहे जैसी बहस की या अदालत में चाहे जो लटके-झटके अपनाए, संजय-अमिता के रिश्तों के बारे में अमिता की डायरी के हिस्से ही पूरी सुनवाई पर

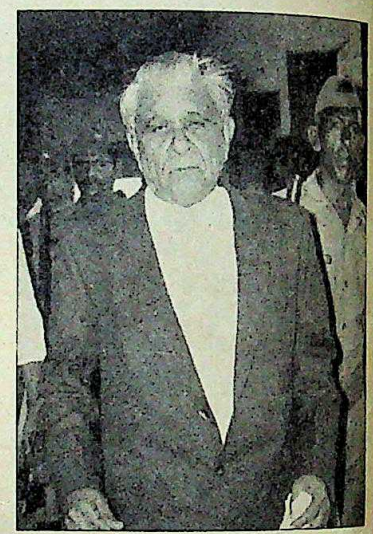

जेठमलानी (बाएं); और सावंतः दिलचस्प दलीलें

सीबीआई के वकील ने हत्या की साजिश साबित करने के लिए अमिता की डायरी और उनकी मां के पत्रों का सहारा लिया. मगर जेठमलानी ने इन तर्कों को बेमानी बताया

जेठमलानी ने बहुत नाटकीय अंदाज में अपनी दलीलें इस कथन के साथ शुरू कीं कि तथाकथित षड्यंत्रकारियों के बीच करीबी रिश्ता होने के प्रमाणों के बावजूद इस बात का रत्ती भर प्रमाण नहीं है कि इन लोगों ने मोदी की हत्या का षड्यंत्र रचा. उन्होंने कहा, "अगर सीबीआई के पास एक भी सबूत है तो मैं खुद ही आपसे अनुरोध करूंगा कि अभियुक्तों के खिलाफ मामला चलाएं."

जेठमलानी का तर्क था कि यह 'त्रिपक्षीय रिश्ता' काफी सौहार्दपूर्ण था. उन्होंने यह दिखाने की कोशिश की कि मोदी रिश्तों का गलत अर्थ निकालते रहे. लेकिन हर बार संजय सिंह मोदी को समझाते कि उनका संदेह निराधार है. छाए रहे और उनसे अभियोजन पक्ष का दावा मजबूत हुआ. इसी अवैध संबंध के चलते मोदी की हत्या का षड्यंत्र रचा गया या नहीं, यह तो हत्या के मामले की सुनवाई शुरू होने पर ही पता चलेगा. लेकिन जब ये हिस्से अदालत में पढ़े जा रहे थे तब संजय सिंह और अपने भाई के बीच बैठी अमिता रोते हुए जिस तरह का मुंह बनाए रही, उससे जाहिर है कि इस मामले का चरम बिंदु बहुत ही विस्फोटक होने जा रहा है. और अदालत में मौजूद कोई भी आदमी जेठमलानी के इस तर्क से सहमत नहीं होता दिखा कि "यह मुकदमा अगर यह चला तो, जनता के समय और पैसे की सबसे बड़ी बरबादी साबित होगा."

—दिलीप अवस्थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोहर कहानियां

भारत में सबसे ज्यादा बिकनेवाली हिन्दी पत्रिका

सितम्बर १९९०

फकीर की बददुआ

एक फकीर की बददुआ से
धीरे-धीरे मौत और विनाश से घिर गये
परिवार की कथा

जुड़वां भाइयों का जुड़वां पुनर्जन्म

पूर्व जनम के दो जुड़वां भाइयों
के पुनर्जन्म की अद्‌भुत कथा

दास्तान एक महबूब की

कश्मीर के एक त्यागमय प्रेम-प्रसंग पर आधारित
रहस्यमयी घटनाओं से भरपूर रोचक कथा

रजरप्पा की छिन्नमस्तका देवी

बिहार में दामोदर एवं भैरवी नदी के
संगम पर स्थित छिन्नमस्तका देवी के मन्दिर से
जुड़ी रहस्यमयी अंतर्कथा

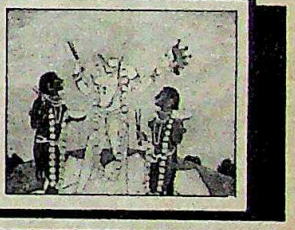

अन्य आकर्षण

- कौन थी वह दुल्हन
- हसरतों के पखेरू
- कौशल्या का दुर्भाग्य
- सागौन का मन्दिर
- दोहरे सूत्र

१७ कहानियां और ६ लघुकथाएं

मानवीय जीवन के
अविश्वसनीय, किन्तु सच्चे
रहस्यों की कथाएं

वास्तविक जीवन की सुरुचिपूर्ण कथा पत्रिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असम

बारूद के ढेर पर

उल्फा द्वारा चलाए जा रहे सैन्य प्रशिक्षण शिविर यही दर्शाते हैं कि राज्य की ताकत चरमरा गई है

एक बार फिर विद्यार्थियों ने तेल की सप्लाई बंद कर दी है. एक बार फिर केंद्र से औपनिवेशिक शोषण होने का विलाप किया जा रहा है. एक बार फिर एक सरकार अपनी सत्ता जताने की जी-तोड़ कोशिश कर रही है. एक बार फिर असम उबल रहा है. जल नहीं रहा है. लेकिन जैसे-जैसे जनगणना का काम आगे बढ़ रहा है और विधानसभा चुनाव पास आते जा रहे हैं, हालात उसी ओर बढ़ते जा रहे हैं.

लेकिन आज के असम और अखिल असम छात्र संघ (आसू) व अखिल असम गण संग्राम परिषद के पिछले आंदोलन के दौर वाले असम में भारी फर्क है. आज हालात और भी खराब हैं. उस समय बहिरागतों को निकालने का मुद्दा मुख्य था. आज अलगाववाद का स्वर प्रमुख है. तब लोग सरकार को कोसते थे लेकिन टैक्स भी दिया करते थे. आज वे युनाइटेड लिबरेशन फ्रंट ऑफ असम (उल्फा) की समांतर सरकार को टैक्स देते हैं. तब बहिरागत द्वेष के चलते पूरा असमी समाज एकजुट था. आज यह जाति, समुदाय और कबीलों के आधार पर बंटा है जो अब तक के इसके इतिहास में नहीं हुआ था. एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी कहते हैं, "आज यह राज्य ज्वालामुखी पर बैठा है जो कभी भी फूट सकता है." पूर्व मुख्यमंत्री, कांग्रेस (स) के अध्यक्ष और प्रदेश की राजनीति के पुराने खिलाड़ी शरतचंद्र सिन्हा और भी स्पष्ट ढंग से कहते हैं, "आप कश्मीर और पंजाब की बात करते हैं? यह उससे भी बदतर हो जाएगा, जहां हर आदमी दूसरे के खून का प्यासा बन जाएगा."

असुरक्षा का भाव और भावी अराजकता की अवश्यंभाविता इतनी प्रबल हो गई है कि हर समुदाय अपनी फौज बनाने और हथियार इकट्ठा करने में जुट गया है. हर कोई दूसरे के खिलाफ है, जैसे उल्फा. उल्फा का दावा है कि वह असमियों का आंदोलन चला रहा है लेकिन दूसरे जातीय समूह उसके आंदोलन को सवर्ण हिंदुओं का आंदोलन मानते हैं. इसीलिए ऊपरी असम के वनवासियों, अहोम और कुछ अन्य पिछड़ी जातियों ने 'युनाइटेड रिवोल्यूशनरी मूवमेंट कौंसिल ऑफ असम' का गठन कर लिया है जो उल्फा का मुकाबला कर रहा है. ऊपरी असम के काफी बड़े इलाके में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमिल चीतों को ये उग्रवादी अपना आदर्श मानते हैं

चार्ट: बी.के. शर्मा

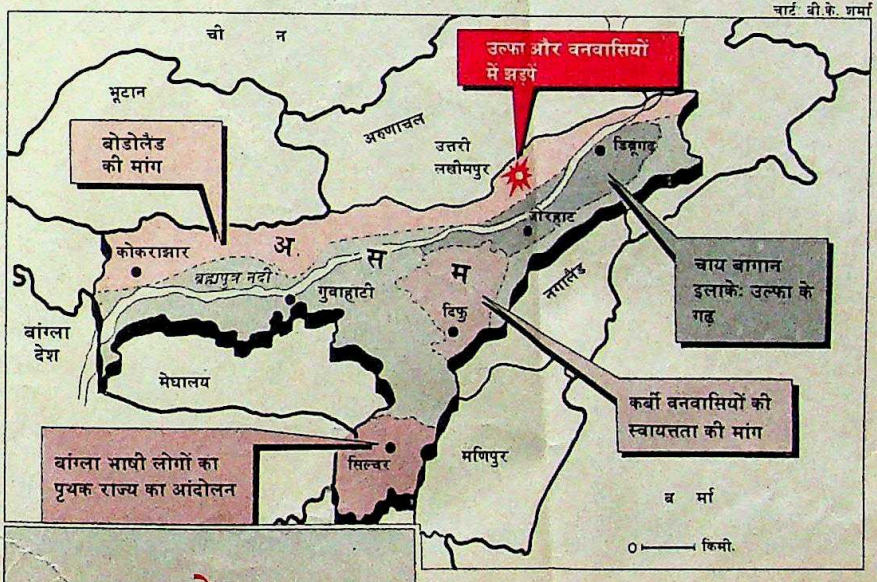

दावेदार

आसू: इस छात्र संगठन ने छह वर्षों तक असम आंदोलन का नेतृत्व किया.

अगप: चार वर्षों से सत्तासीन इस पार्टी में आसू के ही पूर्व नेता सक्रिय हैं.

उल्फा: सशस्त्र, अलगाववादी संगठन.

उर्मका: युनाइटेड रिजर्वेशन मूवमेंट कौंसिल ऑफ असम. आदिवासी और पिछड़े वर्ग के लोगों का संगठन.

आब्सू: ऑल बोडो स्टुडेंट्स यूनियन. बोडो आदिवासियों के लिए अलग बोडोलैंड की मांग करने वाला संगठन.

आतासू: असम थाई-अहोम स्टुडेंड्स यूनियन. अहोम संस्कृति को पुनर्जीवित करने की मांग करने वाला संगठन.

...में ब्रह्मपुत्र के उत्तरी हिस्से के गांवों में ...दोनों संगठनों के कारण तीखा ...सामाजिक विभाजन हो गया है. वनवासियों ...कुछ गांवों में तो रिजर्वेशन मूवमेंट के ...स्वयंसेवक बाकायदा बाहर वालों की चेकिंग ...करते हैं और उल्फा समर्थकों को घुसने नहीं ...देते. दूसरी जगहों पर उल्फा के छापामार ...अक्सर गांवों पर छापा मारते हैं और ...ग्रामीणों को पकड़कर अपने श्रम शिविरों में ...उनसे जबरन काम कराते हैं.

...ब्रह्मपुत्र से दक्षिणी इलाके में अहोमों ने ...उल्फा का मुकाबला करने के लिए 'थाई ...अहोम स्टुडेंट्स यूनियन' बनाई है. सदियों ...पहले अहोम थाइलैंड से असम को जीतने के ...लिए इधर आए थे. बोडो वनवासी पहले से ...संगठित और हथियारबंद हैं. अब कर्बी जैसे छोटे कबीलों के भी स्वायत्तता की मांग शुरू करने के कारण घमासान के आसार साफ नजर आने लगे हैं.

ऊपरी असम में तो जातीय संघर्ष शुरू भी हो चुके हैं. कम-से-कम चार बार रिजर्वेशन मूवमेंट के स्वयंसेवकों ने लोगों और गाड़ियों पर घात लगाकर हमले किए हैं. रिजर्वेशन मूवमेंट के 27 वर्षीय अध्यक्ष राजौग पेगु कहते हैं, "अब असमी पहचान की उग्र भावनाएं खुद-ब-खुद दम तोड़ देंगी क्योंकि जब अपना ही खेमा बंटा हुआ है तो वे लड़ेंगे किससे?"

यह जातीय तनाव पहले से मौजूद तनाव के अतिरिक्त है. यहां हालत यह है कि अलग-अलग हिस्सों के हाईस्कूलों में शिक्षा का माध्यम 12 भाषाएं हैं. कुल आबादी में 40 फीसदी हिस्सा रखने वाले बंगालियों को, जिनमें ज्यादातर मुसलमान हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन शिकायतें उठाकर और भ्रष्टाचार तथा शराब के खिलाफ मुहिम चलाकर उल्फा ने लोगों का समर्थन जुटा लिया है

परंपरागत रूप से बाहरी माना जाता है. असमिया भाषी समाज की मौजूदा टूटन से ये लोग खुश नहीं हैं. वे जानते हैं कि अगर 1983 जैसी हिंसा फिर फूटी तो घूम-फिरकर बंदूक की नलियां उनकी ओर ही मुड़ जाएंगी. और 'दाव' (एक तरह का छुरा) के वार उन पर ही होंगे. गुप्तचर एजेंसियों की खबर है, कि बंगाली, खासकर मुसलमान बंगाली संभावित लड़ाई के मद्देनजर हथियार जमा करने में लगे हैं. अल्पसंख्यकों के एक बड़े नेता ने कहा, "असमियों को गलतफहमी नहीं रहनी चाहिए कि इस बार भी वे निहत्थे और असुरक्षित लोगों को गाजर-मूली की तरह काट डालेंगे."

फिर भी राज्य में हिंसा की तैयारी का असली केंद्रबिंदु तो उल्फा ही है जिसने राज्य को एक तरह से बंधक बना रखा है. ब्रह्मपुत्र घाटी में अपहरण और फिरौती के असंख्य मामलों में उल्फा शामिल रहा है. अधिकांश चाय बागान उसे 'चढ़ावा' भेंट करते हैं. वैसे, उसे ओडीसा और बिहार के वनवासी इलाकों से आए बागान मजदूरों के प्रतिरोध का सामना करना पड़ रहा है.

चाय बागानों के मालिक और मैनेजरों का कहना है कि सुरक्षा और संचार प्रणाली रहित क्षेत्र में फंस जाने के कारण उनके सामने शांति से काम करने की कुछ कीमत चुकाने के अलावा कोई रास्ता नहीं. खास तौर पर तब जबकि राज्य सरकार का दबदबा पूरी तरह खत्म हो गया है. लखीमपुर और धेमाजी जिलों में तो पिछले कुछ समय से उल्फा के लोगों को [illegible] रोकने-टोकने वाला भी नहीं है. शराब [illegible] बिक्री बंद कर दी गई है. 'भ्रष्ट' व्यापारि[illegible] को इस इलाके से निकाला जा चुका है. [illegible] होटलवाले पंजाबी से अखबार में विज्ञा[illegible] देकर यह 'अपराध' कबूल करवाया गया. [illegible] उसने लड़कियों और शराब की मां[illegible] करके पैसे बनाए. एक पेट्रोल पंप [illegible] मारवाड़ी मालिक को इलाका छोड़ने [illegible] आदेश देने के पहले उससे अपनी जा[illegible] एक असमी के नाम कर देने को म[illegible] किया गया. सरकारी कर्मचारियों [illegible] कर्मचारियों, बीडीओ, बागान मैनेजरों [illegible] पुलिसवालों से भी सड़कें और बांध [illegible] का काम करवाया गया. ऐसे 20 [illegible] हजार तक 'स्वयंसेवकों' से अलग-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उर्मका को वनवासियों का समर्थन हासिल है और वह उल्फा से भिड़ने की तैयारी में है

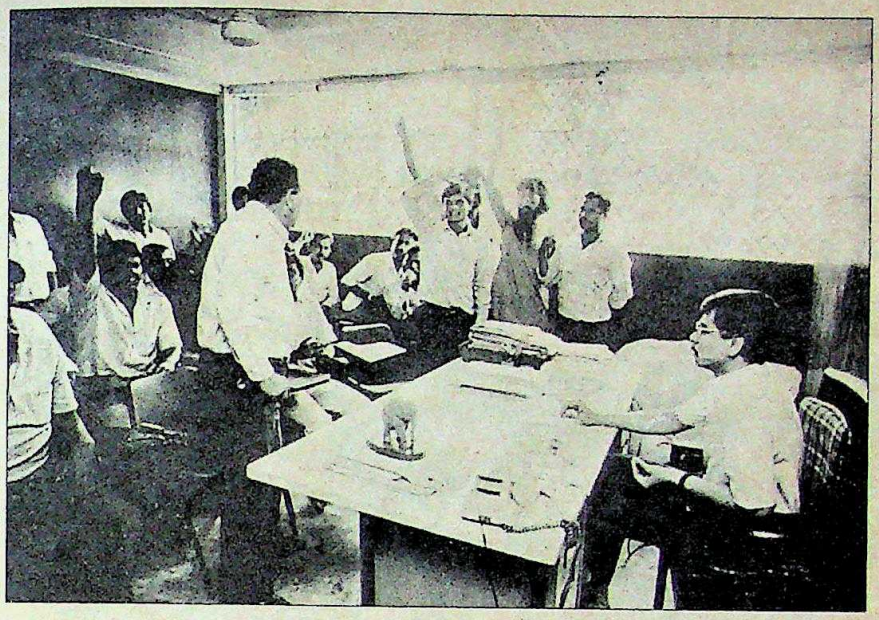

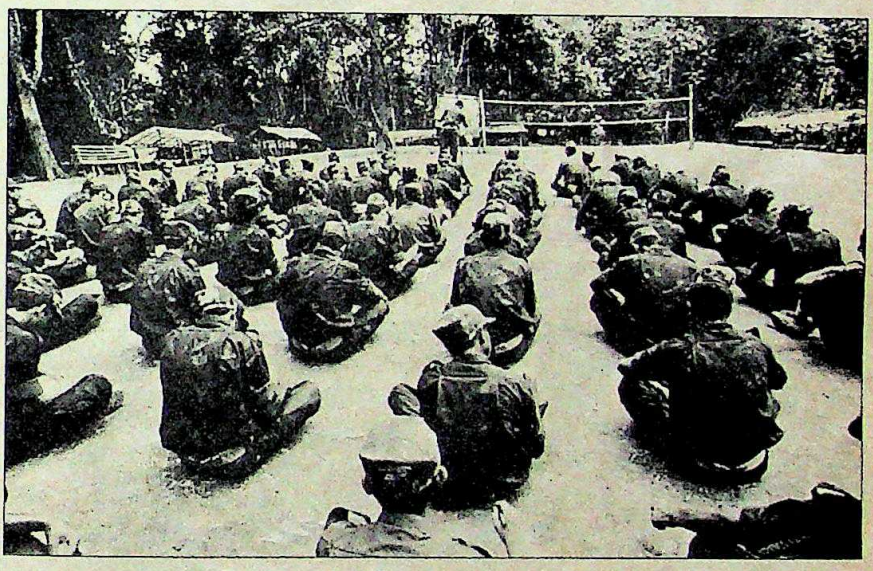

उग्रवादी हमले के लिए सही समय के इंतजार में हैं

और साधनों का उपयोग करती है और फिर भी दावा करती है कि वही फलां काम करा रही है.''

उल्फा ने बंदूकों का भी बहुत 'कारगर' इस्तेमाल किया है. पिछले महीने तक उस पर जिन 101 हत्याओं के आरोप लगे उनमें से 59 लोग असमी थे. डिब्रूगढ़ के पुलिस अधीक्षक दौलत सिंह नेगी की हत्या के बाद पुलिस का मनोबल काफी घटा है. अधिकारी भी मानते हैं कि शायद ही कभी पुलिसवाले किसी कार को रोकते हों. मारुति जिप्सी को तो वे हाथ भी नहीं दिखाते क्योंकि यह उल्फा के लोगों की पसंदीदा सवारी है.

उल्फा की ऐसी रोबिनहुड मार्का छवि बरकरार क्यों है, यह जानना मुश्किल नहीं है. उनके काम का एक उदाहरण यह है: दो साल पहले काजीरंगा के गैंडों को चोरी-छिपे मारने वाले दास बंधुओं को असम गण परिषद सरकार ने जंगल का काफी बड़ा हिस्सा पट्टे पर दे दिया. इससे लोगों में नाराजगी फैली और गुवाहाटी हाईकोर्ट में लोकहित का मामला भी दायर हुआ. जब अदालत इस गड़बड़ी को सुधारने में नाकाम रही तो उल्फा ने इस मसले को अपने हाथ में लिया और इस साल के शुरू में दोनों भाई मौत के घाट उतार दिए गए.

नतीजतन, लोग सरकार के बजाए उल्फा का कहना मानने में ही भलाई समझते हैं. यह संगठन ब्रह्मपुत्र घाटी में खुलेआम सैन्य शिविर लगाता है. इसके कार्यकर्ताओं ने सीमा से लगे बर्मा के जंगलों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में कचिन इंडिपेंडेंट आर्मी से प्रशिक्षण प्राप्त किया है. यहीं से वे फिरौती में मिली रकम से हथियार भी खरीदते हैं. गुप्तचर सूत्रों का कहना है कि उल्फा ने दूसरे आतंकवादी संगठनों, खासकर नगाओं से भी रिश्ता जोड़ लिया है. पंजाब और कश्मीर के आतंकवादियों से उनके रिश्तों के संकेत मिलने लगे हैं.

गुप्तचर सूत्रों का मानना है कि उल्फा की उत्पत्ति पुराने असम आंदोलन की उग्र भावनाओं का परिणाम है. महंत और फुकन के नेतृत्व वाला आसू और अखिल असम गण संग्राम परिषद तो शांति पूर्ण आंदोलन चलाती रही लेकिन इसके उग्र तत्व बम फोड़ते रहे और कभी-कभार हत्याएं करते रहे. एक गुप्तचर अधिकारी कहते हैं, "आसू नेतृत्व 'भिंडरावाले फंदे' में फंस गया. वह सोचता रहा कि केंद्र पर दबाव बढ़ाने में ये उग्रवादी उपयोगी होंगे लेकिन वह इन पर अंकुश रखने में असमर्थ रहे."

आज समस्या आसू, उससे पैदा राजनैतिक पार्टी अगप और उल्फा के आपसी रिश्तों के चलते ज्यादा पेचीदा है. उल्फा को इस परिवार का अपराधी सदस्य माना जा सकता है.

उल्फा का खौफ अब इतना गहरा गया है कि कोई कैबिनेट मंत्री भी इस संगठन के खिलाफ बोलने की हिम्मत नहीं रखता. एक मंत्री ने माना, "कैबिनेट या अगप विधायक दल की बैठक में ज्यों ही उल्फा की चर्चा छिड़ती है, हर किसी को सांप सूंघ जाता है. किसे पता कि कौन जाकर सारी बातें उल्फा को बता आएगा?"

अगर अगप सरकार कायदे से राजकाज चलाती तो ऐसे हालात की नौबत ही न आती. सत्ता संभालने वाले दिन से ही यह दुर्व्यवस्था, आंतरिक कलह और भ्रष्टाचार से ग्रस्त रही है. नतीजतन, प्रशासन पर उसकी पकड़ छूटी ही, लोकतांत्रिक प्रक्रिया पर से भी आम जनता का विश्वास उठ रहा है. अगप के एक मंत्री ने माना भी, "आज हम अलग-थलग पड़ गए हैं और शर्मिंदगी झेल रहे हैं."

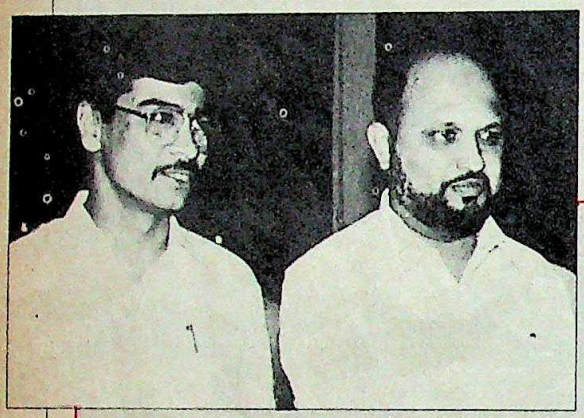

असम पुलिस

सियासी दखलंदाजी

आसू, अगप और उल्फा के जटिल राजनैतिक संबंधों ने असम में उग्रवाद का मुकाबला करने की कोशिशों को और दुरूह बना दिया है. राजनैतिक हस्तक्षेप और संदिग्ध उग्रवादियों की गिरफ्तारी पर रिहाई के आदेश तो आम बात हैं. कुछ गोपनीय दस्तावेज इसकी पुष्टि करते हैं:

► 6 नवंबर 1989 को बारपेटा के पुलिस अधीक्षक ने मुख्यालय को लिखे गोपनीय नोट में उग्रवाद विरोधी अभियान में कानूनमंत्री सूरेन मेधी की शिकायत की— "पाठशाला और पाथरकुची में विकास कार्यों के बारे में बात करते हुए आदरणीय मंत्री ने मुझसे कहा कि अओहता गांव में तलाशी न ली जाए. उनका कहना था कि इस गांव के लोग अखिल बोडो छात्र संघ के उग्रवादियों से अपनी सुरक्षा के लिए तीर-कमान और दूसरे हथियार जमा कर रहे होंगे. इसलिए बेहतर होगा कि उस क्षेत्र की तलाशी न ली जाए."

मेधी कहते हैं कि उनका इरादा हस्तक्षेप का नहीं बल्कि उस इलाके में शांति कायम करने में पुलिस की मदद करने का था.

फुकन और महंतः कमजोर नेतृत्व

► इसी वर्ष 25 फरवरी को पुलिस अधीक्षक ने एक और शिकायत भेजी कि मेधी और संस्कृति राज्यमंत्री के. डी. दास ने बारपेटा के सर्किट हाउस में उल्फा के एक संदिग्ध कार्यकर्ता मदन हौली के सामने उन पर रौब गांठने की कोशिश की.

".....इसके बाद कानूनमंत्री ने अठारह व्यक्तियों की सूची मुझे थमाते हुए अनुरोध किया कि इन लोगों को न तो परेशान किया जाए, न गिरफ्तार. क्योंकि ये परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं...डीआईजी (केंद्रीय पश्चिमी कमान) ने कहा कि सरकार ने उग्रवादी तत्वों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने के स्पष्ट आदेश दिए हुए हैं इसलिए इस तरह के अनुरोध पुलिस अधीक्षक को दुविधा में डाल देंगे. "श्री के.डी. दास ने हमसे अनुरोध किया कि आसू की स्थानीय इकाई को सूचित किए बिना आसू के किसी छात्र को गिरफ्तार न किया जाए."

► गुवाहाटी शहर के पुलिस अधीक्षक टी.पी. चक्रवर्ती ने मुख्यालय को भेजे प्रपत्र में 50 लाख रु. की फिरौती के लिए अपहृत दो मारवाड़ी व्यापारियों आर. के. जालान और एक प्रजापति को ढूंढ़ निकालने में गुवाहाटी विश्वविद्यालय के अधिकारियों के असहयोग की शिकायत की है.

"...आज (8.3.90) सुबह 8.45 पर गुवाहाटी विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार मेरे पास आए...मैंने उनसे मामले की गंभीरता बताते हुए कहा कि जांच के काम को आगे बढ़ाकर गैरकानूनी तरीके से गुमनाम जगह कैद इन दोनों व्यक्तियों को [illegible]

"...कानूनमंत्री ने अठारह व्यक्तियों की सूची मुझे थमाते हुए अनुरोध किया कि इन लोगों को गिरफ्तार न किया जाए क्योंकि ये परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं..."

"...संस्कृति राज्यमंत्री के.डी. दास ने हमसे अनुरोध किया कि आसू की स्थानीय इकाई को सूचित किए बिना किसी छात्र को गिरफ्तार न करें"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेगी की हत्या से पुलिस का मनोबल गिर गया

भृगु फुकन में अक्सर तकरार चलती रही है. महंत तो फुकन पर खुलेआम यह आरोप लगा चुके हैं कि वे उल्फा से मिले हुए हैं जबकि फुकन दो बार इस्तीफे की धमकी दे चुके हैं. उधर, दूसरे मंत्री भी रिश्वतखोरी और नशे की हालत में विदेशी पर्यटकों तथा कैबिनेट की एकमात्र महिला सहयोगी के साथ दुर्व्यवहार के लिए चर्चित रहे हैं.

इनमें कुछ बातों का मतलब तो समझ में आता भी है. अगप के नेता जब परिस्थितिवश और लोकप्रियता के चलते सत्ता में आए तो वे अभी 'लड़के' ही थे. बाद में उनके प्रेम के चक्कर, शादी तथा फिर बच्चे भी हो गए और इसी के साथ उन्हें मकान तथा सुरक्षा की जरूरत भी आ पड़ी. लेकिन असम के लोगों के लिए ये 'लड़के' आदर्शों के ऐसे जीवंत पुतले थे जिन्हें लगातार तीन केंद्रीय गृहमंत्री भी न तो भ्रष्ट कर पाए और न ही डरा सके. असम की जनता की आशाएं तो इस हद तक थीं कि ये लोग उनके समाज को राष्ट्रीय राजनीति की धुरी बना डालेंगे.

इन्हीं उच्चाकांक्षाओं का नतीजा है कि असमी लोग आज अगप से ठगा महसूस करने लगे हैं. उल्फा से हमदर्दी रखने वालों का कहना है कि अब संगठन को बस अगप के साथ राजनैतिक आंख-मिचौली खेलते रहना है और सत्ता खुद उसके हाथों में चली आएगी. मसलन, जैसे-जैसे चुनाव नजदीक आएंगे अगप के पास क्षेत्रीयता और स्वायत्तता जैसे मुद्दों को उभारने के सिवा कोई चारा नहीं रहेगा. तब उल्फा उससे पूछेगी कि "एक कदम और आगे जाकर वास्तविक स्वायत्तता क्यों नहीं?"

अभी तक तो आसू ने अलगाववाद का स्पष्ट विरोध किया है. भट्टाचार्य कहते हैं, "असम समस्या का समाधान भारतीय संविधान के तहत ही होना चाहिए. लेकिन और अधिक विकेंद्रीकरण होना चाहिए और असम चूंकि पिछड़ा राज्य है, इसलिए इसे ज्यादा स्वायत्तता मिलनी चाहिए."

असम के बुद्धिजीवियों की चुप्पी तो हैरतअंगेज है. गुवाहाटी विश्वविद्यालय के आठ प्रोफेसरों को छोड़कर किसी भी जाने-माने बुद्धिजीवी ने उग्रवादियों की 'क्रूरता' की निंदा नहीं की है. प्रसिद्ध समालोचक और अंग्रेजी के प्रोफेसर हीरेन गोहाई, जो निंदा के वक्तव्य पर हस्ताक्षर करने वालों में हैं, कहते हैं, "असम के बुद्धिजीवी अपने समाज में उद्यम की कमी तक जैसे मामलों के लिए औपनिवेशिक शोषण को दोष नहीं दे सकते. पानी में घुसने की जहमत उठाए बिना ही वे मोती कैसे पा लेना चाह रहे हैं? उनमें उग्रवाद के खिलाफ खड़े होने का साहस तो होना ही चाहिए."

लेकिन गोहाई की आवाज नक्कारखाने में तूती सरीखी है. राज्य सरकार इस समस्या से निबटने में पूरी तरह अक्षम है. कई आलोचक तो मानते हैं कि अगप अगला चुनाव उल्फा की बदौलत ही जीतना चाहती है और वर्तमान चुप्पी का मतलब यह है कि उल्फा उसके उम्मीदवारों के चयन में अपनी निश्चित राय दे सके.

सबसे दुखद बात तो यह है कि केंद्र सरकार का ध्यान पंजाब तथा कश्मीर समस्या और जनता दल की आंतरिक कलह की तरफ होने की वजह से असम आहिस्ता-आहिस्ता हाथों से बाहर निकलता जा रहा है. स्थिति से निबटने में एक बड़ी बाधा यह है कि अगप भी राष्ट्रीय मोर्चा का एक घटक है. लेकिन वक्त आ चुका है कि केंद्र खतरे को भांप ले. असम में सोए पड़े जिन्न को चुनाव का इंतजार है और कयामत टूट पड़ी तो बचाव के लिए अर्द्धसैनिक बल और सेना भी उपलब्ध नहीं होगी.

असम भारत के महज 70 फीसदी भूमिगत तेल भंडार या 60 फीसदी चाय का ही प्रतीक नहीं है. यह वह महत्वपूर्ण सीमावर्ती राज्य है जो अपने इर्द-गिर्द के छह सीमावर्ती राज्यों को काबू में रखने का माध्यम भी है. ऐसे में असम को जलते देने का जोखिम मोल नहीं लिया जा सकता.

—**शेखर गुप्ता और उत्तम सेनगुप्त,** असम में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेल और तेल की धार

असम में छात्र तेल की नाकेबंदी कर रहे हैं. सरकारी कोष को यह बहुत महंगी पड़ेगी. प्रत्यक्ष हानि ही 100 करोड़ रु. के करीब बैठेगी. यदि अप्रत्यक्ष नुकसान भी जोड़ लिया जाए तो आंकड़े और ऊपर पहुंच जाएंगे. पाइप लाइन में कच्चा तेल न पहुंचने से होने वाला नुकसान 50 करोड़ रु. के करीब बैठेगा जबकि बरौनी और बोंगईगांव के तेलशोधक कारखाने बंद होने से 45 करोड़ रु. के उत्पादन का नुकसान होगा. इसके अलावा दो और तरह से नुकसान भुगतना पड़ेगा. राज्य में धरने की वजह से स्थगित लूप पाइप लाइन का निर्माण अब और छह महीने तक लटक जाएगा और बरौनी तेलशोधक की क्षमता बढ़ाने की योजना भी दस महीने से अधर में लटकी है. केंद्र सरकार के इस आश्वासन के बावजूद कि तेल राज्य से बाहर नहीं जाएगा, छात्रों की शंका दूर नहीं हुई है.

दक्षिण पर धावा

बंगलूर में बर्तन धोने के डिटर्जेंट विम लिक्विड के विपणन प्रयोग की सफलता के बाद देश की सबसे बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनी हिंदुस्तान लीवर अपने इस नए उत्पाद को जल्दी ही चारों दक्षिणी राज्यों में भी उतारेगी. कंपनी ने जो परीक्षण कराए उनके अनुसार एक किग्रा विम लिक्विड से दस हजार से ज्यादा बर्तन धोए जा सकते हैं. भारत में तरल डिटर्जेंट की सालाना कुल मांग 1,200 टन के करीब है. और इसकी कीमत लगभग 150 करोड़ रु. के बराबर है. यदि हिंदुस्तान लीवर की योजना कामयाब रहती है तो बाजार उन्हीं के लिक्विड डिटर्जेंट से पटा होगा.

पंजे से बचे, पांव पसारे

अपने प्रतिद्वंद्वी जगतजीत इंडस्ट्रीज के पंजे से बचने के बाद 344 करोड़ रु. कारोबार वाले मोहन मीकिंस समूह ने अपने विस्तार की भारी-भरकम योजना बनाई है. अभी इस समूह के पास एक लाख बैरल स्पिरिट बनाने के प्लांट लखनऊ, कसौली और अन्य जगहों पर हैं. ये सभी प्लांट 45 साल से अधिक पुराने हैं. इससे जो महंगे उत्पाद बनेंगे, उन्हें इस साल के अंत में बंबई और कलकत्ता में बेचा जाएगा. इस बीच यह समूह पांडिचेरी में 28 करोड़ रु. की लागत से शीशे का कारखाना लगाने की सोच रहा है. और कर्नाटक में 15 करोड़ की लागत से शराब का कारखाना लगाने जा रहा है ताकि युनाइटेड ब्रुअरीज को उसके मैदान में ही पटखनी दे सके. कर्नाटक में इसकी भिड़ंत युनाइटेड ब्रुअरीज से होगी. यह समूह फास्ट फूड के कारोबार में उतरने की भी सोच रहा है.

पंचाट वसूलेगा पैसा

भारतीय रिजर्व बैंक के अधिकारी बैंकों से अपनी रकम वसूल न कर पाने के बढ़ते मामलों की जांच के लिए एक पंचाट के गठन पर गंभीरता से विचार कर रहे हैं. फिलहाल, जो व्यवस्था है उसमें व्यक्ति या संस्था से पैसा वसूल न होने की स्थिति में बैंक अदालत का दरवाजा खटखटाते हैं. मामला वर्षों तक खिंचता रहता है और सरकार के करोड़ों रु. फंसे रहते हैं. प्रस्तावित पंचाट बकाया रकम और भुगतान संबंधी सभी मामलों की सुनवाई कर नियत समय पर मामले को सुलझाने की कोशिश करेगा. रिजर्व बैंक ने इस आशय का प्रारूप वित्त मंत्रालय को भेज दिया है.

लोक निर्गमों की सुस्ती

भारत के शेयर बाजारों में तेजी का माहौल है, हालांकि देश और दुनिया का राजनैतिक घटनाक्रम इसके विपरीत है. पर देश में सार्वजनिक निर्गमों का बाजार काफी ठंडा पड़ा है. बंबई शेयर बाजार के हाल ही में जारी किए

चार्ट: बी.के. झवेरी

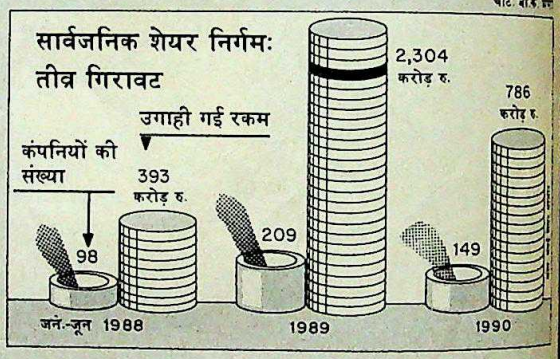

आंकड़ों के अनुसार इस साल के पहले छह महीनों में शेयर निर्गमों के जरिए 786 करोड़ रु. इकट्ठा किए गए जबकि पिछले साल इसी दौरान इससे तीन गुनी रकम इकट्ठा की गई थी. जाहिर है कि कंपनियों को देश का मौजूदा राजनैतिक और आर्थिक माहौल बाजार से नई पूंजी एकत्र करने के लिए ज्यादा उपयुक्त नहीं लग रहा. भले ही मौजूदा शेयरों के बाजार में अतिशय खुशहाली का माहौल है.

माचिस और मसाला

माचिस उत्पादक विमको (जो पहले वेस्टर्न इंडिया मैच कंपनी थी) का हाल ही में जब अशोक चतुर्वेदी के 40 करोड़ रु. के कारोबार वाले अनजान-से फ्लेक्स पैकेजिंग समूह ने अधिग्रहण कर लिया तो माचिस उद्योग में खासी उथल-पुथल मच गई. चतुर्वेदी ने इस दौड़ में थापर और मोदी जैसे बड़े व्यापारिक घरानों को पीछे धकेल दिया. विश्वस्त सूत्रों के अनुसार चतुर्वेदी और उनके आप्रवासी भारतीय सहयोगी ने विमको में 39 फीसदी हिस्सेदारी खरीदने के लिए 8 करोड़ रु. की रकम खपाई. सरकारी इजाजत मिलने के बाद चतुर्वेदी अब इसके निदेशक बन गए हैं. यह बात अभी तक ज्यादा प्रचारित नहीं हुई है कि व्यापार की दुनिया में चतुर्वेदी की कामयाबी में पान पराग के एम.एम. कोठारी का भी काफी सहयोग है. दोनों समूह अपनी विपणन रणनीति साथ-साथ बना सकते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महंगाई

थमने के आसार नहीं

सरकारी उपायों के बावजूद महंगाई पर रोक नहीं

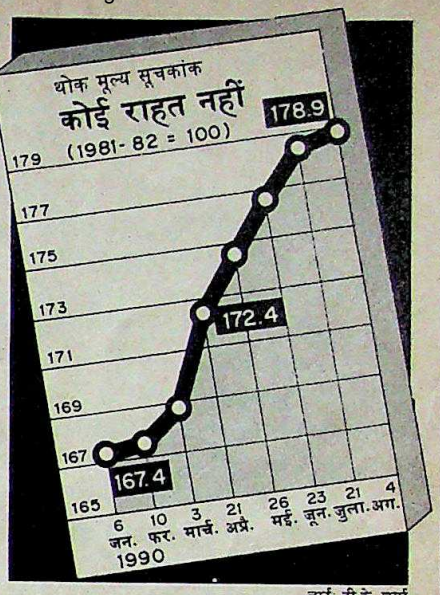

चार्ट: बी.के. शर्मा

महंगाई एक ऐसा आर्थिक मुद्दा है जो बड़ी आसानी से राजनैतिक मुद्दे में बदल जाता है. ऐसा न तो बजट घाटे के बढ़ने में होता है, न देश-विदेश के कर्जे के बढ़ने में. 1979 के चुनाव में इंदिरा गांधी ने प्याज की कीमत को ही एक बड़ा मुद्दा बना दिया था. और पिछले चुनाव में राष्ट्रीय मोर्चा ने चीनी की कीमत को मुद्दा बनाकर हवा अपने पक्ष में की थी.

यह कोई भी नहीं पूछता कि किसी परिवार के खर्च का कितना बड़ा (या छोटा) हिस्सा चीनी या प्याज पर खर्च होता है. वास्तविकता यह है कि व्यापक उपभोग वाली किसी चीज की कीमत में होने वाली मामूली वृद्धि भी अधिकांश नागरिकों की वास्तविक आय को घटा देती है. ऐसा नहीं है कि महंगाई के कारण अपनी आमदनी और मुनाफा बढ़ जाने के कारण सारे अमीर लोगों को फायदा ही होता हो या गरीबों के पास खर्च लायक पैसे ही न होने से उन पर फर्क नहीं पड़ता. लेकिन महंगाई की असली मार मध्यम वर्ग को ही झेलनी पड़ती है.

इसलिए पिछले पखवाड़े सरकार इस बात पर इतराती रही कि 30 जून तक मुद्रास्फीति की जो दर 9 फीसदी थी वह 4 अगस्त को घटकर 7.8 फीसदी हो गई. लेकिन आंकड़ों का यह गणित देश के करोड़ों लोगों के जख्मों पर मरहम नहीं लगा सकता. आम जरूरत की अधिकांश चीजों की कीमत में पिछले नौ महीनों में हुई वृद्धि उसके पहले के कुछ वर्षों में हुई वृद्धि के मुकाबले तेज रही है, इस बात का कोई प्रमाण नहीं है. हां, खाद्य तेलों, फलों, सब्जियों, कॉफी, चाय और सीमेंट की कीमतें जरूर बहुत तेजी से बढ़ी हैं.

यही बहुत बड़ा फर्क ला देता है, लोगों के लिए भी और राजनैतिक पार्टियों के

खाद्य तेल

उफान जारी

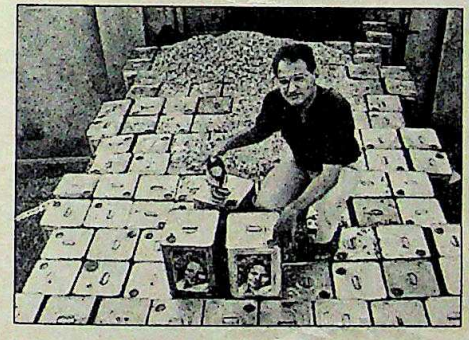

मार्च और जुलाई के बीच खाद्य तेलों की कीमतों में 20 फीसदी का इजाफा हो गया

पिछले साल के शुरू में सरकार ने राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड को खाद्य तेलों की कीमतें बांधने और तिलहन उत्पादकों को वाजिब दाम दिलाने की पहल करने को कहा था. किसानों को वाजिब दाम दिलाने वाली बात तो हो गई लेकिन खाद्य तेलों की कीमतें चढ़ती ही जा रही हैं.

बंबई में अगस्त में मूंगफली प्रति किलो 32 रु. तक पहुंच गई. डेयरी बोर्ड इसका दोष जमाखोरों को देता है.

लेकिन समस्या का असली कारण तो तिलहन की पैदावार में कमी ही है. सबसे अधिक तिलहन पैदा करने वाले गुजरात से इसे बाहर ले जाने पर लगी रोक ने हालात को और बदतर कर दिया है. वैसे, राज्य सरकार रोक की बात का खंडन करती है. डेयरी बोर्ड के भंडार में कम माल—करीब 50,000 टन होने से भी मुश्किलें बढ़ी हैं. अक्तूबर में समाप्त होने वाले इस तेल वर्ष में मांग और आपूर्ति के बीच 8 लाख टन का अंतर रहने की उम्मीद है. जुलाई तक करीब 3.4 लाख टन तेल आयात किया गया था. अब त्योहार का मौसम आने पर कीमतों पर अंकुश के लिए और आयात करना ही होगा.

इस बीच डेयरी बोर्ड पर भी 'मुनाफाखोर बनिया' बन जाने के आरोप लगने लगे हैं. पिछले साल बोर्ड ने तेल आयात और उसकी बिक्री में 16.8 करोड़ रु. का मुनाफा कमाया था. इस साल आयातित पामोलिन तेल की बिक्री से 30 करोड़ रु. के मुनाफे की उम्मीद है. लेकिन बोर्ड ने 'धारा' नाम वाले अपने पैकेट बंद तेल पर होने वाला कुछ नुकसान भी सहा है.

इस बात की जरूरत भी महसूस की गई कि बोर्ड गोदरेज समूह जैसे पैकरों को पामोलिन 26,000 रु. टन की दर पर बेचने की जगह सीधे उपभोक्ताओं तक पहुंचे. बोर्ड के अध्यक्ष वी. कुरियन का मानना है कि शहरी उपभोक्ता सस्ता आयातित तेल खाने का आदी हो चुका है सो, अब उसकी जेब से थोड़ा और पैसा निकालकर किसानों की जेब में डाला जाना चाहिए.

कुरियन मानते हैं कि खाद्य तेल के मामले में बोर्ड के कामकाज की सफलता आंकने के लिए डेढ़ साल का समय बहुत ही कम है. वे बताते हैं कि देश के माप-तौल कानून के चलते ही खाद्य तेल के 200 मिलीलीटर के पैकेट बेचने की योजना अटकी है. लेकिन उनको भरोसा है कि अगले सात वर्षों में भारत खाद्य तेलों के मामले में आत्मनिर्भर हो जाएगा. तब तक उपभोक्ताओं को या तो थोड़ा अधिक पैसा देना होगा या थोड़ी खपत घटानी होगी.

—परंजय गुहा ठाकुरता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीमेंट उद्योग

दिन फिर गए

लगातार तीन वर्षों तक मुनाफे में गिरावट, उत्पादन क्षमता का भरपूर उपयोग न हो पाने और माल के गोदाम में पड़े रहने के दौर के बाद अब सीमेंट उद्योग के तो दिन फिरे हैं, लेकिन उपभोक्ता जल-भुन गए हैं. कारण है: सीमेंट के खुदरा मूल्य में बेहिसाब बढ़ोतरी. सीमेंट उद्योग के लोगों पर यह आरोप लगाया जाता है कि उन्होंने बेवजह दाम बढ़ाने के लिए गिरोहबंदी कर ली है. मगर उद्योग के प्रवक्तागण इसका खंडन करते हैं.

सीमेंट उत्पादक संगठन के मुख्य कार्यकारी ए.एल. कपूर कहते हैं, "यह धारणा गलत है कि लगभग 95 सीमेंट उत्पादक कीमतें चढ़ाने में लगे हैं." गुजरात अंबुजा सीमेंट के प्रबंध निदेशक नरोत्तम सेकसरिया कहते हैं, "इस्पात और लोहे की कीमतें सीमेंट से भी अधिक चढ़ी हैं तब भी सिर्फ हमें ही दोष दिया जा रहा है." संगठन का दावा है कि पांच महानगरों में 50 किलो वाली सीमेंट की बोरी की कीमत अप्रैल 1989 से अप्रैल 1990 के बीच 80 रु. से बढ़कर सिर्फ 85 रु. हुई है. लेकिन सरकारी अधिकारी बताते हैं कि देश के पूर्वी हिस्से में इसकी कीमत 96 से लेकर 110 रु. प्रति बोरी हो गई है.

कीमतों में वृद्धि का एक कारण तो ढुलाई का खर्च बढ़ जाना है. लार्सन ऐंड टुब्रो के सीमेंट विपणन विभाग के महाप्रबंधक एम. करनामी कहते हैं, "ढुलाई की समस्या है. सीमेंट को देश के एक किनारे से दूसरे किनारे तक पहुंचाना काफी खर्चीला है."

चार्ट: बी.के. शर्मा

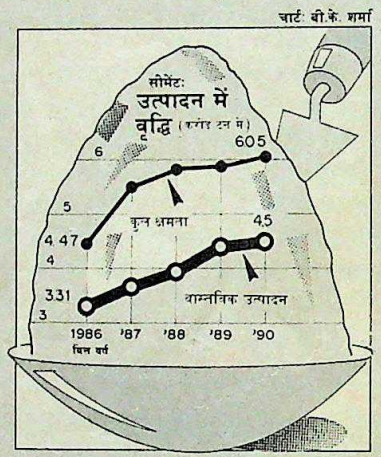

उत्पादकों के मुताबिक मार्च 1989 में कंट्रोल उठने के बाद से सरकारी विभागों ने, जो सीमेंट के मुख्य खरीदार हैं, अपने भंडार में माल भरा बताकर इसकी खरीद कम कर दी. और फिर दिसंबर में उन्होंने माल खरीदना शुरू किया जबकि उन दिनों सीमेंट की मांग सबसे अधिक रहती है. नतीजा हुआ कीमतों में वृद्धि. फिर भी उत्पादक यह बताने में असमर्थ हैं कि क्यों. एक ओर आंध्र की इकाइयों में माल भरा पड़ा है और दूसरी ओर कीमतें 100 रु. प्रति बोरी से भी ऊपर हैं.

कुछ सीमेंट उत्पादक तो फिर से कंट्रोल शुरू कराना चाहते हैं. आंध्र प्रदेश के एक उत्पादक का कहना है, "ऐसा होने पर वहां भी सीमेंट सही दाम पर मिल सकेगा जहां उसकी कमी रहा करती है." लेकिन सीमेंट उत्पादक संगठन 'इंस्पेक्टर राज' की वापसी के डर से इस तरह के फैसले के खिलाफ हैं और अभी तक तो यही लग रहा है कि सीमेंट की कीमतें कम करने के तरीकों पर कोई एकमत नहीं है.

—**एस. एन. वासुकी,** ब्यूरो रिपोर्टों के साथ

लिए भी. इंका अनेक शहरों में महंगाई के खिलाफ रैलियां निकाल रही है. भाजपा और वामपंथी दलों ने भी महंगाई रोकने में सरकार की असफलता को कोसा है.

देश के अनेक हिस्सों में सीमेंट की कीमत इस साल के शुरू के 80 रु. प्रति बोरी से बढ़कर 90 रु. प्रति बोरी से भी ऊपर पहुंच गई. खाद्य तेलों की कीमत तो मार्च से जुलाई के बीच ही करीब 20 फीसदी बढ़ गई (देखें बाक्स). थोक मूल्य सूचकांक के अनुसार फलों और सब्जियों की कीमतों में मार्च से जुलाई के बीच 25 फीसदी से भी अधिक की वृद्धि हुई, जबकि पिछले साल इसी अवधि में इनकी कीमतें 17.4 फीसदी बढ़ी थीं. इसी दौरान कॉफी की कीमत करीब 30 फीसदी बढ़ गई जबकि पिछले साल इस अवधि में यह वृद्धि 5.4 फीसदी थी. ये आंकड़े खुदरा मूल्यों में हुई अधिक वृद्धि को नहीं दर्शाते.

पिछली सरकार की तरह यह सरकार भी महंगाई के लिए जमाखोरों और मुनाफाखोरों को जिम्मेदार ठहराती है. बहुप्रचारित अभियान के तहत आयकर विभाग ने पिछले पखवाड़े अनेक खाद्य तेल विक्रेताओं के यहां छापे मारे. इस अभियान का घोषित उद्देश्य बताया गया— छिपाकर जमा किए गए तेल और चोरी के धन को बाहर निकालना. लेकिन इसका असर कीमतों पर नहीं दिख रहा.

कीमतों पर नियंत्रण रखने का मौजूदा शासकों का दावा अगर सही है तो फिर हर आदमी इतना हल्ला क्यों मचा रहा है. वित्तमंत्री मधु दंडवते कहते हैं, "अगर मैं सत्ता में नहीं होता तो मैं भी सरकार से महंगाई रोकने के लिए कड़े कदम उठाने की मांग करते हुए आंदोलन करता." उनका दावा है कि महंगाई का शोर शहरों में अधिक है. गांव का किसान तो अपने पैदावार की बेहतर कीमत पा रहा है. किसानों ने 4,000 करोड़ रु. के कर्ज माफ करने के फैसले का भी स्वागत किया है.

लेकिन हर आदमी सरकार के इस दावे से सहमत नहीं है कि कीमतों में मामूली वृद्धि ही हुई है. प. बंगाल के पूर्व वित्तमंत्री अशोक मित्र कहते हैं, "महंगाई की दर सभी चीजों में समान नहीं है, इससे मैं चिंतित हूं. जरूरी चीजों की कीमतों में अधिक वृद्धि से आम आदमी प्रभावित हो रहा है." वे बताते हैं कि जरूरी चीजों के आयात का रास्ता भी नहीं बचा है क्योंकि विदेशी मुद्रा की भयंकर तंगी है. खेती की पैदावार की कीमत बढ़ गई है इसलिए सरकार अनाज और खाद पर सब्सिडी समाप्त नहीं कर सकती. न ही रक्षा बजट में कटौती की संभावना है.

अफसरशाही अपने काम का चाहे जितना ढिंढोरा पीट ले, कीमतें कम कराना उसके वश में नहीं है. एक सरकारी अर्थशास्त्री कहते हैं, "कम समय में महंगाई को काबू में करने की सरकार की क्षमता को अर्थशास्त्री भी बढ़ा-चढ़ाकर आंकते हैं." वे महंगाई के लिए पिछले की जरूरत से ज्यादा धन के बाजार में जाने को जिम्मेवार मानते हैं.

लेकिन देश का सौभाग्य है कि लगातार तीसरे वर्ष भी मानसून की बरसात अच्छी हो रही है जो अनाज की वसूली मूल्य में हुई वृद्धि के असर को कम कर देगी. लेकिन इराक-कुवैत विवाद से विश्व बाजार में तेल की कीमतों में वृद्धि के चलते बजट घाटा कम करने की सरकारी कोशिशों पर पानी फिर सकता है. तब उसके पास ईंधन की कीमतें बढ़ाने के अलावा कोई चारा नहीं होगा. और इसका असर हर चीज की कीमत पर पड़ेगा.

—**परंजय गुहा ठाकुरता**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेयर बाजार

बहार कायम

बाहरी उथल-पुथल से बेअसर

कुवैत पर इराक का हमला और उसके बाद की तनातनी से दुनिया भर के शेयर बाजारों के हौसले तो पस्त नजर आए मगर भारत के पूंजी बाजारों का कामकाज सामान्य गति से चलता रहा.

पिछले पखवाड़े मुंबई शेयर बाजार का 30 शेयरों वाला संवेदनशील सूचकांक पूरी ताकत से उछला और 22 अगस्त को अब तक की सबसे ऊंची बुलंदी—1,157.78 के बिंदु पर पहुंच गया. इकॉनॉमिक टाइम्स का अखिल भारतीय शेयर मूल्य सूचकांक 22 जुलाई को किसी तरह धीरे-धीरे 544.5 की ऊंचाई पर पहुंचा था जो 8 अगस्त तक लुढ़ककर 520.8 के बिंदु पर पहुंच गया था. यही सूचकांक 22 अगस्त को उछलकर 564.2 के बिंदु पर आसन जमा चुका था. हालांकि इसकी व्यापक आशंका थी कि तेल कीमतों में वृद्धि से देश के भुगतान संतुलन की खस्ता हालत और भी पतली

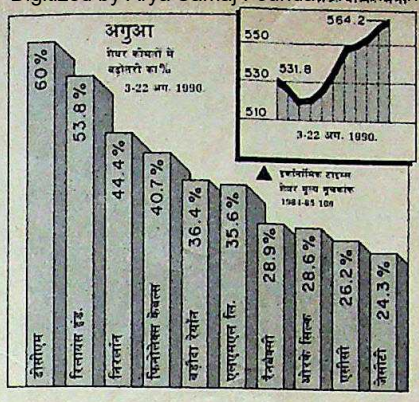

हो जाएगी पर तेजड़िए इसके बावजूद अपनी खरीद पर लगाम लगाने के मूड में नहीं थे.

टाटा स्टील जैसे महत्वपूर्ण शेयर को हल्का-सा झटका जरूर लगा लेकिन बाकी सभी शेयर बुलंदियों की मंजिलें तय करते रहे. रिलायंस का शेयर 155 रु. तक चढ़ गया. टाटा पावर का 100 रु. सममूल्य का शेयर 1,530 रु. तक पहुंच गया, पर पखवाड़े के अंत में 1,490 रु. पर बंद हुआ. लेकिन हफ्ते भर में ही इसने 120 रु. का लाभ कमाया. बुलंदियां हासिल करने वाले बाकी शेयर थे—डीसीएम, निरलॉन, फिनोलेक्स, बड़ौदा रेयॉन, एलएमएल, रैनबैक्सी और ओरके सिल्क आदि.

अगस्त के शुरू में शेयर बाजार के अधिकारियों ने देश भर के बाजारों में कई पाबंदियां लगाईं जिनका मकसद था सट्टेबाजी की बेलगाम गति पर रोक लगाना. इसी के तहत 'अ' वर्ग के शेयरों (सक्रिय कारोबार वाले शेयरों) की वादा बिक्री पर पूरी रोक लगा दी गई. साथ ही, मुंबई में 'ब' वर्ग के शेयरों की नकद बिक्री के खरीदारों पर पड़ता थोप दिया गया. कलकत्ता में 'अ' वर्ग के शेयरों का कारोबार तुरंत आपूर्ति तक सीमित कर दिया गया और मद्रास में दूसरे शेयर बाजार से कारोबार में 10 फीसदी घटत-बढ़त की सीमा बांध दी गई.

दलालों ने इन पाबंदियों का कड़ा विरोध किया और कुछ ने तो विरोध में कारोबार का बहिष्कार तक किया. इसी तरह इन पाबंदियों को हटाने पर खुशी भी जाहिर की गई. तेजड़िए तो सक्रिय थे ही, इसके अलावा साझा कोषों ने भी भारी खरीद-फरोख्त की, जिसके चलते ही बाजार में खासी तेजी आई. ऐसा विश्वास है कि बैंक ऑफ इंडिया, केनरा बैंक और पंजाब नेशनल बैंक के तीन नए साझा कोषों ने बाजार में 1,000 करोड़ रु. झोंक दिए. और फिर इंद्र देवता की कृपा होने से भी बाजार में बहार आ गई.

जमा स्टॉक

	1990 ऊंचा	1990 नीचा	1990 बंद 22.8.90	इस पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
[illegible]	113.00	69.50	113.00	5.00+
[illegible]	1470.00	325.00	1375.00	265.00+
[illegible]	272.50	207.50	255.00	5.00−
[illegible]	56.00	32.50	48.50	3.50+
[illegible]	605.00	355.00	590.00	31.25+
[illegible]	1550.00	617.50	1500.00	380.00+
[illegible]	83.00	62.50	79.00	2.00+
[illegible]	232.00	120.00	228.00	30.00+
[illegible]	148.00	50.50	140.00	18.00+
[illegible]	85.00	34.50	85.00	10.00+
[illegible]	308.00	173.00	290.00	30.00+
[illegible]	143.00	97.00	140.00	6.00+
[illegible]	142.00	91.00	140.00	6.00+
[illegible]	192.50	133.75	177.50	1.25−
[illegible]	4550.00	2420.00	4250.00	400.00+
[illegible]	307.50	176.25	295.00	17.50+
[illegible]	135.00	87.50	110.00	10.00+
[illegible]	125.00	45.50	112.00	42.00+
[illegible]	75.50	51.75	72.00	3.00+
[illegible]	65.25	50.00	60.00	2.50+
[illegible]	126.00	77.75	123.00	11.00+
[illegible]	410.00	200.00	380.00	110.00+
[illegible]	69.00	48.00	59.00	7.00+
[illegible]	54.75	39.50	42.25	2.25−
[illegible]	262.50	155.00	225.00	10.00−
[illegible]	185.00	106.00	178.00	10.00+
[illegible]	395.00	205.00	370.00	35.00+
[illegible]	1800.00	960.00	1650.00	25.00−
[illegible]	3100.00	1295.00	3000.00	250.00+
[illegible]	146.25	101.00	145.00	7.50+
[illegible]	52.25	19.80	47.50	1.50+
[illegible]	50.00	35.25	48.00	4.00+
[illegible]	80.00	46.50	74.00	4.50+
[illegible]	167.50	84.00	152.00	1.50−
[illegible]	286.25	161.25	248.75	6.25−

	1990 ऊंचा	1990 नीचा	1990 बंद 22.8.90	इस पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
इंगरसॉल-रैंड	287.50	190.00	287.50	7.50+
आईटीसी	125.00	48.75	125.00	21.00+
जे.के.सिंथेटिक्स	90.00	50.00	79.00	9.00+
काइनेटिक इंजी.	197.50	130.00	192.50	16.25+
किर्लो. क्युमिंस	106.00	65.00	92.50	2.50+
केएसबी पंप्स	235.00	175.00	220.00	−
लार्सन-टुब्रो	125.00	57.00	116.00	11.00+
लिप्टन	112.00	73.00	85.00	2.50−
लोहिया-मशीन्स	40.00	15.00	40.00	11.50+
मदुरा कोट्स	153.00	100.50	150.00	−
महिंद्रा-महिंद्रा	107.50	67.50	92.50	7.50−
मिल्क फूड	280.00	115.00	175.00	20.00−
मोटर इंडस्ट्रीज	1200.00	780.00	1000.00	60.00+
मुकुंद लिमि.	166.00	127.00	159.00	9.00+
नेशनल आर्गे.	1660.00	1070.00	1550.00	25.00+
नेस्ले इंडिया	150.00	101.75	130.00	10.00−
निरलॉन	27.00	13.00	26.00	6.50+
ओरके सिल्क मि.	42.00	14.50	36.00	9.50+
पेइको इलेक्ट्रॉनिक्स	75.00	24.00	70.00	10.00+
फाइजर	113.75	72.50	77.50	17.50−
प्रीमियर ऑटो	83.00	53.50	68.00	4.00−
रेमंड	120.00	70.00	114.00	20.00+
रेकिट-कोलमैन	256.00	178.00	250.00	12.00+
रिलायंस इंडस्ट्रीज	199.00	50.00	181.50	66.00+
सीमेंस इंडिया	139.00	96.00	128.00	−
शॉ वैलेस	122.00	65.00	100.00	1.00+
श्रीराम फाइबर्स	71.00	43.00	61.75	1.50−
एसकेएफ बेय.	2125.00	1240.00	2000.00	200.00+
स्पिक	76.00	50.75	64.00	3.00−
टाटा स्टील	164.00	103.25	151.00	2.50−
टेल्को	235.00	110.00	220.00	20.00+
वाम ऑर्गेनिक	185.00	115.00	175.00	23.75+
वीडियोकॉन	285.00	105.00	275.00	67.50+
वोल्टास	130.00	63.00	117.50	7.50+
विमको	35.00	15.75	31.00	1.00+

भारतीय रुपए का मूल्य

देश	मुद्रा	इकाई	बिक्री मूल्य (रुपए में)	क्रय मूल्य (रुपए में)
आस्ट्रेलिया	डालर	1	14.2210	14.0784
आस्ट्रिया	शिलिंग	100	1.5906	1.5683
बहरीन	दीनार	1	46.5507	46.0000
बांग्लादेश	टका	100	50.0000	49.8600
कनाडा	डालर	1	15.3220	15.1693
डेनमार्क	क्रोना	1	2.9237	2.8934
मिस्र	पौंड	1	6.0000	5.8628
फ्रांस	फ्रैंक	1	3.3670	3.2841
हांगकांग	डालर	1	2.2529	2.2314
इंडोनेशिया	रुपिया	100	0.0900	0.0800
ईरान	रियाल	100	25.1200	25.0700
इटली	लीरा	100	1.5123	1.4953
जापान	येन	100	12.0919	11.7925
केन्या	शिलिंग	1	0.7500	0.7400
कुवैत	दीनार	1	59.6152	57.6701
मलेशिया	डालर	1	6.4971	6.4328
मारीशस	रुपया	1	1.1900	1.1500
नेपाल	रुपया	1	0.5920	0.5500
हालैंड	गिल्डर	1	9.9336	9.8306
पाकिस्तान	रुपया	1	0.8020	0.7600
सिंगापुर	डालर	1	9.7783	9.6797
स्पेन	पेसो	1	0.1719	0.1500
श्रीलंका	रुपया	1	0.4420	0.4100
स्वीडन	क्रोना	1	3.0404	3.0000
स्विट्जरलैंड	स्विस फ्रैंक	1	13.4457	13.3022
तंजानिया	शिलिंग	1	0.0900	0.0800
थाईलैंड	बहत्त	100	0.6800	0.6698
ब्रिटेन	पौंड	1	33.2834	33.0415
अमेरिका	डालर	1	17.5131	17.3461
सं.अ.अमीरात	दिरहम	1	4.7526	4.7000
सोवियत संघ	रूबल	1	28.1503	27.8600
पश्चिम जर्मनी	जर्मन मार्क	1	11.3122	11.0375

स्रोत—बैंक ऑफ तोक्यो, नई दिल्ली, 22.8.90

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रिकेट

इस बार दिखाया जौहर

लेकिन गेंदबाजी के लिहाज से टीम बहुत कमजोर

भारतीय क्रिकेट टीम ने जब जून के आखिरी दिनों में इंग्लैंड की धरती पर कदम रखा था तब किसी ने कोई खास ध्यान नहीं दिया था. उस वक्त एक ओर विंबलडन का जोर था तो दूसरी ओर विश्व कप फुटबाल का बुखार अपने पूरे शबाब पर था.

लेकिन अब दो महीने बाद इस टीम ने इंग्लैंड में जो जौहर दिखाए वैसे जौहर कुछ ही टीमें यहां दिखा पाई हैं. इंग्लैंड के कट्टर से कट्टर समर्थक भी हर्षोन्माद से भर गए. भारतीय टीम का लोहा उन्होंने माना. और पिछली भारतीय टीमों के खराब प्रदर्शन पर फब्तियां कसते रहने वाले यहां के अखबारों ने भी एकबारगी विशेषणों की बौछार कर दी. इस दफा भारतीय खिलाड़ियों ने न सिर्फ अपने क्रिकेट का नया रूप पेश किया बल्कि अपने विनम्र आचरण से उन्होंने लोगों का दिल भी जीत लिया.

क्या कुछ सामने आने वाला है इसका पहला संकेत लीड्स के एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच के ठीक पहले डर्बीशायर के साथ खेले गए एकदिवसीय मैच में [illegible] गया था. इस मैच में एक बहुत निराशाजनक स्थिति में सचिन तेंडुलकर ने अपने शानदार खेल से भारत के [illegible] असंभव विजय को संभव कर दिया. क्रि[illegible] पंडितों ने हैरत से देखा कि तेंडुलकर ने [illegible] का शॉट किस शानदार तरीके से [illegible] मारकर जमाया और वह भी दुनिया [illegible] तीन सबसे तेज गेंदबाजों में गिने जाने [illegible] वेस्ट इंडीज के इयान बिशप की गेंद पर

पर ये एकदिवसीय मैच तो [illegible] इम्तहान से पहले के अभ्यास भर थे. [illegible] टेस्ट जिस गहन एकाग्रता के साथ [illegible] गया, वह हाल के वर्षों की एक मिसाल [illegible] है. इंग्लैंड मैच जीता जरूर पर दर्शकों [illegible] दिल भारतीयों ने ही जीता. लेकिन [illegible] टेस्ट ने इतिहास के नाम [illegible] कुछ खास नहीं किया. [illegible] ट्रैफर्ड टेस्ट ने एक [illegible] मौका दिया. अजहरुद्दीन [illegible] जहां बहुत ही शानदार [illegible] रन बनाए, वहीं इंग्लैंड [illegible] ओर से शतकों का [illegible] खड़ा कर दिया गया. [illegible] इस बार भी चमकते-दम[illegible]

प्रदीप मंधानी

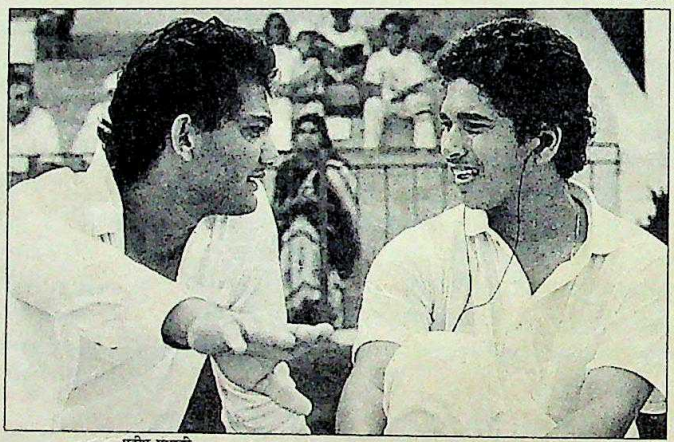

प्रदीप मंधानी

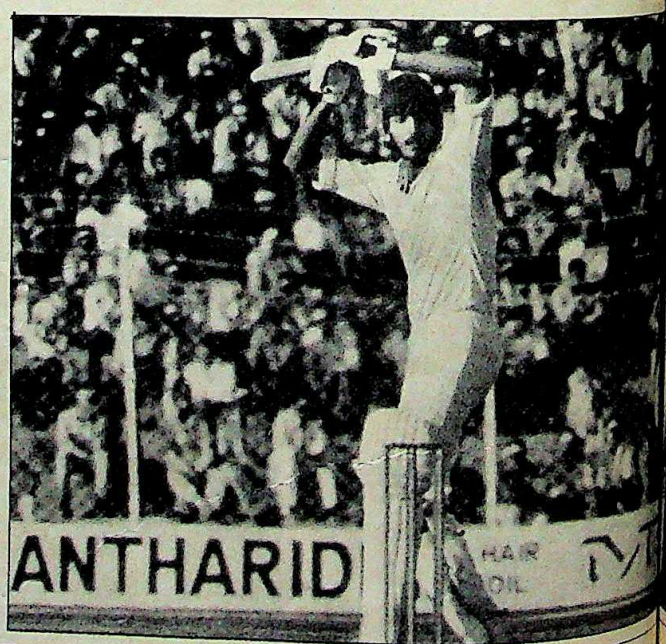

अजहरुद्दीन और सचिन तेंडुलकर; (नीचे बाएं) रवि शास्त्री; और संजय मांजरेकर

इस बार भारतीय बल्लेबाजी ने कौशल दिखाया. ऐसा साहसिक और सटीक प्रदर्शन कम ही देखने को मिलता है. भारतीय बल्लेबाजों ने सिर्फ शतक ही नहीं जमाए बल्कि ब्रिटिश लोगों का दिल भी जीत लिया. भारतीय बल्लेबाजी को अब विश्व में सबसे सशक्त माना जाता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

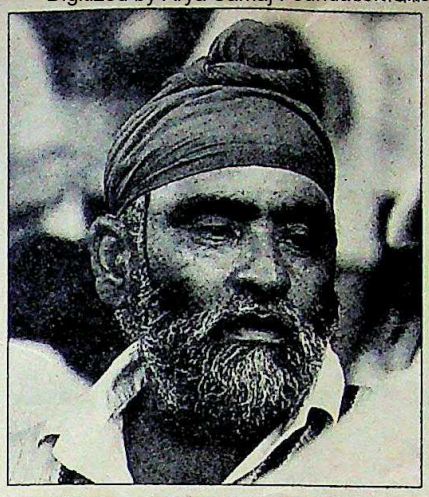

अच्छे इरादों के बावजूद टीम मैनेजर बेदी की आडंबरप्रियता ने उन्हें बदनाम ही किया है

कैरियर के शीर्ष पर हैं.

वैसे, पुराने प्रेक्षकों का मानना है कि गेंदबाजी के लिहाज से यह भारतीय टीम सबसे कमजोर है. आंकड़ों से भी कुछ ऐसा ही उजागर होता है. इंग्लैंड के लिए रवाना होने से पहले बिशन सिंह बेदी ने सभी गेंदबाजों के लिए दौरे में 25-25 विकेट का लक्ष्य तय किया था. केवल नरेंद्र हीरवाणी ही यह लक्ष्य हासिल कर सके हैं.

मनोज प्रभाकर और कपिलदेव दोनों ही पिचों और गेंदों को लेकर असंतुष्ट रहे. ग्लॉस्टरशायर के विरुद्ध उन्हें 'पुरानी' गेंद दी गई. ओवल में उछाल वाले पिच की वजह से उनका प्रदर्शन ठीक रहा.

लेकिन केवल बाह्य कारणों को ही जिम्मेदार नहीं माना जा सकता. मिसाल के तौर पर, एमआरएफ विश्व शृंखला के मैचों के पहले ईरानी ट्रॉफी के मैचों में अतुल वासन ने बड़ी उम्मीदें जगाई थीं. उसके बाद न्यूजीलैंड में उन्होंने अपना फॉर्म बनाए रखा. लेकिन इंग्लैंड में उनकी गेंदबाजी बेहद लचर रही. हां, जब भी उनकी सोई प्रतिभा ने रंग दिखाया, उनका वास्तविक प्रदर्शन साफ दिखा. ओवल में उनकी गति और दिशा इंग्लैंड के किसी भी गेंदबाज के मुकाबले की थी.

भारतीय गेंदबाजी अगर औसत दर्जे की दिखी तो इसके लिए देसी क्रिकेट को ही दोषी माना जाएगा. जब तक देश में ऐसे पिच नहीं तैयार किए जाएंगे, जहां तेज गेंदबाज अभ्यास कर सकें, तब तक कोई नई प्रतिभा पनप नहीं सकेगी.

कपिल में वह दमखम नहीं रह गया है. उन्हें अब शायद बल्लेबाजी पर ही ज्यादा ध्यान देना चाहिए. वेंगसरकर की वर्तमान स्थिति उनकी अपनी ही करनी का फल है. उन्होंने लगातार मेहनत की, रन बटोरने के प्रति विश्वस्त भी नजर आए, पर एकाग्रता की कमी के कारण टिक न सके.

जहां तक बेदी का सवाल है, अपने अच्छे इरादों के बावजूद वे टीम मैनेजर के पद के लिए आदर्श व्यक्ति नहीं कहे जा सकते. उनकी उपलब्धियों पर कोई संदेह नहीं है पर उनकी आडंबरप्रियता ने उन्हें बदनाम ही ज्यादा किया है.

अजहरुद्दीन के शब्दों में, "जब भी मैं मुसीबत में होता हूं, मेरा खयाल रखता है." उम्मीद की जानी चाहिए कि टीम के बाकी सदस्यों पर भी ऊपरवाला इसी तरह मेहरबान होगा.

—हर्ष बोगले, लंदन में

कपिल, प्रभाकर और वासन

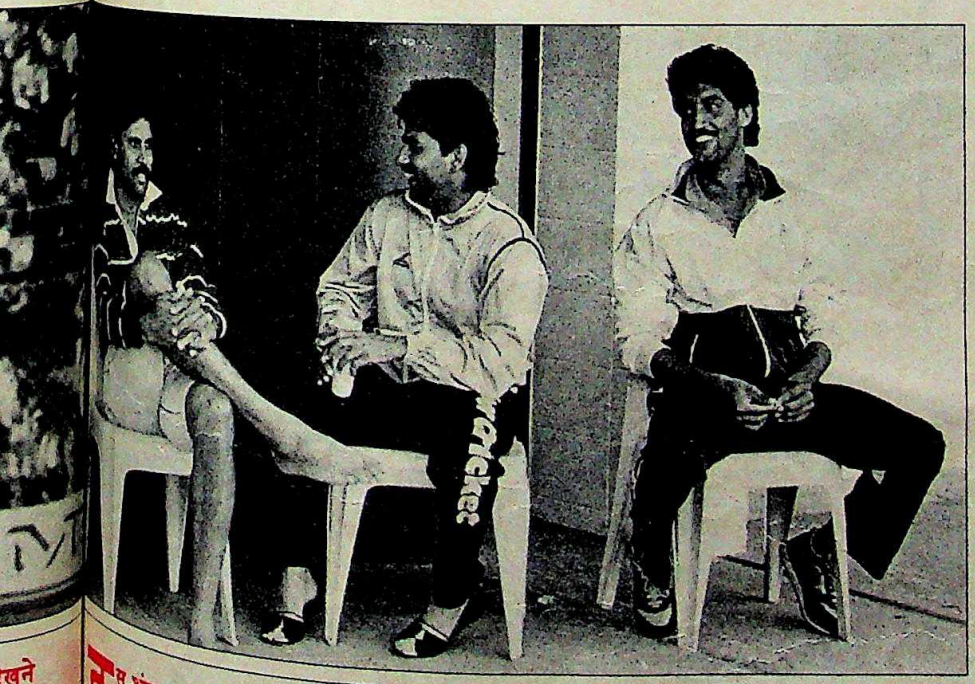

इस शृंखला ने साबित कर दिया कि अगर भारतीय टीम में कोई ऐसा तेज गेंदबाज आ जाए जिसका खौफ बल्लेबाजों पर तारी हो तो यह विश्व की सबसे धारदार टीम हो सकती है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

'इंडिया टुडे' वर्ग पहेली-16

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सपने पूरे
कब तक सहते
फर्जी खाते
घोटाला नहीं
लोग नहीं आते
आलसी बूढ़ा
कन्नड लेखक
पैरवी की
बेहद नेक है
नीची जाति का
निजी जेट
तलाक दिया
चमक फीकी
वजन की बात
दृष्टि खुल गई
मितभाषी
महान वन-वासी
अपने बूते पर
भव्य निवास
ठेंगा दिखा दिया
अनन्य भक्त हैं
पुलिस कम
इतने वर्ष बाद
अनत लिखा
जयघोष

नाम

पता

पिन

हल इस पते पर भेजें:

वर्ग पहेली-16, इंडिया टुडे,
एफ-14/15, कनॉट प्लेस,
नई दिल्ली-110001

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि:
20 सितंबर 1990
उत्तर के लिए देखें:
1-15 अक्तूबर 1990 का अंक

► यह पहेली शब्दशः इंडिया टुडे के 31 अगस्त 1990 के अंक पर आधारित है.

► वर्गों के भीतर दिए गए शब्द ही संकेत हैं.

► तीर के चिन्ह बताते हैं कि शब्द कहां से शुरू होकर किधर जाते हैं.

► तीर के चिन्ह के साथ दिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गों की संख्या दर्शाते हैं.

► वृत्त का अर्थ है कि उसमें आने वाले शब्दांश का प्रयोग पुनः होगा.

► मटमैले रंग वाले वर्ग रिक्त ही रहेंगे.

► शब्द वैसे ही लिखें जैसे पत्रिका में छपे हैं.

► सर्वप्रथम पहुंचने वाले **तीन सर्वशुद्ध हलों को पुरस्कारस्वरूप 500-500 रु.** दिए जाएंगे.

► लिविंग मीडिया इंडिया लि. के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते.

नोकझोंक
'टी
पू
का
शे
र'
बेफिक्र हैं
छा
बूढ़ा हो चुका
चमक फीकी
चि
दं
ब
र
म
क
न्याय नहीं
जत्था भेजेंगे
ड़ि
फिल्मों से दूर
पि
सि
या
मा
ल
वि
का
रि
शब्दों से जादू
ओ
म
पु
री
नया नाम
तीसरे हैं
च
डॉ.
दबी जबान
र
लक्ष्मी आई
साख गिरा ली
'कि
धर लिए गए
लि
य
रा
म
ज
न
ला
ल
ड
अ
एं
इ
ही
दूसरे 'लाल'
चुनौती जारी
लू
खुं
नी
शो
ड
त
मा
यादव के गुरु
प्र
मो
द
न
व
ल
क
र
ना
सू
ल
क्ष्मी
सा
ह
र
क्क
पो
पा
इ
म
पुरानी मान्यता
है
द
र
ला
म'
क
ए
ति
र
'फे
ठोस तर्क भी
पु
पु
ल
ज
य
क
र
स
हा
जा
बि
ट्रस्ट की अध्यक्ष
करीबी दोस्त
प
णा
स
य
कृपावृष्टि
पी
ट
र
गा
ल
बे
थ
य
न'
अ
शो
क
वा
ज
पे
यी
ही

इंडिया टुडे
वर्ग पहेली -14 का हल

पुरस्कार विजेता

शैलेंद्र कुमार
आरवी II 849 ए
ओवरब्रिज रोड,
झांसी-284003 (उ.प्र.)

डॉ. यशपाल मेहता
381/31, मायानगर,
रोज गार्डन के पास
लुधियाना-141001
(पंजाब)

विनीश जैन
2/2 मुक्ता प्रसाद नगर,
बीकानेर-334002 (राज.)

इन तीनों को 500-500 रु. के चेक भेजे जा रहे हैं. विजेताओं को बधाई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी सावधि जमा हो दिल्ली में,

और एक बहुमूल्य कलाकृति आप ख़रीदना चाहें दार्जिलिंग में...

तो फ़िक्र की क्या बात, जब **कैशकी** है आपके साथ! **कैशकी** यानी एक सबसे निराली सावधि जमा जिसे एक चैक बुक के रूप में आप जहां चाहें, अपने साथ ले जा सकते हैं. और वक़्त-बेवक़्त पैसों की ज़रूरत पड़ने पर, भारत-भर में मौजूद स्टेट बैंक समूह की 12,000 शाखाओं में से, किसी भी शाखा में आकर, तुरंत नक़द पैसा प्राप्त कर सकते हैं.

फिर चाहे आपकी सावधि जमा दिल्ली में ही क्यों न हो, आप दार्जिलिंग में छुट्टियां बिताते हुए भी वहां तुरंत नक़द पैसा प्राप्त कर सकते हैं. और इस तरह आप मुस्कुराते हुए बुद्ध की बहुमूल्य कलाकृति या ऐसी ही कोई अपनी मनपसंद चीज़ बेझिझक ख़रीद सकते हैं... फिर चाहे आपके जेब में पैसा हो या न हो!

और अब, एक सबसे ख़ास बात! आपकी **कैशकी** सावधि जमा के साथ आप पाते हैं एक 'स्टेट बैंक कार्ड' भी. (फ़िलहाल, 'कार्ड' सुविधा भारतीय स्टेट बैंक की केवल 5,000 शाखाओं में ही उपलब्ध) अपनी पहचान के लिए बस यह कार्ड दिखाइए और तुरंत नक़द रक़म पाइए. और फिर भारत-भर में 20,000 से भी अधिक किसी भी दुकान से अपनी मनपसंद चीज़ ख़रीदिए या अन्य कोई सेवा हासिल कीजिए... वह भी बिना नक़द मूल्य चुकाए!

CASH KEY

कैशकी के सम्बंध में कुछ महत्त्वपूर्ण बातें

• न्यूनतम जमा राशि – रु. 6,700 • न्यूनतम जमा अवधि – 2 वर्ष • ऋण – आपकी जमा राशि का 75% तक – चाहे ज़ितना. • ज़ितने समय के लिए आप रक़म निकालते हैं, उतने समय के लिए, निकाली हुई रक़म पर आपका देय ब्याज है – केवल 12% वार्षिक (जो आपकी सावधि जमा दर से केवल 2% अधिक है)

• आप भारतीय स्टेट बैंक की 8,000 शाखाओं में से, किसी में भी 5,000 रु. से '**कैशकी** सावधि जमा खाता' बग़ैर कार्ड सुविधा के भी खोल सकते हैं. लेकिन ऐसा करने पर आप केवल उसी शाखा से पैसा निकाल सकते हैं, जहां आपने '**कैशकी**' खाता खोला हो.

• ऋण की अदायगी – आपकी सुविधानुसार.

अधिक जानकारी के लिए हमारे स्थानीय मुख्य कार्यालय के विकास प्रबंधक (P&SB) या अपनी नज़दीकी स्टेट बैंक शाखा से संपर्क करें.

स्टेट बैंक

LINTAS SBI CORP 20 203 HI

सावधि जमा – जो आपकी जेब में रहे, ब्याज से जेब भी भरे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामयाब शादी के राज

हमने कहा था न इस्लामाबाद बहुत खामोश शहर है. यहां कोई ज्यादा शोरगुल नहीं मचता. कराची की गोलियों की आवाज भी यहां तक नहीं पहुंचती. खामोशी से यहां तख्ता भी पलट गया और किसी को खबर तक नहीं हुई. हद तो यह कि मोहतरमा बेनज़ीर को भी नहीं. भारत में तो चुनाव होते हैं. यहां तख्ता पलट का मामला कितना साफ-सुथरा निकला. चुनाव का खर्चा भी सब बच गया.

इस्लामाबाद में तो प्रधानमंत्री के अलावा कुछ नहीं बदला. देखने में यह तीसरी दुनिया का हिस्सा नहीं लगता. हमारे घर के आसपास कितने ताजमहल बन रहे हैं, हम आप को क्या बताएं. झक सफेद संगमरमर के पूरे-पूरे घर. बाथरूम क्या और बेडरूम क्या. सच कहें तो हमें यह देखकर अपनी गरीबी पर कुछ शर्म-सी आने लगती है.

एक बार हमारी एक पाकिस्तानी सखी हमारे साथ बंबई गईं. वहां हम उन्हें अपनी एक और दोस्त से मिलाने ले गए. पेडर रोड पर उनका फ्लैट था. वे हमारी दोस्त से कहने लगीं, "आप लोग तो वाकई स्लम में रहते हैं." हमारी दोस्त भई हमसे खफा हो गई. लेकिन वास्तव में अगर यहां के मकान देखें तो हम लोगों के घर स्लम ही लगेंगे. शाम को जब हम गाड़ी में घूमने निकलते हैं तो अक्सर दिल को बहलाने के लिए सोच लेते हैं कि हम यूरोप में घूम रहे हैं. पर मौलवी साहब जब मोटरसाइकिल पर गुजरते नजर आते हैं तो हम वापस यहीं आ पहुंचते हैं.

हमारी आंखें बहुत जल्द खराब हो जाएंगी. और इस बात का जिम्मेदार यहां का दूसरा टीवी चैनल है, जो 24 घंटे चलता रहता है. यह अमेरिकन चैनल सीएनएन है जो अभी इस्लामाबाद में बाक़ायदगी से शुरू हुआ है. अंग्रेजी फिल्मों, ड्रामों के साथ-साथ हर आधे घंटे के बाद तफसीली खबरें होती हैं. फैशन शो भी होते हैं. पाकिस्तानी टीवी पर बिकिनी पहने लड़कियों को देखकर कुछ अजीब-सा लगता है.

वैसे यह चैनल है बड़ा मजेदार. ऐसे चैनल के और कई फायदे हैं. एक आसानी तो यह है कि रात में अगर मियां से झगड़ा हो तो अंधेरे आंगन में अब टहलना नहीं पड़ता. मियां के खर्राटे अगर जहर लग रहे हों तो टीवी की आवाज इतनी ऊंची कर दो कि उसकी नींद टूट जाए. फिर हमारे मुल्क का तो सबसे बड़ा मसला है आबादी का. टीवी अगर रात भर खुला रहे तो यह काफी हद तक इस मुश्किल को आसान कर देगा.

खैर, जब घर संभालने और मियां के नखरे सहने से हमें फुरसत मिलती है तो हम किताब लिखते हैं—'कामयाब शादी का राज'. एक तो यह कि हमने अब तक दो शादियां की हैं. एक तो नाकामयाब रही और आजकल दूसरी को कामयाब बनाने में लगे हुए हैं. हम अब घर का सौदा तक खुद खरीद रहे हैं. टमाटर यहां 25 रु. किलो हैं और प्याज 20 रु. किलो. हमने अच्छी बीवी की तरह टमाटर का सूप पीना छोड़ दिया और घर के पिछवाड़े आलू-प्याज उगा लिए.

फिर जब हमने शादी की तो आगे-पीछे हमारी कई सखियां भी इस अटूट बंधन में बंध गईं. पहले जब हम मिलती थीं तो इस बहस में वक्त गुजरता था कि शादी करें या न करें, शादी को कायम रखना वैसे कोई मामूली बात नहीं. परसों हमारी एक सहेली मिलने आईं. उनकी शादी को 13 साल हो गए हैं. वे अपने मियां से अब तक खुश हैं. हमने कहा, "भई, मान गए. तुम और तुम्हारे मियां इतने प्यार से रहते हो. हमें तो तुम भाई-बहन जैसे लगते हो."

मर्दों को बेवकूफ बनाना मुश्किल बात नहीं. वे हर वक्त अपने अहं का शिकार होते हैं. शादी की कामयाबी के लिए शौहर को इसी गलतफहमी में रखना चाहिए कि उसके बगैर दुनिया बिलकुल अंधेरी है. कोई बात मनवानी हो तो इस तरह से मामला पेश करना चाहिए कि शौहर समझे कि उसी का हुक्म चलता है. आजकल भला ईमानदारी से कोई काम निकलता है?

वात्स्यायन ने कामसूत्र में भी यही सब कुछ लिखा है. एक अच्छी बीवी को किस तरह शौहर के खाने-पीने का खयाल रखना चाहिए. उसके घर वालों का खयाल रखना चाहिए. उसकी मर्जी के खिलाफ किसी से नहीं मिलना-जुलना चाहिए. शौहर से तेज आवाज में नहीं बोलना चाहिए. बचे हुए दूध से घर में मक्खन और घी निकालना चाहिए. जब शौहर घर आएं तो खुद या किसी से कहकर उसके पांव धुलवाने चाहिए. मियां के साथ कहीं जाएं तो सजना चाहिए, वरना फटे-पुराने कपड़े पहनने चाहिए.

वात्स्यायन के लेख में और हमारे खयाल में फर्क इतना है कि हम कहते हैं बीवी को ऐसा लगना चाहिए, चाहे हो नहीं. अक्लमंदी तो यही है क्योंकि औरत तो तेजी से आगे बढ़ी लेकिन मर्दों के स्वभाव में से कुछ नहीं बदला. वे भी औरत को वात्स्यायन के लेख के मुताबिक देखना चाहते हैं.

—साबिया बेदार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

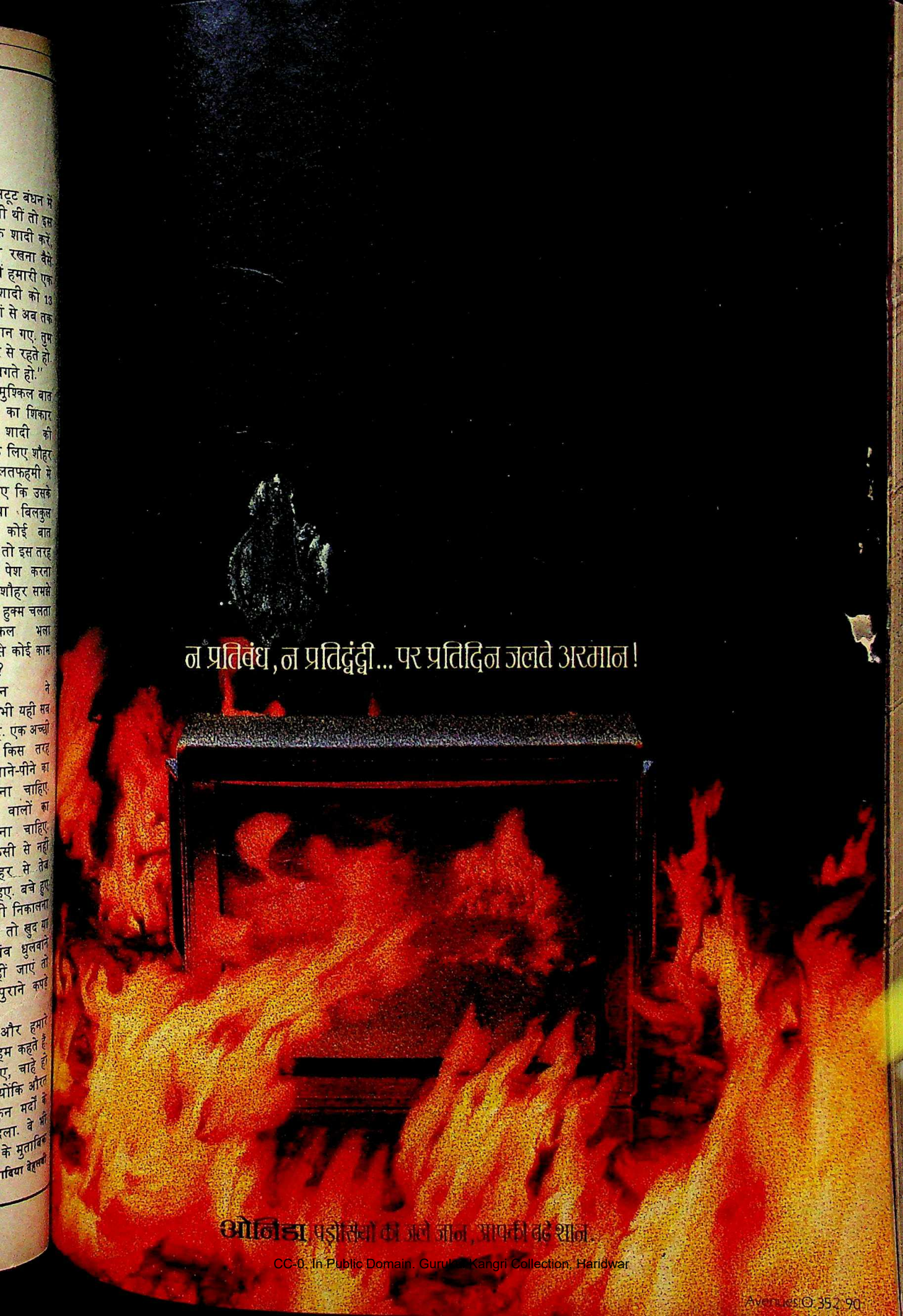

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमिताभ बच्चन

स्वर्गिक द्वीप में मौजमस्ती

मॉरीशस भारतीय फिल्म निर्माताओं का नया मक्का-मदीना

वह किशोरी आश्चर्य से 'बच्चन, बच्चन' कह उठती है. उसने एक आधुनिक तिरछी काली टोपी पहनी हुई है. मादक लहजे में फ्रांसीसी लोच के साथ अपने नाम का उच्चारण सुनकर अमिताभ बच्चन उस आकर्षक किशोरी की ओर मुखातिब होते हैं, नीचे झुकते हैं और उसकी टोपी लेकर अपने सिर पर रख लेते हैं. मॉरीशस की राजधानी पोर्ट लुई के मुख्य बस अड्डे पर अमिताभ दर्शकों की बढ़ती भीड़ का आनंद उठा रहे हैं.

यह स्वर्गिक द्वीप तीन हफ्तों तक जैसे भारतमय हो गया था. अमिताभ बच्चन को लेकर बन रही फिल्म 'हम' की शूटिंग यहीं हो रही थी. मॉरीशस सरकार ने मानो अपना आकाश, समुद्र और धरती फिल्म के निर्माता रमेश शर्मा को सौंप दी थी.

'हम' की शूटिंग करते अमिताभ

एक हेलिकॉप्टर गोदी के प्रतिबंधित क्षेत्र के ऊपर चक्कर काट रहा है और उसमें से निकली रस्सी के सहारे अमिताभ (नहीं सचमुच के) झूल रहे हैं. मॉरीशस के जंबो विमान 'चटाऊ' के डैने पर शिल्पा शिरोडकर कामुक

बातचीत

'मेरा दौर भी शानदार रहा'

अमिताभ बच्चन 49 वर्ष के हो जाने के बावजूद अपनी उम्र से कम के दिखते हैं. उनके चेहरे की उदासी भी अब छंट गई है. पीलेपन की जगह उनके मुख पर लाली दौड़ने लगी है. मॉरीशस की ठंडी हवाओं और उनके भाई को आरोपमुक्त करने वाली लंदन की एक अदालत के हाल के फैसले ने मानो उन्हें जीवनदान दे दिया हो. फिल्म 'हम' के सेट पर वे चवन्नी छाप दर्शकों का मनोरंजन करते हुए थिरकते दिखते हैं. मगर अचानक ही वे किताबों और कागज-पत्रों से भरी हरे रंग की अपनी छोटी कार में घुस जाते हैं. विशेष संवाददाता ***मधु जैन*** *ने इन्हीं क्षणों में उनसे बातचीत की. कुछ अंश:*

• युवा प्रेमियों के इस फिल्मी दौर में क्या आपको नए उभरते सितारों से खतरा महसूस होता है?

पुराने की जगह नया खून लेगा ही. कुदरत का यही कानून है. मैंने कभी खुद को नंबर एक नहीं माना है. हर किसी की अपनी श्रेणी होती है. पर अब मेरी श्रेणी पहले जैसी नहीं रही. ऐसा होता ही रहता है. मेरा दौर भी शानदार रहा है. कभी-न-कभी तो आपको जगह खाली करनी ही पड़ती है.

• जाहिर है आपको वापस लाने वाली 'शहंशाह' उतनी फ्लॉप नहीं थी जितनी उसे बताया गया.

मैं इसके माध्यम से वापस नहीं आया. पर हां, लोकसभा से इस्तीफा देने के बाद यह मेरी पहली फिल्म थी. अकेले मुंबई में ही इसने 1.3 करोड़ रु. का कारोबार किया पर फिर भी इसे फ्लॉप करार दिया गया. इसे राजनैतिक नजरिए से देखा गया. बाद की फिल्में पिट गईं. कुछ गलतियां हुई हैं. मुझे बार-बार वही बातें दोहराने को कहा गया. और फिर यह भी सही है कि मेरे चेहरे में फर्क आया है.

• आपका फिल्म कैरियर जैसे चल रहा है उसके बारे में आप क्या कहेंगे?

अरसे से मैंने कोई फिल्म साइन नहीं की है. मैं यह सब निबटा लूं तो खुद के बारे में और मैं क्या करना चाहता हूं यह सोचूंगा. पिछले 10 साल से जो कुछ करता आ रहा हूं वही सब काम तो मैं जारी नहीं रख सकता.

• फ्लॉप एक्टर, उम्रदराज हो [illegible] चुका हुआ एक्टर कहे जाने पर [illegible] कैसा लगता है?

दरअसल, यह सही है. मेरी [illegible] अच्छा कारोबार नहीं कर रहीं. उस [illegible] असर मुझ पर दिख रहा है. मैं [illegible] सामान्य बात मानता हूं. यह जिंदगी [illegible] हिस्सा है और कभी ऐसा होना ही [illegible]

• पर आप बुढ़ापा महसूस करते [illegible]

शारीरिक तौर पर तो मैं [illegible] दुर्घटनाओं और बीमारी के बाद [illegible] फीसदी कमजोरी महसूस करता हूं [illegible] मानसिक तौर पर मैं चुस्त हूं.

• जाहिर है सरकार से आपकी [illegible] अभी खत्म नहीं हुई. लंदन के अदा [illegible] फैसले के बाद आपका अगला कदम [illegible] होगा?

यह तो शुरुआत है. हम जांच [illegible] खिलाफ आपराधिक साजिश करने [illegible] मामले स्विट्जरलैंड या लंदन की अदा [illegible] में चलाने वाले हैं. हम लोगों को मद्द [illegible] साथ आने के लिए लिख रहे हैं. मैं [illegible] कुछ निबटा देना चाहता हूं. हम [illegible] लांछन लगाए गए और बातें घोल [illegible] कोशिश की गई..... असल में तो [illegible] फैसले को भी बेमानी बताने की [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

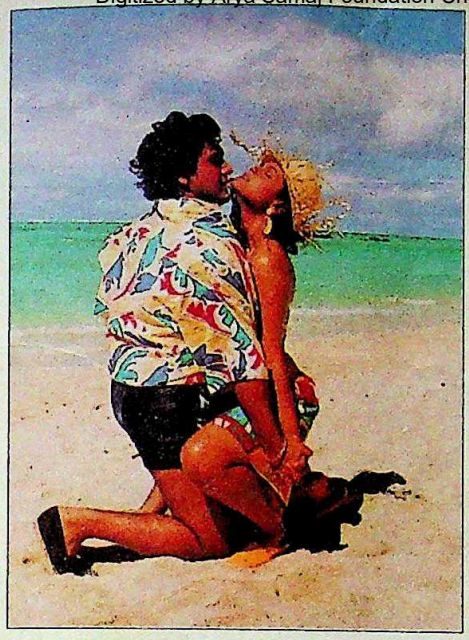

गोविंदा और शिल्पा: मादक जोड़ी

...ही है (हवा में उड़ते हुए नहीं ...हाई अड्डे पर) और गोविंदा ...को उन्हें निशा-निमंत्रण दे रहे हैं. ...भी उन्हें सौंप दिया गया. ...और शिल्पा मशीनी नौकाओं ...विहार करते रहे. दीपा साही ...से किसी घायल सुंदरी की ...करती हैं और समुद्री गोदी पर ...ती है. इस गोदी का बड़ा हिस्सा ...दियों में तब्दील कर दिया गया ...गोली भी गोलियों और ...शाट की आवाज से गूंज उठी. ...फिल्म का क्लाइमेक्स है. इसमें ...र, रजनीकांत और गोविंदा इन ...रुषों के रूप में अच्छाई अंततः ...खेर, अनू कपूर और डैनी जैसी ...पर विजय पा लेती है. निर्देशक ...आजाद की शिकायत है कि वे ...में कभी असली बंदूकों का प्रयोग ...कर सकते. वे कहते हैं, "हमारी ...वह क्यों नहीं समझ पाती कि ...के इस युग में सामरिक गोपनीयता ...रह नहीं रह जाती."

...रीशस की धरती तो इन मुंबइया ...लों के लिए खुली ही है. समुद्री गोदी के पिछवाड़े मॉरीशस सरकार ने फिल्म यूनिट के लिए कमरों की विशेष रंगाई-पुताई कर रखी है. उनमें हंसी-ठट्ठा चल रहा है. यहां पूरा माहौल 'जुम्मा चुम्मा' वाला हो रहा है. डैनी मॉरीशस की राजनीति की विस्तृत व्याख्या करते हैं. अनुपम खेर कुछ मौजमस्ती के मूड में हैं. समुद्र या समुद्र तट उन्हें नहीं लुभाते, "मुझे बताया गया है कि मेरी मौत पानी में ही होगी." शिल्पा कुछ खोई-खोई-सी हैं. इसके अलावा शिरोडकर और काटकर दोनों मांएं पूरी यूनिट का खयाल रख रही हैं. दीपा मोटरसाइकिल की सवारी करती हैं. रजनीकांत पर नींद ही भारी है. गोविंदा नई पायी बहनों से राखियां बंधवा रहे हैं और यूनिट का एक शख्स फुसफुसाता है कि 'जुम्मा' समेत तीनों गीत अमिताभ के दिमाग से उपजे हैं या उन्हीं के तय किए हैं.

यह सब और वह भी स्वर्गिक परिदृश्य में! भारतीय फिल्म उद्योग के लिए मॉरीशस नया मक्का-मदीना हो गया है. अब जबकि कश्मीर जाकर शूटिंग कर पाना दुःस्वप्न हो गया है, भारत के फिल्म निर्माताओं को प्यार-मुहब्बत फिल्माने के लिए उचित स्थान की तलाश है. इसलिए मॉरीशस सरकार की स्वागत की मुद्रा को देखते हुए विमानों की बंबई-मॉरीशस उड़ानें भारतीय फिल्म निर्माताओं से भरी होंगी.

—मधु जैन

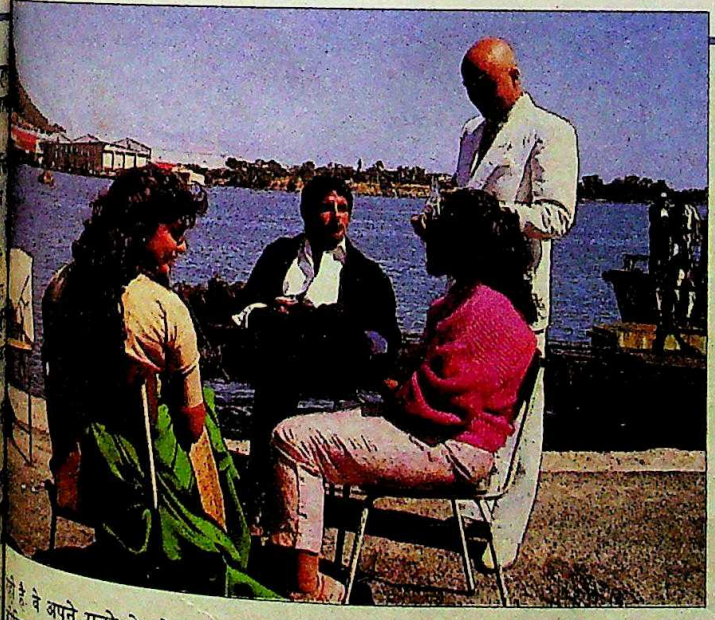

अमिताभ: बीत चला वक्त

...ते अमिताभ

...रे अमिताभ (...ल रहे हैं. ...न 'चटाऊ बन्...डकर कामुक ...

...ह्रदराज हो ...जाने पर ...

...है. मेरी ...कर रहीं. ...रहा है. मैं ...हूं. यह जिंद...सा होना ही ...महसूस करते ...र तो मैं ...ारी के बाद ...स करता हूं. ...स्त हूं.

...र से आपकी ...लंदन के ...अगला कदम ...

हम जांच ...जिश करने ...लंदन की ...लोगों को ...ख रहे हैं ...हता हूं. ...र बातें ...ल में तो ...बताने की ...

...ी है. वे अपने मत्थे से दोष झटकने ...कर रहे हैं.

क्या हम फिल्मों से आपके प्रस्तावित ...की बात कर सकते हैं?

...यह संन्यास लेने जैसा नहीं है ...है). मैं अपने को चुस्त करने के ...मोहलत और फिर, मेरे लिए ...ही उसे चुनना चाहता हूं.

इस पड़ाव के बाद आप कैसी ...करना चाहेंगे?

'अग्निपथ' मेरी पसंद की भूमिकाओं का संकेत थी. उसमें रोमांस नहीं था.

● फिल्मों के निर्देशन या दूसरी तरह की फिल्मों में काम करने के बारे में आपका क्या कहना है?

मैं निर्देशन नहीं करना चाहता और न ही मैं व्यावसायिक फिल्मों से बहुत दूर जाऊंगा.

● आप नाराज लगते हैं...

अभिनय के पेशे को ही अपमानित किया गया है. आप जरा उनकी बातों पर गौर कीजिए—'नाचने-गाने वाले को वोट दे दिया.' मुझे लोगों की बात सुनकर क्षोभ होता है. मैंने जीवन में ऐसा बहुत किया है जिससे राष्ट्रीय एकता और धर्मनिरपेक्षता पर बल दिया जा सकता है.

● राष्ट्रीय एकता के लिए फिल्म उद्योग ने क्या किया है?

आप सिनेमा देखने जाते हैं. वहां आप बगल में बैठे व्यक्ति के क्षेत्र, भाषा, जाति या धर्म की परवाह नहीं करते. भारतीय सिनेमा इतना ताकतवर माध्यम है और इसके महत्व को समझा जाना चाहिए.

● परदे पर हिंसा भी बहुत है.

हम पर फिल्मों में अत्यधिक हिंसा दिखाने का दोष मढ़ा जाता है. लेकिन कितने जातीय दंगों के पीछे फिल्मों का प्रभाव होता है?

● क्या अकेले और गुस्सैल जवान की आपकी छवि में कोई वास्तविकता है?

यह पत्रकारों की कल्पनामात्र है.

● क्या सचमुच आप हम पत्रकारों को नहीं चाहते?

मैं पत्रकारों को पसंद करता हूं. अगले जन्म में मैं पत्रकार बनना चाहूंगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमोद पुष्करणा

'खुला मंच' में जॉर्ज और थापर

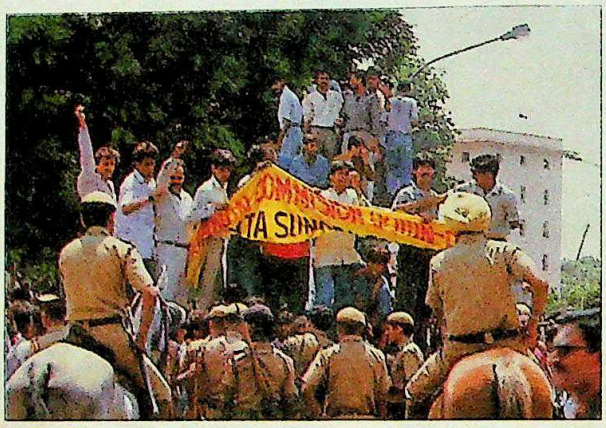

आरक्षण विरोधी आंदोलनः भयजनित चुप्पी

'मंजिल' में राजदान, बलसावर और नीना गुप्ता

रमेश शर्माः शानदार वापसी

◆ पिछले महीने 'खुला मंच' क्या शुरू हुआ, तूफान मच गया. सूचना और प्रसारण-मंत्री पी. उपेंद्र भी चपेट में आ गए. उन्हें विपक्ष का ही निशाना नहीं बनना पड़ा, अपने सहयोगी जॉर्ज फर्नांडीस का भी कोपभाजन बनना पड़ा. सो, शास्त्री भवन को सूझ नहीं रहा है कि इस आफती कार्यक्रम का किया क्या जाए. वैसे, सरकार तीन विकल्पों पर विचार कर रही है— हिंदुस्तान टीवी और करण थापर को एक और मौका दिया जाए; एचटीवी से थापर को हटाने के लिए कहा जाए; या इस कार्यक्रम को ही बंद कर दिया जाए. वैसे, इस कार्यक्रम के लिए कुछ स्वतंत्र निर्देशकों को भी संदेश भेजे गए हैं.

'खुला मंच' शुरू करने के पीछे उपेंद्र की मंशा शायद यही रही कि इससे संसद में प्रसार भारती विधेयक को और आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी. दूरदर्शन और एचटीवी ने इस काम को अंजाम दिया. प्रश्नकर्ताओं का चयन और कार्यक्रम संपादन एचटीवी ने किया. अब सवाल यह है कि आखिर यह कार्यक्रम है किसका, जिसके मत्थे दोष लगाया जाए.

◆ सिर्फ 'खुला मंच' ही नहीं, दूरदर्शन भी बंद मंच बन गया है. आरक्षण विरोधी छात्रों ने जब 24 अगस्त को राजधानी दिल्ली का जनजीवन ठप कर दिया और वे संसद मार्ग पर दूरदर्शन केंद्र के ठीक सामने अपना उग्र विरोध जता रहे थे तब दूरदर्शनवालों ने भीतर ही रहना मुनासिब समझा. उन्हें यह भय खाए था कि कहीं उनके कैमरे न तोड़ दिए जाएं. बाद में किसी अधिकारी ने दूरदर्शन केंद्र के ठीक सामने पीटीआई- टीवी को उस गहमागहमी भरे दिन की फिल्म बनाने के लिए फोन किया. जाहिर है, उस अधिकारी ने सोचा होगा कि आरक्षण विरोधी आंदोलन की तरफ से आंखें मूंदे रहना दूरदर्शन की अव्वल दर्जे की मूर्खता ही कही जाएगी. दरअसल, दूरदर्शन पर अभी तक इस आंदोलन को कोई तरजीह ही नहीं दी गई है.

◆ दूरदर्शन देहातीपन का अपना चोगा उतार फेंकने की कोशिश में है. पंजाब पर बनी कई टेली फिल्मों की बात ही छोड़िए, कई धारावाहिकों में किसानों को दिखाने के बावजूद जब दूरदर्शन की गंवई छवि नहीं बनी तो वह फिर चमक-दमक वाले धारावाहिकों की तरफ लौट आया. इसकी शुरुआत श्रीधर क्षीरसागर के उम्दा धारावाहिक 'मंजिल' से हुई है. नामी-गिरामी पात्रों की उपस्थिति इसे और भी जानदार बना देती है. इसमें नीना गुप्ता के अलावा डॉ. श्रीराम लागू, मोहन भंडारी और विवेक वासवानी भी हैं.

◆ अपनी खरी-खरी बातों से सूचना और प्रसारण मंत्रालय के आकाओं को नाराज करने वाले फिल्मकार रमेश शर्मा की वापसी एक उम्दा धारावाहिक 'पोर्ट्रेट ऑफ ए डायरेक्टर' से हुई है. यह वापसी दो साल बाद हुई है. धारावाहिक में ऋत्विक घटक, श्याम बेनेगल, मृणाल सेन, राज कपूर, मनमोहन देसाई और विमल राय जैसे मशहूर फिल्म निर्माताओं के बारे में जानकारी दी जाएगी. शर्मा का मकसद प्रतिभाओं और दृश्यों की कल्पनाशीलता की कद्र करते हुए फिल्म निर्माण के रहस्यों को उजागर करना है. इसमें सईद जाफरी ने बहुत कसी हुई कमेंटरी की. दुर्भाग्य से निर्माता के साथ शर्मा की अनबन हो जाने से धारावाहिक अधूरा ही रह गया और सत्यजित राय, गुरुदत्त, महबूब खां, अदूर गोपालकृष्णन और दूसरे कई निर्देशकों को छोड़ना पड़ा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परेशान नहीं

यदि 50,000 कि.मी. के बाद कार के इंजन की ओवरहॉलिंग आपके लिए कोई परेशानी नहीं

आयल, फ़्युअल और एअर फ़िल्टरों पर निर्भर करता है आपकी कार के इंजन का भविष्य. यदि फिल्टर काम करने में सक्षम नहीं हैं तो कार के वॉल्व्ज़ अपनी जगह से हिल जाएंगे, पिस्टन रिंग्स को नुकसान पहुँचेगा, सिलिण्डर की भीतरी सतह नष्ट हो जाएगी, इंजन जाम हो जाएगा... और नतीजा, रु. 7000 का रिपेयर बिल.

और यदि आपकी कार के फ़िल्टर काम देते हैं, ऐसे जैसे कि प्यूरोलेटर—तो ओवरहॉलिंग प्रति 1,50,000 के बाद. दुरुस्त, बिना रुकावट चलता इंजन, और रख-रखाव पर कम से कम खर्च.

इसलिए प्यूरोलेटर पर ही ज़ोर दीजिए. आपका मैकेनिक भी आपको यही सलाह देगा.

Purolator

दुनिया में सबसे ज़्यादा बिकने वाले फ़िल्टर

A member of the ANAND group of companies.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार

पुरस्कारों की रेवड़ियां

राजभाषा विभाग के विवादास्पद निदेशक अंततः हटा दिए गए

इन दिनों बिहार के साहित्यिक हल्कों में तूफान-सा खड़ा हो गया है. तूफान किसी कारनामे को लेकर नहीं है बल्कि इसलिए है कि 1.51 लाख रु. का राजेंद्र शिखर सम्मान किसे मिले—बाबा नागार्जुन को या किसी और को. पुरस्कार या सम्मान मिलने से पहले ही इस तरह के चर्चे या फिर किसी के पक्ष या विपक्ष में विवाद खड़ा होना अपने आप में पहली घटना है.

विवाद भी एक अजीब ढंग से शुरू हुआ. कुछ सप्ताह पहले जनता दल के एक युवा नेता ने एक बयान जारी कर इस बात की सिफारिश की कि बाबा नागार्जुन को इस साल के राजेंद्र शिखर सम्मान से सम्मानित किया जाए. बयान को एक हिंदी दैनिक ने काफी महत्व से छापा और फिर इसके बाद साहित्यिक जगत में भूचाल मच गया. कुछ लोगों ने जनता दल सरकार को यह याद दिलाने की कोशिश की कि बाबा ने बाद में संपूर्ण क्रांति को 'संपूर्ण भ्रांति' की संज्ञा दी, जेपी को फासिस्ट और जन-आंदोलन से जुड़े लोगों को 'भड़ुओं की जमात' कहा था.

आज से चार साल पहले डॉ. राजेंद्र प्रसाद शताब्दी वर्ष में यह पुरस्कार एक लाख रु. की राशि, बोधि वृक्ष के प्रतीक चिह्न और एक ताम्रपत्र के साथ शुरू हुआ. पहला पुरस्कार दिवंगत अमृतलाल नागर को और दूसरा पुरस्कार जानकी वल्लभ शास्त्री को दिया गया. इसके बाद राजभाषा विभाग दूर की कौड़ी लाया और उसने सोचा कि इस सम्मान को देश का सबसे बड़ा सम्मान बनाया जाए. और फिर ज्ञानपीठ पुरस्कार को नीचा दिखाने के उद्देश्य से पुरस्कार की राशि बढ़ाकर एक लाख इक्यावन हजार कर दी गई और तीसरा पुरस्कार धर्मवीर भारती को दे दिया गया. साहित्य में रुचि रखने वाले हिंदी के युवा पत्रकार कुमार दिनेश कहते हैं, "अगर किसी कवि या लेखक को राजेंद्र शिखर सम्मान और ज्ञानपीठ पुरस्कार में से कोई एक चुनने को कहा जाए तो वह निश्चय ही ज्ञानपीठ पुरस्कार लेना पसंद करेगा क्योंकि साहित्यिक जगत में राजेंद्र शिखर सम्मान का न तो कोई वजन है और न ही प्रामाणिकता या सम्मान."

कृष्ण मुरारी किशन

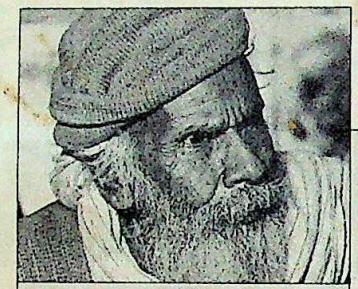

नागार्जुन के नाम पर उठे विवाद से राजभाषा विभाग का कच्चा चिट्ठा खुला

हिंदी के प्रसिद्ध आलोचक केदारनाथ कलाधर और कवि काशीनाथ पांडेय मानते हैं कि जनता दल के किसी नेता द्वारा नागार्जुन को पुरस्कार दिलाने की सिफारिश करना राजभाषा विभाग पर दबाव डालने की कोशिश है.

वैसे भी राजभाषा विभाग और उसके पूर्व निदेशक भगवती शरण मिश्र पुरस्कारों के वितरण के मामले में काफी बदनाम रहे हैं. और नागार्जुन विवाद ने तो राजभाषा विभाग और उसकी ओर से दिए जाने वाले पुरस्कारों को बेनकाब कर दिया. कहा गया कि निदेशक ने केवल सत्ताधारी राजनीतिकों को खुश करने के लिए या अपने चाटुकारों को या फिर उन लोगों को जिन्होंने अपनी पत्रिकाओं में मिश्र को छापा उन्हें ही पुरस्कार दिया गया. मगर मिश्र ने 'इंडिया टुडे' को एक भेंट में बताया, "मात्र ईर्ष्या और द्वेष की वजह से ये सारी बातें उछाली जाती हैं."

इस दौरान मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव और राजभाषा मंत्री वृषिण पटेल का ध्यान उनकी ओर गया. पटेल ने 'इंडिया टुडे' को बताया, "हमने इस विभाग में सफाई अभियान शुरू कर दिया है. पुरस्कारों में होने वाली धांधलियों को देखा जा रहा है और जल्द ही निदेशक को हटा दिया जाएगा." और मिश्र को हटा भी दिया गया. उन्हें रांची स्थित ग्रामीण विकास संगठन का संयुक्त संचालक बना दिया गया है.

इस विभाग से हर साल हर तरह के कुल 6 लाख रु. के पुरस्कार दिए जाते हैं मगर बिहार में हिंदी की क्या हालत है यह सबको मालूम है.

मिश्र (माइक पर) : विवादास्पद

विभाग के सूत्रों ने बताया कि कभी मुख्यमंत्री को खुश करने के लिए उनके आप्त सचिव और प्रधान सचिव को पुरस्कार दिया जाता है तो कभी एक ही लेखक या हिंदी क्षेत्र में काम करने वाले को तीन-तीन बार पुरस्कृत किया जाता है. कभी एक लेखक और कभी उनके दोस्त या पत्नी को पुरस्कार मिलता है. मगर इस क्रम में कुछ नाम सामने आए हैं जैसे कादम्बिनी के संपादक राजेंद्र अवस्थी जिन्हें कई बार पुरस्कार मिल चुके हैं. कादम्बिनी में मिश्र की रचनाएं छपती रहती हैं. फिर सारिका के संपादक अवध नारायण मुद्गल और उनकी पत्नी विभा मुद्गल को भी पुरस्कृत किया जा चुका है.

मिश्र कहते हैं कि ये सारे आरोप उन्हें बदनाम करने के लिए हैं. लेकिन इतना तय है कि राजभाषा विभाग के भारी-भरकम पुरस्कारों का वजन खत्म हो चुका है.

—फरजंद अहमद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

What did Sigmund Freud say to the Skypak Man?

"You move so fast... aren't you afraid of the Freudian slip?"

We'll deliver. Wherever on earth. SKYPAK The worldwide couriers.

Skypak House, Off M. Vassanji Road, Marol, Andheri (E), Bombay 400 059.

Avenues:SC:582:90R

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Dreams for sale...

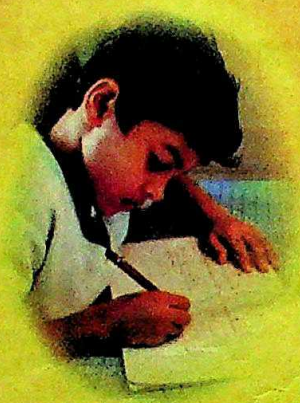

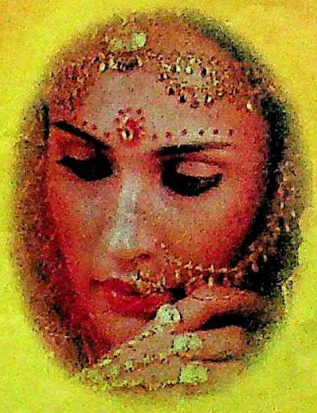

OFFER OPEN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CANSTAR

Earn 50% or more return per annum for a lifetime on initial investment after 10 years

Canbank Mutual Fund has, since its inception, built up an excellent track record. The best of professional skills, financial acumen and intimate knowledge of the corporate world combine to bring to you high return, yet safe investment opportunities. Scheme after scheme, launched by us, has succeeded in turning market opportunities into lucrative returns. Look at the total payout of **CANSHARE** alone – **over 100%** in less than 30 months excluding market appreciation (Market price Rs. 22.50 as on 31st July, 1990).

HIGHLIGHTS

- A well established Mutual Fund with the largest investor base
- Professionally managed with proven track record of success
- Tax benefit under Section 80L of the Income-tax Act, 1961 upto Rs. 10,000/- or Capital Gains* benefit under Income-tax Act
- Easy encashability – to be listed on Bombay and other Stock Exchanges after one year
- Buy back any time after three years
- Easy Transferability

*Separate application forms available

Minimum Repurchase price for 1000 Canstars:

A. On completion of:

3 Years	–	Rs. 15,150
4 Years	–	Rs. 17,400
5 Years	–	Rs. 20,000
6 Years	–	Rs. 23,000
7 Years	–	Rs. 26,500
8 Years	–	Rs. 30,500
9 Years	–	Rs. 35,000
10 Years	–	Rs. 40,000

B. Option on completion of 10 years
Receive monthly income @ 12.50% p.a. calculated on accumulated amount
and
Receive an annual bonus/appreciation from the 11th year onwards

CANBANK MUTUAL FUND

Orient House, Adi Marzban Path (Mangalore Street), Bombay 400 038

Principal Trustee : CANARA BANK

Always a step ahead

Concept

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

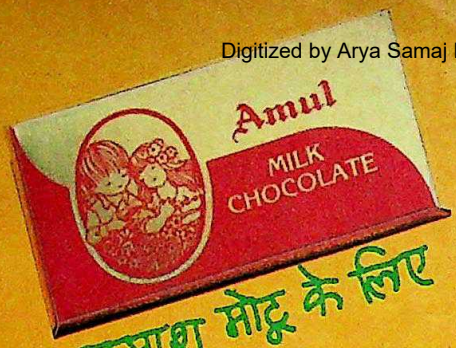

बदमाश मोटू के लिए

शेती पिंकी के लिए

शैतान छोटू के लिए

प्यारी प्रीति के लिए

चम्चे चिंटू के लिए

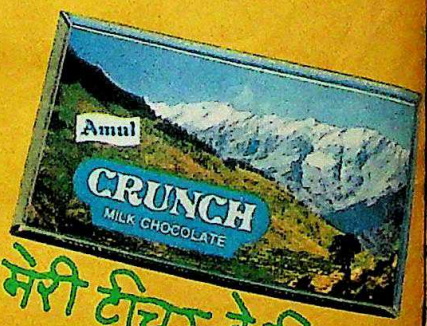

मेरी टीचर के लिए

यह सारे सपने मेरे लिए

वितरक–
गुजरात को-ऑपरेटिव
मिल्क मार्केटिंग
फ़ेडरेशन लिमिटेड,
आणंद ३८८ ००१.

अमूल चॉकलेट प्यार की मीठी भेंट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश छुट्टी पर है

जो भारत से जरा भी परिचित है, उसे पता है. हिंदुस्तान के दर्शन और जीवन में छुट्टी का अहम स्थान है. आत्मा का पंछी कर्म के पिंजड़े में फड़फड़ाता है. जैसे ही मौका छुट्टी कर जाता है. रूहानी स्तर धरातल पर नजर डालें. की तलाश हमारा प्रिय राष्ट्रीय है. खुशहाली की यही तो पहचान काम करे तो आराम से करें. क्या है! क्रिकेट भी टीवी पर नहीं हार का मातम, जीत की खुशी, ड्रा हुआ, कुछ भी नहीं मना. रेखाचित्र: जयंती

में छुट्टी नहीं हुई. इस दीदी के माहौल में जी ने लाल किले के नाम प्रधानमंत्री के की तारीफ की—

भाषण का था! अंदर कविता, कविता."

क्या खास हो देता तकरीर की रोटी है, अकर्ता तदबीर की भविष्यनेता तकदीर की."

पहले प्रधानमंत्री हैं मूक 'मेजॉरिटी' के को आवाज दी."

कैसे?" हमने बताया.

अकबर मुहम्मद के नाम देश की छुट्टी कर दी."

वह तो अल्पसंख्यकों के धर्म, के संस्थापक हैं."

छुट्टी तो बहुसंख्यकों की है."

किसानों के लिए भी तो कुछ करते," शिकायत की.

कृषि दशक का ऐलान किया, नीति का वादा."

शुभ शुरुआत उत्सव से होती है. मे-डे' का हॉलिडे मनाते हैं. को दशक-डे का अवकाश क्यों

गांववालों को छुट्टी भाई तो की रोटी छिन जाएगी," ने चेतावनी दी.

में पड़ गए. हमारे रूरल है. सुर को किसान बताते हैं. आयातित कार से आते-जाते हैं. हर शाम होटल की बार को बसाते हैं. हमने उनसे जानकारी चाही—

"सुना है, किसानों को छुट्टी से परहेज है."

"हम खेती मैनेज करने वालों का हर दिन इतवार है. खेत पर खटने वालों को सिर्फ काम का अधिकार है."

"किसान भी दो तरह के होते हैं?"

"ट्रैक्टर और कार वाले वाकई किसान हैं. बाकी हमारे मजदूर-गुलाम हैं."

"आपका मुल्क पर बड़ा एहसान है," हमने उनका योगदान सराहा.

"फिर भी हम गरीबों से सरकार ने नाइंसाफी की है."

"आयातित कार, होटल का बार, वह भी बार-बार. अपने जैसा निर्धन हमें भी बना दीजिए," हमने चिरौरी की.

"हमारे नेता की टोपी उछालना अन्याय नहीं है. पिछड़ों को आरक्षण देकर हमें मंडल से छोड़कर छेड़ रहे हैं. यह सही है क्या?"

ऐसे मंडल कमीशन की सरकारी स्वीकृति का छात्रों ने भी उत्साह से खैर-मकदम किया है. यूपी-बिहार को तो त्यौहार का बहाना चाहिए. लड़के उल्लास का उत्सव मना रहे हैं. बसें बंद हैं, ट्रेनें बदहाल. खाड़ी की लड़ाई से पेट्रोल का यही हाल रहा तो वह दिन दूर नहीं जब हवाई सेवाओं की भी छुट्टी हो जाए. पेट्रोल का मलाल छुट्टी का माहौल बिगाड़ रहा है. हमने नेता मित्र से चर्चा की. उन्होंने सवाल किया—

"आप बे-कार हैं. आपको क्या फर्क पड़ता है."

"सरकारी वाहन से साहबों की साग-सब्जी नहीं आती तो मुल्क का मूड खराब रहता है."

"पेट्रोल की कमी के बड़े फायदे हैं."

"हमें तो एक भी नजर नहीं आता."

"कीमत बढ़ेगी, आबादी घटेगी."

"यह आपकी खाम-खयाली है," हम आगे कुछ कह पाते कि उन्होंने बहस छोड़कर विषय बदला—

"अच्छा यह बताइए कि पंद्रह अगस्त को प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में हर मुद्दे का जिक्र किया, पर्यावरण का क्यों नहीं?"

"हम ज्योतिषी नहीं. क्या जानें."

"उन्हें यकीन था कि आरक्षण की घोषणा से पर्यावरण खुद सुधरेगा."

"मंडल कमीशन का प्रदूषण से क्या वास्ता."

"यही तो! बसें जलेंगी, कारें ठहरेंगी. न धुआं रहेगा, न पोल्यूशन."

"कार, न विमान. आप जनसंपर्क कैसे करेंगे?"

"हम बैलगाड़ी से चलेंगे. पदयात्रा करेंगे. शहर और गांव का अंतर मिटाएंगे."

"आप अभी से शरीर को कष्ट देंगे. अभी चुनाव तो दूर हैं."

"चंद्रमा और चुनाव का क्या भरोसा. कब घट-बढ़ जाए."

"कहीं जनता आपको धता न बता दे." हमने शंका व्यक्त की.

"बाकी को तो ठिकाने लगा दिया. बस हिंदुओं के लिए कुछ करना है."

"हिंदुओं के लिए क्या इरादा है?"

"उनके लाखों देवी-देवता हैं. अनुपात में छुट्टियां कम हैं. संतोषी माता की शान में हर शुक्रवार को छुट्टी कैसी रहेगी."

हम खुश हुए. क्या उम्दा प्लान है. देश छुट्टी पर है. तस्कर, काला बाजारिए, कीमतें और आतंकवादी तरक्की पर हैं. फिलहाल आम आदमी को संतोष की सख्त जरूरत है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राइवेट नर्सिंग होम

इलाज की नई संस्कृति

नाकाफी सरकारी चिकित्सा सेवा का खर्चीला विकल्प

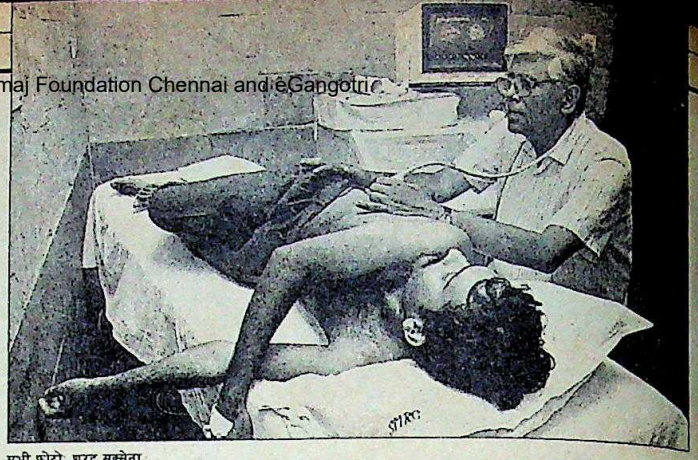

सभी फोटो: शरद सक्सेना

(ऊपर बाएं से) रोगनिदान; होलबॉडी स्कैनिंग; पोर्टेबल मशीन से एक्स-रे; और (नीचे) एक नर्सिंग होमः बदलती चिकित्सा संस्कृति

पिछले एक दशक के दौरान दिल्ली के कोने-कोने में उभरती हुई नई मध्यमवर्गीय बस्तियों में प्राइवेट चिकित्सा संस्थानों की एक बाढ़-सी आ गई है. इन बस्तियों की शायद ही कोई सड़क ऐसी होगी जिसके किनारे किसी नर्सिंग होम या डायग्नोस्टिक सेंटर के लंबे-चौड़े और आकर्षक बोर्ड टंगे न मिलें.

उत्तर-पश्चिमी दिल्ली में अगर सुंदरलाल और इंदिरादीप, बालाजी और गौतम नर्सिंग होम जैसे दर्जनों संस्थान इस नई चिकित्सा संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं तो यमुनापार इलाके में यमुना पुल को विवेक विहार से जोड़ने वाली सड़क के दाएं-बाएं स्थित वालिया नर्सिंग होम, ओम मेडिकल सेंटर, शर्मा नर्सिंग होम और दीपक मेमोरियल अस्पताल जैसे एक दर्जन से ऊपर संस्थान उनकी नई भूमिका का परिचय देते हैं. एक अनुमान के मुताबिक दिल्ली में ऐसे प्राइवेट नर्सिंग होम और अस्पतालों की संख्या 500 से ऊपर है.

और बदलाव की यह लहर न तो दिल्ली में विकसित हो रही नई बस्तियों तक सीमित है और न दिल्ली, बंबई, मद्रास और ऐसे ही दूसरे खाते-पीते शहरों तक. समृद्धि और उपभोक्तावाद के फैलते दायरे में आने वाला शायद ही कोई शहर या कस्बा ऐसा होगा जहां प्राइवेट क्लीनिक और नर्सिंग होम की इस नई चिकित्सा संस्कृति का प्रभाव क्षेत्र न बढ़ रहा हो. इसका प्रमुख कारण तो सरकारी अस्पतालों की भीड़, गंदगी और सुविधाओं की कमी जैसी समस्याएं हैं जो मध्यमवर्गीय मरीजों को प्राइवेट चिकित्सा संस्थानों की ओर आकर्षित करती हैं.

मध्यमवर्गीय शहरी समाज की बदलती वरीयताओं का एक आदर्श उदाहरण पश्चिमी दिल्ली के मोती नगर में कपड़े की दुकान चलाने वाले प्रमोद गोयल (40) का किस्सा है. एक महीना पूर्व उन्हें दिल का दौरा पड़ने पर एक प्रमुख सरकारी अस्पताल में पहुंचाया गया. अस्पताल के डॉक्टरों ने तुरंत दवा देकर उन्हें बचा तो लिया लेकिन इंटेसिव केयर यूनिट में भीड़ की वजह से उन्हें जनरल वार्ड में ही एक अस्थायी पलंग पर गंदगी और शोर-शराबे वाले माहौल में रहना पड़ा. आखिर परिवारवालों से यह सहन नहीं हुआ और उन्हें उसी दिन एक प्राइवेट अस्पताल में ले जाया गया. वे बताते हैं, "पांच दिन में ही तकरीबन दस हजार रुपया खर्च हो गया. लेकिन जान बच गई."

प्राइवेट नर्सिंग होम और अस्पतालों की बढ़ती लोकप्रियता का एक और बड़ा कारण यह भी है कि यहां मरीज के लिए आवश्यक सुविधाएं जरूरत के समय आसानी से उपलब्ध रहती हैं. उदाहरण के लिए किसी गंभीर मामले में दिमाग या किसी अन्य अंग की कैट-स्कैनिंग कराने के लिए किसी आम मरीज को मेडिकल इंस्टीट्यूट में अपनी बारी के लिए कम-से-कम तीन महीने तक इंतजार करना पड़ता है जबकि कुछ प्राइवेट संस्थानों में मात्र 1200 से 1800 रु. की फीस देकर एक-दो दिन बाद ही यह स्कैनिंग कराई जा सकती है. उत्तरी दिल्ली के मॉडल टाउन की चांद रानी (55) को बिना पेट खुलवाए लिथोट्रिप्स्टर की मदद से अपने गुर्दे की पथरी निकलवाने के लिए दक्षिणी दिल्ली के आर.जी. स्टोन क्लीनिक में अपनी बारी के लिए सिर्फ एक दिन का इंतजार करना पड़ा.

प्राइवेट चिकित्सा संस्थानों को महंगे और आधुनिक उपकरण उपलब्ध कराने में बैंकों और दूसरे वित्त संस्थानों से मिलने वाले ऋण ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. उदाहरण के लिए सिटी बैंक समेत कई बैंक डॉक्टरों और चिकित्सा संस्थानों के लिए अपनी विशेष योजनाओं के तहत 50 हजार रु. से 15 लाख रु. तक के ऋण उपलब्ध कराते हैं.

उदाहरण के लिए बनवारी लाल चैरिटेबल ट्रस्ट की पंचकुइयां रोड स्थित लेबोरेट्री के होलबॉडी कैट-स्कैनर के लिए स्टेट बैंक ने पिछले साल लगभग 80 लाख रु. उपलब्ध कराए. यह संस्थान दूसरे संस्थानों के 1500 रु. के मुकाबले केवल 550 रु. में कैट-स्कैन की सुविधा उपलब्ध है. ट्रस्ट के अध्यक्ष अर्जुन देव "अगर बैंक अपनी दरों को 15 नीचे ले आएं तो हम इन दरों को नीचे ला सकते हैं."

प्राइवेट इलाज को मिलने सामाजिक स्वीकृति का एक कारण घर के निकट ही उसका होना है. उत्तरी दिल्ली के शालीन झांब नर्सिंग होम की सफलता का कारण यही है. स्त्रीरोग विशेषज्ञ झांब और बालरोग विशेषज्ञ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

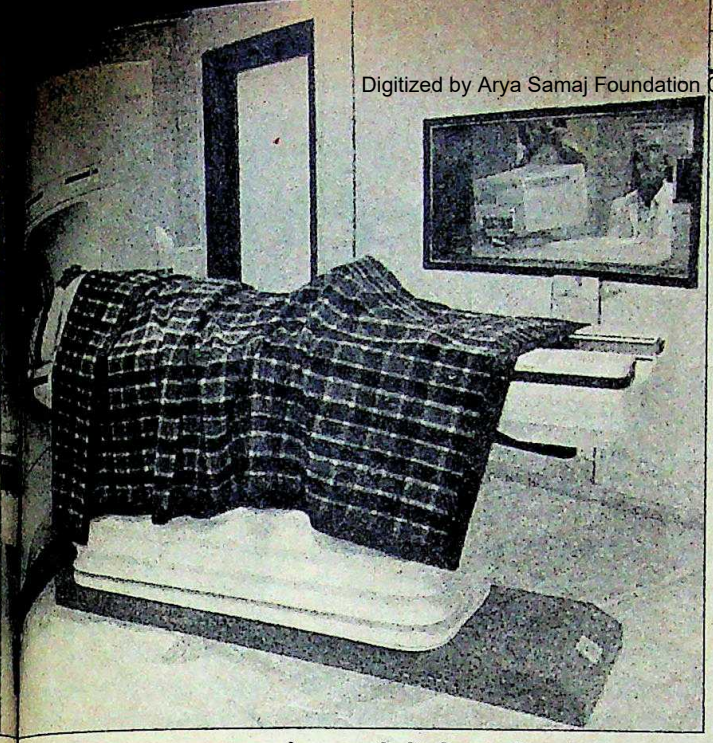

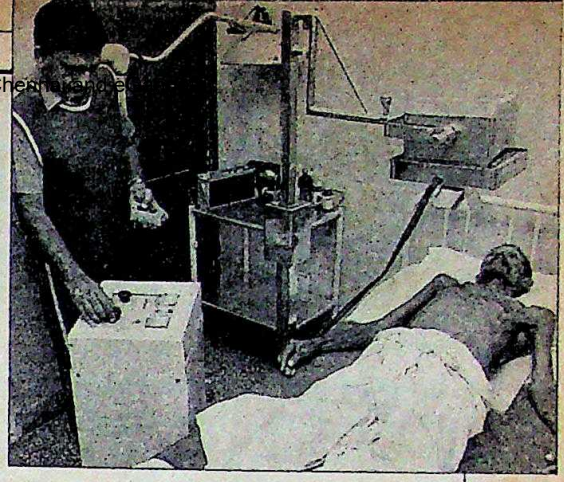

समृद्धि और उपभोक्तावाद के फैलते दायरे में आने वाला शायद ही कोई शहर या कस्बा ऐसा होगा जहां प्राइवेट क्लीनिक और नर्सिंग होम की नई चिकित्सा संस्कृति का असर क्षेत्र न बढ़ रहा हो

टेस्ट कराने के लिए मरीज को मजबूर कर दिया जाता है. कई मामलों में तो किसी विशेष लेबोरेट्री से ही जांच करवाने पर रोगी को बाध्य किया जाता है.

इनमें से कुछ अस्पतालों में गंभीर ऑपरेशन के समय हजारों रुपए की ऐसी दवाओं और उपकरणों की सूची मरीज के घरवालों को दे दी जाती है जो दिल्ली की सिर्फ दो-तीन दुकानों पर ही मिल सकती हैं. बाद में इनमें से कई चीजें इन दुकानों में वापस बिकने के लिए पहुंच जाती हैं.

हालांकि पिछले कुछ वर्षों से शहरों और कस्बों में प्राइवेट नर्सिंग होम और अस्पतालों की संख्या में निरंतर बढ़ोतरी हुई है लेकिन यह बढ़ोतरी उन संभावनाओं के मुकाबले बहुत कम है जो सरकारी सुविधाओं और वास्तविक जरूरतों के अंतर के रूप में मौजूद है. इसका सबसे बड़ा कारण है मध्यम वर्ग की खर्च करने की क्षमता के मुकाबले इन संस्थानों में आने वाला भारी खर्च.

दिल्ली नर्सिंग होम ऐंड हॉस्पिटल एसोसिएशन के अध्यक्ष और संजीवन अस्पताल के निदेशक डॉ. प्रेम अग्रवाल कहते हैं, "दिल्ली जैसे शहर में रहने वाले किसी आम मध्यमवर्गीय परिवार को ऐसा अस्पताल माफिक होगा जिसमें 50 से 100 रु. प्रतिदिन का बिस्तर हो और इतने ही पैसे डॉक्टरों की फीस के लगें. लेकिन मौजूदा हालात में ऐसा संभव नहीं है."

वास्तविक स्थिति यह है कि दिल्ली के अधिकांश प्राइवेट अस्पताल अपने हर कमरे के लिए 200-400 रु. हर रोज वसूल करते हैं. इसके बाद 200 रु. डाक्टर की दैनिक फीस और 200 से 500 रु. तक दवाओं आदि का खर्च इन अस्पतालों को मध्यम वर्ग की पहुंच से दूर कर देने के लिए काफी है.

इन ऊंचे दामों को वाजिब ठहराने के समर्थन में इन अस्पतालों की अपनी दलीलें हैं. हालांकि 20 से 30 कमरों वाले अस्पताल के लिए 10 लाख रु. के उपकरण और बिस्तर आदि ही काफी हैं लेकिन जमीन की आसमान छूती कीमतें इन निजी तौर पर चलने वाली चिकित्सा सेवाओं को बहुत महंगा बना देती हैं.

इस संदर्भ में दिल्ली मेडिकल एसोसिएशन और दिल्ली नर्सिंग होम्स फोरम के महासचिव डॉ. संजीव मलिक कहते हैं, "अगर दिल्ली प्रशासन प्राइवेट चिकित्सा संस्थानों को केवल व्यापारिक इलाकों में चलाने की नीति पर अड़ा रहता है तो केवल बड़े औद्योगिक घराने ही इस धंधे में बने रह सकेंगे. तब करोड़ों रु. के बजट वाले अस्पतालों में सिर्फ रईस लोग ही इलाज करा सकेंगे."

और उधर सरकार की ओर से उपलब्ध कराई जाने वाली चिकित्सा सुविधाओं का हाल यह है कि 1966 के बाद प्राथमिक चिकित्सा केंद्रों और उनके घेरे में आने वाली जनसंख्या का औसत अनुपात 1 और 80 हजार पर टिका चला आ रहा है. ऐसे में सन 2000 तक हर नागरिक को स्वस्थ रखने का नारा महज सपना ही रहने जा रहा है. स्वाभाविक ही है कि निजी क्षेत्र में चिकित्सा सेवाओं के विकास के विकल्प पर गंभीरता से ध्यान दिया जाए ताकि अनाप-शनाप ढंग से विकसित होने के बजाए वे एक सुनियोजित नीति के तहत सरकारी स्वास्थ्य सेवा तंत्र के पूरक के रूप में विकसित हो सकें.

मगर समस्या तो यह है कि ऐसे किसी प्रस्ताव पर विचार करने से पहले केंद्र सरकार के पास एक सुनिश्चित राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति का होना बहुत जरूरी है. जब तक ऐसी नीति नहीं बनती तब तक नागरिकों के सामने सीमित साधनों पर चलने वाले बीमार सरकारी अस्पतालों के बाद केवल प्राइवेट चिकित्सा संस्थानों का ही विकल्प बचता है.

—विजय क्रान्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजित कुमार

लाल-पीली-हरी बत्तियां

पेशे से शिक्षक और लखनऊ में जन्मे अजित कुमार को वैसे तो कविता से प्यार है पर उन्होंने कहानी, निबंध आदि विधाओं में हाथ आजमाने के अलावा अनेक रचनाओं का संपादन भी किया है. प्रस्तुत कहानी में उन्होंने मानवीय संवेदनाओं का चित्रण किया है.

उसका नाम तो था सज्जन सिंह लेकिन मेरे घर के सभी लोग उसे दुर्जन सिंह बताते थे क्योंकि उनका खयाल था, जितनी भी बार हमने अपनी मोटर उसके पास मरम्मत के लिए छोड़ी, उतनी ही बार वह और बरबाद होकर वापस आई.

घरवालों से मेरे कितने ही मतभेद थे जिनमें यह एक और आ जुड़ा था. मोटर की हालत के बारे में नहीं, क्योंकि उसका जवाब था—'जितना गुड़ डालोगे, उतना ही तो मीठा होगा.' चिढ़ मुझे इस बात की थी कि घरवाले सज्जन सिंह को हमारी सफेदपोशी पर एक धब्बा जैसा मानते थे और सोचते थे कि एक मेकेनिक से दोस्ती कर मैं परिवार की प्रतिष्ठा मिट्टी में मिला रहा हूं.

बुरा तो खैर मुझे भी लगता था, जब वह तेल और कालिख से सनी अपनी पोशाक में हमारे सोफे पर आ बैठता और कभी-कभी, हमारे मेहमानों की मौजूदगी में मेरे साथ जरूरत से ज्यादा बेतकल्लुफी दिखाने लगता. लेकिन इसका हल मैंने यह निकाल लिया था कि ऐसे मौके के अलावा भी, आम तौर पर, मैं उसके साथ बरामदे में पड़े मोढ़ों पर बैठता और यत्न करता कि हमारी बातचीत जल्द खत्म हो.

करने के लिए उसके पास ज्यादा बातें थीं भी नहीं. हर तीसरे मिनट वह एक ही वाक्य दोहरा देता—"और सुनाओ, क्या हाल है?" भला मेरे पास उसे सुनाने लायक क्या हाल था. फिर भी जालिम बाप से उसके झगड़े और रोजी-रोटी के लिए उसकी जद्दोजहद से मेरी हमदर्दी थी, जिसका एक नतीजा यह भी था कि मेरे दुखों और अफसोसों को भांपने और उनमें साझीदार होने की कुछ-न-कुछ कोशिश वह करता ही रहता था. वह मुझे समझाने की कोशिश करता, "इतना सोचोगे तो मर जाओगे. खाओ, पियो और मस्त रहो.' लेकिन जब भी वह वर्कशॉप बंद कर, ठर्रे की बोतल और टिक्की-पकौड़ी ले मेरे यहां आ पहुंचता, पूरे घर में भुनभुन शुरू हो जाती कि यह दुर्जन तो हम सबकी बोटी-बोटी सिंह की तरह खा-चबाकर ही चैन लेगा.

यही तथाकथित दुर्जन सिंह मेरे माथे पर चिंता की रेखाएं और आंखों में धुंधली छायाएं बढ़ती देख एक रोज कहने लगा, "मेरे साथ लंगड़े पंडित के पास चलो. वह बड़ा भारी तांत्रिक है. सारे दुखों का इलाज उसके पास है." फिर मुझे ढीला-ढाला पा, वह मेरी ओर से जाप करने के लिए उसे कुछ रुपए भी दे आया. बाद में, सज्जन सिंह के तगादे पर ये रुपए उसे वापस करने से पहले यह विचार भी मेरे मन में तंत्र-विद्या तो झूठी है ही, यह सज्जन भी कोई सच्चा नहीं. क्या पता, लिए दुर्गा माता का लाख बार जप भी, या मुझसे यों ही रुपए ऐंठ रहा तो अपने को पल भर के लिए भी नहीं पाया.

इसके बाद एक मंगलवार की

सभी रेखाचित्र: जयंतो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...सिंह हठकर मुझे उस पुजारी के पास ...जो दिन भर चौराहे पर तैनात ...ट्रैफिक का रास्ता दिखलाता था और ...के वक्त थके-हारे-मांदे-टूटे लोगों को. ...में मैंने इसे भी पुजाया.

...काफी भीड़ थी. लगभग घंटे भर ...तगड़े पुलिसमैन का करतब देखा. ...निराशा तो यह थी कि जहां ...सिंह ने बताया था पुजारी जी कुछ ...लेते, वहां मैंने देखा, कतार में खड़े ...उनके चरणों पर सवा रुपया रखने ...ही आगे बढ़ पाते थे. बेशक वह ...और मिठाई के टुकड़े प्रश्नार्थियों ...रहा था लेकिन रुपयों के साथ जो ...उस पर चढ़ाए जा रहे थे, वे भी ...न थे. और यह अनुमान लगा पाना ...कि उसने अच्छी-खासी कमाई का ...रखा था. तो भी, उसके भक्तों ...और संतुष्टि मेरे लिए दर्शनीय थी. कितनी श्रद्धा और निष्ठा के साथ वे वापस लौटते थे, गोकि यह कोई ऊंचा खिलाड़ी न था. यह निम्न मध्यवर्गीय लोगों की बस्ती में उनका छोटा-सा भगवान बनकर बैठा हुआ था.

उसके आडंबर को भी मैंने थोड़ा समझा. देवताओं की तस्वीरों और धूपबत्ती के पास वह पालथी मारकर बैठा हुआ था. सामने जमीन पर उसने चावल के आठ-दस दाने डाल रखे थे. समाधान चाहने वालों का निवेदन सुनते समय वह बड़ी कुशलता से उन चावलों के विभिन्न आकार बनाता— आगे, पीछे, दाएं, बाएं कर वर्ग, त्रिभुज, वक्र या चक्र .... और अपना निदान सुना देता: 'बीमार बच्चे की कलाई में यह धागा बांध दो...' 'सिरहाना अमुक दिशा की ओर रखो....' 'तुलसी दल का सेवन सुबह-शाम करें....'

यदि किसी व्यक्ति का प्रश्न संकोच भरा या अस्पष्ट होता तो पुजारी की मुखरता सुनने योग्य हो जाती थी. वह बहुत बोलता पर कोई भी बात ऐसी नहीं कहता जो निश्चित या समझ में आने लायक होती. फिर भी उसका गूढ़ या चमत्कारी कथन प्रश्नकर्ता पर अद्भुत प्रभाव डालता जबकि मुझे शक होता कि यह ढोंगी न तो इन लोगों का दुख समझ रहा है, न उस पर अपनी टिप्पणी को ही, पर इस मनोविज्ञान को यह भलीभांति जानता है कि जो दुखी हैं उन्हें दुख के मिटने की आशा भी रहती है और गहरे अंधेरे में भी वे रोशनी की एक किरण देख ही लेते हैं. पुजारी की गोलमोल अटपटी बातों ने मुझे जताया कि वह कुशल है और जानता है कि जो दुखी हैं वे ही तो देखेंगे.

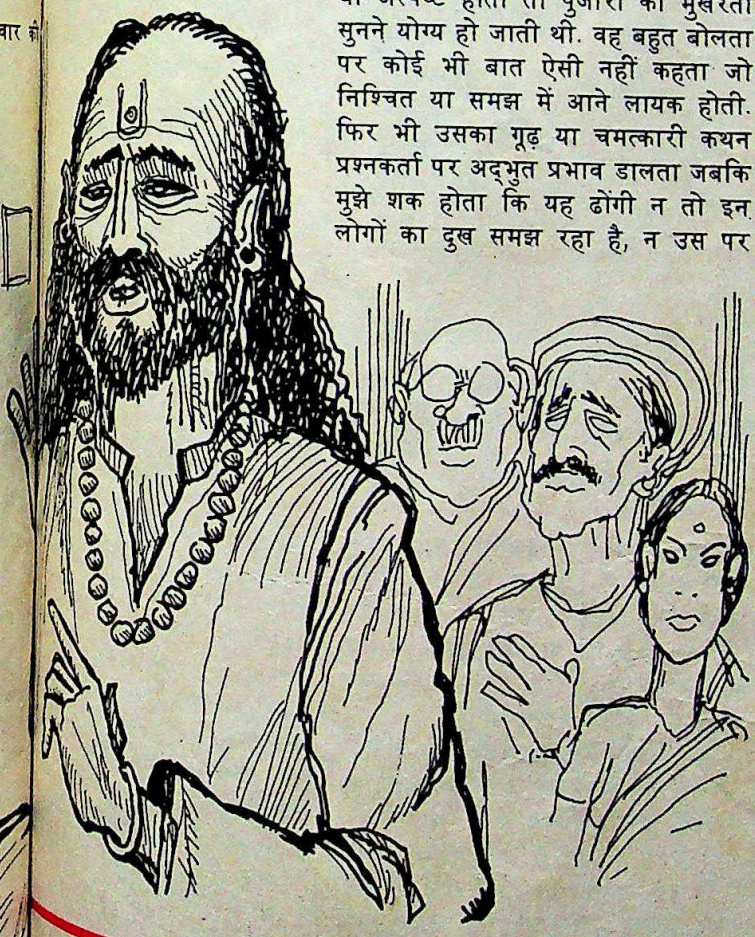

दुखी तो मैं भी बहुत था... अब यह गंभीरता भी शामिल हो गई कि लोगों के सच्चे और गहरे दुखों को जानना अपने आप में स्वच्छ बनना भी होता है

यह पुलिसमैन चौराहे वाली अपनी जिस यांत्रिक चुस्ती से दीन-दुखियों को निबटा रहा था, मुझे हैरत से भरने के लिए काफी था कि अपनी शरण में आने वालों के प्रति वह कितना तटस्थ है. उसकी एकमात्र रुचि शायद पुजापे में थी जिसे परे हटाने में वह तनिक भी देर न लगाता था लेकिन दुख में डूबे हुओं का ध्यान इस पर कहां जाता था.

एक औरत आई, बिलखती हुई. उसका बेटा घर से भाग गया था. पुजारी ने पैसे हथियाए, चावलों का हेर-फेर किया, कुछ बुदबुदाया, फिर बोला, "पूर्व दिशा में तेरा बेटा गया है; किसी अन्य व्यक्ति के प्रभाव में है; तेरहवें दिन लौट आएगा." वह बेचारी कहती रह गई कि बेटा तो सवा महीने से लापता है लेकिन न पुजारी को सुनने की फुरसत थी, न पीछे से रेला मारती भीड़ ने कोई मौका दिया.

दुखी तो मैं भी बहुत था लेकिन जो लोग मुझसे पहले उसकी शरण मांग चुके थे, उनकी तुलना में अपना कष्ट मुझे इतना तुच्छ और नगण्य जान पड़ा कि जब तक मेरा नंबर आया, मन ही मन मैं हंसने लगा था कि भला मैं यहां आया ही क्यों! लेकिन इसमें यह गंभीरता भी शामिल हो गई कि लोगों के सच्चे और गहरे दुखों को जानना अपने आप में स्वच्छ बनना भी होता है. वैसे तो मैं यह भी सोच सकता था कि मुझे अपनी घुटन से उबारने वाले ये नए-नए अनुभव पुजारी महाराज की ही देन हैं, इस स्थान का प्रताप है... लेकिन इसके लिए जरूरी श्रद्धा या आस्था मुझमें न थी.

पुजारी जी के सामने पहुंच उनसे आंख मिलते ही मैं समझ गया कि यह काफी सधा और अनुभवी व्यक्ति है. मेरी मुद्रा में छाया अविश्वास वह तुरंत भांप गया. उसे जितना निश्चिंत और आश्वस्त मैंने सोचा था, उससे कहीं अधिक चौकन्ना और चुस्त वह निकला. उसे पता था कि उसके मंदिर में यह व्यक्ति पहली बार आया है और अन्य भक्तों से कुछ भिन्न है.

बस, चावलों का खेल करते हुए उसकी वाग्धारा बह चली, "बड़ी विरोधी परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा है तुम्हें. बेहद घिर गए हो. हारकर भगवान की शरण में आए हो. लेकिन पूरा विश्वास अब भी नहीं होता. तर्क-बुद्धि निरंतर उद्विग्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करती रहती है. लेकिन घबराओ मत. सब ठीक हो जाएगा. तुम्हारे तेज के आगे दूसरे लोग टिक नहीं पाएंगे. भगवान का भरोसा करो. प्रसाद एक बार में नहीं मिलता. साधना करनी पड़ती है. दोबारा यहां आना. बजरंग बली पूरी रक्षा करेंगे. उनके आगे माथा टेको. उनके चरणों में अपने मन को लगाओ. बहुत मुसीबत में फंसे हो. उद्धार बुद्धि से नहीं, भावना से होगा."

गरी का एक टुकड़ा और गेंदे का एक फूल पुजारी ने मेरे हाथ में रख दिया. संकेत स्पष्ट था कि पीछे वाले के लिए जगह खाली करो. फूल मैंने जेब में रखा, गरी आधी तोड़ सज्जन सिंह को दी, आधी खुद खाई. इससे पहले कि वह पुजारी जी की अंतर्यामी शक्ति का बखान शुरू करता, मैंने खुद ही स्वीकार किया, "भाई, ठीक ही तो कहा उन्होंने—बेहद मुसीबत में पड़ा हूं, जिस अकल पर इतना भरोसा था, वही फेल कर गई. भगवान ही उबारें तो उबारें."

मेरे स्वर में छिपा व्यंग्य समझे बिना सज्जन सिंह दिलासा देता रहा— "दोबारा बुलाया है उन्होंने. अगली बार और भी बातें बताएंगे." "क्यों नहीं, क्यों नहीं"—मैं सहमत हुआ, यह सोचते हुए कि सवा रुपए में तमाशा कुछ इतना बुरा न था लेकिन पूरा एक घंटा बरबाद हुआ. क्या बेहतर न होता कि इतनी देर चारपाई पर लेट मैं विविध भारती के फिल्मी गाने सुनता.

तभी मेरे मन के दूसरे अंश ने उपहास किया—अरे मूर्ख! इसी तर्क बुद्धि की ओर तो पुजारी ने संकेत किया था. अब भी तू इसकी व्यर्थता नहीं समझा.

यह द्वंद्व काफी देर मुझमें चलता रहा. उस रात भोजन भी मैंने बेमन से किया. नींद तो जल्द आ गई लेकिन बीच में जब वह उचटी तो घर की निचली मंजिल से उठती एक कराह ने मुझे बेचैन कर दिया. हाल में ही उस हिस्से में नए किराएदार आए थे. उनके परिवार में कोई पंगु महिला थी—किराएदार की बहन—जो 35-40 वर्षों से पोलियोग्रस्त हो, बिस्तर से लगी थी. अपने आप तो वह अपना हाथ भी नहीं उठा पाती थी. वृद्धा मां ही उसे

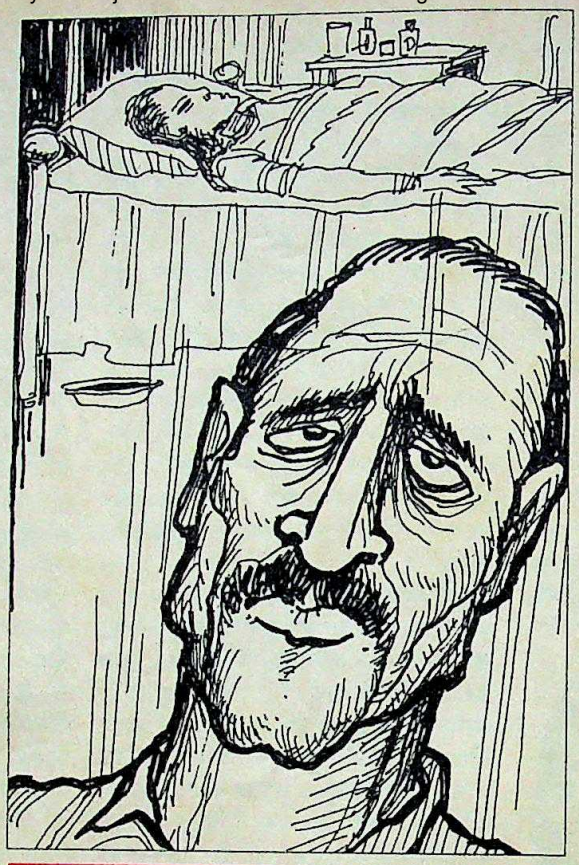

उस महिला का विलाप मुझे याद दिलाता कि संसार में कितनी अधिक पीड़ा और व्यथा ऐसी है जिसका कहीं कोई इलाज नहीं

उठाती, खिलाती, नहलाती-धुलाती थी. हमने उसे कभी देखा तो न था, लेकिन उसकी कराह अक्सर सुनते थे. खास तौर से रात के सन्नाटे में, जब दूसरी तमाम आवाजों के बंद हो जाने पर, यह एक स्वर चारों ओर गूंजने लगता था.

कौन जाने, रात में सबको सोया देख, उस अकेली की घबराहट बढ़ने लगती थी या कोई घाव दुखने लगते थे. जो भी हो, रात में ग्यारह-बारह बजे के बाद जब चारों ओर सन्नाटा छा जाता और मेरे मन का हाहाकार अछोर-अपार हो उठता, तब आसपास के दो-चार मकानों को घेर लेने वाला यह कातर स्वर—कोई शब्द नहीं—केवल स्वर मुझे अपने में जकड़कर प्रायः स्थिर कर दिया करता था. कभी-कभी तो उस वक़्त मेरे यहां कोई मेहमान भी होते थे. घबराकर वे मुझे मशविरा देते थे, "आप यहां रह कैसे लेते हैं? जल्द से जल्द कोई दूसरा मकान तलाशिए."

मैं भला उनको क्या देता. उनसे क्योंकर यह कि जब जीवन मुझे धक्के बाहर निकालने को आतुर यह विलाप मुझको रोक हर रात इसकी याद दि हुआ कि संसार में अधिक पीड़ा और व्यथा ऐ जिसका कहीं कोई इलाज फिर भी लोग हैं जो उसको रहे हैं स्वजन हैं जो भावना कर्त्तव्य के सूत्रों से जुड़कर दुख में शरीक होते हैं.

मेहमानों और घरवालों बीच, और सामान्यतः आप भी, मेरा इरादा रहता था कि ढीलढाल कोई और घर तलाश लेकिन मैं नहीं जानता उस क्या हुआ! शायद यह एहसा कि जहां मैं थोड़ी-सी असुविधाओं, तनिक-सी शानियों और अहं पर छोटे-मो आघातों से विचलित हो, को संसार का सबसे दुखी व समझे बैठा हूं, वहां एक पंगु और उसकी परिचर्या में वृद्धा मेरी वेदना को किस ओछी और टुच्ची बनाए दे है.

मैं तो यह भी नहीं सकता कि झुग्गी-झोंपड़ी के उस पुलिसमैन के बिखरे चावल मेरे लिए कृष्ण-सुदामा के चावल या मैंने सज्जन सिंह से नसीहत जिसकी तुनुकमिजाजी उसे एक वर्कशॉप दूसरे वर्कशॉप में लगातार खदेड़ती रहती थी. जो भी हो, मन की गहराई में से तीन पंक्तियां मुझमें उ जिन्हें एक कागज पर दर्ज करने के लि मजबूर हो गया—

"दोषी ठहराऊं किसे? गुरु लक्ष्यबोध को? प्रत्यंचा को?...

दिखाने का श्रेय किसको दूं?—

एक सीधी गति का क्रमशः होना."

यह उधेड़बुन चलती ही रही कि हम जीते हैं उसे लेखन के क्रम में कुछ से कुछ और नहीं हो जाते?...

सुबह मैं उठा तो मैंने पाया कि चारों ओर फैला हाहाकार और पड़ रही उसकी छाया बदस्तूर है. की लाल-पीली-हरी बत्तियां जलने-बुझने लगीं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता संग्रह

हरे पर भरोसा

जीवन व प्रकृति के एकसार रंग

कवि प्रयाग शुक्ल रूप और सौंदर्य भावभूमि के कवि हैं. इस संग्रह की 51 कविताएं समाज और आसपास बिखरे कला रूपों की तलाश में बेहद ताजा और खूबसूरत बन पड़ी है.

प्रकृति के रंगों में मानव स्वभाव, उसका अपना संसार कितना एकसार है यह बात 'यह जो हरा है' संकलन की कविताओं से जाहिर होती है. रंग और प्राकृतिक सुषमा का आज के अनुभवों में इस्तेमाल करने की कला शुक्ल की कविताओं में है.

'यह जो हरा है' कविता देखिए: *यह जो फूटा पड़ता है/हरा पत्तों से-/धूप के आर-पार/वही फूट आता है/ किसी और जगह; किसी और सुबह./भरोसा है तो इसी हरे का.* एक छोटी-सी कविता एक भरपूर जिंदगी का पूरा ब्यौरा कितनी सहजता से देती है वह इस कविता में है.

प्रकृति, रंग और कला रूपों को कविता में पहचानने का नजरिया कहीं भी न तो ऊबाऊ है और न ठस. वे गतिशीलता के साथ यथार्थ को उसके पूरे प्राकृतिक स्वरूप में देखते हैं. अपनी संवेदनशीलता के ही चलते उनमें बिना किसी जल्दबाजी के पूरे दृश्य को जानने-समझने और अपनी बात कहने का जज्बा है.

संकलन की कविताओं में प्रवाह इसलिए भी है कि जिंदगी के रूपों में उन्होंने प्रकृति के रंगों का साम्य देखा और उनका पूरा-पूरा इस्तेमाल भी किया. उनकी एक और कविता, *'साइकिल चलाती हुई लड़की': 'कुर्सी एक टूटी हुई/ पड़ी है बरामदे में/ दूर वहां- फुलगी फुलगी होकर/दौड़ रही हवा/फिर लगाती है दौड़/एक पीली चमकती हुई/ साइकिल चलाती है लड़की.*

रंगों की पहचान और एक तस्वीर के जरिए बहुत कुछ कह जाने का चित्रकार का अंदाज शुक्ल की कविताओं में भी है और यही उनकी विशेषता भी है. उनकी एक कविता 'जाने न देना' देखिए: *आकाश को जाने न देना/अपनी पकड़ से/ उसमें हैं तुम्हारे मेरे रंग/जब हम खिड़की खोलेंगे/ट्रेन की/कमरे की/दिखेंगे नहीं क्या हम तुम/एक-दूसरे को/उसमें.*

एक चित्र अनुभव को मिल-बांट लेने के इरादे से लिखी गई कविताएं बहुत प्रयोग-धर्मी नहीं हैं बल्कि ये पूरी कविता परंपरा को और आगे ले जाती हैं. पंत, महादेवी, अज्ञेय और शमशेर की कविताओं से अलग एक नई जमीन की ये कविताएं पाठक को सचेत करती हैं और बताती हैं कि जो दिख रहा है वह सिर्फ दिखना ही नहीं है और भी बहुत कुछ है.

यह जो हरा है
कविता संग्रह
प्रयाग शुक्ल
वाग्देवी प्रकाशन,
बीकानेर
कीमत: 40 रु.;
कुल पृष्ठ: 80

जीवन की थकान की एक तस्वीर 'जाओ' कविता में है. यह थकान झिक-झिक करने वाले बुजुर्ग की नहीं है बल्कि उसमें फिर दूसरे दिन नया कुछ करने की तमन्ना है: *'जाओ/मैंने कहा/ 'जाओ' शायद ये उम्र के आखिरी बरस हैं/अब थक गया हूं मैं—करते तुम्हारी याद/रोज-रोज/फिर दिन गया है डूब.* संक्षेप में शुक्ल का यह संग्रह पढ़ने, सहेज रखने योग्य है.

—अमित प्रकाश सिंह

गीत संग्रह

मंचीय शैली

प्रतिमानवीय यथार्थ से मुठभेड़

गीतकार का यह पहला गीत संग्रह है, जिसमें उसके मंचीय शैली के चौहत्तर गीत संकलित हैं. इन गीतों में गीतकार की संवेदना हमारे वर्तमान परिवेश में व्याप्त विसंगति, विडंबना और विकृति से विचलित दिखाई देती है. गीतकार हर तरफ धोखा, छल, लूट, झूठ, स्वार्थ, शोषण, आशंका, भय, नियमहीनता, संबंधहीनता यानी संपूर्णतः प्रतिमानवीय स्थितियों का सामना करता है. इस सामना करने में गीतकार की जो प्रतिक्रियाएं हुई हैं, उन्हीं से इस गीत संग्रह की अंतर्वस्तु का निर्माण हुआ है. इस छल और स्वार्थ से लोहा लेने वाली ताकत के बहुत जल्दी ही होने वाले अवसान से गीतकार व्याकुल और चिंतित है. वह तीव्रता से अनुभव करता है कि पहाड़ लेकर बहुत देर तक पानी पर नहीं टिक जा सकता. अधिक देर तक पानी पर बनकर नहीं जला जा सकता. इस प्र प्रतिमानवीय जगत की बाढ़ में डूब के आसन्न संकट का तीव्र एहसास ये करवाते हैं.

गाती आग....
गीत संग्रह
विजय किशोर मानव
पुस्तकायन, दिल्ली
कीमत: 35 रु.;
कुल पृष्ठ: 94

गांव और शहर का द्वंद्व भी इन में मौजूद है. गीतकार में गांव के प्रति भावुकतापूर्ण ललक है: *"यहां मिले रूखा-सूखा/ खाकर सो जाना/ तोते कहती है मैना/अब न शहर जाना."* सवाल है कि जब "सिर पर कर्ज" है रूखा-सूखा खाकर गांव में ही कैसे रहा जा सकता है. नई औद्योगिक व्यव ने परंपरागत खेतीहर समाज के ढांचे तोड़ दिया है. वर्तमान व्यवस्था मजबूरी, दरिद्रों और पढ़े-लिखों को से उखाड़कर शहर में फेंक रही है. मजबूरी के आगे चुनाव का कोई सव नहीं है. शहर में उसकी आत्मा तीव्रता से प्रतिमानवीय स्थितियों से महसूस करती है. इसी से फंदा, पिंजरा इत्यादि इन गीतों के केंद्रीय बन गए हैं. अधिकांशतः इस प्रतिमान यथार्थ के समक्ष सिर झुकाकर उम्र का स्वर ही प्रमुख है लेकिन कहीं गीतकार किसी भी कीमत पर *'गांव डुबो दे/मुझको ऐसी नदी'* बनने से इन करता है. उसकी स्वतंत्रता की आक 'सोने की लगाम' के लालच को अस्वीकृत करती है: *"सारा गांव डुबो मुझको ऐसी नदी नहीं बनना"; "मैं पुश्तों से, अब बोलेंगे/मक्कारों की कुंडली खोलेंगे."*

आम तौर पर गीतकार की अभिव्यक्तियां कतापूर्ण हैं. परिवेश की सतह तैरती प्रतिमान स्थितियों के मुखातिब हैं. ठोस सामा राजनैतिक, और सा कारणों और के प्रति सरोकार नहीं दिखाया गया मंचीय अनुशासन गीतकार की को गहरे प्रवेश करने से रोकता चार बिंब बहुत ही ताजे हैं. प्रयोग में मंचीय चमत्कार पैदा करने प्रवृत्ति ही अधिक है, रचनात्मक उतनी नहीं. गेयता के मोह में बहुत तुकबंदी भी की गई है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Zodiac for Hans Schmidt

latest to capture the imagination of the Germans is not automobiles.

220 km/h, the Germans are sitting up and noticing the fastest moving
ions to hit the road. Zodiac. Exported to Europe's leading fashion
es. The international look of the season is now parked in India. Slip
gear. And you'll appreciate why Herr Schmidt now chooses to test
e the latest - Zodiac.

The soul of Europe. The spirit of Zodiac.

Z O D I A C

SHIRTS TROUSERS TIES SOCKS BELTS WALLETS HANDKERCHIEVES

Only 10% of Zodiac's total production is sold in India.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोली सूरत, आंखों में पानी

अभी हाल में **पूनम ढिल्लों** नशाखोरी के खिलाफ भाषण देने गई. उन्हें पूरी उम्मीद थी कि लंबे अरसे से जिस बंपर पब्लिसिटी की फिक्र में वे थीं, वह यहां पूरी हो

पूनमः प्रचार की भूख

जाएगी. एक बड़े राइटर को बुलवाकर पूनम ने उसके मुंहमांगे दामों से अपने लिए धांसू स्पीच लिखवाई. प्रेस से टूट चुके अपने सबंधों की कडियां फिर से जोड़ीं, फोन पर फोन किए ताकि मौके पर ताली बजाने वाले कुछ समर्थक सभा में मौजूद रहें. घर-परिवार-वालों की मौजूदगी में कई-कई रिहर्सलें कीं लेकिन हाथ क्या आया? अबला जीवन की वही कहानी...आंखों में पानी.

यह बात इतनी तकलीफदेह न हुई होती अगर असफलता के दुख की आग में शबाना आजमी की कटूक्ति का शुद्ध घी न पड़ा होता.

पूनम की धड़ल्लेदार स्पीच को श्रोताओं ने राइटर का कमाल कहकर पूनम को कोई श्रेय नहीं दिया. मनचलों में से किसी ने फब्ती कस दी, "आपकी सूरत ने जिन्हें दीवाना बनाया है, उन्हीं से क्यों कहती हैं कि दीवाने न बनो?" और इस फब्ती की रिपोर्ट जब शबाना तक पहुंची तो प्रचार पाने के अपने स्टाइल—तथाकथित समाज सेवा—पर पूनम के प्रवेश को अनधिकृत मानते हुए उन्होंने व्यंग्य भरी मुस्कान के साथ अपनी राय जाहिर कर दी, "सोशल वर्क का शौक सूरत की जगह सीरत से पूरा करने की सोचतीं तो बेहतर होता."

सीरत का इतना जुगाड़ करने का फल यह मिला देख पूनम की [illegible] सूरत भला आंसुओं से कैसें [illegible]गती?

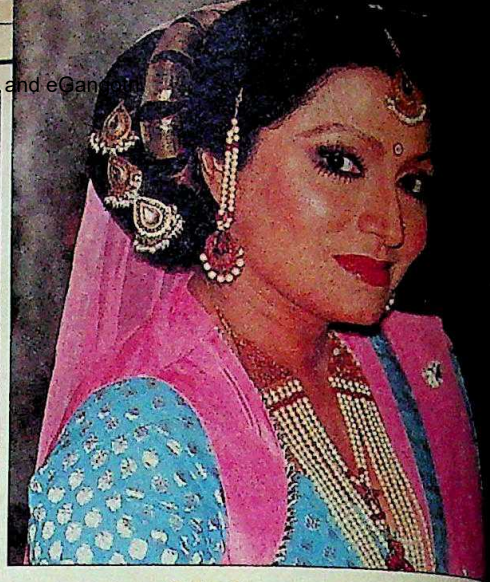

मुस्कान में मुकाबले का रंग

बिंदुः इलाके की [illegible]

लोग अब तक यह नहीं समझ पा रहे हैं कि शर्मिला टैगोर को सुखी विवाहित जीवन की इमेज के बाद अचानक तवायफ बनने की क्या सूझी? और वह भी लगभग गुमनाम सेटअप में.

जिस दिन शर्मिला ने बंबई में 'दस्तूर' के लिए मुजरा शुरू किया, बिंदु के कान उसी दिन खड़े हो गए थे. कैबरे और मुजरा खलनायिका बिंदु के अधिकार क्षेत्र रहे हैं. तुरंत उन्होंने दूत दौड़ाए यह देखने को कि शर्मिला में कितनी ताजगी बाकी है? जब रिपोर्ट मिली कि शर्मिला के चेहरे पर उम्र का असर मेकअप के छिपाए नहीं छिप [illegible] वक्त बिंदु की मुस्कान में [illegible] लिए भा[illegible]

मुकाबले का रंग घुल [illegible]

'दस्तूर' की मुजरेद[illegible] नाजायज बेटी के बाप [illegible] लिए बाप के नाम का ह[illegible] है और यह हक न मिल[illegible] के बड़ी होने पर उसे भी [illegible] बिठा देने की धमकी दे[illegible] उन्होंने ऐसी दो-चा[illegible] बंदोबस्त करवा लि[illegible] समाज से तिरस्कृत [illegible] बच्चों की प्रतिष्ठा के लि[illegible] हीरोइन हो जाती है. [illegible] के साथ बिंदु ने ड्रेस रिह[illegible] सचमुच देखने वाली थी

अब जहां शर्मिला [illegible] की बात आते ही [illegible] सिफारिश आ जाती है [illegible] घात लगाकर हमला क[illegible]

टकराएंगे सितारे

हम उलझन में हैं. ऐसे फैसले को क्या कहें? हिमाकत या हिम्मत? इसे नासमझी मानकर इसलिए दरकिनार नहीं किया जा सकता कि यह एक ऐसे निर्देशक के दिमाग की उपज है जिसने फ्लॉप माने जाने वाले कलाकारों को लेकर भी कामयाबी के झंडे गाड़ रखे हैं. इस निर्देशक ने आज के दो मशहूर कलाकारों को एक साथ लेने का इरादा किया है. इनमें से एक अभी तक सफलता के नशे में सिरफिरा है, दूसरा असफलता का स्वाद चख लेने की वजह से नम्र. एक को बड़ी हीरोइनों का साथ मिल चुका है और नई हीरोइनें उसका साथ पाने को बेचैन हैं, दूसरे की रफनेस ने बड़ी हीरोइनों को उससे दूर ही रखा है. एक बड़बोला है, दूसरा शांत.

अब आप कहेंगे, 'पहेलियां क्यों बुझा रहे हैं? साफ-साफ क्यों नहीं बताते, किनका जिक्र कर रहे हैं आप? अमिताभ बच्चन और राजकुमार का?'

हमारा नम्र निवेदन होगा, 'अनुमान तो अच्छा लगाया आपने और इसे पूरी तरह गलत इसलिए नहीं कहा जा सकता कि इन दोनों सर्वथा विपरीत नाजोअंदाज वाले कलाकारों को एक साथ लेने का इरादा निर्देशक पहलाज निहलानी ने हाल ही में प्रकट किया है. लेकिन हम जिस निर्देशक की बात बता रहे हैं वे हिट हुई फिल्म 'घायल' [illegible] निर्देशक राजकुमार [illegible] और जिन [illegible] वे साथ ला[illegible] सलमान [illegible] आमिर [illegible] खयाल है[illegible]

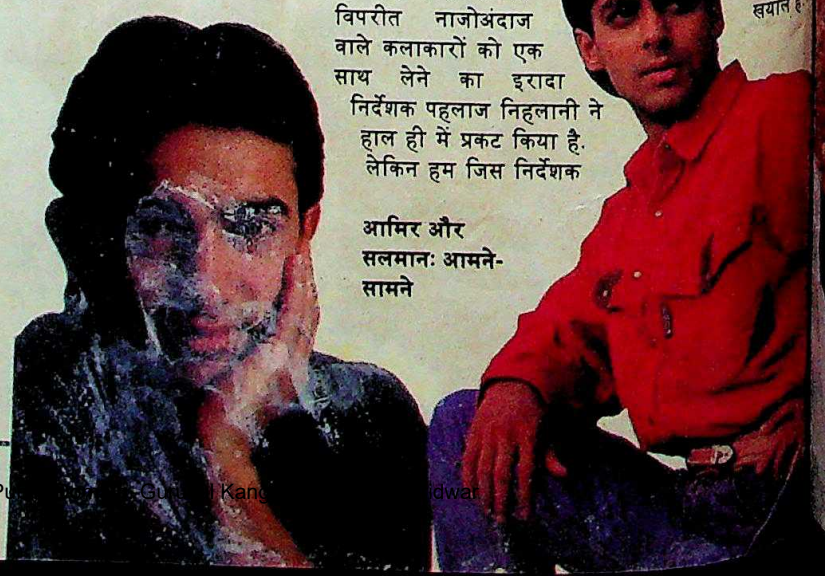

आमिर और सलमानः आमने-सामने

CC-0. In Public [illegible] Gurukul Kangri [illegible] Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोचा था. लेकिन अति हर चीज की नुकसानदेह होती है, आत्मविश्वास की भी. खुद को बड़ा शोमैन समझने वाले घई हमेशा 'ओवर कॉन्फिडेंट' रहते हैं.

अपने ओवर कॉन्फिडेंस में सुभाष यह भूल गए कि सुंदर लड़कियां सिर्फ वादों पर नहीं जिया करतीं. जिस दिन पामेला बॉर्डेस की भूमिका करके अंतरराष्ट्रीय ख्याति पा लेने का प्रस्ताव सोनिका के सामने परोसा गया, सुभाष के पकवानों का जिक्र उन्हें उसी दिन बासी लगने लगा था. पर उस दिन तो उन्होंने विद्रोह कर ही दिया जब पामेला की भूमिका सुभाष के इनकार के कारण उनके हाथ से निकलकर आशा ईरानी की झोली में जा गिरी.

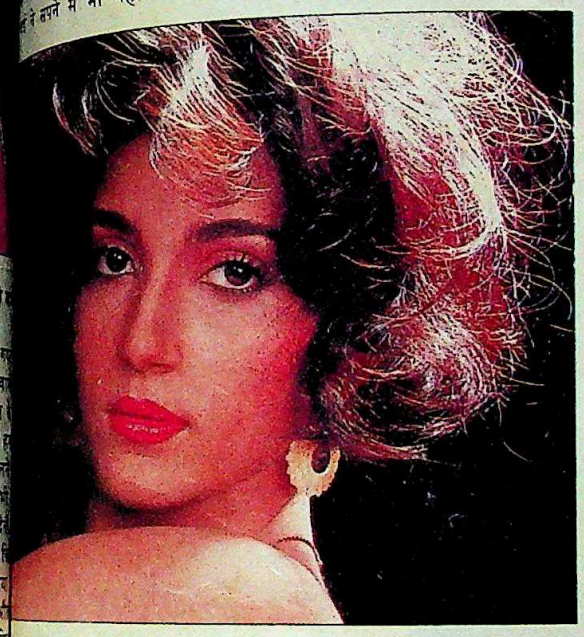

सोनिका: गॉडफादर को ठेंगा

इस विद्रोह का पूरा फायदा उठाया निर्माता कीर्ति रावल ने जिन्हें खुद भी सुभाष के साथ एक पुराना हिसाब चुकता करना था. यहां यह बता देना बेहतर है कि सुभाष की तरह कीर्ति भी एक्टर-प्रोड्यूसर हैं. लिहाजा, सोनिका आज कीर्ति की फिल्म 'हैरत' की हीरोइन हैं जिसमें उनकी मामूली नहीं, दोहरी भूमिका है और सुभाष हैरत में हैं कि ये क्या हुआ? कैसे हुआ?

है किसी के पास इसका कोई जवाब?

बात धार्मिक-पौराणिक फिल्म 'शिव महिमा' की है. निर्माता-निर्देशक को उसमें एक मॉड डांस डालने की जरूरत महसूस होने लगी. निर्देशक के सोच को क्या कहिए. उसे लगा कि यह डांस **ललिता पवार** पर पिक्चराइज किया जाए तो मजा आ जाए. लेकिन ललिता जी जैसी सीनियर और बुजुर्ग आर्टिस्ट से मॉड डांस की बाबत कहे कौन?

ललिता पवार: संकोच कैसा

डरते-डरते निर्माता ने उनके सामने प्रस्ताव रखा और यह देखकर दंग रह गया कि ललिता जी ने न सिर्फ उसे स्वीकार कर लिया बल्कि उन्होंने एक नहीं, सात डांस किए, सात अलग ढंग के और सात अलग वेशभूषाओं में.

फिल्म के रशेज देखने पर ललिता जी पर किसी ने कटाक्ष किया, "इस उम्र में यह सब करना शोभा देता है क्या?"

"क्यों ? इस उम्र में दादामणि (अशोक कुमार) को जवान लड़कियों वाले रोल करने पर दादा फालके अवार्ड मिल सकता है तो मेरे यह डांस आपको क्यों खटकने लगे?" है इसका कोई जवाब किसी के पास?

प्रभावित होकर फिल्म 'हिमालय के आंचल में' के प्रतिष्ठित निर्माता ने चन्ना को हीरोइन ले लेने का फैसला किया. शूटिंग के लिए यूनिट जा पहुंची [illegible] चन्ना को देख[illegible] उमड़ पड़ी. [illegible] कर चन्ना सीधे श्रीदेवी हो गईं. उन्होंने वहां चाइनीज फूड की मांग कर दी. जहां पानी भी आसानी से नहीं मिलता वहां चन्ना की फ्रूट जूस की फरमाइश बनी रही और जब उन्हें समझाया गया कि ये सब चीजें यहां नहीं मिलतीं, जो [illegible] ढ़िया से बढ़िया मिल पा [illegible] सारी यूनिट वही खा रही है, तो चन्ना और उनकी मम्मी के अहंकार को जैसे चोट पहुंच गई. बिफरकर उन्होंने कहा, "सारी यूनिट एक तरफ, मेरी चन्ना एक तरफ. है कोई उस सा 'स्टार' तुम्हारी यूनिट में." इस 'स्टार' का अहं तभी संतुष्ट हुआ जब विशेष गाड़ी भेजकर देहरादून से मम्मी की मनचाही 'खुराक' मंगवा दी गई.

इस आउटडोर के विवरण सुनने के बाद निर्माता चन्ना के नाम से घबराने लगे हैं. इसलिए चन्ना के लिए यह जान लेना बेहतर है कि ज्यादा पी लेने पर थोड़ा बहक जाने के किस्से इस इंडस्ट्री में रोज होते हैं और रोज-दो रोज में भुला भी दिए जाते हैं. लेकिन थोड़ा-सा पा लेने पर बहुत बहक जाना कम ही लोगों को बरदाश्त होता है.

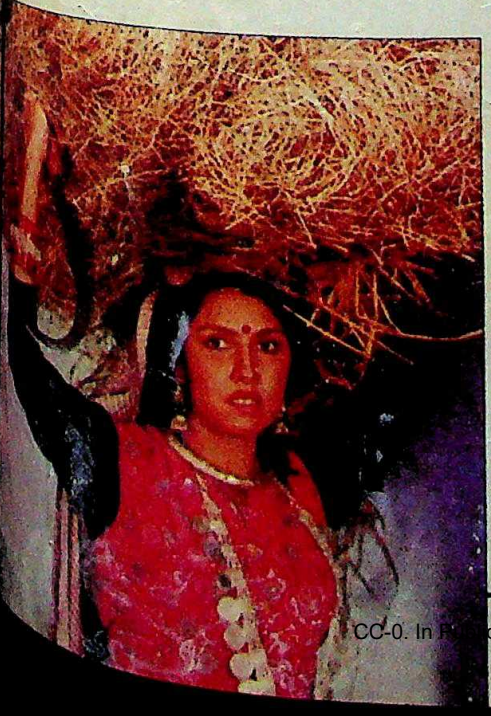

चन्ना: प्यादे से फर्जी भए...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

a Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नामस भोजानी

स्मृतिः साड़ी में सौंदर्य

◆ आश्चर्यजनक किंतु सत्य! सौंदर्य प्रतियोगिता से स्विमसूट नदारद. पिछले पखवाड़े न्यूयॉर्क में 'मिस इंडिया-यूनिवर्स' के चयन की पहली प्रतियोगिता में यही हुआ. इस प्रतियोगिता में विभिन्न देशों से आईं भारतीय सुंदरियों को अपनी देहयष्टि की कमनीयता के प्रदर्शन के बल पर नहीं बल्कि भारतीय पोशाक में नृत्य और संगीत की अपनी प्रतिभा के बूते यह ताज जीतना था. फीजी, गुयाना, स्वीडन और अमेरिका की भारतीय सुंदरियों में से बाजी जीती शिकागो की बिजनेस मैनेजमेंट स्नातक 22 वर्षीया **स्मृति चड्ढा** ने, जो पिछले साल 'मिस इंडिया-यूएस' का खिताब भी जीत चुकी हैं. स्मृति ने बाद में कहा, "मैं मैनेजमेंट के क्षेत्र में ही अपना कैरियर बनाना चाहती हूं. लेकिन शादी करके भारत में बसने में मुझे कोई एतराज नहीं है." भारत के कुंआरे ध्यान दें!

◆ शादियों के मामले में वे शायद हेनरी अष्टम को भी पीछे छोड़ दें क्योंकि पचास की उम्र पार करने के बावजूद पाकिस्तान के केंद्रीय मंत्री **गुलाम मुस्तफा खर** सातवीं शादी कर चुके हैं. पाकिस्तान के स्वतंत्रता दिवस पर खर पहली बार अपनी सातवीं—जिन्हें कई लोग नौंवीं भी बताते हैं—बेगम, 22 वर्षीया **आएशा बट्ट** के साथ किसी सार्वजनिक आयोजन में शरीक हुए. और उनकी खूबरसूत बेगम की चकाचौंध के आगे कामचलाऊ प्रधानमंत्री जतोई की चमक भी फीकी पड़ गई. पर खर बीवियां बदलने में ही नहीं, राजनैतिक दल बदलने में भी माहिर हैं. पिछले साल जब वे बेनज़ीर भुट्टो के खासमखास हुआ करते थे तब उनकी छठी बेगम, तहमीना ने उन्हें तलाक दे दिया था और विपक्षी खेमे में चली गई थीं. इस साल खर ने भी राजनीति में पाला बदल लिया और उसी खेमे में पहुंच गए जिसमें उनकी पुरानी बीवी भी हैं.

प्रमोद पुष्करणा

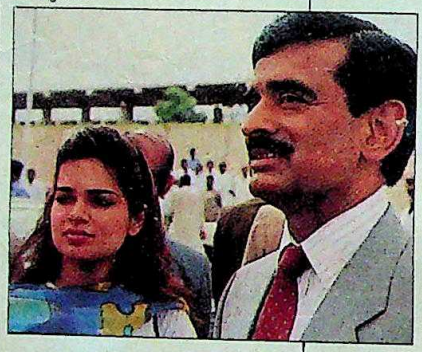

आएशा और खर

◆ सुपर स्टार अमिताभ बच्चन के वे 'फैन' हैं मगर 33 वर्षीय **गुल मुहम्मद** खुद मात्र 22.5 इंच लंबे है. लेकिन पिछले पखवाड़े उन्होंने प्रसिद्धि की जो ऊंची छलांग लगाई वैसी छलांग तो शायद अमिताभ भी न लगा पाएं. मुहम्मद का नाम दुनिया के सबसे ठिगने व्यक्ति के रूप में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स में दर्ज किया गया. उन्होंने हिंदी फिल्मों में आने की असफल कोशिश भी की थी. उनके जीवन का सबसे खुशमनुा क्षण तब था जब अभिनेत्री पूनम ढिल्लों ने उन्हें गोद में उठा लिया था. पुरानी दिल्ली के बल्लीमारां में रहने वाले मुहम्मद को रिक्शे पर घूमना, वीडियो पर फिल्में देखना और मौज-मस्ती करना पसंद है. वे शादी तो करना चाहते हैं पर "तभी जब लंबी लड़की मिले."

प्रशांत पंजियार

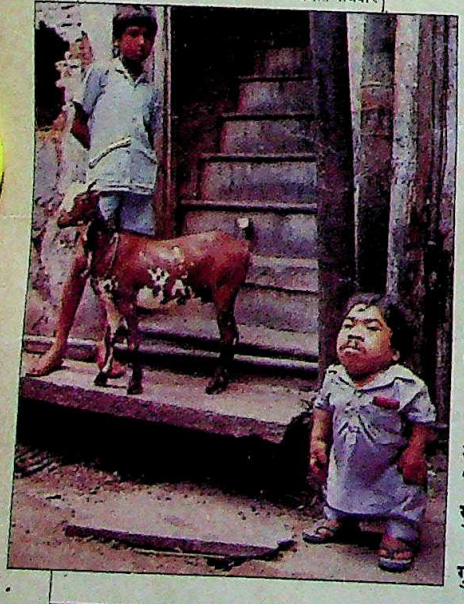

गुल मुहम्मदः ऊंची शान

◆ बॉक्स ऑफिस पर आजकल मुहब्बत का बोलबाला है. इसी मुहब्बत का असर है कि महेश भट्ट की फिल्म 'आशिकी' की धूम मची है. उम्मीद है यह भी 'मैंने प्यार किया' की तरह हंगामा मचाएगी. तभी शायद लोग पूछ रहे हैं कि इसके पोस्टरों पर जैकेट में चेहरा छिपाए दो आशिक कौन हैं? ये हैं मारवल साबुन की मॉडल **अनु अग्रवाल** और विज्ञापनों से ही जुड़े **राहुल राय**, जिन्हों [illegible] कर भट्ट से काम मांगा था. उनके चेहरे की गंभीरता और उदासी में कुछ पाकर भट्ट ने उनके जैसे नए लड़के को ही हीरो बनाने का जुआ खेल दिया. भट्ट कहते हैं, "लोगों ने मुझसे कहा कि नए लोगों को न लो. लेकिन क्या मैं खुदकुशी नहीं कर सकता?" इस तरह का मजाक अब तो वे कर ही सकते हैं जबकि फिल्म हिट हो रही है. इस फिल्म की सफलता के कई कारण भी हैं—हीरो-हीरोइन का होशियारी भरा चयन, बेहतर प्रचार, कर्णप्रिय संगीत और सबके ऊपर गीत जो सुनने के बाद भी कानों में गूंजते रहते हैं.

राहुल और अनु

अमरीशः दानव की अ

◆ फिल्म 'बैट मैन' क्लाइमैक्स में सुपर हीरो ने दानव—जोकर—को बहुमं इमारत से नीचे फेंक दिया पिछले पखवाड़े मुंबई के फिल्म स्टुडियो में नाटकीय प्रकट हो गया. पर यह निकॉल्सन के रूप में नहीं, **पुरी** के रूप में प्रकट हुआ. 'बजरंग' में अमरीश यही कर रहे हैं. फिल्म के मुहूर्त अकार्डियन के साथ अंग्रेजी गाते दिखे. बाद में उन्होंने "यह मूल कथा से अ 'उडान' है." इस फिल्म दानव बच्चों को फुसलाकर बना लेता है. वे कहते हैं अभिनय शैली निकॉल्सन से है." जाहिर है, मेकअप समानता से अभिनय में तो नहीं आती.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. CC-GFK-16R2

REGISTERED No. LNW/FBD/46/87
D—(C) 14/86
REGISTRATION NO. R.N. 45823/86

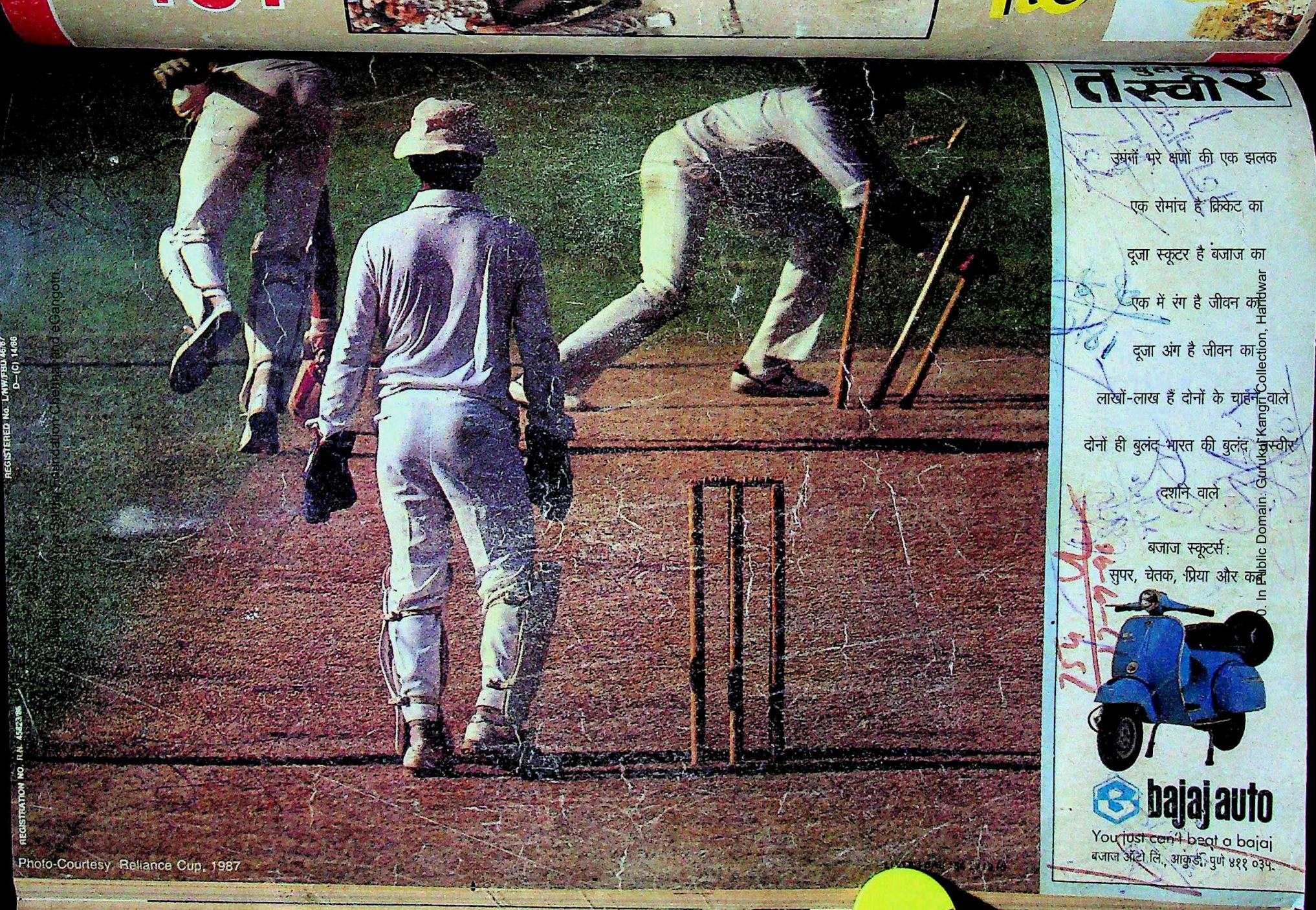
तस्वीर
उमंगों भरे क्षणों की एक झलक
एक रोमांच है क्रिकेट का
दूजा स्कूटर है बजाज का
एक में रंग है जीवन का
दूजा अंग है जीवन का
लाखों-लाख हैं दोनों के चाहने वाले
दोनों ही बुलंद भारत की बुलंद तस्वीर
दर्शाने वाले
बजाज स्कूटर्स:
सुपर, चेतक, प्रिया और कब
bajaj auto
You just can't beat a bajaj
बजाज ऑटो लि., आकुर्डी, पुणे ४११ ०३५.

Photo-Courtesy: Reliance Cup, 1987

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पेइचिंग एशियाड: अपने अपने खेल

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार मंत्रिमंडल: जिम्मेदारियां बनीं बेड़ियां

1-15 अक्तूबर 1990 ? रुपए

इंडिया टुडे

संपूर्ण समाचार पत्रिका

लपटों में घिरा राजीव गोस्वामी

मंडल रिपोर्ट

हानिकारक हश्र

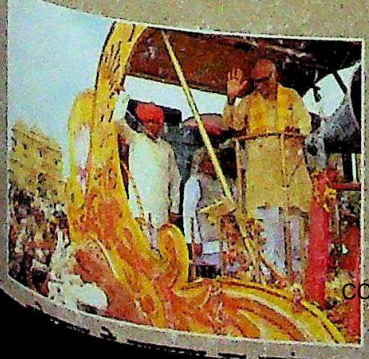

भाजपा

तकरार के तेवर

घातक जातिवादी और सांप्रदायिक उभारों के कारण

वी.पी. सिंह का राजनैतिक अस्तित्व खतरे में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ESCORTS

जानदार सवारी एक शानदार सवारी

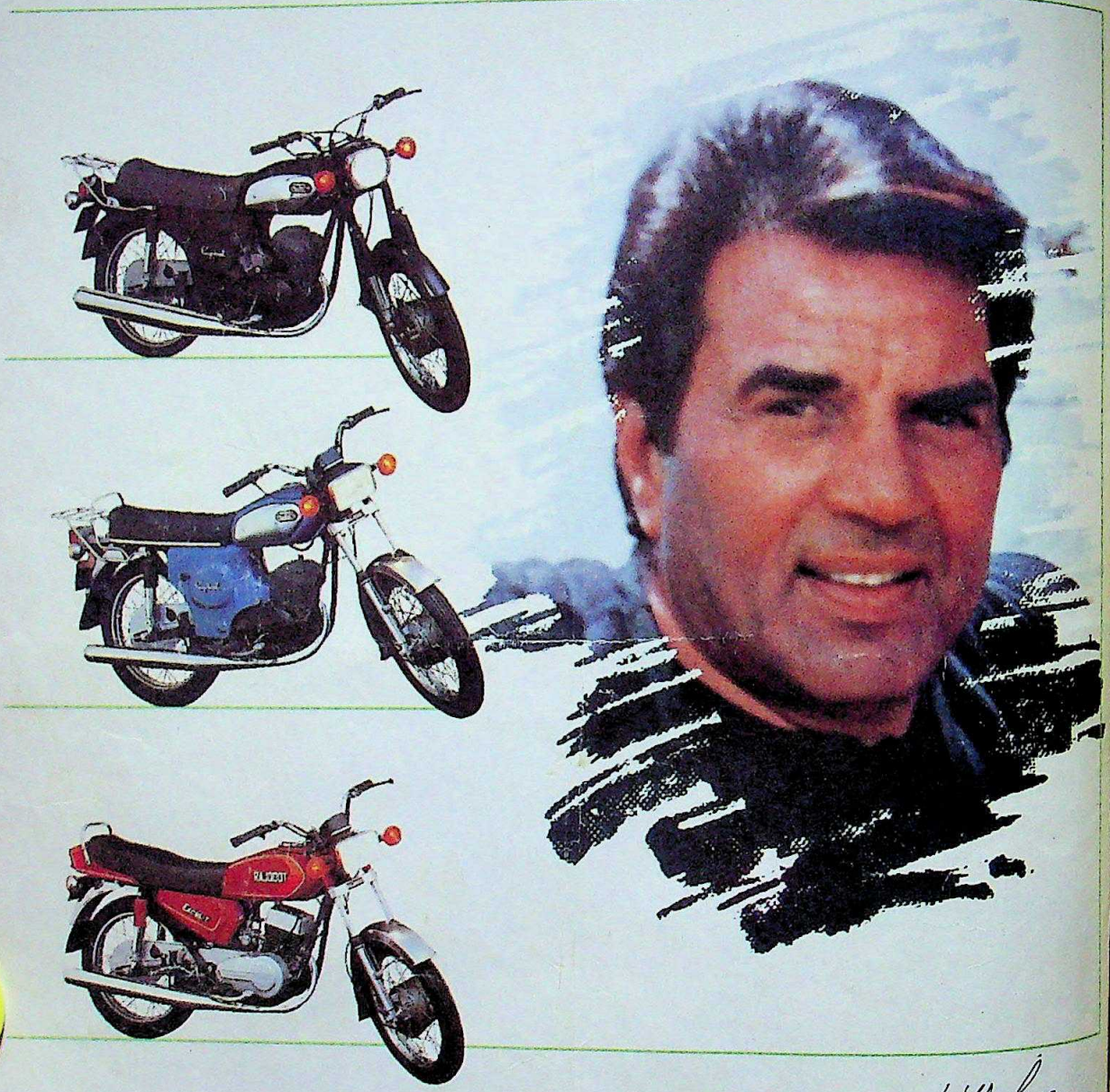

- सुगम गति के लिये 175 सी. सी. का इंजिन
- रख-रखाव इतना आसान कि साधारण मैकेनिक भी आसानी से इसकी सर्विसिंग कर सकें.
- कम दाम के असली पुर्जे हर जगह उपलब्ध.
- वर्षों चलने के लिये मजबूत डबल क्रैडल फ्रेम.

11,00,000 से भी ज्यादा राजदूत सवार इसके साक्षी हैं
क्रेशबार, साड़ी गार्ड, साईड स्टैंड
एवं हैलमेट अतिरिक्त उपवस्तुएं हैं।

हमेशा प्रयोग करें असली राजदूत पुर्जे

राजदूत

जाना-परखा • भरोसेमंद • बेमिसाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हानिकारक हश्र

एक छात्र के आत्मदाह के बाद आरक्षण विरोधी आंदोलन एकाएक तेज हो गया. इससे बद में संकट पैदा हो गया. देवीलाल के इस्तीफे ने इसे नया मोड़ दे दिया है. केंद्र सरकार भाजपा अध्यक्ष की रथयात्रा से भी भारी दबाव में है.

आवरण कथा.....20

गंवाए मौकों की दास्तान

पंजाब में लोकतांत्रिक प्रक्रिया बहाल करने का मौका फिर गंवाने से वहां लोगों को राहत मिलने की संभावना नहीं है. राष्ट्रपति शासन की अवधि बढ़ाए जाने के फैसले से फिर साबित हो गया है कि वी.पी. सिंह भाजपा और वामपंथी दलों के आगे असहाय हैं.

खास रपट.....34

जिम्मेदारियां बन गईं बेड़ियां

लालू यादव के मंत्री अपने विभागों की लंबी फेहरिस्त से परेशान हैं. नतीजा यह कि मंत्रियों के कामकाज पर उंगली उठाई जा रही है. अपराधियों को संरक्षण देने, भ्रष्टाचार के आरोपों के अलावा कई के आचरण पर भी विवाद उभरने लगे हैं.

खास रपट.....38

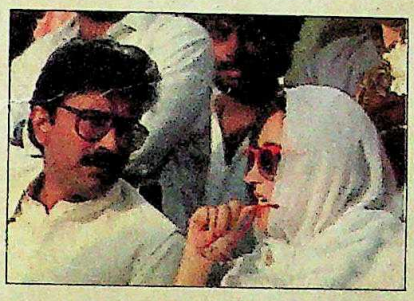

मुकदमों की सियासत

पाकिस्तान की अंतरिम सरकार बेनजीर भुट्टो और उनके पति के खिलाफ मुकदमा-दर-मुकदमा दायर करके उन्हें दरकिनार करने की कोशिश में है. लेकिन बेनजीर के पक्ष में जबरदस्त सहानुभूति लहर से उसकी कोशिश पर पानी फिरता-सा लग रहा है.

पास-पड़ोस.....56

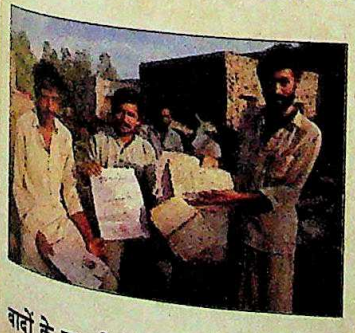

वादों के हवाई किले

हरियाणा में 1986 में देवीलाल की ऐतिहासिक जीत कुछ अनोखे लोक लुभावन वादों पर आधारित थी. लेकिन तीन साल के शासन की कहानी बेरोजगारी भत्ते, वृद्धों को पेंशन, कर्जमाफी वगैरह की वादाखिलाफी की मनगढ़ंत दास्तां ही है.

खास रपट.....58

अपने अपने खेल

पेइचिंग एशियाड के प्रारंभ होने के पहले ही उस पर खाड़ी संकट की छाया मंडराने लगी थी लेकिन शानदार उद्घाटन समारोह और एशियाई खेल प्रतिस्पर्धाओं के लिए उत्साह तथा उत्तेजना में वृद्धि के साथ यह अपशकुनी छाया छंट गई.

खेलकूद.....76

अगले पन्नों पर

कसौटी 11
राजरंग 12
तेवर 17
हिंदोस्तां हमारा 18
आवरण कथा
मंडल रिपोर्ट:
हानिकारक हश्र 20
भाजपा: तकरार के तेवर 30
खास रपट
पंजाब: गंवाए मौकों की दास्तान 34
बिहार मंत्रिमंडल:
जिम्मेदारियां बन गईं बेड़ियां 38
आजकल
मोदी हत्याकांड: अप्रत्याशित फैसला ... 45
राजस्थान: कटौतियों की कैंची 48
रोहिन हत्याकांड:
दोस्तों की दुश्मनी 50
हरियाणा: फिर बजी बंसी 51
राज्य-दर्पण 53
कूटनीति
खाड़ी संकट:
झूठी उम्मीदों के सहारे 54
पास-पड़ोस
पाकिस्तान:
मुकदमों की सियासत 56
खास रपट
हरियाणा:
वादों के हवाई किले 58
व्यापार चक्र 65
कारोबार
उद्योग नीति: इरादों का बयान 66
टूथपेस्ट: चमकने का चक्कर 68
शेयर बाजार 69
स्वास्थ्य
ब्लड बैंक: खतरे भी बहुतेरे हैं 70
सिनेमा
चिरंजीवी: परदे पर तूफान 74
खेलकूद
पेइचिंग एशियाड:
अपने अपने खेल 76
जगबीती
ब्रिटेन: देसी रेडियो की धूम 81
अंतरंग 85
आरपार 87
कला
बिहार: कागजी वादों के भवन 88
कहानी 94
किताबें 100
परदे के उस पार 102
चर्चित चेहरे 104

आवरण: रविंद्रन/एएफपी
प्रमोद पुष्करणा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

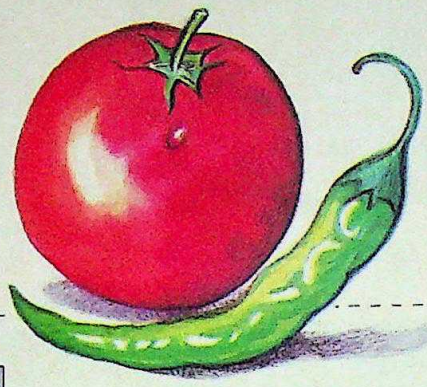

कम तेल के पकवान

डॉ. सुमेधा साहनी
एम.बी.बी.एस., एम.डी.

"इन्हें रसोई में स्वास्थ्य के लिए हानिकारक मत बनाइए"

डॉ. सुमेधा साहनी बम्बई के एक प्रमुख मेडिकल कॉलेज में लेक्चरार हैं। उनका कहना है : "सब्ज़ियों, दालों और खाद्यान्नों को बिल्कुल सही तरीके से ही पकाना चाहिए – जितना कम हो सके उतने तेल से। बहुत ज़्यादा तेल स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।"

वह कहती हैं – "खाने की इन चीज़ों में ऐसे प्राकृतिक तेल खुद ही मौजूद हैं जो हमें स्वास्थ्य के लिए जरूरी चर्बी प्रदान करते हैं।" हमारे शरीर को इस अदृश्य तेल के अलावा और तेल बहुत कम चाहिए।

इसीलिए परिवार के भोजन में पकाने का तेल रोज़ दो टेबलस्पून–या महीने में आधा किलो से अधिक नहीं होना चाहिए।

नेशनल इंस्टीट्यूट आफ न्यूट्रीशन, हैदराबाद के वैज्ञानिकों का कहना है कि हमें भोजन में जितनी चर्बी चाहिए उसकी तुलना में भारत में हम दोगुनी या तीन-गुनी अधिक चर्बी लेते हैं। इंस्टीट्यूट की चेतावनी है कि यह बात स्वास्थ्य के लिए और विशेषकर हृदय के लिए बहुत खतरनाक है।

कम तेल वाले यह व्यंजन बनाइए। आपको खुद ही लगेगा कि कम तेल से पका खाना स्वास्थ्यवर्द्धक होता है, और स्वादिष्ट भी!

बिना तेल के ओकरा

½ कि.ग्रा. ओकरा (भिंडी) : 2 बड़े पके स्लाइस किए टमाटर, 2 मंझोले स्लाइस किए प्याज़, 2-4 कटे हुए हरे मिर्च, 1 चम्मच भरके धनियां की कटी पत्तियां, 2 चम्मच सिरका, नमक स्वाद के अनुसार, इतना पानी जो ओकरा (भिंडियों) और इस सारी सामग्री को ढक ले।

विधि : ओकरा धो डालें और उनके सिर की घुंडियां काट दें। इस सारी सामग्री को स्टेनलेस स्टील या अल्यूमिनिअम के पैन में रखकर आधे घंटे तक रहने दें। फिर तेज आँच पर इन्हें उबालें और तब तक ही पकाएं जब तक ओकरा तैयार न हो जाएं लेकिन कुरकुरे बने रहें। इन्हें जूस के साथ गरम गरम परोसिए। (सर्व 3-4)

स्टीम्ड प्रॉन

1 कि.ग्रा. प्रॉन, नमक, काली मिर्च, 1 नींबू का रस, 1 बीज निकला बारीक कटा हरी मिर्च, 4 चम्मच बारीक कटे हरे प्याँज पत्तियों सहित, दो चम्मच छिली और बारीक कटी अदरक, ½ कप चिकन स्टॉक या पानी, 1 चम्मच नमक, 2 चम्मच सीसेम तेल (तिल), दो बड़ी चम्मच कॉर्न फ़्लावर, 1 चम्मच सोया सॉस।

विधि : प्रॉन छील लीजिए, काली नसें निकाल दीजिए और धो डालिए। इन पर नमक, काली मिर्च और नींबू का रस मलिए और आधे घंटे तक रखा रहने दीजिए। फिर इन्हें 6 सें. 8 मिनट तक स्टीम कीजिए। गर्म बनाए रखिए। चिकन स्टॉक या पानी एक पैन में डालिए, उसमें नमक और सीसेम तेल मिलाइए। कॉर्न फ़्लावर में थोड़ा पानी डालकर मिला लीजिए और अलग रखिए। अब स्टॉक को उबालिए, उसमें कॉर्नफ़्लावर मिलाइए और इसे दुबारा उबलने तक आँच पर रखिए।

इसमें सोया सॉस और ज़रूरत हो तो नमक मिलाइए। अब प्रॉन को एक चौड़ी प्लेट में रखिए, इन पर मिर्च, हरा प्याज़ और अदरक डालिए। ऊपर गरम सॉस छिड़किए-और परोसिए। (सर्व 4)

मुफ्त

स्वादिष्ट तथा कम तेल युक्त पकवान तैयार करने की विधियां मंगवाने के लिए लिखें, पो. बॉ. नं. 55 नई दिल्ली-110 001.

"कम तेल से बेहतर स्वास्थ्य केवल ½ किलो प्रति व्यक्ति प्रति माह"

तिलहनों के बारे में टैक्नालॉजी मिशन द्वारा जन हित में प्रकाशित

ASP-D/TMO

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्चे लोग सच्चा आनन्द

रेड एण्ड व्हाइट

वही न.१ स्वाद

...सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाल्डी रेडीमेड की परिपूर्णता

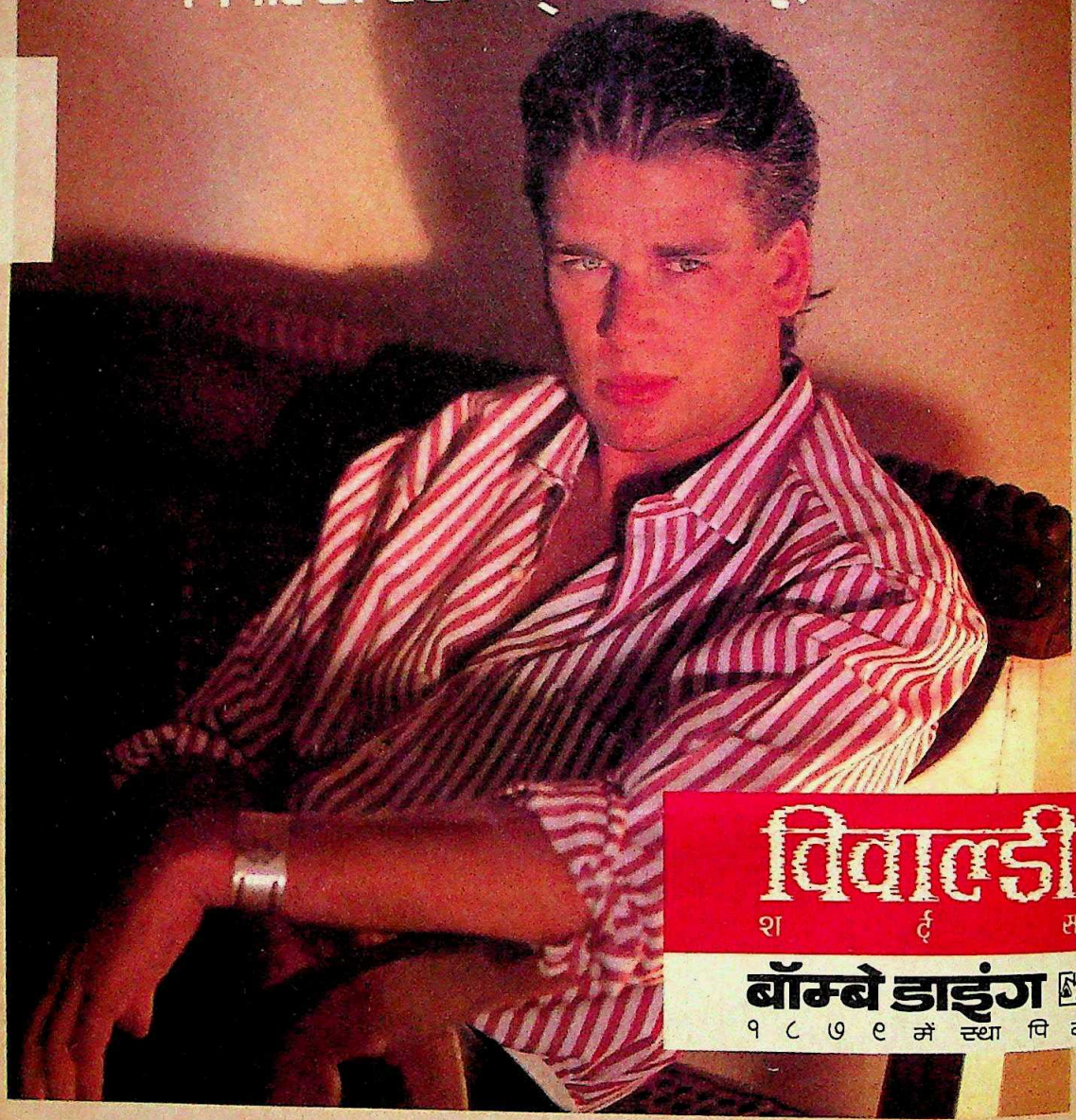

शर्टिंग कपड़ों के क्षेत्र में कामयाबी के झंडे गाड़ने वाले जब टेलरिंग के मैदान में क़दम रखें तो परिणाम: रेडीमेड परिपूर्णता. बॉम्बे डाइंग के विवाल्डी शर्ट्स. बेहतरीन कॉटन और पॉलिएस्टर कपड़ों के चुनाव से लेकर आखिरी बटन तक क्वालिटी के ऊंचे स्तर पर गहरी नज़र. क्योंकि कारोबारी होने के नाते हम अच्छी तरह जानते हैं आपकी पसन्द.

---------- विवाल्डी. एक एक टांका, जांचा परखा ----------

चुने हुए बॉम्बे डाइंग शोरूम्स में उपलब्ध.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्साहवर्धक परिदृश्य

ग्यारहवें एशियाड की तैयारियों पर रिपोर्ट 'उम्मीद की किरणें' (30 सितंबर) रोमांचक और उत्साहवर्धक लगी. इसी अंक में कसौटी 'क्यों नहीं पनप पाता पुनरूत्थान' सच के ज्यादा करीब थी. पदक तालिका में भारत कहां होगा यह तो 15 दिन बाद ही पता चल पाएगा. लेकिन जब खेलों पर राजनीति हावी रहेगी और खिलाड़ियों के स्वास्थ्य का स्तर सुधारा नहीं जाएगा, उम्मीद की किरणें बुझती ही नजर आएंगी और पदक नहीं मिल पाएंगे.

—स्वाति बसु, दिल्ली

विनाश के बीज

'ओट में वोट, समाज पर चोट' (15 सितंबर) सटीक व समीचीन लगा. वी.पी. सिंह ने मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू करने का फैसला कर महाविनाश के बीज बो दिए हैं. ऐसे माहौल में क्षुद्र राजनीति ही फलती-फूलती है. इस घोषणा में पिछड़ों का कल्याण नहीं बल्कि अपना स्वार्थ छिपा हुआ है.

—दीपक कुमार दीक्षित, पटना (बिहार)

■ छात्रों का आंदोलन वास्तव में दलितों के विरुद्ध न होकर उन लोगों के विरुद्ध है, जिन्होंने देश की सामाजिक विषमताओं को मत्ता हथियाने और उसे बनाए रखने का साधन बना लिया है.

—प्राची, मुरादाबाद (उ.प्र.)

■ वी.पी. सिंह मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू करके पिछड़ी जातियों का वैसा ही अहित कर रहे हैं. जैसा अंग्रेजों ने चीनियों को अफीम की लत डलवाकर चीन का किया था.

—पुष्य कीर्ति, लखनऊ (उ.प्र.)

■ आवरण कथा जातीय दुर्भावना से प्रेरित लगती है. सरकार पर जातिवादी होने का आरोप बेमानी है. जाति का बंटवारा तो तथाकथित ऊंची जातियों ने ही किया है. सरकार तो जातियों को बराबर करने का प्रयास कर रही है.

—सुनील कुमार पुष्प, पटना (बिहार)

■ ऐसे समय जब राम जन्मभूमि कश्मीर, पंजाब, असम और मंहगाई जैसी समस्याएं मुंह बाए खड़ी हों, एक दशक से ठंडे बस्ते में पड़ी मंडल रिपोर्ट को लागू करने की घोषणा कहां की समझदारी है.

—संजीव कुमार गुप्त, मापसा (गोवा)

■ मंडल आयोग की सिफारिशों के अनुसार तथाकथित पिछड़ी जातियों के लिए आरक्षण का फैसला निस्संदेह धर्मनिरपेक्ष, लोकतंत्रवादी भारतीय संविधान का खुला उपहास है. विडंबना

यह है कि प्रधानमंत्री समेत कई जातिवादी नेता संघर्ष भड़काने वाले वक्तव्य भी दे रहे हैं.

—बसंत कुमार झा, हजारीबाग (बिहार)

कैसी प्रगति

'उखड़ते-जमते कदम' (15 सितंबर) में राष्ट्रीय मोर्चा सरकार का प्रगति विश्लेषण काबिले तारीफ था. लोगों ने राष्ट्रीय मोर्चा को बड़ी उम्मीद से चुना था कि परिवर्तन से देश को नई दिशा मिल सके. लेकिन मोर्चा सरकार इस कसौटी पर कतई खरी नहीं उतरी.

—वरुण अग्रवाल, दिल्ली

प्रशंसनीय काम

'इस बार दिखाए जौहर' (15 सितंबर) पढ़ा. भारतीय क्रिकेट टीम के

बल्लेबाजों ने इंग्लैंड में अपनी शानदार बल्लेबाजी से क्रिकेट समीक्षकों से लोहा मनवाया इसमें तनिक भी संदेह नहीं. कप्तान अजहरुद्दीन की टीम ने न केवल मैदान में बल्कि मैदान से बाहर अपने विनम्र आचरण से जिस तरह लोगों का दिल जीता वह प्रशंसनीय है.

—उदय प्रकाश श्रीवास्तव, गोरखपुर (उ.प्र.)

गृहयुद्ध की स्थिति

'जातीय बंटवारे का बीज' (15 सितंबर) के तहत आरक्षण के सभी पहलुओं का खुलासा किया गया है. लेकिन बीज के बजाए वटवृक्ष शब्द ज्यादा सटीक होगा. वोटों के लालच में इन नेताओं ने देश को गृहयुद्ध की स्थिति में धकेल दिया है.

—बृजेश विजयवर्गीय, कोटा (राजस्थान)

वाहवाही के लिए

'नुमाइंदों को नजराना' (15 सितंबर) से स्पष्ट है कि बिहार के मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव का पेट्रोल की बचत के उद्देश्य से साइकिल पर कार्यालय जाना सिर्फ वाहवाही लूटने का तरीका है. वरना कार खरीदने के लिए ब्याजमुक्त कर्ज देने का फैसला क्या पेट्रोल की खपत को

वर्ष: 4, अंक: 23, 1-15 अक्तूबर 1990

■ संपादकीय कार्यालय: लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001. फोन: 331 5801-4, टेलेक्स: 31-61245 INTO IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली. ■ मुख्य सर्कुलेशन कार्यालय: इंडिया टुडे सर्कुलेशन मैनेजर, एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001. फोन: 3313076-8, टेलेक्स: 31-62634 INTO IN, तार: सर्कुलेट, नई दिल्ली. ■ मुख्य विज्ञापन कार्यालय: 28 ए और बी, जॉली मेकर-2, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. फोन: 2026152, 2029326, 2029435, टेलेक्स: 11-5373 THOM IN, तार: लिवमीडिया, बंबई. ■ क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय: सी-9, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001, फोन: 3325378, 3323576, 3321273; टेलेक्स: 31-62124 THOM IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली ● फागुन चैंबर्स, 26 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105. फोन: 477188, टेलेक्स: 041-6177 INTO IN, तार: लिवमीडिया, मद्रास ● 74/1 सेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001. फोन: 568448, 579037, 579089, टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN, तार: लिवमीडिया, बंगलूर ● 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700016 फोन: 225398, 221922, टेलेक्स: 21-7138 INTO IN, तार: लिवइन-मीडिया, कलकत्ता. ● कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता. ● लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ावा नहीं देगा?

—आकाश गिदवानी, चित्तौड़गढ़ (राज.)

विवेक नहीं दिखाया

'राजनैतिक बाजीगरी की बू' (कसौटी 15 सितंबर) सामयिक था. प्रधानमंत्री यदि जरा भी विवेक से काम लेते और आरक्षण देने की बजाए ऐसे छात्रों को निःशुल्क होस्टल, सुविधाएं, पुस्तकें व कोचिंग आदि की सुविधा देकर योग्य बनाते तो बेहतर होता. लेकिन उनकी सरकार ने अवैज्ञानिक आधार और 1931 की जनगणना पर तैयार रिपोर्ट लागू करके बवंडर मचा दिया.

—गोपाल कुंवर सिंह, भरतपुर (राज.)

समीक्षा जरूरी

राजरंग में 'संघर्ष का फल' (15 सितंबर) पढ़कर ज्ञात हुआ कि सेना में व्यवस्था और जनहित का मुद्दा उठाने का यह हश्र होता है. ले. जनरल सरदेशपांडे के साथ जो कुछ हुआ उसे देख यही लगता है कि आर्मी एक्ट व आर्मी रूल्स की पुनः समीक्षा जरूरी है.

—हेमेंद्र चतुर्वेदी, आगरा (उ.प्र.)

मजबूरी के मारे

'इलाज की नई संस्कृति' (15 सितंबर) असल में मरीजों की मजबूरी भी बन चुकी है क्योंकि सरकारी अस्पतालों में लापरवाही, समय पर उचित

इलाज की कमी और दूसरी तरह की परेशानियां मरीजों के लिए घातक सिद्ध होती हैं.

—शेखर आई. दामया, नासिक (महाराष्ट्र)

झूठा इल्जाम

'आज सुधरें तो कल सुधरेगा' (31 अगस्त) में आपने जाट जाति को 'उजड्ड' और 'तुनकमिजाज' कहकर जो प्रचार किया है वह सांप्रदायिकता को बढ़ावा देने वाला है. जाट एक देशभक्त, स्वाभिमानी, धर्मनिरपेक्ष और सांप्रदायिकता से कोसों दूर रहने वाली जाति है.

—जिले सिंह अचल, महासचिव, जाट वेलफेयर एसोसिएशन, रोहतक (हरियाणा)

गरिमा का ध्यान नहीं

'पुरस्कारों की रेवड़ियां' (15 सितंबर) पढ़ा. उत्कृष्ट साहित्य के लिए दिए जाने वाले पुरस्कारों को अंधे की रेवड़ी बना दिया जाना खेद का विषय है. पक्षपाती रवैए और राजनैतिक दखलंदाजी को तुरंत रोका जाना चाहिए. इससे पुरस्कारों की गरिमा ही घटती है.

—महेंद्र सिंह चौहान, सगुर-भगूर (म.प्र.)

दोनों दोषी

'बारूद के ढेर पर' ((15 सितंबर) में असम के हालात को विस्तार से उजागर किया गया है. इस स्थिति के लिए दोनों केंद्र सरकारें (इंका और राष्ट्रीय मोर्चा) ही दोषी हैं. यदि जल्द ही असम की ओर ध्यान नहीं दिया गया तो वह भी कश्मीर और पंजाब की भांति बेकाबू हो जाएगा.

—सुनील, पटना (बिहार)

जलन, खुजलाहट, ख़ून आना शायद बवासीर हो!

तुरंत 'प्रेपरेशन एच' इस्तेमाल करें. और ऑपरेशन की नौबत से बचें.

शर्मिंदगी कैसी ?

बवासीर आम बीमारी है, लेकिन ध्यान न देने पर बढ़ सकती है और ऑपरेशन की नौबत भी आ सकती है.

अद्भुत फ़ॉरम्यूलेवाला 'प्रेपरेशन एच' दर्द और खुजलाहट से तुरंत आराम दिलाता है. इसका स्किन रेस्पिरेटरी फ़ैक्टर (एस.आर.एफ.) कोशिकाओं को जलन से मुक्त कराता है.

तुरंत आराम

''प्रेपरेशन एच'' से गुदा द्वार को चिकनाहट और नरमाई मिलती है और मल त्याग में कम पीड़ा होती है.

प्रे प रे श न – ए च

विदेशों के अग्रणी डॉक्टरों की सिफ़ारिश

Gm.250.4

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यूनाईटेड®

प्रेशर कुकर व प्रेशर पॅन

रसोई में आपका साथी

अधिकृत विक्रेता

मध्यप्रदेश

☐ जिलासपुर: मै० रूप जनरल स्टोरज़, गोल बाज़ार, • मै० [illegible] एण्ड श्याम मैटल स्टोरज़, गोल बाज़ार, • मै० [illegible] स्टोरज़, गोल बाज़ार. ☐ भोपाल: मै० रामचन्द [illegible] स्टोरज़ पी.ओ. बैरगढ़, • मै० लक्की सेन्टर, लालूवानी [illegible], ☐ छिंदवाड़ा: मै० प्रभात जनरल स्टोरज़ बुधवारी [illegible], ☐ छतरपुर: मै० हज़ारी लाल नारायण दास, चौक [illegible], ☐ दुर्ग: मै० सुभाश मेटलज़, जवाहर चौक, • मै० [illegible] मेटलज़, जवाहर चौक, • मैं० जैन एलुमिनियम, [illegible], • मै० मारुति ब्रादर्ज़, इन्दिरा मार्केट, ☐ [illegible]: मै० पाहू राम पेशु राम, टोपी बाज़ार, • मै० स्टील [illegible], जमुना लाल मार्केट, सराफ़ा बाज़ार, • मै० श्रीकृष्ण प्रभु [illegible] अग्रवाल, सराफ़ा बाज़ार, लश्कर, • मै० कुकर सेल्ज़ [illegible], फालका की गोद, लश्कर, ☐ इंदौर: मै० बम्बे [illegible] हाउस, 6/5, खातीपुरा, एम.जी. रोड, • मै० कुमार [illegible] स्टोरज़, एम.जी. रोड, (कृष्णपुरा), • मै० रामचन्द [illegible] राम, 2, कसेरा बाज़ार, • मै० छोइत राम एण्ड सन्ज़, [illegible] महावीर मार्ग, • मै० रामचंद एण्ड सन्ज़, कसेरा [illegible], • मै० [illegible] ब्रादर्ज़, 31, श्री महावीर मार्ग, ☐ [illegible]: मै० सिटीज़न सेन्टर, 24-25 आशीर्वाद मार्केट, [illegible] चौक, • मै० नेशनल स्टोरज़, जवाहरगंज, • मै० [illegible] स्टील एम्पोरियम, 18 आशीर्वाद मार्केट, लार्डगंज, • [illegible] ट्रेडर्ज़, कोतवाली बाज़ार, • मै० नारायण ब्रादर्ज़, 631, खटीक मोहल्ला, सराफा बाज़ार, ☐ कोरबा: मै० श्री रामगोपाल राधेश्याम अग्रवाल, मेन रोड, ☐ कटनी: मै० भारत स्टीलज़, शालीमार मार्केट, • मै० राधास्वामी बर्तन भण्डार, माधव नगर, • मै० गुरु नानक क्रोकरी स्टोर, गोल बाज़ार, ☐ रायपुर: मै० बम्बे टॉयज़ सेन्टर, बनजारी रोड, • मै० मनमोहन चंद जैन, सदर बाज़ार, • मै० सुराना ब्रादर्ज़, पो.बॉक्स नं. 27/59, मालविया रोड, • मै० अभिनव ट्रेडर्ज़, 19, अशोक मार्केट, नया पाड़ा, • मै० जे.एम. डग्गा मेटल मार्ट, बुद्धापुरा, • मै० इंडियन गिफ्ट हाऊस, 4/5, शदानी मार्केट, बनजारी रोड, • मै० सुरेश ब्रादर्ज़, पो. बॉक्स नं. 53, मालविया रोड., ☐ रीवा: मै० विजय क्रॉकरी स्टोरज़, वेंकट रोड, • मै० राज इलैक्ट्रीकल, 8, वेंकट मार्केट, ☐ रतलाम: मै० नंदन एजेंसीज़, 10/A, डालू मोदी बाज़ार, • मै० हकीमुद्दीन एण्ड सन्ज़, मानक चौक, ☐ सतना: मै० गिफ्टो स्टील सेन्टर, पन्नीलाल चौक, • मै० बुद्धू लाल गोविन्द प्रसाद, चाँदनी टाकीज़ के पीछे, ☐ सागर: मै० जैना स्टील, कटरा बाज़ार, • मै० शोभा राम सुरेश चंद, चक्र घाट, ☐ उज्जैन: मै० अली मोहम्मद, गुलाम हुसैन, गोपाल मंदिर मार्ग, चौक बाज़ार, • मै० महालक्ष्मी पात्र भण्डार, 125, पाटनी बाज़ार

बिहार

☐ पटना: मै० अजन्ता कमर्शियल कं० एक्ज़िबिशन रोड.

हिमाचल प्रदेश

☐ कुल्लू: मै० कक्कर एण्ड लाम्बा जनरल स्टोर्स, अखेरा बाजार, ☐ मंडी: मै० हिमाचल जनरल स्टोर्स, गांधी चौक, ☐ मनाली: मै० थामस स्टोर्स, दी माल, • मै० हिम जनरल स्टोर्स, दी माल, ☐ पारवानु: मै० हिमाचल होलसेल सिंडिकेट, S.C.F-27, सेक्टर-1, ☐ रामपुर बुशहर: मै० राम किशन जीवा राम, मैन बाजार, • मै० श्याम सिंह एण्ड ब्रदर्स, मेन बाजार, • मै० राजेश ब्रदर्स, मेन बाजार, ☐ शिमला: मै० संत लाल इंदर सेन अग्रवाल, 31 लोवर बाजार, • मै० जानेश्वर लाल राजेश्वर लाल, लोवर बाजार, • मै० बंगाल क्रोकरी हाउस, एग मार्किट, ☐ तापड़ी: मै० ज्ञान चन्द यश पाल, वी एवं पी ओ :

पश्चिमी बंगाल

☐ बर्द्धवान: मै० वैस्ट बंगाल स्टोर, 185 बी०बी० घोष रोड, तेनतुलतला, ☐ सिलीगुड़ी: मै० सरिया टी कं०, चौधरी कटरा, महाबीरस्थान।

मनिपुर

☐ इम्फाल: मै० देवदूत इन्टरप्राईजिज़, थंगल बाज़ार, पो.ओ.

असम

☐ गुव्हाटी: मै० प्रिया नाथ कार, देवन पेटी रोड, फैंसी बाज़ार.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शालें

जिनमें छलके
मुग़लों की आन-बान
सदियों की शान और
प्राकृतिक अद्‌भुतता!

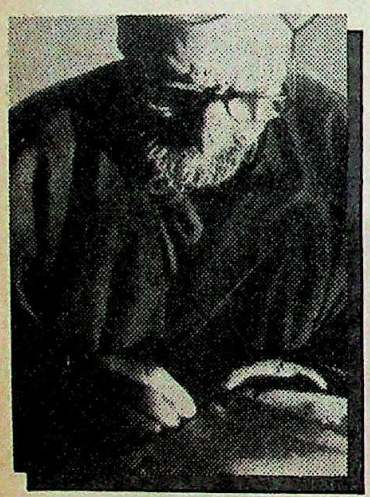

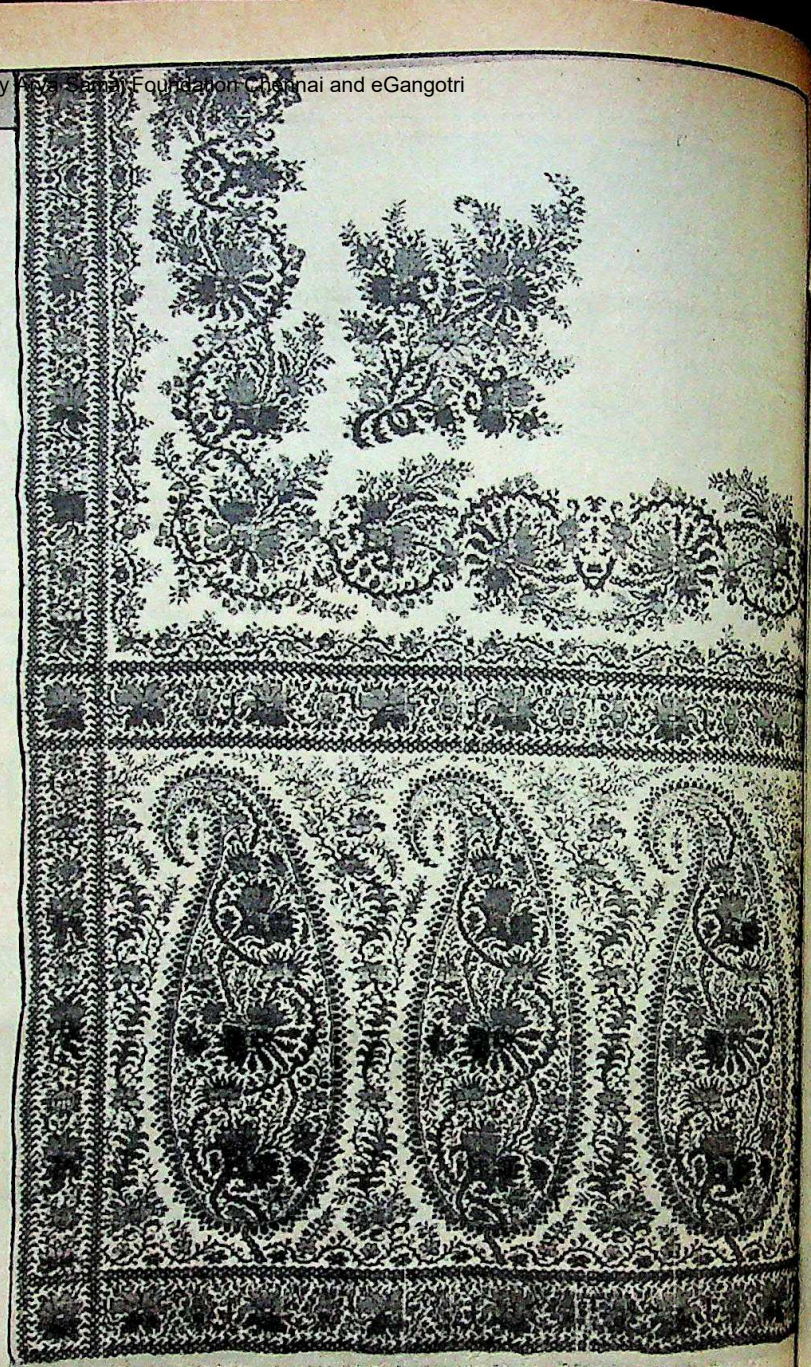

पश्मीना
शाहतूश
जामावार

आहूजासंस शालों की दुनिया की वैभवशाली परम्पराओं को आपके सम्मुख गर्व से प्रस्तुत करते हैं।
शालें जो सम्राटों, नरेशों और नवाबों की मनमोहक सज्जा की प्रतीक रही हैं।
शालें जो प्रकृति की उत्कृष्ट कला तथा रंगों को दर्शाती हैं—जिनके प्रत्येक धागे में पिरोया गया है – वैभव तथा सौंदर्य।

आहूजासंस—जिनके लिए शाल कोई व्यापारिक वस्तु नहीं है बल्कि एक गौरवपूर्ण परम्परा है।

आहूजासंस
शाल वाले (प्रा०) लि०

6/44, अजमल खां रोड, करोलबाग, नई दिल्ली-110 005, फोन : 5720304, 583154

खुदरा विक्रेता • थोक विक्रेता • निर्यातक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने घर में बुनता बुनकर
नित नए नमूने आकर्षक

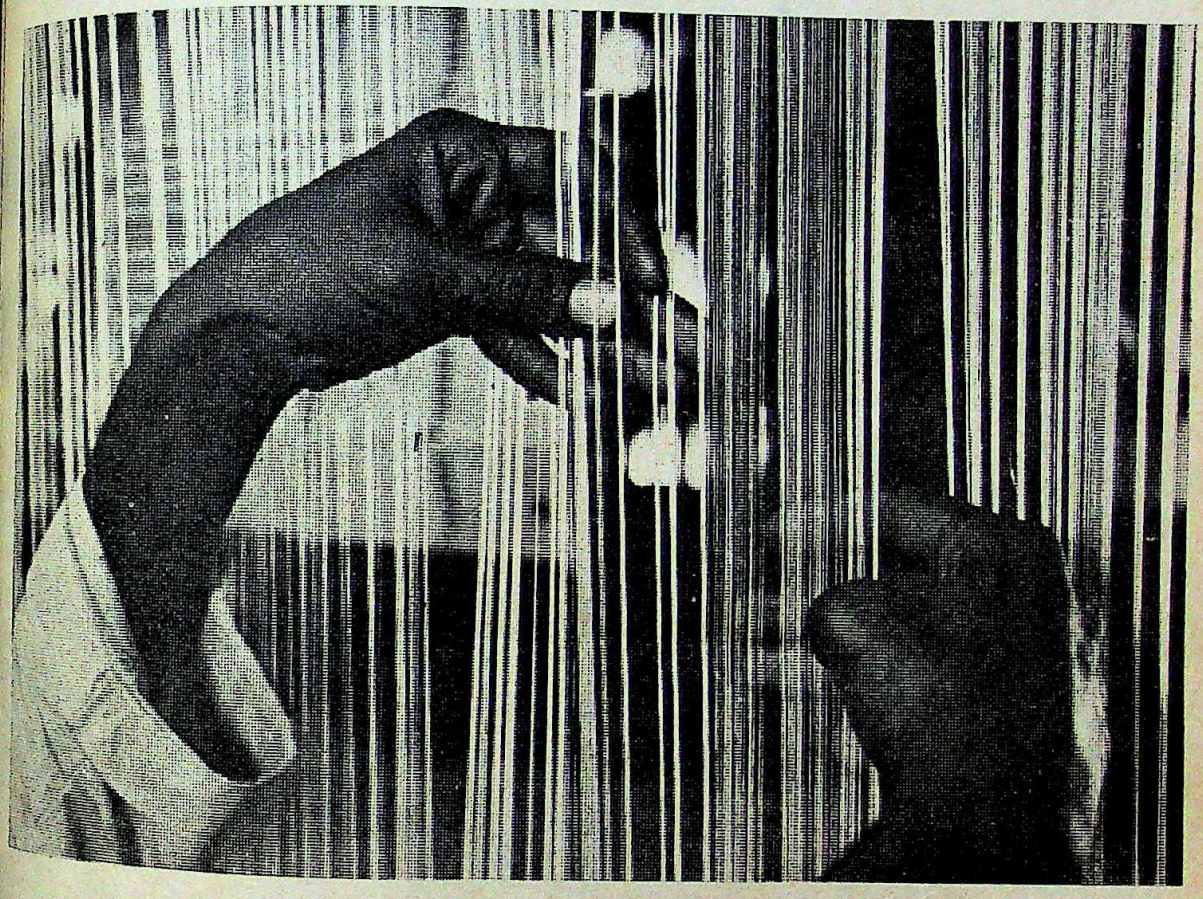

हडको अपनी आवास एवं कार्यस्थल योजनाओं के माध्यम से 8,000 से भी ज्यादा बुनकर परिवारों की सहायता कर रहा है।

हडको

घर अपना सच सपना

लदवस तथा नगर विकास निगम लिमिटेड

मुख्यालयः हडको हाउस, लोधी रोड, नई दिल्ली-110 003 फोनः 699534 टेलेक्सः 031-61037 एच यू डी सी इन, ग्रामः हडको, फैक्सः 625308

संयुक्तिक कार्यालयः मद्रास

क्षेत्रीय कार्यालयः अहमदाबाद, बम्बई, बंगलौर, कलकत्ता, चंडीगढ़, दिल्ली, गुवाहाटी, जयपुर, भोपाल, भुवनेश्वर, हैदराबाद, लखनऊ, त्रिवेन्द्रम

विकास कार्यालयः पटना, पोर्ट ब्लेयर, गोआ, शिमला, श्रीनगर, पांडीचेरी -

जन साधारण की सेवा में लगा - सार्वजनिक क्षेत्र

HUDCO/HHEC/INCENTIVE 2/90

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन का दूसरा सबसे महत्त्वपूर्ण निर्णय जो आप दोनों को मिलकर लेना होगा

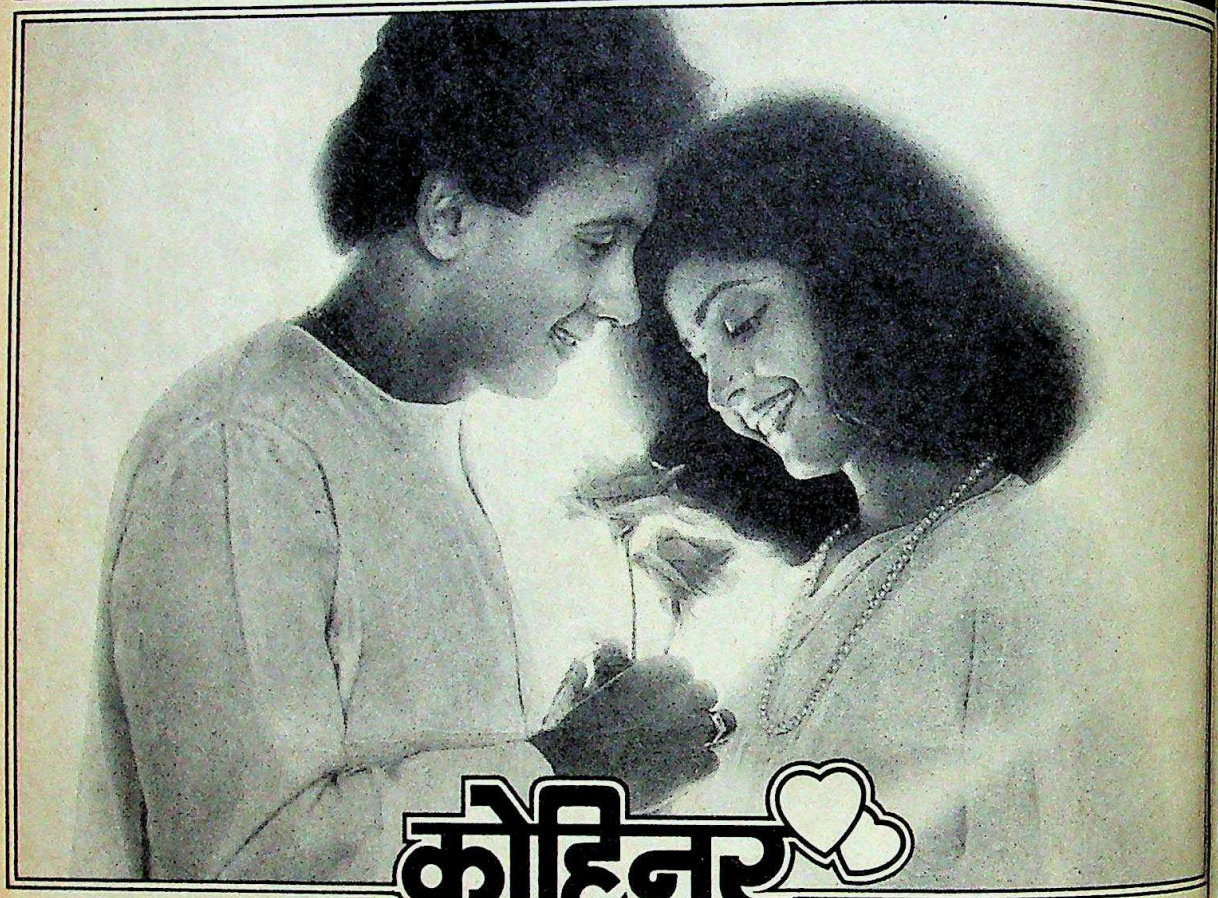

कोहिनूर

बेहतरीन गुलाबी कॉन्डोम

आप दोनों ने एक दूसरे का हो जाने व जीवन के उतार-चढ़ाव में साथ निभाने का निर्णय ले लिया है । अब अपने जीवन का दूसरा सबसे महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने का आप दोनों के लिए यही समय है । आप दोनों को संतान व अन्य बढ़ती ज़िम्मेदारियों के दैनिक चक्र में बन्धने से पूर्व अपने आप को कुछ वर्ष देने होंगे । इसके लिए आपको आवश्यकता है एक ऐसे गर्भनिरोधक की जो आप दोनों के अनुकूल हो ।

ऐसा गर्भनिरोधक जो सम्पूर्ण सुख व सुरक्षा प्रदान करने के लिए शरीर पर अनुचित प्रभाव नहीं डालता, कष्टकर डाक्टरी जाँच को आवश्यक नहीं बनाता व दिन गिनने और तापमान मापने की चिन्ता व तनाव को दूर रखता है । ऐसा सुरक्षित, आसान व विश्वसनीय गर्भनिरोधक है कॉन्डोम ।

विश्वसनीय कोहिनूर

हज़ारों युवा दम्पति अपने बच्चों के जन्म में उचित अन्तर रख अपने परिवार का नियोजन विश्वसनीय कोहिनूर के सहारे करते हैं । कोहिनूर आपके मिलन के सुख में बाधा डाले बिना बहुत सहज ढंग से आपको सम्पूर्ण आनन्द प्रदान करता है । यह उच्च कोटि के लेटेक्स रबड़ से बनाया जाता है । सम्पूर्ण सुरक्षा प्रदान करने के लिए इसकी इलेक्ट्रॉनिक जाँच की जाती है । कोहिनूर के निर्माता आपकी एकांतता व सुरक्षा की आवश्यकता को भलीभांति समझते हैं । कोहिनूर — इसे नाम लेकर ही खरीदिए और विश्वसनीय कोहिनूर के सहारे निश्चिन्त हो जाइए ।

कोहिनूर तीन कॉन्डोम व दस कॉन्डोम के पैकेटों में उपलब्ध है ।

परिवार नियोजन — विश्वसनीय कोहिनूर के संग !

MAA COMMUNICATIONS 1162

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढोल की पोल

सभी रेखाचित्र: अजीत नैनन

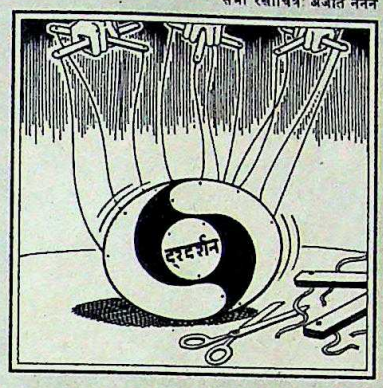

प्रसार भारती विधेयक का मौजूदा स्वरूप जिस तरह से हिंदुस्तानी राजनीतिकों की खोपड़ी में व्याप्त असमंजस और अस्पष्टता का आईना बनकर सामने आया है उसे देखते हुए यह सवाल फिर से उठता है कि क्या वे कभी किसी काम को ठीक तरह कर भी पाएंगे या नहीं?

बहस और वादों के बरसों चलने वाले सिलसिले के बाद इस मुद्दे पर एक राष्ट्रीय सहमति उभरी थी कि आकाशवाणी और दूरदर्शन को स्वायत्तता दी जानी चाहिए. इस देश के लिए यह जरूरी भी था. आखिर एक ऐसे देश में जहां सरकारी अंगूठे के नीचे चलने वाले विशालकाय रेडियो और टीवी के माध्यम से परोसे जाने वाले सरकारी प्रचार ने अखबारों और पत्रिकाओं की आजादी का कचूमर निकाल दिया हो, वहां प्रेस की आजादी का मुद्दा महज एक मखौल ही तो बनकर रह गया था.

न सिर्फ राष्ट्रीय मोर्चे ने सत्ता में आने पर इन माध्यमों को सरकारी पंजे से मुक्त करने का वादा किया था बल्कि सूचना और प्रसारण मंत्रालय को संभालते समय पी. उपेंद्र ने यह घोषणा भी कर डाली थी कि वे इस मंत्रालय को भी भंग करवा-कर छोड़ेंगे. मगर बदकिस्मती से इस विधेयक ने यही सिद्ध किया है कि व्यवस्था ही बदलाव का गला घोंट देती है.

एक तरह से नई व्यवस्था भी नई बोतल में पुरानी शराब जैसी ही होती है. नई व्यवस्था में आकाशवाणी और दूरदर्शन के महानिदेशकों की ही बात लीजिए. वे लोग मंत्रालय की ओर से डेपुटेशन पर भेजे गए ऐसे अफसर होंगे जो सीधे अपने मंत्री के प्रति जवाबदेह होंगे. क्या मंत्रालय को इसी तरह और इसी अंदाज में भंग किया जाता है?

इसके अलावा इस निगम पर निगरानी रखने के लिए कई संस्थाएं भी होंगी. मसलन प्रसार भारती बोर्ड में पूर्णकालिक, अंशकालिक और पदेन सदस्य भी होंगे और मंत्रालय के प्रतिनिधि भी. इसी तरह प्रसार परिषद के आधे सदस्य सांसद होंगे और वे बोर्ड के खिलाफ शिकायतें भी सुनेंगे. 22 सांसदों की एक और समिति बोर्ड पर निगरानी रखेगी और संसद को जवाबदेह होगी. राजनैतिक दखलंदाजी का भला इससे बेहतर नुस्खा और क्या हो सकता है. बात यहीं खत्म नहीं होती. केंद्र सरकार न सिर्फ निगम से कोई भी जानकारी मांग सकती है बल्कि उसे भंग करने की सलाह भी दे सकती है.

बला टालने की बाजीगरी

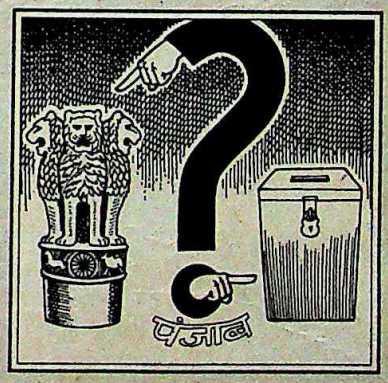

पंजाब सिर्फ आतंकवादियों की वजह से ही नहीं जल रहा बल्कि उन राजनेताओं और उनकी पार्टियों की वजह से भी जल रहा है जिनकी दुकानें इस समस्या की वजह से चलती आ रही हैं. पंजाब के दर्द को सियासी फायदे के लिए भुनाना उन्हें खूब अच्छी तरह आता है और वे यही कर भी रहे हैं.

पंजाब के बारे में सरकार की नीति उसी लकवे की शिकार है जिसके चलते वह वामपंथियों और भाजपा के बीच संतुलन बनाए रखने और इसके साथ ही देवी लाल तथा जद के विरोधी गुटों पर अंकुश लगाने में उलझकर कुछ भी कर नहीं पा रही है. नतीजा यह है कि वह यथास्थिति बनाए रखने और अपने नए, महान कदमों के नाम पर सस्ती नौकरशाही-लुभावन बाजीगरी से आगे नहीं बढ़ पा रही है.

पंजाब के सीमावर्ती इलाकों में वी.पी. सिंह की हाल की यात्रा इसी बाजीगरी का हिस्सा थी. ऐसी घोषणा करके कि अगर मैं यहां मारा जाऊं तो मेरी लाश पंजाब की धरती पर ही जला दी जाए, उन्होंने तालियां भले पिटवा ली हों लेकिन उनकी इस यात्रा से पंजाब समस्या के हल होने या दुखी दिलों को ढाढस बंधाने में कोई सहयोग नहीं मिला. प्रस्तावित पदयात्रा के बारे में उनकी घोषणा को भी गुमराह करने और झांसा देने के शगूफे की ही तरह देखा जा रहा है.

पंजाब में विधानसभा चुनाव कराने की बात के पीछे भी जद का इरादा लोकतंत्र से मोहताज राज्य में लोकतंत्र की बहाली के बजाए वहां बिगड़ती हालत की जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ने का ही ज्यादा है. इस मामले में इंका ने भले ही एक बार चुनाव का समर्थन किया हो लेकिन अब उसकी नीति चुनाव कराने के बजाए वी.पी. सिंह को दलदल में और गहरा फंसने देने के पक्ष में है. भाजपा और वामपंथी दल खुले तौर पर भले ही जो कुछ कहें लेकिन बंद कमरे में वी.पी. सिंह को उनकी सलाह चुनाव टालने के ही पक्ष में है. उन्हें डर है कि मौजूदा वातावरण में आतंकवादियों के दबदबे के चलते उनमें से किसी को भी फायदा नहीं होगा. उलटे डरे हुए मतदाता राज्य की सत्ता आतंकवादियों की झोली में डाल देंगे.

एक ऐसे दौर में जब केंद्र सरकार, राज्य की अफसरशाही और राजनैतिक पार्टियां स्थायी असमंजस में फंसी हुई हों, किसी दूरगामी नीति के उभरने की उम्मीद न के बराबर है. ऐसी हालत में वी.पी. सिंह के सामने केवल दो विकल्प बचते हैं- या तो वे घोषणा करें कि एक खास अवधि तक चुनाव नहीं कराए जाएंगे, या फिर वे 11 नवंबर को राष्ट्रपति शासन की अवधि खत्म होने से पहले ही समस्याग्रस्त और पीड़ित पंजाब में चुनाव की घोषणा करके हालात का सामना करें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उलटी बाजी

● पंजाब में नई पहल की शुरुआत करने वाली केंद्र सरकार एक मुश्किल में फंस गई है. वह यह कि उसकी अति गोपनीय फाइलों से कुछ रपटें लीक होकर

उसके राजनैतिक विरोधियों के पास पहुंच गई हैं.

मिसाल के तौर पर सिमरनजीत सिंह मान और उनके समर्थक इस बात पर जोर देते रहे हैं कि वे अपने बढ़ते उग्रपंथी रवैए में बदलाव तभी ला सकते हैं जब प्रधानमंत्री 'ऊपर से नीचे तक भ्रष्ट प्रशासन को साफ करें.'' कई महीने पहले विश्वनाथ प्रताप सिंह ने सिमरनजीत सिंह मान से बातचीत में परिवर्तनों को लागू करने के लिए कुछ अस्पष्ट वादे किए थे. लेकिन अभी उन्होंने अपने वादे पूरे नहीं किए. वादे पूरे करने के लिए या तो उन्हें समय नहीं मिला या उस लायक स्थितियां नहीं बनीं.

उनकी यह वादाखिलाफी उनके लिए अब महंगी पड़ सकती है. गोपनीय फाइलों से, जो अब प्रधानमंत्री के मातहत वाले कार्मिक विभाग के पास हैं, लीक हुई सूचना से यह जानकारी सामने आई है कि राज्य चलाने वाले छह वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों में से तीन की गोपनीय फाइलों में उनकी ईमानदारी पर विपरीत टिप्पणियां की गई हैं.

जाहिर है, प्रधानमंत्री को पंजाब में नई शुरुआत की कोशिश में पुराने प्रशासन को किनारे लगाने में बहुत मुश्किल होगी. काम इतना आसान नहीं है. क्योंकि पुरानों की जड़ें गहरी हैं.

प्याज-लौंग की लड़ाई

● राजीव गांधी और जूनियस जयवर्धने के भारत-श्रीलंका समझौते से एक मजेदार लड़ाई शुरू हो गई है. समझौते के आर्थिक पहलू वाले हिस्से में प्रावधान था कि भारत श्रीलका से 100 टन लौंग खरीदेगा और श्रीलंका भारत से रियायती दर पर 15 टन प्याज के बीज खरीदेगा.

लेकिन समझौते तोड़ने के लिए ही किए जाते हैं. भारत लौंग खरीदने का अपना वादा तोड़ता दिख रहा है. यही नहीं, उसने बीज भी उपलब्ध नहीं कराए.

श्रीलंकाई कूटनयिक पिछले एक महीने से लौंग-प्याज का बीज सौदा लागू करने की कोशिश कर रहे हैं. विशिष्ट भारतीय शैली में उन्हें 'न' में कभी नहीं जवाब मिला. जिम्मेदारियां एक-दूसरे पर थोपी जा रही हैं, वहीं दूसरी तरफ

सभी कार्टून: अजीत नैनन

भारत-श्रीलंका समझौता भी खत्म होने को आ गया है.

नहले पर दहला

● उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव भाजपा के खिलाफ धर्मयुद्ध छेड़ देने के कारण अपने कुछ पुराने दोस्तों को खो रहे हैं. हाल में नई दिल्ली में

मुख्यमंत्रियों के सम्मेलन के दौरान यह स्पष्ट हो गया. वहां उनकी मुलाकात तीन भाजपा मुख्यमंत्रियों—शांता कुमार, सुंदरलाल पटवा और भैरों सिंह शेखावत से हुई.

भाजपा मुख्यमंत्रियों ने मजाक में यादव से पूछा कि यदि वे अक्तूबर में राम मंदिर का निर्माण कार्य शुरू करने अयोध्या जाएं तो क्या उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाएगा. यादव ने अक्खड़ शैली में जवाब दिया कि वे ऐसा करने में नहीं हिचकेंगे. शेखावत के यादव से अच्छे संबंध रहे हैं. लेकिन उन्होंने भी उन्हें उतनी ही रुखाई से जवाब दिया कि यदि यादव उनके राज्य में कदम रखें तो उन्हें भारतीय दंड संहिता की धारा 110 के तहत गिरफ्तार कर लिया जाएगा. इस धारा में शातिर अपराधियों और ठगों को गिरफ्तार कर लेने का प्रावधान है. इस पर यादव ने बातचीत का विषय बदल दिया.

अनोखा दबाव

● केंद्रीय रेलमंत्री जॉर्ज फर्नांडीस को अपने राजनैतिक जीवन में बड़ी-बड़ी चुनौतियों का सामना पड़ा है. लेकिन अब उनके सामने एक अपेक्षाकृत छोटी चुनौती आई है और उन्हें निकलने की राह नहीं सूझ रही.

मामला 1985 का है जब इकाई मजदूर नेता ललित माकन और उनकी पत्नी की पंजाब के आतंकवादियों ने हत्या कर दी थी. इसके तुरंत बाद उनकी बेटी अवंतिका (अब 11 साल की) को देश भर में एक रिश्तेदार और सुरक्षाकर्मी के साथ यात्रा करने के लिए रेल के वातानुकूलित पहले दर्जे का विशेष पास दिया गया. इस पास का छह साल तक नवीकरण कर दिया गया था. इस साल फर्नांडीस ने इस पास का नवीकरण करने से इनकार कर

दिया. उनका तर्क था कि किसी वीआईपी के रिश्तेदार को यह सुविधा देना गलत होगा जबकि दूसरे पीड़ितों को मामूली राहत ही मिली है.

मामला यहीं खत्म हो जाता अगर अवंतिका उप-राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा की नातिन नहीं होती. सो, अब फर्नांडीस पर अपना फैसला बदलने का दबाव डाला जा रहा है. यानी क्या कुछ लोग औरों से अधिक महत्व रखते हैं?

...और एक चुटकी

मंडल आयोग के कारण कई तरह के मजाक प्रचलित हो गए हैं. ऐसी ही एक टिप्पणी—राजीव गांधी की मिट्टी पलीद की सात फीसदी ने, अब वी.पी.सिंह की लुटिया डूबेगी 27 फीसदी के कारण !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेश है एक जानदार, शानदार स्पोर्टस मॉडल!

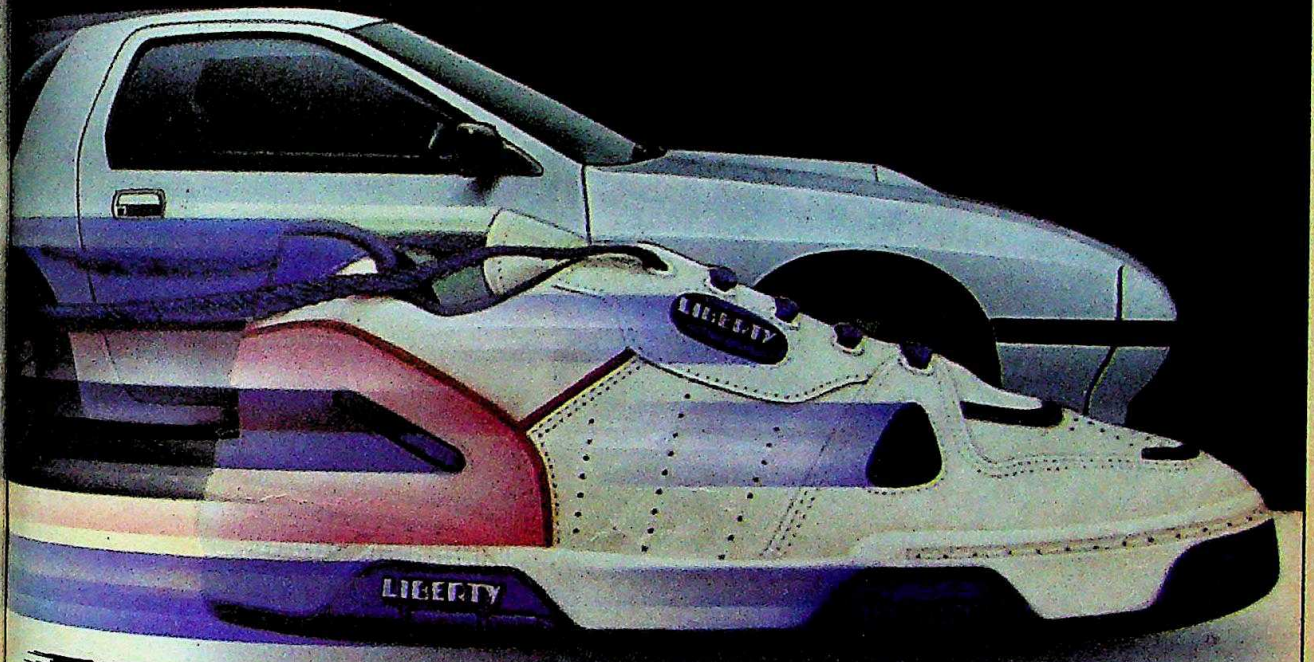

FORCE 10 देखिये इसकी बनावट, रंगों का मेल और डिज़ाइन।

जानिये इसके अनूठे P.U. सोल को, जो जहाँ आप चाहें, वहाँ शान से ले जायें। अहसास कीजिये कोमल और गद्देदार

अन्दरूनी हिस्से का, जो आपको दे चैन, हर कदम। यही नहीं, पाइये नरम और मुलायम

चमड़े से बने अपर, यानि ऊपरी हिस्से से पूरा आराम।

जी हाँ, जो बात इसमें है, औरों में कहाँ!

FORCE 10 लिबर्टी की पेशकश

लिबर्टी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीत गये हैं आपके 30 साल...

फिर भी रखिये क़ायम वही सुनहरा काल!

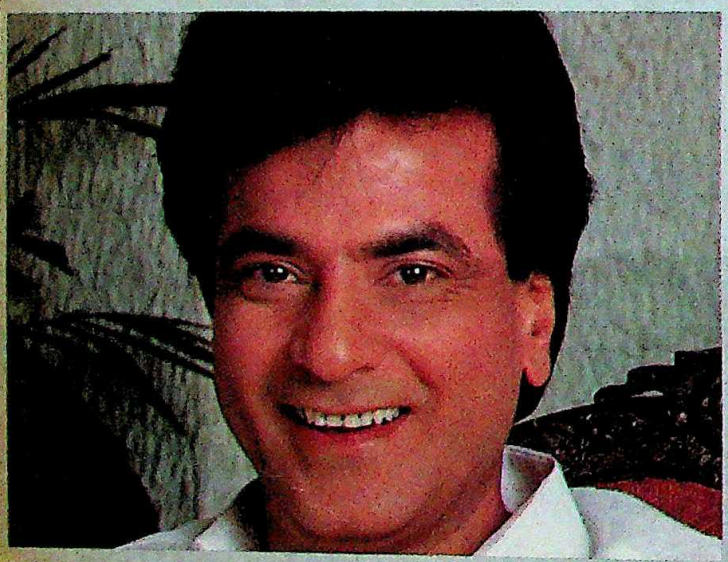

आपके जीवन के सुहाने दिन आपके इन्तेज़ार
शानदार, विश्वासपूर्ण और उमंगों
अगर आप पहले की तरह तन्दुरुस्त नहीं
ज़्यादा काम-धाम से थकान और तनाव महसूस
हैं, और पुनः शक्ति चाहते हैं, तो आपके
थर्टी

थर्टी प्लस में है जिन

सदियों से एशिया के साइंटिस्ट जिनसेंग
मानते आए हैं. अपने शक्ति दायक तत्वों के
आज जिनसेंग की बेहद
जिनसेंग सुरक्षित है और प्राकृतिक उत्तेजना
अपनी तन्दुरुस्ती, दम और कार्यक्षमता
लिए कई खिलाड़ी इसे इस्तेमाल
दुनिया के जाने-माने लोग जिनसेंग इस्तेमाल
रहे हैं, जिन में इन्दिरा गान्धी, हेन्री किसिंजर
मार्लन ब्रांडो

... और अश्व

हमारे अपने देश की जड़ अश्वगन्धा का
वेदिक साहित्य में एक आयुर्वेदिक टॉनिक
स्वास्थ्य वर्धक ख़ूराक के रूप
थकान, तनाव और लम्बी बीमारी से उत्पन्न
में अश्वगन्धा मांसपेशियों को ताक़त देती
शरीर में ताज़ा शक्ति दौड़

बैहतरीन तात

कोरियन जिनसेंग और अश्वगन्धा दोनों ही
भरे तत्वों के लिए जाने-माने हैं. अध्ययन
सिद्ध हो चुका है कि इन दोनों के बारे
विश्वास हैं, दे
थर्टी प्लस. यानी एक कैप्स्यूल में जिनसेंग
अश्वगन्धा का शानदार
शक्ति से भरपूर थर्टी प्लस आपको दे
और तन्दुरुस्ती ताकि आपको मिले सहन-
और तनाव से मुकाबला करने में मदद,
ताक़त में वृद्धि. और सुहाने दिनों का भरपूर

Thirty Plus
ENERGY RECHARGERS

आप के लिए दम-दमा-दम

A product of ajanta pharma limited

21-31 Satyam, 318 Linking Road, Khar (West), Bombay 400 052.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

BAGPIPER GOLD

PRESENTS A SONG AND DANCE EXTRAVAGANZA

THE SHARON SPECTACULAR

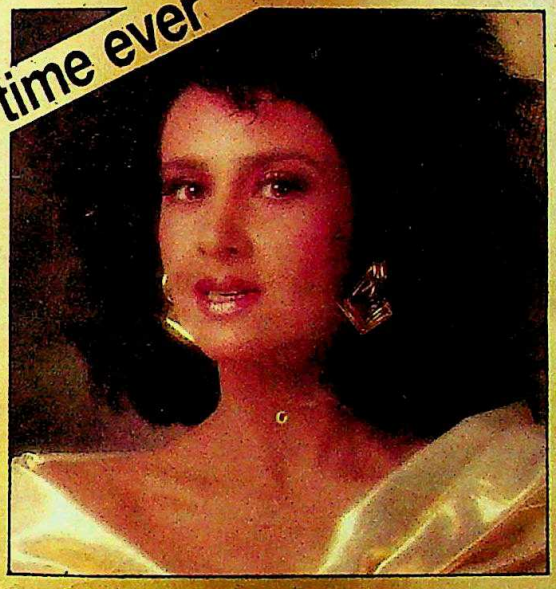

India's singing sensation live on stage in a series of show stoppers from her latest albums by Music India titled "Blow Your Mind" and "Jhoom Jawani".

Soon in your city

Delhi 8.9.90 • Madras 6.10.90
Lucknow 12.10.90 • Calcutta 21.10.90
Bombay 27.10.90

Directed by ALYQUE PADAMSEE
Dances specially choreographed by SHIAMAK DAVAR

HERBERTSONS LIMITED

In association with
MIL MUSIC INDIA

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

everest/90/HL/278

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Zodiac for Hans Schmidt

The latest to capture the imagination of the Germans is not automobiles.

At 220 km/h, the Germans are sitting up and noticing the fastest moving fashions to hit the road. Zodiac. Exported to Europe's leading fashion houses. The international look of the season is now parked in India. Slip into gear. And you'll appreciate why Herr Schmidt now chooses to test drive the latest - Zodiac.

The soul of Europe. The spirit of Zodiac.

Z O D I A C

SHIRTS TROUSERS TIES SOCKS BELTS WALLETS HANDKERCHIEVES

Only 10% of Zodiac's total production is sold in India.

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

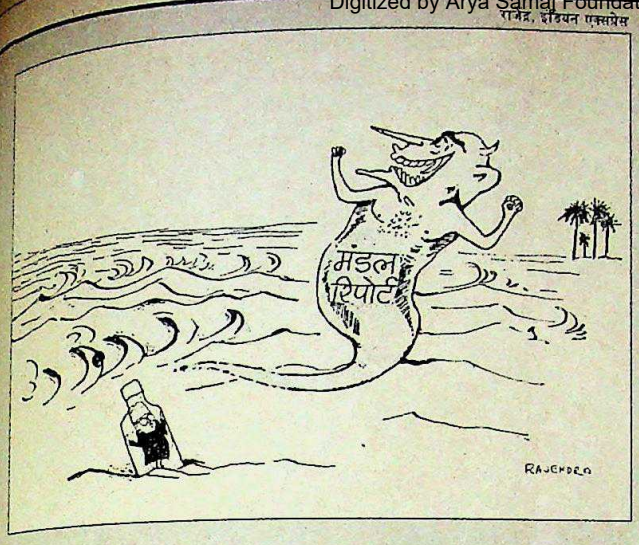

• वी.पी. सिंह ने वह कर दिखाया है जो बुद्ध और महावीर भी नहीं कर सके.
■ **शरद यादव** (केंद्रीय कपड़ा मंत्री), *आरक्षण के समर्थन में*

• यह सरकार जन्म से ही गूंगी है और अपने अंतरविरोधों के कारण अब यह बहरी भी हो गई है. ■ **एम.जे. अकबर,** *इलेस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इंडिया*

• सरकारी नीतियां औरतों की स्कर्ट की तरह होती हैं. बदलते फैशन के मुताबिक उसकी लंबाई घटती-बढ़ती रहती है.
■ **यशवंत सिन्हा** (जनता दल नेता), *राज्यसभा में*

• भाजपा (सरकार से) समर्थन वापस ले लेगी तब भी मध्यावधि चुनाव नहीं होंगे. हम विपक्ष में बैठेंगे और राष्ट्रपति सबसे बड़े दल के नाते इंका को सरकार बनाने के लिए आमंत्रित कर सकते हैं. ■ **वी.पी. सिंह,** वायुसेना के विमान पर पत्रकारों से

• जब मैंने राजा को खास किस्म की टोपी पहने पहली बार देखा तो मुझे लगा कि यह टोपी मौलाना आजाद की है. पर उनकी हाल की हरकतों से साबित हो गया कि यह टोपी जिन्ना की है.
■ **राजीव गांधी,** अमेठी की जनसभा में

• कांग्रेसी कुछ अखबारों की दुम पकड़कर सत्ता में आने की कोशिश कर रहे हैं.
■ **ज्योति बसु,** *नवभारत टाइम्स*

• इंदिरा और राजीव के समय में सरकार आर.के. धवन चलाते थे. अब (विनोद) पांडे और (प्रेमशंकर) झा चला रहे हैं. ■ **देवीलाल,** *आज*

• आखिर पासवान जी का मंत्रालय बहुत अच्छा काम कर रहा है. इसीलिए पासवान जी को (दूरदर्शन पर) बार-बार दिखाया जाता है. ■ **पी. उपेंद्र,** *जनसत्ता*

• आप इसे (अंग्रेजी हटाओ को) पॉलिटिकल स्टंट कह रहे हैं. यह पॉलिटिकल स्टंट नहीं है. यह मैं नेशनल स्टंट कर रहा हूं.
■ **मुलायम सिंह यादव,** *अपने अंग्रेजी हटाओ अभियान पर*

• मध्यावधि चुनाव? बकवास....! चुनाव तो एक चौथाई समय में ही हो जाएंगे.
■ **शत्रुघ्न सिन्हा,** *संडे ऑब्जर्वर*

• मैं तो यही पसंद करती हूं कि प्यार का रिश्ता रहने तक मर्द ही मुझ पर हावी रहे.
■ **पूजा भट्ट,** *संडे मेल*

• पी.टी. उषा यानी भारतीय एथलेटिक्स नहीं और न ही भारतीय एथलेटिक्स पी.टी. उषा है.
■ **सुनील अब्राहम,** अश्विनी नाचप्पा के प्रशिक्षक

आपकी चहेती पत्रिका
आपके दरवाज़े पर
न खरीदने का झंझट...
न खत्म होने का डर

इस सुविधा का लाभ उठाइए.
अपनी चहेती इंडिया टुडे
घर बैठे – नियमित पाइए.
न खरीदने जाने की जरूरत...
न अंक खत्म होने का डर,
इंडिया टुडे
समय से पहुंच जाए आपके घर!

बस कूपन भर कर भेज दीजिए,
देर मत कीजिए!

नाम: _____

डाक पता: _____

मूल्यः वार्षिक रु. 132/-
भुगतान का माध्यम-चैक/मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट
(दिल्ली से बाहर के चैकों के लिए 5/- रु. प्रति चैक की अतिरिक्त राशि देय है।)
कृपया चैक निम्नलिखित नाम पर बनाएं और इस पते पर भेजें:
लिविंग मीडिया इंडिया लि.
पो. बॉ. नं. 706,
फरीदाबाद- 121 007
(हरियाणा)

इंडिया टुडे
देश की भाषा में देश की धड़कन

MILESTONES/IT/120

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्दी काम न आई

■ मंडल आयोग की रिपोर्ट लागू करने के फैसले के परिणामस्वरूप देश में समानता का वातावरण कितना बन पाएगा यह तो समय बीतने पर ही पता चलेगा. सरकारी फैसले के

सभी कार्टून: जयंतो

खिलाफ और समर्थन में चलने वाले आंदोलनों का लोगों पर असर एक जैसा पड़ रहा है.

मगर बराबरी के इस जुनून ने पिछले दिनों एक वरिष्ठ सैनिक अधिकारी के सामने धर्मसंकट खड़ा कर दिया. पत्नी के साथ पंचकूला से चंडीगढ़ जाते हुए इस अधिकारी की कार को रास्ते में आंदोलनकारियों ने रोक लिया. आरक्षण के खिलाफ नारे लगाते प्रदर्शनकारियों ने जब सैनिक अधिकारी से वापस जाने को कहा और रास्ता छोड़ने से इनकार कर दिया तो वर्दीधारी ने कार से उतरकर आंदोलनकारियों को समझाने की कोशिश की कि उसका चंडीगढ़ पहुंचना बहुत जरूरी है. आंदोलनकारियों ने उसकी बात ध्यान से सुनी और रास्ता छोड़ने की बात भी मान ली. लेकिन इसके बदले एक ऐसी शर्त भी रख दी जिसे सुनकर अधिकारी के होश फाख्ता हो गए. शर्त यह थी कि वे रास्ते से तभी हटेंगे जब सैनिक अधिकारी उनके साथ वी.पी. सिंह विरोधी नारा लगाएंगे.

बेचारा फौजी अधिकारी! वर्दी पहनकर ऐसा काम करने के लिए भला कहां तैयार होता? आखिर काफी हील-हुज्जत के बाद मामला यहां तय हुआ कि अधिकारी के बजाए उसकी पत्नी ही नारा लगा दे.

दिन खराब था

■ कहावत है कि अगर सौ दिन चोर के होते हैं तो एक दिन साधु का भी होता है. लेकिन आम तौर पर होता यही है कि बार-बार अपने शिकारों पर हाथ साफ करने वाला चोर यही समझ बैठता है कि वह कभी पकड़ा नहीं जाएगा. यह किस्सा एक ऐसे ही चोर का है.

कुछ दिन पहले दिल्ली पुलिस ने एक ऐसे सफेदपोश चोर को धर दबोचा जिसने अपनी करतूतों से लोगों की नाक में दम किया हुआ था. इस चोर का तरीका यह था कि वह अपने शिकार का ध्यान बंटाने के बाद उसके झोले पर हाथ साफ करता और भाग खड़ा होता लेकिन यह सब करने के लिए वह हमेशा बुधवार का दिन ही चुनता था.

उसके शिकारों में डीटीसी का एक कंडक्टर भी था जिसकी कमीज पर पहले उसने कीचड़ लगाया और उसके बाद उसे नल पर कमीज धोने में लगाकर उसके झोले और 5 हजार रु. समेत भाग खड़ा हुआ. एक और मामले में उसने एक बैंक के बाहर कुछ नोट गिराकर एक व्यक्ति का ध्यान बंटाया और उसके ब्रीफकेस में रखे 30 हजार रु. उड़ा लिए. लेकिन पिछले पखवाड़े जब उसने कीचड़ वाली तरकीब लड़ाकर एक व्यक्ति का झोला लेकर भागने की कोशिश की तो

वहीं मौजूद एक पुलिस अधिकारी ने उसे दबोच लिया. बाद में थाने जाकर अपने पुराने पाप कबूलते समय उसका कहना था कि वह इसलिए पकड़ा गया क्योंकि उस दिन वृहस्पतिवार था. दोष उसका नहीं दिन का था!

देर आयद, दुरुस्त आयद

■ अंतरात्मा एक ऐसा शेर है जो आज के जमाने में अक्सर सोया ही रहता है. और बदकिस्मती की बात यह कि उसकी नींद गाढ़ी होती चली जा रही है. शायद यही वजह है कि

जब भी इस शेर में हरकत होती है या उसकी आंख खुलती है तो वह खबर सुर्खियों में घर बना लेती है.

पिछले दिनों रेलमंत्री जॉर्ज फर्नांडीस अपनी डाक में आया एक लिफाफा खोलकर दंग रह गए. इस लिफाफे में आई चिट्ठी के साथ 300 रु. का एक चैक भी था. यह चिट्ठी एक ऐसे रेलयात्री ने भेजी थी जिसकी अंतरात्मा ने जागने में 43 साल लगा दिए. चिट्ठी में दिए गए विवरण के मुताबिक इसके लेखक ने देश विभाजन के दिनों में मुंबई के कांदिवली और ग्रांट रोड स्टेशनों के बीच यात्रा करते समय टिकट नहीं खरीदा था. कारण यह था कि उस मौके पर उस व्यक्ति के पास इस लायक पैसे ही नहीं थे. लेकिन उसके बाद इस कसूर की वजह से उसकी आत्मा उसे बार-बार कचोटती रही. अंतरात्मा की इस आवाज के दबाव के आगे आखिर उस व्यक्ति को झुकना ही पड़ा. इस चैक में उसने न सिर्फ मूल किराया बल्कि उस पर आने वाला ब्याज और इस दौरान रुपए की घटती कीमत को भी शामिल किया था. इस वाकए से प्रसन्न रेलमंत्री अब शायद यह उम्मीद लगाए बैठे हैं कि बिना टिकट यात्रा करने वाले दूसरे यात्री भी इस उदाहरण पर अमल करेंगे और रेल विभाग का घाटा पूरा हो जाएगा. आमीन!

जनसेवा

■ मौसम चाहे गर्मी का हो या बरसात का, दिल्ली फायर सर्विस के लिए काम की कभी कोई कमी नहीं रहती. लेकिन एक महिला ने इससे जो सेवाएं लीं, वह अनोखी बात है.

एक दिन नई दिल्ली के जोर-बाग इलाके में फायर ब्रिगेड दफ्तर को खबर मिली कि निकटवर्ती कर्बला इलाके के किसी घर में आग लगी है. बस फिर क्या था? आग बुझाने वाली गाड़ियां दनदनाती हुई बताए हुए पते पर जा पहुंचीं. किसी भी तरह की दुर्घटना से बेखबर मुहल्ले वाले इन गाड़ियों को देखकर अभी हैरान ही हो रहे थे कि पास में ही एक तिमंजिले भवन की ऊपरी मंजिल से एक महिला की चीख-पुकार सुनकर फायर कर्मचारी भागे-भागे वहां जा पहुंचे.

लेकिन ऊपर पहुंचने पर उन्हें कहीं आग का नामोनिशान दिखाई नहीं दिया. महिला ने उन्हें बताया कि एक खिड़की में ऊंचाई पर लगे कूलर में शार्ट-सर्किट के कारण लगी आग को उसने खुद ही बुझा दिया है. उसकी यह बात सुनकर दमकर्मचारी वापस उतरने के लिए मुड़े ही थे कि महिला के एक आग्रह ने उनका दिल पिघला दिया. उसने बताया कि गर्मियों तक वह कूलर खिड़की में हवा को

रोके रखेगा इसलिए वे लोग नीचे उतरवाने में उसकी मदद करें. बुजुर्ग महिला के इस आग्रह को उन्होंने मान लिया. लेकिन अब फायर सर्विस को डर है कि कहीं दूसरे लोग भी ऐसी सेवा के लिए उन्हें फोन न करने लगें.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

American Express,
club class and jet lag.
Model No. 62-9011
Rs. 648.34*

Drucker & Murphy's
Law over burgers and colas.
Model No. 62-8341
Rs. 606.24*

Conferences,
collaborations and
boardroom battles.
Model No. 62-9021
Rs. 602.03*

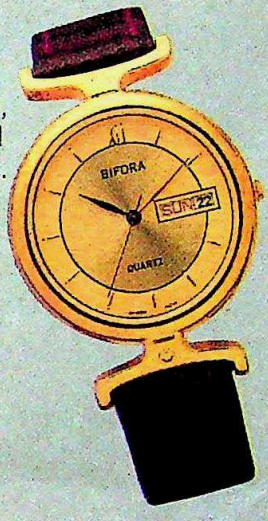

Bulls,
bears and blue chips.
Model No. 62-8631
Rs. 602.03*

Presentations,
PCs and endless cups
of black coffee.
Model No. 62-8581
Rs. 667.28*

Bifora brings out the best in you

BIFORA
QUARTZ

It's a watch to excel in. Bifora Quartz. Born of excellence. And an impeccable German lineage. With a hardy quartz movement that is guarantee of perfection. And plating that will flawlessly outlast the years. Sold and serviced throughout the country. Bifora Quartz is from the people who pioneered quartz technology.

Bifora Quartz, with a 2-year confident guarantee.
Your time in your style.

Drafts, project reports
blunt pencils and razor minds.
Model No. 63-8591
Rs. 717.80*

Recommended retail price. Local taxes extra.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंडल रिपोर्ट

हानिकारक हश्र

प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह 30 सितंबर को संसदीय सौध में प्रवेश कर रहे थे तो ऐसा लग रहा था कि वे जब बाहर निकलेंगे, उनके नाम के साथ पूर्व प्रधानमंत्री का शब्द जुड़ा होगा. सुबह अखबारों ने जनता दल में भारी बगावत की भविष्यवाणी की थी. पूर्व उप-प्रधानमंत्री देवीलाल और चिर असंतुष्ट नेता चंद्रशेखर की जोड़ी ने उनके खिलाफ जिस तरह मोर्चाबंदी शुरू कर दी थी, उससे लग रहा था कि मंडल रिपोर्ट वी.पी. सिंह सरकार के लिए निर्णायक धक्का साबित होगी. उत्तर भारत में जबकि आरक्षण विरोधी आंदोलन चिंताजनक संकेत दे रहा था, जनता दल के पूर्व महासचिव यशवंत सिन्हा और राष्ट्रीय मोर्चा संसदीय दल के सचिव हरमोहन धवन जैसे असंतुष्ट नेता वी.पी. सिंह का तख्ता पलटने की तैयारी कर रहे थे. इसके लिए माहौल भी अनुकूल था. आरक्षण विरोधी आंदोलन में आत्मदाह, हिंसा और पुलिस की गोली से 50 से ज्यादा जानें

रविंदन/एएफपी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्ग थी. विपक्ष के नेता राजीव गांधी
[illegible]नी से प्राय: हर दिन इस्तीफे की
[illegible] कर रहे थे और सरकार का एक
[illegible]—भाजपा—डगमगा रहा था.
[illegible]पर संसदीय सौध में छह घंटे की
[illegible]-बुवाहिसों के बाद वी.पी. सिंह जब
[illegible] निकले तब उनके साथ सांसदों और
[illegible]की एक छोटी-सी भीड़ भी थी जो
वी.पी. सिंह जिंदाबाद,' 'मंडल कमीशन
जिंदाबाद' के नारे लगा रही थी. संसदीय

आलदाह की कोशिश में गोस्वामी; (बाएं) संसदीय दल की बैठक में वी.पी. सिंह की अगवानी करते धवन

दल ने एकमत से उनमें विश्वास जाहिर किया था. इस तरह वी.पी. सिंह ने अपने राजनैतिक चातुर्य का परिचय देते हुए फिर यह साबित कर दिया कि उनकी पार्टी का संसदीय दल उनकी मुट्ठी में है.

लेकिन इस विजय के लिए उन्हें भारी कीमत चुकानी पड़ी है. पार्टी के मतभेद खुलकर सामने आ गए. इस बैठक के दूसरे ही दिन देवीलाल ने राजघाट पर किसानों और अपने ग्रीन ब्रिगेड वालों को आखिरी लड़ाई के लिए तैयार रहने का आह्वान किया. उधर इंका ने भी आरक्षण विरोधी स्वर को तेज किया. इसके वरिष्ठ नेता वसंत साठे ने संसद के अहाते में आमरण अनशन पर बैठने की धमकी दे डाली. अपने पक्ष में बनते इस माहौल को देखकर छात्रों ने भी दिल्ली में भारी प्रदर्शन करने की तैयारी कर डाली. जाहिर है, मंडल रिपोर्ट संबंधी फैसले की भारी कीमत सरकार को चुकानी पड़ रही है.

इस बीच सर्वोच्च न्यायालय ने भी इस रिपोर्ट को लागू करने के खिलाफ स्थगन आदेश जारी कर दिया. उसने 1 अक्तूबर के अपने फैसले में कहा कि केंद्र सरकार तथा केंद्रीय सार्वजनिक उपक्रमों की नौकरियों में सामाजिक तथा शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्गों को 27 फीसदी आरक्षण देने की 13 अगस्त

संसदीय दल में वी.पी. सिंह विश्वास मत प्राप्त करने में भले ही सफल रहे हों पर इसके लिए उन्हें भारी कीमत चुकानी पड़ी है

शरद सक्सेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की सरकारी अधिसूचना पर रोक लगाई जाती है. सर्वोच्च न्यायालय की खंडपीठ ने कहा कि सरकार इस अधिसूचना के तहत लाभ पाने वाली जातियों को चिह्नित करने का काम भर आगे चला सकती है.

लेकिन केंद्र सरकार के लिए असली खतरा हरियाणा से है. संसद से इस्तीफा देने के बाद ताऊ इसकी मंजूरी की प्रतीक्षा कर रहे हैं ताकि भावी रणनीति तय कर सकें. हरियाणा में, जहां उनके पार्टीवालों ने दिल्ली का राशन-पानी बंद करने का अभियान चला रखा है, राष्ट्रपति शासन लागू होता है या नहीं इस पर भी बहुत कुछ निर्भर करेगा. केंद्र अगर हरियाणा सरकार को बर्खास्त करने का फैसला करता है तो इससे देवीलाल को अपनी ताकत बढ़ाने और जताने का मौका मिलेगा.

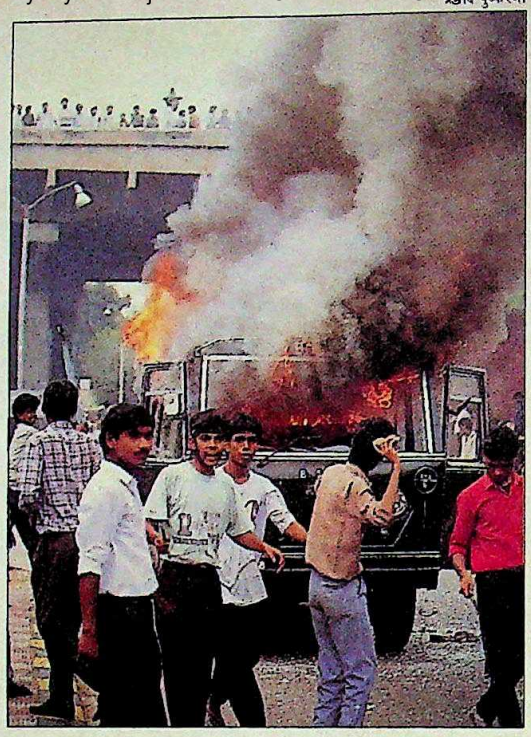

देवीलाल के इस्तीफे के नाटक की पूर्व तैयारी कर ली गई थी. बैठक में वी.पी. सिंह ने जब भाषण समाप्त किया तो सांसद चांदराम ने उनके इस्तीफे की मांग की. उसके बाद वी.पी. सिंह से दो सीट अलग बैठे देवीलाल उठे और उन्होंने प्रधानमंत्री को दो पत्र थमाए. इसके बाद वे अपने निवास चले गए जहां उन्होंने संवाददाताओं को अपने इस्तीफे की जानकारी दी. उन्होंने सोचा कि यशवंत सिन्हा के नेतृत्व में बागी सांसद बाकी काम अंजाम दे देंगे.

नई दिल्ली में हिंसा: ज्वलंत समस्या

लेकिन बैठक में ही उन्हें पर्याप्त समर्थन नहीं मिल पाया. केवल तीन सांसदों—चांदराम, जयप्रकाश और यशवंत सिन्हा—ने मंडल रिपोर्ट के मामले पर सरकार की आलोचना की. बैठक में बोलने वाले बाकी सांसदों ने सरकारी फैसले का पूरा समर्थन किया. कुछ ने तो असंतुष्टों के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई की मांग की. अंततः ओडीसा के सांसद भवानीशंकर होता ने वी.पी. सिंह में विश्वास व्यक्त करने का प्रस्ताव पेश किया. संसदीय मामलों के मंत्री पी. उपेंद्र ने दो बार पूछा कि प्रस्ताव पर किसी को एतराज है नहीं. इस पर यशवंत सिन्हा ने प्रस्ताव को अनावश्यक बताया और वे जयप्रकाश तथा चांदराम के साथ बैठक से चले गए. प्रस्ताव पारित होने के बाद वी.पी. सिंह सरकार के भीतरी संकट टल गया.

मगर मंडल आयोग लागू करने से देश जिस संकट में फंस गया था, वैसा संकट कभीकभार ही आया है. लेकिन इस संकट के लिए खुद प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह ही

राजीव गोस्वामी

अप्रत्याशित कदम

यह गुमनाम चेहरा एक ही कदम से देश में चर्चित हो उठा है. अगले दिन आत्मदाह की कोशिश करने वाले 20 वर्षीय राजीव गोस्वामी की तस्वीर अखबारों के मुखपृष्ठों पर थी.

दो दिन बाद सफदरजंग अस्पताल, जहां वह जीवन के लिए संघर्ष कर रहा है, के बाहर के चौराहे का नाम 'कुरबानी चौक' और सड़क का नाम 'राजीव गोस्वामी मार्ग' घोषित कर दिया गया.

पढ़ाई में औसत, बीए के इस छात्र को यह दुस्साहसिक कदम उठाने की प्रेरणा क्यों हुई? उसके देशबंधु कॉलेज के प्राचार्य डॉ. बी.के. भट्टाचार्य का मानना है कि पत्र-पत्रिकाओं और बुद्धिजीवियों द्वारा मंडल रिपोर्ट की निरंतर आलोचना ने उसे प्रेरित किया.

प्रशांत पंजियार

दिल्ली में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के चौराहे पर लगे बैनर

सात बच्चों वाले मध्यमवर्गीय पंजाबी ब्राह्मण परिवार का वह अकेला बेटा है. उसके पिता मदनलाल डाक विभाग में किरानी हैं. राजीव दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ की केंद्रीय परिषद का सदस्य भी चुना गया था.

नौ दिन के उपवास को निष्फल होते देख राजीव और उसके दोस्तों के दिमाग में आत्मदाह की बात आई फिर भी राजीव का इरादा पक्का नहीं था. घटना से पहले की रात उसने मां से कहा था, "हम सिर्फ तमाशा करने जा रहे हैं."

लेकिन नाटक की योजना धरी रह गई. पहले सिर्फ अपने पैरों पर किरासन तेल छिड़ककर आए राजीव को फिर अपनी पूरी देह पर भी किरासन तेल उड़ेलना पड़ा. और जब उसने माचिस की तीली जलाई तो वह भीड़ के पीछे था और उसके दोस्त, जिन्हें योजना अनुसार आग बुझा देनी थी, आसपास थे ही नहीं.

इससे पूरे देश में आत्मदाहों की लहर शुरू हो गई है.

—नीलिता कालरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जी.एस. चन्नी

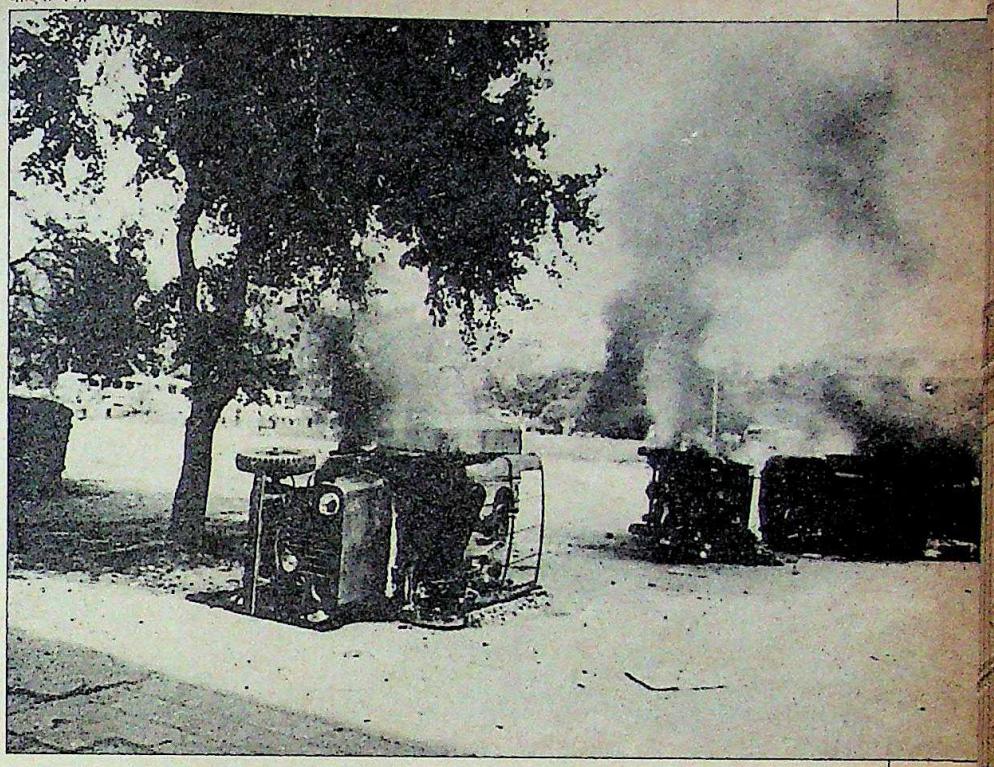

चंडीगढ़ में गाड़ियों की आहुतिः आंदोलन का ज्वार

...दार हैं. जैसे-जैसे यह संकट गहराता ... उन्हें इसमें फंसाने वाले लोग उन्हें ... छोड़ते गए. नतीजा यह हुआ कि ... सिंह ने मंडल आयोग रिपोर्ट रूपी ... फल को खाया तो जरूर मगर अब ... कड़वाहट के चलते न उसे निगलते ... रहा है और न उगलते.

...डबड़ी में किए गए उनके फैसले से एक ... के बाद एक शहर आरक्षण विरोधी ... की लपेट में आता गया और ... सरकार बेबस होकर देखती रही. ... में उनके इस्तीफे की अफवाहें ... पकड़ती रहीं. इन अफवाहों में कुछ दम ... था. उनकी अपनी पार्टी के लोग और ... भी उनका तख्ता पलटने की जोड़तोड़ ... गए. विपक्ष के नेता राजीव गांधी ने ... इस्तीफे की मांग की और यहां तक ... दिया कि उनकी पार्टी किसी और ... के नेतृत्व में बनने वाली सरकार का ... कर सकती है.

माहौल को देखते हुए चंद्रशेखर के ... ने यह हवा बनाने की कोशिश की ... वी.पी. सिंह तो जाने ही वाले हैं. इस ... जद के तीन मुख्यमंत्री—बीजू पटनायक, चिमनभाई पटेल और मुलायम सिंह यादव—अचानक दिल्ली पहुंचे. और फिर पार्टी के कई वरिष्ठ सदस्यों और मेनका गांधी तथा जगदीप धनकड़ जैसे मंत्रियों ने राष्ट्रीय मोर्चा संसदीय दल बैठक बुलाने की मांग की. और 24 घंटे के भीतर कई महत्वपूर्ण बैठकें हो गईं.

प्रधानमंत्री के प्रतिद्वंद्वी लोग तो सरकारी पांच सितारा होटल में गुप्त मंत्रणाएं करते रहे, जबकि अरुण नेहरू जैसे

आरक्षण विरोधी आंदोलन

त्रासद तारीखें

19 सितंबर, **नई दिल्लीः** छात्र **राजीव गोस्वामी** द्वारा आत्मदाह की कोशिश.

20 सितंबर, **सिरसाः** छात्र **राजीव गौतम** द्वारा आत्मदाह की कोशिश.

22 सितंबर, **कोटाः** आत्मदाह के प्रयास में 13 छात्र गिरफ्तार.

कुरुक्षेत्रः छात्र **सुशील कुमार** ने जहर खाकर आत्महत्या की.

23 सितंबर, **ग्वालियरः** आत्मदाह के प्रयास में **अखिलेश पांडे** बुरी तरह घायल.

24 सितंबर, **नई दिल्लीः सुरेंद्र सिंह चौहान** ने आत्मदाह का प्रयास किया. अगले दिन मृत्यु.

लखनऊः राम उग्रह द्वारा आत्महत्या का प्रयास.

कोटाः राकेश जैन द्वारा आत्महत्या का प्रयास.

भिलाईः राजशेखर कौशिक द्वारा आत्महत्या का प्रयास.

25 सितंबर, **गाजियाबादः मुकेश गोयल** तथा दो अन्य द्वारा आत्महत्या का प्रयास.

इंदौरः महेश और पांच दूसरे लोग आत्मदाह के प्रयास में गिरफ्तार.

नई दिल्लीः 7वीं का छात्र **चेतन गौतम** आत्मदाह के प्रयास में बुरी तरह जख्मी.

27 सितंबर, **दिल्लीः अनिल कुमार** द्वारा आत्मदाह का प्रयास.

मुजफ्फरपुरः अजय कुमार मलिक ने आत्मदाह किया.

झुंझुनूः घनश्याम पारीख तथा **के.के. कुमार** द्वारा आत्महत्या का प्रयास.

बनारसः संदीप नारायण सिंह आत्मदाह के प्रयास के बाद अस्पताल में दाखिल.

एटाः संजय चौहान ने आत्मदाह का प्रयास किया.

28 सितंबर, **चंडीगढ़ः बृजभूषण** ने आत्मदाह का प्रयास किया.

अंबालाः मनीषा शर्मा द्वारा आत्महत्या.

बनारसः अमर सिंह आत्मदाह के प्रयास के बाद अस्पताल में भर्ती.

रोहतकः भारत भूषण का आत्मदाह का प्रयास. अगले दिन चंडीगढ़ में मृत्यु.

शिमलाः रमेश राणा ने आत्मदाह किया.

29 सितंबर, **जौनपुरः के.के. सिंह** द्वारा आत्मदाह का प्रयास. अगले दिन मृत्यु.

चंडीगढ़ः आत्मदाह के प्रयास में बुरी तरह घायल **कुलदीप** पीजीआई में भर्ती.

दादरीः आत्मदाह के प्रयास में **नरोत्तम दास** बीस फीसदी झुलसा.

हिसारः आत्महत्या के प्रयास के बाद **देवेंद्र कुमार** अस्पताल में भर्ती.

यमुना नगरः आत्मदाह के प्रयास में झुलसे **मनोज** अस्पताल में भर्ती.

30 सितंबर, रोहतकः साजन दलाल ने आत्मदाह किया.

सहारनपुरः पूर्णिमा ने खुदकुशी की.

सीकरः लक्ष्मीनारायण का आत्मदाह.

चंडीगढ़ः स्कूली छात्रा **प्रिया महाजन** ने जहर खाकर जान देने की कोशिश की.

सतनाः अजय अग्रवाल ने खुदकुशी की.

जालंधरः देवेंद्र कुमार शर्मा ने आदमपुर में जहर खा लिया.

1 **अक्तूबर, जम्मूः संदीप शर्मा** ने आत्मदाह का प्रयास किया.

नई दिल्लीः जद कार्यकर्ता **प्रवीण जैन** ने आत्मदाह का प्रयास किया.

होशियारपुरः 17 वर्षीया छात्रा **रूपिंदर कौर** ने जहर खाकर आत्महत्या की.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

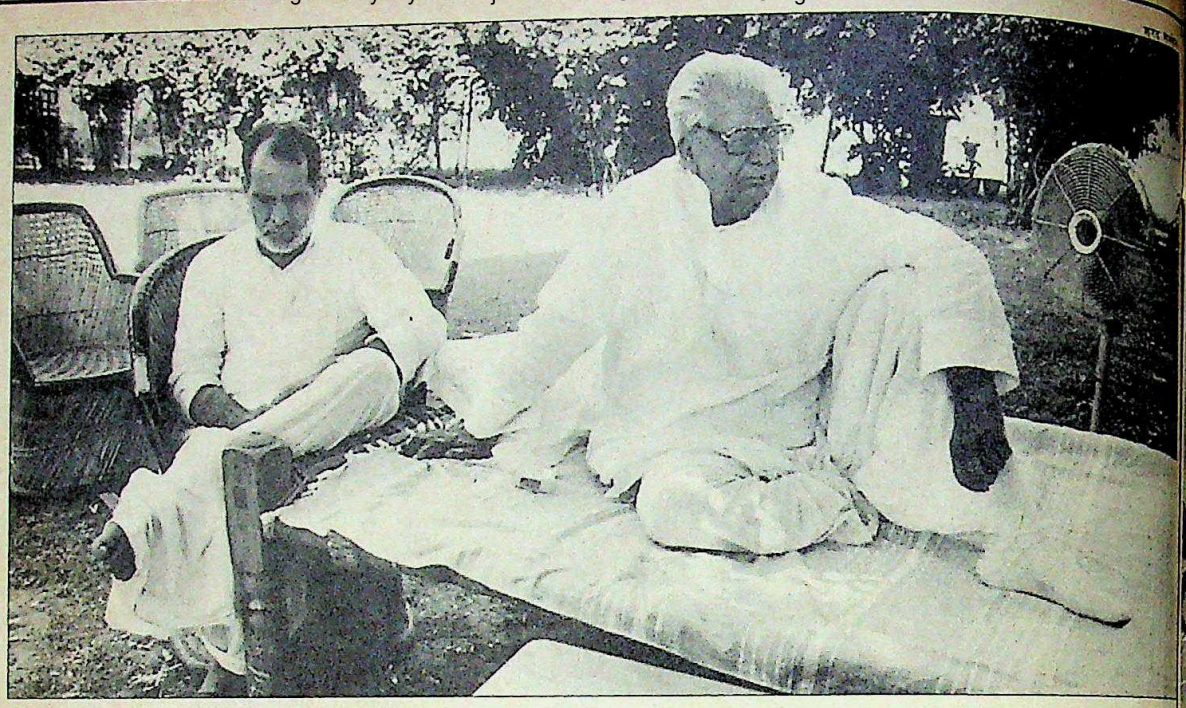

संसद से इस्तीफे के बाद देवीलाल और चंद्रशेखरः महत्वाकांक्षा

उनके समर्थकों ने उनसे विवेक से काम लेने और गुटीय दबावों का सामना करने की अपील की. नतीजतन, वी.पी. सिंह ने दूरदर्शन पर एक भावनात्मक अपील में कहा कि मंडल रिपोर्ट को लागू करने का फैसला वे वापस नहीं ले सकते. उन्होंने कहा कि अगर उन्हें अपने लक्ष्य और कुर्सी के बीच चुनने का मौका आया तो वे कुर्सी छोड़ने से हिचकेंगे नहीं. उनके इस साहसिक बयान के बावजूद आंदोलन तेज होता गया. 19 सितंबर को जब दिल्ली विश्वविद्यालय का एक छात्र राजीव गोस्वामी आत्मदाह की कोशिश में 50 फीसदी जल गया तो देश स्तब्ध रह गया और आरक्षण विरोधी आंदोलन एकाएक उग्र हो उठा (देखें बॉक्स). राजीव गोस्वामी ने जैसे रास्ता सुझा दिया, क्योंकि इसके तुरंत बाद आत्मदाहों का सिलसिला शुरू हो गया.

दिल्ली में आत्मदाह के बाद दम तोड़ने वाला छात्र सुरिंदर सिंह चौहान 98 फीसदी जल गया था. आत्मदाह से पहले लिखे पत्र में उसने "वी.पी. सिंह, रामविलास पासवान और शरद यादव जैसे लोगों" की निंदा की है "जो सोचते हैं कि आरक्षण के जरिए वे लोगों के वोट पा सकते हैं." कुरुक्षेत्र में एक छात्र सुशील कुमार ने जहर खाकर आत्महत्या कर ली. आत्महत्या से पहले लिखे पत्र में उसने लिखा, "इन सबका जिम्मेदार तू है, वी.पी. तू."

आंदोलनकारी छात्रों ने राजधानी के एक प्रमुख चौराहे पर कब्जा करके उसका नाम 'कुरबानी चौक' रख दिया. इसी चौक पर कब्जे को लेकर छात्रों और पुलिस के बीच जमकर मुठभेड़ हुई. पुलिस की गोली से एक छात्र बुरी तरह जख्मी हो गया.

नारे लगाते आरक्षण समर्थक सांसद. जातपांत की राजनीति

चंडीगढ़ में आंदोलनकारियों ने सैकड़ों सरकारी वाहनों, भवनों और दफ्तरों को फूंक डाला. अंततः सेना बुलानी पड़ी. चंडीगढ़ के अलावा दर्जन भर दूसरे शहरों—अंबाला और सिरसा, कुरुक्षेत्र और रोहतक में भी सेना बुलानी पड़ी. ग्वालियर में कर्फ्यू लगाना पड़ा. इस तरह आरक्षण विरोधियों ने वी.पी. सिंह सरकार को संदेश दिया कि आरक्षण को लेकर कितना रोष है.

शुरू में वी.पी. सिंह टस से मस नहीं तो इसकी वजह उनकी यह मान्यता थी आरक्षण विरोधियों के मुकाबले समर्थकों की संख्या ज्यादा है. और पड़ने पर पिछड़ों को सड़क पर उतार सकता है. दूसरा तर्क यह भी था कि का छोटा तबका ही आंदोलन के पीछे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमोद पुष्करणा

दिल्ली में रावण के पुतले पर वी.पी. सिंह का नाम: भावनाओं का उफान

उनकी इन मान्यताओं के कुछ ठोस आधार भी थे. एक तो यह कि मंडल रिपोर्ट का दक्षिण भारत में कोई मुद्दा नहीं बन पाया है. मद्रास में 16 सितंबर को वी.पी. सिंह के समर्थन में आयोजित द्रमुक की रैली से यह साबित हो गया कि पार्टी यहां की जनता के बड़े हिस्से को अपने साथ लेकर चल सकती है.

बिहार में आरक्षण समर्थक सड़कों पर उतर आए और उन्होंने विरोधियों को पस्त कर दिया. गुजरात में मुख्यमंत्री चिमनभाई पटेल ने आरक्षण विरोधियों के एक बड़े वर्ग को यह आश्वासन देकर मना लिया कि वे राज्य में मंडल रिपोर्ट को लागू नहीं करेंगे. इसके बावजूद आंदोलन सिर उठाने की कोशिश करता रहा. पिछले सप्ताह अखिल गुजरात वली मंडल का गठन पाए कुछ छात्र नेता आरक्षण विरोधी संगठन बनाने के लिए एकजुट हुए. पंजाब में यह आंदोलन अपेक्षाकृत धीमा रहा. करीब आधा दर्जन शहरों में आरक्षण विरोधी लोग आमरण अनशन पर बैठे. हरियाणा सीमावर्ती जिलों समेत ग्रामीण इलाकों में मामूली प्रतिक्रिया ही हुई. कई गांवों में ग्रंथियों ने अरदास करने आए लोगों से अनुरोध किया कि वे आरक्षण विरोधी तत्वों को समर्थन न दें.

इन राज्यों में आंदोलन के स्वरूप के आधार पर कहा जा सकता है कि वी.पी. सिंह की राजनीतिक चाल फलदायी हो सकती है. ठीक जिस तरह 1974 के छात्र आंदोलन के बाद असम छात्र आंदोलन की काट को इंदिरा गांधी ने कम करके आंका था, उसी तरह वी.पी. सिंह के अनुमान भी बुरी तरह गलत साबित हो रहे हैं.

आरक्षण विरोधी आंदोलन का नेतृत्व करने वाले छात्रगण किसी समझौते के पक्ष में नहीं थे. शिक्षण संस्थाओं से निकलने के बाद उनके सामने पहला सवाल एक नौकरी पाने का होता है. मंडल रिपोर्ट से उन्हें अपना भविष्य असुरक्षित नजर आने लगा है. उन्हें प्रधानमंत्री का यह आश्वासन भी बेमानी लगा कि मंडल आयोग की सिफारिशें शिक्षण संस्थाओं, सरकारी नौकरियों में प्रोन्नति और सेना तथा अर्धसैनिक बलों में भर्ती आदि पर लागू नहीं होंगी. जद अध्यक्ष एस. आर. बोम्मई और केंद्रीय संचार राज्यमंत्री जनेश्वर मिश्र को छात्रों से बात करने के निर्देश का भी असर होता नहीं दिखा.

इस तरह हिंदीभाषी राज्यों के शिक्षण संस्थानों का रातोरात राजनीतिकरण हो गया. हिंदी फिल्मों से प्रभावित ये छात्र इस बहस में जुटे थे कि लालू यादव आरक्षण समर्थक क्यों हैं, चिमनभाई पटेल इसके विरोधी क्यों. राजनीतिकरण तो स्वागतयोग्य है लेकिन आंदोलन ने छात्रों को जातीय आधार पर गहरे बांट दिया है. राजनीति विज्ञान के शोध छात्र हरिंदर कुमार कहते हैं, "अब तक हमारी प्रतिस्पर्धा हिंदू कॉलेज बनाम सेंट स्टीफेंस कॉलेज या मिरांडा हाउस बनाम लेडी श्रीराम कॉलेज के रूप में हुआ करती थी. अब ये लोग हमें जातीय होड़ की राह दिखा रहे हैं." किंग जॉर्ज मेडिकल कॉलेज के राजीव शर्मा भी उनसे सहमत हैं, "इस आंदोलन के बाद हमारे गूजर और यादव दोस्तों ने हमसे बातचीत बंद कर दी है."

लेकिन एकाध जगह मुठभेड़ों के अपवाद को छोड़ पिछड़ी जातियों के लोग संघर्ष से दूर ही रहे. दिल्ली विश्वविद्यालय के अराजनैतिक छात्रों ने भी आंदोलन में शामिल हो बहादुरी से पुलिस की लाठियां खाईं. दिल्ली के एक कॉलेज की गोष्ठी में एक वक्ता ने छात्रों की हिंसा पर सवाल उठाया तो एक छात्रा ने तीखा प्रतिवाद किया, "यह सरकार तो गोलियों की ही आवाज सुनती है. हम तो खिड़कियों के शीशे भर तोड़ रहे हैं."

यह आंदोलन छात्रों को राजनीति का सबक सिखाने वाला भी साबित हुआ है. वे जल्द ही भांप गए कि राजनैतिक पार्टियां किस तरह उनका शोषण करने की कोशिश करती हैं. दिल्ली में जब भाजपा अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी और सांसद मदनलाल खुराना राजीव गोस्वामी के माता-पिता से मिलने सफदरजंग अस्पताल गए तो छात्रों ने उनका घेराव किया. उन्होंने आडवाणी से मंडल आयोग की सिफारिशों की आलोचना करने को कहा. मगर वे ऐसा कैसे कर सकते थे, क्योंकि उनकी पार्टी का चुनाव घोषणापत्र आयोग की सिफारिशें लागू करने को प्रतिबद्ध था. सो, उन्होंने कहा कि वे पुलिस अत्याचारों के खिलाफ हैं. कानून के द्वितीय वर्ष के छात्र देवेश कुमार सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरद सक्सेना

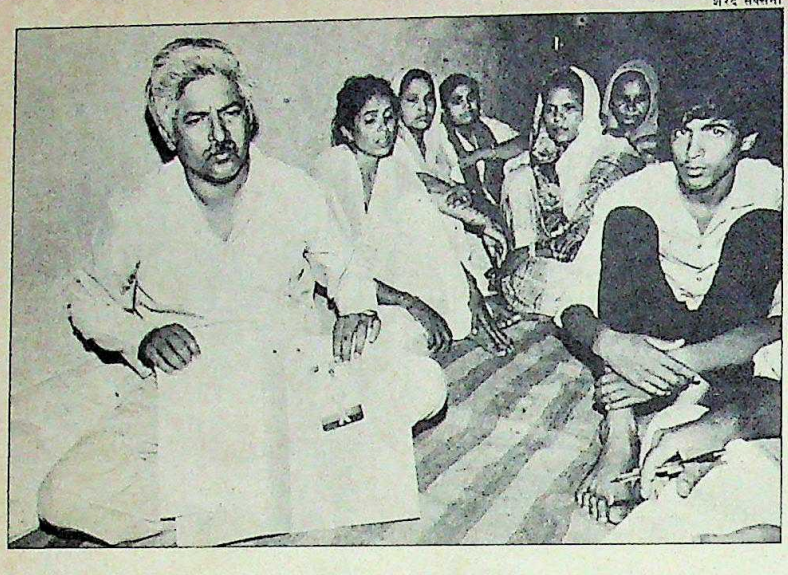

शरद सक्सेना

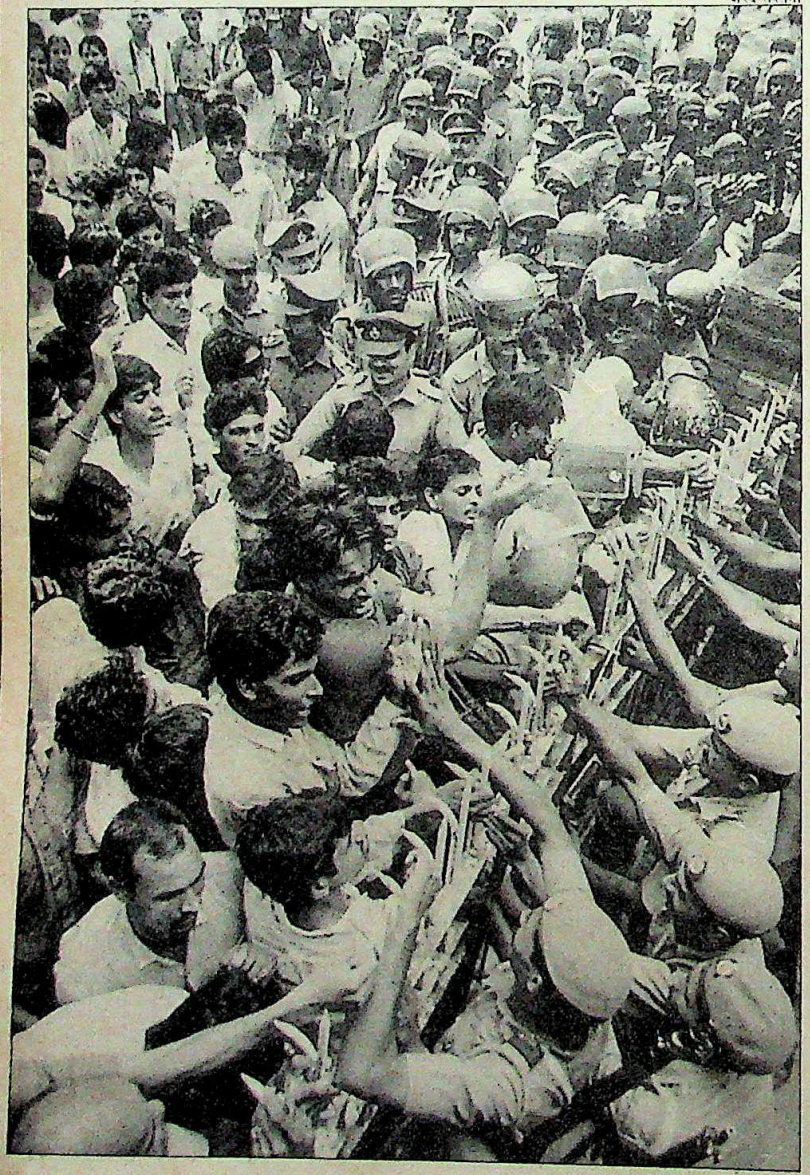

सुशील कुमार का परिवार; और (नीचे) दिल्ली में भाजपा दफ्तर पर छात्र प्रदर्शन: जबरदस्त दबाव

कहते हैं, "ये राजनैतिक दल दोमुंही नीति अपना रहे हैं."

हिमाचल प्रदेश के भाजपाई मुख्यमंत्री शांता कुमार ने छात्रों को अपने साथ लेने की कोशिश की तो इसका उलटा ही असर हुआ. मंडल रिपोर्ट के उनके खुले विरोध से छात्रों को बल मिला और ऊपरी हिमाचल में वे सड़कों पर निकल आए. इसके विरोध में हिमाचल के निचले क्षेत्र में मंडल समर्थकों ने आंदोलन छेड़ दिया. नतीजतन, यह शांतिप्रिय राज्य भी हिंसा की चपेट में आ गया.

आंदोलन की आंच पर दूसरे राजनैतिक दलों ने भी रोटी सेंकने की कोशिश की. इंका ने मंडल रिपोर्ट की खुली आलोचना तो नहीं की लेकिन दल के सांसद एस.एस. अहलूवालिया और वरिष्ठ नेता सुभाष चोपड़ा दिल्ली के आंदोलनकारियों से खुलकर जुड़े रहे और बिहार में तो ऊंची जाति के इंका विधायक आदित्य नारायण ने यादवों के खिलाफ एक हिंसक रैली की अगुआई की.

फिर भी कुछ स्थानों पर इस आंदोलन में नेताओं और आवारा किस्म के तत्वों ने दखलंदाजी की. मसलन, हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला की ग्रीन ब्रिगेड ने आंदोलन को खूब भुनाया. एक तरफ छात्र जहां मंडल रिपोर्ट के विरोध में राजपथ पर यातायात ठप कर रहे थे, वहीं दूसरी तरफ ग्रीन ब्रिगेड के कार्यकर्ता केंद्रीय मंत्रिमंडल से देवीलाल को निकाले जाने के विरोध में नारे लगा रहे थे. महेंद्र सिंह टिकैत छात्रों की एक बैठक में अंग्रेजी विरोधी और शहर विरोधी तेवर दिखाते रहे.

आंदोलन को भुनाने के प्रयास दरअसल छात्रों की ताकत और देश के राजनैतिक समीकरणों को बदल देने की उनकी क्षमता का लोहा मानने के ही प्रतीक हैं. इस मुद्दे पर राष्ट्रीय सहमति तैयार करने की राजनैतिक दलों की अनिच्छा से संकेत मिलता है कि देश अस्थिरता की ओर अग्रसर हो रहा है. इस आंदोलन ने वी.पी. सिंह की अल्पमत सरकार को तो हिलाकर रख ही दिया है, इस तूफान के थपेड़ों से देश को बचाने के लिए कोई वैकल्पिक राजनैतिक व्यवस्था भी नहीं दिख रही है.

—**पंकज पचौरी** और **फिलिप जॉर्ज**, साथ में **फरजंद अहमद** पटना में, **दिलीप अवस्थी** लखनऊ में, और ब्यूरो रिपोर्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाह । कितना प्यारा है उपहार
सचमुच इसका नहीं जवाब
मन बार - बार खाने को मचले
ऐसा है मॉर्टन का स्वाद ।

मॉर्टन स्वीट्स व टॉफियाँ — वर्षों से पूरे परिवार की मनपसन्द । स्वादिष्ट व पौष्टिक - इतने सारे जायकों में । चीनी, ग्लूकोज व क्रीमयुक्त शुद्ध दूध, के गुणों से भरपूर । चॉकलेट व कोकोनट कूकीज, रोज एक्लेर्यस, सुप्रीम, चॉकलेट तथा कोकोनट टॉफियाँ, लेक्टोबोनबोन्स तथा अन्य अनेक मज़ेदार स्वादों में उपलब्ध ।
मुस्कुराहट भरा मॉर्टन का साथ ।

MORTON
SWEETS

मॉर्टन कन्फैक्शनरी एण्ड मिल्क प्रॉडक्ट्स फैक्ट्री,
पो० आ० मढ़ौरा — ८४१४१८, जिला सारन, बिहार

MORTON स्वीट्स का लोगो एवं रैपर ॲपर गैंगेज सूगर एंड इंडस्ट्रीज लि० का पंजीकृत व्यापार-चिन्ह है । किसी भी प्रकार से व्यापार- चिन्ह अधिकारों का उलंघन अभियोजनीय है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय पार्टियां

संकीर्ण स्वार्थों के समीकरण

—इंद्रजीत बधवार और प्रभु चावला

आज अगर महात्मा गांधी जीवित होते तो देश के राजनेताओं में सद्बुद्धि जगाने के लिए शायद आमरण अनशन पर बैठ जाते. देश में आज राजनैतिक वर्चस्व हासिल करने के लिए जिस तरह का संघर्ष चल रहा है और इसमें लिप्त लोग जिन ताकतों, साधनों और प्रतीकों का प्रयोग कर रहे हैं उससे गांधी जी के उन तमाम प्रयासों का मखौल उड़ रहा है जो उन्होंने इस देश के लोगों में स्वाभिमान और सामाजिक चेतना जगाने के लिए किए थे. पिछले पखवाड़े के समाप्त होते-होते एक बार फिर उजागर हो गया कि देश जातिवाद और संप्रदायवाद के दलदल में धंसता जा रहा है.

मंडल आयोग की सिफारिशें लागू करने के प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के फैसले के बाद से संकट के जो काले बादल मंडराने लगे थे, वे राम जन्मभूमि मसले के अचानक नाटकीय और उग्र रूप से उभरने के कारण और गहराते नजर आए. आरक्षण के मसले पर हड़बड़ी और बिना पूर्व-तैयारी के किए फैसले के कारण देशव्यापी उग्र छात्र असंतोष फूट पड़ा है, जातीय तनाव के कारण कई राज्यों में जनजीवन अस्तव्यस्त हो गया है और शैक्षणिक गतिविधियों में बाधा पड़ी है. कई वर्षों के बाद कई राज्यों में शांति और व्यवस्था बहाल करने के लिए सेना का सहारा लेना पड़ा है.

आंदोलन सांप्रदायिक सद्भाव को नष्ट कर सकता है, भाजपा और जद में तनाव पैदा करके अस्थिरता ला सकता है

इस आंदोलन के थमने के कोई आसार नजर नहीं आ रहे हैं. बल्कि इसकी लपटें सांप्रदायिक सद्भाव के ताने-बाने को न केवल झुलसा डालने पर आमादा हैं बल्कि ये भाजपा और जनता दल के बीच ऐसी आग लगा सकती हैं जिसके फलस्वरूप पूरा देश अस्थिरता के गर्त में फंस सकता है और मध्यावधि चुनाव करवाने पड़ सकते हैं.

अयोध्या में विवादास्पद स्थान पर 30 अक्तूबर से राम मंदिर का निर्माण शुरू करने के विश्व हिंदू परिषद के प्रयासों को पूरा समर्थन देने के लिए भाजपा अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी ने गुजरात के सोमनाथ मंदिर से लेकर अयोध्या के विवादास्पद बाबरी मस्जिद तक की दस हजार किलोमीटर की रथयात्रा करने की जो घोषणा की है उससे साफ हो गया है कि पार्टी ने मध्यावधि चुनाव में भी हिंदू वोटों को भुनाने का मन बना लिया है. दो महीने की इस रथयात्रा के दौरान हजारों लोग इसके साथ चलकर अयोध्या पहुंचेंगे, उससे न केवल सांप्रदायिकता की दीवार मजबूत होगी बल्कि हिंसा फूट पड़ने का भी डर है.

लेकिन लगता है भाजपा मानती है कि उसका राजनैतिक उत्थान हिंदुओं को राम के नाम पर एकजुट करके ही हो सकता है, न कि मंडल के नाम पर उनमें फूट डाल कर. भाजपा ने तकरार का यह तेवर वी.पी. सिंह की उस चाल को नाकाम करने के लिए अपनाया है जिसके तहत वे पिछड़ों का वोट बैंक हथियाना चाहते हैं. वी.पी. सिंह की इस चाल ने भाजपा की हवा सचमुच निकाल दी थी. लेकिन उसके कारण देश भर में जातीय विद्वेष की आग जिस तरह फैल रही है उससे यह स्पष्ट हो गया है कि वी.पी. सिंह ने भारतीय समाज को दो हिस्सों में बांट दिया है. जातीय विभाजन को इस बड़े पैमाने पर संस्थात्मक स्वरूप दिए जाने से भाजपा के उन प्रयासों को सबसे ज्यादा धक्का लगा है जिनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह हिंदुओं को अपने झंडे तले एकजुट करना चाहती थी.
लेकिन दुख की बात यह है कि प्रधानमंत्री और उनके कुछ मंत्री
इन चुनावों से जातिवाद और संप्रदायवाद के पत्ते खेल रहे हैं उसे
किसी राष्ट्रीय नेता के लिए कतई शोभनीय नहीं माना जा सकता.
रक्षा मंत्री शरद यादव तो खुल्लमखुल्ला यह कहते फिर रहे हैं कि
देवीलाल को बेअसर करने के लिए आरक्षण का यह फैसला करना
पड़ा था. उधर दूसरे यादव, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री मुलायम
सिंह यादव पूरे राज्य का दौरा करके मुसलमानों की रैलियां
कर रहे हैं और भाजपा तथा विहिप की भर्त्सना करते
फिर रहे हैं. यानी असली चाल मंडल के नाम पर
पिछड़ों के, और मस्जिद के नाम पर मुसलमानों के
वोट अपने लिए सुरक्षित करने की है.

इन चालों के प्रतिक्रिया स्वरूप उत्तर भारत में जो आंदोलन फूट पड़ा है उस पर काबू कर पाना मुश्किल हो सकता है. उत्तर प्रदेश में विहिप तथा भाजपा की रैलियों में जिस तरह प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के खिलाफ जहर उगला जाता है और अल्पसंख्यकों की राष्ट्र-भक्ति पर शक जाहिर किया जाता है उससे माहौल कुल मिलाकर विस्फोटक ही होता जा रहा है.

लगता है नेताओं ने इस देश को एक तरह का पॉकेट कैलकुलेटर समझ लिया है, जिसकी चंद बटनें दबा कर वे यह नतीजा पा लेना चाहते हैं कि कौन-सा जातीय और सांप्रदायिक समीकरण उनके लिए फलदायी हो सकता है.

इसलिए भाजपा जबकि हिंदू वोटों को हथियाने की कोशिश में है, वी.पी. सिंह को भावी चुनावों में ऐसे तिकोने संघर्ष की संभावना नजर आने लगी है जिसमें वे भाजपा और इंका को शहरी मध्यवर्ग के वोटों में हिस्सेदारी करने के लिए छोड़ दे सकते हैं और वे खुद मुसलमानों तथा पिछड़ों के वोट बटोर ले जा सकते हैं.

जिस देश के नेता समस्याएं सुलझाने की जगह उन्हें पैदा करने लगें उस देश में विनाशकारी संघर्ष नहीं छिड़ेगा तो और क्या होगा?

लेकिन यह देश सिर्फ वोट बैंक ही नहीं है. और सिर्फ उत्तर प्रदेश तथा बिहार ही देश नहीं है. इस देश में जब कोई लहर उठती है तब तमाम समीकरण उलट-पुलट और बेमानी हो जाते हैं. लेकिन फिलहाल जो लहर चल रही है, उसकी बड़ी कीमत देश को चुकानी पड़ रही है. यह लहर नकारात्मक राजनीति की है, जिसमें नेताओं ने व्यापक राष्ट्रवादी दृष्टिकोण को भुला दिया है और वे महज टुच्चे जुगाड़िए नजर आने लगे हैं.

देश की वास्तविक समस्याओं, उसकी मूलभूत पीड़ाओं को भुला दिया गया है. कानून और व्यवस्था की स्थिति बदतर होती जा रही है. महंगाई ने आम लोगों का जीवन दूभर कर दिया है. स्वास्थ्य और परिवार कल्याण के कार्यक्रम अस्तव्यस्त हो गए हैं. औद्योगिक नीति के बारे में अनिश्चितता कायम है. भ्रष्टाचार जिस गहराई तक समाज और सरकार में पैठ गया है उससे आम आदमी बुरी तरह त्रस्त है. पंजाब जल रहा है और कश्मीर भी जल रहा है.

देश जबकि समस्याओं के कारण परेशान है, इसके नेता इन समस्याओं को दूर करने या उन पर साफ नजरिया अपनाने और देश में घिरते अंधकार को दूर करने की जगह उसे और गहरा करते जा रहे हैं. उनका मकसद सिर्फ अपने प्रतिद्वंद्वियों को मात देना और वोट बैंकों को सुरक्षित करना भर रह गया है. इस माहौल में राष्ट्रीय पार्टियां भी अपनी प्रासंगिकता खोती जा रही हैं. यह राष्ट्रीय एकता परिषद की हाल की बैठक से उजागर हो गया. इस बैठक में हरेक तथाकथित नेता—राजीव गांधी से लेकर चंद्रशेखर तक, ज्योति बसु से लेकर एन.टी. रामराव तक—देश की वास्तविक समस्याओं पर साझा और तर्कसंगत चर्चा करने की जगह एक दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिशें ही करता दिखा.

जिस देश के नेता समस्याओं का समाधान करने की जगह समस्याएं पैदा करने लगें उस देश में विनाशकारी संघर्ष नहीं छिड़ेगा तो और क्या होगा.

रेखांकन: अजीत नैनन और अनिल शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय जनता पार्टी

तकरार के तीखे तेवर

राम जन्मभूमि के मुद्दे पर पार्टी के मैदान में उतर आने से वी.पी. सिंह सरकार का संकट बढ़ा

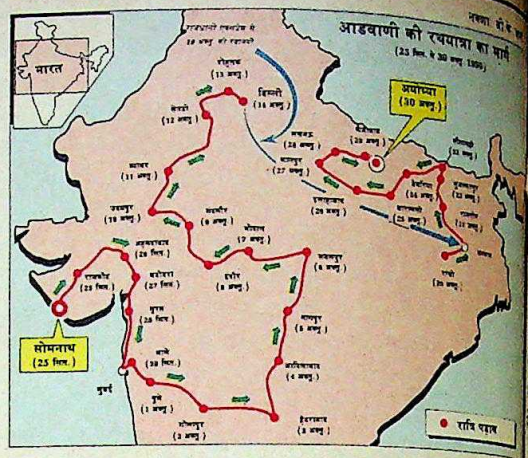

भाजपा अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी जब अपनी बहुचर्चित यात्रा के लिए वातानुकूलित रथ पर सवार हुए तब उनके और उनके सपनों के राम मंदिर के बीच 10,000 किमी और 30 दिनों की दूरी थी. और जिस नाटकीयता से उन्होंने प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह को चुनौती देने, और जनमानस तक अपना संदेश पहुंचाने की कोशिश की, उसकी अनदेखी नहीं की जा सकती. झक सफेद रेशमी खादी के धोती-कुर्ते में सजे आडवाणी ने जो कुछ कहा उसका साफ मतलब यही था कि देश को आज जिस वैकल्पिक नेतृत्व की तलाश है, उसे वे ही दे सकते हैं. और यह भी कि उनकी पार्टी के पास ऐसा कार्यक्रम है जो विवादास्पद मंडल रिपोर्ट से उठे बवंडर को शांत कर सकता है.

आडवाणी ने रथयात्रा के लिए बहुत ही विस्फोटक समय चुना है. उनके इस कार्यक्रम के प्रति लोगों की प्रतिक्रिया भी कम जोशीली नहीं रही. नवरात्रि के अवसर पर भाजपा, विश्व हिंदू परिषद (विहिप) और बजरंग दल के कार्यकर्ताओं और कार्यक्रम में शामिल दूसरे लोगों ने हिंदूवादी नारों से सोमनाथ को गुंजा दिया. भाजपा की 'सकारात्मक धर्मनिरपेक्षता' का प्रमाण बने दो मुसलमान भी मौके पर मौजूद थे—सिकंदर बख्त, और आडवाणी के रथ के 'सारथि' सलीम.

तलवार चमकाते राजपूत युवाओं के पीछे जब आडवाणी का रथ आगे बढ़ा तब कोई संदेह नहीं रह गया कि भाजपा ने उस जन समर्थन को फिर से हासिल करने के लिए कमर कस ली है जो मंडल रिपोर्ट के कारण उसकी पकड़ से फिसलता जा रहा था. भाजपा ने आडवाणी को विकल्प के रूप में पेश करने का फैसला किया है. और यह साबित करने के लिए कि इस कदम को आरएसएस भी समर्थन दे रहा है, आरएसएस प्रमुख बाला साहब देवरस के

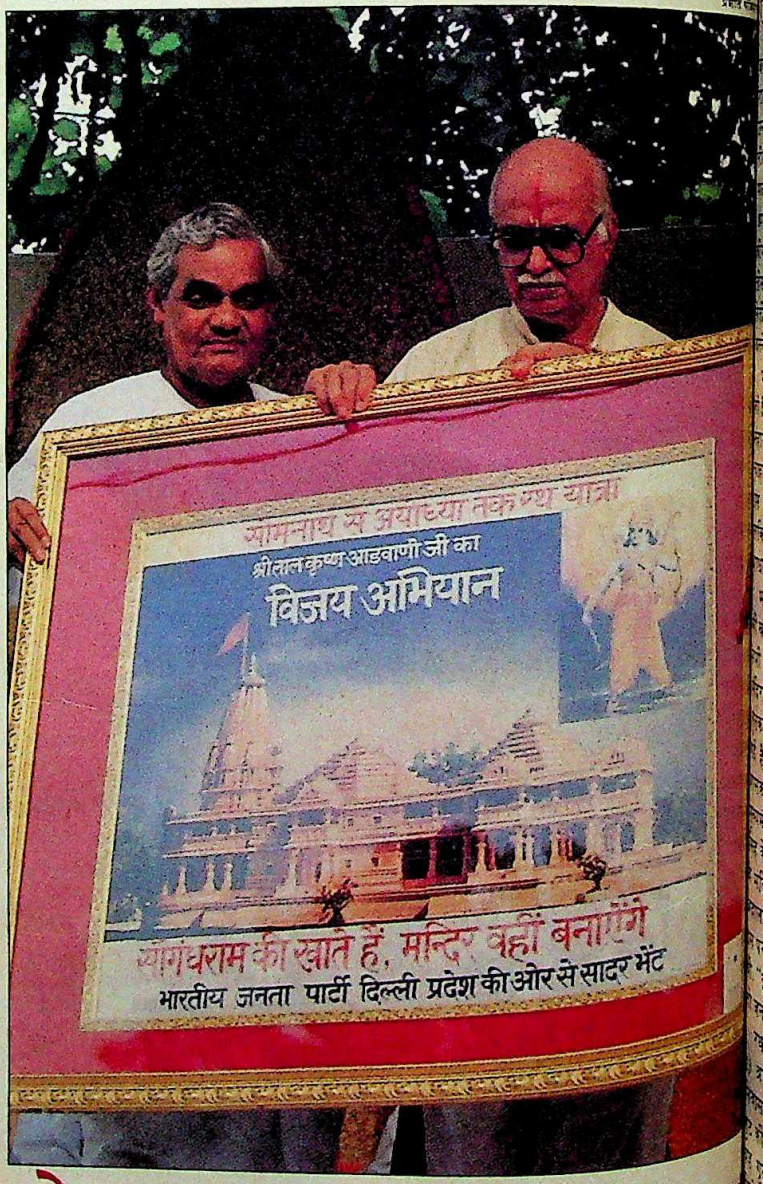

मोर्चाबंदी स्पष्ट है. भाजपा अब विश्व हिंदू परिषद और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की इस लाइन से खुलेआम जुड़ गई है कि अदालतें चाहे फैसला दें, राम मंदिर का निर्माण अक्तूबर से शुरू होकर रहेगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाऊराव देवरस आडवाणी की यात्रा कार्यक्रम के समन्वय के लिए दिल्ली में दो हफ्ते रहे.

16 सितंबर तक भोपाल में हुए सम्मेलन में आडवाणी ने साफ शब्दों में कहा था, "यह नहीं हो सकता कि सरकार हमारी उपेक्षा भी करती रहे और हमारे समर्थन को भी पक्का माने." लेकिन यह उनकी रथयात्रा की घोषणा ही थी कि एक दिन बी.पी. सिंह ने घोषणा कर दी कि यदि भाजपा समर्थन वापस लेती है तो वे 'विपक्ष में बैठने' को तैयार हैं.

वी.पी. सिंह के इस परोक्ष जवाब का निहितार्थ तब और स्पष्ट हो गया जब उन्होंने कहा कि "देश में नए राजनैतिक समीकरण उभर सकते हैं." उन्होंने जो यह गोलमोल घोषणा की, इसके दो मतलब निकलते हैं—एक तो यह कि वे मध्यावधि चुनाव नहीं कराएंगे. दूसरे, वे जनता दल के किसी और नेता को किसी भी कीमत पर अपनी जगह नहीं बनने देंगे. दूसरा यह कि यदि भाजपा समर्थन वापस लेती है तो राजीव गांधी के ही प्रधानमंत्री बनने की संभावना है.

राजग राष्ट्रीय मोर्चा (रामो) सरकार को गिराने तथा राजीव गांधी की वापसी में सहायक बनने का अपयश बटोरना नहीं चाहती बल्कि वह चाहती है कि सरकार कोई मुद्दे पर खुद ही कोई कार्रवाई करे ताकि उसे चुनाव में नए नारे गढ़ने का अवसर मिल सके.

राजग और सरकार के बीच विरोध की खाई जितनी गहरी आज है, उतनी पहले कभी नहीं थी. भाजपा 30 अक्तूबर से राम मंदिर का निर्माण शुरू करने के मुद्दे पर अड़कर आरएसएस और विहिप के साथ हो ली है, अदालत का फैसला चाहे जो हो. जनता दल का रवैया उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव और वी.पी. सिंह के इस फैसले से साफ हो जाता है कि मंदिर का निर्माण नहीं होने देंगे और अदालत का फैसला ही लागू किया जाएगा. यहां तक कि एक भाजपाई मुख्यमंत्री की टिप्पणी थी कि इस संघर्ष में एक भी साधु मारा गया तो जनता सरकार के खिलाफ हो जाएगा." रथयात्रा का फैसला भाजपा मुख्यालय अशोक रोड पर नहीं, आडवाणी के घर पर पार्टी कार्यकारिणी के एक छोटे से बेहद गोपनीय बैठक में किया गया. इस फैसले पर पहुंचा कि मंडल लागू हुई तो पार्टी की छवि को बहुत नुकसान पहुंचेगा और उसके कार्यकर्ता भी बंट जाएंगे. मध्यावधि चुनाव की संभावना पर भी विचार किया गया.

पार्टी ने पिछले एक वर्ष से राम का नाम जपना बंद कर रखा था. पर जैसे ही उसे लगा कि पार्टी को मुख्यधारा से अलग-थलग करने की कोशिशें हो रही हैं, उसने 'एकला चलो' की नीति अपनाते हुए अपने हिंदू आधार को फिर टटोलना शुरू कर दिया.

पिछले कुछ महीनों से लग रहा था कि वी. पी. सिंह से भाजपा की नाराजगी बढ़ती जा रही है. दिल्ली के भाजपा नेता सरकार की इसलिए आलोचना कर रहे थे कि राष्ट्रीय मोर्चा के घोषणापत्र में दिल्ली को राज्य का दर्जा देने का वादा होने के बावजूद कुछ नहीं किया जा रहा है. 7 अगस्त को मंडल आयोग की सिफारिशें लागू करने की घोषणा के बाद दिल्ली में आरएसएस की एक उच्चस्तरीय बैठक हुई. इसमें तय पाया गया कि यह सरकार देश को तोड़ने का काम कर रही है.

पार्टी के 11 वरिष्ठ सदस्यों ने एक सर्वे करके अपने विधायकों सहित देश भर के 1200 नेताओं की राय इकट्ठा की. इनके विश्लेषण से पार्टी ने नतीजा निकाला कि पार्टी भारी चुनावी सफलता को अपना जनाधार बढ़ाने के लिए इस्तेमाल नहीं कर सकी है. इसके कई कारण हैं. कीमतें बढ़ने से पार्टी की छवि खराब हुई क्योंकि लोग सरकार के साथ भाजपा को भी दोष दे रहे हैं. भाजपा के शासन वाले तीन राज्यों का काम संतोषजनक नहीं है.

राष्ट्रीय सत्ता समीकरण में पार्टी की स्थिति काफी उलझनपूर्ण है. मध्य प्रदेश और हिमाचल प्रदेश में वह सत्ता में है और राजस्थान और गुजरात में सत्ता की भागीदार है. केंद्र समेत दूसरे कई राज्यों में वह विपक्ष में है.

और मंडल रिपोर्ट वाले फैसले ने जैसे उस पर कहर ही बरपा दिया. इस फैसले ने भाजपा शासित राज्यों खासकर हिमाचल प्रदेश को हिलाकर रख दिया. हिमाचल में सरकारी कर्मचारी आरक्षण नीति के विरोध में हड़ताल पर चले गए. वहां सेना बुलाने तक की नौबत आ गई. साथ ही भाजपा का जनाधार यानी मध्यम वर्ग इस बात पर नाराज था कि पार्टी आरक्षण का खुलकर विरोध क्यों नहीं कर रही. लेकिन पार्टी अगर ऐसा करती तो डर था कि नवंबर के चुनाव में उसने पिछड़ी जातियों के सहारे ग्रामीण इलाकों में जो आधार बनाना शुरू

प्रमोद पुष्करणा

भाजपाई सांसदों और विधायकों के सम्मेलन में वाजपेयीः उग्र तेवर

किया था, वह ढह जाता.

पार्टी एक अजीब उलझन में फंस गई है. इसलिए उसने अस्पष्ट रवैया अपनाने का फैसला किया. मगर इससे पार्टी की परेशानी और बढ़ गई. आरक्षण का खुला समर्थन करने के कारण पिछड़ा वर्ग जनता दल के साथ हो गया जबकि विरोधी हवा का फायदा उठाते हुए इंका भाजपा के शहरी जनाधार को ले उड़ी.

भाजपा के विचार में वी. पी. सिंह के 'अल्पसंख्यकवाद' और मुसलमानों के 'तुष्टीकरण' की नीति के कारण भी शासक दल से उसका मतभेद तीव्र हुआ है. दिल्ली में स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले से भाषण करते हुए वी.पी. सिंह ने पैगंबर मुहम्मद के जन्म दिवस पर राष्ट्रीय छुट्टी की घोषणा की. उधर, लखनऊ में मुलायम सिंह यादव ने विहिप और भाजपा पर हल्ला बोल दिया. इन हालात में भाजपा के कार्यकर्ता उलझन में पड़ गए और उनका अपनी पार्टी से मोहभंग भी होने लगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

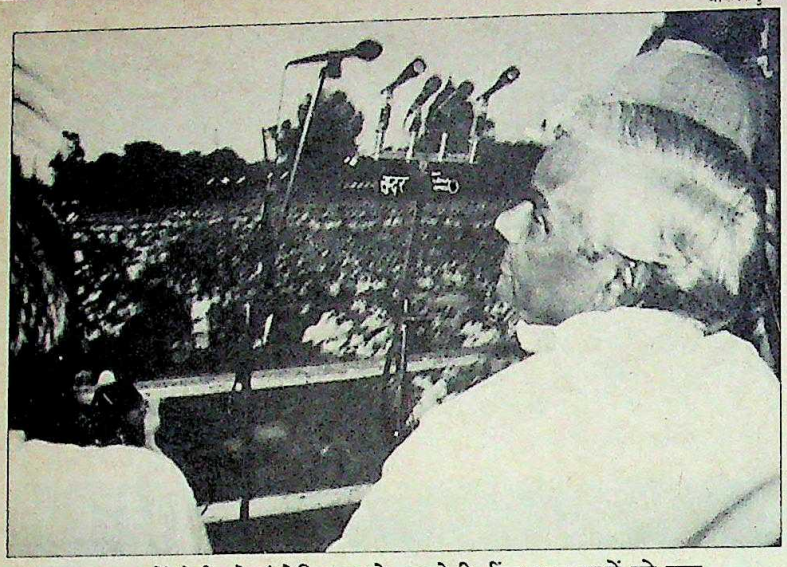

लखनऊ में रैली को संबोधित करते वाजपेयीः हिंदू भावनाओं को हवा

प्रशांत पंजियार

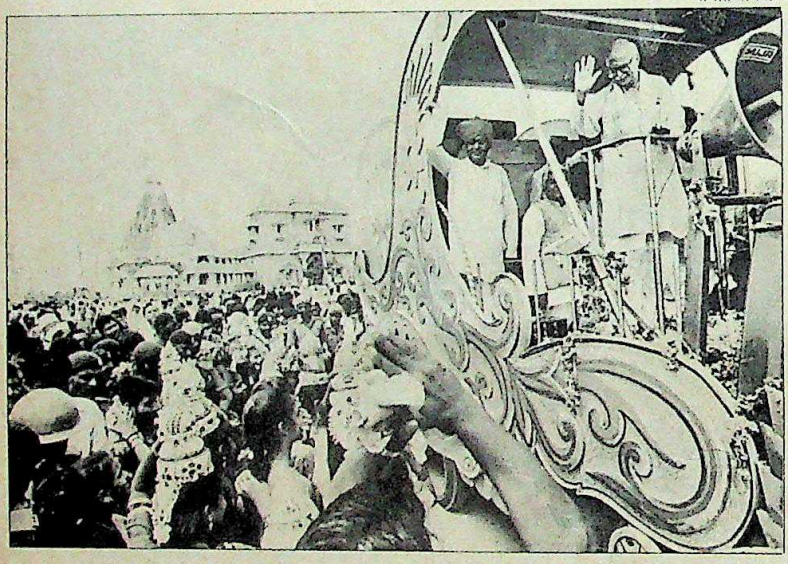

सोमनाथ से रथयात्रा पर निकलते आडवाणीः मजहबी मुहिम

इससे बचने के लिए अयोध्या का अभियान ही एकमात्र रास्ता था. इस अभियान में अगर तेजी आई तो कई मतलब सधेंगे. कीमतों में वृद्धि का सवाल पीछे छूट जाएगा; भाजपा मुख्यमंत्रियों को इससे अपनी अलग पहचान बनाने का मौका मिलेगा; आरक्षण के मसले पर विभाजित हिंदू फिर एकजुट होंगे; और भाजपा कार्यकर्ताओं को एहसास होगा कि पार्टी अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण के प्रयासों का समर्थन नहीं कर रही है. फिर, मंदिर का मुद्दा ही मंडलवाद के बहुआयामी खतरों को दरकिनार कर सकता है. एक भाजपा नेता ने कहा भी, "मंडल के लिए हमारा जवाब है मंदिर."

मुसलमान फिलहाल मुलायम सिंह और वी.पी. के पूर्ण समर्थन में दिखते हैं. परंतु रथयात्रा के मुद्दे पर इस समुदाय ने रहस्यमय चुप्पी साध रखी है. वजह यह कि वह हिंदुओं से सीधे नहीं टकराना चाहता. जामा मस्जिद के शाही इमाम अब्दुल्ला बुखारी भाजपा की योजनाओं पर टिप्पणी से बचते रहे हैं. जाहिर है, वे समस्या खड़ी करने का कोई भी आरोप अपने पर नहीं लेना चाहते. बाबरी मस्जिद आंदोलन समन्वय समिति के सैयद शहाबुद्दीन ही कुछ ज्यादा बोलते रहे. उन्होंने आडवाणी को हिटलर का साथी गोएबल्स करार दिया और रथयात्रा को 'फासीवादी कूच' बताया.

अब राम जन्मभूमि मुद्दे को फिर से उठाकर भाजपा अलग-थलग पड़ गई दिखती है. पिछले आम चुनावों में इंका को यह सीख मिल गई है कि धर्मनिरपेक्षता का नकाब ओढ़कर सांप्रदायिक चाल चलना कतई फलदायी नहीं होता. इसलिए उसने फिर पुरानी राह पकड़ ली है. राजीव गांधी ने आडवाणी की यात्रा को 'शैतानियत भरा' कहा और सांप्रदायिक सद्भाव के लिए खुद यात्रा करने की घोषणा कर दी. जहां तक वामपंथियों की बात है, वे मुलायम सिंह की भाजपा विरोधी मुहिम के साथ हैं.

संकट में घिरे वी.पी. सिंह आरक्षण के फैसले पर तो अड़े हुए हैं पर उन्होंने सरकारी नौकरियों पर पड़ने वाले इसके असर को कम करने के कदम भी उठाए हैं. उनके करीबी मंत्री संकट से बचने के लिए आर्थिक रूप से कमज़ोर तबकों के लिए रोजगार के अवसर जुटाने के आश्वासन दे रहे हैं. अयोध्या विवाद पर वी.पी. सिंह ने धार्मिक नेताओं से बातचीत शुरू की थी. राष्ट्रीय एकता परिषद की बैठक के बाद केंद्रीय गृह राज्यमंत्री सुबोध कांत सहाय ने कांचीपीठ के शंकराचार्य से गुप्त भेंट की. रणनीति यह थी कि धार्मिक नेताओं से विहिप और भाजपा के नाम अपील जारी करवाई जाए कि वे मस्जिद से छेड़छाड़ किए बगैर मंदिर निर्माण करें.

अब गृह मंत्रालय के अधिकारी उबलते राजनैतिक माहौल के अलावा रथयात्रा और विहिप के राम ज्योति अभियान से चिंतित हैं. उनकी चिंताएं जायज भी हैं, क्योंकि 1989 के मध्य में रामशिला यात्राओं के प्रारंभ होने के बाद सांप्रदायिक तनाव में तेजी आ गई थी.

लेकिन सबसे खतरनाक बात तो यह है कि पूरा राजनैतिक माहौल ही अराजक स्थिति में पहुंच गया है. हर पार्टी तर्कसंगत और संयत रुख अख्तियार करने के बदले उलटबांसी से काम चला रही है. भाजपा ने इंका के मुस्लिम महिला विधेयक का जवाब अयोध्या विवाद को तूल देकर दिया था. जनता दल अपने अंदरूनी झगड़ों के निबटारे के लिए मंडल को खींच लाया है. भाजपा इसके जवाब में राम का नाम 'जपने' लगी है. इंका आरक्षण की आलोचना करती है मगर यह भूल जाती है कि इसका वादा उसने अपने घोषणापत्र में भी किया है. साथ ही वह हिंदू भावनाओं को भड़काने की कोशिशों की निंदा करती है और भूल जाती है कि पिछले साल नवंबर में उसने इसी पत्ते पर दांव लगाया था. इस स्वार्थपरक राजनीति के दलदल में सिद्धांत और समझदारी की झलक कम ही मिलती है. चारों ओर राजनैतिक बाजीगरी ही दिखती है जिसने राष्ट्र के अधोपतन का खतरा बढ़ा है.

—प्रभु चावला और पंकज पचौरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्तसिन्दूर

दो ठाकुर परिवारों में बेटे-बेटी के प्रेम-विवाह को लेकर ऊंच-नीच और आन-बान के रक्तरंजित टकराव की दुखान्त कथा

मंखिया जंग

जेलर की डायरी के अन्तर्गत प्रसिद्ध बंगला कथाकार जरासन्ध की कहानी...प्रेम-मनोविज्ञान मर्मस्पर्शी चित्रण

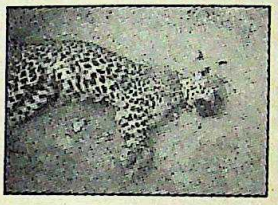

कार्बेट नेशनल पार्क में अवैध शिकार

शेर-गुलदार की खालों की अन्तरराष्ट्रीय तस्करी से जुड़ी खोजपूर्ण कहानी

शादी जिसके लिए तमाशा है

आगरा के उप-श्रमायुक्त की बेटी से विवाह करके धोखा देकर फरार हो जानेवाले जालसाज की कथा, जिसने अनेक प्रतिष्ठित परिवारों और लड़कियों से छल-कपट किया

भारत में सबसे ज्यादा बिकनेवाली हिन्दी पत्रिका

मनोहर कहानियाँ

प्रेम-कथा अंक

वास्तविक जीवन की सुरुचिपूर्ण कथा पत्रिका

प्रेम-पूजा
•
संगीता की भूल
•
पलाश के फूल

११ मार्मिक प्रेम-कथाओं के साथ अन्य कहानियां भी

आज ही खरीदिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

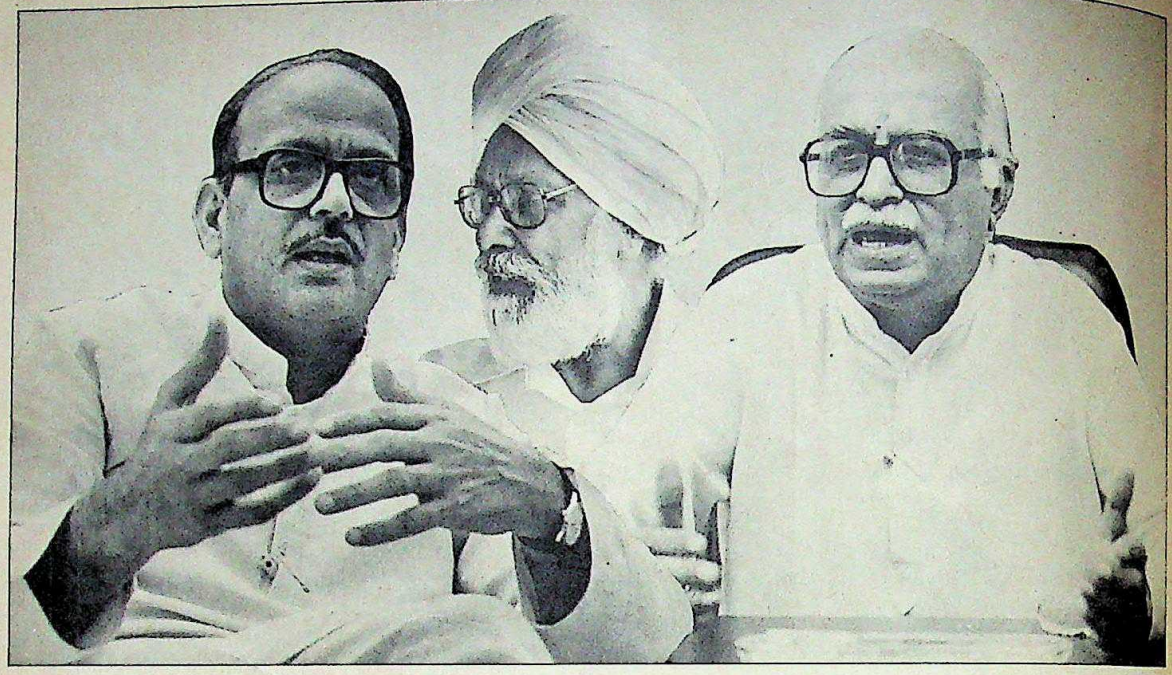

वी.पी. सिंह, सुरजीत और आडवाणी: अलग-अलग सुर

पंजाब

गंवाए मौकों की दास्तान

चुनाव कराने से मुकरकर वी.पी. सिंह ने एक और मौका खो दिया
लेकिन चुनाव विरोधी दलों का सोचना भी सही था

"एक बात का मुझे जिंदगी भर पछतावा रहेगा और इसके लिए मैं खुद को कभी माफ नहीं कर पाऊंगा कि राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के सत्ता में आने के छह महीने के अंदर मैं पंजाब में चुनाव नहीं करवा सका. मैं इस गलती को सरेआम कबूल करता हूं."

—वी.पी. सिंह

इस साफगोई के बावजूद प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह अपनी इस अक्षम्य गलती को बार-बार दोहराने में कतई नहीं हिचके. पंजाब को एक बार फिर प्रभावहीन और उदासीन प्रशासन के हाथों में सौंपते हुए उनके तमाम नेक इरादे हवा हो गए.

यानी पंजाब समस्या जस की तस है. इसके समाधान का एक और मौका गंवा दिया गया है. चुनाव नहीं होंगे यानी राष्ट्रपति शासन लागू रहेगा, भले ही यह वी.पी. सिंह के वादों को झुठलाता हो, भले ही वहां मारे गए निर्दोष लोगों की संख्या पिछले वर्ष के 1,168 के मुकाबले 1,506 हो गई हो, भले ही अकाली दल के कुछ नरमपंथी नेता उग्र रवैया अपनाकर समाधान की संभावनाओं को और धूमिल कर रहे हों, भले ही बिगड़ते हालात और लोगों को अपना असंतोष व्यक्त करने का उपयुक्त माध्यम न मिल पाने के कारण स्थिति गंभीर होती रहे.

न तो इंका, न भाजपा और न ही वामपंथी पार्टियां पंजाब में चुनाव चाहती हैं क्योंकि इस राज्य का मौजूदा राजनैतिक वातावरण इसके अनुकूल नहीं है. जहां तक जनता दल का सवाल है, उसका तो वहां कुछ दांव पर नहीं है. फिर भी उसमें चुनाव के मुद्दे पर एक राय नहीं है. वैसे, खुद वी.पी.सिंह इसके पक्ष में थे.

इसके विपरीत अकाली दल के सभी गुट चुनाव प्रक्रिया शुरू करने की मांग उठाते रहे हैं और पंजाब में राष्ट्रपति शासन बढ़ाने के फैसले को बेवकूफी भरा कहने में जरा भी संकोच नहीं बरत रहे. अकाली दल (बादल) के सुखजिंदर सिंह ने कहा, "केंद्र इस फैसले से बातचीत के जरिए समझौते की आखिरी उम्मीद भी खत्म कर रहा है. अब हमारे पास दो ही विकल्प हैं—या तो घर बैठें या आतंकवादियों के साथ हो जाएं." सिमरनजीत सिंह मान तो बेहद खफा थे. इस फैसले को 'राजनैतिक छल' की संज्ञा देते हुए उन्होंने कहा कि सरकार को लोकतांत्रिक प्रक्रिया शुरू करने में आनाकानी करने के लिए अपनी सहयोगी पार्टियों की ओट नहीं लेनी चाहिए.

जनता दल के चंद्रशेखर समेत 20 में से 11 सदस्यों को तो, जिन्होंने राजनैतिक मामलों की समिति की बैठक में भाग नहीं लिया, वी.पी. सिंह समझा भी लेते लेकिन अपने सहयोगी दलों—भाजपा और वामपंथी दलों—के चुनाव विरोधी रुख को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पलट नहीं पाए. इन दोनों दलों ने 9 सितंबर से शुरू होने वाली बैठकों में सकारात्मक रुख ही अपनाए रखा.

इसी तरह अमृतसर में कार्यरत भाजपा उपाध्यक्ष डॉ. बलदेव प्रकाश की चेतावनी थी कि चुनाव से आतंकवादी गतिविधियां और बढ़ेंगी और अल्पसंख्यक बड़ी संख्या में पंजाब से पलायन करने लगेंगे. पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री और माकपा नेता ज्योति बसु भी चुनाव के प्रबल विरोधी थे. भाकपा के इंद्रजीत गुप्ता चुनावों के अकेले पैरोकार थे.

लेकिन इंका प्रधानमंत्री के लिए सबसे बड़ा सिरदर्द बनी रही. चुनाव के मुद्दे पर उनकी गहरी चुप्पी से वी.पी. सिंह उलझन में फंस गए क्योंकि इंकाई सहयोग के बिना उनकी अल्पमत सरकार के पास राष्ट्रपति शासन की अवधि बढ़ाने के अलावा कोई और विकल्प नहीं था. इस कमजोरी का फायदा उठाते हुए राजीव गांधी ने प्रधानमंत्री को परेशानी में डालने में कोई कसर नहीं छोड़ी. वी.पी. सिंह को लिखे उनके चार पत्रों से जाहिर होता है कि वे प्रधानमंत्री से मनवा लेना चाहते थे कि पिछले दस महीनों में राष्ट्रीय मोर्चा सरकार पंजाब समस्या को सुलझाने में एक इंच भी आगे नहीं बढ़ पाई है.

इंका चाहती थी कि सरकार सबसे राय मांगने की जगह खुद कोई कदम उठाए. इंका महासचिव गुलाम नबी आजाद ने हफ्ते में तीन बार पंजाब का दौरा करने के बाद पाया कि उनकी पार्टी चुनाव के एकदम खिलाफ है. वे बताते हैं, "हमने तो वी.पी. सिंह को कुछ विधेयकों पर समर्थन दिया मगर उलटे उन्होंने हमारी आलोचना ही की. इस मामले में भी वे यही चाहते थे कि वे लोगों से कह सकें कि वे तो चुनाव के पक्ष में थे मगर इंका इसके खिलाफ थी." इसलिए उन्होंने चालाकी से काम लिया और राजनैतिक मामलों की समिति को विधानसभा चुनाव टालने का फैसला करने पर मजबूर कर दिया.

पंजाब में चुनाव कराने के प्रति इंका, अकाली और वामपंथी दलों की अनिच्छा स्वाभाविक है. 1980 के बाद से राज्य पर इन सभी दलों की पकड़ कमजोर होती रही है. 1985 के चुनावों में 117 विधानसभा सीटों में से केवल 39 ही इन तीनों पार्टियों के हाथ लगी. जबकि 1980 में यह संख्या 78 थी. दूसरी ओर 1989 के लोकसभा चुनाव भी राज्य में बदलते राजनैतिक समीकरण की ओर ही संकेत देते दिखे. इस चुनाव के नतीजों ने नरमपंथी अकालियों की भी आंखें खोल दी क्योंकि लोकसभा की कुल 13 सीटों में से उग्रवादियों और उनके समर्थकों को 10 स्थानों पर विजय मिली. और इसी के मद्देनजर अकाली दल (बादल और लोंगोवाल), भाजपा और कुछ वामपंथी नेता पिछले महीने चुनावों की चर्चा चलने के बाद एक संयुक्त मोर्चे के गठन पर भी विचार करने लगे.

खास तौर से भाजपा, राज्य से हिंदुओं के पलायन के कारण अधिक परेशानी में है. सबसे बड़ी बात यह है कि जहां 1981 की जनगणना के अनुसार सिखों और हिंदुओं की जनसंख्या का अनुपात 52:48 था, वहीं अब की जा रही जनगणना के हिसाब से यह अनुपात 68:32 हो गया है. यह एक ऐसा तथ्य है जिसके मद्देनजर भी भाजपा और इंका ने विपक्ष में अपनी राय दी होगी. लेकिन वामपंथी दलों ने चुनाव का विरोध केवल वोट को ध्यान में रखकर नहीं किया. माकपा नेता हरकिशन सिंह सुरजीत मानते हैं कि उग्रवादी राज्य विधानसभा पर कब्जा कर सदन में ही खालिस्तान की मांग कर सकते हैं, उनके अनुसार, "उग्रवादियों पर अकालियों का कोई नियंत्रण नहीं है. अगर वे चुनाव की मांग करते हैं तो उसका कारण यही है कि वे पंजाब को उग्रवादियों के सुपुर्द कर देना चाहते हैं."

लेकिन पंजाब में भाजपा और वामपंथी दलों का नहीं, अकालियों का ही थोड़ा बहुत सिक्का चलता है. और वे चुनाव कराना चाहते हैं. वैसे डर इसी बात का है कि यह रुख पलट सकता है. वर्तमान स्थिति पर रिपोर्ट तैयार करने वाले एक वरिष्ठ गुप्तचर अधिकारी कहते हैं, "इस बार तो गनीमत है कि लोकतंत्र की बात की जा रही है. पर हो सकता है कि कल बादल ही चुनाव से मुकर जाएं." इस संदर्भ में यह बात महत्वपूर्ण है कि हाल में जनमत संग्रह कराने और संयुक्त राष्ट्र की देखरेख में चुनाव कराने की बात उठाने वाले मान भी पलट गए हैं और फिर से संविधान के प्रति निष्ठा व्यक्त करते हुए यहां तक कहने लगे हैं कि चुनाव तो संवैधानिक अधिकार है.

लेकिन ऐसा लगने लगा है कि केंद्र मान का सही उपयोग नहीं कर सका. इसीलिए हर दिन मान का रवैया कठोर होता जाएगा. और हो सकता है कि अब से छह महीने बाद भाजपा तथा वामपंथी दलों की यह आशंका सच हो जाए मान की आड़ में उग्रवादी लोग विधानसभा में छा जाएंगे.

प्रमोद पुष्करणा

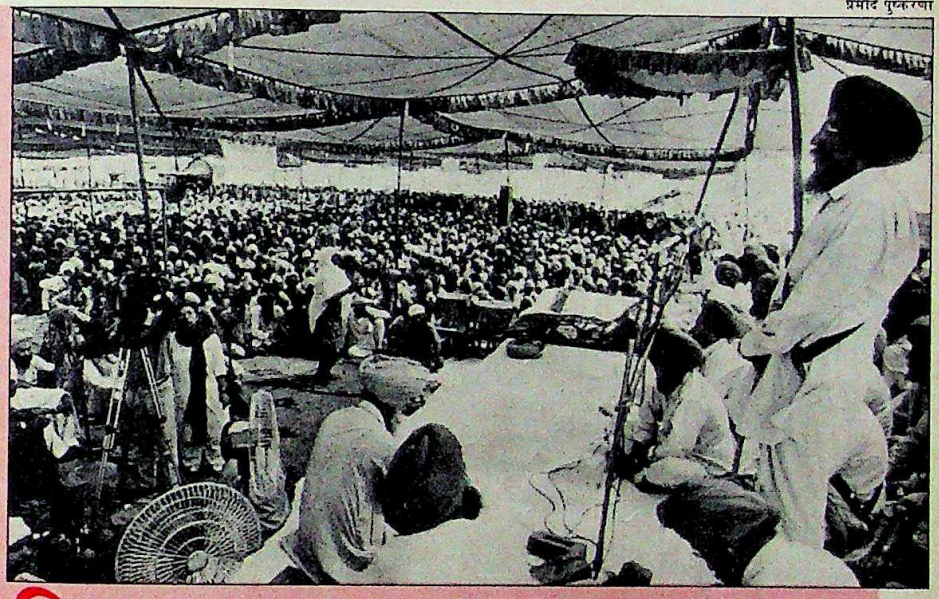

पिछली हर बार की तरह इस बार भी केंद्र सरकार मान का सही उपयोग कर पाने में असमर्थ रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैसे गृहमंत्री मुफ्ती मुहम्मद सईद भी खुद यही कहते हैं, "आम तौर पर लोग खालिस्तान के पक्ष में नहीं हैं. मगर राष्ट्रपति शासन अंततः लोगों को अलग-थलग ही करता है." इसके अलावा, मुफ्ती को उन गुप्त बैठकों की जानकारी भी जरूर होगी जो मान और वी.पी. सिंह के बीच हुई, जिसमें उन्होंने आश्वासन दिया था कि कोई चालाकी भरा प्रस्ताव पास नहीं किया जाएगा. उन्होंने तो इस तरह की संभावना ही समाप्त करने के उद्देश्य से जनता दल के साथ गठबंधन करने तक की पेशकश की थी. बदले में मान ने दो चीजें चाही थीं—मुख्य सचिव एस.एल. कपूर और पुलिस महानिदेशक के.पी.एस. गिल को हटाना.

लेकिन सुरजीत और बसु जैसे नेताओं की आशंकाओं को यों ही नकारा नहीं जा सकता. एनएसजी को तैनात करने या रोकने की अपनी रणनीति तय कर ली है. एक रिपोर्ट में दावा किया गया है कि पंथक समिति (सोहन सिंह) के कुछ नेताओं ने पाकिस्तान स्थित पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री नवाज़ शरीफ और दल खालसा के अध्यक्ष गजिंदर सिंह से 27 जून को लाहौर के निकट भेंट की और गतिविधियां बढ़ाने का फैसला किया. इसीसे अमृतसर में सीमा सुरक्षा बल और केंद्रीय रिजर्व पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी राष्ट्रपति शासन जारी रखने के पक्ष में हैं.

लेकिन पंजाब पहले ही साढ़े तीन वर्ष का केंद्रीय शासन झेल चुका है और अभी तक इसके कारगर नतीजे सामने नहीं आए हैं. लाशों के ढेर और थके-हारे इरादों के साथ वर्तमान राज्यपाल वीरेंद्र वर्मा का प्रशासन खास तौर से औसत दर्जे का साबित हो रहा है. केंद्रीय सरकार को

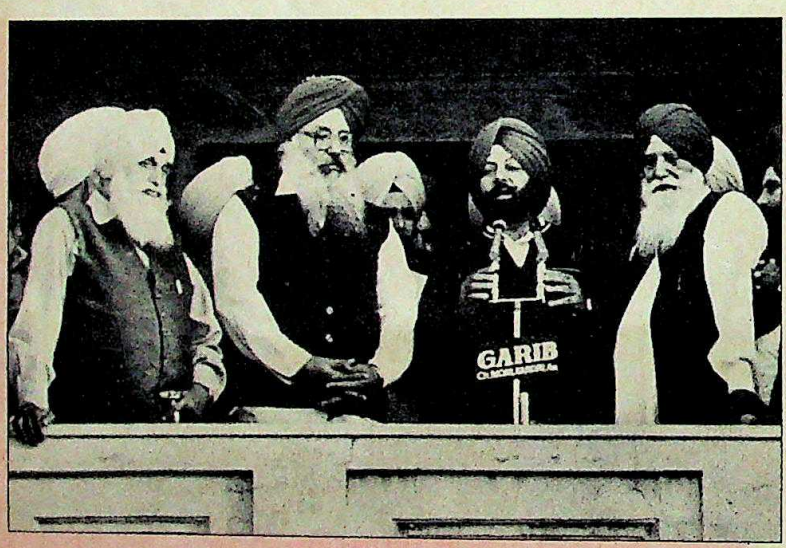

राष्ट्रपति शासन की अवधि बढ़ाए जाने से नरमपंथी अकाली भी उग्रवादी लफ्फाजी का शिकार होने लगेंगे

कठोर नियम लागू कर देने के बावजूद कानून व व्यवस्था के मोर्चे पर भयानक हताशा व्याप्त है. हर महीने औसतन करीब 250 लोग आतंकवादियों की गोली के शिकार बन रहे हैं (देखें चार्ट). और आतंकवादियों की धमकियों ने और इस आशंका ने कि वे चुनावों के जरिए सत्ता में आ सकते हैं, प्रशासन को हतोत्साहित करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी है.

उच्चपदस्थ सूत्रों के अनुसार, चुनाव नहीं कराए जाने की पीछे एक बड़ी वजह वह गुप्तचर रिपोर्ट थी जिसमें कहा गया था कि पंथक समिति (सोहन सिंह) ने चुनाव 'एकमुश्त आर्थिक उपायों' और 'सर्वदलीय' बैठकों के चोंचलों से बाहर निकलकर कुछ और सोचना होगा. उग्रपंथियों से वार्ता की संभावनाओं पर विचार करने के अलावा ऐसे कट्टरपंथियों की पुरानी मांगों पर विचार करना जरूरी है ताकि उनका रुख और भी कठोर न हो जाए. और चूंकि राज्य में कोई लोकप्रिय सरकार नहीं है इसलिए केंद्र को ही यह उत्तरदायित्व निभाना चाहिए, ताकि इस मुसीबतजदा राज्य को राहत दिलाने का एक और मौका चूकने के अपराध का वह प्रायश्चित कर सके.

—हरिंदर बवेजा और चंडीगढ़ में कंवर संधू

आंतकवाद

आपराधिक गतिविधियां चरम पर

अपने को 'सिंह' बताने वाले व्यक्ति 16 अगस्त को जालंधर जिले के राओली गांव के फॉर्महाउस में पहुंचे. वे वहां 18 वर्षीया कुलविंदर कौर को इसलिए ले जाना चाहते थे ताकि वे यह जांच कर सकें कि वह और कुछ दूसरी लड़कियां 'चरित्रहीन' तो नहीं हैं. कुलविंदर के परिवारवालों से कहा गया कि अगर सूचना सही पाई गई तो 'सिंहनियां' इन लड़कियों को सजा देंगी. इसके बाद आतंकवादियों ने दूसरे फॉर्महाउस से कुलविंदर की सहेली जसविंदर कौर का अपहरण करने की कोशिश की. वे उसके साथ नरिंदर कौर को लेकर आए जिसका उन्होंने एक पखवाड़े पूर्व अपहरण किया था. जसविंदर ने नरिंदर को आतंकवादी को पहचान लिया और उसके साथ जाने से मना किया तो उसकी पिटाई की गई और गोली मारकर हत्या कर दी गई. बाकी दो लड़कियों को वे उठा ले गए.

पुलिस ने 25 अगस्त को इन लोगों को कपूरथला जिले के एक गांव में से निकाला. आतंकवादियों ने आत्मसमर्पण करने से इनकार कर दिया तब पुलिस ने हथगोलों का इस्तेमाल किया. नरिंदर कौर सहित दो आतंकवादी मारे गए. कुलविंदर घायल हुई मगर बच गई. उसने पुलिस को बताया कि आतंकवादी एक बार फॉर्महाउस जाते तो लड़कियों को खेतों और गन्ने के खेतों से हथियार लेकर लौटना पड़ता था. दिन-रात उनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता.

पड़ताल से पता चला कि मारा गया अपराधी सुखदेव सिंह आतंकवादियों के गुट से फरार हो था. वह दो एके-47 राइफलें लेकर था इसलिए आतंकवादी उसकी कर रहे थे. दूसरा मृतक अमरजीत अफीम का धंधा करता था और गया जॉर्ज मसीह एक लड़की के के मामले में घोषित अपराधी है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के तीन लड़कियां 'सीमांत जिलों में आतंकवादियों के हाथों शिकार हुई अनेक वारदातों में से हैं. डकैती, अपहरण, जबरन धन वसूली सहित अधिकांश आतंकवादी अपराध मुख्यतः गांवों में हो रहे हैं और मार्के की बात यह है कि इन अपराधों के 70 फीसदी शिकार सिख ही हैं. हर महीने औसतन 100 सिख किसान अपना फार्महाउस छोड़कर पास के गांव या शहर की शरण ले रहे हैं. ऑल इंडिया सिख स्टुडेंट्स फेडरेशन (मंजीत गुट) के एक वरिष्ठ पदाधिकारी ने कहा, "इन आंदोलन ने अपने ही बच्चों को निगलना शुरू कर दिया है."

यह इसलिए कि 90 फीसदी आतंकवादी अपराध वास्तव में अपराधियों द्वारा किए जाते हैं. एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी का कहना है, "राजनैतिक या सैद्धांतिक रूप से प्रतिबद्ध आतंकवादी कम ही हैं, बाकी सब एके-47 रखने वाले अपराधी ही हैं." दो साल पहले पंजाब पुलिस ने जो सूची तैयार की थी, उसके मुताबिक प्रतिबद्ध आतंकवादियों की संख्या महज 41 थी. वहीं करीब पांच हजार युवक अपने को सिख योद्धा कहते हैं. बीएसएफ के एक अधिकारी कहते हैं कि ज्यादातर आतंकवादी संगठन महिलाओं और बच्चों की हत्या के खिलाफ बोलते रहे हैं. इसलिए महिलाओं पर 'समाज सुधार आंदोलन' के नाम पर जो हमले हो रहे हैं, वे मुख्यतः अपराधियों की करतूतें हैं.

पंजाब पुलिस के प्रमुख के.पी.एस. गिल कहते हैं कि अपराधी तत्व आतंकवादी आंदोलन का हमेशा फायदा उठाते हैं. उनके अनुसार राज्य में स्थिति बहुत गंभीर है. इसके अलावा भारत-पाक संबंधों में तनाव के कारण भी पिछले कुछ महीनों में पाकिस्तान की ओर से काफी हथियार पंजाब में भेजे गए हैं. उदर राज्य सरकार की एक खुफिया रिपोर्ट के मुताबिक, "इस वर्ष मार्च और मई के बीच पश्चिमी सीमा पर बहुत आवाजाही हुई. इस अवधि में पंजाब में एके-47 राइफलों की संख्या 700 से बढ़कर दो हजार हो गई." इनमें से ज्यादातर राइफलें अपराधियों के हाथ में पड़ गई.

राणा जसपाल सिंह

करीब 90 फीसदी अपराध आतंकवादियों की ओर से नहीं बल्कि अपराधियों की ओर से किए जाते हैं

लेकिन अकाली दल (मान गुट) के अध्यक्ष सिमरनजीत सिंह मान उग्रवादी संगठनों के अपराधीकरण के लिए सरकार को दोषी ठहराते हैं. हालांकि यह मसले का अति सरलीकरण ही है मगर 1987-88 के दौरान पुलिस ने आतंकवादियों को नाकाम करने के लिए अपराधियों का इस्तेमाल किया.

अपराध में बढ़ोतरी से केवल सुरक्षा तंत्र ही चिंतित नहीं है. कुछ उग्रपंथी गुट भी जबरन धन वसूली एवं अन्य अपराधों के खिलाफ बयान जारी करते रहे हैं. वास्तव में गिरोहों की आपसी लड़ाई के कारण होने वाली हत्याएं अपने संगठन को अपराधियों से मुक्त करने का नतीजा हैं.

लेकिन खालिस्तान कमांडो फोर्स के वासन सिंह जफरवाल जैसे आतंकवादी नेताओं ने गुरदासपुर जिले में युवकों को भर्ती करने का जो अभियान छेड़ा है, उससे जाहिर है अपराधों में कमी नहीं हुई है. संगठन के एक पर्चे के मुताबिक मुफ्त भोजन, वर्दी, निवास और चिकित्सा सुविधाओं के अलावा तीन हजार रु. प्रतिमाह वेतन की पेशकश की जा रही है. खबर है कि जफरवाल ने युवकों की कच्ची भर्ती भी शुरू कर दी है जिसके तहत उन्हें हर अपराध के लिए अलग-अलग हिस्सा दिया जाएगा.

चार्ट: बी.के. शर्मा

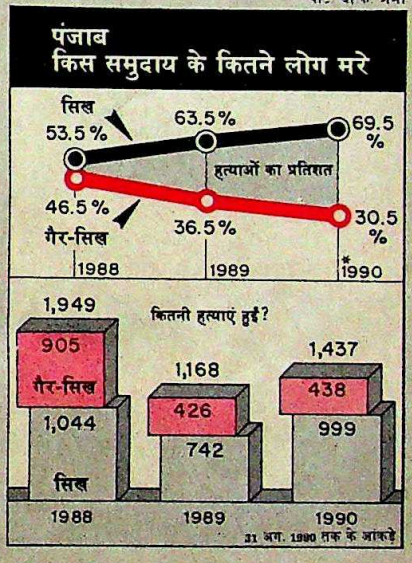

गिल का मानना है कि पुलिस को बेहतर हथियार देकर ही अपराधीकरण को रोका जा सकता है. वे कहते हैं, "हम युवकों को उनका शिकार नहीं बनने दे सकते हैं." लेकिन अकाली दल (मान) के नेता चानन सिंह सिद्धू का कहना है कि आतंकवादियों द्वारा समर्थित सरकार ही अपराधियों को काबू में कर सकती है. उधर, इंडियन लायंस नामक भूमिगत संगठन ने कानून को अपने हाथों में लेने का फैसला कर लिया है. इस आतंकवाद विरोधी गुट ने आतंकवाद समर्थक कई सिख नेताओं पर हमला किया है.

राज्य में आतंकवादी कारनामों, बढ़ते अपराधों के मद्देनजर शासकों को सतर्कतापूर्ण न्याय की अविलंब व्यवस्था करनी चाहिए.

—कंवर संधू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

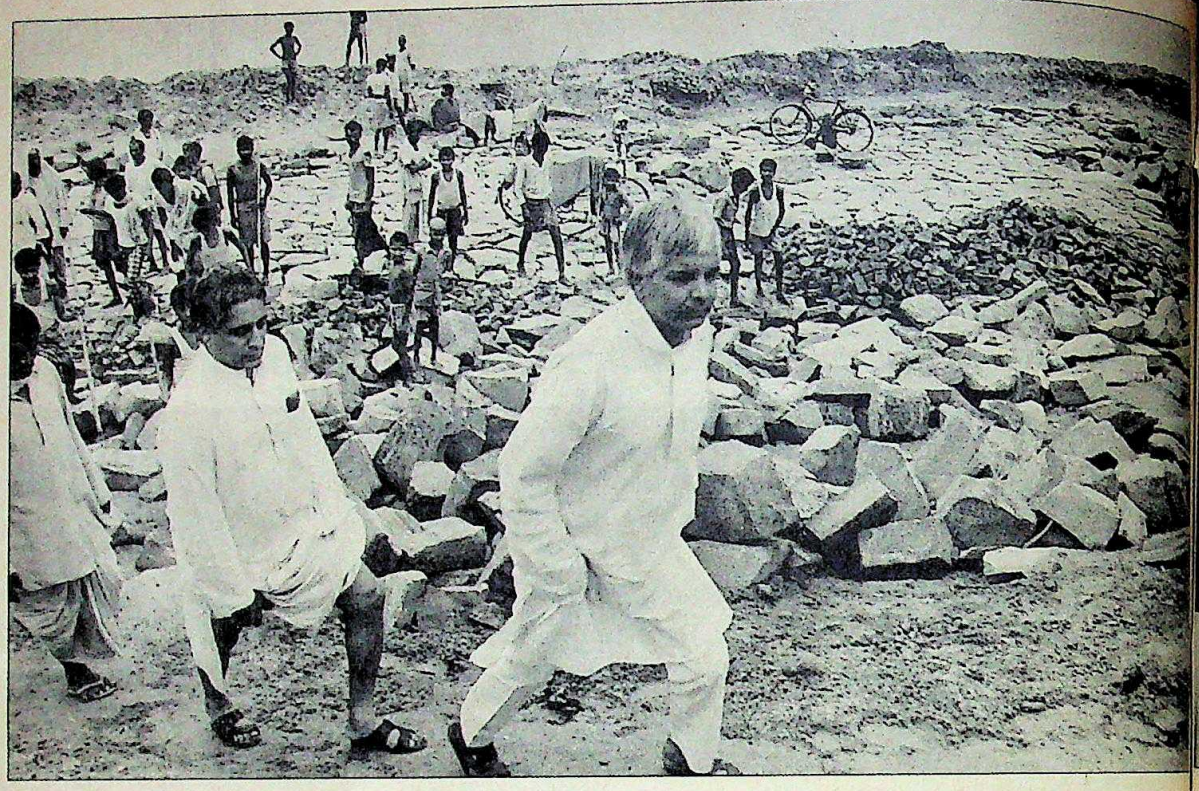

बिहार मंत्रिमंडल

जिम्मेदारियां ही बन गईं बेड़ियां

लालू यादव मंत्रिमंडल का प्रत्येक मंत्री अपने विभागों की लंबी फेहरिस्त से परेशान

बिहार का नक्शा बदलने का दावा करने वाले मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव किसी-न-किसी मजबूरी के तहत हजार कोशिशों के बावजूद अपने मंत्रिमंडल का विस्तार नहीं कर पाए हैं. नतीजा यह है कि हर मंत्री अपने विभागों की लंबी फेहरिस्त के बोझ तले घुट रहा है और उसे काम करने का मौका नहीं मिल रहा है.

इस कारण लालू यादव काफी चिंतित हैं, "हमारे मंत्री सही में काफी दिक्कत में हैं. एक-एक मंत्री के पास पांच-पांच विभाग हैं." आज से छह माह पहले लालू यादव ने बिहार जैसे समस्याग्रस्त और बड़े प्रदेश के लिए छोटा-सा मंत्रिमंडल बनाया था. खुद को छोड़कर उन्होंने कैबिनेट स्तर के आठ और केवल तीन राज्यमंत्रियों को लिया. उन्हें उम्मीद थी कि छोटा परिवार चुस्त परिवार होगा. लेकिन अब उन्हें महसूस होने लगा है कि चुस्त होना एक बात है और दुरुस्त होना दूसरी बात.

लालू यादव से जब 'इंडिया टुडे' ने सवाल किया कि आप अपने मंत्रियों की कार्य क्षमता के बारे में क्या सोचते हैं तो उन्होंने गंभीरता से कहा, "मेरी सरकार केवल चार माह पुरानी है. दो माह मंत्रियों को अपने विभागों को समझने में लग गए और दो माह विधान मंडल सत्र झेलने में. ऐसी हालत में उनके काम की समीक्षा क्या की जाए. अब तक जितने भी महत्वपूर्ण फैसले हुए हैं वे मैंने ही किए हैं या फिर हमारी मर्जी से किए गए हैं. अभी तक हमारे मंत्रियों को काम करने का मौका मिला ही नहीं है."

विपक्ष के नेता जगन्नाथ मिश्र कहते हैं, "ये सारे लोग अक्षम और असमर्थ लोग हैं जो न कुछ समझ सकते हैं और न कुछ बोल सकते हैं. विधान मंडल में जो भी मुद्दे उठाए गए उनका किसी ने कोई साफ जवाब नहीं दिया. सारे के सारे अपने कामों के प्रति उदासीन हैं."

दरअसल, लालू यादव मंत्रिमंडल भी एक अजीब चीज है. इसमें दिग्गज इंका नेता की छवि वाले लोग भी हैं तो समाजवादी तूफान के जुझारू लोग भी, नए और अनुभवहीन लोग हैं तो दागदार दामन वाले और अपराधियों के संरक्षक भी. लोगों का कहना है कि मंत्रिमंडल के ज्यादातर लोग बिलकुल नए हैं और सरकार चलाने में अनुभवहीन हैं. मगर लालू यादव ने कहा, "लोगों को जब तक काम करने का मौका नहीं मिलेगा, उन्हें अनुभव कहां से आएगा. वी.पी. सिंह पहली दफा प्रधानमंत्री बने मगर उनकी क्षमता पर किसी को शक क्या? मैं भी पहली दफा मुख्यमंत्री बना और सभी जानते हैं कि मैं क्या कुछ कर की कोशिश कर रहा हूं. सब कुछ व्यक्ति अपने अंदर की इच्छा पर निर्भर करता है. उनका मानना है कि नए लोग हर कदम सोचकर करते हैं ताकि गलतियां नहीं हों.

लालू यादव की बात बहुत हद तक सही साबित हो रही है. बिलकुल नए मंत्रियों में एक हैं जगदानंद सिंह. मध्य बिहार के कुर्मी वर्गीय किसान परिवार के जगदानंद बने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

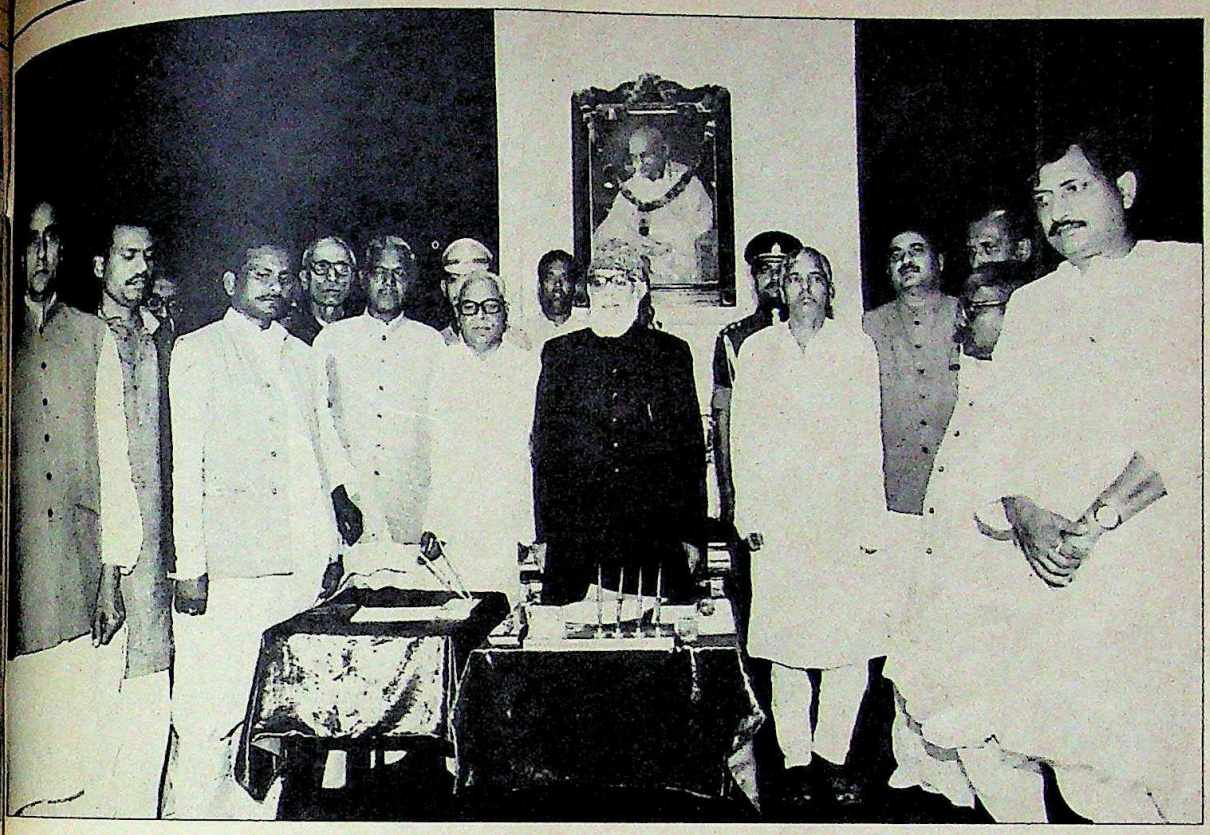

शपथ ग्रहण के बाद राज्यपाल के साथ लालू यादव मंत्रिमंडल

लालू यादव मंत्रिमंडल में दिग्गज इंका नेता की छवि वाले लोग हैं तो जुझारू समाजवादी भी; बिलकुल नए लोग हैं तो दागदार दामन वाले और अपराधियों के संरक्षक भी

विधि में समाजवादी युवजन सभा के रह चुके हैं. चूंकि वे एक गंभीर आदमी लिए लालू ने उन्हें महत्वपूर्ण जल उन विकास, ऊर्जा और पर्यटन विभाग और चूंकि उन्हें किसान होने के नाते था कि इन विभागों में क्या-क्या होता उन्होंने भ्रष्टाचार के खिलाफ हल्ला दिया. वे कहते हैं, " या तो भ्रष्टाचार देंगे या खुद मिट जाएंगे. यह मेरी और आखिरी लड़ाई है."

उन्होंने कई घपले पकड़े और औरंगाबाद में बड़े और दिग्गज ठेकेदार पंचम के ठेके को रद्द कर दिया. अब तक करीब 150 इंजीनियरों को निलंबित है. सारे मुख्य अभियंताओं को में हटाकर क्षेत्रों में भेज दिया है बिना अधिकार या अनुशासन वाले ओं के मुख्यालयों में प्रवेश पर लगा दिया है.

एक और नए मंत्री हैं मुहम्मद इलियास उनके पास पथ एवं भवन निर्माण विभाग हैं. लोहिया-भक्त हुसैन आंदोलन में सक्रिय रहे. उन्होंने तय किया है कि अब बिहार में "लूट की नहीं की जा सकती." इसके लिए उन्होंने तरीके भी निकाले हैं. जब भी पकड़ा जाता है, वे तुरंत पूछताछ करते हैं और जिस अभियंता के सहयोग से ये घपला हुआ उसकी तनख्वाह से इतने ही पैसे किस्तों में काटे जाते हैं. इसके साथ ही उन्होंने ऐसे तमाम ठेकेदारों की सूची बनाने का आदेश दिया जो अपराधी तत्व समझे जाते हैं और जो अब डरा-धमकाकर निविदा लूटते या पैसा वसूल लेते हैं. हुसैन ने कहा कि इन सभी को काली सूची में डाल दिया जाएगा. पथ और भवन निर्माण विभाग के 16 अधिकारियों को निलंबित किया जा चुका है. और 52 अधिकारियों पर कार्रवाई हो चुकी है. हुसैन को जान से मार देने की धमकी भरे 23 पत्र मिल चुके हैं. वे मुस्कराते हुए कहते हैं, " जब लूट में रुकावट आएगी तब अपराधी और नाराज लोग इस तरह की धमकी तो देंगे ही."

मगर हुसैन पर अपराधियों की मदद करने की चर्चा भी हाल ही में चली है. माकपा के नेता अजित सरकार ने आरोप लगाया कि हुसैन एक अपराधी विधायक को अपने साथ हवाई जहाज में पूर्णिया लेकर गए थे. इस बारे में हुसैन ने कहा, "मैं पूर्णिया जिला 20 सूत्री कमेटी का इंचार्ज हूं, एक रोज मीटिंग में जाना था, वह विधायक भी हवाई अड्डे पर मिल गया और उसने हवाई जहाज में लिफ्ट मांगी. क्योंकि एक सीट खाली थी इसलिए मैने औपचारिकता निभाई."

लेकिन लालू मंत्रिमंडल के दो मंत्री ऐसे भी हैं जो शायद इस बात पर विश्वास करते हैं कि 'बदनाम जो होंगे क्या नाम न होगा.' ये मंत्री हैं—रमई राम और राम विलास सिंह. साम्यवादी झुकावों वाले रमई राम के पास कल्याण, खाद्य आपूर्ति, वाणिज्य और परिवहन विभाग हैं. मुज्जफ्फरपुर के इस हरिजन नेता पर कोठे पर जाने, दूसरी पत्नी रखने और पैसा वसूलने जैसे कई गंभीर आरोप हैं. लालू यादव ने उनके बचाव में कहा, "मैने रमई राम के सारे कागजात देखे हैं. कोई भी आरोप सिद्ध नहीं होता. दरअसल, वे हरिजन हैं और मुज्जफ्फरपुर में कुछ ऊंची जाति के नेताओं को यह अच्छा नहीं लगता है."

इसी तरह राम विलास सिंह लालू यादव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार मंत्रिमंडल

पिछले पांच महीनों में लालू यादव और उनके मंत्रियों ने कुछ नाम कमाया है जिसके मिलाने से एक नई तस्वीर उभरती है और पता लगता है कि बिहार किधर जा रहा है:

नाम और विभाग

1. लालू प्रसाद यादवः मुख्य-मंत्री, बारह विभाग—मंत्रिमंडल सचिवालय एवं समन्वय, कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार, वित्त, योजना एवं विकास, मानव संसाधन, विज्ञान एवं प्राद्यौगिकी, उद्योग, ईख, सूचना एवं जनसंपर्क, विधि (वक्फ को छोड़ के), ऐसे अन्य सभी विभाग जो किसी अन्य मंत्री को आबंटित नहीं हैं.

2. रघुनाथ झाः चार विभाग— स्वास्थ्य, चिकित्सा, शिक्षा एवं परिवार कल्याण, 20 सूत्री कार्यक्रम एवं प्रोग्राम क्रियान्वयन, मोनीटरिंग, प्रोजेक्ट प्लानिंग एवं सांस्थिक वित्त, लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण.

3. जगदानंद सिंहः तीन विभाग— जल संसाधन विभाग, ऊर्जा, पर्यटन.

4. बृषण पटेलः चार विभाग— ग्रामीण विकास, नगर विकास, श्रम नियोजन, राजभाषा.

5. रामविलास सिंहः तीन विभाग — राजस्व एवं भूमि सुधार, उत्पाद एवं मद्य निषेध, सहायता एवं पुनर्वास.

6. रमई रामः तीन विभाग— कल्याण, खाद्य आपूर्ति एवं वाणिज्य, परिवहन.

7. इलियास हुसैनः तीन विभाग—पथ निर्माण, भवन निर्माण, वक्फ.

8. करमचंद भगतः तीन विभाग—खनन एवं भूतत्व, वन एवं पर्यावरण,वनवासी कल्याण.

9. रामजीवन सिंहः तीन विभाग—कृषि, सहकारिता, पशु पालन एवं मत्स्य.

राज्यमंत्री

1. मंगल सिंह लमाईः दो विभाग—स्वास्थ्य, लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण.

2. रामनाथ ठाकुरः दो विभाग— उद्योग, ईख.

3. भोला राम तूफानीः एक विभाग—जल संसाधन विकास.

रघुनाथ झाः कांग्रेसी ढंग

जगदानंद सिंहः ठीक करने का बीड़ा

रामविलास सिंहः अपराधियों के दाता

करमचंद भगतः इमेज का चक्कर

रमई रामः दामन में दाग

बृषण पटेलः गंदगी का छींटा

इलियास हुसैनः लूट की छूट नहीं

के लिए मुसीबत बनते जा रहे हैं. उनके पास राजस्व, भूमि सुधार, उत्पाद एवं मद्यनिषेध, सहायता और पुनर्वास जैसे विभाग हैं. मगर उनकी दिलचस्पी इन चीजों में कम और अपराधियों को पुलिस से बचाने में ज्यादा है. इंका के जगदीश शर्मा के अनुसार सिंह ने एक पत्र लिखकर उ.प्र. पुलिस महानिदेशक से एक हत्याकांड के अभियुक्त की पैरवी की और कहा कि हत्या के दिन अभियुक्त उनके साथ था. मामले ने विधानसभा में तूफान खड़ा कर दिया. सिंह कोई सफाई नहीं दे सकते थे क्योंकि उनके पत्र की कॉपी मौजूद थी. और तो और, जब जहानाबाद में एक अपराधी रामानंद यादव की हत्या हो गई तो मंत्री जी हवाई जहाज से उड़कर वहां पहुंचे और उसके शव पर फूलमाला चढ़ा आए. रामानंद यादव को पकड़ने के लिए सरकार ने 50,000 रु. का इनाम रखा था.

इस मंत्रिमंडल में तीन ऐसे मंत्री हैं जो पहले इंका में रह चुके हैं—रघुनाथ झा, करमचंद भगत और बृषण पटेल. रघुनाथ झा के पास स्वास्थ्य, एवं परिवार कल्याण, 20 सूत्री कार्यक्रम क्रियान्वयन, निगरानी और लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण, संसदीय कार्य जैसे ढेर सारे मालदार विभाग हैं नंबर दो माने जाने वाले झा लालू यादव के लिए हमेशा खतरा बने रहते हैं.

वनवासी नेता करमचंद भगत के पास खनन, भूतत्व, वन एवं पर्यावरण और वनवासी कल्याण जैसे विभाग हैं. मगर अभी तक उनका कोई वजन नहीं बन पाया है. दूसरी तरफ बृषण पटेल हैं जो जरूरत से ज्यादा सीधे और शरीफ माने जाते हैं. ग्रामीण विकास, नगर विकास, श्रम नियोजन और राजभाषा जैसे विभाग होने पर भी उनकी ज्यादा नहीं चलती.

पुराने संसोपा नेता राम जीवन सिंह कृषि, सहकारिता और पशुपालन विभाग के मंत्री हैं. उन पर उनके पार्टी वाले ही जातिवाद चलाने का शक करते हैं. मगर चूंकि अब तक उन्होंने कोई काम किया ही नहीं तो नेकी या बदनामी भी नहीं हुई.

इधर लालू यादव के रवैए में कोई फर्क नहीं आया है. उसी तरह औचक निरीक्षण करना, फाइलें पकड़ना, सड़क और बांध के सीमेंट और पत्थर की असलियत का पता लगाना. नित नए ऐसे काम जिससे अफसरों में दहशत फैले. नतीजा यह कि लालू का आतंक तो बढ़ रहा है मगर उनके दफ्तर में फाइलों का ढेर भी बढ़ने लगा है. उनके पास 12 बड़े-बड़े विभाग हैं.

अब तो लोग यह भी कहने लगे हैं कि लालू प्रसाद यादव जो भी करते हैं, अपने एक मित्र प्रो. राजन यादव की सलाह पर ही करते हैं. शक की वजह यह भी है. राजन उनके बहुत ही नजदीक हैं उन्हें राज्यसभा सदस्य भी बना दिया दिया.

लालू यादव ने इधर एन.पी. शर्मा को, जिन पर पटना विश्व-विद्यालय के इम्तहान में गड़बड़ी करने का शक, था, उच्च शिक्षा विभाग का निदेशक बना दिया. लालू यादव का उनसे पटना विश्वविद्यालय से ही पुराना रिश्ता है अभी हाल में बिहार के सात विश्वविद्यालयों के लिए नए कुलपति चुने गए तो उनमें से चार पटना विवि के थे.

बहरहाल, लालू यादव और उनके मंत्रिमंडल के लिए इम्तहान का वक्त आ गया है. लोगों की आशाएं बढ़ती जा रही हैं, तो अपने मंत्रियों से लालू यादव की निराशाएं.

—फरजंद अहमद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

BINATONE CD 2000 SERIES.

COMPACT disc COMPATIBLE

Designed to break the sound of silence

Tune into Binatone's latest hi-fi stereo systems.

For sound reproduction that took Europe & Japan by storm.

So, whether it's the soul-stirring melody of the guitar. Or the pulsating beat of the drums. Don't just play it by ear.

See and hear the latest CD 2000 series hi-fi systems at your nearest Binatone dealer.

MODEL	PMPO	PRICE*
CD 2003	180 Watts	Rs. 6160/-
CD 2004	150 Watts	Rs. 5700/-
CD 2005	350 Watts	Rs. 7725/-
CD 2005 Tower	350 Watts	Rs. 9090/-

* Local Taxes and Levies as applicable.

Model shown above is CD 2003

Binatone

SIMPLY YEARS AHEAD

ENGLAND • GERMANY • HONG KONG • JAPAN • KOREA • TAIWAN • NOW IN INDIA.

For more information contact nearest Binatone dealer or write to Binatone Electronics Ltd. B-58, Site IV, Sahibabad Industrial Area, Sahibabad-201 010 (U.P.)

Arms Bozell/BEL/22/90

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

The Thapar Group

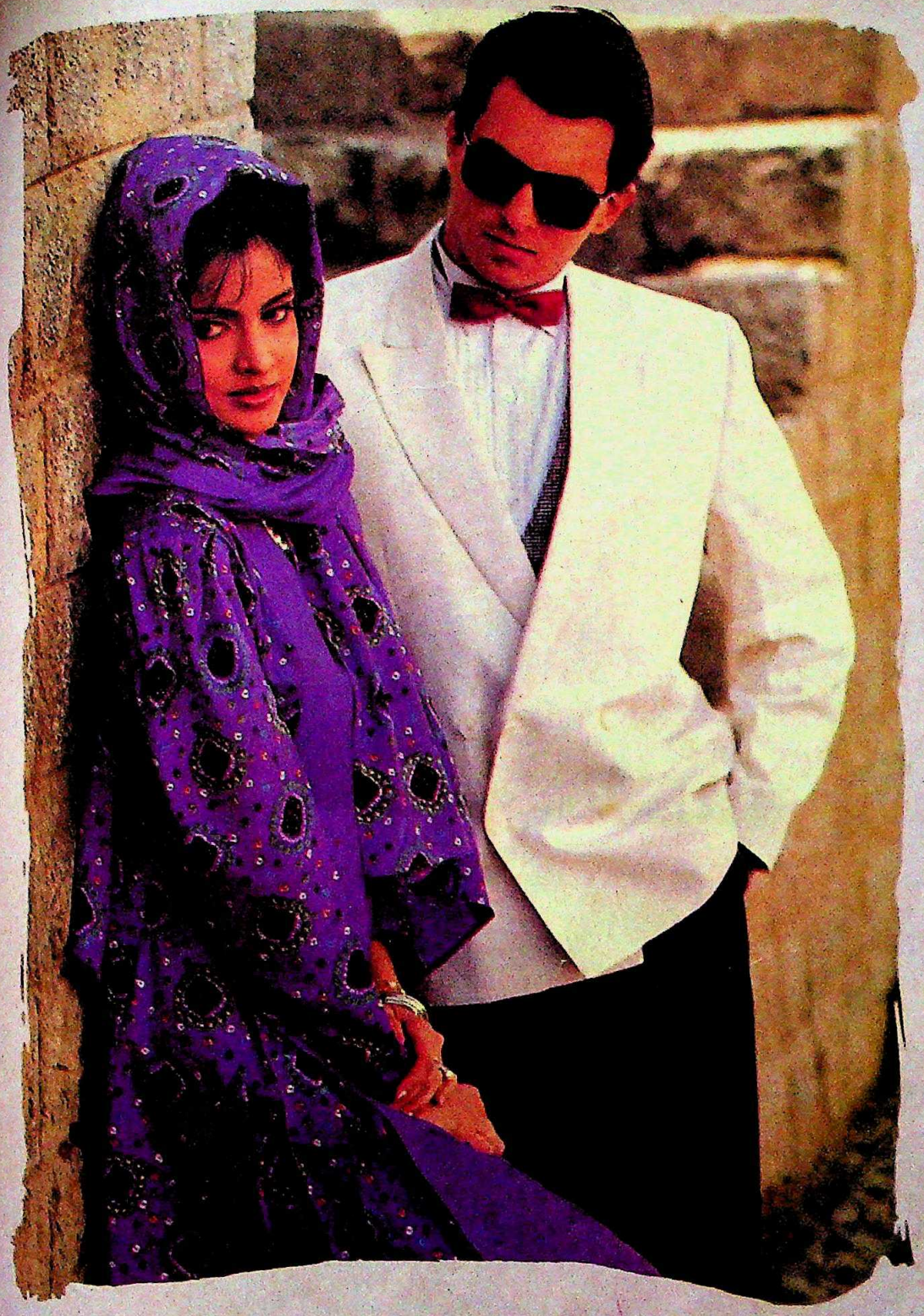

की प्रेरणा

सूटिंग्स • शर्टिंग्स • ड्रेस मैटीरियल्स

JCT FABRICS

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar

Foundation Chennai and eGangotri

अपनी खुशियों के बंधन खोलिए!

स्टँडर्ड फ़ायरवर्क्स के पटाखों को देखते ही आपका, आपके परिवार का मन झूम उठेगा... मचल उठेगा.

दादाजी सभी कुछ भूल जाएंगे, दादीमाँ की खुशियाँ रोके नहीं रुकेंगी जोकर पटाखे और अनारदाने जलाने और डैज़ल बॉक्स और फुलझड़ियों की जगमगाहट देखकर उनका उत्साह बच्चों को भी मात दे देगा.

और पापा-मम्मी? वो तो पैराशूट नाइट की चकाचौंध में ही मस्त हो जाएंगे.

जी हाँ, कभी-कभार... उम्र भूलकर पीछे लौट जाने, और उम्र की सीमा भूल जाने का अपना ही मज़ा होता है, है ना?

स्टँडर्ड
फ़ायरवर्क्स

त्यौहार की जगमगाहट के रंग... देशभर में जगाएं उमंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya

मोदी हत्याकांड

अप्रत्याशित फैसला

मामले के मुख्य अभियुक्त संजय और अमिता आरोपमुक्त

अमिता मोदी ने अपनी बहुचर्चित डायरी में 19 जनवरी 1986 को लिखा—"खुद भगवान ने ही अपने हाथों से मेरी तुला (राशि) को संतुलित किया है." लेकिन 28 जुलाई 1988 को उनके पति सैयद मोदी की हत्या के बाद से पिछले 17 दिसंबर तक घटी घटनाओं के मद्देनजर यह बात गलत लग रही थी. महीने भर पुलिस की पूछताछ, फिर पति की हत्या के आरोप में गिरफ्तारी और जनता दल सांसद संजय सिंह से उनके रिश्तों की चर्चा आदि ने अमिता के इस भरोसे को झुठलाया ही.

अदालती फैसला सुनाए जाने के कुछ घंटे पहले अमिता ने पत्रकारों से कहा, "मैं निर्दोष हूं, इसलिए छूट ही जाऊंगी." लेकिन दोपहर तीन बजे जब वे अदालत में फैसला सुनने के लिए दाखिल हुईं तब बेहद तनाव में लग रही थीं. उधर, सिंह की हालत भी कुछ पतली नहीं थी. पहले सीबीआई द्वारा उन की तलाशी, फिर 3 सितंबर 1988 को गिरफ्तारी और 21 सितंबर 1988 तक कैद तथा अमिता से विवाहेतर संबंधों की लगातार छीछालेदर ने उन्हें कम परेशान नहीं किया होगा.

जब जिला एवं सत्र न्यायाधीश ओ.पी. सहगल ने संजय और अमिता को आरोपमुक्त घोषित किया तो अदालत कक्ष 'संजय सिंह जिंदाबाद' के नारों से गूंज उठी. जब संवाददाताओं ने प्रतिक्रिया पूछी तो संजय और अमिता दोनों ने ही भगवान, न्यायपालिका और अपने वकील राम जेठमलानी का शुक्रिया अदा किया.

लोगों में इतनी उत्सुकता जगा देने वाले हत्या के इस मामले की असली सुनवाई शुरू होने के पहले ही न सिर्फ इसके दोनों मुख्य अभियुक्तों को बरी कर दिया गया बल्कि सीबीआई द्वारा प्रस्तुत किए जा रहे षड्यंत्र वाले सिद्धांत को भी बड़ा झटका लगा. सीबीआई दो वर्षों से इसी सोच के तहत जांच कर रही थी. अब चूंकि शेष पांच लोगों के, जिनमें मुख्य सह-अभियुक्त अजिताभ सिंह भी शामिल हैं, खिलाफ आरोप पत्र दाखिल किया गया है इसलिए अब अदालत को उन लोगों के खिलाफ हत्या के ऐसे मामले की सुनवाई करनी होगी जिसमें यह स्पष्ट नहीं होगा कि उन्होंने हत्या किस मकसद से की. सीबीआई के वकील एस.जी. सावंत एक सप्ताह से यही साबित करने की कोशिश कर रहे थे कि सैयद मोदी अमिता के विवाहेतर संबंध के खिलाफ थे. इसलिए संजय-अमिता ने अखिलेश और उसके साथियों के साथ साजिश करके सैयद की हत्या करवा दी.

कानूनी विशेषज्ञों का मानना है कि हत्या के लिए कोई उद्देश्य हो, यह जरूरी नहीं है. लेकिन इन पांच लोगों को हत्यारा साबित करने के लिए सीबीआई को उन्हें मानसिक रूप से बीमार साबित करना होगा या कोई नई ही कहानी गढ़नी होगी. अपने फैसले में न्यायमूर्ति प्रधान ने कहा है कि षड्यंत्र वाले मामले में प्रत्यक्ष प्रमाण शायद ही मिलते हैं. संजय-अमिता के खिलाफ साजिश का आरोप भी 'पारिस्थितक साक्ष्यों' पर आधारित है.

हत्या का उद्देश्य साबित करने के लिए अभियोजन पक्ष अमिता की मां पुष्पा कुलकर्णी की 19 फरवरी 1984, 20 अप्रैल 1984, और 23 अप्रैल 1984 की तीन चिट्ठियों और 14 जुलाई 1985 से 13 अगस्त 1985 के बीच संजय और अमिता के बीच लिखी गई सात चिट्ठियों पर भरोसा किए था. अमिता की डायरी में 1985 के आखिरी दिनों और 1 जनवरी 1986 से 29 मार्च 1986 के बीच दर्ज बातों से भी मदद की उम्मीद उसे थी. उन्होंने अमिता के नाम सैयद की पांच चिट्ठियों का हवाला भी दिया. सीबीआई ने एक बिना तारीख और

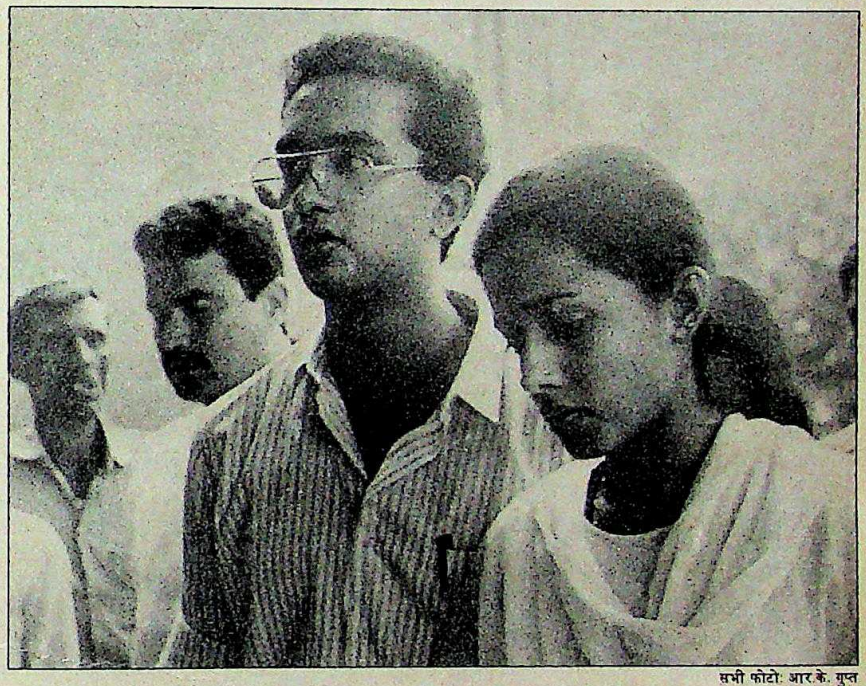

सभी फोटो: आर.के. गुप्त

अपने उत्साही समर्थकों के साथ संजय (ऊपर); और भाई के साथ अमिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दस्तखत वाली चिट्ठी भी पेश की जिसे उसने संजय की पत्नी गरिमा सिंह द्वारा लिखी बताया.

फैसले में इन सभी दस्तावेजों की पड़ताल करने के बाद कहा गया कि इनसे संजय के विवाहेतर संबंधों का पता तो चलता है लेकिन यह संकेत नहीं मिलता कि दोनों सैयद को खत्म कराना चाहते थे. सैयद से शादी के पहले पुष्पा कुलकर्णी द्वारा लिखी गई चिट्ठियों के बारे में न्यायमूर्ति ने माना कि इनसे यही पता चलता है कि अमिता की मां को अमिता और संजय के विवाह-पूर्व के रिश्तों की जानकारी थी. अन्य चिट्ठियों के बारे में भी उनकी राय थी कि इनसे "अमिता-संजय के मधुर रिश्तों" का ही पता चलता है.

न्यायमूर्ति ने माना कि सरकारी वकील ने डायरी के जहां-तहां से उद्धृत किए अंशों के आधार पर यह साबित करने की कोशिश की कि संजय-अमिता के रिश्ते 'आत्मीय' से अधिक घने थे और उनके बीच विवाहेतर संबंध थे. लेकिन उन्होंने डायरी के वे कई अंश छोड़ दिए हैं जो सैयद मोदी-अमिता और संजय सिंह के त्रिकोणीय रिश्तों की वास्तविकता उजागर करते हैं. न्यायमूर्ति ने इन अंशों के आधार पर माना कि मोदी को अमिता और संजय के संबंधों का पता था और यह जानते हुए भी उसने अमिता के यौन संबंधों में बाधा नहीं पहुंचाई. संजय से अवैध संबंध रखने के बावजूद मोदी के प्रति अमिता का प्रेम कम नहीं हुआ था. और वह उसकी काम चेष्टाओं का नकारात्मक जवाब नहीं देती थी.

अपनी एक चिट्ठी में मोदी ने अमिता-संजय के रिश्तों से दुखी होकर आत्महत्या कर लेने की बात भी कही थी. इस बारे में न्यायमूर्ति का कहना था, "यह भी मोदी की हत्या का उद्देश्य नहीं हो सकता था. कोई ऐसे आदमी की हत्या करने का कोई षड्यंत्र नहीं कर सकता जो आत्महत्या करना चाहता हो."

हत्या में प्रयोग की गई मारुति और हथियार ही मुख्य साक्ष्य हैं. लेकिन हत्या का मकसद, जो ऐसे मामले में सबसे प्रमुख तत्व होता है, गायब है.

संजय और अमिता के छूट जाने के बाद अब हर किसी के मुंह पर यही सवाल है कि "तो फिर सैयद मोदी की हत्या किसने करवाई?" अखिलेश सिंह और चार अन्य लोग मोदी की हत्या क्यों करेंगे, यह किसी को समझ में नहीं आ रहा. संजय सिंह कहते हैं, "अब मैं तो छूट गया हूं तो इसकी व्यवस्था करूंगा कि असली अपराधी पकड़े जाएं. अपने अच्छे दोस्त के लिए इतना तो करना ही होगा मुझे." —**दिलीप अवस्थी**

ओडीसा

पैर खिंचाई शुरू

बीजू के खिलाफ बगावत का बिगुल

ओडीसा में बीजू पटनायक का दबदबा भले ही बरकरार हो, पर कुर्सी के कई दावेदारों ने उनके पैर खींचने शुरू कर दिए हैं. ऐसा भी नहीं कि मुख्यमंत्री की कुर्सी डगमगाने लगी है. पिछले पखवाड़े वे ऐसे ही एक दावेदार—केंद्रीय पेट्रोलियम एवं रसायन राज्यमंत्री भजमन बेहरा से भिड़ गए. बेहरा ने मंडल आयोग की सिफारिशों का विरोध करने पर पटनायक की आलोचना की थी.

जब बेहरा ने राज्य में अपने निर्वाचन क्षेत्र ढेंकानाल का दौरा करने का फैसला किया तो पटनायक ने गृह विभाग को निर्देश दिए कि वह नई दिल्ली को टेलेक्स संदेश भेजकर बेहरा को अपना दौरा रद्द करने के लिए कहे. उन्हें अंदेशा था कि दौरे से आरक्षण विरोधी लोग हिंसा पर उतारू हो सकते थे. पर बेहरा ने दौरे का कार्यक्रम पूर्ववत रखा.

लेकिन बेहरा के लिए यह दौरा तो निराशाजनक रहा ही, इसने राज्य की राजनीति में व्याप्त षड्यंत्रों को भी सतह पर ला दिया. शक्तिशाली मुख्यमंत्री जहां कुर्सी का दावा करने का दुस्साहस दिखाने वाले प्रतिद्वंद्वी को नीचा दिखाने की कोशिश कर रहे थे, वहीं जनमोर्चा घटक के नेता भजमन बेहरा पटनायक को चुनौती देकर खुद को जनता का असली नेता साबित करने की कोशिश में थे. बेहरा ने संवाददाताओं से यहां तक कहा कि आरक्षण का विरोध करने वालों को पार्टी से निकाल बाहर करना चाहिए.

इसी बीच, ओडीसा के ही एक दूसरे केंद्रीय राज्यमंत्री श्रीकांत जेना ने भी पटनायक के खिलाफ झंडा उठा लिया. कभी पटनायक के सहायक रहे जेना की नाराजगी की वजह यह है कि उनके राजनैतिक कैरियर को संवारने वाले पटनायक ने उन्हें अपना वारिस बनाने में हिचकिचाहट दिखाई. बेहरा की तरह राजनैतिक अवसरवादिता दिखाते हुए जेना ने भी आरक्षण का समर्थन कर खुद को पिछड़ी जातियों का प्रवक्ता जताने की कोशिश की. जद के एक विधायक कहते हैं, "जन मुद्दों की आड़ में दरअसल यह उत्तराधिकार की लड़ाई की शुरुआत है."

जेना पटनायक से तब अलग छिटके जब असर बढ़ाने की उनकी कोशिशों को पटनायक ने करारा झटका दिया. मुख्यमंत्री ने मंत्रिमंडल में भगवत बेहरा, शरत कर और दामोदर राउत जैसे वजनी नेताओं को शामिल किया जिन्हें दूर रखने में जेना कामयाब रहे थे.

प्रमोद पुष्करणा

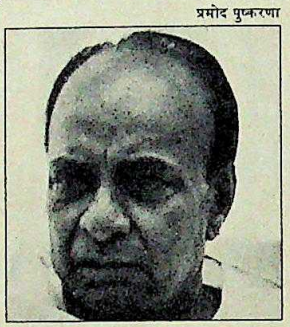

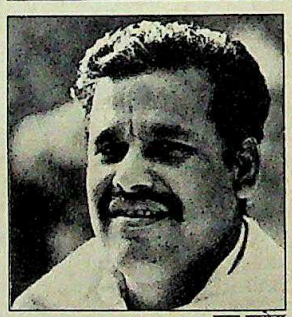

शरद सक्सेना

बीजू पटनायक (ऊपर); और जेना: कुर्सी की लड़ाई

पार्टी में व्याप्त तनावों की जिम्मेदारी से पटनायक भी नहीं बच सकते. कुर्सी के दावेदारों को वे बारी-बारी से उपकृत कर रहे हैं ताकि वे आपस में लड़ते-झगड़ते रहें. पहली बार मंत्रिमंडल के गठन में उन्होंने जेना के ही समर्थकों को शामिल किया. मंत्रिमंडल के विस्तार के समय उन्होंने जेना की उपेक्षा करके उनके कट्टर प्रतिद्वंद्वियों को महत्वपूर्ण विभाग सौंपे. शुरू में वित्तमंत्री रामकृष्ण पटनायक को मंत्रिमंडल में दूसरा सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में पेश किया गया लेकिन कुछ महीनों बाद उन्हें ग्रामीण विकासमंत्री बना दिया गया. आजकल सिंचाईमंत्री विजय महापात्र मुख्यमंत्री के चहेते हैं.

पटनायक की इस कूटनीति के पीछे भी एक चाल है. एक को दूसरे के खिलाफ खड़ा करके वे जेना, महापात्र और आवासमंत्री नलिनी महंती की ताकतवर तिकड़ी को तोड़ पाने में सफल हुए हैं. इससे पहले पटनायक जोड़-तोड़ करके कोरई से विधायक अशोक दास को इस तिकड़ी से छीन चुके हैं. पटनायक ने उन्हें राज्य जनता दल का कार्यकारी अध्यक्ष बना दिया था. दास अब एक अलग गुट के नेता हैं. शरत कर और दामोदर राउत भी पार्टी में अपने-अपने दबाव गुट बनाने की कोशिश करते आ रहे हैं.

जाहिर है, बीजू के दबदबे के बावजूद उत्तराधिकार की लड़ाई पूरे शबाब पर है.

—**रवेन कश्यप**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

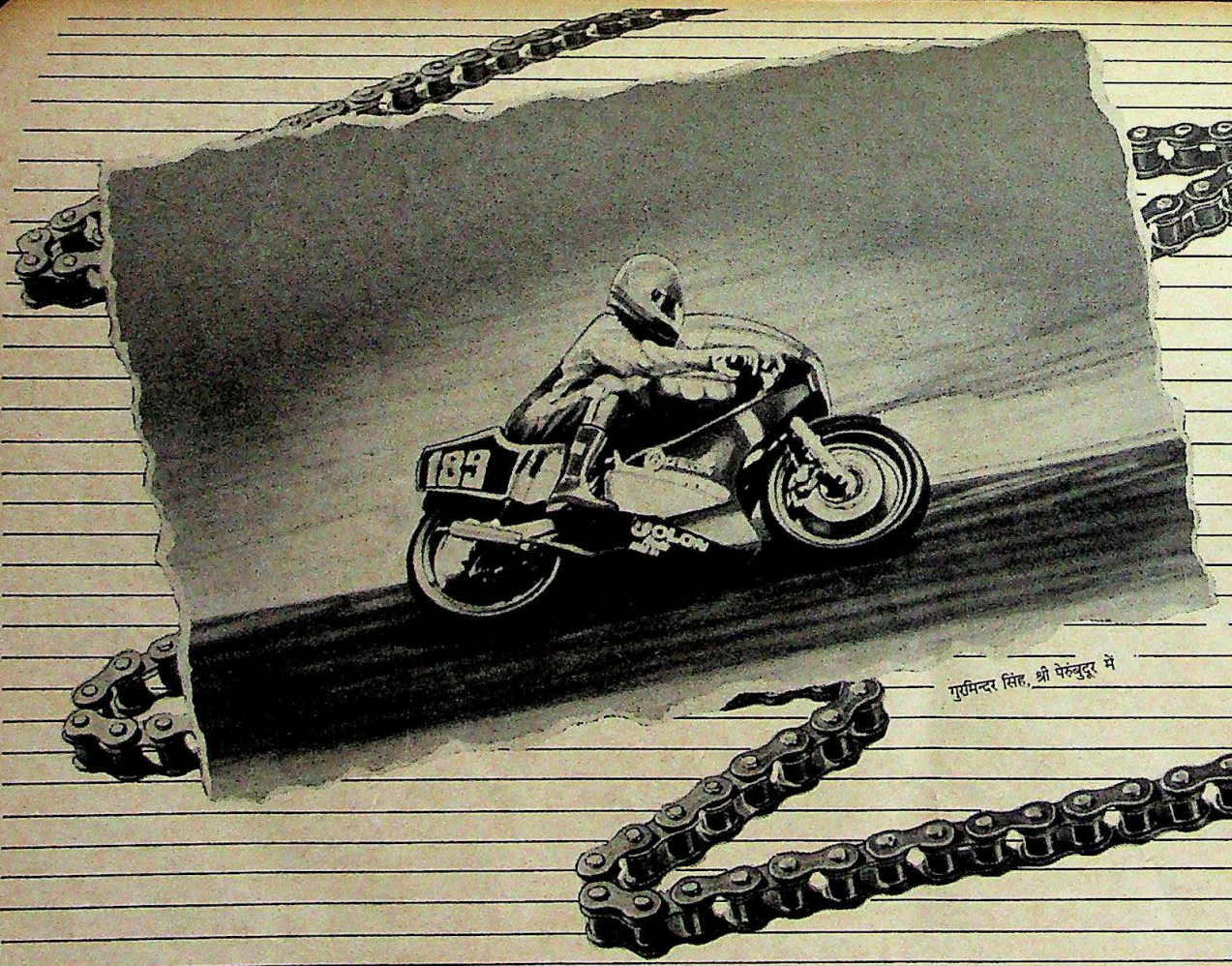

गुरमिन्दर सिंह, श्री पेरुंबुदूर में

जो बाइक बनाएं और जो बाइकों पर दौड़ लगाएं , दोनों चाहें

ROLON Special

दौड़ लगाने वाले। वे लोग जो अपनी बाइकों को सभी हदों के पार ले जाते हैं। मोटरसाइकलों के निर्माता। कम्पनियां जिनका लक्ष्य है बेहतरीन क्वालिटी की बाइक। दोनों जानते हैं सही चेन लगाने का महत्व।

ROLON Special

एक चेन जो रेसों और रैलियों में हर तरह के जुल्म सहे। एक चेन जो पिछले पहिये को अधिकतम शक्ति का संचरण करे। एक चेन जो गुणवत्ता और विश्वसनीयता में निर्माता का नाम ऊंचा रखे। एक चेन जो सबसे अधिक निर्यात की जाती है और सबसे अधिक बिकती है।

ROLON Special

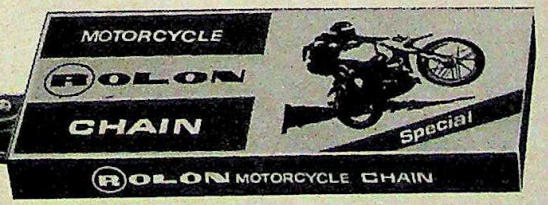

LGB निर्माताः एल.जी. बालकृष्णन & ब्रदर्स लि.
गणपति, कोयम्बतूर ६४१ ००६.

ROLON Special
Motorcycle Chain

सबसे अधिक बिकने वाली सर्वोत्तम चेन

MAA COMMUNICATIONS 1247 Hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान

कटौतियों की कैंची

सरकारी खर्चों में कटौतियों की कोशिशों से मंत्री, अफसर परेशान

राजस्थान में इन दिनों मंत्रियों और अफसरों को लग रहा है कि वह दिन दूर नहीं जब उनके परिजन उनसे नाराज होकर बोलचाल बंद कर देंगे. एक अफसर की बीवी इसलिए नाराज है क्योंकि उसके कलेक्टर पति अब उसे "किटी पार्टियों और शॉपिंग के लिए सरकारी गाड़ी नहीं ले जाने देते." एक दूसरे आला अफसर की मेडिकल कॉलेज में पढ़ने वाली बिटिया की नाराजगी की वजह यह है कि उसके घर के टेलीफोन से अब एसटीडी सुविधा काट दी गई है. उसका 'ब्वाय फ्रेंड' इन दिनों अमेरिका में है तो फिर बातचीत कैसे हो.

इस साल 4 मार्च को मुख्यमंत्री बनने के बाद भैरों सिंह शेखावत ने सरकारी फिजूलखर्ची रोकने की घोषणा की थी और एक महीने बाद 5 अप्रैल को इसके क्रियान्वयन के लिए एक उच्चस्तरीय समिति का गठन किया गया. चिकित्सा एवं सार्वजनिक निर्माणमंत्री ललित किशोर चतुर्वेदी की अध्यक्षता में गठित इस समिति में भाजपा के वरिष्ठ सदस्य और पूर्व केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री सतीशचंद्र अग्रवाल, जद के सदस्य व पूर्व वित्तमंत्री माणिक चंद सुराणा, कांग्रेस के पूर्व वित्तमंत्री चंदनमल वैद और पूर्व वनमंत्री माधव सिंह दीवान, सेवानिवृत्त वित्त आयुक्त मंगल बिहारी और राज्य सरकार के पदेन वित्त सचिव को शामिल किया गया. विकास आयुक्त राजेंद्र जैन को समिति का सदस्य सचिव बनाया गया.

समिति के कार्यक्षेत्र में विभिन्न सरकारी विभागों के खर्चों की समीक्षा करना, कटौती के उपाए सुझाना और आय के नए स्रोत तलाशना शामिल था.

मुख्यमंत्री ने इस साल के बजट में खर्चों में कटौती से 30 करोड़ रु. की राजस्व आय का प्रावधान रखा है, हालांकि मितव्ययिता समिति ने जो सिफारिशें दी हैं, उन्हें मानने से कई सौ करोड़ रु. की खर्चों की कटौती की संभावना है. राज्य में राजस्व खर्चों में बढ़ोतरी से 1990-91 के अंत तक अनुमानित घाटा 800 करोड़ रु. हो जाएगा.

मितव्ययिता समिति ने पाया कि पिछले साल मंत्रियों और आला अफसरों ने करीब एक करोड़ रु. के टेलीफोन किए. और छह हजार सरकारी वाहनों पर साठ करोड़ रु. सालाना से भी ज्यादा खर्च करने पड़ रहे हैं.

समिति ने पाया कि पिछले साल चिकित्सा भत्तों के रूप में 15 करोड़ रु. से ज्यादा का भुगतान किया गया. एक कर्मचारी ने बताया कि राज्य के सबसे बड़े चिकित्सा संस्थान सवाई भानसिंह अस्पताल के सामने खुली दवा दुकानों के मालिक 20 से 30 प्रतिशत कमीशन पर मनचाही रकम का बिल एनएसी के साथ बनवाकर दे देते हैं और आयुर्वेदिक दवाओं के दुकानदार तो डॉक्टर के पास जाए बिना भी बिल की सुविधा उपलब्ध कराते हैं. समिति के सुझाव पर चिकित्सा विभाग ने करीब ढाई सौ दवाओं की 'पॉजिटिव लिस्ट' तैयार कर ली है. उसके आधार पर ही पुनर्भरण किया जा सकेगा. इस निर्णय से कई करोड़ रु. सालाना की बचत होने की संभावना है.

मोटर विभाग के खर्चों के मद्देनजर समिति ने सुझाव दिया कि मंत्रियों के पास रहने वाली दो-दो कारों में से एक-एक की कटौती कर दी जाए. मुख्यमंत्री शेखावत ने तीन महीने पहले जब इस प्रस्ताव को मंत्रिमंडल में रखा तो अधिकांश मंत्रियों ने इस पर नाराजगी जताई. सो, यह खटाई में पड़ गया. इस प्रस्ताव पर अरसे तक कोई कार्रवाई नहीं होने पर समिति के चार गैर सरकारी सदस्यों ने राज्य सरकार को एक पत्र लिखा कि समिति के प्रस्तावों पर कोई निर्णय नहीं करने से समिति के कामकाज का कोई मतलब नहीं रह जाता है.

समिति के इस प्रस्ताव को मुख्यमंत्री ने अपने मंत्रिमंडल के सहयोगियों में बांट दिया. पिछले दिनों हुई बैठक में भी इस पर

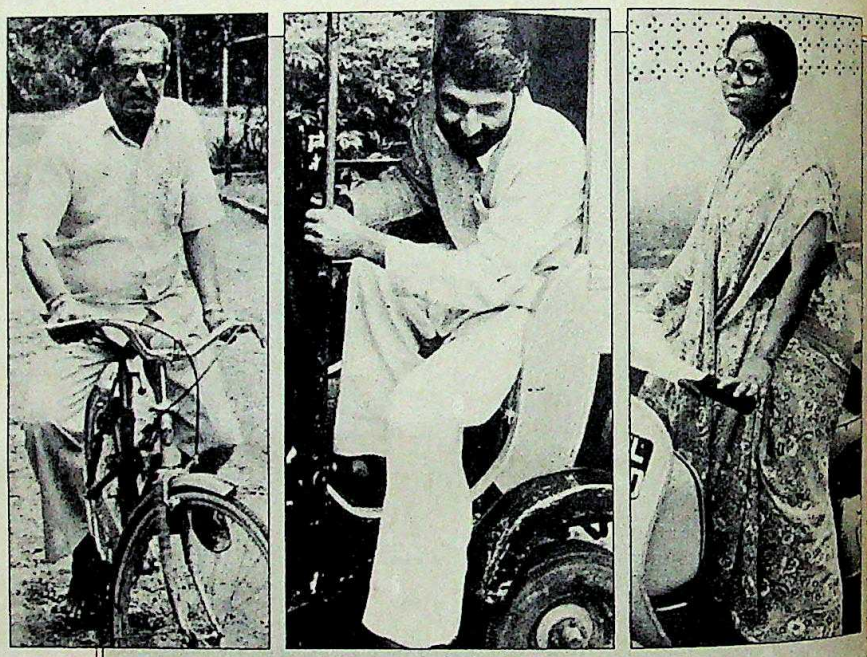

पेट्रोल बचत की कोशिश में मंत्रीगण (बाएं से) दिग्विजय सिंह, चंद्रभान, पुष्पा

मंत्रियों की कारों में कटौती और रविवार को सरकारी वाहनों के उपयोग पर रोक के कारण राज्य के कुछ मंत्री साइकिल, स्कूटर और ऑटोरिक्शा की शरण लेते देखे गए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई निर्णय नहीं हुआ. लेकिन अब रविवार को सरकारी वाहनों के उपयोग पर रोक लगा दी गई है. इसलिए पिछले दिनों सोमवार को कृषिमंत्री दिग्विजय सिंह ने अपने साइकिल का उपयोग किया, वहीं पर्यटन राहतमंत्री पुष्पा जैन फिर से स्कूटर चलाने लगीं और परिवहनमंत्री डॉ. गोविंद ने मिनी बसों और ऑटोरिक्शा का निरीक्षण लेना शुरू कर दिया है.

समिति की सिफारिश पर अब आला अफसरों को सरकारी वाहनों के निजी इस्तेमाल के लिए किराया देना पड़ेगा. यही नहीं, मंत्रियों द्वारा पेट्रोल के सालाना मुफ्त उपयोग की अधिकतम सीमा भी 3,650 लीटर से घटाकर 2,400 लीटर कर दी गई है. राज्य के सचिवों, विशिष्ट सचिवों और उच्च श्रेणी के विभागाध्यक्षों को 225 रु. मासिक भुगतान पर 500 किलोमीटर तक सरकारी गाड़ी के निजी उपयोग की सुविधा भी समाप्त कर दी गई है. सरकार ने अनावश्यक दौरों के यात्रा भत्ता भुगतान पर भी रोक लगा दी है.

सरकारी वाहनों के बाद टेलीफोन पर मुफ्तखोरी सुविधा के दुरुपयोग के मामले पर समिति की नजर पड़ी है. समिति ने पाया कि पिछले वर्ष कांग्रेसी मंत्रियों ने औसतन दो लाख रु. के टेलीफोन किए. पूर्व मुख्यमंत्री शिवचरण माथुर के खाते में छह टेलीफोन के 5,90,000 रु. के बिल भरने पड़े. समिति के ही सदस्य और पूर्व मंत्री माधव सिंह दीवान के टेलीफोनों पर 2,15,000 रु. का भुगतान किया गया. मुख्य सचिव जे.वी.एल. माथुर ने एक साल में 3,30,000 रु. के टेलीफोन कर डाले. समिति ने टेलीफोन पर एसटीडी सुविधा की कटौती और मंत्रियों व अधिकारियों के निवास पर लगे टेलीफोनों के लिए अधिकतम राशि निर्धारित करने की सिफारिश भी की है.

समिति ने राज्य सरकार से नई स्थानांतरण नीति घोषित करने की सिफारिश भी की है जिसके मुताबिक दो साल से पहले किसी को स्थानांतरित नहीं किया जाए और पांच साल से अधिक समय तक एक स्थान पर नहीं रखा जाए. इस नीति से राज्य सरकार को 50 करोड़ रु. की बचत हो सकती थी. लेकिन मुख्यमंत्री को राजनीतिक दबावों की वजह से इस नीति को वापस लेना पड़ा. समिति की सिफारिश है कि पुलिसवालों को ड्यूटी पर बाहर जाने के लिए यात्रा कूपन दिए जाएं.

समिति की पड़ताली नजरें कई दूसरे विभागों पर लगी हैं और वह ऐसे कई और सुझाव दे सकती है. मगर असली सवाल यह है कि इन सुझावों पर अमल में कितनी ईमानदारी बरती जाती है.

अंतर्कथा
इंद्रजीत बधवार

बदला लेने की राजनीति

इस सरकार का एक खास और परेशान करने वाला गुण है सस्ती लोकप्रियता पाने के पीछे पड़े रहना. आधार भले ही अर्द्धसत्य हों पर क्रांतिकारी लगने वाली नीतियों की घोषणा, भाषणबाजी, प्रचार और इतिहास की तथाकथित गलतियां सुधारने के लिए आंकड़ों की बाजीगरी इसका काम हो गया है.

इन सबके लिए आपको खलनायक भी गढ़ना होगा और उसके शिकार भी. अक्सर ऐसा गढ़न मनघड़ंत और साजिशों से भरपूर होता है और उसका एकमात्र मकसद होता है वी.पी. सिंह सरकार को अपमानितों और पिछड़ों का एकमात्र रक्षक साबित करना. इस षड्यंत्र का पहला शिकार बनाया गया 'बेचारे' ग्रामीण भारत को. जनता दल की नैया के वैचारिक खेवनहारों ने पहले यही कहा कि शहरी और उच्चवर्गीय खलनायक राष्ट्रीय संपदा का ज्यादा हिस्सा हड़प जाते हैं इसलिए 'बेचारे' ग्रामीण भारत पर कुल संसाधन का 50 फीसदी खर्च किया जाए.

लेकिन आम उपभोग की 70 फीसदी चीजों की मांग ग्रामीण इलाकों और कस्बों में ही है जहां प्रति व्यक्ति आय 750 रु. से कम है.

इसी तरह मंडल आयोग के पुनर्जीवन का उद्देश्य इतिहास के एक और तथाकथित शिकार, पिछड़ी जातियों का उद्धार समझा जाता है. लेकिन इसकी रिपोर्ट से पता चलता है कि इसका आंकड़ों और सामाजिक गणित का आधार इतना अस्पष्ट और भ्रामक है कि सचमुच कौन पिछड़ा है यह परिभाषित करना असंभव हो गया है. उद्योग राज्यमंत्री श्रीकांत जेना को सुनें तो पता चलता है कि एक नई आरक्षण नीति के तहत सरकार जल्दी ही अनेक प्रमुख उपभोक्ता वस्तुओं का उत्पादन सिर्फ लघु उद्योगों (यानी पीड़ित) के लिए आरक्षित कर देगी. जेना कहते हैं कि बड़े उद्योगों (जो इस मामले में 'खलनायक' हैं) ने देश का बंटाढार किया है. चाय का उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि प्रमुख चाय कंपनियां नीलामी में 7 रु. किलो चाय खरीदकर उसे ही डिब्बों में भरकर 80 रु. किलो बेचती हैं. लेकिन ये आंकड़े भी अर्द्धसत्य ही हैं. नीलामी में चाय 45 से 55 रु. में मिलती है जबकि बिकती है लगभग 65 रु. किलो.

रेखांकन: प्रणव दत्त

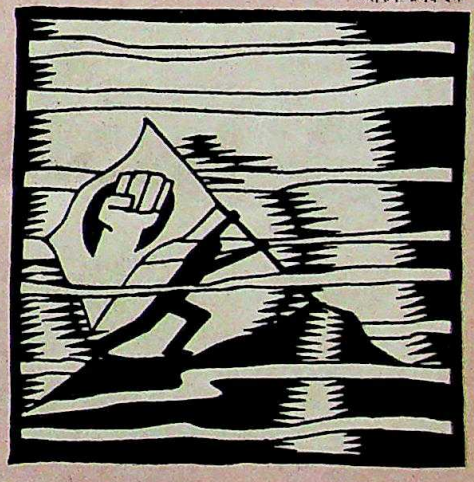

काम के अधिकार को संविधान का मौलिक अधिकार बनाना और प्रबंध में मजदूरों की भागीदारी भी ऐसे ही 'उच्च विचार' हैं. पर्याप्त नौकरियां न हों तो काम का अधिकार देने की बात बेमानी हो जाती है. लोगों की बेरोजगारी को देश की दशकों पुरानी तथाकथित समाजवादी नीतियों से जोड़कर देखने की जगह किसी काल्पनिक वर्ग का षड्यंत्र मान लिया जाता है जबकि असलियत यह है कि इन नीतियों के चलते आर्थिक विकास और उद्यमशीलता में गिरावट आई है.

और अगर आप रोजगार न दे सकें, तेज आर्थिक विकास न करा सकें, श्रमिक और प्रबंधकों के रिश्तों के लिए बेहतर कानून न बना पाएं, मजदूरों की स्थिति में सुधार और औद्योगिक क्रांति न ला पाएं तो उन्हें प्रबंध में भागीदारी दे दीजिए! उनकी महत्वाकांक्षा शांत होगी. इससे (खलनायक) प्रबंधक भी सबक सीखेंगे.

और सच पूछिए तो आज की राजनीति बदला लेने मजा, चखाने और अभिताभ बच्चन शैली में मुट्ठी तान कर "देख लूंगा" कहने वाली शैली पर चलने लगी है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोहिन हत्याकांड

दोस्तों की दुश्मनी

कमलापति के पौत्र पर भी आरोप

दिल्ली पुलिस ने 14 सितंबर की शाम जब 20 वर्षीय रोहिन मेहता के ब्रिगेडियर पिता की शिकायत पर उसके गुम होने का मामला दर्ज किया तब किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि यह मामला गंभीर मोड़ लेने जा रहा है. 16 की शाम हरियाणा पुलिस ने रोहिन की लाश को दिल्ली-जयपुर राजमार्ग पर गुड़गांव के निकट अधजली हालत में बरामद की. और उसके बाद अगले चार-पांच दिन के दौरान दिल्ली पुलिस की जांच-पड़ताल से जो बातें उभरकर सामने आईं, वे देश के राजनैतिक और अफसरशाही हलकों को झकझोरने के लिए काफी थीं.

शक की सुई ने जिन घरों की ओर इशारा किया वहां तक पुलिस का पहुंचना सामान्य बात नहीं है. 19 की शाम पुलिस ने रोहिन के एक बहुत नजदीकी दोस्त और भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद के एक प्रमुख संस्थान के निदेशक के 20 वर्षीय पुत्र गौरव कुमार सिंह को गिरफ्तार किया. पुलिस ने गौरव के पिता की उस कार को भी बरामद करने का दावा किया जिसमें रोहिन की हत्या की गई थी. इसके दो दिन बाद ही पुलिस ने वयोवृद्ध इंका नेता कमलापति त्रिपाठी के 20 वर्षीय पोते सोमेश त्रिपाठी और दिल्ली प्रशासन के समाज कल्याण निदेशक डी.आर. नफरी के 19 वर्षीय पुत्र मनोज नफरी को गिरफ्तार करके इस हत्याकांड को सनसनीखेज मोड़ दे दिया. ये दोनों युवक भी रोहिन और गौरव के एकदम करीबी दोस्त माने जाते हैं. इस संदर्भ में पुलिस ने अखबारों के लिए जो विवरण जारी किया उसके मुताबिक इस हत्याकांड का सूत्रधार सोमेश है जिसने रोहिन से तकरीबन 45 हजार रु. नकद हथियाने और अपनी गर्लफ्रेंड पर डोरे डालने का बदला लेने के लिए रोहिन की हत्या की.

अतिरिक्त पुलिस आयुक्त टी.आर. कक्कड़ के मुताबिक मुंबई में व्यापार करने वाले रोहिन ने इस दौरान सात-आठ बार दिल्ली की हवाई यात्रा की और डिफेंस कॉलोनी में अपना खुद का घर होने के बावजूद उसने कई बार ताज मानसिंह होटल में कमरा किराए पर लिया जहां अक्सर ये चारों दोस्त, उनकी गर्लफ्रेंड्स और कुछ अन्य लड़कियां मौज-मस्ती किया करते थे. कक्कड़ के मुताबिक पुलिस जांच के दौरान यह बात भी सामने आई कि सोमेश की आदतें बहुत खर्चीली थीं और वह अक्सर लोगों से हजारों रु. उधार लिया करता था.

बहरहाल, रोहिन की हत्या के बाद पड़तालों के क्रम में 19 तारीख को पुलिस ने गौरव की कार की बारीकी से जांच करवाई. इस जांच में कार की अगली सीट की भीतरी तहों में खून के धब्बे मिलने के बाद पुलिस को गौरव का मुंह खुलवाने में देर नहीं लगी. पुलिस के मुताबिक बाद में मनोज और सोमेश से की गई पूछताछ में उन्होंने भी गौरव द्वारा दिए गए विवरण की पुष्टि की.

पुलिस के मुताबिक गौरव, सोमेश और मनोज मुंबई से लौटने वाले रोहिन को लेने हवाई अड्डे गए थे. कार गौरव ड्राइव कर रहा था और रोहिन उसके साथ अगली सीट पर था. रोहिन के पीछे सोमेश था और उसके दायीं ओर मनोज बैठा था. कार लेकर ये लोग दिल्ली-जयपुर सड़क की ओर मुड़ गए. गुड़गांव से पहले एक जगह रोहिन की हत्या की गई और एक सुनसान जगह पर उसकी लाश पर तकरीबन दो लिटर पेट्रोल डालकर उसे आग लगा दी गई. बाद में पुलिस ने लाश से मिले पर्स और अधजले आइडेंटिटी कार्ड के आधार पर लाश की शिनाख्त की.

इसके बाद गौरव से की गई पूछताछ के आधार पर पुलिस ने खून में सने मैट, अटैची और ब्रीफकेस के अलावा हत्या में इस्तेमाल किए गए कनस्तर, डंडे और रस्सी के टुकड़े को भी कब्जे में ले लिया. हालांकि पुलिस का दावा है कि परिस्थितियों से जुड़े इन सभी प्रमाणों के बूते पर उसने अपना पक्ष बहुत पक्का बना लिया है लेकिन बाद में अभियुक्तों की ओर से अदालत में पेश होने वाले नामी-गिरामी वकीलों ने आरोप लगाया कि अभियुक्तों की ओर से दिए गए बयान पुलिस ने जोर-जबरदस्ती करके लिए हैं. लेकिन इसके बावजूद सुनवाई करने वाले मजिस्ट्रेट ने यह कहते हुए अभियुक्तों को पुलिस हिरासत में रखे जाने की अनुमति दे दी कि उपलब्ध तथ्यों में इतना दम है कि अभियुक्तों से आगे और पूछताछ की जाए.अब यह मामला अदालत की कसौटी पर परखे जाने के दौरान क्या-क्या रंग लेता है यह समय ही बताएगा.

—विजय क्रान्ति

प्रभात पत्रिकार

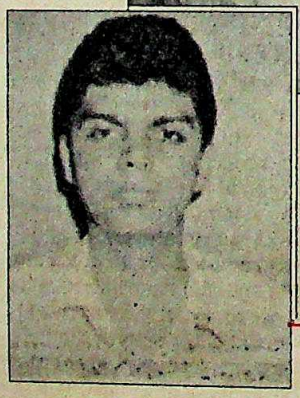

रोहिन (बाएं); और पुलिस की गिरफ्त में सोमेश

मामला अदालत की कसौटी पर क्या रंग लेगा, वक्त ही बताएगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरियाणा

फिर बजी बंसी

बंसीलाल का अभियान जोरों पर

हरियाणा के बंसीलाल की बंसी एक बार फिर इस राज्य के गांवों में बजने लगी है. पिछले चुनाव में मिली करारी हार के सदमे को तोड़कर वे सक्रिय हो गए हैं. 1987 के चुनावों में उनके नेतृत्व में इंका को 90 सदस्यीय विधानसभा में पांच सीटें ही मिली थीं. उस वक्त किसी को रत्ती भर भी एहसास नहीं था कि बंसीलाल की वापसी भी हो सकती है. लेकिन आज तीन वर्ष बाद जबकि वे गांवों की खाक छानने निकले हैं, जनसमूह उमड़ पड़ा.

पूर्व मुख्यमंत्री ने अपनी मुहिम छेड़ने का बहुत माकूल मौका चुना है. देवीलाल और उनके लोगों ने हरियाणा को पारिवारिक जायदाद मानकर कामकाज चलाया, उससे वे अपनी विश्वसनीयता खो बैठे हैं. इधर, इंका नेतृत्व भी बंसीलाल की लगातार अनदेखी करता रहा है. इसलिए उनके लिए यह दो-दो मकसद साधने का मौका है. एक तो हरियाणा में नेतृत्व शून्यता की स्थिति को भरना और दूसरे, इंका में अपनी हैसियत बहाल करना.

लोग उनकी पार्टी के नाम पर नहीं बल्कि उनके नाम पर सभाओं में आ रहे हैं. नतीजतन गत मई में बना उनका 'हरियाणा विकास मंच' उनके राजनैतिक क्रियाकलापों के लिए कारगर साबित हो रहा है. अधिकांश इंका कार्यकर्ताओं का समर्थन मिल जाने से ही वे मंच को समाप्त करने के आलाकमान के निर्देश की अनदेखी कर पाए हैं.

वैसे भी इस बात के अनेक प्रमाण हैं कि बंसीलाल पार्टी नेतृत्व से क्षुब्ध हैं. उनकी रैलियों में 'राजीव गांधी जिंदाबाद' का स्वर नहीं लगता, न ही इस परिवार के नारों की गूंज सुनाई देती है. यहां तक कि पार्टी के तिरंगे झंडे की जगह एक खाकरिया झंडे ने ले ली है.

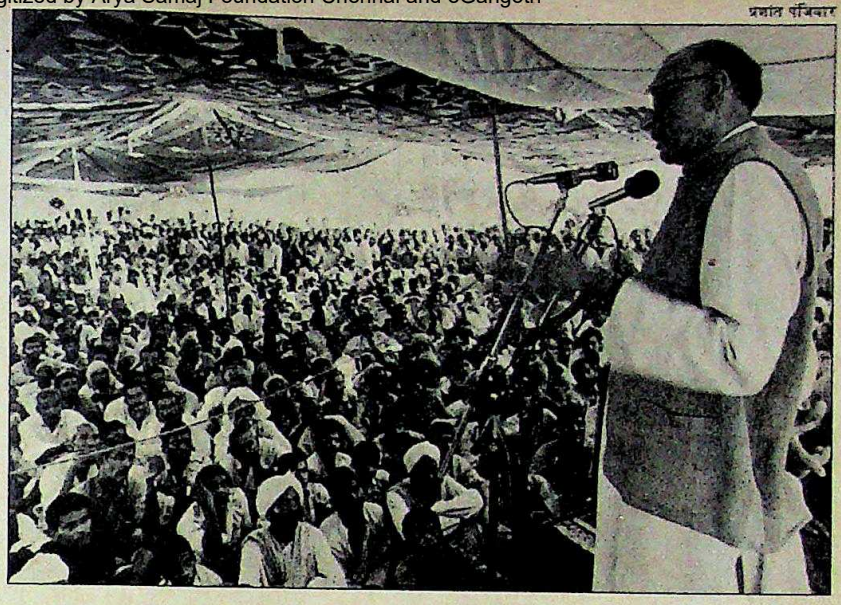

प्रशांत पंजियार

रैली को संबोधित करते बंसीलाल

64 वर्षीय जाट नेता को इस बात का बखूबी पता है कि लोग देवीलाल परिवार को तो उखाड़ फेंकना चाहते हैं पर इंका को विकल्प नहीं मानते. उनके विरोधी उनके रवैये को देवीलाल जैसा बताने लगे हैं. राज्य इंका शाखा के अध्यक्ष एस.एस. सुरजेवाला के अनुसार, "वे तो बस एक परिवार के राज की जगह दूसरे का राज स्थापित करने की कोशिश कर रहे हैं." लेकिन यह तर्क लोगों के गले के नीचे नहीं उतर रहा, क्योंकि आम राय बंसीलाल के पक्ष में ही है. फिर राजनैतिक गुमनामी के पिछले वर्षों ने उनकी कड़ी कार्यशैली को भी काफी कुछ बदल डाला है.

सत्ता के सशक्त दावेदार के रूप में बंसीलाल के उभरने के कारण राज्य में नए राजनैतिक समीकरण बन सकते हैं. जनता दल के कुछ वरिष्ठ नेता तो बंसीलाल को यह सुझाव भी दे चुके हैं कि वे इंका को छोड़ दें और जनता दल में देवीलाल गुट के विरोधियों के साथ संधि कर लें. मंजे हुए नेता बंसीलाल भाजपा के वरिष्ठ नेताओं से भी संपर्क साधे हुए हैं. भाजपा प्रवक्ता किशनलाल शर्मा कहते हैं, "अगर बंसीलाल इंका छोड़ देते हैं तो मध्यावधि चुनाव होने पर उनके साथ सीटों के तालमेल की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता." वामपंथी भी समर्थन कर सकते हैं.

इन सबके कारण सबसे ज्यादा परेशान राजीव गांधी ही हैं. इंका की राज्य शाखा और भजनलाल मिलकर उन पर दबाव डाल रहे हैं कि वे बंसीलाल को पार्टी से निकाल दें. लेकिन लोकप्रियता की आंधी पर सवार किसी नेता से किनारा कर पाने के लिए बहुत हिम्मत और कुछ हद तक नासमझी की भी जरूरत होती है. बंसीलाल की आंधी काबू की जा सकने वाली हदों से बाहर निकल चुकी है. यह बात राज्य में इंका की पहले से धूमिल छवि को और भी धूमिल कर सकती है.

—भास्कर राय

बंसीलाल

'मुझे चुप कराना चाहा'

हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री बंसीलाल कांग्रेस (इ) के केंद्रीय नेतृत्व के खिलाफ शिकायतें करते हैं. कुछ अंश:

● ***हरियाणा विकास मंच को भंग करने से इनकार करके क्या आपने पार्टी नेतृत्व के आदेश का उल्लंघन नहीं किया है?***

कतई नहीं. पार्टी संविधान किसी कांग्रेसी को किसी मंच से जुड़ने की मनाही नहीं करता. हमारे मंच की गतिविधियां कांग्रेसी विचारधारा के आड़े नहीं आतीं.

● ***आपकी मौजूदा लोकप्रियता के बावजूद आपको राज्य में पार्टी नेतृत्व क्यों नहीं सौंपा गया है?***

यह आलाकमान ही जाने.

● **क्या इसीलिए आपने मंच बनाया?**

यह भी एक वजह थी. मुख्य वजह यह थी कि वे लोग मेरा मुंह बंद करने की कोशिश में थे.

● ***राज्य में मध्यावधि चुनाव की तत्काल संभावना है?***

हो सकता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कटारिया: अजीत नेवनी
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सनद रहे

ब्रिटिश सम्मानः अर्थशास्त्र के जाने-माने विशेषज्ञ तथा लंदन स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स के निदेशक, 66 वर्षीय **आई.जी.पटेल** का 'नाइट, कमांडर, ऑर्डर ऑफ द ब्रिटिश एंपायर' की उपाधि से. "शिक्षा, विकास के अर्थशास्त्र और वित्त के मामलों में उनके व्यापक योगदान" को मान्यता देते हुए ब्रिटिश सरकार की ओर से उन्हें यह सम्मान प्रदान किया गया है.

प्रकाशन स्थगितः दिल्ली के अखबार **'पैट्रियट'** का. 27 वर्ष पुराने और वामपंथी रुझान वाले इस अखबार को इधर लगातार घाटा हो रहा था और प्रसार संख्या भी लगातार घटती जा रही थी. लेकिन पहाड़ तब टूट पड़ा जब इस दैनिक के ही कुछ कर्मचारियों ने यह अदालती आदेश हासिल कर लिया कि यहां बछावत आयोग की सिफारिशें लागू की जाएं.

निधनः भारत के मुख्य न्यायाधीश **सब्यसाची मुकर्जी** का लंदन में दिल का दौरा पड़ने से. वे 63 वर्ष के थे. अपनी न्यायप्रियता के लिए मशहूर मुकर्जी 1968 में कलकत्ता हाईकोर्ट के जज बनाए गए. और आखिरकार दिसंबर 1989 को उन्हें देश के मुख्य न्यायाधीश का कार्यभार सौंपा गया था.

सम्मानितः नार्वे की पूर्व प्रधानमंत्री तथा पर्यावरण विशेषज्ञ **ग्रो हार्लेम ब्रुंतलैंड** 1988 के 'इंदिरा गांधी शांति, निरस्त्रीकरण तथा विकास पुरस्कार' से. राष्ट्रपति आर. वेंकटरामन ने नई दिल्ली में उन्हें यह पुरस्कार "इस ग्रह के लोगों के जीवन-यापन की परिस्थितियों में सुधार लाने के उनके समर्पित प्रयासों" के सम्मान में दिया.

पिटाईः दिल्ली के एक कंपनी अधिकारी **रवि एरी** की, गुवाहाटी हवाई अड्डे पर खड़े इंडियन एअरलाइंस के विमान में. असम के गृहमंत्री भृगु कुमार फुकन के आदमियों ने रवि को सीट खाली करने को कहा. मना करने पर उन्हें पीट-पीट कर लहूलुहान कर दिया गया. रवि का कहना है, "मैं गैर-असमी हूं बस इसीलिए मुझे पीटा गया."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्य प्रदेश

जगजाहिर गुप्तचरी

● मध्य प्रदेश के खुफिया विभाग के काम करने के तरीके का विश्व में कोई सानी नहीं है. इसके लिए खुफिया शब्द का कोई औचित्य ही नहीं रह जाता.

विभाग के गुप्तचर गुप्त रहकर काम करने में तो जैसे यकीन नहीं ही रखते. अपने छोटे बालों, पुलिसिया छाप कपडों के कारण वे तुरत पहचाने जाते हैं. तिस पर एक गुप्तचर का कार्यक्षेत्र भी हमेशा वही रहता है.

और सिपाही ही क्या, खुफिया विभाग के अधिकारी भी अपने विशेषाधिकारों का खुल्लमखुल्ला उपयोग करते हैं. विभाग की ओर से जो कारें उन्हें मिली हैं, उन पर पहचान छिपाए रखने के लिए किसी चिन्ह का इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए. लेकिन ये अधिकारी उन पर पुलिस की लाल बत्ती लगाए घूमते हैं.

इस खुली गुप्तचर शैली पर अब रोक लगा दी गई है. पिछले पखवाड़े राज्य के पुलिस महानिदेशक एस.वी.सिंह ने

आर.सी. साहू

नरेंद्र प्रसाद: अनोखा तरीका

खुफिया विभाग के मुखिया नरेंद्र प्रसाद को अपने विभाग की सभी कारों से लाल बत्तियां हटाने के आदेश भेजे.

पुलिस विभाग अब गुप्तचरों को सचमुच का गुप्तचर बनाने पर मानो तुल गया है. इससे इन गुप्तचरों को अपनी सबसे अहम चीज—विशेषाधिकार—से वंचित होना पड़ेगा.

लाल बत्ती न होने से वे यातायात नियमों का उल्लंघन करने पर दंडविधान से ऊपर नहीं होंगे. तब फिर न हवलदार उन्हें सलाम बजाएंगे और न ही आम जनता उन्हें पहचान पाएगी.

कर्नाटक

जैसा काम, वैसी सजा

नकाली भीमला: दुर्दांत अपराधी

● रिक्शाचालक से पुलिस में सिपाही और फिर नक्सलवादी बने नकाली भीमला की जिंदगी इतनी ही थी. पिछले पखवाड़े पुलिस ने कर्नाटक के बेल्लारी कस्बे से सात किमी दूर मुदरगी गांव में एक फॉर्महाउस में उसे ढूंढ़ निकाला और गोलीबारी के बीच उसकी मौत हो गई.

हैदराबाद के पुलिस नियंत्रण कक्ष से जून 1988 में जब वह तीन राइफल, एक रिवॉल्वर और 144 राउंड गोली-बारूद के साथ भाग निकला तो राज्य की पुलिस ने उसकी गिरफ्तारी पर एक लाख रु. का इनाम घोषित कर दिया. भीमला ने कर्नाटक में एक रिटायर्ड नौकरशाह का फार्महाउस पट्टे पर लिया और दो पत्नियों के साथ वहां रहने लगा. लेकिन एक कर्मचारी नारायण ने उसकी संदिग्ध गतिविधियों की जानकारी पुलिस को दी. इसके बाद नारायण की हत्या हो गई.

पुलिस निरीक्षक शंकर बिदरी की अगुआई में जब बेल्लारी पुलिस ने उसके फार्महाउस पर छापा मारा तो वहां से गोलियां चलीं और भीमला की मौत से पहले दो इंस्पेक्टर घायल हो गए. कर्नाटक पुलिस इस अपराधी को पकड़ने में आंध्र प्रदेश पुलिस की मदद ही कर रही थी. अब वे उन कागजातों की जांच कर रहे हैं जो भीमला के नक्सलवादी संपर्कों के संकेत देते हैं.

गुजरात

मंदिर में घमासान

● गुजरात के भावनगर जिले के पलिताना के जैन मंदिरों का शांत-सुरम्य वातावरण भी अब कर्मचारी-प्रबंधकों के झगड़े की चपेट में आ गया है.

स्थापत्य कला और नक्काशी के लिए विख्यात इन मंदिरों में धनी जैनियों से हर वर्ष करोड़ों रु. और कई किग्रा सोना चढ़ावे के रूप में आता है. समझा जाता है कि यह चढ़ावा देश के सर्वाधिक चढ़ावों में से होता है.

पिछले एक वर्ष से आनंदजी कल्याणजी ट्रस्ट के नियंत्रण वाला प्रबंधन मंदिर के 200 पुजारियों समेत 400 कर्मचारियों से विवादों में उलझा हुआ है. तीन सौ रु. का मामूली वेतन पाने वाले इन कर्मचारियों ने प्रबंधकों के हाथों शोषण की शिकायत करते हुए हफ्ते भर की हड़ताल की. प्रबंधकों को मजबूरन समझौता करना पड़ा और कर्मचारियों का वेतन थोड़ा बढ़ा दिया गया.

लेकिन जब प्रबंधकों ने कारीगरों को सजा देने और बागी पुजारियों को सबक सिखाने के मकसद से पिछले पखवाड़े 92 प्रशिक्षित कारीगरों को नौकरी से हटा दिया तो विवाद फिर भड़क उठा. कर्मचारियों की यूनियन ने औद्योगिक पंचाट से स्थगन आदेश लेकर बाजी उलट दी है. प्रबंधकों के शोषण के खिलाफ वे अब दोबारा हड़ताल पर जाने की सोच रहे हैं.

ओडीसा

नश्वर काया की याद

● उम्र का संबंध दिमाग से होता है. दिलो-दिमाग जवान हो तो उम्र चाहे जितनी हो, कोई खास फर्क नहीं पड़ता. ओडीसा के मुख्यमंत्री, 74 वर्षीय बीजू पटनायक तो इसी सिद्धांत के कायल लगते हैं. घर से सचिवालय वे साइकिल पर ही जाते हैं और जनसभा को संबोधित करने के लिए बिना खास कोशिश के अपने 'कलिंग रथ' पर चढ़ जाते हैं.

यही नहीं, राजनीति के राष्ट्रीय मंच पर भी अपनी जिस दिलेरी और हिम्मत के लिए वे

प्रमोद पुष्करणा

बीजू पटनायक: उम्र से ऊंचे

मशहूर हैं, उससे युवा नेताओं तक में ईर्ष्या होती देखी गई है.

लेकिन कई बार एकदम अप्रत्याशित तरीके से बढ़ती उम्र का एहसास हो जाता है. ओडीसा की राजनीति के इस वयोवृद्ध नेता को उस समय झटका लगा, जब ढेंकानाल जिले के अनुगुल कस्बे की महिलाओं ने उन्हें शिकायत भेजी कि जनता दल के कार्यकर्ता उन्हें इसलिए डरा-धमका रहे हैं कि उनके रिश्तेदारों ने आरक्षण विरोधी आंदोलन में भाग लिया.

मुख्यमंत्री सचिवालय को रोज सैकड़ों शिकायतें डाक में मिलती हैं. अनुगुल की महिलाओं का यह पत्र भी उपेक्षित छोड़ दिया जाता यदि उन्होंने इसमें मुख्यमंत्री को 'प्यारे दादाजी' कहकर संबोधित न किया होता.

बहरहाल, इस संबोधन ने मुख्यमंत्री के मर्म को ऐसा छुआ कि जवाबी कार्रवाई पक्की हो गई. साथ ही मुख्यमंत्री को यह स्मृति भी हो आई कि वे चाहे जितने ताकतवर हों, आखिर काया तो नश्वर ही है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाड़ी संकट

झूठी आशाओं के सहारे

भारतीय नीति का खोखलापन एक झटके में जाहिर

दिलीप बॉब

कुवैत पर इराकी कब्जे से उपजे भीषण संकट की एक प्रमुख शिकार है भारतीय कूटनीति. इराकी कब्जे के छह हफ्ते बाद भारत ने दबे-दबे स्वरों में इस घटना पर जो प्रतिक्रिया व्यक्त की और बाद में जैसा कूटनीतिक रुख अख्तियार किया, उससे स्पष्ट हो गया है कि भारत इस मसले पर अलग-थलग पड़ गया है.

खाड़ी संकट पर प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह की पहली औपचारिक प्रतिक्रिया इराकी कब्जे के 15 दिन बाद आई. भारत ने यह मानकर कि "तीखे शब्दबाण गैर-जरूरी हैं" (विदेशमंत्री इंद्रकुमार गुजराल के शब्दों में) इराकी हमले की एकतरफा निंदा नहीं की. खाड़ी संकट का समाधान ढूंढ़ने के लिए गुट-निरपेक्ष देशों की पहल करवाने गुजराल भागे-भागे बेलग्रेड गए. पर उनका यह दौरा निरर्थक ही साबित नहीं हुआ बल्कि उससे अदूरदर्शिता भी प्रकट हुई. इस बातचीत में शामिल बाकी दो देशों में यूगोस्लाविया पूरी तरह अमेरिका का साथ दे रहा है और अल्जीरिया ने इराक का पक्ष लिया है.

कुवैत और इराक में फंसे 2 लाख भारतीय मजदूरों और तेल की कीमतों में वृद्धि से देश की अर्थव्यवस्था पर होने वाले संभावित कुठाराघात के बावजूद नई दिल्ली स्पष्ट रूप से एक जोखिम भरा जुआ खेल रही है. भारतीय विदेश नीति की कामयाबी या नाकामी अब सद्दाम के भविष्य के साथ जुड़ गई है.

एपी/पीटीआई

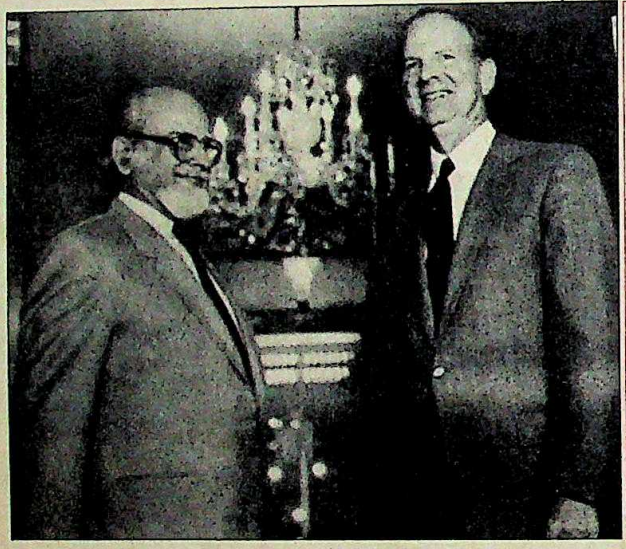

अमेरिकी विदेशमंत्री के साथ गुजराल

खाड़ी संकट पर भारत के रुख का असर भविष्य में वाशिंगटन के पाकिस्तान संबंधी तमाम फैसलों पर पड़ने की उम्मीद है

यह निर्भरता ही खतरनाक है. बगदाद में गुजराल और सद्दाम हुसैन के गर्मजोशी से गले मिलने से जो संदेश निकलता है उसे जाने-माने स्तंभ लेखक निहाल सिंह ने "अपमानजनक और उलटे असर वाली" प्रतिक्रिया कहा है. इराकी हमले के बाद सद्दाम से किसी बड़े विदेशी नेता की यह पहली मुलाकात थी. लेकिन गुजराल के बगदाद से लौटते ही सद्दाम भारतीयों से किए वादों से मुकर गए तो नई दिल्ली पशोपेश में पड़ गई. आखिर गुजराल की इराक यात्रा के तीन हफ्ते बाद नई दिल्ली बगदाद को कूटनीतिक संदेश भेजकर तीन महत्वपूर्ण वादों से मुकरने की शिकायत करने को मजबूर हो गई. ये तीन वादे इस प्रकार हैं—भारतीय विमानों को कुवैत में फंसे भारतीयों को निकालने के लिए वहां जाने की इजाजत दी जाएगी; कुवैत में 1.7 लाख भारतीयों को इराकी बंदरगाहों तक जाने दिया जाएगा जहां से भारतीय जहाज उन्हें ले आएंगे; और कुवैत के भारतीय दूतावास से बसरा चले गए कर्मचारियों को भारतीय समुदाय की मदद के लिए कुवैत जाने दिया जाएगा.

पर बगदाद ने नई दिल्ली के इस संदेश का जवाब देना भी उचित नहीं माना. दरअसल, बगदाद अपने उस रुख पर कायम है कि वहां फंसे भारतीयों को निकालने के लिए आने वाले हर भारतीय विमान या जहाज को खाद्य सामग्री और दूसरा जरूरी सामान लेकर आना पड़ेगा. ऐसा करना इराक पर लगाई गई संयुक्त राष्ट्र संघ की पाबंदियों का साफ उल्लंघन होगा. फिर अमेरिकी नेतृत्व वाली बहुराष्ट्रीय सेना भी ऐसा नहीं होने देगी.

इसके अलावा कुवैत के भारतीय दूतावास के कर्मचारी वस्तुतः बसरा हिल्टन होटल में बंदी बड़े हैं. 20 साल कुवैत में रहने के बाद अब बसरा और जॉर्डन होते हुए भारत लौटे प्रभावी व्यापारी 'एंडी' मुकर्जी कहते हैं, "उनके रंग-ढंग से यही लगता है कि उन्हें पुलिस सुरक्षा के बिना होटल से निकलने तक की इजाजत नहीं है."

ये सभी तथ्य यही दर्शाते हैं कि व्यापक अर्थों में भारतीय विदेश नीति इस संकट की असली बंदी है और इसके परिणाम निर्णायक हो सकते हैं. पिछले पखवाड़े वाशिंगटन में एशिया उप-समिति के दो उच्चस्तरीय सदस्यों ने, जिसमें समिति के अध्यक्ष तथा आम तौर पर भारत समर्थक माने जाने वाले स्टीफन सोलार्ज शामिल हैं, विदेश सचिव मुचकुंद दुबे को साफ-साफ बता दिया कि खाड़ी संकट पर भारत के रुख का असर भविष्य में वाशिंगटन के पाकिस्तान संबंधी फैसलों पर पड़ सकता है.

जाहिर है, इस मसले का यक्ष प्रश्न यही है. गुजराल यह कहकर बगदाद के रुख का बचाव करते हैं कि "युद्ध की स्थिति में भारत उनकी प्राथमिकता नहीं होगा." वे यह भी बताते हैं कि भारत ने राष्ट्रसंघ की पाबंदियों का समर्थन किया है और कुवैत पर कब्जे के प्रति विरोध जताया है. साथ ही वे इस बात पर बल देते हैं कि भारत की प्राथमिकता 'इतिहास' का सबसे बड़ा मानव निष्क्रमण अभियान चलाना है. लेकिन यह भी एकदम स्पष्ट है कि नई दिल्ली ने दांव गलत घोड़े पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने का फैसला किया है.

भारतीय विदेश विभाग का स्थिति का आकलन और नई दिल्ली की प्रतिक्रिया का आधार इस प्रकार है. आने वाले दिनों में इराक क्षेत्रीय महाशक्ति के रूप में उभरने जा रहा है. उसके पास सैनिक शक्ति है और कुवैत से हटने की हालत में भी वह विवादग्रस्त तेल क्षेत्रों को अपने पास ही रखेगा. इस तरह वह आर्थिक ताकत भी बनने वाला है.

यह अनुमान इस (आशावादी) विश्वास पर भी आधारित है कि मध्य-पूर्व के सामंती अमीरात स्वाभाविक राज्य नहीं हैं और सद्दाम हुसैन की कार्रवाइयों से उनके पतन की प्रक्रिया तेज हो जाएगी. भारत की खाड़ी नीति से जुड़े एक वरिष्ठ अधिकारी कहते हैं, "अरब देशों के आम लोगों का मानस अमेरिकी साम्राज्यवाद का विरोधी है.

नई दिल्ली की अवधारणा है कि आने वाले हफ्तों में अरब का आम आदमी अमेरिकी फौज को विदेशी आधिपत्य जमाने वाली सेना मानने लगेगा जिसका जमीनी मकसद अमेरिका समर्थक शेख-शाहों को शह देना और सस्ता तथा सुनिश्चित तेल प्राप्त करना है. भारत की खाड़ी नीति बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने वाले, सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च के भवानी सेनगुप्त कहते हैं, "खाड़ी में अमेरिकी फौज की मौजूदगी का मनोवैज्ञानिक असर तो अब लगभग खत्म हो चुका है और सेना रखने का खर्च काफी है. विश्व बाजार में मंदी आ सकती है. अमेरिका को भी जल्दी ही महसूस करने लगेंगे कि क्षुद्र स्वार्थों की कीमत पर इस क्षेत्र में उसकी स्थायी उपस्थिति का जोखिम उठा रहे हैं."

साउथ ब्लॉक में यह मत भी प्रबल है कि अगर संकट लंबा खिंचता है और मौजूदा सत्ता समीकरण से कुछ नहीं निकलता तो अरब देशों में नया महत्वपूर्ण ध्रुवीकरण होगा. साथ ही अमेरिका जितनी देरी करेगा, युद्ध शुरू करने में उसे उतनी ही मुश्किल होगी. और अगर लड़ाई छिड़ती भी है तो हजारों अरब मारे जाएंगे. इससे सद्दाम अरब संसार के लिए शहीद बन जाएंगे और यह भावना अरब राष्ट्रवाद को भड़काएगी.

भारत की खाड़ी नीति के आलोचकों का अनुमान साउथ ब्लॉक की धारणाओं के एकदम विपरीत है. पूर्व विदेश सचिव ए.पी. वेंकटेश्वरन कहते हैं, "भयावह युद्ध के सिवा कोई विकल्प नहीं है क्योंकि कोई कूटनीतिक पहल अब बाकी नहीं बची है." उनका मानना है कि अमेरिका के पास इसके सिवाय कोई चारा नहीं है कि वह या तो पाबंदियों को इस हद तक ले जाए कि सद्दाम का भंडार खाली हो जाए जिससे बगदाद में बगावत हो जाएगी या फिर वह चुनींदा लक्ष्यों पर हवाई हमला करे जिससे अमेरिकियों की जान की कीमत पर सद्दाम को नेस्तनाबूद कर दे.

युद्ध छिड़ने की हालत में अगर अमेरिका के सिर सेहरा बंधता है तो भारत का कूटनीतिक कदम निश्चित ही मजाक बन जाएगा. सेनगुप्त भी मानते हैं कि "अमेरिकी हमारी स्थिति समझते तो हैं पर वे उससे सहमत नहीं हैं." अगर अमेरिका सद्दाम को हटाने में कामयाब हो जाता है तो तेल की कीमतों और उसकी आपूर्ति पर पूरी तरह उसी की चलेगी. इस हालत में भारत अंतिम पंक्ति में ही होगा.

नई दिल्ली की बड़ी चिंता अमेरिकी जीत की हालत में पाकिस्तान को मिलने वाला फायदा है. इससे खाड़ी क्षेत्र में सद्दाम की तरह कोई और ताकत न उभरने देने की खातिर अमेरिका की मौजूदगी तय हो जाएगी.

इस संकट पर भारत के रुख में अस्वाभाविक जोखिम का तत्व है. सद्दाम की विजय पर आश्रित भारत के रुख को जायज ठहराने के लिए दिया जाने वाला उदाहरण कि "अफगानिस्तान के बारे में हम सही साबित हुए," आशावादी विचार

नई दिल्ली की अवधारणा है कि आने वाले हफ्तों में अरब का आम आदमी अमेरिकी फौज को विदेशी आधिपत्य जमाने वाली सेना ही मानने लगेगा

एएफपी

सऊदी अरब में अमेरिकी सैनिकः दबाव की कूटनीति

के सिवा कुछ नहीं है.

भारतीय कूटनीति की मौजूदा समस्या यह है कि इसका निर्धारण लगभग एक अकेले शख्स गुजराल के ही हाथ में हैं. मगर वे मंत्रालय के सहयोगियों की जगह अपने 'बुद्धिजीवी' साथियों की सूचनाओं की ही मदद लेते हैं.

गुजराल इस काम के काबिल तो हैं पर उनकी समस्या यह है कि वे पंजाब जैसे संगीन घरेलू मामलों से भी शिद्दत से जुड़े हुए हैं. जाहिर है, विदेश नीति पर वे एकनिष्ठ होकर ध्यान नहीं लगा पाते. मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी कहते हैं, "उन्होंने (खाड़ी संकट पर) अपने सिद्धांतों और धारणाओं के अनुरूप ही रुख अख्तियार किया है. ऊंट चाहे जिस करवट बैठे, चित भी उनकी, पट भी उनकी." मौजूदा स्थिति के मद्देनजर तो पट होने की ही ज्यादा संभावना दिखाई देती है.

—विलीप बॉब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाकिस्तान

मुकदमों की सियासत

अति उत्साही विरोध अभियान से बेनज़ीर के प्रति हमदर्दी

पाकिस्तान की पूर्व वजीरेआज़म बेनज़ीर भुट्टो और उनके सहयोगियों के इर्दगिर्द फंदा कसता ही जा रहा है. पिछले पखवाड़े सदर इस्हाक खां ने बेनज़ीर के खिलाफ भ्रष्टाचार और सत्ता के दुरुपयोग के चार मामले विशेष पंचाटों को सौंपे जबकि गुप्तचर सेवाओं के कोष को सांसदों को खरीदने के लिए इस्तेमाल करने संबंधी मामला लाहौर हाईकोर्ट में दायर किया गया है. इन आरोपों में से किसी में भी दोषी पाए जाने पर 10 वर्ष तक की सजा या चुनाव लड़ने पर सात साल की रोक लग सकती है.

खाविंद आसिफ अली जरदारी के अग्रिम जमानत लेने और अनेक सहयोगियों पर भी मुकदमे होने से बेनज़ीर चौतरफा संकटों से घिर गई हैं. यह भी जाहिर है कि सेना के समर्थन से बनी सरकार इस तेजतर्रार महिला को फिर से वजीरेआज़म की कुर्सी पाने से रोकने के हर संभव प्रयास करेगी.

बेनज़ीर के लिए यह नई स्थिति नहीं है. लाख कोशिशों के बावजूद अंतरिम सरकार उन्हें बेअसर करने और उनके पक्ष में जनता में सहानुभूति की लहर को नहीं रोक सकी है. बेनज़ीर कहती हैं, "हम खामोशी से मुंह ताकते नहीं रहेंगे बल्कि हर मोर्चे पर लड़ेंगे. डरी हुई सरकार मेरी पार्टी को सत्ता में आने से रोकने के लिए मुझे चुनाव लड़ने से रोकना चाहती है."

लेकिन जिस तरह से अंतरिम सरकार उन्हें बेअसर करने में लगी है, ऐसा हो जाना असंभव भी नहीं. हाईकोर्ट के जजों की अध्यक्षता वाले दो पंचाटों ने उनके खिलाफ पिछले हफ्ते कराची और लाहौर में सुनवाई शुरू की. इसके अलावा, बेनज़ीर को 2 अक्तूबर को लाहौर में एक पंचाट के सामने उपस्थित होकर यह स्पष्टीकरण देने का आदेश भी दिया गया है कि एक जमीन के आबंटन में कानूनों का उल्लंघन करने का मुकदमा उन पर क्यों नहीं चलना चाहिए. उन पर अपने कुछ रिश्तेदारों को एक पांच सितारा होटल बनाने के लिए इस्लामाबाद की 287 एकड़ जमीन बहुत सस्ती दर पर देने का आरोप है. एक कंपनी को कम कीमत पर कपास बेचने से सरकारी खजाने का 20 करोड़ रु. नुकसान करने और कराची इलेक्ट्रिक सप्लाई कार्पोरेशन में एक सलाहकार नियुक्त करने का आरोप भी उन पर है. अनेक राजनैतिक पंडितों का मानना है कि ये आरोप छिछले हैं और अदालत ने अगर पक्षपात नहीं किया तो टिकेंगे नहीं.

सदर और कामचलाऊ सरकार ने

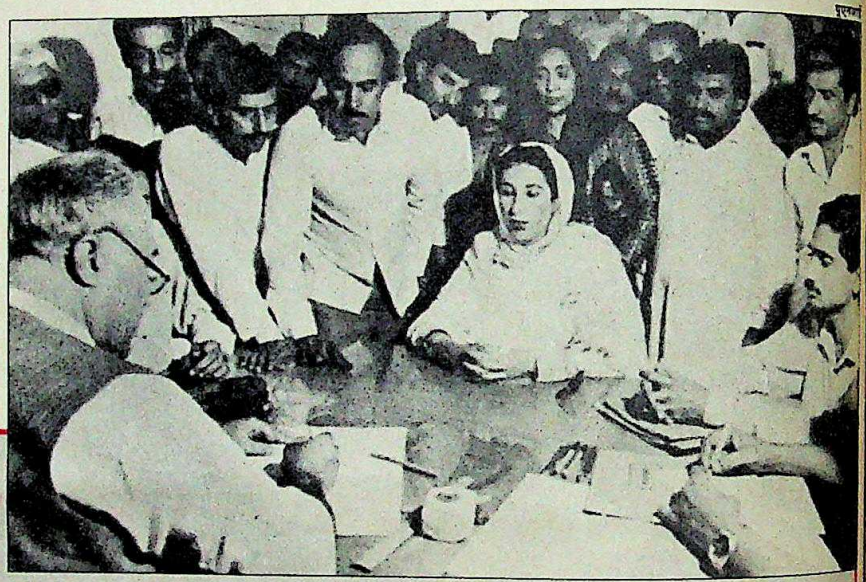

यूएनआई

बेनज़ीर (दाएं) और पति जरदारी नामांकन पर्चा भरते हुए: जंग की तैयारी

यूएनआई

बड़ी कोशिशों के बावजूद अंतरिम सरकार बेनज़ीर के पक्ष में बहने वाली सहानुभूति लहर पर काबू नहीं पा सकी है

सार्वजनिक उत्तरदायित्व वाली बात का जो शोर मचाना शुरू किया है, उसे पिछले पखवाड़े उस समय बड़ा झटका लगा जब लाहौर के एक विशेष पंचाट ने पूर्व केंद्रीय मंत्री जहांगीर बदर के खिलाफ लगे भ्रष्टाचार के आरोपों को खारिज कर दिया. चूंकि बेनज़ीर की पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के सांसदों के खिलाफ ही मामले चल रहे हैं इसलिए इसे अंतरिम सरकार द्वारा इस पार्टी को सत्ता से बाहर करने का षड्यंत्र माना जा रहा है. कामचलाऊ सरकार के कुछ मंत्री भ्रष्टाचार के लिए कुख्यात माने जाते हैं.

खुद बेनज़ीर ने भी कुछ आरोप लगाए हैं. उन्होंने सुप्रीम कोर्ट के जजों का विशेष न्यायिक आयोग बनाकर 1985 के बाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदरों और वजीरेआजमों के
कारनामों की जांच करने की मांग की है.
इसमें इस्हाक खां का नाम भी शामिल है.
इसके साथ ही उन्होंने अपने खिलाफ
मुहिम की अगुआई करने वाले मौजूदा
सदर के इस्तीफे की मांग भी की है.

अदालती मामलों में फंसाने की सदर
की कोशिशों के बावजूद बेनज़ीर ने
नेशनल असेंबली का चुनाव पांच जगहों से
लड़ने की घोषणा करके बड़े
मुकाबले से अपने चुनाव
अभियान की शुरुआत की. बैंक
डकैतों से लेकर बिना लाइसेंस
के क्लाश्निकोव बंदूकें रखने के
आरोपों में फंसे उनके पति
जरदारी ने भी खुद अपने शहर
नवाबशाह से नेशनल असेंबली
का चुनाव लड़ने की घोषणा की
है. वहां से पहले उनके वालिद
हाकिम अली ज़रदारी जीते थे
जो 6 अगस्त को हुए तख्तापलट
से पहले लंदन चले गए थे. उन
पर भ्रष्टाचार के आरोप हैं.

लेकिन बेनज़ीर के 20
महीनों के शासनकाल में सिंध
प्रांत में तूती आसिफ ज़रदारी
की ही बोलती थी. राजनीति में
आने के बारे में आसिफ ने
इंडिया टुडे को बताया, "मैं
राजनीतिक जीव नहीं हूं लेकिन
हालात ने मुझे इस तरफ
धकेल दिया है. नेशनल
असेंबली में पहुंचने पर कम-
से-कम वहां तो मैं अपना
बचाव कर सकूंगा." अपने
चुनाव अभियान के दौरान
एक विशेष भेंट में उन्होंने
कहा, "चुनाव जीतने के बाद
मुझे तो नहीं कहा जाएगा कि
वजीरेआजम का खाविंद
होने के नाते मैं सरकार में
दखलंदाजी करता हूं."

अनेक लोगों का मानना है कि अगर
सिंध में पीपुल्स पार्टी और नवाबशाह से
आसिफ जीते तो उन्हें सिंध का
वजीरेआला बनाया जाएगा. अपने गृह
प्रांत में बेनज़ीर के लिए सहानुभूति लहर
होने के बावजूद आसिफ के लिए चुनाव
जीत पाना आसान नहीं होगा. उनका
मुकाबला कामचलाऊ वजीरेआजम गुलाम
मुस्तफा जतोई के बेटे मुर्तफा जतोई से है.
साथ ही इस क्षेत्र में मोहाजिर मतदाताओं
की संख्या 25 फीसदी है जो पीपुल्स पार्टी
के सख्त विरोधी हैं.

सिंध के वजीरेआजम के खाविंद और
मौजूदा वजीरेआजम के बेटे का मुकाबला
पूरे देश में सबसे जोरदार रहेगा. अभी तो
पलड़ा थोड़ा-सा आसिफ के पक्ष में झुका
लगता है. लेकिन बड़ा सवाल यह है कि
क्या वे आजादी से चुनाव लड़ सकेंगे.
संकेत इस बात के हैं कि उन्हें गिरफ्तार
करके उनके खिलाफ मुकदमे चलाए
जाएंगे. इनमें अपने दोस्तों को, जिनमें से
अनेक गिरफ्तार किए जा चुके हैं, सरकारी
बैंकों से फरेब करके बड़े-बड़े कर्ज दिलाने
के आरोप शामिल हैं.

अपने एक निकट सहयोगी फौजी अली
काज़मी का, जिन्हें बेनज़ीर के हटते ही
गिरफ्तार किया गया था, इकबालिया
बयान उनके लिए चिंताजनक ही है.
काज़मी ने कबूल किया कि आसिफ के
माध्यम से उन्हें 30 करोड़ रु. का कर्ज
मिला. यह कर्ज दरअसल उन्होंने आसिफ
के लिए ही लिया था. इस प्रकरण में
शामिल बैंक के दो बड़े अधिकारी
गिरफ्तार किए जा चुके हैं और अंदेशा है
कि इसी मामले में आसिफ के खिलाफ 24
अक्तूबर के चुनाव से पहले ही सुनवाई
शुरू हो जाए. इस मामले में अपराध
साबित होने पर 20 साल की कैद मिल
सकती है. लेकिन आसिफ आश्वस्त हैं कि
सरकार इन आरोपों को सही नहीं साबित
कर सकती. उनका कहना है, "काज़मी का
बयान झूठा है और दबाव के तहत और
उसे मारने-पीटने के बाद लिया गया है."
चेहरे पर शिकन भी न आने देते हुए वे
कहते हैं कि ये अंतरिम सरकार
के मनगढ़ंत आरोप हैं. वे पूछते
हैं, "अगर मैं इतने जुर्मों में
शामिल हूं तो उन्होंने अब तक
मेरे खिलाफ एक भी सबूत क्यों
नहीं जुटाया?"

बेनज़ीर को राजनैतिक
मैदान से बाहर करने की
सरकारी कोशिशों का जो
उलटा असर हुआ है, वही
आसिफ और उनकी बेगम की
मदद करेगा. अंतरिम सरकार ने
जिस तरह का 'अति उत्साह'
दिखाया है, उससे बेनज़ीर को
जनता की सहानुभूति मिली है.
इससे जहां बेनज़ीर को
राजनैतिक बल मिला है, वहीं
उनके विपक्षी राजनेताओं को
एकजुट करने की कोशिश
कामयाब नहीं हो सकी है. अनेक
राजनैतिक पंडितों का मानना है
कि अगर स्वतंत्र और
निष्पक्ष चुनाव हुए तो
पीपुल्स पार्टी को अपार
बहुमत मिलेगा. ऐसा नहीं
भी हुआ तो उसका प्रदर्शन
असरदार होगा.

लेकिन बेनज़ीर को सत्ता
से बाहर करने की योजना
बनाने वाले सेना के जनरल
यह निश्चय ही कर चुके
लगते हैं कि उन्हें सत्ता में
वापस नहीं आने देना है. 24
अक्तूबर के चुनाव में ज्यों-ज्यों बेनज़ीर की
स्थिति बेहतर लग रही है, सेना के
कर्ताधर्ता भी उन्हें चुनाव लड़ने से रोकने
की हर संभव कोशिश करेंगे.

अगर ऐसा नहीं हुआ और बेनज़ीर की
जीत पक्की लगी तो फिर तय कार्यक्रम के
अनुसार चुनाव कराए जाने की संभावना
क्षीण लगती है. ऐसी स्थिति में अर्द्धसैनिक
प्रशासन का लंबा दौर चलेगा. पाकिस्तान
के लोगों के लिए इसका मतलब होगा,
एक बार फिर लोकतांत्रिक अधिकारों
से हाथ धोना.

—जाहिद हुसैन, इस्लामाबाद में

जतोई (बाएं) और इस्हाक खां: उखाड़-पछाड़

का मचलाऊ सरकार में भ्रष्ट मंत्रियों के शामिल होने से जवाबदेही का नाटक रंग न ला सका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

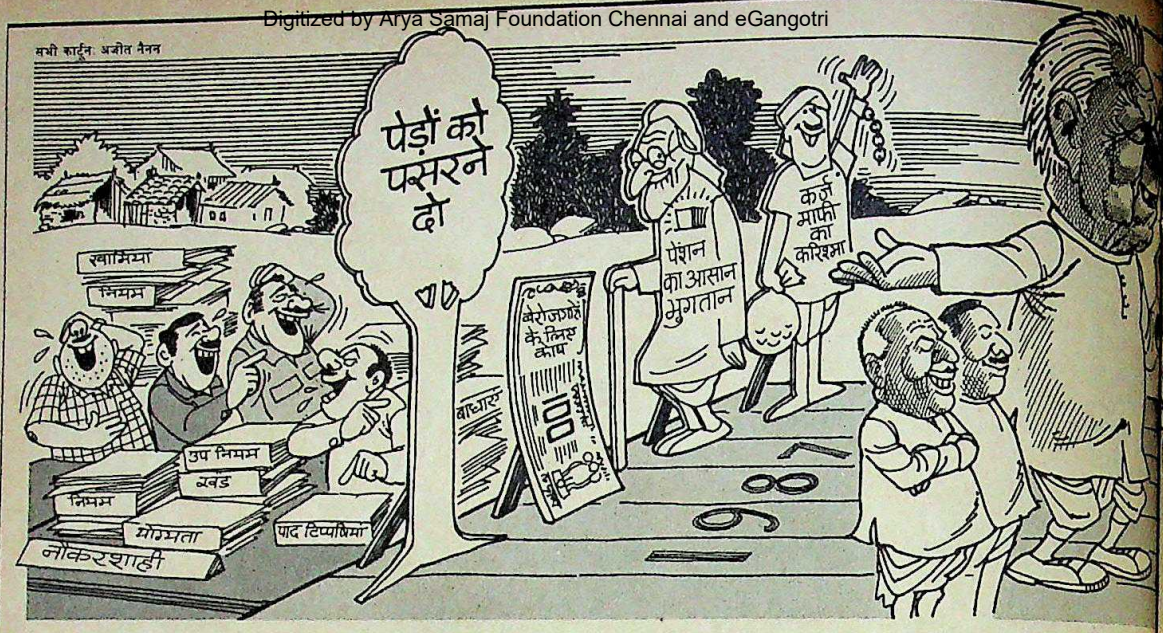

हरियाणा

वादों से हवाई किले

देवीलाल ने चुनाव के पहले जो वादे किए थे वे पूरे तो नहीं हो पाए हैं, उलटे ये सरकारी खजाने पर भारी बोझ भी साबित हो रहे हैं

आजकल हरियाणा के गांवों में एक लोककथा सबकी जबान पर है. एक किसान और उसका बेटा जंगल में अपनी गाय तलाश रहे थे. रास्ते में जो भी मंदिर मिलता, किसान विनती करता जाता कि गाय मिल जाने पर उसके दूध का चौथाई हिस्सा वह देवता पर चढ़ाया करेगा. इस तरह किसान सारा दूध देवताओं पर चढ़ाने का वचन दे चुका. इसके बाद उसके बेटे ने कहा, "अब हमें गाय की तलाश खत्म करनी चाहिए क्योंकि दूध तो सारा देवताओं के मद में चला जाएगा और हमारे हिस्से गाय को चारा देना ही बचा रहेगा." इस पर बाप ने बेटे को समझाया, "मूर्ख पहले गाय तो मिल जाए. देवताओं को तो मैं बाद में देखूंगा." और किसान को गाय तो मिल गई पर दूध देवताओं तक कभी नहीं पहुंचा.

हरियाणा के ग्रामीण इस कथा को वर्तमान संदर्भ से जोड़कर सुनाते हैं. यानी यहां गाय राज्य सरकार, किसान देवीलाल, बेटा ओमप्रकाश चौटाला और देवता राज्य के लोगों को समझिए. देवीलाल से जोड़कर ऐसी कथा के प्रचलित होने की वजह यह है कि जून 1987 में धूम-धड़ाके से सत्ता में काबिज होने के तीन साल बाद भी देवीलाल अपने ज्यादातर चुनावी वादों को पूरा करने में नाकाम रहे हैं.

जाट नेता ने लोगों से चांद-तारे तोड़ लाने का वादा किया था. प्रचार के दौरान उनका प्रिय और निपट अवास्तविक नारा हुआ करता कि "आप मुझे वोट दो, मैं आपके गांव में नोट छापने की मशीन लगा दूंगा." किसी जादूगर की सहजता से वे वृद्धावस्था पेंशन, बेरोजगारी भत्ता, सहकारी बैंकों के कर्जे माफ करने और सरकारी वृक्षों में किसानों को हिस्सा देना तक के वादे कर गए.

लेकिन आखिरकार देवीलाल के पास कोई जादुई छड़ी तो थी नहीं. ज्यादा से ज्यादा वे हाथ की सफाई ही दिखा सकते थे. उनके सत्ता में आने के कुछ देर बाद ही स्पष्ट हो गया कि इन लोकलुभावन योजनाओं का बोझ उठाना खस्ताहाल सरकारी खजाने के बस की बात नहीं.

इसके बाद चौधरी देवीलाल ताऊ बनकर राष्ट्रीय राजनीति के केंद्र में चले गए. तब राज्य की अफसरशाही को काम में लगाया गया. उसे पूरे न हुए वादों के लिए बहाना ढूंढने, कुछ योजनाओं को अंशतः ही सही लागू करने के लिए आंकड़ों की बाजीगरी दिखाने और योजनाओं की परिधि से बड़ी जनसंख्या को परे करने के लिए कानून के अंदर कानून की भूलभुलैया खड़ी करने का जिम्मा सौंपा गया.

भत्ते की भ्रांति

युवाओं से भी बड़े-बड़े वादे किए गए. सबसे लोकप्रिय वादा हर शिक्षित बेरोजगार को 100 रु. माहवारी भत्ता देने का था. इस वादे से 1.52 लाख शिक्षित बेरोजगारों का समर्थन जुटा लिया गया था.

देवीलाल के गद्दीनशीन होने के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात सुनी तो प्रखंड विकास दफ्तर से आय का प्रमाण-पत्र लेने पहुंचे. सुरेश और राकेश को पटवारी ने अयोग्य घोषित कर दिया क्योंकि उनके परिवारों के पास छोटी जोत है जो 10,000 रु. से कम सालाना आय की सीमा से ऊपर है. रमेश चंद और बलबीर सिंह को भी यही जवाब मिला क्योंकि उनका किसी रोजगार दफ्तर में पंजीकरण दो साल से नहीं था. आज भी ये चारों बेरोजगार युवक गांव में ही इधर-उधर भटकते रहते हैं. एक ने कहा, "भत्ते से हमें रोजगार तलाशने में मदद मिलती लेकिन ये कानून रोड़ा बने हुए हैं."

पेंशन की परेशानी

वृद्ध लोगों से भी कोई बेहतर सलूक नहीं हुआ. 65 वर्ष पार कर चुके लोगों के लिए 100 रु. माहवारी भत्ते की देवीलाल की बहुप्रचारित योजना के लाभभोगी इस फरवरी से मनीऑर्डर लेकर आने वाले डाकिए की राह ताक रहे हैं. देवीलाल के सभी ऊंचे वादों की तरह यह योजना भी खर्चीली साबित हुई. राज्य के खजाने पर यह दूसरा बड़ा बोझ कुल गैर-विकास राजस्व का करीब चौथाई हिस्सा है.

पेंशनों के लिए जिस तरीके से रकम जुटाई गई. उससे भी राज्य की बेतरतीब योजना का पता चलता है. इस योजना से आयकर चुकाने वालों को अलग करने के बाद करीब 7.37 लाख लोगों के लाभान्वित होने की उम्मीद थी जिनमें ज्यादातर किसान थे. राज्य योजना बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष मूलचंद जैन कहते हैं, "हमने राजस्व जुटाने की हर संभव कोशिश की. लोगों के द्वारा अतिक्रमण की गई सरकारी जमीन को भी बेचा. लेकिन इस योजना का आकार बढ़ता ही गया." जैन के मुताबिक योजनाकारों पर दूसरी मदों में कटौती करने का भी दबाव पड़ा. मसलन प्राकृतिक विपदाओं के लिए रखी रकम 35.63 करोड़ रु. घटाकर 5.75 करोड़ कर दी, ग्रामीण विकास योजना के लिए रकम भी 55.31 करोड़ से 50.59 करोड़ कर दी गई.

इस तरह विकास की दूसरी मदों से कटौती करके राज्य ने 52.61 करोड़ रु. जुटाए. लेकिन इस योजना पर 1990-91 साल के लिए ही 101 करोड़ रु. का प्रावधान किया गया था. बाकी रकम सरकार कहां से जुटाती है, यह 47.29 करोड़ का सवाल है. मुख्यमंत्री हुकुम सिंह कहते है कि उन्होंने सरकारी खर्चों में कटौती करके रकम जुटा ली है. पर योजना मसविदे के अनुसार प्रशासकीय खर्चे में कटौती से सरकार को सिर्फ 1.49 करोड़ रु. ही मिल पाए हैं.

अगर सरकार रकम उगाहना भी चाहे तो उसे बहुत मुश्किल का सामना करना होगा. हुकुम सिंह ने दिल्ली में शपथ लेने के तुरंत बाद राजस्वमंत्री तैयब हुसैन और अधिकारियों के साथ पेंशन की समस्या से निबटने पर बातचीत की. वित्तीय बोझ के अलावा इस योजना को लागू करने की अपनी समस्याएं हैं. 7.37 लाख लोगों को हर माह 100 रु. भेजने के लिए मनीऑर्डर और जरूरी स्टेशनरी पर ही 4 करोड़ रु. सालाना खर्च है. अब सरकार राजस्व विभाग के अधिकारियों के मार्फत रकम बंटवाकर यह खर्च घटाने की उम्मीद रखती है. इस बैठक के बाद तैयब हुसैन ने कहा, "कोई यह जिम्मेदारी उठाने को तैयार नहीं. मेरे विभाग के अधिकारी भी आनाकानी कर रहे हैं. लेकिन हम इसे पूरा करेंगे. पहले रकम तो जुटे."

उधर हरियाणा के बुजुर्ग पेंशन की प्रतीक्षा में दिन काट रहे हैं.

कर्जमाफी का कष्ट

देवीलाल का बहुप्रचारित चुनावी वादा किसानों के 20,000 रु. तक के सहकारी बैंकों के कर्ज माफ करने का था. उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसानों को भरोसा दिलाया था कि महज कागज पर अपने दस्तखत करके वे कर्ज माफ कर देंगे और उन्हें (किसानों को) कर्जमुक्त कर देंगे. अगर इस वादे को सचमुच लागू किया गया होता तो इस पर 240 करोड़ रु. की भारी-भरकम राशि खर्च होती है. लेकिन सहकारी बैंकों के कर्जों की संयोजक संस्था, रजिस्ट्रार ऑफ सोसाइटीज ने आज तक सिर्फ 34.31 करोड़ रु. के कर्ज ही माफ किए हैं. हालांकि सरकार का दावा है कि "राज्य में कर्जदारी घटकर 140.29 करोड़ रु. रह गई है और इससे 4 लाख लोग लाभान्वित हुए हैं." बारीक जांच करने पर पता चलता है कि यह रकम न भुगतान किए गए कर्जों, मौजूदा कर्ज, जुर्माना और आगे के ब्याज का मिला-जुला आंकड़ा है.

देवीलाल सरकार ने इस योजना के दायरे को घटाने के लिए कानून-पर-कानून बनाए. सरकार ने घोषणा की कि एक किसान का एक ही कर्ज माफ किया जाएगा. यानी उसने कुल 10,000 रु. तक के तीन कर्ज लिए हों तो उसका एक ही कर्ज माफ होगा. वह एक कर्ज भी तभी माफ होगा जब किसान दूसरे कर्जों की किस्त और ब्याज समय पर चुका रहा हो.

नतीजतन, अधिकांश लोगों ने इस योजना से बहुत कुछ खोया ही. देवीलाल के कुर्सी संभालते ही कृषि ऋणों की उगाही 60 फीसदी से घटकर 20 फीसदी पर आ गई. सो, उन्होंने कर्जे पटाने बंद कर दिए. लेकिन माफी की सूचना के उलट उन्हें बैंकों से सम्मन मिले और उधर ब्याज बढ़ता गया. इस साल के शुरू में चौटाला मुख्यमंत्री बने तो हजारों किसानों को किस्त न देने के गुनाह में पकड़ लिया गया. गिरफ्तारियां तभी बंद हुई जब भाजपा और इंका ने प्रदर्शन शुरू कर दिए. उनका नारा था, "ताऊ तेरे राज में, जमीन गई ब्याज में."

मजेदार बात यह है कि केंद्र की राष्ट्रीय मोर्चा सरकार ने भी अक्तूबर 1989 से पहले लिए गए 10,000 रु. तक के कृषि ऋण माफ करने का वादा किया था. उधर हरियाणा सरकार का दावा है कि 1987 से पहले लिए गए 10,000 रु. तक के सभी कर्ज माफ किए जा चुके हैं. लेकिन अब राज्य ने केंद्रीय योजना के तहत कर्ज माफी के लिए 154.7 करोड़ रु. की मांग की है. यह तो कतई नहीं माना जा सकता कि राज्य सरकार ने जून 1987 से अक्तूबर 1989 के बीच 154.7 करोड़ रु. के नए कर्ज बांटे होंगे. ऐसे में जाहिर है, इस रकम में राज्य की योजना के तहत माफ किए जाने वाले ऋण भी हैं. मुख्यमंत्री हुकुम सिंह कहते हैं, "हमने अपना वादा पूरा कर दिया. 1987 के पहले के कर्ज माफ कर दिए गए.अब हम केंद्र से रकम मिलने पर उस अवधि के कर्जों को माफ करेंगे."

वृक्ष पर बवाल

किसानों से देवीलाल का सबसे अनोखा चुनावी वादा था कि उनके खेतों में खड़े वृक्षों में से आधे वृक्ष उन्हें सौंप दिए जाएंगे. हरियाणा के अधिकांश राजमार्गों, सड़कों और रेल लाइनों के किनारे वन विभाग ने बड़ी मेहनत से वृक्ष—अधिकांश सफेदे के पेड़ लगाए हैं. हर साल वन विभाग 1.5 से 1.8 लाख वृक्ष गिराता है जिनकी कीमत करीब 9 करोड़ रु. है. इस गणित के मुताबिक देखें तो किसानों को 4.5 करोड़ रु. कीमत के वृक्ष प्रत्येक वर्ष मिलने चाहिए.

इस योजना की दलील यह थी कि सफेदे के वृक्षों से कृषि पर बुरा असर पड़ता है इसलिए किसानों को उसका मुआवजा मिलना चाहिए. साथ ही यह भी कहा गया कि इन वृक्षों में किसानों का हित जुड़ जाने से वे इन्हें बेवजह गिराना बंद कर देंगे.

यह योजना अभी कागजों से बाहर नहीं आ पाई है क्योंकि वृक्षों की संख्या का अनुमान लगाना लगभग असंभव है. इसके अलावा सरकार ने इसमें एक पच्ची जोड़कर इसे और उलझा दिया है. अब खेत के तीन मीटर तक लगे वृक्षों पर ही किसान का हक होगा. दूसरे कई उलझाऊ नियम भी बनाए गए जिससे लगभग सभी वृक्ष इस योजना के दायरे से बाहर हो गए. अब तीन साल बाद मात्र 500 किसान लाभान्वित हो पाए हैं. 10.82 लाख रु. के 8,157 वृक्ष ही उनके हाथ आ सके हैं. वृक्षों पर हक की योजना लागू करने का मामला इतना फरेबी है कि हरियाणा के शासक बेरोजगारी भत्ते, पेंशन और कर्जमाफी पर तो झांसा दिए जाते हैं मगर वृक्ष के विधान पर मुंह नहीं खोलते. 1987 में देवीलाल के सत्तासीन होने के बाद पाचवें मुख्यमंत्री हुकुम सिंह ने पिछले महीने अपनी सरकार की उपलब्धियों का पहला विज्ञापन छपवाया लेकिन उसमें भी वृक्षों के वादे का कोई जिक्र नहीं था.

—पंकज पचौरी, हरियाणा से

चार्ट बी.के. शर्मा

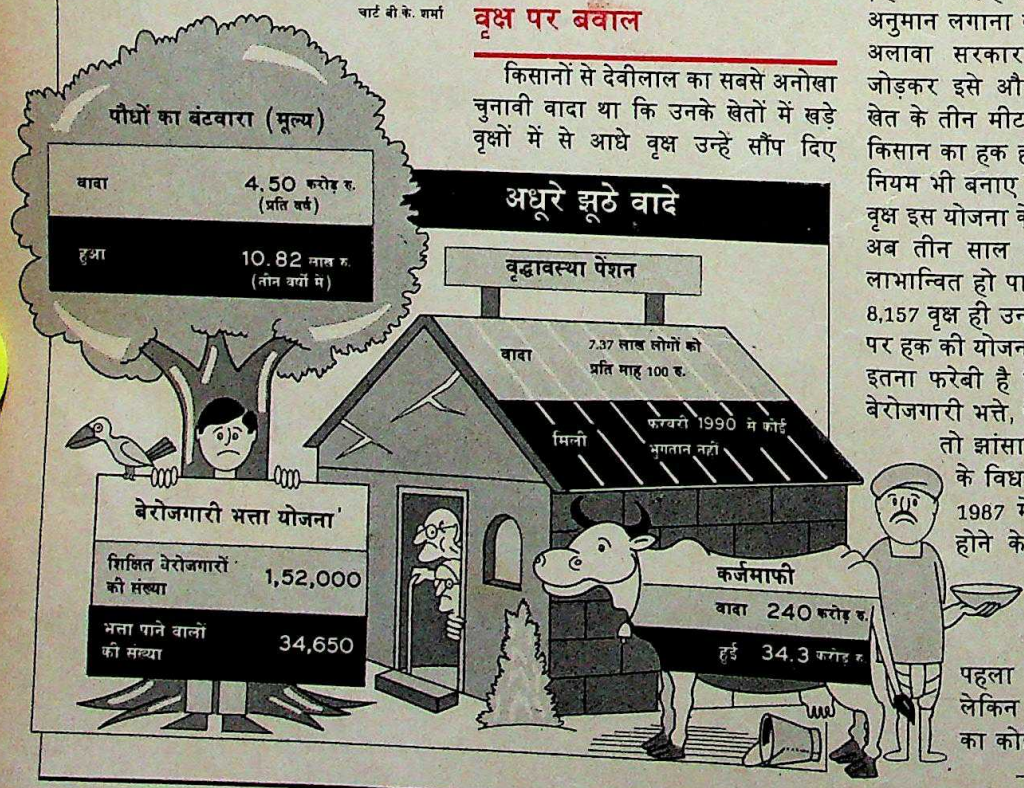

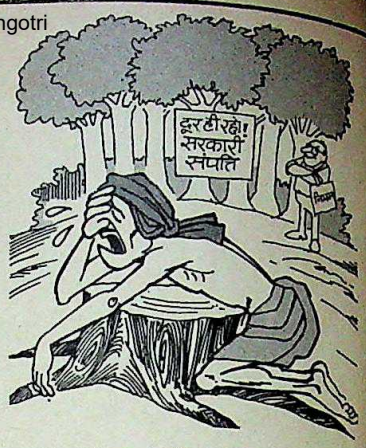

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

LIKE THE WARMTH IN YOUR HEART

TERENE/WOOL WORSTED FROM GWALIOR SUITING

GRASIM
GWALIOR SUITING
IN A CLASS OF ITS OWN
A PRODUCT OF GRASIM INDUSTRIES LTD.

MAPP-GR-90-1274-HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरातन सौंदर्य. नयी रोशनी

Philips Lighting

PHILIPS

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ़िलिप्स रोशनी का चमत्कार

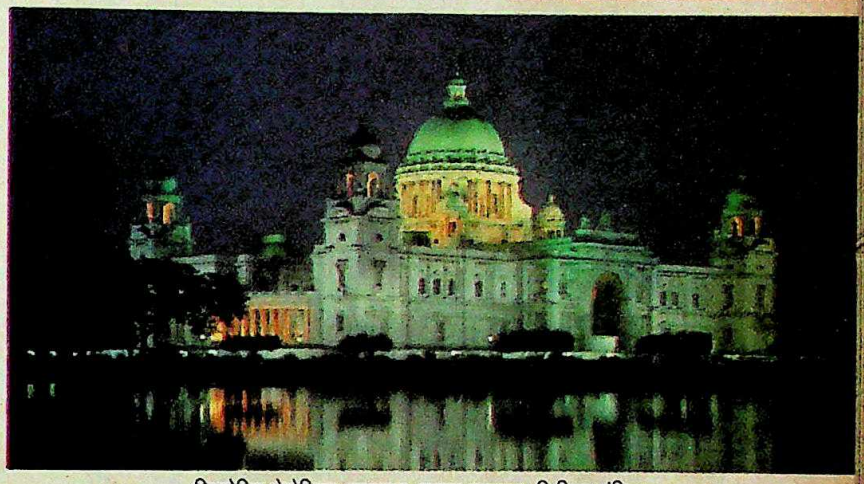

विक्टोरिया मेमोरियल, कलकत्ता. प्रकाश व्यवस्था: फ़िलिप्स इंडिया.

पत्थरों में तराशी प्राचीन कलाकृतियाँ जीवंत हो उठें... नयी रोशनी में नहा कर. इतिहास की भावभीनी झांकी प्रस्तुत करनेवाला अभिनव प्रदर्शन. आवाज़ और रोशनी के माध्यम से. फ़िलिप्स रोशनी. स्थापत्य कला के भव्य सौंदर्य में प्राण फूंक देने की कला.

फ़िलिप्स कलात्मक फ़्लडलाइटिंग:
और पुनर्जीवित हो उठता है अतीत.

किसी भी पुरावशेष या प्राचीन स्मारक में धड़कती है अतीत की आत्मा. प्राचीन इमारतों या प्रतिमाओं के मूर्त सौंदर्य को आप सराहते हैं देख कर व छू कर.

लेकिन इस सुखद अनुभूति को सूरज की रोशनी का मोहताज बनाये रखना कहां तक उचित है? इसी समस्या के समाधान के लिए फ़िलिप्स ने जग-विख्यात उन्नत तकनीक अपनाकर ऐसी रचनात्मक प्रकाश व्यवस्था विकसित की है जिसमें नहा कर हर रात जीवंत हो उठते हैं प्राचीन स्मारक. इस संदर्भ में अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त दो विशिष्ट उपलब्धियाँ: लंदन का टावर ब्रिज और पेरिस का आइफ़ेल टावर.

फ़िलिप्स इंडिया ने भी इस क्षेत्र में ख्याति अर्जित की है. जबलपुर के संगमरमरी पहाड़, जयपुर के हवामहल, बंगलूर के विधान सौधा तथा मैसूर स्थित वृन्दावन उद्यान के नाचते फव्वारे के लिए कलात्मक प्रकाश व्यवस्था प्रस्तुत करके.

इतना ही नहीं, केवल फ़िलिप्स ने ही संसार को दिया है 'सॉन-ए-ल्युमिये' का चमत्कार. तकनीकी जादूगरी का करिश्मा जिसमें विभिन्न दिशाओं से आतीं तेज़ व मद्धम, सतरंगी प्रकाश किरणें इन्द्रधनुषी तानाबाना बुनती हैं. और इनका तालमेल रहता है दिलचस्प कथोपकथन एवं संगीत का नाटकीय संगम प्रस्तुत करनेवाले ध्वनिआलेख से. फिर तो देश-काल की सीमा लांघ कर आप पहुंच जाते हैं अतीत के आंगन में.

भारत में नयी दिल्ली के लाल क़िला, मंदुरै महल, ग्वालियर क़िला और श्रीनगर के शालिमार बाग़ में 'सॉन-ए-ल्युमिये' प्रदर्शन दर्शकों का मन मोह लेता है– बार-बार. ये सभी फ़िलिप्स की रचनात्मक प्रकाश व्यवस्था के जगमगाते उदाहरण तो हैं ही, साथ ही ये कहते हैं फ़िलिप्स एल आइ डी इ सी (लिडेक) के तकनीकी कमालें की गौरवगाथा. लाइटिंग डिज़ाइन और इंजीनियरिंग सेंटर. अतीत को जीवंत करने के लिए सतत प्रयत्नशील.

कलात्मक फ़्लडलाइटिंग में अग्रणी. सारे संसार में.

PHILIPS

HTA 2890

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विविधता में झलकता सफलता का रंग!

संडे मेल साप्ताहिक, 1,50,000 वाचक. और उससे कहीं ज़्यादा रंग.

समाचार टिप्पणियाँ, आलोचनात्मक लेख, सामाजिक गतिविधियाँ, खेलकूद, संगीत, कला, रहन-सहन, हंसी-मज़ाक, हल्का-फुल्का व्यंग्य, शहर की हलचल और हर अंक के साथ एक खास रंगबिरंगी पत्रिका और इन सब के बावजूद वाजिब दाम.

सप्ताह-भर की ख़बर, परिवार-भर का मनोरंजन!

संडे मेल साप्ताहिक!

संडे मेल
साप्ताहिक

सारे परिवार का एक ही अखबार

दिल्ली और कलकत्ता से प्रकाशित एकमेव साप्ताहिक

आप संडे मेल की प्रति स्थानिय पत्र विक्रेता से प्राप्त कर सकते हैं। या हमें इन पतों पर सम्पर्क करें:—
संडे मेल प्रसार व्यवस्थापक, प्रसार विभाग: नई दिल्ली: सी-43, नीति बाग, नई दिल्ली। फोन : 663243, 652916, 652923
कलकत्ता: प्लैट नं. 5, 6 चित्रकूट 230 ए.ए.जे.सी. बोस रोड, कलकत्ता-700 020 फोन : 433247, 441017

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घाटे से घटी कमाई

न्यू बैंक ऑफ इंडिया और यूनाइटेड कमर्शियल बैंक (यूको बैंक) दोनों को 1989-90 में 50 करोड़ रु. का घाटा हुआ है, पर इसमें नई बात क्या है? वित्त मंत्रालय के बैंकिंग विभाग के एक आला सूत्र के अनुसार राष्ट्रीयकरण के बाद 21 साल में पहली बार कोई बैंक घाटे में है. न्यू बैंक के मामले में कुछ ब्याज भुगतानों को दो बार दर्ज कर दिया गया जिससे 10 करोड़ रु. का घाटा 1 करोड़ रु. के फायदे में बदल गया. इस 'गलती' के लिए चार अधिकारियों को बरखास्त कर दिया गया और बैंक के अंकेक्षकों से भी इसकी कैफियत मांगी जाएगी. न्यू बैंक और यूको के अलावा आठ और राष्ट्रीयकृत बैंक भी ऐसे हैं जिनका घाटा उनकी शेयर पूंजी और आरक्षित धन से ज्यादा है. यानी उन्होंने घाटा पूरा करने के चक्कर में जमा पूंजी घटा ली है.

बैंकिंग व्यवस्था कई कारणों से चरमरा रही है. इनमें से कुछ हैं—कम शेयर पूंजी, जालसाजी के बढ़ते मामले, खाता-बहियों की घपलेबाजी, लचर निगरानी और कम वसूली.

आस निरास भई

केनरा बैंक के पूर्व अध्यक्ष बिल्गी रत्नाकर इन दिनों क्या कर रहे हैं? जून 1988 में बैंक छोड़ने के बाद उन्हें सरकार ने महत्वपूर्ण पद दिया जाना था. इसके बदले सीबीआई ने उनसे पूछताछ शुरू कर दी कि उन्होंने बंगलूर का अपना घर एक बहुराष्ट्रीय कंपनी के आला अफसर को किराए पर कैसे दे दिया. अब रत्नाकर ने सरकारी नौकरी की आस छोड़ दी है. जुलाई में उन्होंने बंगलूर में दो कंपनियां—फेयरग्रोथ फाइनेंशियल सर्विस और फेयरग्रोथ होम फाइनेंस—शुरू की. जल्द ही वे एक और अपनी फेयरग्रोथ इन्वेस्टमेंट शुरू करने जा रहे हैं. वित्तीय सेवाएं देने वाली इन कंपनियों की भुगतान पूंजी 19 करोड़ रु. होगी. इनमें प्रमोटर्स की पूंजी 7.6 करोड़ रु. होगी. पहली दो कंपनियां जल्द ही सार्वजनिक निर्गम जारी करके पूंजी बाजार में उतरेंगी.

सिंडीकेट बैंक के के. आर. एन. शिणॉय के अलावा रत्नाकर के केनरा बैंक के दो सहयोगी के. धर्मपाल और के. लक्ष्मीनारायण भी उनकी कंपनी में शामिल हो रहे हैं. इतना ही नहीं, इस क्षेत्र की कई और धुरंधर हस्तियों को इन कंपनियों के बोर्ड में शामिल होने के लिए निमंत्रित किया गया है.

फर्श से टेबल तक

मद्रास के पास गुडापक्कम में 19 करोड़ रु. की लागत से स्पार्टेक ग्रेनाइट की शत-प्रतिशत निर्यातोन्मुखी इकाई शुरू करके 27 करोड़ रु. के कारोबार वाले स्पार्टेक सिरेमिक्स ने कुछ महत्वाकांक्षी योजनाएं बनाई हैं. कंपनी जर्मन फर्म नित्शि के साथ 25 करोड़ रु. की लागत से क्रॉकरी बनाने की परियोजना लगाना चाहती है. इसके अलावा 15 करोड़ रु. की लागत से सेनेटरी का सामान बनाने की योजना है जिसके लिए वह नेसर इंडिया से तकनीकी महारत हासिल करेगी. ये दोनों परियोजनाएं आंध्र प्रदेश के राजमुंदरी में लगाई जाएंगी.

सवारी और भोजन

फरीदाबाद का 1000 करोड़ रु. के कारोबार वाला एस्कार्ट्स समूह अब एक नए क्षेत्र—गैस खाद्य प्रसंस्करण—में पांव पसारने की सोच रहा है. फिलहाल 6 करोड़ रु. की लागत से चॉकलेट और नाश्ते का सामान बनाने की इकाई पर बातचीत चल रही है जिसके लिए जर्मन कंपनी डॉ. ओएटकर से गठजोड़ होगा. यह समूह मांस प्रसंस्करण के क्षेत्र में भी घुसना चाहता है.

खपत बढ़ी भी, घटी भी

देश में बिजली की खपत का तरीका अब धीरे-धीरे बदल रहा है. ऊर्जा मंत्रालय के बिजली विभाग के अनुसार औद्योगिक क्षेत्र में होने वाली बिजली की खपत 80 के दशक तक 10 फीसदी कम हो गई. इसकी एक वजह यह है कि विद्युत

चार्ट: बी.के. शर्मा

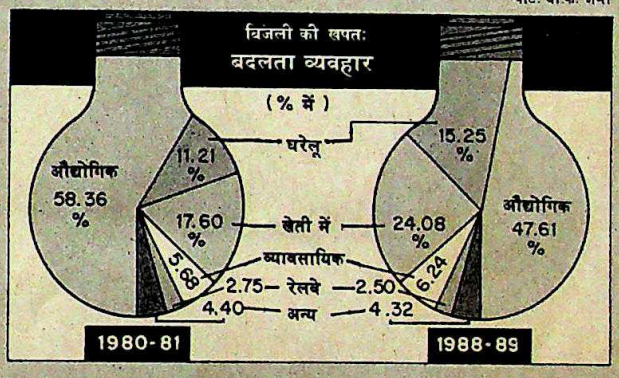

कटौती का मुकाबला करने के लिए औद्योगिक इकाइयों ने विद्युत जनरेटर लगाने शुरू कर दिए हैं. फिर विद्युत खपत के मामले में रेलवे की हिस्सेदारी भी कम हो गई है. घरेलू क्षेत्र तथा दुकानों आदि व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के क्षेत्र में विद्युत खपत का अनुपात जरूर बढ़ा है. 1980-81 से 1988-89 के दौरान कृषि क्षेत्र की विद्युत खपत भी लगभग 7 फीसदी बढ़ी है.

बेचने का इरादा मुल्तवी

एअर इंडिया ने घाटे में चल रही अपनी इकाई भारतीय होटल निगम को बेचने का मामला फिलहाल ठंडे बस्ते में डाल दिया है. निगम सेंटोर होटल चलाता है. पहले इसे सार्वजनिक क्षेत्र के भारतीय पर्यटन विकास निगम को बेचने का प्रस्ताव था. एअर इंडिया ने सिटी बैंक को जिम्मा सौंपा कि वह होटल निगम की संपत्तियों की कीमत का आकलन करे. वैसे, उसकी संपत्ति का ऐतिहासिक मूल्य ही 41 करोड़ रु. के आसपास होगा. बाजार मूल्य तो इसका तीन या चार गुना होगा. एअर इंडिया चाहता है कि आकलन के बाद निगम की शेयर पूंजी किसी ऐसी भारतीय या विदेशी कंपनी को बेच दी जाए जिसका पर्यटन विकास में अच्छा अनुभव हो. यदि जरूरी हुआ तो सरकार की इजाजत लेकर इसकी 51 फीसदी शेयर पूंजी बेच दी जाएगी. उम्मीद है कि इस तरीके से निगम के दिन भी बहुरेंगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्योग नीति

इरादे का बयान

प्राथमिकता तय करने में आनाकानी

संसद के बजट सत्र के आखिरी लमहों में उद्योगमंत्री अजित सिंह कुछ नई, साहसिक नीतियों की घोषणा के लिए हड़बड़ाए-से उठ खड़े हुए. इन नई नीतियों का मकसद उन्होंने उद्योग जगत को लालफीताशाही के पचड़ों से निजात दिलाना और उदार आर्थिक नीतियों को आगे बढ़ाना बताया.

लेकिन नीतियों के इस मसौदे में एक जरूरी चीज गायब थी. इसके साथ वह सूची नहीं थी जिससे यह पता चलता कि किन क्षेत्रों में निजी कंपनियों—भारतीय और विदेशी दोनों—को इजाजत दी जाएगी और किनमें नहीं. इस घोषणा के आज लगभग तीन महीने बाद भी राष्ट्रीय मोर्चा सरकार इस सूची को अंतिम रूप देने के मामले में आनाकानी करती दिख रही है.

लेकिन अब 'वह दिन' आ गया लगता है. अजित सिंह ने 'इंडिया टुडे' को बताया कि दो सूचियों पर विचार चल रहा है. एक होगी सकारात्मक सूची जिसमें विदेशी पूंजी तथा तकनीक लगाने की संभावना वाले क्षेत्र शामिल होंगे. और दूसरी होगी नकारात्मक सूची जिसमें उन क्षेत्रों का जिक्र होगा जिनके लिए देसी उद्योगों को लाइसेंस लेना जरूरी होगा (देखें बातचीत).

इन सूचियों का मसौदा विभिन्न मंत्रालयों से घूमता हुआ कई संशोधनों के साथ प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह के कार्यालय तक पहुंचा. इसके बाद प्रधानमंत्री ने वामपंथी पार्टियों और भाजपा से सलाह-मशविरा करने का फैसला किया.

फिलहाल तो ऐसी करीब आधा दर्जन सूचियां हैं. जून 1988 की छूट प्राप्त उद्योग पंजीकरण योजना के तहत 26 उद्योगों की एक नकारात्मक सूची है जिनमें शामिल होने के लिए कंपनियों को पहले वह आशय-पत्र प्राप्त करना जरूरी होता है, जिसे बाद में उद्योग अनुमति सचिवालय औद्योगिक लाइसेंस में बदल देता है. इसके अलावा एक सकारात्मक सूची है गैर-लाइसेंसीकृत पंजीकरण की. इसके दो हिस्से हैं. एक, एकाधिकार व प्रतिबंधित व्यापार कानून के दायरे में आने वाली कंपनियों के लिए और दूसरी, उससे बाहर की कंपनियों की.

एक अन्य सूची तथाकथित 'मर्म क्षेत्र' के उद्योगों की है जिनमें निजी पूंजीनिवेश को प्रोत्साहित नहीं किया जाता. इस 'मर्म क्षेत्र' में रक्षा, अंतरिक्ष, परमाणु ऊर्जा, रेलवे जैसे उद्योग हैं. साथ ही एक 'विशेष मर्म क्षेत्र' सूची भी है जिसमें पेट्रोरसायन और रासायनिक उर्वरक के उद्योग आते हैं. इतनी सूचियां मुख्य निवेशकों खासकर विदेशी निवेशकों को उलझन में डालने के लिए काफी हैं.

इन सूचियों को तर्कसंगत और सरल रूप देने के लिए उद्योगों के 11,000 से ज्यादा नामों और वर्गों पर गौर करना था. वर्गीकरण के लिए उद्योग और वित्त मंत्रालय तो अंतरराष्ट्रीय मानक प्रणाली का उपयोग करते हैं लेकिन वाणिज्य मंत्रालय इस प्रणाली को अभी भी पूरी तरह नहीं अपना पाया है. इसके अलावा और भी कई अड़चनें पार करनी थीं, क्योंकि हर मुद्दे पर हरेक मंत्रालय का अपना-अपना विचार था जिस पर गौर करना पड़ा. विभिन्न उद्योगों ने अपने हित की रक्षा के लिए दबाव भी डलवाया.

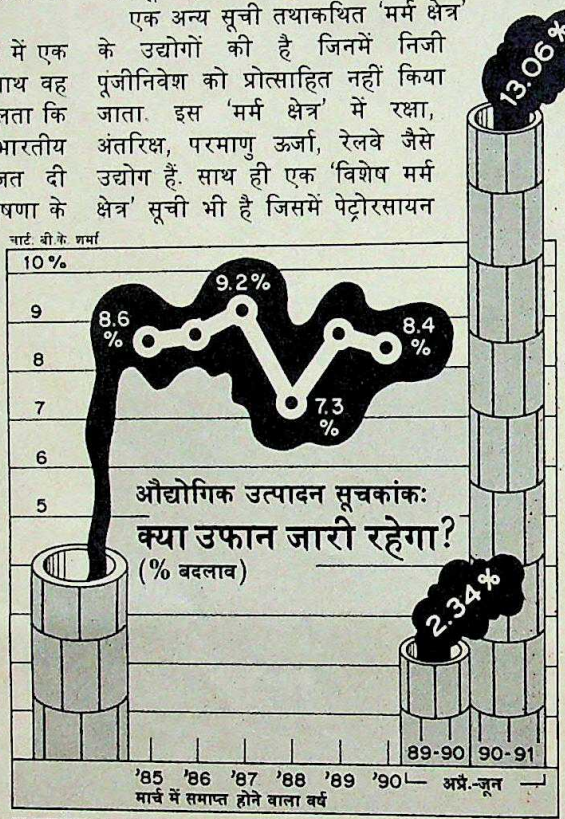

बिड़ला (बाएं) और पाल: मतभेद के स्वर

दूसरा विवाद पूरी तरह निर्यात आधारित इकाइयों को लेकर है. उद्योग मंत्रालय चाहता है कि ऐसी इकाइयां बिना लाइसेंस के ही लगाने की मंजूरी दी जानी चाहिए बशर्ते उनकी निवेश सीमा अधिक न हो. लेकिन वाणिज्य मंत्रालय के अधिकारियों का सवाल था—इस बात की गारंटी कौन लेगा कि ये इकाइयां निर्यातोन्मुखी उत्पाद को ही प्रश्रय देंगी और विदेशी मुद्रा देश से बाहर नहीं ले जाएंगी.

अब लगता है अंततः कोई आम सहमति बन गई है. विदेशी निवेशकों के लिए उद्योगों की एक सकारात्मक सूची होगी जिनमें उन्हें मंजूरी दी जाएगी. दूसरे सभी क्षेत्रों में उन्हें निर्यात के कठिन वादों पर अमल करना होगा और चरणों में उन्हें देसीकरण के कार्यक्रम पर अमल देना होगा. देसी उद्योग के लिए एक छोटी नकारात्मक सूची होगी. इस सूची में 'मर्म क्षेत्र' के उद्योग, जोखिम भरे उद्योग तथा सामाजिक रूप से 'अनुपयोगी' उद्योग होंगे. जानकारों की दलील है कि पहले तो इन नीतिगत उपायों के विदेशी और देसी पहलुओं को ही अलग करना चाहिए था.

इन सूचियों से आर्थिक माहौल को उदार बनाने की प्रक्रिया कितनी तेज होगी, इस पर राय एक नहीं है. भारतीय उद्योग और वाणिज्य महासंघ (फिक्की) के अध्यक्ष एस.के. बिड़ला का मानना है कि कोई सूची नहीं होनी चाहिए और भारतीय कंपनियों को सभी क्षेत्रों में विदेशी पूंजी के निमंत्रण की छूट होनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए वशर्ते उससे विदेशी मुद्रा भंडार में इजाफा हो. उधर, गुजरात अंबुज सीमेंट्स के प्रबंध निदेशक एन. सेकसरिया कहते हैं, "नकारात्मक सूची जितनी लंबी होगी, उतना ही बेहतर होगा."

लेकिन दूसरे कई लोग इसके प्रति कम उत्साहित हैं. कैडबरी इंडिया के प्रमुख दीनाई. पाल कहते हैं कि यह तथाकथित नीति दरअसल इरादे का बयान भर है. शायद यही सच भी है. फिक्की के महासचिव डी.एच. पई पणंदीकर कहते हैं कि "सिर्फ नीति पर अमल करने के उपाय ही बदले हैं." सूचियों को अंतिम रूप देने में देरी की वजह से विदेशी निवेशक नाखुश हैं. इस साल की पहली छमाही में हुए विदेशी निवेश की कम मात्रा से भी अनिश्चिय की स्थिति का अंदाज होता है.

उद्योग जगत में आज तीन माह पहले के मुकाबले अगर ज्यादा उलझन का माहौल है तो इसकी पर्याप्त वजहें भी हैं. तेल आयात खर्च में वृद्धि के कारण भुगतान संतुलन में आई गड़बड़ी ने निर्यात के मामले में कड़ी कटौती को जरूरी बना दिया जिससे खास क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था मंद हो जाएगी. वित्तीय वर्ष के पहले तीन महीनों में औद्योगिक उत्पादन सूचकांक में 13 फीसदी की महत्वपूर्ण वृद्धि के मद्देनजर सुस्ती की गुंजाइश बहुत कम रह जाती है.

इस वृद्धि को पहले तो पिछले साल अप्रैल-जून के दौरान औद्योगिक उत्पादन में नगण्य वृद्धि (2.34 फीसदी) के मद्देनजर देखा जाना चाहिए (देखें चार्ट). फिर, उत्पादन में यह वृद्धि दरअसल निवेश कम करने के पुराने फैसलों का नतीजा है. इन बातों के अलावा कोयला, पेट्रोलियम और इस्पात उद्योगों में मामूली प्रगति भारतीय अर्थव्यवस्था के भविष्य के प्रति बहुत उत्साहित नहीं करती.

—परंजय गुहा ठाकुरता और ब्यूरो रिपोर्ट

अजित सिंह

'कुछ फीकापन तो है ही'

बतौर उद्योगमंत्री अजित सिंह के पहले नौ महीने प्रभावशाली नहीं रहे हैं. मई के अंत में उन्होंने नीति संबंधी अनेक नए कदमों की घोषणा की थी लेकिन भारतीय और विदेशी उद्योगों को लाइसेंस देने संबंधी सकारात्मक और नकारात्मक सूचियां बनाने में सरकार के अनिर्णय के चलते इन कदमों का महत्व खत्म हो गया है. प्रमुख संवाददाता ***परंजय गुहा ठाकुरता*** *के साथ बातचीत में अजित सिंह ने इन सूचियों को अंतिम रूप दिए जाने में हुई देरी की वजहें बताई. कुछ अंश:*

• सूचियों की घोषणा करने में हुई तीन महीने की देरी क्या विभिन्न मंत्रालयों के बीच तकरारबाजी और वामपंथी पार्टियों तथा भाजपा से सलाह-मशविरा करने की सरकार की जरूरत के चलते हुई?

कुछ देरी हुई पर किसी तकरारबाजी से इसका कोई लेना-देना नहीं है. बहुत-से विधेयकों पर विचार किए जाने की वजह से संसद के पिछले सत्र में बहुत व्यस्तता रही. सूचियों में देर सारी मदें शामिल किए जाने के मद्देनजर अनेक मंत्रालयों से सलाह लेनी पड़ी है. यह लंबी प्रक्रिया है. आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं. खाड़ी संकट और तेल की कीमतों में बढ़ोतरी ने देश के भुगतान शेष की हालत पतली कर दी है.

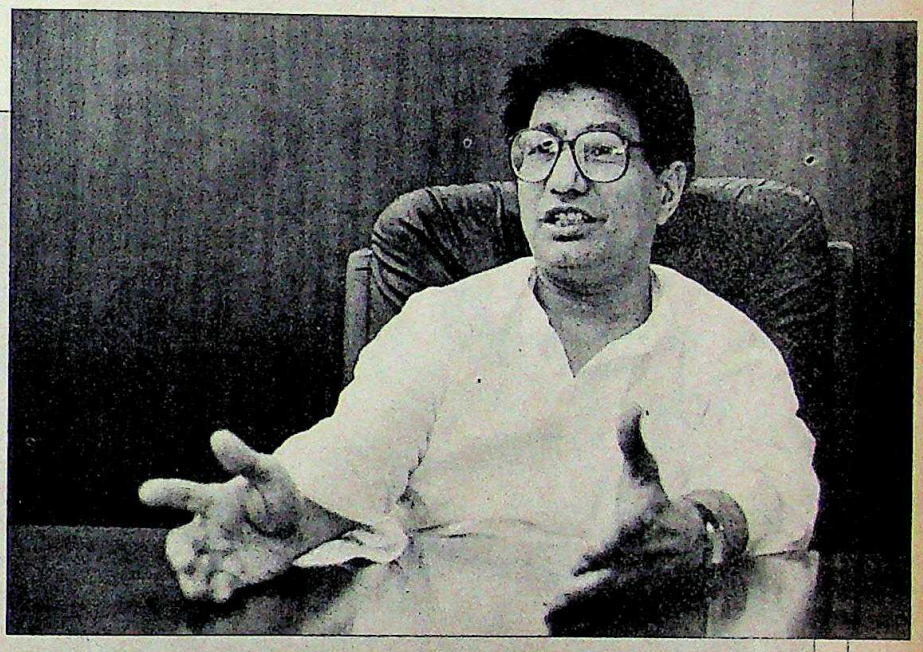

अजित: अनिर्णय बरकरार

• अधिकांश मंत्रालय उद्योगों की ऐसी सकारात्मक सूची के हामी हैं जबकि राजनैतिक नेतृत्व इस सूची के नकारात्मक भाग पर ध्यान केंद्रित करना चाहता है क्योंकि चंद्रशेखर सरीखे लोगों ने नई नीति को बहुराष्ट्रीय निगमों के प्रति झुकाव करार दिया है. आपका क्या खयाल है?

यह (चंद्रशेखर का कथन) तो महज राजनैतिक उत्तेजना है. लेकिन सही अंदेशे भी जाहिर किए गए थे कि यह नीति देश के मामूली-से विदेशी मुद्रा भंडार को खाली कर देगी. दुर्लभ मुद्रा हमें सोच-समझकर तब निकालनी चाहिए जब उच्च टेक्नोलॉजी की जरूरत हो या उत्पादन में बहुत फर्क पड़ गया हो. उसके लिए हम सकारात्मक सूची बना रहे हैं कि कहां विदेशी निवेश और टेक्नोलॉजी की जरूरत पड़ेगी. मगर देशी उद्यमियों के लिए हम एक अलग और छोटी नकारात्मक सूची तैयार कर रहे हैं. इससे उन्हें ज्यादा आजादी मिलेगी. बाकी उद्योग खुले रहेंगे. अगर हम सकारात्मक सूची बनाते तो उत्पादों के वर्गीकरण के बारे में विवाद उठते और उद्यमियों को बार-बार मंत्रालयों के चक्कर काटने पड़ते.

• लेकिन देरी ने....

हां, इससे यह नीति फीकी पड़ गई.

• और लोगों का यह एहसास बरकरार है कि इस नीति की घोषणा अमेरिकी सरकार की सुपर 301 समय सीमा को पूरा करने के लिए की गई.

सुपर 301 का खतरा अभी कायम है. कुछ लोग कहते हैं कि हम विश्व बैंक की किसी तथाकथित लाइन पर चल रहे हैं. अगर नरसिंहन और आबिद हुसैन जैसी हमारी विशेषज्ञ समितियां राष्ट्रीय हित में कुछ सिफारिशें करती हैं और बाद में विश्व बैंक भी वही सुझाव देता है, तो हम क्या कर सकते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टूथपेस्ट उद्योग

चमकने का चक्कर

कंपनियों में ग्रामीण बाजार हथियाने की होड़ बढ़ी

बलसारा हेल्थ प्रोडक्ट्स की ओर से बाजार में प्रॉमिस टूथपेस्ट उतारे जाने के 12 साल बाद इस उद्योग में कड़ी प्रतिद्वंद्विता का दौर फिर शुरू होने जा रहा है.

टाटा ऑयल मिल्स एफरमिंट टूथपेस्ट के साथ बाजार में प्रवेश करने जा रही है, जिसका उत्पादन कोचीन की डेंटीफ्राइसेस लि. में होगा. इस बाजार में 57 फीसदी हिस्सेदारी वाली अगुआ कंपनी कॉलगेट-पामोलिव कॉलगेट-जेल नाम से एक नया ब्रांड ला रही है. इसका मुकाबला पिछले अक्तूबर में बाजार में आए हिंदुस्तान लीवर के जेल श्रेणी के टूथपेस्ट क्लोज-अप ब्लू से होगा. उधर, हिंदुस्तान सीबा-गायगी सिबाका टॉप का विपणन अभियान फिर से शुरू कर रही है. इस टूथपेस्ट के प्रत्येक डिब्बे के साथ प्लास्टिक के नन्हे-नन्हे जानवरों के उपहार भी दिए जाएंगे.

प्रूडेंट टूथपेस्ट बनाने वाली पारले प्रोडक्ट्स गोली या कैप्सूल के रूप में माउथवाश का कारोबार शुरू करने वाली है. निर्यात के लिए क्रेस्ट टूथपेस्ट बनाने वाली प्रॉक्टर ऐंड गैंबल (इंडिया) लि. भारतीय बाजार में पैर जमाने पर विचार कर रही है.

इस बीच, पिछली लड़ाई में मैदान मारने वाली बलसारा ज्यादातर ध्यान अच्छी बिक्री वाले अपने उत्पादों—प्रॉमिस और बबूल—पर ही दे रही है. उसकी निगाहें विदेशी बाजारों पर भी हैं. हाल ही में इसने अमेरिका और कनाडा के भारी होड़ वाले बाजारों में अपने जड़ी-बूटी वाले टूथपेस्ट ऑरोमेयर की बिक्री शुरू की है. इसके लिए उसके पास 15 लाख के ऑर्डर भी आ गए हैं.

फिर भी 266 करोड़ रु. के टूथपेस्ट उद्योग की असली लड़ाई देसी जमीन पर ही लड़ी जाएगी. मूल्य के लिहाज से यह बाजार हर साल 15 फीसदी (और मात्रा के लिहाज से नौ फीसदी) की दर से बढ़ रहा है. पर इस उद्योग में विकास की और भी संभावनाएं हैं. 1995 में टूथपेस्ट का उत्पादन 1989-90 के 28,000 टन के मुकाबले 65,500 टन हो जाने की उम्मीद है. यह एक रिकॉर्ड होगा.

इसका ज्यादातर भाग ग्रामीण उपभोक्ता ही खरीदेंगे. अभी इस उद्योग का 21 फीसदी उत्पादन ही देहाती इलाकों में बिकता है. पर यह आंकड़ा नाटकीय ढंग से बदल सकता है क्योंकि ग्रामीण बाजार हर साल 30-40 फीसदी की अविश्वसनीय दर से बढ़ रहा है. इसीलिए उत्पादकों का लक्ष्य भी इसी बाजार पर कब्जा जमाना है. हिंदुस्तान सीबा-गायगी में उपभोक्ता उत्पाद विभाग के महाप्रबंधक एस. राजगोपालन के अनुसार, "ग्रामीण बाजार फल-फूल रहा है. यहां पहुंचना बहुत फायदेमंद रहेगा."

नीम की दातून और मंजन करने वालों को टूथपेस्ट की ओर आकर्षित करने की एक रणनीति है—कम कीमत. और इस रणनीति का सबसे सही इस्तेमाल बलसारा ने किया है. उसके बबूल टूथपेस्ट के दाम बाकियों के मुकाबले काफी कम हैं. बलसारा हेल्थ प्रोडक्ट्स के प्रबंध निदेशक आस्पी बलसारा कहते हैं, "सस्ते टूथपेस्टों का बाजार उम्दा ब्रांड के टूथपेस्टों के मुकाबले ज्यादा तेजी से फैलने वाला है." हो सकता है यह सही हो पर बाकी कंपनियां भी अपने नए टूथपेस्ट के साथ यही रणनीति अपनाने जा रही हैं.

बहरहाल आज की स्थिति 1978 वाली स्थिति से बिलकुल अलग है. तब इसके 80 फीसदी बाजार पर चार बहुराष्ट्रीय कंपनियों का कब्जा था. लेकिन बलसारा ने अपने प्रयासों से इसके 17 फीसदी बाजार पर कब्जा करके दिखा दिया कि बहुराष्ट्रीय कंपनियों को भी मात दी जा सकती है. इसी तथ्य ने दूसरी कंपनियों को सक्रिय कर दिया है. 30 फीसदी तक का मोटा मुनाफा ऐसा आकर्षण है जो कई कंपनियों को इस ओर खींच रहा है हालांकि शुरुआती दौर में मुनाफा काफी कम भी हो सकता है. फिर भी ज्यादातर लोगों का मानना है कि तेजी से फैल रहे इस बाजार में वे सब जम जाएंगे. हिंदुस्तान लीवर के वरिष्ठ उत्पाद प्रबंधक संजय गुहा मानते हैं कि कुछ कंपनियां निजी तौर पर घाटा सह सकती हैं पर इसका बाजार बढ़ेगा. वे कहते हैं, "बाजार पराकाष्ठा पर नहीं पहुंचा है."

पर यह गणित अगर सही न बैठा तो कई निर्माता टूथपेस्ट ट्यूब की तरह पिचक भी सकते हैं.

—शिव तनेजा

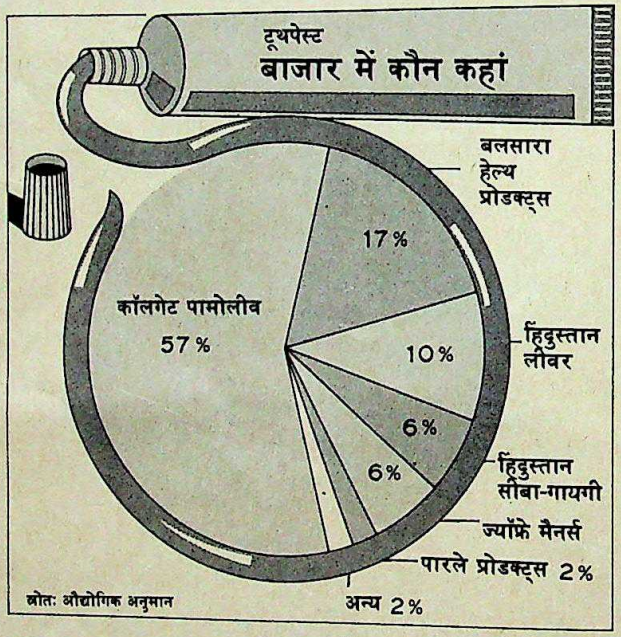

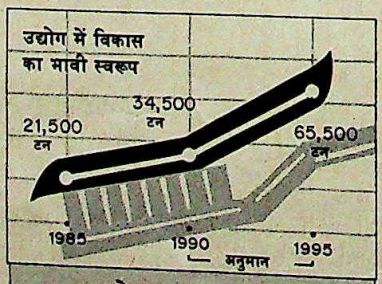

उद्योग का जायजा

1989-90 (जून-मई) का कारोबार:	266 करोड़ रु. मूल्य का और उत्पादन के हिसाब से 28,000 टन का
कंपनियों की संख्या	19
उपलब्ध ब्रांड	32
उपलब्ध पैकों की संख्या	109
मूल्य के हिसाब से विकास दर (वार्षिक)	15%
उत्पादन के हिसाब से	9%

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेयर बाजार

हल्की हलचल

पर तेजी का रुख बरकरार

मुंबई शेयर बाजार (मुंशेबा) का 30 शेयरों वाला संवेदनशील सूचकांक पिछले पखवाड़े थोड़ा-सा नीचे आया. लेकिन तेजी के क्रम में यह नीचे आना प्रतीकात्मक ही था. इसके बाद उसने बुलंदियों की यात्रा फिर से शुरू कर दी और 21 सितंबर को यह सबसे ऊंची स्थिति 1,389.04 पर जा पहुंचा. इकॉनॉमिक टाइम्स का सूचकांक 17.5 अंक तक चढ़ा और 786.1 के बिंदु पर जा पहुंचा.

कारोबार पर से पाबंदियां ढीली होने से कई शेयरों के भाव बढ़ गए. मसलन, टाटा स्टील का शेयर 120 रु. से उछलकर 165 पर पहुंच गया. एसीसी की कीमत पर 2,000 रु. की सीलिंग लगा दी गई थी. वह 2,100 रु. पर चला गया. और ग्रासिम एक हफ्ते में ही 35 फीसदी बढ़कर 267.50 रु. पर पहुंच गया. रिलायंस का कारोबार 189.50 रु. पर बंद हुआ पर इसके बाद यह 192 तक पहुंच गया.

चार्ट: बी.के. शर्मा

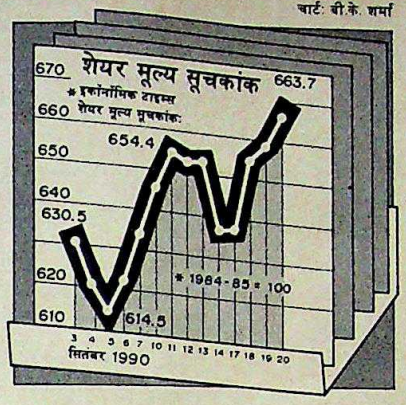

हालात कुछ ऐसे बने कि बाजार का ज्वार कुछ देर के लिए ठहर-सा गया. तेजड़िए फायदा उठाने के लिए फिर आ धमके क्योंकि बाजार के अधिकारियों ने वायदा बिक्री पर खासा शुल्क लगा दिया था. तभी मुंबई का एक दलाल भुगतान नहीं कर सका. बाजार का यह रवैया कलकत्ता और अहमदाबाद के शेयर बाजारों में भी जाहिर हुआ जहां बदला दरें आठ फीसदी तक पहुंच गईं.

पर एक अच्छी बात भी थी. इस बुरे पखवाड़े का, सबसे अच्छा खिलाड़ी था कैनबैंक साझा कोष का 'कैनस्टार'. शुरू में उम्मीद थी कि यह कोष 250 करोड़ रु. बटोर लेगा. बाद में यह आंकड़ा 700 करोड़ रु. तक पहुंच गया. पर 15 सितंबर को जब यह कोष समेटा गया तो 1,000 करोड़ रु. से ज्यादा इकट्ठा हो चुके थे.

उधर, बैंक ऑफ इंडिया का बोइनांजा (इसे बैंक ऑफ इंडिया साझा कोष ने शुरू किया है) 400 करोड़ रु. इकट्ठा करके इससे कुछ नीचे रहा. और बाजार के सबसे धुरंधर खिलाड़ी भारतीय यूनिट ट्रस्ट ने जुलाई में अपने विशेष प्रस्ताव से ही 350 करोड़ रु. बटोर लिए. इसमें से 30 फीसदी धन तो शेयर बाजार में पहुंच ही जाएगा. यानी शेयर बाजार की एक और तेजी के लिए तैयार रहना चाहिए.

हालांकि शेयर बाजार की मौजूदा तेजी का सितारा एसीसी 2,100 रु. तक पहुंच गया पर बाकी सीमेंट कंपनियों के नामलेवा नहीं थे. वजह यह है कि बाजार अभी सीमेंट की कीमतें स्थिर कर देने के प्रस्ताव पर एकाधिकार तथा प्रतिबंधित व्यापार आयोग के फैसले का इंतजार कर रहा है.

दीर्घकालिक नजरिए से लगता है तेजी का रुख जारी रहेगा. और संभव है कि यह साल खत्म होने से पहले ही मुंशेबा का संवेदनशील सूचकांक 1,500 के बिंदु को पार कर लेगा.

जमा स्टॉक

	1990 ऊंचा	1990 नीचा	1990 बंद 20.9.90	इस पखवाड़े में स्थिति
[illegible]	126.50	69.50	114.50	0.50+
[illegible]	2100.00	325.00	2000.00	375.00+
[illegible]	305.00	207.50	267.50	5.00–
[illegible]	68.00	32.50	51.00	7.00–
[illegible]	750.00	355.00	720.00	30.00+
[illegible]	1925.00	617.50	1625.00	75.00–
[illegible]	98.00	62.50	90.00	5.00–
[illegible]	325.00	120.00	305.00	32.00+
[illegible]	188.00	50.50	178.00	24.00+
[illegible]	125.00	34.50	125.00	37.50+
[illegible]	432.50	173.00	410.00	17.50+
[illegible]	167.00	97.00	158.00	2.00–
[illegible]	166.00	91.00	166.00	17.00+
[illegible]	192.50	133.75	176.25	3.75+
[illegible]	4550.00	2420.00	4425.00	250.00+
[illegible]	345.00	176.25	337.50	20.00+
[illegible]	145.00	87.50	135.00	15.00+
[illegible]	126.00	45.50	108.00	5.50–
[illegible]	93.00	51.75	84.00	0.50–
[illegible]	65.25	50.00	60.00	5.00+
[illegible]	153.50	77.75	153.00	19.50+
[illegible]	410.00	200.00	300.00	25.00–
[illegible]	70.00	48.00	56.00	4.00–
[illegible]	54.75	38.00	41.25	2.25–
[illegible]	275.00	155.00	260.00	2.50+
[illegible]	272.50	106.00	262.50	63.75+
[illegible]	417.50	205.00	342.50	52.50+
[illegible]	1900.00	960.00	1625.00	125.00–
[illegible]	167.50	101.00	167.50	17.50+
[illegible]	54.50	19.80	47.50	6.00–
[illegible]	3400.00	1295.00	3175.00	25.00+
[illegible]	70.00	35.25	70.00	9.50+
[illegible]	91.25	46.50	81.25	1.25+
[illegible]	170.00	84.00	162.50	7.50+
[illegible]	315.00	161.25	275.50	2.05–

	1990 ऊंचा	1990 नीचा	1990 बंद 20.9.90	इस पखवाड़े में स्थिति
इंगरसॉल-रैंड	305.00	190.00	300.00	10.00+
आईटीसी	154.00	48.75	154.00	19.00+
जे.के.सिंथेटिक्स	90.00	50.00	68.00	9.00–
काइनेटिक इंजी.	235.00	130.00	236.00	17.50+
किर्लो. क्युमिस	125.00	65.00	111.25	–
केएसबी पंप्स	247.50	175.00	245.00	15.00+
लार्सन-टुब्रो	180.00	57.00	165.00	13.75+
लिप्टन	112.00	73.00	92.50	2.50–
लोहिया-मशीन्स	60.00	15.00	55.00	2.00+
मथुरा कोट्स	197.00	100.50	197.00	17.00+
महिंद्रा-महिंद्रा	107.50	67.50	95.00	2.50–
मिल्क फूड	280.00	115.00	185.00	15.00+
मोटर इंडस्ट्रीज	1400.00	780.00	1175.00	25.00–
मुकुंद लिमि.	212.50	127.00	205.00	38.75+
नेशनल आर्गे.	1900.00	1070.00	1700.00	50.00–
नेस्ले इंडिया	162.50	101.75	158.75	28.75+
निरलॉन	42.00	13.00	40.00	9.00+
ओरके सिल्क मि.	43.00	14.50	34.50	3.00–
पेइको इलेक्ट्रॉनिक्स	75.00	24.00	69.50	8.50+
फाइजर	113.75	72.50	75.00	7.50–
प्रीमियर ऑटो	83.00	53.50	65.00	–
रेमंड	120.00	70.00	108.75	0.25–
रेकिट-कोलमैन	265.00	178.00	252.00	3.00+
रिलायंस इंडस्ट्रीज	199.00	50.00	182.00	22.00+
सीमेंस इंडिया	142.50	96.00	140.00	17.50+
शॉ वैलेस	122.00	65.00	106.00	5.00–
श्रीराम फाइबर्स	74.00	43.00	60.00	10.00–
एसकेएफ बेय.	2500.00	1240.00	2350.00	25.00+
स्पिक	81.00	50.75	65.00	7.50–
टाटा स्टील	185.00	103.25	165.00	2.00–
टेल्को	250.00	110.00	227.50	7.50–
वाम ऑर्गेनिक	205.00	115.00	182.50	7.50–
वीडियोकॉन	515.00	105.00	480.00	162.50+
वोल्टास	145.00	83.00	137.50	–
विमको	52.50	15.75	37.00	3.00–

भारतीय रुपए का मूल्य

देश	मुद्रा	इकाई	किसी मूल्य में (हफ्ते में)	किस मूल्य में (हफ्ते में)
आस्ट्रेलिया	डालर	1	15.0901	14.9292
आस्ट्रिया	शिलिंग	100	163.1325	162.3976
बहरीन	दीनार	1	48.5290	47.4372
बांग्लादेश	टका	100	52.7489	51.5033
कनाडा	डालर	1	15.7835	15.6273
डेनमार्क	क्रोना	1	3.0320	3.0014
मिस्र	पौंड	1	6.8415	6.7262
फ्रांस	फ्रैंक	1	3.5088	3.4188
हांगकांग	डालर	1	2.3449	2.3224
इंडोनेशिया	रुपिया	100	0.9837	0.9691
ईरान	रियाल	100	25.5368	25.2559
इटली	लीरा	100	1.5475	1.5302
जापान	येन	100	13.4771	13.1406
केन्या	शिलिंग	1	0.8017	0.7924
कुवैत	दीनार	1	62.1105	60.0871
मलेशिया	डालर	1	6.7381	6.6726
मारीशस	रुपया	1	1.2682	1.2518
नेपाल	रुपया	1	0.6352	0.6270
हालैंड	गिल्डर	1	10.2353	10.1327
पाकिस्तान	रुपया	1	0.8425	0.8326
सिंगापुर	डालर	1	10.3078	10.2044
स्पेन	पेसो	1	0.1848	0.1825
श्रीलंका	रुपया	1	0.4561	0.4507
स्वीडन	क्रोना	1	3.1485	3.1166
स्विट्जरलैंड	स्विस फ्रैंक	1	13.8464	13.7081
तंजानिया	शिलिंग	1	0.0984	0.0949
थाईलैंड	बहत	100	72.5034	70.6907
ब्रिटेन	पौंड	1	33.9847	33.7382
अमेरिका	डालर	1	18.1984	18.0261
सं.अ.अमीरात	दिरहम	1	4.9573	4.9064
सोवियत संघ	रूबल	1	29.3285	29.0276
पश्चिम जर्मनी	जर्मन मार्क	1	11.7371	11.4416

स्रोत—बैंक ऑफ तोक्यो, नई दिल्ली, 22.9.90

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्लड बैंक

खतरे भी हैं बहुतेरे

संक्रमित रक्त मिलने से एड्स जैसे भयंकर रोगों की संभावना

जब उस बच्ची के शरीर में तीक्ष्ण पीलिया के लक्षण प्रकट हुए, तब वह महज तीन दिन की नन्ही जान थी. डॉक्टर ने कहा कि उसे तुरंत खून चढ़ाना पड़ेगा. सरकारी दवाखाने में काम करने वाले ताराचंद ने दोपहर 1 बजे खून की तलाश शुरू कर दी. आधी रात बीतने तक वे दिल्ली की खाक छानते रहे. इस दौरान वे स्कूटर किराए के रूप में ही 450 रु. खर्च कर चुके थे. तब जाकर उन्हें ऐसा निजी ब्लड बैंक मिला, जहां 720 रु. में वे खून के दो पैकेट खरीद सके.

कुछ ही दिनों बाद उन्हें बताया गया कि उनकी बच्ची बेबी को एड्स की जानलेवा बीमारी हो गई है. और फिर आने वाले महीने के दौरान सराय रोहिल्ला स्थित उनका छोटा क्वार्टर मशहूर हो गया. पत्रकारों से लेकर बंबई के डॉक्टरों के झुंड और यहां तक कि दूरदर्शन की कैमरा टीम भी एक-एक कर आते-जाते रहे.

बेबी के रक्त की पहली जांच से एचआईवी पॉजिटिव का पता चला. दूसरी जांच से एचआईवी निगेटिव की बात सामने आई. संभवतः उसे एड्स है ही नहीं. लेकिन डरावना यथार्थ यह है कि तीन माह की उस बच्ची को आसानी से एड्स हो सकता था.

रक्त जीवनदायक है या जानलेवा? हेपटाइटिस, मलेरिया, सिफलिस और अब एड्स की बारी है. बाहर से रक्त खरीदना दोधारी तलवार पर चलने जैसा खतरनाक है. पिछले महीने कराए गए स्वास्थ्य मंत्रालय के सर्वेक्षण की रिपोर्ट हाल ही में कुछ चुनींदा डॉक्टरों को भेजी गई. इस रिपोर्ट के आंकड़ों के अनुसार 70 फीसदी से भी अधिक व्यावसायिक रक्तदाताओं के खून की सही जांच नहीं हो सकी है.

यह सर्वेक्षण भी तब कराया गया जब भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) को पता लगा कि एड्स के हर चार में से एक मामले का संबंध व्यावसायिक रक्तदाताओं से होता है, जो निजी ब्लड बैंकों की दुकानदारी चलाए रखते हैं. आईसीएमआर के अतिरिक्त महानिदेशक डॉ. एस.पी. त्रिपाठी के अनुसार, "एड्स का सबसे बड़ा जरिया अशुद्ध रक्त का दान है."

दिल्ली में हर साल खून की मांग का 43 फीसदी हिस्सा इन्हीं बैंकों से पूरा होता है. कलकत्ता में यह हिस्सा 55 फीसदी का है. सर्वेक्षण के मुताबिक सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि अगले पांच वर्षों में खून की मांग अब से तिगुनी होगी. इससे निजी ब्लड बैंकों पर दारोमदार और बढ़ता ही जाएगा.

1986 में किए गए एक अध्ययन के अनुसार 70 फीसदी थैलासीमियाई बच्चों (जिन्हें हर 15 दिन बाद खून देना जरूरी हो जाता है) की जांच से यह बात सामने आई कि हेपटाइटिस बी की जांच के दौरान उनका रक्त पॉजिटिव निकला. उस साल मुंबई में रक्तदाताओं में से किसी का भी एचआईवी नहीं निकला. भारतीय स्वास्थ्य संगठन के डॉ. आई.एस. गिलाडा के शब्दों में, "लेकिन 1990 में एचआईवी पीड़ित (एड्सग्रस्त) रक्तदाताओं की संख्या 5 से 15 फीसदी तक बढ़ गई."

मुंबई के एक अस्पताल में हाल में किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार, करीब 1,000 थैलासीमियाई बच्चों में से 11 एचआईवी पॉजिटिव यानी एड्स के शिकार पाए गए. मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज में बाल रोग विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. ए.पी. दुबे कहते हैं, "जैसे-जैसे संवेदनशील उपकरणों और तकनीक का विकास हो रहा है और भी अधिक बच्चे एचआईवी पॉजिटिव की चपेट में पाए जाने लगे हैं."

प्रमोद पुष्करणा

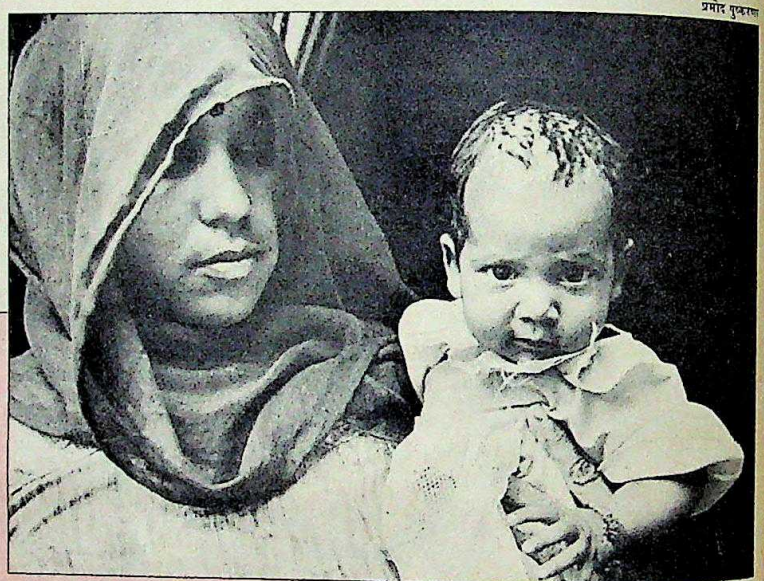

बेबी: अंधकारमय भविष्य

रक्त खरीदकर इस्तेमाल करना खतरनाक भी है. आपको एड्स और सिफलिस हो सकता है

मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज के ही माइक्रोबायोलॉजी विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. वी.के. शर्मा ने 5,000 रक्तदाताओं पर एक और अध्ययन किया और इस नतीजे पर पहुंचे कि उनमें से सात का रक्त एचआईवी पॉजिटिव था. और उनमें से एक सरकारी ब्लड बैंक से और छह व्यावसायिक बैंकों से संबद्ध थे.

लगातार रक्तदान से एड्स हो सकने के खतरों का अध्ययन कर रहीं मौलाना आजाद की डॉ. मोनिका जुनेजा कहती हैं, "एड्स दबे पांव तेजी से फैल रहा है. हम आज उस जगह हैं जहां अमेरिका आठवें दशक के शुरू में था."

डॉक्टरों की राय में भारत की मुख्य समस्या यह है कि यहां के लोग रक्त देना नहीं चाहते, अपने नजदीकी रिश्तेदारों के लिए भी नहीं. बाल रोग विशेषज्ञ, डॉ. पी. चौधरी बताते हैं, "कल एक आदमी को खून की जरूरत थी पर उसके छह सगे भाई भाग खड़े हुए."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्त मिलने के सबसे 'सुरक्षित' स्थान, रेडक्रॉस के डॉ. एम.एल. गुप्ता दिल्ली की जनसंख्या के आंकड़ों से करते हैं. इन दोनों ही महानगरों की जनसंख्या तकरीबन समान है. आंकड़ों में स्वैच्छिक रक्तदाताओं से हर साल 14 लाख यूनिट रक्त जमा होता है, वहीं दिल्ली में महज 35,000 यूनिट रक्त ही जमा हो पाता है. गुप्ता कहते हैं, "1965 में पीलिया के एक मामले ने समूचे राजस्थान की अंतरात्मा को इस तरह झकझोर दिया कि अब वहां एक भी व्यावसायिक रक्तदाता मौजूद नहीं."

40 लाख यूनिटों की मांग के अनुपात में 15 लाख यूनिट कम रक्त मिलने से ही खून की खरीदफरोख्त का अमानवीय व्यापार चल निकला है, जो दाताओं के हुजूम, दलालों की भीड़ और गरजमंदों के मेले में सांस लेता है. गरीब बीमार लोग उस दुकान के तलबगार रहते हैं, जो बिना किसी सवाल के उनके खून का मोल चुका दिया करती है. स्वास्थ्य मंत्रालय के अध्ययन के अनुसार दाताओं का बड़ा हिस्सा "शराबी या नशेबाज है और बेहिसाब-बेतरतीब शारीरिक संबंध बनाने की आदत है. ये लोग हेपटाइटिस बी और एड्स के शिकार होने लायक काम करते हैं और रक्तदान करने योग्य तो ये बिलकुल नहीं हैं."

एड्स की समस्या ने बाकी सभी बीमारियों को पीछे छोड़ दिया है. इस धंधे की प्रवृत्तियां अंजीबोगरीब हैं. खून का नमूने की जांच निगेटिव हो सकती है पर मरीज के लक्षणों की जांच पॉजिटिव निकल सकती है. डॉक्टर बताते हैं कि देश में आयात किए गए कई एलिसा टेस्टिंग किट दोषपूर्ण निकले. उनके नतीजे अक्सर गलत होते और जांचों में ज्यादातर पॉजिटिव ही निकला करता. मतलब यह कि आप ठीक हों, तब भी आप एड्स पॉजिटिव बता दिए जा सकते हैं.

परेशानी बढ़ाने वाली बात यह है कि आईसीएमआर निर्देशों के अनुसार जब कोई एचआईवी पॉजिटिव निकले तो उसे निकाल फेंक दिया जाना चाहिए लेकिन उसको नहीं बताया जाना चाहिए कि उसे एड्स हो गया है.

जांच की साधारण सुविधाओं के बावजूद कई निजी ब्लड बैंकों का माहौल बेहद अस्वास्थ्यकर हुआ करता है. फ्रीजिंग के साधारण उपाय, बार-बार प्रयोग में लाई जाने वाली सुइयां और गैर-प्रशिक्षित तकनीकी कर्मचारियों के कारण ये जगहें स्वास्थ्य सुविधाओं का मखौल उड़ाती हैं. निजी रक्त बैंक लोगों के इस सोच के चलते खूब फल-फूल रहे हैं कि खून की आपूर्ति बहुत कम है. दूसरी बात यह कि संकट में लोगों के पास सवाल पूछने का वक्त नहीं होता. आईसीएमआर के डॉ. त्रिपाठी कहते हैं, "समस्या यह है कि यह विक्रेताओं का बाजार है." जिस समय संक्रमित खून का एक हिस्सा किसी बीमार बच्चे को दिया जा रहा होता है, संभवतः उसी समय एचआईवी विषाणु का वाहक शख्स महज 65 रु. में फिर कहीं अपना खून दान कर रहा होता है.

और इसका कोई कानूनी निदान भी नहीं है. भारत में इक्के-दुक्के लोग ही लंबी कानूनी लड़ाई लड़ना पसंद करते हैं. एक डॉक्टर का कहना है कि यदि कोई रोगी एड्स या यकृत शोथ से पीड़ित होता है तो उसके लिए ब्लड बैंक और डॉक्टर को दोषी ठहराया जाना चाहिए. एक दूसरे डॉक्टर का कहना है कि एचआईवी पॉजिटिव वाले रक्तदाता के माथे पर गोदना गोद देना चाहिए.

विडंबना तो यह है कि संक्रमित रक्त तो खरीदा जाता है मगर शुद्ध रक्त मुफ्त मिलता है. रेडक्रॉस के डॉ. गुप्त ने कहा, "यदि हर कोई जीवन में एक बार भी रक्तदान करे तो हमारी सारी जरूरतें पूरी हो जाएंगी." वे लोगों से स्वेच्छया रक्तदान की अपील करते रहते हैं. सिक्के का दूसरा पहलू यह है कि आपको रक्त की जरूरत पड़ने पर रक्त उसी समय मिलेगा जब आपने पहले कभी रक्तदान किया हो या रक्त लेने के बदले परिवार का कोई सदस्य उतना रक्त दे. डॉ. गुप्त कभी रक्तदान न करने वाले बड़े-बड़े लोगों को बैरंग वापस लौटा चुके हैं.

डॉक्टरों के मुताबिक, कुछ उपायों से खून की कमी दूर की जा सकती है. पहला यह कि पूरी बोतल का खून चढ़ाना टाला जाए क्योंकि जिस शख्स को एक बोतल खून की जरूरत बताई जाती है, उसे दरअसल उतने खून की जरूरत नहीं होती.

प्रशांत पंजियार

रक्त की चाहः हालत गंभीर

कई निजी ब्लड बैंकों में परीक्षण की सुविधाएं नाकाफी हैं और स्टॉफ भी प्रशिक्षित नहीं

यह अनावश्यक रक्त संचारण है जो आम तौर पर रकम बनाने के लिए किया जाता है. दूसरा उपाय यह है कि खून के बदले में जीव द्रव्य विस्तारक का, जो एक व्यावसायिक रासायनिक उत्पाद है, इस्तेमाल किया जा सकता है. तीसरा यह कि गर्भाशयोच्छेदन जैसी शल्यक्रिया में स्व-रक्त संचारण किया जा सकता है. इसके लिए पहले से ही खून बटोरा जा सकता है. चौथा यह कि आप अपने संबंधियों का खून इस्तेमाल कर सकते हैं. इसके लिए अपने मित्रों के रक्त-वर्ग की सूची रखें. पांचवां यह कि खून कभी नहीं खरीदें, भले ही उसकी एचआईवी जांच हो चुकी हो क्योंकि उसमें दूसरे विषाणुओं की जांच शायद न हुई हो.

यदि खून की कमी है तो इसके लिए हर कोई जिम्मेदार है. डॉक्टरों की इस बात में दम है, "आज खून दीजिए. हो सकता है कल आपको इसकी जरूरत पड़े."

—सिमरन भार्गव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अगर आपको ये वाकिया बढ़ाया-चढ़ाया सा लगे

तो शायद आपने अब तक 'फ्रेंची' पहना ही नहीं!

वी आइ पी फ्रेंची. छोटा-सा बढ़िया जांघिया... चुस्त-दुरुस्त और मर्दाना ताकत से सराबोर. सारी दुनिया में इसकी मर्दानगी ने तहलका मचा रखा है और हमारे शहरों में भी इसी की धाक है, बोलबाला है! सचमुच एक ऐसी अंतर्राष्ट्रीय स्टाइल, एक ऐसा अंदाज़ जो वी आइ पी लाये हैं ख़ास आपके लिए!

VIP

फ्रेंची

जांबाज़ मर्दों के मनपसंद

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-18

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत प्रभावी, फार्मूलादां, बेबात हंगामा, खम ठोंक-कर, तर्क नहीं मानते, नए फ्लास्क, वजन घटने लगा, ठुकरा दिया, दिन बीत चुके, हरई, गांव में, पंख नहीं, चाह से राह, शांत क्षेत्र है, 50 वर्ष पूरे, सना, सफल, तमिल फिल्म, बदला इस तरह, गाज गिर गई, तो क्या करे, 'राज' करते थे, बारामती में, एक प्रशिक्षक

नाम

पता

पिन

हल इस पते पर भेजें:

वर्ग पहेली-18, इंडिया टुडे,
एफ-14/15, कनॉट प्लेस,
नई दिल्ली-110001

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि:
20 अक्तूबर 1990
उत्तर के लिए देखें:
1-15 नवंबर 1990 का अंक

- यह पहेली शब्दशः इंडिया टुडे के 30 सितंबर 1990 के अंक पर आधारित है.
- वर्गों के भीतर दिए गए अंक ही संकेत हैं.
- तीर के चिन्ह बताते हैं कि शब्द कहां से शुरू होकर किधर जाते हैं.
- तीर के चिन्ह के साथ दिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गों की संख्या दर्शाते हैं.
- हल का अर्थ है कि उसमें आने वाले शब्दांश का प्रयोग किया होगा.
- गहरे रंग वाले वर्ग रिक्त छोड़ रहेंगे.
- शब्द वैसे ही लिखें जैसे पहेली में छपे हैं.
- सर्वप्रथम पहुंचने वाले तीन सही हलों को पुरस्कारस्वरूप 500-500 रु. दिए जाएंगे.
- लिविंग मीडिया इंडिया लि. के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते.

सपने पूरे, कब तक सहते, ना, फर्जी खाते, आ, घोटाला नहीं, वी, लोग नहीं आते, आलसी बूढ़ा, कन्नड लेखक, र्थ, ना, दी, नीची जाति का, पैरवी की, बेहद नेक है, वे, न, 'पु, का, अ, वि, द, बं, जा, नं, तलाक दिया, या, निजी जेट, चमक फीकी, श, मा, धु, री, दी, क्षि, त, ए, स, रा, बे, न, जी, र, बा, कृ, वजन की बात, मू, बि, सा, मुं, डा, सि, दृष्टि चूक गई, वा, बा, ष्णा, एन., ति, महान वन-वासी, अ, जि, त, सिं, ह, ह, मितभाषी, कुं, अपने बूते पर, रा, बे, श, बा, ना, आ, ज, मी, ठेंगा दिखा दिया, फा, अनन्य भक्त हैं, मध्य निवास, दी, बु, जे, रा, ई, त, अ, बि, ला, व, ल, पुलिस क्रम, नी, स, हा, म, इतने वर्ष बाद, अनत लिखा, बो, जयघोष, री, 'म, र, त, स, म, भा, ई, नि, ती, श, भी, म, रा, व, आं, बे, ड, क, र

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-16 का हल

पुरस्कार विजेता

चंद्रलेखा सिंह
द्वारा-मनमोहन सिंह,
शासकीय माध्यमिक विद्यालय, चंबल कॉलोनी,
मुरैना (म.प्र.)

नरेंद्रनाथ चौधरी
द्वारा-नवरत्ना, सी-299,
निराला नगर,
लखनऊ-226020 (उ.प्र.)

जयदीप कुमार
द्वारा-प्रकाश बीज भंडार,
हाजीपुर-844101,
जिला वैशाली (बिहार)

इन तीनों को 500-500 रु. के चेक भेजे जा रहे हैं. विजेताओं को बधाई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिरंजीवी

परदे पर तूफान

तेलुगु हीरो का अब हिंदी फिल्मों में पदार्पण

आंध्र प्रदेश में कम ही लोग जानते होंगे कि शिवशंकर वरप्रसाद कौन है. लेकिन राह चलते किसी भी व्यक्ति को रोककर अगर यह पूछा जाए कि सिनेमा के परदे पर कसी हुई काठी और मजबूत भुजाओं वाला वह कौन मर्दाना हीरो है, तो तत्काल जवाब मिलेगा चिरंजीवी. और जरूरी नहीं कि बात यहीं खत्म हो जाए. संभव है वह व्यक्ति तेलुगु फिल्म संसार के इस सुपरस्टार की किसी जानी-पहचानी अदा की नकल उतारने लगे.

चिरंजीवी की 109वीं फिल्म उनकी पहली हिंदी फिल्म है और यह उनके सफल फिल्म जीवन के एक और अध्याय की पूर्णता है. अब तक उनकी सात फिल्में जुबली हिट रही हैं. दो को मॉस्को फिल्म समारोहों में दिखाया जा चुका है.

लेकिन, 36 वर्षीय चिरंजीवी लीक से हटे हुए अभिनेता नहीं कहे जा सकते. वे तो सुपरस्टार की समकालीन परिभाषा के अनुरूप ही 'एक्शन हीरो' हैं. फिल्म 'पुनदिरल्लू' में महज 5,000 रु. से काम शुरू करने वाले चिरंजीवी को आज उनकी

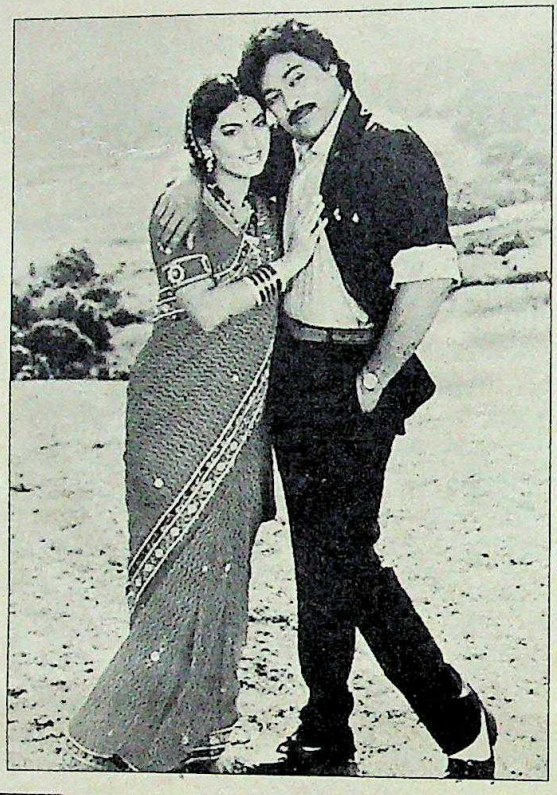

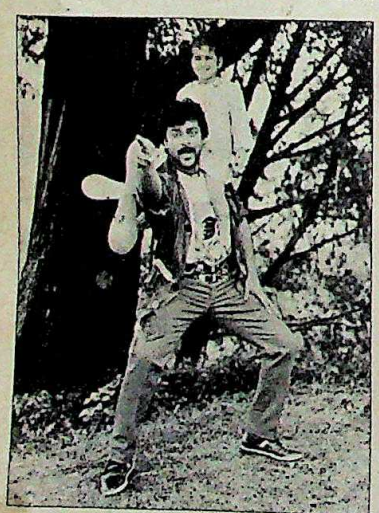

'प्रतिबंध'; और 'जगदेकवीरुडु अतिलोक सुंदरी' (बाएं) के दृश्य

बॉक्स आफिस छवि के एवज में तकरीबन 30 लाख रु. प्रति फिल्म मिलते हैं. इतनी ऊंची कीमत आज तक किसी दूसरे दक्षिण भारतीय फिल्म कलाकार को नहीं मिली है. वैसे, चिरंजीवी के कामकाज की देखरेख करने वाले उनके बहनोई अल्लु अरविंद इन आंकड़ों को गलत बताते हैं.

उनकी व्यावसायिक सफलता का सबसे बड़ा कारण काम के प्रति उनका समर्पण है. प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक के. विश्वनाथ कहते हैं, "चिरंजीवी सभी फिल्मों में अपने काम और निर्देशक के प्रति पूरी तरह समर्पित हो जाते हैं." लेकिन कथाकार और लेखक जांध्याला कहते हैं, "चिरंजीवी एन.टी. रामराव जैसे नहीं हैं. उनकी प्रतिभा में नाटकीयता कम है."

यह विडंबना ही है कि प्रसिद्ध निर्देशकों जैसे—बालाचंदर (47 रोजुलु, रुद्रवीणा), विश्वनाथ (शुभलेखा और स्वयंकृषी), बापू (मनवूरि-पांडुवेलु) और जांध्याला (चंटब्बी) के निर्देशन में तरह-तरह की भूमिकाएं करने के बाद भी उनकी हिट फिल्में बॉक्स आफिस पर सफल नहीं हो पाई हैं. उसके लिए चिरंजीवी को वी. गोपाल (स्टेट राउडी) और राघवेंद्र राव (जगदेकवीरुडु अतिलोक सुंदरी) सरीखे निर्देशकों की मसाला फिल्मों पर आश्रित रहना पड़ा है.

लेकिन प्रसिद्धि का मार्ग सरल नहीं रहा है. जब चिरंजीवी पुणे फिल्म संस्थान में जाना चाहते थे, तो उनके पिता वेंकट राव ने विरोध किया. लेकिन चिरंजीवी को जब फिल्मों में काम करने का मौका मिला तो उनके पिता को आखिरकार चुप होना पड़ा.

आज उनका निजी कार्यालय उनके प्रशंसकों के लिए हर महीने कम-से-कम 5,000 फोटो भेजता है. और 'चिरंजीवी' नामक मासिक पत्रिका की, जो अभिनेता चिरंजीवी के जीवन और उनकी कृतियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करती है, 30 हजार प्रतियां भी 10 रु. प्रति के हिसाब से बिकती हैं.

उनके फिल्मी कैरियर की देखरेख करने वाले व्यावसायिक प्रबंधक कंप्यूटरों की मदद से उनके कार्यक्रम तय किया करते हैं. चिरंजीवी 1988-89 के दौरान चोटी के दस आय करदाता अभिनेताओं की सूची में थे और दक्षिण से वे ऐसे एकमात्र अभिनेता थे.

चिरंजीवी अपने को छरहरा बनाए रखने के लिए नियमित व्यायाम और दौड़ लगाते हैं. साथ ही लगभग हर रविवार को वे पत्नी सुरेखा और तीन बच्चों के साथ समय गुजारने के लिए मद्रास चले जाते हैं. उनके अनुसार, "बच्चों का साथ अत्यंत सुखदायी हुआ करता है."

पिछले महीने, जब चिरंजीवी ने हैदराबाद के लाल बहादुर स्टेडियम में अपने 30,000 प्रशंसकों की मौजूदगी में यह घोषणा की कि वे 'प्रतिबंध' फिल्म के साथ ही हिंदी फिल्मों में कदम रख रहे हैं, तो अनिल कपूर और अमरीश पुरी की उपस्थिति की परवाह न करते हुए भीड़ ने आवाज लगाई, "चिरंजीवी, मेगास्टार." चिरंजीवी कहते हैं, "हिंदी फिल्मों से एक खास प्रकार की राष्ट्रीय छवि बनती है, पर मैं तेलुगु फिल्मों के निर्माण से सदा जुड़ा रहूंगा."

यह निर्णय वाकई मायने रखता है क्योंकि उनके तेलुगु प्रशंसक तो असंख्य हैं. जहां भी वे दिख जाते हैं, उनके प्रशंसकों की भीड़ उमड़ पड़ती है और लोग उन्हें 'साइक्लोन चिरंजीवी' तक के नाम से पुकारने लगते हैं. —अमरनाथ के. मेनन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़रा सी दूरदर्शिता, और ढेर सा प्यार...

थोड़ी सी बचत से भी, 21 वर्ष की उम्र होने तक आपका बच्चा लखपति बन सकता है.

आज आपका लाडला आपकी बाहों में खेल रहा है. सुरक्षित महसूस करने के लिए आपकी गोद ही उसके लिए काफी है. लेकिन पलक झपकते 'कल' आपके द्वार पर दस्तक देने लगेगा. उसे बाहर की दुनिया में कदम रखना पड़ेगा... ज़िंदगी की कठिन सच्चाइयों का सामना करना पड़ेगा.

तो अपने बच्चे का भविष्य संवारने के लिए आज ही कदम क्यों न उठाए जाएं? यूनिट ट्रस्ट के बाल उपहार वृद्धि कोष में निवेश कीजिए. इस योजना के अंतर्गत एक निश्चित अवधि में थोड़ा पैसा लगाने से 21 वर्ष की उम्र होने पर आपका बच्चा लखपति हो जाएगा.

प्र. अपने बच्चे को लखपति बनाने के लिए निवेश कैसे किया जाए?

उ. अगर बच्चे का जन्म होते ही आप बाल उपहार वृद्धि निधि में निवेश करें तो आपके सामने कई विकल्प हैं. (i) बच्चे के जन्म पर रु. 1100 भरें और 15 साल तक प्रतिवर्ष भरते रहें (ii) आप 3 सालों तक लगातार रु. 3,200 प्रतिवर्ष निवेश कर सकते हैं या लगातार 6 सालों तक रु. 1,900/- प्रतिवर्ष का निवेश कर सकते हैं (iii) या आप एक बार में ही रु. 8,500/- की पूंजी लगा सकते हैं.

प्र. यदि बच्चा बड़ा हो तो?

उ. 15 वर्ष की उम्र तक के लिए अलग-अलग योजना हैं. बाल उपहार वृद्धि कोष की जानकारी पुस्तिका में दी गई तालिका से इसकी विस्तृत जानकारी हासिल की जा सकती है. जानकारी पुस्तिका के लिए हमें लिखिए.

प्र. बच्चों को ये उपहार कौन कौन दे सकता है?

उ. माता-पिता, संबंधी, मित्र, कंपनी या व्यावसायिक संस्थाएं.

प्र. निवेश की न्यूनतम राशि क्या है?

उ. रु. 500/- तथा उसके बाद रु. 100 के गुणकों में.

प्र. इस निवेश पर लाभ कितना होता है?

उ. प्रतिवर्ष 12.5% तथा हर पाँचवें वर्ष बोनस डिवीडेंड भी.

प्र. अवधि पूर्ण होने पर भी कोई सुविधा मिलती है?

उ. रकम निकालने की बजाय बच्चा इसे यूनिट ट्रस्ट की अन्य योजनाओं में से किसी में भी निवेशित कर सकता है.

सी जी जी एफ की मुफ़्त जानकारी पुस्तिका के लिए किसी भी यूनिट ट्रस्ट ऑफ़िस या मुख्य प्रतिनिधि या एजेंट अथवा चुने हुए हिन्दुस्तान पेट्रोलियम या इंडियन आयल पेट्रोल पंपों से संपर्क कीजिए. या हमारे किसी भी कार्यालय को लिखिए.

या इस कूपन को भरकर डाक द्वारा यूनिट ट्रस्ट के किसी भी कार्यालय को भेज दीजिए.

कृपया मुझे बाल उपहार वृद्धि कोष की मुफ़्त जानकारी भेजिए.

नाम : _____

पता : _____

_____

यूनिट ट्रस्ट के बाल उपहार वृद्धि कोष में निवेश कीजिए.

भारतीय यूनिट ट्रस्ट

(सार्वजनिक क्षेत्र की वित्तीय संस्था)

- 13 सर विट्ठलदास ठाकरसी मार्ग (न्यू मरीन लाइन्स), बंबई 400 020. फोन : 2863767/6201995.
- जस्टिस बशीर अहमद सैयद बिल्डिंग, 45, सेकेंड लाइन बीच, मद्रास- 600 001. फोन : 587433/580938.
- गुलाब भवन (पिछला ब्लॉक), 2री मंज़िल, 6, बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली- 110.002. फोन : 3318638/3319786.
- 2 एंड 4 फेयराइल प्लेस, कलकत्ता- 700 001. फोन : 209391, 205322.

Sista's-UTI-29/90 HIN D

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

11वें एशियाई खेलों के उद्घाटन समारोह के रंगारंग कार्यक्रम में स्कूली बच्चों द्वारा लहराई गई तख्तियों, और नगाड़ों-घंटों-घड़ियालों से गूंजने वाले स्वरों ने साफ संदेश दे दिया. पेइचिंग वर्कर्स स्टेडियम का पूरा माहौल चीन के शासकों की यह मंशा उजागर कर रहा था कि देश उनकी पकड़ में है और वह थ्येन-आन-मन चौक कांड की शर्म को पीछे छोड़कर नए उत्साह के साथ आगे बढ़ रहा है.

18 महीनों से चीनी नेता इस घड़ी का इंतजार कर रहे थे. शुरू में लगा था कि उस क्रूर कांड से नाराज एशियाई देश पेइचिंग एशियाड का बहिष्कार करेंगे. मगर किसी देश ने बहिष्कार नहीं किया. फिर भी उद्घाटन समारोह के मौके पर मुट्ठी भर लोगों द्वारा ही नारेबाजी करने या काली झंडी दिखाने से सारा गुड़-गोबर हो जाता. सो, चीनी प्रशासकों ने ऐसा न होने देने के लिए सारे बंदोबस्त कर लिए थे. जैसे ही बैंडवादकों का पहला जत्था स्टेडियम में पहुंचा, वहां लगे माइकों से बहुत स्पष्ट घोषणा की गई: जन सुरक्षा ब्यूरो ने सार्वजनिक आदेश का उल्लंघन करने वाली गतिविधियों पर जिसमें स्टेडियम में जानवर ले आना, औरतों से छेड़खानी करना, नारे लगाना, रास्ते रोकना, उल्टी-सीधी आवाजें लगाना शामिल हैं, रोक लगा दी है.

चीनी खिलाड़ियों ने अपने दर्शकों को पूरी तरह संतुष्ट किया. चीनी भारोत्तोलकों, जिम्नास्टों, साइकिल चालकों और तैराकों ने अपने प्रदर्शन से धूम मचाए रखी. चीनी खिलाड़ियों ने पहले सभी 13 स्वर्ण पदक बटोरकर एशियाई खेलों पर अपनी धाक जता दी. उनके इस विजय अभियान को जापान ही रोक पाया, तैराकी के मुकाबले शुरू होने पर.

लेकिन चीनियों ने यह भी एहसास करा दिया कि उनके लिए ये स्वर्ण पदक 'छाछ' भर हैं, असली चीज तो है अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा और आयोजन क्षमता का प्रदर्शन. चीन अब सन् 2000 में होने वाले ओलंपिक खेलों को अपने यहां आयोजित करने की मंजूरी लेने की जुगत में है.

पेइचिंग के उत्तर-पूर्वी इलाके में एक नया नगर ही बस गया है. नए होटल, नए मनोरंजन केंद्र, दुकानें, बाजार और खेल गांव बन गए हैं. इन नई इमारतों की वास्तुकला भी चीनी तरीके में आए भारी बदलाव को दर्शाती है. आवास वाली अधिकांश इमारतें, जिनमें खेल गांव भी शामिल है, विदेशों में रहने वाले चीनियों के धन से बनी हैं और इस आयोजन के बाद इन इमारतों को बहुराष्ट्रीय निगमों के हाथ बेचने या उन्हें भाड़े पर दे देने की आजादी है. नए होटल हांगकांग, कोरिया सिंगापुर की कंपनियों के साथ संयुक्त में खोले गए हैं और उम्मीद है कि एशि के बाद विदेशी पर्यटकों की संख्या में भारी बढ़ोतरी होगी उससे इनका धंधा चलेगा. जैसा कि एक विदेशी राजनयि ने भी कहा कि यह एशियाड देश पर

रंगारंग उद्घाटन समारोह (ऊपर) और ईरानी दल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमल नृत्य (ऊपर); और युद्धकौशल का प्रदर्शन

आयोजन से चीनी नेताओं ने यह जताने की कोशिश की कि देश उनके नियंत्रण में है

चीन में आयोजित खेलों की सबसे बड़े प्रायोजक सैमसंग, गोल्ड स्टार, कोलोन और एसिक्स जैसी कोरियाई कंपनियां हैं. आयोजन के मामले में दक्षिण कोरिया ने साधनों और विशेषज्ञों से भी मदद दी है. पेइचिंग पुलिस को उसने तो एक हजार से अधिक वैन दिए हैं.

जब पूरा माहौल राजनीति के रंग से ही रंगा हुआ हो तो इन खेलों के साथ कूटनीतिक समीकरण भी जुड़ जाएं तो अचरज नहीं. चीन इराक को तो शामिल नहीं करा पाया लेकिन उसके निष्कासन से हुए नुकसान की भरपाई कर ली. 1982 के दिल्ली एशियाड के बाद उत्तर और दक्षिण कोरिया की टीमें पहली बार एक साथ मुकाबले में उतरी हैं. अब चीन की मध्यस्थता से ये दोनों देश बार्सिलोना ओलंपिक में संयुक्त टीम भेजने के बारे में गंभीर बातचीत भी चला रहे हैं.

कूटनीतिक जोड़-तोड़ का मामला हो और भारत पीछे रहे ऐसा हो नहीं सकता. खेल के मैदान में पिछड़ना और बात है. खेल उपमंत्री भक्तचरण दास, उनके मंत्रालय के बहुचर्चित सचिव एस. वरदराजन और पेइचिंग में तैनात भारतीय राजदूत सी.वी. रंगनाथन ने अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति के अध्यक्ष जुआन अंतोनियो समारांच से भेंटकर विद्याचरण शुक्ल गुट के साथ समिति द्वारा किए गए 'अन्याय' की शिकायत की. इन लोगों ने कहा कि समिति के दो पूर्व सदस्यों— अश्विनी कुमार और राजा भालिंदर सिंह— के, जो खेल जगत में भारत की स्थिति के विपरीत काफी असर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

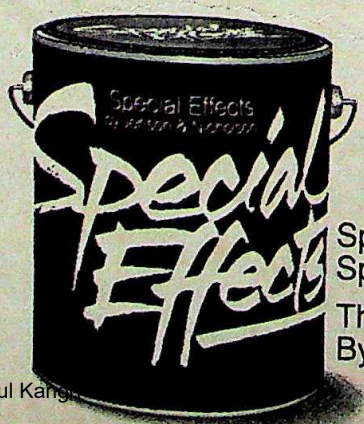

Special Effects
Special Wall Finish

The Masterpiece
By Jenson & Nicholson

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेलने हैं. 'दबाव' में यह फैसला किया गया. इन्हीं लोगों के प्रभाव के कारण शुक्ल गुट के असली भारतीय ओलंपिक संघ के दावे को ठुकराया गया. लेकिन इस बातचीत का खास नतीजा नहीं निकला.

दुर्भाग्य यह है कि अकेले शुक्ल की ही यह अपमानजनक दुर्गति नहीं हो रही है. चीनी आयोजकों और अंतरराष्ट्रीय मीडिया के सामने भारत की भद पिटवाने में अन्य लोग भी पीछे नहीं हैं. वी.एस. आदित्यन और उनके गुट ने, जिन्हें शुक्ल भारतीय ओलंपिक संघ से बाहर करना चाहते हैं, न केवल एशियाई ओलंपिक परिषद से मान्यता पा ली बल्कि अपने तथा अपने अतिथियों के लिए सबसे अच्छे पास भी हथिया लिए. शुक्ल और उनके गुट ने खुद को भारतीय सरकार के सात सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल में भी शामिल बताकर किसी तरह वहां टिके रहने की व्यवस्था कर ली.

लेकिन असली नाटक हुआ कबड्डी वाले मैदान पर, जहां भारतीय लड़के अपने परंपरागत खेल में चीनियों को मात दे रहे थे. वहां आदित्यन गुट का एक आदमी पत्रकारों के बीच होटल पेइचिंग का एक-एक लिफाफा पकड़ाता जा रहा था. साथ ही वह कहता जा रहा था कि इसे अभी नहीं खोलिएगा. इस पर लिखा था, "आदित्यन की ओर से शुभकामनाओं के साथ." लेकिन एक उतावले पत्रकार ने इसे खोल ही दिया और खोलने के साथ इसमें पड़े सौ-सौ डॉलर के दो नए नोट देखकर वह हैरान रह गया. नाराज होकर उसने ये पैसे लौटा दिए और शिकायत की. बाद में आदित्यन गुट का यह आदमी पत्रकारों के पास आया और कहा कि गलती से निमंत्रण पत्र की जगह नोट रख दिए गए. उसने पैसे वापस ले लिए पर निमंत्रण पत्र नहीं ही मिला.

जब भारतीय दल का गैर-खिलाड़ी समूह ही इतना सक्रिय था तो खिलाड़ियों का आत्मविश्वास रसातल में जाना स्वाभाविक था. एक खिलाड़ी ने कहा भी, "जब यही राजनेता और अधिकारी इतना खेल दिखा दे रहे हैं तो लोग हमें क्यों पूछें?" लेकिन अधिकारियों पर इन चीजों का असर नहीं पड़ा. वे अपने खेल—एक दूसरे को जीत पर बधाई देने और हार पर सांत्वना देने और टीवी कैमरे के सामने आने की होड़—में लगे रहे.

फिर भी भारतीय खेमे, खास तौर से खिलाड़ियों में कुल माहौल इन तमाम नकारात्मक और शर्मनाक चीजों की अनदेखी करते हुए मनोबल बनाए रखने का था. गौरवशाली क्षणों का कुछ अंश अपने लिए भी बटोर लेने की खिलाड़ियों की कोशिशों को उन नेताओं ने कुप्रभावित तो किया ही है जो उनका भविष्य बना या बिगाड़ सकते हैं. —**शेखर गुप्ता,** पेइचिंग में

(ऊपर से नीचे) कांस्य पदक विजेता छाया अदक; चीन-भारत कबड्डी मैच; और कांस्य पदक विजेता कुंजरानी देवी (दाएं)

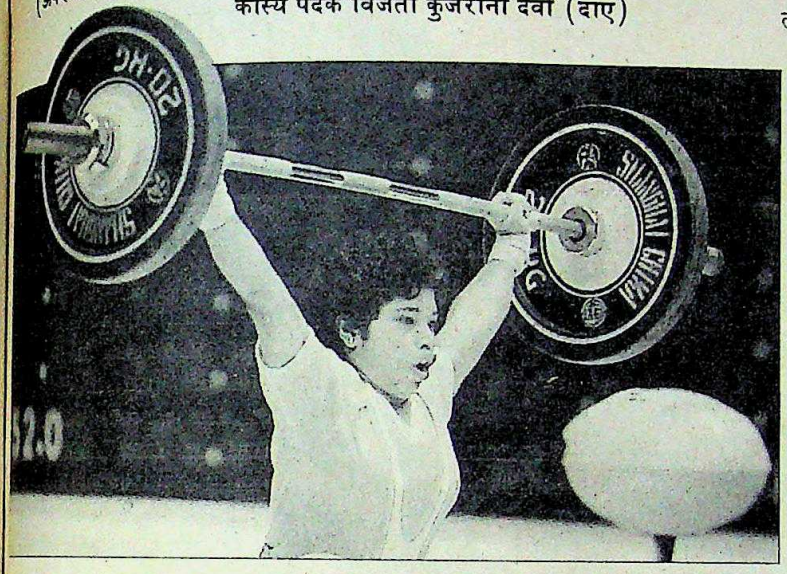

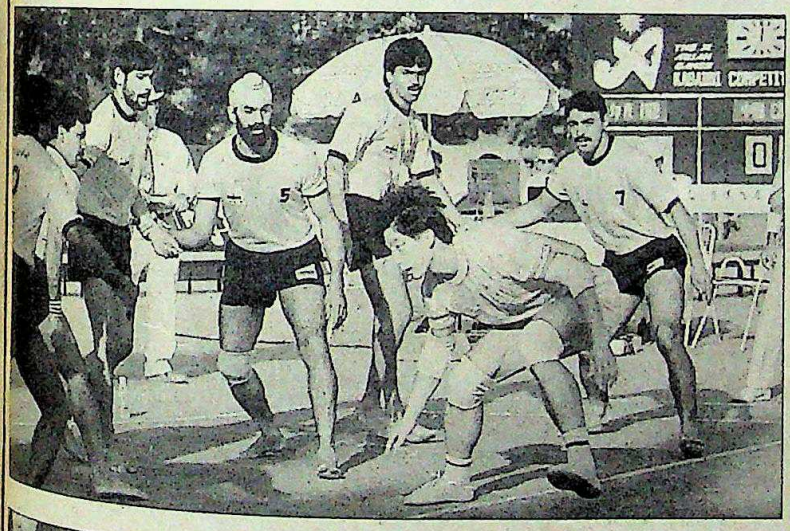

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...Gift a Cruiser.

On corporate/bulk orders we screen print your Company logo free of charge or also incorporate specially made emblems, monograms in lamination and other finishes as per your specifications.

For further inquiries or a personal visit from our representative please call or contact:

CRUISER

GIFT SETS

28, Sainath Industrial Estate,
Goregaon (E), Bombay-400 063.
Tel: 695773/690335/699589.
Fax No.: 91-22-6400128

★ Hyderabad Tel: 47211 ★ Delhi Tel: 5734921
★ Ahmedabad Tel: 334254 ★ Jaipur Tel: 561600
★ Madras Tel: 569284/422873 ★ Bangalore Tel: 258936

Memorable Creations for Memorable Occasions.

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देसी रेडियो की धूम

एशियाइयों ने अपने स्टेशन बनाकर पुरानी मांग पूरी की

लंदन में एक भारतीय रेस्तरां में लजीज कबाब और दूसरे व्यंजन परोसे जाने के साथ-साथ कुछ मधुर हिंदी फिल्मी संगीत भी सुनाई पड़ता है. एलिंग में डॉक्टर-मांदी शहाना पटेल अपनी कार में बैठकर लता मंगेशकर की मधुर आवाज सुनने के लिए स्विच दबाती हैं. आश्चर्य की कोई बात नहीं. यह संगीत किसी कैसेट प्लेयर या रिकार्ड प्लेयर से नहीं बल्कि एक आम रेडियो स्टेशन से आ रहा है.

अब स्वदेशी गीत-संगीत सुनने के लिए ब्रिटेन में बसे एशियाइयों को टेलीविजन या चैनल-4 खोलने की जरूरत नहीं रही. स्कॉटलैंड से बर्मिंघम या ब्राडफोर्ड तक लगभग 10 लाख भारतीय, पाकिस्तानी, बंगलादेशी और श्रीलंकाई लोग अब अपना खास देसी रेडियो स्टेशन सुन सकते हैं. कई साल तक हफ्ते में हिंदी गीतों का खास कार्यक्रम सुनने और अंग्रेजी की लगातार चटर-पटर से आजिज आए हजारों भाई लोगों को ये देसी रेडियो वह सब कुछ सुनने को दे रहे हैं जिसकी उन्हें अरसे से ख्वाहिश थी यानी उनका कर्णप्रिय संगीत, देश की खबरें और सबसे प्रमुख चीज अपनी भाषा. कभी-कभी वे मुंबई के सितारों की बातचीत का लुत्फ भी उठा सकते हैं. यही नहीं, कभी-कभी तो वे रेडियो विवाह सेवा के जरिए अपना जीवन साथी भी पा लेते हैं.

ब्रिटेन में जन्मे भारतीयों की पहली पीढ़ी और भारतीय उपमहाद्वीप के बीच पुल का काम करने वाले बड़े एशियाई रेडियो स्टेशनों में रेडियो सनराइज, हारमोनी एफएम, स्पेक्ट्रम और ब्राडफोर्ड सिटी रेडियो वगैरह हैं. अमीन सयानी जैसे लहजे में हिंदी, गुजराती, पंजाबी और अंग्रेजी में उद्घोषणाएं, हिंदुस्तानी में समाचार और हिंदी फिल्मी गीतों के साथ साड़ी और तंदूरी चीजों के विज्ञापन भी अक्सर इन पर सुनाई पड़ते हैं. इन सबसे एशियाई समुदाय के बीच खासा उत्साह दिखाई देता है.

ये रेडियो स्टेशन शुरू होने के साथ ही लोकप्रिय हो गए. दो साल पहले जब रेडियो लाइसेंस देने वाली अर्द्धसरकारी संस्था 'इंडिपेंडेंट ब्रॉडकास्टिंग अथॉरिटी (आईबीए) ने 24 विशेष रेडियो स्टेशनों की खातिर विज्ञापन निकाला तो 540 आवेदन एकबारगी ही पहुंच गए. तीन

श्रोतागण मुंबई के फिल्मी सितारों से बातचीत करने के साथ ही रेडियो सेवाओं के जरिए जीवन साथी भी पा सकते हैं

अवतार लिट; (नीचे) सनराइज रेडियो पर अमिताभ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाइसेंस एशियाई लोगों की खातिर रेडियो चलाने के लिए दिए गए. इस तरह सनराइज, ब्राडफोर्ड सिटी रेडियो और हारमोनी एफएम का उदय हुआ. आईबीए के एक प्रवक्ता ने कहा, "फिलहाल देसी रेडियो सेवाओं की मांग बहुत ज्यादा है."

सबसे पुराना और सफल रेडियो स्टेशन 38 वर्षीय सिख उद्घोषक अवतार लिट का सनराइज है जो ब्राडफोर्ड सिटी रेडियो के भी मालिक हैं. उत्तरी लंदन के हॉनस्लौ इलाके में स्थित सनराइज में 37 और ब्राडफोर्ड में 26 कर्मचारी हैं. चार साल तक वे एक गैर-कानूनी रेडियो 'सीना' चलाया करते थे पर उनका सपना कानून-सम्मत एशियाई रेडियो स्टेशन का रहा. वे कहते हैं, "मुझे हमेशा लगता रहा कि एशियाई लोगों का अपना रेडियो स्टेशन होना चाहिए और उन्हें अपने कार्यक्रम निर्धारण की छूट होनी चाहिए."

आज सनराइज के श्रोताओं की संख्या अनुमानतः 30 लाख है और यह ब्रिटेन में ग्यारहवां बड़ा रेडियो स्टेशन है. लिट के अनुमान के मुताबिक इस साल इसकी आय 7,50,000 पौंड से अधिक हो सकती है. लेकिन सफलता के साथ-साथ इस उपमहाद्वीप के उग्रपंथियों का मानना है कि इसके कार्यक्रम प्रासंगिक सामाजिक मुद्दों के अनुरूप नहीं हैं. लिट इन आरोपों का खंडन करते हैं. उनका कहना है कि उन्होंने मुस्लिम पर्सनल कानून जैसे मुद्दों पर फोन-संवाद आयोजित किए हैं.

इतना ही नहीं, कुछ महीने पहले कश्मीर के अलगाववादी नेता अमानुल्ला खां से सनराइज की बातचीत को दो महीने तक रोके रखा गया था. वजहः आईबीए ने निर्देश दिया कि कार्यक्रम को तार्किक स्वरूप देने के लिए भारत सरकार के विचार को भी शामिल किया जाना चाहिए. आखिरकार यह बातचीत भारतीय उच्चायुक्त कुलदीप नैयर की टिप्पणियों के साथ प्रसारित की गई.

हारमोनी की कामयाबी भी बेजोड़ है. यह इसी तथ्य से उजागर हो जाता है कि उसे जगुआर, ब्रिटिश एअरवेज और ब्रिटिश टेलिकॉम के विज्ञापन मिले हैं. इसके अलावा एक स्थानीय डॉक्टर के साथ सवाल-जवाब का कार्यक्रम भी उस पर चलता है.

सनराइज और हारमोनी से एकदम अलग उत्तरी लंदन स्थित रेडियो स्पेक्ट्रम है. इसके कार्यक्रम अफ्रीकी-कैरिबियाई, अरबी, हिंदी, उर्दू, बंगाली, चीनी, यूनानी, इतालवी, यहूदी और स्पेनिश श्रोताओं के लिए समान रूप से बंटे हुए हैं. इसके उद्घोषक इसे ब्रिटेन का पहला बहु-संस्कृति रेडियो स्टेशन कहते हैं और इसे प्रधानमंत्री मार्गरेट थैचर ने अपनी गैर-लाइसेंसी नीति की उपलब्धि बताया है.

इस विशाल परियोजना को चलाने वाले सात निदेशकों ने कंपनियों का समूह बनाया हुआ है. इनमें से छह लोग पहले स्पेक्ट्रम नाम के ही गैर-कानूनी रेडियो स्टेशन चलाया करते थे. इसकी 10 लाख पौंड की पूंजी भी अश्वेत लोगों से ही जुटाई गई है. स्पेक्ट्रम के दो एशियाई निदेशकों में से एक शफीक रहमान कहते हैं, "हमारा रेडियो असली देसी रेडियो है क्योंकि इसके मालिकों में सभी अश्वेत समुदाय के लोग हैं."

एक बात तय है कि देसी रेडियो स्टेशन अब ब्रिटेन में हमेशा कायम रहेंगे. इनकी श्रोताओं की संख्या बढ़ने के साथ ही उनका असर भी बढ़ता जा रहा है. चाहे हिंदी फिल्मी गीतों का कार्यक्रम हो या ब्राडफोर्ड सिटी रेडियो पर सलमान रुश्दी पर बहस, देसी रेडियो स्टेशन ब्रिटेन में धूम मचा रहे हैं.

—दीपंकर दे सरकार, लंदन

शफीक रहमान; (दाएं) रेडियो पर जितेंद्र

देसी रेडियो स्टेशन ब्रिटेन में जन्मे आप्रवासियों की पहली पीढ़ी और उपमहाद्वीप के बीच सेतु बने हुए हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़िन्दगी को बिलकुल सर आँखों पर!

रेमण्ड
सूटिंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूरदर्शन पर अमेरिकी
गोल्डबर्ग का क्या काम,
वह भी महत्वपूर्ण खबरों
या फिर खाड़ी की
आरक्षण विरोधी
की आग और अपने
दलों की घेराबंदी में
सिंह की खबरों के बीच
अभिनेता मार्टिन
जगह देने की क्या तुक?
दूरदर्शनवाले समझ
हैं कि शनिवार और
समाचारों की
बढ़ोतरी का किस तरह
किया जाए. तभी इस
सतहीपन दिख रहा है.
तमता है दूरदर्शनवाले
में यकीन करते हैं कि
दिखाई जाने वाली
सताने बच्चों की तरह
लिए ही होती हैं, सुनने
नहीं. विश्व प्रसिद्ध
गोर्बाचेव हों
—चाहे गोर्बाचेव हों
द कुइयार—उनके मुंह
परदे पर बस हिलते ही
हैं. यहां तक कि
आर. वेंकटरामन भी
राजस्थान दौरे के दौरान
पगड़ी में सजे-संवरे नजर
उन्होंने क्या कहा, दर्शक नहीं

फिल्म' दिखाने का
का शौक एक बार फिर
आया. हिंदी समाचारों में
हवाई दुर्घटना की फिल्म
समय एक व्यक्ति को
में हैम रेडियो लगाए दिखाया
लेकिन आवाज गायब
का प्रभाव दर्शकों पर कुछ
रहा मानो हवाई दुर्घटना
वही व्यक्ति जिम्मेदार हो.

पहले चौराहे पर
, उसके बाद रेलवे
पर 'इंतजार', और
'मनोरंजन' देने के
बंधु अपनी मंडली
परदे पर फिर से
तैयार हैं. कुंदन
मिर्जा और दो और
सर्कस पर धारावाहिक
तैयार कर रहे हैं.
से लौटे उस युवा
की है, जिसे
पिता का सर्कस
संभालना पड़ता है.
में शाहरुख खां
जो धारावाहिक
अपने अभिनय से

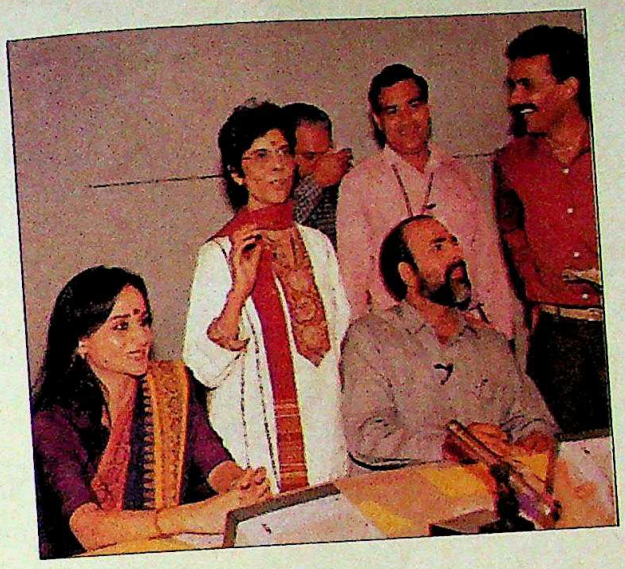

'खुला मंच' में नलिनी और शशिः बदला अवतार

मिर्जा भाइयों का दलः अब सर्कस में

'हमारी शादी' में हलदार और पालः हास्यप्रधान

किशोर दर्शकों का दिल जीत चुके हैं.

◆ प्रसार भारती विधेयक के पारित होते ही दूरदर्शन ने विवादास्पद कार्यक्रम 'खुला मंच' के संचालन की जिम्मेदारी एचटीवी की जगह पीटीआई टीवी के शशि कुमार और नलिनी सिंह को सौंप दी. शशि कुमार के सवाल भी करण थापर के सवालों जितने ही तीखे होते हैं, लेकिन वे उन्हें विनम्रता से पेश करते हैं. इसीलिए पेट्रोलियम और रसायनमंत्री तीखे सवालों के प्रहार से उत्तेजित नहीं हुए. अगली बार सवालों के घेरे में होंगे अरुण नेहरू. दूरदर्शन इस कार्यक्रम का सीधा प्रसारण करना चाहता है, जबकि सवाल यह है कि इसका प्रसारण कब तक जारी रखा जाएगा. इधर, सूचना और प्रसारणमंत्री ने 'वर्ल्ड दिस वीक' के घरेलू संस्करण 'इंद्रधनुष' के प्रसारण का वादा किया है. दूरदर्शन के ही कर्मचारियों के तैयार किए कार्यक्रम में न जाने क्यों इतनी दिक्कतें आ रही हैं.

◆ जाने-माने फिल्म निर्देशकों से तकरीबन आधा दर्जन फीचर फिल्में बनवाकर दूरदर्शन खासा बड़ा फिल्म निर्माता बन बैठा है. इनमें कुछ तो सुहानी प्रेमकथाएं हैं, जैसे बासु चटर्जी के निर्देशन वाली हास्य प्रधान फिल्म 'हमारी शादी'. युवा प्रेमी (इंद्राणी हलदार और अजीत पाल) भागकर शादी करने की कोशिश करते हैं. लालची वकील की भूमिका में अंजन श्रीवास्तव ने बहुत जानदार अभिनय किया है. एक संगीतमयी प्रेम प्रधान फिल्म अमोल पालेकर ने भी बनाई है. बुद्धदेव दासगुप्त की पुरस्कार विजेता फिल्म 'बाघ बहादुर' भी इसमें शुमार है.

◆ चोपड़ा परिवार काम के बाद आराम में शायद यकीन नहीं करता. 'महाभारत' की याद अभी धुंधला भी नहीं पाई है कि चोपड़ा पिता-पुत्र पंजाब की पृष्ठभूमि पर धारावाहिक 'चुन्नी' लेकर फिर सामने हैं. लेखक वही डॉ. राही मासूम रजा हैं, तो पात्र भी वही मुकेश खन्ना और शकुनि गूफी पेंटल. —मधु जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

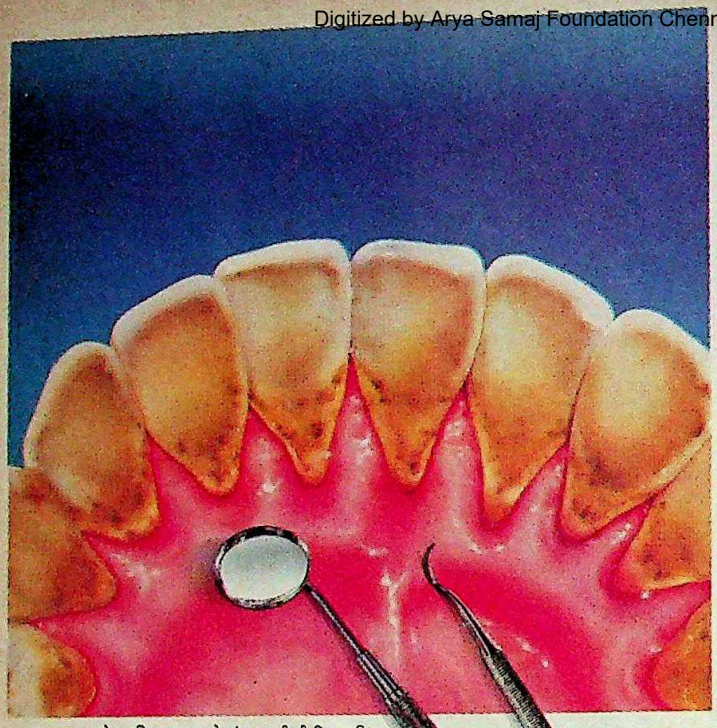

टारटर को दर्शाने वाला आपके मुंह का भीतरी विस्तृत चित्र.

आभी अपने दांतों पर जीभ फिराकर देखिए... आपके लिए कोई गंभीर समस्या हो सकती है !

ये है मैल की परत.

इसे टारटर कहते हैं. दांतों पर, मसूढ़ों के पास आप अपनी जीभ से एक घब्बेदार पीली (कई बार सफ़ेद) सीमेंट जैसी खुरदुरी परत को आसानी से महसूस कर सकते हैं. एक बार इसके जमने पर, आम तौर से इसे हटाने के लिए दांतों के डॉक्टर की सहायता लेनी पड़ती है. लेकिन ये दोबारा फिर जम जाती है. यदि इस पर ध्यान न दिया जाए तो इस टारटर के कारण आपके दांत न केवल भद्दे और बदसूरत नज़र आने लगते हैं बल्कि इससे मसूढ़ों की गंभीर समस्या भी पैदा हो सकती है. यहां तक कि आपके दांत सड़ भी सकते हैं. सबसे बुरी बात तो यह है कि भारत के ९०% वयस्कों की दांतों संबंधी बीमारियों का प्रमुख कारण है - यही टारटर.

केवल चुने हुए शहरों में उपलब्ध.

औषधीय परीक्षणों द्वारा मान्य टारटर नियंत्रक.

टारटर बनता कैसे है?

सामान्यतया लार में मौजूद कैल्शियम लवण और ऑरथोफ़ॉस्फ़ेट की परस्पर प्रतिक्रिया द्वारा कणों के रूप में हायड्रॉक्सीएपेटाइट तैयार होता है. दरअसल, टारटर का मूल बीज या असली कारण भी यही है, जिसे डॉक्टर कैलक्युलस कहते हैं. धीरे-धीरे कैल्शियम लवण के और भी कण इस बीज पर जमा होते जाते हैं और टारटर की एक परत सी बन जाती है. ऐसा इसलिए होता है क्योंकि इन बीजों में ख़ास गुण होते हैं, जिससे इन पर कैल्शियम लवण अपने आप जमा होते जाते हैं.

नया कोलगेट टारटर कंट्रोल फार्मूला. टारटर को रोकने वाला औषधीय परीक्षणों द्वारा मान्य टूथपेस्ट.

नया कोलगेट टारटर कंट्रोल फार्मूला टूथपेस्ट औषधीय परीक्षणों द्वारा मान्य भारत का सबसे पहला और एकमात्र टूथपेस्ट है जो टारटर को बनने से रोकता है और इससे होने वाली बीमारी की संभावना को कम करता है.

नया कोलगेट टारटर कंट्रोल फार्मूला कैसे असर दिखाता है?

नये कोलगेट टारटर कंट्रोल फार्मूले में घुलनशील पायरोफ़ॉस्फ़ेट होता है, जो लार में मौजूद कैल्शियम के साथ मिल जाता है और इस कैल्शियम को फ़ॉस्फ़ेट के साथ मिलने से रोकता है. यह नया मिश्रण आसानी से सख़्त नहीं होता. इस तरह टारटर बनने की क्रिया भी कम होती है. यही नहीं, पायरोफ़ॉस्फ़ेट पहले ही बन चुके टारटर को और अधिक बढ़ने से भी रोकता है. यह मौजूदा टारटर के बीजों के साथ मिलकर, दांतों पर एक कवच सा तैयार कर देता है तथा और अधिक टारटर की जमावट को रोकता है.

टारटर को रोकने में बेजोड़.

अमेरिका के फ़ॉरसिथ डेंटल सेंटर में किए गए एक तुलनात्मक औषधीय सर्वेक्षण के अनुसार, दांतों के इलाज के लिए आए एक समूह की निगरानी के दौरान नया कोलगेट टारटर कंट्रोल फार्मूला टारटर की जमावट को रोकने में औसतन ४७.६% तक सफल सिद्ध हुआ.

टारटर का करें नियंत्रण - तीन सुनहरे नियम.

१. दांत के डॉक्टर से दांतों की सफ़ाई करवाएं.
२. दांतों को दिन में दो बार कोलगेट टारटर कंट्रोल फार्मूला टूथपेस्ट से साफ़ करें.
३. नियमित समय पर दांत के डॉक्टर के पास जाएं.

"कोलगेट टारटर कंट्रोल फार्मूले से मसूढ़े के ऊपरी हिस्से पर टारटर का बनना तो निश्चित रूप से कम हुआ, लेकिन दांतों संबंधी बीमारी पर कोई औषधीय प्रभाव नहीं दिखाई दिया."

काउंसिल ऑन डेंटल थेरोपेटिक्स अमेरिकन डेंटल एसोसिएशन.*

NEW! Clinically proven to fight Tartar build-up.
Colgate Tartar Control Formula
Dental Cream

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Rediffusion/CP/90/217 b

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारा शहर ठप है

अरसे बाद लखनऊ जाकर तबीयत बाग-बाग हो गई. क्या तहजीब, तकल्लुफ, तमीज और अदब-तालीम का शहर है. पैदल, साइकिल, तिपहिए, कार, स्कूटर, ठेले, ट्रक से सड़कें पटी हैं. मैं दोस्त के साथ उनके क्लब जा रहा था. मुझे लगा कि उनकी आंख लग गई है. आधे घंटे से गाड़ी का इंजन चालू था और हम विविध वाहनों के मेले में ठगे से खड़े थे. मैंने मित्र से शिकायत की, उन्होंने पास खड़े ट्रैफिक कान्स्टेबल से, "भाई जान! खुदा के वास्ते कुछ कीजिए."

वे किवाम और जर्दे की पीक निगलते बोले, "आपके दिन फूट गए हैं क्या! देखते नहीं भैंसें जा रही हैं."

"आप भैंसें हटाने के लिए नहीं तो क्या फाख्ता उड़ाने के लिए खड़े हैं?"

"आप कब से लखनऊ में हैं" सिपहिए के साथी ने तकरीबी सवाल किया.

"अपना तो वतन ही लखनऊ है."

"फिर तो आप भी जानते हैं कि भैंसें हाल-फिलहाल ही सड़कों पर तशरीफ लाई हैं."

"यह हमारी गलती है क्या?"

"हुजूर! जरा गौर फरमाएं! किस तरफ से वे एक-दूसरे को 'पास' दे रही हैं. एक कह रही है 'श्यामा बहन! पहले आप' दूसरी जिद पर है, 'नहीं खाला जान! पहले आप!' बस इसी श्यामा-खाला संवाद में शहर ठप है."

"मेहरबानी कर इन्हें किनारे कर दें तो हम तो जाएं," मैंने गुजारिश की.

"आप कमाल के कम-अक्ल इंसान हैं. तजीरे-आला की सवारी से कोई छेड़खानी की जुर्रत कर सकता है."

"मैं आपका मतलब नहीं समझा," मैंने लखनवी जुबान न जानने की अपनी मजबूरी जताई.

"इनका कहना है कि जब से भैंसों के कारवाह सत्ता और सियासत की चारागाह में चले गए हैं, वह भटक गई हैं", एक स्कूटर वाले ने हमें ज्ञान बख्शा.

इंसानी तरक्की का नया मानक है कि इधर लखनऊ की भैंसें वहां के आदमियों से ज्यादा तकल्लुफ की कायल हैं. वे सड़कों पर जुगाली करती हैं, आम लखनऊ वाले पान की दुकानों पर. ऐसे में मैंने पुलिस के एक आका से हमदर्दी दिखाई-

"आजकल आप कानून-व्यवस्था को लेकर खासे परेशान होंगे."

"क्यों क्या हो गया," उन्होंने ताज्जुब का इजहार किया."

"एक तरफ राम के भगुआ भक्तों का कमंडल है, दूसरी ओर राजा मंडल के विरोधियों का दल."

रेखाचित्र जयंतो

"मंदिर का राम जानें. हम तो राजा मंडल के शुक्रगुजार हैं. लड़के अब शौकिया जूते पॉलिश कर आगे के पेशे का रिहर्सल तो कर रहे हैं."

"पर मारपीट, दंगा-फसाद, आगजनी आदि के खतरे भी तो हैं."

"कुछ लोगों के फौत होने, बसों के जलने, तिपहियों के फुंकने से क्या फर्क पड़ता है. हमारी ट्रैफिक की मुश्किलें ऐसे ही तो हल होंगी."

पान की दुकानों पर खड़े आम आदमी और क्लबों में बैठे आला लोगों में गजब की हम-खयाली है. दोनों का नजरिया है कि जो हो रहा है, होने दो. कभी नजाकत का यह आलम था कि नवाब साहब को मूली की गंध से जुकाम हो जाता था. होता होगा! ककड़ियों को बेचने वाले 'मजनूं की पसलियों' की गुहार लगाते थे. लगाते होंगे. मुलायम सख्त हैं और जालिम सिंह शायर-दिल. होंगे. पास ही नेताजी गोलमेज कांफ्रेंस में मशगूल हैं—

"कल की दावत पक्की रही."

"कोई मुबारक मौका है क्या?"

"अमां यार! अच्छी बारिश को 'सैलेब्रेट' करना है."

"क्या खाना बने," नेता-पत्नी दरयाफ्त करती है."

"जो जी में आए बनाओ पर हम मंदिर नहीं बनने देंगे."

क्लब से लौटे तो हमारे दोस्त ने निशातगंज पुल के पास गाड़ी रोक दी—

"अब क्या हो गया," हमने पूछा.

"यह हमारे शहर का मुफ्त के मनोरंजन का सेंटर है. पहले लोग हजरतगंज में 'गेजिंग' करते थे, इधर पुल पर टहलकर 'पुलिंग' पापुलर है."

"पर सब नदी में क्यों झांक रहे हैं."

"कोई डूब मरा होगा," उन्होंने उत्तर दिया.

"मौत कोई मजाक है जो तमाशबीनों की भीड़ लगी है."

"दिल्ली में लड़के मंडल की मंडी में देहदहन की अग्निपरीक्षा से गुजर रहे हैं, देश में उनके मां-बाप भूख-प्यास के दौर से. इस रोज-रोज के मरने से तो बेहतर है कि एकबारगी गोमती मैया की गोद में समा जाएं. दूसरों को घंटे-आध-घंटे की मौज-मस्ती तो हासिल हो."

ऐसे तो कई मिल जाएंगे जो दूसरों के लिए जीते हैं. पर लखनऊ वाले दूसरों की खातिर मर-मिटने में यकीन रखते हैं. यही वजह है कि लखनऊ में बाग-बगीचे मिट रहे हैं और मल्टी-स्टोरी इमारतें पापुलर हो रही हैं.

लखनऊ कभी शंभू महाराज के कथक की शोहरत का शहर था. यह शहर आजकल फिर सुर्खियों में है. कुछ राजा मंडल के कारनामों से और कुछ राम जी के नाम की लीला से. पर वहां के पुरलुत्फ लोग अब भी मेहमानों को यही सलाह देते हैं, "मुस्कराइए कि आप लखनऊ में हैं."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार

कागजी वादों के भवन

निराश संस्कृतिकर्मियों ने कार सेवा का सहारा लिया

यदि राजनीतिकों के भाषणों पर भरोसा किया जाए तो अब तक बिहार के कला, साहित्य और भाषा जगत में क्रांति आ गई होती. मगर भाषणों की मूसलाधार बारिश के बावजूद कलाकारों, साहित्यकारों और रंगकर्मियों में एक अजीब बेचैनी है क्योंकि एक बदहाल रंगशाला सरकार की उदासीनता के कारण गोशाला मे बदल गई है.

पिछले पखवाड़े जब मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव और राजा भाषामंत्री वृषण पटेल 'हिंदी सप्ताह' के अवसर पर हिंदी के लिए आंसू बहा रहे थे तो प्रेमचंद रंगालय अपनी बदहाली का मातम मना रहा था और हिंदी भवन के नाम पर गड़ा पत्थर किसी यतीम कब्र के पत्थर के समान तनहा खड़ा रो रहा था. मशहूर कलाकार, निर्देशक और प्रमुख नाट्य संस्था से जुड़े सतीश आनंद कहते हैं, "ये दोनों सरकार की कला और भाषा चेतना के प्रतीक हैं."

प्रेमचंद रंगशाला की कहानी बड़ी दर्दनाक है. कलाकार संघर्ष समिति के संयोजक और भारतीय जन नाट्य मंच (इप्टा) की बिहार इकाई के सचिव तनवीर अख्तर ने 'इंडिया टुडे' को बताया, "एक लंबी लड़ाई के बाद इस रंगशाला को सेंट्रल रिजर्व पुलिस फोर्स के कब्जे से मुक्त कराया गया था. मगर अब यह गोशाला बन गया है. अगर सभी मिलकर इसे अभी मुक्त नहीं करते तो पटना की एकमात्र राजकीय रंगशाला हाथ से निकल जाएगी."

राजकीय रंगशाला की कल्पना कला और संस्कृति प्रेमी, भारतीय प्रशासनिक सेवा के अफसर जगदीशचंद्र माथुर ने 1973-74 में की थी. उसी समय बिहार में जेपी आंदोलन छिड़ गया. मोइनुलहक स्टेडियम से सटी 10 एकड़ जमीन पर फैली इस रंगशाला पर सीआरपीएफ की नजर पड़ गई.

1975 आते-आते देश में आपातकाल लग गया. देखते ही देखते सीआरपीएफ के अफसरों ने वहां अपना क्लब बना लिया. इसी बीच जगन्नाथ मिश्र दूसरी बार बिहार के मुख्यमंत्री बने. 18 अक्तूबर 1980 को प्रेमचंद शताब्दी के अवसर पर रंगशाला के सामने उन्होंने प्रेमचंद की प्रतिमा का अनावरण किया और राजकीय रंगशाला का नाम प्रेमचंद रंगशाला रख दिया गया.

रंगशाला की मुक्ति के लिए 1982 में कलाकार संघर्ष समिति ने प्रशासन के विरुद्ध जंग छेड़ दी. आखिरकार, 27 नवंबर 1987 को रंगालय को सीआरपीएफ से मुक्ति मिली.

मुक्ति मिलते ही सरकार ने इसकी ओर से आंखें मूंद लीं. आश्वासनों के बोझ तले दबकर रंगालय बदहाल होता चला गया. धीरे-धीरे वह गोशाला में बदल गया. एक बार फिर कलाकार संघर्ष समिति की आंख खुली. इसने सरकार से इसके पुनरुद्धार के लिए मिन्नतें की आखिरकार. समिति ने 'कार सेवा' की योजना बनाई. तनवीर अख्तर ने हंसते हुए कहा, "सीआरपीएफ को हटाने में तो कलाकार सफल हो गए मगर ग्वालों को हटाना उनके बस की बात नहीं. कार सेवा ही एक उपाय था."

जब रंगशाला की बात चली तो हिंदी सप्ताह के अवसर पर राज्य सरकार को हिंदी भवन का भी ध्यान आया. इसके लिए 17.84 लाख रु. इस साल आवंटित भी कर दिए गए.

हिंदी भवन का शिलान्यास दिवंगत

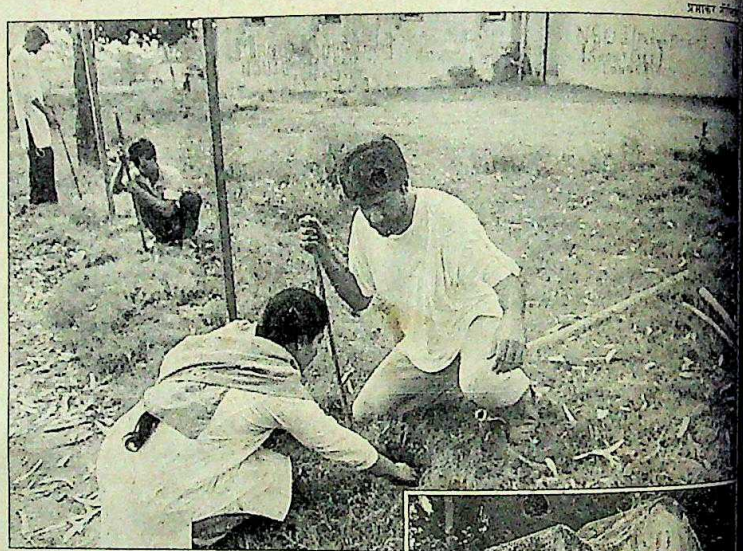

कार सेवा करते कलाकार; और हिंदी भवन की आधारशिला

प्रेमचंद रंगालय अपनी बदहाली का मातम मना रहा था तो हिंदी भवन के नाम पर गड़ा पत्थर तनहा रो रहा था

चंद्रशेखर सिंह ने अपने मुख्यमंत्रित्व में 1984 में किया था. पर आज तक इस प्रस्तावित इमारत नहीं बन पाई. छह में पहली दफा वृषण पटेल को ध्यान आया. और कौन जाने अब की आत्मा को सरकार कब पहुंचाएगी और हिंदी के फूल खिलेंगे.

—फरवर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ALL-IN-ONES

SF 44

SX 48

SF 62

GREAT SOUND ▲ GREAT LOOKS ▶▶
GREAT POWER ■■■ GREAT PERFORMANCE
GREAT RECORDING

ES, WHY SETTLE FOR A TWO-IN-ONE, WHEN
YOU CAN GET A VIDEOCON ALL-IN-ONE?

RBO POWER — SX 48 * Detachable speakers * 60 watts PMPO * Hi-speed dubbing
* 3 band graphic equaliser * Rs.3375/-

PER WOOFER — SF 44 * Bass Boost selector * 60 watts PMPO * Hi-speed dubbing
* 5 band graphic equaliser * Rs.3650/-

TO REVERSE — SF 62 * Continuous play * 20 watts PMPO * Hi-speed dubbing
* 3 band graphic equaliser * Rs.2975/- Prices inclusive of all taxes

TSA:B VIL:5590

VIDEOCON

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

OCK

डिज़ाइनर कलेक्

पु रु षों औ

आ ज़ा द ख्या

ना रि यों

लि ये क प

की ब ह

CC-0. In Public Domain.

VXL इंडिया लिमिटेड का

Digitized by A... Foundation Chennai and eGangotri

AJAX/OCM/DCCW/4/90

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

What did the Skypak Man say to the girl from Singapore?

"Don't kill me with your charm! I have a job to do..."

We'll deliver. Wherever on earth. SKYPAK The worldwide couriers.

Skypak House, Off M. Vassanji Road, Marol, Andheri (E), Bombay 400 059.

Avenues-SC-5

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय साहित्यकार

चहुं ओर पहुंच

हिंदी के माध्यम से राष्ट्रीय पहचान

भारतीय साहित्य की बदकिस्मती है कि लगभग डेढ़ दर्जन भाषाओं में अच्छे स्तर की साहित्यिक परंपरा होने के बावजूद वह छोटी-छोटी क्षेत्रीय इकाइयों में बंटा रहा है. भाषा, धर्म और बिरादरी के नाम पर बंटे शेष समाज की तरह वह भी अपने उस विराट स्वरूप और राष्ट्रीय छवि से वंचित रहा है जिसका वह कब से अधिकारी बन चुका है. लेकिन प्रकाशन के क्षेत्र में आ रहे एक बड़े बदलाव को देखते हुए लगता है कि भारतीय साहित्य को एक साझा मंच मिलने जा रहा है. एक ऐसा मंच जहां से वह न केवल राष्ट्रीय छवि हासिल करने जा रहा है बल्कि जो अलग-अलग भाषाओं के बीच साहित्यिक आदान-प्रदान का पुल बनाने की भी क्षमता रखता है. भारतीय ज्ञानपीठ ने पिछले पखवाड़े सुप्रसिद्ध असमी उपन्यासकार [illegible] कुमार [illegible]चार्य के उपन्यास 'पाखी [illegible]' और [illegible]पूर्णा देवी के [illegible] उपन्यास [illegible]' के हिंदी अनुवाद प्रकाशित किए. [illegible] इसके साथ ही ज्ञानपीठ द्वारा इस साल [illegible] भारतीय भाषाओं के [illegible] के साहित्यकारों की [illegible] रचनाओं के संग्रहों को हिंदी में प्रकाशित करने की 'भारतीय साहित्यकार' योजना के तहत बाजार में लाए गए ग्रंथों की संख्या 14 हो गई. इस योजना के [illegible] और ज्ञानपीठ के निदेशक बिशन [illegible] को आशा है कि इस साल के अंत [illegible] समकालीन भारतीय साहित्यकारों के [illegible] कहानी संग्रह, 6 उपन्यास और 10 [illegible] संग्रह प्रकाशित हो चुके होंगे. [illegible] वर्ष इस शृंखला में अलग-अलग भाषाओं के चोटी के निबंधकारों, नाटककारों और व्यंग्यकारों के रचना [illegible] भी प्रकाशित करने का काम बड़े [illegible] पर शुरू हो चुका है.

अब तक अनूदित और प्रकाशित [illegible] की इस शृंखला में यू.आर. अनंतमूर्ति (कन्नड़), सच्चिदानंद [illegible] (ओडिया) और शांतिनाथ [illegible] (गुजराती) जैसे चर्चित [illegible]कारों के अलावा ज्ञानपीठ ने इस [illegible] के बाहर लक्ष्मी कण्णन (तमिल), [illegible] मिश्रा (ओडिया), शीलभद्र (असमी) और विश्वास पाटील (मराठी) जैसे प्रतिभावान मगर अपेक्षाकृत नए लेखकों को भी भारतीय स्तर पर पेश किया है. इन रचनाओं के अच्छे स्तर के अनुवाद कराए गए हैं.

1930 वाले दशक में प्रेमचंद ने समकालीन प्रतिनिधि भाषायी कहानियों को 'हंस' के माध्यम से हिंदी में प्रकाशित करने का प्रयास किया था. बाद में 1940 के आसपास इलाहाबाद से सरस्वती सीरीज के माध्यम से भारतीय साहित्य को हिंदी में लाने के प्रयास भी ठोस रूप लेने से पहले ही ठप हो गए. इधर पिछले कुछ बरसों में कुछ प्रकाशकों ने इक्का-दुक्का अच्छी रचनाओं के अनुवाद जरूर छापे हैं. लेकिन वे व्यावसायिक सीमाओं के कारण भारतीय साहित्य को कोई साझा मंच उपलब्ध करा पाने में असमर्थ ही रहे हैं.

लगता है कि भारतीय साहित्य को ऐसा मंच मिलने जा रहा है जो विभिन्न भाषाओं के बीच पुल का काम करेगा

वैसे स्वयं ज्ञानपीठ के लिए भी इस दिशा में यह कोई पहला प्रयास नहीं है. इससे पहले ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेताओं की रचनाओं को हिंदी में प्रकाशित करने की परंपरा तो पुरस्कार जितनी ही पुरानी है. 1983 से 1988 के बीच विभिन्न भारतीय भाषाओं में छपने वाले साहित्य में से चुनी हुई कविताओं और कहानियों के सालाना संग्रह भी प्रकाशित किए जा चुके हैं. इनके अलावा अलग-अलग भाषाओं के कुछ प्रमुख साहित्यकारों की रचनाएं प्रकाशित करके भी ज्ञानपीठ ने हिंदी को भारतीय भाषाओं के बीच एक पुल बनाने की दिशा में प्रभावी योगदान किया है.

इनमें से कई पुस्तकों के दूसरी भाषाओं में अनुवाद भी प्रकाशित हो चुके हैं. इस बारे में ओडिया के चर्चित कवि, कहानीकार और नाटककार जगन्नाथ प्रसाद दास कहते हैं, "भारत जैसे अनेक भाषाओं वाले देश में अनुवाद के माध्यम से दूसरे भाषा-भाषियों तक साहित्य पहुंचाने की आवश्यक उपयोगिता है. हिंदी अनुवाद से मेरी रचनाएं केवल हिंदीभाषियों तक ही नहीं बल्कि अब दूसरी कई भाषाओं में भी पहुंच चुकी हैं. हिंदी भाषा का मुझ पर यह एक विशेष ऋण है."

इसी तरह कन्नड़ के जाने-माने साहित्यकार यू.आर.अनंतमूर्ति की राय में, "हिंदी के माध्यम से विभिन्न भाषाओं के साहित्य को देश भर के लिए साझा बनाने का यह प्रयास न सिर्फ भाषाओं की दीवारों को तोड़ेगा बल्कि हिंदी के प्रति दुराग्रह को भी."

लेकिन ज्ञानपीठ की इस ग्रंथ माला का कोई भी संग्रह 70 रु. से कम का नहीं है. इनके प्रिंट आर्डर भी 2,200 वाली सीमा में बंधे हुए हैं. नतीजा यह कि इस प्रयास का प्रभावक्षेत्र सरकारी लाइब्रेरियों और अकादमियों तक सीमित है. लेकिन टंडन की दलील है, "फिलहाल इस प्रयास का एक बड़ा उद्देश्य तो सभी भारतीय भाषाओं के साहित्य को हिंदी के माध्यम से साझा मंच प्रदान करना है. अब तक के संकेतों को देखते हुए लगता है कि आने वाले पांच साल में ही समकालीन अच्छे भारतीय साहित्य का एक अभूतपूर्व खजाना तैयार हो जाएगा." उम्मीद की जाए कि यह खजाना भारतीय साहित्य को उसका वह विराट रूप प्रदान करेगा जिसका वह हकदार है.

—विजय क्रान्ति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेमंत कुमार

मुस्कराहट

दिवंगत हेमंत कुमार को हिंदी भाषी क्षेत्र के लोग आम तौर पर उनकी जादूई आवाज और फिल्मी संगीत की वजह से ही जानते हैं. बहरहाल, उनकी साहित्यिक प्रतिभा बांग्ला भाषी समाज तक ही सीमित रही. यहां प्रस्तुत उनकी कहानी का अनुवाद साधना शाह ने किया है.

तब मैं कुछ भी नहीं जानता था उसके बारे में. जब मैंने उसका नाम पूछा तो वह हंसने लगी. मैंने कहा, "लगता है तुम्हारा नाम बड़ा मजेदार है. इसलिए अपना नाम बताने में तुम्हें हंसी आ रही है."

मेरी बात सुनकर वह और भी हंसने लगी. बोली, "नहीं,नहीं. नाम में कोई ऐसी बात नहीं. मेरा नाम है अनुपमा. सब मुझे 'अन्नू' कहकर बुलाते हैं. आप भी अन्नू कह सकते हैं."

कहकर अनुपमा हंसने लगी.

मैं समझ गया. हंसी ही उसकी बातों का स्रोत है. जिस तरह संगीत के साथ तानपूरा उसी तरह उसकी बातों के साथ हंसी का फुव्वारा. उस पर अनुपमा खूबसूरत भी है. नाक-नक्श भी अच्छा है. और उसकी सरल हंसी खूबसूरती में चार चांद लगा देती है. इसलिए उससे बातें करना अच्छा लगता है.

पहली बार जब वह मुझसे मिली तो सिर्फ दो-चार बातें ही हो पाई थीं. फिर वह चली गई. बोली, "फिर किसी दिन आऊंगी."

और वह फिर आई. बोली, "भाई साहब आप अपनी एक तस्वीर देंगे?"

"हां,क्यों नहीं."

मैंने अपनी तस्वीर दे दी. तस्वीर हाथ में लेकर उसने उलट-पलटकर देखा, "इसमें नीचे मेरे भाई का नाम लिख दीजिए. ताकि लगे तस्वीर आपने मेरे भाई को दी है. मेरे भाई का नाम विजय है."

तस्वीर के नीचे मैंने लिख दिया—विजय को सस्नेह.

अन्नू बहुत खुश हुई. बोली, "मेरा भाई बहुत खुश होगा. बड़ा चंचल है. वह जब भी आपका गाना सुनता है तो एकदम शांत हो जाता है. बल्कि कहना चाहिए आपका गाना उसे शांत कर देता है."

इतना कहने के बाद अन्नू बेहिसाब हंसी. बातें भी वह बेहिसाब करती है. हंसने से उसके चमकते हुए दांत किसी टूथपेस्ट के विज्ञापन से कम नहीं लगते.

मेरे पास वह इसी तरह कभी-कभी आती है. उसी से मैंने जाना कि उसका भाई किसी राजनैतिक दल से जुड़ा हुआ है. हायर सेकंडरी के बाद उसने पढ़ाई छोड़ दी. तब से सारा दिन राजनीति करता फिरता है. अन्नू को उसकी यह बात बिल्कुल अच्छी नहीं लगती. कहती है, "अब मुझे ही देखिए न, भाई साहब. एक प्राइमरी स्कूल में टीचर हूं. पिताजी अक्सर बीमार रहते हैं. रिटायर हैं. दो छोटी बहनें भी हैं. दोनों पढ़ रही हैं. और विजय हमारा इकलौता भाई है. ऐसे में उसे चाहिए कहीं कोई नौकरी कर ले. पर नहीं. सारा-सारा दिन मटरगश्ती करता फिरता है. मेरी अकेली नौकरी से इतने सारे लोगों का गुजर मुश्किल है. इसलिए मुझे दो-चार प्राइवेट ट्यूशन भी करना पड़ता है."

अपने दुख-दर्द और तकलीफ के बारे में उसने इतना कुछ कहा पर सब कुछ हंसते-हंसते. दूसरा कोई होता तो यही समझता वह झूठ बोल रही है. वरना कोई अपने दुख-दर्द की बातें हंसते-हंसते कहता है?

अन्नू अक्सर आती और दो चार बातें करके चली जाती. ज्यादा देर वह नहीं रुकती. कहती, "बहुत काम है. चलती हूं. आपके पास आकर मेरा मन थोड़ा हल्का हो जाता है. आप तो जानते ही हैं मेरे ऊपर कितनी जिम्मेदारी है."

पर मैं जानता हूं. वह अपने जीवन का सब कुछ हंसते हुए सहती है. दरअसल, हंसी उसके व्यक्तित्व का मुद्रादोष है. बल्कि इसे उसका दोष कहने के बजाए उसका मुद्रागुण ही कहना चाहिए.

इसके बाद बहुत दिन हो गए अन्नू नहीं आई. एक दिन अचानक हंसते हुए हाजिर हुई और बोली, "आपके यहां आने को रोज सोचती, पर आ ही नहीं सकी. कैसे आ पाती! अब तो रसोई की भी जिम्मेदारी मेरे ही ऊपर आ पड़ी है."

मैंने कहा, "रसोई तो तुम्हारी मां बनाती हैं न? बीमार हैं क्या?"

अन्नू बोली, "बीमार तो थी. पर अच्छा कर कहां पाई? चली गई."

कहकर हंसने लगी.

मां के मरने की बात कहकर भी इस हंसी को स्वीकारने को मेरा दि तैयार नहीं हुआ. मैं एकदम से गंभीर गया. अन्नू पूछने लगी, "आपकी तबीय ठीक है न? अचानक क्या हो गया? गंभीर हो गए?"

मैंने कहा, "तुम्हारी मां के मरने खबर सुनकर मैं तुम्हारी तरह हंस सकता. तुम कैसे हंसती हो यह मेरी के बाहर की बात है."

उसने भारी गले से कहा, "क्यों न भगवान मुझे जब्त करना चाहता है. मेरी हंसी छीनना चाहता है. मुझे चाहता है. पर मैं भी कम नहीं. रोऊं उसकी बला से!"

कहकर अन्नू हंसने लगी.

ऐसी लड़की मैंने पहले कभी नहीं हंसते तो मैंने बहुत लड़कियों को

सभी रेखांकनः सुदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो-दो जगह मुझे पढ़ाने जाना है."

मैंने कहा, "शिखा अकेले ही आ जाए. मैं सुन लूंगा."

और शिखा अकेले ही आई. मैंने उसका गाना सुना. अच्छा ही गाती है. शिखा से मैंने कहा भी. वह खुश हुई. बोली, "आशीर्वाद दीजिए कि मैं अपने पैरों पर खड़ी हो सकूं."

मैंने कहा, "मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है. पर इस पेशे में कड़ी प्रतियोगिता है. भीड़ भी बहुत है. हुजूम इतना बड़ा है कि उससे निकलकर पहली कतार में आना बड़ा मुश्किल है."

मेरी बात से शिखा बुझ-सी गई. रूंधे गले से बोली, "तो क्या मैं अपने पैर पर नहीं खड़ी हो पाऊंगी?"

उसका हौसला बढ़ाने के लिए मैंने कहा, "क्यों नहीं हो पाओगी. चेष्टा और निष्ठा हो तो जरूर हो पाओगी."

शिखा फिर खुश हो गई. बोली, "कोशिश मैं कर रही हूं और निष्ठा भी है."

मैंने कहा, "फिर क्या है. तुम जरूर अपने पैरों पर खड़ी होगी." फिर मैंने उससे पूछा, "अन्नू से तुम्हारी दोस्ती कितने दिनों से है?"

शिखा बोली, "हमारा घर आसपास है. बचपन से ही हमारी दोस्ती है."

"अच्छा, एक बात बताओ."

"क्या?"

"अन्नू क्या बचपन से ही ऐसी है? मतलब, बात-बात में वह हंसती है? कोई दुख की बात हो तो भी हंसते हुए कहती है."

"अन्नू के बहुत सारे झमेले हैं. आप नहीं जानते. पिता अक्सर बीमार रहते हैं. मां के बाद घर का सारा काम उसी को करना पड़ता है. दो बहनें हैं जो कॉलिज जाती हैं. पर वे दोनों अन्नू जैसी नहीं हैं. उनके ब्वॉयफ्रेंड हैं. अन्नू को सब तरफ नजर रखनी पड़ती है. उस पर उसके छोटे भाई विजय की लेकर आए दिन कोई न कोई हंगामा होता ही है. पर अन्नू हंसते हुए सह

हंसी उसकी बातों का स्रोत है. जिस तरह संगीत के साथ तानपुरा उसी तरह बातों के साथ हंसी का फुव्वारा. उसकी सरल हंसी उसकी खूबसूरती में चार चांद लगा देती है. शायद यही कारण है कि मुझे उससे बातें करना अच्छा लगता है

रही है. वही तो सब कुछ संभाल रही है."

मैंने कहा, "सच, अजीब लड़की है अन्नू. इतनी जिम्मेदारी है. उस पर इतने संकट, हंसते-हंसते लड़ रही है इन सबसे. ऐसे में लोगों के लिए मुस्कराना भी मुश्किल हो जाता है.

शिखा बोली, "यह हंसी ही तो उसकी संजीवनी शक्ति है. अन्नू कहती है दुख, से मैं नहीं डरती. एक के बाद एक दुख आता रहे तो सहना आसान हो जाता है. मुझे तो सुख से डर लगता है. सुख के बाद दुख मिला तो? शायद तब मैं उस दुख को हंसते हुए नहीं सह पाऊंगी. इसलिए सुख से दूर ही रहना चाहती हूं."

"अन्नू ने तो लाख टके की बात कही है."

जवाब में शिखा बोली, "तब मैं आपको एक छोटा वाकया सुनाती हूं. अन्नू को तो आपने देखा है. वह खूबसूरत है इससे कोई इनकार नहीं कर सकता है. एक धनी परिवार का लड़का उससे शादी करना चाहता था. पर अन्नू तैयार नहीं हुई. मैंने उससे वजह पूछी तो कहने लगी, मैं गरीब घर की लड़की हूं. हमारे रहन-सहन, तौर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरीके में जमीन-आसमान का फर्क है. खूबसूरती की उम्र बहुत छोटी होती है. दो दिन की गृहस्थी के बाद अगर उसका मोहभंग हो गया और उसने मुझे छोड़ दिया तो मेरा क्या होगा. आसमान की उस ऊंचाई पर पहुंचकर पाताल में गिरना मुझे मंजूर नहीं. अखबारों में तो ऐसी खबरें आए दिन पढ़ने को मिलती हैं. ना बाबा ना, दो दिन की चांदनी से मुझे क्या करना. मेरे लिए दुख ही अच्छा है. कम से कम हंस तो लेती हूं!"

इसी बीच एक दिन अन्नू आई. शिखा का गाना मुझे अच्छा लग रहा है, सुनकर वह बहुत खुश हुई. बोली, "शिखा में लगन है. पर मुश्किल यह है कि उसे हल्की-सी चोट लगी नहीं कि एकदम टूट जाती है. तब उसकी रोनी सूरत देखकर बड़ी तकलीफ होती है. पर उसे ढाढ़स क्या दूं मेरी निगोड़ी हंसी सब पर पानी फेर देती है. ऐसे में मैं करूं भी तो क्या करूं?"

अन्नू की सब बातें सुनना अच्छा लगता है. दुख तो हर किसी के जीवन में होता है. पर हंसी में उसे किस तरह छिपाकर रखा जा सकता है, अन्नू इस कला में माहिर है.

काफी लंबे समय तक अन्नू नहीं आई. इतने दिन तो वह कभी नहीं लगाती. कितना ही काम क्यों न हो, फुरसत निकालकर पांच मिनट के लिए ही सही वह जरूर आती है. और हंसते-हंसते दो-चार दुखड़ा भी सुना जाती है.

एक दिन मैं न्यू कोर्ट गया था. अचानक वहां अन्नू से मुलाकात हो गई. मैं तो एकदम से चौंक गया. अन्नू की मांग में सिंदूर और हाथ में शंख. उसके साथ यमदूत-सा काला-कलूटा, लंबा-चौड़ा आदमी था. उसकी उम्र छियालिस- सैंतालिस होगी और अनुपमा कितनी होगी. बहुत हुआ तो तेईस साल की. मुझे जोड़ी बिल्कुल नहीं जंची. मुझे देखते ही अन्नू आगे बढ़कर मेरे पास आई. उस आदमी से उसने मेरा परिचय भी कराया. बोली, "ये मेरे पति हैं." फिर हंसते हुए बोली, "इन्हीं सब में थोड़ा व्यस्त थी इसलिए उधर जा नहीं सकी. दो-एक-दिन में जाऊंगी."

मेरा मन बुझ गया. ऐसी फूल-सी लड़की का ऐसा पति? और फिर अचानक यह हुआ कैसे? उसने अपनी शादी के बारे में कभी कुछ कहा भी तो नहीं?

दूसरे ही दिन अनुपमा घर आई. अकेले आते ही हंसी का सिलसिला चल पड़ा. बोली, "आपको बहुत हैरानी हो रही है न."

मैंने कहा, "हैरानी की तो बात ही है. एकदम से अचानक शादी और वह भी..."

मेरी बात पूरी होने से पहले ही वह बोल पड़ी, "समझ गई, आप क्या कहना चाहते हैं. उसकी सिर्फ शक्ल ही ऐसी है. वह ताकतवर है. मेरी जैसी चार-चार को एक साथ उठा सकता है. इतनी ताकत पर इंसान भी वह अच्छा है."

थोड़ी देर रुककर बोली, "फिर शादी किए बिना कोई उपाए भी तो अपने भाई को बचाने के लिए मुझे शादी करनी पड़ी."

कहकर फिर हंसने लगी.

मैंने पूछा, "क्या किया था तुम्हारे ने?"

अन्नू बोली, "मुहल्ले में इस-उस बीच मारपीट तो लगी ही रहती है. बार तो खून-खराबे की नौबत आ गई पति न होते तो विजय मारा ही किसी जमाने में वे भी यह सब किया थे. इसलिए विजय का खून तो हो बचा लिया. पर विजय के हाथों गया. यह सब इन्हीं के सामने हुआ यानी ये उस दिन की घटना के गवाह

मेरी जिज्ञासा बढ़ गई, "फिर?"

"फिर क्या? ये मेरे पास आए एकदम से सीधे शादी का प्रस्ताव रख बोले, 'अगर तुम शादी के लिए मान तो विजय की चिंता मुझ पर छोड़ दो मेरी पत्नी बन गई तो अपने साले को भला कैसे पकड़वा पाऊंगा. उलटे प्राण बाजी लगाकर बचाऊंगा.' बस, मैं गई."

इतना कहकर अन्नू दो मिनट तक

उसने भारी गले से कहा, "क्यों न हंसूं? भगवान तो मुझे जब्त करना चाहता है. वह मुझसे मेरी हंसी छीनना चाहता है. मुझे रुलाना चाहता है. पर मैं भी कम नहीं कि आसानी से हार मान जाऊं. रोऊं मैं? उसकी बला से!" कहकर अन्नू फिर से हंसने लगी

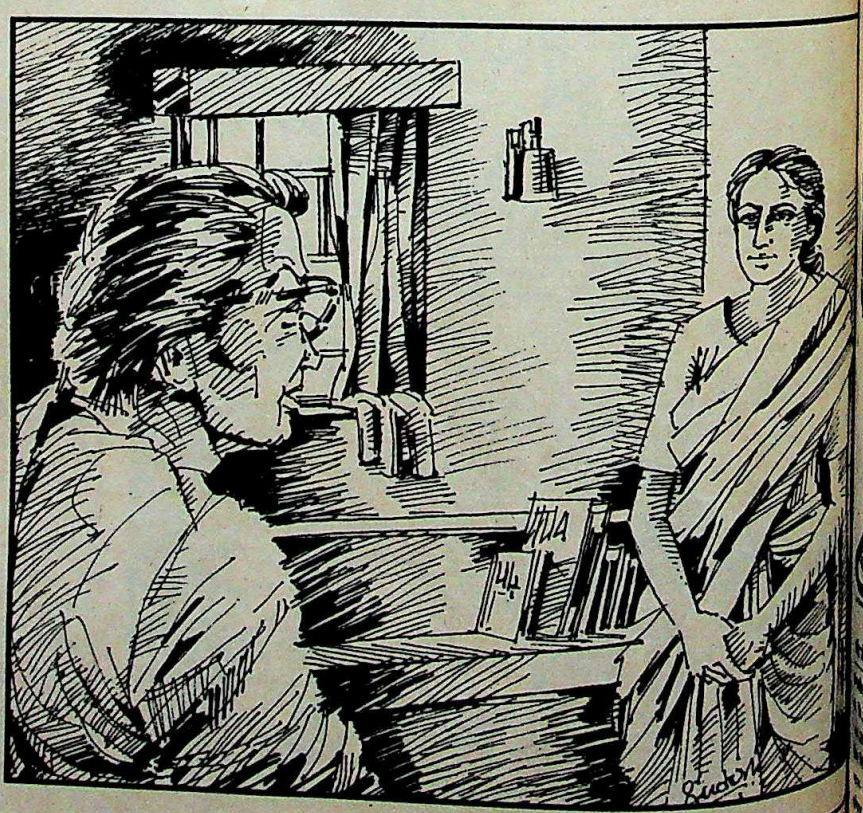

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमने टैस्ट मैचों का भी बीमा जुटाया
जब पंडितों ने बरसात का खतरा बताया

हमने अस्पताल के बिलों का भुगतान किया
बीमारी की परेशानियों को आसान किया

बसता हिमालय में गोम्पा कहीं
पाता याक की सुरक्षा वहीं

नाव जो कोंडइया की खो जाए
उसका भी पैसा वो वापस पाए

तेल कुएं और निष्फल खेती
रॉकेट का छोड़ा जाना भी

और अब, एक और नया उपक्रम
आपकी ओर एक बड़ा कदम

जीआईसी गृह वित्त लिमिटेड

हम आप साथ चलेंगे, आपके सपने सच करेंगे

भारतीय साधारण बीमा निगम
मुम्बई- 400 020.

नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
कलकत्ता- 700 071

दि न्यू इण्डिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
फोर्ट, बम्बई- 400 023.

दि ओरियण्टल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
नई दिल्ली- 110 002.

युनाइटेड इण्डिया इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
मद्रास- 600 014.

क्षेत्रीय सेवा केंद्र.

जी.आई.सी गृह वित्त लिमिटेड, सेवा केन्द्रः यूनाइटेड इण्डिया इंश्योरेंस कं. लि., क्षेत्रीय कार्यालयः शंकरनारायण बिल्डिंग, 25, एम.जी. रोड, बंगलौर 560 001, फ़ोनः 573617/573583. **बम्बईः** जी.आई.सी गृह वित्त लिमिटेड, सेवा केन्द्रः दि न्यू इण्डिया एश्योरेंस [illegible] 44-0107. **हैदराबादः** जी.आई.सी गृह वित्त लिमिटेड, सेवा केन्द्रः यूनाइटेड इण्डिया इंश्योरेंस कं. लि., क्षेत्रीय कार्यालय, पो.बॉ. नं. 1020, 3-5-817 व 818, बशीर बाग, हैदराबाद- 500 029 फ़ोनः 231996, 231894. **लखनऊः** जी.आई.सी गृह [illegible] केन्द्रः दि ओरियण्टल इंश्योरेंस कं. लि., लखनऊ क्षेत्रीय कार्यालय, 43, हजरतगंज, लखनऊ 226 001. फ़ोनः 234886. **मद्रासः** जी.आई.सी गृह वित्त लिमिटेड, सेवा केन्द्रः यूनाइटेड इण्डिया इंश्योरेंस कं. लि., मुख्य कार्यालय, 24 बाइप्रस [illegible] 473993/473007. **नई दिल्लीः** जी.आई.सी गृह वित्त लिमिटेड, सेवा केन्द्रः दि ओरियण्टल इंश्योरेंस कं. लि., क्षेत्रीय कार्यालय- 86-88, जनपथ, नई दिल्ली- 110 001, फ़ोनः 3329233. **पणजीः** जी.आई.सी गृह वित्त लिमिटेड, सेवा केन्द्रः दि [illegible] क्षेत्रीय कार्यालय, केल्को बिल्डिंग, तीसरा तल, रुआ कोम्बा-डि टोरेस नाउआस, पणजी 403 001. फ़ोनः 3770, 4297.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही. फिर हंसते-हंसते बोली, "आप उसे गलत मत समझिएगा. आप सोच रहे होंगे उसने ब्लैकमेल करके मुझे शादी के लिए मजबूर किया पर ऐसा नहीं है."

"फिर कैसा है?" मैंने आखिर पूछ ही लिया.

अन्नू बोली, "उसके प्रस्ताव को मैंने खुद मान लिया."

"क्यों?"

"क्यों क्या? इन दिनों मुझसे शादी करने के लिए कुछ लड़के परेशान कर रहे थे. उससे शादी करके मुझे उन लड़कों से छुटकारा मिल गया. अब मेरे पास फटकने का किसी को साहस नहीं. वह पहले जो कुछ था, अब उसने वह सब कुछ छोड़ दिया है. सिर्फ आत्मरक्षा के लिए अपनी ताकत को बरकरार रखा है. मुझे भी

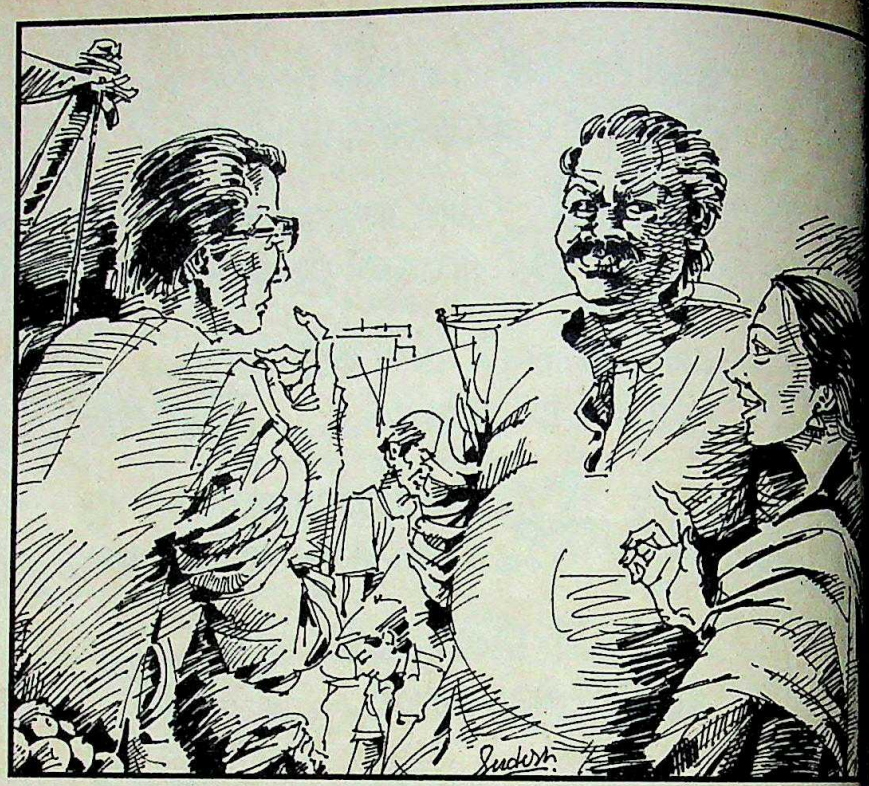

फिर अन्नू लंबे अरसे तक नहीं आई. अचानक एक दिन हाजिर हुई. इस बार चार-पांच महीने या उससे भी ज्यादा दिनों बाद आई थी. मैं तो उसे भूल ही बैठा था. लेकिन जब वह मेरे सामने आई तो उसका वह रूप देखने को मैं कतई तैयार नहीं था

वह अपनी तरह तैयार करना चाहता है. मेरे हाथ-पैर दबा-दबाकर कहता है कितने कोमल हैं. मैं तुझे एक्सरसाइज सिखाऊंगा. यह कहकर वह मुझे उछालता है."

मैंने कहा, "तुम्हें डर नहीं लगता. कहीं चूक हो गई तो?"

अन्नू हंसते-हंसते बोली, "गिरी तो उसी का नुकसान होगा. मेरा क्या?"

मैंने पूछा, "तुम्हारा पति क्या करता है?"

अन्नू बोली, "बिजनेस है. अब वह ईमानदारी और मेहनत से काम करता है. कमाता भी अच्छा है. अच्छा इंसान है. मेरी बातें सुनता है."

हंसते-हंसते सारा कुछ बताकर अन्नू चली गई.

डेढ़-दो महीने बीत गए. अन्नू का कोई पता नहीं था. एक दिन मैंने शिखा से पूछा, "अन्नू का क्या हाल है?"

बोली, "वैसे मजे में है पर उसके पिता गुजर गए हैं. बहनों की भी अन्नू ने शादी कर दी है. और भाई कलकत्ता छोड़कर कहीं और चला गया है. पर अन्नू को बताकर गया है."

सुनकर मुझे अच्छा लगा. चलो, उस लड़की के सिर से बहुत सारी जिम्मेदारियां उतर गईं.

अब अन्नू पहले की तरह नहीं आती. आ ही नहीं पाती है. आती भी तो ज्यादा देर नहीं रुकती. कहती है, "बहुत काम है. वह तो बिजनेस में ही रहते हैं. कभी-कभी तो बिजनेस टूर में दो-चार दिन के लिए बाहर भी जाना पड़ता है. इसलिए घर छोड़कर नहीं आ पाती हूं. सब कुछ अकेले ही संभालना पड़ता है."

मैंने पूछा, "स्कूल में नौकरी कर रही हो न ?"

बोली, "नहीं. नौकरी तो कब की छोड़ दी है. वह कहता है, 'तुम्हें नौकरी करने की जरूरत नहीं. इससे अच्छा तुम मेरे लिए बिजनेस लेटर लिख दिया करो. एकाउंटस वगैरह देख लिया करो.' इसलिए नौकरी मैंने छोड़ दी."

कहकर फिर वही हंसी.

मैंने कहा, "हां अब जरूरत नहीं रह क्यों करोगी नौकरी. इससे अच्छा तो बिजनेस देखना है."

फिर अन्नू बहुत लंबे अरसे तक आई. अचानक एक दिन हाजिर हुई बार चार-पांच महीने बाद आई. मैं तो भुला ही बैठा था?

पर जब वह मेरे सामने आई तो वह रूप देखने को मैं कतई तैयार नहीं मांग सूनी थी, कलाई भी खाली. सिर्फ सफेद साड़ी. मैं हैरान था कि यह सब हो गया?

लेकिन मेरे कुछ पूछने से पहले ही बोली, "तकदीर में नहीं था. वह चला मुझे छोड़कर."

"क्या हुआ था."

"होना क्या था. खून कर दिया लोगों ने जिनसे उसने मेरे भाई को था. उन लोगों ने अपना बदला ले लिया."

कहकर अन्नू फिर हंसी.

उसकी हंसी मुझे पहले जैसी नहीं एकदम फीकी लगी.

मैंने पूछा, "अब क्या करोगी?"

बोली, "क्या करूंगी. पति का बड़ा कारोबार है. वही देख रही हूं. कमी नहीं है. घर, कार सब है. सुखी हूं."

कहकर हंसते-हंसते रो पड़ी अनु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आंखों की सुरक्षा के लिये सर्वाधिक विश्वसनीय

श्वाबे की

सिनेरेरिया मैरिटिमा

जर्मन होम्योपैथिक औषधि

कोई साइड इफेक्ट नहीं

आंखों के कोर्निया और लैंस को पूर्ण सुरक्षित रखती है। इसलिये विश्व भर के नेत्र विशेषज्ञ डॉक्टर आंखों को स्वस्थ व सुन्दर बनाए रखने के लिये सिनेरेरिया मैरिटिमा इस्तेमाल करने की सलाह देते हैं।

SCHWABE

श्वाबे सिनेरेरिया मैरिटिमा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपन्यास

विषय साधना

गहरी दृष्टि का नितांत अभाव

शुभा वर्मा के उपन्यास 'कटमंगूर' का शिल्प-प्रयोग व्यूह तो बहुत आकर्षक है परंतु कहानी के संघर्ष संकल्प से उसका तालमेल बैठता नहीं दिख रहा है. कृति के आरंभ की रहस्यावृत्त आध्यात्मिक भूमिका पढ़कर पाठक के भीतर गहरी जिज्ञासा यह जानने के लिए उत्पन्न होती है कि किन प्रश्नों का उत्तर और किन समस्याओं का समाधान खोजने के लिए गुरु-शिष्य दोनों अपने-अपने वृत्त में समर्पित जीवन जी रहे हैं.

कटमंगूर
उपन्यास
शुभा वर्मा
विवेक प्रकाशन,
जवाहर नगर,
दिल्ली
कीमत: 35 रु.
कुल पृष्ठ: 184

लेकिन इस भूमिका के बाद कहानी जो रास्ता लेती है उसमें कुछ और ही रंगत होती है. वह मूल रूप में सत्ता, काला बाजार और भ्रष्टाचार की त्रिवेणी में 'पति' सहित प्रेमियों की एक लंबी कतार को तारती आधुनिक मेनका बनाम प्रमिला राजदान की कहानी बन जाती है. तब लगता है कि ऐसी छिछली कहानी से जीवन के किन्हीं गहरे प्रश्नों के उत्तर पाने की आशा नहीं की जा सकती.

वैभव-वासना की एक पुतली के क्रीड़ा-मृग बने और फिर उससे ऊबकर आध्यात्मिक साधना में उतरकर सिद्ध पुरुष के रूप में प्रतिष्ठित गुरु स्वामी सत्यानंद ने ब्रह्मज्ञान की प्यास में आतुर अपने एकनिष्ठ शिष्य देवव्रत को दो वर्षों के लिए मुक्तभोग की अपनी पिछली दुनिया में अनुभवों के संग्रहार्थ भेजा. उसे कौन-सी अनुभव-उपलब्धि होती है? अथवा क्या वह गुरु की प्रतिज्ञानुसार जैसी सामर्थ्य लेकर लौटता है? इस प्रकार के प्रश्न उलझ-उलझकर पाठकों को भी उलझा देते हैं.

कृति की नायिका प्रमिला अति सामान्य परिवार से उछल और रूप-यौवन की सीढ़ी पर चढ़ एक बूढ़े नेता की अटारी पर कब्जा कर लेती है. वह उसे अथाह धन संपन्न प्रिंस राजदान की झोली में डाल देता है. बाद में इन दोनों के सहारे वह समाज में ऊंची हैसियत बनाती है. उठती उंगलियों से बचाव के लिए एक 'पति' नामक जीव को फांसती है. वह पर्यटन विभाग का मामूली गाइड रघुवीर गैर-मामूली ग्लैमर में चौंधियाकर समर्पित हो जाता है.

इस 'मेमना जी' की आड़ में प्रमिला का स्वैराचार और बढ़ जाता है. पति और प्रेमियों को एक मंच पर भोगती इस कलाकार कामिनी को तब झटका लगता है जब उसका मेमना एक दिन इस नरक से मुक्त हो जाता है. इसके बाद उपन्यास पाठकों को एक झटका तब लगता है जब वे देखते हैं कि इस घटना से प्रमिला की भोग शैली में एक नया, अनोखा निखार आ जाता है.

इस प्रकार दुनिया को अपनी 'जूती की नोक पर' रखने वाली आजाद नारी प्रमिला राजदान की करामाती कहानी को शुभा वर्मा ने अलग-अलग पात्रों की कहानी और टेप-मैटर के साथ बहुत घुमावदार रूप में प्रस्तुत किया है. इससे कहानी का आकर्षण अंत तक बना रहता है.

—विवेकी राय

समाजशास्त्र

दलितों के मुद्दे

एक अहम सवाल पर बहस

पहले असम, फिर पंजाब और अब कश्मीर में रोज-रोज होने वाली मौतों ने बता दिया है कि किस तरह लोग मात्र संख्याओं में बदल जाते हैं. जिस दिन मौतों की संख्या बढ़ जाती है उस दिन लगता है कोई बड़ी बात हुई वरना कम मौतों को हम भी 'कुछ नहीं' वाले अंदाज में लेते हुए निश्चिंत रहा करते हैं.

और जब यही घटनाक्रम दमन, बलात्कार, हत्या, अपमान वगैरह के रूप में देश के करोड़ों हरिजन-वनवासियों के साथ घटित होता है तो यह आम जनता के मानस को उतना भी नहीं झकझोरता. इस सबके खिलाफ दलित आंदोलन धीरे-धीरे उभरा है, मजबूत हुआ है. लेकिन इस चेतना के जवाब में अत्याचारों का सिलसिला भी बढ़ गया है.

ये अत्याचार किस हद तक बढ़ गए हैं इसके एक दस्तावेज के रूप में 'लोकायन समीक्षा' का दलित उत्पीड़न विशेषांक निकला है. दिल्ली की एक स्वयंसेवी संस्था द्वारा प्रकाशित यह पत्रिका पहले भी देश भर में काम कर रही छोटी जमातों, स्वयंसेवी संस्थाओं के कामकाज को एक मंच देती रही है.

पत्रिका के सह-संपादक मोहनदास नैमिशराय (जिन्होंने इस पूरे अंक की सामग्री जुटाई) ने सिर्फ एक वर्ष की दलित उत्पीड़न की प्रमुख और चर्चित घटनाओं को ही इस अंक में समेटकर एक भारी प्रभाव डालने का काम कर दिया है. सरकारी आंकड़ों के अनुसार ही 1980 में पूरे देश में हरिजन उत्पीड़न की 13,000 से अधिक घटनाएं हुईं. मोहनदास ने जनसत्ता, नवभारत टाइम्स, चौथी दुनिया, आर्यावर्त, हिंदुस्तान, इंडियन एक्सप्रेस, टेलिग्राफ जैसे अखबारों में छपी रिपोर्टों और खबरों को ही एक जगह समेटने का काम किया है. और कई हज़ार घटनाओं में से सौ के कुछ ऊपर घटनाओं संबंधी खबरों को पढ़कर यह सोचने के लिए मजबूर होना पड़ता है कि क्या इस देश के लोग सचमुच 21वीं सदी के दरवाजे पर दस्तक दे रहे हैं.

दलितों से जुड़े मुद्दों पर लिखने वाले लोगों में प्रमुख मोहनदास ने इस पत्रिका में उत्तर प्रदेश के भोपा में हुए हरिजन हत्याकांड के संबंध में तैयार अपनी विस्तृत रिपोर्ट भी सम्मिलित की है. यह रिपोर्ट इस हत्याकांड की सचाई को सामने लाने के साथ ही भारतीय किसान यूनियन और उसके नेता महेंद्र सिंह टिकैत के जातिवादी स्वभाव को भी उजागर करती है. साथ ही यह पत्रिका देश की अंग्रेजी पत्रिकाओं में जातिवादी स्वरूप को और उनके जड़ से उखड़े रूप को समाज के सामने प्रकट करती है.

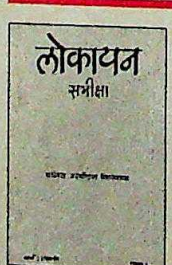

लोकायन समीक्षा
दलित उत्पीड़न
विशेषांक
लोकायन, अलीपुर
रोड, दिल्ली-54.
कीमत: 20 रु.
कुल पृष्ठ: 150

लोकायन समीक्षा का यह विशेषांक सामग्री चयन और संपादन के खयाल से कुछ ढीला-ढाला जरूर है पर विषय के चुनाव में और उसमें हल्कापन न आने देने के मसले पर इसमें कोई समझौता नहीं किया गया है. और यही इसके कुल अंक को काफी बढ़ा देता है.

—अरविंद मोहन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

RADEUS/AMC/036/90-H

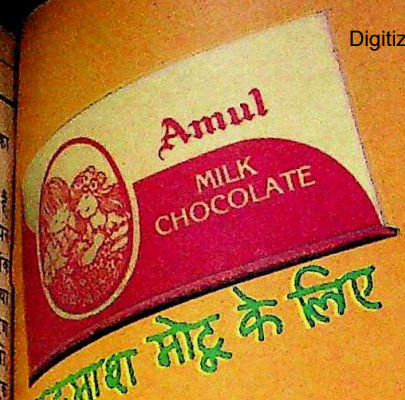

बदमाश मोटू के लिए

रोती पिंकी के लिए

छोटू के लिए

प्यारी प्रीति के लिए

चाचे चिंटू के लिए

मेरी टीचर के लिए

यह सारे गिफ्ट मेरे लिए

अमूल चॉकलेट-प्यार की मीठी भेंट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लायक यानी किस लायक

कलाकार पर किसी एक फिल्म की सफलता का नशा देर तक छाए रहना और प्रोड्यूसरों द्वारा उसी फिल्म की तर्ज पर नई फिल्मों की लाइन लगा देना कोई नई बात नहीं. अपनी सफल फिल्म 'चालबाज' का असर श्रीदेवी पर भी गहरा पड़ा और उन्होंने उसके डबलरोल की तर्ज पर शुरू की गई सभी फिल्में स्वीकार कर लीं. मसलन, 'खुदा गवाह', 'गुरुदेव', 'लमहे', 'राम की सीता श्याम की गीता' वगैरह

इस पर उनसे पूछा गया, "आप नए-नए रोल लेने की जगह दोहरे रोल के उसी पुराने नुस्खे पर क्यों अटकी रहना चाहती हैं जिसे आपके समेत कई-कई कलाकार कई-कई बार दोहरा चुके हैं?"

"क्योंकि अब दर्शक मेरी फिल्मों में सिर्फ एक श्रीदेवी को देखकर संतुष्ट नहीं हो पाते. दूसरी हीरोइन की जगह भी उन्हें मुझे ही

श्रीदेवी: असर उग्र

देखना होता है," श्री
अहंकार भरा जवाब
जवाब सुनकर हर किसी
हो जाना स्वाभाविक ही

इसकी प्रतिक्रिया न
और क्या होता? 'दूसरी
ने इस बयान का पोस्टम
डाला, 'यह कौन नहीं
'खुदा गवाह' में वे मां
दोनों की भूमिका कर
जाहिर है, उन्होंने मां
रिहर्सल शुरू कर दी है
लिए यह ठीक भी है.
बात के समर्थन में इन
डायरेक्टर मुकुल आनंद
बयान उछाला है जो
श्रीदेवी की तारीफ में
जिसे श्रीदेवी खुद सबको
से सुनाती हैं. यह
"श्रीदेवी तो अब नरगिस
इंडिया' जैसे रोल करने
गई हैं." 'लायक' शब्द
प्रतिभा की जगह उम्र
भला कौन किसे रोक

अमृत मुख से विष वर्षा

गालियों की गंदगी साथ लेकर चलने का संस्कार अमृता सिंह में

अमृता: करारा झटका

कुछ ऐसी जड़ें जमा चुका है कि अपना नुकसान होते देख भी अमृता इस विष को अमृत करने की कोशिश नहीं कर पातीं.

बात सिर्फ इतनी थी कि दो हीरोइनों वाली उस फिल्म में, जिसके लिए अमृता को अभी-अभी साइन किया गया था, पहले किसका नाम दिया जाए? पहले साइन की गई बिंदास हीरोइन अपना नाम पहले चाहती थी.

पर अगर अमृता अपनी भावनाओं को, चाहे वे प्यार की हों या नफरत की, अपने तक ही सीमित रहने दें तो उन्हें कोई मर्द कहे ही क्यों? उन्होंने निर्माताओं की इस जोड़ी को तो खरी-खोटी सुनाई ही, उनके सामने ही फोन उठाकर उस सीनियर हीरोइन की भी खबर ले डाली.

मगर बाप और बेटियों, पिता और पुत्र सभी को एक साथ संभालने वाली वह हीरोइन भी कुछ कम तो नहीं. उसने भी कुछ ऐसी रसवर्षा की कि अमृता की आग में घी नहीं, पेट्रोल पड़ गया. फोन पटककर उन्होंने गालियों, गुस्से और गंदगी का जो नया पिटारा खोला तो सामने बैठे दो-दो मर्द निर्माता पानी-पानी हो गए. उन्होंने गुस्से में उफनती अमृता को उसी हाल में, वहीं छोड़ चुपचाप सटक लेना ज्यादा बेहतर समझा और घर जाकर अमृता को फोन करवा दिया, "वह फिल्म बनाने का इरादा हमने फिलहाल छोड़ दिया है."

कल, आज और कल, सब मैं

इसे कहते हैं विश्वास! यह बात पक्की तरह पता होने पर भी कि मियां कोई सत्यवान तो हैं नहीं, न ही अपना कोई दावा सावित्री होने का है, अभिनेत्री सोनी राजदान सौत के सामने पति को खींच लाईं. और अब निर्देशक पति महेश भट्ट, जिन्हें वे खुद उनकी पत्नी के पास से उठा (या उड़ा) लाई थी, पूरी तरह उनके बस में बताए जाते हैं.

'आशिकी' की सफलता की खुशी में दी गई पार्टी में महेश जैसे-जैसे मदमस्त होते गए वैसे-वैसे उनका व्यवहार आशिकाना होता गया. वैसे उनके लिए यह कोई नई बात नहीं है. फिर भी इस पार्टी में यह प्रचारित करने की कोशिश शुरू से ही थी कि वे इस फिल्म की हीरोइन अनु

सोनी: खामखयाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

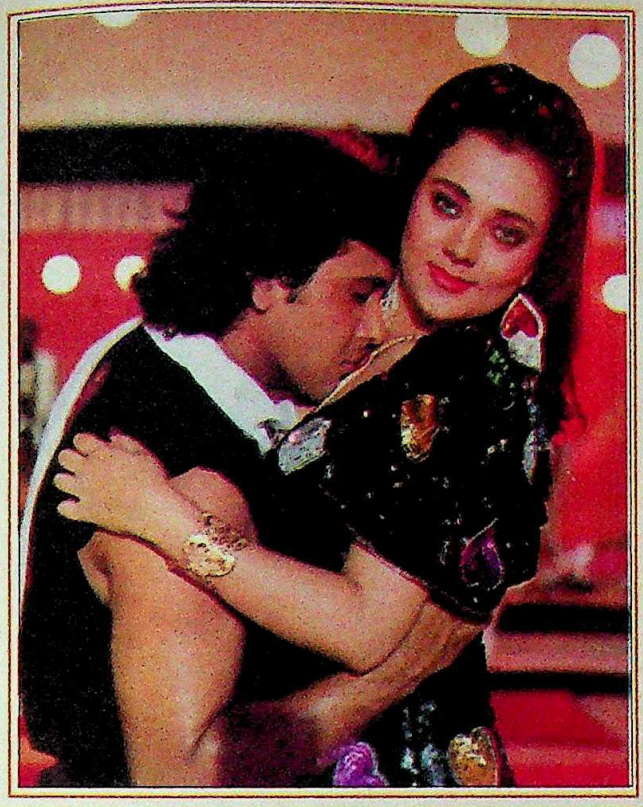

यारों ने नमक-मिर्च के साथ बात पहुंचा दी तीनों अक्खड़ों तक. और उन्होंने बयान छपने के पहले-पहले जवाब पहुंचा दिया घायल गोविंदा तक, "सिगरेट, शराब और सुंदरी—तीनों मर्दों की शोभा हैं. खुद महिलाओं की तरह मटकने वालों की इज्जत इसी में है कि इनसे दूर रहकर खुद को अपने भेद खुलने से बचाए रखें."

शरीर से घायल गोविंदा का मन इससे इतना घायल हुआ कि उनके साथ काम कर चुकी एक हीरोइन हालचाल पूछने आई तो गोविंदा यह सब बताते बताते बेहद भावुक हो गए और भावनाओं के बहाव में उन्होंने उसका हाथ पकड़ लिया. हीरोइन सीधी जा पहुंची इन तीनों तिलंगों के पास. शायद सहानुभूति बटोरने. और तब से तीनों ही घटना में कुछ जोड़-घटाकर कच्चा चिट्ठा सुनाने लगे हैं. लेकिन उसकी शुरूआत हर जगह, हर कोई, हर बार एक ही तरह से करता है, "पिछले दिनों, जब गोविंदा के पैर भारी थे..."

समदर्शी रवैया, पलड़ा भारी

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई करोड़ के खर्च से एक बहुत बड़ी फिल्म बनाने की योजना लेकर अनिवासी भारतीयों की जो टीम बंबई के घाट उतरी है वह तो आई ही जयप्रदा को ध्यान में रखकर. पर बताया जाता है कि दूसरों के कहने पर जयप्रदा ने वह कीमत मांगी, जिसे सुनकर अमिताभ बच्चन भी एक बार शरमा जाएं. दरअसल इस टीम की टीमटाम है ही इतनी जबरदस्त और प्रोजेक्ट इतना आकर्षक कि किसी के मुंह में पानी आ जाए. लेकिन इतना पानी भी क्या कि अपना ही पानी उतरने की नौबत आने लगे?

जयप्रदा की चांद-सितारों को छू लेने वाली यह कीमत सुनकर टीम ने कोई दूसरा नाम भी सोच लेने की जरूरत महसूस की. इन अनिवासियों में सभी गुजराती थे. अतः मुकाबले का एक बड़ा नाम सूझने में देर नहीं लगी- मल्लिका साराभाई! आखिर रोल की सबसे बड़ी दो जरूरतें—कुशल नृत्यांगना होना और सुंदर आंखें मल्लिका पूरी करती ही हैं. रही बात उम्र की, तो यह रोल टीन एजर का है ही नहीं. और फिर, विदेशों में मल्लिका का नाम जयप्रदा से कोई कम तो नहीं.

टीम को मल्लिका के नाम की

मल्लिकाः मुकाबला टक्कर का

माला जपते देख जयप्रदा के पैरों तले जमीन खिसक गई. अब वे इस कोशिश में हैं कि रोल चाहे जिसे मिल जाए, मल्लिका को न जाए. मजा यह है कि मल्लिका की ओर से कोई दौड़धूप नहीं है. 'मिले तो ठीक, न मिले तो ठीक' का समदर्शी रवैया अपनाने के बावजूद उनका पलड़ा भारी है

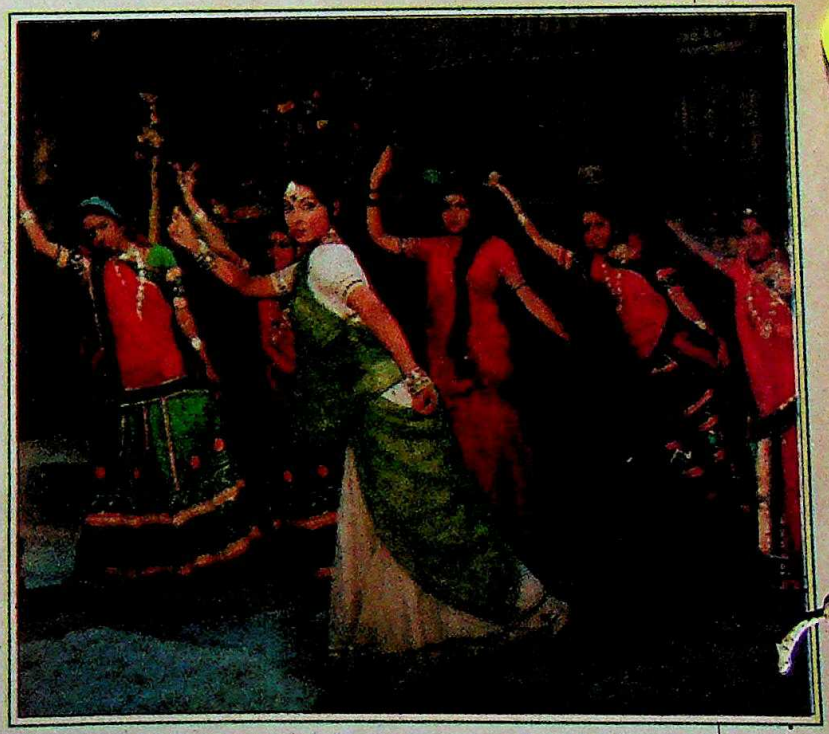

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्गा: दोहरी भूमिका

• पंडित जसराज की बेटी और वी. शांताराम की नातिन होने के चलते 20 वर्षीया **दुर्गा जसराज** के लिए चुनाव करना मुश्किल रहा होगा तभी उन्होंने दोनों आनुवांशिक गुणों का फायदा लेने का फैसला किया. एक मराठी टीवी धारावाहिक में वे एक बड़ी गायिका की भूमिका निभा रही हैं. अपने पिता के साथ तानपुरे पर संगत और शिकाकाई साबुन की मॉडलिंग करके कुछ प्रसिद्धि पा चुकी दुर्गा कहती हैं, "मैं जिस भी पक्ष में कमजोर पड़ी उसे छोड़कर दूसरे पर पूरा ध्यान देने लगूंगी." अमोल पालेकर के निर्देशन में बन रहा यह 'पोलखुण' नामक धारावाहिक क्रांतिकारी है क्योंकि इसमें एक महिला को रसोई की देहरी लांघकर बाहर स्टेज तक आते दिखाया गया है.

• समानताएं इतनी सारी हैं कि कोई आंख नहीं मूंद सकता. 20 सितंबर को जब केंद्रीय

राउतराय: मानहानि का दावा

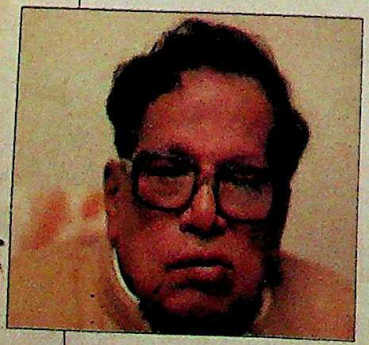

प्रमोद पुष्करणा

पर्यावरणमंत्री **नीलमणि राउतराय** इलॅस्ट्रेटिड वीकली ऑफ इंडिया के खिलाफ 50 लाख रु. का मानहानि का दावा करने गए तो पूर्व मुख्यमंत्री जानकी बल्लभ पटनायक के दावे की याद आई. वीकली ने राउतराय को 'सठिया गया बूढ़ा मूर्ख.... जो बकरी का चरवाहा बनकर ठीक रहता' लिख दिया. राउतराय की गाड़ी जो चला रहा था, वही पटनायक को भी अदालत तक ले आए थे. वकील भी उन्होंने पटनायक का ही रखा पटनायक के मामले में तो वीकली को माफी मांगनी पड़ी थी. क्या फिर वही होगा?

वाडियार और शाही खजाना

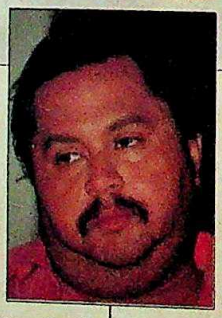

• संपत्ति तो खूब सारी है लेकिन संपत्तिकर चुकाने लायक पैसे नहीं हैं. ऐसे में बेचारे महाराज क्या करें? पिछले पखवाड़े मैसूर रियासत के आखिरी शासक 37 वर्षीय **श्रीकांतदत्त नरसिंहराजा वाडियार** ने अपने खजाने में धूल फांक रही अमूल्य संपदा को सामने लाने का फैसला किया. और इसे देखने आने वाली 'जनता' से फीस वसूलने का फैसला करने वाले वाडियार ने कहा, "ये सारे गहने-जवाहरात राजमहल के खजाने में पड़े थे." इनमें मोतियों से बनी दरी, 400 वर्ष पुराना राजमुकुट, हीरे जड़े हत्थों वाली सोने की तलवारें और इसी तरह की चीजें शामिल हैं. 5.20 करोड़ रु. मूल्य की इन चीजों पर सशस्त्र रक्षकों और इफ्रा-रेड उपकरणों की निगरानी रहेगी. वाडियार को उम्मीद है कि इसे देखने आने वालों की फीस से ही उन्हें हर वर्ष 20 लाख रु. मिल जाया करेंगे. यानी कर विभाग वालों को अपनी गणना में एक और 'धन' को शामिल करना होगा.

• गोल धरती के एक तरफ भारत है तो दूसरी ओर अमेरिका. पहले में पिता का 'डंका' बजता है तो दूसरे में बेटे का. और जब मुंबई में तबलावादक पिता अल्ला रक्खा और बेटे **जाकिर हुसैन** का मिलन (मध्य रात्रि के बाद) मात्र कुछ घंटों के लिए ही हुआ तो रिकार्ड बनाने वाली कंपनी मैग्नासाउंड के कर्ताधर्ता शशि गोपाल मौका नहीं चूके. तुरंत स्टुडियो बुक हुआ. 72 वर्षीय उस्ताद की सेवा में एलिवेटर लगाया गया. उस्ताद ने कहा, "साथ-साथ रिकार्डिंग का मौका अरसे बाद मिला." 'टुगेदर' (साथ- साथ) नामक इस कैसेट के जारी होने के दो हफ्ते में ही 20,000 कापियां बिक गईं. पूरब-पश्चिम का मेल भला कैसे नहीं बिकेगा!

अल्ला रक्खा के साथ जाकिर

अनुराधा: युवा राध

• पहले तो वे सीता क में लगे रहे फिर उन्होंने तलाश शुरू की और पखवाड़े उन्होंने अप धारावाहिक 'कृष्ण' के लि की बांसुरी पर नाचने वा भी ढूंढ़ ली. ये हैं (अनुराधा का मतलब होता है). वे रायगढ़ के बिजयेंद्र सिंह की पोती कृष्ण भक्त भी हैं.

अपनी नई भूमिका के अनुराधा कहती हैं, "मेरे राधा बनना लिखा है ब्रिटिश थिएटर एसोसिए प्रशिक्षण पाई अनुराधा क्षेत्रीय भाषाओं की कई फि काम कर चुकी हैं. प्रसि फिल्म 'जानी मेरा नाम' हेमामालिनी के बचप भूमिका निभाई थी. और राधा की भूमिका निभाने पूरी तरह तैयार हो गई हैं उन्हें भाग्य के लेख से कौन कर सकता था!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुलंद तस्वीर

हमारी जगमगाती खुशियो की एक झलक

एक आनंद है दीपावली का

दूजा स्कूटर है बजाज का

एक पर्व है भारत का

दूजा गर्व है भारत का

लाखों लाखों हैं दोनों के चाहनेवाले

दोनों ही बुलंद भारत की

बुलंद तस्वीर दर्शानेवाले.

बजाज स्कूटर्स :
सुपर, चेतक, प्रिया और फ्रेब

bajaj auto

You boss! can't beat a bajaj

बजाज ऑटो लि. आकुर्डी, पुणे ४११०३५.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

15 नवंबर 1990 7 रुपए

इंडिया टुडे

लालू प्रसाद यादव

बिहार: मंडल पर मारामारी

जनमत सर्वेक्षण: फतेहपुर और अमेठी

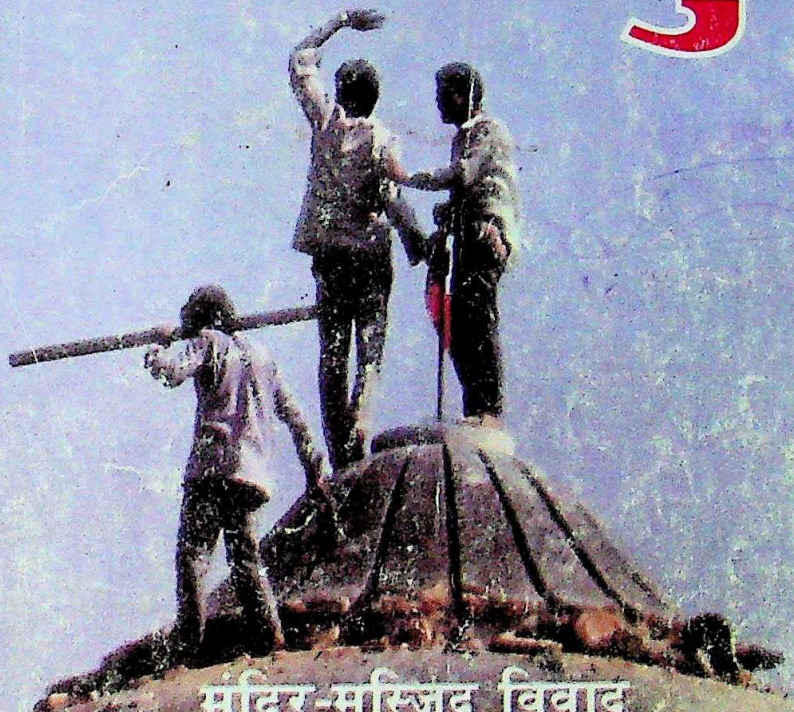

विवादास्पद ढांचे के गुंबद पर भाजपा कार्यकर्ता

मंदिर-मस्जिद विवाद

वोटों के लिए घमासान

बातचीत:
- वी.पी. सिंह
- लालकृष्ण आडवाणी
- राजीव गांधी

- भाजपा: हवा बांधने की हसरत
- कांग्रेस (इ): दुविधा की राजनीति

वी.पी. सिंह

प्रधानमंत्री: हर तरफ से नाकामी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ही हाथ करने की तैयारी

...पी. सिंह की तिकड़मों और भयानक ...र्ती ने राष्ट्रीय मोर्चा को पतन की कगार पर ...ा बढ़ा किया. लेकिन भविष्य अनिश्चित है. ...नता को भरोसा नहीं है कि हिंदू लहर ...तों में बदलेगी ही जबकि इंका इस हाल में ...ता में आना नहीं चाहती.

...वरण कथा.....16

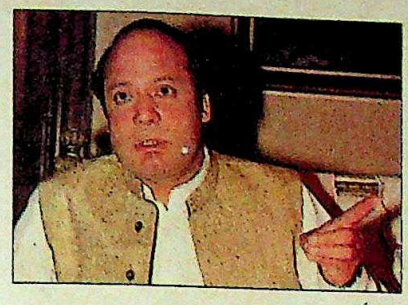

वोट की ताकत का एहसास

बेनजीर की पापीपा को धराशायी करके इस्लामी जम्हूरी इत्तेहाद सत्ता में आ तो गया पर उसकी मुश्किलें भी अभी शुरू ही हुई हैं. एकजुट रहना और चुनावी वादों को पूरा करना आसान नहीं. नवाज शरीफ तथा बेनजीर से बातचीत भी.

खास रपट.....52

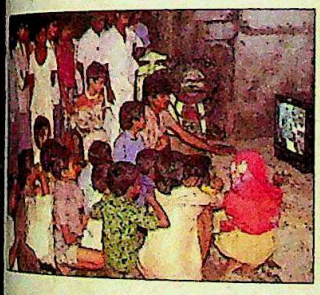

...र-घर तक पहुंचा

...ूरदर्शन के उबाऊ कार्यक्रमों की बदौलत ...र कई उद्योगपति अपने ग्राहकों के मनोरंजन ...के लिए निजी केबल टीवी लगा रहे हैं. देश ...र में 25,000 डिश ऐंटिना ग्राहकों को ...ेशी कार्यक्रम भी उपलब्ध करा रहे हैं. ...ोबार तेजी से बढ़ रहा है.

...ोबार.....71

टूटे सपनों के आईने

देश के दो प्रमुख चुनाव क्षेत्रों—अमेठी और फतेहपुर—में जनमत सर्वेक्षण से आश्चर्यजनक नतीजे निकले हैं. दोनों ही जगहों पर राजीव गांधी ने वी.पी. सिंह और लालकृष्ण आडवाणी को पीछे कर दिया है. दोनों क्षेत्रों की स्थिति पर भी एक नजर.

खास रपट.....30

...ेल पर मारामारी

...ण्डल आयोग की रिपोर्ट से शहरों में ही ...ठे नहीं उठीं बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में जाति ...े भी बढ़ने लगा है. इससे खासकर बिहार ...े जातिगत विरोधी जातियों—भूमिहारों ...ी यादवों के मैदान में आ जाने से हिंसा ...ी वारदातों का दौर भी चल पड़ा है.

...ेष लेख.....85

सैलानियों का संकट

पर्यटन विभाग अगले साल 'भारत दर्शन वर्ष' मनाने की तैयारियां कर रहा है. पर्यटकों के स्वर्ग कश्मीर की बदहाली से आने वाली मुश्किलों और आर्थिक तंगी के दौर इसके सामने सबसे कड़ी चुनौतियां हैं. नई योजनाओं के गुण-दोषों पर एक खोजी रपट.

पर्यटन विशेष.....89

अगले पन्नों पर

कसौटी.....7
राजरंग.....8
तेवर.....10
हिंदोस्तां हमारा.....12
आवरण कथा
विश्वनाथ प्रताप सिंह:
दो-दो हाथ करने की तैयारी.....16
खास रपट
अमेठी और फतेहपुर:
टूटे सपनों के आईने.....30
आजकल
गुजरात: टूटा गठजोड़.....37
राजस्थान: दोहरी मार.....38
कर्नाटक: बागी सत्ता में.....40
बिहार: बेकारों पर ताला.....42
मध्य प्रदेश: राहत की सांस.....44
पंजाब: बिगड़ते हालात.....49
कटाक्ष.....50
खास रपट
पाकिस्तान:
वोट की ताकत का एहसास.....52
राज्य-दर्पण.....63
अपराध
गुजरात:
गुंडा गिरोहों की गिरफ्त.....64
व्यापार चक्र.....69
कारोबार
केबल टीवी: घर-घर तक पहुंचा.....71
महंगाई: हर कोई लपेट में.....75
शेयर बाजार.....81
विशेष लेख
बिहार: मंडल पर मारामारी.....85
पर्यटन विशेष
सैलानियों का संकट.....89
अंतरंग.....100
आरपार.....101
कहानी.....104
किताबें.....108
परदे के उस पार.....110
चर्चित चेहरे.....112

आवरण: प्रमोद पुष्करणा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Bestsellers

PENNED BY LUXOR

PILOT

Pilot Hi-Tecpoint 05 by Luxor.

BALL POINT PENS

Plastic barrels:
Left to Right:
Ranger, Monami
and Trendy.

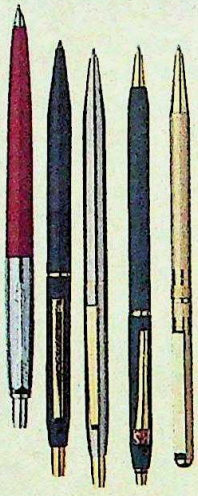

Metal barrels:
Left to Right Jotter, Crola,
Sterling ,Chrismatic and Goldline.

MARKERS

Left to Right Luxor Excel
2-in-1 Marker, Monami
Oil Magic Twin Dual Marker,
Excel Metal Body Permanent
Marker in fine (bullet)
and broad (chisel) tips.

GIFT SETS

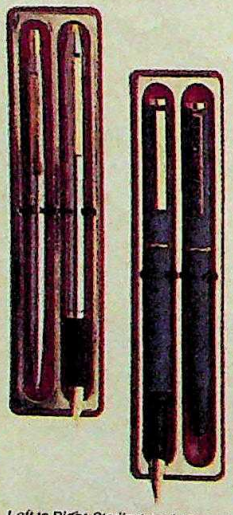

Left to Right Sterling and Vintage.
Also available gift set
of Crola.

CHILDREN'S RANGE

Left to Right
Luxor Disney Funset
Colour Pen,
Luxor Bambino Colourset Pen,
Disney Inoxcolour Plastic Crayons,
Luxor Donald Duck Magicset Colour Pen,
Luxor Sign Pen,
Luxor Mickey Mouse Sketch Pen
and Luxor Colour Pen.

MICROTIP/ FINE WRITING PENS

Left to Right Hi-Roller,
Finewriter,
Graphic 05
and Stylo microtip.

HILITERS

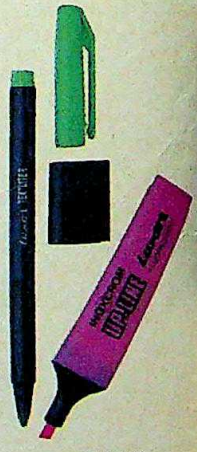

Left to Right Luxor
Fluorescent
Textliter
and Luxor
Fluorescent Hiliter.

Vital tips for exciting writing

Available in a wide choice of styles, finishes, body colours, ink colours and tips. For a variety of applications. Available: refillable inks and refills manufactured by Luxor for all pens featured here.

Luxor®

LUXOR PEN CO., 229, Okhla Industrial Estate, Phase III, New Delhi-110020, India. Tel.: 633318, 6833372, 6835607. Tlx: 031-75069 SIGN IN. Fax: 011-6847602. Tel.: Delhi (Sales): 522956, Bombay: 6730251, Calcutta: 250407.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

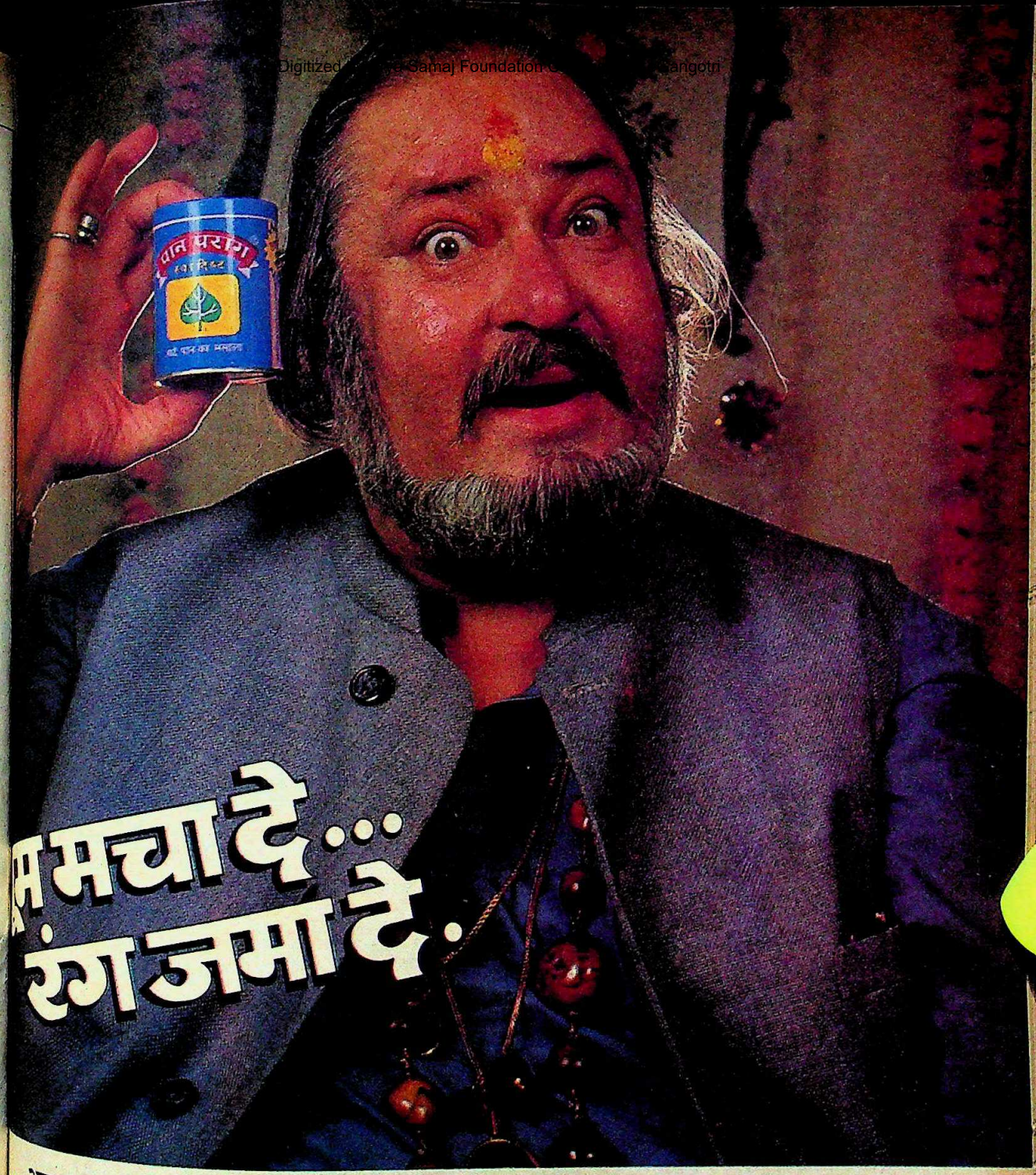

मचा दे... रंग जमा दे...

आपका मनपसंद पान पराग, डिब्बे और सुविधाजनक पाउच में.

अब स्वादिष्ट पान पराग जैसे चाहें वैसे लीजिए. डिब्बे या पॉकेट पाउच में ...जहाँ जी चाहे ले जाइए — लुत्फ़ उठाइए. और पसंदीदा पान पराग के साथ ज़िंदगी की मौज-मस्ती का मज़ा लीजिए.

पान पराग®

पान मसाला

भारत का सब से अधिक बिकने वाला पान मसाला

कोठारी उत्पादन

everest/d86/KP/224 hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

THE NEW STARS IN OUR GALAXY.

Principal G D Agrawal with our IIT JEE 1990 toppers, at the 36th Annual Prize Distribution function held on 22nd July, 1990.

Sitting (Left to Right)

Ashish Goel	*Lucknow*	**1st**
Alok Mittal	*New Delhi*	**2nd**
Gagan Hasteer	*New Delhi*	**3rd**
Balaji Sampath	*Madras*	**4th**
Sanjay Verma	*Lucknow*	**5th**
G D Agrawal (Principal)		
P G. Agrawal (Director)		
Pradyut R. Shah	*Bombay*	**6th**
Amit Y Ganesh	*Bombay*	**7th**
Nishant Mittal	*Kota*	**8th**
Ranen Chatterjee	*Durgapur*	**9th**
Ravi Murthy	*Bangalore*	**12th**
Om Prakash Damani	*Calcutta*	**15th**

Standing (1st Row)

K V S Rajeev	*Hyderabad*	**68th**
Pranab G Sen	*Bombay*	**16th**
Prashant Gupta	*Kota*	**17th**
Prithvi Prabhu	*Madras*	**18th**
Alok Agrawal	*Jaipur*	**20th**
Mukesh Chandra Sahu	*Asansol*	**21st**
Nandyala Harish	*Secunderabad*	**22nd**
B Prakash	*Bangalore*	**23rd**
Rajdeep Ghai	*New Delhi*	**26th**
Amit M Khivesara	*Bombay*	**28th**
S R B Ramanujam	*Madras*	**29th**
J Mahesh	*Calcutta*	**30th**
Anand Srinivasan	*Madras*	**31st**
Vijay Nandanwar	*Bhilai*	**32nd**
B Rajeev	*Secunderabad*	**33rd**
S Viswanath	*Bangalore*	**34th**
Arvind S Patil	*Karad*	**75th**

Standing (2nd Row)

R Venkatramanan	*Bombay*	**38th**
P Suryanarayanan	*Pune*	**39th**
Rajat Bhargava	*Saharanpur*	**42nd**
Deepak Goyal	*New Delhi*	**43rd**
Tarun Anand	*Delhi*	**44th**
Suresh V	*New Delhi*	**46th**
T K Anand	*Bombay*	**47th**
Ankur Narang	*New Delhi*	**48th**
S Rajesh	*Madras*	**49th**
Ashis S Tarafdar	*Bombay*	**50th**
P Venkataraghavan	*Madras*	**51st**
C V R Kishore	*Jamshedpur*	**52nd**
Shashank Prasad	*Bhilai*	**53rd**
Rakesh Kumar Rai	*Bhilai*	**55th**
Joy Sarbadhikary	*Gwalior*	**57th**

Standing (3rd Row)

Satya Prakash Ranjan	*New Delhi*	**58th**
Gaurav Banga	*New Delhi*	**59th**
Gaurav Mishra	*Ichapur*	**60th**
Sumeer K Bhola	*New Delhi*	**61st**
K V S S Vijay	*Hyderabad*	**62nd**
Navin Kumar Singh	*Ranchi*	**63rd**
Hitesh Oberoi	*New Delhi*	**64th**
Archisman Rudra	*Calcutta*	**66th**
Prasan Roy	*Meerut*	**67th**
Manu Vasandani	*Jamshedpur*	**93rd**
G Aravind	*Cochin*	**94th**
J Ramesh	*Secunderabad*	**95th**
D Pavan Kumar	*Hyderabad*	**96th**
P Jagan Mohan	*Madras*	**97th**
S Vijay	*New Delhi*	**81st**
Ahmad Nadeem	*New Delhi*	

Standing (Top Row)

Shyamal Misra	*Kanpur*	
R N Mohan Sarma	*Warangal*	
Praveen Gupta	*Lucknow*	
Saurab Nog	*Kota*	
Anindya Ghosh	*Jamshedpur*	
P Siddarth	*Coimbatore*	
Amit Shukla	*Madras*	
Anurag Verma	*Dewas*	
T Srivathsa	*Hyderabad*	
G Mohan	*Mysore*	
Pratik Datta	*Calcutta*	
V Rahul	*Bhilai*	
Indranil De	*Dehradun*	
P Gopikrishnan	*Trivandrum*	
Gurpreet Singh	*Chandigarh*	
Lokesh M Gupta	*Calcutta*	

Absentees

Miss Shivani Gupta	*New Delhi*
Amitabha Roy	*Calcutta*
S Rajagopalan	*Madras*
N A Talwalkar	*Bombay*

Agrawal Classes congratulates its top-rankers at the IIT JEE 1990.

Congrats to these bright stars for adding even more lustre to our galaxy of academic luminaries!

Ever since we commenced our IIT JEE courses in 1962, we've consistently produced the best and the brightest.

And this year, we've done it again.

Indeed, no less than 79 of the Top 100 All-India ranks were won by Agrawal students.

Admissions to our IIT JEE 1992 course have begun, and requests for admission must be accompanied by a xerox copy of your Std. X marksheet. Also, please note that

admissions to our correspondence course CBSE's All-India PM/PD Entrance Examination 1992 will open in December.

Top-ranking students almost always come

Agrawal Classes

Wallace Apts. 3, N. Bharucha Marg, Bombay 400 007. Tel: 393285, 894268

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हठधर्मिता

आरक्षण का 'धधकता विरोध' (31 अक्तूबर) चौंकाने वाला है. युवा शक्ति की इतनी नफरत लेकर विश्वनाथ प्रताप सिंह कितने दिन नेता बने रह सकते हैं? हालांकि सुप्रीम कोर्ट के स्थगन आदेश के बाद छात्रों का रोष जारी रहना और सरकार का किसी समझौते के लिए आगे न बढ़ना दोनों पक्षों की हठधर्मिता ही दर्शाता है.

—**यशोधरा,** दिल्ली

सत्तालोलुपता का फल

'हानिकारक हश्र' (आवरण कथा, 15 अक्तूबर) मोर्चा सरकार की संवेदनशून्यता एवं सत्तालोलुपता का विषद चित्रण है. हमारे कवि हृदय प्रधानमंत्री जी बात-बात में भावुक हो सकते है लेकिन जलते हुए युवा उन्हें विचलित नहीं कर पाते.

—**कमलेश कुमार मिश्र,** गोपालगंज (बिहार)

■ वी.पी. सिंह, रामविलास पासवान एवं शरद यादव की तिकड़ी ने अपनी राजनैतिक रोटी सेंकने के लिए जातीय विद्वेष की जो भट्ठी सुलगा दी है, शायद उन्हें अभी अनुमान भी नहीं है कि यह दावानल भी बन सकती हैं और पूरे देश को भस्म कर सकती है.

—**भूषण हसीजा,** सोनीपत (हरियाणा)

■ हमारे देश का दुर्भाग्य है कि आज सत्ता ऐसे लोगों के हाथ में चली गई है, जिन्होंने अपने क्षुद्र स्वार्थों के चलते देश को जातीय युद्ध में धकेल दिया है. सत्ता के मद में चूर ये लोग यह भी भूल गए हैं कि लोकतंत्र में असली सत्ता तो जनता के हाथ में ही होती है.

—**नवीन बंसल,** देहरादून (उ.प्र.)

■ सुप्रीम कोर्ट के स्थगन आदेश के बाद आत्मदाह और आत्महत्या जैसे कदमों का जारी रहना साबित करता है कि इनके पीछे संगठित विघटनकारी ताकतों का हाथ है. दिल्ली की 13 वर्षीया छात्रा परवीन की मृत्यु से पूर्व दिया बयान भी यही साबित करता है.

—**जयप्रकाश पाठक,** आरा (बिहार)

■ आवरण कथा पढ़कर लगा कि छात्रों के बहकते कदमों को एक नेतृत्व की सख्त जरूरत है, जो आत्मदाह की ओर उद्वेलित हो रहे युवकों को सही राह दिखा सके. ये युवा लड़ने की जगह आत्मदाह को ही अपनी मंजिल समझ बैठे हैं.

—**संजय जैन,** छिंदवाड़ा (म.प्र.)

■ वोट बैंक बनाने और अपनी कुर्सी बचाने की उच्चाकांक्षा ने एक कवि हृदय प्रधानमंत्री को इतना बेरहम बना दिया है कि इतने आत्मदाहों के बावजूद उनकी आत्मा उद्वेलित नहीं होती.

—**सतीश राठी,** इंदौर (म.प्र.)

भावनाएं भुनाने के तेवर

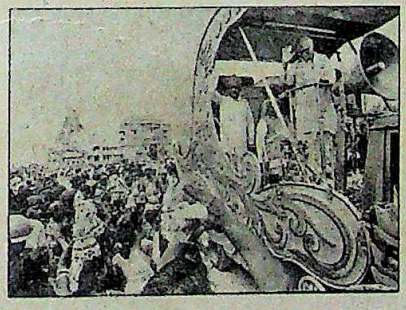

'आवरण कथा' (तकरार के तीखे तेवर, 15 अक्तूबर) में भाजपा एवं जनता दल के संबंधों और भाजपा द्वारा हिंदुओं की भावनाओं का राजनैतिक लाभ उठाए जाने का सटीक विवरण दिया गया है. भाजपा का हिंदुत्व को इतना महत्व यही दर्शाता है कि वह मध्यावधि चुनाव होने पर इसे खूब भुनाएगी.

—**अवनीश उनियाल,** देहरादून (उ.प्र.)

■ धर्म और जाति का नशा ब्राउन शुगर से भी तेज होता है. इस नशे का फायदा देश की सभी पार्टियां उठा रही हैं. देश की समस्याओं से जी चुराकर नेतागण सांप्रदायिकता की आग को हवा देने के लिए कभी रथयात्रा कर रहे हैं तो कभी मृतप्राय आयोग को अमृत पिला रहे हैं.

—**संजय दुबे,** रायपुर (म.प्र.)

सही निर्णय

राजरंग में 'नहले पे दहला' (15 अक्तूबर) पढ़कर मन ऐसे राजनीतिकों के प्रति वितृष्णा से भर गया जो अपने स्वार्थवश देश को बरबाद करने व उसे पतन के गर्त में धकेलने से नहीं हिचकते. उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह यादव ने 'राम मंदिर निर्माण' पर जो निर्णय लिया, वह सही निर्णय है. यदि वे भी इस निर्माण में लग जाते हैं तो संपूर्ण देश में सांप्रदायिकता की आग इस कदर फैलेगी जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती.

—**बलवीर जैन,** गुलाबपुरा (राज.)

अविस्मरणीय पात्र

हेमंत कुमार की कहानी 'मुस्कराहट' (15 अक्तूबर) दर्शाती है कि जिंदगी एक समझौता है और इस समझौते को कोई हंसकर तो कोई रोकर या फरियाद कर निभाता है. कहानी एक महान संगीतकार, गायक की राग-रागिनियों की अभिव्यक्ति का साकार रूप है.

—**नीति अग्निहोत्री,** इंदौर, (म.प्र.)

■ कहानी पढ़ते वक्त 'अनुपमा' उर्फ अन्नू बिलकुल साधारण लड़की लगती है जो केवल बेबात हंसना जानती है. परंतु कहानी का अंत जब होता है और वह हंसते-हंसते रो पड़ती है तब अनुपमा एक कभी न भूलने वाली पात्र बन जाती है.

वर्ष 3, अंक: 1, 1-15 नवंबर 1990

■ **संपादकीय कार्यालय:** लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001. फोन: 3315601-4, टेलेक्स: 31-61245 INTO IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली. ■ **मुख्य सर्कुलेशन कार्यालय:** इंडिया टुडे सर्कुलेशन मैनेजर, एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001. फोन: 3313076-8, टेलेक्स 31-62634 तार: सर्कुलेट, नई दिल्ली. ■ **मुख्य विज्ञापन कार्यालय:** 28 ए और बी, जॉली मेकर-2, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. फोन: 2026152, 2029326, 2029435, 31-5373 THOM IN, तार: लिवमीडिया, बंबई. ■ **क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय:** ई-9, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001, फोन: 3325378, 3323576, 3321273; टेलेक्स: 31-62124 THOM IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली ● फागुन चैंबर्स, 26 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105. फोन: 477188, टेलेक्स: 041-6177 INTO IN, तार: लिवमीडिया, मद्रास ● 74/1 सेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001. फोन: 586446, 579037, 579089, टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN, तार: लिवमीडिया, बंगलूर ● 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700016 फोन: 225398, 221922, टेलेक्स: 21-7138 INTO IN, तार: लिवइन-मीडिया, कलकत्ता ● कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता. ● लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहानी एहसास दिलाती है कि हेमंत कुमार सिर्फ दर्दीली आवाज के ही धनी नहीं बल्कि दर्दीले अनुभव के रचयिता भी थे. —रत्नेश, बक्सर (उ.प्र.)

खोखलापन उजागर

'जिम्मेदारियां बन गई बेड़ियां' (15 अक्तूबर) वास्तविकता से परे लगा. आज

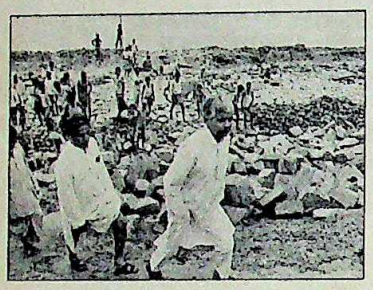

बिहार में शिक्षा के अलावा उन तमाम अवयवों की हालत बद से बदतर हो गई है, जिनका संबंध आम नागरिक से है. बिजली की स्थिति ने ऐतिहासिक गिरावट को छू लिया है. मिट्टी के तेल की हालत तो काबिले जिक्र भी नहीं है.

—प्रदीप कुमार सिंह, मुजफ्फरपुर (बिहार)

■ बिहार के मुख्यमंत्री और उनके मंत्रियों की कार्यशैली का विश्लेषण मुख्यमंत्री की खोखली आदर्शवादिता को ही उजागर करता है. एक ओर राज्य को सक्षम और योग्य प्रशासन देने का वादा तो दूसरी ओर अपराधियों से जगजाहिर संबंधों वाले विवादास्पद मंत्रीगण.

—राजेश कुमार, पटना (बिहार)

■ बिहार में पथ एवं भवन निर्माण, और वक्फ मामलों के विभाग के मंत्री मुहम्मद इलियास हुसैन का उदाहरण दूसरे मंत्रियों के लिए भी मिसाल है. यदि सभी मंत्री भ्रष्टाचारियों और कालाबाजारियों के खिलाफ कार्रवाई करें तभी भ्रष्टाचार रोका जा सकता है.

—अब्दुल वसीम, जोधपुर (राज.)

पतन का परिचय

'दोस्तों की दुश्मनी' (15 अक्तूबर) पढ़ा. उच्च वर्ग के बिगड़ैल साहबजादों का मात्र कुछ हजार रु. के लिए अपने मित्र की हत्या कर देना गिरते मानव मूल्यों को ही दर्शाता है. पाश्चात्य रंग में पले-बढ़े ये युवा अपनी संवेदनाएं सिक्कों की खनखनाहट में खो देते हैं. दोष बेशुमार दौलत का नहीं, उचित शिक्षा के अभाव का है. —नवीन रावत, मुरादाबाद (उ.प्र.)

तोड़ने पर आमादा

'संकीर्ण स्वार्थों के समीकरण' (15 अक्तूबर) सिद्ध करता है कि हमारी राष्ट्रीय पार्टियां देश के विघटन पर उतारू हैं. देशवासियों को वोट बैंक में बांटकर ये नेता राजनीति भले ही चला लें पर उससे भारत की अनेकता में एकता वाली छवि का बलिदान होकर ही रहेगा.

—रुचि तिवारी, इलाहाबाद (उ.प्र.)

■ लेख पढ़कर लगा कि जिस तरह राष्ट्रीय पार्टियां निहित स्वार्थों के लिए अस्वस्थ मानसिकता का प्रदर्शन कर रही हैं, उसके परिणाम भयावह होंगे. आज जब अन्य देशों में लोकतंत्र लाने के लिए संघर्ष हो रहा है, वहीं भारत में लोकतंत्र खत्म होता प्रतीत हो रहा है.

—संजय कुमार दीक्षित, बरेली (उ.प्र.)

■ गैर जिम्मेदाराना वक्तव्य देना और गैर जिम्मेदाराना काम करना ही आज के राजनीतिकों का काम रह गया है. देश की गंभीर समस्याएं तो इन्हें नजर ही नहीं आतीं, क्योंकि इनकी आंख तो अपने लक्ष्य 'वोट बैंक' पर ही टिकी है.

—पंकज पाठक, फतेहगढ़ (उ.प्र.)

अपमान के घूंट

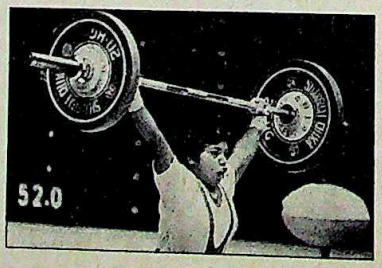

ग्यारहवें एशियाई खेलों में भारत की दुर्दशा से दिल तो पहले ही गमगीन था. 'अपने-अपने खेल' (15 अक्तूबर) पढ़कर सिर धुनने को मन करने लगा. बार-बार हार व अपमान का घूंट पीने के बावजूद सरकार खेल को राजनीति से अलग क्यों नहीं कर रही ?

—संजय किशोर, पटना (बिहार)

सबक लें

'नखलिस्तान से कोसों दूर' (30 सितंबर) में खाड़ी में फंसे भारतीयों की दर्दनाक व्यथा पढ़ी. मानवीय आधार पर उनसे पूर्ण सहानुभूति भी है. परंतु खास मुद्दा यह है कि क्या वे राष्ट्रहित में वहां गए थे जो सरकार से नाराजगी दिखा रहे हैं. वे गए थे अपने निजी स्वार्थ के लिए, यह भूल गए कि जिस समाज के बल पर वे इस योग्य बने उसके प्रति भी उनका कर्त्तव्य है.

—डॉ. जयेश कावड़िया, रायपुर (म.प्र.)

■ सद्दाम हुसैन की महत्वाकांक्षाओं ने लोगों को जीवन भर की कमाई छोड़ वहां से अपनी जान बचाकर भागने पर मजबूर कर दिया गया है. सद्दाम को नीरो और हिटलर का आधुनिक संस्करण कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी.

—अनिल जे. जैन, डूंगरपुर (राज.)

■ जॉर्डन की सीमा पर लगे 'शा आलान' शिविरों में तपते रेगिस्तान की मुश्किलों से जूझते, भोजन और पानी के लिए तरसते निरीह भारतीयों के अलावा पाकिस्तान, श्रीलंका, बांग्लादेश और फिलीपीन्स के शरणार्थियों की दशा भी कम दयनीय नहीं है. —चैन सिंह बीका, बीकानेर (राज.)

अस्तित्व से खिलवाड़

'सितम सरकार के' (30 सितंबर) में सरकार की ज्यादतियां दिल को छू गईं. कभी सोचा भी न था कि सरकार का एक परिवार कल्याण कार्यक्रम लोगों के लिए इस तरह अभिशाप बन सकता है.

—मुकेश दुबे, देहरादून (उ.प्र.)

■ लेख में वर्णित सरकार की ज्यादतियों के साथ आप यह जोड़ना भूल गए कि इन जिलों में वनवासियों द्वारा ईसाई धर्म अपनाए जाने के कारण भी इनकी संख्या में कमी आई है.

—आर.के. गुजराती, छिंदवाड़ा (म.प्र.)

■ बड़े दुख और हैरत की बात है कि एक ओर जहां सरकार जनजातियों को नौकरी देकर ऊपर उठाना चाहती है, वहीं नसबंदी, लाइलाज कुपोषण आदि से उनका अस्तित्व ही खतरे में है.

—प्रभाष सिन्हा, वैशाली (बिहार)

अपनी डाल पर चोट

'बेकार की बाजी' (30 सितंबर) पढ़ा. जिस मध्य वर्ग ने वी.पी. सिंह को सत्ता में पहुंचाया उसे ही उन्होंने दूध की मक्खी की तरह निकाल फेंका. उन्हें भ्रम है कि पिछड़ी जातियों के बूते वे सत्ता में काबिज रह सकेंगे. —रवींद्र कुमार, भागलपुर (बिहार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असली मसले दरकिनार

सभी रेखाचित्र: अजीत नैनन

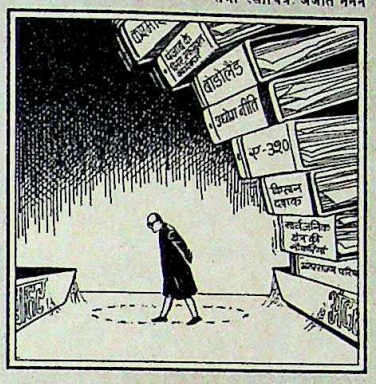

जनता दल के नेता जबकि अपने सिर पर एक के बाद एक पड़ने वाले संकटों से जूझने में लगे रहे तथा उनके समाधान के लिए लोक लुभावन उपायों का सहारा लेते रहे, वास्तविक शासन का—राष्ट्रीय समस्याओं को सुलझाने का—काम खटाई में पड़ा रहा. प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह अपना वर्चस्व बनाए रखने के लिए जिस तरह हाथ-पैर मारते रहे हैं और मंडल रिपोर्ट से संबंधित मामलों पर घालमेल करते रहे—और इन मामलों की जिस तरह खबरें छपती रही हैं—उन सबके कारण दूसरे महत्वपूर्ण मुद्दे दरकिनार हो गए हैं. लेकिन जनता की नजरों से वे ओझल नहीं हुए हैं.

कश्मीर और पंजाब के जख्म अभी भी रिस रहे हैं. उम्मीद थी कि पिछले पखवाड़े सरकार कुछ नए उपायों की घोषणा करती—पंजाब के लिए नए आर्थिक उपायों की, और प्रधानमंत्री की श्रीनगर यात्रा की. देश इन कदमों की प्रतीक्षा ही कर रहा है.

उत्तर-पूर्व की हालत भी बहुत अच्छी नहीं है. बोडोलैंड आंदोलन जैसे-जैसे हिंसक होता जा रहा है, असम की अगप सरकार इससे निबटने में अक्षम या अनमनी दिख रही है. उधर विधानसभा के चुनाव भी दिसंबर में होने हैं. मगर असम के मामले में सरकार की कोई नीति स्पष्ट नहीं दिख रही है.

सरकार की उद्योग नीति भी ऐसी है जो उद्योगपतियों को समझ में नहीं आ रही. अपेक्षा यह थी कि सरकार उन उद्योगों की सूची जारी करेगी जिनमें विदेशी निवेश की अनुमति दी जानी है या नहीं दी जानी है. इनमें हिस्सेदारी का प्रतिशत भी तय किया जाना था. मगर ऐसा कुछ भी सामने नहीं आया है. प्रधानमंत्री ने स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले से घोषणा की थी कि यह दशक किसानों का दशक होगा. इस नारे के बाद उम्मीद थी कि सरकार व्यापक कृषि नीति की घोषणा करेगी. मगर नीति तो क्या उसका खाका तक सामने नहीं आया है.

लगता है सभी मंत्रालयों को लकवा मार गया है. शिक्षा एवं संस्कृति से संबंधित नीतियों की समीक्षा का वादा अब तक पूरा नहीं किया गया है. केंद्र-राज्य संबंधों के पुनर्मूल्यांकन के लिए पिछले दिनों अंतरराज्यीय परिषद की बैठक हुई मगर उसके बाद आगे की कोई कार्रवाई नहीं हुई.

यानी सत्ता के भूखे नेतागण राजकाज चलाने की जगह उन्हीं समस्याओं से जूझने में लगे हैं जिन्हें खुद उन्होंने जन्म दिया है.

दोहन में अदूरदर्शिता

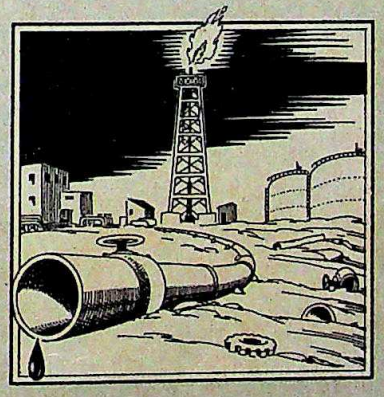

तेल और गैस के मामले में देश आज जिस मुश्किल स्थिति में पड़ गया है उसकी वजह इनके भंडारों के दोहन में दूरदर्शितापूर्ण प्रबंधन का अभाव ही है. पेट्रोलियम उत्पादों की कीमतों में आज जो आतंकीय बढ़ोतरी करने की नौबत आई है उसके लिए केवल खाड़ी संकट को ही दोषी नहीं ठहराया जा सकता. नौकरशाह और नीतिनिर्धारक भी इसके लिए उतने ही दोषी माने जाने चाहिए.

सरकार ने अनुमान लगाया था कि 1990-91 में देश को 5.8 करोड़ टन तेल की जरूरत पड़ेगी. लेकिन तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग अपना उत्पादन खींचखांचकर 3 करोड़ तक ही पहुंचा पाया. पिछले तीन साल में उत्पादन इसी आंकड़े पर स्थिर रहा है.

दरअसल तेल और गैस के मामले में पूरी नीति ही गलत रही है. नए स्रोतों की तलाश की जगह पुराने स्रोतों से ही ज्यादा से ज्यादा उत्पादन करने पर जोर दिया जाता रहा है. बताया जाता है कि देश में तेल एवं गैस का 17 अरब टन का भूमिगत भंडार है. अब तक इसमें से केवल एक-चौथाई ऐसे भंडारों का पता लगाया जा सका है जिनसे कम खर्च पर तेल या गैस निकाली जा सकती है. उदाहरण के लिए पिछले दशक में तेल का उत्पादन तेजी से बढ़ा. मगर दोहन किए जा सकने योग्य भूमिगत भंडारों की मात्रा में महज 20 फीसदी की बढ़ोतरी हुई. जाहिर है इस अवधि में नए स्रोतों की तलाश के नगण्य प्रयास ही किए गए और मौजूदा तेल कुओं का भारी दोहन किया गया. नतीजा यह कि ये कुएं तेजी से खाली होते जा रहे हैं.

नए स्रोतों की तलाश में बरती गई लापरवाही प्रतिवर्ग किलोमीटर कुओं के अनुपात से भी उजागर होती है. कुओं की खुदाई का विश्व औसत जबकि प्रति वर्ग किलोमीटर 100 है, भारत में यह औसत सिर्फ 10 है. आयोग जितने मोटे मुनाफे कमाता है उसके मद्देनजर समस्या धन की नहीं दिखती. असली समस्या यह है कि देश में तेल क्षेत्र के नौकरशाह यह दावा करना चाहते हैं कि उनकी सफलता का भागफल—खोदे गए तीन तेल कुओं में से एक की सफलता—दुनिया में सबसे ऊंचा है.

इन सबके ऊपर प्राकृतिक गैस के उपयोग की सरकार की अदूरदर्शिता ने समस्या को और जटिल बना दिया है. तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग पश्चिमी तट पर प्रतिदिन 1.5 करोड़ क्यूबिक मीटर गैस जला डालता है क्योंकि इस गैस को उर्वरक संयंत्रों आदि तक पहुंचाने की कोई व्यवस्था नहीं है. इससे बड़ा अपराध और क्या हो सकता है? इन स्थितियों के बावजूद तेल और गैस के मोर्चे पर युद्ध स्तर पर आज काम शुरू नहीं किया जाता है, तब और कब शुरू किया जाएगा?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाही अंदाज बाकी

● राजीव गांधी की एक खासियत यह है कि हारने के बाद भी वे खुद को प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठा मानते हैं. उनके इर्दगिर्द के अनेक लोग भी उनसे ऐसे ही

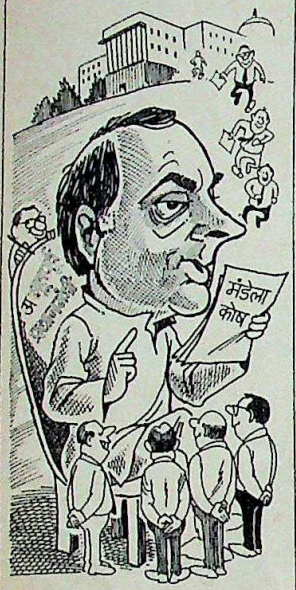

ढंग से पेश आते हैं. पिछले 10 महीनों से वे तरह-तरह के दरबारियों से भी घिरे हुए हैं. इस बदहाली में भी वे उन्हीं राजनीतिकों और निजी सहायकों के जरिए काम चलाते आ रहे हैं जिनकी मदद वे अपने प्रधानमंत्रित्वकाल में लिया करते थे. कई वरिष्ठ सांसदों सहित उनके सहायक अभी भी उन्हें 'पीएम' (प्रधानमंत्री) कहते हैं. उधर, 'पीएम' ने भी ज्यादातर ऐसे- नौकरशाहों से संबंध बनाए रखे हैं जो कभी उनके साथ रहे थे.

इस शहंशाही अंदाज का एक नजारा उस समय देखने को मिला जब अति महत्वपूर्ण व्यक्तियों से भरे पंडाल में नेल्सन मंडेला का स्वागत किया जा रहा था. राजीव अपने एक पूर्व सहायक के पास पहुंचे और प्रधानमंत्री वाली रुखाई से पूछा, "क्या पैसे दे रहे हो कि नहीं?" वह अधिकारी एक क्षण के लिए तो चकरा गया और फिर दबी आवाज में बताने लगा कि प्रयास जारी हैं और मामले को अंतिम रूप देने के लिए बैठकें की जानी हैं. राजीव ने फिर उसी अंदाज में कहा, "आप देखें कि उन्हें अच्छा पैसा मिले. उन्हें अपने उद्देश्य की खातिर इस रकम की खासी जरूरत है." अधिकारी ने इसे ध्यान से सुना पर बेहतर होता वे साथ ही जवाब में कहते, "यस प्राइम मिनिस्टर."

खर्चीला रखरखाव

● विदेशी मुद्रा की बचत के लिए वाणिज्यमंत्री अरुण नेहरू ने जो कदम उठाए हैं, उनमें राज्य व्यापार निगम, भारत निवेश केंद्र, चाय बोर्ड व अन्य कई सरकारी कंपनियों के विदेश स्थित कार्यालयों में कर्मचारियों की संख्या काफी कम कर देना भी एक है. पर इसकी गति अभी धीमी है.

न्यूयॉर्क में भारतीय निवेश केंद्र का दफ्तर इसी साल 31 अगस्त तक समेट लेने का आदेश दे दिया गया था पर बाद में यह मोहलत 1990 के आखिर तक के लिए बढ़ा दी गई. चाय बोर्ड की दुनिया भर की शाखाओं में भी अब छंटनी नहीं होगी. इस बोर्ड के प्रमुख तो 16 साल विदेश में रहकर रिकार्ड कायम कर चुके हैं और वे अभी भी वहीं जमे रहेंगे. और यह सब उनके कामकाज का नतीजा नहीं

सभी कार्टून: अजीत नैनन

है क्योंकि अमेरिका को चाय का निर्यात घट रहा है.

खस्ताहाली को अलविदा

● दिल्ली के अशोक रोड पर एक-दूसरे से कुछ दूरी पर स्थित दो बंगले बहुत तेजी से सज-धज रहे हैं. ये दो राष्ट्रीय पार्टियों — भाजपा और माकपा — के

मुख्यालय हैं. उनकी परस्पर विरोधी विचारधाराओं की तरह ही इन भवनों में भी जैसे संवरने की होड़ लग गई है. दोनों मुख्यालय खस्ता हालत में थे.

पर कुछ राज्यों में हाल ही में मिली सत्ता और केंद्र सरकार से नजदीकी रिश्तों के चलते हालात बदल गए. भाजपा के दफ्तर का कायाकल्प हो रहा है. उसकी भीतरी सज्जा बदल रही है. दीवार से दीवार तक कालीन बिछाए जा रहे हैं, गद्देदार कुर्सियां आ गई हैं और नया इलेक्ट्रॉनिक टेलीफोन बोर्ड सज गया है.

और पेरेस्त्रोइका के इस दौर में कामरेड भला क्यों पीछे रहते. वे कनॉट सर्कस के पास के इलाके में तीन मंजिला भव्य दफ्तर बनाने की योजना को अंतिम रूप दे रहे हैं. कांग्रेस ने भी अपने समाजवादी नारे ताक पर रखकर अपना मुख्यालय जवाहर भवन की भव्य इमारत में ले जाने की तैयारी कर ली लगती है.

हमारी हिंदी कम नहीं

● हिंदी के हिमायतियों को अचानक ही एक नया हीरो मिल गया है और वह भी दक्षिण भारत से. युवक इंका के अध्यक्ष और केरल से सांसद रमेश चेन्निथला ने हाल ही में मंडल आयोग की रिपोर्ट पर संसद में हुई बहस के दौरान 30 मिनट का भाषण देकर सबको हैरत में डाल दिया.

हैरत उनकी ओर से प्रस्तुत तर्कों पर नहीं, उनकी भाषा पर थी. यहां तक कि वरिष्ठ सांसद भी ठगे-से रह गए. चेन्निथला ने इतनी शुद्ध हिंदी में अपनी बात रखी कि मैथलीशरण गुप्त भी उन पर नाज करते.

और सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह थी कि उनका लहजा वह नहीं था जो दक्षिण भारतीय लोगों का हिंदी बोलते वक्त अक्सर होता है जिस पर महमूद जैसे हास्य

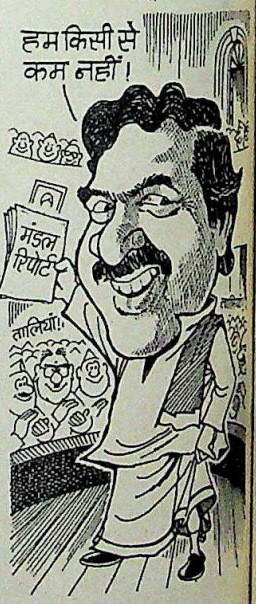

अभिनेता ने कभी एक फिल्म का भी निर्माण कर लिया था.

भाजपा नेता जसवंत सिंह ने उन्हें इसके लिए बधाई दी. ओडीसा के एक जनता दल सांसद ने भी हिंदी पर चेन्निथला की पकड़ की तारीफ की. इन तारीफों के मद्देनजर हिंदी के प्रबल हिमायती, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव को भी शायद उन्हें वर्ष का हिंदी पुरुष घोषित करने में कोई हिचक न हो.

...और एक चुटकी

मंडल रिपोर्ट लागू करने के सरकारी फैसले का मंडेला द्वारा समर्थन किए जाने से हैरान पत्रकारों को एक वरिष्ठ पत्रकार ने कुछ इस तरह समझाया, "अरे, उन्होंने मंडल को मंडेला ही समझ लिया होगा."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

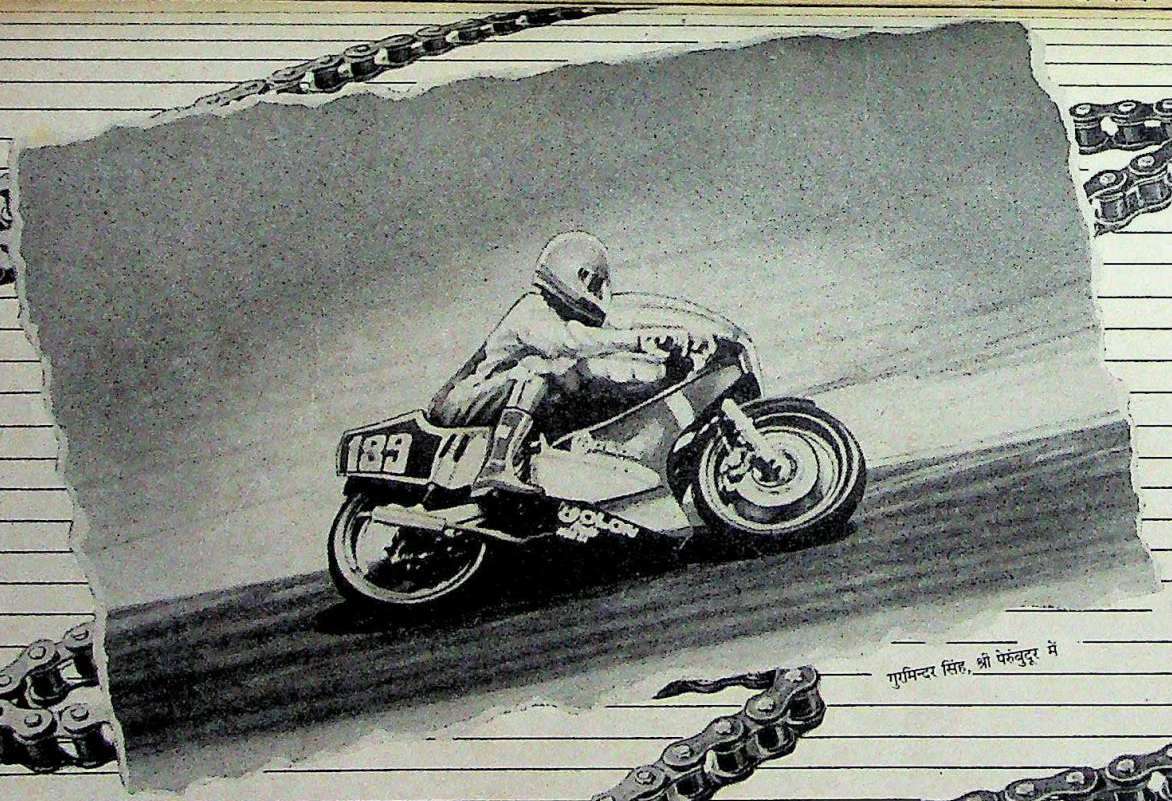

गुरमिन्दर सिंह, श्री पेरुंबुदूर में

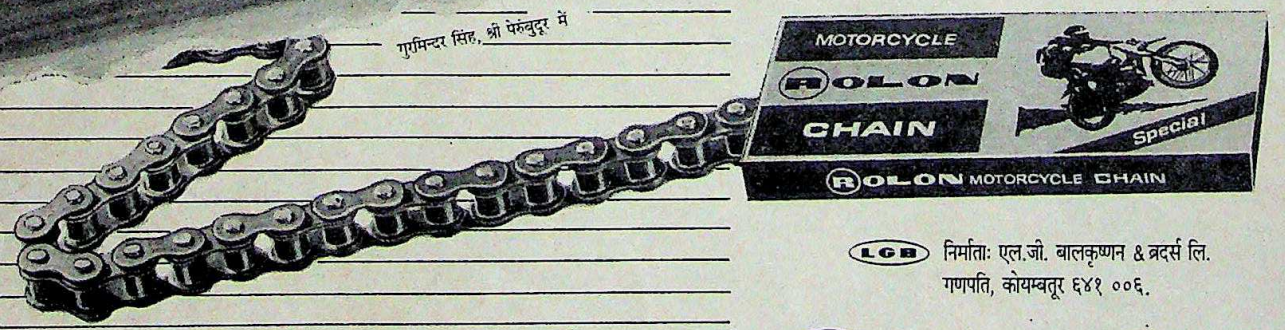

जो बाइक बनाएं और जो बाइकों
पर दौड़ लगाएं , दोनों चाहें

ROLON Special

दौड़ लगाने वाले। वे लोग जो अपनी बाइकों को सभी हदों के पार ले जाते हैं। मोटरसाइकलों के निर्माता। कम्पनियां जिनका लक्ष्य है बेहतरीन क्वालिटी की बाइक। दोनों जानते हैं सही चेन लगाने का महत्व।

ROLON Special

एक चेन जो रेसों और रैलियों में हर तरह के जुल्म सहे। एक चेन जो पिछले पहिये को अधिकतम शक्ति का संचरण करे। एक चेन जो गुणवत्ता और विश्वसनीयता में निर्माता का नाम ऊंचा रखे। एक चेन जो सबसे अधिक निर्यात की जाती है और सबसे अधिक बिकती है।

ROLON Special

LGB निर्माताः एल.जी. बालकृष्णन & ब्रदर्स लि.
गणपति, कोयम्बतूर ६४१ ००६.

ROLON Special
Motorcycle Chain

सबसे अधिक बिकने वाली सर्वोत्तम चेन

MAA COMMUNICATIONS 1247 Hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी चहेती पत्रिका
आपके दरवाज़े पर
न खरीदने का झंझट...
न खत्म होने का डर

इस सुविधा का लाभ उठाइए.
अपनी चहेती इंडिया टुडे
घर बैठे – नियमित पाइए.
न खरीदने जाने की जरूरत...
न अंक खत्म होने का डर,
इंडिया टुडे
समय से पहुंच जाए आपके घर !

बस कूपन भर कर भेज दीजिए,
देर मत कीजिए !

नाम: _____

डाक पता: _____

मूल्य: वार्षिक रु. 132/-
भुगतान का माध्यम-चैक/मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट
(दिल्ली से बाहर के चैकों के लिए 5/- रु. प्रति चैक की अतिरिक्त राशि देय है।)
कृपया चैक निम्नलिखित नाम पर बनाएं और इस पते पर भेजें:
लिविंग मीडिया इंडिया लि.
पो. बॉ. नं. 706,
फरीदाबाद- 121 007
(हरियाणा)

इंडिया टुडे
देश की भाषा में देश की धड़कन

MILESTONES/IT/120

● अगर केवल राम की ही बात है तो चुनाव चिह्न क्यों साथ है (रथयात्रा के) ?
■ **विश्वनाथ प्रताप सिंह,** *राष्ट्र के नाम संदेश में*

● (राष्ट्रीय मोर्चा संसदीय दल का नेता) बनने का सवाल ही नहीं उठता क्योंकि स्थान खाली ही नहीं है.
■ **चंद्रशेखर,** *जनसत्ता*

● चंद्रशेखर विश्वनाथ प्रताप सिंह के विकल्प नहीं हो सकते.
■ **चिमनभाई मेहता,** *नवभारत टाइम्स*

● जो काम अंग्रेज नहीं कर पाए वह प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने कर दिखाया.
■ **राजीव गांधी,** *नई दुनिया*

● कुछ लोगों की आत्मा एक ही बार महम कांड के समय जागी. उनकी आत्मा अभी सोई हुई है.
■ **देवीलाल,** *राजस्थान पत्रिका*

● पांच सौ साल बाद लोग इसके (आरक्षण) लिए वी.पी. सिंह और मेरी पूजा करेंगे.
■ **राम विलास पासवान,** *प्रोब इंडिया*

● फर्क इतना ही है कि इस सरकार के इरादे साफ हैं लेकिन महज साफ इरादों से ही पंजाब की समस्या हल नहीं हो सकती. अब साफ इरादों का लॉलीपॉप हमारे गले के नीचे नहीं उतर सकता.
■ **अतिबरपाल सिंह,** *माया*

● अजी काहे की कुश्ती ? काहे का गोल्ड मेडल ? गोल्ड मांगिए उन विदेशी कोचों से जिन्हें इतने साल सिर पर चढ़ा कर रखा.
■ **गुरु हनुमान,** *हिंदुस्तान*

● श्रीदेवी दो साल तक मिथुन के साथ शादीशुदा रहीं पर किसी को कानोकान खबर भी नहीं हुई. नहीं तो क्या वे इतनी आसानी से नंबर एक नायिका बन पातीं ?
■ **अमृता सिंह,** *आज*

● वो श्रीदेवी है, मैं माधुरी हूं. दोनों में तुलना का कोई सवाल ही नहीं पैदा होता.
■ **माधुरी दीक्षित,** *फिल्मफेयर*

● यदि वह (नौशाद) मुझे और मेरे संगीत को समझ ही नहीं पाते तो मुझे क्या मतलब है उनसे ? वह आएं, इस कला को देखें, मेहनत समझें फिर कुछ कहें.
■ **शैरोन प्रभाकर,** *दैनिक जागरण*

● मेरा कोई जोड़ीदार नहीं है और मैं किसी को अपना जोड़ीदार बनाना भी नहीं चाहती.
■ **जुही चावला,** *नई दुनिया*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शालें

जिनमें छलके
मुग़लों की आन-बान
सदियों की शान और
प्राकृतिक अद्‌भुतता!

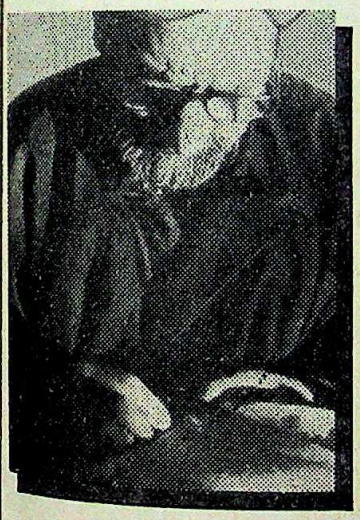

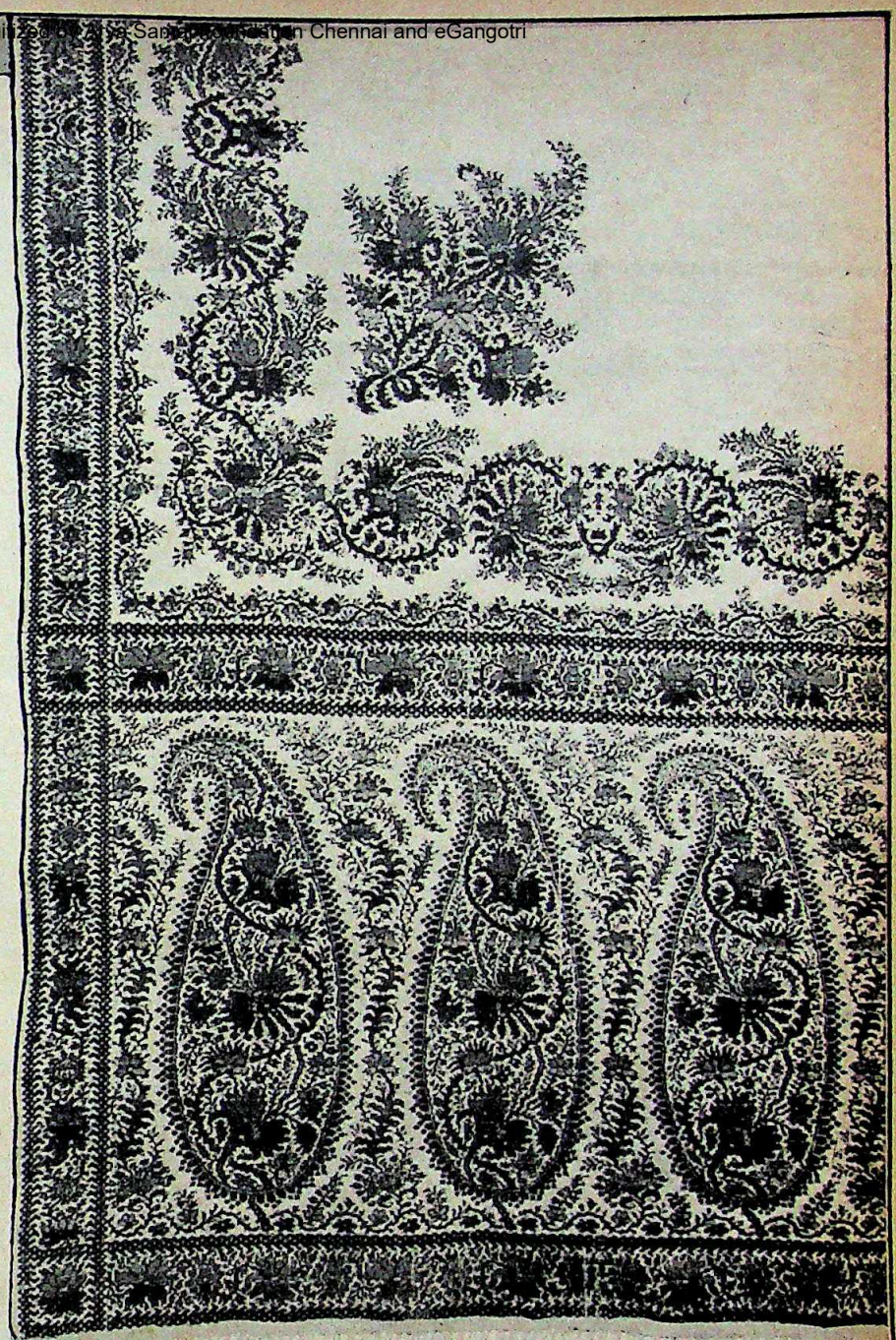

पश्मीना
शाहतूश
जामावार

आहूजासंस शालों की दुनिया की वैभवशाली परम्पराओं को आपके सम्मुख गर्व से प्रस्तुत करते हैं।
शालें जो सम्राटों, नरेशों और नवाबों की मनमोहक सज्जा की प्रतीक रही हैं।
शालें जो प्रकृति की उत्कृष्ट कला तथा रंगों को दर्शाती हैं—जिनके प्रत्येक धागे में पिरोया गया है — वैभव तथा सौंदर्य।

आहूजासंस—जिनके लिए शाल कोई व्यापारिक वस्तु नहीं है बल्कि एक गौरवपूर्ण परम्परा है।

Trends/1798/89

आहूजासंस
शाल वाले (प्रा०) लि०

6/44, अजमल खां रोड, करोलबाग, नई दिल्ली-110 005, फोन : 5720304, 583154

खुदरा विक्रेता • थोक विक्रेता • निर्यातक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैसे वाले कलाकार

■ पैसा बनाना एक कला है. लेकिन आम तौर पर देखा यही जाता है कि ललित कलाओं से जुड़े कलाकार लोग तो पैसा कमाने की होड़ में एकदम पीछे छूट जाते हैं और असली बाजी वे

सभी कार्टून: जयंतो

झटक ले जाते हैं जिन्हें सिवा पैसा कमाने के और कोई कला नहीं आती. कुछ ऐसा ही किस्सा दिल्ली के उन तीन तिलंगों का है जिन्होंने पैसा कमाने के बदले उसे घर पर ही बनाकर जल्दी से जल्दी अमीर हो जाने का रास्ता चुना और इसी चक्कर में वे मारे भी गए.

दूसरे लोगों की तरह ये तीनों भी इस बात से वाकिफ थे कि पुराने जमाने के सिक्कों की मांग दुनिया भर में बनी रहती है और दुर्लभ सिक्कों को इकट्ठा करने के शौकीन लोग उन्हें पाने के लिए कुछ भी खर्च करने को तैयार रहते हैं. लिहाजा उन्होंने अमीर होने के इसी शॉर्टकट से चलने का फैसला किया. टीवी पर चलने वाले सीरियल 'द सॉर्ड ऑफ टीपू सुलतान' की लोकप्रियता देखते हुए उन्होंने अपनी कलाकारी के लिए टीपू के ही जमाने को चुना और टीपू सुलतान तथा ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा जारी किए गए सिक्कों की नकल पर जाली सिक्के बनाने शुरू कर दिए. उनके ये सिक्के न सिर्फ विदेशी सैलानियों ने खरीदे बल्कि कई विदेशी कंपनियों ने भी मंगाने शुरू कर दिए. लेकिन इन सिक्कों की यह लोकप्रियता सिर्फ ग्राहकों तक ही सीमित नहीं रही. इसकी खनक दिल्ली पुलिस के कानों तक भी जा पहुंची और बेचारे टकसालिए फंदे में फंस गए.

अपना हाथ...

■ देश का शायद ही कोई ऐसा शहर या कस्बा होगा जहां की नगरपालिका से वहां के नागरिकों को शिकायत न हो. कभी बिजली को लेकर तो कभी सफाई को लेकर, कभी पानी की किल्लत के सवाल पर तो कभी सड़कों की हालत के मुद्दे पर दोनों के बीच ठनी रहती है. आम तौर पर नागरिकों का विरोध या तो अखबारी शिकायतों का रूप लेता है या फिर जुलूस-प्रदर्शन की नौबत आ जाती है. इस शिकवे-शिकायत के पीछे नागरिकों की यही मान्यता काम करती है कि सफाई और सेवाओं की हालत दुरुस्त रखने की सारी जिम्मेदारी प्रशासन की ही है. लेकिन पिछले दिनों मुंबई के कुछ नेत्रहीन छात्रों ने अपनी बात कहने का नायाब तरीका ढूंढ़ निकाला. जिसने इस मान्यता की हवा निकाल दी.

उपनगर सायन में रहने वाले कुछ नेत्रहीन विद्यार्थी एक गली की ऊबड़-खाबड़ हालत से बहुत परेशान थे. कई बार अधिकारियों तक शिकायत पहुंचाने के बाद भी जब हालत नहीं सुधरी तो एक दिन उन्होंने यह खबर स्थानीय समाचारपत्रों में छपवा दी कि गली के गड्ढों को भरने का काम वे खुद करना चाहते हैं. उन्होंने इच्छुक लोगों से सहायता करने की अपील भी इसमें शामिल कर दी. नतीजा यह हुआ कि

प्रस्तावित समय पर सहायता करने वालों की अच्छी-खासी भीड़ जुट गई और देखते-देखते घंटे भर में ही वह काम पूरा हो गया जिसके लिए वे महीनों से नगरपालिका की खुशामद करते आ रहे थे.

भिखारी सिपाही

■ विदेशी मुद्रा के खाली होते खजाने से परेशान सरकार इन दिनों ऐसा कोई भी कदम उठाने से नहीं चूक रही जिससे विदेशी मुद्रा कमाने की संभावनाएं बढ़ती हों. इस मामले में पर्यटन उद्योग

को बढ़ावा देने पर खास ध्यान दिया जा रहा है. शायद यही वजह थी कि पर्यटन का स्वर्ग माने जाने वाले पणजी को और अधिक आकर्षक बनाने के लिए पिछले दिनों गोवा सरकार ने कमर कस ली.

इस अभियान के तहत सभी संबद्ध विभागों ने अपनी-अपनी मुस्तैदी दिखाई और वे सारे कदम उठा डाले जिनकी उनसे अपेक्षा की जा सकती थी. पुलिस विभाग के अफसरों ने भी इस मामले में अच्छा-खासा उत्साह दिखाया और परंपरागत आदेशों की एक लंबी सूची जारी कर डाली. इनमें से एक आदेश यह था कि नगर के सभी भिखारियों की धर-पकड़ का अभियान चलाया जाए.

बात यहीं तक रहती तो गनीमत थी. लेकिन उत्साह में अधिकारियों ने हर सिपाही के लिए भिखारियों को पकड़ने का कोटा भी घोषित कर दिया. आदेश जारी करते हुए उन्होंने इस बात पर ध्यान ही नहीं दिया कि पणजी में भिखारियों की संख्या नाममात्र की है. नतीजा यह हुआ कि सिपाहियों का कोटा पूरा होने से पहले ही शहर से भिखारियों का सफाया हो गया. अब बेचारे कुछ सिपाही तो अपना कोटा पूरा करने के लिए पैसे खर्च करने को भी तैयार हैं. है कोई पात्र!

कच्छाधारी भूत ?

■ कनपटीमार साधुओं और पत्थरमार भिखारी के बाद अब लगता है कि आतंक फैलाने की अगली बारी उस कच्छाधारी की है जिसने हिसार के नागरिकों की नींद हराम कर दी है. पिछले कुछ समय से हरियाणा के इस शहर में हवा गरम है कि एक कच्छाधारी लड़का रात के समय घरों में घुसकर महिलाओं के साथ छेड़छाड़ करता है.

हैरानी की बात यह है कि आज तक किसी ने भी इस कच्छाधारी को न तो देखा है और न किसी से उसकी मुठभेड़ ही हुई है. लेकिन इसके बावजूद इस कच्छाधारी के बारे में ऐसी-ऐसी बातें प्रचलित हो चुकी हैं कि वह किसी असली हीरो के मुकाबले कहीं ज्यादा असलियत भरा लगने लगा है. इनमें से एक विवरण के मुताबिक यह चमत्कारी कच्छाधारी ऊंचे भवनों की छत से छलांग लगाकर हवा में गायब हो जाने की कला में भी माहिर है.

स्थानीय पुलिस ने भी इस जादुई चरित्र को ढूंढ़ने की बहुत कोशिश की लेकिन बात नहीं बनी. इस बीच कच्छाधारी का आतंक आसपास के शहरों-कस्बों तक भी जा पहुंचा है. इस आतंक के चलते पिछले दिनों एक युवक ने अपने ही बुजुर्ग दादा की एक रात उस समय लाठी से टांग तोड़

दी जब रात के समय वे कच्छा पहने पेशाब के लिए उठकर जा रहे थे. उधर पुलिस विभाग अखबारों में इश्तहार छपाकर भी लोगों को इस चरित्र के बारे में आश्वस्त कर चुका है लेकिन लोग हैं कि अभी भी आतंकित हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

FORCE 10

इसकी हर बात अलग है। बात चाहे कोमल गद्देदार अन्दरूनी हिस्से की हो, या कदमों के हर झटके को

आसानी से सहने वाले P.U. सोल की। या फ़िर मुलायम अपर, यानि ऊपरी हिस्से की,

जो दे भरपूर आराम। जी हाँ, जो बात इसमें है औरों में कहाँ।

FORCE 10 लिबर्टी की पेशकश

लिबर्टी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एम्प्रो-स्वाद की दुनिया में आइए!

ईलायची क्रीम

केरल के हरे-भरे खेतों से आई ईलायची की सनसनाती खुशबू से महकता जादुई स्वाद. स्वस्थ-तंदुरुस्त गायों के दूध की पौष्टिक ताज़ा मलाई. दोनों के मेल से बने उत्कृष्ट गाढ़े मिश्रण को बिस्कुट पर डालकर बनाया गया कुरमुरा बिस्कुट ज़ायकेदार!

क्या ये नामुमकिन है?

बिल्कुल नहीं. हम लाए हैं आपके लिए ऐसे बिस्कुट स्वाद-भरे!

बस इत्मीनान से बैठिए और खोलिए एम्प्रो ईलायची क्रीम का पैक.

आखें बंद करके मुंह में डालिए और स्वाद की मौज उड़ाइए!

श...श...श... जल्दी से छुपाइए... कोई आ रहा है इसकी खुशबू से खिंचकर!

एम्प्रो® ईलायची क्रीम जादुई कड़ियां!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्तूबर को जारी किए गए
देश को वापस लेने के पीछे वी.पी.
के पास अपने ठोस तर्क हो सकते हैं.
उनके विरोधी भी यह दावा कर सकते
ऐसा उन्होंने मुसलमानों के बीच
आधार और मजबूत करने के लिए
और चूंकि अध्यादेश भाजपा, विहिप
आरएसएस के साथ लंबी वार्ताओं के
लाया गया था इसलिए उनके विरोधी
र्क दे सकते हैं कि ये संगठन चूंकि उन्हें
का आदमी नहीं मानते, लिहाजा
क कट्टरवाद की चुनौतियों का सामना
और शांति की प्रक्रिया शुरू करने के
नया नेता चुना जाना चाहिए.

व सवाल यह भी उठता है कि कार
सेवा के बाद मुसलमान वी.पी. सिंह
मर्थन देते रहेंगे? रूढ़िवादी मुसलमान
ों के विचारों का संकेत तो यही है कि
. सिंह और मुलायम सिंह के लिए
संख्यकों का समर्थन पत्थर पर लकीर
है. इन नेताओं का मानना है कि
ी मस्जिद को बचाने में दोनों ने जिस
स का परिचय दिया है, वह अपने वादे
रा करने और कानून का राज बनाए
जैसा है.

किन कुछ मुसलमान नेताओं का यह
मानना है कि भाजपा-विहिप गठजोड़
ीकात्मक विजय हासिल की है जिससे
संख्यकों के मन में असुरक्षा और
ारी मशीनरी में उनका विश्वास डिगा
कई मुसलमान नेताओं का यह भी
ना है कि मुसलमानों के वोट पक्के
के लिए मुलायम सिंह ने वी.पी. सिंह
ह पर रैलियां आयोजित करके और
कार सेवकों की व्यापक
तारियां करके हिंदू सांप्रदायिकता को
बढ़ा दिया कि वह अल्पसंख्यकों के
प्रतिकूल साबित हो सकती है.

हरहाल, पिछले दस महीनों ने यह
तरह सिद्ध कर दिया है कि वी.पी.
तन मन से एक घुटे हुए राजनेता हैं.
वे इंदिरा गांधी की विरासत के सबसे
ी उत्तराधिकारी हैं. उनमें वे तमाम
यां हैं जो इंदिरा गांधी में थीं. जैसे
प्रतिद्वंद्वियों को ही आपस में लड़ा देना
अपनी हर कार्रवाई को लोक-लुभावन
का रूप देना. लेकिन इस बार उनका
जोड़तोड़ सफल होगा? एक के बाद
संकटों को उन्होंने जिस तरह संदेहास्पद
ों से निबटाया है उससे उनकी साख
तरह गिरी है.
क और गुपचुप समझौता, एक और
क जोड़तोड़ और बस अंतिम लड़ाई में
ही पराजय निश्चित.

राष्ट्रपति

कई विकल्प सामने

"अनुच्छेद 74 (1): राष्ट्रपति की मदद और सलाह के लिए प्रधानमंत्री की अगुआई में एक मंत्रिपरिषद होगी और राष्ट्रपति उसकी सलाह के अनुरूप ही काम करेगा.

अनुच्छेद 75 (1): प्रधानमंत्री की नियुक्ति राष्ट्रपति करेगा....

(3): मंत्रिपरिषद लोकसभा के प्रति सामूहिक रूप से जवाबदेह होगी."

— भारतीय संविधान

राष्ट्रपति आर. वेंकटरामन आज ठीक वैसे ही राजनैतिक नाटक के मध्य में हैं जिसमें 11 साल पहले नीलम संजीव रेड्डी पड़ गए थे. संविधान विशेषज्ञ ननी पालखीवाला कहते भी हैं कि संविधान को बहुत 'समझदारी से अबूझ' रखा गया है जिससे ऐसे संकट की घड़ी में राष्ट्रपति को और भी अधिकार मिल जाते हैं.

राष्ट्रपति क्या वी.पी. सिंह को बरखास्त कर देते?

परंपरा यह है कि जो नेता बहुमत के समर्थन के प्रति आश्वस्त हो, उसे संसद में इसे सिद्ध करने का मौका दिया जाता है. राष्ट्रपति वेंकटरामन ने 1987 में कहा था (इंडिया टुडे, 31 जुलाई), "राष्ट्रपति को चाहिए कि वह प्रधानमंत्री को सदन की बैठक बुलाकर विश्वास मत पाने का आदेश दे."

क्या विश्वास मत खोए प्रधानमंत्री की सलाह मानना अनिवार्य है?

इस सवाल पर कानूनी माहिर राम जेठमलानी का कहना है, "42वें संशोधन के तहत राष्ट्रपति परंपरा ही नहीं, कानून को भी मानने के लिए बाध्य है. राष्ट्रपति प्रधानमंत्री की सलाह के विरुद्ध इंका को सरकार बनाने के लिए न्यौतते हैं तो यह अधिकारों का दुरुपयोग होगा." लेकिन पूर्व महान्यायवादी के. परासरन का मानना है, "बहुमत खो चुका प्रधानमंत्री राष्ट्रपति को सलाह देने वाला कौन होता है?"

प्रधानमंत्री हार जाए तो राष्ट्रपति सबसे बड़ी पार्टी के नेता को सरकार बनाने का न्यौता दे सकता है?

जाने-माने संविधान विशेषज्ञ के.के. वेणुगोपाल का मानना है, "राष्ट्रपति का

प्रकाश पांडेय

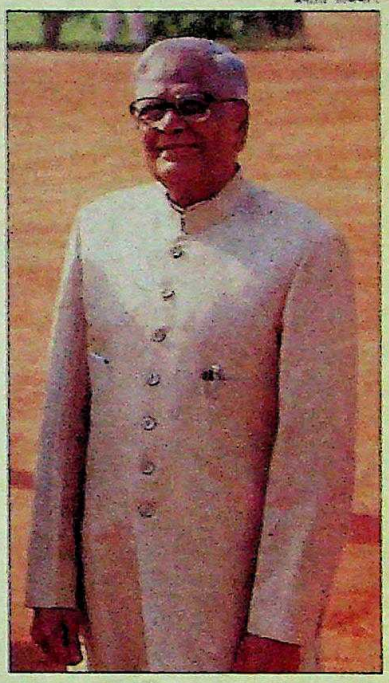

वेंकटरामन: निर्णायक घड़ी

कर्त्तव्य है कि वे सरकार बनाने के लिए सबसे बड़ी पार्टी के नेता को बुलाए." राष्ट्रपति अगर संतुष्ट हो कि इंका स्थायी सरकार बना सकती है, वे उसे सरकार बनाने का न्यौता दे सकता है. विशेषज्ञों का मानना है कि चुनाव कराने से पहले राष्ट्रपति को तमाम संभावनाओं को आजमाना चाहिए.

लेकिन विधिमंत्री दिनेश गोस्वामी संकेत करते हैं कि राष्ट्रपति राष्ट्रीय मोर्चे के किसी नए नेता के अनुरोध की उपेक्षा कर दें, तो अनुचित नहीं होगा.

अगर कोई दल सरकार बनाने के समर्थ न हो तो कामचलाऊ प्रधानमंत्री कौन बनेगा?

विश्वास मत का सामना करने वाला आखिरी नेता ही यह भूमिका निभाएगा. अगर वी.पी. सिंह बहुमत साबित नहीं कर पाए और राजीव गांधी को बहुमत साबित करने के लिए आमंत्रित किया गया तो दो संभावनाएं हैं:

- राजीव इनकार कर देते हैं तो वी. पी. सिंह कामचलाऊ प्रधानमंत्री रहेंगे.
- राजीव सरकार बनाकर बहुमत साबित न कर पाए तो वे कामचलाऊ प्रधानमंत्री होंगे.

—डब्ल्यू.पी.एस. सिद्धू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वी.पी. सिंह

हर तरफ से नाकामी

—इंद्रजीत बधवार

उन्हें दुनिया का सबसे कठिन काम विरासत में मिला: ऐसी अल्पमत सरकार चलाने का, जो वामपंथी पार्टियों और भाजपा के बीच असंभव असंतुलन के आधार पर टिकी रही. इसके लिए असाधारण राजनैतिक कौशल की जरूरत थी.

वी.पी. सिंह इसके लिए सबसे उपयुक्त पात्र माने गए थे. आखिर उन्होंने राजीव गांधी को मात दी थी, जिनकी सरकार तीन साल में ही सारी चमक-दमक गंवा चुकी थी.

और वी.पी. सिंह ने अपनी भूमिका का कितना मौजूं नाम दिया था—विशाल भारतीय समाज के अंतर्विरोधों के बीच संतुलन साधने वाले साधक का. मगर अंततः यह साधक मानो पलक झपकते ही समझौतापरस्ती के रास्ते पर चलता हुआ घालमेल और फिर संकीर्ण राजनैतिक जोड़तोड़ पर उतर आया.

आज वे बुद्धिजीवियों, मध्यम वर्ग, व्यवसायियों, छात्रों, शहरी लोगों और ग्रामीणों के बीच अलोकप्रिय हो गए हैं. उनके खिलाफ नारे गढ़े जा रहे हैं, पोस्टरबाजी और पर्चेबाजी हो रही है. और इन सबसे वही ध्वनि निकलती है जो कभी 'राजीव गांधी चोर है' के नारे से निकलती थी.

शुरू में वे वामपंथियों और भाजपा के अंतर्विरोधों में संतुलन बिठाने में कामयाब भी रहे. पर इसकी भारी कीमत भी चुकानी पड़ी—राष्ट्रीय महत्व के मसलों पर, चाहे पंजाब हो या कश्मीर, चुनौतियों से पीछे हटने के रूप में. दरअसल, वामपंथियों और भाजपा दोनों ने ही उन्हें पूरी आजादी दे दी थी कि वे उनके समर्थन के प्रति आश्वस्त रहते हुए अपनी पार्टी की गुटबाजियों से निबट लें. मगर वे इसमें नाकाम रहे. देवीलाल और चंद्रशेखर की चुनौतियों से वे प्रभावी ढंग से नहीं निबट पाए. और एक के बाद एक समझौता करने के चक्कर में वे अपने दल के दलदल में ही फंस गए जिससे वे कभी नहीं उबर सके.

देवीलाल और हरियाणा उनके दिमाग पर देश से ज्यादा हावी हो गया.

इसकी वजह भी थी. वे राजनैतिक दांवपेच के सहारे ही प्रधानमंत्री बने थे. तब कई लोग इस सच को स्वीकारने को तैयार नहीं थे पर जिस दिन और जिस तरह से वी.पी. सिंह प्रधानमंत्री चुने गए, उसी दिन और उसी कारण से उनकी वह छवि धूमिल होने लगी थी. परदे के पीछे हुई सौदेबाजी—चंद्रशेखर के खिलाफ देवीलाल के साथ हुई दुरभिसंधि—के जरिए वे प्रधानमंत्री बने थे.

प्रमोद पुष्करणा

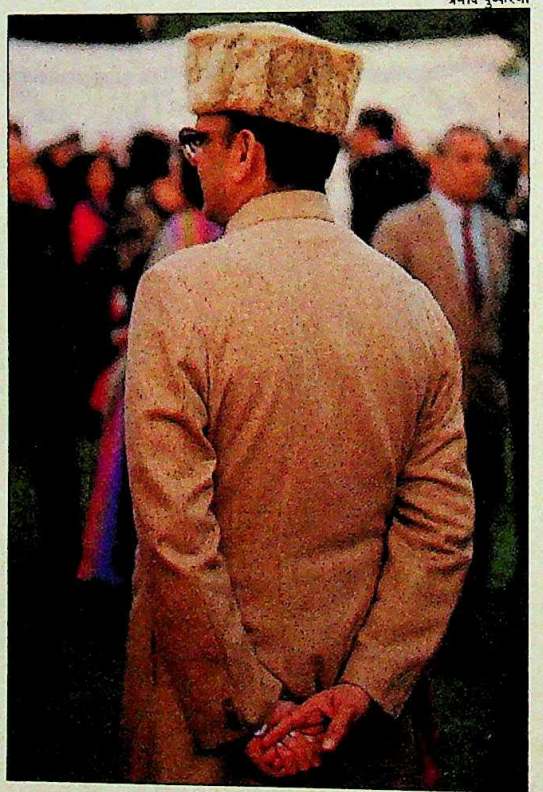

वी.पी. सिंह के तीन दौर

विजेता: ग्यारह महीने पहले वे नए राष्ट्रीय विकल्प के रूप में उभरे थे.

समझौतावादी: वामपंथी दलों और भाजपा को रिझाने के चक्कर में वे राष्ट्रीय मुद्दों को सुलझाने में असफल रहे.

जातिवादी: वोट बैंक बनाने के लिए वे जातिवादी और सांप्रदायिक राजनीति पर उतर आए.

जो आदमी निरंतर यह कहता रहा कि प्रधानमंत्री पद की बात तो दूर, मैं कभी कोई पद ही नहीं स्वीकार करूंगा, उस आदमी ने साजिश के सहारे कुर्सी हथियायी तब पहली बार उनके आलोचकों के इस आरोप में दम और नैतिक धार भी दिखी कि राजा पाखंडी और सिद्धांतहीन हैं.

सो, उन्होंने अनैतिकता से ही जो शुरुआत की उसका खामियाजा उन्हें आज तक भुगतना पड़ रहा है. कुर्सी की दौड़ में चंद्रशेखर को पछाड़ने के लिए देवीलाल के साथ षड्यंत्र करके वी.पी. सिंह ने मानो उस शैतान से हाथ मिला लिया जो अपनी कीमत वसूलने से बाज नहीं आता.

पतन का क्रम 27 फरवरी को महम उपचुनाव में हुई भारी हेराफेरी और अगले दिन पुनर्मतदान के दौरान भारी हिंसा के साथ शुरू हो गया. चुनाव रद्द कर दिया गया. देवीलाल के बेटे ओमप्रकाश चौटाला के इस्तीफे के सवाल पर वी.पी. सिंह के रुख के समर्थन में पार्टी ही नहीं, पूरा देश खड़ा हो गया था. परंतु वी.पी. सिंह ने क्षुद्र समझौता किया. बेटे को बचाने के लिए देवीलाल ने 11 मार्च को इस्तीफे की धमकी दे डाली और वी.पी. सिंह ने चौटाला को मुख्यमंत्री बने रहने की इजाजत देकर देवीलाल को मना लिया. हालांकि बाद में चौटाला की जगह बनारसीदास गुप्ता को मुख्यमंत्री बना दिया गया.

पर यह तो दुखद दास्तान की शुरुआत ही थी. जून में चौटाला ने दूसरे विधानसभा क्षेत्र दड़बा कलां से चुनाव जीत लिया. 12 जुलाई को वी.पी. सिंह और देवीलाल के बीच गोपनीय सौदेबाजी की खबर आई और चौटाला को मुख्यमंत्री पद की शपथ गुपचुप दिला दी गई. इसके बाद तो पार्टी के भीतर तूफान ही खड़ा हो गया. कई मंत्रियों ने इस्तीफा दे दिया. हद तो उस समय हो गई जब खुद वी.पी. सिंह ने भी इस्तीफा देकर वापस ले लिया. और देवीलाल ने जब उनको खुलेआम 'रीढ़हीन' कह दिया तो उन्होंने देवीलाल को बरखास्त कर दिया.

देवीलाल को निकाले जाने के बाद एक सप्ताह एक बार फिर वी.पी. सिंह के लिए अनुकूल अवसर के रूप में आया था. इसका फायदा उठा सकते थे पर चूक गए एक हफ्ते के ही भीतर 7 अगस्त को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाल की रैली के एक दिन पहले उन्होंने
की छाती पर मंडल रूपी बम छोड़
. यह कदम उन्होंने ऐसे मौके पर
ा कि इस तरह के फैसले के हिमायती
उनकी नीयत पर शक करने लगे. शायद
अंतर्मन में कहीं उन्हें अपने इस फैसले
ौचित्य का यकीन था. मगर जब इस
के विरोध में अपूर्व छात्र आंदोलन
आत्महत्याओं व आत्मदाहों का
सिला शुरू हुआ तो उन्होंने तुरंत
ीय संवेदना तक व्यक्त करने की

खां से गाढ़ी छानने लगे.

अब तक यह उजागर हो गया कि सिद्धांत प्रेम नहीं बल्कि सत्ता की भूख ही उन पर हावी रही है. इसकी एक झलक 1987 में इलाहाबाद उप-चुनाव के समय मिली जब उन्होंने आरिफ मुहम्मद खां को चुनाव प्रचार के लिए आने से मना कर दिया ताकि मुस्लिम कट्टरपंथी भड़क न जाएं. मुस्लिम महिला विधेयक के विरोध के कारण आरिफ कट्टरपंथियों की आंख की किरकिरी बन गए थे.

प्रमोद पुष्करणा

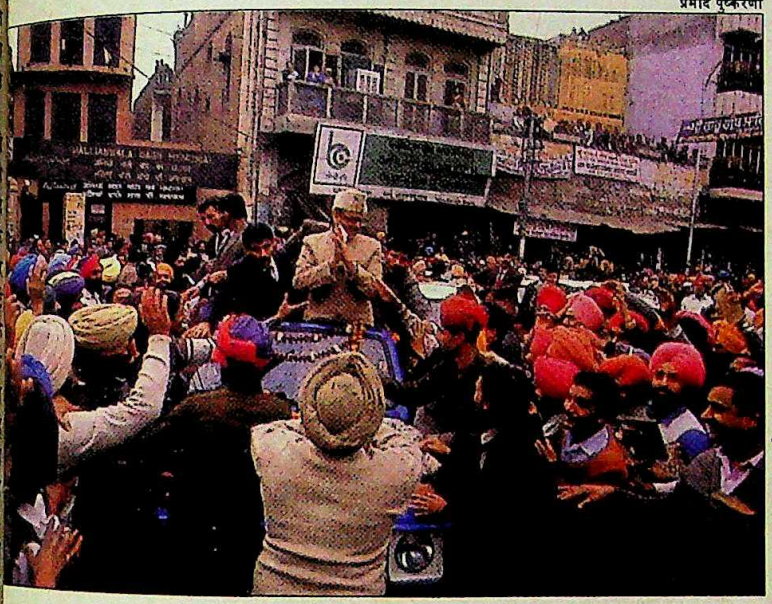

पिछले दिसंबर में बड़े शोर-शराबे के साथ की गई वी.पी. सिंह की पंजाब यात्रा से उभरी आशाएं क्षणिक ही साबित हुईं

रत नहीं समझी. इससे उनके
ोगियों तक को सदमा लगा.
आरक्षण के फैसले के काफी पहले ही वे
मंडल में हुई उन चर्चाओं से काफी
वादित थे जिनमें यह हिसाब लगाया गया
कि कौन-सा जातीय समीकरण किस
करण को काटेगा, पिछड़ों का वोट बैंक
तरह उनकी कुर्सी को अगले 20 साल
लिए सुरक्षित कर देगा.
वी.पी. सिंह के समर्थक ही उनकी
द्धताओं पर सवाल खड़े करने लग
जब वे उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री और
में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष थे, उन्होंने
ण-ठाकुर-हरिजन-मुस्लिम वोट के
करण का खेल खेला. जनता दल बनने
बाद वे देवीलाल की अगुआई वाले जाट
के चक्कर में आए. इससे मोहभंग
तो उन्होंने यदुवंशी नेताओं को दोस्त
लिया और मुस्लिम वोट बैंक को पक्का
के लिए इमाम बुखारी और आजम

मगर जरूरत पड़ने पर वी.पी. सिंह हिंदू कार्ड खेलने से भी नहीं हिचके. पिछले साल अपने चुनाव प्रचार के अंतिम दौर में वे नवंबर में अयोध्या में होने वाले शिलान्यास समारोह का विरोध करने के लिए अयोध्या जाने तक का फैसला कर चुके थे मगर जब उनसे कहा गया कि इससे हिंदू जनमत उनके खिलाफ हो जाएगा तो उन्होंने बिना कोई कारण बताए कार्यक्रम रद्द कर दिया.

पानी सिर से गुजरने का खतरा हो तभी कार्रवाई करने की उनकी शैली बरकरार रही है. राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद की वे 10 महीने तक अनदेखी करते रहे पर जब लालकृष्ण आडवाणी ने रथयात्रा शुरू कर दी तो समाधान खोजने लग पड़े. भाजपा और विहिप से वार्ताओं के दौर के बाद उन्होंने अफरातफरी में अपने फार्मूले पर मंत्रिमंडल की सहमति ली. इस फार्मूले के तहत केंद्र को अयोध्या के विवादास्पद स्थल का अधिग्रहण कर लेना था और भाजपा को रुख नरम बना लेना था. इस फार्मूले वाले अध्यादेश पर राष्ट्रपति से दस्तखत कराए गए. पर मुस्लिम नेताओं के दबाव में 48 घंटे में ही अध्यादेश वापस लेकर वे भाजपा से टकराव की मुद्रा में आ गए.

अपने लिए समर्थन की तलाश में उन्होंने दूरदर्शन पर राष्ट्र के नाम आंसू भरी अपील तक जारी की कि धर्मनिरपेक्ष मूल्यों की रक्षा के संघर्ष में देश उनका साथ दे. मंत्रिमंडल के एक मुस्लिम सदस्य ने गुस्से में उनसे कहा, "आप एक साथ दो नावों पर सवार नहीं हो सकते. आज आप बुखारी और आजम खां जैसे कट्टरपंथी नेताओं के आगे झुके हैं तो कल आपको अशोक सिंहल और भाऊराव देवरस जैसे हिंदुवादी नेताओं के तलवे चाटने पड़ सकते हैं."

जनमोर्चा के उनके एक सहयोगी ने कहा, "हमने उनसे हमेशा कहा, राजा साहब आप राष्ट्रीय मुद्दों की उपज हैं, क्षेत्रीय मुद्दों की नहीं. आप पूरे भारत के नेता हैं. पर लगता है वे यह सब भूल गए हैं." शायद देश ने उनको समझा ही गलत. वे इतने बड़े काम के योग्य थे ही नहीं.

वैसे, वी.पी. सिंह के खाते में यह उपलब्धि जरूर है कि सत्ता ने उन्हें भ्रष्ट नहीं किया. उन्होंने अपनी छवि साफ-सुथरी बनाए रखी. उन्होंने न्यायालय की नियुक्तियों में राजनैतिक दखलंदाजियों को खत्म किया. लेकिन उनका कद कुर्सी से ऊंचा नहीं हो पाया है. वे सचमुच नेता नहीं बन पाए हैं, यह भी साबित हो गया.

उन्होंने जो समझौते किए, उनसे अंततः उनकी वह छवि ही धूल-धूसरित हुई जिसके तहत उन्हें व्यवस्था के बाहर का व्यक्ति, टुच्चे स्वार्थों के लिए कुर्सी की परवाह न करने वाला शख्स माना जाता था. दरअसल वी.पी. सिंह का यह पतन किसी सरकार का पतन उतना नहीं है जितना आस्था के साथ विश्वासघात का.

आज देश के सामने फिर कुछ स्पष्ट विकल्प हैं. क्षेत्रीयतावादी, जातिवादी और अलगाववादी ताकतें फिर से कहीं ज्यादा मजबूती से हावी होने लगी हैं. धार्मिक रथयात्राएं, क्षेत्रीयतावादी राजनैतिक लड़ाइयां और नेतृत्व के लिए जातिवादी संघर्ष पहले छोटे पैमाने पर होते थे मगर आज इनका बोलबाला है. अब देखना यह है कि अगले चुनावों में इन घटनाक्रमों से बुरी तरह प्रभावित मतदाता इन कुप्रवृत्तियों को बढ़ावा देने का फैसला करता है या विभाजन की मौजूदा प्रवृत्तियों को नकारकर एकता और स्थिरता के पक्ष में फैसला देता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय जनता पार्टी

हवा बांधने की हसरत

—पंकज पचौरी

राजनैतिक स्वार्थ कैसे-कैसों को हाथ मिलाने पर मजबूर कर देते हैं यह भाजपा और जनता दल के 10 महीने पुराने गठजोड़ के टूटने से फिर उजागर हो गया.

वैसे, समूचा देश इस संबंध विच्छेद और इसके साथ फैली कड़वाहट से नहीं बल्कि इस बात से चकित है कि ये दोनों 10 महीने तक आपस में निबाह कैसे पाए.

ऐसा नहीं है कि इनमें बहुत अच्छी तरह निभती रही. जब भी मौका मिलता, वे एक-दूसरे की टांग खींचने में कोई कोताही नहीं करते. भाजपा के बौद्धिक केवल रतन मलकानी के अनुसार, "हम यह सलीब और 'कब तक ढोते ? यह व्यक्ति हमें हर तरह से तकलीफ ही देने में लगा था. हम एक ऐसी सरकार को समर्थन दे रहे थे, जो हमारा ही समाधि लेख लिखने पर आमादा थी." लिहाजा, भाजपा ने राम जन्मभूमि के मसले पर अपना रास्ता अलग कर लेने का निर्णय ले लिया.

इससे पहले के मतभेदों और टकरावों को भाजपा इस आस में सहती गई कि राष्ट्रीय मोर्चा के इस प्रयोग में भागीदारी करते हुए वह अपनी ताकत भी बढ़ाती रहेगी. कांग्रेस-विरोध के मसले पर सहमत होने के कारण वह पंजाब या धारा 370 जैसे मसलों पर जनता दल के विचारों के साथ अनचाहे भी चलती रही. फिर भी यह गठजोड़ अभी टूटता नहीं. और कुछ जानकार तो यहां तक कहते हैं कि अगर मंडल रिपोर्ट को आगे नहीं लाया गया होता तो भाजपा राम जन्मभूमि के मसले पर किसी समझौते के लिए राजी भी हो जाती.

लेकिन मंडल रिपोर्ट के एकाएक लागू किए जाने के फैसले से भाजपा में सनसनी फैल गई. हालांकि भाजपा के नेतागण यह बात खुलेआम नहीं मानते, पर सचाई यही है कि पार्टी ने इस फैसले को अपने अस्तित्व के लिए ही बहुत बड़ा खतरा मान लिया. आरक्षण के फैसले ने भाजपा के उस हिंदू वोट बैंक को ही छिन्न-भिन्न कर देने का खतरा पैदा कर दिया, जिसे समेटने की कोशिश में भाजपा इतने वर्षों से लगी रही. वोट बैंक के बिखरने की एक मिसाल तब मिली जब क्रुद्ध छात्रों ने दिल्ली में लालकृष्ण आडवाणी और मदनलाल खुराना का घेराव कर इस बात की मांग की कि वे रिपोर्ट को लागू किए जाने का विरोध करें. यह घेराव भाजपा के लिए शहरी और मध्यम वर्ग की ओर से चेतावनी का प्रतीक था. शायद इसी संकेत ने आडवाणी को राम मंदिर के लिए खुलकर तलवार तान लेने का फैसला करने को प्रेरित किया. और भाजपा ने 'सक्रिय विपक्ष' की भूमिका में आने का फैसला कर लिया क्योंकि अतीत में जिन विपक्षी पार्टियों ने यह भूमिका अपनाई, वे फायदे में रही हैं. भाजपा भी इस उम्मीद में है कि चुनाव से पहले सड़क पर उतर आने और जेल भरो आंदोलन चलाने से जितने वोट मिल सकते हैं उतने किसी भी रथयात्रा से मुमकिन नहीं हो सकते.

लेकिन भाजपा की रणनीति में रथयात्रा के महत्व को नजरअंदाज भी नहीं किया जा सकता. भाजपा और आडवाणी ने यही सोचा कि वी.पी. सिंह के जात-पांत वाले तुरुप के पत्ते को धर्म के पत्ते से ही काटा जा

दिल्ली में लालकृष्ण आडवाणी की रथयात्राः भड़काऊ अभियान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरद सक्सेना

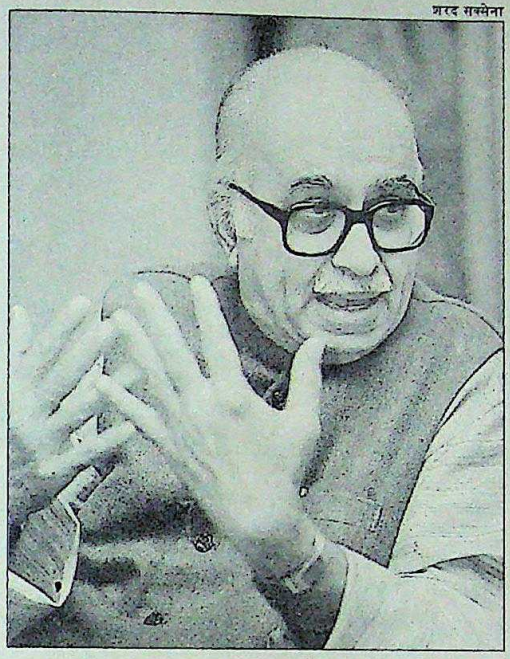

लालकृष्ण आडवाणी

'बेहतर है चुनाव ही हो जाए'

मसानजोर बांध पर सिंचाई विभाग के डाक बंगले की दूसरी मंजिल में नजरबंद होने के बावजूद भाजपा अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी का राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के प्रति गुस्सा ठंडा नहीं हुआ है. बल्कि वे हर मोर्चे पर सरकार की विफलताओं को उजागर करने को कटिबद्ध नजर आने लगे हैं. बाहरी दुनिया से उनका संपर्क टूटा नहीं है. उन्हें एक रंगीन पोर्टेबल टीवी मुहैया कराया गया है. उनके लिए टेलीफोन लगाने के लिए तीन किमी लंबे तार बिछाए गए हैं. अलबत्ता फोन पर वे किससे बात करेंगे, यह फैसला वहां तैनात अधिकारी ही करते हैं. नजरबंदी के बाद प्रेस से पहली बातचीत में उन्होंने वरिष्ठ संपादक प्रभु चावला को टेलीफोन पर इंटरव्यू दिया. कुछ अंश:

● ***क्या आपको यकीन है कि सरकार से समर्थन वापस लेना आपकी पार्टी का समझदारी भरा फैसला था ?***

यकीन ही नहीं, मेरी तो यह पक्की मान्यता है कि इस सरकार का साथ हमारे लिए नुकसानदेह ही साबित हो रहा था. फिर, वी.पी. सिंह ने हमारे समर्थन को जैसे स्थायी समर्थन मान लिया था और हमसे उम्मीद करने लगे थे कि उनके हर सही-गलत काम का हम समर्थन करते रहेंगे. अब तो यह सरकार देश के लिए बोझ बन गई है. सरकार से हमने सिर्फ मंदिर के मुद्दे पर नहीं बल्कि हर मोर्चे पर इसकी विफलता के कारण समर्थन वापस लिया है. राष्ट्रीय मोर्चा सरकार की उपलब्धि शून्य रही है.

● ***आपके फैसले ने देश में राजनैतिक अस्थिरता नहीं ला दी ?***

इस अस्थिरता के लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं. जनता दल सरकार की स्थिरता शुरू से ही संदेहास्पद थी—हमारी वजह से नहीं बल्कि उसकी अपनी गुटीय राजनीति के कारण. पिछले दस महीनों में शायद ही कोई दिन रहा हो, जब सैद्धांतिक या अहम नीतियों के सवाल पर मतभेद न उभरे हों.

● ***अब वी.पी. सिंह से सुलह की कोई संभावना है ?***

जब हम पर पुलिस दमन किया जा रहा है तब यह कैसे हो सकता है ? इस सरकार के साथ अब हमारे कुछ बुनियादी मतभेद हो गए हैं. इनमें कुछ तो तब भी थे जब हमने समर्थन देने का फैसला किया था.

● ***जनता दल यदि दूसरा नेता चुनता है तो उसको आपका समर्थन होगा?***

वाजपेयी जी इस सवाल का जवाब पहले ही दे चुके हैं. हमारी पार्टी तो लोकसभा भंग करवाकर मध्यावधि चुनाव ही चाहती है, और कुछ नहीं.

● ***क्या संभावना है कि लोकसभा में सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव पर भाजपा भी इंका के साथ वोट देगी ?***

वी.पी. सिंह सरकार के खिलाफ हमने अपना अविश्वास प्रस्ताव तो पेश कर ही दिया है. हमारा मकसद लोकसभा को भंग करवाना है ताकि चुनाव जल्दी करवाए जा सकें.

● ***विवादास्पद स्थल पर मंदिर निर्माण के मामले पर क्या आपकी पार्टी अलग-थलग नहीं पड़ गई है ?***

इसे हम अलग-थलग किया जाना नहीं मानते. राष्ट्रीय राजनीति का इस तरह ध्रुवीकरण हो चुका है कि अब दो बड़े राजनैतिक गुट बन गए हैं. एक ओर सारी गैर-भाजपा पार्टियां हैं, और दूसरी ओर हम हैं. सो, दरकिनार होने का सवाल ही कहां है? अब हमारी अलग राजनैतिक पहचान है. यह सरकार तो कुछ कट्टरपंथियों की बंधक है इसीलिए उसने दबाव में आकर अध्यादेश वापस ले लिया.

● ***समर्थन वापस लेने से क्या सांप्रदायिक हिंसा बढ़ी नहीं, और देश धार्मिक आधार पर पहले से ज्यादा विभाजित नहीं हो गया ?***

बिलकुल नहीं. बल्कि इससे दोनों समुदायों के बीच का तनाव कम हुआ है.

● ***लेकिन इससे तनाव तो बहुत बढ़ रहा है ?***

सरकारी प्रचारतंत्र दुष्प्रचार करता रहा है. दूरदर्शन ने तो एकतरफा बयान दिलवाकर हमें बदनाम करने का अभियान छेड़ दिया है. सरकारी प्रचारतंत्र का जिस तरह दुरुपयोग अब हो रहा है, उतना तो इमरजेंसी में भी नहीं हुआ था. यदि कहीं तनाव है तो यह पुलिस की ज्यादतियों और उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा नागरिक अधिकारों के हनन की वजह से है.

● ***क्या आपकी रथयात्रा का उद्देश्य मंडल रिपोर्ट के मसले से लोगों का ध्यान हटाना था ?***

राम मंदिर के लिए अभियान चलाने का फैसला हमने जून में ही कर लिया था, सिर्फ इसकी घोषणा सितंबर में की गई. विहिप ने सरकार को काफी समय दिया था. लगता है सरकार इस मसले को हल ही नहीं करना चाहती थी.

● ***अपना मकसद पूरा करने के लिए आप अपनी रथयात्रा दोबारा शुरू करेंगे?***

हां, मैं इस अभियान को इसका लक्ष्य पूरा होने तक चलाना चाहूंगा. अयोध्या में मंदिर का निर्माण राजनैतिक मुद्दा नहीं, राष्ट्रीय आस्था का मामला है. स्थिति सामान्य होने और सामान्य लोकतांत्रिक प्रक्रिया शुरू करने के बाद ही हम कुछ सोच सकते हैं.

● ***इस सरकार को समर्थन देने का क्या आपको पछतावा है ?***

शुरू में हमारा फैसला ठीक था, क्योंकि जनता ने गैर-कांग्रेसी सरकार के लिए वोट दिया था. मगर पिछले दस महीनों में इस सरकार ने मुझे यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि इस मामले पर हमें पहले ही विस्तार से सोच-विचार कर लेना चाहिए था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

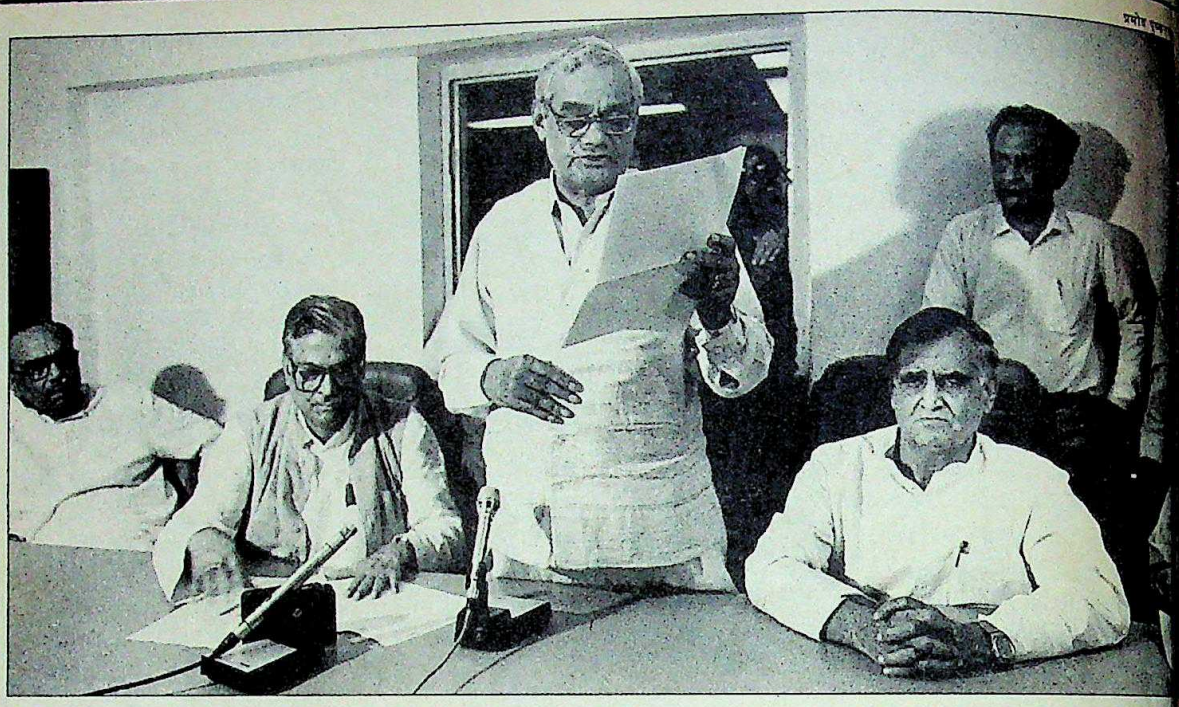

सकता है. इसीलिए रथ को समूचे हिंदी क्षेत्र से ले जाने का कार्यक्रम बना ताकि राम मंदिर के लिए समर्थन जुटाने के साथ-साथ हिंदू वोटों का भी भारी जुगाड़ हो जाए. रथयात्रा का एक और मकसद था. भाजपा नेतृत्व ने यह बात समझ ली थी कि लोग मुद्दों के साथ-साथ नेता के नाम पर भी वोट देते हैं, और इस मामले में पार्टी कमजोर है. उसके पास राष्ट्रीय स्तर का कोई नेता नहीं रहा है, जबकि इंका और वामपंथी दल इस मामले में हमेशा से भाग्यशाली रहे हैं. इसलिए इस रथयात्रा के माध्यम से पार्टी ने आडवाणी को एक राष्ट्रीय छवि प्रदान करके उन्हें एक ऐसे सशक्त विकल्प के रूप में पेश करना चाहा है जिसे देश भर में स्वीकृति और समर्थन मिल सके.

आडवाणी के रथ के दिल्ली पहुंचने के समय तक भाजपा को यह पक्का भरोसा हो चला था कि मंडल की आग को मंदिर की ज्योति की चमक से फीका करने की उनकी कोशिश बेहद सफल रही है. हालांकि इस रथयात्रा ने सांप्रदायिक तनाव और रक्तपात की गंभीर स्थितियां पैदा कीं पर इससे पार्टी की यही धारणा पुख्ता हुई कि 'राम' धुन की रट विभिन्न जाति के हिंदुओं को एकजुट कर सकती है. सोमनाथ से समस्तीपुर तक की यात्रा में आडवाणी ने 37 संसदीय निर्वाचन क्षेत्रों को लांघा और सभी जगहों पर उनकी भरपूर जय-जयकार हुई. वैसे, यह बात काबिलेगौर है कि इन निर्वाचन क्षेत्रों में से नौ तो इंका, छह जनता दल और 16 क्षेत्र भाजपा के कब्जे वाले हैं.

हिंदू जागरण की इस लहर में भाजपा,

वरिष्ठ भाजपा नेताओं के साथ वाजपेयीः एकला चलो

विहिप, आरएसएस और उग्रवादी बजरंग दल की भूमिकाएं स्पष्ट हो गई. आरएसएस को यह समझते देर नहीं लगी कि राम रथ की बागडोर विहिप के कट्टरपंथी महासचिव अशोक सिंहल के हाथों से लेकर आडवाणी को सौंपने से ही इस लहर ने जोर पकड़ा है. आरएसएस के बौद्धिक गोविंदाचार्य कहते हैं, "इस अभियान से भावनात्मक रूप से तो सभी जुड़े हुए हैं. बौद्धिक स्तर पर भी वे इसे जल्द ही समझ जाएंगे."

विडंबना यह है कि रथयात्रा ने देश के विशाल बहुसंख्यक समुदाय में अल्पसंख्यक होने का एहसास जगा दिया है. बिहार से जब यह रथयात्रा आखिरी दौर के लिए शुरू हुई तो यह विडंबना सबसे ज्यादा उजागर होकर सामने आई. अल्पसंख्यकों में एक खास उदार भावना नजर आई. धनबाद, रांची, हजारीबाग, नवादा, गया, बिहारशरीफ जैसे संवेदनशील इलाकों से रथ शांति से गुजर गया. नवादा की मेन रोड पर बिजली की दुकान चलाने वाले 45 वर्षीय मुहम्मद मंजूर खां के इस कथन से विरोधाभास की पुष्टि ही होती है कि "रथयात्रा से मुसलमान आखिर खौफ क्यों खाएं? हिंदू अपने सबसे पवित्र स्थल अयोध्या जा रहे हैं. वहां वे मंदिर बनाना चाहते हैं. हमें बौखलाना नहीं चाहिए."

वी.पी. सिंह, मुलायम सिंह यादव और लालू प्रसाद यादव के कड़े तेवर के कारण भी मुस्लिमबहुल इलाकों में दहशत नह फैली. यदि आडवाणी खुद को राजनीति क राम कहकर प्रस्तुत कर रहे थे तो मुलाय सिंह यादव धर्मनिरपेक्षता का झंडा पू बुलंदी से उठाए मुसलमानों के दिल जीत में लगे रहे.

मुलायम सिंह यादव ने बयानबाजी ह नहीं, कार्रवाई भी सख्त की. रथ उत्तर प्रदे के नजदीक पहुंचा तो उन्होंने आरएसए और भाजपा के पक्के कार्यकर्ताओं की व सूची जारी कर दी जो इमरजेंसी के दौरा तैयार की गई थी. और इसी के आधार प गिरफ्तारियां शुरू हो गईं. उत्तर प्रदेश औ बिहार में बड़ी संख्या में अर्द्धसैनिक बलों क उतारा गया. दोनों राज्यों में तकरीबन द लाख लोग गिरफ्तार किए गए. अब भाज के सामने सवाल यह है कि मुलायम सि यादव ने जो सख्त और मुसलमान समर्थ रवैया अपनाया है, उसे भारी जनसमर्थ मिलेगा या इसकी प्रतिक्रिया में हिंदू वो भाजपा के पक्ष में हो जाएंगे.

लालू प्रसाद यादव ने आडवाणी की गिरफ्तारी की कैफियत इस तरह दी "सरकार को इतना कड़ा कदम मानवता को बचाने के लिए उठाना पड़ा." लेकिन देश का मानव समूह जितना विभाजित आज है, उतना पहले कभी नहीं था. भाज इस विभाजन का फायदा उठाने की कोशि के तहत अपनी उस जमीन को और विस्ता देना चाहती है जो उसने पिछले चुनाव अपने लिए अर्जित की थी. और वह सोच रही है कि इसी तरह एक दिन सा हिंदोस्तां उसका हो जाएगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya

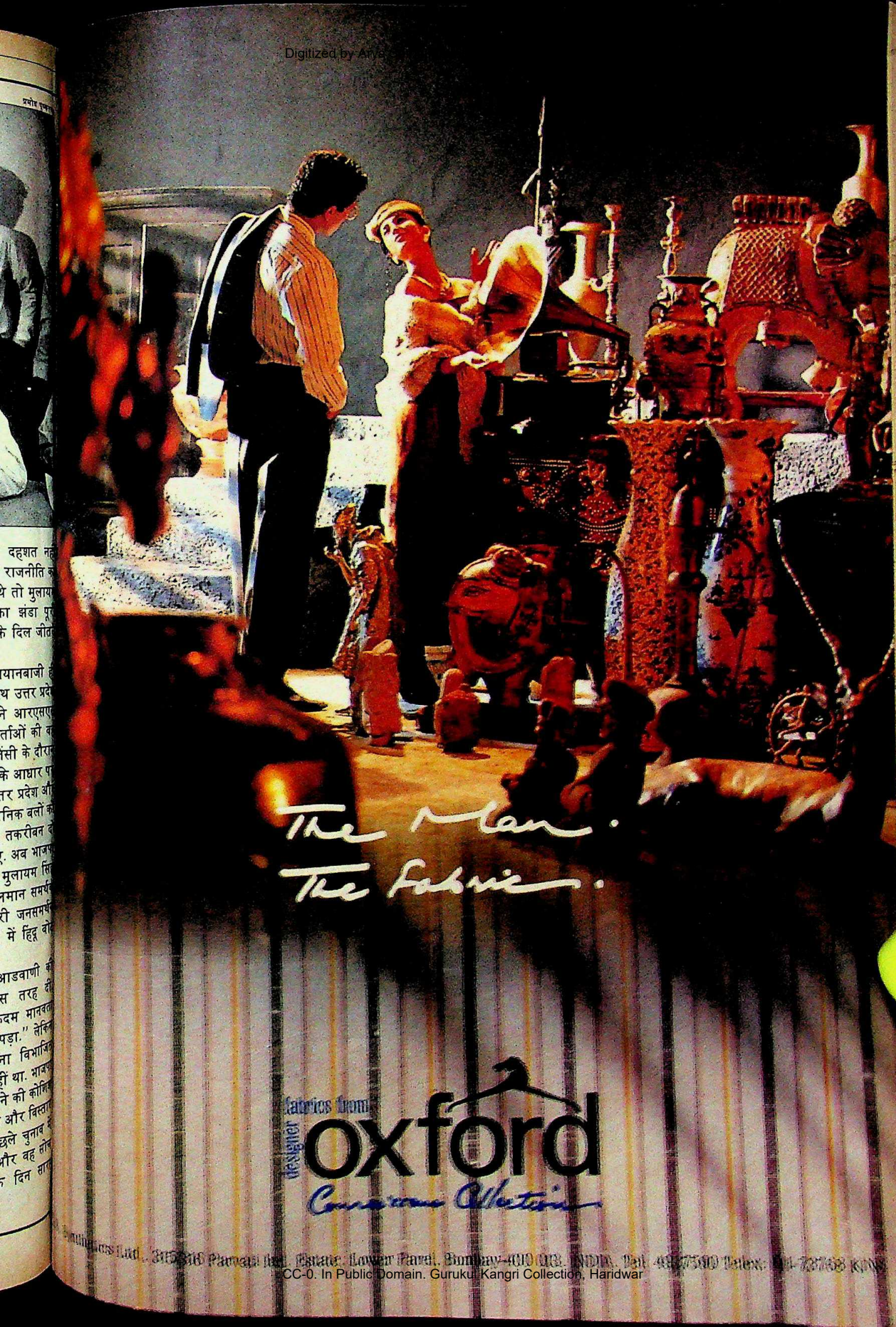

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबसे अधिक ध्यान जापानी पर्यटकों पर दिया जा रहा है क्योंकि वे यूरोपियनों की बनिस्बत खर्चीले होते हैं. पिछले साल विदेश घूमने वाले 1 करोड़ जापानियों में से सिर्फ 50 हजार जापानी भारत आए. लेकिन अब इस अनुपात को बदलने की योजनाएं बन रही हैं. एअर इंडिया के पदेन अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक एस.आर. गुप्ते कहते हैं, "दक्षिण-पूर्व एशियाई बाजार में जापानियों की बाढ़ आ गई है. अब हम मौका नहीं गंवा सकते."

हमारा मकसद 90 के दशक में अधिक से अधिक विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करना है"

बी.के. गोस्वामी
पर्यटन महानिदेशक

देश में पर्यटन विभागों की गतिविधियों को देखकर लगता है कि उन पर पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने का जुनून सवार हो गया है. लेकिन समस्या यह है कि पर्यटक नक्शे से कश्मीर के कट जाने से भारत इन उपायों के जरिए शायद ही विश्व पर्यटन बाजार में अपनी हिस्सेदारी बनाए रख सकेगा. हर साल एक लाख पर्यटक कश्मीर घूमने आते थे. लेकिन इस साल उनकी संख्या में भारी कमी आएगी. साहसिक पर्यटन के प्रमुख टूर संचालक शिखर ट्रैवल्स के प्रबंध निदेशक स्वदेश कुमार कहते हैं, "हमारे यहां 80 फीसदी तक आरक्षण रद्द हुए क्योंकि भारत में साहसिक पर्यटन आम तौर पर कश्मीर तक सीमित है."

कश्मीर आने वाले पर्यटकों की संख्या में कमी का असर दूसरी जगहों पर भी पड़ेगा. इस बार की गरमी में आगरा स्थित वेलकम समूह के होटल के 15 फीसदी कमरे खाली रहे. पिछली गरमी के मुकाबले इस साल होटल उद्योग की बिक्री में लगभग 20 फीसदी गिरावट आई.

साहसिक पर्यटन के लिए कश्मीर का विकल्प मुहैया करने की कोशिश बहुत सफल नहीं रही है. लेह को खोलने की कोशिश भी फायदेमंद साबित नहीं होगी क्योंकि वहां सांप्रदायिक तनाव है. और यहां तक कि आज भी सिक्किम में प्रमुख ट्रेकिंग मार्ग पर्यटकों के लिए नहीं खुले हैं. हिमाचल प्रदेश विकल्प हो सकता है लेकिन वहां बहुत थोड़ी अवधि के लिए ही जाया जा सकता है.

सम्मेलनों से जुड़ा पर्यटन कश्मीर में मची गड़बड़ी के कारण भी तबाह हुआ है. देश के सबसे महत्वपूर्ण सम्मेलन केंद्र—श्रीनगर के शेर-ए-कश्मीर को इसी कारण अपनी दुकान बंद करनी पड़ी है. इसका एक नतीजा यह है कि 1988 में भारत में होने वाले सम्मेलनों की संख्या 1988 में 482 से घटकर पिछले साल 398 हो गई. यह चिंता का विषय इसलिए भी है कि सम्मेलनों में आने वाला पर्यटक आम पर्यटक से औसतन पांच गुना अधिक खर्च करता है.

होटल सुविधाओं की कमी भी एक आम शिकायत है. क्लार्क होटल श्रृंखला चलाने वाली संस्था यू.पी. होटल्स लिमि. के अध्यक्ष एल.पी. गुप्ता का कहना है, "दूसरे देश मूलभूत सुविधाएं जुटा लेने के बाद ही मैदान में आते हैं. हमारे पास तो कमरे भी नहीं हैं." देश को इस सदी के अंत तक एक लाख कमरों की जरूरत पड़ेगी. इसके लिए आठवीं योजना में 6,000 करोड़ रु. के निवेश की जरूरत होगी.

इतना पैसा उपलब्ध नहीं है. भारतीय पर्यटन वित्त निगम के प्रबंध निदेशक आर. सुब्रमण्यम ने बताया कि अगर काम आगे बढ़ाना है तो वित्तीय संस्थानों को इसका 75 फीसदी निवेश करना होगा. हालांकि वित्तीय संस्थानों ने कर्ज के तौर पर जितना धन दिया है उसका एक फीसदी ही पर्यटन व्यवसाय को मिला है. पर्यटन वित्त निगम की स्थापना दरअसल पर्यटन उद्योग में निवेश के लिए की गई थी. इसकी शेयर पूंजी महज 100 करोड़ रु. है जो जरूरत के सामने एक बूंद भर है. इसका सीधा-सा विकल्प है विदेशी निवेश, और नियमों का उदारीकरण ताकि सरकार के सामने खाली खजाने का सिरदर्द भी न रहे और होटल उद्योग में निवेश भी हो सके.

चार्ट: बी.के. शर्मा

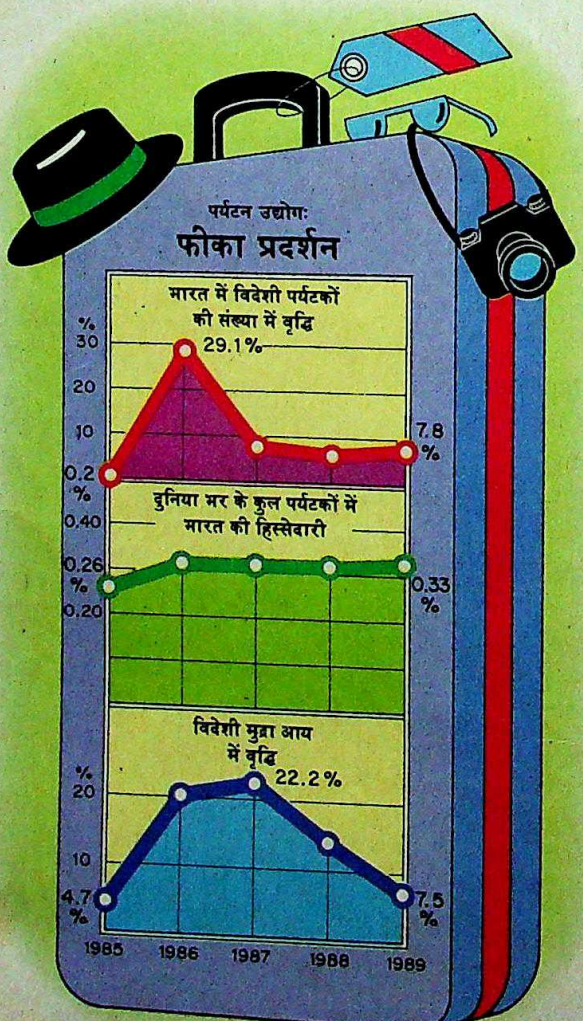

आवाजाही के रद्दी साधन भी एक मूलभूत बाधा हैं. हवाई अड्डों पर जरूरत से ज्यादा बोझ है. घरेलू उड़ानों वाले विमानों की क्षमता बढ़ाने की शायद ही कोई कोशिश हो रही है. इंडियन एअरलाइंस के निदेशक (वाणिज्य) के. लाल के अनुसार ए-320 विमान खड़े कर दिए जाने के बाद वायु परिवहन क्षमता 28 फीसदी कम हो गई है. और इस साल के मुकाबले अगले साल यह क्षमता 15 फीसदी और कम होगी. नतीजे साफ हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुदरत के हाथों बनी

वुल मार्क

नली वुल का दूसरा नाम–वुलमार्क.
सकी पहचान–इसकी शुद्धता.
बसूरत, बने बनाए ऊनी कपड़े.
की ऐसी खूबसूरती जो ज़्यादा समय
तक वैसी ही बनी रहे.
हनने, रखने में पूरा आराम.
अन्तर्राष्ट्रीय गारण्टी वाली.
तो लाइए वुलमार्क.
सिर्फ़ वुलमार्क.

Woolmark
(ऊनमार्क)

आभार :
[illegible] ओसवाल हौज़री फ़ैक्टरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उड़ानों के रद्द होने, उनमें देरी होने और उनके बारे में अनिश्चितता बने रहने के कारण पर्यटक दूसरी बार यहां आने से तौबा कर लेते हैं या कम-से-कम अपने दोस्तों व पड़ोसियों को भारत जाने की सलाह देने से बाज आ जाते हैं.

होटलवालों और पर्यटन एजेंसियों का कहना है कि सरकार ने संसाधनों का जो विस्तार किया है वह नाकाफी है. उनके मुताबिक पर्यटन के नए केंद्र विकसित किए जा रहे हैं जिनके लोकप्रिय होने में कई साल लग जाएंगे, जबकि जरूरी था कि मौजूदा केंद्रों की मूलभूत सुविधाओं को पुख्ता किया जाए.

सरकार अपनी पर्यटन नीति में दूरअंदेशी का कोई परिचय नहीं दे रही. मिसाल के लिए सरकार एक तरफ तो 'भारत चलो वर्ष' की तैयारियों में जोर-शोर से जुटी है, दूसरी तरफ बचत के नाम पर वह विदेशों में सभी भारतीय पर्यटन दफ्तरों को बंद कर रही है.

पर्यटन उद्योग पर टैक्स लगाकर कुछ राजस्व तो इकट्ठा किया जा सकता है पर इसके कारण देश डॉलर, पौंड और येन जैसी विदेशी मुद्राओं से हाथ धो बैठता है.

पिछले साल पर्यटन उद्योग ने विदेशी मुद्रा कमाने में रत्नों और जेवरात को मात दे दी. रत्नों और जेवरात के निर्यात से 1,728 करोड़ रु. की विदेशी मुद्रा हासिल हुई जबकि पर्यटन से 2,208 करोड़ रु. की. इतनी ही महत्वपूर्ण बात यह है कि पर्यटन उद्योग से हर साल तीन लाख लोगों को रोजगार दिया जा सकता है. ओबेराय होटल्स के उपाध्यक्ष पी.आर.एस. ओबेराय के अनुसार, "न तो केंद्र और न ही राज्य सरकारें समझ पाती हैं कि होटल में लोगों को रोजगार भी मिलता है. वे अभी भी इसे राजस्व कमाने का जरिया मानते हैं."

"सरकारी नीतियों के कारण ही वृद्धि दर में गिरावट आई है"

राम प्रसाद
अध्यक्ष, फेडरेशन ऑफ होटल्स ऐंड रेस्टोरेंट एसोसिएशन ऑफ इंडिया

इन निराशापूर्ण स्थितियों के बावजूद उम्मीद के कुछ कारण भी मौजूद हैं. घरेलू पर्यटन बढ़ रहा है. पिछले साल 5 करोड़ भारतीय लोग छुट्टियां मनाने घर से निकले. गरमियों में मसूरी के रास्ते पर इतनी कारें जमा हो जाती हैं कि ट्रैफिक जाम हो जाता है. ऊटी में कमरे महीनों पहले बुक कराने पड़ते हैं. गोवा का नंबर तो सबसे ऊपर है. पुरी में पर्यटकों का हुजूम उमड़ पड़ता है. दार्जिलिंग में लोग फिर से पहुंचने लगे हैं.

पर्यटन उद्योग के लिए यह देसी पर्यटन विदेशी पर्यटन के मुकाबले कई गुना बड़ा है. इसकी वजह से धंधा साल भर चलता रहता है और मुनाफा बढ़ता है. इसकी संभावना का एहसास सभी को है. इसीलिए बड़े होटल समूह भी सस्ते होटल खोल रहे हैं. पर हमेशा की ही तरह सरकार इसमें भी बहुत कम मदद कर रही है. अभी तक तो कम ही मदद मिली है. सीता वर्ल्ड ट्रैवल्स के अध्यक्ष इंदर शर्मा के अनुसार, "जब तक पर्यटन को अमीरों का शगल समझा जाएगा और इसे विदेशी मुद्रा हासिल करने के माध्यम के तौर पर देखा जाएगा, देसी पर्यटन को प्राथमिकता नहीं हासिल होगी." और सचमुच पर्यटन उद्योग पर करों का जो भारी बोझ है वह सोने के अंडे देने वाली मुर्गी को हलाल करने जैसा ही है.

—सुरजीत दासगुप्ता

नामस भोजानी

पर्यटकों की बढ़ती भीड़ के कारण कई कंपनियां नए होटल खोल रही हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

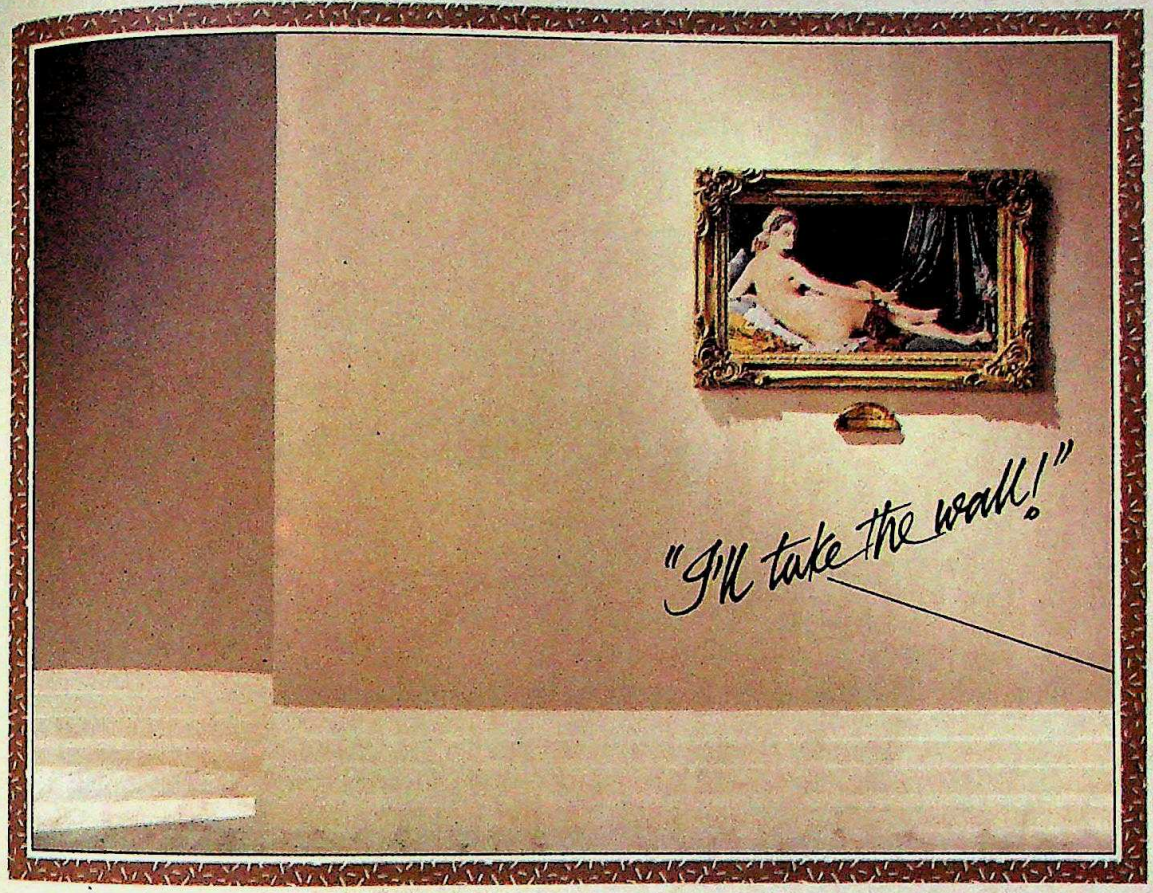

Special Effects
Special Wall Finish

The Masterpiece
By Jenson & Nicholson

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3.2 घन मीटर
सिर्फ़ इस गाड़ी में। चारि
होने लगे तो मज़े से कार
ही पिकनिक हो जाए।

अनुमान किया जाता है कि
और मौज-मस्ती करने वाले

हिंदुस्तान मोटर्स लाए हैं एम्बैसेडर नोवा। आपकी जानी-पहचानी एम्बैसेडर की वही ज़्यादा जगह, वही सुरक्षा और वही विलासपूर्ण आराम, लेकिन साथ ही चलाने का भरपूर नया आनंद।

नया स्मूथराइड सस्पेन्शन जिसमें लगे हैं ऐंटी-रोल बॉर्स, गाड़ी का हिलना-डुलना कम करने के लिए,और बेआवाज़ बॉल जॉइंट जिनकी देखभाल नहीं के बराबर। साथ ही नए मेटेलास्टिक बुश जो धचकों-धक्कों से आपकी रक्षा करें। यानी रास्ते भर आपका राजदुलारा चैन से सोए।

नए डबल सेफ़्टी ब्रेक, अब टैंडेम मास्टर सिलिंडर और हर एक्सिल के लिए अलग सर्किट सहित। एक काम करना बंद कर दे तो दूसरा चलता जाए।

नया टचलाइट स्टेयरिंग सिस्टम हैलिकल रैक और विशेष पिनियन व्यवस्था से युक्त—जिससे स्टेयरिंग घुमाना-फिराना अब बेहद आसान (घुमाव भी 10.8 मीटर का!)।

स्टेयरिंग कॉलम को भी एर्गोनॉमिक तकनीक से सुधार दिया गया है जिससे गाड़ी की चाल में अब एक नई रवानी है। पार्किंग की आख़िरी जगह में भी गाड़ी बेहिचक चली जाए।

नए ईज़ीशिफ़्ट क्लच में अब एक ऐसा डायफ़्राम लगा है जिससे गेयर बदलना पहले से कहीं ज़्यादा आसान हो गया है।

यही नहीं, नई फ़ॉर्म्ड वायर स्प्रिंग सीटें भी अब कहीं ज़्यादा आरामदेह हैं। नए 30 से.मी. (12 इंची) वाइपर और नए डिज़ाइन की वैदर स्ट्रिप्स भीषण तूफ़ान में भी साथ न छोड़ें। बेहतर काब्युरेटर पहले से अधिक ईंधन-क्षमता दे। और ज़्यादा शक्तिशाली हैडलैंप रात में दिन का उजाला कर दें।

तो यह है नई एम्बैसेडर नोवा – अब यह बताइए कि इसमें बैठकर आप अगली पिकनिक पर कहाँ जाना चाहेंगे?

AMBASSADOR
NOVA
चलाकर देखिए एक बिलकुल नया अहसास

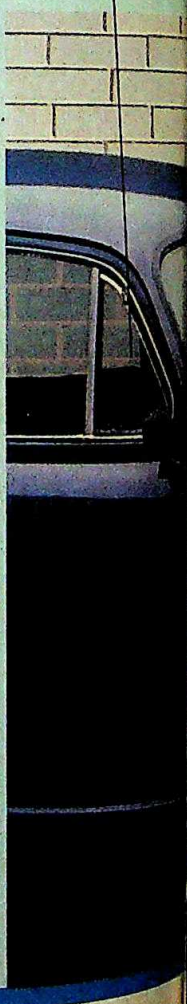

नया स्मूथराइड सस्पे
लम्बे से लम्बे सफ़र
आरामदेह बनाए।
स्पॉट तक जाते
पथरीली सड़कें भी
समस्या नहीं।

TOUCHLITE STEERING
DOUBLE SAFETY
SMOOTHRIDE SUSPENSION
Easyshift Clutch

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस (इ)

दुविधा की राजनीति

—भास्कर राय और ब्यूरो रिपोर्टें

राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के पतन की घड़ी पास आ गई है. फिर भी इंका आलाकमान को नहीं लगता कि इंका की वापसी का सही समय आ गया है. पार्टी अभी भी मतदाताओं के पास जाने से घबरा रही है. इंका के प्रवक्ता विट्ठल नरहरि गाडगिल ने कहा, "तनावपूर्ण माहौल को देखते हुए अभी अवधि चुनाव से बचना चाहिए." वैसे, इंका संसद में अकेली सबसे बड़ी पार्टी है लेकिन उसने सरकार बनाने का दावा पेश नहीं किया. उलटे, उसने घोषणा की कि अगर राष्ट्रीय मोर्चा वी.पी. सिंह की जगह किसी और को नेता चुन ले तो वह उसे अपना समर्थन देगी.

इंका मंडल और मंदिर के मुद्दे से परेशान है. जनता दल जहां मंडल के सहारे पिछड़ों के वोट पर आस लगाए बैठा है और भाजपा को राम मंदिर से भरोसा है, इंका ने अभी तक इन दोनों मुद्दों पर अपनी स्थिति स्पष्ट नहीं की है. उधर, देर से ही सही लेकिन भाजपा के खिलाफ कड़ा कदम उठाकर वी.पी. सिंह ने तथाकथित धर्मनिरपेक्ष ताकतों को अपने पक्ष में कर लिया लगता है.

इसके विपरीत इंका बिना कुछ किए-धरे ही धर्मनिरपेक्षता का रट्टा भर लगाती आ रही है. मसलन, राष्ट्रीय एकता परिषद की बैठक में राजीव के आश्वासन के बावजूद लालकृष्ण आडवाणी के राम रथ को इंका-शासित महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक से बेरोकटोक निकल जाने दिया गया. पार्टी नेतृत्व ने हालांकि रथयात्रा पर रोक लगाने की मांग की थी पर इंका के किसी मुख्यमंत्री ने रथ को रोकने की हिम्मत नहीं दिखाई, जो अपने मुख्यमंत्रियों पर राजीव का नियंत्रण कमजोर पड़ने का ही शायद संकेत है. कर्नाटक में तो जिस तरह दंगे फूटे, वे रथयात्रा को रोकने का अच्छा कारण बन सकते थे. लेकिन अपने हाथ खींचकर इंका ने अल्पसंख्यकों का विश्वास जीतने का स्वर्णिम मौका भी हाथ से जाने दिया. मुस्लिमबहुल इलाकों में राजीव की सद्भावना यात्रा की सफलता से उनके इंका की ओर फिर से झुकने की उम्मीद की जा रही थी.

इसी प्रकार, मंडल आयोग की रिपोर्ट लागू करने के फैसले पर पार्टी का रुख एकदम अस्पष्ट ही रहा. पार्टी के कई नेताओं ने सरकारी फैसले का स्वागत किया. पूर्वी उत्तर प्रदेश के प्रमुख इंका नेता चंद्रजीत यादव ने तो सामाजिक न्याय पर राष्ट्रीय सम्मेलन ही करा डाला, जिसमें दक्षिण के अनेक इंका सांसदों ने पिछड़ी जातियों को आरक्षण देने के फैसले को 'गांधीजी के सामाजिक न्याय' की नीति का विस्तार करार दिया. दूसरी तरफ अनेक कांग्रेसी आरक्षण विरोधी आंदोलन को समर्थन देना जारी रखे हुए हैं.

इंका इन दोनों मुद्दों से लाभ उठा पाने में असफल रही है. इसके साथ ही पार्टी संगठन में बदलाव न करके उसने चुनाव में उतरने की अपनी अनिच्छा ही जाहिर की है. खुद राजीव भी स्वीकार करते हैं कि लोकसभा और विधानसभा चुनावों में पार्टी की पराजय का एक कारण पार्टी की कमजोर संगठन क्षमता भी है. और फिर, सद्भावना

भागलपुर की सद्भावना यात्रा में राजीवः जोरदार वापसी

भवान सिंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यात्रा के कारण पार्टी का प्रस्तावित सदस्यता अभियान, जिसके बाद सांगठनिक चुनाव होंगे, नहीं चल पाया है. सांगठनिक मामलों के प्रभारी महासचिव बलराम जाखड़ मानते हैं, "पार्टी चुनाव की आखिरी तारीख बढ़ाए जाने की संभावना है."

तमिलनाडु के उजाड़-से पड़े इंका मुख्यालय या चुनाव की दृष्टि से महत्वपूर्ण उत्तर प्रदेश इंका की निष्क्रियता को ही देखें. नारायण दत्त तिवारी के विदेश यात्रा से लौटने या एक ही महीने की दो तारीखों पर उनके जन्मदिन पर शानदार पार्टियां देने के अलावा इंका में कुछ खास नहीं हुआ है. हां, मुलायम सिंह यादव के 'अत्याचार' के खिलाफ शीला दीक्षित और बलराम सिंह यादव ने जरूर गिरफ्तारी दी थी.

इतनी कमियों के बावजूद राजीव की वापसी के आसार दिखने लगे हैं. उनके प्रबल आलोचक भी मानते हैं कि उनकी सद्भावना यात्रा जबरदस्त सफल रही है. भाजपा शासित मध्य प्रदेश के इंदौर से लेकर दक्षिण में हैदराबाद और संवेदनशील अयोध्या में भी सत्ता से हटे नेहरू वंश के इस उत्तराधिकारी का स्वागत करने के लिए हजारों की भीड़ जुटी. हर शहर में यह नारा लगा, "देश का नेता कैसा हो, राजीव गांधी जैसा हो."

लेकिन कांग्रेसी भी मानते हैं कि राजीव की लोकप्रियता इंका की गतिशीलता से नहीं, राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के कामकाज से पैदा हुए मोहभंग से बढ़ी है. इंका सांसद कमलनाथ कहते हैं, "देश के राजनैतिक इतिहास में इस वर्ष से बुरा साल कोई और नहीं आया है, जब हम एक 'पद छोड़' प्रधानमंत्री का शासन देख रहे हैं."

और इंका तभी चुनाव मैदान में उतरना चाहेगी जब मतदाताओं का मोहभंग पूरा हो जाए. इंका जनता दल के खुद ही बरबाद हो जाने की आस लगाए बैठी है. हां, पार्टी को दोफाड़ करवाकर वह इस प्रक्रिया को तेज करना चाहती है. यह हो या न हो, जनता दल के खिलाफ नकारात्मक वोट बढ़ते जाएंगे. उत्तर प्रदेश के एक नेता प्रमोद तिवारी कहते हैं, "नकारात्मक वोट का जाति और धर्म नहीं होता. यह हमेशा काम न कर पाने वालों के खिलाफ और कर सकने वालों के पक्ष में जाता है."

राजीव गांधी के खिलाफ नकारात्मक वोट के कारण ही राष्ट्रीय मोर्चा और भाजपा की सरकारें केंद्र और राज्यों में बनीं. लेकिन साल भर से कम समय में ही पांसा पलट गया है और अब राजीव और उनकी पार्टी उस वक्त का इंतजार कर रही हैं जब मतदाता नकारात्मक वोट देंगे, जो उनके पक्ष में पड़ सकते हैं.

राजीव गांधी

'इंका अच्छा विपक्ष नहीं है तो वे भी अच्छे शासक पक्ष नहीं'

उनके चेहरे पर फिर वही चिरपरिचित मुस्कान तिरने लगी है, हौसला बढ़ा हुआ दिखता है. अपनी वापसी के लिए पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने जो अभियान शुरू किया, संयोग से उसके लिए माहौल उपयुक्त मिल गया है. देश में जबकि सांप्रदायिक और जातीय तनाव उभर रहे हैं, राजीव अपनी सद्भावना यात्राओं के साथ मंच पर प्रमुखता पा रहे हैं. उनकी यात्राओं को भारी जनसमर्थन मिल रहा है. भागलपुर से नई दिल्ली लौटते हुए वरिष्ठ संवाददाता ***हरिंदर बवेजा*** *ने उनसे छह सीटों वाले विमान में करीब घंटे भर बातचीत की. उसके अंश:*

● ***आप वी.पी. सिंह की जगह होते तो राम जन्मभूमि विवाद से कैसे निबटते?***

यह मेरी नहीं, उनकी (वी.पी. सिंह सरकार की) समस्या है. यह कहना कठिन है कि मैं तब क्या करता क्योंकि सरकार से बाहर होने के कारण मेरे पास वे जानकारियां नहीं हैं जो वी.पी. सिंह के पास हैं. लेकिन मैं इसमें निश्चित ही एक वर्ष बरबाद नहीं करता. वी.पी. सिंह के निकम्मेपन के कारण देश आज इस हालत में पहुंच गया है. उन्होंने देश को अव्यवस्था और अस्थिरता की ओर धकेल दिया है. मैं एक वर्ष तक मामले को लटकाए नहीं रखता.

● ***लेकिन शिलान्यास की इजाजत आपकी पार्टी ने ही दी. इसलिए वह भी मौजूदा संकट के लिए जिम्मेदार है.***

मैं ऐसा नहीं मानता. पहली बात तो यह कि शिलान्यास शांति से निबट गया था. इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह कि भाजपा गर्भगृह में मंदिर निर्माण शुरू करना चाहती है जो कि शिलान्यास स्थल से एकदम अलग है. मौजूदा संकट तो गर्भगृह से ही जुड़ा हुआ है.

● ***मौजूदा संकट के लिए आप भाजपा को दोषी मानते हैं?***

गलती सिर्फ भाजपा की नहीं है. यह सरकार हर मोर्चे पर बुरी तरह विफल रही है. सरकार एक भी मुद्दे पर अपने मंत्रियों तक को साथ लेकर नहीं चल पाई.

● ***क्या आप वी.पी. सिंह के राजनैतिक कौशल का लोहा भी नहीं मानेंगे? आखिर उन्होंने कितने गंभीर संकटों का सफलता से सामना किया है.***

सवाल यह नहीं है कि वे संकट से उबरने में माहिर हैं या नहीं. सवाल यह है कि उनके सत्ता में आने के बाद देश संकट से उबरा है या नहीं.

● ***क्या वे चतुर नेता नहीं हैं?***

इसका जवाब मैं दूसरी तरह दूंगा. देश को अच्छा नेतृत्व देने के लिए आपको सिद्धांतों और उसूलों से बंधे रहना होता है. मैं नहीं समझता कि वी.पी. सिंह के कोई उसूल या सिद्धांत हैं. वे तो मुद्दों पर आधारित राजनीति कर रहे हैं, किसी दीर्घकालिक सोच के बिना.

● ***क्या आपको लगता है मध्यावधि चुनाव होंगे?***

जरूर होंगे. हर हाल में बजट सत्र से पहले. या तो अभी हो सकते हैं, या चार-पांच महीने बाद. इस सरकार को बजट पेश करना मुश्किल पड़ जाएगा. तब तक कीमतें बिलकुल बेकाबू हो चुकी होंगी.

● ***चुनाव में किसके जीतने की संभावना अधिक है?***

बेशक इंका की ही.

● ***आप इतने आश्वस्त क्यों हैं?***

लोगों की पक्की धारणा है कि देश ठीक से नहीं चलाया जा रहा है. पंजाब, कश्मीर और असम के मामले और गहरे ही हुए हैं. साथ ही सांप्रदायिक तनाव और महंगाई आदि जैसे हर मामले में सरकार नाकाम रही है.

● ***लेकिन क्या विपक्ष के रूप में आपका काम भी असंतोषजनक नहीं रहा?***

मैं मानता हूं. इंका अच्छा विपक्षी दल नहीं है. लेकिन वे भी अच्छे शासक दल नहीं हैं. मगर अपनी भूमिका को समझने में हम उनसे तेज रहे हैं.

● ***आपको नकारात्मक वोट ही मिलेंगे?***

यह तो स्वाभाविक ही है. जनता दल भी तो इसीलिए उभर पाया क्योंकि हमसे गलतियां हुईं.

● ***आपके विचार से प्रधानमंत्री के रूप में आपसे क्या गलतियां हुईं?***

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनता से मेरा संपर्क टूट गया था. यह बहुत बुरा हुआ था. इसका नुकसान यह हुआ कि हम अपनी उप-लब्धियों—जो कि अच्छी-खासी थीं—का एहसास जनता को नहीं करा सके. भागलपुर और मेरठ के दंगों के बाद मुझे इन राज्यों के मुख्यमंत्रियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करनी चाहिए थी. और बाबरी मस्जिद मुद्दे को भी शायद ज्यादा अच्छी तरह निबटाया जा सकता था. हां, एक सवाल ऐसा है, जिसका जवाब हमारे पास कभी नहीं होगा. वह यह कि हमें शिलापूजन रोकना चाहिए था या नहीं. गृह मंत्रालय का विचार था कि शिलान्यास रोकने के लिए हमारे पास पर्याप्त ताकत नहीं थी. उसे रोकना एक उपाय हो सकता था. लेकिन इसके गंभीर परिणाम भी निकलने की संभावना थी.

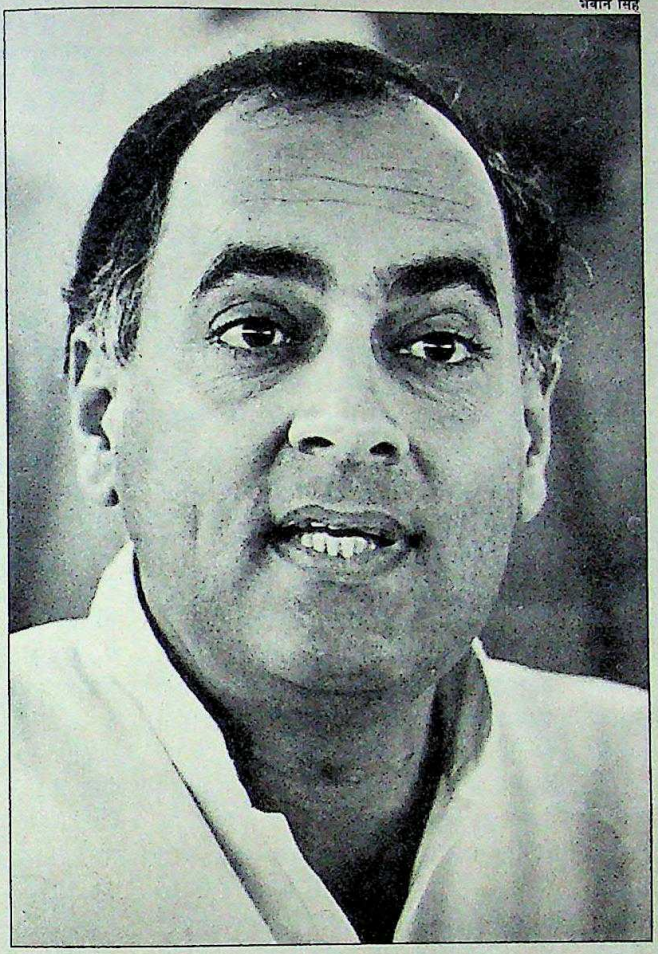
भवान सिंह

• आपकी सद्भावना यात्रा की अब तक क्या उपलब्धि रही है?

सद्भावना के नाम पर लोग जिस उत्साह से आगे आ रहे हैं उससे लोगों में मेरा विश्वास बहुत बढ़ा है. हम नेतागण कई गलतियां करते रहते हैं, लेकिन मुझे विश्वास है कि जनता हमें सर्वदा ठीक राह पर लाती रहेगी.

• आपकी सभाओं में भारी भीड़ जुटती रही है. मगर आडवाणी, वी.पी. सिंह और मुलायम की सभाओं में भी कम भीड़ नहीं होती. इसका क्या मतलब निकाला जाए?

लोग शायद विकल्प तलाश रहे हैं.

• क्या सत्ता में आपकी वापसी होगी?

अपनी सद्भावना यात्रा को मैंने इस नजरिए से नहीं देखा है. अब जो कुछ चल रहा है, उससे लोग खुश नहीं हैं. लिहाजा, वे इंका की ओर ही देख रहे हैं. मध्यावधि चुनावों में वे जाति अथवा धर्म के आधार पर नहीं बल्कि स्थायित्व और सरकार के कामकाज के आधार पर वोट देंगे. और एक पक्की बात है कि इस सरकार ने अब तक कुछ नहीं किया है.

• क्या आप मानते हैं कि वी.पी. सिंह मंडल रिपोर्ट लागू करने पर इसीलिए तुले हैं कि पिछड़ी जातियां तगड़ा वोट बैंक हैं.

"लगता नहीं कि वी.पी. सिंह के कोई उसूल या सिद्धांत हैं. उनकी कार्यशैली में दीर्घकालिक सोच नहीं है"

मेरा खयाल है कि वी.पी. सिंह मंडल रिपोर्ट के मुद्दे पर भी पीछे हटे हैं. पहले उन्होंने कहा कि इसे पूरी तरह लागू किया जाएगा. इसके बाद कहा कि यह कुछ केंद्रीय विभागों के लिए ही लागू होगा. इसके बाद कहा कि जो राज्य चाहें वे इसे लागू कर सकते हैं. लेकिन इंका पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण सहित विशेष कार्यक्रमों के पक्ष में है. मगर उसका दायरा व्यापक होना चाहिए. पिछड़ा आखिर कौन है ? इसकी कसौटी कैसे तय करेंगे ? मंडल आयोग की कुछ सिफारिशें बहुत अच्छी हैं, मगर कुछ सिफारिशें हमें मंजूर नहीं. वी. पी. सिंह को पहले इसके लिए राष्ट्रीय सहमति जुटानी चाहिए थी. दुर्भाग्य से उन्होंने ऐसा नहीं किया क्योंकि उन्हें तो देवीलाल की रैली और अपनी कुर्सी की चिंता ही ज्यादा सता रही थी.

• संसद में इंका सबसे बड़ी पार्टी है. आप सरकार बनाने का दावा करेंगे?

हम स्पष्ट जनादेश के बिना सरकार न बनाएंगे.

• क्या इसलिए कि आप अयोध्या, मंडल, कश्मीर और पंजाब जैसे मुद्दों से कतरा रहे हैं?

इन सबसे तो हम निबट सकते हैं मगर अर्थव्यवस्था पर काबू पाना कठिन है. दूसरी समस्याओं के लिए भी जनादेश तो चाहिए ही.

• आपने कहा है कि आप भाजपा या वी.पी. सिंह को समर्थन नहीं देंगे. क्या इसका मतलब यह हुआ कि चंद्रशेखर को आपका समर्थन रहेगा?

देखिए, हमने कहा था—वी.पी. सिंह के अलावा कोई भी.

• आप चंद्रशेखर से कभी मिले हैं?

नहीं.

• किसी और तरह से संपर्क? टेलीफोन या किसी व्यक्ति के जरिए.

(मुस्कराते हुए) अभी तक नहीं.

• क्या यह सही है कि अब राजीव मंडली नाम की चीज नहीं रही?

अब और भी कई स्रोत हैं.

• कहा जा रहा है कि इंदिरा गांधी होतीं, तो अब तक कभी की सरकार बना चुकी होतीं?

हो सकता है. लेकिन 1977 में एक वर्ष तक तो वे बाहर आईं ही नहीं. वे इंका के विभाजन के बाद ही बाहर निकलीं. हमारा दूसरा कार्यकाल पहले के मुकाबले बेहतर रहेगा.

• क्या आपने अंततः राजनीति को पूरी तरह अपना ही लिया?

हां, बस कभी-कभी इससे दूर चले जाने का मन होता है. मगर यह तो मनुष्य के लिए स्वाभाविक भी है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमेठी और फतेहपुर

टूटे सपनों के आईने

राजीव गांधी के प्यारे दुलारे चुनाव क्षेत्र में दुर्दशा का आलम, तो विश्वनाथ प्रताप सिंह को चुनाव में जिताने वाले मतदाता वादों के पूरा होने के इंतजार में

—दिलीप अवस्थी

अमेठी में चारों ओर जैसे दुर्दशा का आलम है. राजीव गांधी ने जिस चुनाव क्षेत्र को दिल खोलकर पैसे और जतन से सींचा और जो कभी गुलजार नजर आता था, आजकल उसकी ग्रह दशा खराब चल रही है.

इस दशा को पहुंचने में इसे महज 10 महीने लगे हैं. पैसे के स्रोत सूखने के साथ ही नहरें और नलकूप भी सूख गए हैं. अमेठी प्रखंड में करीब 50 नलकूपों में से इस समय तीन ही काम कर रहे हैं. कभी चमचमाती सड़कों पर अब बड़े-बड़े गड्ढे उभर आए हैं. मामला सड़कों की खस्ताहाली तक ही सीमित नहीं है. जामो-भादर रोड या बहादुरपुर-रायबरेली रोड जैसी नई सड़कें बनाने का काम भी रोक दिया गया है. दैनिक यात्रियों पर इस दुर्दशा का भारी असर पड़ा है. अमेठी की चरम खुशहाली के दिनों में उत्तर प्रदेश परिवहन की करीब 205 बसें लखनऊ-जगदीशपुर राजमार्ग पर चला करती थीं और यात्रियों को बस पकड़ने के लिए मुश्किल से 15 मिनट इंतजार करना पड़ता था. पर वे दिन बीत गए. अब बसों की संख्या 90 ही रह गई है और इंतजार की घड़ियां दो से तीन घंटे लंबी खिंच गई हैं.

वी.पी. सिंह सरकार के तहत स्थिति कितनी तेजी से बदतर होती गई है, जगदीशपुर औद्योगिक क्षेत्र शायद इसकी बेहतरीन मिसाल है. पिछले साल तक यहां क्रियाशील 150 छोटी औद्योगिक इकाइयों में से मात्र 12 अब चालू हालत में हैं. आरिफ सीमेंट्स के निदेशक नईम मोहसिन कहते हैं, "इसका मुख्य कारण यह है कि वित्तीय संस्थानों ने अचानक हाथ खींच लिए हैं. सरकारी एजेंसियों या बैंकों के जो लोग हर इकाई की समस्याएं जानने के लिए आया करते थे, अब कहीं मिलते ही नहीं. हालत यह है कि उन लोगों को ढूंढ़ने के लिए हम मारे-मारे फिर रहे हैं."

प्रतिष्ठित कंपनी अमेठी टेक्सटाइल्स उत्पादन के लिए पूरी तरह तैयार है पर उसके पास कामकाजी पूंजी ही नहीं है. पिछले साल तक रेलवे के टिकट और समय सारिणी छापने वाली जगदीशपुर हाईटेक प्रिंटर्स बंद कर दी गई है. और नई परियोजनाएं या तो ठप पड़ी हैं या कछुए की चाल से आगे बढ़ रही हैं. सितंबर 1989 में 'इंडिया टुडे' की ओर से जगदीशपुर में जब पिछली बार सर्वेक्षण हुआ था तो वहां के अधिकांश उद्योगपतियों ने बिजली की निर्बाध आपूर्ति के दावे किए थे. पर अब ऐसा नहीं है. प्लास्टिक का सामान बनाने वाली पुनीत पोलीपैक के मालिक प्रेम खोसला कहते हैं, "हर महीने 50-60 बार से कम बिजली गुल नहीं होती."

आंकड़े खुद ही अमेठी के दुर्भाग्य की ओर इशारा करते हैं:

- राजीव के शासन काल में विकास कार्यों के लिए हर साल 2 से 3 करोड़ रु. की सहायता मिलती थी. यह अब खत्म हो गई है. इतना ही नहीं, चालू वर्ष में सुलतानपुर जिला योजना की रकम 1989 के 15 करोड़ रु. के मुकाबले घटाकर 12 करोड़ रु. कर दी गई है.
- 1989 में ग्रामीण इलाकों में बिजली लगाने के लिए एक करोड़ रु. का प्रावधान था. चालू वर्ष में ऐसा प्रावधान नहीं है.
- पिछले साल तक अमेठी चुनाव क्षेत्र के कुल 1,299 गांवों में से 1,254 में बिजली लग गई थी. बाकी 45 गांव अभी भी बिजली लगने के इंतजार में हैं.

जाहिर है, अमेठी के लोगों में असंतोष फैलने लगा है और इंका भी इसे भुनाने में पीछे नहीं है. क्षेत्र में

राजीव गांधी ने जिस चुनाव क्षेत्र को दिल खोलकर पैसे और जतन से सींचा था, वहां आज 150 औद्योगिक इकाइयों में से सिर्फ 12 ही चालू हालत में हैं

आर.के. गुप्ता

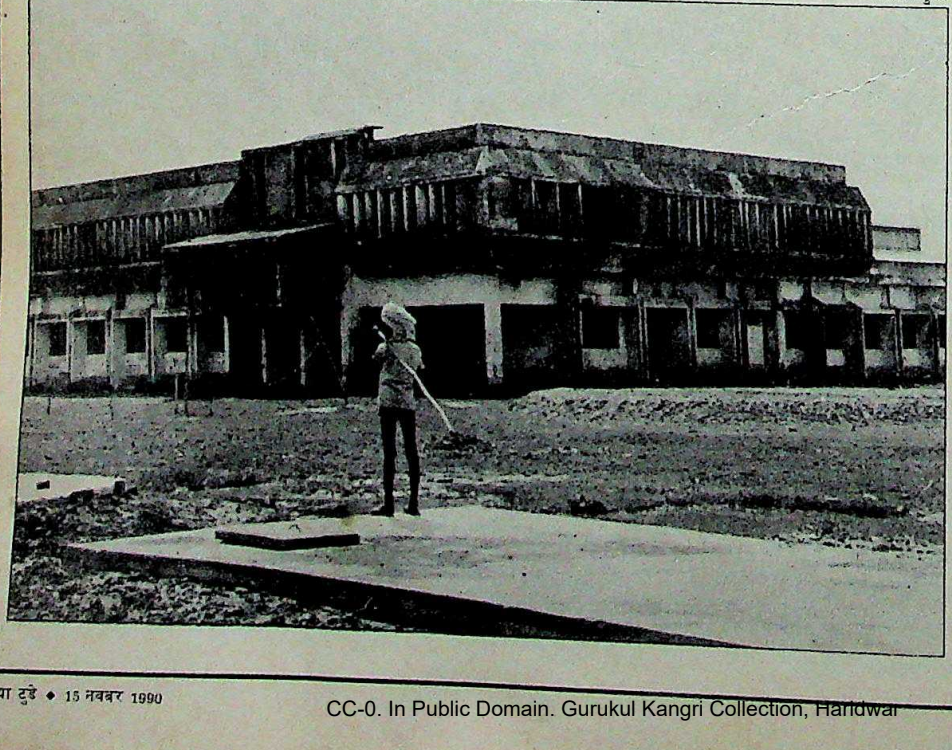

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनमत सर्वेक्षण

राजीव फिर आगे

यदि चुनाव होते हैं और वी.पी. सिंह के मुकाबले राजीव या आडवाणी खड़े हों तो फतेहपुर के मतदाता किसे चुनेंगे? फतेहपुर के साथ ही अमेठी में भी मतदाताओं के मूड को भांपने के लिए 'इंडिया टुडे' ने 21 से 23 अक्तूबर के बीच जनमत सर्वेक्षण कराने का जिम्मा 'मार्ग' को सौंपा. दोनों संसदीय निर्वाचन क्षेत्रों के पांच-पांच विधानसभा क्षेत्रों के मतदाताओं को राजीव बनाम वी.पी. सिंह, राजीव बनाम आडवाणी और वी.पी. सिंह बनाम आडवाणी में से एक को चुनने को कहा गया. राजीव जहां दोनों नेताओं से काफी आगे रहे, वी.पी. सिंह फतेहपुर में भी आडवाणी से पिछड़ गए. इस मोहभंग का सबसे बड़ा कारण महंगाई है.

वी.पी.सिंह का आधार खिसका

राजीव गांधी बनाम वी.पी.सिंह

अमेठी	79%	21%
फतेहपुर	58%	42%

आडवाणी दूर पीछे

राजीव गांधी बनाम लालकृष्ण आडवाणी

अमेठी	83%	17%
फतेहपुर	55%	45%

कांटे की टक्कर

वी.पी. सिंह बनाम लालकृष्ण आडवाणी

अमेठी	47%	53%
फतेहपुर	45%	55%

('पता नहीं' वाले शामिल नहीं)

...व से पहले जैसा माहौल है और राजीव ...त्रों के साथ-साथ जगह-जगह ढेर सारे ...र चस्पां हैं. इन पोस्टरों पर ये नारे ...त हैं—'ठकुरे क बुद्धी, अहिरे क बल; ...ड में घुसि गया जनता दल.' दूसरा ...नित नारा है—'सिर पे टोपी, हाथ ...डल; वीपी को ले डूबा मंडल.'

...यहां तक कि अमेठी के साथ हुए ...हार पर जनता दल के स्थानीय नेता ...विन्न हैं. गौरीगंज में जनता दल के ...यक आनंद कृष्ण कहते हैं, "संसदीय ...तो हमें मिलने की उम्मीद नहीं थी पर ...धानसभा चुनावों में हम अपनी स्थिति ...र ही सकते थे. हमारी सरकार ने यह ...नहीं समझी. अब देखना यह है कि ...न रिपोर्ट संबंधी फैसला हमें यहां ...नी विधानसभा सीटें दिलाता है."

...ना-का-ताल उन अनेक छोटे गांवों में ...जिसके निवासी बेसब्री से राजीव के ...में लौटने के इंतजार में हैं. यह बात ...र है कि इसकी वजह कुछ और है. यहां ...श्याएं उस सुनहरे दौर की याद करती ...ब उनके पास ग्राहकों का तांता लगा ...था. उनका धंधा अब ठंडा पड़ गया ...यहां किसी भी लड़की से बात कर ...ए, वह यही कहती है कि जब 'भैया' ...राज था तब खूब कमाई होती थी. ...के के ठेकेदार दिन की थकान उतारने ...ना-का-ताल आया करते थे. यहां की ही ...वेश्या सुशीला के मुताबिक, "दो-दो ...तीन दिन बिना किसी ग्राहक के गुजर ...हैं." और उसकी सहेली निर्मला तो ...-चलते पूछ भी बैठती है, "अब भैया ...लौटेंगे?"

...हपुर

...स का तस

...मेठी की हालत बिगड़ने में यदि ...दस महीने ही काफी सिद्ध हुए तो ...हपुर का मिजाज बदलने में इतना समय ...त नहीं रहा. विश्वनाथ प्रताप सिंह के ...व क्षेत्र के मतदाताओं को पूरे धैर्य के ...न सही पर अभी भी उन वादों के पूरा ...का इंतजार है जो उनके लिए सुख-...जुटा देंगे.

...जिले के अधिकारी भले ही उन्हें ...स्त करते रहते हैं कि कई केंद्रीय ...नाएं तैयार हो रही हैं और कुछ ...नाओं पर तो काम भी शुरू हो चुका है ...फतेहपुरवासी अब इन आश्वासनों से ...वित नहीं होते. वे अच्छी तरह जानते हैं ...क्षेत्र की दशा आज भी वैसी ही बनी हुई ...जैसी प्रधानमंत्री के वोट मांगते वक्त थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फतेहपुर को दूसरा अमेठी बनते देखने की उनकी लालसा अब धूमिल पड़ती जा रही है. मई में जल्दबाजी में किए गए एकाध दौरों के बाद प्रधानमंत्री द्वारा फिर वहां न जा पाने से यह भावना गहरी ही हुई है. यह बात भी लगभग घर कर चुकी है कि जनता दल सरकार गिरने वाली है.

इस धारणा को स्थानीय इंका नेता मजे लेकर और कुछ हिकारत के साथ फैला रहे हैं. फतेहपुर के पूर्व इंका विधायक खां गुफरान जाहिदी कहते हैं, "लोगों को हम चेताते रहे हैं कि राजा साहब कभी एक ही स्थान से दोबारा नहीं लड़ते. फतेहपुर के मामले में भी अब आप यह देख सकेंगे."

अमेठी की स्थिति आज बदतर हुई है, वहीं फतेहपुर में यथास्थिति कायम है. मुख्य शहर में बिजली गुल होना आम बात है और गांवों को प्रतिदिन महज आठ से दस घंटे ही बिजली मिलती है. पिछले साल जिले में सर्वोत्तम किसान होने के लिए सरकार से 1 लाख रु. का पुरस्कार पा चुके, औराई गांव के राजेंद्र कुमार द्विवेदी कहते हैं, "यह जगह अभी प्रधानमंत्री के चुनाव क्षेत्र जैसी नहीं बन पाई है. दरअसल विश्वनाथ प्रताप सिंह और मुलायम सिंह यादव के बीच दूरी बढ़ने के बाद स्थिति और बिगड़ने लगी. राज्य सरकार ने बीज, उर्वरक आदि मुहैया करना बंद ही कर दिया है."

लेकिन कुछ लोगों को अभी भरोसा है कि अगले साल तक योजनाबद्ध विकास का असर दिखने लगेगा. मई में दरियापुर बलात्कार कांड के बाद नियुक्त हुए एसएसपी अरविंद कुमार जैन का दावा है कि पिछले तीन महीने में यहां हत्या के मामले 60 फीसदी कम हो गए हैं और हरिजनों पर अत्याचार की घटनाएं तो हुई ही नहीं. वे कहते हैं, "अब सभी थानों, चौकियों और गश्ती पुलिस गाड़ियों तक को वायरलेस सेट दिए गए हैं. वजह सिर्फ यह है कि फतेहपुर प्रधानमंत्री का चुनाव क्षेत्र है."

केंद्रीय योजनाओं की उपस्थिति भी थोड़ी-बहुत ही सही पर दिखने लगी है. फतेहपुर के इर्दगिर्द सभी प्रमुख टेलीफोन केंद्रों को इलेक्ट्रॉनिक एक्सचेंज बना दिया गया है, कम-से-कम तीन प्रमुख सुपरफास्ट रेलगाड़ियां फतेहपुर में रुकने लगी हैं, और औद्योगिक क्षेत्र में संयुक्त उपक्रम की एक चीनी मिल के लिए सर्वेक्षण पूरा कर लिया गया है तथा उत्तर प्रदेश राज्य औद्योगिक विकास निगम ने जिलाधिकारी को एक गैस आधारित उर्वरक संयंत्र के लिए 1000 एकड़ जमीन की निशानदेही करने को लिखा है.

हालांकि प्रधानमंत्री ने ऐसा दिखाने की कोशिश की है कि वे अभी अपने निर्वाचन क्षेत्र को नहीं भूले हैं. इसके लिए उन्होंने कई योजनाओं की नींव भी रखी है. पर ये सभी योजनाएं गैरमहत्वाकांक्षी हैं. 9 मई के अपने दौरे में विश्वनाथ प्रताप सिंह ने कई परियोजनाओं की नींव रखी, जिनमें असोथर में सिंचाई परियोजना के लिए जरौली पंप नहर, एक महिला डिग्री कॉलेज और फतेहपुर शहर के लिए सीवर प्रणाली भी शामिल थी.

यह क्षेत्र आरक्षण के मुद्दे पर विवाद से भी अछूता नहीं रहा. सरकारी उर्वरक कारखाने की योजना की प्रगति से ज्यादा बहस का मुद्दा यही है. किशुनपुर के जवाहर स्मृति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य, शिव भावन सिंह कहते हैं, "वर्तमान शासन ने जातिवाद को घृणित स्तर तक पहुंचाने के अलावा हमें कुछ नहीं दिया. पिछले चुनाव में यहां के ठाकुरों ने वी.पी. सिंह का बढ़-चढ़कर समर्थन किया था पर अब वैसी स्थिति नहीं रही. मेरी समझ से ज्यादातर ठाकुर अब वी.पी. सिंह का साथ नहीं देंगे क्योंकि उन्होंने आरक्षण लागू किया है."

प्रधानमंत्री को वोट देने के मामले में पिछड़ी जातियां भी बंटी हुई हैं. रछपालपुर गांव के कुर्मी किसान अखिलेश चंद्र सिंह कहते हैं, "आरक्षण से सिर्फ यादव ही खुश लगते हैं. पिछले महीने फतेहपुर में 85 पुलिसवालों की भर्ती हुई जिनमें 45 यादव थे. हम जानते हैं कि बाकी लोगों को कोई फायदा नहीं होने वाला है."

आरक्षण विरोधी आंदोलन भी यहां हलचल पैदा कर ही गया, भले ही उसका असर कम रहा. कम-से-कम दर्जन भर बसें जला दी गईं, एक पुलिस चौकी में आग लगाई गई और आरक्षण के विरोध में दो युवकों ने आत्महत्या की कोशिश की.

फतेहपुर की जनता में असंतोष का अंदाज 11 अक्तूबर को राजीव गांधी की पदयात्रा के स्वागत से ही लगता है. कई लोगों ने कबूल किया कि उत्साह देखने लायक था, कुछ-कुछ वैसा ही जैसा जनवरी में वी.पी. सिंह के दौरे के समय दिखा था. महिला कांग्रेस की शारदा मिश्र ने कहा, "ठाकुर और कुर्मी भारी संख्या में स्वागत को आए."

इंका की उम्मीदें जहां कुलांचें भर रही हैं, वहीं फतेहपुर के लोग अपने टूटे सपनों के प्रति अभी आशान्वित हैं. इसे देखकर लगता है कि वे अभी भी किसी अंधी आस्था के वशीभूत हैं.

उधर, वी.पी. सिंह के निर्वाचन क्षेत्र की हालत भी खस्ता है और लोगों के मन में यह बात घर कर चुकी है कि राष्ट्रीय मोर्चा सरकार गिरने ही वाली है

आर.के. गुप्ता

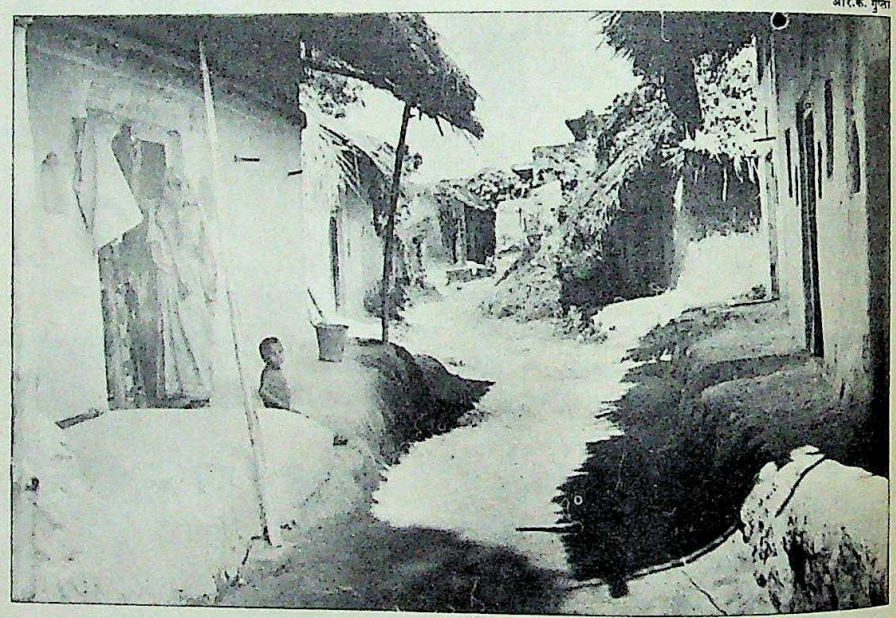

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ESCORTS

जानदार सवारी एक शानदार सवारी

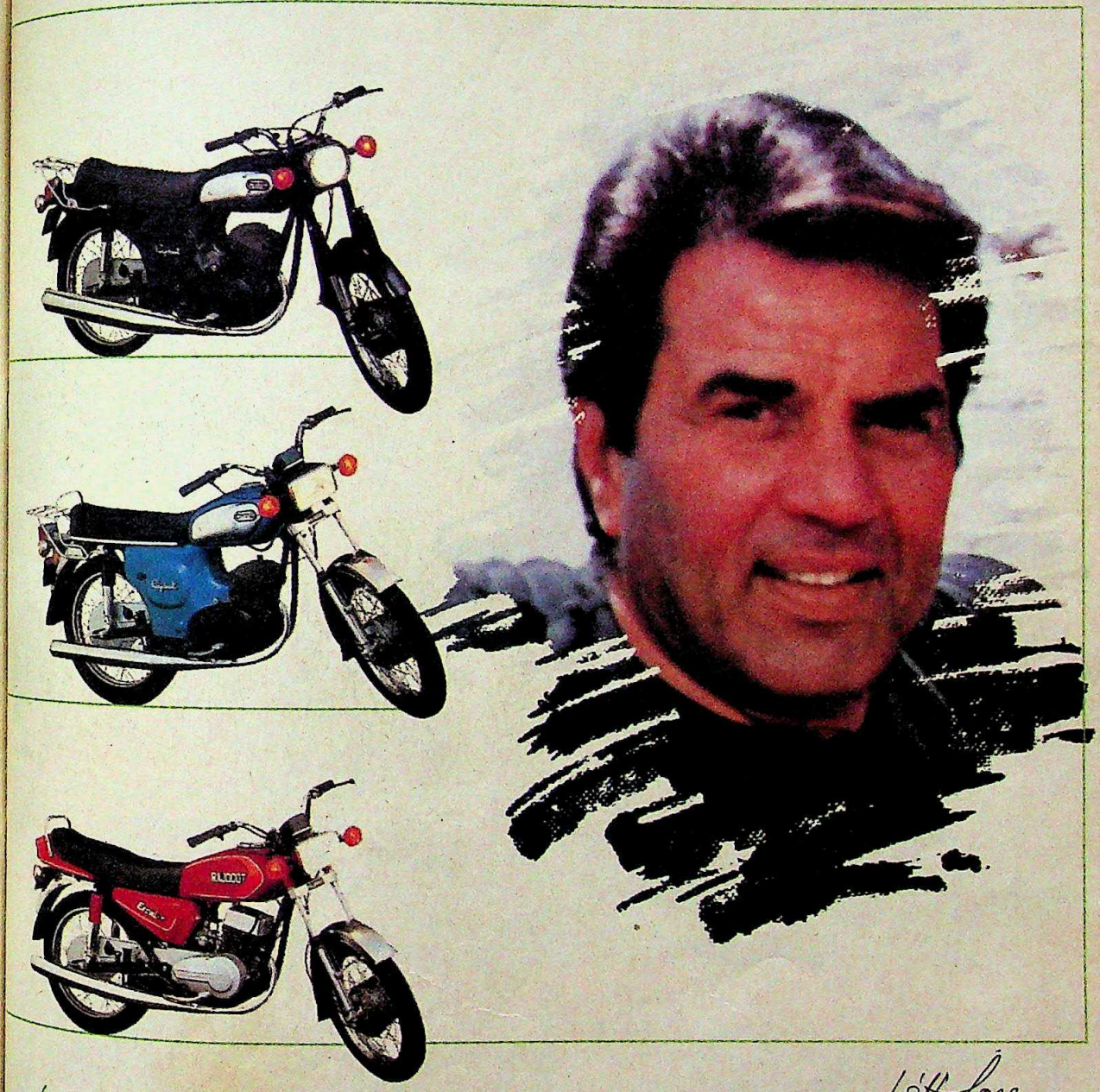

- सुगम गति के लिये 175 सी. सी. का इंजिन
- रख-रखाव इतना आसान कि साधारण मैकेनिक भी आसानी से इसकी सर्विसिंग कर सकें.
- कम दाम के असली पुर्जे हर जगह उपलब्ध.
- वर्षों चलने के लिये मजबूत डबल क्रैडल फ्रेम.

11,00,000 से भी ज्यादा राजदूत सवार इसके साक्षी हैं

केशबार, साड़ी गार्ड, साईड स्टैंड एवं हैलमेट अतिरिक्त उपवस्तुएं हैं।

With Love
Dharmendra

राजदूत

जाना-परखा • भरोसेमंद • बेमिसाल

हमेशा प्रयोग करें असली राजदूत पुर्जे

AKSHARA/ESE-2543-H

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक आकर्षक उपहार इंडिया टुडे की ओर से

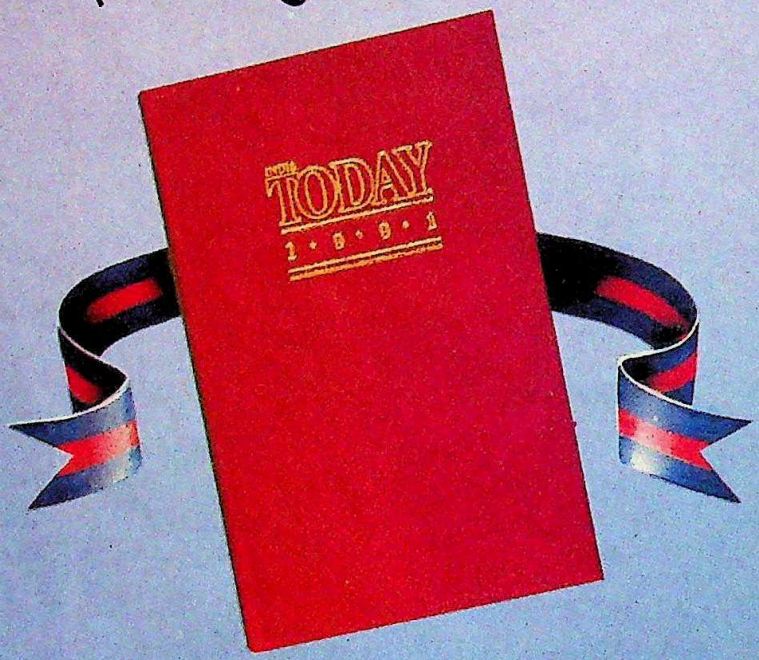

इंडिया टुडे के नियमित ग्राहक बनने के साथ 1991 की एक इंडिया टुडे पॉकेट डायरी मुफ्त.*

यदि आप पहले से ही **इंडिया टुडे** के ग्राहक हैं या शीघ्र ही बनने जा रहे हैं — तो प्रस्तुत है एक खास पेशकश आपके लिए. 1991 की **इंडिया टुडे** पॉकेट डायरी जिसका मूल्य रु. 45 है. एकदम मुफ्त. आश्चर्यजनक रूप से सुन्दर व सुविधाजनक. 1991 की इस **इंडिया टुडे** पॉकेट डायरी में हैं आपके लिए सभी आवश्यक सूचनाएं. साथ ही तुरन्त जानकारी के लिए होटलों व आवश्यक आई.एस.डी./एस.टी.डी. कोडों पर अलग अलग विशेष स्तम्भ. छोटी सी इस डायरी में रोज़मर्रा की ज़रूरत की हर जानकारी व सूचना हमेशा आपके साथ रहेगी.

साथ ही घर बैठे पाएं एक तीन तरफ़ा सुविधा का लाभ

अपनी इंडिया टुडे की प्रति समय पर व नियमित रूप से पाइये.

यह आपके घर सुरक्षित और नि:शुल्क पहुँचेगी.

रु. 5.50 प्रति कॉपी की दर से जबकि कवर मूल्य रु. 7 है.

विशेष ऑफर के लिए देय राशि:

☐ नए ग्राहकों के लिए रु. 142** जिसमें वार्षिक सदस्यता का शुल्क जो कि रु. 132 है, व 1991 की **इंडिया टुडे** पॉकेट डायरी भेजने के लिए हैंडलिंग पैकिंग व रजिस्ट्री शुल्क रु. 10 भी शामिल है.

☐ वर्तमान ग्राहकों के लिए रु. 10** , 1991 की **इंडिया टुडे** पॉकेट डायरी के हैंडलिंग, पैकिंग व रजिस्ट्री शुल्क के रूप में.

कृपया ध्यान दें:

* हैंडलिंग, पैकिंग व रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजने का शुल्क अतिरिक्त होगा.

** 1. धनराशि लिविंग मीडिया इंडिया लि. के पक्ष में देय रेखांकित चेक/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा भेजी जानी चाहिये.

2. बाहरी चेकों (दिल्ली से बाहर के) के विषय में बैंक शुल्क के रूप में रु. 5 अतिरिक्त जोड़ कर भेजे जाएं.

3. दिल्ली, मुम्बई, कलकत्ता, मद्रास में देय चेक/डिमांड ड्राफ्ट एम आई सी आर (MICR) ही होने चाहिए.

*** वर्तमान ग्राहकों जो इस पेशकश का लाभ उठाना चाहते हैं, के विषय में यह ऐसे हो जैसे कि **इंडिया टुडे** की ग्राहक प्रति रैपर के लेबल पर होता है.

यदि ऑर्डर फॉर्म उपलब्ध न हो तो:

आवश्यक धनराशि के साथ अपना ऑर्डर भेज दें. साथ ही अपना नाम पता भी भेजना न भूलें. सभी ऑर्डर डाक द्वारा लिविंग मीडिया इंडिया लि. पो.बॉ.नं. 706 फरीदाबाद, 121007, हरियाणा के पते पर भेजे जाएं.

आज ही ग्राहक बनिए और विशेष उपहार पेशकश का लाभ उठाइये.

ऑर्डर फॉर्म

जी हाँ, मैं इस विशेष उपहार पेशकश का लाभ उठाना चाहता हूँ. मैं एक

☐ नया ग्राहक हूँ. कृपया मेरी **इंडिया टुडे** की वार्षिक ग्राहक सदस्यता आरम्भ कीजिए, और मुझे मेरी **इंडिया टुडे** पॉकेट डायरी 1991 की मुफ्त* प्रति भेज दीजिए.

☐ वर्तमान ग्राहक हूँ. कृपया मुझे मेरी **इंडिया टुडे** पॉकेट डायरी 1991 की मुफ्त* प्रति भेज दीजिए.

मैं लिविंग मीडिया इंडिया लि. के पक्ष में देय रु._____का अपना चैक**/. डिमांड ड्राफ्ट संलग्न कर रहा हूँ.

नाम*** _____

पता _____

_____

_____

_____ पिन _____

ग्राहक संख्या*** (सिर्फ वर्तमान ग्राहकों के लिए) _____

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहे जापान हो चाहे भारत,
जब सर्वोत्तम वाशिंग मशीन चुनने का
सवाल आता है,

तो
फैसला
एक ही होता है.

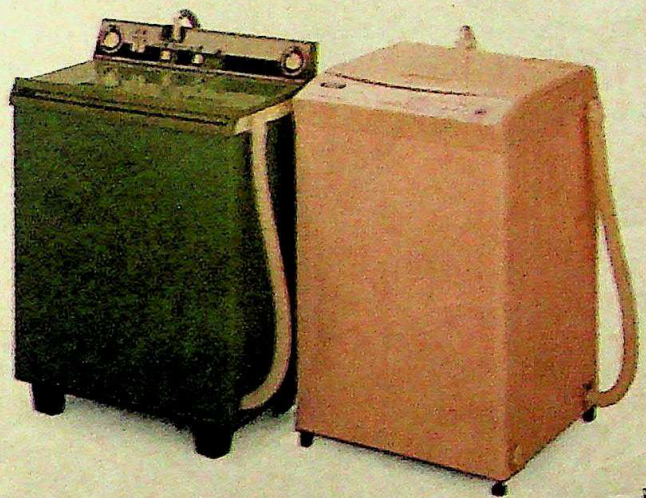

ट्विन टब वाशिंग मशीन,
स्पिन ड्रायर के साथ, वी-एन ए-२०० टी.

माइक्रो-कम्प्यूटर आधारित
ऑटोमेटिक वाशिंग मशीन वी-एन ए-८११

जापान और भारत में सबसे पहली पसंद.

वीडिओकोन वाशिंग मशीन्स प्रसिद्ध नेशनल ब्राण्ड नाम के स्वामी और गुणवत्ता तथा भरोसे के लिए पाँचों महाद्वीपों में अंतराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त मत्सुशिता इलेक्ट्रिक इण्डस्ट्रियल के जापान के तकनीकी सहयोग से निर्मित की जाती है.
भारत की अग्रणी उपभोक्ता इलेक्ट्रोनिक्स कम्पनी 'वीडिओकोन' के इस सामंजस्यक सहयोग के ही परिणाम हैं ये उत्पाद जो अभी से ही 'नेशनल' पसंद बन गए हैं.

वीडिओकोन

वा शिं ग म शी न्स

नेशनल ब्राण्ड नाम के मालिकों मत्सुशिता इलेक्ट्रिक इण्डस्ट्रियल कं., जापान के साथ तकनीकी सहयोग से भारत में निर्मित.

SJAS 80383-HIN 1

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ पल... खुशियां भरे।

खिलखिलाती मुस्कुराहटों के पीछे छुपी खुशी... यही तो है अपनेपन का सुख। और फिर बाबा हो साथ तो क्या कहने। तम्बाकू का पूरा मजा... पूरा स्वाद... पूरा संतोष।

कोई क्या करेगा इसका मुकाबला..

बाबा
ज़ाफ़रानी ज़र्दा

वैधानिक चेतावनी: तम्बाकू चबाना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुजरात

टूटा गठजोड़

भाजपा के हटने से संकट गहराया

केंद्र की राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के संभावित पतन की खबरों से देश उबरा भी नहीं था कि कुछ राज्य सरकारों के गिरने का अंदेशा हो गया. लगता है पहली गाज गुजरात की जनता दल-भाजपा सरकार पर गिरेगी.

केंद्र की अल्पमत सरकार से समर्थन वापस लेने के भाजपा के फैसले के बाद गुजरात के मुख्यमंत्री चिमनभाई पटेल को निर्देश दिया गया कि वे अपनी सरकार में शामिल भाजपा के मंत्रियों से इस्तीफा ले लें. सो, 20 अक्तूबर को केशूभाई पटेल के नेतृत्व में भाजपाई मंत्रियों ने मुख्यमंत्री को अपने इस्तीफे सौंप दिए. राज्यपाल महिपाल सिंह शास्त्री से भेंटकर उन्होंने राज्य सरकार के अल्पमत में आ जाने (181 सदस्यों वाले सदन में जनता दल के 70 विधायक हैं जबकि भाजपा के 67) के आधार पर चिमनभाई के इस्तीफे की मांग का ज्ञापन सौंप दिया. मुख्यमंत्री द्वारा बहुमत साबित करने तक राष्ट्रपति शासन लगाने की मांग भी उन्होंने की.

लेकिन राजनीति के माहिर खिलाड़ी चिमनभाई उन लोगों के राज्यपाल से मिलने से पहले ही सुबह राज्यपाल से भेंटकर यह आश्वासन ला चुके थे कि बहुमत साबित करने तक उन्हें मुख्यमंत्री रहने दिया जाएगा. राज्यपाल ने उन्हें इसके लिए 15 दिनों का समय दिया था लेकिन जनता दल ने विश्वास मत पाने के लिए 1 नवंबर का समय तय किया.

भाजपा के लोग राज्यपाल के रवैये से क्षुब्ध हुए. 27 अक्तूबर को अटल बिहारी वाजपेयी अहमदाबाद पहुंचे और शास्त्री पर पक्षपात करने का आरोप लगाया. उन्होंने कहा कि राज्यपाल ने चिमनभाई को पद पर रहने देने का फैसला करने के पहले भाजपा से राय नहीं ली. वाजपेयी ने कहा, "हम राज्यपाल को हटाए जाने की मांग करते हैं." केशूभाई ने कहा, "चिमनभाई को पद पर बने रहने देना उन्हें विधायकों की खरीद-फरोख्त करने का मौका देना है."

चिमनभाई के राजनैतिक 'कौशल' को जो लोग जानते हैं उनके लिए ऐसा डर जाहिर करना गैरवाजिब भी नहीं है. अपने राजनैतिक अस्तित्व को बचाने के लिए वे गुपचुप समझौते भी कर सकते हैं. कुछ विधायकों को अपनी ओर खींचे बिना उनकी सरकार चल नहीं सकती. सभी 12 निर्दलीय विधायक भी जद के 70 विधायकों के साथ आ जाएं तब भी उन्हें बहुमत नहीं मिल सकता. सो, इंका के 32 विधायकों का समर्थन पाए बिना चिमनभाई विश्वास मत नहीं पा सकते.

कुछ महत्वपूर्ण राजनेताओं का दावा है कि अपने पुराने दोस्त और महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री शरद पवार के माध्यम से चिमनभाई ने इंका से संपर्क साधा है. लेकिन समर्थन देने के बदले इंका चाहती है कि गुजरात के सभी 11 जनता दल सांसद वी.पी. सिंह के खिलाफ खुलकर सामने आएं. इनमें आठ तो चिमनभाई के पक्के समर्थक हैं. वैसे, चिमनभाई इस बात से इनकार करते हैं कि वे इंका से समर्थन मांग रहे हैं पर साथ ही वे यह भी कह देते हैं, "अगर कोई खुद हमारा समर्थन करे तो हम उसे ठुकराएंगे नहीं."

पर फिलहाल तो गुजरात के लोगों को इस राजनैतिक उठापटक की कीमत चुकानी पड़ रही है. पिछले हफ्ते भाजपा के आह्वान पर जो 'भारत बंद' हुआ था उसने अहमदाबाद और राज्य के अन्य शहरों में सांप्रदायिक दानव को सोते से जगा दिया. दंगों में करोड़ों का नुकसान हुआ. आठ लोगों को जान से भी हाथ धोना पड़ा. अहमदाबाद, पालनपुर, डीसा और जामनगर में कर्फ्यू लगाना पड़ा.

लेकिन सबसे बुरी हालत अहमदाबाद की रही. बंद वाले दिन भाजपा, विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल के कार्यकर्ताओं द्वारा जबरन दुकानें बंद कराने से शहर में तनाव हो गया. घृणा सड़कों पर फूट पड़ी. कुछ मुसलमानों ने एक भाजपा समर्थक को चाकू मार दिया. इस पर उग्र भीड़ ने मुसलमानों की संपत्ति को लूटा, तोड़ा और आग लगा दी.

दुर्भाग्य यह है कि जब अहमदाबाद और गुजरात के अन्य शहरों में सांप्रदायिक आग लगी थी, राज्य सरकार पतन के कगार पर खड़ी थी. —उदय माहूरकर

राज्यपाल से मिलने जाते भाजपाई मंत्री (नीचे); इस्तीफे आगे बढ़ाते चिमनभाई

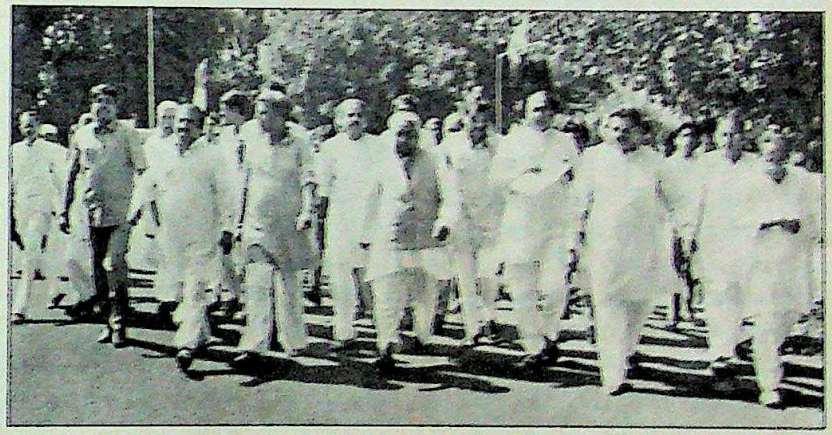

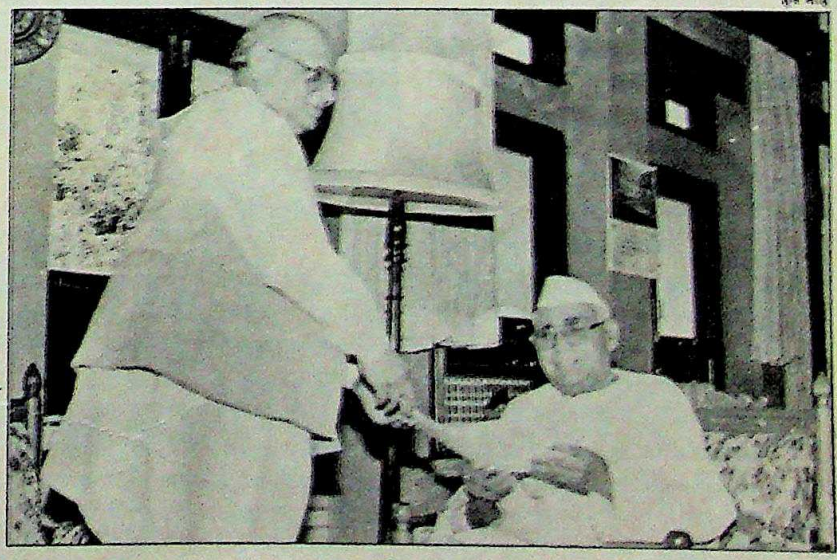

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजस्थान

दोहरी मार

सरकार और जनता दोनों पर

राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद ने राजस्थान पर दोहरी मार की. राज्य में सांप्रदायिक हिंसा का भयावह तांडव शुरू हो गया और सरकार का भविष्य अनिश्चित हो गया. जनता दल के भाजपा से नाता तोड़ने के फैसले के बाद अब भैरों सिंह शेखावत सरकार को कोई करिश्मा या दलबदल की हरकत ही बचा सकती है.

राज्य की 200 सीटों वाली विधानसभा में भाजपा विधायकों की संख्या 85 है और उसे सामान्य बहुमत के लिए भी 15 विधायकों की जरूरत है. 55 विधायकों वाले जनता दल का फैसला बदलने की गुंजाइश कम है. इसके अलावा इंका के 50 विधायक हैं पर यह पार्टी हमेशा से भाजपा विरोधी रुख ही अपनाए हुए है.

उधर, भाजपा अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी की गिरफ्तारी के बाद 24 व 25 अक्तूबर के भारत बंद के दौरान राज्य में सबसे खूनी सांप्रदायिक दंगे ने शेखावत सरकार और भाजपा को अलग-थलग कर दिया. अकेले जयपुर में ही 50 लोग मौत के घाट उतार दिए गए. जयपुर के एक मुहल्ले पहाड़गंज में 22 लोगों को जिंदा जला दिया गया.

राज्य के इतिहास के इन सबसे खूनी दंगों के लिए लगभग सभी पार्टियों ने एक स्वर से भाजपा और शेखावत सरकार को दोषी माना. इस फिजां के मद्देनजर शेखावत की मदद को किसी भी दल के आगे आने की उम्मीद नहीं है. 26 अक्तूबर के केंद्रीय पार्टी के फैसले के बाद जनता दल विधायक दल के नेता नत्थी सिंह और प्रदेश अध्यक्ष हरजीराम बुरडक ने राज्यपाल देवीप्रसाद चट्टोपाध्याय को जो चिट्ठी सौंपी, उसमें जयपुर के नरसंहार को ही समर्थन वापस लेने की वजह बताई गई. इसी चिट्ठी के साथ जद के दस मंत्रियों का इस्तीफा भी नत्थी था.

लेकिन आश्चर्यजनक रूप से जनता दल शेखावत सरकार को तुरंत बरखास्त करने पर जोर नहीं दे रहा है. उधर शेखावत कह रहे हैं कि वे सदन में बहुमत साबित कर देंगे. पार्टी सूत्रों के मुताबिक मुख्यमंत्री दो संभावनाओं पर जोड़-तोड़ चला रहे हैं.

सभी फोटो: रोहित जैन

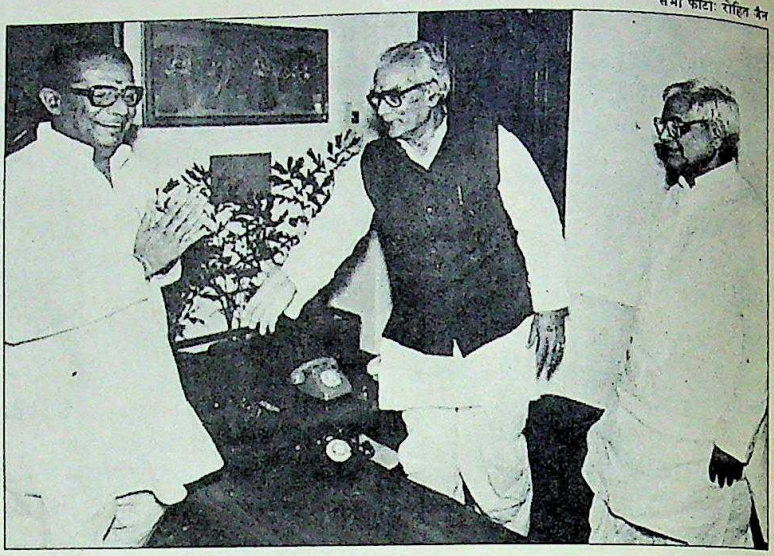

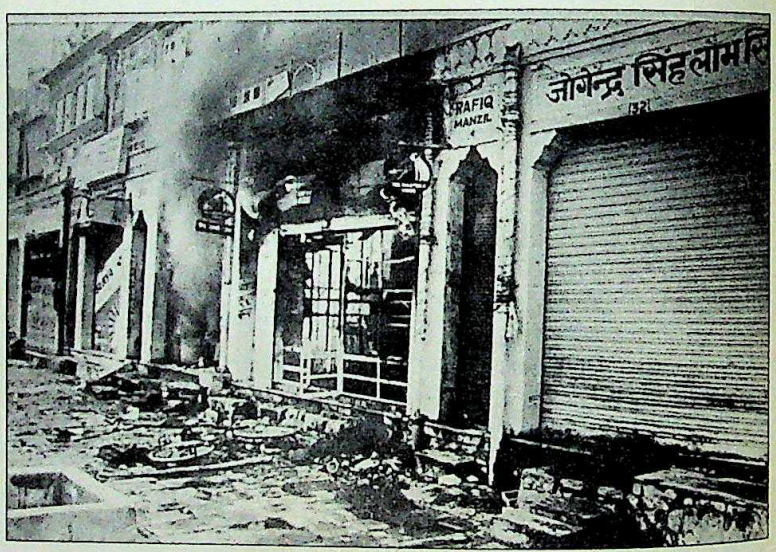

जनता दल के मंत्री अपना इस्तीफा सौंपते हुए; और भीषण दंगा

वे सदन की बैठक के दिन कुछ विपक्षी विधायकों के अनुपस्थित रहने की व्यवस्था कर लेंगे या फिर जनता दल के एक-तिहाई विधायकों को तोड़ लेंगे.

उधर, अभी हाल तक कट्टर दुश्मन बने रहे जनता दल और इंका की मिली-जुली सरकार बनने की संभावना से इनकार भी नहीं किया जा सकता. विपक्ष के नेता और पूर्व मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी कहते हैं, "जनता दल से समर्थन का प्रस्ताव आने पर हम विचार करेंगे." जनता दल के प्रदेश अध्यक्ष हरजीराम बुरडक ने कहा, "यह सिद्धांत ही गलत है क्योंकि हमने इंका के खिलाफ ही चुनाव लड़ा था." पर वे यह कहना नहीं भूलते, "वैसे भी उनकी ओर से कोई संकेत नहीं मिला है." इसके अलावा जनता दल में 12 विधायकों ने राज्यपाल को एक पत्र में लिखा है कि इंका के साथ मिली-जुली सरकार के प्रस्ताव में उन्हें शामिल न माना जाए. दूसरी ओर डेढ़ दर्जन से अधिक विधायकों ने दल के नेता नत्थी सिंह से इंका के साथ साझा सरकार बनाने पर फिर से विचार करने के लिए विधायक दल की बैठक बुलाने को कहा है.

फिलहाल यह नहीं लगता कि भाजपा सरकार बनाने के लिए कोई जोड़-तोड़ कर पाएगी. मुख्यमंत्री के प्रतिद्वंद्वी गुट के नेता माने जाने वाले, स्वास्थ्यमंत्री ललित किशोर चतुर्वेदी के मुताबिक, "शेखावत बहुमत सिद्ध कर लेंगे. लेकिन चुनाव अवश्यंभावी हैं."

प्रमुख राजनैतिक दल जोड़-तोड़ में लगे हैं. चुनाव हुए तो अलग-थलग पड़ी भाजपा राम के भरोसे ही होगी. इससे दोनों संप्रदायों के बीच दरार चौड़ी ही होगी. यानी जनता भी राम के भरोसे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एच डी एफ़ सी
वैयक्तिक गृह ऋण

अपना घर पाने का सब से जल्द और आसान उपाय

एच डी एफ़ सी समझते हैं कि आप अपने नए घर में जल्दी-से-जल्दी पहुंचना चाहते हैं. हमारी आसान ऋण प्रक्रियाएं इस बात का भरोसा हैं, कि आप को ऋण जल्दी-से-जल्दी प्राप्त हो.

हमारी सुविधाएं आपकी विशेष जरूरतों के अनुसार हैं. अगर आप चाहें तो हमारे कर्मचारी खुशी से आपकी मदद करेंगे. आपकी घर की जरूरतों के लिए हम व्यापक योजना पेश करते हैं. साथ ही देश-भर में फैला सेवा जाल जो यह लाभ आपके दरवाजे तक ले आता है.

• निवास-स्थान के लिए • ऋण की रकम भुगतान क्षमता के अनुसार • अधिकतम ऋण 2.5 लाख रु. तक • भुगतान मासिक किस्तों में 20 वर्ष तक • ब्याज दर प्रतिवर्ष 12.5% से 14.5% के बीच • विशेष विकल्प जैसे शॉर्ट-टर्म ब्रिजिंग ऋण सुविधा, टेलिस्कोपिक ऋण योजना और स्टेप-अप भुगतान सुविधा.

हमारी किसी भी शाखा में चले आएं या यह कूपन आज ही डाक से भेज दें.

कृपया मुझे 'एच डी एफ़ सी वैयक्तिक गृह ऋण' पुस्तिका की एक मुफ़्त प्रति भेजें.

नाम : _____

पता : _____

_____

_____

Code: L/ITH

एच·डी·एफ़·सी
हाउसिंग डिवेलपमेंट फाइनैंस कार्पोरेशन लिमिटेड

रजिस्टर्ड ऑफ़िस : रेमन हाउस, 169 बॅक्बे रेक्लेमेशन, बम्बई 400 020
यहां भेजें : हाउसिंग डिवेलपमेंट फाइनैंस कार्पोरेशन लिमिटेड
चंडीगढ़ : दूसरी मंजिल, एस सी ओ 1110, 1111, सेक्टर 22-बी, चंडीगढ़ 160 022. फ़ोन: 24843 • **इंदौर** : 9/1/1, एम. जी. रोड, फिल ऍण्ड फ्लाय पेट्रोल पंप के पास, इंदौर 452 001. फ़ोन : 7784, 7376 • **कानपुर** : 'भगवान निवास' 16/19 डी सिविल लाइंस, स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया लिंक ऑफ़िस के पीछे, बी आई सी प्रधान कार्यालय के सामने, कानपुर 208 001. फ़ोन : 211468 • **जयपुर** : सी-96, जगन पथ, सरदार पटेल मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर 302 001. फ़ोन : 520691, 520543 • **लखनऊ** : कोहली हाउस, 4-ई, रामतीर्थ मार्ग, पोस्ट बॉक्स नं. 394, लखनऊ 226 001. फ़ोन : 235055, 247505 • **नई दिल्ली** : एच डी एफ़ सी हाउस, बी-6/3, सफदरजंग एनक्लेव, डी डी ए कमर्शियल कॉम्पलेक्स (डियर पार्क के सामने). नई दिल्ली 110 029. फ़ोन : 603146, 603147.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्नाटक

बागी सत्ता में

बंगरप्पा 'सर्वसम्मति' से नेता

सदाबहार बागी माने जाने वाले सरेकोप्पा बंगरप्पा अंततः सत्ता व्यवस्था के अहम अंग बन ही गए. 17 अक्तूबर को उन्होंने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली. सभी इंका विधायकों और पांच निर्दलीयों के समर्थन से 25 अक्तूबर को विधानसभा में उन्होंने अपना बहुमत सिद्ध कर दिया.

माना जाता है कि बंगरप्पा ने इंका विधायक दल के नेता के चुनाव में 80 विधायकों का समर्थन जुटा लिया था. और अपने हर प्रतिद्वंद्वी से वे बहुत आगे थे. विधायक दल ने अंततः बंगरप्पा के 'सर्वसम्मत' नेता चुने जाने की घोषणा की.

जातीय समीकरण पर नजर डालने से पता चलता है कि उन्हें पिछड़ी जातियों का भारी समर्थन प्राप्त है खासकर लिंगायत और वोक्कालिगा जैसी ताकतवर जातियों का. बंगरप्पा ताड़ी खींचने वाली पिछड़ी जाति 'इडिगा' के पहले मुख्यमंत्री हैं. वैसे वे मध्यमवर्गीय खेतिहर परिवार के हैं. कर्नाटक पिछड़ा वर्ग महासंघ के अध्यक्ष डॉ. एस. भीमप्पा कहते हैं, "उन्हें उनकी (पिछड़ी जातियों की) समस्याओं का निजी अनुभव है पर उन्होंने उनके लिए अब तक कुछ खास नहीं किया है. कोई मुख्यमंत्री उनके समर्थन के बिना नहीं टिक सकता."

बंगरप्पा की असली समस्या संतुलन बनाए रखने की ही होगी ताकि उन्हें लिंगायत और वोक्कालिगा जातियों का समर्थन मिलता रहे. साथ ही उन्हें इंका आलाकमान के प्रति पूरा वफ़ादार भी बने रहना होगा. फिलहाल आलाकमान की ही तूती बोलती लगती है. मुख्यमंत्री बंगरप्पा को जिन छह मंत्रियों को शामिल करने की मंजूरी मिली, वे सभी आलाकमान के ही लोग हैं. बंगरप्पा को सिर्फ आलाकमान के कड़े शिकंजे से छूटने की मशक्कत ही नहीं करनी है, वफादारियां बदलने वाली अपनी छवि को भी दूर करना है.

अब तक का उनका राजनैतिक कार्यकलाप इसकी ही गवाही देता है. वे पहली दफा संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी के उम्मीदवार के रूप में सोराबा जैसे शांत क्षेत्र से जीते (इस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व वे 27 साल से कर रहे हैं). दो साल बाद वे संसोपा से अलग हो गए और अपनी पार्टी बना ली. चार साल तक वे निर्दलीय विधायक ही बने रहे और अंततः इंदिरा गांधी के कांग्रेस (आर.) में शामिल हो गए. तीन साल बाद वे कांग्रेस छोड़कर कर्नाटक क्रांतिरंगा में शामिल हो गए. लेकिन राजनैतिक पालाबदल की इन कार्रवाई के बावजूद वे गरीबों के हमदर्द के रूप में लोकप्रिय रहे.

नाटकों में बंगरप्पा कई बार 12वीं सदी के समाज सुधारक बसवेश्वरा की भूमिका निभा चुके हैं. अब यह गौर करने की बात होगी कि वास्तविक जीवन की इस नई भूमिका में वे कैसे सुधारक साबित होते हैं.

—सी.बी. यशवंत कुमार

मुश्ताक अहमद

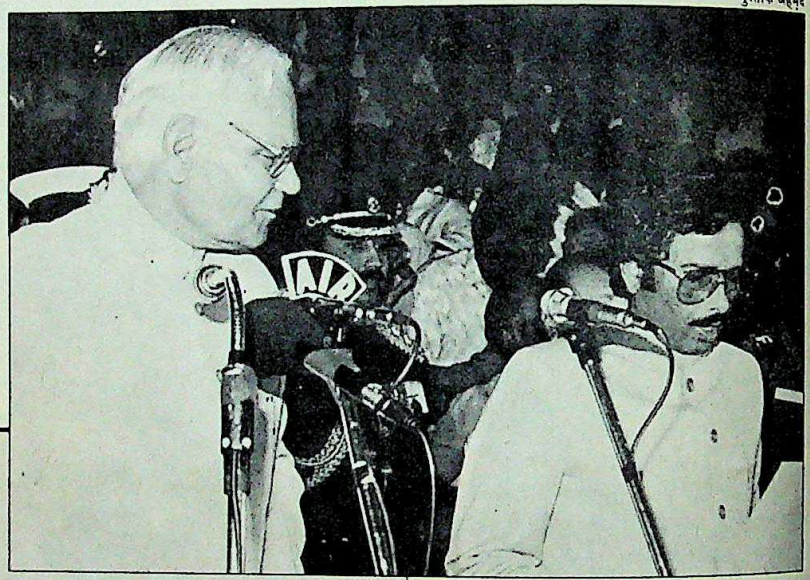

एस. बंगरप्पा

'राजीव की ही मानूंगा'

57 वर्षीय मुख्यमंत्री एस. बंगारप्पा से वरिष्ठ संवाददाता सी.बी. यशवंत कुमार की बातचीत के अंश:

● ***आपकी प्राथमिकताएं क्या हैं ?***

सबसे पहले तो विकास कार्यक्रमों, विशेषकर सिंचाई, बिजली, उद्योग और कृषि पर ध्यान देना है. दूसरी प्राथमिकता गरीबी रेखा के नीचे रह रहे लोगों का जीवन स्तर सुधारना और अल्पसंख्यकों, हरिजन-गिरजनों और कमजोर वर्ग की सुरक्षा की व्यवस्था करना है.

● ***किस्तों में मंत्रिपरिषद बनाकर आप क्या मकसद पूरा करना चाहते हैं?***

मैं अनुभवी लोगों की ठोस सरकार बनाना चाहता हूं. फिर, नए लोगों को दूसरी पंक्ति के नेतृत्व के रूप में विकसित करना चाहता हूं.

● ***मंत्रियों का चुनाव खुद कर रहे हैं?***

मैं राजीव गांधी के निर्देशानुसार ही मंत्रिमंडल बनाऊंगा. हर मामले में उनसे निर्देश लूंगा.

● ***आपके लिए पार्टी अधिक महत्वपूर्ण है या पार्टी अध्यक्ष ?***

दोनों में कोई फर्क नहीं है.

● ***क्या आपको दो बार मुख्यमंत्री पद से वंचित नहीं किया गया?***

मौके तो थे लेकिन मुझे नहीं लगा कि मुझे वंचित किया गया है.

● ***लोगों को अंदेशा है कि आप उत्पाद कर लॉबी का पक्ष लेंगे ?***

आप व्यावसायिक कर लॉबी के बारे में क्यों नहीं बात करते, जो उत्पाद कर लॉबी से अधिक ताकतवर है ? लेकिन मैं किसी का पक्ष नहीं लूंगा. मेरा मुख्य लक्ष्य राजस्व बढ़ाने का होगा.

● ***केंद्र से संबंध कैसे रहेंगे ?***

मुझे नहीं लगता कि किसी बात पर तकरार होगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

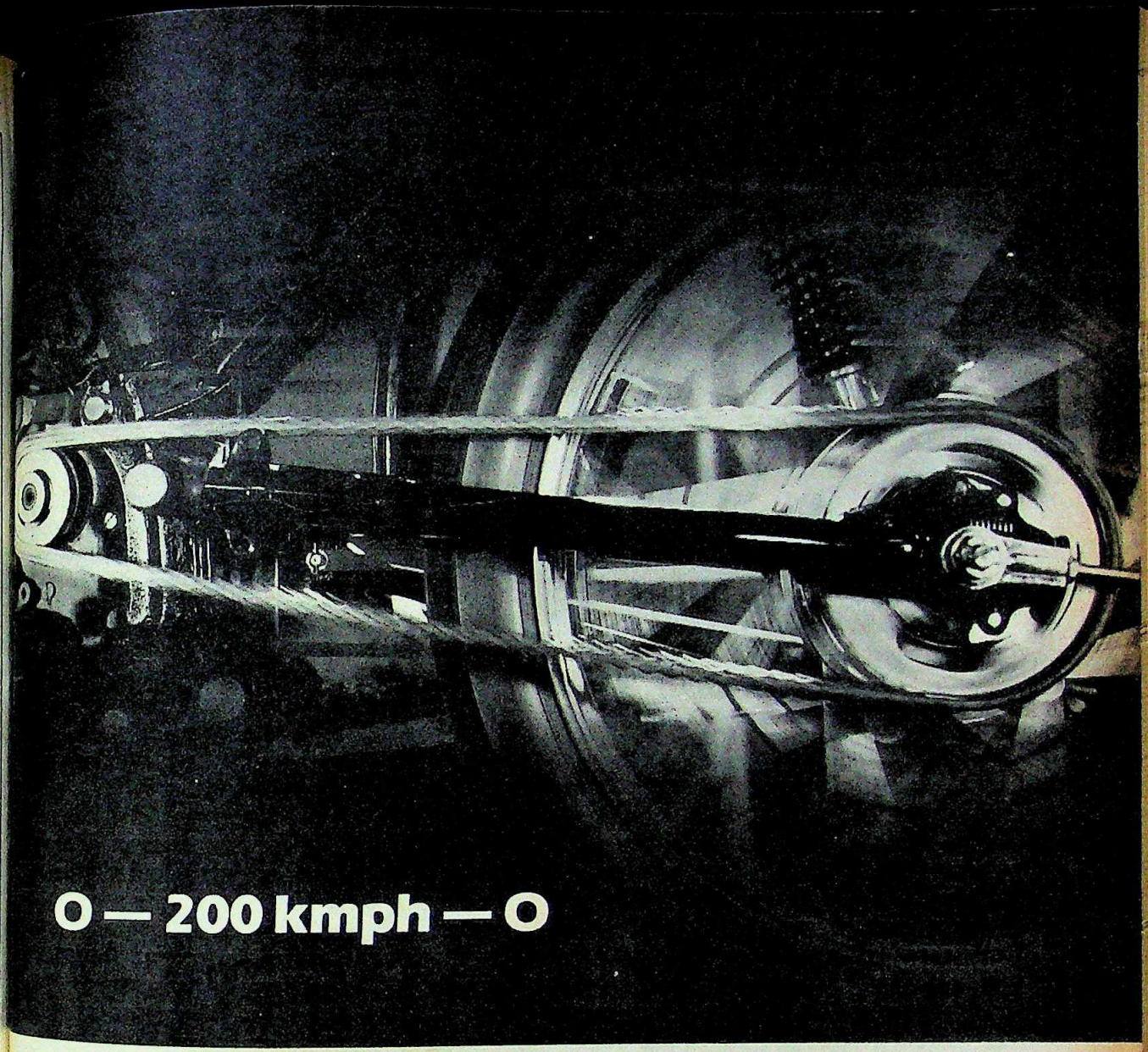

चेन पर होती है मुश्किल जिम्मेदारी. आपकी मोटरबाइक पर कसने से पहले भी.

सभी टू-व्हीलर निर्माता पहले चेन को खूब ध्यान से जांचते हैं. मुश्किल स्थितियों के मुताबिक.

० से २०० कि.मी. तक की रफ्तार पर. स्टार्ट से रफ्तार और रुकने तक. बार-बार.

वजह साफ़ है. चेन ही तो घुमाती है पहिये और चलाती है आपकी मोटरबाइक.

ये बात सभी मोटरबाइक निर्माता जानते हैं. चाहे वे भारतीय हों या इंडो-जापानी. और इसे आप भी जानते हैं इसलिए आपको हर बार वही चेन चुननी चाहिए जो शुरू से आपकी मोटरबाइक पर लगी होती है **डायमंड सुपर चेन.**

इस मोटरबाइक निर्माता आखिर डायमंड सुपर ही क्यों चुनता है?

इसे डायमंड चेन कंपनी, अमेरिका के तकनीकी सहयोग से बनाते हैं टी आई डायमंड चेन लिमिटेड.

ये दोनों मिलकर ऐसी चेन बनाते हैं जो बहुत कम खिंचती है. इसे बाहर से कठोर बनाने के लिए ख़ास प्रक्रिया से गुज़ारा जाता है. इसीलिए ये ज़्यादा चलती है. अधिक मोटी प्लेटें इसे देती हैं ज़्यादा मज़बूती. और बढ़िया लुब्रिकेशन होने से यह **काम करती है-बेआवाज़ बेरोकटोक.**

इन खूबियों के होते हुए, वैसे तो आपको शुरू से मोटरबाइक में लगी डायमंड सुपर बदलनी ही नहीं पड़ती... काफ़ी लंबे समय तक.

लेकिन जब बदलनी पड़े तो **सिर्फ डायमंड सुपर** चेन ही लीजिए.

और देखिए, फ़िर से आपकी मोटरबाइक को मिल जाएगी नयी जान.

DIAMOND SUPER®

आपकी मोटरबाइक में शुरू में यही, इसलिए हमेशा यही.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी फोटो कृष्ण मुरारी किशन

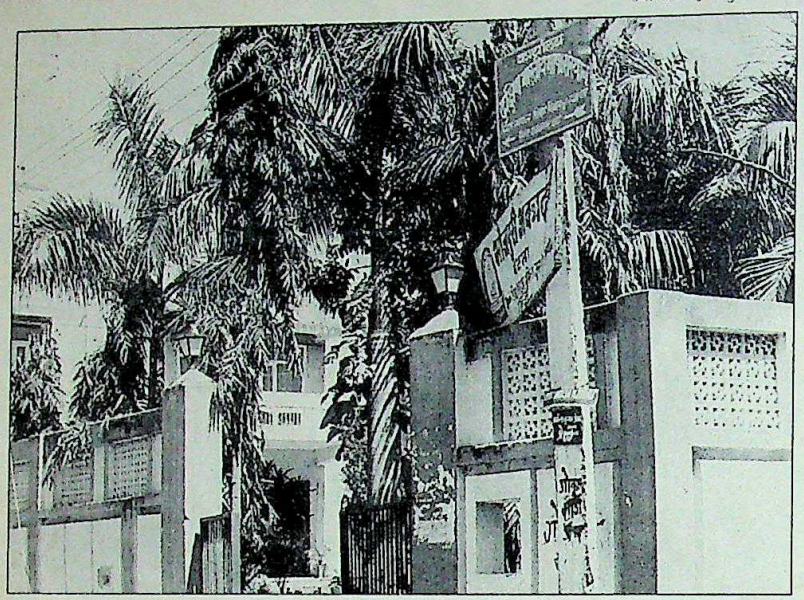

बिहार

बेकारों पर ताला

निष्क्रिय भाषा अकादमियों को बंद करने का फैसला

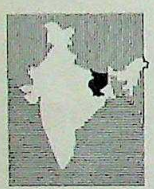

बिहार के मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव अपने राज्य को भले ही किसी स्वर्ण युग में न पहुंचा सकें पर इतना जरूर है कि अपने अब तक के कार्यकाल में उन्होंने बिना कुछ किए ही वाहवाही लूटने के काम में महारत हासिल कर ली है. आरक्षण विरोधी आंदोलन और जात-पांत के कारण फैली अव्यवस्था के बावजूद उन्होंने 7 वर्ष पुराने बिहार राज्य फिल्म विकास और वित्त निगम (बिराफिविविनि) को बंद करने का फैसला किया. साथ ही मानव संसाधन विकास विभाग को भी लिख भेजा कि वह कुछ बेकार पड़ी भाषा अकादमियों को खत्म कर बाकियों का एकीकरण करे.

लालू यादव के सहयोगियों का कहना है कि वे मुख्यमंत्री बनने के बाद से ही 'निष्क्रिय' संस्थाओं पर ताला लगाने की फिराक में हैं. इस प्रक्रिया में पहले छोटी मछलियों की बारी आएगी. लेकिन लालू यादव के आलोचकों ने 'बिराफिविविनि' को बंद करने और अकादमियों को दुरुस्त करने के फैसले को सोच-समझकर की जा रही नाटकबाजी करार दिया है जिससे राज्य को कोई फायदा नहीं होगा. 'बिराफिविविनि' के संस्थापक अध्यक्ष और विधान परिषद सदस्य कमलनाथ सिंह ठाकुर के अनुसार, "राजकीय खजाने पर बोझ बने बड़े बोर्ड और निगमों के मुकाबले यह तो बहुत ही छोटी संस्था है. अगर मुख्यमंत्री सचमुच कुछ कर दिखाना चाहते हैं तो उन्हें बिहार राज्य बिजली बोर्ड और राज्य परिवहन निगम जैसी बड़ी संस्थाओं से शुरुआत करनी चाहिए. लेकिन वे ऐसा कभी नहीं

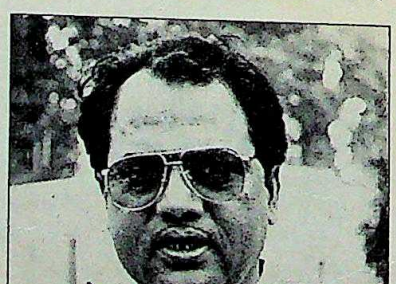

राज्य पुल निर्माण निगम के अध्यक्ष भरत प्रसाद सिंह के मुताबिक यह राजनीति से प्रेरित कार्रवाई ही है

करना चाहेंगे क्योंकि इसके लिए बहुत ही ज्यादा हिम्मत और प्रबल राजनैतिक संकल्प की जरूरत होगी."

बिराफिविविनि की शुरुआत मार्च 1983 में काफी धूमधाम से हुई थी. इसके लक्ष्य तय किए गए थे—स्वस्थ सिनेमा को बढ़ावा देने के लिए मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराना, ग्रामीण इलाकों में सिनेमाघरों का निर्माण, और राज्य में फिल्म उद्योग को बढ़ावा देने के साथ-साथ फिल्म निर्माण और फिल्म कला में रुचि रखने वाले युवकों को प्रशिक्षण देना. इस महत्वाकांक्षी परियोजना के पहले तीन वर्षों के लिए सरकार ने 3 लाख रु. मुहैया किए. उस दौरान ठाकुर की देखरेख में इस संस्था ने कुछ उत्साह तो जरूर दिखाया पर सिनेमाघरों के निर्माण के लिए कर्ज देने के सिवा वह कुछ और नहीं कर सकी.

सूत्रों के अनुसार अब तक यह निगम 15.65 लाख रु. बतौर कर्ज बांट चुका है और बदले में उसे कुछ भी हासिल नहीं हुआ है. 1987 में इस निगम ने एक 'फिल्म निर्माता' को एक भोजपुरी फिल्म के निर्माण के लिए 2 लाख रु. का अग्रिम भुगतान तो किया पर फिल्म अब तक तैयार नहीं हुई है. 1986-87 के दौरान निगम ने सिनेमाघरों के निर्माण के वास्ते 3.75 लाख रु. का कर्ज दिया. लेकिन न तो सिनेमाघर बन सके, न ही कर्ज की किस्तों का भुगतान हुआ.

लालू यादव के नजदीक के लोगों के अनुसार, इस परिस्थिति से ऊबकर पूर्व मुख्य सचिव और सार्वजनिक उपक्रम ब्यूरो के पूर्व अध्यक्ष और वर्तमान विकास आयुक्त अरुण पाठक ने मुख्यमंत्री को ऐसी संस्थाओं को बंद करने की सलाह दी. पत्रकार जुगनू शारदेय के अनुसार जब राष्ट्रीय फिल्म विकास परिषद जैसी संस्थाएं सफल नहीं हो सकी हैं तो बिहार में ऐसी संस्था कैसे पनप सकती है जहां नेता और नौकरशाह मूल रूप से कला विरोधी हैं.

जिस तरह कला फिल्में समाज की बुराइयों का आईना हुआ करती हैं, उसी तरह बिराफिविविनि राज्य सरकार के उपक्रमों की दशा का बयान करता है. राज्य के 49 बोर्डों और निगमों में से केवल पांच ही फायदे में बताए जाते हैं. सार्वजनिक उपक्रम ब्यूरो के सूत्रों के अनुसार मार्च 1988 तक सरकार उन तीन बोर्डों और निगमों में 2815 करोड़ रु. की पूंजी लगा चुकी थी, जिनका कुल सम्मिलित घाटा 602 करोड़ रु. का था. कुल घाटे में से 549 करोड़ रु. तो इन तीन बड़े उपक्रमों के ही थे—बिहार राज्य बिजली बोर्ड (329

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करोड़ रु.), बिहार राज्य सड़क परिवहन निगम (140 करोड़ रु.) और बिहार राज्य बिजली निगम (83 करोड़ रु.).

लेकिन हैरत की बात यह है कि बुराई की जड़ से निकालने के लिए सोच-समझकर आवश्यक कदम उठाने की जगह मुख्यमंत्री इन उपक्रमों को अपने आक्रामक अंदाज में ठीक करने का निर्णय लेकर सनसनी पैदा कर दी. मुख्यमंत्री बनने के एक महीने के अंदर लालू यादव ने एकदम से ऐसी संस्थाओं के तमाम राजनीतिक अध्यक्षों और उपाध्यक्षों को हटाने का फैसला कर लिया. इस तरह इनमें से उन 62 लोगों को तत्काल बाहर कर दिया जो कैबिनेट और राज्य स्तर के मंत्रियों का दर्जा संभाले बैठे थे. इनमें से अधिकतर इंका के नुमाइंदे थे. अचंभा उन्होंने इस सरकारी निर्णय को

राज्य फिल्म विकास निगम के अध्यक्ष कमलनाथ सिंह ठाकुर कहते हैं मुख्यमंत्री बड़ी संस्थाओं से शुरुआत करें

सरकारी वसूली के रूप में 2.75 करोड़ रु. की जगह 4.09 करोड़ रु. जमा किए गए. पर मुख्यमंत्री ने इस बात को ही रफादफा कर दिया. उनके अनुसार, "यह कैसे कहा जा सकता है कि लालू यादव सचमुच ही भ्रष्टाचार मिटाने के इच्छुक हैं और राज्य सरकार के उपक्रमों की वित्तीय हालत सुधारना चाहते हैं ?"

काफी मशक्कत के बाद सार्वजनिक उपक्रम ब्यूरो को पता लगा कि एक ही तरह के काम करने वाले बहुत से उपक्रम राजनीतिकों को खपाने के लिए बनाए गए हैं. ये कुल मिलाकर 'सफेद हाथी' ही साबित हो रहे हैं. इस बीच उसे यह भी पता चला कि बिहार के राजनैतिक अरण्य में ऐसे सफेद हाथियों की संख्या काफी है—

बिराफिविविनि का दफ्तरः निष्क्रिय

जैसे भाषा अकादमियां. जगन्नाथ मिश्र के शासनकाल में ऐसी संस्थाएं भारी संख्या में बनी थीं. 70 के दशक तक सिर्फ तीन अकादमी या परिषद थीं—हिंदी ग्रंथ अकादमी, राष्ट्रभाषा परिषद और उर्दू अकादमी. पर अस्सी के दशक में जरूरी सुविधाओं के उपलब्ध न होने के बावजूद भोजपुरी, मैथिली, आदिवासी भाषाओं, दक्षिण भारतीय भाषाओं, बंगला और संस्कृत की भी अकादमियां बना दी गईं.

मानव संसाधन विभाग के सूत्रों को पता चला कि हालांकि सरकार इन अकादमियों पर 40 लाख रु. खर्च कर रही है पर इस अनुपात में उनकी गतिविधियां नं के बराबर हैं. पिछले महीने 'हिंदी सप्ताह' के दौरान लालू यादव ने घोषणा की कि प्रदेश के स्कूलों में कम-से-कम एक दक्षिण भारतीय भाषा पढ़ाने की व्यवस्था की जाएगी. लेकिन दक्षिण भारतीय भाषा अकादमी पिछले एक दशक के अपने जीवनकाल में कुछ भी नहीं कर सकी है जबकि इसे स्थापित करने का एक मकसद इन भाषाओं को प्रोत्साहित करना और दक्षिण भारतीय साहित्य का हिंदी में अनुवाद करना था.

राष्ट्रभाषा परिषद की भी हालत कोई बेहतर नहीं है. इसमें पूर्णकालिक निदेशक तक नहीं है. हिंदी ग्रंथ अकादमी की स्थापना काफी पहले की गई थी. मकसद यह था कि यह कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के लिए हिंदी में मानक पुस्तकें उपलब्ध कराएगी. शुरुआती वर्षों में इसने जो कुछ भी छापा वह गोदाम में पड़ा सड़ता रहा क्योंकि यह सब कुछ इतना घटिया था कि छात्रों और अध्यापकों की इनमें कोई रुचि नहीं जगी.

लालू यादव ने नए मोर्चे खोलने की जगह क्षेत्रीय भाषाओं की सभी अकादमियों के एकीकरण का फैसला किया ताकि सही तालमेल हो सके. लेकिन इसका विरोध सबसे पहले अंजुमन तरक्की-ए-उर्दू ने किया. इसके बिहार अध्यक्ष अब्दुल मोगानी का कहना था कि ऐसा करने से उर्दू की अलग पहचान खत्म हो जाएगी क्योंकि वह न सिर्फ दूसरी सरकारी भाषा है बल्कि दस अनुसूचित भाषाओं में भी शामिल है. लालू यादव के सलाहकारों का कहना है उर्दू की अलग पहचान खत्म नहीं होगी वरन उसके हितों की रक्षा ही होगी.

बिहार के नेतागण बोर्डों, निगमों और अकादमियों के प्रति हमेशा से बड़े भावुक रूप से जुड़े रहे हैं. जाहिर है, इनसे छेड़छाड़ लालू यादव के लिए मुश्किलें पैदा कर सकती है.

—फरजंद अहमद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्य प्रदेश

राहत की सांस

कैलाश जोशी मंत्रिमंडल में

इमरजेंसी के दौर में जब कैलाशी जोशी ने मध्य प्रदेश की बागडोर संभाली थी तो प्रशासक के नाते उनके खाते में कोई उपलब्धि नहीं थी. मुख्यमंत्री पद के बोझ तले जोशी को मानो अजीबोगरीब मानसिक समस्या ने घेर लिया और वे फाइलों के बढ़ते अंबार में लंबी तानकर सोने के लिए मशहूर हो गए.

सो, इस साल के शुरू में जब भाजपा सत्ता में आई तो उसने जोशी के दावे को नजरअंदाज कर उनके कट्टर प्रतिद्वंद्वी सुंदरलाल पटवा को ही मुख्यमंत्री पद पर बैठने का मौका दिया. अब जोशी सोए नहीं, कुढ़कर रह गए.

पिछले पखवाड़े जोशी सात महीने के मान-मनौवल के बाद अंततः पटवा सरकार में शामिल हो गए. लेकिन इससे पहले उन्होंने संकेत दे दिया कि उनके साथ सही बरताव होना चाहिए. जोशी के ही शब्दों में, "मुझे लगा कि कैबिनेट में शामिल होने के प्रश्न पर मेरे बार-बार मना करने से पार्टी की छवि पर बुरा असर पड़ेगा."

पटवा-जोशी की प्रतिद्वंद्विता जगजाहिर थी. अटल बिहारी वाजपेयी ने तो सुलह के लिए यहां तक सुझाव दिया था कि जोशी की अध्यक्षता में एक कार्यक्रम क्रियान्वयन समिति गठित कर दी जाए. और आखिर जब जोशी ने पटवा मंत्रिमंडल में शामिल होना स्वीकार किया तो सभी ने चैन की सांस ली.

वैसे जोशी का यह निर्णय पटवा की जीत है और इससे पार्टी में मुख्यमंत्री की स्थिति और मजबूत होगी. सचाई और ईमानदारी के लिए जोशी पार्टी में आदरणीय रहे हैं जिसके चलते कैबिनेट में शामिल न होने की उनकी जिद से पार्टी नेतृत्व को खासी चिंता थी. विधानसभा के पिछले सत्र में भी जोशी गैरहाजिर रहे थे और धीरे-धीरे पटवा विरोधी उनके इर्दगिर्द जुटने लगे थे.

वैसे, पिछले सात महीनों में मुख्यमंत्री अपने सभी विरोधियों को धूल चटाने में कामयाब रहे हैं, पर जोशी के साथ उनकी टक्कर बराबर की ही लगती है.

—नरेंद्र कुमार सिंह

अंतर्कथा

इंद्रजीत बधवार

अपना दिल भी टटोलेंगे?

एक बार फिर वे टीवी के परदे पर थे, पूरे देश की खातिर. मगर उनके चेहरे पर मुर्दनी-सी छायी थी. आवाज फुसफुसाहट से थोड़ी तेज. और चश्मे के अंदर से झांकती आंखें कुछ उदासीन, कुछ गंभीर-सी. यह विश्वनाथ प्रताप सिंह थे, 22 अक्तूबर को राष्ट्र के नाम संदेश देते. एक कवि हृदय राजनेता अपना दिल चीरकर सामने रख देने, लोगों को रुलाने की कोशिश कर रहा था.

लेकिन इससे किसी की आंख तो नहीं नम हुई पर दिमाग में कई सवाल उभर आए. हां, वह दौर भी था जब देश उनके साथ रोने को तैयार था. तब वे पंजाब गए थे और आह्वान कर रहे थे कि पंजाब में बहे खून के दाग उन लोगों के आंसू ही धो पाएंगे जो सचमुच इस राज्य के लिए फिक्रमंद हैं. तब लोग उनके आह्वान पर रोने तक को तैयार थे. मगर आज वह बात नहीं.

उन्होंने घोषणा की, "अगर चुनाव सरकार या राष्ट्र में से किसी एक को बचाने का होगा तो मैं राष्ट्र को बचाऊंगा." बहुत खूब, क्या जुझारू तेवर हैं! उन्होंने वादा किया कि बाबरी मस्जिद विवाद पर अदालत के फैसले को हर कीमत पर तरजीह दी जाएगी. लेकिन उस शाम उनके इस भाषण से कई और बातों की ओर ध्यान जा रहा था. मन में प्रश्न उठ रहा था—क्या उन्होंने ही जातीय संघर्ष की नींव नहीं रखी? और यह भी कि उनकी आंखों से आंसू उस समय क्यों नहीं बहे जब युवा आत्मदाह कर रहे थे? और अगर उनके मन में अदालत के प्रति इतना सम्मान है तो उन्होंने यह घोषणा क्यों की थी कि अदालत के फैसले को मंडल रिपोर्ट की राह में बाधा नहीं बनने दिया जाएगा. उन्होंने कहा कि भारत वह मंदिर है जो जनता के दिलों से बना है. "ईंट-गारे का बना मंदिर टूट भी गया तो फिर बनाया जा सकता है पर जब दिल का मंदिर टूट जाता है तो वह फिर नहीं बनता." इन बयानों का मकसद भावनाएं जगाना ही तो था.

रेखांकन: प्रणव सत

लेकिन हमें प्रधानमंत्री की पटना की सद्भावना रैली की याद आने लगती है. वहां प्रधानमंत्री के पास ही कपड़ामंत्री शरद यादव बैठे थे और भाजपा के रथ को जनता दल के चक्र से धराशायी कर देने की अपील कर रहे थे. उधर, दूसरे मंत्रीगण आरक्षण विरोधियों के खिलाफ जातीय हिंसा भड़काने वाली बातें कर रहे थे. और इसके तुरंत बाद मंच का तेवर बदलता है. विश्वनाथ प्रताप सिंह 'दिल एक मंदिर है' जैसे बयान देते हैं.

इसलिए अब विश्वनाथ प्रताप सिंह जब भाजपा की रथयात्रा की निंदा करते हैं तो अपनी साख को ही और धूमिल करते हैं, क्योंकि तब वे उस व्यक्ति सरीखे दिखते हैं जो अपने शीशे के महल से दूसरों के घरों पर पत्थर फेंक रहा है. वोट बैंक पुख्ता करने की वी.पी. सिंह की राजनीति भी इतनी ही निंदनीय है. पिछले 10 महीने से वे एक तरफ भाजपा को खुश करने में लगे हुए थे तो दूसरी तरफ मुस्लिम कट्टरपंथी नेताओं के साथ खिचड़ी पका रहे थे.

लगता है एक समर्थ नेता की प्रतीक्षा में जनता ने व्यर्थ ही समय गंवाया. लोगों ने जिससे उम्मीदें बांधी थी, उसी में अपना विश्वास जताया था. पर उन्हें बदले में क्या मिला ? आहत राष्ट्र को टीवी के परदे पर भावुकता का भौंडा प्रदर्शन भर.

दिल तोड़ने वाले क्या अपना दिल टटोलेंगे ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

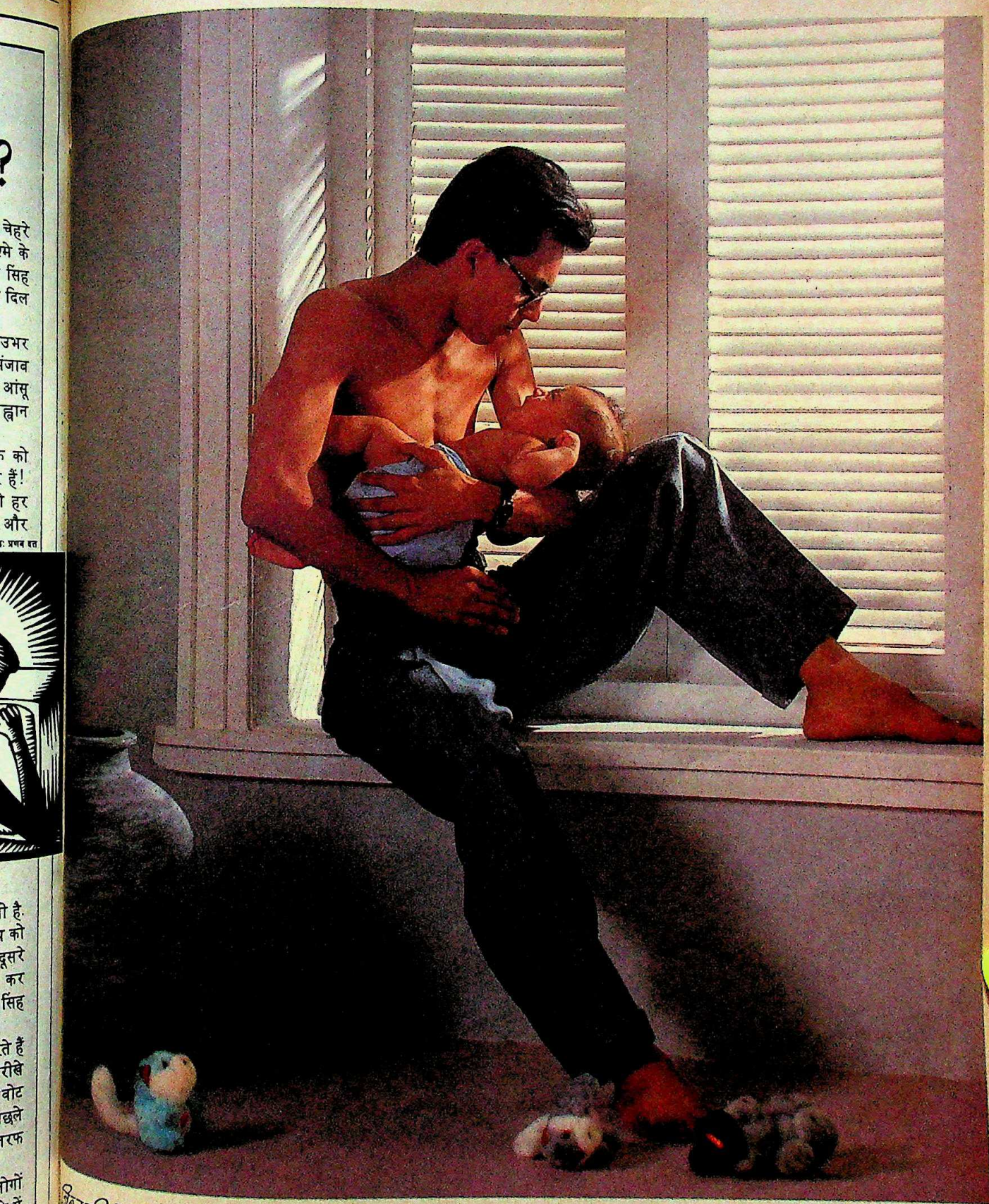

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चमड़े को नर्म, मुलायम, चमकदार रोमांचक स्पर्श देकर हम निर्यात बाजार में तहलका मचा रहे हैं

भारतीय चमड़ा उद्योग के साथ एक लम्बे अरसे तक सौतेला बर्ताव होता रहा है. यहां से खालें विदेशों में निर्यात की जाती रहीं,जहां उनको आकर्षक रूप प्रदान कर भरपूर मुनाफा कमाया गया. आखिरकार इस स्थिति में बदलाव लाए एस एम डाईकेम, आयात के विकल्प प्रक्रिया रसायन के जरिए,जो चमड़े को सुन्दर सलोनापन प्रदान करता है. आज हर पैर की शान है जूतें. आज भारतीय चमड़े की तूती हर जगह बोल रही है. **विशिष्ट भागीदारी, प्रमुख योगदान**

अनेक प्रमुख उद्योगों में हमारी विशिष्ट भागीदारी है. अत्याधुनिक साधन-सामग्री, आयात विकल्प रसायन से लेकर हम निर्यात कार्य तक में सहायता कर रहे हैं. हमने यूरोप के ४ टेक्नोलॉजी लीडर्स के साथ गठबंधन किया है. निर्माणपूर्णता अवधि को कम करने का ज्ञान प्राप्त किया है. नवीन परियोजनाओं को रिकॉर्ड समय में लाभकारी केन्द्र के रूप में परिवर्तित किया है. इस प्रक्रिया में प्रत्येक तथा हरेक वर्ष हम अपने मुनाफे को दुगुना करते रहे हैं. तथा स्टॉक मार्केट में सर्वाधिक आकर्षण का स्थान प्राप्त कर लिया है. **सफलता की सतत प्रक्रिया.** सफलताएं नई आकांक्षाओं को जन्म देती हैं. विशिष्ट रसायन बाजार में हमारा शिखर स्थान है, अब हम विभिन्न नये क्षेत्रों में प्रवेश कर रहे हैं. निकट भविष्य में हमारी दृष्टि में है इनके उत्पादन की नई परियोजनाएं: मेथेनॉल, पिग आयरन, कार्बन ब्लैक तथा विश्व श्रेणी की बीयर:

शुरू होने की तैयारी पर है एक एग्रो आधारित पेट्रोकेमिकल्स परियोजना. प्रत्येक योजना के साथ हम लाएंगे मूल्य-गुण वृद्धि का सुखद स्पर्श. लाभ हरेक तक पहुंचाएंगे...फायदा बाटेंगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक लाभ के लिए

उच्च-मूल्य युक्त.

उच्च-विकासक्षेत्र के लिए

उच्च-तकनीक साधन

सामग्री.

- लेदर
- टेक्सटाइल्स
- मॅन मेड फाइबर्स
- एनिमल हेल्थ केयर
- डिटर्जेंट्स तथा टॉयलेटरीज़
- फार्मास्युटिकल्स
- प्रोसेस्ड फूड्स
- पेस्टीसाइड्स
- फर्टिलाइज़र्स
- ऑइल फील्ड केमिकल्स

SM

एस एम डाईकेम

सफलता की बात, मूल्य-गुण वृध्दि के साथ

एस एम डाईकेम लि. एस एम हाउस, ११, सहकार रोड, विले पार्ले (पू), बम्बई ४०० ०५७.

Adfactors/SMDL/259

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीत गये हैं आपके 30 साल...

फिर भी रखिये क़ायम वही सुनहरा काल!

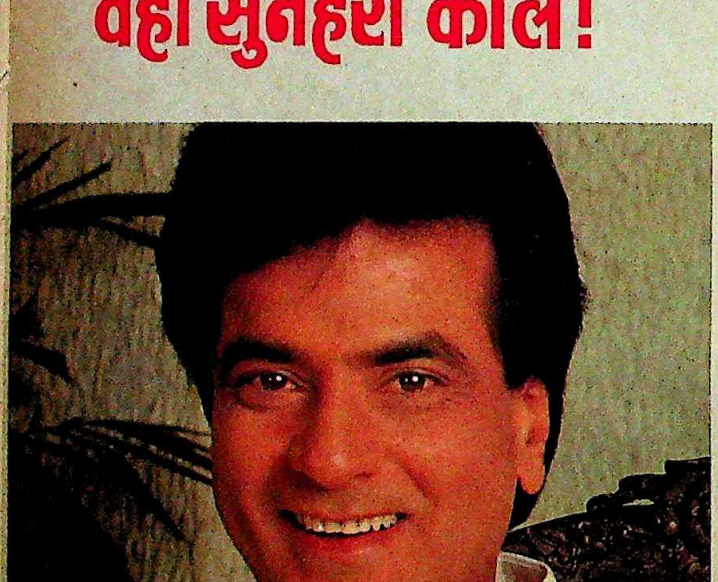

आपके जीवन के सुहाने दिन आपके इन्तेज़ार
शानदार, विश्वासपूर्ण और उमंगों भरे
अगर आप पहले की तरह तन्दुरुस्त नहीं तो क
ज़्यादा काम-धाम से थकान और तनाव महसूस क
हैं, और पुन: शक्ति चाहते हैं, तो आपके ही लिए
थर्टी प्ल

थर्टी प्लस में है जिनसेंग...

सदियों से एशिया के साइंटिस्ट जिनसेंग का म
मानते आए हैं. अपने शक्ति दायक तत्वों के क
आज जिनसेंग की बेहद मांग
जिनसेंग सुरक्षित है और प्राकृतिक उत्तेजना दायक
अपनी तन्दुरुस्ती, दम और कार्यक्षमता बढ़ाने
लिए कई खिलाड़ी इसे इस्तेमाल करते
दुनिया के जाने-माने लोग जिनसेंग इस्तेमाल क
रहे हैं, जिन में इन्दिरा गान्धी, हेन्री किसिंजर
मार्लन ब्रांडो शामिल

... और अश्वगन्

हमारे अपने देश की जड़ अश्वगन्धा का उल्ले
वेदिक साहित्य में एक आयुर्वेदिक टॉनिक
स्वास्थ्य वर्धक ख़ूराक के रूप में
थकान, तनाव और लम्बी बीमारी से उत्पन्न कमज़
में अश्वगन्धा मांसपेशियों को ताक़त देती है
शरीर में ताज़ा शक्ति दौड़ाती

बैहतरीन ताल-मे

कोरियन जिनसेंग और अश्वगन्धा दोनों ही उमंग-त
भरे तत्वों के लिए जाने-माने हैं. अध्ययन से
सिद्ध हो चुका है कि इन दोनों के बारे में
विश्वास हैं, वे सही

थर्टी प्लस. यानी एक कैप्स्यूल में जिनसेंग
अश्वगन्धा का शानदार ताल-मे
शक्ति से भरपूर थर्टी प्लस आपको दे चुस्ती-फ़
और तन्दुरुस्ती ताकि आपको मिले सहन-शक्ति
और तनाव से मुकाबला करने में मदद, साथ
ताक़त में वृद्धि. और सुहाने दिनों का भरपूर आन

Thirty Plus
ENERGY RECHARGERS

आप के लिए दम-दमा-दम

A product of ajanta pharma limited
21-31 Satyam, 318 Linking Road, Khar (West), Bombay 400 052.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब

बिगड़ते हालात

स्पष्ट नीति-निर्देश का अभाव

केंद्र की डांवाडोल हालत ने पंजाब को पीछे धकेल दिया है. फिलहाल जनता का ध्यान भले ही इसके घातक असर से हट गया हो पर स्थिति लगातार बिगड़ती जा रही है. राज्य में पुलिस और प्रशासन दोनों के अलग-अलग राह पकड़ने से हालात खतरनाक मोड़ पर आ चुके हैं.

पिछले कुछ महीने से पुलिस और गृह प्रशासन के बीच बढ़ रहा तनाव पिछले सप्ताह खुलकर सामने आ गया. विवाद पुलिस शिकायतों के निबटारे और पुलिस ज्यादतियों की जांच को लेकर है. राज्यपाल वीरेंद्र वर्मा ने जून में हुई पुलिस मुठभेड़ के तीन मामलों की मजिस्ट्रेटी जांच के आदेश दिए थे. इनमें कोटला अजनेर में दो युवकों, मोहाली में एक व्यक्ति, और तीन दूसरे लोगों की हत्या के मामले शामिल थे.

शिकायतकर्ताओं का आरोप था कि ये हत्याएं फर्जी मुठभेड़ दिखाकर की गईं. लेकिन पुलिस महानिदेशक के.पी.एस. गिल और संबंधित जिला पुलिस प्रमुखों के हस्तक्षेप की वजह से इन मामलों की जांच रोक दी गई. नतीजतन, गिल और पूर्व गृह सचिव आर.एस. मान के बीच ठन गई. अब दो जांच रिपोर्टों के पेश होने से यह मामला फिर तूल पकड़ गया है.

मोहाली वाले मामले में मजिस्ट्रेट किसी नतीजे पर नहीं पहुंच पाए लेकिन

प्रमोद पुष्करणा

पुलिस प्रमुख गिल: कड़ा रुख

प्रशांत पंजियार

राज्यपाल वर्मा: हतोत्साहित

कोटला अजनेर की घटना में मजिस्ट्रेट ने माना है कि "दोनों व्यक्तियों की मौत सामान्य मुठभेड़ में नहीं हुई." लिहाजा, गृह सचिव ए.एस. चड्ढा और राज्यपाल के सलाहकार पी.एस. कोहली ने संबंधित पुलिस अधिकारियों के खिलाफ फौजदारी मुकदमा दायर करने को कहा है. लेकिन गिल ने इस पर प्रतिवाद किया कि इससे पुलिस का मनोबल गिर सकता है. इससे क्षुब्ध होकर राज्यपाल ने मामले को कानूनी सलाह के लिए भेजा है.

प्रशासन में फैले अनिश्चय के इस माहौल से हालात संगीन होते जा रहे हैं. राष्ट्रपति शासन की मौजूदा अवधि के बारे में कोई स्पष्ट संकेत नहीं मिल रहे हैं और उधर एकमुश्त आर्थिक सहायता की घोषणा के महीने भर बाद भी इसकी औपचारिकताएं पूरी नहीं हो पाई हैं. केंद्र से स्पष्ट नीति-निर्देश के अभाव ने पुलिस और प्रशासन के बीच खाई को और चौड़ा किया है. प्रशासन पंगु हो चुका है.

वरिष्ठ अधिकारियों का मानना है कि अफरातफरी को दूर करने के लिए पूरी व्यवस्था में फेरबदल जरूरी है. यहां तक कि राज्यपाल को भी बदला जाना चाहिए. साथ ही स्पष्ट नीति बनाने की तत्काल जरूरत है. अन्यथा एकमुश्त आर्थिक सहायता का जो थोड़ा-बहुत फायदा मिलता, वह भी अराजकता की बाढ़ में बह जाएगा.

—कंवर संधू

स्वदेश तलवार/इंडियन एक्सप्रेस

मारे गए छात्रों का दाह-संस्कार

फिर उठी लपटें

चंडीगढ़ में मंडल विरोधी आंदोलन शांत होता दिख ही रहा था कि शहर में फिर आग की लपटें उठने लगीं. एक घटना में एके-47 राइफलों से लैस संदिग्ध आंतकवादियों ने दो जगहों पर क्रामिक भूख हड़ताल पर बैठे मंडल विरोधी आंदोलनकारियों पर अंधाधुंध गोलियां चलानी शुरू कर दीं. घटनास्थल पर ही छह आंदोलनकारी मारे गए और 15 घायल हो गए.

इससे लोग सड़कों पर उतर आए और उन्होंने आधा दर्जन सरकारी वाहनों में आग लगा दी. उधर, मंडल विरोधी आंदोलन से निबटने के लिए पूरी तरह तैयार पुलिस ने उन पर आंसू गैस के गोले छोड़े और लाठीचार्ज किया. पूरे शहर में कर्फ्यू लगा दिया गया और सेना बुला ली गई.

पीजीआई में, जहां घायलों को लाया गया था, न सिर्फ वी.पी. सिंह विरोधी नारे लगे बल्कि शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों को पर्याप्त सुरक्षा मुहैया न कराने के लिए चंडीगढ़ प्रशासन की कड़ी आलोचना भी की गई. उल्लेखनीय है कि पंथक कमेटी के स्वंभू प्रमुख डॉ. सोहन सिंह ने घोषणा की थी कि कमेटी पिछड़ों और दलितों पूर्ण का समर्थन करती है और आरक्षण विरोधियों का मुंहतोड़ जबाब देगी.

शहर में हुई इस घटना से लगता है कि चंड़ीगढ़ भी आंतकवादियों के चंगुल में फंसता जा रहा है. वहां सुरक्षा दुरुस्त करनी होगी.

—कंवर संधू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सनद रहे

निधनः लोकप्रिय फिल्म अभिनेता 54 वर्षीय **ओम शिवपुरी** का मद्रास में दिल का दौरा पड़ने से. चरित्र भूमिकाओं में पारंगत ओम शिवपुरी ने करीब 100 फिल्मों में काम किया. उन्होंने अपने कैरियर की शुरुआत 1972 में गुलजार की फिल्म 'कोशिश' से की पर उनका यादगार अभिनय 'नमक हराम' और 'डॉन' में रहा.

निधनः मेघालय के पूर्व मुख्यमंत्री 71 वर्षीय कैप्टन **विलियम ए. संगमा** का फेफड़े के कैंसर की वजह से. द्वितीय विश्व युद्ध में भारतीय सेना में अधिकारी रहे संगमा बाद में राजनीति में आए और जोड़-तोड़ की राजनीति के लिए चर्चित रहे.

निर्वाचितः राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद के लिए 1945 के बाद **भारत** छठी बार. अगली जनवरी से शुरू दो साल की अवधि के लिए भारत की उम्मीदवारी श्रीलंका के होड़ से हटने के बाद तय ही थी.

उतरीः हैसियत की नई प्रतीक **मारुति-1000** अब सड़क पर. यह कार अपने पहले मॉडलों के मुकाबले ज्यादा आरामदेह है. नए मॉडल स्टैंडर्ड और एअरकंडीशंड हैं जिनकी कीमत क्रमशः 3.19 लाख और 3.48 लाख रु. होगी.

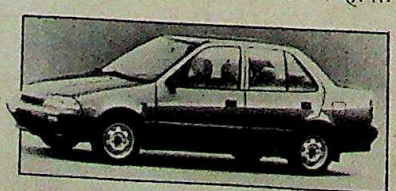

निधनः विवादास्पद आनंद मार्ग के संस्थापक, 69 वर्षीय **प्रभात रंजन सरकार** का. अनुयायियों के बीच आनंद मूर्ति जी के नाम से जाने जाने वाले सरकार ने 'प्राउटिस्ट' या प्रगतिशील उपयोगितावाद के सिद्धांत पर विश्व भर में 'समुदाय' स्थापित किए हैं. उनकी मृत्यु के बाद नेतृत्व-शून्यता इस संस्था को कमजोर कर सकती है.

संन्यास लियाः एशिया की बेहतरीन महिला एथलीट, 26 वर्षीया **पी.टी. उषा** ने. पेशेवर प्रतिस्पर्धा के दस साल के कैरियर में उषा ने अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धाओं में 22 स्वर्ण, 19 रजत और 8 कांस्य पदक जीते. इनमें पेइचिंग एशियाड में जीते तीन रजत पदक भी हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही है मेरी ज़िन्दादिली का राज़!

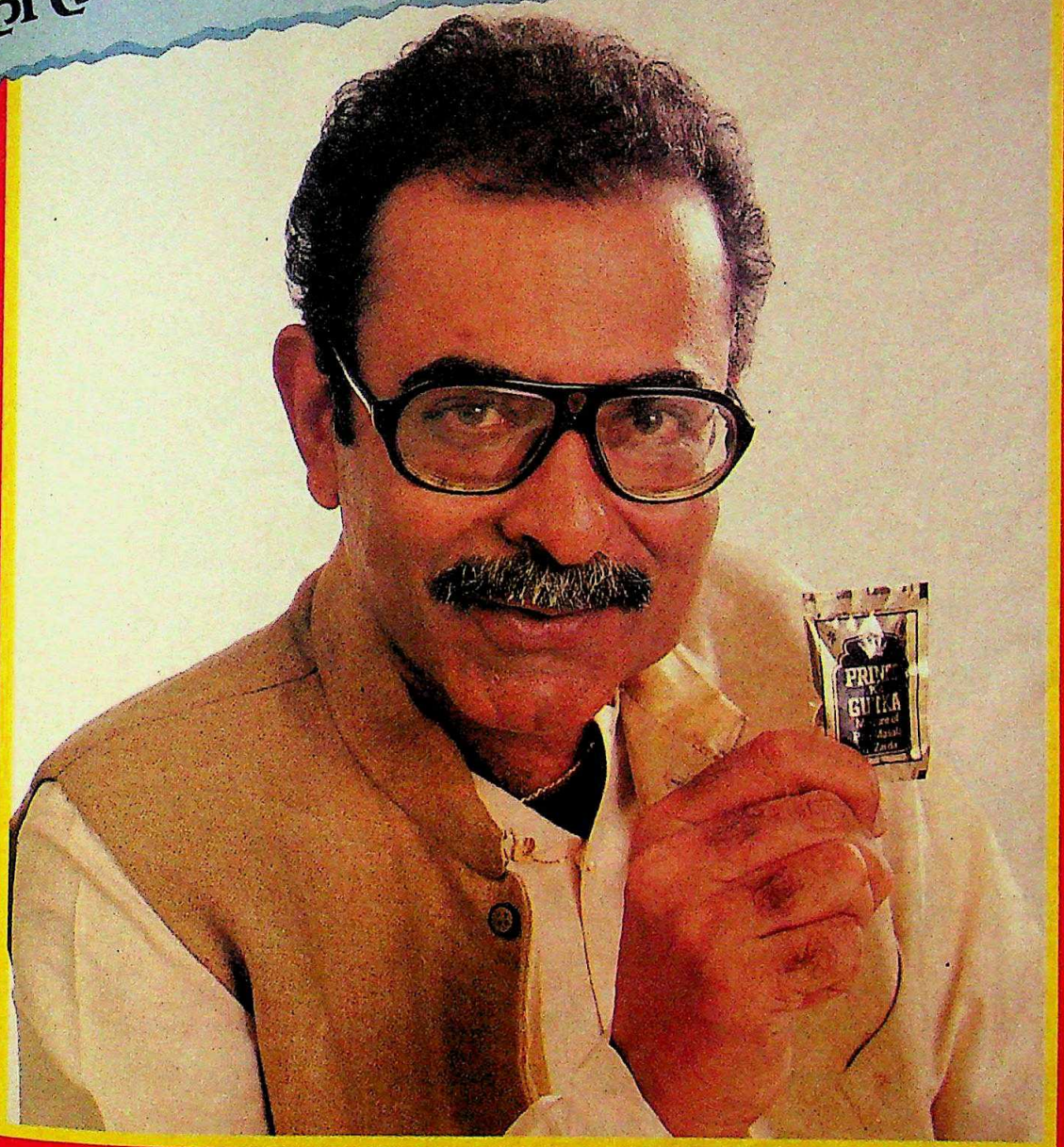

"जी हाँ, प्रिंस गुटका !
काम के पल हों या आराम के, शूटिंग चल रही हो या डबिंग, ज़रा सी फ़ुर्सत मिली नहीं कि बस, डाल लिया मुँह में थोड़ा प्रिंस गुटका.
देखते ही देखते आ जाती है दिलो-दिमाग में मस्ती और शरीर के अंग-अंग में ताज़गी."

प्रिंस गुटका

फूलों की सुगंध का अनमोल खज़ाना

वैधानिक चेतावनी : तम्बाकू चबाना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी फोटो: भरत सक्सेना

शासन व्यवस्था के इस प्रचार ने पापीपा का भविष्य चौपट कर दिया कि लोकतंत्र तभी चलेगा जब उसके लोग जीतेंगे

पाकिस्तान

वोट की ताकत का एहसास

अब तक के सबसे गाली-गलौज भरे और बिना किसी मुद्दे वाले चुनाव के बाद इस्लामी जम्हूरी इत्तेहाद सत्ता पर काबिज मगर मुल्क का भविष्य फिर भी अनिश्चित

—शेखर गुप्ता, पाकिस्तान में

अलग-अलग विचारधारा वाले जिन दर्जन भर नेताओं को कभी 'जिया के यतीम' कहकर अपमानजनक तरीके से उपेक्षित कर दिया गया था, उन्हें ही पाकिस्तान में पिछले पखवाड़े हुए चुनाव के पहले सत्ता व्यवस्था का, जो सेना और अफसरशाही के ताकतवर गठजोड़ के चंगुल में हैं, किराए का टट्टू समझा जा रहा था.

लेकिन यही 'यतीम' पूरे पाकिस्तान में अपने समर्थन में बहने वाली चुनावी लहर पर सवार होकर रातोरात 'जिया के उत्तराधिकारी' बन गए. सिंध में उन्हें भले ही थोड़ी-बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ा लेकिन पंजाब में उन्होंने बेनज़ीर भुट्टो के नेतृत्व वाली पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पापीपा) का उसी के गढ़ों में सफाया कर दिया. और उनकी जीत के शोर में बेनज़ीर के ये तमाम आरोप दब गए कि चुनाव में धांधली हुई है.

यह चुनाव पाकिस्तान के पिछले सभी चुनावों के मुकाबले सबसे गाली-गलौज भरा और बिना किसी मुद्दे का चुनाव था. पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री मियां नवाज़ शरीफ के नेतृत्व वाले इस्लामी जम्हूरी इत्तेहाद (इजइ) को नेशनल असेंबली में 207 में से 105 सीटें मिलीं. इस तरह उसने न केवल 92 सीटों का पापीपा का रिकार्ड तोड़ा बल्कि मुहाजिर कौमी महाज (मुकौम) और दूसरे छोटे गुटों के संभावित समर्थन से दो-तिहाई बहुमत की

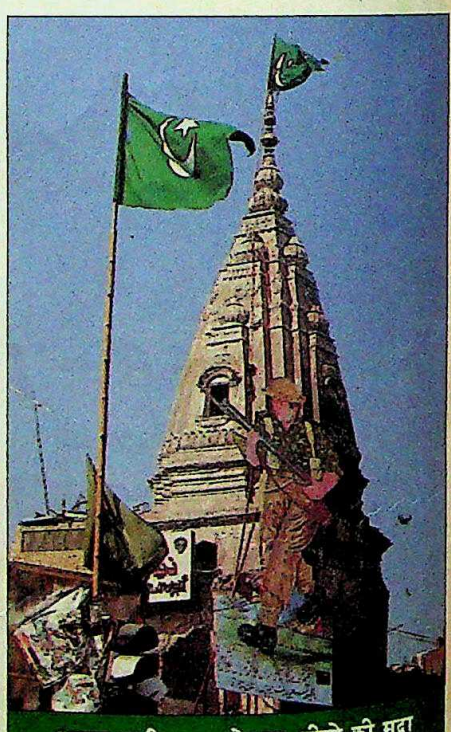

नवाज़ शरीफ का पोस्टरः हीरो की मुद्रा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

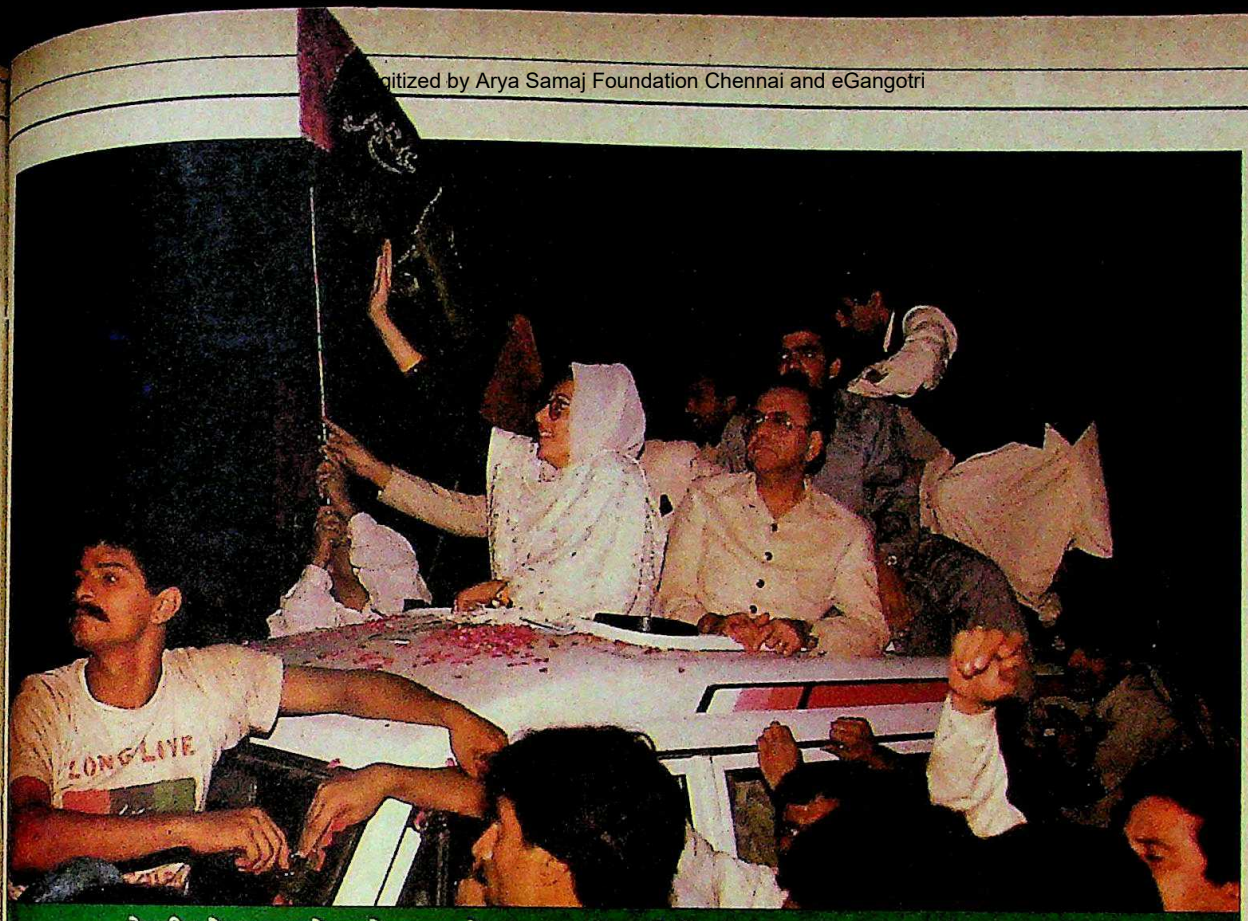

बेनज़ीर ने चुनाव को अपने ऊपर लगे भ्रष्टाचार के आरोपों पर जनमत संग्रह का रूप देकर भूल की

ज़ोर बढ़ता दिखा. कार्यवाहक प्रधानमंत्री गुलाम मुस्तफा जतोई, जिन्होंने जानकारों की भविष्यवाणियों को नकारते हुए दो निर्वाचन क्षेत्रों से चुनाव लड़ा और दोनों ही ख़ासे से जीते, कहते हैं, "यह बेशक हमारी जीत है."

लेकिन बेनज़ीर इससे सहमत नहीं हैं. वे कहती हैं, "चुनाव में जबरदस्त धांधली की गई. मुझे पाकिस्तान, पाकिस्तानी अवाम और जम्हूरियतपसंदों के लिए अफसोस है." किसी को उम्मीद नहीं थी कि पापीपा इतनी बुरी तरह हारेगी. इसके कट्टर विरोधी भी इसे कम-से-कम 70 सीटें मिलने की भविष्यवाणी कर रहे थे. चुनावी फैसले से पापीपा स्तब्ध रह गई, मगर बेनज़ीर और उनके सलाहकार जल्दी ही इससे उबरकर आगे की रणनीति बनाने में जुट गए हैं. उम्मीद है कि चुनाव में कथित धांधली के खिलाफ वे आवाज बुलंद करेंगे. लेकिन वे इस धांधली का कोई सबूत नहीं पेश कर पाए हैं. बहरहाल, पापीपा के नेताओं को अब एहसास हो रहा है कि शासकों और इजइ ने उनके खिलाफ 10 अप्रैल तक जो प्रचार अभियान चलाया, उसका क्या असर पड़ा. राष्ट्रपति गुलाम इशाक खां की आलोचनाओं, पूर्वाधिकारियों के आरोपों, इजइ के दुष्प्रचारों, भ्रष्टाचार से संबंधित मुकदमों और बेनज़ीर के पति आसिफ अली ज़रदारी पर भ्रष्टाचार के आरोपों आदि ने पापीपा की चुनावी संभावनाओं को धूमिल कर दिया. और तो और, सरकारी प्रचारतंत्र ने तो जैसे निष्पक्षता को तिलांजलि ही दे दी.

शासकों ने ऐसे जाली पत्र भी जारी किए जिनमें बेनज़ीर को अपने अमेरिकी सूत्रों से यह अनुरोध करते हुए दिखाया गया कि वे भारत को पाकिस्तान पर हमला करने की सलाह दें. टीवी पर नेताओं के ऐसे इंटरव्यू प्रसारित किए गए जिनमें पापीपा की आलोचना होती और इजइ के लिए हवा बनाने की कोशिश की जाती. इतना ही नहीं, चुनाव से ठीक पहले राष्ट्रपति ने राष्ट्र के नाम जो संदेश जारी किया उसमें बेनज़ीर पर भ्रष्टाचार और राष्ट्र विरोधी गतिविधियों के आरोप दोहराए गए. पापीपा के नेतृत्व वाले गठबंधन के महासचिव मियां खुर्शीद कसूरी ने कहा, "वे मुल्क के नहीं, इजइ के प्रेसिडेंट जैसा सलूक कर रहे थे." बेनज़ीर सरकार के पेट्रोलियममंत्री जहांगीर बदर ने कुछ ज्यादा तल्खी से कहा, "वे जिया से अलग नहीं हैं. फर्क इतना है कि जिया वर्दी पहनते थे और ये लोग अचकन पहनते हैं."

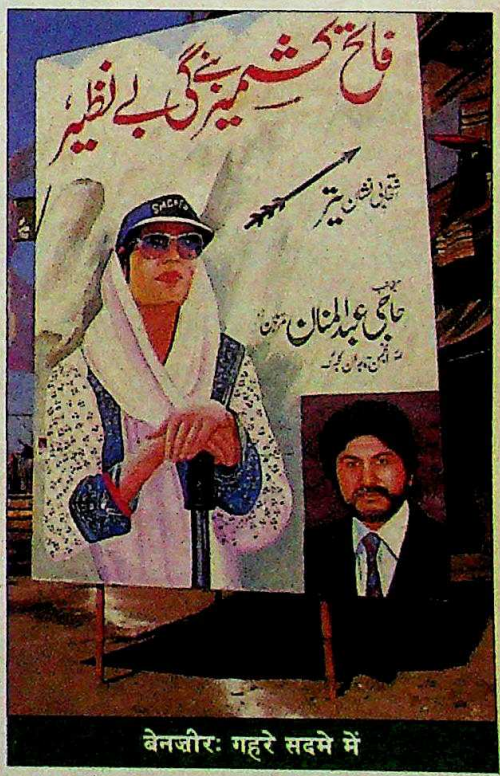

बेनज़ीरः गहरे सदमे में

इन प्रचार अभियानों से ज्यादा मतदान के दिन हुई धांधली ने पापीपा का बेड़ा गर्क किया. लग रहा था कि शासन व्यवस्था मतदाताओं को यह जताना चाहती थी कि उन्होंने उसके उम्मीदवारों को वोट दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

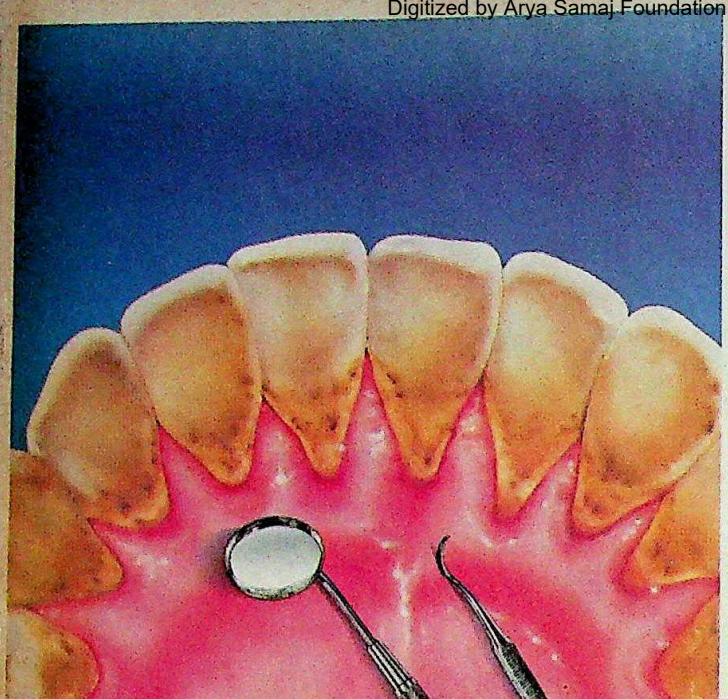

टारटर को दर्शाने वाला आपके मुंह का भीतरी विस्तृत चित्र.

अभी अपने दांतों पर जीभ फिराकर देखिए... आपके लिए कोई गंभीर समस्या हो सकती है !

ये है मैल की परत.

इसे टारटर कहते हैं. दांतों पर, मसूढ़ों के पास आप अपनी जीभ से एक धब्बेदार पीली (कई बार सफ़ेद) सीमेंट जैसी खुरदुरी परत को आसानी से महसूस कर सकते हैं. एक बार इसके जमने पर, आम तौर से इसे हटाने के लिए दांतों के डॉक्टर की सहायता लेनी पड़ती है. लेकिन ये दोबारा फिर जम जाती है. यदि इस पर ध्यान न दिया जाए तो इस टारटर के कारण आपके दांत न केवल भद्दे और बदसूरत नज़र आने लगते हैं बल्कि इससे मसूढ़ों की गंभीर समस्या भी पैदा हो सकती है. यहां तक कि आपके दांत सड़ भी सकते हैं. सबसे बुरी बात तो यह है कि भारत के ९०% वयस्कों की दांतों संबंधी बीमारियों का प्रमुख कारण है - यही टारटर.

केवल चुने हुए शहरों में उपलब्ध.

औषधीय परीक्षणों द्वारा मान्य टारटर नियंत्रक.

टारटर बनता कैसे है?

सामान्यतया लार में मौजूद कैल्शियम लवण और ऑरथोफ़ॉस्फ़ेट की परस्पर प्रतिक्रिया द्वारा कणों के रूप में हायड्रॉक्सीएपेटाइट तैयार होता है. दरअसल, टारटर का मूल बीज या असली कारण भी यही है. जिसे डॉक्टर कैलक्युलस कहते हैं. धीरे-धीरे कैल्शियम लवण के और भी कण इस बीज पर जमा होते जाते हैं और टारटर की एक परत सी बन जाती है. ऐसा इसलिए होता है क्योंकि इन बीजों में ख़ास गुण होते हैं, जिससे इन पर कैल्शियम लवण अपने आप जमा होते जाते हैं.

नया कोलगेट टारटर कंट्रोल फार्मूला. टारटर को रोकने वाला औषधीय परीक्षणों द्वारा मान्य टूथपेस्ट.

नया कोलगेट टारटर कंट्रोल फार्मूला टूथपेस्ट औषधीय परीक्षणों द्वारा मान्य भारत का सबसे पहला और एकमात्र टूथपेस्ट है जो टारटर को बनने से रोकता है और इससे होने वाली बीमारी की संभावना को कम करता है.

नया कोलगेट टारटर कंट्रोल फार्मूला कैसे असर दिखाता है?

नये कोलगेट टारटर कंट्रोल फार्मूले में घुलनशील पायरोफ़ॉस्फ़ेट होता है, जो लार में मौजूद कैल्शियम के साथ मिल जाता है और इस कैल्शियम को फ़ॉस्फ़ेट के साथ मिलने से रोकता है. यह नया मिश्रण आसानी से सख़्त नहीं होता. इस तरह टारटर बनने की क्रिया भी कम होती है. यही नहीं, पायरोफ़ॉस्फ़ेट पहले ही बन चुके टारटर को और अधिक बढ़ने से भी रोकता है. यह मौजूदा टारटर के बीजों के साथ मिलकर, दांतों पर एक कवच सा तैयार कर देता है तथा और अधिक टारटर की जमावट को रोकता है.

टारटर को रोकने में बेजोड़.

अमेरिका के फ़ॉरसिथ डेंटल सेंटर में किए गए एक तुलनात्मक औषधीय सर्वेक्षण के अनुसार, दांतों के इलाज के लिए आए एक समूह की निगरानी के दौरान नया कोलगेट टारटर कंट्रोल फार्मूला टारटर की जमावट को रोकने में औसतन ४७.६% तक सफल सिद्ध हुआ.

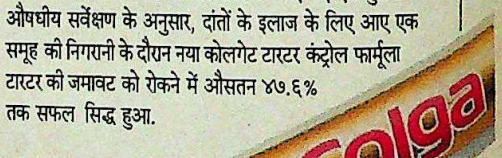

टारटर का करें नियंत्रण - तीन सुनहरे नियम.

१. दांत के डॉक्टर से दांतों की सफ़ाई करवाएं.
२. दांतों को दिन में दो बार कोलगेट टारटर कंट्रोल फार्मूला टूथपेस्ट से साफ़ करें.
३. नियमित समय पर दांत के डॉक्टर के पास जाएं.

"कोलगेट टारटर कंट्रोल फार्मूले से मसूढ़े के ऊपरी हिस्से पर टारटर का बनना तो निश्चित रूप से कम हुआ, लेकिन दांतों संबंधी बीमारी पर कोई औषधीय प्रभाव नहीं दिखाई दिया."

काउंसिल ऑन डेंटल थेरेपेटिक्स अमेरिकन डेंटल एसोसिएशन.*

NEW! Clinically proven to fight Tartar build-up.
Colgate Dental Cream
Tartar Control Formula

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Rediffusion/CP/90/217 b HN

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी लोकतंत्र चल पाएगा. बेनज़ीर और उनके समर्थकों ने इन सबका विरोध बहुत डरकर नहीं किया क्योंकि उन्हें पूरी उम्मीद थी कि इन सबके बावजूद नतीजा अंततः उनके ही पक्ष में होगा. उन्होंने एक बड़ी भूल यह की कि इस चुनाव को बेनज़ीर सरकार पर लगाए गए भ्रष्टाचार के आरोपों पर जनमत संग्रह का रूप दे दिया और इजइ की कामचलाऊ सरकार के हाथों खेल गए.

पापीपा का मुख्य नारा था—'या अल्ला, या रसूल, बेनज़ीर बेकसूर.' इजइ ने तुरंत ही इसमें संशोधन कर दिया और बेनज़ीर बेकसूर की जगह 'बेनज़ीर बेउसूल' का नारा प्रचारित कर दिया. पंजाब में पापीपा को पिछले चुनाव में 54 सीटें मिली थीं जो अब घटकर 11 हो गई हैं. सिंध में भी इजइ और उसकी सहयोगी पार्टी मुकौम की सीटों की संख्या बढ़ी है जबकि सीमांत प्रांतों में पापीपा को जबरदस्त धक्का लगा है. पेशावर में तो बेनज़ीर चुनाव ही हार गईं. सीमांत प्रांत में मुकौम और खान वली खां की अवामी नेशनल पार्टी के बीच तालमेल के कारण

वे आम नेताओं जैसे नहीं हैं. और अगर वजीरेआजम बने तो वे उपमहाद्वीप में बड़े उद्योगपति से राष्ट्रीय स्तर के नेता बने पहले व्यक्ति होंगे. इस्लामी जम्हूरी इत्तेहाद (इजइ) के अध्यक्ष, 42 वर्षीय मियां नवाज़ शरीफ बेनज़ीर विरोधियों के अगुआ के रूप में उभरे हैं. फ़ीचर संपादक ***शेखर गुप्ता*** *के साथ दो बैठकों में उनकी बातचीत. कुछ अंश:*

मियां नवाज शरीफ

'हम भारत के साथ अमन चाहते हैं'

• क्या आप हेराफेरी के चलते जीते ?

नहीं, यह सरासर गलत है. मुल्क में चुनावी हेराफेरी की बुनियाद दरअसल पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पापीपा) ने ही रखी. भुट्टो को इसकी सजा जो मिली उसके मद्देनजर चुनाव में हेराफेरी की हिम्मत कौन कर सकता है ?

• चुनाव प्रचार इतना तीखा क्यों रहा ?

ऐसा होना नहीं चाहिए था. शायद हम सभी जज्वात में बह गए थे.

• क्या भारत को आपकी पार्टी की जीत से फिक्रमंद होना चाहिए?

भारत को फिक्रमंद नहीं होना चाहिए. हम भारत के दोस्त हैं.

• भारत के साथ ठीकठाक रिश्ते बनाने में क्या आप कोई पहल करेंगे ?

बिलकुल. मैं अमन का हिमायती हूं. हमें बैठकर बातचीत करनी होगी.

• पर जब बेनज़ीर भुट्टो ने राजीव गांधी के साथ इस तरफ पहल की कोशिश की थी तो आपने उन पर पाकिस्तान के मुफाद को कुरबान करने का इल्जाम लगाया था.

उस दौरान जो कुछ हुआ, सब दिखावटी था. गैर-मुल्की पॉलिसी पर शख्सियतें हावी थीं. राजीव के लिए मेरे मन में काफी हमदर्दी थी. पर ये जज्वात उनके उस बयान के बाद ठंडे पड़ गए कि अगर वे पाकिस्तान के नागरिक होते तो बेनज़ीर भुट्टो को ही वोट देते.

• आप कहते रहे हैं कि अगर भारत के कश्मीरी मुजाहिदों की मदद करना जुर्म है तो आप यह जुर्म सैकड़ों बार करेंगे. अब आप अमन की बात करते हैं.

मैं माली या हथियारों की मदद की बात नहीं करता. मैं सिर्फ सियासी और इख्लाकी हिमायत की बात कर रहा हूं.

• भारतीय पंजाब के मसले पर आपकी राय?

मशरिकी पंजाब में जो हो रहा है, वह भारत का अंदरूनी मसला है.

• क्या आप भी बेनज़ीर और उनके लोगों के खिलाफ मुकदमे जारी रखेंगे ?

सच कहूं तो मैं नहीं चाहता कि उन्हें चुनाव के नाकाबिल करार दिया जाए. पर अदालतों पर मेरा कोई बस नहीं.

• मगर आप पर भी बेईमानी के कई इल्जाम हैं?

अगर उनमें सचाई होती तो 20 महीने में उन्होंने क्यों नहीं पता लगाया.

• फौज से आजाद होकर काम कर पाएंगे ?

पता नहीं, यह बहस क्यों चलती आ रही है. फौज ने कानून का पालन किया.

• क्या आप मौजूदा आईन को ही मानेंगे या उसे बदलना चाहेंगे, खासकर आठवीं तरमीम को जिससे सदर को काफी अधिकार मिल जाते हैं?

मुझे इसमें ज्यादा दिक्कत नहीं दिखती. सदर और वजीरेआजम बैठकर मसले सुलटा सकते हैं.

• क्या आप अमेरिका की बार-बार की इन धमकियों की मुखालिफत नहीं करते कि अगर आप घरेलू नीतियां नहीं बदलेंगे तो वह मदद रोक देगा ?

हमारा मुल्क आजाद है. हम नहीं चाहते कि कोई हमारे मामलों में दखलंदाजी करे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हें दीजिए अपना प्यार और सुरक्षा-आधार...

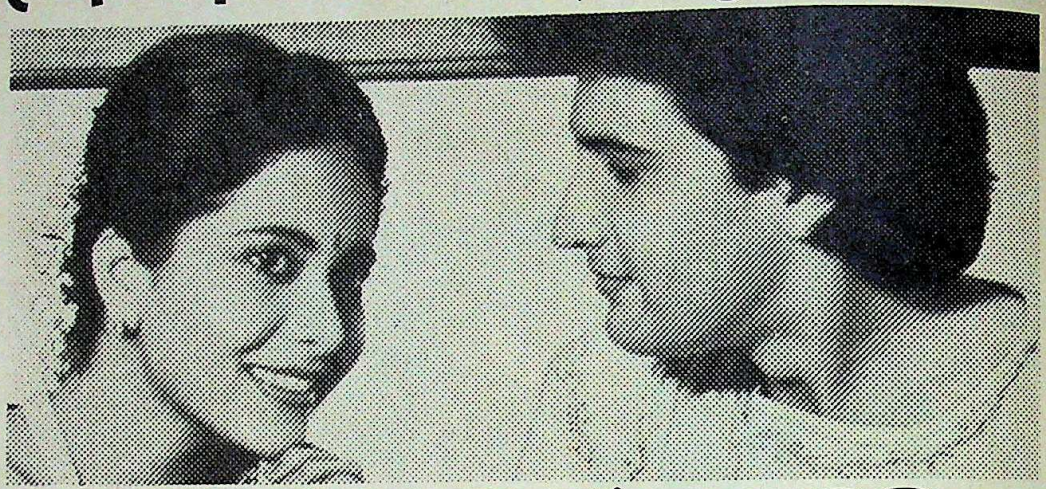

सरकारी क्षेत्र के बैंक में बचत कीजिए.

अपने पसीने की कमाई सरकारी क्षेत्र के बैंक में रखिए और उसे फलते-फूलते देखिए. आप पायेंगे फ़ायदे ही फ़ायदे :

सुरक्षा : आपकी गाढ़ी-कमाई पूरी तरह सुरक्षित और आप निश्चिन्त.

आपकी आवश्यकता के अनुरूप बचत योजनाएं : पुनर्निवेश (री-इन्वेस्टमेंट), सावधि जमा, पेंशन व्यवस्था, आवर्ती जमा योजना जैसी अनेक प्रकार की बचत योजनाएं हैं... बस चुनाव आप कीजिए.

नामांकन सुविधा : नामांकन की सुविधा भी बैंक देते हैं ताकि आपकी बचत की राशि आपके चहेतों को ही मिले.

समुचित लाभ : समय पर लाभ पाने के लिए आप सुनिश्चित रहें. और लम्बी अवधि की जमा योजनाओं में तो आप 19.6% तक का लाभ पा सकते हैं.

कर संबंधी लाभ : ब्याज से प्राप्त आय पर प्रति वर्ष रु. 7,000 /- तक की राशि पर आयकर में छूट.

ऋण सुविधा : आप अपनी जमा राशि पर 75% तक का ऋण ले सकते हैं. इस प्रकार आप कभी भी पैसों के मोहताज नहीं रहेंगे.

राशि निकालना आसान : आपकी जमा राशि के परिपक्व होने से पूर्व ही यदि आपको उसकी ज़रूरत पड़े तो आप उसे तुरंत और आसानी से वापस ले सकते हैं.

59,000 से भी अधिक शाखाएं : बचत के लिए आपको इधर-उधर भटकने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि 59,000 से भी अधिक शाखाओं में से कोई न कोई तो अवश्य आपके घर अथवा कार्यस्थल के नज़दीक होगी.

संयुक्त प्रचार समिति
सरकारी क्षेत्र के बैंक

28 सदस्य बैंक :

इलाहाबाद बैंक • आंध्र बैंक • बैंक ऑफ़ बड़ौदा • बैंक ऑफ़ इंडिया • बैंक ऑफ़ महाराष्ट्र • केनरा बैंक • सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया • कॉर्पोरेशन बैंक • देना बैंक • इंडियन बैंक • इंडियन ओवरसीज़ बैंक • न्यू बैंक ऑफ़ इंडिया • ओरिएंटल बैंक ऑफ़ कॉमर्स • पंजाब नेशनल बैंक • पंजाब एंड सिंध बैंक • भारतीय स्टेट बैंक • स्टेट बैंक ऑफ़ बीकानेर एंड जयपुर • स्टेट बैंक ऑफ़ हैदराबाद • स्टेट बैंक ऑफ़ इन्दौर • स्टेट बैंक ऑफ़ मैसूर • स्टेट बैंक ऑफ़ पटियाला • स्टेट बैंक ऑफ़ सौराष्ट्र • स्टेट बैंक ऑफ़ त्रावणकोर • सिंडिकेट बैंक • युको बैंक • यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया • यूनाइटेड बैंक ऑफ़ इंडिया • विजया बैंक.

Chaitra-BJPC-18 Ri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पापीपा विरोधी वोटों का बंटवारा नहीं हो पाया. और मतदाताओं के मन से यह शक दूर करने के लिए कि इजइ गठबंधन स्थायी सरकार नहीं दे पाएगा, राष्ट्रपति ने मतदान के ठीक एक दिन पहले एक अध्यादेश जारी कर दिया जिसके तहत दलबदल, पार्टी ह्विप की अवहेलना आदि पर रोक लगा दी गई.

आशंकाओं के बीच इजइ अपनी नई सरकार बनाने जा रहा है. फिलहाल मियां नवाज शरीफ प्रधानमंत्री पद की होड़ में बाकी प्रतिद्वंद्वियों—जतोई और जुनेजो—से आगे दिखते हैं. नवाज के राजनैतिक सलाहकार नवीद मलिक इन विचारों का खंडन करते हैं कि कोई पंजाबी प्रधानमंत्री लाया गया तो सिंध में असंतोष बढ़ेगा, इसलिए सेना जतोई या सिंध के ही किसी उम्मीदवार का समर्थन कर सकती है. मलिक कहते हैं, "बहुत हो चुका. सिंध के चार-चार प्राइम मिनिस्टर रह चुके हैं."

नवाज को सबसे सक्षम उम्मीदवार माना जा रहा है जो समर्थन जुटाने के लिए काफी पैसे खर्च कर सकते हैं. लेकिन इस बारे में आशंकाएं व्यक्त की जा रही हैं कि नई सरकार सेना और राष्ट्रपति के प्रभावों से कितनी मुक्त रह पाएगी, खासकर जमात जैसी पार्टी के कारण जो सेना-नौकरशाही-मुल्लाओं के गठजोड़ को ताकत देती है. जानकारों को विदेश नीति के मामले में तनाव की आशंका लग रही है. मसलन, कश्मीर के मामले में जमात तुरंत कार्रवाई की मांग कर सकती है. लेकिन इजइ की मुख्य चिंता अमेरिका द्वारा दी जाने वाली सहायता पर पिछले महीने लगी रोक को लेकर होगी.

इसलिए सत्ता में आते ही इजइ अपने अमेरिका विरोधी तेवर को छोड़कर उसे मदद के लिए मनाने की कोशिश करेगी क्योंकि इसके बिना तो पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था कुछ ही महीनों में चरमरा जाएगी. यह भी संकेत है कि मदद के बदले में बेनज़ीर और उनके लोगों को मुकदमे में बख्श दिया जाएगा. हालांकि शासक गठजोड़ में कट्टरपंथी इसका विरोध करेंगे. इस्लामाबाद के राजनयिक हलकों में कई लोगों का मानना है कि अमेरिका इस सौदे को स्वीकार कर लेगा क्योंकि जब तक खाड़ी संकट में उसकी गरदन फंसी है, तब तक पाकिस्तान में अस्थिरता उसके हक में नहीं है.

पापीपा ने भी स्पष्ट कर दिया है कि वह चुप बैठने वाली नहीं है. खुर्शीद कसूरी ने यह कहकर इस तरफ इशारा भी किया है कि "चुनावों से ऊब चुके लोग हिंसक, मार्क्सवादी रास्ता भी अपना सकते हैं."

इसका मतलब है कि बवाल होगा और पापीपा फिर खासकर सिंध की सड़कों पर उतर आएगी. मुमताज अली भुट्टो समेत सिंधी राष्ट्रवादी नेता पहले ही सरकार के खिलाफ भारी जेहाद छेड़ देने की बातें कर रहे हैं. पिछले पखवाड़े मुमताज ने नेशनल असेंबली के चुनावों का बहिष्कार कर दिया, खुद को और सिंध नेशनल फ्रंट को प्रांतीय परिषद के चुनावों से अलग करके धुर क्षेत्रीयतावादी रवैया अपना लिया है.

पर असल दिक्कत तो शरीयत बिल को लेकर आएगी. जमात इसे पास कराना चाहती है जबकि गठजोड़ के कई घटक और मुल्क के शिया, जो कुल आबादी के

बेनज़ीर भुट्टो

'वे धांधली से जीते'

चुनाव नतीजों की घोषणा के दो दिनों बाद बेनज़ीर भुट्टो ने अपने हतोत्साहित पार्टीजनों की हौसलाअफजाई के लिए लरकाना, कराची और लाहौर का दौरा किया. अपनी हार और भावी योजनाओं के बारे में उन्होंने लाहौर में संवाददाताओं से बातचीत भी की.

चुनाव की विश्वसनीयता पर: वे जानते थे कि बैलट बॉक्सों पर कब्जे के बिना वे हमें शिकस्त नहीं दे सकते थे. इजइ खुशी क्यों नहीं मना रही ? इसलिए कि वह खुद अपनी जीत से हैरान है.

प्रतिकार की योजनाओं पर: पाकिस्तानी अवाम के लिए मेरा दिल रो रहा है. वे जम्हूरियत चाहती थे लेकिन मिली यह नौटंकी. बहरहाल, हुकूमत के दलालों ने जिन गंदी साजिशों के जरिए जीत हासिल की, उनका हम पर्दाफाश कर रहे हैं. हम कर्बला के लिए लड़ने वाले जांबाजों की तरह लड़ेंगे.

धांधली किसने की: हमने सुना है कि इलेक्शन में धांधली के लिए प्रेसीडेंट हाउस में एक सेल बना था. यह अवाम की नहीं, इस्हाक की असेंबली है. उन्होंने खान वली खां जैसे अपने आदमियों की हार से लेकर हर चीज पहले ही तय कर ली थी.

धांधली के तरीकों पर: पूरी मशीनरी का गलत इस्तेमाल किया गया. बैलट बॉक्सों को बूथों से रिटर्निंग अफसरों के पास ले जाने के बदले डिप्टी कमिश्नरों और सबडिवीजनल मजिस्ट्रेटों के दफ्तरों में ले जाया गया और वहां पहले से ही भरे बॉक्सों से बदल दिया गया. आसिफ के इलाके में तो खुद मुर्तजा जतोई ने जाली बैलट पेपरों पर मुहर लगाई.

अपनी हार से इनकार क्यों: असली जीत तो हमारी हुई है. धमकियों के बावजूद लाखों लोग वोट देने आए. लेकिन अफ़सोस यह है कि पाकिस्तानी अवाम को अपनी ही तकदीर के फैसले के हक से महरूम किया गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

25 फीसदी हैं, इस बिल से भड़क सकते हैं. नवाज चाहते हैं कि बिल कुछ संशोधनों के साथ पास हो जाए. पर इसका जो भी स्वरूप बने, बवाल तो मचेगा ही.

इस चुनाव में जिस तरह भारत विरोधी कट्टर नारेबाजी हुई उसके संकेत अशुभ माने जा रहे हैं. भारतीय विदेश नीति के नियंताओं का मानना है कि पापीपा पर लगे भ्रष्टाचार के आरोपों के खिलाफ हालांकि लोगों में काफी गुस्सा था पर इजइ की जीत में सबसे ज्यादा योगदान भारत विरोधी लफ्फाजी का था. मतदाता इन आरोपों को जरूर सच मान रहे थे कि बेनज़ीर ने कश्मीर के मसले पर भारत पर पर्याप्त दबाव नहीं डाला और यह कि चुनाव से पहले अमेरिका द्वारा पाकिस्तान को दी जानी वाली मदद अचानक ही रोक देने के लिए बेनज़ीर और उनकी मां नुसरत भुट्टो ही जिम्मेदार हैं. इजइ ने काफी तेजी से पैंतरा बदला और पाक को इमदाद बंद करने के मुद्दे पर पाकिस्तान में मौजूद अमेरिका विरोधी भावनाओं को भुनाया. कश्मीर के मुद्दे पर तो इजइ ने भारत पर बेइंतिहा इल्जाम लगाए.

फौज और नौकरशाही अब सरताज बन गई है

पर चुनावी लफ्फाजी की दिक्कत यह है कि एक बार जब यह राजनैतिक जीत में बदल जाती है तो विजेता को अपना बंधक बना लेती है. अगर इजइ के समझदार लोग खुद को इस चुनावी लफ्फाजी से अलग करना भी चाहें तो भी इस गठबंधन में शामिल जमात-ए-इस्लामी उन्हें ऐसा नहीं करने देगी.

निजी तौर पर इजइ के कई महत्वपूर्ण नेता यही कहते हैं कि वे भारत के साथ शांति चाहते हैं. इजइ के एक नेता ने कहा, "अपनी सरकार से कहिए कि पाकिस्तान में अपने कुछ दमदार दोस्त बनाए, बेनज़ीर की तरह के हवाई दोस्त नहीं." भारत का मानना है कि पापीपा के हो-हल्ले के बावजूद पाकिस्तान की यह सरकार स्थिर होगी और तकरीबन वही नीति अपनाएगी जो ज़िया की थी. पर भारत ने अभी कोई शुरुआत नहीं की है. शायद वह अभी इंतजार करना और नई सरकार को परखना चाहता है. इसी के बाद कोई नीतिगत फैसला होगा.

पापीपा समर्थकों की आशंकाओं के बावजूद दो साल के भीतर ही दूसरी बार चुनाव हो जाने से पाकिस्तान में वोट की ताकत तो साबित हुई ही है. इसी के साथ लगातार आजाद हो रहे प्रेस के कारण पाकिस्तान ने उस दूरस्थ मंजिल की ओर एक कदम तो बढ़ाया ही है, जिस पर पहुंचने के लिए एक दशक पहले बेनज़ीर ने लोकतंत्र बहाली आंदोलन शुरू किया था.

कुछ आदतों से दांतों पर दाग़-धब्बे पड़ जाते हैं

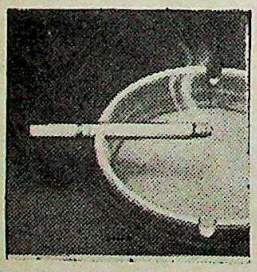

ये आदत उन्हें साफ़ कर देती है!

मुक्ता चमक
आयुर्वेदिक विधि से तैयार किया गया एक अनोखा फार्मूला है जो बुरे से बुरे धब्बेदार और बदरंग दांतों को भी साफ़ कर देता है। बस, दिन में एक बार थोड़ा-सा मुक्ता चमक गीले टूथ ब्रश या उंगली से अपने दांतों और मसूड़ों पर फैलाइए। कुछ देर रूकिये और मुंह धो लीजिये। आप देखेंगे कि पान खाने, सिगरेट पीने, या पान-मसाला खाने से दांतों पर पड़े दाग़ धब्बे धीरे-धीरे ग़ायब हो जायेंगे। और नज़र आयेंगे चमचमाते बेदाग़ दांत!

"हर दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध"
म.प्र., महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान और दिल्ली में
यदि आपके नगर में 'मुक्ता चमक' न मिले तो कृपया इस पते पर आप ४०/-रु. की मनीऑर्डर तीन पीस के लिए भेजें।
पनराम आयुर्मेड प्रा.लि., ३०३, लकी मेन्शन, ७१, जनपथ मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

For the potential to weigh as much as 60 tons to the possibility of weighing 0.01 mg. organisations like B.A.R.C. Bajaj, Cadburys, Cipla, Colgate, Dr. Beck, Glaxo, Godrej, L&T, Parle, Reserve Bank, Tata, Tribhuvandas Bhimji Zaveri... depend on

ATCO®

THE TRUTH BY WEIGHT

▲ 6,000 COUNTS ELECTRONIC WEIGHING SCALES (PLATFORM TYPE)

ATCO INDUSTRIES LIMITED

ENGINEERING □ ELECTRONIC WEIGHING □ INSTRUMENTATION

HEAD OFFICE: 6A, Lalwani Industrial Estate,14, G.D. Ambekar Marg, Wadala, Bombay - 400 031. ✆ 4121295 □ 4121298 □ 4121982 □ 4122258
Telex: 011 - 73944 ACTO IN □ FAX: 022 4140250

BRANCHES: B-5/158 Safdarjung Enclave, 1st Floor, New Delhi-110 029 ✆ 608749 ■ 41, T. Nagar, Ramanathapuram Post, Coimbatore-641 045
Door No. 45, 1 Main Road C.I.T. Nagar, Nandanam, Madras - 600 035. ✆ 455912 □ 451988

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

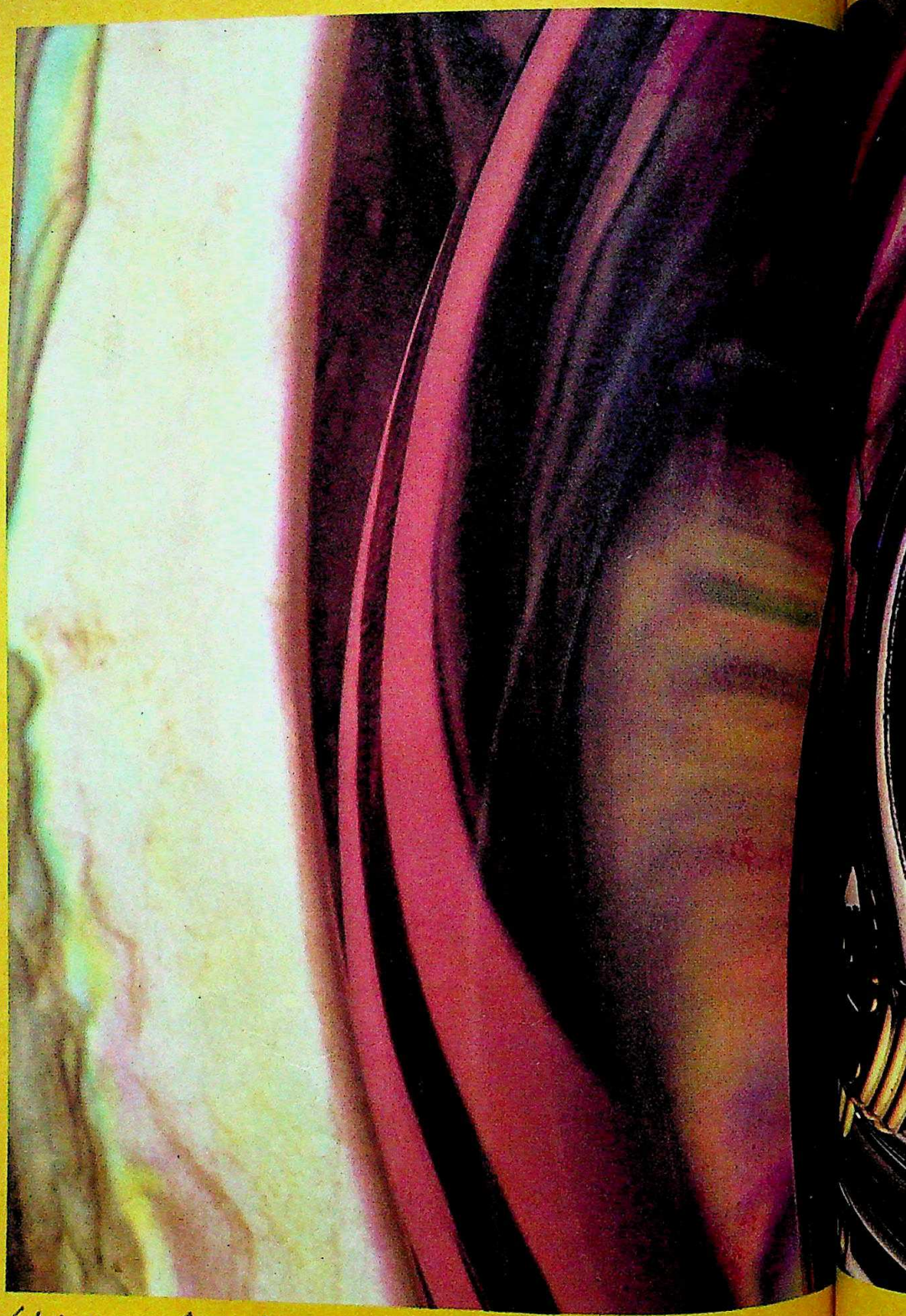

'Wrist Art'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

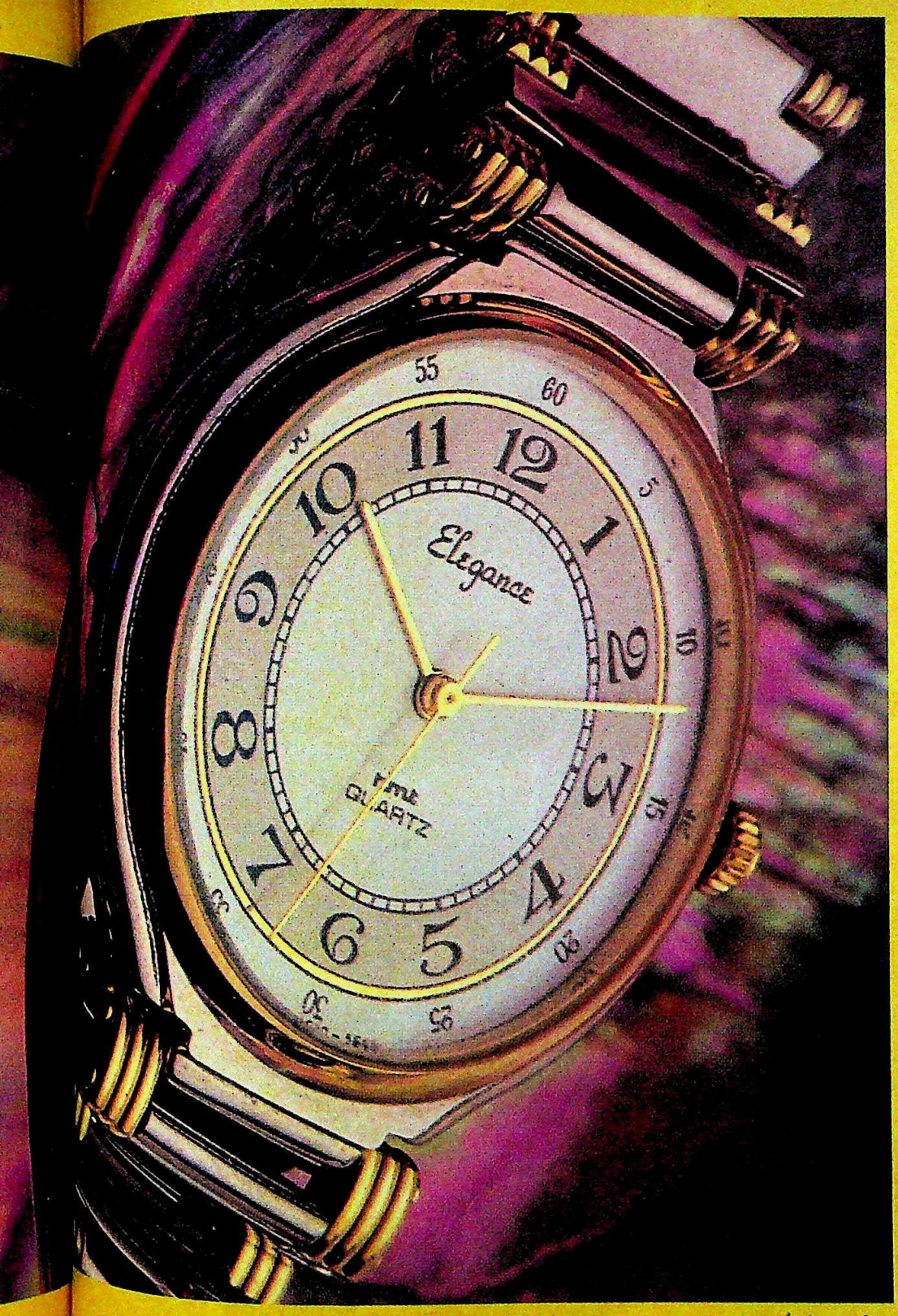

HMT Quartz collection '91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Rediffusion/HQ/90/436/HN

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्चे लोग सच्चा आनन्द

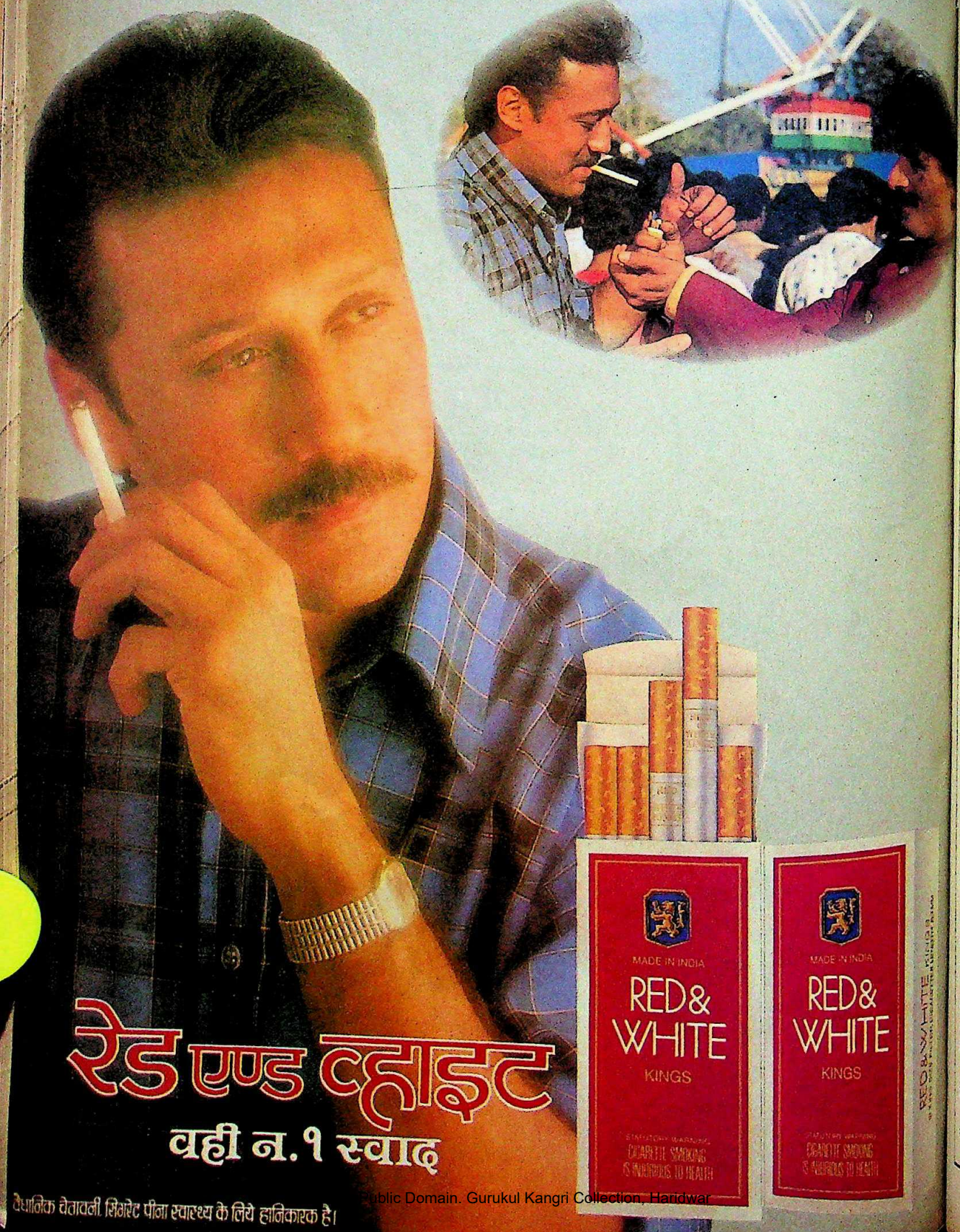

रेड एण्ड व्हाइट

वही न.१ स्वाद

वैधानिक चेतावनी: सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है।

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चिम बंगाल

ज्योति तले अंधेरा

● प्रख्यात मार्क्सवादी नेता ज्योति बसु भले ही एक दशक से भी अधिक समय से पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री पद पर आसीन चले आ रहे हैं मगर इन दिनों समूचे राज्य में बिजली की आंखमिचौनी के चलते वे तरह-तरह के चुटकुलों का निशाना भी बने हुए हैं.

शुरू-शुरू में तो कलकत्तावासी बिजली गुल होते ही दबी जबान में कह उठते थे कि 'ज्योति चली गई.' लेकिन इस समय प्रचलित चुटकुले में कटाक्ष का पुट कुछ ज्यादा ही तेज है.

मजाक कुछ इस तरह है कि 'जशू' (ईसा मसीह) ने तो मानव जाति को अंधेरे से प्रकाश की ओर चलना सिखाया था पर 'बसु'

भवान सिंह

बसुः बिजली का संकट

ससार को वापस अंधकार की ओर ले जा रहे हैं.

यह तो थोड़ा नरम किस्म का चुटकुला है. इससे चुटीला भी चुटकुला चल रहा है. इसका सार यह है कि मुख्यमंत्री अपने पोते-नातियों को शहर घुमाने निकले. सैर-सपाटे के दौरान बच्चों ने पूछा कि आलीशान विक्टोरिया मेमोरियल क्या उनकी सरकार ने बनाया. परेशान लहजे में बसु ने जवाब दिया कि इसे साम्राज्यवादियों ने बनवाया था. इसी तरह का जवाब उन्होंने राज्य सचिवालय 'राइटर्स बिल्डिंग' के बारे में भी दिया.

लेकिन जब भी बच्चों का सामना बिजली गुल होने से होता तो वे कोई भी सवाल पूछे बिना एक स्वर में चिल्ला उठते, "ठाकुरदा, यह काम तो निश्चय ही आपकी सरकार का है."

जाहिर है पश्चिम बंगाल के लोग अब अंधेरे से ऊबने लगे हैं.

मध्य प्रदेश

राम नाम की लूट

● पिछले साल जो आम चुनाव हुए थे उनमें भारतीय जनता पार्टी ने भगवान राम के नाम पर अच्छी-खासी सीटें जीत ली. जाहिर है इसके नेताओं का हौसला काफी बुलंद है. अपना उत्साह जताने में लगता है मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री सुंदरलाल पटवा दो कदम और आगे निकल गए हैं. इस साल उन्होंने भगवान राम के चित्र वाले दिवाली के 3,000 बधाई कार्ड अनेक इष्टजनों को भेजे.

पटवा; और (ऊपर) दिवाली कार्ड

इन कार्डों पर 'मंगलमय दीपावली' की कामना का संदेश ही दर्ज नही था बल्कि इनका रंग-ढंग तो खास तौर पर उग्र और पुरातनपंथी था. मसलन, एक कार्ड पर भगवान राम के हाथों में त्रिशूल और पार्श्व में एक मंदिर बना दिखाया गया है. एक और कार्ड पर तो वे युद्ध की मुद्रा में धनुष-बाण ताने हुए हैं.

यही नहीं, उग्र लफ्फाजी के माहौल को देखते हुए मुख्यमंत्री ने न सिर्फ यूनीसेफ के कार्डों के बजाए राम कार्ड का प्रयोग किया बल्कि आम सभाओं में भी अभिवादन का अपना तरीका बदल लिया है. 'जय हिंद' की जगह अब वे 'जय श्रीराम' बोलने लगे हैं. लगता है, राम राज्य अब बहुत दूर नहीं.

तमिलनाडु

नाम न मिटने पाए

श्याम टेकवानी

● तमिलनाडु के मुख्यमंत्री करुणानिधि ने कलाबाजी दिखाने में शायद महारत हासिल कर ली है. पिछले साल सत्ता में आने के बाद मुख्यमंत्री ने बहादुराना अंदाज में कहा था कि वे लोकप्रियता हासिल करने के लिए सस्ते हथकंडे नहीं अपनाएंगे. पर कथनी और करनी में बहुत अंतर होता है. पिछले पखवाड़े अपनी महत्वाकांक्षा साधने के लिए उन्होंने तमिलनाडु लघु उद्योग विकास निगम (सिपकॉट) का नाम बदलकर सिपकॉट इंडस्ट्रियल कांपलेक्स-करुणानिधि नगर-रानी-पेट करवा दिया.

करुणानिधिः अनोखी चाह

सोलह वर्ष पूर्व भी उन्होंने सिपकॉट कांपलेक्स का नाम बदलकर करुणानिधि नगर करवा दिया था. लेकिन अखबारों में इस मसले को तूल दिए जाने के बाद उन्होंने अपना नाम हटवा लिया था. वे पहले खुद भी एमजीआर की इसके लिए आलोचना कर चुके हैं कि उनके (एमजीआर के) शासनकाल के दौरान उनको (करुणानिधि को) नीचा दिखाने के लिए कांपलेक्स के उस डाकघर का नाम बदल दिया गया, जो करुणानिधि के नाम पर था. प्रसन्न मुद्रा में वे अपनी दिली इच्छा बताते हैं कि उनकी मृत्यु के बाद समाधि-लेख पर ये शब्द अंकित हों: "यहां वह व्यक्ति चिरनिद्रा में है जिसने राज्य के लिए अनथक काम किया."

गुजरात

मुखर विद्रोह

● मंडल आयोग की सिफारिशें लागू करने के फैसले ने जहां केंद्र सरकार की स्थिति को डांवाडोल कर दिया, वहीं गुजरात में सात महीने पहले जनता दल-भाजपा के गठजोड़ से बनी सरकार का भी हाल इससे कोई भिन्न नहीं था. पिछले पखवाड़े जब राज्य के पर्यटन और पर्यावरणमंत्री प्रवीण सिंहजी जाडेजा ने इस्तीफा दे दिया तो राज्य सरकार के भीतर ही इस मुद्दे पर मतभेद उभरकर सामने आ गए. मुख्यमंत्री चिमनभाई पटेल ने मंडल रिपोर्ट के प्रति अपने विरोधी रुख को उजागर करने में कोई हिचक नहीं मानी है, जबकि जाडेजा इसके प्रबल समर्थक हैं.

जाडेजा ने इस्तीफा तब दिया

'टाइम्स ऑफ इंडिया'

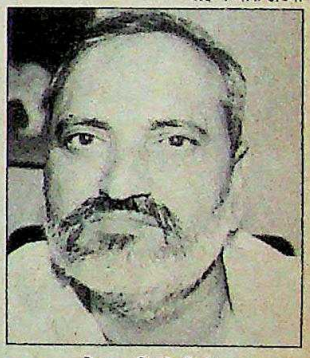

जाडेजाः विद्रोही तेवर

जब मुख्यमंत्री चिमनभाई पटेल ने उन्हें पर्यावरण विभाग के कार्यभार से मुक्त कर दिया. अब मंडल समर्थकों के लिए राज्य में मैदान साफ है. जाडेजा के नेतृत्व में वे लोग अब चिमनभाई के आरक्षण विरोधी रुख पर खुलकर बोल सकते हैं.

आरक्षण समर्थक जनता दल नेताओं के हाल ही में हुए एक सम्मेलन में जाडेजा ने चिमनभाई सरकार पर आरोप लगाया कि उसने राज्य में मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू नहीं करके "लोगों की पीठ में छुरा घोंपा है." यही नहीं, जाडेजा ने तो पार्टी के 70 में से 30 विधायकों के सहयोग से अहमदाबाद में एक विशाल मंडल समर्थक रैली आयोजित करने की योजना भी बनाई है. लेकिन पार्टी पर चिमनभाई की मजबूत पकड़ को देखते हुए लगता है कि जाडेजा के लिए यह मुखर विद्रोह इतना आसान नहीं होगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुजरात

गुंडा गिरोहों की गिरफ्त

राजकोट में चिट फंड धंधे के साथ फैलती अपराधवृत्ति

यह चिट फंड धंधे का ही घटिया स्वरूप है. इसमें लगे पैसे, इससे जुड़े लोगों और नतीजे में उपज रही हिंसा ने मूंगफली तेल के लिए मशहूर, छोटे-से शांत शहर राजकोट को गुंडा गिरोहों की पनाहगाह बना दिया है.

पैसे के इस खेल में 20 (गुजराती भाषा में विस) खिलाड़ी शामिल रहने से इसे विशी नाम से जाना जाता है. इसका कामकाज किसी किटी पार्टी की तरह ही चलता है. लोग एक समूह में जुटते हैं और हर सदस्य प्रतिमाह मान लो 20,000 रु. जमा कराता है. फिर, आयोजक इस सारी रकम को बोली पर लगाता है. जो सदस्य चार लाख रु. की इस रकम में ज्यादा से ज्यादा भुगतान करने को तैयार हो, उसे विजेता मान लिया जाता है. बाकी पैसा सारे सदस्यों में बांट दिया जाता है.

गड़बड़ी तब शुरू होती है जब कोई सदस्य विशी की बाजी जीतने के बाद अगली किस्तें देने से इनकार कर देता है. ऐसे में आयोजक वादाखिलाफी करने वाले सदस्यों के पीछे अपने गुंडे लगा देते हैं.

नतीजतन, हिंसा ने राजकोटवासियों को झिंझोड़ दिया है. उन्हें आशंका है कि 'विशी का खतरा' शहर के लिए भारी पड़ेगा. पुलिस का अनुमान है कि शहर की छह लाख आबादी में से करीब पांचवां हिस्सा इस धंधे से जुड़ा है. विशी से उपजी वित्तीय समस्याओं के चलते कम-से-कम 10 लोग आत्महत्या करने पर मजबूर हुए हैं. इस धंधे से संबंधित मामलों की जांच करने वाले दल के प्रभारी सब-इंस्पेक्टर एस. चुडास्मा कहते हैं, "राजकोट के लोगों ने इस साल विशी के धंधे में करीब 100 करोड़ रु. गंवाए होंगे."

पुलिस छापों के बावजूद विशी की बीमारी बढ़ती ही दिखती है. इसके खतरनाक सामाजिक और मनोवैज्ञानिक नतीजे निकले हैं. रातोरात लखपति बनने वाले कई खिलाड़ी इतनी ही तेजी से धराशायी भी हुए हैं. 30 वर्षीय राकेश पटेल (सही नाम नहीं) 1988 में जब विशी के धंधे में उतरा तो वह पान बेचता था. विशी के करीब एक दर्जन खेलों में वह प्रतिमाह लगभग एक करोड़ रु. लगाया करता था. एक साल के भीतर उसके पास शोफर सहित दो मारुति कारें और लाखों की संपत्ति जमा हो गई. इस साल उसने अपनी शादी में लाख रु. के पटाखे खरीदे.

लेकिन पटाखों की तरह ही उसका अपना भी दिवाला निकल गया. पुलिस के मुताबिक उसने विशी सदस्यों से 80 लाख रु. की धोखाधड़ी की. लोगों ने पैसा वापस लेने के लिए किराए पर गुंडे रखे. राकेश का दो बार अपहरण करके उसे बुरी तरह पीटा गया. अपहर्ताओं ने उसे हत्या की धमकी दी तो वह सारी संपत्ति और दो कारें उन लोगों के नाम करने को राजी हो गया जिनसे उसने धोखाधड़ी की थी. आज वह फिर सड़क पर है.

29 वर्षीय प्रदीप परमार को तो अपनी जान ही गंवानी पड़ी. पैसा चुकाने में असमर्थ होने से उसने आत्महत्या कर ली, पीछे उसके पत्नी और दो बच्चे रह गए. उसके पिता मगनभाई कहते हैं, "मैं प्रदीप को कहता था

आत्महत्या कर चुके परमार (नीचे बाएं) तथा जयंतीभाई (इनसेट); और भगतः संगीन हालत

सभी फोटो: प्रवीण गज्जर

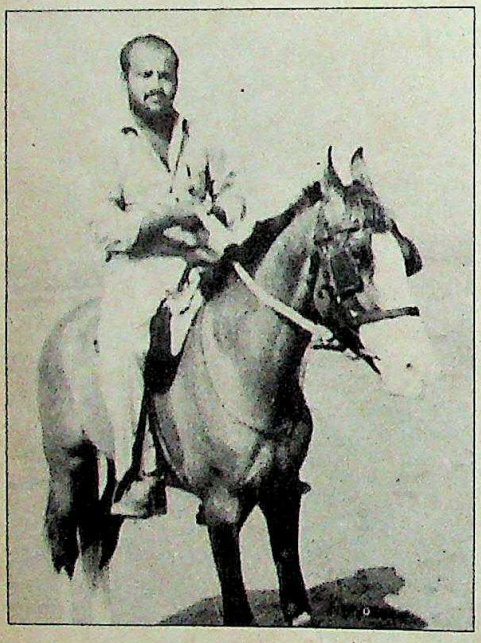

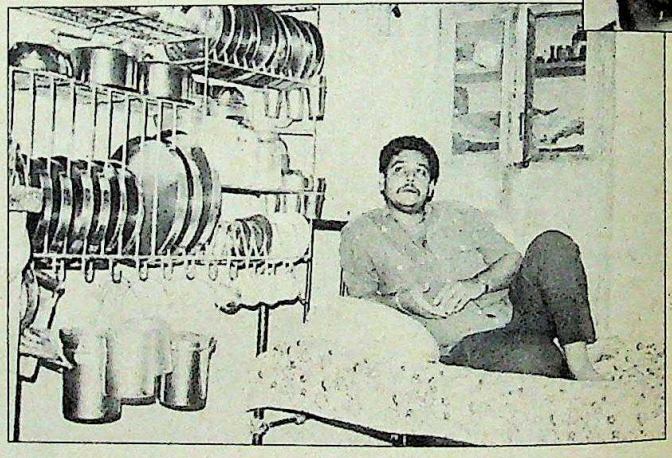

दस जानें लील चुके और अनेक लोगों को दरिद्र बना चुके विशी के धंधे ने राजकोटवासियों को बुरी तरह झकझोर दिया है

कि बेईमानी की कमाई से वह मुसीबत में फंस जाएगा. पर उसने एक न सुनी."

विशी के धंधे में ही पिटने वाले एक सुनार, अश्विन भगत को अपने पूर्वजों की सात लाख रु. की संपत्ति बेचनी पड़ी. वह कहता है, "मेरे लिए एकमात्र सांत्वना यही है कि मैं कर्जदार नहीं हूं."

राजकोट में अपराधियों का राज हो जाने, और इस संदेह के चलते कि पुलिस भी विशी के मुख्य धंधेबाजों से मिली हुई है, यह आश्चर्यजनक नहीं कि पोरबंदर के कुख्यात मेड़ समुदाय के लठैत राजकोट की ओर कूच करने लगे हैं. राजकोटवासियों के लिए यह विशी की महामारी फैलने का एक और संकेत है.

—उदय माहूरकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

What did Madam Tussaud of London say to the Skypak Man?

"Your wax statue could look splendid! But would anyone ever recognize you in a static posture?"

We'll deliver. Wherever on earth. SKYPAK The worldwide couriers.
Skypak House, Off M. Vassanji Road, Marol, Andheri (E), Bombay 400 059.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

An Expression...
DORA POCKET WALA
Dora POCKET WALA UNDERWEAR
Dora Classic
Technically, the Best. In Style, the Foremost.
Dora Grand
Dora Cute
Simi
the Simi Crazo is Catching on
Simi PANTIES
TIMELESS APPEAL,
EMBELLISHED WITH STYLE
FOR MOMENTS TO CHERISH
IN EVERY TIME!
Dora®
A CLASS APART
H.P. TEXTILE MILLS
CALCUTTA • NEW DELHI • AHMEDABAD • KANPUR • BOMBAY
Ankur/HP

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालों का झड़ना रोकने और रूसी को खत्म करने के लिए और कुछ इस्तेमाल न कर केवल केयो-कार्पिन हेयर वाइटालाइज़र इस्तेमाल कीजिए।

इस्तेमाल करके देखा है, सचमुच उपकारी है।"

केयो-कार्पिन हेयर वाइटालाइज़र रोज सुबह स्नान से एक घंटा आगे और रात में सोने से पहले पूरे माथे पर अंगुली से अच्छी तरह लगाइये। बाल सुन्दर और स्वस्थ रहेंगे।

केयो-कार्पिन हेयर वाइटालाइज़र में है— ● केराटिन : बालों का मूल उपादान (१) ● बायोटिन : बालों का झड़ना रोकता है (२) ● पेन्थेनॉल : बालों के नष्ट टिसू में प्राण संचार करता है (३) ● निकोटिनिक एसिड : औषधि को सोखने में मदद करता है (४) ● रेसॉर्सिनॉल : रूसी को खत्म करता है (५) ● हाइयेलकिल : रूसी के संक्रमण को रोकता है (५)

रेफरेन्स : (१) विन्डहॉल्ज़ : एम. मेर्क इन्डेक्स १० वां संस्करण पृ. ७६०, १९८३, (२) सेंटेल, ई ड्रग्स एण्ड कॉस्मेटिक इण्डस्ट्री १२१,३४,१९७७, (३) ड्रिस्कॉल, डब्लू. आर. ड्रग्स एण्ड कॉस्मेटिक इण्डस्ट्री ११६,४२,१९७५, (४) क्रांज़, जे. सी. एवं अन्यान्य, फार्म प्रिन्सिपल्स ऑफ मेडिकल प्रैक्टिस पृ० ९५६, १९६५, (५) वेड. ए मार्टिनडेल एक्सट फर्माको पृ. ५०२,३२,१९८२

बालों का झड़ना रोकने और रूसी को खत्म करने के लिए एक प्रमाणित वैज्ञानिक तरीका।

* कृत्रिम सामग्री नहीं है।

TSA-C/DMHV/390/HN

Dey's®

दे'ज मेडिकल
की संभाल, आपका भरोसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

BINATONE CD 2000 SERIES.

COMPACT disc COMPATIBLE

Sound you'll love coming home to

Tune into Binatone's latest hi-fi stereo system.
For sound reproduction that took Europe and Japan by storm.
See and hear the latest CD 2000 series hi-fi systems at your nearest Binatone dealer. Today !

MODEL	PMPO	PRICE*
CD 2003	180 Watts	Rs. 6160/-
CD 2004	150 Watts	Rs. 5450/-
CD 2005	350 Watts	Rs. 7725/-
CD 2005 Tower System	350 Watts	Rs. 9100/-

* Local taxes and levies extra as applicable.

Model shown above is CD 2003.

Binatone

SIMPLY YEARS AHEAD

ENGLAND • GERMANY • HONG KONG • JAPAN • KOREA • TAIWAN • NOW IN INDIA.

Arms Bored/BEL/72/90R

For more information contact your nearest Binatone Dealer or write to Marketing Manager, Binatone Electronics Limited, B-58, Site-IV, Sahibabad Industrial Area, Sahibabad-201 010 (U.P.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्यात करेगी विदेशी कंपनी

पिछले पखवाड़े राज्य व्यापार निगम (एसटीसी) के मुख्यालय में एक असामान्य बैठक हुई. पेप्सी इंकार्पोरेटेड के न्यूयॉर्क दफ्तर के एक उच्चस्तरीय दल ने एसटीसी प्रतिनिधियों से भेंटकर भारत के निर्यात प्रयासों में पेप्सी के योगदान पर विचार-विमर्श किया. उम्मीद है कि पेप्सी की भारतीय कंपनी अगले एक दशक में भारत से लगभग 195 करोड़ रु. मूल्य का निर्यात करेगी. निर्यात में 80 फीसदी पेप्सी इंडिया के उत्पाद होंगे और बाकी 20 फीसदी दूसरे उत्पादकों से खरीदी हुई चुनींदा चीजें होंगी. लेकिन दूसरे उत्पादकों का माल तभी खरीदा जाएगा जब कुछ नीतिगत नियमों को पूरा किया जाएगा.

फिलहाल, पेप्सी विभिन्न देशों से सालाना कोई 5 अरब डॉलर (8,500 करोड़ रु.) का फर्नीचर, पैकेजिंग सामान, कांच के बोतल और लिनेन खरीदता है लेकिन भारत से नहीं के बराबर. इनमें से कुछ चीजें भविष्य में भारत से खरीदी जा सकती हैं. एसटीसी पंजाब के ज्यादातर घरों में बनने वाले फुटबाल जैसे खेलों का सामान खरीदने के लिए पेप्सी को शायद राजी कर रहा है. लेकिन दोनों पक्ष अभी चुप्पी साधे हुए हैं.

निगम की चांदी

सरकार के इस फैसले के बाद कि तस्करों से जब्त सोना, जेवरात के निर्यातकों को बेचा जाएगा, खुशखबरी मिली है कि सीमा शुल्क के गोदामों में पड़ी जब्त चांदी भी अब बेची जाएगी. इस वर्ष अब तक 100 करोड़ रु. मूल्य की 150 टन चांदी पकड़ी जा चुकी है (1988 में यह आंकड़ा 17 टन और 1989 में 100 टन था). लगभग 200 करोड़ रु. की चांदी और चांदी के जेवरात के निर्यात के लिए खनिज एवं धातु व्यापार निगम की एक योजना को मंजूरी मिल गई है.

सर्वेक्षण में चुनौती

भारत में खुदरा अंकेक्षण सर्वेक्षण की बडोदरा स्थित जानी-मानी कंपनी ऑपरेशंस रिसर्च ग्रुप को अब उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक सर्वेक्षण क्षेत्र में मद्रास के हम्सा रिसर्च ग्रुप की कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ेगा. आर.के. स्वामी की अध्यक्षता वाली विज्ञापन एजेंसी के दो निदेशकों द्वारा शुरू की गई हम्सा ने पिछले अक्तूबर में टेलीविजन सेटों, वीसीपी और वीसीआर, टू-इन-वन और म्यूजिक सिस्टम के बाजार का आकार-प्रकार पता लगाने के लिए एक सर्वेक्षण शुरू किया है. तीन महीने तक चलने वाले इस सर्वेक्षण का नतीजा जानने के लिए फिलिप्स, वीडिओकॉन, ओनिडा और नेल्को पहले ही उसकी ग्राहक बन चुकी हैं. हर ग्राहक को 15,000 रु. देने होंगे.

नई योजनाएं

फिलहाल, जीवन बीमा निगम की जनरक्षा पॉलिसी के धारक को पॉलिसी करार की अवधि के दौरान किश्तों के भुगतान में तीन बार अनियमितता की छूट है. तो, जिस व्यक्ति की आय अनियमित है वह क्या करेगा? क्या किश्त की रकम को लचीला बनाया जाएगा और बीमे की रकम उसी के अनुसार घटे-बढ़ेगी ? जीवन बीमा निगम की निकट भविष्य में नई योजनाओं से यह संभव है. निगम की प्रस्तावित योजनाओं में तनी-भली की पेंशनों को एक मद में रखना ताकि किसी एक की मृत्यु हो जाने पर दूसरे को पूरी रकम मिल सके, विकलांग बच्चों के माता-पिता के लिए पेंशन योजना, और सरकार को राजी कर कानून में संशोधन के लिए राजी कर बीमा रिस्क कवर और पेंशन सुविधा को मिला देना शामिल हैं.

मुद्रा कोष की तर्ज पर

अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष कर्ज चाहने वाले देशों पर जो मानक शर्तें लगाता है, उनमें एक यह है कि वह देश अपनी मुद्रा का अवमूल्यन करे. वित्तीय मामलों के कुछ जानकार

चार्ट: बी.के. शर्मा

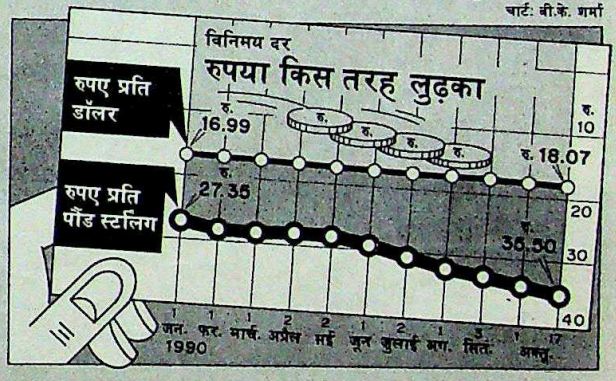

निर्यात बढ़ाने के लिए भारतीय मुद्रा के एकदम 5 से 7 फीसदी अवमूल्यन के हिमायती हैं जबकि भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर आर.एल. मल्होत्रा ऐसे कड़े कदम से साफ इनकार करते हैं. यह बात गौरतलब है कि देश का यह प्रमुख बैंक अवमूल्यन की प्रक्रिया को धीरे-धीरे लाना चाहता है.

अप्रैल 1980 से मार्च 1989 के बीच रुपए का मूल्य जापानी येन के मुकाबले 66.9 फीसदी, जर्मन मार्क के मुकाबले 47.6, अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 44.7 फीसदी और ब्रिटिश पौंड के मुकाबले 27.1 फीसदी गिर गया. काबिलेगौर है कि करीब पांच साल से रिजर्व बैंक वस्तुतः रोजाना रुपए की नई दर की घोषणा करता आ रहा है. यह क्रम अभी भी जारी है. चालू वर्ष में 17 अक्तूबर तक डॉलर के मुकाबले रुपए का मूल्य 6.36 फीसदी गिर चुका है जबकि पौंड के मुकाबले इसकी गिरावट 29.8 फीसदी रही (देखें चार्ट). कुछ जानकारों का मानना है कि साल के अंत तक डॉलर 20 रु. के बराबर हो जाएगा. मतलब यह कि अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की शर्त पर हम खरे उतर सकते हैं.

भूल सुधारः जांच-पड़ताल के बाद हमने पाया कि इस स्तंभ में (31 अक्तूबर को) प्रकाशित यह खबर सही नहीं है कि बिनाटोन भारतीय बाजार में प्रतियोगिता में पिछड़ गई है और वेस्टन इलेक्ट्रॉनिक्स बिनाटोन की भारतीय शाखा को खरीदने की बातचीत चला रही है. गलती के लिए खेद है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

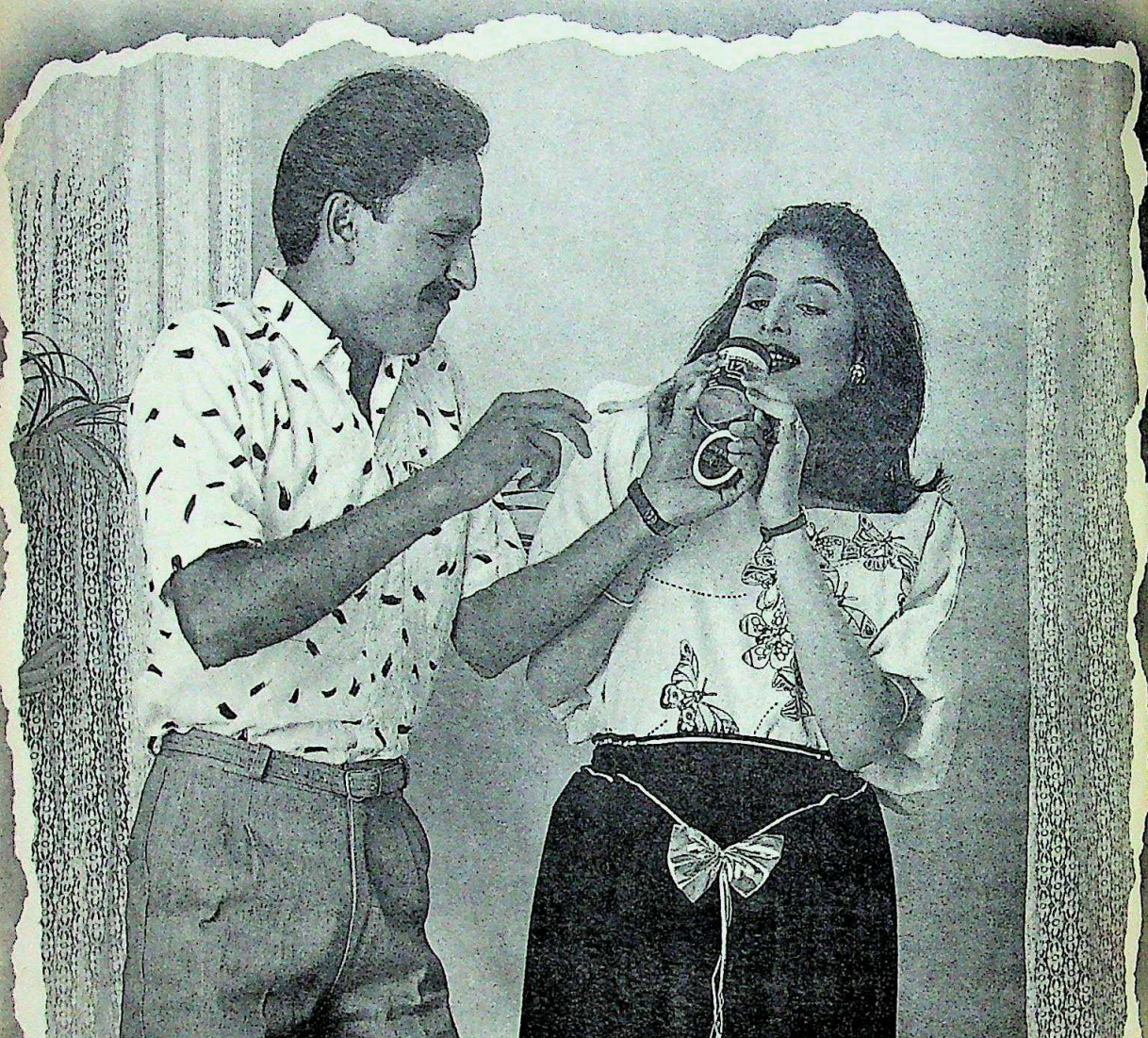

भीनी भीनी लुभावनी
सुगन्ध व ताज़गी का
अनूठा संगम - वाह!
क्या स्वाद-क्या ताज़गी?
रश्मि ज़र्दा में।
दोनों बेजोड़-लाजवाब!

रश्मि
ज़र्दा

सत्यपाल शिवकुमार 355, नया बाँस, दिल्ली -110 006

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वैधानिक चेतावनी: तम्बाकू चबाना स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केबल टेलीविजन

घर-घर तक पहुंचा

देश के नगरों और गांवों तक दूरदर्शन के नीरस कार्यक्रम से ऊबे लोगों के बीच केबल टीवी और डिश ऐंटिना फैलता जा रहा

सभी फोटोः नामत भोजानी

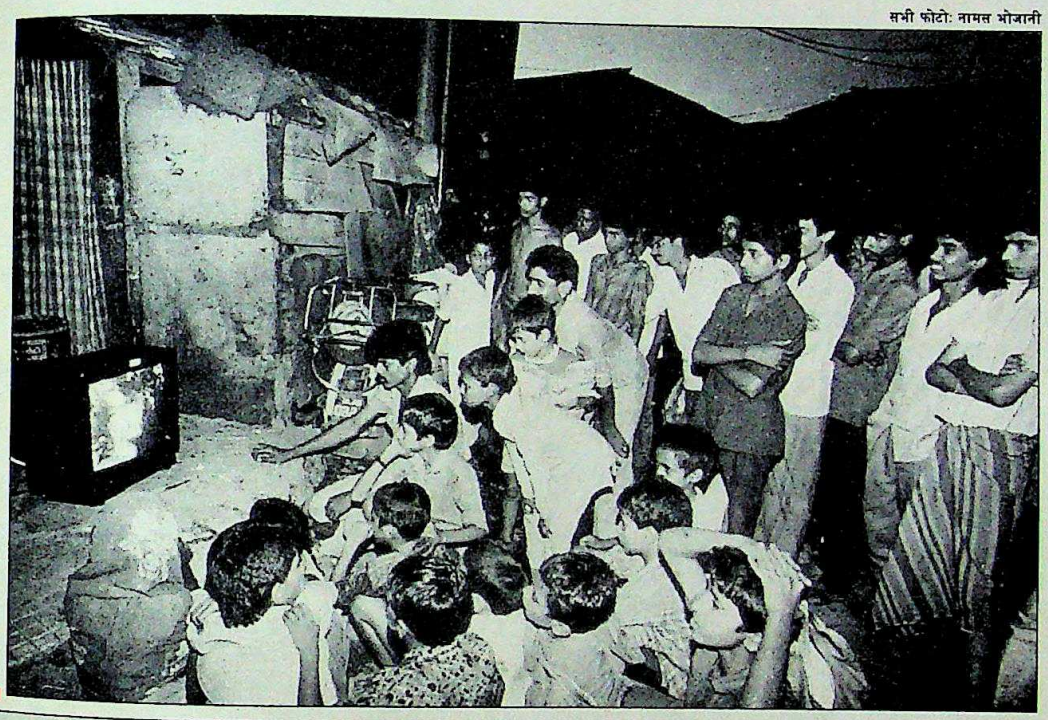

महानगर मुंबई की झोंपड़पट्टी में केबल टीवी प्रसारणः आम लोगों तक पैठ

—परंजय गुहा ठाकुरता

▶ मुंबई का केबल टीवी ऑपरेटर सिद्धार्थ श्रीवास्तव कुवैत में सद्दाम हुसैन के टैंकों के घुसने के दो घंटे बाद ही जान गया था कि इराक ने कुवैत पर हमला कर दिया है. तब तक देश में किसी को इस घटना की भनक भी नहीं थी. उसका टीवी सेट उस डिश ऐंटिना से जुड़ा है जो चौबीसों घंटे प्रसारित होने वाले अमेरिकन केबल न्यूज़ नेटवर्क के कार्यक्रम पकड़ लेता है.

▶ एक औद्योगिक दुर्घटना में मुंबई की धारावी झोंपड़पट्टी के निवासी सिराजुद्दीन इस्माइल शेख का दायां हाथ कट गया जिसके मुआवजे के रूप में उन्हें 36,000 रुपए मिले. पिछले सितंबर में उन्होंने इस पैसे से एक वीसीआर, रंगीन टीवी, एंप्लिफायर और को-एक्सियल केबल के तार और मोड्यूलेटर खरीदे. इसी की सहायता से वे हर दिन अपने इलाके के 50 से अधिक टीवी सेटों पर दो फिल्में दिखाते हैं. ये टीवी छोटे व्यापारियों, कबाड़ियों और मजदूरों के घर लगे हैं. इनमें से हरेक टीवी वाले को शुरू में 200 रुपए और फिर हर महीने 60 रुपए शेख को देने होते हैं.

▶ प्रवेश सेठी उत्तरी दिल्ली के कमला नगर में बच्चों और महिलाओं के रेडीमेड कपड़े बेचते हैं. वे एक केबल टीवी नेटवर्क भी चलाते हैं जिस पर फिल्मों के अलावा रोज सुबह भजन, गुरुवाणी जैसे धार्मिक कार्यक्रम भी प्रसारित किए जाते हैं. एक महीने से कम समय में उनके इस कार्यक्रम के 60 ग्राहक मिल गए हैं. और उन्हें पक्का भरोसा है कि नवंबर के अंत तक यह संख्या 100 के ऊपर पहुंच जाएगी.

▶ गुजरात के कच्छ जिले का एक गुमनाम-सा गांव है लाकड़िया, जिसकी आबादी करीब 10,000 है. पिछले चार वर्षों से इस गांव में टीवी रखने वाले सभी लोग मुंबइया फिल्में टीवी पर सामान्य तौर से प्रसारित होने से पहले ही देख लेते रहे हैं. यहां 50,000 रु. से कम लागत में ही एक डिश ऐंटिना लगा है.

सेठी, शेख, श्रीवास्तव और लाकड़िया के गांववासी उस नए तबके में शामिल हो गए हैं जिसे नई दिल्ली के मंडी हाउस में बैठे 'साहबों' की कृपा से प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों पर ही निर्भर नहीं रहना पड़ता. और यह नया तबका बड़ी तेजी से बढ़ता जा रहा है. पांच साल पहले देश में मुश्किल से 150 केबल टीवी ऑपरेटर थे और वे सभी भी मुंबई में ही थे. आज यह संख्या 4,000 को पार कर गई है. वैसे इनमें तीन-चौथाई अब भी पश्चिमी भारत में ही हैं लेकिन वे अपना कारोबार बड़ी तेजी से देश के दूसरे भागों में भी फैलाते जा रहे हैं. 1985 में पूरे देश में 5,000 से भी कम डिश ऐंटिना थे. आज यह संख्या पांच गुना अधिक होगी और यह प्रति माह 100 के हिसाब से बढ़ रही है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदेशी प्रसारण देखना—चाहे वह सीएनएन हो या विसन्यूज, एसियासैट या चीनी कार्यक्रम, सभी गैर-कानूनी है. लेकिन ऐसे ऐंटिना बनाना और बेचना कानूनन वैध है जो इन कार्यक्रमों को पकड़ लें. कानून में इतने पेंच हैं कि आने वाले वर्षों में यह धंधा बढ़ने ही वाला है. संचार मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कबूल किया, "हम 1885 में बने इंडियन टेलीग्राफ एक्ट के जरिए 21वीं सदी के तकनीकी तामझाम को काबू में करना चाहते हैं."

कानूनों में बदलाव की रफ्तार से अधिक तेजी से अगर तकनीक में विकास होता जा रहा हो तो इन कानूनों का कोई मतलब नहीं रह जाता. अब दिन-ब-दिन ऐसे संचार उपग्रहों की संख्या बढ़ती जा रही है जो डिश ऐंटिना लगाए बैठे लोगों के लिए कार्यक्रम प्रसारित करते हैं. और कानून के रखवालों का काम मुश्किल करने के लिए शक्तिशाली ऐंटिना का आकार दिन-ब-दिन छोटा होता जा रहा है.

इसलिए भारत सरकार डिश ऐंटिना और केबल टीवी के फैलते जाल से आंख फेर लेने के अलावा बहुत कुछ कर भी नहीं सकती. जैसे नियम कहता है कि डिश ऐंटिना से सिर्फ दूरदर्शन के कार्यक्रम 'रिसीव' किए जा सकते हैं. लेकिन देश में मौजूदा 25,000 डिश ऐंटिना में से 1,000 सी-बैंड ऐंटिना हैं जो विदेशी प्रसारण भी 'रिसीव' करने में सक्षम हैं.

इसी प्रकार नियमानुसार केबल टीवी का तार केंद्रीय संचार मंत्रालय और स्थानीय नगर निगम की अनुमति से ही सड़क खोदकर दूसरी तरफ ले जाया जा सकता है. लेकिन इस नियम पर भी शायद ही अमल होता है. जैसे मुंबई के ग्रांट रोड और लैमिंग्टन रोड का ही उदाहरण लें. कपड़े की दुकानों और वेश्याओं के दड़बेनुमा मकानों के ऊपर से सफेद तार इस से उस पार हुए दिखते हैं. एक स्थानीय केबल टीवी ऑपरेटर ने माना कि बांद्रा के लिंकिंग रोड के नीचे से केबल ले जाने के लिए स्थानीय अधिकारियों की मुट्ठी ठीक से गरम की गई. लेकिन यह अपवाद ही है.

आठ साल पहले जब मुंबई में केबल टीवी शुरू हुआ था तो यह समृद्ध इलाकों की बहुमंजिली इमारतों तक सीमित था. लेकिन हाल के वर्षों में इसका विस्तार आम लोगों के बीच भी हो गया है. पिछले कुछ महीनों में धारावी जैसे इलाके में कम-से-कम दर्जन भर ऑपरेटरों ने काम शुरू किया है. ऐसे ही एक ऑपरेटर श्रीनिवास नायडू का कहना है, "इससे हम वीसीपी जैसा मजा उठाते हैं."

इस साल मार्च तक भी केबल टीवी ऑपरेटरों की कानूनी स्थिति बहुत स्पष्ट नहीं थी. वीडियो व्यापार, फिल्म उद्योग और स्थानीय निकायों के अधिकारियों ने अनेक अदालतों में इनसे जुड़े कई मुकदमे लड़े. फिर मुंबई हाईकोर्ट की एक खंडपीठ ने फैसला सुनाया कि कॉपीराइट धारक की अनुमति के बिना केबल ऑपरेटर किसी फीचर फिल्म या कार्यक्रम को नहीं दिखा सकता. इसके तुरंत बाद वीडियो व्यापार के सरगना धीरज शाह ने वीडियो कॉपीराइट धारकों का एक संघ बनाया. इसके पास अभी 3,000 हिंदी फिल्मों का केबल और वीडियो कॉपीराइट है. फिलहाल 3 करोड़ रु. से अधिक का कारोबार करने वाली कंपनियों के मालिक शाह कहते हैं, "केबल टीवी का कारोबार जंगल की आग की तरह फैल रहा है. मुंबई में यह दो वर्षों के अंदर ही दोगुने से अधिक बढ़ गया है."

शाह और उनकी कंपनी केबल वीडियो (इंडिया) प्रा. लि. के साथ ही योगेश राधाकृष्णन, योगेश शाह, राम पंजाबी और जगजीत सिंह कोहली जैसे नौजवान भी हैं जिन्होंने एनकोर केबल एसोसिएशन नामक संस्था का गठन किया है. यह संस्था पश्चिमी क्षेत्र के केबल टीवी ऑपरेटरों को 'लाइसेंस' देती है और वीडियो फिल्मों के बीच दिखाए जाने वाले विज्ञापनों के स्थान बेचती है. मजेदार बात यह है कि शाह और एनकोर मंडली 'इंडियन फेडरेशन एगेंस्ट कॉपीराइट थेफ्ट' की भी अगुआ है जो अवैध ऑपरेटरों के खिलाफ पुलिस से शिकायत करती है. कोहली कहते हैं, "पिछले पांच महीनों में हमारी शिकायत पर 100 से भी अधिक गैर-कानूनी केबल टीवी ऑपरेटरों पर छापे मारे गए."

पंजाबी का दावा है कि 1,200 केबल टीवी ऑपरेटरों ने एनकोर में अपना पंजीकरण कराया है और इनमें से प्रत्येक के औसत 100 ग्राहक हैं. खुद पंजाबी का अपना केबल टीवी ग्रांट रोड इलाके में चलता है और इसके ग्राहकों की संख्या 1,000 तक पहुंचने वाली है. अगर ये आंकड़े सही हैं तो मुंबई में 1.2 लाख टीवी सेट केबल नेटवर्क से जुड़े हैं. अगर हर टीवी पांच आदमी भी देखते हों तो इसके दर्शकों की संख्या 6 लाख हो जाती है. अगर एक परिवार केबल टीवी की सुविधा के लिए औसत 75 रु. भी देता हो तो अकेले मुंबई में इससे 10 करोड़ रु. से अधिक राशि जमा हो जाती होगी. असली कारोबार शायद इससे भी काफी अधिक होगा.

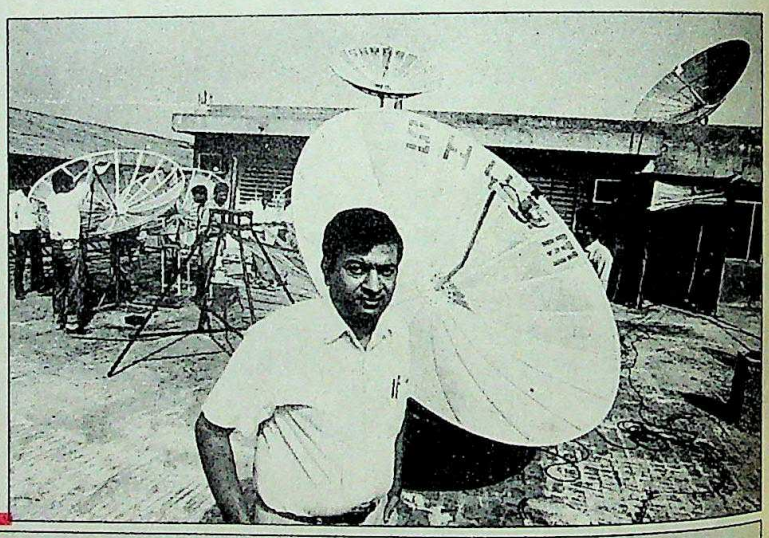

इस समय शाह की संस्था के पास 3,000 फिल्मों के केबल कॉपीराइट हैं

विज्ञापन एजेंसी लिंटास की बाजार अनुसंधान शाखा 'पाथफाइंडर्स इंडिया' ने 16 शहरों में 750 रु. अधिक मासिक आय वाले करीब 8,000 लोगों का सर्वेक्षण किया. इनमें से 30 फीसदी से अधिक लोगों ने उससे पहले के एक महीने में वीडियो देखा था और करीब 3 फीसदी के यहां केबल टीवी की सुविधा थी. जिनके यहां केबल टीवी का कनेक्शन था उनमें से 70 फीसदी लोग हफ्ते में कम-से-कम दो बार इसका उपयोग करते हैं.

भारत में केबल टीवी के विस्तार के बारे में हुए अन्य सर्वेक्षणों के नतीजे भी इसी तरह प्रभावशाली रहे हैं. वडोदरा के ऑपरेशन रिसर्च ग्रुप का दावा है कि दूरदर्शन की तरफ से उसने 19 नगरों का जो सर्वेक्षण किया उससे पता चलता है कि 1985 में जहां केबल टीवी नेटवर्क की संख्या मात्र 100 थी, पिछले साल 1,900

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उचित गर्भनिरोधक के बिना विवाहित जीवन आखिर कब तक सुखी रह सकता है ?

कोहिनूर

बेहतरीन गुलाबी कॉन्डोम

आप दोनों का प्यार ही आपको एक-दूसरे के इतने निकट ले आया है । ऐसा प्यार जो विवाह के बन्धन में बन्धने व मिलकर ज़िम्मेदारियाँ निभाने से बढ़ता और सुदृढ़ होता है । किसी भी विवाहित जीवन को सुखी बनाए रखने के लिए आवश्यकता होती है ऐसे दो व्यक्तियों की जो उसे आपस के विश्वास, भरोसे व घनिष्टता से भर दें । साथ ही एक दूसरे को सुखी रखने के लिए इतने समर्पित हों कि एक ऐसे गर्भनिरोधक का चुनाव करें जो दोनों के अनुकूल हो ।

ऐसा गर्भनिरोधक जो सम्पूर्ण सुख व सुरक्षा प्रदान करने के लिए शरीर पर अनुचित प्रभाव नहीं डालता, कष्टकर डाक्टरी जाँच को आवश्यक नहीं बनाता व दिन गिनने और तापमान मापने की चिन्ता व तनाव को दूर रखता है । ऐसा सुरक्षित, आसान व विश्वसनीय गर्भनिरोधक है कॉन्डोम ।

विश्वसनीय कोहिनूर

हज़ारों युवा दम्पति अपने बच्चों के जन्म में उचित अन्तर रख अपने परिवार का नियोजन विश्वसनीय कोहिनूर के सहारे करते हैं । कोहिनूर आपके मिलन के सुख में बाधा डाले बिना बहुत सहज ढंग से आपको सम्पूर्ण आनन्द प्रदान करता है । यह उच्च कोटि के लेटेक्स रबड़ से बनाया जाता है । सम्पूर्ण सुरक्षा प्रदान करने के लिए इसकी इलेक्ट्रॉनिक जाँच की जाती है । कोहिनूर के निर्माता आपकी एकांतता व सुरक्षा की आवश्यकता को भलीभांति समझते हैं । कोहिनूर — इसे नाम लेकर ही खरीदिए और विश्वसनीय कोहिनूर के सहारे निश्चिन्त हो जाइए ।

कोहिनूर तीन कॉन्डोम व दस कॉन्डोम के पैकेटों में उपलब्ध है ।

परिवार नियोजन — विश्वसनीय कोहिनूर के संग !

उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और इस साल 3,500 तक पहुंच गई है. इसने यह भी पाया कि 2.5 लाख घरों तक केबल टीवी की पहुंच है जिनमें से 74 फीसदी घर पश्चिम भारत (जिनमें अकेले मुंबई में 60 फीसदी), 12 फीसदी उत्तर, 10 फीसदी दक्षिण और 4 फीसदी पूरब में थे.

मुंबई से शुरू हुई यह लहर अब दिल्ली भी पहुंच चुकी है. और पूरे देश में फैल रही है. कॉपीराइट की मिल्कियत वाले संघ की तरफ से उत्तर भारत में 'लाइसेंस' बांटने वाली एकमात्र संस्था शोटाइम कम्युनिकेशंस का कहना है कि इस साल के अंत तक वह दिल्ली क्षेत्र में 500 केबल टीवी ऑपरेटरों को 'लाइसेंस' दे रही है. इसके निदेशक पी. सामराज कहते हैं, "राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में जितनी बहुमंजिली इमारतें बन रही हैं, प्रायः सभी ने अपने निर्माण में केबल टीवी कनेक्शन की व्यवस्था रखी है." आंध्र प्रदेश में तो खुद सरकार ने नौजवान लोगों को हैदराबाद और उसके आसपास के इलाकों में केबल टीवी का कामकाज शुरू करने के लिए वित्तीय मदद देने की योजना बनाई है.

देश में केबल टीवी के इस तेजी से फैलने के अनेक पहलू हैं. सबसे पहला तो यह कि यह बहुत ही कमाऊ और आकर्षक घरेलू उद्यम है. 30,000 से लेकर 50,000 रुपए तक के निवेश पर तुरंत कमाई शुरू हो जाती है और लागत तो छह महीने से कम में ही लौट आती है. इसे चलाने का खर्च बहुत कम है. साल में 30 हिंदी फिल्में केबल नेटवर्क पर दिखाने के लिए किस्तों में साल में 10,000-20,000 रुपए तक देने पड़ते हैं. और यही कारण है कि अब कुछ बड़े व्यावसायिक घराने भी इस क्षेत्र में जल्दी उतरने की तैयारी कर रहे बताए जाते हैं.

केबल टीवी का विकास दूरदर्शन के कार्यक्रमों की अपर्याप्तता से भी सीधे जुड़ा है. इसी कारण से वीडियो पत्रिकाओं का भी विकास हो रहा है. विज्ञापन देने वालों के लिए वीडियो की तुलना में केबल टीवी से एक स्पष्ट लाभ है कि इसमें दर्शक विज्ञापनों को तेजी से चलाकर बिना देखे नहीं निकाल पाता.

केबल टीवी के माध्यम से दर्शकों से सीधे संबंध बनाने की सुविधा भी खास फायदे वाली है. त्रिकाया ग्रे के मीडिया डायरेक्टर लिन डिसूजा कहते हैं, "एक नियंत्रित और सीमित माध्यम होने के चलते केबल टीवी प्रत्यक्ष विपणन में बहुत सहायक है." इसीलिए जौहरी, साड़ी विक्रेता और बड़ी दुकानों के अलावा हिंदुस्तान लीवर, पारले, नेस्ले, सीजफायर, गोदरेज और एमआरएफ जैसी कंपनियों ने भी इसकी मदद ली है.

और फिर सीएनएन और एसियासैट जैसी अंतरराष्ट्रीय उपग्रह सेवाएं भारत को अपना भावी बाजार मानती हैं. इसीलिए वे अभी इस देश में अपने कार्यक्रम 'मुफ्त' प्रसारित करने दे रहे हैं. मजेदार बात यह है कि दक्षिण एशिया में संचार क्रांति के लिए भारत भी अपनी भूमिका निभा ही रहा है. पश्चिमी दिल्ली के नारायणा में 35 वर्षीय इंजीनियर राजीव मेहरोत्रा ने डिश ऐंटिना बनाने का जो कारखाना लगाया है उसमें 450 लोग काम करते हैं और उनका सामान नेपाल, श्रीलंका, दुबई, म्यानमार (बर्मा), माले, थाईलैंड, अफगानिस्तान और इंडोनेशिया को निर्यात होता है. ऐसे उपकरण चोरी-छिपे पाकिस्तान भी पहुंचते हैं. इस साल मेहरोत्रा की श्याम कम्युनिकेशंस नामक यह कंपनी 900 डिश ऐंटिना सिस्टम बेचकर करीब 6.5 करोड़ रुपए कमाएगी. यह संख्या पिछले साल से दोगुनी है. वैसे अनेक दूसरी कंपनियों को भी डिश ऐंटिना बनाने का लाइसेंस जारी हुआ है लेकिन इस कंपनी के अलावा तीन अन्य कंपनियां इसे बना रही हैं और ये दिल्ली, मद्रास और कोयंबतूर में स्थित हैं.

मेहरोत्रा बताते हैं कि हाल में ही श्याम के माल की कीमत गिरी है. 1984 में 6 फीट व्यास वाला एस-बैंड डिश ऐंटिना, जो दूरदर्शन के कार्यक्रम पकड़ता है, 20,000 रु. में बिकता था. 1988 में यह 10,000 रु. में बिकने लगा और आजकल 7,500 रु. में बिकता है. विदेशी कार्यक्रम भी पकड़ लेने वाला सी-बैंड ऐंटिना अभी भी महंगा है. यह 70,000 से लेकर 1.2 लाख रु. तक में बिकता है लेकिन आने वाले समय में यह भी कम हो सकता है.

कुछ लोगों को लगता है भारत तेजी से (संचार व्यवस्था के चलते) विश्व समुदाय का एक गांव जैसा बन जाएगा. चर्चित फिल्मकार अमित खन्ना अब से पांच साल बाद उस स्थिति की कल्पना करते हैं जब उनका घर और दफ्तर पूरे देश और दुनिया से फाइबर-ऑप्टिक केबल के सहारे जुड़ा होगा और यह आवाज, आंकड़े, तस्वीरें, समाचार, विचार ले-दे सकेगा. शेक्सपियर की

ऐंटिना निर्माता मेहरोत्रा के मुताबिक बिक्री दनादन हो रही है

रचनाएं छोटे डिस्क में दर्ज होंगी और बटन दबाते सामने आ जाएंगी. वे कहते हैं, "तब दूरदर्शन बेमानी हो जाएगा."

दूरदर्शन के अधिकारियों का कहना है कि ऐसे स्वप्नदर्शियों को सपना देखने दीजिए. जिस तरह से रेडियो बेमानी नहीं हो पाया है, उसी तरह राष्ट्रीय टीवी का एकाधिकार भी बढ़ता जाएगा.

बहरहाल, बहुत कुछ इस बात पर निर्भर होगा कि केबल टीवी के विकास पर भारत सरकार की क्या प्रतिक्रिया रहती है और वह केबल टीवी का क्या उपयोग करती है. निश्चित रूप से लाइसेंस फीस काफी बढ़ाई जाएगी. हां, ऐंटिना के उपयोग पर रोक लगाना मुश्किल है और इन पर आ सकने वाले बाहरी कार्यक्रमों को 'डिस्टर्ब' करना मुश्किल और खर्चीला है. जब विदेशी कार्यक्रमों की भरमार भारतीय दर्शकों के लिए होगी तो उन पर आने वाले सिगरेट और शराब के विज्ञापनों के असर पर भी विवाद उठेगा ही. इसी प्रकार राष्ट्र विरोधी या भड़काऊ कार्यक्रमों को सेंसर करने, न करने का मुद्दा भी उठेगा ही. इसलिए अभी इस संचार क्रांति के विस्तार को बेचारगी के साथ और हाथ पर हाथ धरे देखते रहने के अलावा सरकार के पास कोई चारा नहीं नजर आता.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महंगाई

हर कोई लपेट में

कीमतों में वृद्धि को रोकना सरकार के बूते से बाहर होता जा रहा

राजधानी के कुछ बाजारों में उलटी गंगा बह रही है. आलू और प्याज, सेब से भी महंगे बिक रहे हैं. अक्तूबर के शुरुआती दिनों में उत्तर प्रदेश के हापुड़ से लेकर बिहार के पटना तक अनाज की ढुलाई 40 रु. प्रति क्विंटल थी, जो अब बढ़कर 73 रु. हो गई है. गुजरात में हर साल इस समय तक नई फसल आ जाने से खाद्य तेलों की कीमतें गिरती थीं पर इस साल वे बढ़ती ही जा रही हैं.

पूरे देश में हर जगह यही कहानी है. खाने-पीने की चीजें ही नहीं, सभी औद्योगिक उत्पादों का यही हाल है. इस मार से महत्वपूर्ण मूलभूत सेवाएं भी नहीं बच पाई हैं.

मतलब साफ है कि इस वित्त वर्ष में मुद्रास्फीति रुलाई का आंकड़ा पार कर जाएगी. और वह आंकड़ा भी सरकारी थोक मूल्य सूचकांक का ही होगा जिसमें कीमतों के उतार-चढ़ाव को कम करके ही आंका जाता है और फिर, अक्तूबर के मध्य में पेट्रोलियम पदार्थों की कीमतें 25 फीसदी बढ़ा देने के फैसले से लगता है हर चीज की कीमतें आसमान छूने लगेंगी. अर्थव्यवस्था का कोई भी क्षेत्र इसकी लपेट में से नहीं बच पाएगा.

हालात वाकई इस कदर खराब हैं? शायद नहीं. याद कीजिए 1966-67 के अकाल के वे दिन, जब थोक मूल्य सूचकांक एक साल में ही 14 फीसदी तक उछल गया था. या 1974-75 में तेल की कीमतें बढ़ने का वह सदमा जिसने इस सूचकांक को 25 फीसदी तक चढ़ा दिया था. या 1979-80 के दौरान चौधरी चरण सिंह का वह शासनकाल जब इस सूचकांक ने 17 फीसदी की उछाल लगाई थी.

सरकार का दावा है कि पेट्रोलियम पदार्थों की कीमतें बढ़ने से थोक मूल्य सूचकांक में 1.5 फीसदी का अतिरिक्त उछाल आएगा. वित्त मंत्रालय के एक अधिकारी का कहना है, "कुवैत पर इराकी हमले से पहले हमारा अनुमान था कि मुद्रास्फीति की सालाना दर 7 फीसदी होगी. पर अब यह 9 से 9.5 फीसदी तक पहुंचने की उम्मीद है." लेकिन इन उम्मीदों पर किसे विश्वास होगा?

अर्थशास्त्रियों का तर्क है कि तेल की कीमतों में वृद्धि के गंभीर परिणाम होंगे क्योंकि ढुलाई भाड़ा बढ़ने से दुकानदार खुदरा कीमतों को मनमाने ढंग से बढ़ा देंगे. एक प्रमुख उद्योग के प्रवक्ता को थोक कीमतें 11 फीसदी से अधिक बढ़ने की उम्मीद है. 1987-88 के सूखे के दौरान भी इतनी ही महंगाई बढ़ी थी. उसका अनुमान है कि "यह वृद्धि 20 फीसदी भी हो सकती है."

चार्ट: बी के. शर्मा

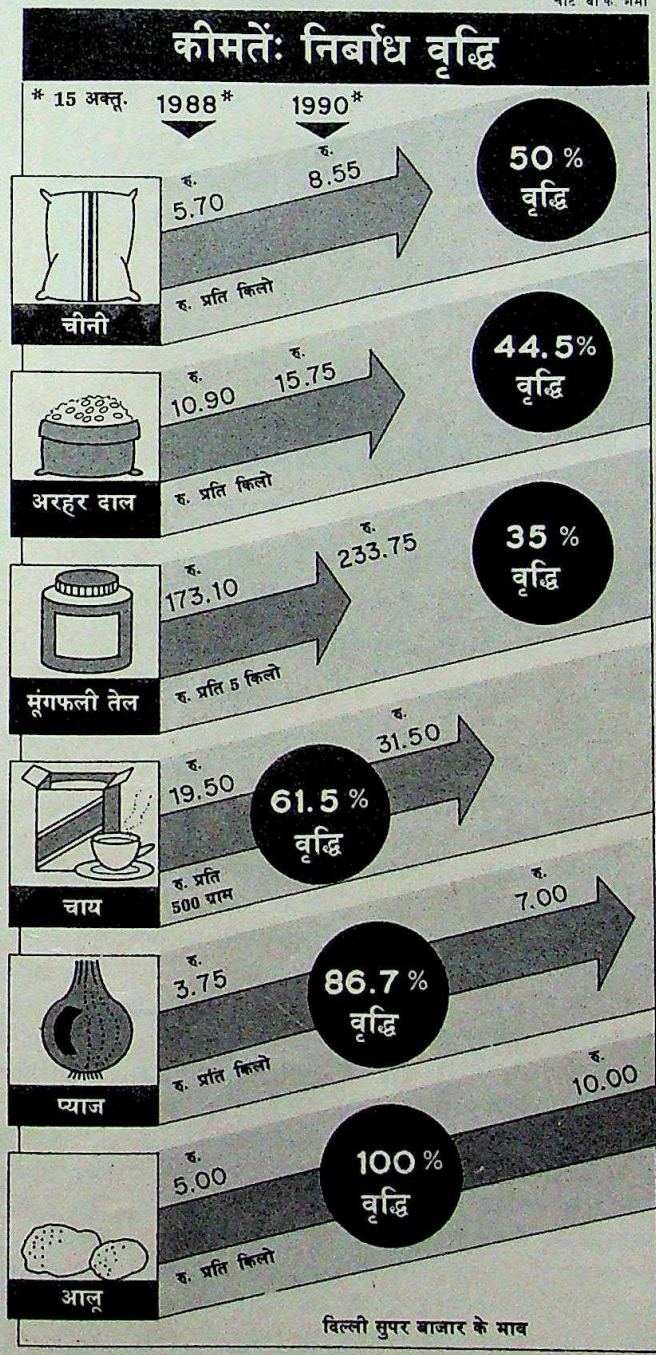

इसका असर अनेक जिंसों की कीमतों पर पड़ेगा. धनी संपन्न लोगों पर इस साल विमान भाड़े में 25 फीसदी वृद्धि का बोझ पड़ा है. पर आम आदमी भी इनसे अछूता नहीं बचेगा. पेट्रो-रसायन इस्तेमाल करने वाले सभी उत्पादों—प्लास्टिक की बाल्टी से लेकर टायर और कृत्रिम धागों तक का मूल्य कम-से-कम 10 फीसदी बढ़ेगा. अगर रेल भाड़ा, इस्पात, और कोयले की कीमतें तत्काल नहीं बढ़ाई गईं तो सरकारी क्षेत्र की संबद्ध संस्थाओं का घाटा बढ़ेगा. इसका परोक्ष असर बजट पर पड़ेगा जिससे महंगाई में और वृद्धि होगी.

आम जनता को इससे अभी तक जो संकेत मिले हैं, वे भ्रम में डालने वाले हैं. सबसे पहले वित्तमंत्री मधु दंडवते ने घोषणा कर दी कि तेल आपूर्ति में 15 फीसदी की कटौती कर दी जाएगी. इसके डर से पेट्रोल पंपों पर लंबी-लंबी कतारें लग गईं. बाद में, प्रधानमंत्री कार्यालय के प्रवक्ता ने सफाई दी कि यह कटौती खपत कम करने का 'लक्ष्य' है, जो अगले साढ़े पांच महीनों में हासिल किया जाएगा, तथा इसकी कीमतों में 25 फीसदी वृद्धि इस 'लक्ष्य' को हासिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने में सहायक होगी.

जाहिर है, इन उलटी-सीधी घोषणाओं से व्यापारी तबका काफी खीझा है. इंजीनियरिंग उद्योग महासंघ के अध्यक्ष वी. श्रीनिवासन इस फैसले को 'तदर्थ' व कान उमेठने वाला मानते हैं. उनकी शिकायत है कि आर्थिक संकट के निवारण का बोझ उद्योगों पर डाला जा रहा है.

इसमें कई विसंगतियां भी हैं. दंडवते का कहना है कि रक्षा विभाग की तरह ही अगर तेल की कीमतें गिर जाएं, तो भी खाड़ी अधिभार हटाया न जाए. ये लोग राजीव गांधी के उस उदाहरण का जिक्र करते हैं जब तेल की अंतरराष्ट्रीय कीमतें घटने का लाभ घरेलू उपभोक्ताओं को नहीं दिया गया था और तेल उद्योग के अतिरिक्त राजस्व का इस्तेमाल बजट घाटे की पूर्ति में किया गया था.

दिल्ली में पेट्रोल के लिए कतार

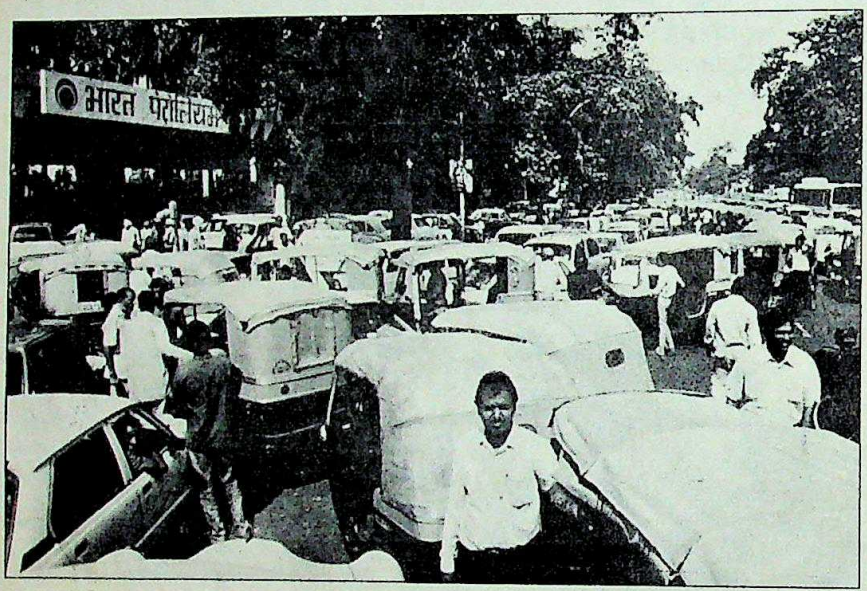

सरकार ने खाड़ी संकट से पहले उम्मीद की थी कि मुद्रास्फीति की दर 7 फीसदी तक सीमित रहेगी. अब वह इसे 9 फीसदी बताती है. मगर यह आंकड़ा 15 फीसदी तक जा सकता है

यह कटौती मिट्टी के तेल (जिसे गरीब इस्तेमाल करते हैं) और रसोई गैस पर लागू नहीं होगी. निर्यात क्षेत्र और उर्वरक में इस्तेमाल होने वाले नेप्था को भी बाद में इस सूची में जोड़ दिया गया. लेकिन फिर मिट्टी के तेल की कीमत क्यों बढ़ाई गई जबकि रसोई गैस की कीमत नहीं बढ़ाई गई ? सरकार का कहना है कि अगर ऐसा न किया जाता तो मिट्टी का तेल बाजार से गायब ही हो जाता क्योंकि तब इसे डीजल व पेट्रोल में मिलाकर बेचा जाता. और फिर, सरकार रसोई गैस की कीमत बढ़ाकर शहरी मध्यम वर्ग को नाराज नहीं करना चाहती.

खाड़ी अधिभार से केंद्र सरकार के खजाने में 2,300 करोड़ रु. की अतिरिक्त राशि पहुंच जाएगी पर इसमें से राज्यों को कोई हिस्सा नहीं मिलेगा. सरकार का एक तबका चाहता है कि विश्व बाजार में

और लगता है इन लोगों की बात ही मानी जाएगी. वजह यह कि सरकारी खजाने की हालत काफी खस्ता है, बावजूद इसके कि इस साल अप्रैल से जुलाई तक का बजट घाटा पिछले साल के इसी दौरान के घाटे से 1,500 करोड़ रु. कम है. अन्य आंकड़े भी बदतर हालात का ही संकेत देते हैं.

पिछले साल जून से इस साल जून तक सरकार पर बैंकों का शुद्ध ऋण करीब 21,000 करोड़ रु. बढ़ गया. वित्त उपमंत्री अनिल शास्त्री सार्वजनिक रूप से कह चुके हैं कि इस साल बजट घाटा 7,200 करोड़ रु. के अनुमान के विपरीत 10,000 करोड़ रु. हो जाएगा.

सुरक्षा खर्च तो निश्चित रूप से बजट अनुमान से काफी बढ़ जाएगा. खाद्य पदार्थों और उर्वरक पर दिए जाने वाले अनुदान भी इस साल 1,500 करोड़ रु. के बजट प्रावधानों को लांघ जाएंगे. लेकिन अजीब बात यह है किसान उसी सरकार से खफा हैं, जिसने उनके कर्ज माफ कर दिए और वसूली मूल्य में खासी वृद्धि कर दी. उत्तर प्रदेश में पिलखुआ के 49 वर्षीय किसान बख्तावर सिंह का कहना है, "डीजल की कीमतें बढ़ने से हम पर कई और बोझ बढ़ जाएंगे."

दिन-ब-दिन कीमतें बढ़ने का लोगों पर जो मानसिक दबाव बना है, उसने सरकार को कहीं का नहीं छोड़ा है. सरकार स्वर्ण भंडार की घोषणा जैसी तुरुप चाल चल सकती है पर यह भी कमजोर अर्थव्यवस्था का संकेत ही है (रिजर्व बैंक के स्वर्ण भंडार का जिस ऐतिहासिक कीमत पर मूल्यांकन हुआ है, वह अंतरराष्ट्रीय कीमत से 26 गुना कम थी).

उद्योग क्षेत्र की स्थिति कुछ भिन्न है. अप्रैल से सितंबर तक के आंकड़ों से यही जाहिर होता है कि औद्योगिक उत्पादन 13 फीसदी बढ़ा है. और हाल ही में जारी कंपनियों के अर्धवार्षिक नतीजों से भी जाहिर होता है कि मुनाफे का अनुपात कम नहीं हुआ है. पर इस साल के संकट का असली असर तो अगले साल गर्मियों में महसूस होगा. एसोसिएटेड चैंबर ऑफ कॉमर्स के निदेशक वी.पी. चीतले के अनुसार, "मुद्रास्फीति का असर अगले साल मार्च के बाद अपना रंग दिखाने लगेगा."

राष्ट्रीय मोर्चा सरकार जबसे सत्ता में आई है, कीमतों पर काबू पाने में नाकाम रही है. इसी की व्याख्या करते हुए वी.पी. सिंह ने कहा था कि कीमतें टूथपेस्ट की तरह होती है—अगर एक बार आपने इसे ट्यूब से निकाल दिया तो फिर वापस नहीं डाल सकते. पर सरकार टूथपेस्ट की कीमतों से नहीं गिरेगी. दूसरी जिंसों की बढ़ती कीमतें इस प्रक्रिया को तेज करेंगी. याद कीजिए, चीनी की कीमतों ने पिछली सरकार की क्या हालत बनाई थी. 1980 में प्याज की कीमतों ने इंदिरा गांधी को क्या फायदा पहुंचाया था. इस बार खाद्य तेल तख्ता पलटेंगे या प्याज ? बहरहाल, राष्ट्रीय मोर्चे को अपनी ही कड़वी दवा का बड़ा घूंट भरना होगा.

—परंजय गुहा ठाकुरता, हरपाल सिंह और ब्यूरो रिपोर्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनगिनत तहों से बना परिपूर्ण साप्ताहिक!

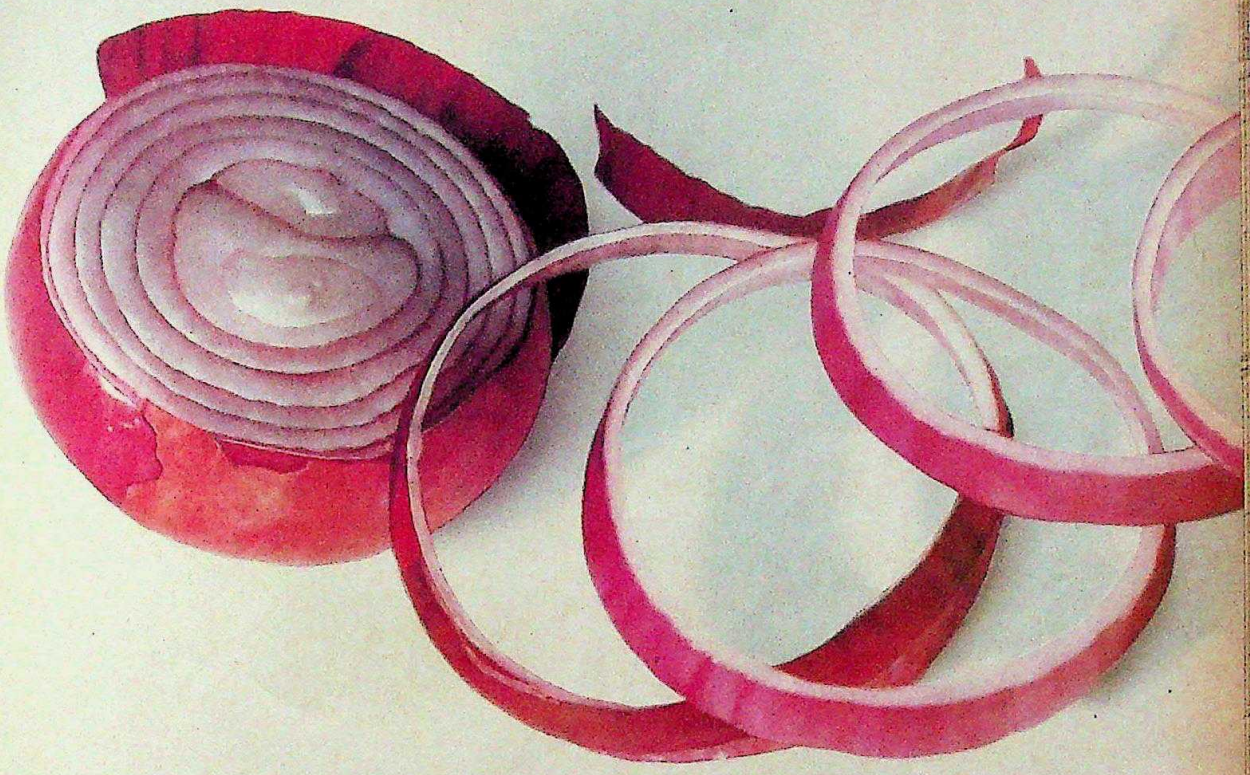

संडे मेल साप्ताहिक केवल समाचार पत्रिका ही नहीं, और भी बहुत कुछ... तह दर तह उभरता विविध रंगों का रोचक संगम.

समाचार टिप्पणियाँ, आलोचनात्मक लेख, सामाजिक गतिविधियाँ, खेलकूद, संगीत, कला, गपशप, हंसी-मज़ाक, हल्का-फुल्का व्यंग्य, शहर की हलचल और हर अंक के साथ एक खास, रंगबिरंगी पत्रिका!

यानी आखरी तह तक आपकी लागत का पूरा मूल्य.

सप्ताह भर की खबर, परिवार भर का मनोंरजन!

संडे मेल साप्ताहिक!

संडे मेल

साप्ताहिक

सारे परिवार का एक ही अखबार

दिल्ली और कलकत्ता से प्रकाशित एकमेव साप्ताहिक

आप संडे मेल की प्रति स्थानिय पत्र विक्रेता से प्राप्त कर सकते हैं। या हमें इन पतों पर सम्पर्क करें:–

संडे मेल प्रसार व्यवस्थापक, प्रसार विभाग: **नई दिल्ली:** सी-43, नीति बाग, नई दिल्ली। फोन : 663243, 652916, 652923

कलकत्ता: फ्लैट नं. 3, 6 चित्पुर 230 ए.जे.सी. बोस रोड, कलकत्ता 700 020 फोन : 433247

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

COVANSM1065/1

Address Books as distinctive as your address

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

IT 305
Rs. 85/-

IT 505
Rs. 50/-

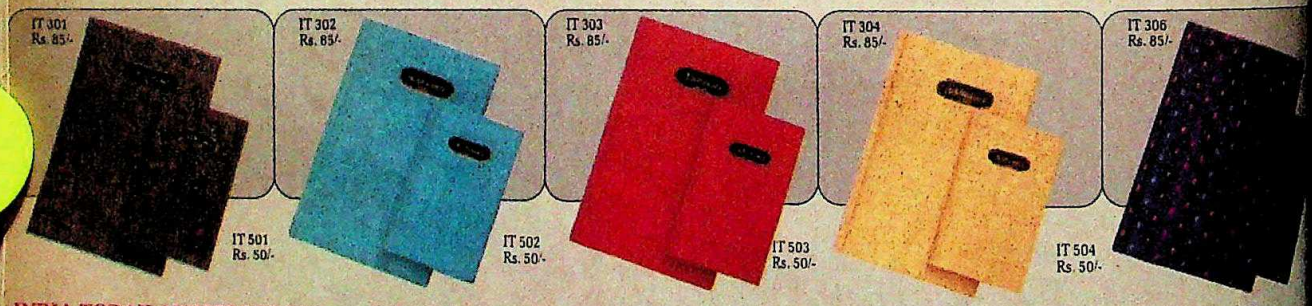

IT 301
Rs. 85/-

IT 501
Rs. 50/-

IT 302
Rs. 85/-

IT 502
Rs. 50/-

IT 303
Rs. 85/-

IT 503
Rs. 50/-

IT 304
Rs. 85/-

IT 504
Rs. 50/-

IT 306
Rs. 85/-

INDIA TODAY ADDRESS BOOKS

A choice of Address Books for use in the office or at home. Each Address Book is attractively produced with a distinctive fabric covering, specially designed to express your individuality.

Inside, each of these exclusive Address Books have room for 1380 names, addresses and telephone numbers complete with alphabetical indexing. Handy sections for personal information and emergency numbers. A ready-to-use listing of ISD and STD codes as well as the time around the world.

Handy Pocket Address Book

This comprehensive range of Address Books is also available in a compact, carry-around size. With these compact Address Books you can carry the addresses of 798 contacts, at all times on your person.

The range includes:

* Herringbone tweed. (IT 301, 501)
* Rich Bhagalpur silk in red, turquoise blue or beige. (IT 303, 503, IT 302, 502, IT 304, 504)
* Traditional cotton with woven motifs on navy blue ground. (IT 306, 506)
* Classic black rayon overprinted with

The Richness of Leather: The luxury option of leather bound Regular and Pocket Address Books has also been introduced for the first time. Incorporating all the features of the fabric-bound set, these beautifully crafted Address Books have been meticulously finished to highlight the grain and texture of rich brown real leather.

Personalisation option: The leather Address Books can be further personalized with upto 3 initials, gold embossed at no extra charge.

Make your selection now and send in your order with the coupon.

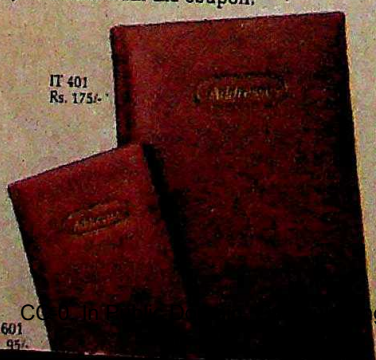

IT 401
Rs. 175/-

IT 601
Rs. 95/-

Please Note:

* Add Rs. 5/- for outstation cheques i.e. cheques outside Delhi.
* Cheques/Demand Drafts payable at Bombay, Calcutta, Madras and Delhi must be MICR only.
* Address books will be home delivered by Registered post/Courier. Please allow a time of 6-8 weeks after placement of order for delivery.
* Extra for gold embossing of initials on the leather address books

* For gift instructions please give recipients name and address alongwith details for embossing initials (for leather address book) on a separate sheet.
* Prints and colours in the photographs are representative.
* Offer and rates valid in India only.

I enclose a crossed Cheque/DD for Rs. _____ (add Rs. 5/- for outstation cheques i.e. outside Delhi) payable to 'Living Media India Ltd'.

The code numbers and quantities of the address books required by me are indicated below. (Use separate sheet for orders exceeding 4 varieties).

Code	Price	Qty	Total Amt.

Name : _____

Address : _____

For leather address books: Please give a maximum of 3 initials per leather address book ordered. Kindly enclose the initials on a separate sheet

Mail your order to: Living Media India Ltd.

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Ujjain.

...ngotri

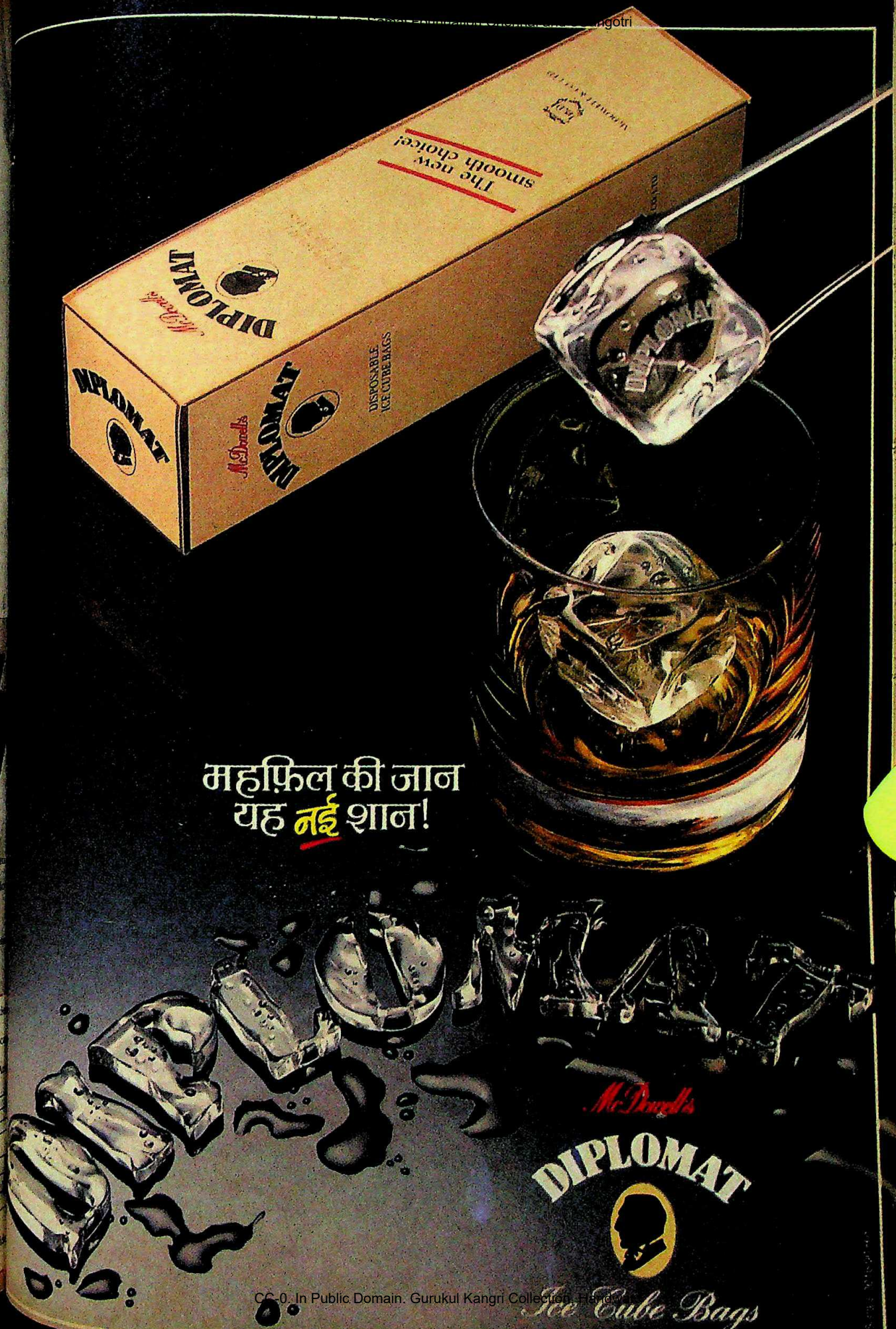

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदमाश मोटू के लिए

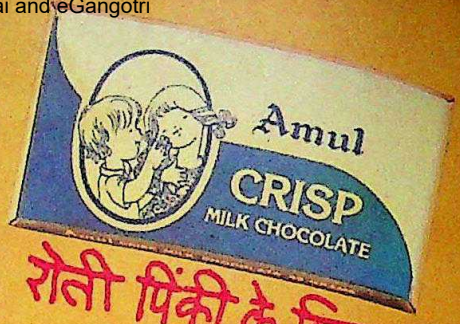

रोती पिंकी के लिए

शैतान छोटू के लिए

प्यारी प्रीति के लिए

चाचे चिंटू के लिए

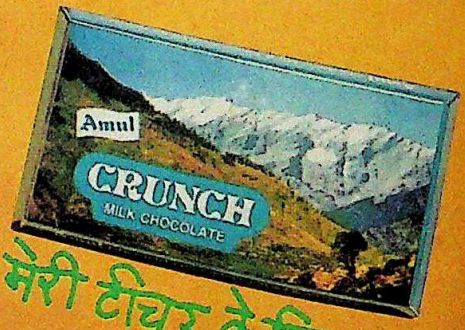

मेरी टीचर के लिए

यह सारे क्रेयन्स मेरे लिए

वितरक–
गुजरात को-ऑपरेटिव
मिल्क मार्केटिंग
फेडरेशन लिमिटेड,

अमूल चॉकलेट–प्यार की मीठी भेंट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेयर बाजार

उफान थमा

राजनैतिक उठापटक का असर

पिछले पखवाड़े बाजार में एक ही बात निश्चित थी—अनिश्चितता और वह भी राजनीति से जुड़ी. देश की राजधानी में जो राजनैतिक उठापटक चल रही है उसकी सीधी झलक शेयर बाजार पर भी दिखी, जो अब तक के उसके उफान वाले मूड के एकदम उलट थी. 23 अक्तूबर को जब भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी गिरफ्तार किए गए तो अधिकांश शेयर बाजार बंद हो गए. सौदे भी नगण्य ही रहे. उस दिन शाम को कुछ प्रमुख शेयरों में थोड़ा सुधार जरूर हुआ लेकिन मुंबई शेयर बाजार (मुंशेबा) के अधिकारी जोखिम नहीं ले रहे थे.

मुंशेबा के प्रबंधक मंडल की आपात बैठक में मंदड़ियों की तेजी के अंदेशे से अग्रिम सौदे पर अस्थायी रोक का फैसला किया गया. इस सावधानी के बावजूद एक दिन पूर्व ही काफी नुकसान हो चुका था. आडवाणी की गिरफ्तारी की खबर कितनी

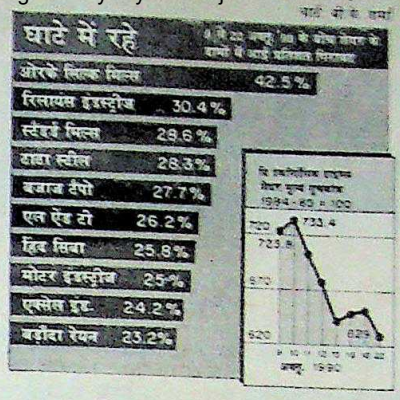

महत्वपूर्ण थी, यह शेयर बाजार के मूड से ही पता चलता है. मुंशेबा के 30 प्रमुख शेयरों वाला संवेदनशील सूचकांक नए संवत् (2047) में पहले दिन ही 88 अंक गिरकर 1223.40 पर आकर रुका.

जिन प्रमुख शेयरों को नुकसान उठाना पड़ा, उनमें टिस्को शामिल है जिसके शेयर 205 रु. से गिरकर 190 रु. पर आ गए. दरअसल अग्रिम खरीद वाली सूची में शामिल अनेक शेयरों के सौदे काफी नीची दर पर हो रहे थे. नए वर्ष की इस गड़बड़ भरी शुरुआत ने संवेदनशील सूचकांक को वर्ष के सर्वोच्च 1602.64 (9 अक्तूबर) में 380 अंकों की कमी ला दी.

और नए साल की इस शुरुआत ने बाजार में फूंक-फूंककर कदम रखने वाला दौर, भले ही कम समय के लिए क्यों न हो, शुरू किया. नए साल के पहले दिन मुंशेबा का रिंग भले ही ठसाठस भरा था लेकिन सौदे 100 करोड़ रु. से भी कम के हुए, जो पिछले साल के इस दिन से काफी कम हैं. उम्मीद की जा रही थी कि वित्तीय संस्थान बाजार में उतरेंगे लेकिन उन्होंने नाममात्र के सौदे किए.

राजनैतिक मोर्चे पर अनिश्चितता और भय के बावजूद हर मोर्चे पर इतनी निराशा नहीं है. बाजार के विशेषज्ञों का मानना है कि बाजार के बढ़ने के बुनियादी आधार मजबूत हैं और कंपनियों के अच्छे कारोबार की छमाही रिपोर्टें आती ही जा रही हैं. 25 अक्तूबर को मुंशेबा का संवेदनशील सूचकांक 76 अंक चढ़कर 1299.17 पर पहुंच गया. 22 से 23 अक्तूबर के बीच 185 से 167 रु. पर आ गया रिलायंस तीन दिन बाद 187 रु. तक चढ़ गया. वैसे सिर्फ हफ्ते भर पहले यह 261 रु. पर था.

लेकिन अभी तो निवेशक यही सोचते दिख रहे हैं कि दिल्ली की राजनैतिक उठापटक शेयर बाजार की नैया को प्रभावित करने से दूर रहे, यही ज्यादा अच्छा होगा.

जमा स्टॉक

	1990 ऊंचा	1990 नीचा	1990 बंद 22.10.90	इस पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
[illegible] लेलैंड	126.50	69.50	110.00	11.00 –
[illegible] सीमेंट	2415.00	325.00	2100.00	105.00 +
[illegible] पेट्स	305.00	207.50	252.50	15.00 –
[illegible] कोप्को	68.00	32.50	50.00	–
[illegible] ऑटो	770.00	355.00	620.00	100.00 –
[illegible] रेयॉन	1925.00	617.50	1210.00	315.00 –
[illegible] इंडिया	104.00	62.50	97.00	3.00 –
[illegible]पुर	325.00	120.00	238.00	47.00 –
[illegible] जूट	205.00	50.50	180.00	15.00 +
[illegible] प्लास्ट	140.00	34.50	100.00	40.00 –
[illegible] डाइंग	445.00	173.00	185.00	257.50 –
[illegible] इंडिया	167.00	97.00	140.00	20.00 –
[illegible] बांड	175.00	91.00	146.00	14.00 –
[illegible] इंडिया	192.50	133.75	165.00	11.25 –
[illegible] टेक्सटाइल्स	4750.00	2420.00	4125.00	400.00 –
[illegible]	360.00	176.25	290.00	46.25 –
[illegible]	150.00	87.50	110.00	25.00 –
[illegible]	130.00	45.50	112.50	7.50 +
[illegible] होटल्स	93.00	51.75	72.00	7.00 –
[illegible]	65.25	50.00	57.50	2.50 –
[illegible] केबल्स	200.00	77.75	160.00	7.00 –
[illegible] नाइलोन	410.00	200.00	285.00	5.00 –
[illegible]	71.00	48.00	56.25	0.25 +
[illegible]	54.75	34.50	37.00	4.50 –
[illegible] इंडिया	275.00	155.00	193.75	56.25 –
[illegible]	277.50	106.00	197.50	47.50 –
[illegible]	417.50	205.00	315.00	40.00 –
[illegible]	1900.00	960.00	1225.00	350.00 –
[illegible]	172.50	101.00	135.00	22.50 –
[illegible]	58.50	19.80	36.50	14.25 –
[illegible]	3400.00	1295.00	2450.00	700.00 –
[illegible]	72.00	35.25	54.00	12.00 –
[illegible]	91.25	46.50	60.00	14.00 –
[illegible]	175.00	84.00	117.50	32.50 –
[illegible]	320.00	161.25	280.00	17.50 –

	1990 ऊंचा	1990 नीचा	1990 बंद 22.10.90	इस पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
इंगरसॉल-रैंड	305.00	190.00	250.00	50.00 –
आईटीसी	182.00	48.75	137.00	30.00 –
जे.के.सिंथेटिक्स	90.00	49.00	55.00	10.00 –
काइनेटिक इंजी.	255.00	130.00	190.00	35.00 –
किर्लो. क्युमिंस	125.00	65.00	100.00	7.50 –
केएसबी पंप्स	260.00	175.00	230.00	25.00 –
लार्सन-टुब्रो	180.00	57.00	112.50	40.00 –
लिप्टन	112.00	65.00	75.00	20.00 –
लोहिया-मशीन्स	83.75	15.00	50.00	18.75 –
मदुरा कोट्स	285.00	100.50	245.00	20.00 +
महिंद्रा-महिंद्रा	130.00	67.50	95.00	7.50 –
मिल्क फूड	280.00	115.00	165.00	20.00 –
मोटर इंडस्ट्रीज	1400.00	780.00	825.00	275.00 –
मुकुंद लिमि.	275.00	127.00	212.50	15.00 –
नेशनल आर्गे.	1900.00	1070.00	1375.00	225.00 –
नेस्ले इंडिया	172.50	101.75	140.00	16.00 –
निरलॉन	42.50	13.00	25.00	8.00 –
ओरके सिल्क मि.	61.00	14.50	34.50	12.50 –
पेइको इलेक्ट्रॉनिक्स	78.00	24.00	62.00	11.50 –
फाइजर	113.75	60.00	65.00	10.00 –
प्रीमियर ऑटो	83.00	50.00	55.00	15.00 –
रेमंड	175.00	70.00	122.50	2.50 +
रेकिट-कोलमैन	270.00	178.00	250.00	10.00 –
रिलायंस इंडस्ट्रीज	245.00	50.00	167.00	31.50 –
सीमेंस इंडिया	162.50	96.00	130.00	7.50 –
शॉ वैलेस	122.00	65.00	84.50	14.50 –
श्रीराम फाइबर्स	74.00	43.00	56.50	2.50 –
एसकेएफ बेय.	2775.00	1240.00	2250.00	175.00 –
स्पिक	81.00	47.00	54.00	18.00 –
टाटा स्टील	275.00	103.25	190.00	36.50 –
टेल्को	272.50	110.00	210.00	25.00 –
वाम ऑर्गेनिक	205.00	115.00	163.75	21.25 –
वीडियोकॉन	600.00	105.00	421.25	88.75 –
वोल्टास	145.00	63.00	110.00	27.50 –
विमको	52.50	15.75	28.50	7.50 –

भारतीय रुपए का मूल्य

देश	मुद्रा	इकाई	बिक्री मूल्य (रुपए में)	क्रय मूल्य (रुपए में)
आस्ट्रेलिया	डालर	1	14.1498	13.9982
आस्ट्रिया	शिलिंग	100	168.8790	167.3080
बहरीन	दीनार	1	48.5290	47.4372
बांग्लादेश	टका	100	52.0260	51.2411
कनाडा	डालर	1	15.4620	15.3095
डेनमार्क	क्रोना	1	3.1266	3.0955
मिस्र	पौंड	1	6.8260	6.7110
फ्रांस	फ्रैंक	1	3.6232	3.5336
हांगकांग	डालर	1	2.3318	2.3095
इंडोनेशिया	रुपिया	100	0.9762	0.9618
ईरान	रियाल	100	25.5368	25.2559
इटली	लीरा	100	1.5969	1.5735
जापान	येन	100	14.5138	14.1443
केन्या	शिलिंग	1	0.7964	0.7854
मलेशिया	डालर	1	6.7223	6.6564
मारीशस	रुपया	1	1.2969	1.2756
नेपाल	रुपया	1	0.6332	0.6250
हालैंड	गिल्डर	1	10.5866	10.4805
पाकिस्तान	रुपया	1	0.8565	0.8444
सिंगापुर	डालर	1	10.6213	10.5148
स्पेन	पेसो	1	0.1903	0.1879
श्रीलंका	रुपया	1	0.4511	0.4457
स्वीडन	क्रोना	1	3.2260	3.1930
स्विट्जरलैंड	स्विस फ्रैंक	1	14.1245	13.9803
तंजानिया	शिलिंग	1	0.0956	0.0922
थाईलैंड	बहत	100	72.6282	71.6558
ब्रिटेन	पौंड	1	35.2920	35.0324
अमेरिका	डालर	1	18.1571	17.9856
सं.अ.अमीरात	दिरहम	1	4.9573	4.9064
सोवियत संघ	रूबल	1	22.7870	22.7847
पश्चिम जर्मनी	जर्मन मार्क	1	12.1359	11.8343

स्रोत—बैंक ऑफ तोक्यो, नई दिल्ली, 23.10.90

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एस्बेस्टस सीमेंट की चादरें

यह सच है कि एस्बेस्टस सीमेंट चादरें 90% सीमेंट और 10% एस्बेस्टस से बनती हैं: एक प्राकृतिक तत्व जो इस्पात से 3-4 गुणा अधिक मज़बूत होता है.

यह पूर्व निर्मित, उपयोग के लिए तैयार और सीमेंट तथा एस्बेस्टस के गुणों से भरपूर होती हैं.

इसी वजह से इनको किसी प्रकार की सुरक्षा कोटिंग अथवा उपचार की आवश्यकता ही नहीं पड़ती.

जंग पैदा करने वाले औद्योगिक प्रदूषकों का इन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता.

इसके विशिष्ट गुणों के कारण आग, ताप, वर्षा और समुद्र तटीय खारी हवा का इन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता जिसकी वजह से यह अधिक टिकाऊ होती हैं.

अधिक टिकाऊपन के साथ-साथ, अधिक क्षेत्र ढ़कने की क्षमता के फलस्वरूप मिलती हैं छत डालने की सबसे किफायती चादरें.

सच यह है कि एस्बेस्टस सीमेंट पाईप, चादरें, स्लेटें व शिंगल्स बीसवीं शताब्दी की शुरूआत से ही प्रयोग में लाए जा रहे हैं और आज भी सारे विश्व में प्रयोग हो रहे हैं.

विश्वभर में प्रति वर्ष 42 लाख टन एस्बेस्टस, एक प्राकृतिक खनिज, का खनन होता है. इनमें मुख्य देश हैं सोवियत संघ, कनाडा, ब्राज़ील और ज़िम्बाब्वे. इसका 2% भाग ही भारत में प्रयोग होता है.

कुछ आंकड़ों का

7,00,00

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...ादों के विषय में कुछ तथ्य.

...ह से यह अधिक उपयोग में सुरक्षित. एस्बेस्टस सीमेंट की चादरों के विषय में ...र्थ प्रेरित प्रचारों पर ध्यान देने के बजाए, यदि आप इसके ...ढ़कने की क्षमता की बात सुनें तो सच्चाई आप पर स्वयं ज़ाहिर हो जाएगी. ...ती चादरें. एस्बेस्टस सीमेंट उत्पादनों का सामान्य उपयोग पर्यावरण व ...नेटें व शिंगल्स के लिए किसी प्रकार का खतरा नहीं है.

...हैं और आज जाने माने पर्यावरण विशेषज्ञों, विश्व स्वास्थ्य संगठन के ...ी दल का मानना है कि यह हर प्रकार से उपयोग में सुरक्षित हैं.

एक प्राकृतिक अन्त में ब्रिटेन की सरकार के स्वास्थ्य एवं सुरक्षा अधिकारी ...संघ, कनाडा ...अध्ययन दल का कथन आपके सभी संदेह दूर कर देगा. ...योग होता है. *"लोगों के मन में एस्बेस्टस सीमेंट से निर्मित उत्पादनों तथा एस्बेस्टस इन्सुलेशन के बीच अक्सर गलत-फहमी हो जाती है. हम यह स्पष्ट कर देना ज़रूरी समझते हैं कि प्रचलित एस्बेस्टस सीमेंट के उत्पादन जैसे छत, चादर व गटरिंग के प्रति हमें किसी प्रकार के भय का अहसास नहीं करना चाहिये क्योंकि यह पूरी तरह सुरक्षित हैं."*

इसलिए यदि आपको छतों के लिए एक आदर्श तत्व की तलाश है तो एस्बेस्टस सीमेंट चादरों से बेहतर चुनाव हो ही नहीं सकता.

और यह एक तथ्य है.

...के साथ उपसंहार.

...0,000 मी.²

...सच है कि भारत में लगभग 1 अरब वर्ग मीटर एस्बेस्टस सीमेंट की चादरें छतों के रूप में प्रयोग में हैं. और प्रतिवर्ष इसमें प्रायः 6 करोड़ वर्ग मीटर की वृद्धि होती है.)

...स्टस सीमेंट की चादरें. सुरक्षित इस्तेमाल. चलें सालों साल.

एस्बेस्टस सीमेंट प्रोडक्ट्स मैन्यूफैक्चरर्स एसोसियेशन.

Enterprise/D/ACPMA/556 HIN

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-20

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

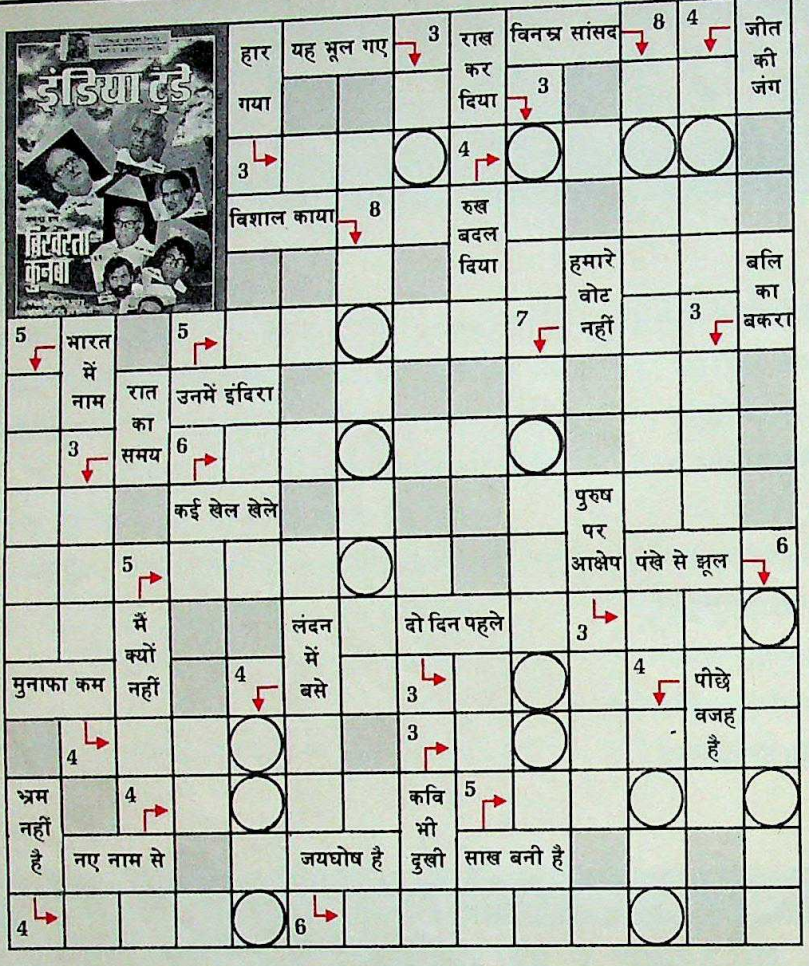

नाम

पता

पिन

हल इस पते पर भेजें:

वर्ग पहेली-20, इंडिया टुडे, एफ-14/15, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि: 20 नवंबर 1990

उत्तर के लिए देखें: 1-15 दिसंबर 1990 का अंक

- यह पहेली शब्दशः इंडिया टुडे के 31 अक्तूबर 1990 के अंक पर आधारित है.
- वर्गों के भीतर दिए गए शब्द ही संकेत हैं.
- तीर के चिन्ह बताते हैं कि शब्द कहां से शुरू होकर किधर जाते हैं.
- तीर के चिन्ह के साथ दिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गों की संख्या दर्शाते हैं.
- वृत्त का अर्थ है कि उसमें आने वाले शब्दांश का प्रयोग पुनः होगा.
- मटमैले रंग वाले वर्ग रिक्त ही रहेंगे.
- शब्द वैसे ही लिखें जैसे पत्रिका में छपे हैं.
- सर्वप्रथम पहुंचने वाले **तीन सर्वशुद्ध हलों को पुरस्कारस्वरूप 500-500 रु.** दिए जाएंगे.
- लिविंग मीडिया इंडिया लि. के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते.

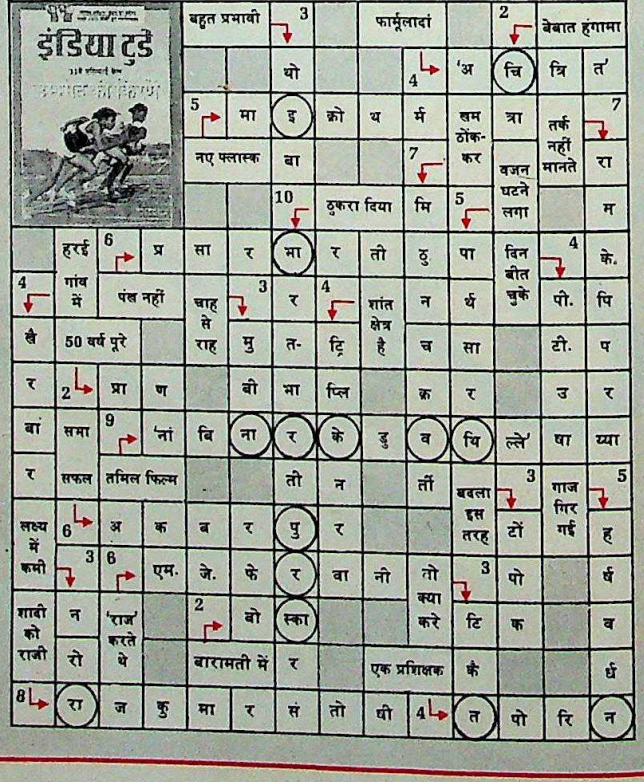

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-18 का हल

पुरस्कार विजेता

मीनू गुप्ता
पत्नी-डॉ. महेंद्र गुप्ता
73, डरुभौंडेला, झांसी,
उत्तर प्रदेश-284002

पुष्पेंद्र वर्मा
बी-1/123 अशोक विहार,
फेज-II, दिल्ली-110052

अनूप कुमार चतुर्वेदी
सिंडिकेट बैंक,
शाखा बाबल,
जिला रेवाड़ी,
हरियाणा-123501

इन तीनों को 500-500 रु. के चेक भेजे जा रहे हैं. विजेताओं को बधाई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार

मंडल पर मारामारी

आरक्षण विरोधी जुनून के गांवों-कस्बों तक पहुंचने और जातीय झड़पों के चलते राज्य में जातीय युद्ध भड़कने का अंदेशा

—फरजंद अहमद

पटना जिले के मोर गांव के अपंग लेकिन संपन्न भूमिहार किसान, 80 वर्षीय कपिलदेव प्रसाद सिंह बहुत चिंतित हैं. अपनी इस उम्र में वे सामाजिक उथलपुथल नहीं चाहते, वे शांति चाहते हैं. लेकिन अपनी फसलों के बारे में सोचने की बजाए वे यह जानने की कोशिश कर रहे हैं कि मंडल रिपोर्ट क्या बला है जिस पर इतना शोरशराबा हो रहा है. वे धीरे-धीरे कहते हैं, "एक तरह के राजनैतिक जहर ने गांवों के माहौल को अचानक दूषित कर दिया है. लोग एक दूसरे से घृणा करने लगे हैं. कोई नहीं जानता क्यों."

मोर से पांच किमी पश्चिम मेकरा गांव में जो अगड़ी जातियों के दुश्मन माने जाने वाले संपन्न यादवों का है. यहां के 50 वर्षीय विदेश्वरी राय भी उतने ही चिंतित हैं जितने कि कपिलदेव प्रसाद सिंह. वे कहते हैं, "मंडल रिपोर्ट के बारे में हम उतना ही जानते हैं जितना हमने सुना है. वह यह कि नौकरियों में पिछड़ी जातियों को आरक्षण मिलेगा. मेरा मानना है कि नौकरी उन्हीं लोगों को मिलेगी जो परीक्षा में पास होंगे. फिर इतनी नफरत क्यों ?"

नवादा जिले के हसुआ प्रखंड के इंका अध्यक्ष, 55 वर्षीय भूमिहार नरेश प्रसाद सिंह बहुत आतंकित हैं, "मैंने अपने परिवार को सुरक्षित जगह पर पहुंचा दिया है क्योंकि इस क्षेत्र में जाति युद्ध शुरू हो गया है. इस कस्बे के 50 दूसरे परिवार भी अपने घरों में ताले डालकर और कहीं चले गए हैं. यह नेताओं द्वारा जानबूझकर पैदा किए गए जातीय उन्माद का नतीजा है. इन राजनीतिकों ने लोगों को यह भी नहीं बताया कि मंडल रिपोर्ट उनके ग्रामीण जीवन को कैसे बदल देगी."

पटना, बेगूसराय, पूर्णिया, मधेपुरा, सहरसा, नवादा, जहानाबाद, वैशाली, सारन और मुजफ्फरपुर के असंख्य पुरवों और कस्बों की तरह मोर, मेकरा और हसुआ भी एक ही तरह के तूफान की चपेट में हैं. इन सभी जगहों पर हो रही जातीय झड़पें युद्ध का रूप ले सकती हैं.

मोर के पूर्व जमींदार उमेश प्रसाद सिंह, जो भूमिहार हैं, अविवेकपूर्ण हिंसा की निंदा करते हुए फलसफाना अंदाज में कहते हैं, "लोगों को अभी यह एहसास नहीं है कि मंडल रिपोर्ट का मकसद पिछड़ों या अगड़ों को लाभ पहुंचाना नहीं बल्कि गांवों के परंपरागत समाज को तोड़ना और नष्ट करना है."

हिंसक विरोध लाइलाज कैंसर की तरह अब उत्तर भारत के शहरों और कस्बों से होता हुआ गांवों तक जा पहुंचा है और इसने पड़ोसी को पड़ोसी का, दोस्त

मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव के आरक्षण संबंधी उग्र बयानों के कारण राज्य भर में दो सशक्त जातियों—यादवों और भूमिहारों के बीच प्रेत युद्ध-सा छिड़ गया है

पटना की सद्भावना रैली में लालू प्रसाद यादव

कृष्ण मुरारी किशन

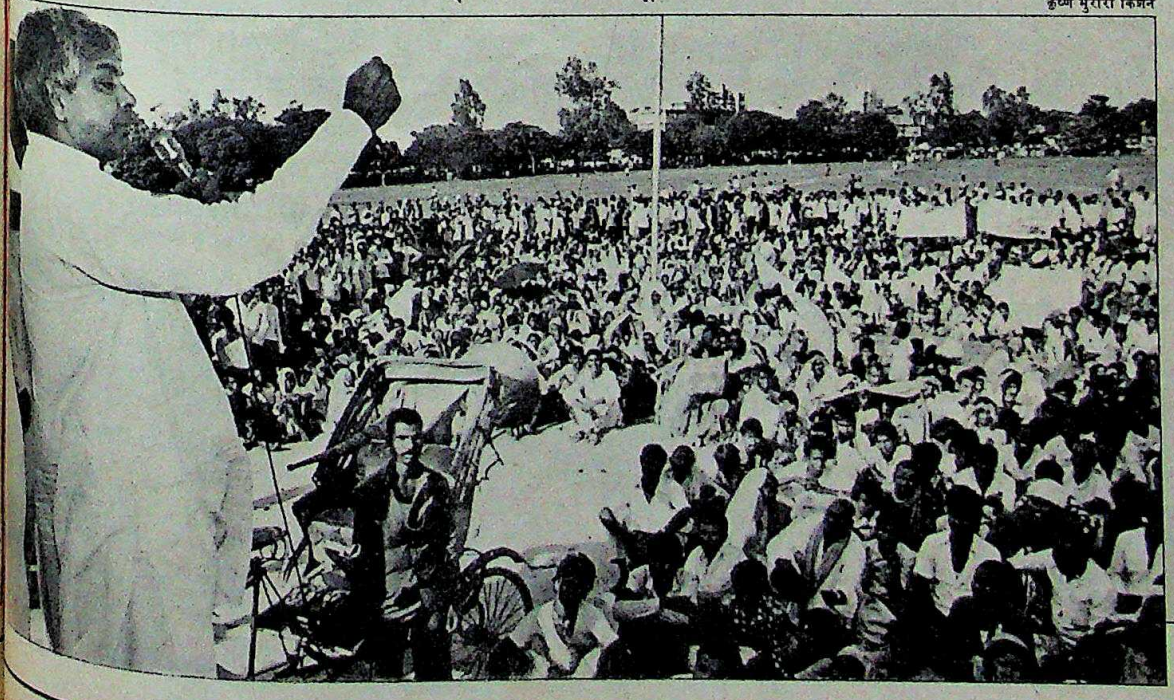

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को दोस्त का दुश्मन बना दिया है. इक्के-दुक्के विरोधी ही यह ठीक-ठीक जानते हैं कि वे किसलिए लड़ रहे हैं. पटना के वरिष्ठ पुलिस अधिकारी कहते हैं, "मंडल रिपोर्ट की सिफारिशों को जाने-समझे बिना ही निरक्षर और अर्धशिक्षित लोग एक-दूसरे के खिलाफ तन गए हैं."

मौजूदा स्थिति को देखते हुए लगता है कि अगड़े और पिछड़े दोनों ही आपसी वैर-भाव को दूर करने के मूड में नहीं हैं. राज्य में फैले इस तनाव के लिए बिहार के मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव भी कुछ जिम्मेदार हैं. उन्होंने यादवों को भूमिहारों के खिलाफ लड़ाई के लिए बेमतलब ही बार-बार उकसाया है. नतीजतन, भूमिहार भी मैदान में आ गए हैं.

"मंडल रिपोर्ट के बारे में हम इतना ही जानते हैं कि इससे नौकरियों में पिछड़ों को आरक्षण मिलेगा. पर नौकरी उन्हें ही मिलेगी जो परीक्षा में पास होंगे. फिर इतनी नफरत क्यों?"

बिंदेश्वरी राय, यादव जमींदार

सैबल दास

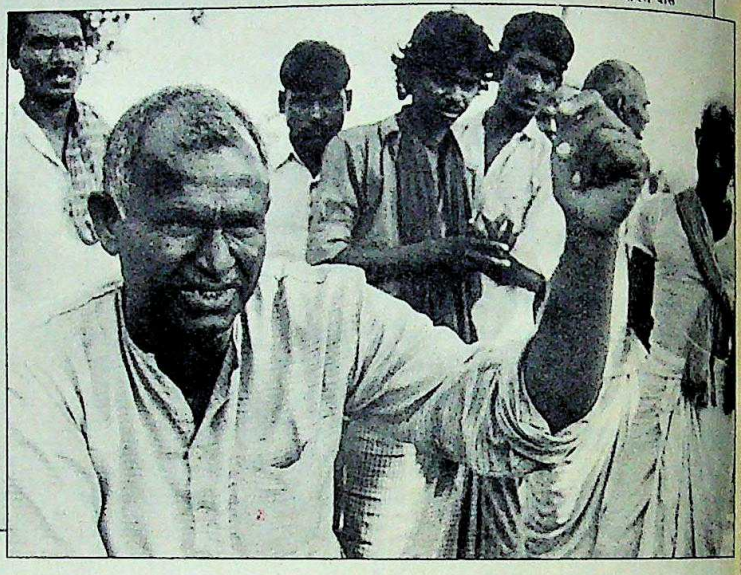

प्रेक्षकों का मानना है कि जातीय युद्ध के बीज 4 सितंबर को पटना में हुई आरक्षण विरोधी रैली में बोए गए. इसमें मुख्यमंत्री की जमकर आलोचना की गई. लेकिन लालू ने पीछे हटने से इनकार कर दिया और यह कहते हुए जबानी हल्ला बोल दिया कि यदि आरक्षण विरोधियों ने अपना जेहाद वापस नहीं लिया तो जबरदस्त जवाबी कार्रवाई शुरू हो सकती है. और ठीक वही हुआ भी.

फिर 10 सितंबर को आरक्षण विरोधियों ने भारत बंद का आह्वान किया. नवादा जिले के हसुआ में इंका विधायक आदित्य नारायण सिंह ने, जो गरम मिजाज वाले भूमिहार हैं, मुख्यमंत्री के खिलाफ जहर उगलना शुरू कर दिया. इससे भीड़ पर जुनून सवार हो गया और उसने एक बैंक सहित कुछ इमारतों पर हमला कर दिया. रैली में शामिल कुछ लोगों ने गोली भी चला दी जिससे दो अगड़े और दो पिछड़े मारे गए. इस वारदात से अगड़े और पिछड़े पूरी तरह से एक-दूसरे के दुश्मन बन गए. अब लगता है उनके बीच की खाई को कोई समझदारी भरा राजनैतिक कदम भी नहीं पाट पाएगा.

दरअसल हसुआ बाजार मैदाने जंग बन गया. यहां पिछड़ी जातियों के दुकानदारों का प्रभुत्व है और उन्होंने अगड़ों के खिलाफ 'आर्थिक नाकेबंदी' कर दी. इंका नेता के. डी. सिंह कहते हैं कि बलियारी, बैद्यनाथपुर और बजरामोर गांवों में अगड़ी जातियों के लिए कई दुकानों के खोले जाने पर ऐसा किया गया. भारत बंद का जो निष्ठुर नतीजा सामने आया वह एकदम दिल दहला देने वाला था.

लेकिन 8 अक्तूबर को पटना में हुई आरक्षण समर्थक 'सद्भावना रैली' से तो पानी सिर से ही गुजर गया. मुख्यमंत्री लालू यादव रैली के पहले कई दिनों से पिछड़ों के एकमात्र पैरोकार के रूप में अपनी स्थिति मजबूत करने में लगे थे. बताया जाता है कि उनके जाति भाई जोर-जबरदस्ती से समर्थन जुटाने में लगे हुए थे. उधर, अगड़ी जातियों ने 'जनता कर्फ्यू' लगाकर रैली समर्थकों को रोकने का फैसला किया.

"लोगों को अभी यह एहसास नहीं है कि मंडल रिपोर्ट का मकसद किसी को लाभ पहुंचाना नहीं बल्कि गांवों के परंपरागत समाज को तोड़ना है"

उमेश प्रसाद सिंह, भूमिहार जमींदार

सैबल दास

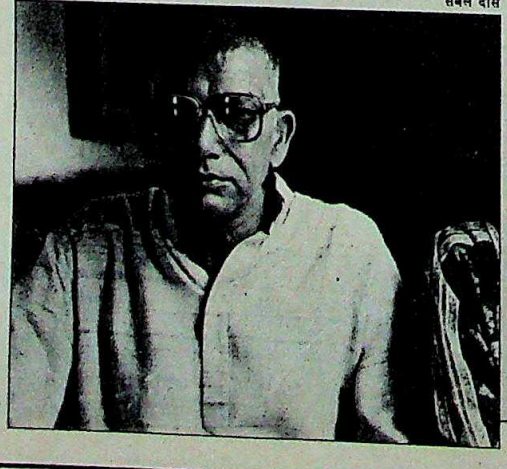

प्रेक्षकों के अनुसार, राजनैतिक ताकत के प्रदर्शन की इस लड़ाई में मुख्य भूमिका उत्तर बिहार के मधेपुरा जिले के सिंघेश्वर निर्वाचन क्षेत्र से खतरनाक निर्दलीय विधायक राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव की थी. कई आपराधिक मामलों से लदे पप्पू मुख्यमंत्री का वरदहस्त होने के कारण गिरफ्तारी से बचते रहे हैं. उन्होंने 8 अक्तूबर की रैली में खगड़िया, बेगूसराय, और मोकामा के गुंडा गिरोहों के साथ शामिल होने की कोशिश की.

मेकरा गांव के यादव बिंदेश्वरी राय के अनुसार ऐसी अफवाहों के बाद हिंसा फैल गई कि पप्पू यादव और उनके समर्थकों को इनियार, हर हर महादेव चौक, बीहड़, बेगूसराय और मोकामा के पास के भूमिहारों के गांव सेओनार में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आंखों की सुरक्षा के लिये सर्वाधिक विश्वसनीय

श्वाबे की

सिनेरेरिया मैरिटिमा

जर्मन होम्योपैथिक औषधि

कोई साइड इफेक्ट नहीं

आंखों के कोर्निया और लैंस को पूर्ण सुरक्षित रखती है। इसलिये विश्व भर के नेत्र विशेषज्ञ व डॉक्टर आंखों को स्वस्थ व सुन्दर बनाए रखने के लिये सिनेरेरिया मैरिटिमा इस्तेमाल करने की सलाह देते हैं।

SCHWABE

श्वाबे सिनेरेरिया मैरिटिमा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोका गया. स्थानीय कृषि साख समिति के अध्यक्ष 60 वर्षीय रामाश्रय सिंह कहते हैं, "सेओनार के युवकों ने रैली के पहले वाली रात को कर्फ्यू लगा दिया था. पप्पू यादव दल-बल के साथ आए. उनके साथ हथियारबंद लोगों से भरी लगभग 60 बसें थीं. सड़क बंद होने के कारण वे पेट्रोल पंप पर रुकीं. पप्पू के समर्थक बसों से निकलकर भूमिहारों को गालियां देने लगे. यहां तक कि उन्होंने अंधाधुंध गोलियां भी चलानी शुरू कर दीं."

उसी गांव के रामपदार्थ सिंह कहते हैं, "पप्पू यादव के आदमियों ने गांव को लूटने का फैसला कर लिया था. लेकिन गांववालों ने उसकी उसी कार में आग लगा दी जिसमें वह करेंसी नोट और हथियार ले जा रहा था. उसने एक थाने में शरण ली. अगर गांव का एक भी आदमी मारा जाता तो वह जिंदा नहीं बचता." पप्पू को हिरासत में लिए जाने के बदले सीमा सुरक्षा बल द्वारा पटना ले जाया गया और वहां छोड़ दिया गया.

राज्य पर नियंत्रण खोने के भय से सरकार ने पटना और बड़हिया के बीच 150 किमी के दायरे में सामूहिक जुर्माना लगाने का फैसला किया. इससे स्थिति काबू में नहीं आई. दरअसल, सीमा सुरक्षा बल को संवेदनशील गांवों के चारों तरफ घेरा डालना पड़ा और कई इलाकों में जल्दबाजी में शांति समितियां भी बनाई गईं. फिर भी कोई लाभ नहीं हुआ. आतंक इतना बढ़ा कि वैशाली जिले के कुछ गांवों ने जमीन बेचकर हथियार जुटाने का फैसला कर लिया.

हालांकि जातीय युद्ध मंडल रिपोर्ट के कारण शुरू हुआ है लेकिन यादव-भूमिहार दुश्मनी की जड़ें काफी गहरी हैं. इसकी मुख्य वजह यह है कि मध्यवर्ती जातियों में बहुसंख्यक यादव, और ब्राह्मणों की उपजाति भूमिहार जमीन खरीदने पर बहुत अधिक जोर देते रहे हैं. समाज विज्ञानी सैबल गुप्त के अनुसार, यादवों को अधिक से अधिक दबाया गया था क्योंकि वे जमींदारों के बंटाईदार थे. इन जमींदारों में ज्यादातर ठाकुर और भूमिहार थे. 1885 में जब बिहार बंटाईदारी कानून लागू हुआ तो जमींदारों ने उन्हें उत्पीड़ित करना शुरू कर दिया.

इसकी प्रतिक्रिया में यादवों ने भी ताकत जुटानी शुरू कर दी और अपना सामाजिक दर्जा बढ़ाने के लिए एक अनूठी रणनीति अपना ली. वह यह कि उन्होंने जनेऊ पहनना शुरू कर दिया. अवकाश प्राप्त आईएएस अधिकारी और पिछड़ी जातियों के आरक्षण के कट्टर समर्थक यू.एन. सिन्हा याद करते हैं कि जब यादवों ने जनेऊ पहनना शुरू किया तो उन्हें पीटा गया. कई तो मारे भी गए. लेकिन हिंदी क्षेत्र में सामाजिक मान्यता की असली लड़ाई '50 के दशक में मुख्य रूप से समाजवादी आंदोलन के कारण शुरू हुई. और जब जमींदारी प्रथा खत्म हो गई तो यादव प्रमुख सामाजिक ताकत के रूप में उभरे. सामाजिक ताकत के साथ उनकी राजनैतिक महत्वाकांक्षा भी बढ़ी. यह महत्वाकांक्षा उस समय फलीभूत हुई जब बिंदेश्वरी प्रसाद मंडल देश के पहले यादव मुख्यमंत्री बने. बाद में उन्होंने पिछड़ों के लिए आरक्षण का सुझाव देते हुए जो रिपोर्ट दी उसने अगड़ी जातियों को आशंकित कर दिया.

अपनी ताकत कम हो जाने पर भूमिहार गांव छोड़कर शहरों की तरफ बढ़ने लगे और सरकारी नौकरी तथा डिग्री हासिल करने पर ध्यान देने लगे. उनका मानना है कि मंडल रिपोर्ट से इन अहम क्षेत्रों के दरवाजे उनके लिए बंद हो जाएंगे. सो, वे आखिरी लड़ाई के लिए तैयार हो गए हैं.

इस तरह बिहार में जातीय युद्ध सामाजिक हैसियत बढ़ाने का युद्ध है. जाहिर है, मंडल रिपोर्ट को लागू करने के फैसले ने ग्रामीण बिहार में खतरनाक जातीय युद्ध के बीज बो दिए हैं.

कृष्ण मुरारी किशन

सैबल दास

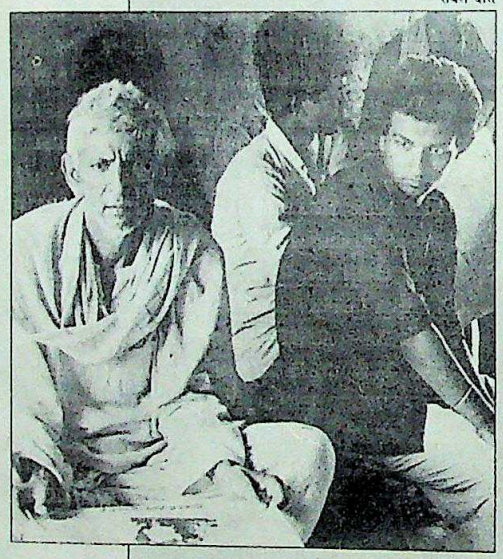

(ऊपर) पप्पू यादव (एकदम दाएं) अपने समर्थकों के साथ; और (नीचे बाएं) रामाश्रय सिंह

"सद्भावना रैली से पहले वाली रात पप्पू यादव दल-बल के साथ आए. उनके साथ हथियारबंद लोगों से भरी 60 बसें थीं... वे भूमिहारों को गालियां देने लगे. यहां तक कि उन्होंने अंधाधुंध गोलियां भी चलानी शुरू कर दीं"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सैलानियों का संकट

अगला साल 'भारत दर्शन वर्ष' घोषित किए जाने के साथ सरकार दिक्कतों के बावजूद धुआंधार प्रचार अभियान के जरिए विभिन्न प्रकार के विदेशी और देसी पर्यटकों को रिझाने की कोशिश में

भारत आने वाले विदेशी पर्यटकों को भारत के बारे में एक बात बहुत अच्छी लगती थी. वह यह कि उन्हें यहां के पर्यटन स्थलों के बारे में माथापच्ची नहीं करनी पड़ती थी. ताजमहल, दिल्ली के ऐतिहासिक स्मारक, जयपुर और उदयपुर के राजमहल, बनारस के घाट, और बहुत हुआ तो कश्मीर और गोवा—इतनी जगहों के बारे में तो निश्चित होते ही थे. मुट्ठी भर उत्साही पर्यटक अपने थैले उठाकर हिमालय को भी नापने निकल पड़ते थे. प्रायः इन पर्यटकों का दक्षिण भारत के नक्काशीदार मंदिरों, मध्य प्रदेश के जंगलों, राजस्थान के बालू के टीलों और केरल की शांत नदियों की तरफ ध्यान ही नहीं जाता था.

लेकिन अब भारत दर्शन की इस पुरानी मान्यता को पूरी तरह से बदलने की कोशिश की जा रही है. पर्यटन विभाग खर्चीले प्रचार अभियानों के जरिए भारत के असंख्य गौरव स्थलों, सुनहरे समुद्र तटों, पशु-पक्षियों से भरे अभयारण्यों, शांत पहाड़ी क्षेत्रों, ऐतिहासिक बौद्ध स्थलों और यहां की सदियों पुरानी संस्कृति की तरफ पर्यटकों का ध्यान खींचने की कोशिश कर रहा है.

इसी अभियान के तहत अमेरिका और यूरोप में ट्रैवल एजेंटों को पटाने के लिए संगोष्ठियां की जा रही हैं. खाद्योत्सव के जरिए यूरोपवासियों को भारतीय व्यंजनों के प्रति रिझाया जा रहा है, और यूरोप की नामी-गिरामी दुकानों में भारतीय हस्तशिल्प की वस्तुएं बेची जा रही हैं. यही नहीं, सरकार ने होटलों, चार्टर विमानों और पर्यटन उद्योग के कई नियमों को भी उदार बना दिया है. वर्ष 1991 को 'भारत दर्शन वर्ष' के रूप में मनाया जाएगा. इसके शुरू होते ही यह अभियान चरम पर पहुंच जाएगा. पर्यटन महानिदेशक बी.के. गोस्वामी कहते हैं, "इसका मकसद 90 के दशक में अधिक से अधिक विदेशी पर्यटकों को भारत आने के लिए प्रेरित करना है."

यह विचार तो सराहनीय है लेकिन समय गलत चुना गया है. कश्मीर में चल रही गड़बड़ियों ने उसे एक तरह से देश के प्रमुख पर्यटन स्थलों से अलग कर दिया गया है. खाड़ी संकट और उससे दुनिया भर में बिगड़ी आर्थिक स्थिति से भारत आने वाले पर्यटकों की संख्या घटेगी. यही नहीं, देश के कई हिस्सों में फैली गड़बड़ी के कारण भी विदेशी पर्यटक भारत आने के पहले दो बार सोचेंगे. वेलकम समूह के होटलों के अध्यक्ष वाई.सी. देवेश्वर कहते हैं, "इन समस्याओं की कल्पना किसी ने नहीं की थी. अगले वर्ष पर्यटन पर इनका बुरा असर पड़ेगा." वैसे, इन समस्याओं का असर पड़ना शुरू भी हो गया है. इस साल की पहली छमाही में पर्यटकों की संख्या में 5.3 फीसदी की वृद्धि हुई जबकि पिछले साल इसी अवधि में 7.2 फीसदी की वृद्धि हुई थी. लेकिन इन समस्याओं के बावजूद पर्यटन विभाग ने अपने अभियान में मंदी

भवान सिंह

नई योजना के अंतर्गत भारत को साहसिक पर्यटकों के स्वर्ग के रूप में पेश किया जा रहा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम, भारत के लो
पूर्वपीठिका पर सं

हम अपने सुंदर देश
इसकी पर्वत श्रृंखला
समुद्र

इसके
इसकी

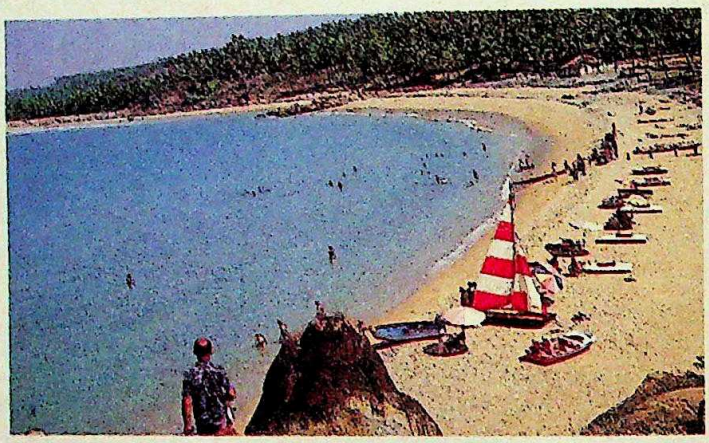

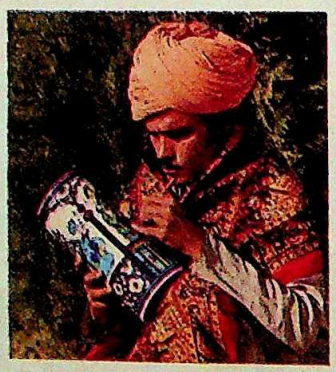

मनोरम पर्वतीय सैरगाह गहमागहमी वाले महानगर ऐतिहासिक नगर विभिन्न वन्यजीवों से जीवंत राष्ट्रीय उद्यान. मछली मारने के लिए एकांत गांव सूरज की तेज किरणों से चमचमाते रेतीले समुद्रतटीय शहर. यानी भारत एक अद्‌भुत फंतासी लोक की तरह है. आइए, इसके अपूर्व, अविश्वसनीय संदर्भ का आनंद लीजिए.

पर्यटन वर्ष 1991 में, आइए हम पर्यटन के लक्ष्य

भारत
पर्यटन वर्ष 1991

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोटन वर्ष 1991 की
र संते हैं कि------

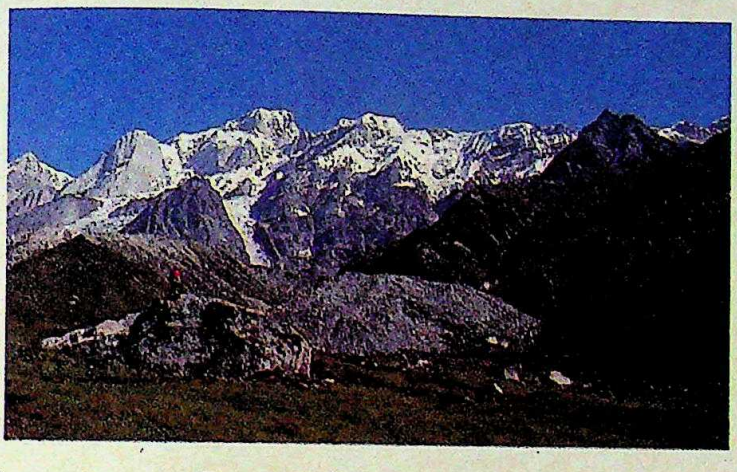

र देश
खलाके
मुद्र
सके गें,
सकी, इसकी संस्कृति और
इन सबके ऊपर इसके
निवासियों को
फिर जानने-समझने का
प्रयत्न करेंगे."

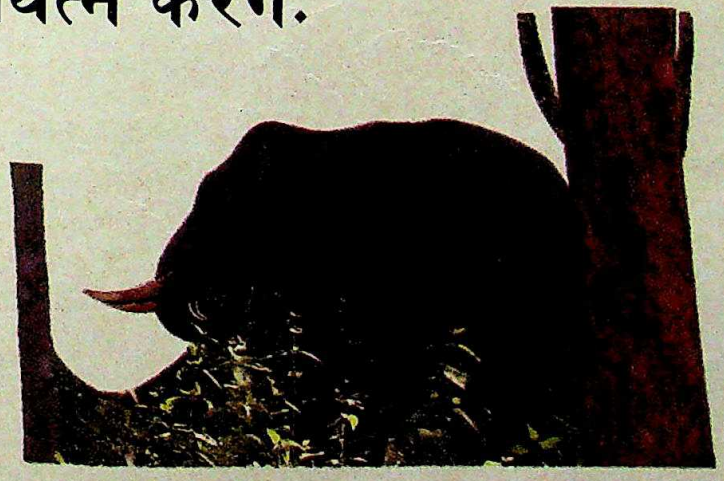

पर्यटन के लक्ष्य के प्रति पुनर्समर्पित हो जाएं.

पर्यटन विभाग
भारत सरकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं आने दी है. गोस्वामी कहते हैं, "शुरुआत जरूरी है, नहीं तो बहुत देर हो चुकी होगी."

पर्यटन विकास के मामले में भारत बहुत पीछे है. दुनिया भर के पर्यटकों में से केवल 0.3 फीसदी ही भारत आते हैं. यह आंकड़ा 80 के दशक से स्थिर है. 1970 के 2,81,000 के मुकाबले 1989 में यहां 13 लाख पर्यटक आए. फिर भी यह संख्या मलेशिया (इस वर्ष की प्रथम छमाही में वहां 36.70 लाख पर्यटक आए) या थाईलैंड (पिछले साल वहां 48 लाख पर्यटक आए) में आने वाले पर्यटकों से कम ही है. भारत इस शताब्दी के आखिर तक साल में महज 30 लाख पर्यटकों के आगमन की उम्मीद बांधे हुए है. भारत में पर्यटन की स्थिति कितनी निराशाजनक है, यह इसी बात से समझी जा सकती है कि मलेशिया जैसा देश, जो 1970 में पर्यटन के मामले में भारत से काफी पिछड़ा हुआ था, आज उससे आगे है.

भारत सरकार की शर्तों ने हमारे लिए अवसर के दरवाजे लगभग बंद कर दिए"

एलन बर्नेट

प्रबंधक, ब्रिटिश एअरवेज

फिर भी इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि आखिरकार सरकार पर्यटन के, जिससे देश को सबसे अधिक विदेशी मुद्रा मिलती है, विकास के प्रति जागरूक हो गई है. पिछले साल सरकार ने कई रियायतों की घोषणा की. पर्यटन उद्योग को कर योग्य आय में से अपनी विदेशी मुद्रा आय का 50 फीसदी अलग कर लेने की छूट दी गई, कम ब्याज दरों पर ऋण मुहैया कराए गए और पिछड़े इलाकों के होटलों को रियायतें दी गईं. पर्यटन संचालकों को शुल्क की कम दरों पर 200 लक्जरी कारें और बसें आयात करने की इजाजत दी गई. वीसा के नियमों को सरल बनाया गया, अधिक जगहों पर चार्टर विमानों के संचालन की अनुमति दी गई और 15 कंपनियों को एअर टैक्सियों के संचालन के लिए अनापत्ति प्रमाणपत्र दिए गए. सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि हवाई अड्डों और सीटों की संख्या पर लगे पिछले प्रतिबंध को उठा लिया गया.

इन रियायतों के अच्छे नतीजे भी निकलने शुरू हो गए हैं. भारत आने वाले अमेरिकियों और यूरोपियनों से भरे चार्टर विमानों की संख्या बढ़ गई है. पांच साल पहले इस तरह की केवल 24 उड़ानें थीं जबकि इस साल सरकार ने इस तरह की 170 उड़ानों को मंजूरी दी है.

इतना सब ही नहीं किया जा रहा. होटल कंपनियां पर्यटकों के लिए नए होटल बना रही हैं और पुराने होटलों का विस्तार कर रही हैं. अगले 18 महीनों में पर्यटकों के लिए 20,000 नए कमरे तैयार हो जाएंगे. विदेशी होटल समूह भी पीछे नहीं हैं. सरकार ने जब से इन्हें भारी शेयर खरीदने और प्रबंधकीय नियंत्रण में छूट देने का फैसला किया है, तब से ये भारतीय बाजार में पैर जमाने की कोशिश कर रहे हैं.

और अधिक पर्यटक स्थल खोलने के साथ भिन्न किस्म के पर्यटकों को आकर्षित करने की भी कोशिश की जा रही है. पर्यटन के अतिरिक्त महानिदेशक जे. सान्याल कहते हैं, "हम भारत को खरीदारी के स्वर्ग, उत्साही पर्यटकों के लिए आदर्श स्थान और सम्मेलनों के लिए बेहतरीन जगह के रूप में पेश कर रहे हैं. इन श्रेणियों के पर्यटक सामान्य पैकेज टूर वाले यात्रियों के मुकाबले अधिक खर्च करते हैं."

प्रदीप मंधानी/फोटोमीडिया

सुनहरे समुद्र तटों और अछूते समुद्र तटीय इलाकों को सैरगाह के रूप में विकसित किया जा रहा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नया टचलाइट स्टेयरिंग हल्के से हल्के स्पर्श का कहना माने। शहर की भीड़-भाड़ से दूर जाते हुये टेढ़े-मेढ़े मोड़ मुड़ने की आसानी।

सैडर नोवा घूमने-फिरने ारों को बेहद पसंद आएगी

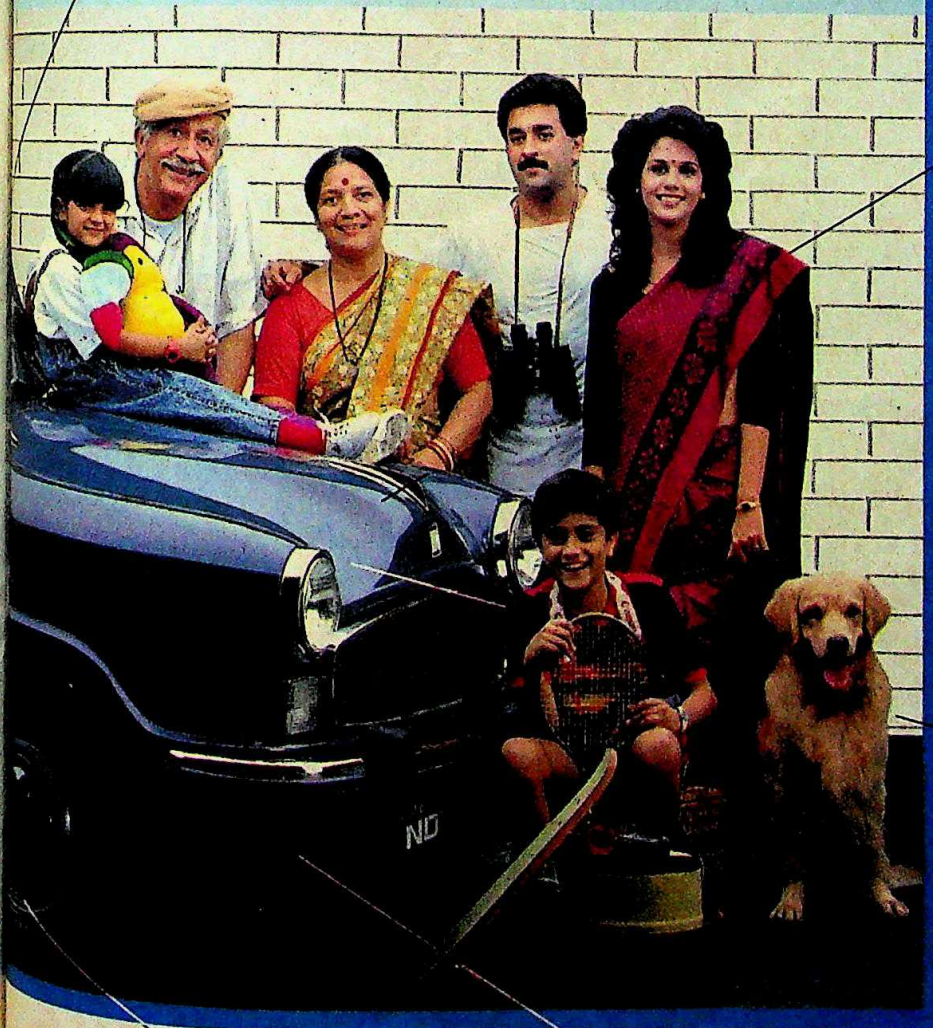

मेन्टेन करने की बेहद आसानी, चाहे शहर में हों चाहे दूर-दराज़ हिल स्टेशन पर।

ठोस इस्पाती दीवार आपके नन्हें-मुन्नों का पूरा संरक्षण करे। टीन के डिब्बों से लाख दर्जे बेहतर।

नए ईज़ीशिफ़्ट क्लच से गेयर बदलना बाएं हाथ का खेल। पिकनिक के मूड में कोई ख़लल नहीं।

नए डबल सेफ़्टी ब्रेक आपको दें दोहरी सुरक्षा, ज़्यादा नियंत्रण। शरारती बच्चे सड़क पर दौड़ लगाएँ, तो भी कोई फ़िकर नहीं।

ContractHMA.22321 HIN C

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

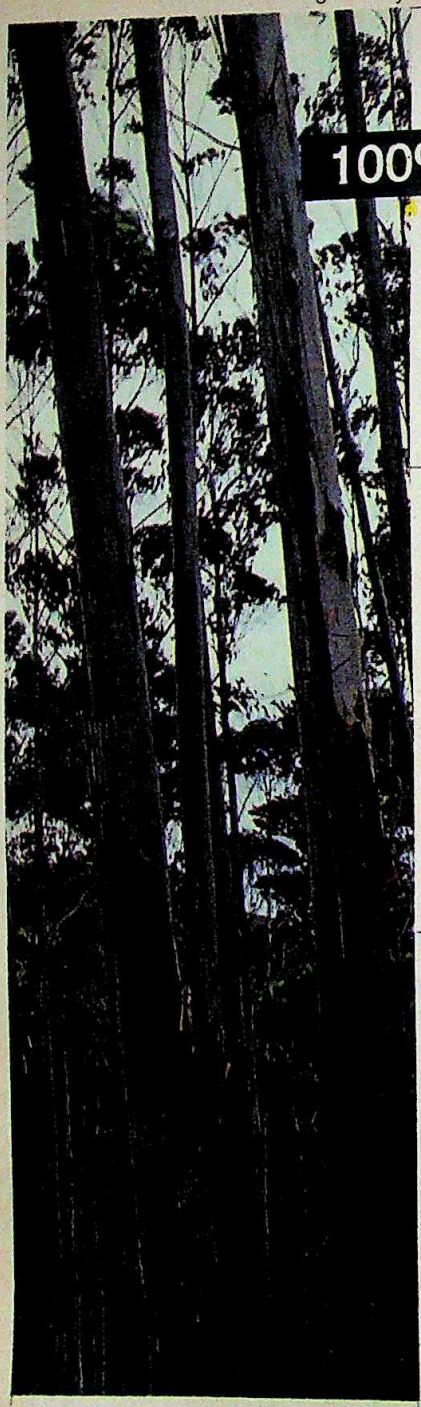

100% Nature...

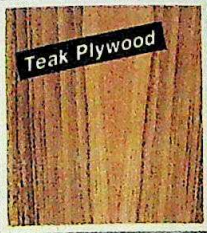

100% Natural

Velvet ply

DECORATIVE PLY

This exclusive range of natural Decorative Ply is ideal for interiors and furniture. Velvet Ply creates the touch of sophistication and natural elegance you deserve. Exclusive textures, grains and subtle shades – each in a class of its own.

Add life to your style!

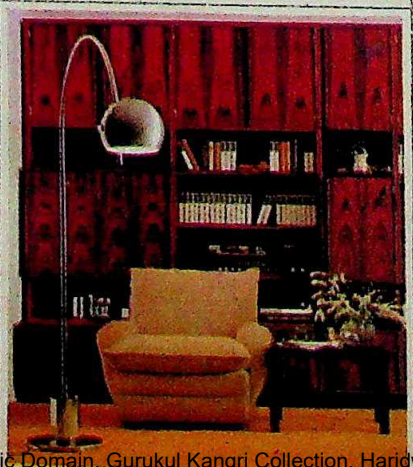

A Kitply PRODUCT

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकार साइकिल पर

खुदा का लाख-लाख शुक्र है कि सद्दाम साहब जैसे इंकलाबी इंसान दुनिया-जहान में तशरीफ लाए. जो क्रांति कार्ल मार्क्स कम्युनिज्म के जरिए नहीं अंजाम दे पाए, उन्होंने चुटकी बजाते कर दी. तेल के अकाल से अब यह हाल है कि सब विकासशील देश समता और समाजवाद की ओर अग्रसर हैं. पहले जो काला अफसर शोफर-ड्रिवन कार में इधर-उधर फुर्र होते थे, आज शोफर-ड्रिवन साइकिल की खोज में हैं. हमारे दोस्त बिहारी उत्सुकता जताते हैं—

"साइकिल तो सब खुद ही चलाते हैं. उसके लिए ड्राइवर की क्या दरकार!"

"बिना पियुन के अफसर कैसा, दुम बगैर बंदर के जैसा", हमने आशु कविता कर डाली.

"आपकी तुकबंदी का साइकिल और उसके सारथि का क्या ताल्लुक!"

"भला अधिकारी भी जाने आप कुछ करता है क्या! शोफर साइकिल मेंटेनेंस करेगा, साहब कैरियर में डटेगा, चपरासी फाइलें कैरियर के डंडे पर. हैसियत के अनुरूप कुछ साइकिलों में घंटी फहराएगा, कुछ में हॉर्न शोर मचाएगा."

"इस सब तामझाम से तो वे बाकी साइकिलवालों से सुपीरियर हो जाएंगे."

"पांचों उंगलियां बराबर कहां होती हैं. सत-प्रतिशत पिछड़ों का रिजर्वेशन तो मंडल कमीशन में भी नहीं है. जाटों से ज्यादा 'बैकवर्ड' कतई छूट गए हैं!"

"यूं तो यह काबिलेगौर है. फिलहाल देश बढ़ते भाव और अभाव की खासी चिंता और समानता है. पहले कुछ दाल-रोटी खाते थे, कुछ नमक-रोटी! अब रोटी का यह आलम है कि अधिकांश को रोटी भी नसीब नहीं है. दिवाली में अक्सर अनियमित आतिशबाजी और दियों में पैसे जलते हैं. इस बार अक्ल आ ही गई. दिवाली बिलकुल काली रही. जैसे जात-पांत मंडल ने मिटा दी, रूढ़िवादी परंपराएं भी बदलेगा. समाज सुधार ऐसे ही तो होता है. समाज का नाम सुनते ही बिहारी चहके—"हमारे बिहार के एक ने वर्ण व्यवस्था का सफाया किया, दूसरे ने रंगभेद का."

"यह कौन-सी हस्तियां हैं," हमने चौंककर जानना चाहा.

"अरे! आप इतना भी नहीं जानते! बाबू भगवती प्रसाद जी मंडल और भारत रत्न नेल्सन मंडेला."

"मगर मंडेला तो साउथ अफ्रीका के नेता हैं."

"यही तो आपको खबर नहीं हैं. वह अपने सहरसा के नीलरतन मंडल रहे. जब विदेश गए तो अंग्रेजी सीखकर नेल्सन हो गए और मंडल से मंडेला."

"तो आपके अनुसार मंडेला मंडल के रिश्तेदार हैं!"

"और नहीं तो क्या! बगैर रिश्तेदारी एक बिहारी कभी दूसरे की तारीफ करता है क्या!"

हम चुप हो गए. बिहार-यूपी की उलझी रिश्तेदारियों को भगवान या उनका पंडा ही सुलझा सकता है. पर बिहारी चालू रहे, "जब तेल का इतना टोटा है तो नेता जनसेवा के लिए घुड़सवारी करें."

"थोड़ी-सी ट्रेनिंग ले लें. राष्ट्रपति के अंगरक्षक सजे-सजाए घोड़ों पर कितने शानदार लगते हैं! हमारे मंत्री भी जरूर फबेंगे."

"उनकी सिक्योरिटी का क्या होगा", हमने शंका जताई.

"हमारे लोकप्रिय मंत्रियों के मंडल को अपने बीच पाकर जनता खूब उनकी सेवा करेगी."

"कहीं दुर्घटना हो गई तो?"

"लोग ताली बजा-बजाकर कहेंगे, कि गिरते हैं शहसवार ही मंडल की राह में."

"कहीं उनके हाथ-पैर टूट गए तो?"

"तब देश जुड़ेगा. उनकी हमदर्दी में एका बढ़ेगा."

यूं आजकल वतन की सेहत का हाल बेहाल है. वजह जाहिर है. जब तक पेट्रोल की इफरात थी न कार का परिवार नियोजन हुआ न बेकार का. इधर आबादी बढ़ी, उधर हर दफ्तर में कारों की तादाद. रोजगार कार्यालयों में भीड़ दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति करती रही. हमने अपना सोच बिहारी को सुनाया, "तेल की कमी से मुल्क को बड़ा फायदा है."

रेखाचित्र: जयंतो

"कीमतें आसमान छू रही हैं. आपको फायदा सूझ रहा है."

"लोग पैदल या साइकिल पर चलेंगे. न पौल्यूशन रहेगा, न डाइबिटीज होगी, न नगर बसों से दुर्घटनाएं."

"आपका क्या खयाल है कि भूखे पेट साइकिल पर बैठने से इंकलाब आता है!"

"चीन को देखिए न! साइकिल पर बैठकर महाशक्तियों के मुकाबले आ गया."

"न हम चीन हैं, न जापान. हम तो हिंदुस्तान हैं."

यही तो दिक्कत है. गुलामी के दिनों में सरकार पैदल, घोड़े या साइकिल पर चलती थी. आजादी के बाद से हमारा तरीका आराम से काम का है. गांव की तरक्की तभी मुमकिन है, जब जिले में जीपों की संख्या दनादन बढ़ती रहे. गांव में बीज, बिजली, पानी, खाद पहुंचे न पहुंचे, उसकी रिपोर्ट राजधानी जरूर पहुंच जाए. पुलिस को पता है. चोरी-डकैती में इजाफे से उनका नाम रोशन होता है, जैसे रथयात्रा से राम का. सरकार अब सिर्फ हवाई जहाज या कार से चलती है. सद्दाम साहब की इनायत से समता और समाजवाद तो आ जाएगा. पर बिना तेल सरकार चली गई तो!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेअर बाज़ार में कमाई के गुर, बिना जोखिम.

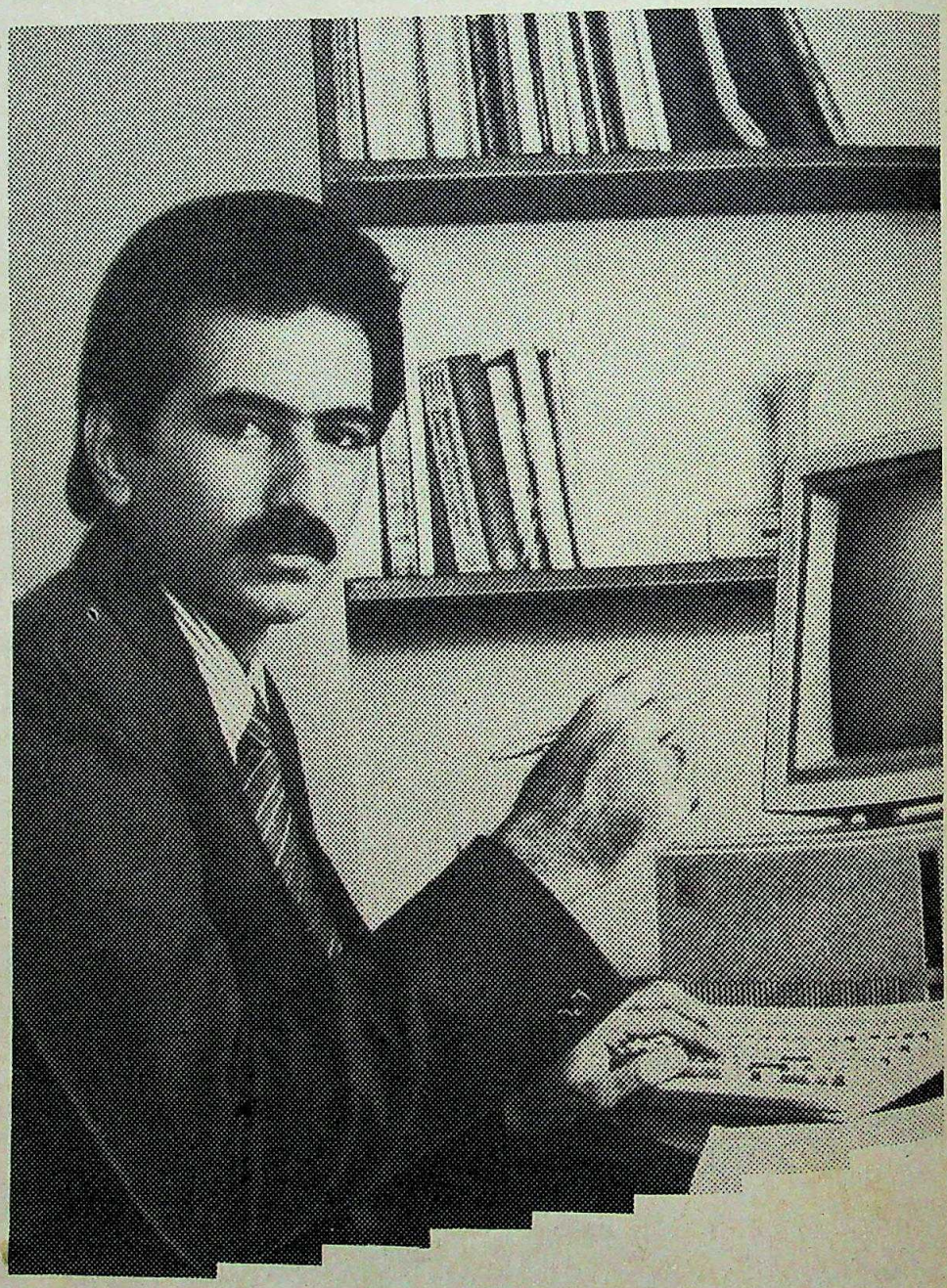

D:2436:HN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इश्यु खुल चुका है

अपनी पूंजी पर सुनिश्चित लाभ कमाइए, कम से कम जोखिम उठाइए, इंद ज्योति की सुरक्षा में आ जाइए. इंद ज्योति. बढ़ती और सुनिश्चित आय योजना. इसके अलावा साथ में बोनस भी.

योजना के आकर्षण

- इंद ज्योति, इंडियन बैंक म्यूचुअल फ़ंड की एक और लाभकारी योजना, जो इससे पूर्व इंदरत्ना और स्वर्णपुष्पा पेश कर चुके हैं.
- पूर्णतः सुरक्षित. साथ ही अधिक आय का पक्का वादा. पहले वर्ष 12.75% से बढ़कर 7वें वर्ष 15.25% की सुनिश्चित आय.
- साथ में बोनस भी.
- निश्चित एलॉटमेंट.
- एक वर्ष के बाद बम्बई तथा अन्य स्टॉक एक्सचेंजों में 'लिस्टेड' हो जाएगा.
- नवम्बर 15, 1990 से पहले के प्रारम्भिक निवेशकों के लिए विशेष प्रोत्साहन.

आवेदन पत्र इंडियन बैंक की सभी शाखाओं में उपलब्ध हैं और वहां स्वीकार भी किए जाएंगे.

न्यूनतम सुनिश्चित आय

वर्ष	आय	अवधि	
		आरम्भ	समाप्ति
1	12.75%	एलॉटमेंट तिथि	31.3.92
2	13.25%	1.4.92	31.3.93
3	13.75%	1.4.93	31.3.94
4	14.25%	1.4.94	31.3.95
5	14.75%	1.4.95	31.3.96
6	14.75%	1.4.96	31.3.97
7	15.25%	1.4.97	31.3.98

दो योजनाएं, जिनमें से आप कोई भी एक चुन सकते हैं.

योजना अ: प्रतिवर्ष एक सुनिश्चित आय

योजना ब: प्रतिवर्ष घोषित सुनिश्चित आय आपके निवेश में जोड़ दी जाएगी तथा कुल जमा राशि योजना के अंत में अदा कर दी जाएगी.

IND JYOTHI

7 वर्षीय बढ़ती आय योजना

इंद ज्योति
जीवन में ख़ुशियों की ज्योति

इंडियन बैंक
म्यू चु अ ल फ़ं ड
प्रधान ट्रस्टी: इंडियन बैंक
डी.जी. चैंबर्स, नानक मोटवानी मार्ग, फ़ोर्ट, बंबई - 400 023.
आपकी समृद्धि में सहायक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गंगा प्रसाद विमल

वे आ गए हैं

'अकहानी' के प्रवर्तकों में गिने जाने वाले गंगा प्रसाद विमल के अब तक चार उपन्यास और सात कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं. इनमें से कई रचनाएं दूसरी भाषाओं में भी प्रकाशित हुई हैं. प्रस्तुत कहानी बदलती पीढ़ियों के साथ बदलते नजरिए पर एक टिप्पणी है.

कॉफी हाउस की मेज पर कोई गुलदस्ता छोड़ गया था. फूल तरोताजा थे. दिन ऐसे थे कि जब फूल-पत्ते जल्दी से मुरझाते नहीं थे. कोई भी उन्हें देख कह सकता था जैसे अभी-अभी तोड़कर लाए गए हों. मुझे तो उनमें से कई फूलों के नाम भी नहीं मालूम थे. मैं कब, कैसे उस मेज पर आकर जम गया था—इसके बारे में कुछ भी कहना कठिन था. मुमकिन है फूलों ने मुझे आकर्षित किया हो, मुमकिन है खाली जगह जानकर मैं उस ओर लपक आया. यह भी हो सकता है कि अनजाने में किसी सुविधा की वजह से ही मैं वहां पहुंचा. बहरहाल यह याद है कि मैं वहां पहुंचा था तो तब कॉफी हाउस काफी वीरान था. दोपहर को शौकिया गप्पें लड़ाने वाले लोग अभी वहां नहीं पहुंचे थे. वह जगह ऐसी थी कि मैं बाहरी दरवाजों से अंदर आने वालों को देख सकता था. यही नहीं, मैं बाहर भी देख सकता था और दरवाजे के उस खुलेपन में बाहर गुजरने वालों की भी एक झलक देख सकता था.

फूलों में ताजेपन की वजह से विचित्र आकर्षण था. उनके रंग भी अपनी ओर खींचते थे. यह अटकल लगाना कठिन था कि कौन, कब उन्हें वहां छोड़ गया. सफेदपोश कामगार ही कुछ बता सकता था. अभी मैं यह सोच ही रहा था कि कुछेक परिचित-अपरिचित चेहरे अंदर आने शुरू हो गए थे. कॉफी हाउस आने वालों का सिलसिला अब जारी हो चुका था.

हर आने वाले के चलने, सिर उठाने या सरकने की अपनी ही अदा होती है. शायद ही कभी दो आदमी ऐसे दिखें जो एक तरह से चलते हों. मैंने तो फौजी कवायद में भी, एक तरह की पोशाकें पहने, एक ही तरह की हजामत वालों के सामूहिक चलन में भी अक्सर पाया कि हरेक अपने ही ढंग से आगे बढ़ने में मस्त है.

तभी मुझे अपना हमउम्र अय्यर अंदर घुसता दिखाई दिया. वह सीधे मेरी ओर आया, पर बिना अभिवादन फूलों को देख बोला, "कितने अच्छे फूल हैं!" फिर मुझे देख बोला, "बस, मंदिर में देवमूर्तियों पर अर्पित किए जाने वाले फूलों की तरह पवित्र." बैठने से पहले उसने अपना सिर ऐसे झुकाया जैसे वह सचमुच मूर्तियों के आगे फूल फेंक रहा हो.

"तुम कहीं किसी पार्टी में जा रहे हो?" उसने सीधे मुझसे सवाल किया.

"नहीं तो."

"मैंने सोचा आज तुम किसी को गुलदस्ता भेंट करने जा रहे हो. कहां लिये फूल."

"ये मेरे नहीं हैं यार. न जाने कौन यहां छोड़ गया."

"पर हैं बहुत अच्छे." वह फूलों की उपस्थिति में बेहद विमुग्ध दीख रहा था. "थोड़ा विचित्र भी हैं."

"कैसे?"

"गुलदस्ते में मैंने कभी गेंदे के फूल नहीं देखे. किसी फूलवाले ने उन्हें यहां ऐसे टिका दिया है कि वे विलायती फूलों के

सभी रेखांकन: सुदेश

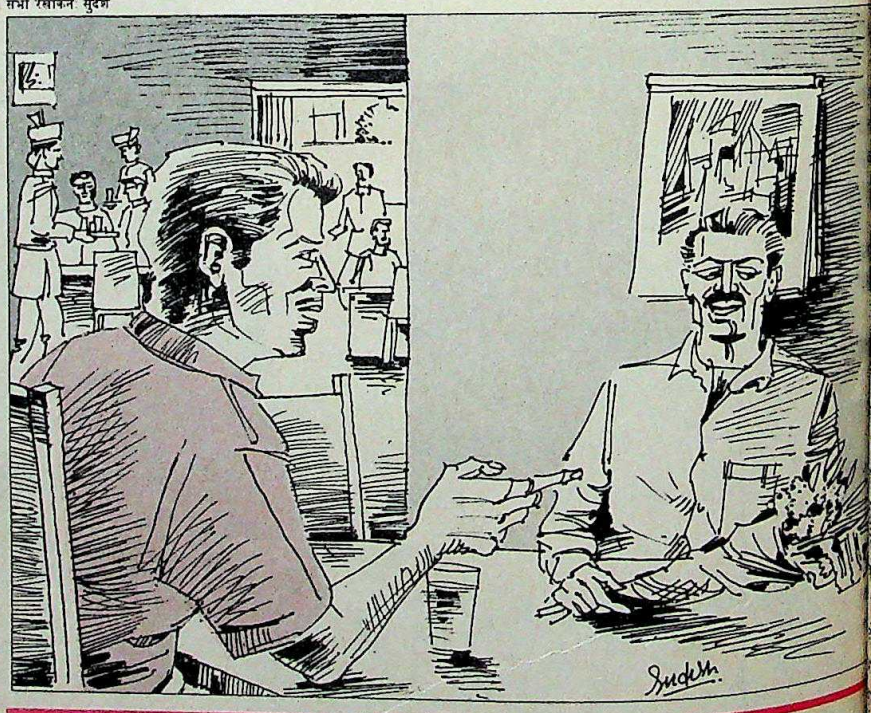

बहुत शालीन ढंग से उन्होंने हम से इजाजत ली और आसपास से कुर्सियां खींचकर बैठ गए. सलीके से बैठने के बावजूद उम्र की हड़बड़ी उनके हर काम में थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमजीत ने गुलदस्ते को अपनी ओर खिसकाया और लंबी टहनी खींच ली. फिर सहसा उसने मेरी ओर देखा और बोला—"सॉरी". टहनी से खिंचा फूल उसके पास आ गया था

वार के लगते हैं. अब तुम
कि नरगिस और जेस्मीन
ब गेंदे के फूल ऐसे लग रहे
ने विलायती पोशाकों के
साड़ी और बिंदी वाली
भारतीय अभिनेत्री हो."
हंसा, "तुम भी अय्यर हर
में अपना दक्षिण ले आते
अब ये फूल हैं, बस खिले हुए

तुम नहीं समझोगे," उसने
असहमति जताई और
स्ते को छेड़ने लगा. "गेंदे के
की अजब ही पावनता है. मैं
न में जब मंदिर जाता था
मेशा एक गेंदे का फूल
जी को अर्पित करता था
सफेद कनेर का फूल शिव
गेंदे का—वह भी लाल.
चता हूं वर्षों बाद मैंने फिर
गेंदे का इतना बड़ा फूल
है."

ास बरस पहले के अपने
न के कितने ही किस्से मैं
मे सुन चुका था.
, अच्छा अब तुम बचपन
लौटो. यह बताओ आज
खबरें क्या हैं."

मैं अभी दफ्तर पहुंचा ही
हूं?" वह बोला, "दोपहर में एक
ने मुझे खाना खिलाया. उसी से पता
कि शायद इस बार फिर रुपए का
सरकार घटा ले."

कहने ही वाला था कि मैं तो यह
पढ़ चुका हूं तभी सफेदपोश बेयरा आ
हुआ.

फूल कौन छोड़ गया यहां?" मैंने

तीन लड़कियां यहां बैठी थीं पहले.
फूल छोड़ गई हैं. ले जाऊं क्या?"
नहीं. रहने दो," अय्यर बोला,
कैसी थीं वे?"

लगा अय्यर बेहूदा सवाल पूछ रहा
बरजने के लिए मैंने कहा, "मंदिर के
फूलों की जगह तुम तो अब किसी
जैसे विवरण जमा करने लग

भीड़ बढ़ आई थी. हमारी मेज की
यों पर दो लोग और जम गए थे. वे
मे फूलों की बाबत ही पूछ रहे थे.
एक किस्सागो की तरह फूलों के साथ
पुराने-सी कथा बिनने लगा था. मैं
नहीं था. अय्यर के धार्मिक संस्कार
न के किसी कोने में सुंदरियों की
नी बलवती थी कि मैं उसे सड़क चलते सुंदरियों को ठिठककर ताकते देख चुका था. और कभी-कभी तो मजे लेने के लिए हम उसकी टांग भी खींच चुके थे.

कॉफी हाउस में दोपहर उतरते ही खासी भीड़ हो आती है. न जाने कहां से लोगों का सैलाब उस ओर उमड़ आता है. अय्यर उन दो जनों से अपनी काल्पनिक-सी गाथा में उलझा हुआ था कि तीन नौजवान और कहीं जगह से हमारी मेज की ओर चले आए थे. बेहद शालीन ढंग से उन्होंने हम से इजाजत ली और आसपास से कुर्सियां खींचकर बैठ गए. सलीके से बैठने के बावजूद उम्र की हड़बड़ी उनके हर काम में थी.

"तू क्या पियेगा?" एक ने दोनों को संबोधित किया. इधर-उधर नजर दौड़ाकर पूछने वाले लड़के ने आवाज दी, "वेटर...वेटर..."

"आ जाएगा...", सफेद बैगी पहने लंबा लड़का बोला, "हां, मोहिन फिर तुमने क्या तय किया?"

पहले वाले लड़के का नाम मोहिन था, मुझे पता चला. मैंने गौर से देखा. लड़के के चेहरे से यह अनुमान लगाना आसान नहीं था कि वह हिंदू या मुसलमान या क्रिस्तान है. हिंदुओं में भी वह ब्राह्मण था या कायस्थ, इसका निर्धारण भी कठिन था. बस मोहिन नाम से मुझे अंदाजा भर हुआ कि वह मुसलमान था.

उसने बेहतरीन अंग्रेजी में जवाब दिया, "मुझ पर दबाव है कि मैं परिषद की तरफ से खड़ा हो जाऊं."

अय्यर और वे दो जने अभी फूलों पर ही अटके थे. मैं हैरान था लड़कों ने फूलों को देखा ही नहीं. उन्हें मेज पर पड़े हमारे खाली प्यालों से जिस तरह कोई वास्ता नहीं था, ठीक उसी तरह फूलों से भी वे लापरवाह थे.

सफेद बैगी वाले ने कहा, "तुम्हारी उस लिली का क्या होगा? क्या वह खड़ी नहीं होगी?."

लिली... यह फूल का नाम था. पर गुलदस्ते में वैसा कोई फूल नहीं था. मैं गुलदस्ते की ओर देखने लगा. वह अभी भी मेज की एक महत्तम हस्ती था. कम-से-कम मुझ पर गुलदस्ते का यह असर था.

मोहिन की जानिब मुझे तभी तीसरे लड़के का नाम सुनाई दिया. उसने मेज पर अपनी कुहनी टिकाई हुई थी. "हां परमजीत," वह बोला, "लिली को तो मैं मना लूंगा पर क्या तुम्हें यह ठीक लग रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि मैं परिषद की तरफ से खड़ा हो जाऊं?" "तू अपने डैड को मना लेगा क्या?" परमजीत बोला, "पुरानी पीढ़ी के लोग यार हमारी प्रॉब्लम्स समझते ही नहीं."

"वह सब हो जाएगा," मोहिन बोला, "यह मेरा मामला है मेरे अब्बू को इससे क्या लेना-देना?"

परमजीत ने गुलदस्ते को अपनी ओर खिसकाया और लंबी टहनी खींच ली. फिर सहसा उसे कुछ भान हुआ, मेरी ओर देख बोला, "सॉरी." टहनी से खिचा फूल उसके पास आ गया था.

भीड़ और आवाजों का वहां जो मेला लगा हुआ था, वह तो हमेशा बरदाश्त करना ही पड़ता था. सिगरेट के धुएं की एक चिमनाई हुई सी परत पंखों के गिर्द तैर आई थी.

परमजीत अनजाने फूल से खेल रहा था. अय्यर और उन दो जनों ने उठते-उठते अय्यर से लाल गेंदे का फूल पॉलिथीन के आवरण से खींच लिया.

"मैं अभी आया." अय्यर और वे दो जने वहां से चल दिए तो मेज के आसपास खालीपन की एक रौनक-सी उभर आई. तीनों लड़कों ने हड़बड़ी में जगह पर कब्जा करने जैसे भाव से अपनी चीजें कुर्सियों पर रख दीं. मोहिन मुझसे बोला, "हमारे कुछेक दोस्त बाहर रेलिंग पर खड़े हैं." सफेद बैगी वाला इस बीच वहां से उठकर बाहर चला गया था.

"तुम लोग चुनाव लड़ रहे हो ?" मैंने पूछा.

मोहिन बोला, "जी ! दरअसल कॉलेज प्रिंसिपल ने पिछली यूनियन भंग कर दी..."

परमजीत इस बीच फूल के टुकड़े-टुकड़े कर चुका था.

"असल में कॉलेज में बहुत भ्रष्टाचार है जनाब. और हम लोग एकजुट होकर उससे लड़ने की सोच रहे हैं."

"यह तो अच्छी बात है." मैंने एक संरक्षक से अंदाज में कहा. मैं कुछ और कहने की सोच ही रहा था कि सफेद बैगी वाला लड़का तीन हमउम्रों के साथ वहां आ धमका था. अब वह पूरी तरह एक युवा समाज बन गया था. मैं एक बाहरी हैसियत-सा वहां जरूर था. इस स्वीकार के साथ कि जब वे छहों अपनी बहस में गुत्थमगुत्था हो जाएंगे तो वे पूरी तरह भीड़ और आवाजों से बेपरवाह अपनी अलग, अकेली दुनिया में खो जाएंगे. और हुआ भी यही.

"हां, पम्मी...," सफेद बैगी वाला बोला, "तुमने फूल के वैसे ही टुकड़े कर दिए जैसे नेपाली नौजवानों ने तानाशाही मंसूबों को तितर-बितर कर दिया हो."

वे लोग सेक्स, राजनीति, अंतरिक्ष पर बहस में उलझ गए थे. उन्होंने मुझे इसमें नहीं जोड़ा था. जैसे अपने अतिरिक्त उनका दूसरों पर विश्वास नहीं था.

मोहिन अचानक बीच बात में उत्तेजित हो उठा था, "अपने देश में न्याय और अन्याय की जागरूकता ही नहीं वरना 'मिसमैनेज' करने वाली सत्ता के खिलाफ न उठ खड़े होते लोग. कसूर उनका नहीं जो लूट रहे हैं, उनका है जो ऐसा होने दे रहे हैं."

परमजीत ने पूरा गुलदस्ता खोल डाला था. और एक-एक फूल तोड़ने लगा था. मेरे जी में आया पूछूं कि वह ऐसा किस अधिकार से कर रहा है. पर उनकी दिलचस्प बातों में खलल डालकर मैं उस अनुभव से वंचित नहीं होना चाहता था जो एकदम नया था. इसलिए नया कि मेरे वक्त के नौजवानों और उनमें एक फर्क साफ दिखाई दे रहा था. वह फर्क था....

परमजीत ने एक फूल हाथ में लिया और बोला, "मोहिन तुम एक दिन ऐसा ही फूल लिली को भेंट करो."

"स्टुपिड", मोहिन हंसकर बोला, "फूल किसी वक्त में आदमी की भावुकता का सहारा था, आज नहीं. जानते हो यह क्या है—कुछ तत्वों का निर्माण. तुमने चांद पर कविताएं पढ़ी हैं. मनुष्य जाति के अज्ञान का इतिहास है वह."

परमजीत ने वह आखिरी फूल मसल दिया. पूरी मेज फूलों की कतरनों से मैली लग रही थी. थोड़ी देर पहले के तरोताजा

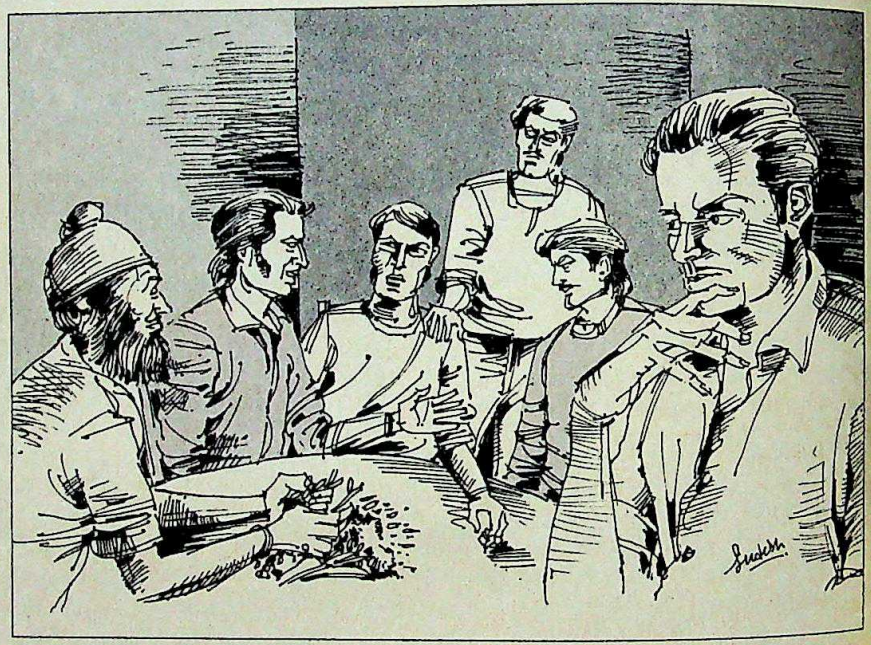

सने वह आखिरी फूल भी मसल दिया. पूरी मेज फूलों की कतरनों से मैली लग रही थी. थोड़ी देर पहले तरोताजा फूल अब कल्पना में भी नहीं आ रहे थे

फूल अब कल्पना में नहीं आ रहे थे.

"शिट," नए आए हुओं में एक बोला, "मैं विभा से यह कहना तो भूल ही गया कि अगर मच्छर घर पर न हो तो हम लोग वहीं बैठक कर लें..."

"कौन मच्छर ?" किसी ने पूछा...

मैंने अपने चेहरे की कल्पना की. मेरी पीढ़ी के लोग नौजवानों के लिए मच्छर हो गए थे. अगर मैं ज्यादा देर बैठता तो शायद उबल पड़ता. मैंने सीलिंग की ओर देखा... बाहर सड़क पर आकर रेलिंग की तरफ... मुझे वे ही वे दिखाई दिए. झुंडों में, समूहों में... मृत लोगों द्वारा खाली किए गए शून्य में.

वे आ गए हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉक्टर सुमेधा साहनी
एम.बी.बी.एस., एम.डी.

कम तेल के पकवान

कम तेल यानि अधिक तंदरुस्ती

क्या गेहूँ, चावल और सब्जियों में चिकनाई है?

बिल्कुल, कुदरती तौर पर। यह चिकनाई दिखाई तो नहीं देती, लेकिन यह प्रोटीन तथा विटामिनों की तरह ही स्वास्थ्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। समस्या तो तब शुरू होती है जब हम खाना पकाते समय तेल तथा चिकनाई का इस्तेमाल अधिक करते हैं।

चिकनाई तथा सेहत

राष्ट्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद के अनुसार भारतीय खाने में हमारे शरीर की असली ज़रूरत के मुकाबले दुगनी या तिगुनी चिकनाई होती है। कारण यही है कि हम खाना पकाने में बहुत ज़्यादा तेल इस्तेमाल करते हैं। संस्थान चेतावनी देता है कि ज़्यादा तेल शरीर के लिए खासतौर से हृदय के लिए नुक्सानदायक है।

इस समस्या से कैसे बचें

जो चिकनाई आपको अनाज, दालों और सब्ज़ियों से अदृश्य रूप में प्राप्त हो रही है, वही पर्याप्त है। केवल इतना करें कि जिस तेल या वनस्पति से आप अपना भोजन पकाते हैं उसकी मात्रा माप कर इस्तेमाल करें अर्थात परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिए प्रतिदिन केवल दो चम्मच। अधिक तेल या घी का अर्थ है शरीर के लिए कोई न कोई समस्या. भला इस की आवश्यकता ही क्या है। कम तेल से भी बेहद स्वादिष्ट खाना पकाया जा सकता है। इन स्वादिष्ट व्यंजनों को आज़माइए और स्वयं ही देख लीजिए।

कंडा बटाटा नी सूकी भाजी

भारतीय व्यंजनों के साथ परोसा जा सकने वाला हल्का गुजराती व्यंजन ½ किलो आलू (छिलके सहित तीन चौथाई उबालें, छील लें और काट लें); ½ किलो कटे हुए प्याज़; 1 छोटा चम्मच ज़ीरा; चुटकी भर हींग; एक बड़ा चम्मच तेल; नमक; ½ छोटा चम्मच हल्दी; ½ छोटा चम्मच मिर्च पावडर; 1 छोटा चम्मच धनिया पावडर; ½ छोटा चम्मच ज़ीरा पावडर; डेढ़ नींबू का रस

विधि : तेल गर्म करें। ज़ीरा और हींग डाल दें। ज़ीरा चटखना बंद हो जाए तो प्याज़ डाल दें। आंच धीमी कर दें और प्याज हल्के लाल होने तक भूनें। आलू डाल दें। बाकी मसाला भी डाल दें। धीमी आँच पर आलू पूरी तरह तैयार हो जाने तक पकाएं (तीन-चार व्यक्तियों के लिए पर्याप्त)

चना दाल

स्वादिष्ट और आसानी से पकाया जा सकने वाला दक्षिण भारतीय व्यंजन।

½ किलो चने की दाल रात भर भिगो कर रखें। 1 छोटा चम्मच हल्दी; 1 बड़ा चम्मच कटी हुई अदरक; 1 बड़ा चम्मच कटा हुआ लहसुन; ½ कप इमली का पानी, नमक

तुड़का : 3 छोटे चम्मच तेल; 3 तोड़ी हुई लाल मिर्चें, 1 बड़ा चम्मच कटी हुई अदरक; 1 बड़ा चम्मच कटा हुआ लहसुन; 1 छोटा चम्मच ज़ीरा।

विधि : दाल और सारी सामग्री को उपयुक्त पानी डाल कर उबाल लें. पानी उतना ही डालें कि दाल और अन्य सामग्री डूब जाएं। दाल पक जाए लेकिन साबुत रहे. अगर दाल पकने के बाद पानी बच जाए तो गिरा दें। तेल गर्म करें, ज़ीरा डाल दें, ज़ीरा चटखना बंद कर दे तो तुड़के की बाकी सामग्री डाल दें। आधा मिनट हिलाएं और दाल में मिला दें (4-6 व्यक्तियों के लिए पर्याप्त)

मुफ्त

स्वादिष्ट तथा कम तेल युक्त पकवान तैयार करने की विधियां मंगवाने के लिए लिखें, पो.बॉ. नं. 55 नई दिल्ली-110001.

"कम तेल सेहत का साथी सिर्फ़ दो चम्मच हैं काफ़ी"

तिलहनों के बारे में टैक्नालॉजी मिशन द्वारा जन हित में प्रकाशित

ASP-D/TMO/1/HIN/90-91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता

सुगम नहीं

अनुवाद में कई खामियां

हरीश चंद्र अग्रवाल द्वारा अनूदित 'रौजेविच की कविताएं' और 'ब्रेख्त की कविताएं' हिंदी पाठकों को कुछ सीमा तक इन दोनों कवियों के काव्यक्षेत्र की पृष्ठभूमि, इनके देशों की संस्कृति और उन देशों में रहने पर लोगों की भावना और सोच-विचार से परिचित कराती हैं.

रौजेविच की कविताएं
ब्रेख्त की कविताएं
अनु: हरीश अग्रवाल
मुहिम प्रकाशन,
गाजियाबाद
कीमत: प्रत्येक30 रु.
कुल पृष्ठ: 104, 96

दोनों पुस्तकों के प्रारंभ में अनुवादक ने रौजेविच और ब्रेख्त के जीवन और उनके काव्य के संबंध में संक्षिप्त भूमिका देकर उन पाठकों के लिए आसानी कर दी है जिन्हें इनके संबंध में ज्यादा जानकारी नहीं है. वैसे भी इन कविताओं को पढ़ने के पहले यह जानना आवश्यक है कि इन दोनों कवियों ने किस पृष्ठभूमि में अपनी कविताएं लिखीं, तभी पाठक इन कविताओं को अच्छी तरह समझ पाएंगे. ब्रेख्त को ज्यादातर लोग एक नाटककार के रूप में ही जानते हैं लेकिन इन कविताओं से पाठकों को उनके कविरूप का परिचय मिलता है.

रौजेविच पोलिश कवि हैं और ब्रेख्त जर्मन, पर अनुवाद मूल पोलिश या जर्मन से नहीं, वरन अंग्रेजी से किए गए हैं. अतः जिन लोगों ने इन कवियों को मूल पोलिश या जर्मन में पढ़ा है, उन्हें निश्चय ही इन अनुवादों में कुछ खामियां नजर आएंगी.

अनुवाद की एक विशेषता यह होती है कि मूल भाषा के किसी शब्द विशेष के लिए अनूदित भाषा में भी किसी एक शब्द का ही प्रयोग किया जाना चाहिए. 'रौजेविच की कविताएं' में 'उत्तरजीवी' कविता में अंग्रेजी के किसी एक शब्द के लिए 'हत्या' और 'वध' तथा किसी एक और शब्द के लिए 'जुर्म' और 'पाप' इन दो अलग-अलग हिंदी शब्दों का प्रयोग किया गया है.

इसी प्रकार जो विदेशी शब्द हमारी भाषा में पूर्णतः स्थापित हो चुके हैं, उन्हें यदि उसी रूप में रहने दिया जाता तो अधिक अच्छा होता. जैसे 'रौजेविच की कविताएं' में 'जीवन के बीच में' शीर्षक कविता की दो पंक्तियां हैं—

'मेज पर रोटी है और चाकू है/चाकू रोटी काटने के काम आता है.'

यहां निश्चय ही अंग्रेजी के 'ब्रेड' शब्द के लिए 'रोटी' का प्रयोग किया गया है जो सही होते हुए भी उचित नहीं लगता. यहां रोटी की जगह यदि ब्रेड ही रहने दिया जाता तो 'चाकू' और 'काटने' का सामंजस्य ठीक से बैठ सकता था क्योंकि चाकू से रोटी नहीं ब्रेड ही काटी जाती है.

इन कविताओं को पढ़कर पाठकों को रौजेविच और ब्रेख्त की अन्य कविताएं पढ़ने की भी इच्छा हो सकती है. पर ऐसे पाठकों को इन पुस्तकों से कोई सहायता नहीं मिलती क्योंकि अनुवादक ने दोनों में से किसी भी पुस्तक में किसी भी कवि की किसी भी पुस्तक का उल्लेख नहीं किया है जहां से ये कविताएं ली गई हैं. इन दोनों पुस्तकों के मूल्य भी इतने कम रखे गए हैं कि सामान्य पाठक को भी उन्हें खरीदने में हिचक नहीं होगी.

—महेंद्र राजा जैन

उपन्यास

जीवन के द्वंद्व

अद्भुत रचना कौशल का नमूना

नायक बंसी द्वारा अपने बाल सखा और इस उपन्यास-कथा के प्रस्तोता बंटू को समर्पित इस कथा में इन दोनों के बचपन के प्रसंग, उसकी स्मृतियों, तय किए आदर्शों, मानसिकताओं, संस्कारों आदि को लेकर परस्पर द्वंद्व तथा उसके बाद जीवन-लक्ष्यों को लेकर चुनी गई विपरीत स्थितियों को यहां दिखाया गया है. इसमें बंसी की अत्यंत परिपक्व, संवेदनशील बहन मन्नो है, बंटू की कलाप्रेमी बहन मीरा है (इन चारों के बीच 'प्रेम' को विस्तार से व्याख्या भी मिली है), और हैं बंसी के पिताजी जो कि गृहस्थ तथा व्यवसायी के रूप में तो लगभग असफल हैं मगर जीवन की मीमांसा के धनी हैं. कुछ और भी पात्र हैं जो जीवन की समूची तत्व चर्चा के लिए जरूरी थे. हालांकि उपन्यास में अनेक उपकथाएं भी पिरोई गई हैं तो भी मुख्य कथा दोनों मित्रों अर्थात बंसी तथा बंटू के बीच उर्फ सांसारिकता तथा उससे पलायन के आपसी टकराव के बीच ही केंद्रित दिखाई पड़ती है.

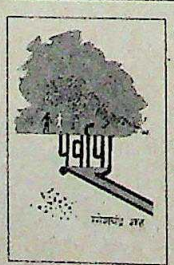

पूर्वापर
उपन्यास
रमेशचंद्र शाह
प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन,
नई दिल्ली
कीमत: 80 रु.
कुल पृष्ठ: 268

इस प्रकार कथा का मुख्य द्वंद्व जीवन के यथार्थ और उसके वैचारिक समीकरणों को उलझाने-सुलझाने में व्यस्त दिखाई पड़ता है. ऐसा भी लगता है कि लेखक का जीवन या वैराग्य दोनों में से किसी से भी अप्रेम नहीं है, इसलिए वह उपन्यास के अंत तक इस विश्वास के आसपास जा पहुंचता है जहां उसे लगता है कि योगी और कलाकार को जरूरी तौर पर एक दिन मिलना ही होगा. वैसे, यह इस उपन्यास का निश्चित सार नहीं है.

उपन्यास को पढ़ने पर यह बात तुरंत दिमाग में कौंधती है कि जीवन की महिमा को न पाकर, जब उसके द्वंद्व को गाया गया हो तो वह 'गायन' मनोहारी हो सकता है क्या ? उत्तर में कहना पड़ेगा कि हां, यहां द्वंद्व पाठक को मुग्ध करता है. यह लेखक का रचना कौशल ही है कि ऐसे 'शुष्क' विषय को भी पठनीय बना देता है.

लेखक ने उपन्यास रचते हुए मानो अपने कान की लवों को हमेशा थामे रखा है—इतनी एकाग्रता से लिखे उपन्यास कम ही देखने को मिलते हैं.

साथ ही यह भी सच है कि ऐसे विषयों को कथा बनाते वक्त कुछ खतरे लेखक को उठाने होते हैं—जैसे कि ऐसे विषय का एक विस्तृत निबंध में परिवर्तित हो जाना. निबंध शैली की तानाशाही का यह उपन्यास भी बिलाशक शिकार हुआ है. इसके अलावा, महान सर्जकों की योग्यता यही तो होती है कि वे अपने विचार, पूर्वाग्रह, अध्ययन आदि को अपने पात्रों पर थोपते नहीं हैं बल्कि अपने कल्पित पात्रों से वे लगातार उनका सही नाम-पता पूछा करते हैं जबकि आम लेखक अपने निजी विचारों के हिसाब से भूमिका कराने हेतु अपने पात्रों को 'एक्स्ट्रा' बना डालता है ! हिंदी में लेखकों के तो काफी उपन्यास हैं मगर पात्रों के निजी उपन्यास लगभग नहीं के बराबर हैं. दुर्भाग्य से, 'पूर्वापर' भी बंसी या बंटू का नहीं, लेखक का ही उपन्यास है!

—राजकुमार गौतम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Frost

Manscapes *by* Park Avenue

The Pullover. To set ice on fire. And bask
in its embers. To let your warmth flow
in a never ending stream of humanity.

Park Avenue
by raymonds

Style. It never goes out of fashion.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

LINTAS PA 144 2517

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आखिर झुकना पड़ गया

'मिस्टर इंडिया' की भारी सफलता के बाद से ही श्रीदेवी यह मानने लगी थीं कि उनका कद अनिल से बहुत ऊंचा है. छोटी-बड़ी सफलताओं के बावजूद अनिल को श्रीदेवी का दंभ तोड़ने का मौका ढूंढ़ने पर भी नहीं मिल सका. श्रीदेवी नंबर एक की पोजीशन पर जमी ही रहीं, जबकि अनिल कपूर इस पद से पीछे ही थे.

इस स्थिति से परेशान और कई फिल्मों की सफलता का जिम्मेदार सिर्फ खुद को मान अनिल ने माधुरी दीक्षित को श्री का विकल्प बनाने की कोशिश की.

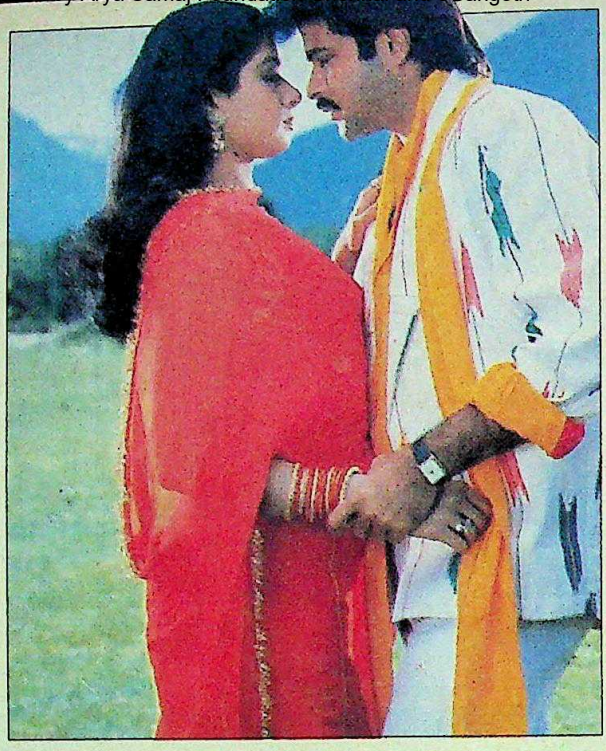

श्रीदेवी और अनिल: कड़वी गोली

माधुरी के साथ अपनी जोड़ी को बेजोड़ बनाने के लिए प्रोड्यूसरों से हर संभव सहयोग किया. मगर शतरंजी चालों में श्रीदेवी कम तो नहीं हैं. विभिन्न बहानों से उन्होंने अनिल के होम प्रोडक्शन 'रूप की रानी, चोरों का राजा' को ही ऐसा लटकाया कि बोनी खुद-ब-खुद चरणों में चले आए और उन्होंने अपने भाई अनिल को भी समझाया. अनिल को दवा की कड़वी गोली समझकर जो शर्त गटक लेनी पड़ी है वह है, माधुरी के साथ कोई भी फिल्म साइन करने के पहले सूचित करने की.

ऐरे-गैरों की बात

कुछ ही दिन पहले **माधुरी दीक्षित** ने आदित्य पंचोली के साथ एक फिल्म की थी जो महा फ्लॉप हुई! और अब यही माधुरी, जो नंबर एक पद की दावेदार मानी जाती हैं, चंकी पांडे के साथ, जिनका नंबर 10 भी नहीं बनता, जबरदस्त प्रेमदृश्यों वाली फिल्म 'खिलाफ' कर रही हैं. फिल्म के रशेज देखने के बाद किसी ने उनसे पूछा, "आप हर ऐरे-गैरे के साथ ऐसे सीन कैसे कर लेती हैं ?"

"यह फिल्म इंडस्ट्री है," उन्होंने कहा, "यहां किसी को भी ऐरा-गैरा नहीं कहना चाहिए. क्या जाने कल इन्हीं ऐरे-गैरों में से किसकी कौन-सी फिल्म हिट हो जाए और वही सुपर स्टार कहलाने लगे...."

इस बयान के पीछे माधुरी की मंशा क्या थी यह तो वे ही जानें लेकिन अब अपनी पोजीशन साफ रखने को उन्होंने बयान में राजनीति का रंग घोलते हुए कहना शुरू कर दिया है, "मैंने तो यह कहा था कि जब यहां मेरी जैसी ऐरी-गैरी लड़की हिट हो सकती है तो टेलेंटेड लोग स्टार क्यों नहीं बन सकते ?"

माधुरी की मुश्किल यह है कि अब आमिर खां जैसे उनके हीरो फिर उनसे नाराज हैं. आखिर वे शेखर सुमन और चंकी जैसे माधुरी के सहयोगियों को अपने बराबर टेलेंटेड कैसे मान लें ?

चंकी और माधुरी: दावे

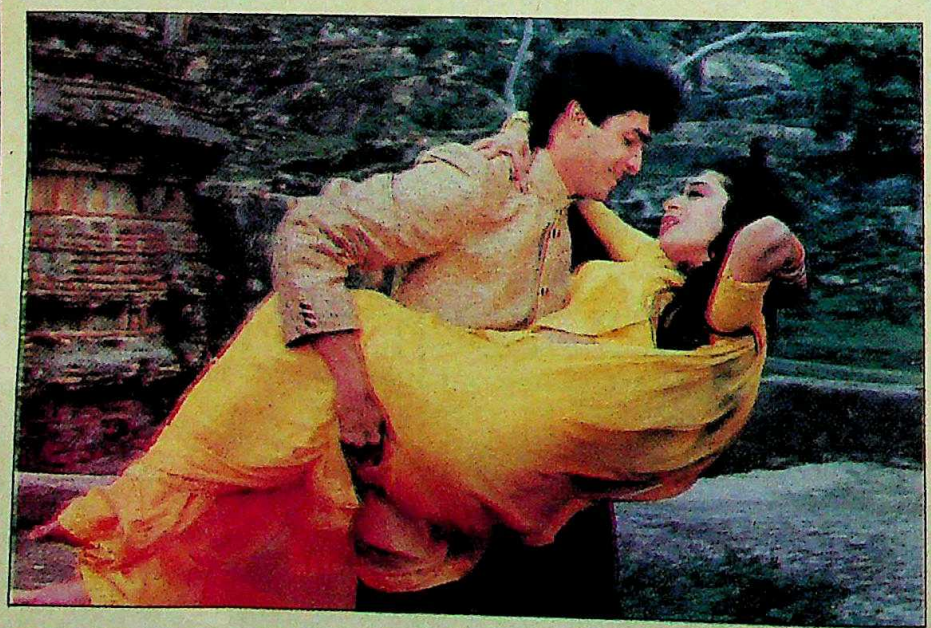

धुरंधर धनुर्धर की तलाश

महाभारत की द्रौपदी रूप गांगुली यह समझ नहीं पा रहीं हैं कि इसे कूटनीति कहें या शकुनि नीति. बड़े चाव से उन्होंने जो फिल्म साइन की थी—'अमन के फरिश्ते'—और जिसके लिए उन्होंने द्रौपदी दिनों में ही खुली टांगों वाला कैबरेनुमा डांस करने से इनकार नहीं किया था, पिछले दिनों उसी फिल्म से उन्हें निकाल दिया गया. अब रूप हैरान हैं कि जिस अंगप्रदर्शन को वे अपना सबल हथियार मानती रही हैं और जो 'गणदेवता' से 'महाभारत' तक उनका सहारा बनता रहा, वही यहां उनकी बड़ी कमी बताया जाने लगा. इस फिल्म से उन्हें बाहर करने का कारण यह बताया गया कि वे न तो ग्लैमरस हैं और न ही पर्याप्त अंगप्रदर्शन कर पाती हैं.

दूसरी तरफ, रूपा ने फिल्म 'बहार आने तक' अपने काम को 'कइयों की छुट्टी कर देने वाला' कहकर अपनी जबरदस्त हवा बांध रखी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...इडेड मिसाइल

...हश्र

...नाम पैदा करने की कोशिश ...लगे मोहसिन खां को उनके ...ी शुभचिंतक ने बिलकुल ...ाब बात सुझाई—'इमेज ...र ब्वॉय की बनाओ...' ...कीब मोहसिन की समझ में ...गई और वे यह भी मान गए ...रोमांस के जरिए हिट होने ...लिए सबसे बढ़िया लड़की है ...ीता बिजलानी जिसके प्यार ...लमान खां को कहीं से कहीं ...ा दिया, जिसके साथ ...यर से मिठुन चक्रवर्ती की ...की हुई गाड़ी फिर चल ...ली, जिसके साथ जैकी की ...ी ने जैकी की दिक्कतें दूर कर दीं...

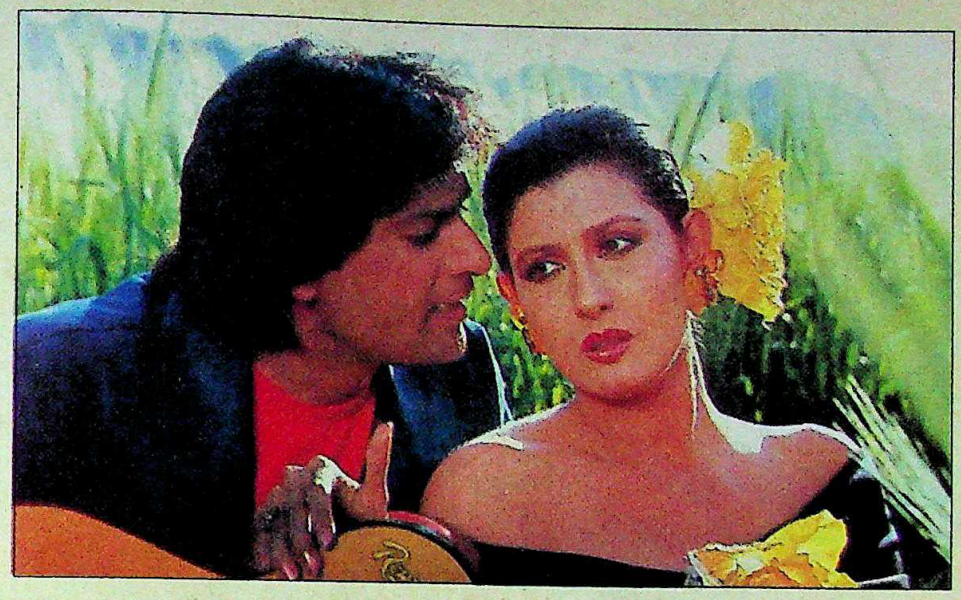

मोहसिन और संगीता: प्यार का रहस्य

...सो, मोहसिन सलमान खां बन जाने की राह में जुट गए. संगीता ...भी यह दोस्ती कुछ बुरी नहीं लग रही थी. लेकिन गाइडेड ...ाइल होता तो 'गाइडेड' ही है न ! जिन नाजुक क्षणों में ...बी गरमी वाला यह संबंध धधकता रोमांस बन सकता था, उसी क्षण में मोहसिन को याद आ गया कि वे तो सिर्फ गाइडेड हैं और गाइड ने 'इस सब' की सख्त मनाही की हुई है. इसके बाद इस प्रेम योजना का रहस्य संगीता पर खुलते भला कितनी देर लगती ?

...पा: रूप काम न आए

...हाल ही में हुए प्रिव्यू शो ...को 'हार्ड फेस', 'डल' और ...' जैसी उपाधियां देकर ...दरवाजे तक आए कई ...वापस करवा दिए हैं. ...है इस महाभारत से ...के लिए रूपा को किसी ...धनुर्धर को तलाशना ...क्योंकि वादों के बावजूद ...बाबू मिठुन किसी आग ...डालने को तैयार नहीं.

...सारी खुदाई एक तरफ

पत्नी को गर खुश रखना चाहो तो साले को पैगंबर मानो. इस सलाह ने आखिर पिछले दिनों एक जबरदस्त 'गृहयुद्ध' शांत करा दिया. युद्ध शांत होने का महत्व इस वजह से है कि यह ट्रेज़िडी किंग और उनकी ब्यूटी क्वीन बीवी के बीच एक हीरोइन को लेकर छिड़ा था.

यह खबर तो अब जगजाहिर है कि इस उम्र में आकर 'ट्रेज़िडी किंग' **दिलीप कुमार** ने खुद निर्देशक बनने की हिम्मत जुटा ही ली. इस फैसले के साथ ही ट्रेज़िडी किंग ने हीरोइनों और उनकी खाई खेली अम्माओं से खुलेआम मिलना-जुलना शुरू कर दिया. लेकिन चूंकि दूध का जला छाछ को भी फूंक-फूंककर ही पीता है और 'ब्यूटी क्वीन' सायरा अस्मां प्रकरण को भूली नहीं हैं, सो उन्होंने हीरोइन ढूंढ़ने की इस आग-फूस संयोग कार्रवाई पर सख्त एतराज करना शुरू कर दिया. अब आप चाहें तो अर्थ कुछ भी लगा लें पर उनका कहना था कि "जब हीरोइन घर में मौजूद है, तब इधर-उधर ढिंढ़ोरा पिटवाने की जरूरत क्या है?

मगर चौंकिए मत. सायरा हीरोइन का रोल खुद करने की जिद नहीं कर रहीं. वे सिफारिश कर रही थीं **शाहीन** की जो उनके भाई की बेटी हैं, छोटी-बड़ी दो-चार फिल्मों में हीरोइन हैं भी, लेकिन कैरियर शुरू करने के साथ ही बी ग्रेड फिल्मों के हीरो सुमित सहगल के साथ प्यार की पींग बढ़ा गृहस्थिन हो जाने की जल्दबाजी दिखाने के कारण निर्माता निर्देशकों की लिस्टों से बाहर हो चुकी हैं. अब अगर अपने 'पहले-पहले' डायरेक्शन में दिलीप कुमार जैसी हस्ती उन्हें हीरोइन ले लेती है तो डांवाडोल कैरियर संभलने में कितनी देर लगेगी ?

शाहीन: ट्रेज़िडी किंग की त्रासदी

बहरहाल, गृहयुद्ध की स्थिति दिलीप के इनकार के कारण बन गई थी. मगर अब शांति की वजह है उनका बिना शर्त समर्पण.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

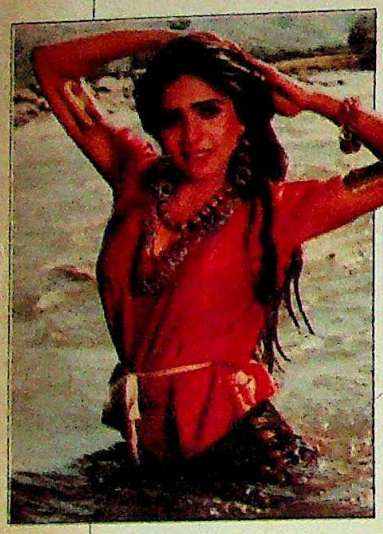

नीलि: पामेला का रूप

◆ **सलमान रुश्दी** और **पामेला बॉर्डेस** में कुछ भिन्नता है तो कुछ समानताएं भी हैं. भारत से आकर इंग्लैंड में बसने के बाद दोनों अपने अपने कारणों से दुनिया भर में चर्चित हुए. एक अपनी बेबाक लेखनी के कारण तो दूसरी अपने रूप और यौवन के बेलौस प्रदर्शन के कारण. इन दोनों में अब एक और समानता हो जाएगी. पाकिस्तानी फिल्म निदेशक जमशेद नकवी ने अपनी फिल्म 'इटरनेशनल गुरिल्ला' की, जिसमें उन्होंने 'खलनायक' रुश्दी से सीधी टक्कर ली है, जबरदस्त व्यावसायिक सफलता से प्रभावित होकर पामेला बॉर्डेस के जीवन पर भी फिल्म बनाने का फैसला किया है. उनकी फिल्म में पामेला की भूमिका निभाएंगी प्रसिद्ध पाकिस्तानी अभिनेत्री नीलि. कहते हैं नकवी ने कहा है कि, "पामेला बड़े परदे के दर्शकों को काफी कुछ दे सकती है." लेकिन मुश्किल यह है कि परदे पर हीरोइन ज्यों ही कपड़े उतारना शुरू करेगी, पाकिस्तानी सेंसर अधिकारी कैंची चलाना शुरू कर देंगे.

◆ मलेशिया में बसे भारतीय मूल के **आर. लेत्चुमाना** ने दोबारा अपना नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स में दर्ज करा लिया है. 40 वर्षीय लेत्चुमाना ने इस बार अपने बालों के बल पर मलेशियाई एअरलाइंस के 32.5 टन वजनी बोइंग-737 विमान को कई मीटर तक दौड़ा दिया. इससे पहले वे 25 यात्रियों समेत 6 टन वजनी बस को अपने बालों से ही कई मीटर तक दौड़ाने का करतब दिखा चुके हैं. जाहिर है, अपने आप में ये कीर्तिमान हैं. लेकिन वे अपने या अपने बालों के अकूत बल का राज बताने से इनकार कर देते हैं. वे कहते हैं, "बीवी जो भी खाना पका देती है, खा लेता हूं." मगर दिलचस्प बात यह है कि उनके बेटे भी पिता के पदचिन्हों पर चल रहे हैं.

लेत्चुमाना: बालों के बूते

◆ बर्लिन की ऐतिहासिक दीवार गिरने से **मृणाल सेन** जैसे मार्क्सवादी का चिंतातुर होना स्वाभाविक है. बहरहाल, जर्मनी के एकीकरण के ही दिन—3 अक्तूबर को—उन्होंने अपनी नई फिल्म की शूटिंग शुरू की तो यह महज संयोग नहीं था. इस फिल्म की कहानी इस तरह है—एक बूढ़ी औरत की आत्महत्या के बाद उसके दोनों बेटे—एक कलकत्तावासी और दूसरा जर्मनवासी—आपस में मिलते हैं. और इसके बाद पात्रों के आंतरिक द्वंद्वों के जरिए फिल्मकार अपनी बात कहता है. फिल्म में विक्टर बनर्जी और अपर्णा सेन की भूमिका अहम है. पाइप पीने के शौकीन मृणाल कहते हैं, "मैं यह तो नहीं कहूंगा कि इन वर्षों में मैं समझदार हो गया हूं लेकिन इतना जरूर है कि सावधान हो गया हूं." उनकी आखिरी फिल्में प्रदर्शित नहीं हो पाई. खुलेपन के इस दौर में शायद नई फिल्म को मौका दिया जाए, भले ही यह उसके खिलाफ हो.

पी. अथीधन

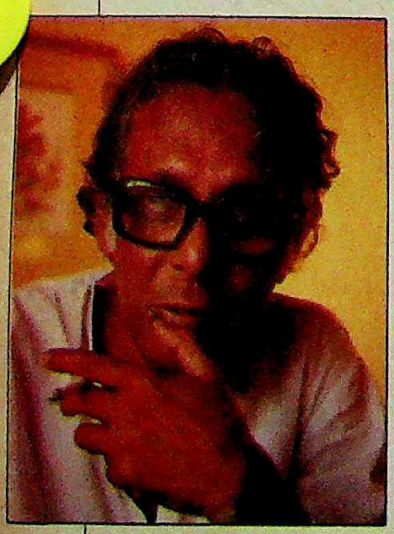

मृणाल सेन: कुछ चिंताएं

◆ टेलीफोन की घंटी बजती रही और कीमत चढ़ती रही. अंततः बोली 4,62,000 डॉलर पर रुकी. न्यूयॉर्क की कलादीर्घा 'क्रिस्टीज' में एक दुर्लभ भारतीय कलाकृति के लिए टेलीफोन से बोली लगाने वाले तीन लोग जब दाम ऊपर बढ़ाते ही रहे तो हॉल में बैठे सारे लोग खामोश हो गए थे. अंततः जब बोली खत्म हुई तो यह कलाकृति—**दास्ताने-ए-अमीर हमजा**—सबसे कीमती भारतीय पेंटिंग साबित हुई. पिछला रिकार्ड मार्च में बना था—1,10,000 डॉलर का. क्रिस्टीज की प्रवक्ता के मुताबिक "यह अनोखी कलाकृति है."

बहरहाल, 16वीं सदी की कृति हमजानामा अब लंदन की कलाकृति कारोबार कंपनी स्पिक ऐंड कं. के पास है.

दास्तान-ए-अमीर हमजा: ऊंची बोली

नाचप्पा: नई भूमिका

◆ अगर 'ईनाडु' अखबार के रामोजी राव की फिल्म पर यकीन किया जाए तो **अश्विनी नाचप्पा** को इस पर मानहानि का दावा करना चाहिए. मगर 23 वर्षीया खूबसूरत नाचप्पा ऐसा कुछ नहीं करने जा रही हैं. वे खुद जो इस फिल्म में अपनी ही भूमिका निभा रही हैं. हां, यह जरूर है कि फिल्म में थोड़ा मसाला डाला गया है. इसमें नाचप्पा झोंपड़पट्टी की लड़की के रूप में परदे पर आती हैं जो एथलेटिक्स में शिखर तक पहुंचती है—अच्छे और बुरे प्रशिक्षकों के बीच पिसती हुई. अपनी इस नई अदाकारी में प्रसन्न नाचप्पा कहती हैं, "स्टार बनना अपने आप में बहुत सुखद अनुभव है."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्षों पहले विल्स फ़िल्टर ने शुरू किया था सिगरेटों में फ़िल्टर का चलन। आज भी है यह सबसे बढ़िया। स्वाद में। तसल्ली में। हाथ से चुने वर्जीनिया तम्बाकू और शानदार फ़िल्टर के मेल का अनोखा संगम—विल्स फ़िल्टर। लाखों सिगरेट प्रेमियों ने इसे आज़माया...फिर हमेशा के लिए अपनाया।

WILLS
FILTER

फ़िल्टर और तम्बाकू का अनोखा मेल

आई टी सी लिमिटेड
का अपना एक ब्राण्ड
भारत में निर्मित

STATUTORY WARNING
CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH

सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बुलंद
तस्वीर

महाभारत एक महाकाव्य
बजाज एक महान स्कूटर
पहले में है कर्तव्य-कर्म की गाथा
दूजे में सहनशीलता की पराकाष्ठा
दोनों ही बुलंद भारत की
बुलंद तस्वीर दर्शानेवाले.

बजाज स्कूटर्स :
सुपर, चेतक, प्रिया और कब.

bajaj auto
You just can't beat a bajaj
बजाज ऑटो लि., आकुर्डी, पुणे ४११ ०३५.

LINTAS BAJ 198 2719 HI

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुलायम सिंह यादवः अराजक राज

30 नवंबर 1990 7 रुपए

इंडिया टुडे

केंद्र सरकार

हाथ का साथ कब तक?

चंद्रशेखर के नेतृत्व वाले 60 सदस्यीय छोटे से समूह को विभिन्न दलों और गुट जिस तरह अपना समर्थन दे रहे हैं, उसे देख यही आशंका बलवती होती है कि एक छोटा-सा दलबदल भी इस सरकार के पतन का कारण बन सकता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इंका अध्यक्ष
राजीव गांधी

प्रधानमंत्री
चंद्रशेखर

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

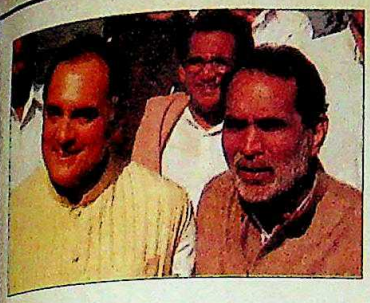

हाथ का साथ कब तक?

इंका के समर्थन से चंद्रशेखर की ताजपोशी के साथ 60 सांसदों का एक दल सत्ता के शीर्ष पर काबिज हो गया है. इधर, भाजपा, इंका और जनता दल चुनाव की तैयारियों में जुट गए हैं. आवरण कथा में नए प्रधानमंत्री के साथ बातचीत भी.

आवरण कथा 14

नजला तो गिरकर रहेगा

अयोध्या मसले पर अपने आक्रामक अंदाज और जनता दल में विभाजन के कारण मुलायम सिंह यादव किनारे कर दिए गए लगते हैं. सत्ता में बने रहने के लिए अब उन्हें इंका की दया पर निर्भर रहना पड़ सकता है. उनके राजनैतिक सितारे गर्दिश में हैं.

खास रपट 30

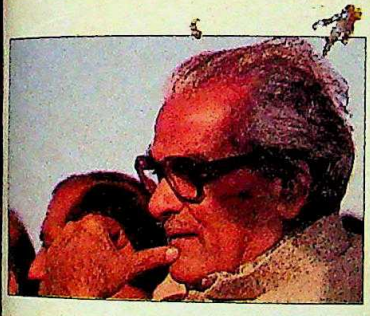

शिखर पर सुविधा के समीकरण

जनता दल के बंटने, चंद्रशेखर द्वारा इंका का समर्थन लेने और भाजपा की 'एकला चलो' नीति के चलते गुजरात, बिहार, हरियाणा और राजस्थान की सरकारें मुश्किल में हैं. इन राज्यों में सरकारों को बचाने के नए राजनैतिक समीकरण बन रहे हैं.

आजकल 38

बागडोर थामने की ललक

सामाजिक बिखराव के इस दौर में हरिजन समुदाय ऐसे नेता की तलाश में है जो उनकी आशाओं-आकांक्षाओं को मूर्त रूप दे सके. इस नेतृत्व का सेहरा अपने सिर बांधने की होड़ मुख्यतः रामविलास पासवान, कांशीराम और मीरा कुमार में चल रही है.

खास रपट 60

संविधान की समस्या सुलझी

1990 का नया संविधान नेपाल में बहुदलीय व्यवस्था की अनुमति देता है और नेपाल नरेश के व्यापक अधिकार क्षेत्र में भी कटौती करता है. पर राजशाही की पकड़ कई स्थितियों में बरकरार है. मौके से भेजी गई रिपोर्ट.

पास-पड़ोस 63

हरफनमौला अभिनेता

एक के बाद एक प्रतिद्वंद्वी को ध्वस्त करते हुए कमल हासन न सिर्फ अभिनय के शिखर पर पहुंचे हैं बल्कि खुद निर्देशन संभालने के लिए भी तैयार हो चुके हैं. फिल्में मानो उनकी सांस बन चुकी हैं. रपट के साथ उनसे बातचीत भी.

सिनेमा 74

अगले पन्नों पर

कसौटी 7
राजरंग 8
तेवर 10
हिंदोस्तां हमारा 12
आवरण कथा
केंद्र सरकार:
हाथ का साथ कब तक? 14
खास रपट
मुलायम सिंह यादव:
नजला तो गिरकर रहेगा 30
राज्यों की साझा सरकारें:
शिखर पर सुविधा के समीकरण 38
आजकल
कालाहांडी: मसीहा का इंतजार 42
कटाक्ष 49
राज्य दर्पण 50
व्यापार-चक्र 55
कारोबार
अर्थव्यवस्था: निराशा का घटाटोप 56
शेयर बाजार 59
विशेष लेख
हरिजन नेतृत्व:
बागडोर थामने की ललक 60
पास-पड़ोस
नेपाल: संविधान की
टेढ़ी समस्या सुलझी 63
खेलकूद
चीमा ओकेरी:
मैदान पर हड़कंप 69
समाचार माध्यम
बिहार: भगवा रंग में भीगे 72
सिनेमा
कमल हासन:
हरफनमौला अभिनेता 74
वर्ग पहेली 76
अंतरंग 78
परदे के उस पार 82
आरपार 85
कहानी 88
किताबें 92
चर्चित चेहरे 96

आवरण: शरद सक्सेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एस एम डाइकेम की पेट्रोकेमिकल्स परियोजना की पेशकश आपके लिए निवेश का एक अवसर अनूठी परियोजना जितना ही अनूठा.

एस एम डाइकेम की २७५/- करोड़ रुपये की परियोजना, जिला पुणे के कुरकुंभ मे इथाईलीन ऑक्साइड तथा विविध प्रकार के आयात विकल्प ग्लॉईकॉल्स का उत्पादन करेगी.

यह एक प्रमाणित प्रक्रिया अपनाएगी जो कि पेट्रोलियम पद्धति की तुलना में कम खर्चीली है. इसमें कच्चे माल के रूप में गन्ने के शीरे से तैयार किया गया औद्योगिक एल्कोहॉल इस्तेमाल किया जाएगा.

प्लांट हेतु साइंटिफिक डिज़ाइन इंक, यूएसए की टेक्नोलॉजी को अपनाया गया है जिसमें बाज़ार की मांग के अनुसार उत्पादन मिश्रण में परिवर्तन करने की अन्तर्निर्मित अनुकूलता उपलब्ध है. यह परियोजना केन्द्र द्वारा अधिसूचित 'सी' श्रेणी के पिछड़े क्षेत्र में स्थित है तथा इसे अग्रणी स्थिति के लाभ प्राप्त हैं. यह कच्चे माल की आपूर्ति स्रोत तथा उत्पादन उपयोगकर्ता उद्योग दोनों के ही नज़दीक स्थित है.

आई डी बी आई के नेतृत्व मे अखिल भारतीय वित्तीय संस्थाओं द्वारा परियोजना का मूल्यांकन किया गया है, जिन्होंने इसके लिए १२४.९३ करोड़ रुपये का ऋण स्वीकृत किया है.

कंपनी अब पेश करती है १५० रुपये प्रति-- १४% सुरक्षित पूर्णतः परिवर्तनीय डिबेंचर जो दो भागों में इक्विटी शेयरों में परिवर्तित किए जाएंगे:

भाग अ, आबंटन तिथि के ६ माह पूर्ण होने पर ६०/- रुपये को, प्रति शेयर २०/ रुपये के प्रीमियम पर, १० रुपये प्रति के २ इक्विटी शेयरों में परिवर्तित किया जाएगा.

भाग ब, आबंटन तिथि के २४ माह पूर्ण होने पर, ९०/- रुपये को, कैपिटल इश्यूज़ के नियंत्रक द्वारा निर्धारित किए गये मूल्य पर १०/- रुपये प्रति के इक्विटी शेयरों में परिवर्तित किया जाएगा.

७७,७७०३,०५०/- रुपये की कुल राशि के ५१,८४,६८७- १५०/- रु. प्रति नकद सममूल्य के १४% सुरक्षित पूर्णतः परिवर्तनीय डिबेंचरों का पब्लिक इश्यू.

इश्यू १९ नवम्बर १९९० को खुलेगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम सम्परिवर्तन (कन्वर्जन) पर मात्र ३०/ रुपये प्रति पर एसएम डाईकेम शेयर प्राप्त करने का मौका.

प्रथम सम्परिवर्तन आबंटन तिथि के ६ महीने पश्चात शेष का सम्परिवर्तन २४ महीने पश्चात.

टर्नओवर तथा मुनाफे में १००% औसत वार्षिक वृद्धि

आकर्षक लाभांश पिछला लाभांश ३०%

एसएम डाईकेम लि.

फलता की बात, मूल्य-गुण वृध्दि के साथ

रजि. कार्यालय: एस एम हाउस, ११ सहकार रोड, विले पारले (पू), बम्बई - ४०० ०५७.

इश्यू के प्रमुख प्रबंधक

एसबीआई कैपिटल मार्केट्स लिमिटेड
२०२ मेकर टावर्स 'ई', कफ परेड
बम्बई – ४०० ००५.

कैनबैंक फाइनेन्शियल सर्विसेस लिमिटेड
(केनरा बैंक के सम्पूर्ण स्वामित्व में सहायक कंपनी)
११५, अटलान्टा, नरीमन प्वाइंट,
बम्बई - ४०० ०२१.

इंडबैंक
१७ वी मंजिल, मेकर टावर्स, 'एफ कफ परेड, बम्बई - ४०० ००५.

इंडस्ट्रियल फाइनेंस कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया
मर्चंट बैंकिंग डिविजन,
अर्नेस्ट हाउस, नरीमन प्वाइंट,
बम्बई - ४०० ०२१.

यदि कंपनी को इश्यू की राशि की न्यूनतम ९०% सब्सक्रिप्शन प्राप्त न हो तो इस इश्यू के बंद होने की तिथि से ९० दिनों के अंदर पूर्ण सब्सक्रिप्शन लौटा दिया जाएगा. यदि राशि के लौटाने में १० दिन से अधिक समय का बिलम्ब हो तो विलम्ब की अवधि के लिए कम्पनी १५% वार्षिक की दर से ब्याज का भुगतान करेगी.

Adfactors/SMDL/P3 (H)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

The Thapar Group

JCT FABRICS

अरमनकला की प्रेरणा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

JCT FABRICS

आशंकाएं सच हुईं

'वोटों के लिए घमासान' (15 नवंबर) ने उन लोगों की आशंकाओं को सही साबित कर दिया कि बैसाखियों पर टिकी रामो सरकार स्थायी नहीं हो सकती. केंद्र में गैर कांग्रेसी सरकार का प्रयोग एक बार फिर नाकाम रहा.

दिल्ली — **विभा मल्होत्रा**

असली चेहरा

'बिखरते कुनबे' (31 अक्तूबर) की असलियत यह है कि इसकी दीवार अवसरवादिता और सत्तालोलुपता पर चुनी गई थी, अन्यथा धर्मनिरपेक्षता की दुहाई देने वाले इस कुनबे ने सांप्रदायिक कही जाने वाली पार्टी से हाथ ही क्यों मिलाया ? क्यों स्वीकारा था उसका समर्थन व सहयोग ?

इलाहाबाद (उ.प्र.) — **अंशुमान सिंह**

■ सत्तारूढ़ जनता दल का 'बिखरता कुनबा' वी.पी. सिंह की हठधर्मिता और अदूरदर्शिता का परिणाम है. प्रधानमंत्री की सभी योजनाएं राष्ट्र को जाति-धर्म-वर्ग के आधार पर बांटती-सी प्रतीत हुईं. रुबाइया अपहरण के नाटक से लेकर मंडल रिपोर्ट लागू करने और श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण तक के मसले पर उनके फैसले क्रमशः उनकी लोकप्रियता कम करने वाले साबित होते रहे.

सुजानगढ़ (राज.) — **अजय कुमार माथुर**

■ वास्तव में मोर्चा सरकार कुनबा तो कभी बना ही नहीं. यह तो एक-दूसरे को धता बताने का रणक्षेत्र मात्र रहा है. आदर्शवादिता का स्वांग रचते वी.पी. सिंह की असलियत तब बेनकाब हुई जब अल्पमत में आ जाने पर भी कुर्सी से चिपके रहने में उन्हें जरा भी झिझक महसूस नहीं हुई.

भीलवाड़ा (राज.) — **अजय मूंदड़ा**

वही बेढंगी चाल

'अनैतिक राजनीति का खेल' (31 अक्तूबर) पढ़ा. राजीव का एकतरफा फैसला तो आलोचना का विषय बना ही, राज्यपाल ने भी राष्ट्रपति शासन की सिफारिश कर राज्यपाल पद की गरिमा को नष्ट किया है.

पटना (बिहार) — **अमृतोपम**

■ राजीव का व्यवहार तो तानशाह से कम न था. मनमानी करने की उनकी आदत गई नहीं. केंद्र सरकार ने भी राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू कर अपनी दोमुंही नीति को दर्शाया है. जनता दल एक ओर ऊंचे आदर्शों की बात करता है लेकिन मौका आने पर उसने वही किया, जिसका वह विरोध करता आया है.

चौमहला (राज.) — **दिनेश पारकर**

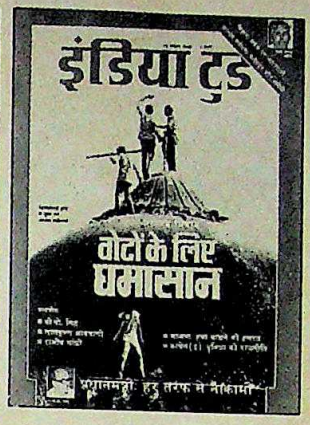

राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद का समाधान बातचीत से ढूंढ़ना ही उचित होगा. लेकिन हिंदुओं को भी आश्वासन देना होगा कि फिर किसी मस्जिद पर हमला नहीं बोला जाएगा.

किशनगंज (बिहार) — **शमसुल हक**

सौहार्द बढ़ा

'फूलों में छिपे कांटे' (31 अक्तूबर) आडवाणी की रथयात्रा को सांप्रदायिक सनक के रूप में दर्शाती है. भावनाओं को भुनाना शायद राजनीति का एक अटूट हिस्सा बन चुका है. यदि आडवाणी को यह दोष दिया जाता है तो प्रधानमंत्री को क्या कहेंगे जो पटना में सद्भावना रैली के नाम पर जातीय संघर्ष को बढ़ावा देते हैं.

कैथल (हरियाणा) — **देवेंद्र कुमार सचदेवा**

■ आडवाणी के रथ का जिस तरह स्वागत किया गया वह हिंदुओं में राम मंदिर के प्रति अभूतपूर्व उत्साह का ही प्रतीक है. मुसलमान भाइयों ने भी रथ का स्वागत कर अपनी सद्भावना का परिचय दिया है.

गोरखपुर (उ.प्र.) — **उदय प्रकाश श्रीवास्तव**

■ भाजपा की रथयात्रा का उद्देश्य धार्मिक सौहार्द व राष्ट्रीय एकता नहीं वरन सांप्रदायिकता के दानव को जगाना है. सांप्रदायिकता भारतीय लोकतंत्र के लिए अभिशाप बन गई है. अब भाजपा जैसी पार्टियों ने तो धर्मनिरपेक्षता का झीना आवरण भी उतार फेंका है.

इलाहाबाद (उ.प्र.) — **सत्येंद्र बहादुर सिंह**

■ भाजपा अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी की रथयात्रा परोक्ष रूप से वोटों की राजनीति थी. पर यह कहना गलत होगा कि उनकी यात्रा से सांप्रदायिकता फैली. बिहार जैसे संवेदनशील राज्य के आठ जिलों में रथयात्रा के दौरान जो सौहार्द का वातावरण देखने को मिला उससे धर्मनिरपेक्षता का ढोंग रचने वाले राजनीतिकों की कलई खुल गई.

पटना (बिहार) — **अजित कुमार**

निकम्मेपन की हद

'आखिर लावा फूट पड़ा' (31 अक्तूबर) में तिहाड़ जेल में हुए कांड को बखूबी प्रस्तुत किया है. ऐसा कांड पुलिस और प्रशासन के निकम्मेपन का ही परिचायक है. तिहाड़ जेल से कैदी भाग निकलते हैं तो बाकी जेलों को विश्रामगृह कहना अनुचित नहीं होगा.

रतलाम (म.प्र.) — **आशीष 'अंकुर'**

■ एक तरफ जेलों का नाम बदलकर सुधारगृह रखा जा रहा है तो दूसरी तरफ तिहाड़ जेल जैसे कांड हो रहे हैं. असल में सारी व्यवस्था ही चौपट है. सुधार के नाम पर बनाई

वर्ष: 5, अंक: 2,
16-30 नवंबर 1990

● संपादकीय कार्यालय: लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001. फोन: 331 5801-4, टेलेक्स: 31-61245 INTO IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली. ● मुख्य सर्कुलेशन कार्यालय: इंडिया टुडे सर्कुलेशन मैनेजर, एफ-14, कपिटेट हाउस, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001. फोन: 3313076-8, टेलेक्स: 31-62834 INTO IN, तार: सर्कुलेट, नई दिल्ली. ● मुख्य विज्ञापन कार्यालय: 28 ए और बी, जॉली मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. फोन: 2026152, 2029326, 2029435, टेलेक्स: 11-5373 THOM IN, तार: लिवमीडिया, बंबई. ● क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय: के-9, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001, फोन: 3325378, 3323576, 3321323, 3321273; टेलेक्स: 31-62124 THOM IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली ● फागुन चैंबर्स, 26 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105. फोन: 477188, टेलेक्स: 041-6177 INTO IN, तार: लिवमीडिया, मद्रास ● 74/1 सेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001. फोन: 568448, 570037, 579089, टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN, तार: लिवमीडिया, बंगलूर ● 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700016 फोन: 225398, 221022, टेलेक्स: 21-7138 INTO IN, तार: लिवइन-मीडिया, कलकत्ता. ● कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता. ● लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई योजनाएं सिर्फ कागजों पर ही हैं.
चंडीगढ़ — विनोद बिन्नी

असंवेदनशील सरकार

'अपनी बात' (31 अक्तूबर) में आपके विचार पूर्णतः सही और तार्किक हैं. वास्तविकता यह है कि अक्सर ही राजनीतिक अपनी हार के लिए प्रेस को जिम्मेदार ठहराते हैं. छात्र जब आत्मदाह को तत्पर हों तो उनसे किसी तरह की सकारात्मक बातचीत न करना सरकार की असंवेदनशीलता ही दर्शाता है.
सरगुजा (म.प्र.) — महेंद्र दुबे

नेता जिम्मेदार

'नफरत का खूनी जुनून' (31 अक्तूबर) अब चरम पर है और इसकी जिम्मेदारी राजनीतिकों पर ही है. इससे तभी बचा जा सकता है जब सारे संप्रदाय टकराव की मानसिकता छोड़ विश्वबंधुत्व की धारणा अपनाएं.
कठुआ (जम्मू-कश्मीर) — आई.डी. खजूरिया

अनैतिक आचरण

'जातीय संघर्ष की रणभेरी' (31 अक्तूबर) में वी.पी. सिंह ने जिस तरह 7 अगस्त को लगाई आग को हवा दी, वह राजनैतिक अनैतिकता की चरम सीमा है. वोटों की रोटी सेंकने के लिए वी.पी. सिंह ने चूल्हे और जलावन की व्यवस्था तो कर ली है पर आटे का कहीं पता नहीं है.
पटना (बिहार) — जयकांत

प्रशिक्षक दोषी

'हर मैदान में पिटे' (31 अक्तूबर) पढ़कर लगा कि खिलाड़ियों के खराब प्रदर्शन के लिए प्रशिक्षक भी जिम्मेदार होते हैं. दीनाराम जब ट्रैक पर उतरने जा रहा था तब उसे जापानी धावक का समय बताकर उसका मनोबल गिराना कहां की समझदारी थी. फिर जोगिंदर सिंह टाइगर का बहादुर को आतंकवादी कहना क्या गुरु को शोभा देता है?
लखनऊ (उ.प्र.) — शोभित मिश्रा

■ हमारे खिलाड़ी अच्छे एवं जुझारू हैं इसमें शक नहीं. मगर भारतीय ओलंपिक संघ का टकराव और प्रशिक्षकों की खिलाड़ियों से विद्वेष भावना इस शर्मनाक पराजय का कारण है. यदि दीर्घकालिक खेलनीति नहीं बनाई जाती और खेल संगठनों में खिलाड़ियों को नियुक्त नहीं किया जाता तब तक यही क्रम चलेगा.
इलाहाबाद (उ.प्र.) — राकेश सिंह 'शशि'

अधिकांश आत्महत्याएं नाम पाने के लिए की गईं यह निष्कर्ष सही नहीं. दूसरे छात्रों की आत्महत्याएं उनके लिए प्रेरणास्रोत बनीं जिसकी उन्हें तलाश थी.
इंदौर (म.प्र.) — डॉ. दिनेश जैन

आपकी पत्रिका में छपी तस्वीरें भय उत्पन्न करती हैं. छात्रों को आत्मदाह जैसे वीभत्स विचार छोड़ देने चाहिए. छात्र शक्ति अपने संघर्ष से सरकार के फैसले को बदल देने का माद्दा रखती है.
भोपाल (म.प्र.) — प्रियांक ठाकुर

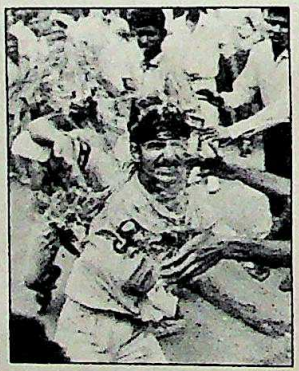

दुख की बात है कि मनोवैज्ञानिकों ने आत्मदाह जैसे पीड़ादायक और कठोर कदमों को भी मात्र प्रचार पाने का हथकंडा समझा. प्रचार पाने के लिए छात्र हमला, हत्या की धमकी या हिंसा जैसा रास्ता अपनाते, न कि आत्मदाह करते.
जबलपुर (म.प्र.) — संजीव चौधरी

■ 11वें एशियाई खेलों पर विशेष लेख पढ़कर लगा कि भारतीय खिलाड़ी तो मेहनतकश थे किंतु हमारे प्रशिक्षकों को खिलाड़ियों से अधिक अपने आप पर भरोसा था. अब बेचारे पहले से भविष्यवाणियां नहीं करते तो पेइचिंग कैसे जा पाते.
उज्जैन (म.प्र.) — चंद्रशेखर शर्मा

■ खेल संघों की राजनीति ने खेल के मैदानों को इतना गंदा कर रखा है कि तमाम देशों के प्रतिद्वंद्वी खिलाड़ियों के बीच भारतीय खिलाड़ी पिद्दी साबित होते रहे हैं. इन खिलाड़ियों से अधिक उनके प्रशिक्षक इस स्थिति के लिए जिम्मेदार हैं, जो विदेशी धरती पर भी कलाबाजी दिखाने से नहीं हिचकते.
रायपुर (म.प्र.) — हेमंत कुमार

सनसनीखेज

'अप्रत्याशित ज्वार-भाटा' (31 अक्तूबर) में रियर एडमिरल भागवत की याचिका सनसनी फैलाने वाली है. यदि भारतीय सेना में इसी तरह भ्रष्टाचार पनपा तो यह देश के हित में नहीं होगा. राष्ट्रपति को, जो कि सेना के सर्वोच्च कमांडर भी होते हैं, जनहित में आरोपों की जांच कराकर सेना के मनोबल को कायम करना चाहिए.
खगड़िया (बिहार) — शैलेंद्र सिंह तरकर

बखूबी वर्णन

कहानी 'दुनियादारी' (31 अक्तूबर) में लेखक ने एक बालक से जुड़े प्रसंग के जरिए जीवन की विडंबनाओं और त्रासदियों का वर्णन बखूबी किया. कहानी की विशेषता सीधी और सरल भाषा है जो दिल को छू लेती है.
बीकानेर (राज.) — विनेंद्र कुमार जैन

■ डॉ. रमेश की कहानी ने काफी कुछ सोचने पर विवश कर दिया. गुलाब जादूगर और साधु की तरह ही हमारे देश के नेता व धार्मिक ठेकेदारों का संबंध है. परस्पर ये एक-दूसरे के विरोधी बयान जारी करते हैं लेकिन परदे के पीछे ये एक साथ मंत्रणा भी करते हैं.
पटना (बिहार) — शैलेश कुमार चौधरी

कड़वी सचाई

'बेस्वाद सरसों का साग' (31 अक्तूबर) में कड़वी सचाई को उजागर किया है. इन धारावाहिकों को देखकर लगता है कि सिखों-हिंदुओं की दूरियां बढ़ गई हैं. ऐसे धारावाहिकों को सामाजिक सचाइयों से जोड़कर प्रस्तुत करना चाहिए.
दिल्ली — मनोज बजाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुहाई और अमल की खाई

सभी रेखाचित्र: अजीत नैनन

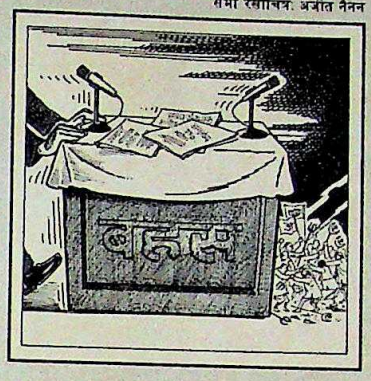

कितना प्यारा शब्द है धर्मनिरपेक्षता! प्रत्येक दल इसकी दुहाई तो देता है, इस पर अमल नहीं करता.

महान धर्मनिरपेक्ष कही जाने वाली कांग्रेस पार्टी की कृपा से 1984 में सिख विरोधी दंगे हुए, 1986 में मुस्लिम महिला विधेयक सामने आया और 9 नवंबर 1989 को अयोध्या में शिलान्यास समारोह संपन्न हुआ. आजादी के बाद मार्क्सवादियों ने भी मुसलमानों की मांग पर केरल में मलप्पुरम जिले का सांप्रदायिक आधार पर निर्माण करके अपनी धर्मनिरपेक्षता का परिचय दिया. पिछले साल जनता दल ने अपना चुनावी अभियान इमाम बुखारी के फतवे के साथ शुरू किया. और भाजपा की क्या बात की जाए? इसकी जड़ें आरएसएस में गहरी पैठी हुई हैं जिसका लक्ष्य किसी काल्पनिक हिंदू राष्ट्र की स्थापना करना है.

इस संदर्भ में दो क्रूर सचाइयों का जिक्र करना आवश्यक है. पहली तो यह कि अंधविश्वासों, तथा अस्पृश्य माने जाने वालों के साथ भेदभाव से त्रस्त हिंदूवाद इस देश की मुश्किलों का समाधान नहीं बन सकता. दूसरी यह कि मुसलमान अभी भी आर्थिक रूप से पिछड़े और वंचित हैं. वे अपने साथ भेदभाव की शिकायत करते हैं तो उसे नाजायज नहीं माना जा सकता.

भाजपा नेतृत्व का दावा है कि वह किसी धर्मतांत्रिक राज्य-व्यवस्था में यकीन नहीं रखता बल्कि भारत में धर्मनिरपेक्षता की विसंगतियों पर सवाल उठाता है—भारत ने धर्मनिरपेक्षता को चुना है, तब फिर अल्पसंख्यक आयोग या समान आचार संहिता की जगह मुसलमानों के लिए अलग संहिता की क्या जरूरत?

इन मुद्दों पर बहस की जरूरत है इससे कोई इनकार नहीं कर सकता. लेकिन बहस की जगह जब रथयात्राएं शुरू की जाती हैं तो पूरा माहौल धार्मिक उन्माद के कारण बिगड़ जाता है. इसी तरह तथाकथित धर्मनिरपेक्ष पार्टियां और मुसलमान नेता मुसलमानों के लिए आर्थिक और सामाजिक समानता जैसे अहम मुद्दों को उठाने की जगह उनमें असुरक्षा की भावना जगाकर वोट बैंक बनाने की कोशिश करते हैं. लोग तो आपस में मिलकर रहना चाहते हैं, नेता यह नहीं चाहते क्योंकि उनके राजनैतिक अस्तित्व के लिए यह जरूरी है कि लोगों की अलग-अलग पहचान बनी रहे.

मगर इन प्रवृत्तियों से देश में अमानवीय असहिष्णुता का जो माहौल बनेगा उससे मध्ययुगीन कट्टरवाद हावी होगा.

जनता ही असली निर्णायक

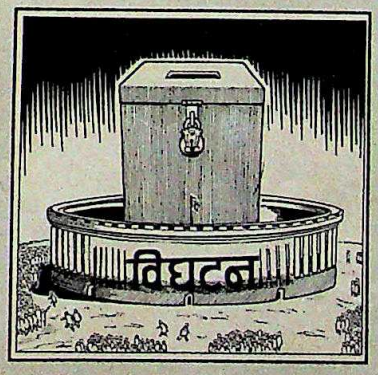

पिछले पखवाड़े देश में जिस तरह की राजनैतिक नौटंकी चलती रही, और भूतपूर्व तथा भावी नेतागण जिस तरह की जोड़-तोड़, और टांगखिंचाई में लगे रहे उसमें उस एक चीज को भुला ही दिया गया जो इन नेताओं के अस्तित्व के लिए बेहद जरूरी है. वह चीज है जनादेश.

पिछले चुनाव में इन नेताओं को जो जनादेश मिला था उसे कुल मिलाकर निश्चित नहीं माना जा सकता. मगर सरकार यह जनादेश भी खो चुकी थी. इसके पीछे वजह चाहे जो भी रही हो—जनता दल की भीतरी कलह, या अवसरवाद या भाजपा का धार्मिक दुस्साहस—इस सरकार को किसी भी रूप में बने रहने का अधिकार नहीं रह गया था.

लोकतंत्र में जनादेश को हस्तांतरित नहीं किया जा सकता. डाले गए वोट को किसी जिंस की तरह दूसरे को सौंपा नहीं जा सकता. एक बार इस वोट के पीछे की अपेक्षाओं और आदर्शों को झुठला दिया जाता है तो फिर कोई भी किसी तरह—गफलत से या साजिश से—इसका उत्तराधिकारी होने का दावा नहीं कर सकता. तब वह सामाजिक करार खत्म हो जाता है जिसके तहत जनता अपनी संप्रभुता किसी सरकार को एक निश्चित अवधि के लिए सौंपती है. इसलिए नया करार करने के लिए नेताओं को फिर से जनता के पास जाना ही चाहिए.

पिछले पखवाड़े विश्वनाथ प्रताप सिंह सरकार ने जनादेश खो दिया. मगर इस जनादेश पर अब न तो राजीव गांधी दावा कर सकते हैं और न ही चंद्रशेखर. न ही कोई अवसरवादी गठजोड़ इसे हड़प सकता है. इसलिए नैतिकता का तकाजा तो यह था कि ये नेतागण देश पर राज करने के लिए फिर से जनादेश हासिल करते.

देश में फैले जातीय और सांप्रदायिक तनाव के कारण चुनाव कराने की व्यावहारिकता पर संदेह व्यक्त किए गए हैं. नेताओं का कहना है कि चुनाव कराए गए तो रक्तपात हो सकता है. ऐसी आशंकाएं इस इरादे से व्यक्त की गई मानी जा सकती हैं कि नेताओं को आधार मजबूत करने के लिए और समय मिल जाए. कौन कह सकता है कि चुनाव बाद में हुए तो ज्यादा शांतिपूर्वक होंगे. क्या चुनाव टालने से नेताओं को वोटों के लिए जातिवादी और सांप्रदायिक भावनाओं को उभारने का और समय नहीं मिलेगा?

इस तरह की आशंकाएं उन्हीं नेताओं के द्वारा जान-बूझकर व्यक्त की जाती हैं जो जनता की असुरक्षा की भावनाओं को भुनाने की चाह रखते हैं. लोकतंत्र में शॉर्टकट से काम नहीं चलता. जनता को वोट देने का अधिकार मिलना ही चाहिए और राज्य-व्यवस्था को अमन-चैन रखने के लिए हर संभव कोशिश करनी ही चाहिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गतिरोध में जकड़ा गृह

● पिछले कई महीनों से सरकार में जो गतिरोध आया है, उसका सबसे ज्यादा दुष्प्रभाव गृह मंत्रालय पर पड़ा है. और आतंकवाद के कहर से घिरे पंजाब

के हालात में यह प्रभाव साफ दिखता है.

हालांकि यह राज्य राष्ट्रपति राज के अधीन है लेकिन गृह मंत्रालय की सुस्ती के चलते राज्यपाल महत्वपूर्ण फैसले नहीं ले पा रहे. महीना भर पहले तक पूर्व गृह राज्यमंत्री सुबोधकांत सहाय को पंजाब विभाग सौंपा गया था लेकिन बाद में उनसे यह विभाग ले लिया गया.

राज्य प्रशासन को सूचित किया गया कि मुफ्ती मुहम्मद सईद खुद राज्य के मामलों को देखेंगे. लेकिन वरिष्ठ अधिकारियों की शिकायत थी कि महत्वपूर्ण फाइलें इसीलिए रुकी रहीं क्योंकि मुफ्ती उनमें रुचि नहीं लेते थे. और तो और, वे शाम को भी भेंट के लिए उपलब्ध नहीं होते थे. ऐसे में काम कैसे चल सकता है.

मसलन, अधर में लटका एक महत्वपूर्ण फैसला यह था कि हाल ही में हथियारों समेत स्वर्ण मंदिर में प्रवेश करने पर गिरफ्तार होने वाले अकाली दल (मान) के अध्यक्ष सिमरनजीत सिंह मान का क्या करें. नई नीति के तहत राज्य प्रशासन ने सिफारिश की थी कि राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम के तहत मान को अनिश्चित काल के लिए नजरबंद कर लिया जाए. लेकिन गृह मंत्रालय था कि कानों में रूई ठूंसे बैठा रहा. अब मान रिहा कर दिए गए हैं.

अनोखा साम्य

● दोनों की जीवन शैली और बौद्धिकता में भले ही जमीन-आसमान का अंतर है. मगर देखने में दोनों एक-से लगते हैं. ये हैं—नौकरशाह से इंका नेता बने मणिशंकर अय्यर और अंग्रेजी को खदेड़ने का बीड़ा उठाने वाले उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव.

मणिशंकर अय्यर मुलायम सिंह यादव के साथ अपनी साम्यता को थोड़ी चिढ़ के साथ कबूल करते हैं. लेकिन ज्यादा चिंता उन्हें इस बात की लगती है कि उनके और मुलायम सिंह के नाम के आरंभिक अक्षर भी एक ही हैं—एमएसए. पर मुलायम सिंह यादव क्या एमएसवाई नहीं हैं ? अय्यर कहते हैं, नहीं. उत्तर प्रदेश की जाति परिभाषा के अनुसार यादव अहीर का ही

सभी कार्टून: अजीत नैनन

पर्याय है. तो यादव भी एमएसए (मुलायम सिंह अहीर) ही हुए.

इमरजेंसी चालू है

● इमरजेंसी का दौर खत्म हुए तो करीब चौदह साल बीत गए हैं मगर दिल्ली पुलिस के लिए मानो 1976 वाली इमरजेंसी अभी जारी है. अयोध्या में कार सेवकों के मारे

जाने के विरोध में भारतीय जनता पार्टी द्वारा 5 नवंबर को आयोजित दिल्ली बंद की पूर्व संध्या पर स्थानीय पुलिस संभावित दंगाइयों की तलाश में राजधानी के चप्पे-चप्पे पर तैनात की गई थी.

नजरबंद किए जाने वालों की सूची में वही नाम थे जिनकी इंदिरा गांधी की इमरजेंसी के दौरान प्रशासन को तलाश थी. तब भूमिगत हो चुके राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के हजारों कार्यकर्ताओं की धर-पकड़ किए जाने वालों की सूची में एक तेजतर्रार छात्र नेता का भी नाम था. लिहाजा, अब 14 वर्ष बाद छह पुलिसवालों ने उनके घर पर आकर फिर दस्तक दी. लेकिन वे नहीं मिले. तो क्या वे पुलिस से बचने के लिए फरार हो गए ?

'नहीं. वे तो थोड़ी ही दूर अपने नए सरकारी बंगले में रह रहे थे. ये हैं—अरुण जेतली, अतिरिक्त महान्यायवादी, भारत सरकार.

प्रचार की प्यास

● कांग्रेसियों में प्रचार की ललक इतनी प्रबल है कि समाचार माध्यमों की नजर में रहने के लिए वे नए से नए तरीके ईजाद कर लेते हैं. उनका मन अब भी उन दिनों के लिए तरस रहा है जब कमलाकांत तिवारी के सूचना और प्रसारणमंत्री रहते दूरदर्शन के कैमरे उन पर केंद्रित रहा करते थे.

वैसे, अब भी कभी-कभी दूरदर्शनी प्रचार का प्रसाद उन्हें मिल जाता है. आजकल चूंकि टीवी पर उन्हें ज्यादा दिखाया जाने लगा है, सो उनकी हरचंद कोशिश रहती है कि उनके नेता राजीव गांधी पर कैमरा ज्यादा से ज्यादा केंद्रित रहे.

पिछले कुछ हफ्तों के दौरान तेजी से बदलते राजनैतिक हालात के चलते इंका प्रवक्ता विट्ठल

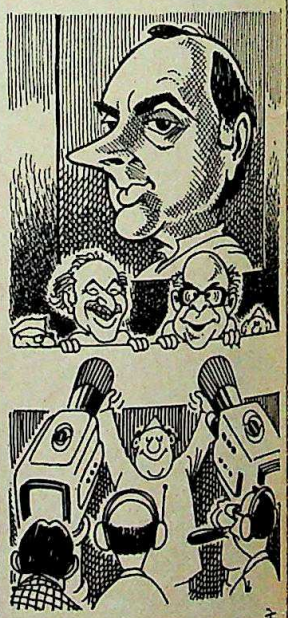

नरहरि गाडगिल शाम के समाचारों में तकरीबन रोज ही नजर आने लगे. इससे पार्टी के मुख्यालय में हरकत हुई. कार्रवाई तुरत-फुरत हुई. और एक शाम पाया गया कि इंका प्रेस कक्ष में थोड़ा बदलाव कर दिया गया है. गाडगिल के ऐन पीछे इंका अध्यक्ष राजीव गांधी के मुस्कराते चेहरे की बड़ी-सी फोटो टांग दी गई थी. इसे कहते हैं बड़े नेता का बड़ा प्रचार.

...और एक चुटकी

जिस तरह चरण सिंह कांग्रेस की मदद से मोरारजी सरकार को गिराकर प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठे थे, उसी से मिलते-जुलते नाटक के कारण चंद्रशेखर को अपना नाम बदलकर चरण शेखर रख लेना चाहिए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साठ साल के बूढ़े या साठ साल के जवान?

देखा आपने? ६० साल की उम्र में भी कितनी शक्ति, कितनी स्फूर्ति! जबकि आप अभी ३० ही के हैं फिर भी थकान महसूस करते हैं. क्यों?

इसका जवाब है - केसरी जीवन.

हर दिन, दिन में दो बार दो चम्मच.

ज़ाफ़रान (केसर) - अनमोल तत्व!

केसरी जीवन की बोतल खोलिए... दुनिया की सबसे महँगी जड़ी-बूटी असली ज़ाफ़रान की खुश्बू आपका स्वागत करेगी... कश्मीर की वादियों से चुना गया ज़ाफ़रान.

केसरी जीवन में ज़ाफ़रान के आरोग्यकर और सौन्दर्यवर्धक गुणों के साथ ताज़ा आंवला व अन्य अनेक जड़ी-बूटियों भी तो हैं जो शरीरगठन मज़बूत बनाएं, शरीर के टिशूज़ को वृद्धावस्था में भी चुस्त रखें, तेज़ रफ़्तार ज़िंदगी के तनावों से मुक्त रखने में सहायक हों और बीमारियों से मुकाबला करने की शक्ति दें.

ज़िंदगीभर सेहत का अनमोल रत्न
आप भी पाइए. जीभर कर जीने की तरो-ताज़गी महसूस कीजिए.

झंडु केसरी जीवन

रग रग में जान - ज़िन्दगी की शान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी चहेती पत्रिका
आपके दरवाज़े पर
न खरीदने का झंझट...
न खत्म होने का डर

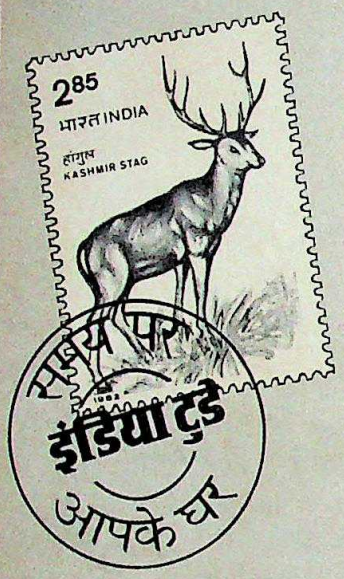

इस सुविधा का लाभ उठाइए.
अपनी चहेती इंडिया टुडे
घर बैठे – नियमित पाइए.
न खरीदने जाने की जरूरत...
न अंक खत्म होने का डर,
इंडिया टुडे
समय से पहुंच जाए आपके घर!

बस कूपन भर कर भेज दीजिए,
देर मत कीजिए!

नाम: _____

डाक पता: _____

मूल्य: वार्षिक रु. 132/-
भुगतान का माध्यम-चैक/मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट
(दिल्ली से बाहर के चैकों के लिए 5/- रु. प्रति चैक की अतिरिक्त राशि देय है)
कृपया चैक निम्नलिखित नाम पर बनाएं और इस पते पर भेजें:
लिविंग मीडिया इंडिया लि.
पो. बॉ. नं. 706,
फरीदाबाद- 121 007
(हरियाणा)

इंडिया टुडे
देश की भाषा में देश की धड़कन

MILESTONES/IT/120

रंगा, स्टेट्समैन

● राजीव गांधी, अरुण नेहरू, मुफ्ती मुहम्मद सईद वगैरह तो मुनाफा कमाने कांग्रेस में घुस गए थे. असली कांग्रेसी तो चंद ही बचे हैं. उनमें से मैं एक हूं.
■ **देवीलाल,** *राजस्थान पत्रिका*

● अगर खंजर चलाना है तो सामने आकर चलाओ. मैं जहर खाकर मरने वालों में नहीं हूं. ■ **विश्वनाथ प्रताप सिंह,** *दिल्ली में दंगापीड़ितों की सभा में*

● सत्ता की आपाधापी में देश की आत्मा कहीं पीछे छूट गई है.
■ **बीजू पटनायक,** *हिंदुस्तान*

● कोई भी सांसद चुनाव नहीं चाहता. मगर हम चुनाव से भयभीत नहीं हैं.
■ **अजित सिंह,** *दैनिक ट्रिब्यून*

● मेरे नाम के पहले मौलाना और पीछे खां लगा देने से मुझे खुशी है क्योंकि कम-से-कम मेरा नाम सांप्रदायिक एकता का प्रतीक बन गया है.
■ **मुलायम सिंह यादव,** *माया*

● वह (मुलायम सिंह यादव) तो चंगेज खां हैं. ■ **अशोक सिंहल,** *पांचजन्य*

● अगर यह मसला (राम जन्मभूमि विवाद) अयोध्या के लोगों के हाथ में होता तो कब का सुलझ जाता. ■ **मौलाना सैयद बुखारी,** *जनसत्ता*

● पहले अपना घर संभालो उसके बाद समर्थन की बात करना.
■ **हरिदेव जोशी** (जद विधायक दल के नेता नत्थी सिंह से), *राजस्थान पत्रिका*

● मैं अपने आपको इतना लायक नहीं समझता हूं कि सरकार या पार्टी में किसी पद पर आ सकूं. ■ **राजमंगल पांडे,** *साप्ताहिक हिंदुतान*

● अब तो बल्ला छूने का भी मन नहीं करता. ■ **सुनील गावसकर,** *स्पोर्ट्सवर्ल्ड*

● अब तो साठ किलो का अतिरिक्त वजन संभाले हुए हूं. क्या कर लेगी जिंदगी इस थुलथुले शरीर का? मैं मजदूर हूं, कारीगर हूं जो सबके साथ मिलकर मेहनत से अपना करिश्मा दिखा सकता है. ■ **शशि कपूर,** *धर्मयुग*

● मैं अभी तक शहरी जीवन के साथ तालमेल नहीं बिठा पाया हूं.
■ **धर्मेंद्र,** *सिने ब्लिट्ज*

● मेरे पास हर चौबीस घंटे एक फिल्म का प्रस्ताव आ रहा है लेकिन मैंने अब तक चार फिल्में ही साइन की हैं. ■ **करिश्मा कपूर,** *स्टारडस्ट*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

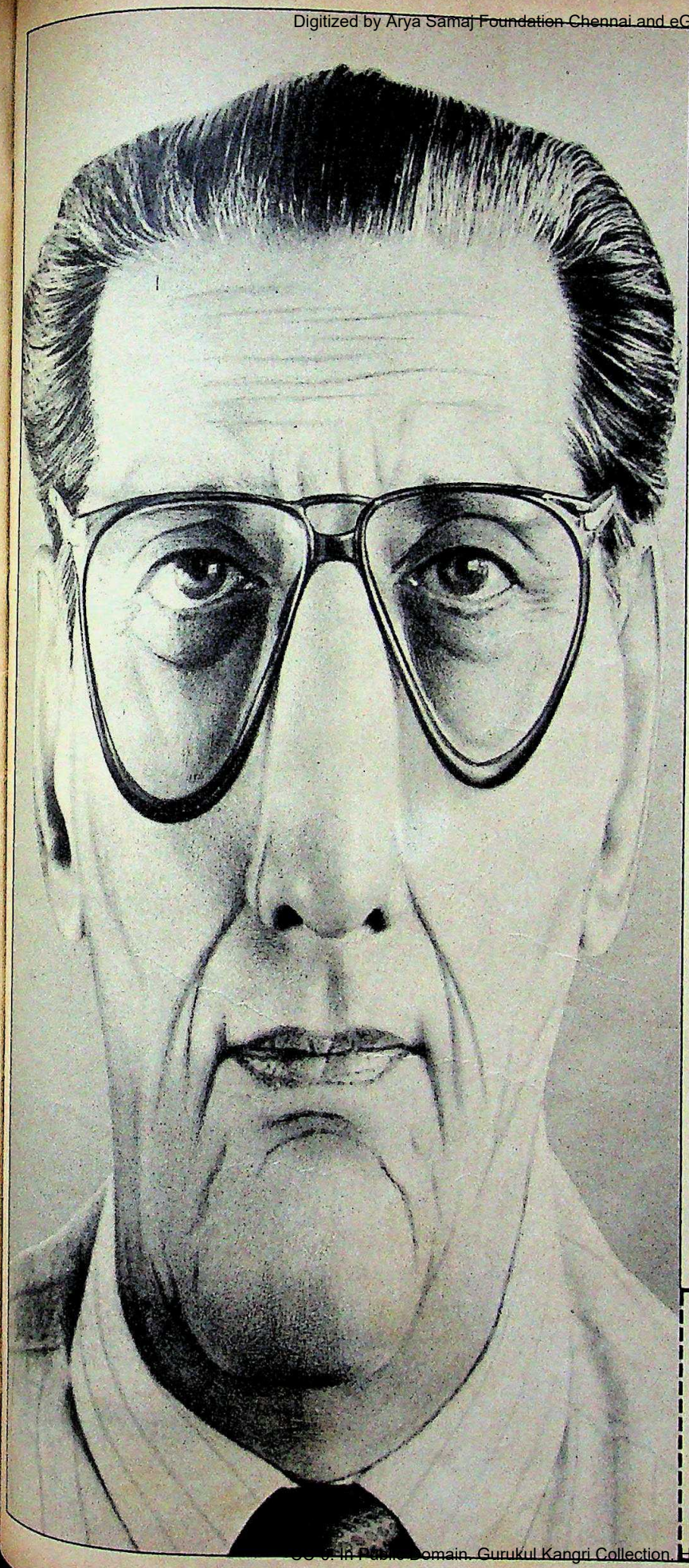

"जी हां मैं अच्छी तरह जानता हूं कि एल आई सी की समूह ग्रैच्युटी योजना मेरे कर्मचारियों के लिए लाभदायक है..."

"परन्तु मुझे इससे क्या फायदा है?"

- योगदान राशि (वेतन का 8.33% तक) पर आय कर में 100% छूट.
- पिछले दायित्वों को पांच किश्तों में चुकाने की सुविधा तथा किश्त भुगतान वर्ष में आय कर में 100% छूट के अधिकारी.
- धनराशि का प्रबंध एवं बीमांकन मूल्यांकन पूर्णरूप से एल आई सी द्वारा.
- आकस्मिक परिस्थितियों के लिए बड़ी धनराशि जुटाने की परेशानी से नियोक्ता को मुक्ति.
- नकद संचयी योजना के अंतर्गत ग्रैच्युटी राशि के आकार के अनुसार प्रतिवर्ष 11.4% से 12% तक लाभ.

योजना संबंधी अधिक जानकारी व सलाह के लिए इस कूपन को अपने स्थानीय एलआईसी मंडल कार्यालय के पेंशन तथा ग्रैच्युटी योजना (P&GS) विभाग में भेजिए.

भारतीय जीवन बीमा निगम

daCunha LIC 13 90H

मैं एल आई सी की समूह ग्रैच्युटी.योजना के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहता हूं. कृपया संपूर्ण विवरण भेजें.

नाम: _____

पद: _____

संस्था: _____

पता: _____

_____ पिन: _____

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मान न मान

■ हिंदुस्तानी मेहमाननवाजी, खासकर पांच तारा होटलों की मेहमाननवाजी, के चर्चे तो दुनिया भर में हैं. इसका लुत्फ उठाने के लिए लोग ढेर सारी विदेशी मुद्रा खर्च करके यहां आते

सभी कार्टून: जयंतो

हैं. यह किस्सा एक ऐसे मेहमान का है जो विदेशी मुद्रा में बिल चुकाना तो दूर रहा, कई दिन तक दिल्ली के एक पांच तारा होटल में बिना एक धेला दिए मजे से ठहरा रहा. और बेचारे होटल प्रबंधकों का हाल यह था कि इस बिन बुलाए मेहमान की शान में गुस्ताखी करने का उन्हें साहस भी नहीं हुआ.

यह मेहमान एक बंदर था जो एक दिन टहलते हुए इस पांच तारा होटल में आ घुसा. सबसे पहली बार उसे होटल की लॉबी में देखा गया. घबराए हुए मेहमानों की चीख-पुकार सुनकर जब सुरक्षा कर्मचारियों ने इसका पीछा किया तो यह बंदर कहीं अंतर्धान हो गया. अगले दिन वह होटल के स्विमिंग पूल में प्रकट हुआ जहां पानी में तैरने का आनंद लेते लोगों के साथ उसने भी तैरने के करतब दिखाने का फैसला किया. नतीजा यह हुआ कि बदहवासी में लोग अपने कपड़े छोड़कर भाग खड़े हुए. सुरक्षाकर्मियों ने उसका यहां से पीछा किया तो वह एक कॉन्फरेंस हॉल में जाकर वहां चल रहे व्यवसायियों के सम्मेलन में शामिल हो गया. वहां से भगाए जाने से पहले उसने कुछ देर के लिए तो पूरा कार्यक्रम ठप कर डाला. सुना है कि अब इस होटल के प्रबंधक एक मदारी को भी नौकरी पर रखने जा रहे हैं.

कुएं में डाल

■ कोजीकोडे के वियूर गांव के कुछ साहसी युवकों के साथ पिछले पखवाड़े कुछ अजीब हादसा हो गया. एक दिन गांव में अचानक भगदड़ मच गई. पता चला कि एक अजगर जंगल से निकलकर एक घर में घुस गया है. गांव के कुछ युवकों ने यह खबर सुनी और आकर मोर्चा संभाल लिया. काफी दौड़-धूप के बाद उन्होंने आठ फुट लंबे और एक फुट घेरे वाले इस अजगर को जिंदा पकड़ तो लिया पर यह नहीं तय कर पा रहे थे कि इसका किया क्या जाए ?

उन्होंने स्थानीय वन अधिकारी से मदद के लिए संपर्क किया. लेकिन वहां से उन्हें टका-सा जवाब मिला कि वे इस मामले में कुछ नहीं कर सकते. उत्साही युवकों ने अब निकटवर्ती चिड़ियाघर के आगे यह प्रस्ताव रखा कि अजगर को चिड़ियाघर में रख लिया जाए. लेकिन वहां के अधिकारियों ने भी यह कहकर पल्ला झाड़ लिया कि उनके पास पहले से ही पर्याप्त संख्या में अजगर हैं. अबकी बार उन्होंने एक अन्य वन अधिकारी से संपर्क किया. और इन महोदय ने मदद करने की जगह अपना कानूनी ज्ञान बघारते हुए युवकों को धमकी दे डाली कि अजगर पकड़ने की गैर-कानूनी हरकत के लिए उन्हें गिरफ्तार भी किया

जा सकता है. आखिरी खबर आने तक बेचारे घबराए हुए युवकों ने स्थानीय पुलिस से मदद मांगी. लेकिन वहां से भी यही जवाब आया कि उनकी हवालात में अजगर को रखे जाने लायक कोई जगह नहीं है.

खांसे और फंसे

■ अयोध्या में विश्व हिंदू परिषद द्वारा राम जन्मभूमि कार सेवा अभियान को लेकर देश भर में राजनैतिक दांवपेंच का जो सिलसिला चला, उसमें कई मौके ऐसे भी आए जब वातावरण में

फैले तनाव की जगह हंसी के ठहाकों ने ले ली. राज्य सरकार और कार सेवा आयोजकों के बीच प्रतिष्ठा और राजनैतिक अस्तित्व का मुद्दा बन चुके इस अभियान को ठप करने के लिए प्रशासन ने अपनी ओर से कोई कसर नहीं छोड़ी. अयोध्या जाने वाली सभी रेलगाड़ियों को बंद कर दिया गया और सभी सड़कों की नाकेबंदी कर दी गई. सड़कों पर आने-जाने वाले पैदल लोगों की भी बारीकी से जांच की गई ताकि कोई कार सेवक पुलिस की नजरों से बचकर अयोध्या न पहुंच पाए. कार सेवकों ने भी तरह-तरह के तरीकों से पुलिस की आंखों में धूल झोंकने की कोशिश की.

ऐसा ही एक तरीका शवयात्रा का था. कुछ मामलों में कार सेवकों के छोटे-छोटे जत्थे अर्थियां लेकर 'राम नाम सत्य है' का जाप करते हुए सरयू पार जा पहुंचे. लेकिन एक 'शवयात्रा' के शव ने बीच रास्ते में खांसकर पुलिस को चौकन्ना कर दिया. शंकित पुलिसवालों ने पीछा किया. पुल पार पहुंचने पर जब घाट पर अर्थी रखी गई तब शव में होने वाली हरकत को देखकर उन्होंने धावा बोल दिया. पुलिस से बचने के लिए दूसरे कार सेवकों की तरह 'मुर्दा' भी उठकर भाग खड़ा हुआ. लेकिन पुलिस ने उसे 'कफन' समेत धर दबोचा.

रोजगार समाचार

■ इधर पिछले कुछ महीने से अलग-अलग मुद्दों को लेकर जो राजनैतिक उखाड़-पछाड़ चल रही है उसने देश में भले ही राजनैतिक अस्थिरता का वातावरण पैदा कर दिया है लेकिन इसके चलते राजनैतिक व्यंग्य की परंपरा को काफी बल मिला है. यहां तक कि आत्मदाह के एक लंबे और दुखदायी सिलसिले से जुड़े मंडल आयोग विवाद ने भी विरोधियों और समर्थकों के तरकसों में व्यंग्यबाणों का अंबार लगा दिया.

पिछले दिनों एक पोस्टर ने हिसार शहर के नागरिकों का ध्यान अपनी ओर खूब आकर्षित किया. एक सुबह शहर की दीवारों पर उग आए इस 'रोजगार समाचार' बुलेटिन में एक नया प्रशिक्षण संस्थान खुलने की घोषणा की गई थी. 'वीपी इंस्टीट्यूट फॉर फारवर्ड क्लासेज' नाम वाले इस संस्थान की एक बड़ी खासियत यह थी कि इसे अगड़ी जातियों के लिए पूरी तरह आरक्षित रखा गया था.

प्रशिक्षण के लिए उपलब्ध पाठ्यक्रमों की सूची तो और भी चौंकाने वाली थी. उदाहरण के लिए एक ६० दिवसीय कोर्स डकैती, लूटमार और बम बनाने जैसी 'कलाओं' से संबंधित था. एक अन्य कोर्स में देसी कट्टे और चाकू-छुरे बनाने जैसे 'कुटीर

उद्योगों' का प्रशिक्षण देने की बात कही गई थी. और उन युवाओं के लिए, जो कुछ ज्यादा शरीफ हैं और साहसी नहीं हैं, जूते पालिश करने और झाड़ू लगाने के एकदिवसीय डिप्लोमा की व्यवस्था भी शामिल थी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करोल बाग, दिल्ली

वाह! जन्मदिन मनाने का इससे प्यारा अंदाज़ और क्या होगा! और बात जब प्यार-मुहब्बत की हो, तो रेमण्ड रीटेल शॉप से बढ़कर कौन समझेगा आपका प्यार–सूटिंग, शर्टिंग, ट्राउज़रिंग, सफ़ारी फ़ैब्रिक्स, कम्बल, ***पार्क एवेन्यू*** रेडीमेड एक्सेसरीज़ और टॉइलेटरीज़.

रेमण्ड
रीटेल शॉप

पुरुषों के लिए भारत की सर्वोत्कृष्ट श्रृंखला – अब ६८ शहरों में.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केंद्र सरकार

हाथ का साथ कब तक?

—प्रभु चावला और हरिंदर बवेजा

लग रहा था जैसे इंका का प्रधानमंत्री और वह भी खुद राजीव गांधी शपथ ग्रहण कर रहे हों. राष्ट्रपति भवन के प्रांगण में मंच पर प्रधानमंत्री पद की शपथ ले रहे चंद्रशेखर की बहुत पुरानी आकांक्षा पूरी हो रही थी और जैसे उनकी तारीफ में उनके निवास 3 साउथ एवेन्यू लेन के अहाते में इंका के झंडे लहराने लगे थे. सेवादल के सैकड़ों कार्यकर्ता झक सफेद गणवेष में इस मकान की तरफ जाने वाली सड़क के दोनों ओर खड़े हो गए थे. कुछ और सेवादल कार्यकर्ता एक खुली मारुति जिप्सी में, जिस पर इंदिरा गांधी और राजीव गांधी की तस्वीरें लगी थीं, भरकर निहाल हुए इस सड़क पर चक्कर लगाते और नारे लगाते घूम रहे थे. चंद्रशेखर आए तो कार्यकर्ता नगाड़ों और ढोल की ऊंची आवाज पर उनके आगे-पीछे भंगड़ा करते चलने लगे.

छह मिनट का शपथ ग्रहण समारोह, जिसमें चौधरी देवीलाल एक बार फिर उपप्रधानमंत्री बन गए, संपन्न होने पर 'नए नेता' की जगह राजीव गांधी जिंदाबाद के नारे ही ज्यादा लगे.

स्वतंत्र भारत के इतिहास में दूसरी बार केंद्र की गैरकांग्रेसी सरकार गिर चुकी थी और इससे या इसके पूर्व के राजनैतिक संकट से कोई भी अछूता नहीं रह पाया. इस बार भी वही हुआ. गैरकांग्रेसी सरकार पर 'घर का भेदी लंका ढाए' वाली उक्ति अक्षरशः चरितार्थ हुई.

एक बार फिर 1979 की जनता सरकार वाले नाटक की घटिया पुनरावृति हुई. नए शासक दल—जो जनता दल से जैसे-तैसे टूटे या तोड़े गए 60 सांसदों को मिलाकर बने जनता दल (समाजवादी) (यह पुछल्ला भी इसके नेता के खुद के समाजवादी होने के दावे से जुड़ा है) बना—के रूप में एक ऐसी दुम हिलाने वाली पार्टी सामने आई जिसकी कमान 211 सांसदों वाले इंका खेमे के पास है. और इसका उदय और सरकार का बनना इस बात का प्रमाण है कि मौकापरस्ती की राजनीति देश को अस्थिरता के किस गर्त में ले जा सकती है.

लेकिन देश की चिंता किसे थी? चंद्रशेखर को तो नहीं थी. लेकिन इंका के नेताओं को भी चिंता नहीं थी जो पखवाड़े भर से अपनी पीठ आप थपथपाए जा रहे थे.

इंका के प्रवक्ता विट्ठल नरहरि गाडगिल ने कहा, "यह एक मिथक था कि इंका विरोधी दिखावा और नीतियां अपनाने से गैरकांग्रेसवाद चल जाएगा. लेकिन साबित हो गया कि इंका के प्रति उग्र रुख रखने की जगह उससे मेलमिलाप रखकर ही कोई स्थायी सरकार चलाई जा सकती है."

असली खेल किसका है, इस बारे में सारे संदेह दूर कर देने के

राजीव और चंद्रशेखर: नाजुक गठबंधन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

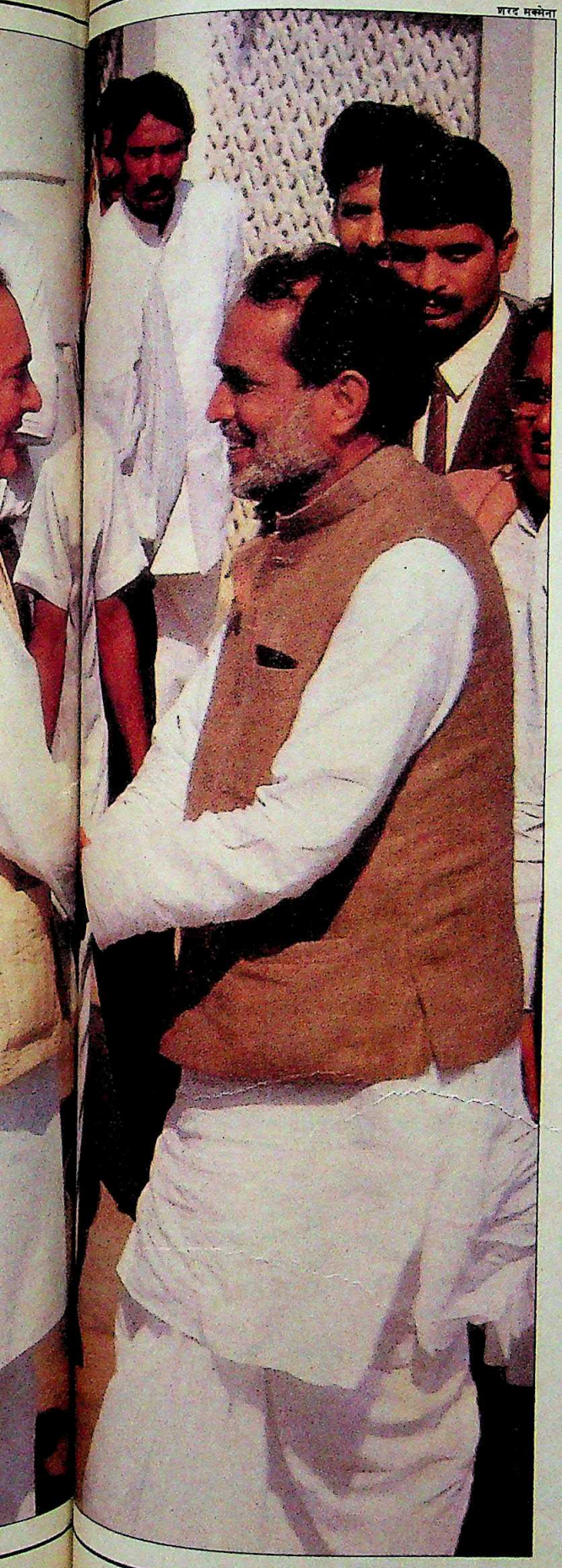
शरद मल्होत्रा

लिए ही राष्ट्रपति से सरकार बनाने का न्यौता मिलने के बाद चंद्रशेखर सबसे पहले राजीव गांधी से ही मिलने गए. और इन सबसे इंका कितनी खुश हुई इसका प्रदर्शन भी उसके नेताओं ने किया. एक इंका महासचिव ने कहा, "अब सब हमारी मर्जी से चलेगा. हमीं असली चालें चलेंगे." 48 घंटे से भी कम समय में चंद्रशेखर चार बार 10 जनपथ स्थित राजीव के निवास पर गए जबकि उधर से राजीव एक बार भी मिलने नहीं आए.

इंका की रणनीति

असल में तो इंका ने उसी दिन से चालें चलनी शुरू कर दीं जिस दिन भाजपा ने समर्थन वापस लिया. राजीव गांधी ने खुला वादा कर दिया कि उनकी पार्टी जनता दल के किसी भी दूसरे नेता को सरकार बनाने के लिए समर्थन देगी. यह चंद्रशेखर के लिए स्पष्ट इशारा था कि वे अपनी ओर से जनता दल तोड़ने की कोशिश करें.

अब अनिश्चितता सिर्फ इस बात की थी कि उनके साथ कितने सांसद होंगे. उन्हें 60 सांसद लाने थे. इंका और उसकी समर्थक पार्टियों के सांसदों की संख्या 211 थी. 60 सांसद आ जाने से न सिर्फ 271 संख्या पहुंचाकर लोकसभा में बहुमत पाया जा सकता था बल्कि जनता दल सांसदों की एक-तिहाई संख्या टूटने से वे दलबदल कानून से भी बाहर हो जाते.

इंका की मंशा क्या है, यह जताने के लिए राजीव ने अपनी पार्टी की गुजरात शाखा को निर्देश दिया कि वे भाजपा द्वारा समर्थन वापस लेने के बाद संकट में पड़े मुख्यमंत्री चिमनभाई पटेल की सरकार की मदद करें. पटेल चंद्रशेखर खेमे के नेता हैं. सिर्फ इसी एक फैसले से जनता दल के वी.पी. विरोधी खेमे को भरोसा हो गया कि राजीव सचमुच गंभीर हैं और इंका के समर्थन पर भरोसा किया जा सकता है.

सांसद तोड़ने की असली लड़ाई 2 नवंबर से शुरू हुई. आर.के. धवन ने शरद पवार और पटेल के साथ मिलकर असंतुष्ट सांसदों को मनाना और तोड़ना शुरू किया. लेकिन अपार धन और इन तीनों की मिली-जुली क्षमता भी मुलायम सिंह यादव की चुप्पी के कारण पर्याप्त संख्या में सांसद नहीं जुटा पाई. यादव खेमे में उत्तर प्रदेश के 12 सांसद थे. लेकिन उत्तर प्रदेश में नारायण दत्त तिवारी के नेतृत्व में चली तेज भागदौड़ ने आखिर असर दिखाया. जब संचारमंत्री जनेश्वर मिश्र ने केंद्रीय मंत्रिमंडल से इस्तीफा दिया तो यह यादव खेमे द्वारा वी.पी. सिंह का साथ छोड़ने का संकेत माना गया. इसके बाद ही चंद्रशेखर देवीलाल के निवास पर 58 सांसदों को जुटाकर ताल ठोंक पाए.

इंका की रणनीति का एक मुख्य हिस्सा देवीलाल को अलग-थलग रखना भी था. वैसे, हरियाणा के इस बुजुर्ग जाट नेता ने चंद्रशेखर का पक्ष तो लिया लेकिन वे खुद प्रधानमंत्री पद के दावेदार हो गए. इससे इंका उलझन में पड़ गई. महम मुद्दे पर पार्टी ने वी.पी. सिंह सरकार की बहुत आलोचना की थी और अब देवीलाल को समर्थन देने को वह जायज नहीं ठहरा सकती थी. इससे भी बड़ी बात यादव के समर्थन की थी. वैसे, वी.पी. सिंह और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री की भले ही न बन रही हो लेकिन वे जनता दल के जाट नेताओं पर भरोसा नहीं कर रहे थे. राजा से लड़ाई राजनैतिक आधार पाने की और व्यक्तित्व की थी लेकिन अजित सिंह को यादव के मुकाबले मुख्यमंत्री पद का दावेदार जाट नेताओं ने ही बनाया था. यादव को तिवारी ने यह आश्वासन देकर तोड़ा कि अगर प्रदेश में उनकी सरकार को खतरा होगा तो इंका मदद देगी. साथ ही उनसे यह कहा गया कि इंका देवीलाल को प्रधानमंत्री बनाए जाने का समर्थन नहीं करेगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

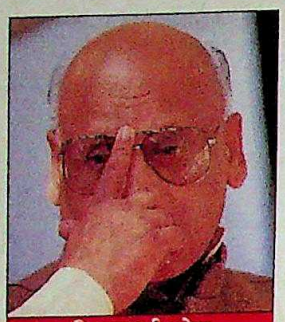
चिमनभाई पटेल

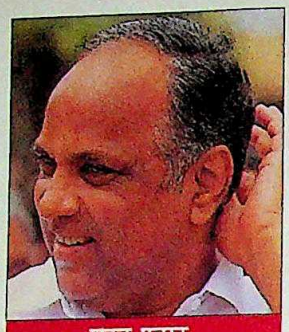
शरद पवार

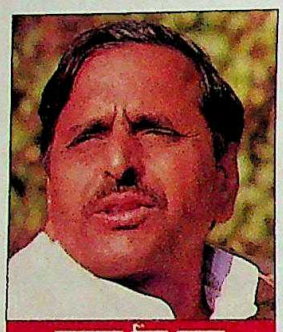
मुलायम सिंह यादव

पवार, पटेल और मुलायम की कोशिशों से इंका और चंद्रशेखर के बीच गठजोड़ कायम हुआ

इंका के शिविर में भी आम राय यही थी कि देवीलाल के भरोसे देश के मामले नहीं छोड़े जा सकते. दिनेश सिंह, शिवशंकर और बलराम जाखड़ जैसे दिग्गज नेतागण तो चंद्रशेखर को सरकार बनाने में समर्थन देने के पक्ष में भी नहीं थे लेकिन इन लोगों को यह कहकर राजी किया गया कि चंद्रशेखर को चुनाव के समय इंका में शामिल करने के लिए मनाया जा सकता है, जबकि देवीलाल के साथ इस तरह की आपसी समझदारी नहीं हो सकती.

ऐसा नहीं है कि इस संकट के शुरू होने के तुरंत बाद ही इंका ने मुलायम सिंह यादव से संपर्क साधा. सितंबर में राजीव गांधी जब अपने चुनाव क्षेत्र अमेठी के दौरे पर गए थे, तभी से उन्होंने यादव पर नजर गड़ाए रखी. अपने भाषणों में भी राजीव ने कहा कि भाजपा के खिलाफ मुलायम सिंह यादव ने जो महान संघर्ष ठान लिया है उसमें उनकी पार्टी उनको समर्थन देगी. तभी यह संकेत स्पष्ट था कि अगर मुलायम सिंह यादव वी.पी. सिंह से भी टकराते हैं तो इंका उनके पक्ष में रहेगी. मुलायम सिंह ने भी राजीव का इशारा समझकर कुछ ऐसे संकेत दिए कि वे उनकी चालों से सहमत हैं. बाद में राजीव उनसे मिले भी. इस तरह तख्तापलट के लिए सारी तैयारी हो गई.

जनता दल

बंटे पर टूटे नहीं

विश्वनाथ प्रताप सिंह क्षत-विक्षत तो हुए हैं मगर परास्त नहीं. उनका जनता दल भी टूटने के बावजूद हताश नहीं, उत्साह में है. चंद दिनों में ही प्रधानमंत्री की कुर्सी और एक-तिहाई सासदों को खो देना परेशानी का कारण है, यह एहसास दल के कार्यकर्ताओं में नहीं दिखता.

उनका यह मूड पार्टी प्रवक्ता एस. जयपाल रेड्डी के इस बयान से भी उजागर होता है कि दल का यह विभाजन अच्छा ही है क्योंकि इससे इसकी चर्बी ही घटी है. उनके इस उत्साही मूड के पीछे उनकी यह मान्यता है कि चंद्रशेखर की सरकार तो बस आनी-जानी है. इसलिए जोर अगले चुनाव की तैयारी पर है. इस लिहाज से दल को पुनर्गठित करने और उसे इंका के विकल्प के रूप में पेश करने की पूरी योजना तैयार की गई है.

अध्यक्ष एस. आर. बोम्मई ने सबसे पहले अंदरूनी कामकाज को दुरुस्त करने का फैसला किया है. इसके बाद देश भर में प्रदर्शन और सभाएं करने का कार्यक्रम है. बोम्मई का कहना है कि पूरे दल को सक्रिय किया जाएगा और जनता को यह बताया जाएगा कि दल ने किन मुद्दों पर अपनी सरकार को कुरबान कर दिया. वे कहते हैं, "वी. पी. सिंह अब सांसदों या विधायकों के संदर्भ में नहीं बल्कि जनता के संदर्भ में सोचते हैं."

जनता के बीच अभियान में मुख्य जोर वी. पी. सिंह की 'स्वच्छ छवि' को भुनाने पर होगा. दल के नेताओं ने उनका महिमामंडन शुरू कर दिया है. वे दावा करते हैं कि वी. पी. सिंह ही शायद एकमात्र ऐसे प्रधानमंत्री रहे जो अपनी साफ छवि के साथ पद से हटे. वी. पी. सिंह अब कथित 'धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक ताकतों' को एकजुट करने की कोशिश करेंगे जिनमें वामपंथी दल प्रमुख हैं. अब जनता दल और वाम मोर्चे के बीच केंद्रीय स्तर पर समन्वय समिति बनाने का पुराना प्रस्ताव फिर से सामने आया है. इससे इंका तथा जद (स) और भाजपा के बीच जद और वामपंथियों का तीसरा मोर्चा आसानी से खड़ा हो सकता है. अगर चुनाव जल्दी हुए तो वी.पी. सिंह उत्तर पूरब और दक्षिण में वामपंथियों के साथ सीटों पर तालमेल करेंगे. पिछले चुनाव में वे वामपंथियों और भाजपा के बीच फंस गए थे. इस बार वे अपनी धर्मनिरपेक्ष छवि पर जनता की मुहर लगवा सकते हैं. इसमें उन्हें मजदूर संघों, भूमिहीन मजदूरों और

अब और तब

राजीव और कांग्रेस (इ) के बारे में चंद्रशेखर

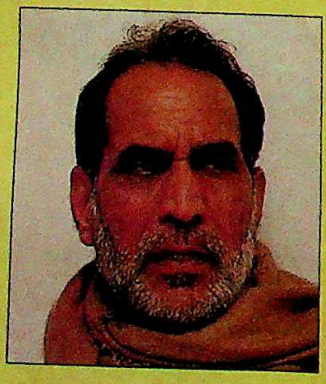

- *राजीव गांधी गलती से राजनीति में उतर आए बच्चे सरीखे हैं.*
  —नवंबर 1989
- *मुझे वी.पी. सिंह और राजीव गांधी में कोई अंतर नहीं दिखता. हम विकल्प चाहते हैं, अनुकल्प नहीं.*
  —जनवरी 1990
- *राजीव गांधी देश के प्रति वचनबद्धता में ईमानदार हैं.*
  —नवंबर 1990
- *देश को बचाने की खातिर हम मिलजुलकर काम करने के लिए सहमत हुए हैं.*
  —नवंबर 1990

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशांत पंजियार

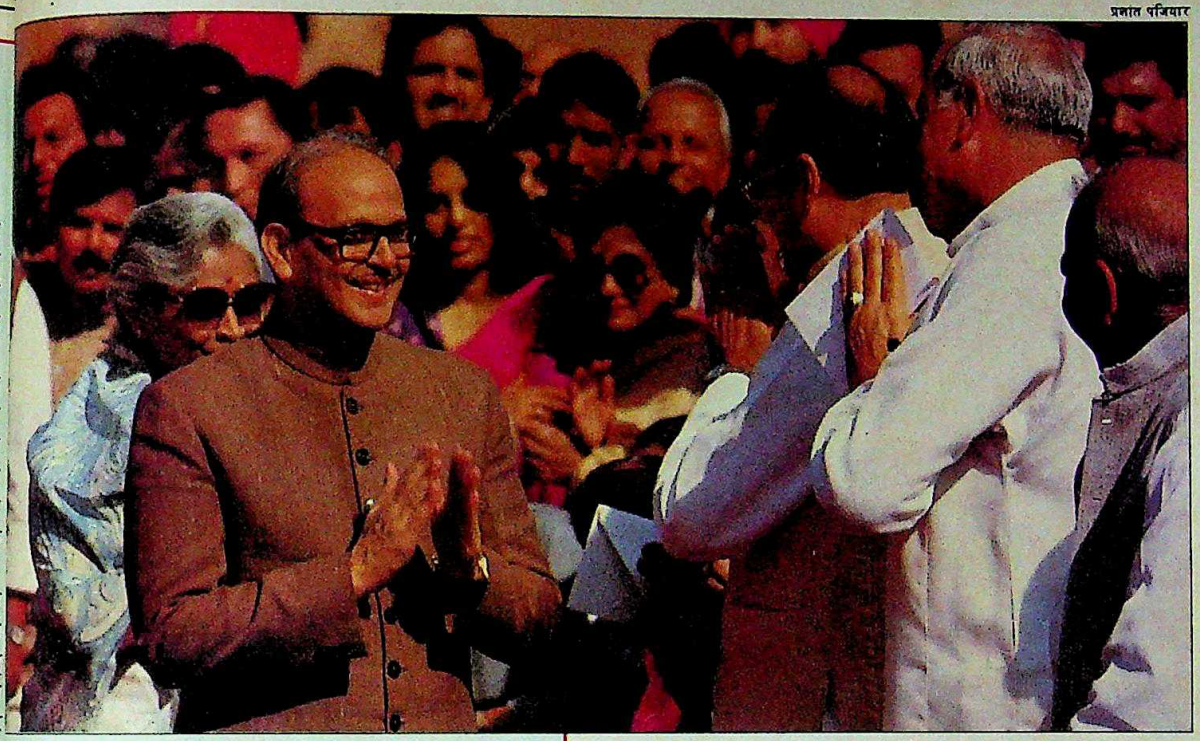

राजीव गांधी के साथ वी.पी. सिंहः आक्रामक तेवर

हैं मगर
बावजूद
की कुर्सी
ग है, यह

के इस
न अच्छा
उत्साही
रकार तो
यारी पर
इंका के
ी गई है.
कामकाज
भर में
कहना है
ह बताया
बान कर

नायकों के
सिंह की
ने उनका
पी. सिंह
छवि के
क्ष और
गे जिनमें
मोर्चे के
प्रस्ताव
र भाजपा
से खड़ा
ह उत्तर,
तालमेल
बीच फंसी
की मुहर
दूरों और

दारवादी बुद्धिजीवियों से समर्थन मिल सकता है.

मगर मि. क्लीन की छवि को भुनाने की कोशिशों को लोगों
इस धारणा से लोहा लेना पड़ेगा कि वी. पी. सिंह अब एक
के नेता रह गए हैं. समृद्ध वोट बैंक पर पकड़ फायदे की चीज
है मगर उन्हें इस मुगालते से बचना होगा कि पिछड़ों,
लमानों और हरिजनों के वोटों पर उनका एकाधिकार है.
द्रशेखर गुट की भी इन तबकों में अच्छी पैठ है. मगर फिलहाल
ता दल के नेतागण यह मानने को तैयार नहीं हैं कि अगले
ाव में विपक्ष के वोट बंटेंगे इसलिए इंका को हराना मुश्किल
गा. वे जोर देकर कहते हैं कि वी. पी. सिंह ने इंका के
परिक वोट बैंक में अच्छी सेंध लगाई है.

वी. पी. सिंह भी मानते हैं कि उत्तर भारत ही अगले चुनाव
असली रणक्षेत्र होगा. द्रमुक, तेलुगु देशम और वामपंथियों को
क्षिण का जिम्मा सौंपा जा सकता है. वे मानते हैं कि चंद्रशेखर
विफलताओं की बदनामी इंका को भी झेलनी पड़ेगी. रेड्डी
हते भी हैं, "चंद्रशेखर राज के सभी 'रेकार्ड' वी. पी. सिंह के
ए वरदान ही साबित होंगे."

—भास्कर रॉय

घोड़ा कौन, सवार कौन

तभी तो स्वार्थों के मामले में इंका और चंद्रशेखर एकमत हैं. वी.पी. सिंह को गद्दी से हटाकर दोनों ने अपनी पुरानी मुराद पूरी कर ली है. भाजपा के हिंदू कार्ड और वी.पी.सिंह के पिछड़ी जाति-मुसलमान कार्ड से समाज में खेमेबंदी हो गई है, यह मानते हुए दोनों ही चुनाव टालना चाहते हैं. दोनों ही सोच रहे हैं कि पहले इस तनाव को ठंडा पड़ जाने दिया जाए, उसके बाद अपनी ताकत बढ़ाने और चुनाव कराने पर ध्यान दिया जाए. यह बात अभी चंद्रशेखर के हक में जाती है. अभी उन्हें एक राष्ट्रीय दल का समर्थन है और धीरूभाई अंबानी तथा जयंत मल्होत्रा जैसे उद्योगपतियों के अपने पक्ष में होने से वे चुनाव के लिए काफी धन भी जुटा सकते हैं. और फिर अपने पद का उपयोग करते हुए वे इंका की खेमेबाजी में दखल देने और उसके नेतृत्व को अस्थिर करने की गोटी चलने में भी देर नहीं लगाएंगे. वे पहले भी पार्टी तोड़ चुके हैं और मौका मिले तो अब भी तोड़ सकते हैं.

अब और तब

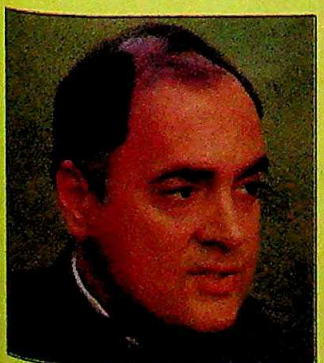

चंद्रशेखर के बारे में राजीव गांधी

- *चंद्रशेखर से समझौता करके हमें नुकसान ही होगा.* —जुलाई 1989
- चंद्रशेखर पुराने कांग्रेसी रह चुके हैं. हमें उन पर भरोसा है. —नवंबर 1990

देवीलाल के बारे में चंद्रशेखर

- *देवीलाल बेहद हठधर्मी व्यक्ति हैं. वे किसी की नहीं सुनेंगे.* —अप्रैल 1990
- मुझे देवीलाल का आशीर्वाद हासिल है. आखिर वे ताऊ हैं. —नवंबर 1990

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंका को चंद्रशेखर से एक और लाभ है. वी.पी. सिंह ने जिस वोट बैंक को बनाने और उसके भरोसे अजेय बनने के जो सपने संजोए थे, उन्हें पार्टी ने चंद्रशेखर के माध्यम से तोड़ने की कोशिश की है. चंद्रशेखर शहरी मतदाताओं को तो इंका और भारतीय जनता पार्टी में बंट जाने दें लेकिन मुसलमानों और पिछड़ी जातियों में अपना आधार बनाने की कोशिश करें, यह इस रणनीति का एक हिस्सा है. बहुजन समाज पार्टी के कांशीराम के भी इस तरफ आने की उम्मीद है जिससे हरिजन वोट मिलेंगे.

अंदरूनी तनाव

चंद्रशेखर भी जानते हैं कि उनकी भरोसेमंद 60 लोगों की टोली की पीठ पर इंका के 195 सदस्यों वाली फौज सवार है. अगर जनभावना को ध्यान में रखते हुए राजनैतिक प्राथमिकताएं बदलीं तो मुश्किल होगी. और ये बदलेंगी भी. जैसे ही राष्ट्रपति ने चंद्रशेखर को सरकार बनाने के लिए हरी झंडी दी, पदों की लड़ाई शुरू हो गई. देवीलाल एक बार फिर प्रधानमंत्री पद की दौड़ में पिछड़कर उप-प्रधानमंत्री बनाए जाने पर जोर देने लगे. इंका की नापसंदगी भी उन्हें देवीलाल को उप-प्रधानमंत्री बनाने से नहीं रोक पाई.

यह घटना इस बात का संकेत थी कि आने वाले दिनों में क्या कुछ होगा. चंद्रशेखर सिर्फ इंका की दया पर ही नहीं, ताऊ की 'कृपा' पर भी आश्रित रहेंगे. जैसे, मंत्रिमंडल की सूची राजीव गांधी, नरसिंह राव और शरद पवार से परामर्श करके ही तैयार हुई. इतना ही नहीं, चंद्रशेखर का राष्ट्र के नाम संबोधन भी 'स्वीकृति' के लिए पहले 10, जनपथ ही भेजा गया. और चंद्रशेखर भी जानते हैं कि सिर्फ 60 सदस्यों के भरोसे टिकी उनकी सरकार को गिराने के लिए सिर्फ 20 सांसदों का टूट जाना ही पर्याप्त होगा. और इतना समर्थन तो देवीलाल कभी भी जुटा सकते हैं.

फिर इस पूरे नाटक में अनेक 'दबाव गुट' भी काम करते रहे. काफी समय से राजनीति की मुख्य धारा से बाहर छूटे, पर अपने लालबुझक्कड़पन के कारण लगातार चर्चित रहे सुब्रह्मण्यम स्वामी और जयंत मल्होत्रा तथा अंबानी जैसे लोग हैं जिन पर आरोप है कि उन्होंने 'खरीद-फरोख्त करके' चंद्रशेखर के लिए समर्थन जुटाया. ऐसे गुटों ने देश के राजनैतिक और आर्थिक उतार-चढ़ाव में हरदम अपनी भूमिका निभाई है और राजनैतिक परिदृश्य से इन्हें अलग नहीं किया जा सकता.

दरअसल देवीलाल तो चंद्रशेखर को 5 नवंबर को अपने निवास पर हुई बैठक के कुछ घंटे बाद ही नाराज कर बैठे. वी.पी. सिंह को 'बरखास्त' करने वाली इस बैठक के बाद ताऊ ने चंद्रशेखर के माथे पर हाथ रखकर उन्हें आशीर्वाद दिया था लेकिन उसी शाम वे इंद्रकुमार गुजराल, मुफ्ती मुहम्मद सईद और एस.आर. बोम्मई से गुपचुप बात करने चल

घोटालों से घालमेल

चंद्रशेखर-राजीव गांधी गठजोड़ के लिए इस समय जारी अनेक जांचें दोधारी तलवारें बनेंगी. राजीव उन्हें रुकवाने की कोशिश करेंगे जबकि चंद्रशेखर उन्हें इंका पर दबाव डालने के लिए जारी रहने देना चाहेंगे.

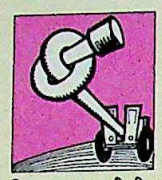

बोफोर्स: चूंकि अदालत अपने फैसले में खाताधारियों के नाम बताने का आदेश दे सकती है, इसलिए कांग्रेस (इ) चंद्रशेखर पर अनुमति पत्र वापस लेने का दबाव डाल सकती है. सीबीआई ने एक विशेषज्ञ समिति से वित्तीय पुनर्मूल्यांकन कराने और शुरुआती सिफारिशों की जांच के लिए एक तकनीकी समिति बनाने की इजाजत मांगी है. चंद्रशेखर का इससे पीछे हटना मुश्किल होगा. लेकिन वे इस घोटाले की आगे की जांच रोक सकते हैं.

एअरबस ए-320 सौदा: सीबीआई ने इस सौदे में दलाली खाने वाले कुछ आप्रवासी भारतीयों और स्थानीय बिचौलियों का पता लगा लिया है. उसने एक वरिष्ठ सीबीआई अधिकारी के रिश्तेदार की मदद से खोले गए एक स्विस खाते का भी पता लगाया है. खबर है कि दलाली का एक हिस्सा इस खाते में जमा किया गया है. सीबीआई औपचारिक आरोप पत्र दाखिल करने जा रहीं थी. मगर अब सुस्ती की जा सकती है.

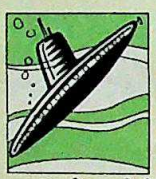

एचडीडब्ल्यू पनडुब्बी सौदा: जांच-पड़ताल काफी आगे बढ़ चुकी है. महत्वपूर्ण गवाहों से पूछताछ हो चुकी है और सीबीआई ने तकनीकी आकलन में गंभीर खामियां पाई हैं. उसने सुझाव दिया है कि एचडीडब्ल्यू सौदे की सिफारिश करने वाली रिपोर्ट की जांच-पड़ताल के लिए एक दूसरी तकनीकी समिति बनाई जाए. इस बात की संभावना कम ही है कि चंद्रशेखर एफआईआर वापस ले लेंगे और जांच रोक देंगे. लेकिन वे सीबीआई पर जांच में तेजी न लाने के लिए दबाव डाल ही सकते हैं.

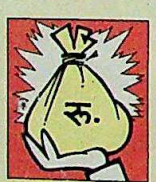

सेंट किट्स घोटाला: निवर्तमान सरकार ने इस मामले में सूचना हासिल करने के लिए अनुमति पत्र को आखिरी रूप दे दिया था. हालांकि नई शासक मंडली से चंद्रास्वामी सरीखे कुछ अभियुक्तों के घनिष्ठ संबंध हैं लेकिन फिर भी मामले की जांच जारी रह सकती है.

अब और तब

राजीव और कांग्रेस (इ) के बारे में देवीलाल

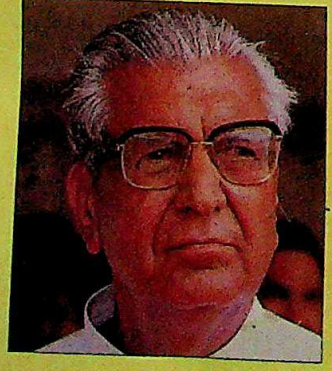

- *भारत जैसे देश को राजीव गांधी सरीखे व्यक्ति के हाथों में नहीं सौंपा जा सकता.* —अक्तूबर 1989
- *पहले देश के पास महात्मा गांधी सरीखा महान व्यक्ति था, अब तो ले-देकर राजीव गांधी ही हैं.* —नवंबर 1989
- *इंका का समर्थन मांगने में कोई हर्ज नहीं है. मैं और चंद्रशेखर भी तो कांग्रेसी ही हैं.* —नवंबर 1990
- *समर्थन देने के लिए मैं राजीव गांधी और इंका को धन्यवाद देता हूं.* —नवंबर 1990

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीय जनता पार्टी

फिर जड़ों की ओर

प्रमोद पुष्करणा

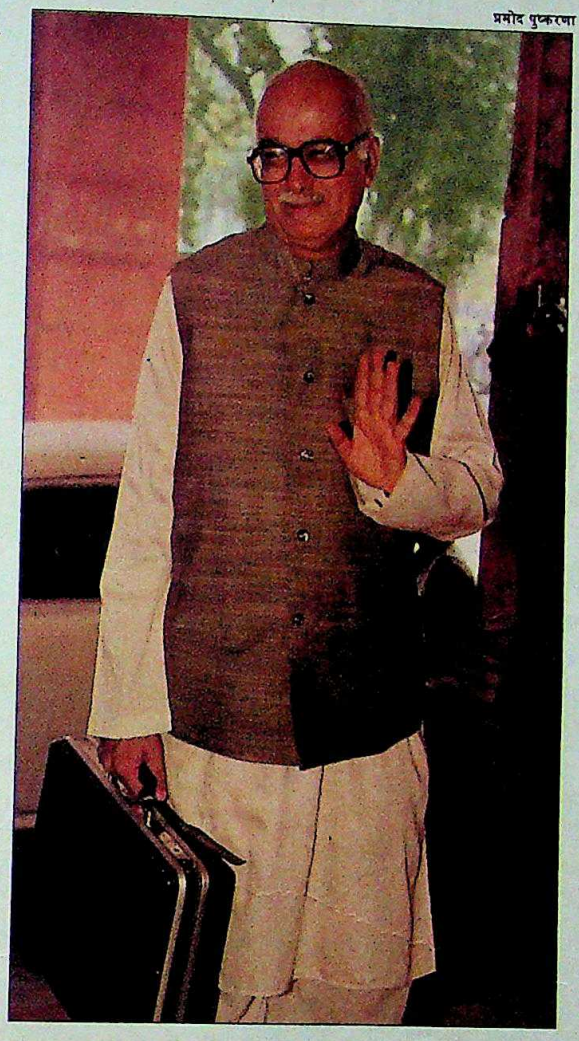

राजनीति की मुख्यधारा में वर्षों तक किसी भटके हुए बच्चे की तरह वक्त गुजारने के बाद भाजपा अब संघ (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) परिवार की ओर वापस लौट चली है. राम का नाम और हिंदू राष्ट्र की कल्पना का जो आदर्श संघ ने आज तक प्रतिपादित किया, वही अब भाजपा का मूलवाक्य हो गया लगता है.

अयोध्या विवाद पर मिले जन-समर्थन के बाद अब पार्टी की समझ में आ चुका है कि अगले चुनावों में इस मामले को और तूल दिया जा सकता है. संघ के 18 लाख समर्पित स्वयंसेवकों के अलावा कई और नए लोग पार्टी में शामिल हो गए हैं, जिससे पार्टी के विश्वास और मनोबल दोनों में ही खूब इजाफा हुआ है.

वरिष्ठ नेताओं को पक्का यकीन है कि दो राज्यों—उत्तर प्रदेश और बिहार में भाजपा मौजूदा 17 लोकसभा सीटों से दोगुनी यानी कम-से-कम 35 ले जाएगी. महाराष्ट्र में भाजपा को 10 से बढ़कर 16 स्थान लेने और हरियाणा में एक से बढ़कर तीन जगहों पर काबिज होने की आशा है. इसी तरह गुजरात, राजस्थान, दिल्ली और हिमाचल प्रदेश में पार्टी को अपनी मौजूदा 32 लोकसभा सीटें कायम रखने का विश्वास है, जबकि मध्य प्रदेश में उसे अभी की 27 सीटों से कम की ही उम्मीद है. लेकिन नेताओं के हिसाब से इस गिरावट को कर्नाटक और जम्मू जैसी जगहों पर होने वाली 'इक्का दुक्का जीत' से पाटा जा सकता है. लिहाजा आशावान गणना के आधार पर तो यही निष्कर्ष निकलता है कि हिंदू कार्ड को ठीक से भुनाने पर लोकसभा में 86 की वर्तमान संख्या को 120 सीटों तक ले जाया जा सकता है. पार्टी के महासचिव जगदीश प्रसाद माथुर के शब्दों में, "पार्टीजन उत्साहित हैं. कुछ को छोड़कर हम सारी सीटों से चुनाव लड़ेंगे. हमारा लक्ष्य लोकसभा में सबल स्थान बनाने का है."

और अपने इस साध्य को हासिल करने के लिए पार्टी आंदोलनों के जरिए राजनीति की गाड़ी को आगे बढ़ाना चाहती है. इसके साथ ही विश्व हिंदू परिषद का अयोध्या-नाद भी चलता रहेगा. यही नहीं, पार्टी मथुरा, वाराणसी और दूसरे कई ऐसे स्थानों पर कार सेवा समितियां बनाना चाहती है, जहां तकरीबन 3,000 मस्जिदों पर अयोध्या जैसा विवाद खड़ा किया जा सकता है. बात में वजन लाने के लिए कई लहरदार नारे भी बनाए गए हैं. "जो हिंदू हित की बात करेगा, वही देश पर राज करेगा," और "जो हिंदू हित पर करेगा चोट, उसे कदापि न देना वोट."

इन योजनाओं ने पार्टी के नरमपंथी नेताओं में भारी निराशा पैदा की है. अटल बिहारी वाजपेयी दिल्ली में आयोजित विहिप की आम सभा से दूर रहे जबकि वरिष्ठ नेताओं ने पार्टी उपाध्यक्ष सिकंदर बख्त से गुजारिश की कि वे वहां धरना न दें जहां भाजपा के युवा कार्यकर्ता मुसलमान विरोधी नारे लगा रहे थे.

भाजपाशासित तीनों राज्य—राजस्थान, मध्यप्रदेश और हिमाचल प्रदेश भी इस टकरावबादी तरीके को लागू करने से हिचक रहे हैं. इससे उन्हें इस आरोप की आशंका है कि वे कुर्सी पर बैठकर गैर जिम्मेदाराना तरीकों से काम करते रहे. ऐसे आरोप उठने भी लगे हैं. माकपा के नेता हरिकिशन सिंह सुरजीत कहते हैं, "माहौल को सांप्रदायिक बनाने वाले तत्वों में शामिल होकर भाजपा ने आसान रास्ता चुन लिया है."

इतने कठोर दृष्टिकोण के बाद अब भाजपा के लिए पीछे मुड़ना कतई संभव नहीं होगा. पिछले चंद महीनों में धर्म को हमारे राष्ट्रीय परिदृश्य पर अत्यंत खतरनाक तरीके से हावी कर दिया गया है और आने वाले समय में यह हमारे राजनैतिक सोच में भी बाकायदा शामिल हो जाएगा. भाजपा ने अंततः अपने असली तेवर दिखा दिए हैं और उसकी नीयत अब साफ हो चली है.

—पंकज पचौरी

भाजपा संघ परिवार की ओर वापस लौट चली है. उसे हिंदू हितों की पैरवी से अच्छी चुनावी सफलता की आशा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाद के मुद्दे

प्रमुख मुद्दों पर एक राय नहीं

पंजाब: चंद्रशेखर यहां जल्दी चुनाव के पक्ष में हैं पर इंका नहीं. वे अकालियों से समझौते के इच्छुक हैं, मगर इंका उनसे दूर रहने पर जोर देगी. समझौता हुआ तो इंका तीव्र प्रतिक्रिया कर सकती है.

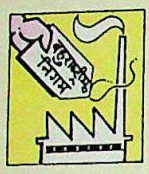

उद्योग: इंका उद्योग और मुक्त व्यापार की हामी है, तो चंद्रशेखर बहुराष्ट्रीय कंपनियों के सख्त विरोधी और विलासिता-सामग्री पर कर लगाने के साथ-साथ विदेश व्यापार पर नियंत्रण के पक्षधर हैं.

भाजपा और वामपंथियों के साथ संबंध: चंद्रशेखर इन पार्टियों को राष्ट्रीय मुद्दों में शामिल करके इंका विरोधी रुख जारी रखने की कोशिश करेंगे. इंका सफलता का श्रेय इन पार्टियों को नहीं देना चाहेगी.

उच्च स्तर की नियुक्तियां: इंका अपने चहेते नौकरशाहों को महत्वपूर्ण मंत्रालयों में लाना चाहती है, ताकि परदे के पीछे से शासन चला सके. चंद्रशेखर अपने पसंदीदा नौकरशाहों को लाना चाहते हैं.

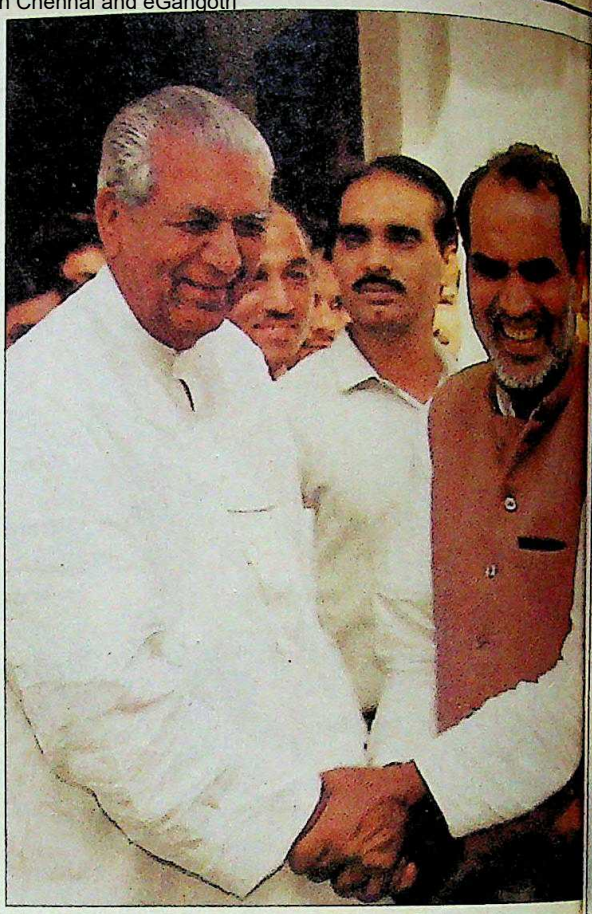

चंद्रशेखर और देवीलाल: अस्थायी संधि

दिए. जॉर्ज फर्नांडीस का कहना है कि अगर वी.पी. सिंह ताऊ के पक्ष में हट गए होते तो वे उसी दिन चंद्रशेखर को गच्चा दे देते.

चंद्रशेखर को अकेले देवीलाल पर ही अंकुश नहीं रखना होगा. बहुत कम ताकत वाले जनता दल (स) में भी कम-से-कम चार धड़े हैं. पहला धड़ा तो पूर्व समाजवादियों और कांग्रेसियों का है जिसके नेता खुद चंद्रशेखर हैं. फिर देवीलाल के नेतृत्व वाला लोकदल का धड़ा है. तीसरा समूह मुलायम सिंह के नेतृत्व में पिछड़ों का है और फिर सुब्रह्मण्यम स्वामी जैसे लोग हैं जो सिर्फ राजनैतिक महत्वाकांक्षा पूरी करने के लिए आ जुटे हैं.

प्रधानमंत्री ने मंत्रिमंडल की रूपरेखा बनानी शुरू की तो गुटबंदी तेज हो गई. मंत्री पद के दावेदार चुपचाप अपनी वकालत नहीं कर रहे थे. बल्कि कई बड़बोले नेता तो अपने मनपसंद विभागों के बारे में घोषणाएं भी करते फिर रहे थे.

चंद्रशेखर की अगुआई में जनता दल से टूटकर अलग हुए गुट में अनेक अंतर्निहित विरोधाभास हैं

वित्तमंत्री कौन होगा, इस पर विवाद हुआ. इस पद के एक दावेदार सुब्रह्मण्यम स्वामी थे लेकिन कमल मोरारका ने घोषणा की कि अगर स्वामी वित्तमंत्री बन गए तो वे वी.पी. खेमे में चले जाएंगे. उधर देवीलाल खेमे ने स्पष्ट कर दिया है कि उनके धड़े के चांदराम को कोई महत्वपूर्ण आर्थिक विभाग (वाणिज्य, उद्योग या वित्त) मिलना चाहिए. देवीलाल खेमे ने कैबिनेट सचिव पद पर अपनी पसंद के अधिकारी को लाने की जोरदार वकालत की. हो सकता है कि उप प्रधानमंत्री आगे भी सार्वजनिक रूप से प्रधानमंत्री के आगे ऐसी मांगें रखते रहें और उन्हें भी उसी तरह मुश्किल में डालें जैसे राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के शुरू के दिनों में उन्होंने वी.पी. सिंह को डाला था.

संभावित विवाद

वरिष्ठ इंका नेता भी मानते हैं कि पार्टी संगठन की स्थिति खराब है और इस वक्त चंद्रशेखर को गिराना उसके लिए अपनी कब्र खोदने के समान होगा. लेकिन अपनी पृथक छवि बनाए रखने के लिए उनके सामने खुद को चंद्रशेखर से दूर रखने की मजबूरी भी रहेगी.

जनता दल (स) का मुख्य सहयोगी होने से इंका को संसद में तकलीफों का सामना करना पड़ सकता है. गाडगिल भी मानते हैं कि अगर नई सरकार इंका की पुरानी नीतियों से बहुत अलग हटी तो उसकी आलोचना करना आसान नहीं होगा. वैसे, खुद को उससे बड़ा साबित करने के लिए उसे यह करना ही होगा. अगर चंद्रशेखर सरकार कोई गड़बड़ी करती है तो उसकी वकालत करने में भी इंका को मुश्किल होगी. और अगर चंद्रशेखर और देवीलाल की जोड़ी उद्धारक या काम करने वाले के रूप में उभर गई तो इससे भी राजीव की छवि को नुकसान होगा.

ऐसे गठबंधन के खतरे और चंद्रशेखर की चालाकी से मिटने के अंदेशे के प्रति इंका चौकन्नी है. जनता दल (स) से सहयोग की बात लिखत-पढ़त में नहीं करके उसने इससे हाथ झाड़ लेने के पर्याप्त रास्ते बचाए रखे हैं. चुनाव टालने के न्यूनतम कार्यक्रम और दूसरी बातें तय की जा रही थीं तो एक साझा कार्यक्रम के लिए चार सदस्यीय समिति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंद्रशेखर की अग्रिम पंक्ति

चयन के लिए विकल्प बहुत कम

यशवंत सिन्हा: बिहार से आए सुसंस्कृत, मुखर और पश्चिमी संस्कारों वाले सिन्हा भारतीय प्रशासनिक सेवा में अधिकारी रह चुके हैं. वे नौकरशाही के कामकाज पर नजर रखेंगे.

कमल मोरारका: उद्योगपति से प्रकाशक और फिर वहां से राजनीति के पेशे में आए मोरारका चुस्त, चालाक और परिष्कृत रुचि वाले व्यक्ति हैं. वे सरकार की नई व्यापार नीति तैयार करेंगे.

सुब्रह्मण्यम स्वामी: हावर्ड में पढ़े अर्थशास्त्री, जनता पार्टी को जिलाए रखने वाले और परदे के पीछे की रणनीति तय करने के माहिर माने जाने वाले स्वामी मुख्यतः इंका से संपर्क सूत्र का काम करेंगे.

हुकुम देव नारायण यादव: राममनोहर लोहिया के पूर्व अनुयायी, प्रखर प्रवक्ता और पिछड़ी जातियों के नेता यादव पिछड़ी जातियों में विश्वनाथ प्रताप सिंह के प्रभाव का मुकाबला करने में सहायक होंगे.

गठित की गई. नरसिंह राव इसके प्रमुख थे और चंद्रशेखर, चिमनभाई तथा शरद पवार सदस्य. अब कार्यक्रम को अंतिम रूप दिया जा रहा था तो पिछले काफी समय से राजनैतिक बुद्धिमत्ता न दिखा सकने वाले राजीव गांधी ने समझदारी दिखाई और इस अभियान से इंका को अलग कर लिया. वे जानते थे कि बात लिखत-पढ़त में आ जाने पर इससे मुंह मोड़ना मुश्किल होगा. सो, समिति ने एक और बैठक करके पुरानी बातें भुला दीं. यह इंका की मंशा का स्पष्ट संकेत था.

लेकिन आने वाले दिन जिस तरह चंद्रशेखर के लिए फूक-फूंक कर कदम रखने वाले होंगे उसी तरह राजीव के लिए भी. वी.पी. सिंह उग्र पंजाब, बिखरे कश्मीर, न सुलझने वाले मंडल विवाद और राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद की जो विरासत छोड़ गए हैं उसे संभालना आसान नहीं है. इंका की रणनीति बनाने वाले सोच रहे हैं कि इन समस्याओं का परिणाम (और बदनामी) सिर्फ चंद्रशेखर के माथे ही पड़ेगा. और इस बीच उन्हें अपनी चुनावी तैयारी के लिए समय मिल जाएगा. लेकिन इस गठजोड़ के छीटें इंका के दामन पर नहीं पड़ेंगे, इस बात का कोई भरोसा नहीं है.

फायदा यही है. जब मन होगा इंका अपना समर्थन वापस ले सकती है और ऐसे अनेक मौलिक मतभेद वाले मुद्दे हैं जिन पर दोनों खेमे उलझ हो सकते हैं. जैसे चंद्रशेखर भारतीय अर्थव्यवस्था में बहुराष्ट्रीय निगमों की घुसपैठ के सख्त खिलाफ हैं. और ऐसे मुद्दे इंका के खिलाफ भी जा सकते हैं. राजीव कहते हैं, "चंद्रशेखर पुराने दोस्त हैं. हमने साथ काम करने पर सहमति दी है." लेकिन पहले उन्होंने मंडल आयोग की रिपोर्ट पर जो रुख अख्तियार किया था उसके अनुसार इसे खारिज करने या सुधारने पर इसका नुकसान खुद उन्हें और फिर इंका को उठाना पड़ सकता है.

राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद पर चंद्रशेखर भाजपा से हाथ मिलाने की ओर बढ़ते लग रहे हैं जबकि इंका ने भाजपा विरोधी रुख बनाए रखा है. प्रधानमंत्री नरम रुख और बातचीत से फैसला करने के पक्ष में हैं. अगर चंद्रशेखर रथ यात्रा शुरू करने पर उद्धत भाजपा से बातचीत करने की ओर बढ़ते हैं तो इंका के लिए उनका साथ देना मूर्खता ही होगी.

पंजाब समस्या पर भारी मतभेद उभरने का अंदेशा है. चंद्रशेखर ने हरदम ऑपरेशन ब्ल्यू स्टार की निंदा की है जिससे कांग्रेस को परेशानी होती थी. वे उग्रवादियों से बातचीत और नरमी के पक्ष में हैं. इंका कड़ाई के पक्ष में है और कहती है कि जब तक पंजाब में आतंकवाद खत्म न हो जाए चुनाव न कराए जाएं. इस पर राजीव गांधी और चंद्रशेखर के बीच बराबर तकरार होती रहेगी.

फिर महंगाई का मुद्दा है. एक वरिष्ठ इंका नेता कहते हैं, "मार्च तक हम चुप रहेंगे और कभी-कभार ही इसके खिलाफ बोलेंगे. फिर बजट के समय शोर मचाएंगे." और संभावना यही लगती है कि बजट सत्र के समय ही इंका सरकार का साथ छोड़ेगी और चुनाव मई में होंगे जिसमें इंका को अपने दम से ही जीत जाने की उम्मीद है.

जहां तक चंद्रशेखर की बात है, इस नई दोस्ती से उनको राजीव और वी.पी. सिंह को छोड़कर बाकी कांग्रेसियों को एकजुट करने का मौका भी मिल गया लगता है. अपने समय के और अब आए नए कांग्रेसियों से उनके जो रिश्ते हैं उस आधार पर वे ऐसा करने की कोशिश भी कर सकते हैं. इस अभियान में शरद पवार और चिमनभाई उनके संभावित साथी हो सकते हैं.

संभावना है कि इंका बजट सत्र के दौरान सरकार से समर्थन खींच लेगी ताकि मई में चुनाव हो सकें

जहां तक राजीव गांधी का सवाल है, चंद्रशेखर-शरद-चिमनभाई की तिकड़ी उनके लिए काल भी बन सकती है. और जैसे इतना ही पर्याप्त न हो. ये लोग बीजू पटनायक, अरुण नेहरू और आरिफ मुहम्मद खां की तिकड़ी को भी अपने साथ जोड़ने के चक्कर में हैं. सत्ता से बाहर रहकर खां और नेहरू राजीव या वी.पी. सिंह के लिए काफी परेशानियां खड़ी कर सकते हैं. पर अभी इस जोड़ी के हाथ में कोई तुरुप का पत्ता नहीं है. लेकिन कहीं भी संदेह का बीज डालकर चैन से बैठकर मजे लेने की उनकी प्रवृत्ति से राजीव या वी.पी. सिंह कोई भी मुंह नहीं मोड़ सकता. इंका के लिए इस तरह का गंठजोड़ खतरा पैदा करेगा.

इंका से उनका आखिरी झगड़ा अपनी पार्टी के विवाद को लेकर होता है या भाजपा से बातचीत की इच्छा के चलते, पुराने कांग्रेसियों को एकजुट करने की रणनीति से होता है या महंगाई के मुद्दे पर, यह तो आने वाला समय ही बताएगा. लेकिन इतना स्पष्ट है कि अब चंद्रशेखर मैदान में उतर ही चुके हैं तो उन्हें काफी मुश्किल लड़ाई लड़नी है. वैसे, संभावना यही है कि राजीव खेमे पर अंकुश रखने के लिए वे बोफोर्स विवाद को मरने नहीं देंगे. और अगर सचमुच कुछ विस्फोटक मसाला हाथ लगा तो संभव है उसका उपयोग करके वे कांग्रेस में ही विभाजन करवा दें और राजीव विरोधियों को अपने साथ करके संसद में अपना बहुमत बना लें.

देश का आठवां और उत्तर प्रदेश से आने वाला यह सातवां प्रधानमंत्री जब अपने इस मुश्किल मिशन में जुटने जा रहा है तो उसे मदद देनेवाले कम, टांग खींचने वाले अधिक दिख रहे हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साम्यवादी शब्दावली

विचारधारा के रूप में साम्यवाद अपनी प्रासंगिकता खोता जा रहा है. इसकी गवाह है रूस और पूर्वी यूरोप के कई देशों में हाल में घटी घटनाएं. लेकिन इस विचारधारा से जुड़ी शब्दावली के प्रति मोह भारतीय राजनीति में बना हुआ है. तभी शायद जनता दल के नेताओं ने अपनी पार्टी से हुए दलबदल को चीनी नेता माओ त्से तुंग के शब्दों में 'महान शुद्धीकरण' की संज्ञा दी. माओ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी से अवांछित तत्वों को निकालने पर यह मुहावरा दिया था. जनता दल नेताओं की राय में कांग्रेस "प्रतिक्रियावादी विश्वासघातियों, क्रांति विरोधियों, थूककर चाटने वालों" को समर्थन दे रही है.

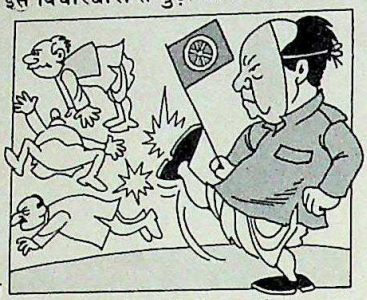

वादे का क्या होगा

अब खतरा यह है कि अगर राम जेठमलानी ने अपने वादे पर अमल कर दिया तो क्या होगा. उन्होंने कहा था कि अगर चंद्रशेखर प्रधानमंत्री बन गए तो वे आत्महत्या कर लेंगे. पर अब उनका मन शायद बदल गया हो क्योंकि वे नहीं होंगे तो रोज 10 सवाल कौन पूछेगा ?

काफी पहले से तैयारी

विश्वनाथ प्रताप सिंह के इस्तीफा देने के कई दिन पहले से ही चंद्रशेखर ने प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने की तैयारियां शुरू कर दी थी. सबसे पहले उन्होंने अपने वस्त्रों पर ध्यान दिया. नई दिल्ली के अशोक होटल के खादी ग्रामोद्योग काउंटर से उन्होंने प्रेस फोटोग्राफरों की मौजूदगी में कुर्ते-धोती खरीदे. अपने नेता का अनुकरण करने में यशवंत सिन्हा, कल्याण सिंह कालवी और हरमोहन धवन भला पीछे क्यों रहते. सो उन्होंने भी नए कपड़े बनवा लिए. चंद्रशेखर ने काले रंग की एक जोड़ी नई चप्पलें भी मंगवा ली. और जब चंद्रशेखर ने गांधी की तरह चप्पल पहन ली तो जाहिर हो गया कि गुची जूतों का जमाना लद गया है.

खराब तो नहीं ही

पूर्व प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के एक पक्के समर्थक और पूर्व मंत्री ने उनकी ईमानदारी पर सवाल उठाए जाने पर उनका बचाव करते हुए कहा, "उनके सबसे बड़े दुश्मन भी ज्यादा से ज्यादा इतना ही कह सकते हैं कि वे 'मैड' (पागल) हैं लेकिन 'बैड' (खराब) नहीं."

दरबारियों का नया दौर

सत्ता के गलियारों में स्थितियों और समीकरणों में क्या-क्या बदलाव हुए हैं इसका एक संकेत इंका के एक बड़े नेता के यहां सरकारी अधिकारियों का रोज आकर दरबार लगाना भी है. ये अधिकारी आपके यहां कब से आने लगे हैं, यह पूछे जाने पर इस नेता ने जवाब दिया," पहले वे प्रायः शाम के वक्त आते थे, अब सुबह में ही आ जाते हैं."

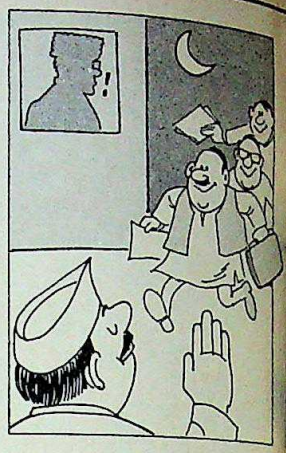

आदमियों की भाषा

अंग्रेजी और देवीलाल का रिश्ता कुछ अजीब ही है. अभी हाल में जनता दल असंतुष्टों की बैठक में व्यवसायी जयंत मल्होत्रा और सुब्रह्मण्यम स्वामी आपस में अंग्रेजी में बतियाने लगे. पास में बैठे ताऊ कुछ देर तक सुनने और गुनने की कोशिश करते रहे मगर अंततः उनका सब्र टूट गया और उन्होंने उन दोनों को टोक ही दिया, "अब आदमियों की तरह बात कर."

'अब जाने भी दो'

आप खुद सरकार क्यों नहीं बना रहे हैं— पत्रकारों के इस सवाल पर राजीव गांधी ने यह जवाब देकर सबको हैरान कर दिया कि,"चंद्रशेखर अधिक मजबूत और स्थायी सरकार बना सकते हैं." इस पर हैरान उनके सलाहकार एम.जे. अकबर ने उनके कान में कुछ कहा तो उनका जवाब था,"अब जाने भी दो!"

नवकुलीन मंडली की वापसी

जिस दिन विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार लोकसभा में हारी, उस दिन पत्रकारों की नजर रह-रह कर संसद की दर्शक दीर्घा की ओर चली ही जाती थी. बैठक शुरू होने से पहले ही उदास सीता देवी (वी.पी. सिंह की पत्नी) वहां आईं और लंबी बहस भर पूरे समय बैठी रहीं. लेकिन उन से भी अधिक ध्यान खींच रही थीं सोनिया और प्रियंका तथा उनके साथ तीन बजे पहुंची दिल्ली के क्लबों वाली मंडली. यानी 'अपने' प्रधानमंत्री की वापसी के पहले ही संसद में 'नवकुलीन' मंडली की वापसी हो गई लगती है

अपनी अपनी पसंद

एक चुटकुला: राजनेता 'हॉर्स ट्रेडिंग' शब्द पर आपत्ति क्यों करते हैं ? क्योंकि वे खुद को घोड़ा कहलाना पसंद नहीं करते, गधे की श्रेणी में रहना पसंद करते हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांचतारा मान-मनौवल

चंद्रशेखर के प्रधानमंत्री बनने के पहले बहुमत जुटाने के लिए और दलबदल कानून से बचने के लिए सांसदों की खरीद-फरोख्त का जो दौर चला उसमें अन्नाद्रमुक के 11 सांसदों की मौज हो गई.

चंद्रशेखर के लोग उन्हें मनाने के लिए पहले अशोक होटल ले गए. लेकिन बाद में जब उन्हें लगा कि इस तरह की गतिविधियों के सरकारी होटल उपयुक्त जगह नहीं होता तो वे उन सांसदों को ललित सूरी के हॉलीडे इन में ले गए.

दूल्हा कहां है

शपथ ग्रहण समारोह के बाद चंदशेखर जब अपने निवास पर लौटे तो नेहरू सिंड ने विवाह वाले धुनों के साथ उनका स्वागत किया. जब एक समर्थक ने पूछा, "धुन तो शादी की बज रही है, पर दूल्हा कहां है?" तो तुरंत किसी कोने से जवाब आया, "यहां तो दुलहन रहती है." स्पष्ट था कि दूल्हा 10, जनपथ (राजीव गांधी का निवास) में रहता है.

अपना नाम भी दे दीजिए

चंद्रशेखर के संवाददाता सम्मेलन की समाप्ति पर पीछे से एक आवाज आई, "चंद्रशेखर जी आखिरी सवाल. आपके मंत्रिमंडल में मुझे क्या जगह मिलेगी?" पत्रकार और फोटोग्राफर भौंचक रह गए. लेकिन जब उन्होंने यह देखा कि यह सवाल उनमें से किसी का नहीं, आंध्र प्रदेश के एक पार्टी कार्यकर्ता का है, तो उन्होंने राहत की सांस ली. चंद्रशेखर भी तफरीह के मूड में थे, "क्यों नहीं. अपना नाम मुझे दे दीजिए." और इसके बाद के ठहाकों में यह नाम ही गुम हो गया.

बदली जाने वाली सरकार

चुटकुला: विश्वनाथ प्रताप सिंह गिरने वाली सरकार के नेता थे, जबकि चंद्रशेखर बदली जाने वाली वाली सरकार के नेता हैं.

'अमृत वचन'

विश्वनाथ प्रताप सिंह सरकार के पक्ष में विश्वास मत पर बहस के लिए 7 नवंबर को हुई लोकसभा की बैठक में तीखे भाषण और व्यंग्योक्तियों की भरमार रही. कुछ टुकड़े:

वी.पी. सिंह: 25 हॉर्सपावर का इंजन एक ओर होगा और 190 हॉर्सपावर का दूसरी ओर. अब कौन किसे खींचेगा— 190 वाला 25 वाले को या 25 वाला 190 वाले को? यह तो जीप के पीछे जुड़े ट्रॉलर जैसा मामला है.

राजीव गांधी : भाजपा ने अपना स्टैंड कभी छिपाया नहीं. लेकिन आपने और वामपंथियों ने उससे गठजोड़ किया. अब खुद को धर्मनिरपेक्ष कहने का कोई मतलब नहीं है क्योंकि देश के सामने आपकी कलई खुल चुकी है.

लालकृष्ण आडवाणी : पिछले 11 महीनों में प्रधानमंत्री न तो देश को एक रख सके हैं, न मंत्रिमंडल को और न ही पार्टी को. यह किस किस्म का नेतृत्व है? क्या इससे भी बड़ी कोई असफलता हो सकती है?

चंद्रशेखर : मैं प्रधानमंत्री जी से कहना चाहूंगा कि संसद चलाना नाटक करना नहीं है. सवाल जीप और ट्रॉलर के चलने का नहीं. अगर ड्राइवर ही निकम्मा हो तो न जीप चलेगी और न ही ट्रॉलर.

देवीलाल : आज मेरी वचनबद्धता चंद्रशेखर को प्रधानमंत्री बनाने और पार्टी को बचाने की है. अगर आप हालात सुधारना चाहते हैं तो वी.पी. सिंह को हटा दीजिए. हमने अपने भर कोशिश कर ली है पर सफलता नहीं मिली.

सोमनाथ चटर्जी : सवाल जीप, ट्रॉली या ट्रॉलर का नहीं है. अगर चंद्रशेखर अगली सरकार बनाते हैं तो ड्राइवर कौन होगा? उनके पास भले ही स्टियरिंग रहे लेकिन क्लच और गियर पर किसका नियंत्रण रहेगा?

वी.पी. सिंह : सरकार जा रही है क्योंकि यह अदालत के आदेश का उल्लंघन नहीं करना चाहती. यह कहा गया है कि सब कुछ ड्राइवर की कुशलता से चलता है. ड्राइवर कोई भी हो सकता है पर जीप किसकी है यह अब स्पष्ट हो गया है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंद्रशेखर

तिकड़मी राजनीति के सूत्रधार

—हरिंदर बवेजा

"लोग मौजूदा राजनीति से परेशान हैं. मैं नए ढंग की राजनीति शुरू करना चाहता हूं, जनता की राजनीति."

—चंद्रशेखर, 1983 में पदयात्रा शुरू करते समय

कन्याकुमारी से राजघाट तक जंगलों, घाटियों, भीड़ भरे नगरों और धूल भरे गावों से गुजरते हुए उन्होंने 4,260 किलोमीटर की पैदल यात्रा की थी. छह महीने की इस भारत यात्रा के दौरान हर रोज उनके कारवां में लोगों की संख्या में इजाफा होता जाता था. जनता पार्टी में शर्मनाक विभाजन के तीन साल बाद गए जमाने का युवा तुर्क नेता तब एक बार फिर मैदान में जमने की तैयारी में था. और जब वे लीक से हटने और नई राजनीति शुरू करने की बात करते थे तो यह तब बहुत विश्वसनीय भी लगता था. पर इससे पहले कि वे इस दिशा में और आगे कदम बढ़ा पाते, राजनीति के दांवपेचों ने इस पदयात्री को अपने सांचे में ढाल लिया. इसके बाद से वे इसी दांवपेंच में महारत हासिल करते हुए पिछले पखवाड़े प्रधानमंत्री की कुर्सी तक पहुंच गए.

मगर मजेदार बात यह है कि अपने तीन दशक के राजनैतिक जीवन में वे कभी किसी भी सरकारी पद पर नहीं रहे. उनका यह जीवन प्रजा समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता के रूप में शुरू हुआ था. 1983 में उन्होंने अपने लिए जो लक्ष्य चुना था उसके बिलकुल विपरीत है आज की उनकी राजनीति का आधार.

1971 का यह युवा तुर्क आज 63 वर्ष की उम्र पार करके कहीं ज्यादा चतुर हो गया है. पहले भी वे ऐसे दांवपेंच आजमाते रहे पर कुछ हाथ नहीं लगा था. पर इस बार उनकी बागी, विध्वंसकारी शैली ने उन्हें 7, रेसकोर्स रोड में पहुंचा दिया.

इंदिरा गांधी जब 1969 में पहली बार कांग्रेस का विभाजन करने वाले सिंडीकेट गुट से लड़ रही थीं तो चंद्रशेखर उनके अगुआ सिपहसालारों में थे. समाजवादी होने के नाते बैंक

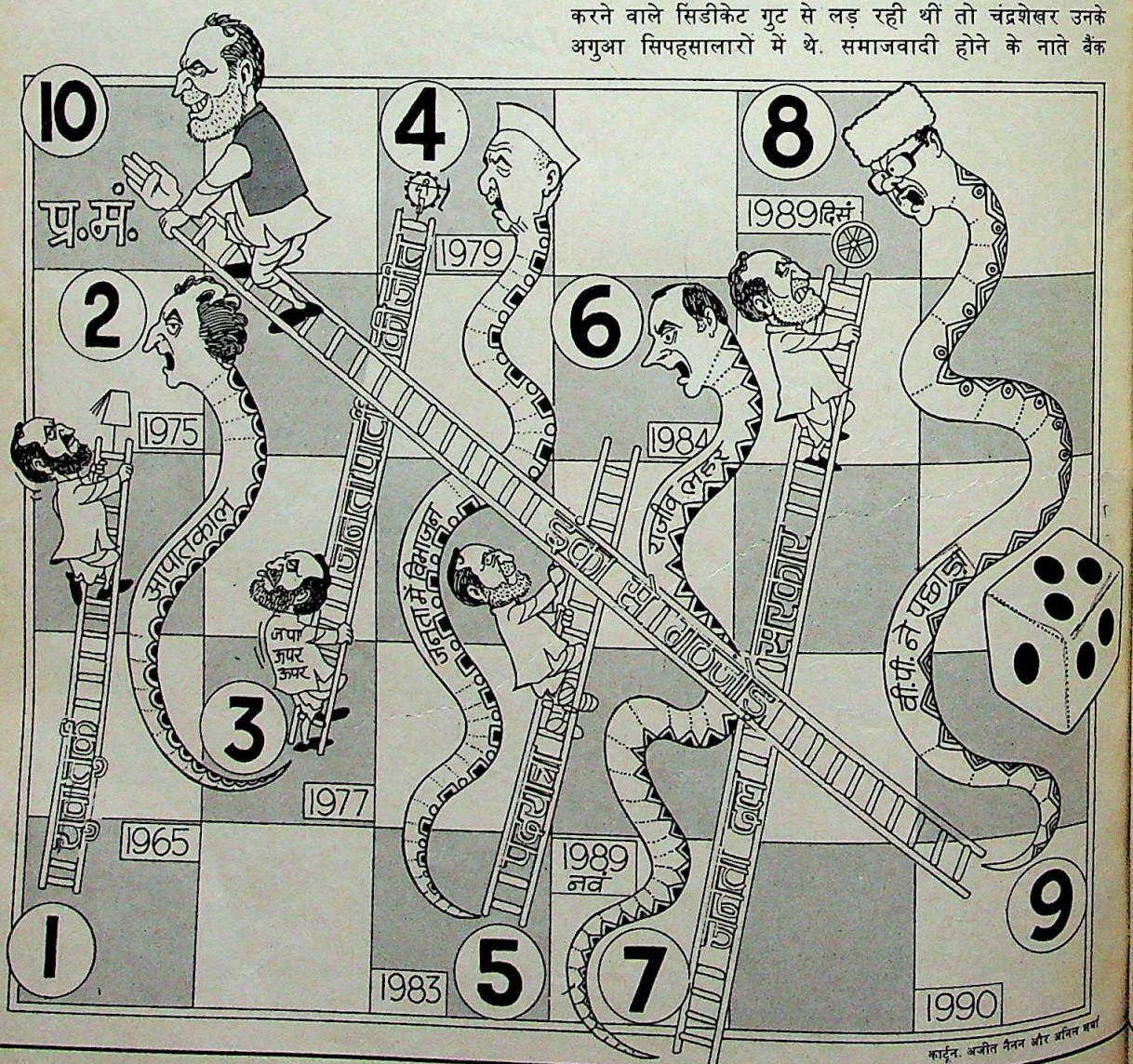

कार्टून: अजीत नैनन और अमित शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीयकरण और प्रिवीपर्स की समाप्ति जैसी इंदिरा गांधी की नीतियों को उनका समर्थन स्वाभाविक ही था. पर जैसे ही वे उन्हें अपना भरोसेमंद मानने लगी थीं कि 1971 में चंद्रशेखर ने उन्हें 'जनता की राजनीति' से दूर जाने के खिलाफ सार्वजनिक चेतावनी दे डाली. फिर 1971 के शिमला अधिवेशन में वे इंदिरा गांधी की इच्छा के विपरीत कांग्रेस समिति में निर्वाचित हो गए. 1972 में वे फिर से कांग्रेस कार्यसमिति के लिए निर्वाचित हो गए. 1971 में उन्होंने युवा तुर्क के रूप में अपने आका की पीठ में छुरा भोंका तो 1990 में बुजुर्ग नेता के रूप में वी.पी. सिंह की टांग खींच दी.

वे अक्सर यह कहा करते, "मैं वी.पी. सिंह को अपना नेता नहीं मानता मगर मैं पार्टी नहीं तोड़ूंगा." इन शब्दों के खोखलेपन का एहसास खुद उन्हें भी होगा. वे नाराज थे पर इंतजार करते रहे. उन्होंने हल्ला बोला और कदम खींच लिए. कभी वी.पी. सिंह का समर्थन किया तो कभी धता बताई. उन्होंने वी.पी. सिंह को परेशान करने का कोई मौका नहीं छोड़ा. महम के मामले में उन्होंने यह कहकर चौटाला की निंदा करने से इनकार कर दिया कि विधायकों का बहुमत चौटाला का समर्थन कर रहा है. या फिर उन्होंने यह कहकर हड़कंप मचा दिया कि वी.पी. सिंह सरकार मेरा टेलीफोन टैप कर रही है

चंद्रशेखरः शिखर पर पहुंचे

प्रशांत पंजियार

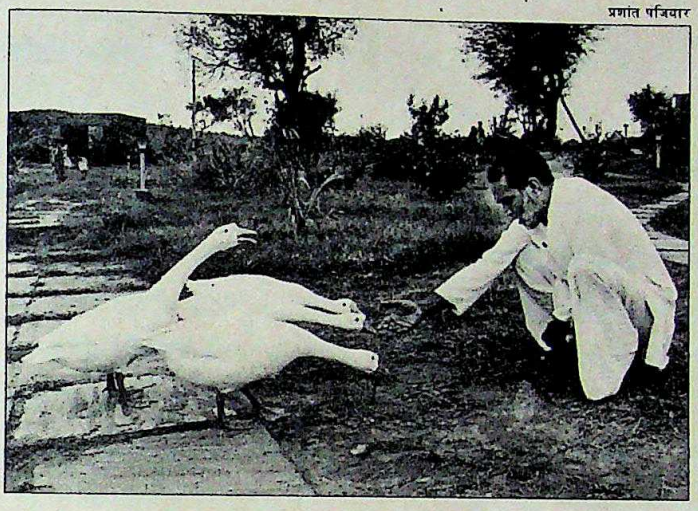

अपने राजनैतिक जीवन के अधिकांश दौर में खास तौर पर वी.पी. सिंह के प्रधानमंत्री चुने जाने के बाद से वे कुंठाग्रस्त रहे. इसलिए बहुत से लोग उन्हें अकेला राही समझते हैं, जिसके कुछ ही निष्ठावान मित्र हैं. जाहिर है उनमें ऐसा कुछ है जिस कारण ये मित्र उनके दुर्दिन में भी उनके साथ रहते हैं. मंत्री पद तक ठुकरा देने वाले उनके मित्र यशवंत सिन्हा कहते हैं, "चंद्रशेखर पूर्णतावादी हैं, आदर्शवादी हैं. उनकी क्षमता कभी आजमाई नहीं गई. वे ही असली मिस्टर क्लीन हैं."

70 के दशक में संपूर्ण क्रांति के जुझारू प्रवक्ता, प्रगतिशील समाजवादी चंद्रशेखर एक समय में उस बिड़ला घराने से ही भिड़ गए थे जो खुद उन्हीं की पार्टी कांग्रेस के काफी करीब था. पर आज वही चंद्रशेखर अंबानी से खुलकर मेल-जोल रखते हैं. वैसे, आजकल वे 'अध्यक्ष जी', 'बाबा भोंडसी' के नाम से भी जाने जाते हैं. दिल्ली के बाहरी इलाके के भोंडसी गांव में उनका एक सजा-संवरा 'आश्रम' है. पिछले 11 महीने में उन्होंने अपना ज्यादातर समय यहीं बिताया है.

पर सत्ता हासिल करने की कोशिश में चंद्रशेखर ने जो बदनामी बटोरी है उसकी पोटली बहुत भारी है. उन्होंने जिस तरह से कांग्रेस से गंठजोड़ किया उससे भी उनकी विश्वसनीयता काफी गिरी है.

बातचीत

'ख्वाब सिर्फ यही नहीं था'

*वक्त के हाथों ठुक-पिटकर पके हुए 63 वर्षीय चंद्रशेखर की मुराद आखिर पूरी हो गई. हमेशा मुट्ठी भर लोगों से घिरे रहने वाले किसी जमाने के 'युवा' तुर्क के प्रधानमंत्री बनते ही अब सब कुछ बदल गया है. स्पेशल सिक्योरिटी गार्ड की सुरक्षा में दनादन दगते सैल्यूटों और दर्शन के लिए जुटी भीड़ से हतप्रभ चंद्रशेखर हैरान हैं कि क्या सचमुच बाजी उन्हीं के हाथ लगी है. लेकिन वरिष्ठ संवाददाता **हरिंदर बवेजा** के साथ अपनी बातचीत के दौरान इस घाघ राजनेता को अपनी परिचित सतर्क मुद्रा में लौटने में देरी नहीं लगी. प्रधानमंत्री बनने के कुछ ही घंटे बाद दिए गए पहले इंटरव्यू के अंशः*

• *क्या इसे एक सपना पूरा हुआ माना जाए?*

कुछ खास अलग महसूस नहीं हो रहा. ऊपर से ढेर सारी समस्याओं को देखते हुए जिम्मेदारी का एक अतिरिक्त बोझ जरूर महसूस हो रहा है. पता नहीं आपने कैसे सोच लिया कि प्रधानमंत्री बनना मेरा ख्वाब था. कम-से-कम ऐसे मौके पर यह पद पाने की तो नहीं सोची थी मैंने. महज प्रधानमंत्री बन जाने से ही मेरे ख्वाब पूरे नहीं होते.

• *आपका ख्वाब क्या है?*

ख्वाबों की बात करना तो ढोंग करने जैसा होगा.

• *60 सांसदों के बूते पर आप स्थायी सरकार दे पाएंगे?*

यह कोई मुश्किल काम नहीं है. सरकार का स्थायी होना उसके काम और कार्यक्षमता पर निर्भर करता है.

• *लेकिन आपकी सरकार को तो जनादेश हासिल नहीं है. क्या यह अनैतिक नहीं?*

यह तो नैतिकता के मानदंडों पर निर्भर करता है. जनादेश कोई सफलता का रेडीमेड फार्मूला नहीं है. अब वी.पी. सिंह ने ही जनादेश का क्या किया ? सरकार के काम से ही जनसमर्थन तय होगा.

• *तो क्या आप कुछ लोक लुभावन कदम उठाने जा रहे हैं?*

लोक लुभावन कदमों से ही बात बनती तो पिछली सरकार क्यों जाती. लोगों को

मैंने और इंका ने देश को संकट से उबारने के लिए समझौता किया है. क्या देश के बारे में सोचना अनैतिकता है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एस्बेस्टस सीमेंट की चादरें

यह वास्तविकता है कि एस्बेस्टस सीमेंट शीटें 90% से अधिक सीमेंट से तैयार की जाती हैं तथा लगभग 10% क्रिसोटाईल एस्बेस्टस द्वारा जो कि स्टील से 3-4 गुना मज़बूत प्राकृतिक फाइबर है — सुदृढ़ की जाती है. एस्बेस्टस 100% क्षार-रोधक होने के कारण सीमेंट ढांचे से स्थाई रूप से 'जुड़' जाता है. इस प्रकार बने रसाइनिक बन्धन से एस्बेस्टस फाइबर का प्रथक होना लगभग असम्भव हो जाता है.

यह पूर्व निर्मित, उपयोग के लिए तैयार और सीमेंट तथा एस्बेस्टस के गुणों से भरपूर होती हैं.

इसी वजह से इनको किसी प्रकार की सुरक्षा कोटिंग अथवा उपचार की आवश्यकता ही नहीं पड़ती.

जंग पैदा करने वाले औद्योगिक प्रदूषकों का इन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता.

इसके विशिष्ट गुणों के कारण आग, ताप, वर्षा और समुद्र तटीय खारी हवा का इन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता जिसकी वजह से यह अधिक टिकाऊ होती हैं.

अधिक टिकाऊपन के साथ-साथ, अधिक क्षेत्र ढ़कने की क्षमता के फलस्वरूप मिलती हैं छत डालने की सबसे किफायती चादरें.

सच यह है कि एस्बेस्टस सीमेंट पाईप, चादरें, स्लेटें व शिंगल्स बीसवीं शताब्दी की शुरूआत से ही प्रयोग में लाए जा रहे हैं और आज भी सारे विश्व में प्रयोग हो रहे हैं.

कुछ आंकड़ों के स

1,000,00

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...लों के विषय में कुछ तथ्य.

विश्वभर में प्रति वर्ष 42 लाख टन एस्बेस्टस, एक प्राकृतिक ...नरल, का खनन होता है. इनमें मुख्य देश हैं सोवियत संघ, कनाडा, ...झील और ज़िम्बाब्वे. इसका 2% भाग ही भारत में प्रयोग होता है.

उपयोग में सुरक्षित. एस्बेस्टस सीमेंट की चादरों के विषय में ...ई स्वार्थ प्रेरित प्रचारों पर ध्यान देने के बजाए, यदि आप इसके ...शेषज्ञों की बात सुनें तो सच्चाई आप पर स्वयं ज़ाहिर हो जाएगी.

एस्बेस्टस सीमेंट उत्पादनों का सामान्य उपयोग पर्यावरण व ...ोक्ताओं के लिए किसी प्रकार का खतरा नहीं है.

जाने माने पर्यावरण विशेषज्ञों, विश्व स्वास्थ्य संगठन के ...कार्यकारिणी दल का मानना है कि यह हर प्रकार से उपयोग में सुरक्षित हैं.

अन्त में ब्रिटेन की सरकार के स्वास्थ्य एवं सुरक्षा अधिकारी द्वारा गठित अध्ययन दल का कथन आपके सभी संदेह दूर कर देगा.

"लोगों के मन में एस्बेस्टस सीमेंट से निर्मित उत्पादनों तथा एस्बेस्टस इन्सुलेशन के बीच अक्सर गलत-फहमी हो जाती है. हम यह स्पष्ट कर देना ज़रूरी समझते हैं कि प्रचलित एस्बेस्टस सीमेंट के उत्पादन जैसे छत, चादर व गटरिंग के प्रति हमें किसी प्रकार के भय का अहसास नहीं करना चाहिये क्योंकि यह पूरी तरह सुरक्षित हैं."

इसलिए यदि आपको छतों के लिए एक आदर्श तत्व की तलाश है तो एस्बेस्टस सीमेंट चादरों से बेहतर चुनाव हो ही नहीं सकता.

और यह एक तथ्य है.

...के साथ उपसंहार.

...0,000 मी.²

(यह सच है कि भारत में लगभग 1 अरब वर्ग मीटर एस्बेस्टस सीमेंट की चादरें छतों के रूप में प्रयोग में हैं. और प्रतिवर्ष इसमें प्रायः 6 करोड़ वर्ग मीटर की वृद्धि होती है.)

...स्बेस्टस सीमेंट की चादरें. सुरक्षित इस्तेमाल. चलें सालों साल.

एस्बेस्टस सीमेंट प्रोडक्ट्स मैन्यूफैक्चरर्स एसोसियेशन.

Enterprise/D/ACPMA/560 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास में लेकर ही हम कुछ कठिन फैसले करेंगे.

● ***इंका का समर्थन लेना क्या आपके लिए अनैतिक नहीं?***

अगर वी.पी. सिंह भाजपा के साथ सरकार बनाएं तो यह राष्ट्रभक्ति है और अगर इंका मुझे मदद देती है तो यह गद्दारी है ? मैंने और इंका ने देश को उस हालत से उबारने का समझौता किया जिसमें वह जा फंसा है. ऐसे संकट से देश को उबारना अनैतिक है ?

● ***आपकी मदद वही राजीव कर रहे हैं जिन्हें कभी आपने राजनीति में बच्चे की संज्ञा दी थी....***

इस वक्त मुद्दा श्री गांधी हैं या देश को बचाना?

● ***क्या आपको यह सोचकर तकलीफ नहीं होती कि इंका जब भी चाहे आपकी सरकार गिरा सकती है ?***

मेरे लिए ज्यादा तकलीफ की बात तो वह अफरातफरी थी जिसमें देश को झोंक दिया गया था. अब अगर इंका कल ही समर्थन वापस ले लेती है तो भी देश की हालत आज के मुकाबले ज्यादा खराब नहीं होगी.

● ***आप तो बार-बार कहा करते थे कि आप सरकार या पार्टी को नहीं तोड़ेंगे?***

क्या मैंने सरकार तोड़ी है ? वी.पी. सिंह ने खुद अपनी सरकार को बरबाद किया. क्या हमारे वोट से भी वी.पी. सिंह की सरकार बच सकती थी? वी.पी. सिंह के नैतिक मूल्य क्या यही हैं कि अगर वह गद्दी पर नहीं हैं तो वहां कोई भी नहीं होना चाहिए. मैंने उन्हें नष्ट करने के लिए क्या किया है? मैंने उनसे कहा कि वे भाजपा और विश्व हिंदू परिषद के साथ चालबाजियां न खेलें. क्या मैंने आडवाणी से कहा था कि वे समर्थन वापस ले लें ? क्या वी.पी. सिंह बताएंगे कि आडवाणी को कार सेवा में शामिल होने का आश्वासन देने के बाद उन्होंने अध्यादेश वापस क्यों लिया ?

● ***और देवीलाल पर आप कैसे भरोसा करेंगे?***

कोई मुझे धोखा नहीं देता. अगर किसी ने मुझे धोखा दिया है तो वह खुद गिरा है. मैं खुद को ऐसी जगह नहीं खड़ा कर देता कि कोई भी मुझे नीचा दिखा जाए.

● ***राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद को कैसे हल करेंगे?***

हम आपसी समझदारी पैदा करने की कोशिश करेंगे. मैं जानता हूं कि अब एकपक्षीय फैसला करना संभव नहीं है. न तो हम हिंदू भावनाओं से मुंह मोड़ सकते हैं, न अल्पसंख्यक समुदाय की आशंकाओं को अनदेखा कर सकते हैं.

● ***लेकिन अगर भाजपा राम मंदिर बनाने पर अपना अड़ियल रवैया नहीं छोड़ती तो आप क्या करेंगे?***

देखिए, मेरी सरकार भाजपा के समर्थन पर टिकी हुई नहीं है (हंसी). अगर वे जिद करते हैं तो मैं भी सख्त हो सकता हूं. राजनीति तो लेन-देन का सौदा है. मैं उनके साथ प्यार से बात करूंगा. लेकिन अगर वे अड़ियल बने रहते हैं तो वही होकर रहेगा जिससे हम बचना चाहते हैं.

● ***मंडल आयोग का क्या होगा ? क्या आप इसे लागू करेंगे?***

आरक्षण तो सही कदम है. जाति के आधार पर आरक्षण न करना सचाई से मुकरना होगा. लेकिन जिस तरह हमारे समाज में आर्थिक विकास असंतुलित रहा है उसे देखते हुए आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों के बारे में भी विचार करना होगा. मैंने यह बात वी.पी. सिंह से भी कही थी. इस मायने में मंडल रिपोर्ट अधूरी ही है.

● ***क्या आपको अपने और इंका के बीच तनाव के मुद्दों का अंदाजा है?***

हालत इतनी बिगड़ी हुई है कि हमें पहले सहमति वाले मुद्दों पर ध्यान देना होगा. इंका और जद (स) दोनों इसे बराबर समझते हैं. दो या दस साल में हमारे बीच तनाव होगा या नहीं, मैं नहीं कह सकता लेकिन निकट भविष्य में तो तनाव की संभावना नहीं है. जहां तक पंजाब की बात है, मैं भी यह मानता हूं कि आतंकवाद पर अंकुश लगना चाहिए.

भवान सिंह

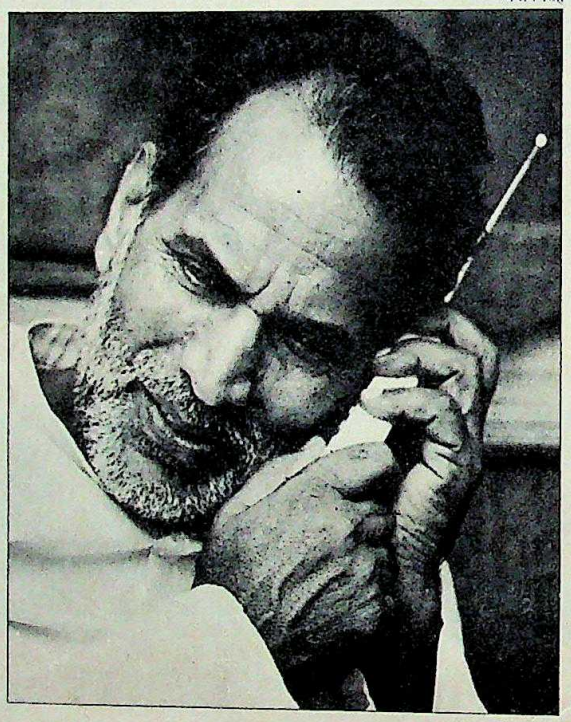

वी.पी. सिंह ने खुद अपनी सरकार बरबाद की. मैंने क्या किया? मैंने उनसे कहा कि भाजपा के साथ चालाकियां खेलें?

● ***क्या आप आतंकवादियों से बात करेंगे?***

अगर वे तैयार हैं तो मैं भी तैयार हूं.

● ***क्या फारूक अब्दुल्ला की वापसी का इंतजार किया जाए?***

फिलहाल तो इसकी संभावना नहीं है क्योंकि चुनाव की अभी कोई उम्मीद नहीं.

● ***बढ़ती कीमतों पर काबू पाने के लिए आप क्या करने जा रहे हैं?***

उस मोर्चे पर हालत बहुत खराब है. यह एक पेचीदा मामला है इसलिए इस पर मैं फिलहाल कुछ कहना नहीं चाहूंगा.

● ***क्या इस समस्या ने आपको भी चक्कर में डाल दिया है ?***

चक्कर में तो नहीं डाला पर यह एक गंभीर समस्या है. कुछ असरदार करना ही होगा क्योंकि मुद्रास्फीति की मौजूदा दर को इस तरह चलते रहने नहीं दिया जा सकता. कीमतों से खेलने वालों को चेतावनी देनी ही होगी. कीमतों के मामले में मजबूरियों को तो समझा जा सकता है पर इस बारे में खिलवाड़ करने वालों को बरदाश्त नहीं किया जाएगा.

● ***आपकी विदेश नीति क्या होगी?***

कम-से-कम ऐसी तो नहीं होगी कि छोटे देशों को धमकाया जाए और बड़ों के आगे नाक रगड़ी जाए. मैं पड़ोसियों के साथ रिश्ते सुधारने की कोशिश करूंगा क्योंकि टकराव तीसरी दुनिया के देशों के हित में नहीं है. मैं सभी पड़ोसी देशों से अपील करता हूं कि वे बीते वक्त की कड़वाहट को भुला दें.

● ***आपकी छवि एक विध्वंसक की रही है?***

किसकी नजर में ? सत्ता को मक्खन लगाने वालों की नजर में. मैं उन्हीं का विध्वंस करता हूं जो देश का इम्तहान लेते हैं और उसे तोड़ते हैं (मुस्कराहट), उनका भी जो जनता के दुश्मन हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

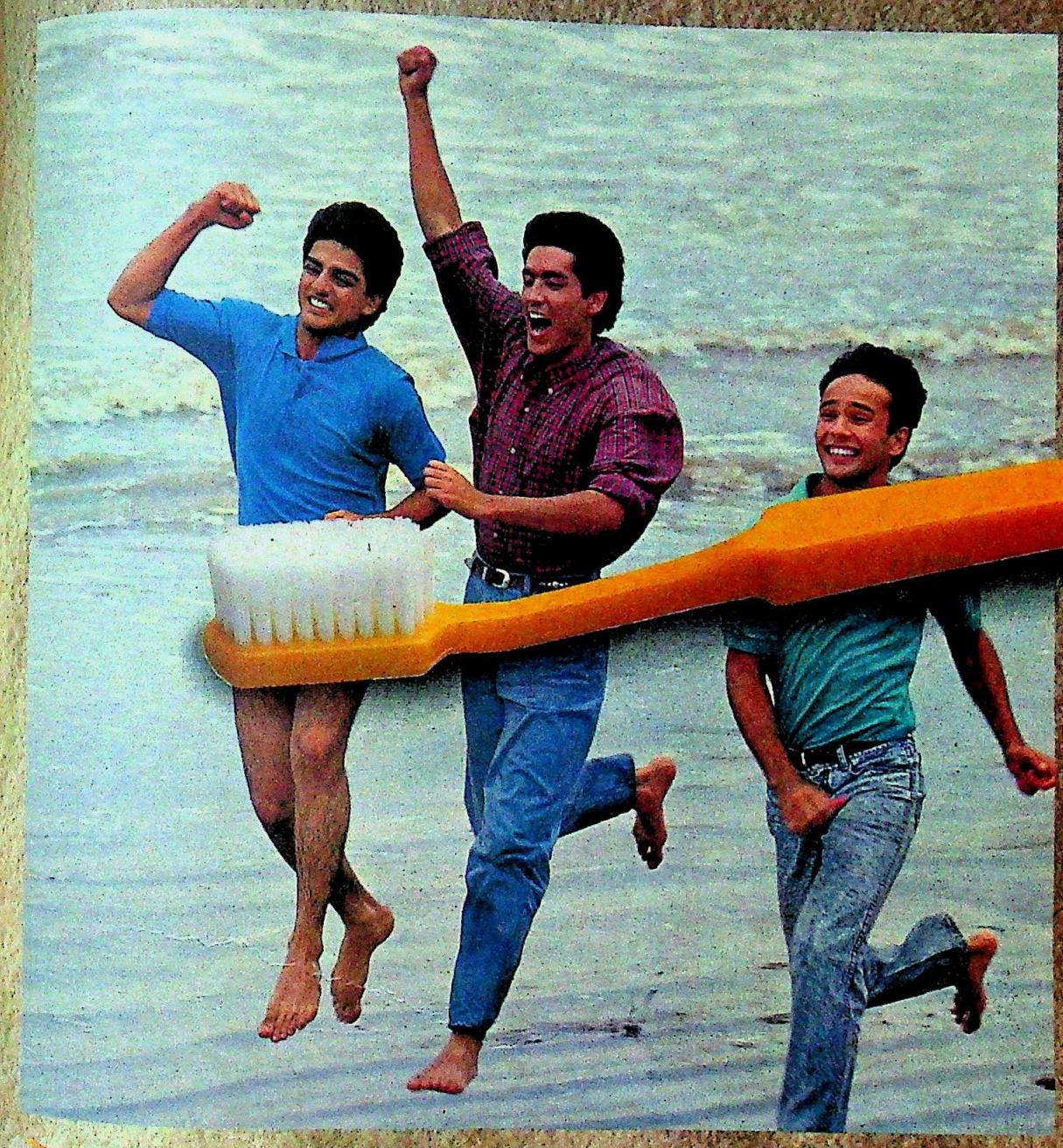

मुस्कुराहटें शानदार, लाए बेमिसाल आकार!

अब अजय टूथब्रश ही अपनाइये, अपनी मुस्कुराहटों में नया अंदाज पाइये। इनका बेमिसाल आकार हाथ की सही पकड़ बनाये दांतों को भीतर तक साफ कर जाये। बच्चों, महिलाओं और पुरुषों... सभी के लिये विशिष्ट रूप से तैयार किये गये यह टूथब्रश मसूड़ों की मालिश और दांतों की सफाई ज्यादा बेहतर ढंग से करते हैं। पुरुषों के लिये बी- 201 और बी- 101, महिलाओं के लिये बी- 203 और बी- 102, बच्चों के लिये बी- 103 और यात्रियों के लिये बी- 104.

Ajay® TOOTH BRUSHES

आत्म विश्वास और उत्साह

अजय होम प्रॉडक्टस प्रा.लि., सी- 114, नारायना इन्डस्ट्रियल एरिआ, फेज I, नई दिल्ली 110 028

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी फोटो: प्रमोद पुष्करणा

मुलायम सिंह यादव

नजला तो गिरकर रहेगा

सांप्रदायिक तनाव और प्रशासन ठप पड़ने से मुख्यमंत्री बेसहारा

—दिलीप अवस्थी

सांप्रदायिकता की दृष्टि से उत्तर प्रदेश बहुत शांत तो कभी नहीं रहा पर अयोध्या की हाल की घटनाओं ने तो समूचे राज्य में भयंकर उथल-पुथल मचा दी है. राज्य के सामाजिक और राजनैतिक तानेबाने को गंभीर क्षति पहुंचाने वाले मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव को जनता दल की प्राथमिक सदस्यता से बरखास्त कर दिया गया है. दूसरी ओर विश्व हिंदू परिषद (विहिप) और भारतीय जनता पार्टी के नेता घोर नाराजगी लिए बैठे हैं कि मुलायम ने राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद मसले पर ज्यादा ही सख्ती दिखाई. मौका मिलने पर वे उन्हें (मुलायम को) सूली पर चढ़ाने से कतई नहीं हिचकेंगे. यहां तक कि इंका भी, जो राज्य के मौजूदा असामान्य हालात में मुलायम को मदद देने पर विचार करती ताकि जनता दल को कुछ और तोड़ा जा सके, इस दफा चुप रहना ही बेहतर समझेगी क्योंकि मुलायम के समर्थन का मतलब है आत्मघात करना. लेकिन केंद्रीय नेतृत्व और सियासी मजबूरियों के चलते इंका उनकी कुर्सी थाम भी सकती है.

एक और कारण यह है कि मुलायम

अयोध्या के चार धाम मंदिर में कार सेवकों की सभा

दूसरी पिछड़ी जातियों और मुस्लिम वोट बैंक को एकजुट करने में सफल नहीं रहे हैं और इस तरह उन्होंने आने वाले अनेक वर्षों तक के लिए सांप्रदायिक सौहार्द की उम्मीद तहस-नहस कर दी है.

वी.पी. सिंह के नेतृत्व वाले जनता दल से निकाल दिए जाने के बाद, लगता नहीं कि यादव मंत्रिमंडल जमा रह पाएगा. सूत्रों के अनुसार, 426 सदस्यों वाली विधानसभा में यादव को करीब 110 विधायकों का समर्थन है. इनमें से 80 तो उनके अपने गुट के ही हैं तथा जनता पार्टी के 25 विधायकों में से 16 और 45 निर्दलीय विधायकों में से 16 का समर्थन उन्हें हासिल है. लेकिन विद्रोह की कीमत तो उन्हें चुकानी ही होगी. अजित सिंह गुट के 70 विधायक, जनमोर्चा के 36 और जनता पार्टी के करीब 10 विधायक उनके खिलाफ हैं. ऐसी स्थिति में यादव की गद्दी का पूरा दारोमदार इंका के 94 और बहुजन समाज पार्टी के 13 विधायकों के समर्थन पर ही निर्भर है.

उनके मंत्रिमंडल के भविष्य पर गंभीर प्रश्नचिन्ह लगाते हुए 10 नवंबर को उनके पांच मंत्रियों ने इस्तीफे दे दिए. इनसे वोट जुटाने वाला एक अच्छा-खासा गुट बन गया है. इनमें सिंचाई तथा उद्योगमंत्री रेवती रमण सिंह, शिक्षामंत्री सच्चिदानंद वाजपेयी, खाद्य और नागरिक आपूर्तिमंत्री दिवाकर विक्रम सिंह, खेल और वनमंत्री मुहम्मद असलम खां और स्वास्थ्यमंत्री मुख्तार अनीस शामिल हैं.

उधर, 12 नवंबर को जनता दल के करीब 110 सांसदों और विधायकों ने नवनियुक्त राज्य पार्टी अध्यक्ष कैलाशनाथ यादव की अगुआई में राज्यपाल बी. सत्यनारायण रेड्डी से भेंट की और मुख्यमंत्री को तत्काल हटाने की मांग करते हुए एक ज्ञापन दिया. जनता दल के विभाजन के बाद मुलायम सिंह की जगह राज्य पार्टी अध्यक्ष बनाए गए कैलाशनाथ के अनुसार 150 से अधिक जनता दल विधायक मुख्यमंत्री को हटाने की मांग कर रहे हैं. ज्ञापन देने के बाद उन्होंने बताया, "जनता दल विधायक 14 नवंबर को नया नेता चुनने के लिए बैठक कर रहे हैं." इसी रोज मुख्यमंत्री ने पार्टी विरोधी गतिविधियों के आरोप में 31 जनता दल विधायकों को निष्कासित कर दिया. विधानसभाध्यक्ष हरिकृष्ण श्रीवास्तव ने भी तत्काल इन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

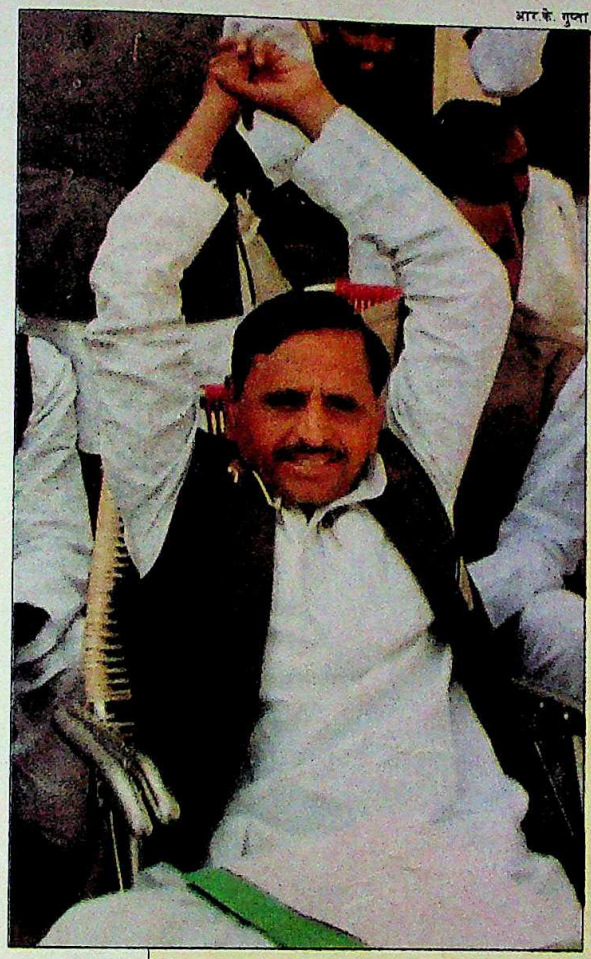

आर.के. गुप्ता

लोगों को असंबद्ध सदस्य घोषित कर दिया.

दल के बागी नेताओं ने मुख्यमंत्री की इस कार्रवाई का कड़ा विरोध किया. सांसद सत्यपाल सिंह यादव ने कहा, "जब उन्हें जनता दल से निकाला जा चुका है और उन्होंने जनता दल (समाजवादी) बनाने की घोषणा भी कर दी है तो वे यह कार्रवाई किस आधार पर कर सकते हैं?"

लेकिन दूसरे नेता इस कार्रवाई को यह सिद्ध करने में लगे हैं कि 31 विधायकों को निष्कासित करके मुलायम ने सदन में अपने आप ही बहुमत खो दिया है. विधान परिषद सदस्य मोहन सिंह कहते हैं, "यह कदम उठाकर वे बहुमत वाली पार्टी के नेता नहीं रहे." महत्वपूर्ण बात यह है कि राज्यपाल से भेंट करने वाले शिष्टमंडल में लोकदल (अ), जनमोर्चा और चंद्रशेखर खेमे से जा मिलने वाले संजय सिंह के अधिकांश करीबी भी शामिल थे.

मुख्यमंत्री ने भी इस दिन विधायकों की एक बैठक की जिसमें 55 लोग शामिल हुए. इससे संकेत मिलता है कि जोर आजमाइश की स्थिति में जनता दल में बने समीकरणों के हिसाब से उन्हें मुश्किल का सामना करना पड़ सकता है. वैसे, जन समर्थन जुटाने के लिए इसी दिन उन्होंने राज्य में पिछड़ों के लिए 27 फीसदी आरक्षण की घोषणा कर दी. लेकिन उनकी मुख्य उम्मीदें इंका के समर्थन पर टिकी होंगी.

वैसे, इंका मुलायम सिंह को समर्थन देने के सवाल पर बुरी तरह बंटी हुई है. इंका विधायक दल के नेता नारायण दत्त तिवारी यादव के साथ हाथ मिला लेने के पक्ष में लग रहे हैं पर सतर्कता बरतते हुए वे कहते हैं "अभी तक हमसे समर्थन मांगा नहीं गया है. अगर मुख्यमंत्री समर्थन मांगेंगे तो इस मामले पर अंतिम फैसला लेने से पहले विधायक दल में विचार-विमर्श किया जाएगा." उधर, इंका राज्य शाखा की अध्यक्ष राजेंद्र कुमारी वाजपेयी को शंका है कि यादव सरकार को सहयोग देने से इंका का समर्थन घटेगा.

वैसे, कई राजनैतिक विश्लेषकों का तो कहना है कि इस विकट दौर की शुरुआत

बातचीत

'मुझे बहुमत हासिल है'

मंदिर-मस्जिद विवाद में सख्ती का रुख अपनाकर और जनता दल में विभाजन हो जाने की वजह से मुश्किल में फंसे मुलायम सिंह यादव में अभी भी दमखम बाकी लगता है. प्रमुख संवाददाता ***विलीप अवस्थी*** *ने विभिन्न मुद्दों पर उनसे बातचीत की. कुछ अंश:*

● ***वी.पी. सिंह के बारे में:***

वी.पी. सिंह ने सांप्रदायिक ताकतों के साथ मिलकर मेरी सरकार को गिराने की साजिश की थी. सही वक्त आने पर मैं उन सभी बातों का भंडाफोड़ करूंगा कि उन्होंने और बातों के अलावा बाबरी मस्जिद मामले पर भाजपा के साथ किस तरह की मिलीभगत की और मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू किए जाने पर भी सुप्रीम कोर्ट से कैसे स्थगन आदेश लिया. देश में हिंदू-मुसलमान फसादों के लिए भी वे ही जिम्मेदार हैं.

● ***चंद्रशेखर को समर्थन देने के बारे में:***

मैंने वी.पी. सिंह को धोखा दिया, यह आरोप बिलकुल निराधार है. मैंने अपने सभी दोस्तों और सांसदों से कहा था कि वे अंतरात्मा की आवाज पर ही वोट दें. वी.पी. सिंह ने जनादेश के साथ खिलवाड़ किया, इसी कारण उनकी सरकार का पतन हो गया.

● ***मंत्रियों के इस्तीफों के बारे में:***

मेरे मंत्रिमंडल के पांच मंत्रियों का इस्तीफा मेरी सरकार गिराने के लिए वी.पी. सिंह के षड्यंत्र का ही हिस्सा है. वैसे भी अगर वे लोग इस्तीफा नहीं देते तो मैं खुद ही उन्हें निकाल बाहर कर देता. मेरी सरकार को विधानसभा में भारी बहुमत हासिल है.

● ***कांग्रेस से समर्थन लेने के बारे में:***

अभी तो मुझे इसकी जरूरत नहीं. क्योंकि बहुमत स्पष्ट तौर पर मेरे साथ है. लेकिन सांप्रदायिकता का मुकाबला करने में अगर कांग्रेस समेत कोई भी पार्टी मेरा साथ देगी तो मैं उसका सहयोग जरूर लूंगा.

● ***जनता दल से अपनी बरखास्तगी के बारे में:***

मुझे बरखास्त करने का उन्हें क्या हक है ? उनकी औकात क्या है? वैसे भी मैं जनता दल (समाजवादी) बनाने जा रहा हूं.

● ***बाबरी मस्जिद के बारे में:***

बाबरी मस्जिद की रक्षा करके मैंने मुसलमानों को ही राहत नहीं दी, पड़ोसी देशों में सैकड़ों मंदिरों को भी बचा लिया. मैंने परदेश में रहने वाले हिंदुओं की भलाई का काम किया है.

● ***आम चुनाव के बारे में:***

इस समय आम चुनाव की क्या जरूरत है? देश नाजुक दौर से गुजर रहा है और अभी चुनाव कराना ठीक नहीं होगा.

● ***केंद्र में जाने के बारे में:***

मेरे वहां जाने का सवाल ही नहीं उठता. प्रधानमंत्री के रूप में भी दिल्ली जाना नहीं चाहता. प्रदेश के 14 करोड़ लोगों की सेवा ही मैं समूचे देश की सेवा के बराबर मानता हूं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

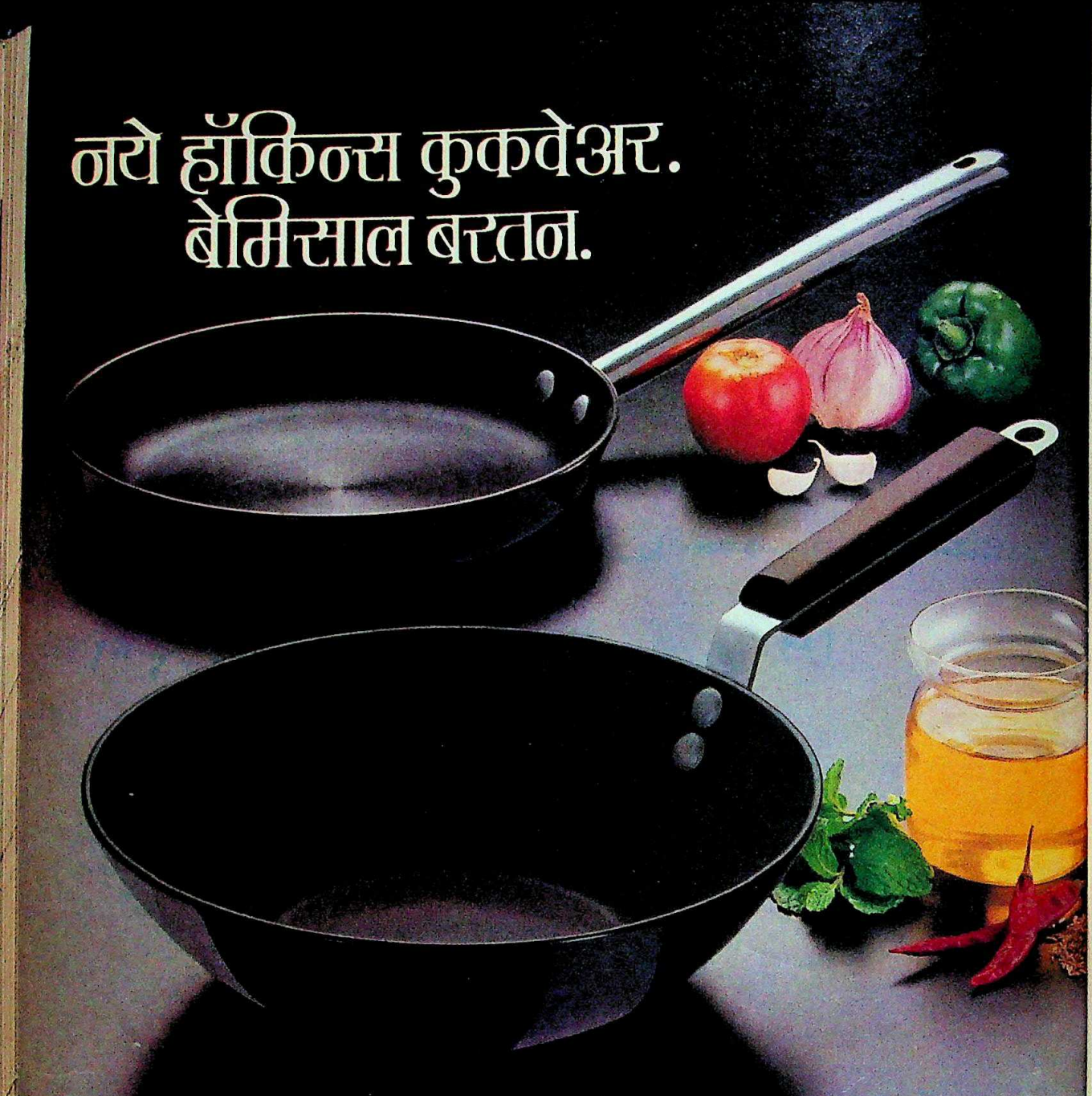

आ ख़िरकार, विश्व-स्तर के बरतन उपलब्ध हो गए. जिन्हें देख कर मन प्रसन्न हो. छूने में रोमांच हो. जिनमें पकाना हो आनंददायक. हॉकिन्स कुकवेअर. सीधे-सादे शब्दों में–बेमिसाल बरतन.

ये बरतन ४.०६ मि.मी. मोटे, ताप का कुशलता से उपयोग करनेवाले, नए एलुमिनियम से बने हैं. हॉकिन्स की अनोखी सैटिलॉन सतह के साथ. जो नई दिखती रहे, बरसों तक.

स्टेनलैस स्टील का सुंदर हैंडल. फ़्राइंग पैन में अधिक लंबा. गहरे-फ़्राइ पैन में 'रोज़वुड' के हत्थे. दोनों हैंडल ठंडे रहनेवाले, पकड़ने में आरामदेह और इन बरतनों में टिकाऊ रिवेटों द्वारा जकड़ कर बिठाए हुए.

हॉकिन्स प्रेशर कुकर के निर्माताओं की ओर से. उत्तमता ऐसी कि भारतभर को है भरोसा. अधिकतम फुटकर मूल्य (सभी करों सहित) फ़्राइंग पैनः रु. २७५. गहरा-फ़्राइ पैनः रु. ३५०. कोई मदद चाहिए तो यहां लिखेंः हॉकिन्स विभाग क्र. १४, पी.ओ. बॉक्स ६४८१, बम्बई ४०० ०१६.

भारत की भरोसेमंद क्वॉलिटी
हॉकिन्स
बेमिसाल बरतन
फ़्राइंग-पैन
गहरा-फ़्राइ पैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हॉकिन्स कुकवेअर यहां उपलब्ध हैं

दिल्ली

अशोक विहार उषा क्रॉकरीज़, ३१, सेंट्रल मार्केट • **आज़ाद मार्केट** कैपिटल क्रॉकरी हाउस, १०२३५, लाइब्रेरी रोड, क्रॉकरी लेन • **भोगल** गिरधारी लाल ओम प्रकाश, ८०, समन बाज़ार • **कनॉट प्लेस** जानकी दास एंड कंपनी, २३-एफ, कनॉट प्लेस • **चांदनी चौक** बाबुल, १९००, बैंक ऑफ़ इंडिया के सामने • बख़्शी बेयर हाउस, १८५१, चांदनी चौक • भगवान दास जगन्नाथ, ६३३, कूचा नटवां के सामने • **बुद्ध सिंह एंड संस**, १८५४, चांदनी चौक • **फ़तेहपुरी** आर. डी. स्टोर्स, ६५०४, फ़तेहपुरी • **ग्रेटर कैलाश-I** महिंद्रा डिपार्टमेंटल स्टोर, एम-४८/ए, मेन मार्केट • **हौज़ खास** जैन बर्तन सेंटर वाले • निरंकारी जनरल स्टोर, ई-३७, मेन मार्केट • **आई.डी. एस्टेट** डी.ए.सी डब्ल्यू एंड एम. कंज़्यूमर को-ऑपरेटिव स्टोर्स लिमिटेड, ए.जी.सी.आर. बिल्डिंग, ग्राउंड फ्लोर 'ई' विंग • **ज्वालाहेड़ी** जैन बर्तन भंडार, ४३/५, पश्चिम विहार, क्विक गैस के सामने • **कालकाजी** कालका स्टील सेंटर, मेन रोड, गोविंदपुरी • **कमला नगर** क्रॉकरी एम्पोरियम, दुकान नं. ११-एफ • **करोल बाग** मरगोधा बर्तन स्टोर, २५६७, अजमल खाँ रोड • विरमानी अप्लायेंसेस, २५३७, अजमल खाँ रोड • विशाल बर्तन भंडार, २५६८, अजमल खाँ रोड • आनंद क्रॉकरी स्टोर, १५७, गफ़्फ़ार मार्केट • **ताजपत नगर** बेदी बर्तन भंडार, सेंट्रल मार्केट • बंगाल क्रॉकरी एंड ग्लास हाउस, आइ-१८, मेन रोड • दावर यूटेंसिल्स, ३३, सेंट्रल मार्केट • नेशनल बर्तन भंडार, ३४, सेंट्रल मार्केट • सूरी बर्तन भंडार, सेंट्रल मार्केट • **मालविया नगर** हिमानी बर्तन स्टोर, भगत सिंह मार्केट • **मोती नगर** भूटानी बर्त स्टोर, मेन बाज़ार • **पहाड़ गंज** फैसी बर्तन भंडार, ४५५३, मेन बाज़ार • **राजौरी गार्डन** न्यू वेराइटी स्टोर, जे-८३, मेन बाज़ार • **आर. के. पुरम** सुभाष बर्तन भंडार, दुकान नं. १५, सेक्टर ७ • **रानी बाग** भारत बर्तन भंडार, ८५४, मेन बाजार • **सदर बाज़ार** हीरा लाल एंड संस, ६१२०, मेन बाज़ार • ग्रोवर संस, ३९०, निरंजन एस्टेट, प्रताप मार्केट • डिंब किशोर एंड संस, ४५२२, पहाड़ी धीरज • **बाबू मार्केट** आहूजा बर्तन स्टोर, दुकान नं. ६५, सरोजिनी नगर • पंजाब बर्तन स्टोर, ६४, सरोजिनी नगर • सानकला बर्तन स्टोर, दुकान नं. ३ • **सरोजिनी नगर** अशोक बर्तन स्टोर, ७२, सरोजिनी नगर मार्केट • वंदना, ९३, मेन मार्केट • **शाहदरा** अग्रवाल बर्तन स्टोर, १/६९६६, बाबरपुर रोड, रोहताश नगर • **सब्ज़ी मण्डी** क्रॉकरी एंड एलाइड स्टोर, १५३५, चंदावल रोड • **त्रिनगर** जैन इलेक्ट्रॉनिक्स, १५३२, तोता राम बाज़ार • **वज़ीरपुर इंडस्ट्रियल एरिया** बुद्ध सिंह हरबंस सिंह, ए-१०३, जी-१, स्टेट बैंक ऑफ़ पटियाला बिल्डिंग • चावला ब्रदर्स, सी-३, इंडस्ट्रियल एरिया • **यूसुफ़ सराय** लक्ष्मी हाउसहोल्ड एम्पोरियम, ७४/२, मेन रोड • मुनी लाल विशन स्वरूप (बर्तनवाले), ७२/६, मेन मार्केट • राम किशन एंड संस, ७२/७, मेन मार्केट • श्री वर्धमान ट्रेडर्स, मेन रोड • जैन यूटेंसिल्स (सैनसेलमी), मंदिर वाली गली • **वसंत विहार** ओसावा एम्पोरियम, बसंत लोक.

आसाम

□ **अभयापुरी** : मेन रोड कामिनी इलेक्ट्रिकल्स □ **बरपेटा रोड** : मेन रोड राधिका स्टोर्स □ **बरपेटा टाउन** : दास एजेंसी, बी बी. रोड • दीपाली स्टोर्स □ **बिहपुरिया** : एन.टी. रोड गोस्वामी इलेक्ट्रिकल □ **बिलासीपाड़ा** : मेन रोड सेठिया ब्रदर्स □ **बिश्वनाथ चारिआली** : पाभय रोड उदय शंकर स्टोर्स □ **बंगाईगांव** : ए.ओ.सी. रोड मातृभंडार • **मेन रोड** गिफ़्ट सेंटर • रवि प्रकाश आनंद एंड कं. □ **धुबुरी** : डी.डी. रोड जी.सी. रॉय एंड संस • **डी. के.** रोड धुबुरी होलसेल कंज़्यूमर को-ऑपरेटिव □ **डिब्रूगढ़** : न्यू मार्केट दे एंड कं. • एस. दत्त एंड कं. □ **डिगबोई** : जनता रोड रेडियो मार्ट □ **डिफू** : मेन रोड ज्योत्सना स्टोर्स □ **दूधनई** : अभिरुचि □ **गुवाहाटी** : भांगागढ़ एस. बी. आई. एम्प्लॉईज कंज़्यूमर को-ऑप स्टोर • **चांदमारी** विडियो ब्यू • गणेशगुड़ी राजधानी ग्लास हाउस, दिसपुर • **जी. एस. रोड** ज्योति इलेक्ट्रिकल्स, पल्टन बाज़ार • **लाखटोकिया** सी. एम. स्टोर • **मालिगाँव** नेशनल वेराइटी स्टोर्स • **फैन्सी बाज़ार** रवि प्रकाश आनंद एंड कं. • **पांडु** कामाख्या मेकैनिकल स्टोर्स • एस. आर. सी. बी. रोड श्याम मेटल स्टोर, फैंसी बाज़ार • आर. चंपकलाल एंड कं. • **एस. एस. रोड** सिटि सेंटर, फैंसी बाजार • मिरर एंड ग्लास हाउस • राजपानी स्टोर्स, लाखटोकिया • **उलुबारी** कारेंग □ **हाफलॉंग** : मेन रोड होज़ारि एंड संस □ **होजाई** : आर. एन. टैगोर रोड कामाख्या स्टोर्स □ **जागी रोड** : ए.टी. रोड एस. एन. बैनर्जी एंड संस □ **जोरहाट** : गड़-आलि रॉय एंड कं. • जे.बी. रोड हीरो सेल्स कॉर्पोरेशन □ **करीमगंज** : स्टेशन रोड वित्त स्टोर्स • स्टेशनरी स्टोर्स □ **कोकराझार** : डिपो रोड जगबंधु स्टोर्स • **मेन रोड** लक्ष्मी नारायण स्टोर्स □ **लामडिंग** : सिनेमा रोड अभिय भंडार • **मार्गेरिटा** : ए.टी. रोड एच. के. पाल एंड संस □ **मरियानी** : मेन रोड ए.सी. दास एंड कं. □ **नाहरकटिया** : मेन रोड कामाख्या स्टोर्स □ **नलबारी** :एन. टी. रोड कमरुप हार्डवेयर स्टोर्स □ **नामरुप** : सोनारी तिनिआलि दिप्तिज़ □ **नॉर्थ लखीमपुर** : एन. टी. रोड दत्त ब्रदर्स □ **नगांव** : ए.टी. रोड ट्रान्सिस्टोरियम, मारवाड़ी पट्टी • **बड़ा बाज़ार** जे. एम. पाल एंड कं. • **ढाका पट्टी** न्यू चैतन्य स्टोर □ **रंगिया** : एन. टी. रोड वॉच एम्पोरियम □ **शिवसागर** : मारवाड़ी पट्टी हनुमान बख्श प्रदीप कुमार • **टेम्पल रोड** विषनलाल अग्रवाल □ **सिलचर** : हॉस्पिटल रोड रवि प्रकाश आनंद एंड कं □ **तेज़पुर** : जी.डी. रोड बी.के. हार्डवेयर स्टोर्स • **के. बी. सेंटर** दि नॉवेल्टी • **मेन रोड** रामायण • मशाक □ **तिनसुकिया** : डेली बाज़ार साहा क्रॉकरी हाउस • **जी.एन.बी.** रोड रवि प्रकाश आनंद एंड कं.

आंध्र प्रदेश

□ **अदिलाबाद** : एस.बी.एच. रोड श्रीनिवास एंटरप्राइज़ □ **गुंटूर** : ब्रॉडीपेट रोड □ **हनुमाकोंडा** : मेन रोड रमेश स्टील पैलेस, पुलिस स्टेशन के सामने □ **हैदराबाद** : अमीरपेट महावीर स्टील पैलेस, सत्यम थिएटर रोड • **अमीरपेट** ब्रॉड रोड विजय स्टील पैलेस • **हिमायत नगर** कुंदन्स, ८-६-४७४/७, हिमायत नगर • **नाम्पल्ली स्टेशन रोड** अंजली इलेक्ट्रॉनिक्स • लक्ष्मी होम अप्लायेंसेस, रेवेन्यू बोर्ड के सामने • एल. पी. अप्लायेंसेस, केअर जनता बाज़ार • नारायणगुड़ा सिटि एम्पोरियम, पुलिस क्वार्टर्स के पास • **सुल्तान बाज़ार** कोकिनाडा : **सूर्यराव पेठ** गुप्ता एम्पोरियम, मेन रोड □ **करीमनगर** : टावर चौक संगम शॉपिंग सेंटर □ **कर्नूल** : मार्क रोड आंध्र किचनवेयर्स □ **नेल्लोर** : चिन्ना बाज़ार कुमार एजेंसीज़, सिखरामवारी स्ट्रीट □ **निज़ामाबाद** : **स्टेशन रोड** वर्मा एंटरप्राइज़र्स, १३, म्युनिसिपल कॉम्प्लेक्स □ **सिकंदराबाद** : **स्टेशन रोड** कमल गिफ़्ट लैंड, कमल स्टोर की १ ली मंज़िल • **राष्ट्रपति रोड** डेक्कन आयरन वर्क्स, बाटा के सामने □ **विजयवाडा** : **कालेश्वर राव रोड** श्री सत्यनारायण मेटल स्टोर्स □ **विशाखापट्टनम** : **मेन रोड** बॉम्बे गैस लाइट स्टोर्स • **सूर्यबाग** गोथी संस, पुलिस कंट्रोल रूम के सामने • टी.एस.आर. **कॉम्प्लेक्स** कल्पना एम्पोरियम, दुकान नं. २४.

अरुणाचल प्रदेश

□ **बोमडिला** : बोमडिला बाज़ार बोमडिला को-ऑप. जनरल स्टोर्स □ **हापोली** : मेन रोड ड्रीमलैंड ट्रेडर्स □ **पासीघाट** : पासीघाट मार्केट अरुणाचल इलेक्ट्रिकल्स • पासीघाट एल.एस.एम.पी. को-ऑप. सोसाइटी लि.

बिहार

□ **औरंगाबाद** :ओल्ड जी.टी. रोड पर्ल एंड कं. □ **बी. देवघर** : श्याम गंज रोड वैद्यनाथ इलेक्ट्रिक स्टोर्स □ **भागलपुर** : डी. एन. सिंह रोड होकानिया एंड संस • मेला स्टोर्स □ **बोकारो स्टील सिटि** : सेक्टर-४ आम्रपाली, ई-४, सिटि सेंटर • बॉम्बे वेराइटी स्टोर्स, ई-१३, सिटि सेंटर □ **डेहरिओनसोन** : सिनेमा रोड ग्लासीना □ **धनबाद** : बैंक मोड़ बंगाल सिराभिक स्टोर्स, शांति भवन □ **गया** : जी. बी. रोड क्रॉकरी एंड जनरल स्टोर □ **गुमला** : मेन रोड महादीर ग्लास हाउस □ **जमशेदपुर** : बिस्तुपुर कूलॉन, हिंदुस्तान बिल्डिंग, मेन रोड • दि एक्स्क्लूज़िव, बिस्तुपुर मार्केट • **गोलमुरी** आम्रपाली, गोलमुरी मार्केट • **साकची बाज़ार** विंदेश्वरी प्रसाद अनंत प्रसाद, डालडा लाइन • कुकर हाउस, २५, ओल्ड आतू लाइन, पान मार्केट • ललित कुमार, द्वारा सिरोहिवाल ट्रेडिंग कॉर्पोरेशन • नील कमल स्टील सेंटर, २४, ओल्ड आतू लाइन, पान मार्केट • स्टील सेल्स कॉर्पोरेशन, १६१, साकची बाज़ार □ **लहरियासराय** : बाकरगंज दयाल क्रॉकरी हाउस □ **मोतीहारी** **मेन रोड** स्टील हाउस □ **मुंगेर** : **चौक** महेंद्र इलेक्ट्रिक स्टोर्स □ **मुज़फ़्फ़रपुर** : मोतीझील दादा स्टील एंड क्रॉकरी हाउस • सौयागंज भारत ग्लास कं. • बिजराजका स्टील हाउस □ **पटना** : नेपाली कोठी एच. सी. एंटरप्राइज़ेस, बोरिंग रोड □ **रांची** : चर्च रोड यूटेंसिल्स • **धुर्वा** बर्तन घर, सेक्टर नं. २ मार्केट • **डोरान्डा** कपूर एंड संस, डोरान्डा बाज़ार • **मेन रोड** कैलाश क्रॉकरी हाउस • किचन किंग, मख्तीआ टावर • दि रांची मोटर एंड साइकिल स्टोर्स, बाटा की दुकान के पास • उदयन • उदय एजेंसीज़, दुकान नं. ४, खज़ांची मार्केट • उदय संस, खज़ांची मार्केट • **अपर बाज़ार** अशोक एंटरप्राइज़ेस □ **रक्सौल** : **बैंक रोड** पवन जनरल स्टोर्स.

चण्डीगढ़

सेक्टर १५ ए सर्विस सेंटर, कोठी नं. ४ • **सेक्टर १५-डी** इंडियन क्रॉकरी हाउस, दुकान नं. ४५ • **सेक्टर १७-ई** जगत सिंह एंड संस, सी.एफ. ३२ • यूनियन एजेंसीज़, एस.सी.ओ. २३ • **सेक्टर १८-सी** धरमचंद अग्रवाल, एस.सी एफ १७ • जैन क्रॉकरी हाउस, एस.सी.एफ़ १९ • सेक्टर १९ डी कृष्ण क्रॉकरी स्टोर, एस.सी.एफ ४ • **सेक्टर ३५ डी** न्यू इंडियन क्रॉकरी हाउस, एस.सी.ओ. ८९.

गोवा

□ **मापुसा** : मयूर एजेंसीज़, १७, रामचंद्र बिल्डिंग • म्युनिसिपल मार्केट इस्माईल जुसब विरानी, शॉप नं. १९ • **कैनरा बैंक के पास** लक्ष्मीकांत एंड कंपनी □ **मडगांव** : पाजी फोंड (जैन मंदिर के पास) सुप्रभात इलेक्ट्रिकल्स, दुकान नं. ३-ए, जयदीप अपार्टमेंट • न्यू मार्केट डी. डी. सडेकर एंड संस, दुकान नं. १० • जे. एफ. परेरा एंड फ़िल्होस, दुकान नं. ३७ • **सिने लता के सामने** वामन गोविंद शिंदे • म्युनिसिपल गार्डन के सामने ए. पी. लोटलीकर एंड संस, दुकान नं. ८ • टी. डी. पराडकर एंड कंपनी, पो. बॉ. नं. ६५ □ **पनजी** : **डॉ. फ्युलेकर रोड** एम. एस. बी. काकुलो, पो.बॉ. नं. ६८ • **आझाद मैदान के सामने**, एस. टी. पोकले एंड कंपनी • **होटल विस्तार के सामने** अब्दुलभाई लालजी एंड कंपनी □ **पोंडा** : शांता इलेक्ट्रिक स्टोर्स □ **वास्को-दा-गामा** : **दोराडो बिल्डिंग** बरकत अली ट्रेडर्स.

गुजरात

□ **अहमदाबाद** : आंबावाड़ी सेंचुरी सिलेक्शन, सेंचुरी बाज़ार • **गांधी रोड** अकबरअली कादरभाई, १८२२, तीन दरवाज़ा • बॉम्बे नॉवेल्टी स्टोर्स, १८३९/१, तीन दरवाज़ा □ **आणंद** : सुभाष रोड जे.के. मिस्त्री एंड संस, जे. के. हाउस □ **बड़ौदा** : एम.जी. रोड कंसारा बापूलाल रणछोडजी, कंसारा बाज़ार • मोतीलाल छोटालाल कंसारा • पोपटलाल कृष्णलाल कंसारा • **जुबिली बाग** हैपी होम, शालीमार चेंबर्स □ **सुरत** : **बुंदेलवाड** शाह ठाकोरदास जीवनराम, भागल चार रास्ता.

हरियाणा

□ **अंबाला छावनी** : कसेरा बाज़ार रामचंद मदन लाल एंड कं. • **सदर बाज़ार** यारी शाह दी हट्टी • **सीवागर बाज़ार** जगत सिंह एंड संस • **जैन बाज़ार** जनता क्रॉकरी एंड जनरल स्टोर □ **फरीदाबाद** : मार्केट नं. १ कृष्ण लाल संजीव कुमार, दुकान नं. ११६ • **मार्केट नं. ५-सी**, ग्रोवर एजेंसीज़, दुकान नं. ६९ □ **गुडगांव** : सदर बाज़ार मंगला एंटरप्राइज़ेस • **सोना चौक** गोगिया बर्तन स्टोर □ **हिसार** : मोती बाज़ार केवल कृष्ण इंद्र सैन □ **जगाधरी** : **चौक बाज़ार** सुरुचि सेल्स □ **जिंद शहर** : मेन बाज़ार बृंदावन कृष्ण कुमार □ **कैथल** : रेलवे रोड वंशी राम भगवान दास □ **कालका** : गांधी चौक बेनी प्रसाद प्रद्युमन कुमार □ **पंचकुला** : नरेश इलेक्ट्रो सेल्स, ९५५, सेक्टर-१६ □ **पानीपत** : कोर्ट रोड आलफ़ा गिफ़्ट सेंटर, दुकान नं. १२३/१ • हलवाई हट्टा बाज़ार जिया लाल जैन दास • **मेन बाज़ार** मोहर सिंह धारी मल □ **रेवाडी** : जीवली बाज़ार आलोक कुमार विनय कुमार □ **रोहतक** : रेलवे रोड प्रकाश क्रॉकरी हाउस □ **सिरसा** : रोड़ी बाज़ार अग्रवाल बर्तन स्टोर □ **थानेश्वर शहर** : कृष्णा गेट कुमार बर्तन स्टोर, पुलिस चौकी के पास • **मोती चौक** सरस्वती बर्तन भंडार.

हिमाचल प्रदेश

□ **बिलासपुर** : बस स्टैंड के पास जीवन राम वेद पाल, म्युनिसिपल कमिटी, दुकान नं. ५ □ **गगरेट** : भरवाईं रोड ओंकार नाथ अशोक कुमार □ **हमीरपुर** : न्यू रोड कमल एंटरप्राइज़ेस, पंजाब नेशनल बैंक के पास □ **जोगिंदर नगर** : बस स्टैंड रोड ठाकुर बर्तन भंडार, पंजाब नेशनल बैंक के पास □ **कांगड़ा** : मेन बाज़ार गुप्ता सुईंग मशीन □ **कुल्लू** : अखाड़ा बाज़ार अलका नॉवेल्टी स्टोर्स • विगसन जनरल स्टोर □ **मनाली** : सियाली महादेव मार्केट गुलेरिया जनरल स्टोर □ **नगरोटा बगवां** : चिन्ना बाज़ार धर्म पाल एंड संस □ **नाहन** : छोटा चौक सुंदर लाल एंड संस □ **नेर चौक** : मेन बाज़ार शर्मा साउंड सर्विस □ **पालमपुर** : मेन बाज़ार अजय एंटरप्राइज़ेस □ **रामपुर बुशहर** : मेन बाज़ार श्याम सिंह एंड ब्रदर्स □ **रोहडू** : मेन बाज़ार विवर्ग्यार रेडिमेड गार्मेंट्स, ३, आर. बी. जोयामत बिल्डिंग □ **शिमला** : अण्डा मार्केट बंगाल क्रॉकरी हाउस • शिमला सेंट्रल ट्रेडर्स, दुकान नं. २ • जी. डी. खन्ना एंड संस, दुकान नं. ६ • जानकी दास एंड कं., दुकान नं. २ • राया मल बिशन दास, दुकान नं. ७६ □ **सोलन** : अपर बाज़ार मित्तल ब्रदर्स • साहनी ब्रदर्स डिपार्टमेंटल स्टोर □ **ऊना** : मेन बाज़ार दाता गिफ़्ट पैराडाइज़.

जम्मू आणि कश्मीर

□ **जम्मू** : न्यू मार्केट लघुमत देस राज जैन, रघुनाथ बाज़ार • बी. के. खुल्लर एंड ब्रदर्स • प्रिन्सवेज़.

कर्नाटक

□ **बंगलोर** : एवेन्यू रोड बी. एम. एजेंसीज़, ३०१, एवेन्यू रोड • **बनशंकरी-II स्टेज** जानकी मेटल्स, ४००, २४ वा क्रॉस • **ब्रिगेड रोड** जनरल एजेंसीज़, १८०, ब्रिगेड रोड • पॉट्स एंड पैन्स, ११, कर्जन कॉम्प्लेक्स • **बी. बी. के. अयैंगार रोड** महेश इलेक्ट्रिकल्स, १४/५, बी.बी.के. अयैंगार रोड • **इंदिरा नगर** ए.पी. इलेक्ट्रॉनिक्स, चिनमया मिशन हॉस्पिटल रोड • **चिकपेट** राजा ट्रेडिंग कं., ८०२, बालेपेट स्क्वेअर के पास • रश्मी स्टील्स, ३४०, चिकपेट • **कमर्शियल स्ट्रीट** बी. के. एंटरप्राइज़ेस, १०१, कमर्शियल स्ट्रीट • **जयनगर-३** रा ब्लॉक सारथी मेटल मार्ट, १६, ९ वा मेन रोड, ३ रा ब्लॉक • **मल्लेश्वरम** आनंद डिपार्टमेंट्स, ५३२, संपिगे रोड • **नागरतपेठ** सलेचा स्टील सेंटर, ३६५/१, नागरतपेठ मेन रोड • **रिचर्ड्स स्क्वेअर** एंडम्स एंड कं., १९, रिचर्ड्स स्क्वेअर • **अल्सूर** प्रणाम गिफ़्ट कॉर्नर, ७४-७५, १ ली मंज़िल, रायैया सर्कल □ **बेलगांव** : मारुति गली उदय वस्तु भंडार, १२७/बी, मारुति गली • शाती स्टील्स, १५७४, मारुति गली • रेवणकर एजेंसीज़ • **गणपती गली** डी. सी. कोल्लापुरे एंड सन, मेटल मर्चेंट □ **चिकमगलुर** : रत्नागिरि रोड मल्टी एंटरप्राइज़ेस, रत्नागिरि रोड, पो. बॉक्स नं. ८ □ **गोरीबिदूनर** : एम. जी. रोड स्वागत एंटरप्राइज़ेस □ **हासन** : बस स्टैंड रोड मंगलोर मेटल्स □ **हुबली** : न्यू फोर्ट आर. आर. सेल्स, सी. बी. टी. रोड • **दाजीबान पेठ** हनुमान मार्केटिंग, तुलजा भवानी टेम्पल • **एम. एम. रोड** टी. के. बही, गृह वैभव • **हॉंडवे** पोरवाल स्टील, ६३, हॉंडवे • **जे. सी. नगर** जे. पी. असोसिएट्स • **स्टेशन रोड** प्रीमियर ऐंगो □ **गदग** : नामजोशी रोड एस. आर. मलशेट्टी □ **गुलबर्गा** : मून्लाइट के पास इंडस्को, फ़ोर्ट रोड □ **तुमकूर** : अशोक रोड रूपा एजेंसीज़ □ **दांडेली** : जे. एन. रोड पूनम गिफ़्ट सेंटर, अशोक टॉकीज़ के सामने □ **होसपेट** : स्टेशन रोड शांतला कमर्शियल, ४/१०, स्टेशन रोड □ **के. जी. एपर्.** : रॉबर्टसनपेट सुदर्शन स्टोर्स, गीता रोड • प्रकाश फ़र्निचर सेंटर, एवेन्यू रोड □ **मंगलोर** : कलेक्टर्स गेट सोमैयाजी इलेक्ट्रॉनिक्स • **बुडलाइड बिल्डिंग** विश्व सेल्स, के. एस. राव रोड □ **मैसूर** : अशोक रोड सुधा मेटल स्टोर्स, ६२५, अशोक रोड • **हनुमंत राव रोड** सुधीर एजेंसीज़, १६८३, २ रा हनुमंत राव रोड • **सयाजी राव रोड** मोहन भंडार, कामधेनु □ **मंड्या** : बाजार स्ट्रीट आई. लुइस एंड संस □ **रायचुर** : हरिहर रोड संचेती. बी. स्टोर □ **सिरसि (उत्तर कन्नड़)** : सी. पी. बाज़ार जयश्री इलेक्ट्रिक हाउस □ **शिवमोगा** : नेहरू रोड साधना ट्रेडिंग कं. • गणेश ट्रेडर्स, वसवा सदन □ **सागर** : सोरब रोड भाग्या अप्लायेंसेस □ **उडुपि** : होटल नवनीति के सामने गणेश ट्रेडर्स, सिरि बीदू • अंबलपाडी पो.ऑ. के सामने प्रकाश इलेक्ट्रिक कं.

केरल

□ **अलेप्पे** : सी.सी.एन.बी. रोड रेडियो सेंटर • गुड मॉर्निंग एजेंसीज़ • मुलक्कल भीमा स्टेनलेस स्टील एंड स्टील इंडस्ट्रीज़ □ **अलवाये** : अंबाटु कावु चिट्टेत वेसल्स • **कैपलिक सेंटर** वायरलेस मेट्टो • **पैलेस रोड** राजी इलेक्ट्रॉनिक्स □ **अंगमाली** : हाइवे जंक्शन स्टलिंग स्टील पैलेस □ **कालिकट** : **पुथालकुलम** ब्राइट मेटल्स □ **कन्नूर** : एस. एन. पार्क रोड गृहलक्ष्मी • कुमार कॉर्पोरेशन □ **चालकुडी** : कडीथरि कॉम्प्लेक्स हरिश्री टी.वी. एंड होम अप्लायेंसेस □ **चेंगनशेरी** : कॉलेज रोड संगीता गिफ़्ट हाउस • **एम. सी. रोड** के. ओ. फिलिप एंड कं. □ **एरनाकुलम** : हॉंडवे ऐंवनी फ्रांसिस एंड सन • महमूद कॉकरीज़, वक्फ़ बोर्ड बिल्डिंग • लाइफ़ स्टाइल्स, के.टी.डी.सी. शॉपिंग कॉम्प्लेक्स • **एम. जी. रोड** ग्रांड बाज़ार सुपर मार्केट □ **हरिजालकुडा** : पाना अलेंगार्डेस वेसल्स हाउस • सी. के. के. वेसल्स • **मेन रोड** वेल्लानीकारन एजेंसीज़, वेल्लानीकारन बिल्डिंग □ **कलपेट्टा** : मेन रोड सेंटर पॉइंट □ **करुणागपल्ली** : मेन रोड टी. के. कुमारन एंड संस □ **कुन्नामकुलम** : गुरुवायूर रोड जोस एंड कं. • पर्फ़ेक्ट होम अप्लायेंसेस • ड्रीम लैंड • **वटकानचेरी रोड** सुदर्शन होम अप्लायेंसेस □ **कोट्टुगल्लुर** : मूनुपीडाका रिलायेबल एजेंसीज़ • **तेक्केनाडा** करुण स्टोर्स □ **कूट्टनाड** : पट्टांची रोड रिज़मा ट्रेडर्स □ **कोट्टयम** : के. के. रोड केरल एजेंसीज़, एम. डी. कॉमर्स सेंटर • **पुलीमूड जंक्शन** सेंट ऐंथनीज़ • भुवना मेटल मार्ट □ **कोट्टारकारा** : मेन रोड आइडियल एजेंसीज़, आइडियल हाउस □ **माही** : मेन रोड कर्मा एंटरप्राइज़ेस, श्रीलेख एजेंसीज़ □ **मंचेरी** : सेंट्रल बाज़ार कोरेबल फ़ैसी एंड फाइबर्स □ **मुवट्टुपुला** : न्यू बाज़ार मिनि स्टोर्स □ **नॉर्थ परूर** : **कन्नकुलंगारा मंदिर के पास** तेक्किनेदत वेसल्स हाउस, टेम्पल रोड • **कचेरीप्पटी** राज एजेंसीज़ • **मेन रोड** संध्या होम अप्लायेंसेस, गुरुदर्शन कॉम्प्लेक्स □ **पाला** : न्यू बाज़ार ए.टी.पी. स्टील हाउस □ **पालघाट** : जी.बी. रोड स्टील पैलेस □ **पत्तनमतीट्टा** : कोल्लचेरी रोड लेखा एजेंसीज़ □ **पट्टांबी** :

(आगले पृष्ठ पर भी देखें)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पिछले पृष्ठ से आगे)

वीरमणी बिल्डिंग, वीरमणी इंटरफर्न □ **पेरिनाड** : अंचालुमूड शक्ति एजेंसीज़, शक्ति बिल्डिंग्स □ **पेरिंतलमन्ना** : एच. एम. के. कॉम्प्लेक्स मयूरी फैंसी एंड गिफ्ट हाउस □ **पेरुंबवूर** : पी. पी. रोड मूकडा एजेंसीज़, न्यू प्राइवेट बस स्टैंड के पास □ **ए. एम. रोड** पिट्टाप्पिल्लि एजेंसीज □ **कोयलंडी** : ईस्ट रोड शंकर मेटल्स □ **कोयलन** : टावर जंक्शन लक्ष्मी म्यूज़िक • मेन रोड ब्रदर्स स्टील हाउस, सुल्तानिया बिल्डिंग □ **रामनाटुकारा** : मेन रोड मूकाबिका मेटल्स □ **शोरनूर** : मेन रोड राधा एंटरप्राइज़ेस □ **तलशेरी** : लोगन्स रोड श्रीनिवास इलेक्ट्रॉनिक कं. • एम. जी. रोड विजया इलेक्ट्रॉनिक्स, बी.ई.एम.पी. हाईस्कूल के सामने • एन.सी.सी. रोड यूनिवर्सल एजेंसीज़ • ओ. वी. रोड आर एंड ई सिंडिकेट □ **तोडुपुला** : मार्केट रोड जे एंड पी मेटल्स □ **त्रिचूर** : राउंड साउथ केरल लेदर कं. • हाई रोड ए. डी कुरिअप्पन एंड संस • पी. ओ. रोड स्टीलालयम • भावना फर्निचर • अप्लायेंसेस कॉर्नर, चेट्टिअंगाडी जंक्शन • हनीफ ट्रेडर्स, जी ई ओ बिल्डिंग्स • एम. जी. रोड मॉडर्न होम इक्विपमेंट्स □ **त्रिप्पुनितुरा** : ईस्ट फोर्ट गेट मरिया स्टील हाउस, स्टैच्यू जंक्शन □ **त्रिवांद्रम** : स्टैच्यू त्रिवेणी डिपार्टमेंटल स्टोर • चाला बाज़ार एस. इब्राहिम एंड कं., इब्राहिम बिल्डिंग • ए. के. बी संस • एम. जी. रोड कॉंटिनेंटल ट्रेड्स एंड एजेंसीज़ □ **वाडानपिल्ली** : मेन रोड अरक्कल एजेंसीज़ □ **वडकांचेरी** : मेन रोड कालिअप्पा इंडस्ट्रीज

मध्य प्रदेश

□ **बालाघाट** : मेन रोड मेटल हाउस □ **बैतुल** : भवसार मार्केट अनूपश्री एम्पोरियम • गंज बाल मुकुंद गुप्ता □ **भिलाई** : कैम्प नं. २ गार्गी जनरल स्टोर्स, बी-१४, सर्क्युलर मार्केट □ **भोपाल** : हमीदिया रोड रेडियो पैलेस, शाह बिल्डिंग • पिपलानी पोस्ट ऑफ़िस आसाम टी हाउस, गांधी मार्केट • टी.टी. नगर क्रॉकरी एम्पोरियम, न्यू मार्केट • दर्वेश बर्तन भंडार, रोशनपुरा नाका □ **बिलासपुर** : सदर बाज़ार आकाश स्टोर्स, करोना शू स्टोर्स के पास • कॉसमॉस क्रॉकरी सेंटर • विजय एन विजय □ **डबरा** : कमला मार्केट आधुनिक किचन वेयर शॉप □ **दमोह** : सिनेमा रोड अजंता ट्रेडर्स • घंटाघर चौक रतले एंटरप्राइज़ेस □ **गाडरवारा** : जवाहरगंज मंगल कलश, झंडा चौक □ **गुना** : सदर बाज़ार अग्रवाल जनरल स्टोर्स □ **ग्वालियर** : सराफा बाज़ार ढोमराज हज़ारीलाल • टोपी बाज़ार पाहूराम पेसूराम लोकवानी □ **इंदौर** : जवाहर मार्ग कुकर हाउस, दुकान नं. ३७० • राम लक्ष्मण बाज़ार एन. आर. इलेक्ट्रॉनिक्स, दुकान नं. २३ □ **जबलपुर** : आशीर्वाद मार्केट आशीर्वाद स्टील एम्पोरियम, दुकान नं. १८ • सिविक सेंटर इलेक्ट्रिकल्स एंड इलेक्ट्रॉनिकल्स, दुकान नं. ७ • जवाहर गंज नेशनल स्टोर्स • करमचंद चौक स्टील पैलेस, मढ़ाताल • लालमाटी सिंह सिलाई मशीन कं., १३, कांचघर चुंगी • नया बाज़ार पी. के. ट्रेडर्स, दुकान नं. ३० □ **कटनी** : स्टेशन रोड नारायण प्रसाद कृष्ण कुमार, इलाहाबाद बैंक के सामने □ **कोरबा** : मेन रोड गणेश स्टील एम्पोरियम • श्री राम गोपाल राधेश्याम अग्रवाल □ **कोतमा** : स्टेट बैंक रोड मोतीलाल पन्नालाल ताम्रकार □ **मलांजखंड** : शॉपिंग सेंटर आकाश एम्पोरियम, दुकान नं. ए-३ □ **मनेंद्रगढ** : मेन रोड परमानंद रामचरण • सुप्रीम इलेक्ट्रिकल्स, नगर पालिका बिल्डिंग □ **महू** : मेन स्ट्रीट बंसल ब्रदर्स, दुकान नं. २६२ □ **नागदा** : महात्मा गांधी मार्ग रामचंद्र प्रेमकुमार कसेरा, दुकान नं. ९९ □ **नरसिंहपुर** : कंदेली ज्योती बर्तन भंडार, मेन रोड □ **रायपुर** : मालवीय रोड सुराणा सेल्स • सुरेश ब्रदर्स • सदर बाज़ार श्री पात्र भंडार, होटल मधुबन के सामने □ **रतलाम** : दो बत्ती रूपायन स्टोर्स □ **रींवा** : प्रकाश चौक प्रकाश एजेंसीज़, स्वागत भवन के सामने • व्यंकट रोड विजय क्रॉकरी स्टोर्स □ **सतना** : अशोक टॉकीज़ के सामने केशरी स्टील सेंटर □ **सिवनी** : बारा पत्थर विशाल स्टील सेंटर □ **शहडोल** : मेन रोड सुरेश एंड कं. □ **उज्जैन** : फ्रीगंज लक्ष्मी स्टील सेंटर, २३/४, भोज मार्ग • गोपाल मंदिर मनोज पात्र भंडार, पटनी बाज़ार.

महाराष्ट्र

□ **अहमदनगर** : एम. जी. रोड काशीनाथ त्र्यंबक रासने, न्यू कापड मार्केट • शिवाजी रोड अभोरे एंड कंपनी □ **अकोला** : ओपन एअर थिएटर के नज़दिक आनंद स्टील हाउस □ **अमरावती** : श्याम चौक मोनिका नॉवेल्टी □ **औरंगाबाद** : सराफा नरीमन ट्रेडिंग सेंटर □ **भंडारा** : मेन रोड उषा एजेंसी □ **बम्बई** : अंधेरी (पू.) आनंद स्टील सेंटर, पोलीस स्टेशन के सामने, अंधेरी कुर्ला रोड • अंधेरी (प.) आनंद स्टील एंपोरियम, धवलगिरी, बिल्डिंग नं. ७, स्वामी समर्थ नगर, लोखंडवाला कॉम्प्लेक्स • हेमको स्टील सेंटर, अरासा शॉपिंग सेंटर, एस. वी. रोड, रेलवे स्टेशन के सामने • मेघराज उमेघमल एंड कंपनी, दुकान नं. ३५२, वसंत पाटील चाल, मार्केट के सामने, ६, एस.वी. रोड • श्री मुथुलक्ष्मी स्टील पैलेस, बी-१०६, लाराम सेंटर, हारबर लाईन स्टेशन के सामने • सुपर स्टील सेंटर, २६, सुपर शॉपिंग सेंटर, रेलवे स्टेशन के सामने • बान्दरा (प.) सहकार बाज़ार, पहली मंज़िल, रेलवे स्टेशन के सामने • शाहजान, ६/७, रिझवी हाउस, ३४, हिल स्टेशन • विमल स्टील सेंटर, १२०, बाज़ार रोड • भुलाभाई देसाई रोड बेनझर नॉवेल्टीज़, ४९, भुलाभाई देसाई रोड • बोरीवली (प.) ओस्वाल स्टील सेंटर, १८, गोयल शॉपिंग आरकेड, एल. जी. रोड • चेंबूर अकबरअलीज़, सायन-ट्रॉम्बे रोड • चेंबूर फ़ाइन आर्ट्स बिल्डिंग के सामने श्री बल्ली स्टील्स, ५, नीलकंठ शॉपिंग आरकेड, आर. सी. रोड • चेंबूर कैंप चंदन स्टील सेंटर, गांधी मार्केट, बस स्टॉप के सामने, ३६२, डॉ. सी. गिडवानी रोड • चेंबूर स्टेशन चेंबूर मेटल एंपोरियम, साई दीप, दुकान नं. २, गोवंडी रोड • मिलन एंपोरियम, ५, लक्ष्मी मार्केट • मुरुगन स्टील एंपोरियम, साई दीप, दुकान नं. २, गोवंडी रोड • नटराज एंपोरियम, ४, नटराज सिनेमा बिल्डिंग • विजय स्टील सेंटर, ६, आशा कुंज, सिंडीकेट बैंक के सामने • चर्चगेट एशियाटिक डिपार्टमेंटल स्टोर्स, चर्चगेट स्टेशन के सामने • दादर (प.) अरिहंत स्टील सेंटर, कबुतरखाना के नज़दीक • सी. एम. मेहता एंड कंपनी, एम. सी. जावले मार्ग • धीरज सेल्स कॉर्पोरेशन, ३३, पाध्ये वाडी, बी. एस. रोड • चव्हान ब्रदर्स, एम. सी. जावले मार्ग • एवर ब्राईट स्टोर्स, रानडे रोड, कोहिनूर सिनेमा के नज़दिक • कमल स्टोर्स, कबुतरखाना के सामने • किरन इलेक्ट्रो एंटरप्राइज़ेस, पाध्ये बिल्डिंग, एस. के. बोले रोड • किचन पैलेस, कबुतरखाना के नज़दीक • महिपाल स्टील सेंटर, ३५ ए, भवानी शंकर रोड • मुकेश एंपोरियम, एम. सी. जावले मार्ग • पी. जे. छाजेड एंड कंपनी • प्रामानिक स्टील सेंटर • तृप्ती एंपोरियम, रानडे रोड, धुरू वाडी • फोर्ट अपना बाज़ार, नोबल चेंबर्स, घोगा स्ट्रीट • फाउंटन अकबरअलीज़, वी. एन. रोड • घाटकोपर (प.) मनोहर एंपोरियम, दुकान नं. ५/६, गांधी मार्केट, एम. जी. रोड • दीपक ट्रेडर्स, २४ ए, लक्ष्मी निवास, बैंक ऑफ इंडिया के सामने • जय लक्ष्मी एंपोरियम • पुष्पम स्टील एंपोरियम, शॉप नं. १, मीना निवास, जे. पी. रोड, रेलवे स्टेशन के सामने • गिरगाव आर. जी. पाटील एंड ब्रदर्स, २११/ए, जे. एस. एस. रोड • श्रीधर स्टेनलेस स्टोर्स, २२९, क्रांतिवीर राजगुरु मार्ग • ग्रांट रोड महावीर एंड कंपनी, ए/१८, भारत नगर • सिलेक्शन सेंटर, ४६३, घासवाला बिल्डिंग • वेराइटी जनरल स्टोर्स २९७, लैमिंग्टन रोड • गोवालिया टैंक मोहन मेटल मार्ट, ताज बिल्डिंग, अगस्त क्रांति मार्ग • जेकब सर्कल आर. जे. एंटरप्राईज, आर्थर रोड, चर्च के सामने • कांदिवली (प.) प्रकाश गृह वस्तु भंडार, २, चंदर बाग, स्टेशन रोड • कंसारा चाल अरिहंत स्टील पैलेस, ९४, कालबादेवी रोड • श्री भावना मेटल मार्ट, १२०, कालबादेवी रोड • रतिलाल मोहनलाल, ४६, कालबादेवी रोड • खार (प.) डी. एन. जैन एंड कंपनी, बनारसी स्वीट मार्ट के सामने, स्टेशन रोड • सरस्वती स्टोर्स, १ ला और ४ था रोड क्रॉसिंग, बैंक ऑफ बरोड़ा के नज़दीक • लालबाग चैतन्य स्टोर्स, तेजुकाया मैंशन • कल्पना स्टील सेंटर, हरहरवाला बिल्डिंग नं. १ • लोहार चाल एशियाटिक इलेक्ट्रिक कंपनी, ४६-४८, जय महल बिल्डिंग • भारत ट्रेडर्स, ७, लोहार चाल • प्रेमल कॉर्पोरेशन, ७६, लोहार चाल • सैफी टॉय म्युज़ियम, १८, लोहार चाल • संघवीज़ एंटरनेशनल, ६२, लोहार चाल • माहीम (प.) अरुणोदय स्टोर्स, बी दीनाथ बिल्डिंग, एल. जे. रोड, सिटी लाईट सिनेमा के सामने • भैरव भांडी भंडार, एल. जे. रोड, शोभा रिफ्रेशमेंट के पास • मालाड (प.) गृह वस्तु भंडार (शिरीष ट्रेडर्स), स्टेशन रोड • महावीर स्टील सेंटर, ११-नटराज मार्केट, एस. वी. रोड, बैंक ऑफ इंडिया के सामने • माटुंगा (सेंट्रल रेल्वे) सुपर एवरशाईन एम्पोरियम, दुकान नं. २, बालदोता हाउस, भंडारकर रोड • माटुंगा (प.) अशोक स्टोर्स, १६९/ए, एल. जे. रोड, गोपी टैंक मार्केट के पास • जे. बी. स्टील, १५०/बी-कादरी मेंशन, काकड इंडस्ट्रियल एस्टेट के सामने • राजेंद्र गृह वस्तु भंडार, काशी विश्वेश्वर टेंपल, टी. एच. कटारिया मार्ग • मोहम्मद अली रोड, एम. फैजुल्लाभाय एंड कंपनी, ३७, भाजीपाला स्ट्रीट • सिंगापूर बासन भंडार • मुलुंड (प.) मरूधर एम्पोरियम, सदाशिव भवन, आर. आर. टी. रोड • शाह मिश्रीमल एम्. काकरिया, २ राम कृपा, मनाली होटल के सामने, एम. जी. रोड • नायगांव अपना बाज़ार, गोविंदजी केनी रोड • नाना चौक छगनलाल दलिचंद एंड कंपनी, म्युनिसिपल बिल्डिंग के पास • पांजरा पोल सोनिया एंटरप्राइज़ेस, १७९/ए, कंडोरी बिल्डिंग • परेल दिनेश गृह भंडार, सहकार भवन, दामोदर हॉल के पास • मोहनराज संपतराज, परेल मेंशन, किंग एडवर्ड रोड • पेड्डर रोड वेलवर्थ डिपार्टमेंटल स्टोर्स, ४६-बी, पेड्डर रोड • पवई नित्या स्टील एम्पोरियम, आदि शंकराचार्य मार्ग, आई.आई.टी. के सामने • सांताक्रुज (प.) अकबरअलीज़, एस.वी. रोड • आनंद स्टोर्स, मेहेरबान बाग, स्टेशन रोड • डीसेंट हाउस वेयर्स, २ री हसनाबाद लेन, नागरी मार्केट • महावीर स्टोर्स, २-शॉपिंग सेंटर, स्टेशन रोड • रॉयल एम्पोरियम, १३ ए/बी-साई बाज़ार शॉपिंग सेंटर, इनसाईट पैसेज नं. २, रेलवे स्टेशन के सामने • वेल नोन एम्पोरियम, ३-अरुण बाज़ार, स्टेशन रोड • शिवाजी पार्क पीपल्स स्टील एम्पोरियम, रानडे रोड और गोखले रोड का एक्स्टेंशन • सायन-सर्कल श्रीमुरूगन स्टील हाउस, ११/३९, मेरी लैंड कॉर्नर • सायन-हॉस्पिटल कनी एवरशाइनिंग एम्पोरियम, २०६-शीव महल, सायन हस्पताल के सामने • ठाकुरद्वार अमर एंटरप्राईज़, २३८-ए, अगरवाल बिल्डिंग • विले-पार्ले (पू.) मनसुख मेटल मार्ट, दु.नं. १९, श्याम कमल 'बी' बिल्डिंग, अगरवाल मार्केट • मुरूगन अप्लायेंसेस, श्याम कमल, 'सी', ३६, अगरवाल मार्केट • पंकज स्टील सेंटर • रमेश स्टील एम्पोरियम, नारायण नगर, हनुमान रोड • विक्रोली (प.) मदन स्टील सेंटर, स्टेशन रोड □ **चंद्रपुर** : नेताजी भवन के सामने गृहशृंगार □ **धुले** : आग्रा रोड सिल्वर शॉप □ **डोंबिवली** : (पू.) मानपाडा रोड पंकज स्टील एंड नॉवेल्टी, पाटकर बिल्डिंग • पराग स्टील एंड नॉवेल्टी, पाटकर बिल्डिंग • फडके रोड मुकेश एंड नॉवेल्टी, दामले बिल्डिंग □ **गोंदिया** : भांडी बाज़ार गोपाल बर्तन भंडार □ **हिंगणघाट** : मेन रोड गृहलक्ष्मी □ **इचलकरंजी** : हेरंब ट्रेड ग्रूप, १५२-व्यंकटराव हाईस्कूल के नज़दीक □ **इस्लामपुर** : एस. टी. स्टैंड रोड बॉम्बे स्टील सेंटर □ **जलगांव** : १९, फुले मार्केट वेराइटीज, दुकान नं. १९ □ **कल्यान** : विष्णू मंदिर के नज़दीक प्रभात अप्लायेंसेस बाज़ारपेठ □ **कोल्हापुर** : शिवाजी रोड भाग्यश्री मेटल कॉर्पोरेशन • शेतकरी सहकारी संघ लिमिटेड, भांडी दुकान नं. १ □ **मालेगांव** : कैंप रोड एन. जोशी प्रा. लिमिटेड, ज्ञानेश्वर बिल्डिंग □ **मलकापुर** : बुलधाना रोड कोटेचा जनरल स्टोर्स □ **नागपुर** : इतवारी बंदेअली मोहम्मदअली, भंडारा रोड • मेटल वाला, तीन नल चौक • सीताबल्डी एम. एस. पांडे एंड संस, वेराइटी चौक के पास □ **नांदेड** : एम. जी. रोड, श्रीराम राजाराम अहेर □ **नासिक** : भांडी बाज़ार प्रकाश रामदास काले, दुकान नं. ८४८ • शानलदास हीराचंद अंबानी, दुकान नं. ९१६ • शिवाजी रोड विजय ट्रेडिंग कंपनी, शालीमार बिल्डिंग □ **उस्मानाबाद** : भगवान महावीर पथ बेदमुथा संस, पितृ स्मृति, पो. बॉक्स नं. २७ □ **पालघर** : स्टेट बैंक के सामने सहयोग केंद्र, ३, टेंभोडे रोड □ **पंढरपुर** : महाद्वार तिरूपति स्टील सेंटर □ **परभणी** : शिवाजी पार्क शा. सोनराज अनराज □ **पिंपरी** : स्टेशन रोड राजकुमार एंटरप्राइज़ेस, आर्य समाज के पास □ **पुणे** : बोहरी जमात बिल्डिंग जैन मेटल कॉर्पोरेशन, ६३५/रविवार पेठ • दारूवाला पूल राजेंद्र एंड कंपनी, ८९४/रविवार पेठ • कर्वे रोड जैन मेटल्स, बैंक ऑफ महाराष्ट्र के सामने, ३९-२४ बी, कर्वे रोड • तुलसी बाग के सामने मेहता ब्रदर्स द्वारा ममता स्टील सेंटर • शास्त्री चौक नितीन मेटल वर्क्स, १८२६/न्यू शुक्रवार पेठ □ **रत्नागिरी** : बाज़ार पेठ प्रकाश वस्तु भंडार, एम. जी. रोड, विठ्ठल मंदिर के पास □ **सांगली** : हरभट रोड भगाटे स्टील सेंटर, आरवडे हाईस्कूल के पास • मेन रोड श्री अमेय स्टील सेंटर, करमरकर बिल्डिंग • स्टेशन रोड देवकर स्टील सेंटर □ **सातारा** : मोती चौक गृहराज स्टेनलेस स्टील सेंटर • भाजी मंडई के पास लांजेकर वडके एंड कंपनी, ११८/सदाशिव पेठ • एल.आइ.सी. ऑफिस के सामने चंदन स्टील, १७२/भवानी पेठ, राजपथ • पैलेस स्ट्रीट ठोंबरे नॉवेल्टीज़, १८१, भवानी पेठ • **सावंतवाडी** : मेन रोड एस. एस. माने एंड संस □ **श्रीरामपूर** : मेन रोड निवृत्ति घोंडू डंबीर एंड संस □ **सोलापुर** : भांडी गली शशिकांत जयकुमार मोहिरे, १९३, शुक्रवार पेठ • नवी पेठ भारत स्टील एजेंसीज़, ३७, एल. बी. शास्त्री शॉपिंग सेंटर • कत्ते ब्रदर्स स्टील हाउस, १५, जनता शॉपिंग सेंटर • लक्ष्मी स्टेनलेस स्टील सेंटर, जनता शॉपिंग सेंटर, दुकान नं. ४२-४३ • सोलापुर स्टेनलेस स्टील हाउस, ४, पारस एस्टेट □ **थाने** : नवपाडा गोल्डन स्टील एंड अप्लायेंसेस, गोखले रोड • महावीर • पूनमिया स्टील सेंटर • शंकर मंदिर संघवी जनरल स्टोर्स, स्टेशन रोड □ **उंब्रज** : मेन रोड शंकर मारुति मोहिरे □ **वाशी** : सेक्टर नं. १७ मुरुगन एंटरप्राइज़ेस, दुकान नं. ५५, बिग स्प्लैश • श्री कृष्णा स्टील एम्पोरियम, प्लॉट नं. ३४, आनंद सागर.

मणिपुर

□ **इम्फाल** : मेन रोड सुदर्शन • एम. जी. एवेन्यू मणिपुर बिल्डर्स स्टोर्स • [illegible] नयन सिंह एंड संस • थंगल बाज़ार राजु एंटरप्राइज़ेस • श्याम गोपाल बाणिक • रूपक एजेंसी.

मेघालय

□ **शिलांग** : बारा बाज़ार गोपिका रंजन पाल एंड संस • धानखेती वी. के. घई एंड कं., बावरी मैंशन • पुलिस बाज़ार रायाराणी स्टोर्स.

मिज़ोरम

□ **ऐज़ॉल** : बारा बाज़ार ईस्टर्न ट्रेडिंग एजेंसी • ज़ायन स्ट्रीट मिज़ोफ़ेड्स.

नागालैंड

□ **कोहिमा** : मेन रोड युनाइटेड ट्रेडर्स □ **मोकोकचाँग** : ए. एम. रोड हिल्स एंटरप्राइज़ेस.

उड़िसा

□ **अनुगोल** : मेडिकल रोड अग्रवाल एंटरप्राइजर्स, संजीवनी मार्केट • गिफ्ट कॉर्नर • सुनील इलेक्ट्रिक सप्लाय • मेन रोड संगम स्टोर □ **आस्का** : मेन रोड अशोका एंटरप्राइज़ेस □ **आठगढ़** : मेन रोड सागरिका, एन.ए.सी. मार्केट बिल्डिंग □ **बालेश्वर** : सिनेमा बाज़ार श्री गणपती बर्तन भंडार • मोतिगंज बाज़ार मेक्सिकन एंटरप्राइज़ेस, आर्त कविराज रोड □ **बालिगुड़ा** : मेन रोड खालीदास एंड संस □ **भवानीपाटना** : मेन रोड अमित फैंसी एम्पोरियम • महेश्वरी जनरल स्टोर □ **बरगड़** : मेन रोड अशोक इलेक्ट्रिकल्स • रूप श्रृंगार एजेंसीज • हातपदा बित्रि फैंसीज़ □ **बड़बिल** : मेन रोड भवानी वेराइटीज़ □ **बरिपदा** : सेबा संघ हॉल एरो वॉइस □ **ब्रह्मपुर** : गिरि मार्केट एलाइड स्टोर्स • वन-वे ट्राफ़िक रोड सप्तगिरि • मधु एंटरप्राइजर्स • भापुर बाज़ार सिल्ला गोपालम एंड संस • जे.के. एंटरप्राइजर्स □ **भद्रक** : नया बाज़ार लकी ट्रेडर्स • स्टील हाउस • सुभद्रा एंटरप्राइज़ेस • ओ.टी. रोड श्रद्धांजली □ **भुवनेश्वर** : ईस्टर्न मार्केट बिल्डिंग लालचंद एंड संस • राजमहल बिल्डिंग रीता • शहीद नगर सुरुचि • अशोक नगर विनोद जनरल स्टोर • टी कृष्ण पात्र • यूनिट-II कोणार्क एंटरप्राइज़ेस, बी-२७, अशोका मार्केट • यूनिट-IV मा भवानी बेनिफ़िट स्कीम, दुकान नं. ५/४, □ **बिनका** : मेन रोड फैंसी क्लॉथ स्टोर □ **बीरमित्रपुर** : मेन रोड राम विलास अग्रवाल □ **बोलांगीर** : मेन रोड नारायण दास आडुमल • सिनेमा हॉल रोड सामुका स्टील सेंटर • बस स्टैंड स्टील होम • सूर्य लॉज कॉम्प्लेक्स बॉम्बे स्टील एम्पोरियम □ **बृजराजनगर** : मेन रोड सुरेंद्र एंटरप्राइज़र्स □ **बुर्ला** : मेन रोड पंजाब जनरल स्टोर • बस स्टैंड बुर्ला इलेक्ट्रिकल्स □ **कटक** : बख़्शी बाज़ार ट्रैवलर्स सेंटर • डोलमुंडाइ दुर्गा एजेंसी • गुप्ता डिस्ट्रिब्यूटर्स, हरि भवन, स्वाती स्टेनलेस स्टील स्टोर, हरिपुर रोड • महताब रोड इंडियन इंडस्ट्रीज • तीनिकोनिया बगीचा सुनीता • शंकर जनरल स्टोर • चौधरी बाज़ार जनता जनरल स्टोर • बज्र कबाटी रोड कोनार्क लाइट हाउस • हरिपुर रोड मानसा एंटरप्राइजर्स □ **चांदपुर** : मेन रोड गौरजेमा इलेक्ट्रिकल्स □ **ढेंकानाल** : बस स्टैंड ऐप्लिक, म्यूनिसिपालिटी मार्केट बिल्डिंग • कांचन बाज़ार उपहार • ब्यूटी हाउस □ **गुणूपुर** : मेन रोड बी. वासुदेव राव एंड संस □ **हिराकुद** : न्यू मार्केट प्रधान जनरल स्टोर □ **जाजपुर टाउन** : सिनेमा हॉल रोड मुना जनरल स्टोर, दुर्गा सिनेमा के पास □ **जसीपुर** : मेन रोड जनता एजेंसीज़ □ **ज़टणी** : मेन रोड गीतांजली एंटरप्राइज़ेस • रेलवे मार्केट पॉपुलर स्टोर्स □ **जयपुर** : एम. जी. रोड अरुणोदय गिफ्ट सेंटर • चौलट्री रोड महावीर स्टील • मेन रोड हैपी होम □ **झारसूगुड़ा** : मेन रोड झारसूगुड़ा मेटल स्टोर □ **केंद्रापाड़ा** : मढीलाल बाज़ार अजय एंटरप्राइज़ेस • कचेरी रोड एलोरा इलेक्ट्रिकल सप्लायर्स □ **केंदुझर** : न्यू मार्केट आशा लेडीज़ कॉर्नर • भवानी स्टोर्स • प्रिया स्टोर्स □ **केसिंगा** : मेन रोड अजित ट्रेडिंग कं. □ **कोदला** : मेन रोड सूर्य एंटरप्राइज़ेस □ **कोरापुत** : बस स्टैंड विक्रम रेडियो एंड इलेक्ट्रिकल्स □ **कुचिंडा** : बस स्टैंड बजरंग इलेक्ट्रॉनिक्स □ **नवरंगपुर** : मेन रोड : नरेश जनरल स्टोर □ **पदमपुर** : राजा बोरा संबर राहास बिहारी स्टोर □ **पाराद्वीप** : विजया मार्केट न्यू सरला स्टेनलेस स्टील स्टोर, मीट शॉप लाइन □ **फूलबानी** : मेन रोड गुरुमूर्ति इलेक्ट्रॉनिक्स □ **राजगांगपुर** : मेन रोड प्रदीप स्टोर • मॉडर्न वेराइटी स्टोर □ **रायरंगपुर** : मेन रोड पुष्पक ट्रेडर्स □ **राउरकेला** : मेन रोड चंदुलाल गुप्ता • घनश्याम दास एंड संस, ऑस्कर हाउस • डिज़ायर • सेक्टर-२ मार्केट गजपति एंटरप्राइज़ • उदित नगर मंजुला ट्रेडर्स • सेक्टर-५ मार्केट प्रेस्टीज • सिलेक्शन सेंटर • फ़र्टिलाइज़र टाउनशिप श्री बलदेवजी एंटरप्राइज़ □ **साखीगोपाल** : मेन रोड अशोक एजेंसीज □ **संबलपुर** : गोल बाज़ार भारत स्टील सेंटर □ **सोनपुर** : सोनपुर राज पॉपुलर जनरल स्टोर □ **सोरो** : अडंग बाज़ार क्लासिक वेराइटी स्टोर □ **सुनाबेढ़ा** : एन. ए. सी. मार्केट कॉम्प्लेक्स उत्कल इंजिनियर्स □ **तालचेर** : देउलबेड़ा चौक रेडियो एअर लाइट • हाटतोटा उषा एजेंसीज़ □ **टिटिलागढ़** : मेन रोड के. के. अग्रवाल □ **उदला** : मेन रोड सुभद्रा इलेक्ट्रॉनिक्स.

पंजाब

□ **अमृतसर** : हाल बाज़ार हरबंस क्रॉकरी स्टोर • रघबीर सिंह कटारिया एंड संस • कटड़ा बग्गियां मंगल सिंह एंड संस • कटड़ा जयमल सिंह पॉपुलर ट्रेडिंग कं. • प्रताप बाज़ार करमचंद सुदर्शन कुमार • पुरी बैटरी स्टोर • राकेश क्रॉकरी एंड जनरल स्टोर □ **बंगा** : आज़ाद चौक जविंदर कुमार शिव कुमार □ **भटिण्डा** : धोबी बाज़ार गोयल बर्तन स्टोर • विजय क्रॉकरी हाउस • गांधी मार्केट कांचन क्रॉकरी हाउस • सुभाष एंड कं. □ **दीनानगर** : मेन बाज़ार राम अवतार संजीव कुमार □ **फरीदकोट** : कॉलेज रोड गिफ्ट हाउस □ **गुरदासपुर** : गांधी चौक हंसराज सुभाष चंद • हनुमान चौक केदारनाथ एंड संस □ **होशियारपुर** : जालंधर रोड बंसल क्रॉकरी हाउस, घंटाघर के पास • कश्मीरी बाज़ार खुल्लर ब्रदर्स • वैशनो दास एंड संस □ **जगराओ** : मेन बाज़ार कैलाश चंद एंड संस □ **जालंधर शहर** : बाल्मिकी गेट भारत लाइट हाउस, सीमा पैलेस के पास • बाज़ार शेखां खरबंदा शॉपिंग सेंटर • ओ. पी. शर्मा एंड संस • रमेश चंद्र मित्र पाल • डैंडरथ रोड सुंदर सिलेक्शन स्टोर, नाज़ थिएटर के सामने • चौक रैनक बाज़ार गिफ्ट सेंटर • जी. टी. रोड जे-ओम प्रकाश एंड संस, सिविल हॉस्पिटल के सामने • वोलगा क्रॉकरी हाउस, पी.एन.बी. चौक • गुजरात कॉम्प्लेक्स किचन कलेक्शन्स, दुकान नं. ५ • नया बाज़ार बॉम्बे स्टेनलेस स्टील (रजि.), मिलाप चौक के पास • रैनक बाज़ार बैहल संस • पाहवा गिफ्ट सेंटर □ **कपूरथला** : सदर बाज़ार अशोका इंजीनियरिंग वर्क्स, जेमिनी मार्केट □ **कोटकपूरा** : रेल्वे रोड आहूजा गिफ्ट हाउस □ **लुधियाना** : चौड़ा बाज़ार जैनसंस • कपूर क्रॉकरीज़ • ऑपेरा क्रॉकरी हाउस • साबन बाज़ार गुप्ता क्रॉकरी हाउस • जैन क्रॉकरी हाउस • सिंगला गिफ्ट हाउस □ **मलोत** : मेन बाज़ार गोपाल सिंह राम सिंह □ **मोगा** : बाग गली क्रॉकरी पैलेस • गोयल प्लास्टिक हाउस • मेन बाज़ार नंद किशोर अग्रवाल एंड संस □ **नवांशहर** : रेलवे रोड हारा सिंह जसवंत सिंह □ **पटियाला** :

(अगले पृष्ठ पर भी देखें)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(पिछले पृष्ठ से आगे)

अदालत बाज़ार बिंदरा स्टोर्स • आर्य समाज चौक मलोत्रा स्टोर्स □ **पठानकोट : मेन बाज़ार** सिंगला गिफ्ट हाउस □ **फगवाड़ा : लोहा मण्डी** रोड ए.के. ट्रेडर्स, द्वारा तिलक राज दर्शन कुमार माटा • चद्दा मेटल स्टोर □ **रायकोट : चौक मेन बाज़ार** उप्पल मेटल स्टोर □ **समाना मण्डी : मेन बाज़ार** मोहन लाल सुदर्शन कुमार □ **टांडा उड़मुड़ : मेन बाज़ार** महावीर क्रॉकरी हाउस

राजस्थान

□ **अजमेर : केसर गंज** गोयल बदर्स, स्टेशन रोड • **मदार गेट** नटवर बासण भंडार □ **अलवर : होप सर्कस** जनता बर्तन भंडार, दुकान नं. ३९ □ **भीलवाड़ा : गोल प्याऊ चौराहा** अमृत इलेक्ट्रानिक्स • **स्टेशन रोड** सिंघवी बासण भंडार □ **बिजयनगर : सदर बाज़ार** गणेश क्रॉकरी स्टोर □ **चिरावा :** राजस्थान इलेक्ट्रिकल डिस्ट्रिब्यूर्स, दिनेश नारायण मार्ग □ **चित्तौड़गढ़ : मीरा** नगर आप की दुकान, कलेक्टरी चौराहा के पास • राणा सांगा मार्केट स्टील एम्पोरियम, दुकान न. ४९ □ **डुंगरपुर : मेन बाज़ार** थॉमस एंड कं. □ **उदयपुर : नेहरू बाज़ार** अशोका डिपार्टमेंटल स्टोर, मयूर सिनेमा के पास • **राजा पार्क** लॉग लाईफ डिपार्टमेंटल स्टोर, ३७२, गली नं. १ □ **जोधपुर : सेंट्रल स्कूल** चोई मशाला एंटरप्राइज़ेस • **स्टेशन रोड** सलूजा एजेंसीज़ □ **खेतड़ी नगर : सुभाष मार्केट** अमर ज्योति फैंसी स्टोर, दुकान नं. ३८ □ **राम गंज मंडी : मेन बाज़ार** रामेश्याम गोरधन सहाय □ **श्रीगंगानगर : पब्लिक पार्क** लायलपुर बर्तन भंडार, दुकान नं. ४६-४७ ए □ **उदयपुर : बापू बाजार** शाह लक्ष्मीलाल प्रकाश चंद जैन, दुकान नं. १०८ • **सूरज पोल के अंदर** नरेंद्र ट्रेडिंग कं., जीनीरत चौक के पास • स्यास्तिक मेटल स्टोर.

तामिलनाडु

□ **अंबूर : श्री** कामयेनु इलेक्ट्रॉनिक्स एंड फ्रिज हाउस, १५५, एस. के. रोड □ **वेंगलपट्टु :** एम. राज़ास स्टोर्स, २४, सी. जी एस. टी. रोड □ **धर्मपुरी:** गौतम एंटरप्राइज़ेस, ६६, अरुमुगा आचारी स्ट्रीट □ **चिदंबरम :** श्री विनायका पातिरकडइ, २५, साउथ कार स्ट्रीट □ **कोईबतूर : गांधीपुरम** कॉइंड स्टील, ४८, श्री लक्ष्मी कॉम्प्लेक्स • कविता एजेंसीज़, २९६ • अरुलेज्योति कॉर्पोरेशन, १६-ए, क्रॉस कट रोड • वासती एंड कं., १०७५, क्रॉस कट रोड • किचन क्लब, ९५९, १० वा रास्ता • **क्रॉस कट रोड** राम्स इलेक्ट्रिकल, दुकान नं. १०, श्री लक्ष्मी शॉपिंग कॉम्प्लेक्स • श्री लक्ष्मी स्टोर्स, ५३८, आर. जी स्ट्रीट • **बिग बाजार** अनंत स्टोर्स, ११४६, बिग बाज़ार स्ट्रीट • आर. एस. पुरम आयडियल गिफ्ट हाउस, ८, ईस्ट माध्यगारुलु रोड • विट्को कोइमतूर, ८६४, राजा स्ट्रीट □ **दिंडिगल : डड्ली स्कूल बिल्डिंग के** पास श्री लक्ष्मी एंटरप्राइज़ेस, ५८६, डड्ली स्कूल बिल्डिंग, • **बिग बाज़ार** एस. एम बी माणिकम नाडार फर्म, १६३, बिग बाज़ार □ **कुन्नूर : बस स्टैंड के** पास वैन स्टोर्स, मार्केट □ **ईरोड :** यूनिवर्सल ट्रेडर्स, २१, शिवधनमुगम रोड □ **कृष्णगिरि :** पॉपुलर स्टील जनरल एजेंसीज़, ६४/ए-३, बंगलोर रोड □ **कोविलपुरम :** मगंश एजेंसीज़, १५, गांधी रोड □ **कोतगिरि** रामचंद एंड कं □ **कुंबकोणम :** मॉडर्न नीड्स होम अप्लायन्स, १७१, नागेश्वरन नॉर्थ स्ट्रीट □ **काइकाल :** कलिमा इलेक्ट्रॉनिक्स, २०६/१, तिरुनल्लार रोड □ **मायूईदम : बस स्टैंड के पास** ताइ सुवैयन मेटल्स, ३२-९८, नॉर्थ स्ट्रीट □ **पदुई : ईस्ट गेट** आल्विनाश मेटल्स सेंटर, १८०-१८१, ईस्ट वेली स्ट्रीट • एस. वेल्लैया नाडार एंड संस, २६७, कामराजर सालइ • एस. संतोष नाडार कॉर्पोरेशन, नं ३, अम्मन सन्नदी • **नेताजी रोड** मुथुस्वेती कॉर्पोरेशन, १०९, नेताजी रोड • **वुतियन बाज़ार** अनंत स्टोर्स, ४२, साउथ आवनी मूला स्ट्रीट □ **पडास :** वी. जी. पनीरदास एंड कं., ३९, अण्णा सालइ • इंडिया स्टील हाउस, १४, इविनिंग बाज़ार • **अण्णा नगर** शराज़, डी-१०९, बेसमेंट १ ला रास्ता • **मयलापुर** वितन सूपर मार्केट (ए.सी.), १७२-ए, लज़ चर्च रोड • ए. तंगवेल नाडार स्टोर्स, २२७, रामकृष्ण मठ रोड • **तेरड़ी के पास** सेल्लादुरइ नाडार कॉर्पोरेशन, नं ३६०, टी.एच. रोड • सिलेवरन स्टील सेंटर, ३२४/१, मिंट स्ट्रीट • अरुणा एंड कं.,,३४०, तिरुवट्टियूर हाई रोड • **वलसरवाकम** तता स्टोर्स, ४-ए, आर्कोट रोड • **पाडी** राजा स्टोर्स, ८८१/६, एम.टी.एच. रोड • रेपुटिकोरिन स्टोर्स, १००, एम.सी. रोड • **लज़** एस. संतोष नाडार, ११६, गॉपेट्टा हाई रोड • **टी. नगर** रत्ना स्टोर्स फर्म, १९, दीनदयालु स्ट्रीट, पाँडी बाज़ार • राजा मेटल स्टोर्स, २६४, पुरसवाकम हाई रोड • पी. देवदास नाडार एंड संस, ५, इविनिंग बाज़ार • **पार्क टाउन** आनंद मेटल कॉर्पोरेशन, ७, इविनिंग बाज़ार • **आबडी** सेल्वन स्टील हाउस, ११४, नेहरू बाज़ार • पी.एल. टी. राजेंदन बदर, १५-सी, इविनिंग बाज़ार • शांति स्टोर्स, ३०२, पी.एच. रोड • **न्यू वॅगारपैनपेट** लक्ष्मी मेटल्स, ७४७, टी.एच. रोड • **तिरुवत्रियूर** एस. १५, रंगनाथन स्ट्रीट • **न्यू बॉम्बे होम,** नं. १७, रामनाथन स्ट्रीट □ **नागरकोइल** पोनय्या एंटरप्राइज़ेस, ११७, कोर्ट रोड □ **पट्टुकोटइ :** श्री राघु फर्निचर, १९, तलारी स्ट्रीट □ **पाँडीचेरी :** श्री लक्ष्मी स्टील हाउस, १०४, डे. नेहरू स्ट्रीट • डिंग डाग, ३७-सी, भिशान स्ट्रीट □ **सेलम :** वी. सी. आर. मेटल्स कं., ८७, बाज़ार स्ट्रीट • जेम एजेंसी, ९, देवी कॉम्प्लेक्स, कादर रोड • बाज़ार वी. चंदशेखरम एंड संस, ३५७, बाज़ार स्ट्रीट • जय मेटल हाउस, १२१, १ ला अग्रहारम • **वासवी महल बिल्डिंग** श्री लावण्य मेटल मार्ट, ३१, १ ला अग्रहारम □ **शिवकासी :** एम.वी.के.डी. तंगवेलु नाडार, ८, साउथ कार स्ट्रीट □ **टूयूटिकोरिन : टैलिग्राफ ऑफिस के सामने** ए. जी. दुई एजेंसीज़, ३७२, इन्ल्यू.जी.सी. रोड • वीफोरेस स्टोर्स, २/७८८३, इन्ल्यू.जी.सी. रोड □ **तिरुनलवेली :** एस. संतोष नाडार एंड संस, ३७, हाइ ग्रेड □ **त्रिचि :** मंगल मेटल मार्ट, २४/२ एन. एस. बी. रोड • एवरसिल्वर कॉलेज, ३६, एन. एस. बी. रोड • कल्याण मेटल कॉर्पोरेशन, ४२, सिंगार पेठ □ **तिरुपूर :** कविता एजेंसी, १३५, ईश्वरन कोइल स्ट्रीट □ **विरुधुनगर :** जैमिनि एजेंसीज़, २०३, कचहरी रोड □ **वेल्लूर : सीनू** एजेंसीज़, ८०ए, आर्काट रोड

त्रिपुरा

□ **अगरतला : एच. जी. बी.** रोड मदन गोपाल वेराइटी स्टोर्स • **मंत्रीबारी** रोड टेक्सी कॉर्पोरेशन

उत्तर प्रदेश

□ **आगरा : ईरेसी नं. २** मॉडर्न क्रॉकरी हाउस • **राजा मण्डी** सुमित बर्तन एंड क्रॉकरी सेंटर □ **आगरा कैंट : सदर बाज़ार** हबीबा स्टोर्स, ७, ताज रोड □ **अलिगढ़ : महावीरगंज** लीला थर बाबूलाल कसेरा • रेलवे रोड जय भारत क्रॉकरी हाउस □ **इलाहाबाद : चौक** गुर प्रसाद हीरा लाल • **सिविल लाइन्स** अलका एंटरप्राइज़ेस, ३०, महात्मा गांधी मार्ग • खन्ना भाई, ६, सरदार पटेल मार्ग • **बिजली घर के पास** प्रिया स्टोर्स, ६-सी, कमला नेहरू मार्ग • दि सायर कं. • **वी. एन. मार्ग** डायमंड टी सेल्स, चमेली देवी धर्मशाला के सामने □ **अल्मोड़ा : कचहरी के पास** आनंद एम्पोरियम □ **आज़मगढ़ : चौक** जालान इलेक्ट्रिकल्स, अहमद मार्केट • नंदिप्ती सेंटर, १६, वेसली मार्केट • सनबीम वुल एंड जनरल मर्चेंट्स □ **बहराइच :चौक** श्याम लाल एंड संस (बर्तनवाले) □ **बलिया : स्टेशन** मालगोदाम रोड विजय गन हाउस □ **बाराबंकी : मेन मार्केट** शिव बर्तन भंडार □ **बरेली सिविल लाइन्स** दुगल्स, मिशन हस्पताल के सामने • किचन सिलेक्शन, ए-६, बटलर प्लाज़ा शॉपिंग कॉम्प्लेक्स □ **बुलंदशहर : अंसारी रोड** कंसल क्रॉकरी स्टोर • **चौक बाज़ार** मुल्क राज सुरेंद्र कुमार, डाबर शो रूम के सामने □ **देहरादून : सिटि कोतवाली के पीछे** सुशीला डिपार्टमेंट स्टोर, ४३, डिस्पेंसरी रोड • **फल्टन बाज़ार** सुशील एंड कं., दुकान नं. ९५ • वेद प्रकाश गोयल, दुकान नं. १२० □ **गोपीगंज : सदर मोहाल** राधेश्याम धनश्याम दास □ **गोरखपुर : दिलेज़ाकपुर** दुर्गा बर्तन स्टोर्स, विजय सिनेमा रोड • **गोलघर** फाइन क्रॉकरी म्यूज़ियम, १६, जत्त कल भवन • गणेशी लाल राम निवास एजेंसीज़, स्टेशन रोड • मॉडर्न क्रॉकरी म्यूज़ियम, १८, जत्त कत भवन • **सिनेमा रोड** गणेशी लाल एंड संस • आर. के. एजेंसीज़, विजय सिनेमा चौक के पास • **कोतवाली रोड** अमर क्रॉकरी सेंटर, माया बाज़ार • टाउन हॉल किचन म्यूज़ियम, ११, हेल्थ ऑफ़िसर्स बिल्डिंग • श्री बर्तन स्टोर्स, दुकान नं. १०-११ • विजय एजेंसीज़, दुकान नं. १६-१७ □ **हलद्वानी : बरेली रोड** लकी कलेक्शन्स, दुकान नं. ४३७ • सरदार क्रॉकरी हाउस, सिंघी स्ट्रीट्स के पास • **कारखाना बाज़ार** बॉम्बे क्रॉकरी हाउस □ **हापुड़ : रेलवे रोड** क्रॉकरी सेंटर, गांधी भवन □ **हरिद्वार : मोती बाज़ार** ओम प्रकाश चेत्रा राम सिंघी • **अपर रोड** मल्होत्रा रिपेयर हाउस □ **जौनपुर : कचहरी रोड** आनंद स्टोर्स, जोगियापुर • **हरलालका रोड** प्लास स्टोर्स □ **ज्वालापुर : मेन बाज़ार** न्यू विमल मेटल्स □ **कानपुर : भूसा टोली** कानपुर मेटल कं., दुकान नं. ६६/३१७ • **बिरहाना रोड** एम. के. ट्रेडर्स (बर्तनवाले) दुकान नं. ५८/४५, पंजाब नेशनल बैंक के सामने • सुशीम रेडियो एंड इंलेक्ट्रिक कॉर्पोरेशन, दुकान नं. २६/४९ • **गुमटी** नं. ५ ईश इलेक्ट्रिकल्स, ११८/२, कौशल पुरी, जय हिंद सिनेमा • लक्ष्मी स्टील हाउस, ११८/६४, कौशल पुरी, बॉम्बे रोड • **हर्ष नगर** एम. के. एजेंसीज़, दुकान नं. ११९/२, बैंक ऑफ इंडिया के सामने, १ ली मंज़िल • **नवीन मार्केट** कुमार फैंसी स्टोर्स, दुकान नं. ११४ □ **खुर्जा : बर्तन बाज़ार** मोलानाथ हरचंद राय □ **लखीमपुरखेड़ी : मेन मार्केट** आलोक एजेंसीज़, चंपा भवन □ **लखनऊ : अमीनाबाद** राम सरन एंड कं • सुशील बर्तन भंडार • **नज़ीराबाद** कन्हैया लाल प्राग दास, दुकान नं.७ □ **मेरठ :आबू लेन चौक** महेशगंज एंड संस बर्तनवाले, दुकान नं. १७१ • **पान दरीबा** मॉडर्न लाइट हाउस, २२२, खैर नगर बाज़ार • **सदर बाज़ार** कृष्ण क्रॉकरी एंड डिपार्टमेंटल स्टोर □ **मिर्ज़ापुर : बेसली गंज** कृष्णा इलेक्ट्रिकल एजेंसी, सरदार भगत सिंह मार्ग □ **मोदीनगर : लोअर बाज़ार** कृष्णा इलेक्ट्रॉनिक्स, १३, न्यू मोदी मार्केट □ **मुरादाबाद : बाज़ार गंज** क्रॉकरी एम्पोरियम, कोतवाली के सामने • **चौमुखाफुल** प्रेम क्रॉकरीज़, अमरोहा गेट □ **मसूरी : तैंडौरा बाज़ार** देवी चंद खेम चंद □ **मुज़फ़्फ़रनगर : कोर्ट रोड** गोयल एजेंसीज़ □ **पीलीभीत : स्टेशन रोड** मॉडर्न क्रॉकरी हाउस □ **रामपुर : राजद्वारा रोड** अग्रवाल फैंसी स्टोर □ **रेनूकूट : विरला मार्केट** गुप्ता पेंट्स एंड इलेक्ट्रिकल • हिण्डाल्को कर्मचारी उपभोक्ता सहकारी समिति संघ लि • लक्ष्मी चंद अग्रवाल, दुकान नं. ६ • सूपर बाज़ार, हिण्डाल्को □ **ऋषिकेश : लेत्र रोड** अमीर चंद हर्ष कुमार परदेसी • मोतीराम रमाकांत □ **रूड़की : सिविल लाइन्स** मुरादाबाद हाउस □ **सहारनपुर : नेहरू मार्केट** अनुपम क्रॉकरी, दुकान नं. २९ • निहाल चंद हरबंस लाल, दुकान नं. १४ □ **शाहजाँपुर : सदर बाज़ार** सहगल नॉवेल्टीज़ □ **शक्तिनगर : विद्युत विहार** अग्रवाल फैंसी स्टोर्स, शॉपिंग सेंटर • ज्योति स्टोर □ **शामली : पड़ा बाज़ार** सुगन चंद सोहन लाल □ **सीतापुर : ग्रीक गंज** सेहरा बदर्स □ **सुल्तानपुर : शाहगंज** एस. आर. स्टील एम्पोरियम, लाला सूज लाल मार्केट □ **वाराणसी : थांस फाटक** गिद्यर दास एंड संस • स्टेनलेस स्टील सेंटर, दुकान नं. सी के ३७/३२ • **दालमण्डी** ग्लास एंड प्लायवुड सेंटर • **गोविंदपुरा** वाराणसी स्टील सेंटर, राजा दरवाज़ा के पास, सी के ५५/२९, गोविंदपुरा • **लहुराबीर** यू.पी. ग्लास स्टोर्स, सी २६/१० बी, एस.बी.आई. के सामने • रथयात्रा जैन एंटरप्राइज़ेस, सिंगर शोरूम के सामने.

पश्चिम बंगाल

□ **अलिपुरद्वार : न्यू** टाउन बसंती इलेक्ट्रिक स्टोर्स □ **आरामबाग : गर्ल्स स्कूल** के पास न्यू रामकृष्णा बासनालय • **स्टेट बस स्टैंड** के पास महामाया बासनालय, नूतन बाजार □ **आसनसोल :** ईगल ग्लास हाउस, १०३, जी.टी. रोड • **बस्तिन बाज़ार** साहा स्टील हाउस, १९, लिटन स्ट्रीट □ **अशोक नगर: गोल बाज़ार** (मेन गेट) रेणुका स्टोर्स □ **बागडोंगरा :संसार** □ **बेंची : बेंची रेल गेट** सोनार तरी □ **बालूरघाट : चौरंगी** हेमंत स्टोर्स □ **बांकुरा :** गोयेका स्टोर्स, सुभाष रोड □ **बारासत : कैपिटल मार्केट न्यू** संसार □ **बसिरहाट : नूतन बाज़ार** सुरलिपी, टाउन हॉल के पास • **पुरातन बाज़ार** मॉडर्न इलेक्ट्रिक □ **बेलदा : बेलदा बाज़ार** राजलक्ष्मी स्टोर्स, बेलदा हाईस्कूल के पास □ **बहरमपुर :** आउकला, ५३, बी.बी. सेन रोड • **खागड़ा** घोष एंड कंपनी, २२६, मणीद्र, रोड • रॉय बदर्स, २०१, मणीद्र रोड • एस. राहा एंड बदर्स, ३३, बी. बी. गुप्ता रोड • **कल्पना सिनेमा के पास** बसाक एंटरप्राइज़, बी. बी. सेन रोड □ **भद्रकाली :** क्वालिटी स्टोर्स, ६९, अपर बी.पी.एम.बी सरनी □ **भद्रेश्वर : भद्रेश्वर बाज़ार** सोनाली, ६५, जी. टी. रोड □ **बीरपाड़ा : सिनेमा रोड** अमिया स्टोर्स □ **बोलपुर :** आनंद स्टोर्स, श्री निकेतन रोड □ **बर्दान :** शिल्पा सदन, २५, बी. सी. रोड • विक्टरी स्टोर्स, ३१, बी. सी. रोड □ **कलकत्ता : बागबाज़ार बाटा** बी. एस. बदर्स, ४४/बी, बागबाज़ार स्ट्रीट • **बागरी मार्केट** श्याम बदर्स, सी, २३, बागरी मार्केट • युनाइटेड स्टेशनर्स, सी-२१, बागरी मार्केट • **बागुईआटी, दुर्गाबाड़ी** मनिमाला, ए,ए/१२, बागुईआटी रोड • **बड़बाज़ार (सत्य नारायण पार्क)** मोहनलाल माधवजी, ५९, कांटन स्ट्रीट • **बरानगर बाज़ार** मनोरंजन, २६, काशीपुर रोड □ **बेहाला :** बेहाला स्टील हाउस (बेहाला पुरातन बाज़ार), ४००/१, डी.एच. रोड • राना, (शहीद सुधा सिंघु मार्केट), ३५०/१, डी. एच. रोड • **भवानीपुर** अमिता स्टोर्स (पूर्ण सिनेमा के पास), १४४ ए, आशुतोष मुखर्जी रोड • पोरमीलिन स्टोर्स, २ बी, एस. पी. मुखर्जी रोड • **बिराटी प्रियब्रत** एजेंसीज़, बिराटी रेलवे क्वार्टर्स के पीछे (द्वारा कृष्ण बोस) • **बेबॉर्न रोड** नरेंद्र कुमार कंपनी २०ए, बेबॉर्न रोड • **चांदनी चौक** क्रॉकरी सेंटर, ४१ बी, चांदनी चौक स्ट्रीट • थार बदर्स • नाग एंड सन, ६, चांदनी चौक स्ट्रीट • **कॉलेज स्ट्रीट** दत्त बदर्स, ४१/४२, कॉलेज स्ट्रीट मार्केट • **देशप्रिय पार्क** नेपाल शंकर एंड कंपनी, ८५, रास बिहारी एवेन्यू • **दमदम कैंटोनमेंट** आशीर्वाद इलेक्ट्रॉनिक्स, ३, लालजी साहा स्ट्रीट, (रय तला, गोरा बाज़ार) • खन्ना एंटरप्राइज़, ३७३, शरत बसु रोड, सुभाष नगर • वेलकम, ९५, डॉ. एस. पी. मुखर्जी रोड (३० डी. बस स्टैंड) • **इनतप** संजय सेल्स, १४०, बी. टी. रोड • **हाति बागान** अशोक ट्रेडिंग कॉर्पोरेशन ८२/२ ई, विधान सरनी • मॉडर्न म्यूज़ियम, १३७ ए, विधान सरनी, (टाउन स्कूल) • नेशनल वेराइटी • दि कांटिनेंटल, ७६/२ बी, विधान सरनी (रूपरानी सिनेमा के पास) • **गड़िया** युनाईटेड सेल्स एम्पोरियम (पद्मश्री सिनेमा के सामने), पी. ४५, राजा एस. सी. मल्लिक रोड • **गड़ियाहाट** आनंदमेला, जी-९, गड़ियाहाट मार्केट • बालिगंज ग्लास वेयर स्टोर्स, १६७ ई, रास बिहारी एवेन्यू (यशोदा मैशन) • बैबिनो, ४७/२ सी, गड़ियाहाट रोड • **गड़ियाहाट मार्केट** एच. आचार्य एंड संस, २१२, रास बिहारी एवेन्यू, क्लॉक-६, गाड़ीयाहाट मार्केट • **गोलपार्क (कोला विला)** टी. आर. इलेक्ट्रिक कंपनी, २३/३७, गोलपार्क रोड • **लिडसे,** हातियागान, मानिकतला समवाइका • **खांगड़ा पट्टी** बी. दयाल एंड संस, १०९/ए, पुरुषोत्तम रॉय स्ट्रीट • **न्यू मार्केट** घोष एंड घोष, बी ६५, न्यू मार्केट • के. बी. दास एंड बदर्स, बी. ६१, न्यू मार्केट • **एन. एस. रोड** क्रॉकरी एम्पोरियम, ८२/८३, आर्मेनियम स्ट्रीट (नंदराम मार्केट के सामने) • **ओल्ड चीना बाज़ार** अमरनाथ कुंडू एंड बदर्स, १४/३, ओल्ड चीना बाज़ार स्ट्रीट • लैप हाउस प्रा. लि., २३, कैनिंग स्ट्रीट • अभय चरण कुंडू, २०७, ओल्ड चीना बाज़ार स्ट्रीट •आर चंपकलाल एंड कंपनी, २५, ओल्ड चीना बाज़ार स्ट्रीट • सातकडी दास एंड कंपनी, १९६, ओल्ड चीना बाज़ार स्ट्रीट • शंकर लाल पाल एंड बदर्स, २३, कैनिंग स्ट्रीट • एस. एल. कुंडू एंड कंपनी, २०६, ओल्ड चीना बाज़ार स्ट्रीट • **पार्क स्ट्रीट** कलकत्ता हायर परचेस सेंटर, (पार्क शो सिनेमा के सामने), ७६, पार्क स्ट्रीट • **फूल बागान** सूर संगीत, पी-३४५, सी.आई.टी. रोड • **पोलक स्ट्रीट** पैटर्सी बदर्स, ७, पोलक स्ट्रीट • **पोस्ता** नंदी स्टोर्स, ५०, कालीकृष्ण टैगोर स्ट्रीट • **सातगाची (नागेर बाज़ार),** सुजाता एंटरप्राइज़ेस, ६, ए.एम. बोस रोड • **शियालदह** लक्ष्मी नारायण बासनालय, १३३/एच, ए.जे.सी. बोस रोड (अशोक होटल के नीचे) • न्यू रेडियो कॉर्पोरेशन, ११८/सी, ए. जे. सी. बोस रोड (एन. आर. एस. हस्पताल के सामने) • रूबी साइकल स्टोर्स, ११, एम. जी. रोड • तारकनाथ स्टोर्स, १५१/ए, बी. बी. गांगुली स्ट्रीट (कोले मार्केट के पास) • **श्याम बाज़ार** संगीता एंटरप्राइज़ेस, १२३, बिधान सरनी • **श्री मनि मार्केट** रॉय मैकेनिकल वर्क्स, २०/१, बिधान सरनी □ **चंदननगर : लक्ष्मीगंज** आजार भगवान स्टोर्स • वेस्टर्न ट्रेडिंग कंपनी □ **चिनसुरा : खदुया बाज़ार** कुकर्स एंड क्रॉकरी सेंटर, एन. एस. रोड □ **चित्तरंजन : आमतलही मार्केट** मॉडर्न स्टील फर्निचर (युनिवर्सल), ए/१ आर-३, आमलादही मार्केट □ **कंथी : मेन रोड** सावित्री भांडार □ **कूचबिहार :** दास बदर्स, बी. एस. रोड • **जपानी पट्टी** सत्य नारायण मेटल स्टोर्स • एन. एन. रोड तोलाराम डालिमचंद • **सुनिती रोड** आनंदमेला □ **दार्जीलिंग : चौक बाज़ार** हिंद स्टोर्स • केरामत अली एंड संस • **एच. डी. लामा रोड** अनूप सेल्स एजेंसी □ **दिनहाटा : चौड़ाहाट** वैद्यनाथ साहा एंड बदर्स • **चौपथी** आर. बोड़ाल एंड कंपनी □ **दुर्गाचौक : कॉलनी मार्केट** प्रतीक, दुर्गाचौक कॉलनी □ **दुर्गापुर : बेनाचिती** ज्योति • रकमारी, स्टेशन रोड • **स्टेशन बाज़ार** रूब बदर्स, हाटतला रोड □ **फ़ाराक्का : चित्तरंजन मार्केट** मॉडर्न ट्रेडिंग एजेंसी, दुकान नं. जी-१९ □ **गंगारामपुर :** ट्रांजिस्टर हाउस □ **घाटाल : कुठी बाज़ार** तेजस पत्र □ **हाबरा :** माकाली भंडार, जेशोर रोड □ **हलदिया : हलदिया कोऑपरेटिव** हलदिया रिफ़ाइनरी कंज़्यूमर को-आप. सोसि लि., हस्पताल के पास □ **हरीपाल : हरीपाल स्टेशन बाज़ार** सरकार इलेक्ट्रिकल्स □ **हावड़ा : वैष्णवपाड़ा बाज़ार** प्रयोजनी, ४४/१, चंदकुमार बैनर्जी लेन • **कालीबाबुर बाजार** इलेक्ट्रो साउंड, ३२४, एन. एस. रोड □ **जलपाइगुड़ी : दिनबाज़ार** प्रमादीराम प्रपूदयाल • **मर्चेंट रोड** मित्र बदर्स □ **जांगीपाड़ा : जांगीपाड़ा बाज़ार** बैनर्जी बासनालय • चीना स्टोर्स □ **जियागंज : वुडि पट्टी** योंगमाया स्टोर्स □ **कालियागंज : एन. एस. रोड** आशीर्वाद • बेतार बानी □ **कांचरा पाड़ा** बंगलश्मी बासनालय, वर्क शॉप रोड □ **कान्दी : कलाबागान** निभानंनी इलेक्ट्रिक □ **खड़गपुर : डी.बी.सी. मार्केट** कुसुम स्टील एंपोरियम, तालबगीचा • **गोलबाज़ार** अरविंद स्टोर्स, ८७, रेलवे मार्केट • हिंदुस्तान स्टोर्स, १२३ ए, रेलवे मार्केट • **टी ई-२ रेलवे मार्केट** गंगा जमुना, गोल बाज़ार □ **किर्नाहार :** विचित्र स्टोर्स □ **कृष्णा नगर :** गोयारी सोनापट्टी गैलेन कुमार दत्त एंड बदर्स, बी. के. चाटर्जी लेन • **देवनाथ हाईस्कूल के पास** नदिया बासनालय, विश्वंभर रॉय रोड □ **मालबाज़ार कैलटेक्स रोड** बासनालय □ **मालदा :** भौमिक वेराइटी स्टोर्स, ३१ सी, एन. सी. मार्केट • श्री विश्वनाथ स्टोर्स, ३/६२, डी. सी. आर. एम. मार्केट • **के. जे. सन्याल रोड** पूनम स्टोर्स, २९/२२, के. जे. सन्याल रोड • **एन. एस. रोड** रेडियो साईन □ **मेदिनीपुर : बड़बाज़ार** रामनारायण हरीकिशन • ट्रंक हाउस □ **मेखलीगंज :** श्याम ट्रेडिंग स्टोर्स • **बिधीगंज** चाबड़ी एंटरप्राइज़, राणा गैरेज के पास • **स्कूल बाज़ार** दास इलेक्ट्रॉनिक्स □ **पोर्ट ब्लेयर : आबेरडिन बाज़ार** भारत जनरल स्टोर्स • आर. जी. टी. रोड दयाल कंपनी □ **पुरुलिया : टेलिफोन एक्सचेंज के सामने** मोनिका, चाईबासा रोड □ **रघुनाथगंज : दरबेशपाड़ा** प्रभात स्टोर्स (दुलु की दुकान) • **सदर घाट** सुकांता, म्युनिसिपल सूपर मार्केट □ **रायगंज :** मोहनबाटी गीतांजली एंटरप्राइज □ **रामपुरहाट : यू.बी.आई. बिल्डिंग** दत्त स्टेनलेस स्टील हाउस, देशबंधु रोड □ **राणाघाट : भांगरापाड़ा** चक्रवर्ती ड्रिस्ट्रिब्युटर्स, कालीमय घटक लेन □ **रिखड़ा : म्युनिसिपालिटी के पास** शंकर इलेक्ट्रॉनिक्स, ८९, पी. एन. के. बैनर्जी स्ट्रीट □ **साईथिया :** शंकर वेराइटी स्टोर्स, ओल्ड कांदी रोड □ **शांतिपुर : पब्लिक लायब्रारी के सामने** साहा इलेक्ट्रिक, ३३/ए, नेताजी सुभाष रोड □ **श्रीरामपुर : बटतला बेस्ट,** जी. टी. रोड • **मानसी सिनेमा के पास** ईस्ट एंड ट्रेडर्स, ३९, एन. एस. एवेन्यू □ **शियाखला : शियाखला बाज़ार** शियाखला बासनालय □ **शिलीगुड़ी : बिधान रोड** नॉर्थ बेंगाल स्टोर्स • **बिधान मार्केट** गृहश्री • महाकाली स्टोर्स • मा मनसा वेराइटी स्टोर्स • नदिया स्टोर्स, बी ३ (आर) बिधान मार्केट • **हिल कार्ट रोड** महेशवरी मेटल स्टोर्स • नीलम, मेटल मार्केट □ **सिमुरालीः सिमुराली बाज़ार** उपहार • **स्टेशन बाज़ार** कुंडु बासनालय □ **सोदपुर : विद्यासागर कॉर्नर** प्रयोजनी, स्टेशन रोड • **रबीद सिनेमा** के सामने गणपती इलेक्ट्रॉनिक्स, रवींद्रनाथ एवेन्यू □ **सिउडी : एस. पी. मोड़** मार्केट तरूणोद्योग, स्टॉल नं. १३ □ **तमलुक :** पाशकुड़ा **बस स्टैंड** ताम्रलिप्त एल्युमिनियम स्टोर्स, पदुमबसन □ **तारकेश्वर : बी.पी.आर. गेट** सूपर सोनिक रेडियो • **थाना रोड** गीत-ओ-रश्मी, शिव मंदिर के पास □ **उलुबेड़िया : हेमंत बसु मार्केट के पास** रक्षित स्टील स्टोर्स, उलुबेड़िया बाज़ार □ **उत्तरपाड़ा :** उत्तरपाड़ा बाज़ार तापसी, २१९, जी. टी. रोड.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

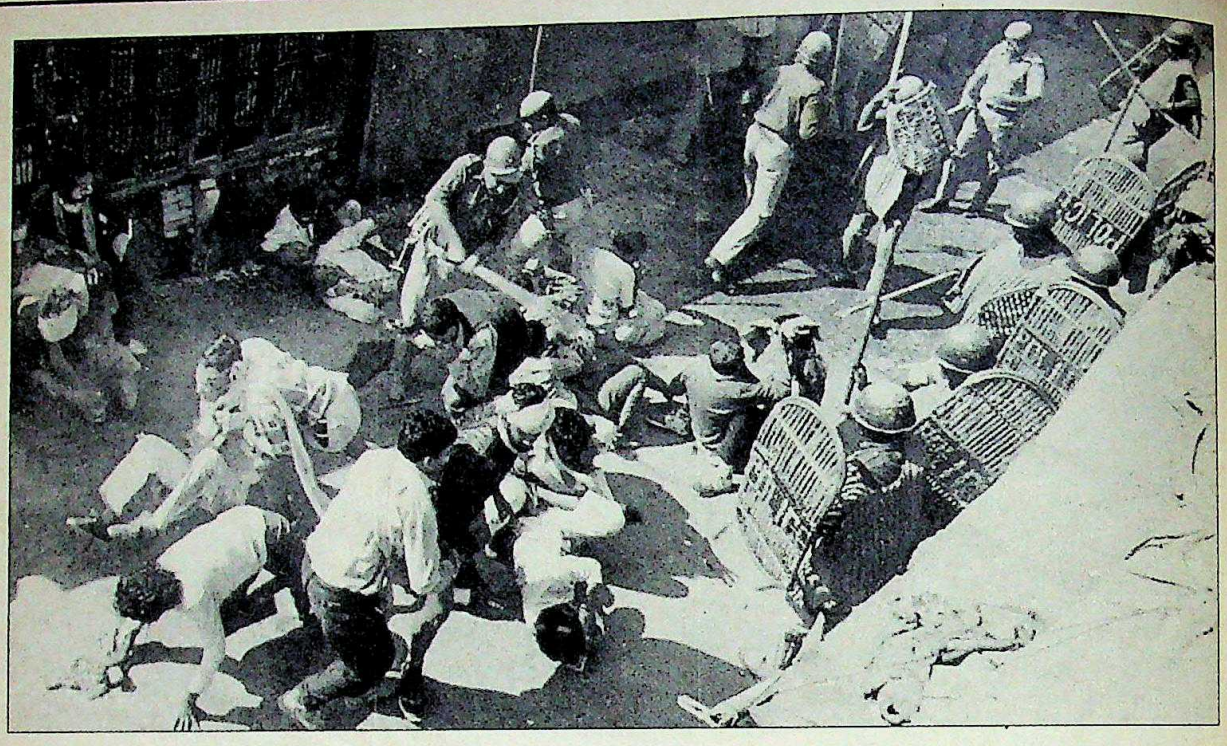

कार सेवकों पर लाठीचार्ज

28 अगस्त को ही हो गई थी. तब यादव ने भाजपा के 30 अक्तूबर के अयोध्या कार्यक्रम के खिलाफ होने वाली 32 सद्भावना रैलियों में से पहली रैली को संबोधित किया. लेकिन तब तक भाजपा ने रुख कड़ा कर लिया था. राम जन्मभूमि विवाद सुलझाने के लिए यादव की 3 फरवरी को बुलाई गई सर्वदलीय बैठक का उसने बहिष्कार कर दिया. अंततः 23 और 24 जून को हरिद्वार में संत सम्मेलन ने 30 अक्तूबर को अयोध्या में कार सेवा करने का निर्णय लिया तो यादव ने और कड़ाई बरतने का निश्चय कर लिया. इस तरह युद्ध शुरू हो गया.

यादव और वी.पी. सिंह के बीच भी तकरार के कई ऐसे मौके आए जिनसे संबंधों में अलगाव के संकेत दिखने लगे. खबर थी कि वी.पी. सिंह भाजपा अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी की रथयात्रा को उत्तर प्रदेश में अयोध्या तक निर्बाध जाने देने के इच्छुक थे. लेकिन यादव अड़ गए. उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि आडवाणी को राज्य में घुसने नहीं दिया जाएगा. वी.पी. सिंह तो आडवाणी और दिल्ली की जामा मस्जिद के इमाम सैयद बुखारी दोनों से बेहतर संबंध बनाए रखने की कोशिश में थे पर यादव ने वी.पी. सिंह के मुकाबले कहीं अधिक कठोर कार्रवाई का निर्णय ले लिया.

राज्य भाजपा के अध्यक्ष राजेंद्र कुमार गुप्त ने यह कहकर मामला और गरमा दिया कि भाजपा तो नरम रुख अपनाती पर मुलायम ने अड़ियलपन से समझौते की संभावनाएं मटियामेट कर दीं.

सबसे बड़ी बात यह है कि गोंडा जिले के सांप्रदायिक दंगों के लिए यादव की पहले ही आलोचना हो चुकी थी. गोंडा के दंगों में कम-से-कम 50 लोगों की मौत हुई. यह आरोप भी लगा कि यादव के करीबी, गोंडा के सांसद मुन्नन खां ने दंगे भड़काने में अहम भूमिका निभाई. यादव अपने ऊपर लगे इस दाग को धो नहीं सके.

टकराव और कड़ाई के कारण ही यह समस्या इतनी विषम और जटिल होती चली गई. वैसे, 30 अक्तूबर को कार सेवकों पर हुए पुलिस हमले के बाद मुख्यमंत्री ने एकाएक पैंतरा बदलकर भाजपा और विहिप के प्रतिनिधियों के साथ बातचीत की और 5 नवंबर को विवादास्पद स्थल की परिक्रमा की अनुमति दे दी. इतने हंगामे और खूनखराबे के बाद हुए इस समझौते से यह बात उठी कि मुख्यमंत्री अगर गंभीरतापूर्वक विचार करते तो खूनखराबा रोका जा सकता था.

इस पूरे घटनाक्रम से साफ दिखता है कि यादव और वी.पी. सिंह अयोध्या मसले के नाम पर एक-दूसरे का इस्तेमाल कर अपने लिए दूसरी पिछड़ी जातियों और मुसलमानों के वोट बैंक को सुरक्षित कर लेना चाहते थे.

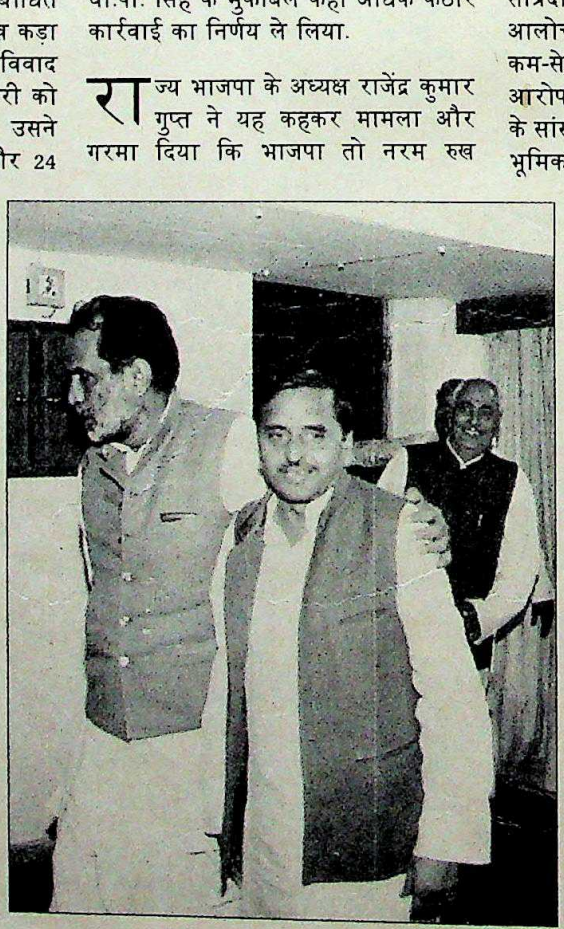

मुलायम सिंह यादव के साथ चंद्रशेखर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी अखबार

कहर बरपा

एक तरफ बाबरी मस्जिद की घेराबंदी हुई तो दूसरी तरफ अखबारों पर कहर बरपा. वजह: राज्य सरकार के विचार में हिंदी अखबार मामले को बढ़ा-चढ़ाकर और गैरजिम्मेदाराना ढंग से पेश कर रहे थे. दूसरी तरफ, 30 अक्तूबर को कार सेवा के दिन से शुरू हुए दमन को समाचार संगठनों ने प्रेस की आजादी पर हमला माना.

कुछ हिंदी दैनिकों ने खबरों को बेशक इस तरह छापा कि सांप्रदायिक उन्माद भड़के. मसलन सुर्खियों में दावा किया गया कि कार सेवा में 100 आदमी मारे गए. 30 अक्तूबर को सरकार ने 'लखनऊ मेल', 'दैनिक जागरण' के दो विशेष संस्करणों और 'स्वतंत्र चेतना' की बिक्री पर रोक लगा दी. 'दैनिक जागरण' (लखनऊ) के स्थानीय संपादक और दो संवाददाताओं के खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज कर दिए गए. 'स्वतंत्र भारत' के संपादक राजनाथ सिंह और उसके 25 कर्मचारियों ने गिरफ्तारी की आशंका से अग्रिम जमानत ले ली. पत्रकार संघ के महासचिव जे.पी. शुक्ला के अनुसार, "अखबारों का मुंह बंद करने की ऐसी कोशिशें हमने पहले कभी नहीं देखी."

हिंदी अखबारों पर अगर आचार संहिता को न मानने के आरोप हैं, तो सरकार ने भी दमन और वारदातों पर परदा डालने में कोई कसर नहीं छोड़ी.

मुलायम सिंह यादव ने बयान दिया कि मस्जिद को कोई भी हाथ नहीं लगा सका. 2 नवंबर को सरकार ने कहा कि सिर्फ पांच लोग मारे गए जबकि संवाददाताओं ने 24 लाशें गिनी. दो अखबारों ने झूठी खबर छाप दी कि मस्जिद की मरम्मत कर दी गई है. कुल मिलाकर अखबार गैर-जिम्मेदार थे तो सरकार दमनकारी. —दिलीप अवस्थी

लेकिन यादव ने 30 अक्तूबर को अयोध्या में पहुंचने वाले अपनी ही जाति के लोगों की संख्या के बारे में गलत अनुमान लगा लिया. सचाई तो यही है कि अयोध्या में 2 नवंबर को पुलिस की गोलियों से मारे जाने वाले 12 लोगों में से अधिकतर यादव थे. इटावा से आए एक किसान, 45 वर्षीय राम अवतार यादव के शब्दों में, "एक कुल कलंक के कारण इनमें से कोई भी राम के लिए जान देने के सौभाग्य से पीछे क्यों हटे?" उनका दावा था कि मुख्यमंत्री के निकट संबंधी भी कार सेवा के लिए आए थे पर भय और पारिवारिक निष्ठा के कारण उन्होंने चुप्पी साधने में ही भलाई समझी.

इसके अलावा राज्य के मुसलमान भी अपने आप को अलग-थलग महसूस करते रहे. लखनऊ के 42 वर्षीय आफताब हुसैन कुरैशी के अनुसार, "यादव ने हमारे दिलों में यह बात उतार दी कि हमारा अस्तित्व खतरे में है. आज हममें से अधिकांश लोग ऐसा ही महसूस कर रहे हैं." वैसे, मुसलमान नेता आम नागरिकों से अलग सोचते हैं. वे यादव का समर्थन करते हैं. बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी के संयोजक ज़फरयाब जिलानी कहते हैं, "यादव ने देश के किसी भी व्यक्ति की तुलना में मुसलमानों के लिए ज्यादा काम किया है. उनके रुख के कारण उठा सांप्रदायिक तनाव तो समय के साथ खत्म हो जाएगा." श्रममंत्री मुहम्मद आज़म खां और मुस्लिम अधिवक्ता फोरम के अध्यक्ष अब्दुल मन्नान सहित कुछ और मुसलमान नेता भी यादव का समर्थन करते हैं.

इन तमाम आरोपों और वाहवाहियों का असर राज्य के हर हिस्से पर पड़ा है. लखनऊ जैसे शहर में भी हिंसा का तांडव खेला गया. आजादी के बाद इस शहर में ऐसी बातें कभी नहीं देखने में आई थीं. अयोध्या आंदोलन जब चरम पर था तो आधे से अधिक राज्य कर्फ्यू में था और प्याज 15 रु. किलो तथा रसोई गैस के सिलेंडर 100 से बढ़कर 200 रु. अधिक देने पर ही मिल रहे थे.

इन आरोपों से भी स्थिति और बदतर हुई कि गिरफ्तार किए गए 1.74 लाख कार सेवकों में से ज्यादातर को कामचलाऊ जेलों में ठूंस दिया गया जहां की हालत भयावह थी. खबर तो यह भी है कि 26 अक्तूबर को पुलिस गोली चलाए जाने के बाद करीब 10 कार सेवक उन्नाव जेल से 'गायब' हो गए. इन बातों में रत्ती भर भी सचाई हो तो यादव के लिए राजनैतिक अंधकार न सही, सदा का सिरदर्द जरूर पैदा हो गया है.

फिलहाल यही लग रहा है कि यह सब मुलायम के सिर के ऊपर से गुजर चुका है. वैसे, इस जिद्दी मुख्यमंत्री ने खुद को एक कोने में धकेल ही दिया है. राजनैतिक रूप से वे अब अछूत करार दिए जा रहे हैं. राज्य की स्थिति खस्ताहाल है. पर यादव नई दिल्ली में गद्दी बचाने की उधेड़बुन में लगे रहे. अब यादव के सरपरस्त प्रधानमंत्री चंद्रशेखर भी उन जैसे खुद के दुश्मन नेता को सहारा देने के बजाए सत्ता के शीर्ष से ही माहौल का जायजा लेना पसंद करेंगे.

आंकड़ों का खेल

कुल सीटें: 425 — **वर्तमान स्थिति: 422**

जनता	इंका	भाजपा	भाकपा	माकपा	बसपा	अन्य
210	94	55	6	2	13	42

संभावित ध्रुवीकरण

जनता दल की घटकवार संख्या: वे जो मुलायम सिंह यादव का साथ छोड़कर जा सकते हैं उनकी संख्या कोष्ठक में:

लोकदल (अ)	जनमोर्चा	जनता पार्टी	लोकदल (ब)
72 (60)	34 (30)	20 (8)	84

यादव का दावा है कि उनके विश्वास मत के समर्थन में ये सदस्य भी मतदान करेंगे: भाकपा, माकपा, बसपा के सभी विधायक और 14 निर्दलीय.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्यों की साझा सरकारें

शिखर पर सुविधा के समीकरण

जनता दल के विभाजन के कारण गुजरात, बिहार, हरियाणा और राजस्थान की सरकारें मुश्किल में, संकट से उबरने के दिलचस्प प्रयास

जनता दल का विभाजन हो जाने, चंद्रशेखर गुट द्वारा इंका का समर्थन लेने और भाजपा द्वारा 'एकला चलो' की नीति अपना लेने से गुजरात, बिहार, हरियाणा और राजस्थान की सरकारें मुश्किल में फंस गई हैं. इन राज्यों के मुख्यमंत्री राजनैतिक जोड़तोड़ और तिकड़मों के जरिए अपनी कुर्सी बचाने में लगे हुए हैं क्योंकि उनके विरोधियों ने उन्हें उलटने की कोशिश शुरू कर दी है. इसका नतीजा अस्थिरता और नए राजनैतिक गठजोड़ के रूप में सामने आएगा.

गुजरात में सरकार से भाजपा के अलग हो जाने के बावजूद चिमनभाई पटेल इंका का दामन थामे कुर्सी पर जमे हुए हैं. पटेल को 'गुरुघंटाल दलबदलू' कहा जाता है क्योंकि 1974 में उन्होंने दलबदल कर घनश्याम ओझा की सरकार गिरा दी और खुद मुख्यमंत्री बन गए थे.

पिछले पखवाड़े चिमनभाई ने 1974 को दोहरा दिया. भाजपा का समर्थन वापस लेने के बाद जिस दिन उन्हें विधानसभा में अपना बहुमत साबित करना था, उन्होंने इंका का खुलेआम समर्थन मांगकर न सिर्फ अपने पार्टी नेताओं, विरोधियों और समर्थकों को गुमराह किया बल्कि चंद्रशेखर की अगुआई में जनता दल से अलग हुए गुट और इंका के बीच राष्ट्रीय स्तर पर तालमेल की नींव भी रख दी.

पूर्व आईपीएस अधिकारी जसपाल सिंह एकमात्र पार्टी विधायक थे जिन्होंने आसन्न तूफान का अनुमान लगा लिया था और उन्होंने चिमनभाई सरकार के खिलाफ वोट दिया. लेकिन वी.पी. सिंह के वफादार, जाने-माने असंतुष्ट प्रवीण सिंह जाडेजा ने चिमनभाई के पक्ष में वोट दिया क्योंकि प्रधानमंत्री ने खुद उनसे इसके लिए कहा था. बाद में चिमनभाई जब चंद्रशेखर के साथ हो गए तो जसपाल ने कहा, "इससे मेरी बात की पुष्टि हो गई. मैं जानता था चिमनभाई वी.पी. सिंह की पीठ में छुरा घोंपने की योजना बना रहे हैं."

बताया जाता है कि मुख्यमंत्री और कांग्रेस का समझौता उनके पुराने सहयोगी शरद पवार के मार्फत हुआ. सौदे के अनुसार, कांग्रेस ने इस शर्त पर चिमनभाई को समर्थन देना मंजूर किया कि वे गुजरात के जनता दल सांसदों को वी.पी. सिंह के खिलाफ वोट देने के लिए राजी करेंगे. और इस तरह 1 नवंबर को चिमनभाई की सरकार गिरने से बच गई.

बाद में चिमनभाई जब चंद्रशेखर को सत्ता में लाने के लिए दिल्ली में लॉबिइंग कर रहे थे तो खबर आई कि उनके कुछ मंत्रिमंडलीय सहयोगी उनका साथ छोड़ने वाले हैं. वे उन्हें पटाने के लिए तुरंत अहमदाबाद पहुंचे. और तटस्थ पार्टी

हर्ष शाह

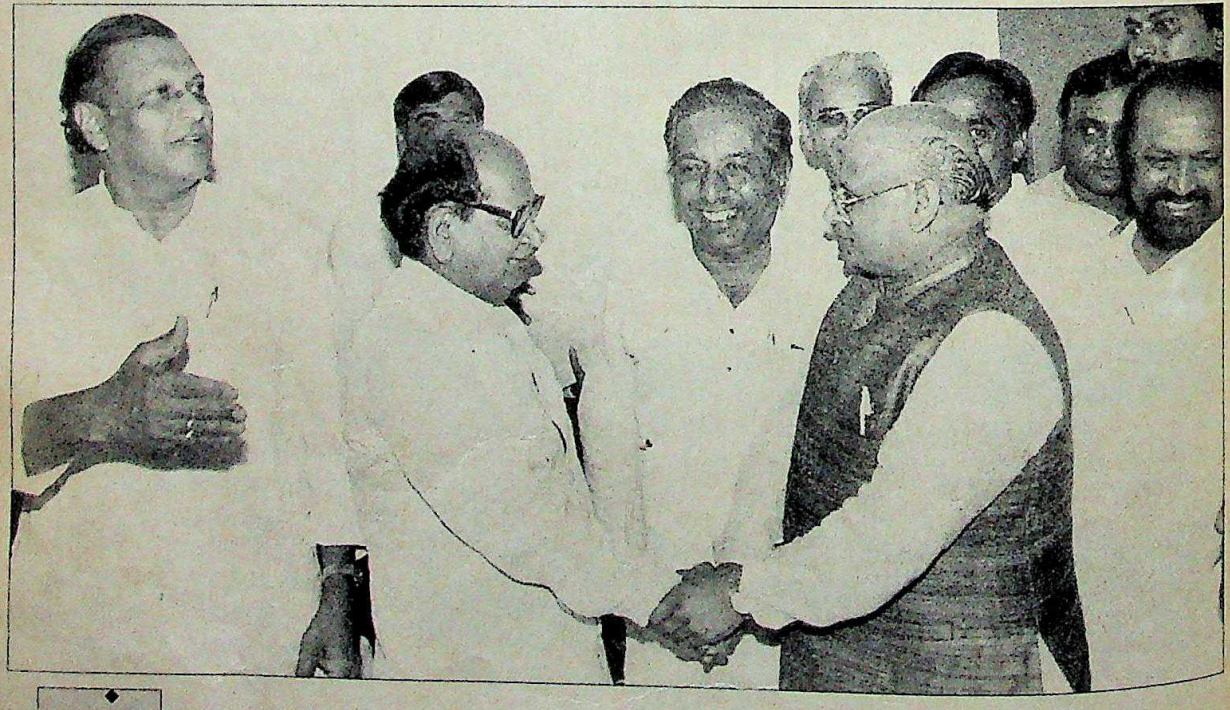

इंका का समर्थन मांगकर चिमनभाई ने न सिर्फ अपने पार्टी नेताओं और विरोधियों को गुमराह किया बल्कि चंद्रशेखर और इंका के बीच तालमेल की नींव भी रख दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधायकों को वी.पी. सिंह गुट में जाने से रोकने के लिए अपने मंत्रिमंडल के विस्तार की घोषणा कर दी. उधर, बोम्मई ने पार्टी विरोधी गतिविधियों के लिए चिमनभाई को पार्टी से निकाल दिया. इससे असंतुष्टों का उनके खेमे से जल्दी ही निकलना तय है. ऐसे विधायकों की संख्या पांच से ज्यादा नहीं है (जिसमें जसपाल और जाडेजा शामिल हैं) जबकि चिमनभाई की सरकार गिराने के लिए उनके समर्थन वाले 111 में से 21 विधायकों का निकलना जरूरी है. बहरहाल, कांग्रेस की दया पर शासन में होने के कारण चिमनभाई की स्थिति कमजोर है और वे शरद पवार की तर्ज पर अपने समर्थकों सहित कांग्रेस में शामिल होने को तैयार बताए जाते हैं. उधर, भाजपा उन्हें अपदस्थ करने के लिए छात्रों की मदद से नवनिर्माण जैसा आंदोलन छेड़ने की सोच रही है.

पर जेपी आंदोलन के वाहक बिहार के मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव, जो हाल की लड़ाई में वी.पी. सिंह के साथ हो गए हैं, अपनी सरकार को बचाने की पुरजोर कोशिश कर रहे हैं. यादव ने अपने मंत्रिमंडल के दूसरे नंबर के सहयोगी रघुनाथ झा, और धनबाद के माफिया सूर्यदेव सिंह समेत 10 विधायकों को पार्टी से निष्कासित करवा दिया. ये सभी, जिनमें सात राजपूत हैं, चंद्रशेखर के बहुत करीबी माने जाते हैं. यादव ने झा को मंत्रिपरिषद से बरखास्त भी कर दिया था. जेपी आंदोलन के पूर्व कार्यकर्ता और चंद्रशेखर के घनिष्ठ सहयोगी विधायक विजय कृष्ण ने कहा, "एस.आर. बोम्मई की कार्रवाई आत्मघात के सिवा कुछ नहीं है. उन्हें ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं है."

यादव को सत्ता से हटाने के लिए झा और दूसरे निष्कासित सदस्यों ने असंतुष्टों की स्थिति को मजबूत बनाना शुरू कर दिया है. एक निष्कासित नेता ने कहा भी, "हम उतनी ताकत बटोर लेंगे जितनी यादव को हटाने के लिए जरूरी है." पिछले पखवाड़े झा ने 51 विधायकों के दस्तखत हासिल कर लिए थे जिसका मकसद लालू को अपदस्थ करना था. असंतुष्टों को अब 122 सदस्यीय विधायक दल से कम-से-कम 60 विधायकों के निकल आने की उम्मीद हो गई है.

पार्टी तोड़ने के पीछे इंका का हाथ है. महज 71 विधायकों वाली इंका विकल्प तो नहीं हो सकती लेकिन वह उथल-पुथल तो करा ही सकती है. वरिष्ठ इंका नेता और विधान परिषद के सदस्य कमलनाथ सिंह ठाकुर ने, जो विपक्ष के नेता जगन्नाथ मिश्र के विश्वासपात्र हैं, ने कहा, "जनता दल और यादव ने खुद ही विभाजन की शुरुआत की है. वे अपने ही जाल में फंस गए हैं."

पर्यवेक्षकों का मानना है कि यदि 60 विधायक जनता दल से निकल आए तो कांग्रेस की मदद से किसी भी दिन अविश्वास प्रस्ताव के जरिए विधानसभा में यादव सरकार को गिराया जा सकता है. 39 विधायकों वाली भाजपा ने पहले ही अपना समर्थन वापस ले लिया है और निर्दलीय जिनकी संख्या 30 है और जिसमें से 22 यादव को समर्थन दे रहे थे, बंट गए हैं. दूसरी तरफ झाकपा (22 विधायक), माकपा (6 विधायक) और झारखंड मुक्ति मोर्चा (19 विधायक) लालू का पूरा साथ दे रहे हैं. लेकिन झारखंड मुक्ति मोर्चा का समर्थन पक्का नहीं माना जा सकता.

लेकिन बहुत कुछ जद के दिग्गज नेता रामसुंदर दास के रवैए पर निर्भर करेगा जिन्हें लालू ने विधायक दल के नेता के चुनाव में पटखनी दे दी थी. दास ने कहा है कि वे सिर्फ पार्टी के प्रति वफादार हैं किसी व्यक्ति के प्रति नहीं. यानी लालू हर तरफ से संकट में घिरे हुए हैं. बिहार लोकदल के महासचिव लक्ष्मी साहू ने कहा, "उनके अब गिने-चुने दिन ही बचे हैं."

उधर हरियाणा में, यह निश्चित है कि हुकुम सिंह को मुख्यमंत्री पद खाली करने के लिए कहा जाएगा, जिसे उन्होंने ओमप्रकाश चौटाला के लिए सुरक्षित रखा है. वैसे, चौटाला के खिलाफ विद्रोह के आरोप में जनता दल से निष्कासित किए गए जिन

रोहित जैन

साझा सरकार से जनता दल के निकल जाने के बाद भी भैरों सिंह शेखावत मुख्यमंत्री की कुर्सी पर डटे हुए हैं और चंद्रशेखर गुट बड़ी बहादुरी से उनका साथ दे रहा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

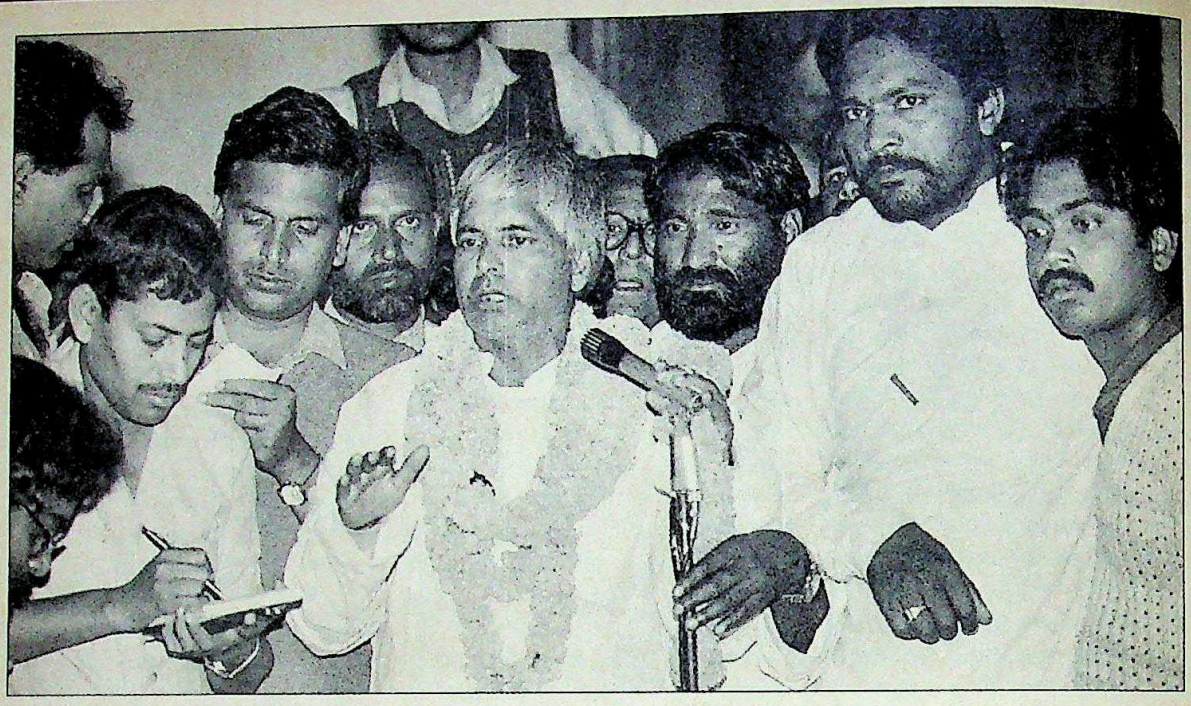

यदि 60 विधायक जनता दल से निकल आए तो कांग्रेस की मदद से किसी भी दिन विधानसभा में लालू यादव की सरकार को गिराया जा सकता है

आठ विधायकों ने जनहित मोर्चा बना लिया था उनका निष्कासन आदेश रद्द करके बोम्मई ने आतंक जरूर पैदा कर दिया है. विधानसभा के मौजूदा 86 सदस्यों में जनता दल के खाते में 56 सदस्य हैं. इनमें 18 असंतुष्ट माने जाते हैं. लेकिन इंका के पांच विधायकों का समर्थन मिल जाने से राज्य में चौटाला के शासन का दूसरा दौर शुरू होने की उम्मीद है.

भाजपा शासित राजस्थान में तो राजनैतिक परिदृश्य और भी आश्चर्य-जनक है. साझा सरकार से जनता दल के निकल जाने के बाद भी भैरों सिंह शेखावत मुख्यमंत्री की कुर्सी पर डटे हुए हैं. मजेदार बात तो यह है कि दिल्ली में इंका का दामन थामने वाले चंद्रशेखर गुट ने बड़ी बहादुरी से शेखावत मंत्रिमंडल को गिरने से बचाया. यहां तक कि वी.पी. सिंह और अजित सिंह के समर्थक कुछ विधायक भी अब भाजपा सरकार का समर्थन कर रहे हैं.

दिग्विजय सिंह की अगुआई में राजस्थान जनता दल से अलग हुए 26 विधायकों के गुट ने 8 नवंबर को विधानसभा में शेखावत के पक्ष में वोट दिया. और इस तरह मुख्यमंत्री को सदन के कुल 200 सदस्यों में से 116 का विश्वास मत हासिल हुआ. विरोध में 80 मत पड़े.

केंद्र में भाजपा के समर्थन वापस लेने के साथ ही राजस्थान में भी सदस्यों के जोड़तोड़ का काम शुरू हो गया था. भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष रामदास अग्रवाल और महामंत्री घनश्याम तिवारी के अलावा पार्टी के प्रदेश सचिव और मुख्यमंत्री के दामाद नरपत सिंह राजवी ने भी इसमें अहम भूमिका निभाई. और कुछ ही दिनों में नौ में से छह निर्दलीय विधायकों का मेल-मिलाप मुख्यमंत्री से करवा दिया गया.

जोड़-तोड़ का नतीजा यह रहा कि जद में विरोध शुरू हो गया और बागियों की संख्या 26 तक पहुंच गई.

7 नवंबर को तय-सा हो गया था कि मुख्यमंत्री विश्वास का मत प्राप्त करने में सफल होंगे. जनता दल के एक वरिष्ठ नेता ने कहा, "आखिर पूर्व मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी ने शेखावत से अपनी दोस्ती निभा दी और वे अपनी चाल में कामयाब रहे. जोशी ने जनता दल का विभाजन करवा दिया." इस नेता का कहना था कि जोशी बार-बार यह आभास दिलाते रहे कि जद-कांग्रेस गठबंधन से राज्य सरकार बनने वाली है. इसी से जद के कई कांग्रेस विरोधी विधायकों में उग्रता बढ़ती गई. जद विधायक दल की बैठक में भी यह बात उठी तो विधायकों ने कांग्रेस गठबंधन का विरोध किया और कांग्रेस से मिलाप की बढ़ती संभावनाओं ने इन विधायकों को भाजपा के नजदीक पहुंचा दिया. वैसे इनमें से अधिकांश विधायक शेखावत के नजदीकी माने जाते हैं.

दूसरी ओर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता इस बात से नाराज हैं कि हरिदेव जोशी की बयानबाजी की वजह से यह मौका हाथ से निकल गया वरना हम जनता दल को समर्थन देकर सरकार बनवा सकते थे जिसका फायदा अंततः कांग्रेस को ही मिलता. राजस्थान में कांग्रेस को डर भाजपा से है, न कि जनता दल से.

जनता दल से अलग हुए गुट के नेता दिग्विजय सिंह कहते हैं कि विधानसभा चुनाव में हमें कांग्रेस के खिलाफ जनादेश मिला था तो हम आज कांग्रेस के साथ कैसे मिल जाते.

सरकार को सहारा देने वाले सदस्यों को पारितोषिक देने की संभावनाओं पर चर्चा शुरू हो गई है. भाजपा के सभी मंत्रियों से इस्तीफे ले लिए गए हैं और अब जल्दी ही नए मंत्रिमंडल का गठन होगा. शेखावत ने लड़ाई का पहला दौर जीत लिया है. लेकिन केंद्र में सत्ता परिवर्तन के कारण कुल मिलाकर उनका और दूसरे मुख्यमंत्रियों का भविष्य अधर में लटक रहा है.

—उदय माहूरकर, फरबंद अहमद, और ब्यूरो रिपोर्ट.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉक्टर सुमेधा साहनी
एम.बी.बी.एस., एम.डी.

कम तेल के पकवान

कम तेल यानि अधिक तंदरुस्ती

क्या गेहूँ, चावल और सब्जियों में चिकनाई है?

बिल्कुल, कुदरती तौर पर। यह चिकनाई दिखाई तो नहीं देती, लेकिन यह प्रोटीन तथा विटामिनों की तरह ही स्वास्थ्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। समस्या तो तब शुरू होती है जब हम खाना पकाते समय तेल तथा चिकनाई का इस्तेमाल अधिक करते हैं।

चिकनाई तथा सेहत

राष्ट्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद के अनुसार भारतीय खाने में हमारे शरीर की असली ज़रूरत के मुकाबले दुगनी या तिगुनी चिकनाई होती है। कारण यही है कि हम खाना पकाने में बहुत ज़्यादा तेल इस्तेमाल करते हैं। संस्थान चेतावनी देता है कि ज़्यादा तेल शरीर के लिए खासतौर से हृदय के लिए नुक्सानदायक है।

इस समस्या से कैसे बचें

जो चिकनाई आपको अनाज, दालों और सब्ज़ियों से अदृश्य रूप में प्राप्त हो रही है, वही पर्याप्त है। केवल इतना करें कि जिस तेल या वनस्पति से आप अपना भोजन पकाते हैं उसकी मात्रा माप कर इस्तेमाल करें अर्थात परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिए प्रतिदिन केवल दो चम्मच। अधिक तेल या घी का अर्थ है शरीर के लिए कोई न कोई समस्या. भला इस की आवश्यकता ही क्या है। कम तेल से भी बेहद स्वादिष्ट खाना पकाया जा सकता है। इन स्वादिष्ट व्यंजनों को आज़माइए और स्वयं ही देख लीजिए।

कंडा बटाटा नी सूकी भाजी

भारतीय व्यंजनों के साथ परोसा जा सकने वाला हल्का गुजराती व्यंजन ½ किलो आलू (छिलके सहित तीन चौथाई उबालें, छील लें और काट लें); ½ किलो कटे हुए प्याज़; 1 छोटा चम्मच ज़ीरा; चुटकी भर हींग; एक बड़ा चम्मच तेल; नमक; ½ छोटा चम्मच हल्दी; ½ छोटा चम्मच मिर्च पावडर; 1 छोटा चम्मच धनिया पावडर; ½ छोटा चम्मच ज़ीरा पावडर; डेढ़ नींबू का रस

विधि : तेल गर्म करें। ज़ीरा और हींग डाल दें। ज़ीरा चटखना बंद हो जाए तो प्याज़ डाल दें। आंच धीमी कर दें और प्याज हल्के लाल होने तक भूनें। आलू डाल दें। बाकी मसाला भी डाल दें। धीमी आँच पर आलू पूरी तरह तैयार हो जाने तक पकाएं (तीन-चार व्यक्तियों के लिए पर्याप्त)

चना दाल

स्वादिष्ट और आसानी से पकाया जा सकने वाला दक्षिण भारतीय व्यंजन।

½ किलो चने की दाल रात भर भिगो कर रखें। 1 छोटा चम्मच हल्दी; 1 बड़ा चम्मच कटी हुई अदरक; 1 बड़ा चम्मच कटा हुआ लहसुन; ½ कप इमली का पानी, नमक

तुड़का : 3 छोटे चम्मच तेल; 3 तोड़ी हुई लाल मिर्चें, 1 बड़ा चम्मच कटी हुई अदरक; 1 बड़ा चम्मच कटा हुआ लहसुन; 1 छोटा चम्मच ज़ीरा।

विधि : दाल और सारी सामग्री को उपयुक्त पानी डाल कर उबाल लें. पानी उतना ही डालें कि दाल और अन्य सामग्री डूब जाएं। दाल पक जाए लेकिन साबुत रहे. अगर दाल पकने के बाद पानी बच जाए तो गिरा दें। तेल गर्म करें, ज़ीरा डाल दें, ज़ीरा चटखना बंद कर दे तो तुड़के की बाकी सामग्री डाल दें। आधा मिनट हिलाएं और दाल में मिला दें (4-6 व्यक्तियों के लिए पर्याप्त)

मुफ्त

स्वादिष्ट तथा कम तेल युक्त पकवान तैयार करने की विधियां मंगवाने के लिए लिखें, पो.बॉ. नं. 55 नई दिल्ली-110001.

"कम तेल सेहत का साथी सिर्फ़ दो चम्मच हैं काफ़ी"

तिलहनों के बारे में टैक्नालॉजी मिशन द्वारा जन हित में प्रकाशित

ASP-D/TMO/1/HIN/90-91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालाहांड़ी

मसीहा का इंतजार

अब इंका जद को निशाना बनाने के लिए यह मुद्दा उछाल रही

ओडीसा विधानसभा का हाल ही में संपन्न हुआ मानसून सत्र हंगामाखेज रहा. बीजू पटनायक सरकार और इंका के बीच जमकर तकरार हुई.

बहस का मुद्दा था अकालग्रस्त क्षेत्र कालाहांडी. यह क्षेत्र एक अरसा पहले सुर्खियों में था. भूख से मरते माता-पिता अब भी अपने बच्चों को बेच रहे हैं और लोग काफी संख्या में वहां से पलायन कर रहे हैं. मगर अब समाचार माध्यमों ने भी इस ओर से मुंह मोड़ लिया है, नेताओं का रवैया तो जाहिर है ही. तमाम शोरशराबे के बावजूद यहां कोई ठोस उपाय नहीं किए गए, राहत भी पहुंचाई गई तो अनमने ढंग से. और तो और, यहां की भयानक गरीबी को भी अक्सर राजनीति के खेल का मोहरा बनाया जाता रहा है.

कालाहांडी के मामले पर भरपूर लीपापोती की गई है. आज विपक्ष में बैठी इंका को लग रहा है कि इस मुद्दे को उछालकर वह मतदाताओं के बीच अच्छी पैठ बना सकती है. और सत्तारूढ़ जनता दल पसोपेश में दिखता है क्योंकि जब वह विपक्ष में था तब उसने इसे चुनावी मुद्दा बनाकर खूब भुनाया था.

और प्रदेश इंका अध्यक्ष गिरधारी गोमांगो की अगुआई में इंका वास्तव में इस मामले को लेकर सड़कों पर उतर आई है. इसके लंबे आंदोलन शुरू होने का खतरा उत्पन्न हो गया है. कालाहांडी की उपेक्षा से संबंधित याचिकाएं आज राज्य के कई शहरों में दाखिल हो रही हैं.

एक जमाने में इंका कालाहांडी के मामले में लापरवाह नजर आती थी तो आज बीजू पटनायक. वे कहते हैं, "कालाहांडी के हालात सुधर रहे हैं." उधर विपक्ष के नेता बसंत कुमार बिस्वाल का कहना है, "कालाहांडी के हालात बदतर होते जा रहे हैं."

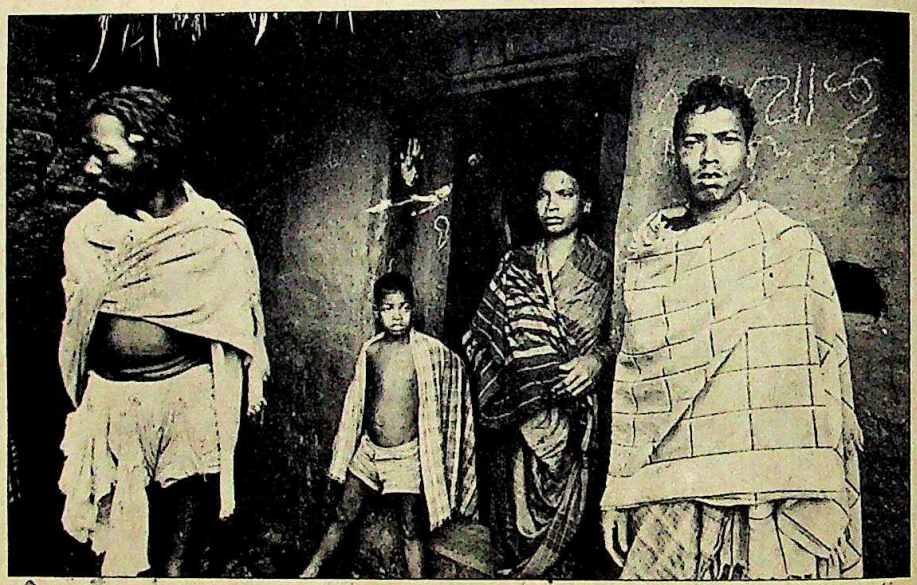

कालाहांडी के लोग (ऊपर); बीजू; और भक्तचरण (नीचे): छत्तीस का रिश्ता

कालाहांडी की उपेक्षा के आरोप से बचने के लिए भक्तचरण दास अब बीजू पटनायक पर दोष मढ़ रहे हैं

बहरहाल, जनता दल इस मुद्दे पर विभाजित हो गया है. बीजू पटनायक और कालाहांडी से सांसद और हाल तक केंद्रीय खेल उपमंत्री रहे भक्तचरण दास के बीच ठन-सी गई लगती है. भक्तचरण अब जनता दल के चंद्रशेखर गुट से जा मिले हैं. वे शिकायत के लहजे में कबूलते हैं, "कालाहांडी के लिए बहुत कुछ किया जाना बाकी है. वहां हालात सुधरे नहीं हैं." लेकिन इस ईमानदार स्वीकारोक्ति के बावजूद बीजू पटनायक से उनके संबंध सुधरे नहीं हैं. पटनायक तो राजनीति की जमीन पर भक्तचरण को अपने समकक्ष खड़ा देखना नहीं चाहते.

वैसे, भक्तचरण ने अपनी छवि खुद भी खराब की है. पहले तो उन्होंने विपक्ष के विधायक के रूप में खुद को कालाहांडी के मसीहा के रूप में खूब प्रचारित किया. लेकिन इसके बाद वहां के लोगों के उद्धार के लिए उन्होंने कुछ नहीं किया. उन पर आरोप है कि केंद्रीय मंत्री बनने के बाद वे अपनी ही इस मांग को भूल बैठे कि कालाहांडी को विशेष दर्जा मिलना चाहिए. इंका और मुख्यमंत्री के समर्थकों ने उन पर आरोप लगाया है कि उनके करीबी लोगों ने कालाहांडी पहुंचने वाली राहत सामग्री हड़पने की कोशिश की और राहत कार्यक्रमों को ठप करने और उनमें बाधा पहुंचाने का काम किया.

इस मुद्दे को निजी फायदे के लिए भुनाने के वास्ते भी भक्तचरण की आलोचना की जाती रही है. लोकसभा का चुनाव जीतने के बाद विधानसभा की जो सीट उन्होंने खाली की, वह भी उनके भाई अजीत दास को ही दी गई. अपने निकट सहयोगी बिजोय दास को भी उन्होंने राज्यसभा में मनोनीत करवा लिया. और तो और, अजीत दास ने कालाहांडी के ही भवानीपटना में एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

KYOCERA

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याशिका के सरल कम्पैक्ट कैमरे

क्योंकि आपको चाहिये सुन्दर फ़ोटो, झंझट बिना, तकलीफ़ बिना!

MF-2 सूपर W/सेल्फ़ टाइमर

क्वालिटी याशिका की, मगर दाम वाजबी। 35mm फ़ारमैट। बड़ा, प्रकाशित व्यूफ़ाइन्डर, बिल्ट इन फ़्लैश, आसान लोडिंग। "टॉप आई" Cds सेन्सर की मदद से हर फ़ोटो सुन्दर।

नया इलेक्ट्रो 35 AF-मिनी

पॉकेट साइज़, पूरा ऑटोमैटिक। ऑटो फ़्लैश, डे-लाइट फ़्लैश और नो-फ़्लैश सुविधा के साथ। सरल, कम दाम। कैमरों में नया विजेता।

ELECTRO 35
AF-mini

MF-2 SUPER

बस, कहिये "स्मायल प्लीज़"... और दबाइये बटन!

कैमरा हो-तो

याशिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

KYOCERA CORPORATION. Optical Equipment Division, 27-8, 6-chome Jingumae, Shibuya-ku, Tokyo 150, Japan

"YASHICA" is a trademark of KYOCERA CORPORATION.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेषज्ञों के अनुसार ए
व्यापारियों के लिए एक ठोस

हिंदुस्तान मोटर्स लाए हैं एम्बैसेडर नोवा। आपकी जानी-पहचानी एम्बैसेडर का वही आराम, वही सुरक्षा, वही विलासपूर्ण जगह—मगर साथ ही चलाने का भरपूर नया आनंद।

अनुभव कीजिए इसका नया स्मूथराइड सस्पेन्शन-हिलना-डुलना कम करने के लिए ऐंटी-रोल बार्स, और बेआवाज़ बॉल जॉइंट जिनकी देखभाल तक न करनी पड़े। नए मैटेलास्टिक बुश जिनसे झटके-धचके महसूस न हों। चलिए, बाज़ार की ऊँच-नीच में एक चीज़ तो है जो बराबर चलेगी।

अब लगाइए इसके नए डबल सेफ़्टी ब्रेक। दोहरी सुरक्षा के लिए विशेष टैंडेम मास्टर सिलिंडर, और हर एक्सिल के लिए अलग सर्किट—यानी एक काम करना बंद कर दे तो दूसरा संभाल ले। व्यापार में जोखिम होगा, इसमें कोई जोखिम नहीं।

आइए इसके नए टचलाइट स्टेयरिंग सिस्टम पर – विशेष हैलिकल रैक और पिनियन व्यवस्था से गाड़ी घुमाने फिराने की आश्चर्यजनक आसानी, और घुमाव भी पूरे 10.8 मीटर का! उस पर से एर्गोनॉमिक तकनीक से सुधारा गया स्टेयरिंग कॉलम, जिससे आप ज़रा भी हरकत से जिधर चाहें गाड़ी घुमा लें।

और नए ईज़ीशिफ़्ट क्लच में अब एक ऐसा डायफ़्राम लगा है जिससे गेयर बदलना पहले से कहीं ज़्यादा सरल हो गया है।

महसूस कीजिए इसकी नई फॉर्म्ड वायर स्प्रिंग सीटों का बेजोड़ आराम। ऊपर से बुरे से बुरे मौसम का सामना करने के लिए 12 इंच (30 से.मी.) वाइपर और नए डिज़ाइन की वैदर स्ट्रिप्स। अतिरिक्त सुरक्षा के लिए अधिक शक्तिशाली हैड लैंप, जो अंधेरी राहों में आपका मार्गदर्शन करें। और सबसे बढ़कर, पहले से बेहतर काब्युरेटर जो पहले से ज़्यादा ईंधन क्षमता दे।

तो यह है नई एम्बैसेडर नोवा – आपके व्यापार के लिए एक आवश्यक चल सम्पत्ति। ज़रा चलाकर तो देखिए, खुद ही समझ जाएंगे।

AMBASSADOR
NOVA

चलाकर देखिए एक बिलकुल नया अहसास

नया ईज़ीशिफ़्ट क्लच – गे
बदलना, इतना आसान कि
आप मज़े से हर प्रतिद्वन्द्वी को
पछाड़ दें।

TOUCHLITE STEERING
DOUBLE SAFETY BRAKES
SMOOTHRIDE SUSPENSION
Easyshift Clutch

Contract.HMA 22321 HIN E

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

HM का बदलाव आपके अनुकूल

3.2 घन मीटर की जगह-मंडी की हलचल के बीच आपका निजी कमरा, शांत व आरामदेह।

साई एम्बैसेडर नोवा ठोस सम्पत्ति साबित होगी

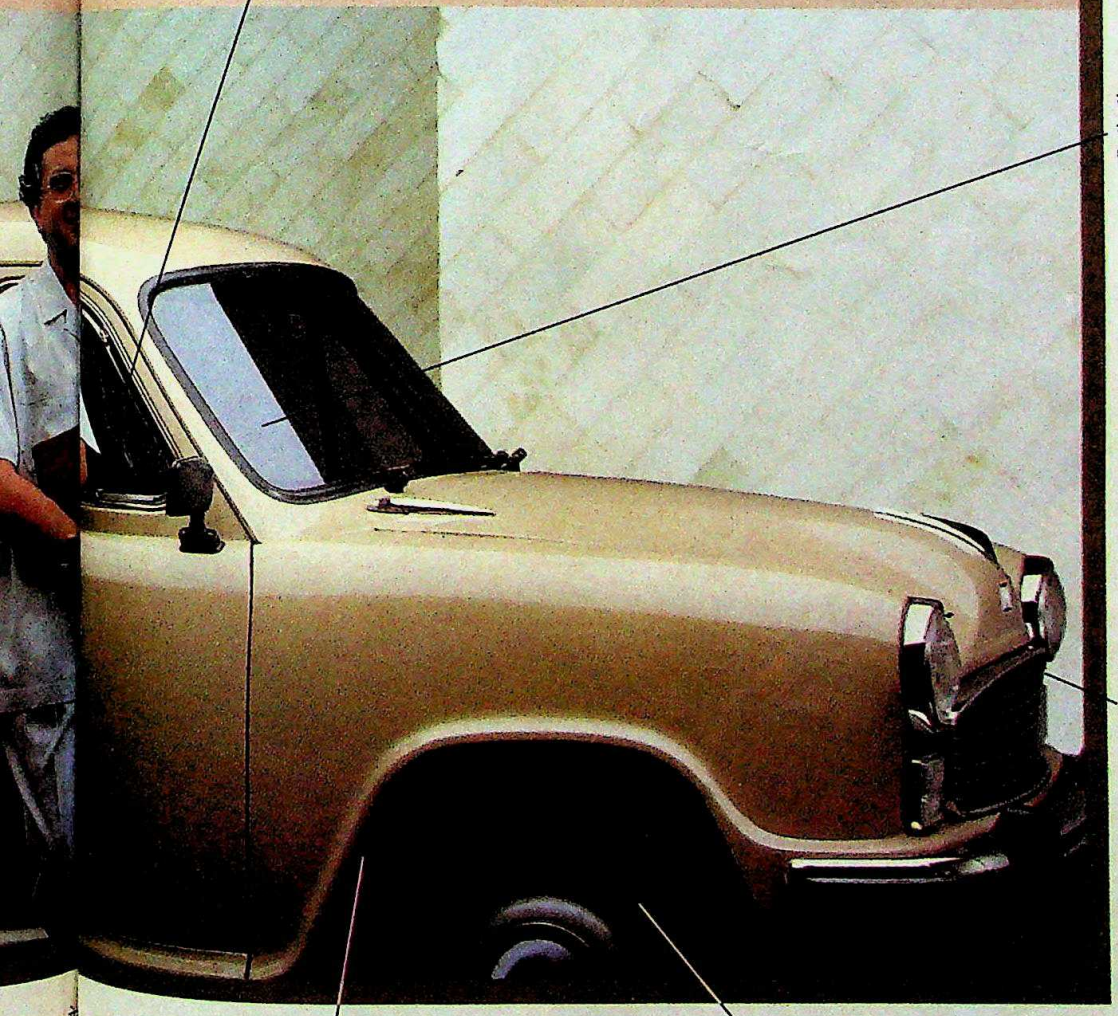

नए टचलाइट स्टेयरिंग से जटिल मोड़ों पर भी आपका नियंत्रण बना रहे।

ठोस इस्पाती दीवार में बड़ी से बड़ी विपत्ति का भी सामना करने का दम।

नए स्मूथराइड सस्पेन्शन से समतल आराम। बाज़ार भाव चढ़े या गिरे, आपकी रफ़्तार में कोई कमी न आए।

नए डबल सेफ़्टी ब्रेक से दौड़-भाग में भी सुरक्षा का पूरा इंतज़ाम।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पेश है 8 X 10 कजारिया वॉल और फ्लोर टाइल्स

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

12x12 8x10 8x8 8x4
आकारों में उपलब्ध

TODAGRES स्पेन के सहयोग से

PERFECT FLOORS AND WALLS
Kajaria
कजारिया सिरैमिक्स लिमिटेड
सी-7, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली-110065

• कई रंगों और डिज़ाइनों में • लगाने में आसान (24 घंटों में इस्तेमाल के लिए तैयार) • टिकाऊ • देखभाल की चिन्ता नहीं • सफाई में आसान • कीमत भी बहुत कम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिला के साथ छेड़खानी की कोशिश करके भक्तचरण को बहुत बड़ी मुसीबत में डाल दिया.

इन आलोचनाओं से परेशान भक्तचरण ने बचाव के लिए बीजू पटनायक और सरकार पर इससे भी बड़े आरोप मढ़ दिए. हाल ही में राज्य का दौरा करते वक्त उन्होंने पटनायक पर कालाहांडी की दुर्दशा में इजाफा करने के आरोप लगाए. उनका कहना था, "जिले का कल्याण राज्य सरकार की जिम्मेदारी होती है. पटनायक इसे निबाहने में पूरी तरह नाकाम रहे हैं." उन्होंने घोषणा की कि अगले वर्ष 5 मार्च (बीजू पटनायक के जन्मदिन) को विरोध दिवस के रूप में मनाया जाएगा.

भक्तचरण इन आरोपों का खंडन करते हैं कि उन्होंने कोई घोटाला किया है. वे कहते हैं कि कालाहांडी को विशेष दर्जा दिए जाने की मांग उन्होंने छोड़ी नहीं है. उनके मुताबिक, "मैंने प्रधानमंत्री को भी इस आशय का ज्ञापन दिया है. लकिन ओडीसा सरकार ने अब तक औपचारिक प्रस्ताव भी नहीं भेजा है."

पटनायक और भक्तचरण दोनों ही दोषी हैं. भक्तचरण के पटनायक विरोधी रुख की वजह यह है कि पटनायक ने जिला पार्टी संगठन में उनके लोगों को शामिल करने से इनकार कर दिया. भक्तचरण चंद्रशेखर के आदमी माने जाते हैं. राज्य से बाहरी उनकी इस पहचान के कारण पटनायक उनसे चिढ़ते रहे हैं. दोनों के भीतरी मतभेद पिछले वर्ष तब उजागर हुए जब भक्तचरण ने विधायक के रूप में कालाहांडी की दुर्दशा के लिए सरकार की भर्त्सना शुरू की और पटनायक ने उनसे चुपचाप बैठ जाने को कहा था.

यही नहीं, पटनायक भक्तचरण को उनके ही इलाके में चुनौती देते रहे हैं. पटनायक ने पार्टी जिला अध्यक्ष पद पर भक्तचरण के दावे की अनदेखी करते हुए विधायक सुरेंद्र पतजोशी को नियुक्त कर दिया था. इस पर भक्तचरण ने पटनायक के खिलाफ जबरदस्त मुहिम छेड़ दी. जवाब में पतजोशी ने आरोप लगाया कि जिस समय भक्तचरण को कालाहांडी में राहत सामग्री बांटने के लिए मौजूद रहना चाहिए था, वे एशियाई खेलों का आनंद लेने पेइचिंग उड़ गए. इससे पहले भी उन पर राहत सामग्री के दुरुपयोग का आरोप लगाया जा चुका है.

लेकिन इन राजनैतिक दांवपेंचों से कालाहांडी का उद्धार होगा नहीं. यहां के लोग हमेशा की तरह किसी उद्धारक की प्रतीक्षा कर रहे हैं. —रुबेन बनर्जी

अंतर्कथा

इंद्रजीत बधवार

आईने की सचबयानी

सरकार पर विश्वनाथ प्रताप सिंह की पकड़ कितनी मजबूत है, इस बात का अंदाज लगाने वाले जानकारों और महापंडितों को कहीं दूर झांकने की जरूरत नहीं होनी चाहिए थी. उनके मंत्रिमंडल सचिव विनोद पांडे ही उनकी जय और पराजय का आईना थे. मंत्रिमंडल सचिव नौकरशाही का कुलदेवता होता है. मंत्रिमंडल के सारे फैसले वही लागू कराता है. वह हर मामले पर राजनैतिक नेतृत्व के सामने विभिन्न नीतिगत विकल्पों को प्रस्तुत करता है.

उसकी हैसियत सिर्फ विधान से नहीं बनती, उसकी अपनी प्रशासनिक दक्षता और ईमानदारी भी उसके रसूख का निर्धारण करती है. विनोद पांडे में ये दोनों गुण भरपूर हैं. विनम्र लेकिन कुशाग्र-बुद्धि. अपनी बेलाग स्पष्टवादिता और कार्यशैली की वजह से उनके जितने दुश्मन नौकरशाही के भीतर थे उससे कहीं ज्यादा उद्योगपतियों के तबके में थे. राजस्थान कॉडर के इस कुंआरे आईएएस अधिकारी की क्षमता को परखकर ही राजीव ने उन्हें चुनाव से पहले पंचायती राज कार्यक्रम तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी थी. वी.पी. सिंह के कट्टर समर्थक होने की वजह से पांडे उनकी सरकार में और शक्तिशाली हो गए. 'राजा के पुरोहित' कहे जाने वाले पांडे वे कठोर काम करते थे जो वी.पी. सिंह चाहकर भी खुद नहीं कर सकते थे. हद से ज्यादा शंकालु वी.पी. सिंह अपने मंत्रियों से ज्यादा पांडे पर ही भरोसा किया करते थे.

रेखांकन: प्रणव दत्त

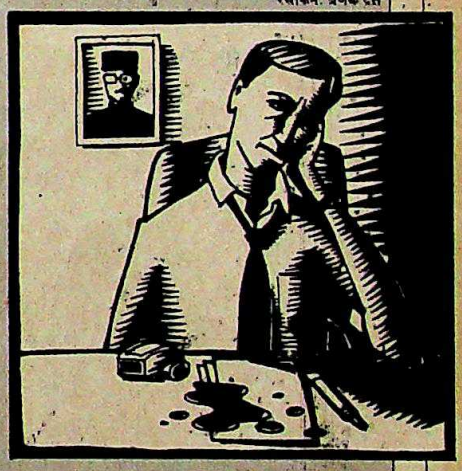

शुरू के पांच महीनों में वी.पी. सिंह शिखर पर रहे, तो पांडे भी. बोफोर्स घोटाले की जांच उन्होंने ही आगे बढ़ाई. भीतरी विरोध के बावजूद उन्होंने वी.पी. सिंह को पंजाब का दौरा करने की सलाह दी. कश्मीर मामलों की समिति की बैठकों में उनकी आवाज में बुलंदी और आत्मविश्वास का पुट होता था. न्यायपालिका की नियुक्तियों को राजनैतिक दबाव से मुक्त रखने का आग्रह उन्होंने ही किया था. और वी.पी. सिंह सरकार को 'खुली सरकार' बनाने का अधिकांश श्रेय उन्हीं को जाता है.

लेकिन वी.पी. सिंह की उपेक्षा का पहला शिकार वे ही बने. पिछले पांच महीनें में वे निष्प्रभावी हो गए थे. अब वे न तो सार्वजनिक क्षेत्र की नियुक्तियों में तेजी ला सकते थे, न विवादास्पद वरिष्ठ नौकरशाहों का तबादला करवा सकते थे. उद्योगपतियों के खिलाफ छापा अभियान शुरू करने के लिए भी वे वी.पी. सिंह को तैयार नहीं कर पाए. न ही 4,000 करोड़ रु. के कर और उत्पादन शुल्क की चोरी के मामले में स्थगन आदेश के खिलाफ कोर्ट में जा पाए. लिहाजा, पांडे ने खुद को ज्योतिष और कविताई में ही सीमित कर लिया.

लेकिन यह पांडे नहीं, वी.पी. सिंह के पतन का परिचायक था. आर्थिक अपराधियों के खिलाफ नया अभियान शुरू करा पाने में उनकी नाकामी इस बात का सबूत थी कि वी.पी. सिंह अपनी पार्टी के भीतरी गुटों और निहित स्वार्थों से समझौता करके कितने बौने हो गए थे. पांडे पर जब चंद्रशेखर, देवीलाल और यहां तक कि जनमोर्चा घटक ने हमला बोला तो वी.पी. सिंह बचाव को नहीं आए. पांच महीने पहले पांडे के दर्दनाक हश्र से ही यह साफ हो गया था कि वी.पी. सिंह राज और राजनीति के दलदल में कितने गहरे धंस गए थे, कि उनकी जन्मकुंडली के सातवें घर में बैठा मंगल भी इस दलदल से उन्हें नहीं उबार पाएगा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी प्यारी

और उसकी प्यारी

आपकी मोटरबाइक.

आपकी प्यारी लाडली. हमेशा.

जिसे आप दिल से चाहते हैं. आपकी ये इमसफ़र हमेशा टिपटॉप रहे इसका आप पूरा-पूरा ध्यान रखते हैं.

पर आपकी इस मोटरबाइक के दिल में कौन है - ये भी आपको पता है क्या ? इसको प्यारा कौन है - मालूम है आपको ?

ये है इसकी चेन.

डायमंड सुपर चेन.

यही है वो चेन जिसे हर मोटरबाइक निर्माता अपनी बाइक में लगाने के लिए चुनता है. अगर वह राजदूत हो या हीरो हौण्डा या यामाहा या टी वी एस सुज़ुकी या कावासाकी बजाज या बुलेट या येज़दी...

लेकिन डायमंड सुपर ही क्यों ?

इसे डायमंड चेन कंपनी, अमेरिका के तकनीकी सहयोग से भारत में बनाते हैं टी आई डायमंड चेन लिमिटेड.

ये दोनों मिलकर ऐसी चेन बनाते हैं जो बहुत कम खिंचती है इसे बाहर से कठोर बनाने के लिए खास प्रक्रिया से गुज़ारा जाता है. इसीलिए ये **ज़्यादा चलती हैं.** अधिक मोटी प्लेटें इसे देती हैं **ज़्यादा मज़बूती.** और बढ़िया लुब्रिकेशन होने से यह **काम करती है - बेआवाज़ बेरोकटोक.**

इन खूबियों के होते हुए, वैसे तो आपको शुरु से मोटरबाइक में लगी डायमंड सुपर बदलनी ही नहीं पड़ती... काफ़ी लंबे समय तक.

लेकिन जब बदलनी पड़े तो **सिर्फ़ डायमंड सुपर चेन ही लीजिए.**

इसके लिए आपकी मोटरबाइक भी आपको प्यार करेगी.

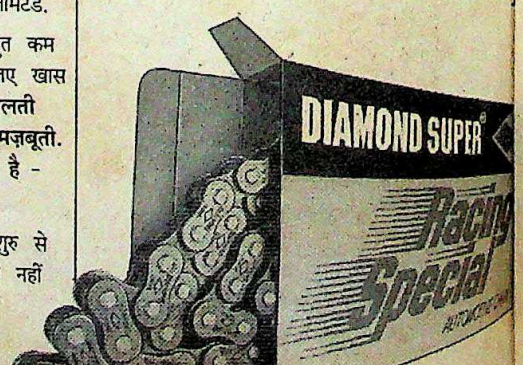

DIAMOND SUPER®

आपकी मोटरबाइक में शुरू में यही, इसलिए हमेशा यही.

एक उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कटाक्षः अजीत नैनन

सनद रहे

मुड़ा डालेः केसरिया बाना ओढ़ने वाली मुखर सांसद **उमा भारती** ने अपने केश. 'सेक्सी संन्यासिन' के रूप में विख्यात इस भाजपा नेत्री ने अपने लंबे केश इसलिए कटा डाले ताकि लड़के का भेष धरकर अयोध्या में कार सेवकों के जत्थे का नेतृत्व कर सकें. पर वे पुलिस की नजरों से न बच सकीं.

बाजार मेंः एक साल देरी से ही सही, अंततः 5 नवंबर को **'बिजनेस ऐंड पोलिटिकल ऑब्जर्वर'** आ पहुंचा. समाचार जगत में ऊंचा स्थान पाने के उद्देश्य से अंबानी को यह अखबार निकालने में नाम से लेकर संपादक मंडली बदलने की अनेकानेक बाधाओं को पार करना पड़ा.

निधनः प्रसिद्ध उद्योगपति, 87 वर्षीय **मालचंद्र दिगंबर गरवारे** का पुणे में दिल का दौरा पड़ने से. कम पढ़े-लिखे गरवारे ने मामूली-सी शुरुआत के जरिए ही विशाल व्यापार साम्राज्य खड़ा किया जिसमें गरवारे पेंट्स, गरवारे प्लास्टिक्स और पोलिएस्टर लिमिटेड कंपनियां शामिल हैं.

रिहाई ठुकराईः विहिप के उपाध्यक्ष **श्रीशचंद्र दीक्षित** ने, जिन्हें अयोध्या में 30 अक्तूबर को कार सेवकों का नेतृत्व करते हुए गिरफ्तार किया गया था. पर उत्तर प्रदेश के इस पूर्व पुलिस महानिदेशक ने हाईकोर्ट के आदेश के बावजूद अपनी रिहाई से साफ इनकार कर दिया.

निधनः हिंदी फिल्मों के जाने-पहचाने अभिनेता, 45 वर्षीय **विनोद मेहरा** का, बंबई में दिल का दौरा पड़ने से. विनोद ने चार शादियां की थीं. इनमें से एक-एक शादी अभिनेत्री रेखा और बिंदिया गोस्वामी से हुई थी. उन्होंने 40 से भी ज्यादा फिल्मों में नायक की भूमिका निभाई.

निधनः हिंदी सिनेमा के चिर-परिचित चरित्र अभिनेता, 69 वर्षीय **मनमोहन कृष्ण** का. उन्होंने अच्छे डॉक्टर की अनेक यादगार भूमिकाएं निभाईं. 1945 में बंबई अपने से पहले वे लेक्चरर थे. अच्छे गायक होने के अलावा उन्होंने 200 से भी अधिक फिल्मों में अभिनय किया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब
अदालत को ठेंगा

● पूरे पंजाब में वहां के पुलिस प्रमुख कंवर पाल सिंह गिल की ही तूती बोलती है. जाहिर है उन्हें इसका एहसास भी है. तभी तो उन्हें यह परवाह तक नहीं कि उनके व्यवहार से किसे चोट पहुंच रही है. पिछले पखवाड़े गफलत में वे सुप्रीम कोर्ट से ही टक्कर लेते दिखे.

सुप्रीम कोर्ट ने पंजाब व हरियाणा हाईकोर्ट को निर्देश दिया था कि वह होशियारपुर जिले के अंबाला जट्टां गांव के सरपंच कुलजीत सिंह के पिछले साल कथित मुठभेड़ में मारे जाने की जांच कराए. कुलजीत सिंह शहीद भगत सिंह के रिश्तेदार थे. हाईकोर्ट ने जांच के लिए अवकाशप्राप्त सत्र न्यायाधीश एच.एल. रणदेव को जांच आयुक्त बनाया.

रणदेव ने पंजाब सरकार को जिले के पुलिस प्रमुख समेत मामले के आरोपी पांच अधिकारियों का तबादला कहीं दूसरी जगह करने का आदेश दिया था. पर राज्यपाल वीरेंद्र वर्मा ने मामले को इसलिए टाल दिया क्योंकि पुलिस महानिदेशक गिल ऐसा नहीं चाहते थे. उनका तर्क था कि ये पुलिस अधिकारी आतंकवादियों की हिट लिस्ट में हैं और गैर-महत्वपूर्ण पदों पर उनके तबादले का मतलब होगा उनकी जान को खतरा. इस सबसे नाराज रणदेव

वर्माः मुंह बंद

ने हाईकोर्ट को लिख भेजा कि उनके निर्देशों की अवहेलना किए जाने की वजह से वे जांच कार्य को आगे बढ़ाने में असमर्थ हैं.

बहरहाल, कुलजीत सिंह की मौत का मुख्य मुद्दा पीछे छूट जाने से मलाल यह पूछा जा रहा है कि राज्य में चलती किसकी है, वर्मा की या गिल की ?

केरल
सद्भावना की शृंखला

शंकर

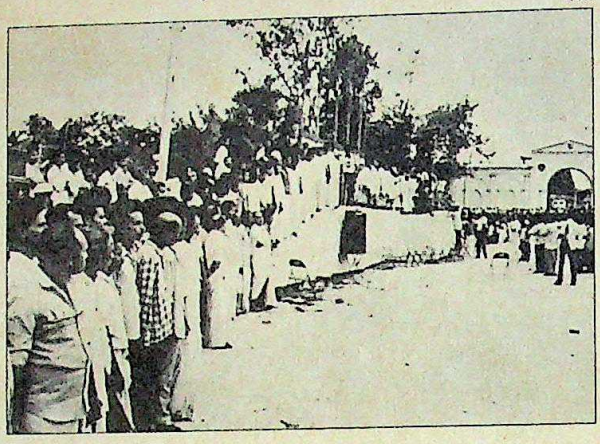

मानव शृंखलाः विरोध भी हुआ

● पिछले पखवाड़े जब पूरा देश रामजन्म भूमि बाबरी मस्जिद विवाद और अयोध्या में कार सेवा के कारण विस्फोटक स्थिति से दो-चार था, केरल में सांप्रदायिक सद्भाव के लिए जोरदार प्रदर्शन हुआ. माकपा की अगुआई वाली ई.के. नयनार की वाम लोकतांत्रिक मोर्चा सरकार के आह्वान पर लाखों लोगों ने धर्मनिरपेक्षता और देश की एकता के लिए 760 किलोमीटर लंबी मानव शृंखला बनाई.

जाति-धर्म का भेद भूलकर और बारिश-धूप की परवाह न करते हुए पुरुष, महिलाएं और बच्चे इस शृंखला में शामिल होने के लिए मीलों पैदल चलकर आए. एक-दूजे का हाथ थामे उन्होंने कसरगोड़े जिले के मंजेश्वरम से लेकर तिरुवनंतपुरम जिले के कात्याकविला तक मानव शृंखला खड़ी कर दी.

इस मौके पर हुई रैली में माकपा के महासचिव ई.एम.एस. नंबूदिरीपाद ने राम मंदिर के मुद्दे पर हाल में हुई हिंसा का जिक्र करते हुए कहा कि विभिन्न संप्रदायों को एक-दूसरे से लड़ाने की किसी की भी चाल कभी कामयाब नहीं होने दी जाएगी.

बदकिस्मती से उस दिन झगड़े भी हुए. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भाजपा ने इस 'हिंदू विरोधी मानव शृंखला' में खलल डालने की कोशिश की. इंका और उसके सहयोगियों ने भी इस आयोजन का बहिष्कार किया.

ओडीसा
बड़ों की वकालत

● कभी ऐसे मुख्यमंत्री के बारे में सुना है जो किसी औद्योगिक घराने की पैरोकारी करते हुए अपनी ही सरकार के किसी विभाग को गरिया दे ? नहीं सुना हो तो हम नाम बता देते हैं. ये हैं ओडीसा के मुख्यमंत्री बीजू पटनायक जो आजकल ठीक इसी राह पर चल रहे हैं.

इंडियन मेटल ऐंड फेरो एलॉयज (इम्फा) ने ओडीसा राज्य विद्युत परिषद के 18 करोड़ रु. के बिलों का भुगतान नहीं किया है. पर पटनायक इम्फा के खिलाफ कुछ कार्रवाई करने के बदले उसी की तरफदारी में जुट गए हैं. पटनायक ने न सिर्फ यह बकाया राशि ही माफ कर दी बल्कि विद्युत परिषद के कुछ अधिकारियों पर इम्फा को परेशान करने का आरोप भी लगा दिया.

पर ऐसा क्या हो गया कि पटनायक को इम्फा की वकालत करनी पड़ी. कांग्रेसियों का कहना है कि पटनायक पर इम्फा के मालिक बंसी पांडा के काफी एहसान हैं. उन्होंने चुनाव के लिए पटनायक को अपना विमान उपलब्ध कराया था. उधर, विद्युत परिषद के अभियंताओं ने इस पूरे मामले की जांच विधानमंडलीय समिति से करवाए जाने की मांग की है.

मध्य प्रदेश
उजड़ा चमन

● मध्य प्रदेश के आईपीएस अधिकारियों का एक प्रभावशाली गुट वहां के नए पुलिस प्रमुख एस.वी. सिंह से नाखुश है. बताया जाता है कि 'साफ' छवि वाले ये पुलिस महानिदेशक इन अधिकारियों के जैसे हाथ धोकर पीछे पड़ गए हैं. सबसे पहले उन्होंने आदेश जारी किया कि ड्यूटी पर रहते वक्त सभी अफसर वर्दी जरूर पहनें. उन्होंने लंच की छुट्टी के बहाने घंटों गायब रहने पर भी अफसरों को झाड़ पिलाई. पर अब इस नए महानिदेशक ने उन लोगों की बेहद दुखती रग पर हाथ रखा है. उन्होंने आला अफसरों के सारे भत्ते और विशेषाधिकार खत्म कर दिए हैं. जिन्हें वे अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानते हैं.

मगर यह सब करने के लिए सिंह को काफी मशक्कत करनी पड़ी. उन्होंने पाया कि पुलिस

सिंहः सख्ती

आर.सी साहू

मुख्यालय में नियुक्त अधिकारियों को बेहिसाब-किताब गुप्त सेवा कोष से 'जेब खर्च' दिया जाता है. हर महीने आईजी को 500 रु. और मिलते हैं, डीआईजी को 400 रु. आदि-आदि. पुलिस कल्याण कोष के दुरुपयोग ने तो मानो आंखें खोल दीं. यह कोष मुख्यतः निचले ओहदे के पुलिसवालों के कल्याण के लिए होता है पर इसका इस्तेमाल साहबों का टेनिस कोर्ट बनाने और अफसर्स मेस में कॉकटेल पार्टियां आयोजित करने में किया जाता था. एस.वी. सिंह ने यह सब बंद करवा दिया है.

लेकिन इस साल के अंत तक ये पुलिस महानिदेशक रिटायर होने वाले हैं. अफसर खुश हैं कि उनके जाते ही बहारें लौट आएंगी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

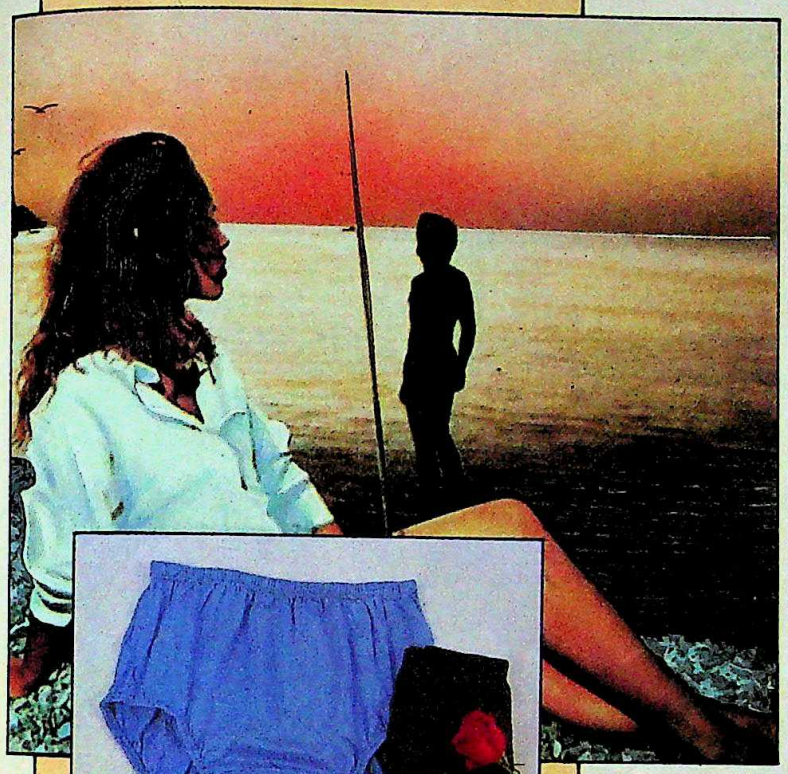

लिरिल अण्डरवियर, बनियान और लेडीज पेण्टीज का जवाब नहीं! लिरिल . . . यानी रेशमी कोमलता का वो ताज़गी भरा अहसास, जो आपको स्फूर्ति दे हर दिन . . . हर पल।

लिरिल . . . आन्तरिक वस्त्रों की अतुलनीय श्रृंखला, जो आधुनिकतम मशीनों पर एक्सपोर्ट क्वालिटी के 100% कोम्ब्ड, गांठरहित धागों से बनाए जाते हैं . . .

कोमल स्पर्श का गुदगुदाता अहसास. . .

Lyril® लिरिल®

- अण्डरवियर
- बनियान
- लेडीज पेण्टीज

लिरिल — कोमल अनुभूति , अंतर्राष्ट्रीय क्वालिटी

ATUL PUBLICITY

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक आकर्षक उपहार इंडिया टुडे की ओर से

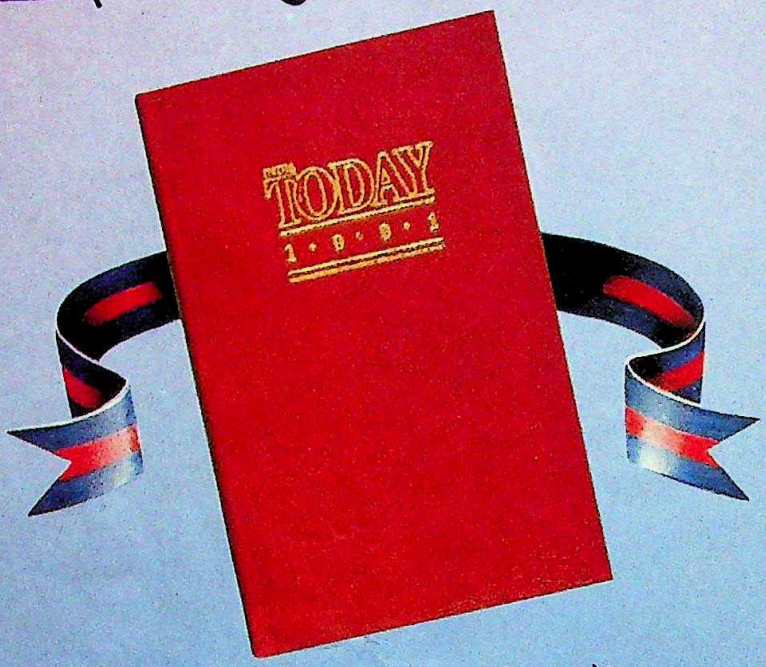

इंडिया टुडे के नियमित ग्राहक बनने के साथ 1991 की एक इंडिया टुडे पॉकेट डायरी मुफ्त.*

यदि आप पहले से ही **इंडिया टुडे** के ग्राहक हैं या शीघ्र ही बनने जा रहे हैं — तो प्रस्तुत है एक खास पेशकश आपके लिए. 1991 की **इंडिया टुडे** पॉकेट डायरी जिसका मूल्य रु. 45 है. एकदम मुफ्त. आश्चर्यजनक रूप से सुन्दर व सुविधाजनक. 1991 की इस **इंडिया टुडे** पॉकेट डायरी में हैं आपके लिए सभी आवश्यक सूचनाएं. साथ ही तुरन्त जानकारी के लिए होटलों व आवश्यक आई.एस.डी./एस.टी.डी. कोडों पर अलग अलग विशेष स्तम्भ. छोटी सी इस डायरी में रोज़मर्रा की ज़रूरत की हर जानकारी व सूचना हमेशा आपके साथ रहेगी.

साथ ही घर बैठे पाएं एक तीन तरफ़ा सुविधा का लाभ

अपनी इंडिया टुडे की प्रति समय पर व नियमित रूप से पाइये.

यह आपके घर सुरक्षित और निःशुल्क पहुँचेगी.

रु. 5.50 प्रति कॉपी की दर से जबकि कवर मूल्य रु. 7 है.

विशेष ऑफर के लिए देय राशि:

☐ नए ग्राहकों के लिए रु. 142** जिसमें वार्षिक सदस्यता का शुल्क जो कि रु. 132 है, व 1991 की **इंडिया टुडे** पॉकेट डायरी भेजने के लिए हैंडलिंग पैकिंग व रजिस्ट्री शुल्क रु. 10 भी शामिल हैं.

☐ वर्तमान ग्राहकों के लिए रु. 10** , 1991 की **इंडिया टुडे** पॉकेट डायरी के हैंडलिंग, पैकिंग व रजिस्ट्री शुल्क के रूप में.

कृपया ध्यान दें:

* हैंडलिंग, पैकिंग व रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजने का शुल्क अतिरिक्त होगा.

** 1. धनराशि लिविंग मीडिया इंडिया लि. के पक्ष में देय रेखांकित चेक/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा भेजी जानी चाहिये.
2. बाहरी चेकों (दिल्ली से बाहर के) के विषय में बैंक शुल्क के रूप में रु. 5 अतिरिक्त जोड़ कर भेजे जाएं.
3. दिल्ली, मुम्बई, कलकत्ता, मद्रास में देय चेक/डिमांड ड्राफ्ट एम आई सी आर (MICR) ही होने चाहिए.

*** वर्तमान ग्राहकों जो इस पेशकश का लाभ उठाना चाहते हैं, के विषय में यह ऐसे हो जैसे कि **इंडिया टुडे** की ग्राहक प्रति रैपर के लेबल पर होता है.

यदि ऑर्डर फॉर्म उपलब्ध न हो तो:

आवश्यक धनराशि के साथ अपना ऑर्डर भेज दें. साथ ही अपना नाम पता भी भेजना न भूलें. सभी आर्डर डॉक द्वारा लिविंग मीडिया इंडिया लि. पो.बॉ.नं. 706 फरीदाबाद, 121007, हरियाणा के पते पर भेजे जाएं.

आज ही ग्राहक बनिए और विशेष उपहार पेशकश का लाभ उठाइये.

ऑर्डर फॉर्म

जी हाँ, मैं इस विशेष उपहार पेशकश का लाभ उठाना चाहता हूँ. मैं एक

☐ नया ग्राहक हूँ. कृपया मेरी **इंडिया टुडे** की वार्षिक ग्राहक सदस्यता आरम्भ कीजिए, और मुझे मेरी **इंडिया टुडे** पॉकेट डायरी 1991 की मुफ्त* प्रति भेज दीजिए.

☐ वर्तमान ग्राहक हूँ. कृपया मुझे मेरी **इंडिया टुडे** पॉकेट डायरी 1991 की मुफ्त* प्रति भेज दीजिए.

मैं लिविंग मीडिया इंडिया लि. के पक्ष में देय रु._____का अपना चैक**/ डिमांड ड्राफ्ट संलग्न कर रहा हूँ.

नाम***_____

पता _____

_____

_____

_____ पिन _____

ग्राहक संख्या* _____ (सिर्फ वर्तमान ग्राहकों के लिए)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

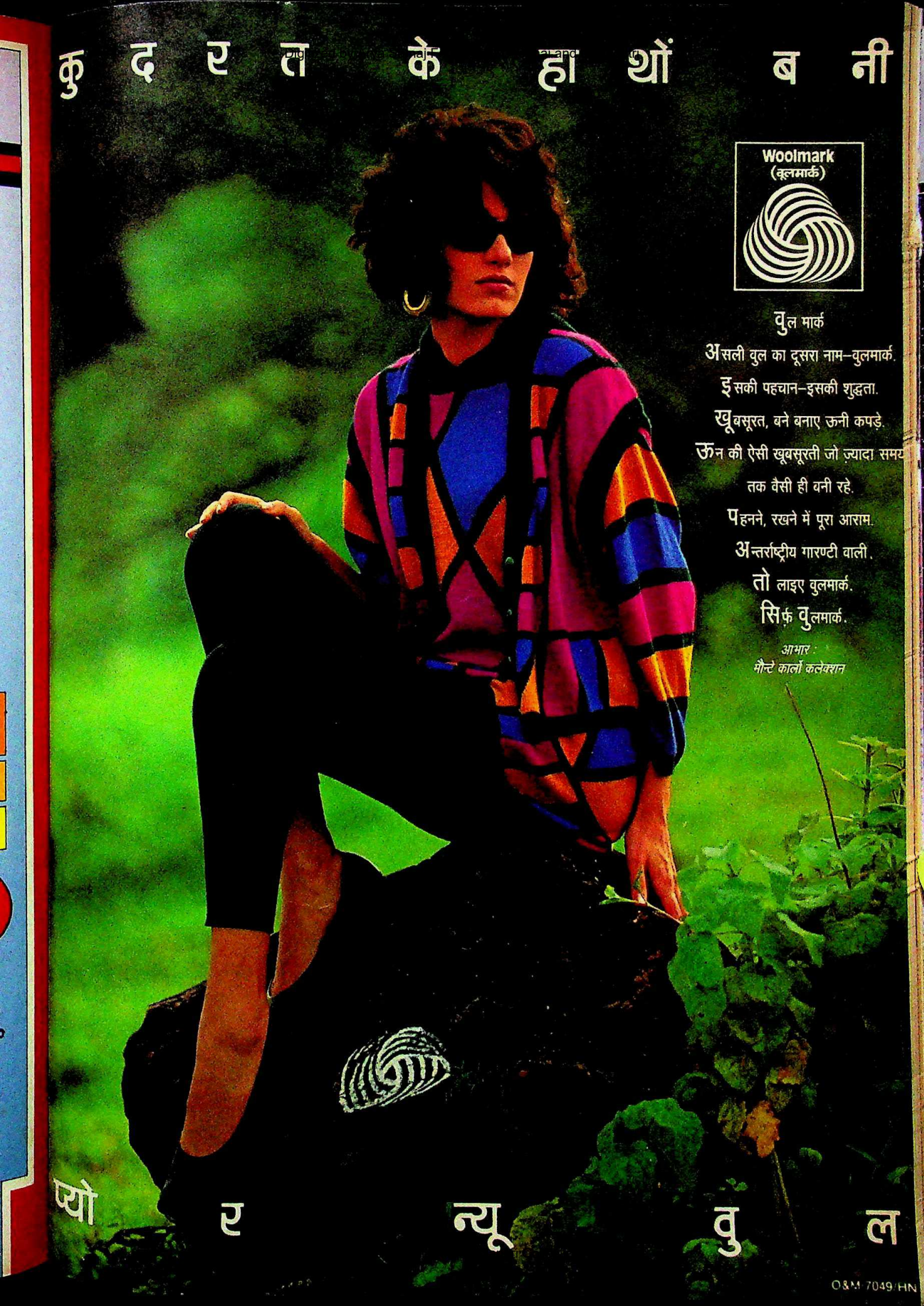
कुदरत के हाथों बनी
Woolmark
(वूलमार्क)
वुल मार्क
असली वुल का दूसरा नाम–वुलमार्क.
इसकी पहचान–इसकी शुद्धता.
खूबसूरत, बने बनाए ऊनी कपड़े.
ऊन की ऐसी खूबसूरती जो ज़्यादा समय
तक वैसी ही बनी रहे.
पहनने, रखने में पूरा आराम.
अन्तर्राष्ट्रीय गारण्टी वाली.
तो लाइए वुलमार्क.
सिर्फ़ वुलमार्क.
आभार :
मौन्टे कार्लो कलेक्शन
प्योर न्यू वुल
O&M 7049/HN

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

BPL · SANYO

पढ़ाई करके लोरी जी भरके

कड़े श्रम और बड़े होमवर्क के पत्रे भरकर सौम्य मधुर रून झुन से सुस्त मन चुस्त । बीपीएल सैन्यो टू-इन-वन् से .... सौम्य-मधुर तरंग । बीपीएल क्वालिटी में जन्मी सैन्यो टेक्नॉलॉजी । जिससे बने अनेक प्रकार के कैसेट रेकार्डर, मोनो और स्टीरियो टू-इन-वन् । खूबियां भी अनेक, जैसे डबल कैसेट डेक, डिटॅचेबल् स्पीकरस् , मेटल टेप चलाने की सुविधा, हाई स्पीड डब्बिंग और कई अन्य सुविधाएँ । आकर्षक मनोहर रंगों में । ताकी आपको मिले मन चाहा मनोरंजक संगीत । वह भी मुनासीब दामों में ।

BPL · SANYO

Two-in-Ones

बरसों संग मधुर तरंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Mudra:Blr:BPL:167:90:HIN

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदलने का उपक्रम

भारतीय पर्यटन विकास निगम अपनी छवि सुधारने को कृतसंकल्प दिखता है. सरकार को भेजे अपने नए प्रस्ताव में 119 करोड़ रु. वाली इस कंपनी ने खुद को नियंत्री (होल्डिंग) कंपनी में बदलने और आंशिक निजीकरण की इजाजत मांगी है. निगम ने हांगकांग के रीजेंट होटल समूह के साथ करार किया है जिसके तहत राजधानी के होटल जनपथ के पुनर्निर्माण के लिए नई कंपनी बनाई जाएगी. निगम दूसरी विमान कंपनी एयरोफ्लोत के साथ होटल रंजीत के पुनर्निर्माण के लिए भी बातचीत चला रहा है. लोधी होटल के लिए हिल्टन होटल समूह और गल्फ एयर के साथ बातचीत चल रही है. अपना मुनाफा बढ़ाने के लिए निगम विश्व बाजार में पैठने की कोशिश कर रहा है. इसने कनाडा में दो रेस्तरां चलाने के लिए वहां के प्रमुख व्यापारिक घराने कूपर इनकार्पोरेटेड के साथ करार किया है. मास्को में भी यह एक रेस्तरां खोलने जा रहा है. इतना ही नहीं निगम, दिल्ली में केक बेचने के लिए दुकानें खोलने जा रहा है. निगम निजी होटल समूहों से प्रतिस्पर्धा में कितना सफल रह पाता है, यह समय ही बताएगा.

उबरने के लिए

सरकारी कंपनी भारतीय सड़क निर्माण निगम लिमिटेड अपनी माली हालत सुधारने की कोशिश कर रही है. लीबिया में इसने जो सड़क निर्माण किए थे उसके बिलों का भुगतान न होने के कारण पिछले साल यह कंपनी 150 करोड़ रु. के भारी घाटे में थी. सरकार इसे बंद कर देने पर विचार कर रही थी. इसने निजी क्षेत्र के वित्तीय सहयोग से देश में राजमार्गों के निर्माण का प्रस्ताव दिया है. उसने सुझाव दिया है कि भारत में भी तीव्रगामी मार्गों के उपयोग के लिए चुंगी वसूलनी चाहिए. इस बीच मध्य-पूर्व का बाजार जबकि मंदा पड़ता जा रहा है, यह कंपनी मलेशिया, थाईलैंड और अमेरिका में सड़क निर्माण योजनाओं के लिए बोलियां लगा रही है.

तहलके की तैयारी

कपड़ा धोने के साबुन के 800 करोड़ रु. के बाजार में तहलका मचने वाला है. एक नया धुलाई पाउडर बाजार में उतारा जाने वाला है जिसकी क्षमता सामान्य साबुन से तीन गुना ज्यादा है. यह तहलका निरमा के करसन भाई पटेल नहीं बल्कि 75 करोड़ रु. की कंपनी प्राक्टर ऐंड गैंबल इंडिया लिमिटेड करने वाली है. वैसे, यह नया उत्पाद अभी आंध्र प्रदेश में ही बेचा जा रहा है.

बाजार में होड़

इलेक्ट्रॉनिक चिकित्सा उपकरणों के बाजार में कब्जा करने की होड़ जारी है. सीमेंस, बीपीएल और लार्सन ऐंड टुब्रो जैसी कंपनियों की सफलता से प्रेरणा पाकर विशाल कंप्यूटर कंपनी विप्रो भी इसमें कूदने की तैयारी कर रही है. इसने विश्वविख्यात अमेरिकी कंपनी जनरल इलेक्ट्रिक के साथ समझौता करके 30 करोड़ रु. के निवेश से एक नई कंपनी शुरू की है. इस नई कंपनी में जनरल इलेक्ट्रिक की 40 फीसदी भागीदारी होगी. इसी तरह इलेक्ट्रॉनिक टाइपराइटर बनाने वाली बड़ी कंपनी नेटवर्क लिमिटेड ने चिकित्सा उपकरणों के उत्पादन के लिए अमेरिका स्थित पिकर कंपनी के साथ समझौता किया है. नेटवर्क ने चिकित्सा उपकरण डिवीजन का गठन किया है जिसे बाद में एक अलग कंपनी का रूप दे दिया जाएगा.

महानगरों के पार

उपभोक्ता आंदोलन अब महानगरों की सीमाओं को लांघ रहा है. बाजार अनुसंधान संगठन पाथ फाइंडर्स के ताजा सर्वे के अनुसार नगरों, छोटे महानगरों, प्रथम और द्वितीय श्रेणी

चार्ट: बी के शर्मा

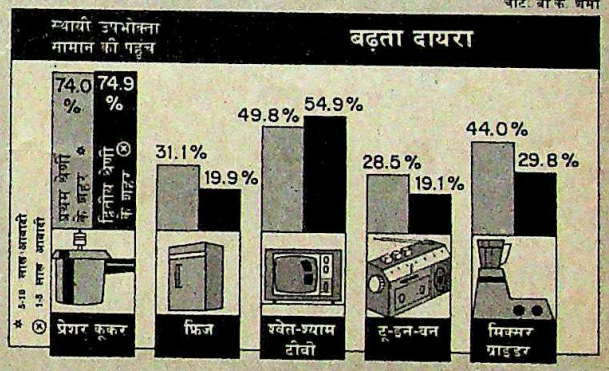

के नगरों के 75 फीसदी उपभोक्ता प्रेशर कुकर का इस्तेमाल करते हैं, 55 फीसदी श्वेत-श्याम टीवी सेटों का और 38 फीसदी मिक्सर या ग्राइंडर का. यह सर्वे पहले के सर्वेक्षणों के नतीजों की भी पुष्टि करता है. मसलन, पश्चिम भारत स्थायी उपभोक्ता सामग्रियों का बेहतरीन बाजार है तो दक्षिण भारत में प्रेशर कुकर, मोपेड, वैक्यूम क्लीनर और टु-इन-वन की बिक्री बढ़ रही है. लेकिन पूरब में इन सामग्रियों की पैठ अभी भी कम ही है और बाजार उतना मजबूत नहीं है.

फिर वही खेल

सरकार बदलने की संभावना देखते ही आप्रवासी भारतीयों ने अपना खेल शुरू कर दिया. दुबई स्थित आप्रवासी भारतीयों ने अंडमान निकोबार द्वीप समूह को मुक्त आर्थिक क्षेत्र बनाने का प्रस्ताव एक बार फिर सरकार के पास भेजा है. पहली बार यह प्रस्ताव 1984 में रखा गया था. लेकिन राजीव गांधी सरकार ने उदारीकरण मुहिम को लगभग बंद कर दिया तो यह प्रस्ताव भी खटाई में पड़ गया. यहां निर्यात आधारित उत्पादन इकाइयां लगाने का प्रस्ताव है. अगर इस प्रस्ताव को मंजूरी मिल गई तो यह द्वीप समूह खाड़ी से लौटने वाले आप्रवासी भारतीयों के लिए स्वर्ग बन जाएगा. पर्यावरण प्रेमी संगठन इस तरह की योजना का विरोध कर रहे हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार्ट: वी.के. शर्मा

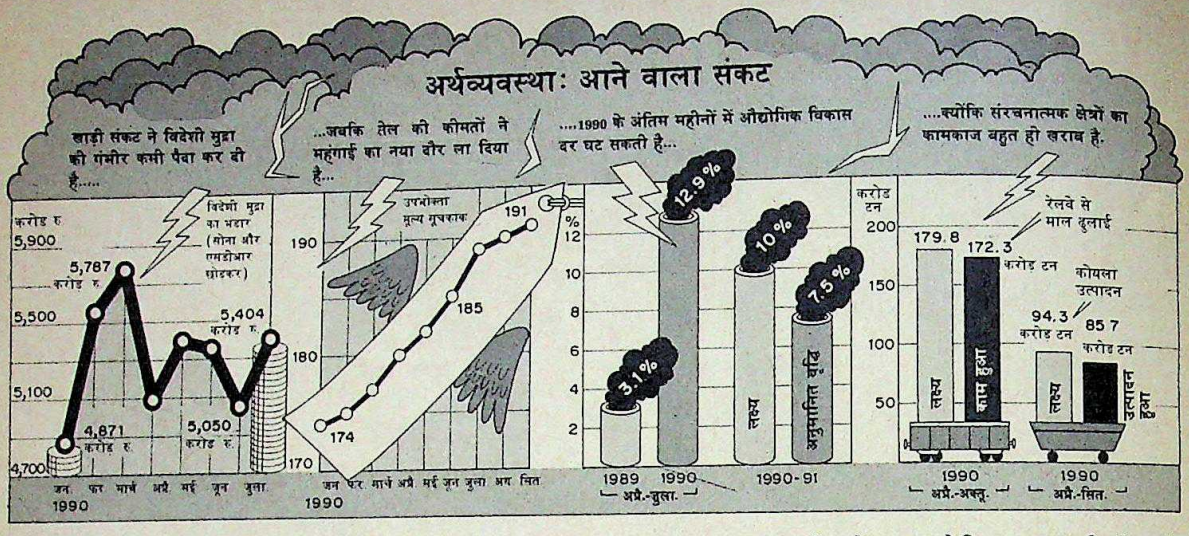

अर्थव्यवस्था

निराशा का घटाटोप

खाड़ी संकट और राजनैतिक अनिश्चितता का परिणाम

सरकार के आर्थिक सलाहकारों के चेहरे आजकल लटके हुए हैं. उनके तरकस के तीर खत्म हुए जा रहे हैं और बिगड़ती जा रही अर्थव्यवस्था रूपी रावण को वे वश में नहीं कर पा रहे हैं.

कुछ महीने पहले तक यह हालत नहीं थी. सरकार ने बजट घाटे में कमी की थी. औद्योगिक विकास की रफ्तार ठीक थी और विदेशी मुद्रा का भंडार भी खतरनाक रूप से खाली नहीं हुआ था. लेकिन खाड़ी संकट और राजनैतिक अनिश्चितता ने आशा को निराशा में बदल दिया है.

अर्थव्यवस्था की मौजूदा हालत में वित्त मंत्रालय को आयात में कटौती करनी पड़ी, योजना मदों में आबंटन घटाना पड़ा, कंपनी क्षेत्र को उधार की रफ्तार नियंत्रित करनी पड़ी और भारी-भरकम योजनाओं को बंद नहीं तो स्थगित करना पड़ा. वित्त मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी मानते हैं, "अर्थव्यवस्था की स्थिति कुल मिलाकर असंतोषजनक ही है."

विदेशी मुद्रा की कमी और मुद्रास्फीति

तेल की कीमतों में वृद्धि से सरकार पर 5,000 करोड़ रु. की अतिरिक्त विदेशी मुद्रा खर्च करने का बोझ पड़ गया है. इससे भुगतान संतुलन और भी गड़बड़ाएगा और मुद्रास्फीति बढ़ेगी. विदेशी मुद्रा का भंडार घटकर 5,050 करोड़ रु. का रह गया है जो मात्र 10 दिनों के आयात के लायक ही है. साथ ही विदेशी कर्ज का बोझ इस साल मार्च तक 10,000 करोड़ रु. से ऊपर पहुंच गया था. अभी इसके बढ़ते ही जाने का अंदेशा है क्योंकि सरकार के पास और कोई रास्ता नहीं है.

अर्थव्यवस्था की हालत एकदम खस्ता है. विदेशी मुद्रा का अकाल है, कीमतें उफान पर हैं और औद्योगिक उत्पादन घट रहा है

पर सबसे गंभीर समस्या मुद्रास्फीति की है. मुद्रास्फीति की दर 15 फीसदी तक पहुंचने की आशंका है. सरकारी अर्थशास्त्री भी मानते हैं कि इसे 6.5 फीसदी पर रोक रखना संभव नहीं होगा.

कटौतियों के जरिए जवाब देने की कोशिश

सरकार खर्चों और आयात में कटौती की जोरदार कोशिश कर रही है. उसे उम्मीद है कि आयात पर रोक लगाकर वह 1,000 करोड़ रु. तक बचा सकती है. इस लिहाज से सभी भारी-भरकम योजनाओं की पुनर्समीक्षा की जा रही है. पेट्रोरसायन कारखाने, लगाने की इच्छुक आठ कंपनियों को बता दिया गया है कि सरकार उन्हें इसके लिए न तो कोई विदेशी मुद्रा और न कर्ज देगी. नतीजतन, अब शायद इनमें से दो या तीन कारखाने ही लग पाएंगे. योजना आयोग ताप और पनबिजली उत्पादन की बड़ी परियोजनाओं को भी नहीं बख्श रहा है.

अनियंत्रित बजट घाटे का खामियाजा

मुद्रास्फीति के कारण भारी बजट घाटे का अंदेशा भी साफ दिख रहा है. बजट अनुमान तो 7,206 करोड़ रु. का है लेकिन यह 10,000 करोड़ रु. के आसपास पहुंच सकता है. साथ ही यह संकेत भी मिल रहा है कि प्रतिरक्षा खर्च में वृद्धि होगी. किसानों को अपनी ओर करने के लिए सरकार ने अनाज के क्रय मूल्य में जो वृद्धि की है, उससे रियायत का बोझ भी काफी बढ़ जाएगा.

इससे भी बड़ी बात यह है कि कर वसूली में कमी आती जा रही है. इस वर्ष के पहले चार महीनों में उत्पाद शुल्क की वसूली में एक फीसदी कमी आई. इसी प्रकार अप्रैल से सितंबर के बीच प्रत्यक्ष करों की वसूली भी पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में लगभग 17 फीसदी कम हो गई.

लेकिन इस चौतरफा अंधियारे के बीच भी रोशनी की किरणें दिखाई दे रही हैं. मानसून अच्छा रहने से अनाज का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्पादन लक्ष्य 17.7 करोड़ टन से भी ऊपर हो जाने की उम्मीद है और इससे किसानों के बीच उपभोक्ता वस्तुओं की मांग बढ़ेगी. साथ ही वर्ष के पहले चार महीनों में औद्योगिक विकास दर 12.5 फीसदी रही और कंपनियों के मुनाफे में कमी आने के संकेत नहीं दिख रहे थे. एसोसिएटेड चेंबर ऑफ कॉमर्स के निदेशक वी.पी. चितले कहते हैं, "उद्योग धीरे-धीरे राजनीति की उठापटक के प्रति उदासीन होते जा रहे हैं."

औद्योगिक विकास की रफ्तार मंद होगी

लेकिन उद्योगों के लिए अनुकूलता शायद लंबे समय तक न चले. फिक्की के महासचिव डी.एच. पई पणंदिकर कहते हैं, "भुगतान असंतुलन का कुप्रभाव 1991-92 के अंत तक दिखने लगेगा. नया निवेश भी बुरी तरह प्रभावित होगा." उद्योग मंत्रालय के अधिकारी भी मानते हैं कि इस वर्ष औद्योगिक विकास की दर 10 फीसदी तक नहीं पहुंच सकती.

इसकी रफ्तार कम होने के स्पष्ट संकेत भी दिखने लगे हैं. मोदी एल्कलीज ऐंड केमिकल लिमिटेड के उपाध्यक्ष योगेंद्र कुमार मोदी कहते हैं, "राजनैतिक माहौल और लगातार बंद आयोजन से हमारे माल की ढुलाई प्रभावित हुई है." कोयले की कमी और ढुलाई की दिक्कत के चलते अक्तूबर माह में सीमेंट के उत्पादन में 30 फीसदी की कमी आई है. इतना ही नहीं, इस साल पिछले वर्ष की तुलना में मोपेडों, कारों और जीपों का उत्पादन कम हुआ है.

साथ ही सरकारी ऑर्डर की कमी, मध्यपूर्व का बाजार हाथ से निकलने और विदेशी मुद्रा की उपलब्धता में कटौती का असर इंजीनियरिंग सामान के निर्यात पर भी पड़ेगा. इंजीनियरिंग उद्योग संगठन के प्रवक्ता कहते हैं, "हमने इस वर्ष उत्पादन में 15 फीसदी वृद्धि की उम्मीद की थी. अगर हम 10 फीसदी वृद्धि भी हासिल कर लें तो वही बहुत होगा."

उन उद्योगों पर सबसे ज्यादा मुसीबत आएगी जो तेल का अधिक उपयोग करते हैं या आयात पर आश्रित है. जैसे कृत्रिम धागे बनाने वाली जे.के. सिंथेटिक्स को तेल आधारित कच्चे माल की कीमत बढ़ जाने से करीब 80 लाख रु. का अतिरिक्त बोझ उठाना पड़ेगा. भारतीय उर्वरक संघ के कार्यकारी निदेशक प्रताप नारायण चेतावनी देते हैं कि फास्फोरिक एसिड के, जिसका उपयोग फास्फेट वाले रासायनिक खाद बनाने में होता है, आयात पर रोक लगाने की कोई भी कोशिश कम-से-कम आधा दर्जन उर्वरक कंपनियों को तो बंद करा ही देगी.

राजनैतिक अनिश्चितता के कारण निवेश के फैसले लटके

राजनैतिक अनिश्चितता के कारण कंपनियां अपनी निवेश योजनाओं को रोक रही हैं. इस साल अप्रैल से सितंबर के बीच नए निर्गमों से मात्र 1,477 करोड़ रु. उठाए गए जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में 4,794 करोड़ रु. आए थे. आरपीजी इंटरप्राइजेज के उपाध्यक्ष संजीव गोयनका कहते हैं, "ऐसा लगता है कि सरकार ने नए निवेश पर रोक लगा दी है. इसका असर औद्योगिक विकास पर पड़ेगा."

ऐसी शिकायतें भी आ रही है कि सरकार ने कई परियोजनाओं पर फैसला लटकाए रखा है. रौनक समूह का कहना है कि तेल की खोज वाली संयुक्त क्षेत्र की कंपनी उन्होंने पिछले साल ही शुरू की लेकिन अभी तक उसके लिए सरकारी आदेश नहीं आए हैं.

विदेशी निवेश वाले उद्योगों की सूची बनाने का सरकारी काम जितना ही लटकता जा रहा है, विदेशों में सरकार की उतनी ही भद पिट रही है. यही नहीं, उद्योगमंत्री स्विटजरलैंड में दुनिया के बड़े व्यापारियों की बैठक में भी भाग लेने भी नहीं पहुंचे, नतीजतन, इस वर्ष के पहले आठ महीनों में कुल विदेशी पूंजी निवेश की मंजूरी पिछले वर्ष की इसी अवधि से आधी रही.

अनेक लोगों को शक है कि कटौतियों की सरकारी कवायद से कोई लाभ हो पाएगा. 1990-91 की पहली छमाही में तो पेट्रोलियम पदार्थों की खपत 5 फीसदी बढ़ी है लेकिन सरकार को उम्मीद है कि वर्ष के अंत तक वह कुल खपत को पिछले वर्ष जितना रखने में ही सफल हो जाएगी. मगर ऊर्जा संरक्षण के नाम पर कुछ नहीं किया गया है.

निर्यात बढ़ाकर स्थिति सुधारने की कोशिश शायद फलदायी साबित न हो. इस वर्ष अप्रैल से अगस्त के बीच निर्यात में 22.5 फ़ीसदी की वृद्धि हुई जो तय लक्ष्य 35 फीसदी से काफी कम है.

अर्थव्यवस्था की मौजूदा स्थिति को देखते हुए सरकार के पास अनुशासन और संयम बरतने के अलावा कोई रास्ता नहीं है. नई सरकार को अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के सामने भी हाथ पसारना पड़ सकता है. प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डी.टी. लकड़ावाला कहते हैं, "इतना ही नहीं, हमें सब्सिडी काफी कम करने और निर्यात के प्रति अपना नजरिया बदलना भी बहुत जरूरी है." यह सब कुछ मुश्किल जरूर है पर आर्थिक स्थिति भी तो ऐसी ही है.

—सुरजीत दासगुप्त और शिव तनेजा

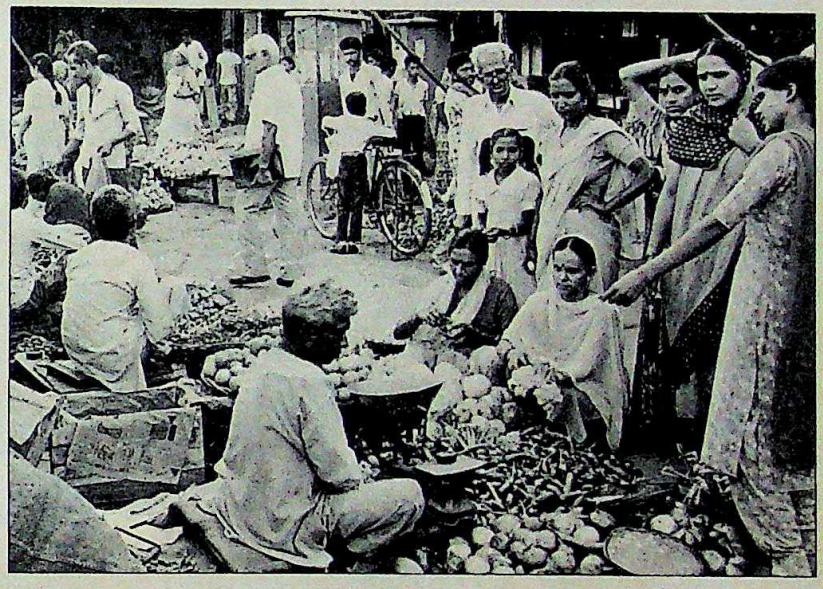

कीमतों में और बढ़ोतरी होने की वजह से आम आदमी को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामकाजी महिलाएं

खुद पर भरोसा

दोहरी भूमिका का निर्वहन

जिन 'प्रगतिशील' भारतीय महिलाओं को व्यापारी अपने उत्पादों का लक्ष्य बना रहे हैं, वह वर्ग उनके विचार से ऐसी महिलाओं का 'है जो स्वतंत्रचेता, आर्थिक रूप से निर्भर, कैरियर के मामले में महत्वाकांक्षी हैं, दिखावे और घरेलू उपकरणों पर पैसा खर्च कर सकती हैं. ये महिलाएं छोटे परिवारों में रहना पसंद करती हैं और आर्थिक फैसले खुद करती हैं.

लेकिन हाल के एक सर्वेक्षण से जो तथ्य सामने आए, उसने इन धारणाओं को झुठला दिया है. दिल्ली, बंबई, कलकत्ता और मद्रास इन चार महानगरों में किए सर्वेक्षण के आंकड़े बताते हैं कि नई परिस्थितियों से सामंजस्य कर लेने वाली पश्चिम की महिलाओं के विपरीत भारत की नौकरीपेशा महिलाएं गृहिणी की परंपरागत भूमिका और दफ्तर के अति आधुनिक वातावरण में सामंजस्य बनाने के लिए कड़ी मेहनत कर रही हैं. बाजार अनुसंधान संस्था 'पाथफाइंडर्स' की कुछ महिलाओं के समूहों से बातचीत के अध्ययन से निकले नतीजे व्यापारियों के लिए निराशाजनक हैं. 20-45 वर्ष की जिन कामकाजी महिलाओं से बात की गई, उनमें क्लर्क से अधिकारी वर्ग की महिलाएं शामिल थीं. ये महिलाएं 1,500 या उससे ज्यादा रु. वेतन के रूप में कमाती हैं.

पाथफाइंडर्स के दिल्ली शाखा प्रबंधक एस. स्थानुनाथन कहते हैं, "महिलाओं की प्रतिक्रिया बहुत उत्साहवर्धक रही. बातचीत के दौरान वे काफी खुलकर सामने आईं." सर्वेक्षण के नतीजों ने कामकाजी महिलाओं के बारे में कई मान्यताओं को झुठला दिया. बातचीत से निष्कर्ष निकला कि ज्यादातर महिलाएं नौकरी की जगह अपने घर-परिवार को ही तरजीह देती हैं, बच्चों की देखभाल की खातिर संयुक्त परिवार में रहना पसंद करती हैं और खुद कमाने के बावजूद मानती हैं कि रुपए-पैसे की देखभाल और निवेश पुरुषों का अधिकार क्षेत्र है.

विस्तृत विश्लेषण कर कामकाजी महिलाओं को तीन वर्गों में रखा गया:

► 'वक्त काटने' के लिए नौकरी करने वाली महिलाएं, जो शादी और मातृत्व तक का समय गुजारने के लिए ही नौकरी करती हैं. ये महिलाएं ज्यादातर क्लर्क या रिसेप्शनिस्ट होती हैं.

► सबसे बड़ा वर्ग उन महिलाओं का है, जो 'सिर्फ नौकरी भर' करने के लिए कोई भी नौकरी कर लेती हैं. ये महिलाएं नौकरी के मामले में महत्वाकांक्षी न होते हुए भी जीवन भर नौकरी करती हैं. नौकरी घर के काम की बोरियत से बचने का जरिया भी है.

► तीसरे वर्ग में वे महिलाएं हैं, जो कैरियर के प्रति महत्वाकांक्षी हैं. अपने कैरियर से इन्हें खूब संतुष्टि मिलती है.

लेकिन तीनों वर्ग की महिलाएं गैर-कामकाजी या मात्र गृहिणियों के मुकाबले अधिक शिक्षित और सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति ज्यादा जागरूक हैं. जिन महिलाओं से बात की गई उनमें से आधी से ज्यादा ने देर से—21 से 24 वर्ष की उम्र में—शादी की थी. 34 फीसदी महिलाओं को पहला बच्चा 24 से 28 वर्ष की उम्र में हुआ; 90 फीसदी महिलाएं अंग्रेजी पढ़ सकती थीं और 50 फीसदी से कुछ ही कम महिलाएं स्नातक थीं.

कुछ महिलाएं गृहिणी के परंपरागत काम नौकरानी या किसी और महिला से करवाना चाहती हैं, भले ही वे दक्षता से कर पाएं या नहीं. इसीलिए जल्दी तैयार होने वाले भोजन, जो उनकी गृहिणी की भूमिका से मेल खाते आए हैं, फैशन से बाहर होते जा रहे हैं. और महिलाएं ऐसी नौकरी भी करने लगीं जहां नौकरी के बंधे-बंधाए घंटे नहीं हैं.

इन लोगों के लिए वक्त बहुत कीमती होता है. खरीदारी दफ्तर आते या जाते समय की जाती है. सप्ताहांत घर के काम के लिए रखे जाते हैं. पति यदि घर के कामकाज में हाथ बंटाना चाहे तो स्वागत है. यद्यपि पैसा खर्च करने का विशेषाधिकार पुरुषों का ही माना जाता है लेकिन अब महिलाएं भी इसमें शामिल होने लगी हैं. आर्थिक स्वतंत्रता खर्च की कई नई राहें खोल देती है. वे खुद पर और सहेलियों पर भी खर्च करने लगती हैं.

कार्टून: अजीत नैनन

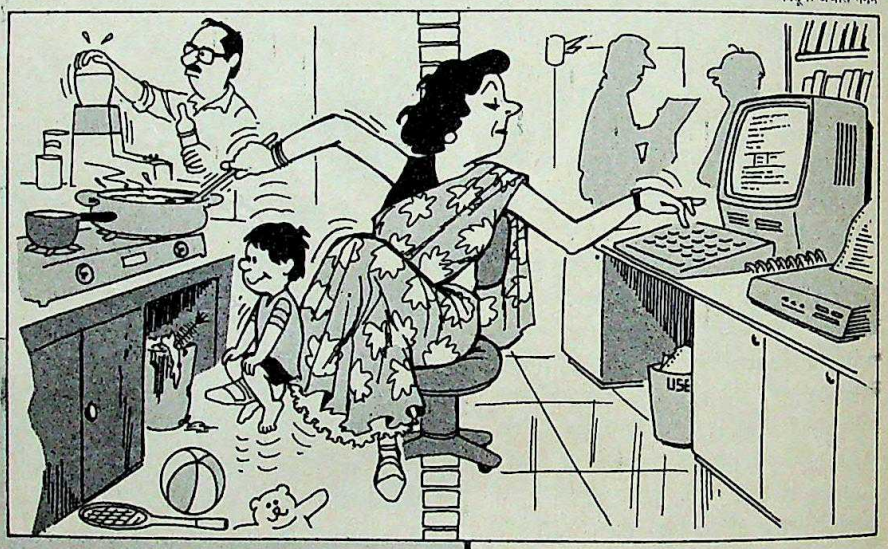

सर्वेक्षण बताता है कि कामकाजी महिला संयुक्त परिवार में रहना चाहती है ताकि बच्चों की अच्छी परवरिश हो सके

उनकी नजर में फैशन तो छिछोरापन है. ज्यादातर महिलाओं ने सुरुचिपूर्ण, गरिमामयी और आरामदेह पोशाक, मसलन सूती साड़ी आदि को तरजीह दी. सौंदर्य प्रसाधनों का इस्तेमाल कम उम्र की महिलाएं करती हैं. लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि पुरुषों के साथ घुलने-मिलने, देर से घर आने और अपने विचार व्यक्त करने का आत्मविश्वास उनमें आ गया है.

अध्ययन से यह पुष्टि भी होती है कि आज की महिला के सोच का क्षितिज विस्तृत है और वे खुद को बेहतर परिप्रेक्ष्य में देखती हैं. बेहतर होगा कि विज्ञापनकर्ता इस तथ्य को समझें कि भारत की महिला बहुत आगे निकल आई हैं.

—सुरजीत दासगुप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेयर बाजार

चुनींदा बढ़त

सरकार गिरने से तेजी आई

एक और पखवाड़ा ऐसा गुजर गया जिसमें अनिश्चितता लाभकारी साबित हुई. पर इस बार एक फर्क था—इस बार अनिश्चितता राजनैतिक थी. पिछले पखवाड़े राजनैतिक अनिश्चितता की वजह से देश के शेयर बाजार सहमे हुए से थे पर इस बार उनमें मजबूती का रुख दिखाई दिया. इस पखवाड़े के अंत में जिस तेजी से कारोबार हुआ उसके चलते मुंबई शेयर बाजार का 30 शेयरों वाला संवेदनशील सूचकांक फिर 1,400 के बिंदु के ऊपर पहुंच गया, हालांकि यह हलचल कुछ चुनींदा शेयरों के मामले में ही थी.

संवेदनशील सूचकांक के बढ़कर 31 अंक उछल जाने और 1,400 की सीमा रेखा पार कर जाने (1,412.7) की सीधी सी वजह थी विश्वनाथ प्रताप सरकार का लुढ़क जाना. रिलायंस के शेयर खुले कारोबार में 234 रु. तक की ऊंचाई तक चढ़ गए और गुपचुप प्रतिबंधित कारोबार

चार्ट: बी.के. शर्मा

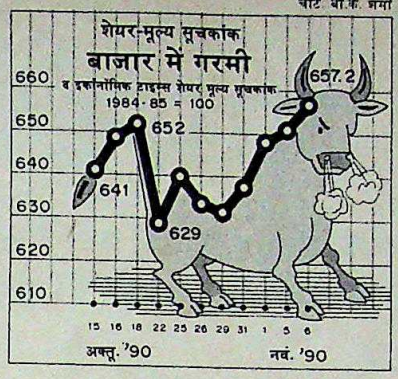

में इनकी कीमत और भी ज्यादा रही.

टाटा स्टील ने हाल ही में अपने छमाही नतीजों की घोषणा की. इस दौरान उसे 178.34 करोड़ रु. का सकल मुनाफा हुआ जबकि पिछले साल इसी दौरान उसका मुनाफा 137.50 करोड़ रु. था—यानी मुनाफे में 30 फीसदी की वृद्धि हुई. इसका शेयर 210 रु. तक पहुंच गया. इसके अभी और बढ़ने की आशा है क्योंकि नतीजों में इस्पात कीमतों में हुई उन दो वृद्धियों का जिक्र नहीं है जो सरकार ने इस साल सितंबर में की थीं. टेल्को 240 रु. पर खड़ा था और एसीसी 2,500 रु. की सीमा पार कर 2,550 रु. के करीब पहुंच गया.

कुछ प्रेक्षकों के हिसाब से 28 लाख टन अतिरिक्त तेल के आयात की इजाजत देने के सरकार के फैसले से भी बाजार में तेजी आ गई. एक विश्लेषक के अनुसार, "वे समझ नहीं रहे कि हमें उसकी कीमत अदा करनी पड़ी है. यह मुफ्त नहीं आ रहा."

इस सबके बावजूद बाजार के रुख से एक बात साफ हो गई यानी बाजार को उम्मीद है कि सत्ता में कोई भी आए, आर्थिक नीतियों को उदार बनाने का सिलसिला जारी रहेगा. यह भी उम्मीद की गई कि इस सूरत में अगला वित्त वर्ष काफी अच्छा होगा. बाकी लोगों की धारणा यह नहीं है. एक वित्तीय विश्लेषक के अनुसार, "इस देश में मुद्रास्फीति छह महीने पीछे चलती है. हमारी समस्या दहाई के अंक तक पहुंच चुकी मुद्रास्फीति की है जो अगले साल के उत्तरार्ध में अपना असर दिखाएगी."

देश भर के शेयर बाजारों पर भी इसका अच्छा असर पड़ा. और सभी दूसरे प्रमुख केंद्रों पर 10 से 15 फीसदी तक का उछाल आया. मद्रास में रुख मिला-जुला था. पर कारोबार की मात्रा अच्छी थी. कलकत्ता में उछाल तेजी से आया और एसीसी 2,500 रु. तक पहुंच गया. फिर बाजार के कार्य समय के बाद हुए कारोबार में यह 2,600 रु. तक पहुंच गया.

जमा स्टॉक

	1990 ऊंचा	1990 नीचा	बंद 6.11.90	इस पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
अशोक लेलैंड	126.50	69.50	120.00	10.00+
एसो.सीमेंट	2550.00	325.00	2550.00	450.00+
एशियन पेंट्स	305.00	207.50	252.50	–
एटलस कोप्को	68.00	32.50	52.00	2.00+
बजाज ऑटो	770.00	355.00	660.00	40.00+
बड़ौदा रेयॉन	1925.00	617.50	860.00	350.00–
बाटा इंडिया	104.00	62.50	104.00	7.00+
बल्लारपुर	325.00	120.00	273.00	35.00+
बिरला जूट	228.00	50.50	228.00	48.00+
ब्लो प्लास्ट	140.00	34.50	90.00	10.00–
बांबे डाइंग	445.00	173.00	192.50	7.50+
ब्रिटा.इंडिया	167.00	97.00	152.00	12.00+
ब्रुक बांड	175.00	91.00	137.00	9.00–
कैडबरी इंडिया	192.50	133.75	167.50	2.50+
सेंचुरी टेक्सटाइल्स	4750.00	2420.00	4575.00	450.00+
कोलगेट पामो.	360.00	176.25	305.00	15.00+
सायनामिड	150.00	87.50	110.00	–
डीसीएम	160.00	45.50	150.00	37.50+
इनलप	93.00	51.75	68.00	4.00–
ईआई होटल्स	65.25	50.00	80.00	2.50+
एक्काईस	200.00	77.75	165.00	5.00+
फिलो. केबल्स	410.00	200.00	275.00	10.00–
गरवारे नाइलोन	71.00	48.00	56.25	–
जी.ई. शिपिंग	54.75	34.50	37.50	0.50+
गुज.स्टेट फर्टि.	275.00	155.00	210.00	16.25+
हसिम इंडिया	277.50	106.00	212.50	15.00+
हिंद.एल्यु.	417.50	205.00	330.00	15.00+
हिंदुस्तान लीवर	1900.00	960.00	1325.00	100.00+
हिंदुस्तान मोटर्स	172.50	101.00	142.50	7.50+
हेक्स्ट	58.50	19.80	38.00	1.50+
आईसीआई	3400.00	1295.00	2800.00	350.00+
इंडियन आर्गेनिक	72.00	35.25	52.00	2.00–
इंडियन रेयॉन	91.25	46.50	66.25	6.25+
इंडाल	175.00	84.00	125.00	7.50+
इंगरसॉल-रैंड	320.00	161.25	280.00	–
आईटीसी	305.00	190.00	280.00	30.00+
जे.के.सिंथेटिक्स	182.00	48.75	142.00	5.00+
काइनेटिक इंजी.	90.00	49.00	55.00	–
किर्लो. ब्यूमिस	255.00	130.00	200.00	10.00+
केएसबी पंप्स	125.00	65.00	107.50	7.50+
लार्सन-टुब्रो	260.00	175.00	230.00	–
लिप्टन	180.00	57.00	125.50	13.00+
लोहिया-मशीन्स	112.00	65.00	81.25	6.25+
मदुरा कोट्स	83.75	15.00	57.50	7.50+
महिंद्रा-महिंद्रा	285.00	100.50	258.00	13.00+
मिल्क फूड	130.00	67.50	100.00	5.00+
मोटर इंडस्ट्रीज	280.00	115.00	165.00	–
मुकुंद लिमि.	1400.00	780.00	950.00	125.00+
नेशनल आर्गे.	275.00	127.00	220.00	7.50+
नेस्ले इंडिया	1900.00	1070.00	1450.00	75.00+
निरलॉन	172.50	101.75	147.00	7.00+
ओरके सिल्क मि.	42.50	13.00	27.00	2.00+
पेइको इलेक्ट्रॉनिक्स	61.00	14.50	39.50	5.00+
फाइजर	78.00	24.00	65.50	3.50+
प्रीमियर ऑटो	113.75	60.00	72.50	7.50+
रेमंड	83.00	50.00	59.00	4.00+
रेकिट-कोलमैन	175.00	70.00	140.00	17.50+
रिलायंस इंडस्ट्रीज	270.00	178.00	255.00	5.00+
सीमेंस इंडिया	245.00	50.00	226.00	59.00+
शॉ वैलेस	162.50	96.00	135.00	5.00+
श्रीराम फाइबर्स	122.00	65.00	98.00	13.50+
एसकेएफ बेय.	74.00	43.00	53.00	3.50–
स्पिक	2775.00	1240.00	2450.00	200.00+
टाटा स्टील	81.00	47.00	59.00	5.00+
टेल्को	275.00	103.25	195.00	5.00+
वाम ऑर्गेनिक	272.50	110.00	217.50	7.50+
वीडियोकॉन	205.00	115.00	175.00	11.25+
वोल्टास	600.00	105.00	465.00	43.75+
विमको	145.00	63.00	120.00	10.00+
	52.50	15.75	30.00	1.50+

भारतीय रुपए का मूल्य

देश	मुद्रा	इकाई	किसी मूल्य (रुपए में)	अन्य मूल्य (रुपए में)
आस्ट्रेलिया	डालर	1	14.2639	14.1109
आस्ट्रिया	शिलिंग	100	171.6775	170.8639
बहरीन	दीनार	1	–	–
बांग्लादेश	टका	100	52.1443	51.3565
कनाडा	डालर	1	15.6572	15.5024
डेनमार्क	क्रोना	1	3.1972	3.1653
मिस्र	पौंड	1	6.8415	6.7262
फ्रांस	फैंक	1	3.7106	3.6166
हांगकांग	डालर	1	2.3343	2.3119
इंडोनेशिया	रुपिया	100	0.9784	0.9665
ईरान	रियाल	100	–	–
इटली	लीरा	100	1.6234	1.6052
जापान	येन	100	14.4509	14.0845
केन्या	शिलिंग	1	0.7982	0.7837
मलेशिया	डालर	1	6.7406	6.6751
मारीशस	रुपया	1	1.2999	1.2650
नेपाल	रुपया	1	0.6352	0.6270
हालैंड	गिल्डर	1	10.8092	10.7025
पाकिस्तान	रुपया	1	0.8584	0.8463
सिंगापुर	डालर	1	10.7018	10.5943
स्पेन	पेसो	1	0.1931	0.1903
श्रीलंका	रुपया	1	4.2820	0.4451
स्वीडन	क्रोना	1	3.2743	3.2421
स्विट्जरलैंड	स्विस फ्रैंक	1	14.5937	14.4382
तंजानिया	शिलिंग	1	0.0958	0.0924
थाईलैंड	बहत्त	100	73.3805	71.5323
ब्रिटेन	पौंड	1	35.7910	35.5366
अमेरिका	डालर	1	18.1984	18.0261
सं.अ.अमीरात	दिरहम	1	–	–
सोवियत संघ	रूबल	1	22.7870	22.7847
पश्चिम जर्मनी	जर्मन मार्क	1	12.4224	12.1212

स्रोत: बैंक ऑफ तोक्यो, नई दिल्ली, 7.11.90

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजन नेतृत्व

बागडोर थामने की ललक

जातीय समीकरणों के इस दौर में तीन नेता हरिजनों के वोट बैंक पर कब्जा जमाने की होड़ में

—भास्कर राय

टीवी के परदे पर समाचारों में राम विलास पासवान का मुस्कराता चेहरा लगभग हर रोज दिखता रहा है. पिछले चुनाव में मिले वोटों के आधार पर देश की पांचवीं सबसे बड़ी पार्टी बहुजन समाज पार्टी (बसपा) दिल्ली में विशाल रैली आयोजित करती है. और जगजीवन राम की पुत्री मीरा कुमार द्वारा हाल में ही शुरू किए गए 'समता आंदोलन' के नारे राजधानी के प्रायः सभी हरिजन मुहल्लों में साफ-साफ लिखे दिखते हैं.

इन तमाम अलग-अलग गतिविधियों में एक सूत्र आम है. और वह है देश के हरिजन नेतृत्व की बागडोर को थामने की ललक. 1986 में जगजीवन राम की मृत्यु के बाद से इसकी होड़ जारी है. सामाजिक बिखराव और जात-पांत के इस नए दौर में हरिजन समुदाय एक ऐसे नेता की तलाश में रहा है जो उनकी आशाओं-आकांक्षाओं को मूर्त रूप दे सकने की क्षमता रखता हो. इस नेतृत्व का सेहरा बांधने की होड़ मुख्यतः उत्तर भारत में ही चल रही है क्योंकि दक्षिण में अधिकांश पार्टियां और खासकर द्रमुक ने निचली जातियों की अपेक्षाओं को बहुत हद तक पूरा किया है.

छह से भी कम वर्षों में ही कांशीराम का राजनैतिक सितारा जिस तरह बुलंद हुआ है उससे बाकी दूसरे नेतागण अचंभे में हैं. इस कारण उत्तर प्रदेश में राजनैतिक समीकरण भी उलट गए हैं. कांशीराम की निपट जातिवादी राजनीति के कारण मुख्य पार्टियों ने उन्हें 'अछूत' करार दे दिया था. मगर आज प्रायः हर पार्टी उनकी पार्टी के साथ चुनावी तालमेल के लिए बेताब नजर आती है. बसपा ने यों तो बहुत सीटें नहीं जीती हैं मगर उसने वोटों का अच्छा-खासा प्रतिशत हथियाया है और इंका के चंगुल से पर्याप्त हरिजन वोटों को अपने पाले में खींचा है. इससे इंका को भारी झटका भी लगा. कांशीराम उत्साह से कहते हैं, "अगर अगला चुनाव छह महीने में हो जाए तो हमारी पार्टी दूसरी सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभर कर आ जाएगी."

इस दावे को खयाली पुलाव कहकर नहीं टाला जा सकता खास तौर से इस संभावना

सभी फोटो: प्रमोद पुष्करणा

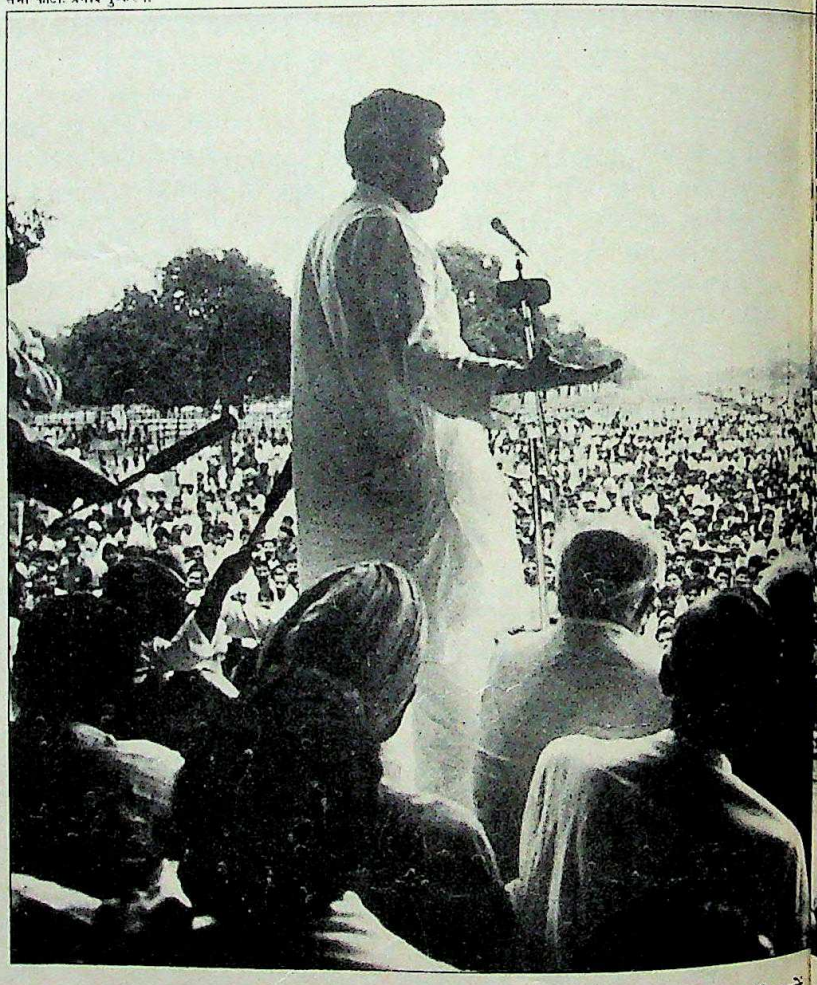

आरक्षण-समर्थक रैली में पासवान

के मद्देनजर कि जनता दल में हरिजन नेताओं को उभारने की विश्वनाथ प्रताप सिंह की रणनीति सफल भी हो सकती है. युवा और उत्साही राम विलास पासवान जिस तरह उभर रहे हैं उसके पीछे वी.पी. सिंह के वरदहस्त का भी असर है. पासवान अपनी छवि दलितों के पैरोकार की बनाने की कोशिश करते रहे हैं. वे पिछड़ों में भी अपना आधार मजबूत करने की जी-तोड़ कोशिशों के तहत मंडल रिपोर्ट की जमकर तरफदारी करते रहे हैं. उनका दावा है कि जनता दल ने ही पहली बार पिछड़ों, हरिजनों और मुसलमानों को एकजुट करने में सफलता पाई है.

कांशीराम की नजर भी इन्हीं समुदायों के वोट बैंक पर रही है. इसी कारण दोनों नेता एक-दूसरे को फूटी आंख भी नहीं सुहाते. पासवान ने उन हरिजन कर्मचारी संघों को अपने पक्ष में करने में सफलता पाई है जो बसपा के स्तंभ रहे. पासवान बसपा को आई-गई पार्टी बताते हुए कहते हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

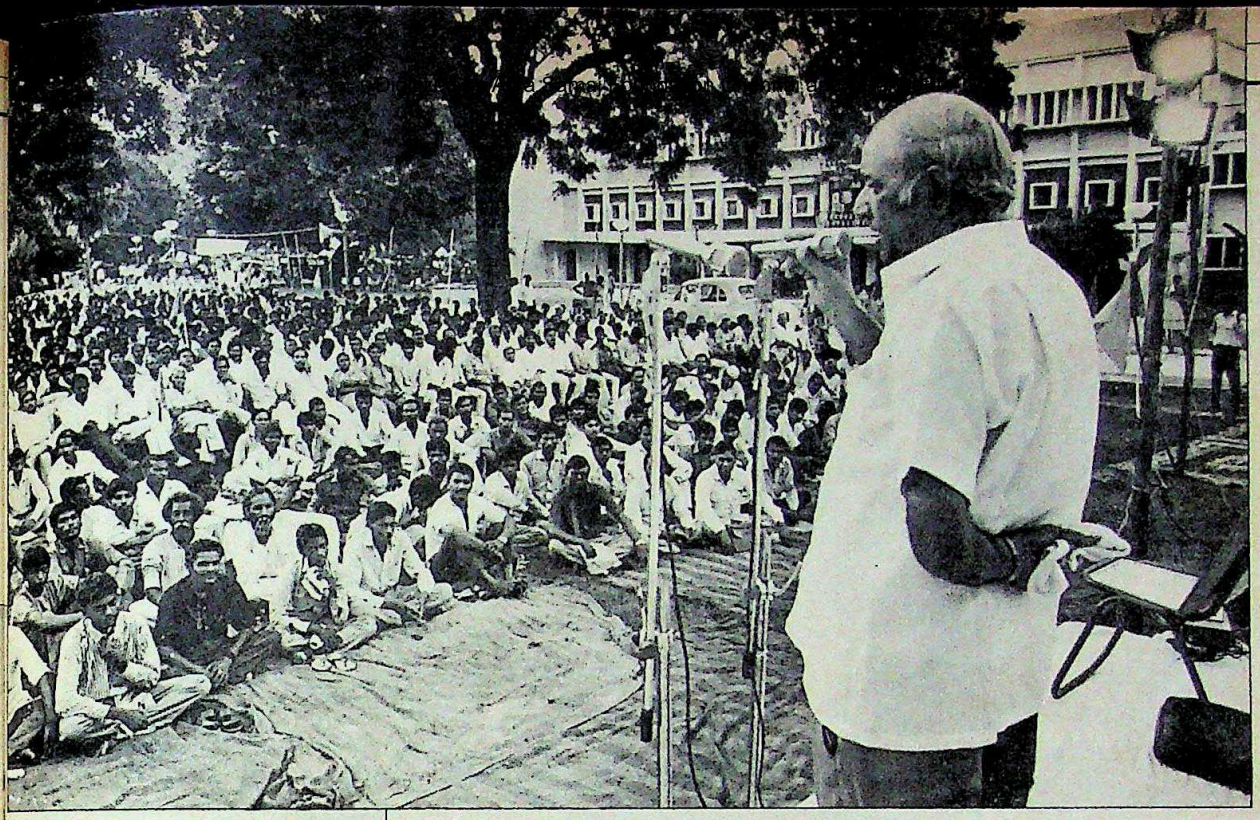

बसपा की दिल्ली रैली में कांशीरामः बढ़ता प्रभाव

"जाति या संप्रदाय के नाम पर चलने वाली पार्टियों का कोई भविष्य नहीं है. दलितों को राष्ट्र की मुख्य धारा में ही लाना होगा."

लेकिन कांशीराम का दावा है कि बसपा कोई अस्थायी पार्टी नहीं है. उन्होंने इंडिया टुडे से कहा, "हम देश में बहुमत में हैं इसलिए बसपा को मुख्य धारा में लाना हमारी जिम्मेदारी है." वे कहते हैं कि इन पार्टियों को लगने लगा था कि हरिजनों में उनका आधार सिमट रहा है. सो, अब वे 'पासवान जैसों को आगे बढ़ा रही हैं.'

लेकिन वी.पी. सिंह केवल पासवान के भरोसे नहीं हैं. दलितों के लिए कई विधेयक लाने के अलावा उन्होंने गुमनामी में पड़े कई हरिजन नेताओं को भी सामने लाने की कोशिश की है. उन्होंने जन मोर्चा के दिनों के अपने सहयोगी रामधन को, जो बाद में उनसे अलग हो गए, हाल ही में राष्ट्रीय अनुसूचित जाति और जनजाति आयोग का अध्यक्ष बनाया था. उन्हें कैबिनेट मंत्री का दर्जा दिया गया. इसी तरह डॉ. बी.आर. आंबेडकर के पौत्र प्रकाश आंबेडकर को राज्यसभा में मनोनीत किया गया. जाहिर है, उद्देश्य था महाराष्ट्र और कुछ दक्षिणी राज्यों में दलितों को प्रसन्न करना. प्रकाश अपनी रिपब्लिकन पार्टी से अलग होकर जनता दल में शामिल हो गए थे. लेकिन तब भी पासवान ही हरिजनों से संबंधित मामलों पर जनता दल के सबसे मुखर प्रवक्ता रहे हैं.

कांशीराम के साथ हर पार्टी चुनावी तालमेल के लिए बेताब है

पासवान को दलित जातियों के युवा, आक्रामक नेता के रूप में पेश किया जा रहा है

वैसे तो हिंदी क्षेत्र में हरिजन, मुसलमान और ब्राह्मण इंका के पुराने वोट बैंक माने जाते रहे हैं. मगर बसपा ने इस वोट बैंक में अच्छी सेंध लगाई है. जनता दल ने जिस तरह हरिजन नेताओं को उभारा है, उसके चलते हरिजनों में इंका का आधार भी खिसकने लगा है. और तो और, इंका के पास कोई भी राष्ट्रीय स्तर का हरिजन नेता नहीं है. हालांकि मीरा कुमार में क्षमता और संभावनाएं हैं मगर पार्टी ने उनका पर्याप्त इस्तेमाल नहीं किया है, उलटे उनकी अनदेखी ही की है.

'समता आंदोलन' नामक संगठन शुरू करके उन्होंने जता दिया कि वे अपनी जगह खुद बनाने के लिए तैयार हैं. वे इंका आलाकमान की उदासीनता पर अप्रत्यक्ष टिप्पणी करती हैं, "हरिजन उस नेता को समर्थन देना चाहते हैं जो स्वाभिमानी हो और उनके लिए संघर्ष करने को तैयार हो. नेता बनाए नहीं जाते, नेता तो खुद उभरते हैं." अपने संगठन को व्यापक बनाने के लिए उन्होंने इधर दिल्ली और हरियाणा में काफी बड़ी रैलियों को संबोधित किया है. अब वे उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान और आंध्र प्रदेश का दौरा करने की योजना बना रही हैं. पिछले चुनाव में कांग्रेस विरोधी लहर के कारण वे हार तो गईं मगर उनमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

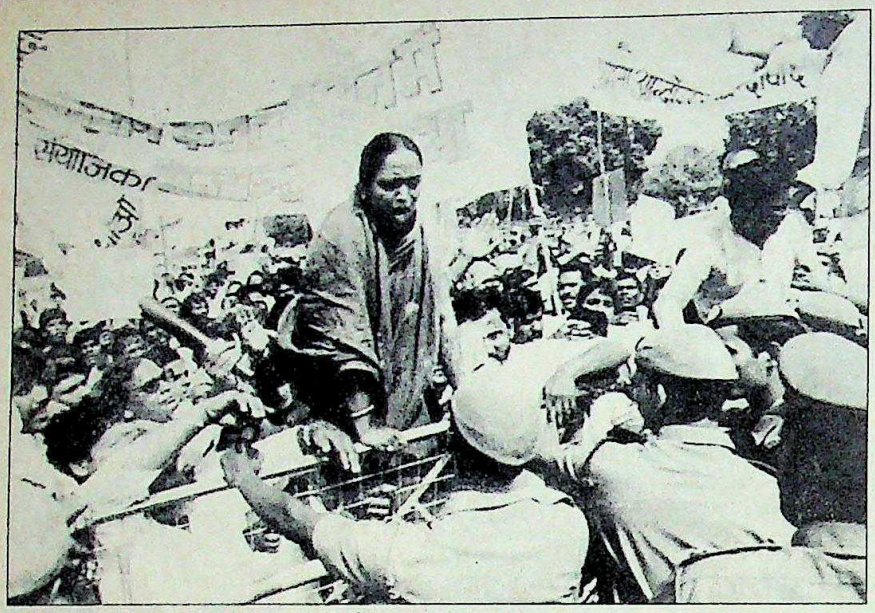

शरद सक्सेना

भीड़ खींचने की क्षमता जरूर है.

दूसरे दलित नेताओं के उग्र रवैये के विपरीत मीरा सामाजिक रूप से कमज़ोर लोगों की समस्याओं को मानव अधिकारों से जुड़ा प्रश्न मानती हैं. उनके अनुसार, "कांशीराम ने हरिजनों के अलावा दूसरे सभी वर्गों को कोसा और भला-बुरा कहा है. इस कारण हरिजन शेष समाज से कटकर रह गए हैं." आगरा में हुए हाल के जातीय दंगों के लिए भी वे बसपा नेताओं को ही जिम्मेदार मानती हैं.

अपने पिता की तरह मीरा भी बीच के रास्ते, समन्वय के रास्ते पर चलना चाहती हैं. उनका मानना है कि "आंबेडकर का जातिवादी सिद्धांत सफल नहीं हुआ है." लेकिन कांशीराम और पासवान डॉ. आंबेडकर का ही पक्ष लेते हैं. बल्कि कांशीराम का तो मानना है कि दलित आंदोलन में फूट के लिए जगजीवन राम ही जिम्मेदार हैं. उनका कहना है कि आंबेडकर के निधन से पैदा हुए शून्य को बसपा भरने की कोशिश कर रही है. पासवान भी आंबेडकर के उत्तराधिकारी होने का दावा करते हैं और जगजीवन राम के विचारों को नकारते हैं. वे कहते हैं, "जगजीवन बाबू तो हमेशा गद्दी से चिपके रहे."

मीरा के अलावा जो एक और इंका नेता निचली जातियों का मसीहा बनकर

अपने समर्थकों के साथ मीरा कुमार (ऊपर) धरने पर बैठे बूटा सिंह

उभरने की कोशिश कर रहे हैं, वे हैं पूर्व गृहमंत्री बूटा सिंह.

दिल्ली में चिपके रंगारंग पोस्टरों से पता चलता है कि वे सफाई मजदूरों की रैली या वाल्मीकि समारोहों में व्यस्त हैं. वैसे भी सफाई मजदूर कर्मचारी कांग्रेस के अध्यक्ष होने के नाते वे आतंकवादियों की धमकी के बावजूद विभिन्न राज्यों का दौरा करते रहे हैं. उनका कहना है कि वे उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब और राजस्थान के करीब 30 जिलों का दौरा कर चुके हैं. अब वे अपने संगठन को खेतिहर मजदूरों तक पहुंचाना चाहते हैं, जिनमें से अधिकतर हरिजन हैं. इंका में किसी दबंग हरिजन नेता की कमी के लिए वे कुछ इंका मुख्यमंत्रियों के 'जातिवादी' रवैये को जिम्मेदार ठहराते हैं. उनके अनुसार, "कुछ राज्यों में हमारे मुख्यमंत्रियों ने हरिजनों के वास्ते बनी नीतियों और कार्यक्रमों को लागू नहीं किया. नतीजतन वे अलग होते गए और इसी विरोध भाव के फलस्वरूप कांशीराम का उदय हुआ." लेकिन, दलितों के लिए उनकी वर्तमान चिंता एक ऐसी सीढ़ी भर लगती है जिसके सहारे वे इंका के पार्टी नेतृत्व में फिर से शामिल होने की आस संजोए बैठे हैं.

जिस तरह जातिवादी समीकरण अहम होते जा रहे हैं, हरिजन नेताओं की ताकत तो बढ़ती ही जाएगी. कांशीराम की ही मिसाल लें. आज देवीलाल से लेकर मुलायम सिंह यादव तक उन्हें पटाने में लगे हैं. खुद कांशीराम को अपनी इस हैसियत का एहसास है और वे दूसरों को भी इसका एहसास कराने लगे हैं. उन्होंने इंडिया टुडे के साथ बातचीत में कहा, "अगर मैं मुलायम सिंह से हाथ मिला लूं तो यह गठबंधन उत्तर प्रदेश में चुनाव में सबका सफाया कर देगा." वे इस बात का खंडन करते हैं कि उनकी राजनीति ने देश में जातीय तनाव को बढ़ावा दिया है. इसके साथ ही उनका दावा है कि "हम जात-पांत को जड़ से नष्ट कर देना चाहते हैं, क्योंकि हम ऐसी व्यवस्था के भुक्तभोगी रहे हैं."

कांशीराम और उनके जैसे नेताओं का मानना है कि वे जातिवादी संघर्ष के जरिए ही जातिवाद को समाप्त कर सकते हैं. यह महात्मा गांधी के सहिष्णुता और भाईचारे के संदेश के बिलकुल विपरीत है. मगर उग्र तेवरों और संघर्ष की मुद्राओं के इस दौर में गांधी के संदेशों पर ध्यान देने की किसे फुरसत है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फोटो फ्रिक्वेंसी

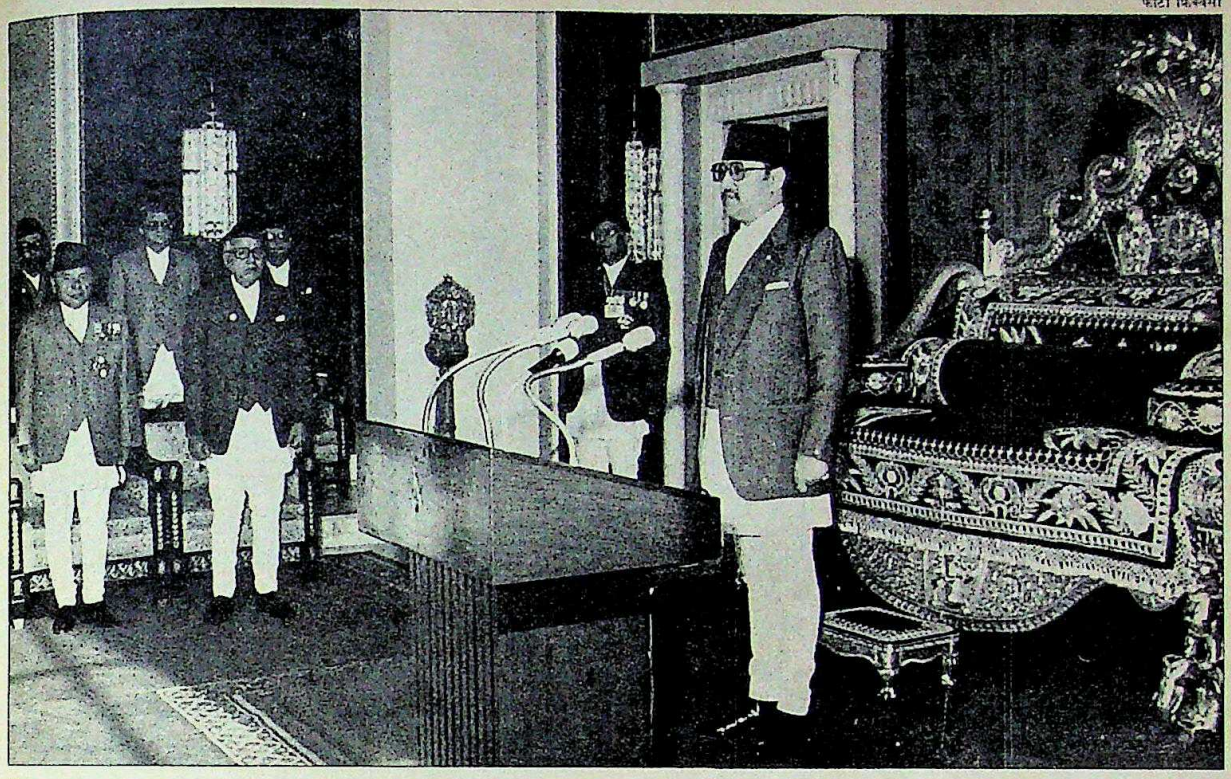

नेपाल

संविधान की टेढ़ी समस्या सुलझी

नरेश और साझा मंत्रिमंडल में टकराव टल गया

मिन बज्राचार्य

(सबसे ऊपर) नरेश वीरेंद्र; और
पत्नी सहित गणेश मान सिंह (बीच में)

नेपाल में संविधान आम तौर पर उस साल के नाम से जाने जाते हैं जिस साल वे लागू किए जाते हैं. सो, शुक्रवार, 9 नवंबर को जब नेपाल नरेश वीरेंद्र वीर विक्रम शाह ने तीन दशकों के भीतर नेपाल के चौथे संविधान के लागू होने की घोषणा की तो लोगों की तुरंत प्रतिक्रिया थी कि यह '1990 का संविधान' है. नेपाली कांग्रेस के नेता दलील देते रहे कि इतिहास के इस मोड़ पर 'मूलभूत तत्व' 'ब्यौरों' से ज्यादा महत्वपूर्ण हैं. मगर काठमांडो के किसी भी आदमी को निकट भविष्य में ही दूसरे संविधान की संभावना से इनकार नहीं रहा था.

नए संविधान की घोषणा के हफ्तों पहले हंगामाखेज नाटक चला. राजमहल ने संविधान का जो मसौदा जारी किया उस पर सड़कों पर प्रदर्शन और रैलियां होने लगीं. सेना के उच्चाधिकारियों ने पूरी कोशिश की कि नरेश की प्रभुसत्ता बनी रहे जबकि नेपाली कांग्रेस और वाम मोर्चा को मिलाकर बना मंत्रिमंडल कोई बीच का रास्ता निकालने में लगा था. आखिर 9 नवंबर को इस समस्या का हल निकल आया और इस तरह राजमहल और मंत्रिमंडल का टकराव टल गया.

नरेश वीरेंद्र द्वारा संविधान की घोषणा के तुरंत बाद नारायणहिती राजमहल में जश्न शुरू हुआ. संक्षिप्त समारोह के लिए, जिसमें कुछ विशेष लोगों को ही आमंत्रित किया गया था, राजमहल का राज सिंहासन कक्ष खोल दिया गया. इसके पहले यह कक्ष सामान्य लोगों के लिए कभी नहीं खुला था. यही नहीं, इसके बाद हुई दावत में शाही दंपती अपने मेहमानों के बीच घुले-मिले भी, जबकि अभी हाल तक प्रधानमंत्री भी शाही दंपती से आंखें मिलाने की जुर्रत नहीं कर सकते थे.

एक तरफ नरेश वीरेंद्र ने अपने मेहमानों को बेहद उम्दा शराब पेश की और शाम को राजमहल में आतिशबाजी की पूरी छूट दे दी, वहीं काठमांडो में लोगों का चेहरे बुझे हुए थे. लोकतंत्र बहाली आंदोलन के बाद का उत्साह भी गायब था. संविधान की घोषणा के दिन को 'मुक्ति दिवस' के रूप में मनाने वाली नेपाली कांग्रेस के समारोहों के बावजूद तनाव स्पष्ट था. उग्र वामपंथियों ने काले झंडे लेकर 'काला संविधान वापस लो' के नारे लगाए. राजधानी काठमांडो के कई भागों में पिछली शाम की तरह, जो कि महारानी ऐश्वर्य राज्यलक्ष्मी का जन्मदिन था, विरोध में अंधेरा रखा गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबसे ज्यादा संदेह राज परिवार की अविश्वसनीयता के कारण फैला. यहां तक कि नेपाली कांग्रेस के सर्वोच्च नेता गणेश मान सिंह ने भी चुटकी ली, "नरेश को छोड़ राजमहल का कुत्ता तक लोकतंत्र के खिलाफ है." आशंकाएं उस समय और भी बढ़ गई जब नरेश वीरेंद्र ने सशस्त्र सेनाओं पर से नियंत्रण छोड़ने से एकदम इनकार कर दिया.

गणेश मान सिंह ने तो कहा कि उन्हें 'बेहतर संविधान की उम्मीद नहीं थी'. मगर कई लोग दुखी दिखे 'धर्मनिरपेक्ष' लोगों को यह देखकर निराशा हुई कि मंत्रिमंडल ने संविधान की प्रस्तावना में 'हिंदू राज्य' शब्द बनाए रखने की मंजूरी दे दी. जो लोग राष्ट्रगान (दरअसल नरेश स्तुति) बदलने के हिमायती थे, उन्हें भी निराशा हुई. लोगों की राय में नरेश के अधिकार जस के तस हैं.

मिन बज्राचार्य

नए संविधान की घोषणा पर उत्सव मनाते नेपाली कांग्रेस के कार्यकर्ता

सबसे ज्यादा निराश तो वामपंथी पार्टियां हैं. राजशाही के खात्मे की वकालत करने वाली इन पार्टियों की राय में नया संविधान नरेश और नेपाली कांग्रेस के गठजोड़ पर ही मुहर लगाता है. ऐसे भी संकेत मिले हैं कि नेपाली कांग्रेस अकेले चुनाव लड़ेगी और वामपंथियों को विपक्ष की भूमिका निभाने के लिए छोड़ देगी. नेपाली कांग्रेस के एक नेता ने दबी जुबान में कहा, "जीवंत लोकतंत्र में मजबूत विपक्ष की जरूरत होती है. अगर हम गठजोड़ करके चुनाव लड़ेंगे तो विपक्ष में कौन होगा?" विभाजन की इस संभावना के मद्देनजर लगता है 1990 का संविधान एक बड़ा चुनावी मुद्दा होगा.

—उत्तम सेनगुप्त, काठमांडो में

संविधान

अहम पड़ाव

जाहिर है, खामियों के बावजूद 1990 का संविधान नेपाल के राजनैतिक इतिहास का एक अहम पड़ाव है. पहली बार बहुदलीय व्यवस्था को मान्यता दी गई है, संप्रभुता नरेश से जनता को हस्तांतरित की गई है, शारीरिक सजा और पूर्व-सेंसरशिप खत्म कर दी गई है, अदालतों को बताए बिना हिरासत में रखने पर रोक लगा दी गई है, नरेश के आपातकालीन अधिकारों में कटौती कर दी गई है और उनके लिए मंत्रिमंडल की सलाह मानना अनिवार्य कर दिया गया है.

फिर भी नेपाल नरेश वीरेंद्र ने अपने और अपने परिवार के लिए कई महत्वपूर्ण रियायतें करवा ली हैं. सेना पर अपना नियंत्रण बनाए रखने के अलावा उन्होंने यह भी तय करवा लिया है कि शाही परिवार की परिभाषा में कोई परिवर्तन न हो. संविधान सलाहकार आयोग ने शाही परिवार में नरेश, साम्राज्ञी, उनके बच्चों और नरेश की मां को शामिल किया था. इसके पीछे इरादा नरेश के भाइयों और दूसरे रिश्तेदारों को शाही सुविधाओं से वंचित रखने का था. कम्युनिस्ट पार्टियों ने तो यह मुहिम ही चला रखी थी कि नरेश के रिश्तेदार राजशाही और व्यवसायी की हैसियत में से किसी एक को चुन लें चूंकि शाही परिवार की संपत्तियों और आमदनियों पर कोई कर नहीं लगता इसलिए शाही सुविधाएं अच्छा मुनाफा करातीं हैं. समझौते में नरेश को यह छूट दी गई है कि वे शाही परिवार की परिभाषा और उसके उत्तराधिकार के बारे में फैसला कर सकते हैं.

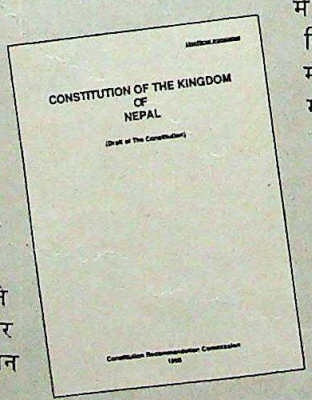

संप्रभुता अब जनता को हस्तांतरित की गई है

इसी तरह राजशाही ने मंत्रिमंडल को राजी कर लिया कि पिछले आंदोलन को 'ऐतिहासिक जनआंदोलन' की जगह 'हाल में संपन्न जन आंदोलन' लिखा जाए.

लेकिन भारत के मामले में राजशाही अपने मन की न कर पाई. राजमहल की ओर से पेश किए गए मसौदे में नेपाल को शांति क्षेत्र घोषित करने की बात कही गई जबकि भारत इस प्रस्ताव के विरोध में है. अंतिम मसौदे में इसका कोई जिक्र नहीं.

राजमहल चाहता था कि हरेक संधि पर संसद के दो-तिहाई बहुमत की मंजूरी ली जाए, जबकि मंत्रिमंडल सदन में मौजूद सदस्यों के दो-तिहाई बहुमत की मंजूरी के पक्ष में था. मंत्रिमंडल की ही बात रही.

प्रधानमंत्री कृष्ण प्रसाद भट्टराई कबूल करते हैं, "हो सकता है यह सर्वश्रेष्ठ दस्तावेज न हो मगर इसमें संशोधन की तो गुंजाइश है." जो भी हो, नेपाल जबकि अगले चुनाव की प्रतीक्षा कर रहा है, नेपाली कांग्रेस और संयुक्त वाम मोर्चा ने अपना एक वादा तो पूरा कर दिया है.

—उत्तम सेनगुप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज यहाँ दिये इन सभी कमरों में मेलखाते संगमरमर के फर्श लगाइये।

और कल तक ठीक ऐसा ही अपने घर में लगाइये

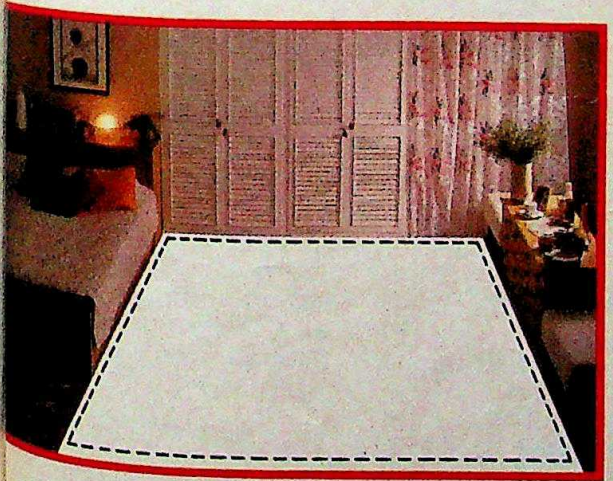

टाइल्स के इन तीन नमूनों को काटिये और बायीं तरफ दिये गये कमरों में, जहाँ वे सबसे खूबसूरत लगें चिपकाइये।

जी हाँ, करारा के साथ आपके घर में संगमरमर का फर्श लगाना उतना ही आसान है जितना कि इस विज्ञापन में नमूनों को चिपकाना।

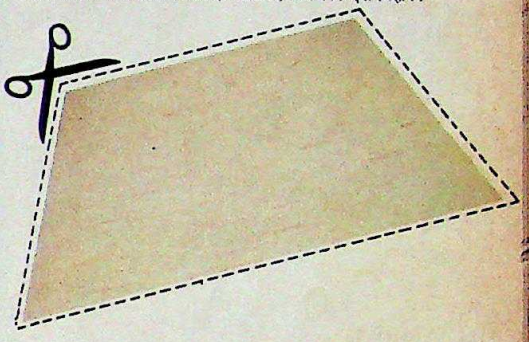

यह कितना आसान है! अपने मौजूदा फर्श पर करारा लगाइये। यह बस कुछ घंटों की ही बात है न कोई झंझट न कोई असुविधा. यह बेजोड़ ब्लैंडेड मार्बल फर्श संगमरमर के बेहतरीन दानों से बनाया गया है।

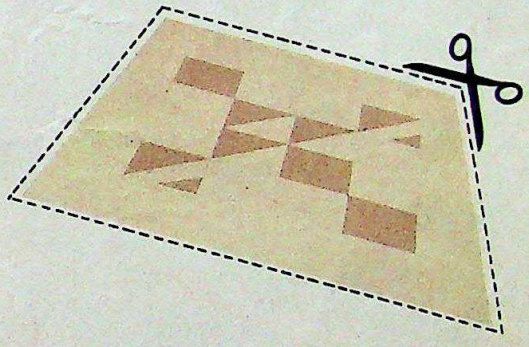

यह दो खूबसूरत डिज़ाइनों और तरह-तरह के मूल रंगों में उपलब्ध है। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि इस पर खरोंचें भी आसानी से नहीं लग सकती हैं. और क्यों न हो आखिर, अमेरिका की सबसे बड़ी फ्लोरिंग कम्पनी आर्मस्ट्रॉंग के विशेष तकनीकी सहयोग से यह बनाया जाता है। तभी तो यह वर्षों टिकता भी है। शीघ्र ही हमारे किसी क्षेत्रीय कार्यालय से सम्पर्क करें व अपने घर में एक नया खूबसूरत संगमरमर का फर्श लगायें।

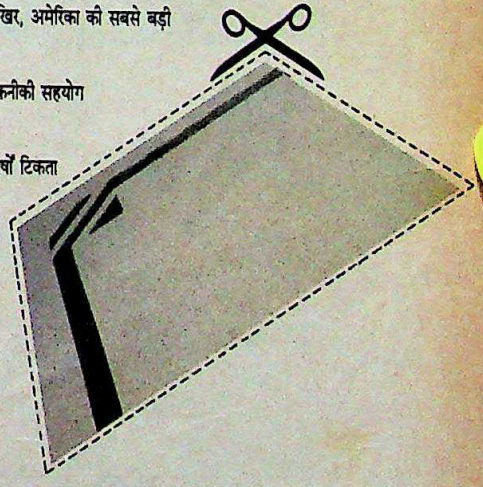

Armstrong

CARARA

ब्लैं डे ड मा र्ब ल टा इ ल्स

तुरंत शानदार फर्श तैयार

Armstrong World Industries permit INARCO Ltd. the use of the brand name Armstrong, under licence.
INARCO Offices: Bombay: 12-A, Advent, Gen. Bhosale Marg, Bombay 400 021. Ph. 2022621, 2022212.
Delhi: Ph. 3712047, 3712253, 3324418 ★ Calcutta: Ph. 444990, 432768 ★ Madras: Ph. 475191, 476596, 479186

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

HTA 2906

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Sky

Manscapes *by* Park Avenue

The Shirt. To rise above confusion..

To stand apart and gain strength.

in quietness. The key to the ascent of man.

Park Avenue

Style. It never goes out of fashion.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

LINTAS PA 141 2416

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डैण्ड्रफ़ से छुटकारा पाने का एक ख़ूबसूरत उपाय.

ज़्यादातर लोग समझते हैं कि डैण्ड्रफ़ का मतलब है केवल सिर की त्वचा में होनेवाली खुजली की परेशानी. शायद वे नहीं जानते कि इसके कारण आपके बालों की रौनक भी जाती रहती है. डैण्ड्रफ़ के कारण बाल रूखे और बेजान नज़र आते हैं.

नया क्लिनिक स्पेशल बड़ी नरमाई से डैण्ड्रफ़ हटाये. फिर तो आपके बाल सचमुच शानदार नज़र आयें. जी हां, इसका नया अंतर्राष्ट्रीय फ़ॉर्म्युला सिर की त्वचा से डैण्ड्रफ़ को छुड़ा कर हटा देता है.

इसमें है गुण भरा, क्रीम-सा कंडीशनर जिससे आपके बाल मुलायम व चमकीले बने रहते हैं. यानी डैण्ड्रफ़ से छुटकारा पाने के बाद भी आप इसका नियमित इस्तेमाल कर सकते हैं.

नया क्लिनिक स्पेशल अपनाइए ताकि डैण्ड्रफ़ दुबारा न आने पाये. और आपके बाल भी हमेशा सुंदर व शानदार नज़र आयें.

नया
क्लिनिक स्पेशल
ऐंटी डैण्ड्रफ़ शैम्पू

आप पायें डैण्ड्रफ़ रहित बाल, देखनेवाले सराहें सुंदर-सजीले बाल!

HTA 2724

हिन्दुस्तान लिवर लि. का एक उत्कृष्ट उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इंडिया टुडे प्रस्तुत म्यूजिक टुडे.
भोर से अर्धरात्रि तक के राग

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन से रात तक के रंगों की अनूठी संगीत यात्रा. एक-एक घंटे के 16 ऑडियो कैसेटों पर प्रतिष्ठित संगीतकारों के चुनिंदा राग उनके विशिष्ट अंदाज में, विशुद्ध स्वर की पकड़ डिजिटल पद्धति से तैयार कैसेटों पर.

और आपके घर डाक अथवा कूरियर से पाने की सुविधा.

भोर के राग

भाग-1 (कोड ए 90001)
ललित
राजन और साजन मिश्र (गायन)
भैरव
शाहिद परवेज़ (सितार)
अहीर भैरव
श्रुति सदोलिकर (गायन)

भाग-2 (कोड ए 90002)
मियां की तोड़ी
अमजद अली खां (सरोद)
भटियार
पंडित जसराज (गायन)
विभास
श्रुति सदोलिकर (गायन)

भाग-3 (कोड ए 90003)
जौनपुरी
पद्मा तलवलकर (गायन)
बिलासखानी तोडी
अमजद अली खां (सरोद)
देसी तोड़ी
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)

भाग-4 (कोड ए 90004)
कुकुभ बिलावल
मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन)
देशकार
शाहिद परवेज़ (सितार)
भैरवी
पद्मा तलवलकर (गायन)

दोपहर के राग

भाग-1 (कोड ए 90005)
शुद्ध सारंग
अमजद अली खां (सरोद)
सुघर
मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन)
गौड़ सारंग
पद्मा तलवलकर (गायन)

भाग-2 (कोड ए 90006)
बृंदावनी सारंग
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)
मधमद सारंग
पंडित जसराज (गायन)
घनी
शाहिद परवेज़ (सितार)

भाग-3 (कोड ए 90007)
भीमपलासी
मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन)
पटदीप
श्रुति सदोलिकर (गायन)
मांड
शाहिद परवेज (सितार)

भाग-4 (कोड ए 90008)
मुल्तानी
राजन और साजन मिश्र (गायन)
मधुवंती
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)
पीलू
अमजद अली खां (सरोद)

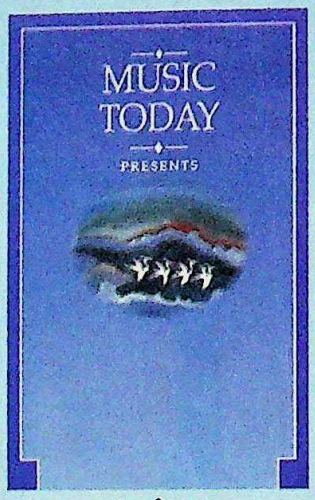

सांध्य के राग

भाग-1 (कोड ए 90009)
मारवा
पंडित जसराज (गायन)
श्री
श्रुति सदोलिकर (गायन)
हंसध्वनि
शाहिद परवेज (सितार)

भाग-2 (कोड ए 90010)
पूरिया
राजन और साजन मिश्र (गायन)
श्याम कल्याण
अमजद अली खां (सरोद)
नंद
मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन)

भाग-3 (कोड ए 90011)
शुद्ध कल्याण
पद्मा तलवलकर (गायन)
मांझ खमाज
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)
दुर्गा
राजन और साजन मिश्र (गायन)

भाग-4 (कोड ए 90012)
यमन
शाहिद परवेज़ (सितार)
शंकरा
पंडित जसराज (गायन)
मिश्र धारा
श्रुति सदोलिकर (गायन)

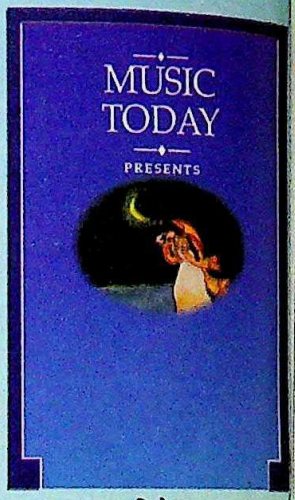

रात्रि के राग

भाग-1 (कोड ए 90013)
शुद्ध नट
मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन)
केदार
पद्मा तलवलकर (गायन)
झिंझोटी
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)

भाग-2 (कोड ए 90014)
बागेश्वरी
पंडित जसराज (गायन)
हमीर
पद्मा तलवलकर (गायन)
तिलक कामोद
शाहिद परवेज़ (सितार)

भाग-3 (कोड ए 90015)
मालकौंस
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)
मारु विहाग
श्रुति सदोलिकर (गायन)
जैजैवंती
राजन और साजन मिश्र (गायन)

भाग-4 (कोड ए 90016)
नायकी कान्हड़ा
श्रुति सदोलिकर (गायन)
देश
पंडित जसराज (गायन)
दरबारी
अमजद अली खां (सरोद)

मूल्य (टैक्स पैकिंग और भेजना शामिल)

एक कैसेट	45 रु.	
कोई दो कैसेट	90 रु.	
कोई तीन कैसेट	125 रु.	एक कैसेट के मूल्य के हिसाब से 7% से भी अधिक की बचत:
कोई चार कैसेट या अधिक	@40 रु. प्रति कैसेट	एक कैसेट के मूल्य के हिसाब से 11% से भी अधिक की बचत.

विशेष पेशकश

इंडिया टुडे की एक रेगुलर 'एड्रेसबुक' मुफ्त.
म्यूजिक टुडे के 16 कैसेटों के एक साथ ऑर्डर पर आप पाएंगे 85 रु. मूल्य की एक रेगुलर इंडिया टुडे एड्रेस बुक मुफ्त.

इंडिया टुडे 'कॉम्पैक्ट एड्रेस बुक' मुफ्त

म्यूजिक टुडे....के 8 से 15 कैसेटों का ऑर्डर एक साथ देने पर आप पाएंगे 50 रु. मूल्य की एक इंडिया टुडे कॉम्पैक्ट एड्रेस बुक मुफ्त.

मुफ्त
रेगुलर | कॉम्पैक्ट

कृपया ध्यान दें

- दिल्ली से बाहर के स्थानों के चेकों के साथ 5 रु. की अतिरिक्त राशि आवश्यक.
- मुंबई, कलकत्ता, मद्रास और दिल्ली के चेक/डिमांड ड्राफ्टों का एमआईसीआर होना आवश्यक.
- कैसेट आपके घर रजिस्टर्ड डाक या कूरियर से पहुंचाए जाएंगे.
- डिलीवरी के लिए कृपया 3-6 सप्ताह का समय दें.
- उपहार देने के लिए कृपया उपहार पाने वाले का नाम और पता संलग्न ऑर्डर फार्म पर लिखकर भेजें.
- देय राशि 'लिविंग मीडिया इंडिया लिमिटेड' के नाम करें और 'म्यूजिक टुडे', पोस्ट बाक्स नं. 29, नई दिल्ली-110001 के पते पर भेजें.
- अगर संलग्न ऑर्डर फार्म न मिले तो अपना ऑर्डर अपने नाम, पता और देय राशि के साथ 'म्यूजिक टुडे', पोस्ट बॉक्स-29, नई दिल्ली-110001 को भेज दें.
- दर व पेशकश सिर्फ भारत में ही लागू है।

ऑर्डर फार्म

कोड नं.	कैसेट संख्या
ए-90001	
ए-90002	
ए-90003	
ए-90004	
ए-90005	
ए-90006	
ए-90007	
ए-90008	
ए-90009	
ए-90010	
ए-90011	
ए-90012	
ए-90013	
ए-90014	
ए-90015	
ए-90016	

मैं 'म्यूजिक टुडे' कैसेटों के लिए नीचे लिखे विवरण के अनुसार ऑर्डर देना चाहता/चाहती हूं।

मेरे लिए ☐ उपहार ☐

लिविंग मीडिया लिमिटेड को देय ——— रु. का रेखांकित चेक (दिल्ली से बाहर के ऑर्डरों के लिए 5 रु. और जोड़ें)/डिमांड ड्राफ्ट/संलग्न कर रहा/रही हूं।

* कृपया ऑर्डर फार्म कम्प्यूटर प्रोसेसिंग सुविधा हेतु अंग्रेजी में ही भरें

ऑर्डर किए कैसेटों की संख्या ———

कुल देय राशि ———

My Name ———

Address ———

——— Pin

Gift for ———

Address ———

——— Pin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीमा ओकेरी

मैदान पर हड़कंप

भारतीय फुटबाल को नई जान और नई गति देने वाला खिलाड़ी

भारतीय फुटबाल को दैवी वरदान की तरह वह खिलाड़ी मिल गया है जिसकी उसे बुरी तरह तलाश थी. इस खिलाड़ी का नाम है चीमा ओकेरी. चीमा नाइजीरिया से वाणिज्य की डिग्री लेने आया था और विशाखापत्तनम में एक टूर्नामेंट में खेल रहा था कि अचानक उसका नाम चमक उठा. जल्द ही वह भारतीय फुटबाल के मक्का—कलकत्ता—पहुंचा और फिर तो उसका नाम देश के आला खिलाड़ियों में शुमार हो गया. और अब पांच साल बाद 28 वर्षीय ओकेरी भारतीय फुटबाल का एकमात्र ऐसा सुपरस्टार है जिस पर नाज किया जा सकता है.

जब से चीमा मैदान में उतरा है, भारतीय फुटबाल का नजारा ही बदल गया है. खेल में एक नई जान, एक नई गति आ गई है. वह जैसा फुटबाल खेलता है उस तरह का खेल बहुत कम ही भारतीयों के बस की बात है. पैरों पर गेंद आते ही वह हरकत में आ जाता है और फिर अपनी मांसपेशियों की ताकत का इस्तेमाल करते हुए विपक्षी टीम की सुरक्षा की दीवार की धज्जियां बिखेर देता है. अक्सर गेंद गोल के आंचल (जाल) में पहुंचकर ही दम लेती है.

दिल्ली के आंबेडकर स्टेडियम की गैलरी में बैठे हुए चीमा ने बताया, "मुझे नहीं लगता कि भारत में खेलना शुरू करने के बाद मैंने अपने खेल में कोई सुधार किया है." काला चश्मा और काली टी-शर्ट में वह कुछ ज्यादा ही खतरनाक और अजेय दिख रहा था. मगर अपनी अजेयता के बारे में वह पूरी तरह निश्चित नहीं है क्योंकि उसे अभी तक कोई ऐसा खिलाड़ी नहीं मिला जो उसी की शैली में खेलता हो. पर उसका खयाल है कि दमखम बढ़ाकर वह कई तरह से अपना खेल सुधार सकता है. ताकत और दमखम की प्रतिमूर्ति बना खिलाड़ी ही जब ऐसी बात करे तो समझा जा सकता है कि वह अपने खेल के प्रति कितना निष्ठावान है. उसने कहा भी, "मैं अपना दमखम बढ़ाना चाहता हूं ताकि मैदान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक छा जाऊं. ऐसा ही खेल मुझे पसंद है."

वह जिस गैर-पारंपरिक तरीके से खेलता है उससे विपक्षी रक्षापंक्ति में हड़कंप मच जाता है. जवाब में उसे घेरकर उसकी लय बिगाड़ देने की रणनीति बनाई जाती है. केरल पुलिस की टीम के लिए सर्वोत्तम रक्षापंक्ति तैयार करने वाले टी.पी. चटुन्नी बताते हैं, "मैं किसी एक खिलाड़ी को नहीं, सभी खिलाड़ियों से कहता हूं कि उस पर नजर रखो क्योंकि वह मैदान में बस भागता ही रहता है."

कलकत्ता लीग जैसे टूर्नामेंटों में उसने सबसे ज्यादा गोल दागे हैं. 1985 में जब पहली बार वह मोहम्मडन स्पोर्टिंग में शामिल हुआ तो 24 मैचों में टीम के 33 गोलों में से 16 उसने ही दागे थे और अगले साल उसने 11 मैचों में 5 गोल किए. 1987 में जब वह ईस्ट बंगाल में चला गया तो 28 मैचों में टीम के 70 गोलों में 26 उसी ने किए. 1988 में उसने ज्यादा फुटबाल नहीं खेला पर 1989 में जब वह फिर लौटा तो ईस्ट बंगाल के कुल 57 गोलों में 17 उसी ने ठोंके थे. इस साल लीग में 9 गोलों के साथ उसी का नाम सबसे ऊपर रहा

चीमा में गजब की शक्ति और गोल दागने की क्षमता है. कुलजीत के साथ वह विपक्षी टीम पर कहर ढा देता है

मैवल दास

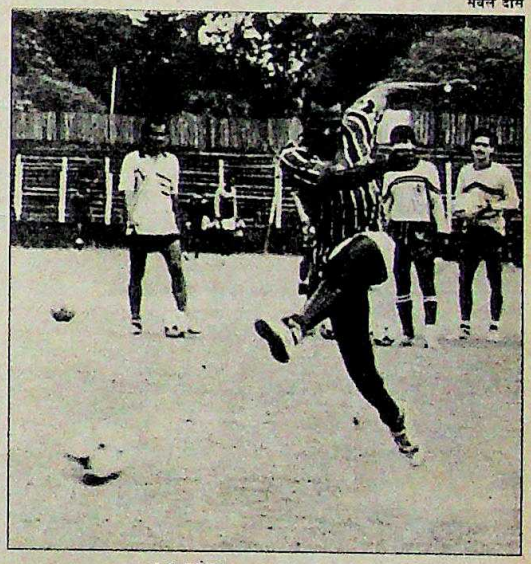

कलकत्ता में अभ्यासरत चीमा (दाएं); और डीसीएम स्पर्धा में हमले पर: अद्भुत प्रदर्शन

शरद सक्सेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके साथ दिक्कत यह है कि वह सनकी है. अगर उसके हमले बार-बार खाली चले जाएं तो वह बौरा जाता है. हालत यहां तक पहुच जाती है कि उसे कार्ड दिखाए जाने लगते हैं और अंततः मैदान से निकाल दिया जाता है. पूर्व अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी और प्रशिक्षक रणजीत थापा के अनुसार, "चीमा ईस्ट बंगाल के ज्यादातर हमलों की भद पीट देता है. वह टीम के भविष्य के लिए खेलने की जगह अपने लिए तालियां पिटवाने के लिए खेलता है."

ऐसा उसके स्वाभाविक खिलाड़ी होने की वजह से भी है. उसके हमले, उसकी ड्रिबलिंग, उसके शॉट, किसी में भी किताबीपन नहीं है. यह तरीका "छह साल की उम्र से ही मैंने तफरीह के लिए खेलने में अपना लिया था." इस तरह का फुटबाल चीमा को भारत में और कहीं नहीं दिखाई देता क्योंकि "भारत में तफरीह के लिए हर कोई क्रिकेट खेलता है." और उसी की बदौलत अब भारत में नाइजीरियाई खिलाड़ियों की काफी मांग है. मोहम्मडन स्पोर्टिंग में ही इस साल तीन नाइजीरियाई खिलाड़ी खेल रहे हैं.

ईस्ट बंगाल के हमलावर खिलाड़ियों—चीमा व कुलजीत—की जोड़ी तो तबाही मचा देती है. भारतीय मैदानों पर एक अरसे से ऐसी जोड़ी नहीं दिखाई दी. चीमा की मौजूदगी का कुलजीत के खेल पर ज्यादा असर नहीं पड़ता और वह मानता है कि ताकत व दमखम ही चीमा के खेल का आधार है. वह कहता है, "ऐसे ही कौशल वाले कई और खिलाड़ी भी हैं."

खेलने की चीमा की अपनी शैली है पर वह अग्रिम पंक्ति में अपने साथ कुलजीत, विजयन, मोहन बगान के शिशिर घोष या मोहम्मडन स्पोर्टिंग के नाइजीरियाई खिलाड़ी चिबूजोर के साथ खेलना चाहता है.

चीमा अंतरराष्ट्रीय स्तर का खिलाड़ी है या नहीं यह विवाद का विषय है. बहुत से लोगों का मानना है कि क्योंकि वह औसत दर्जे के खिलाड़ियों के बीच खेलता है इसलिए अंधों में काना राजा है. अगर वह वाकई विश्व स्तर का खिलाड़ी है तो उसे अपना समय रेड रोड के आसपास के मैदानों में खेलते हुए नहीं बरबाद करना चाहिए. पर मैदान में जब उसके पैरों से धमाके होते हैं तो ऐसी आशंकाओं के स्वर उनमें डूब जाते हैं.

—बीनू.के. जॉन

कलकत्ता का फुटबाल

जोर नहीं रहा

पिछले पखवाड़े दिल्ली में जब प्रतिष्ठित डीसीएम फुटबाल टूर्नामेंट के आखिरी मैच शुरू हुए तो इनमें कलकत्ता का सिर्फ एक ही बड़ा क्लब पहुंच पाया. कलकत्ता के फुटबाल के पतन का यह एक और प्रतीक है. एक जमाना था जब पूरे देश में कलकत्ता और फुटबाल को एक दूसरे का पर्याय समझा जाता था. पर अब कुछ समय से कलकत्ता के तीनों धुरंधर क्लबों—मोहन बगान, ईस्ट बंगाल और मोहम्मडन स्पोर्टिंग— का खेल लगातार खराब होता जा रहा है.

भारतीय फुटबाल का यह बहुचर्चित मक्का अब मानो उसकी कब्रगाह बनता जा रहा है. पिछले पांच साल में यहां से ढंग का एक भी नया युवा खिलाड़ी नहीं उभरा. दरअसल 1985 में मोटी रकम लेकर क्लब बदलने वाले 10 आला खिलाड़ियों में से पांच की मांग अभी तेज है. मोहन बगान के रक्षक सुब्रत भट्टाचार्य 17 साल बाद इस साल रिटायर हो गए. मगर उनकी जगह लेने वाला कोई अच्छा खिलाड़ी ही नहीं मिल रहा. इस साल ये क्लब खिलाड़ियों को खरीदने में करीब 60 लाख रु. खर्च कर रहे हैं.

मगर बाकी देश में पैसे की कमी की समस्या है तो कलकत्ता में ज्यादा पैसे का होना ही फुटबाल को नहीं पनपने दे रहा. मोहन बगान के अधिकारियों के अनुसार इसमें पैसा लगाने वाले व्यापारियों के लिए "यह खर्च उनके व्यापार और उनकी पहुंच को बढ़ाने का जरिया है."

खिलाड़ियों की जिंदगी मैच जीतने की मशक्कत में नहीं बल्कि क्लब बदलने की फीस की सौदेबाजी में ही बीतती है. सौदेबाजी व क्लबों से लुकाछिपी में दो महीने बीत जाते हैं और उसके बाद लीग मैचों की तैयारी का समय सिर पर होता है. 'ए' डिवीजन की हर टीम को दो महीने में 25 मैच खेलने होते हैं. इसके अलावा इन खिलाड़ियों को अपने आफिस की टीम के लिए भी खेलना होता है. चीमा

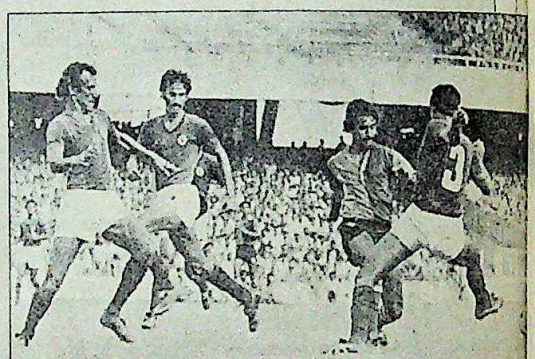

प्रदीप मंधानी

1985 की कलकत्ता लीग; और (बाएं) डीसीएम स्पर्धा में ईस्ट बंगाल

ओकेरी का मानना है कि हर टीम को एक हफ्ते में एक या दो मैच खेलना चाहिए. ज्यादा मैच खेलने की वजह से ही कलकत्ता का खेल खराब होता जा रहा है.

पूर्व सुपरस्टार मुहम्मद हबीब द्वारा प्रशिक्षित जमशेदपुर की टाटा फुटबाल अकादमी की टीम हाल में उभरी सर्वोत्तम टीमों में है. इसके ज्यादातर नौजवान खिलाड़ी कलकत्ता के ही हैं. थोड़े-बहुत जो युवा खिलाड़ी खून-पसीना एक करके 'ए' डिवीजन तक पहुंच जाते हैं और बड़े क्लबों की नजर में पड़ जाते हैं वे या तो प्रसिद्ध खिलाड़ियों की चमक से चुंधियाए रहते हैं या उनके आगे फीके पड़ जाते हैं.

—बीनू के. जॉन और उत्तम सेनगुप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन्म एक जनक का

भारत बिजनेस इन्टरनैशनल लिमिटेड

व्यापार से जुड़े भारतीय सार्वजनिक उपक्रमों का परिवार एक महत्वपूर्ण घोषणा करना चाहता है।

हम घोषणा करते हैं कि इस परिवार के जनक का जन्म हुआ है।

17 अप्रेल, 1990 को जन्मे इस जनक का नाम रखा गया - बी बी आई एल, भारत बिजनेस इन्टरनैशनल लिमिटेड, जनक चाहे नवजात हो, परिवार के सदस्य विपणन के क्षेत्र में भलीभांति स्थापित हैं।

दि स्टेट ट्रेडिंग कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड, दि मिनरल्स एण्ड मैटल्स ट्रेडिंग कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड,

दि प्रोजेक्टस एण्ड इक्विपमेंट कारपोरेशन और दि स्पाइसेज़ ट्रेडिंग कारपोरेशन आफ इंडिया लिमिटेड

अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक समुदाय में इन संस्थाओं का अपना एक विशिष्ट स्थान है। और अब इनका जनक भी है।

होल्डिंग कंपनी के रूप में यह परिवार के सभी सदस्यों के बीच सामंजस्य पैदा करेगा, शक्तियों को संगठित करेगा। उनकी क्रय शक्ति को निर्यात की वृद्धि में उपयोगी तत्व के रूप में इस्तेमाल करेगा।

बी बी आई एल के पैतृक दायित्वों में से कुछ इस प्रकार हैं, काउंटर–ट्रेड जैसी नीतियों को अपनाना, निर्यात संघटकों में पूंजी निवेश करना, उन विदेशी संस्थाओं जो भारत को आवश्यक आयात सामग्री देती हैं, के साथ इक्विटी भागीदारी करना। कुल्थीकृत आयात के लिए विदेशी मुद्रा का अर्जन करने के लिए निर्यात द्वारा जो भी संभव हो, वह कार्य करना।

वस्तुतः बी बी आई एल का जन्म भारत के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में एक नये युग का आरंभ है।

बीबीआईएल

भारत बिजनेस इन्टरनैशनल लिमिटेड

जवाहर व्यापार भवन,
टालस्टाय मार्ग, नयी दिल्ली–110001

R K SWAMY/BBDO BBIL 5946-HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार

भगवा रंग में भीगे

अयोध्या में कार सेवा की खबरों के प्रकाशन में संतुलन का अभाव

तीस अक्तूबर 'धर्मनिरपेक्ष' भारत के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण दिन होने जा रहा था. हर आदमी का ध्यान अयोध्या की ओर लगा था. आम लोगों की तरह ही बेचैन पत्रकार टेलीप्रिंटर की ओर टकटकी लगाए देख रहे थे. टेलीफोन घनघनाते रहे. और आखिरकार टेलीप्रिंटर पर 'फ्लैश' आई—'कार सेवा शुरू.'

इस तीन शब्दों वाली खबर ने तुरंत ही खुशी, अफरातफरी और दहशत फैला दी. समाचार माध्यमों के लिए स्थिति की सही तस्वीर पेश करने का यही सही मौका था पर हिंदी अखबार जैसे भगवा रंग में रंग गए. जमशेदपुर से प्रकाशित 'उदितवाणी' के दफ्तर से यूनीवार्ता के समाचार की कॉपी लेकर बांटी गई जिससे दहशत फैली और दुकानें बंद हो गईं.

अधिकांश संपादकों के सिर पर भी यही भगवा रंग चढ़ गया. इस सबसे डरी सरकार ने अखबारों के विशेष संस्करण रुकवाने की कोशिश की. फिर भी पटना के दो दैनिकों—'नवभारत टाइम्स' और 'आज' — ने भड़काऊ शीर्षक वाली खबरों से लैस विशेष संस्करण छापे. आज ने 'बैनर' छापा—"सुरक्षा बलों की गोली से चार मरे, अशोक सिंहल के सिर में गोली लगी, बाबा रामचंद्र परमहंस भी घायल, अयोध्या में कार सेवा शुरू, सेना का गोली चलाने से इनकार." नवभारत टाइम्स ने बैनर लगाया, "अयोध्या में श्रीराम मंदिर का निर्माण शुरू, गुंबद को क्षति, सेना बुलाई गई, लाखों भक्त सड़कों पर, फायरिंग में 16 मरे, अशोक सिंहल सहित दर्जनों घायल."

जब ये विशेष संस्करण बाजार में पहुंचे तो इनके लिए लूट मच गई और इनकी खबरों से लोगों का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच गया. नवभारत टाइम्स के बुलेटिन ने 'सूचना' दी थी, "लाखों कार सेवकों ने सुरक्षा बलों की लाठी-गोली की परवाह किए बगैर विवादित बाबरी मस्जिद को लगभग ध्वस्त कर दिया... आधे घंटे के भीतर कार सेवकों की भीड़ ने विवादित स्थल को लगभग ध्वस्त कर दिया.... और ...गुंबद और कलश को तोड़ डाला."

इन विशेष संस्करणों की प्रतियां रातोरात अनेक स्थानों पर पहुंचाई गईं.

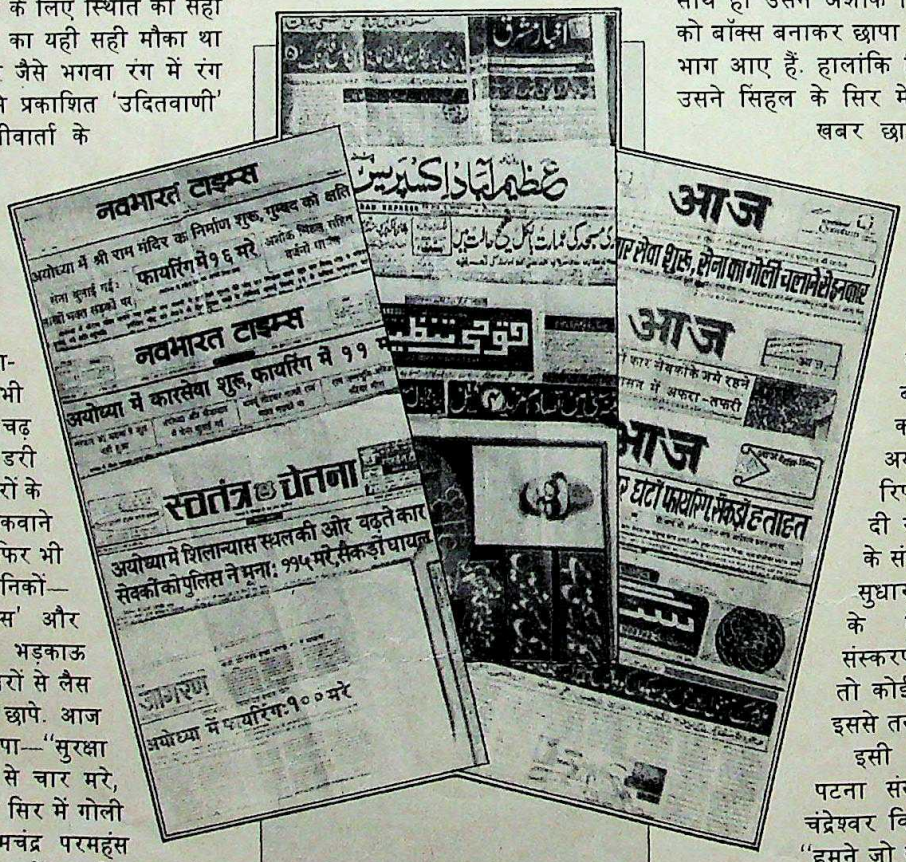

समाचार माध्यमों के लिए स्थिति की सही तस्वीर पेश करने का यही सही मौका था पर हिंदी अखबार तो जैसे भगवा रंग में रंग गए

परिणाम यह हुआ कि पटना सिटी हिंसा और सांप्रदायिक दंगों की चपेट में आ गई. दंगों की लपटें मध्य पटना तक भी पहुंचीं. राज्य के करीब आधा दर्जन शहरों में दंगे जैसी स्थिति बन गई. गिरिडीह और जमशेदपुर में तो राज्य सरकार ने, जो राज्य में सांप्रदायिक सौहार्द बनाए रखने का प्रचार भी करना चाहती थी, एहतियात के तौर पर कर्फ्यू लगा दिया. लालू प्रसाद यादव की सरकार ने पहली बार दंगे और सांप्रदायिक तनाव फैलाने का आरोप अखबारों पर मढ़ा.

अगले दिन नवभारत टाइम्स ने अपना सुर मद्धिम किया और रातोरात मृतकों की संख्या 16 से घटकर 11 हो गई. 'आज' ने भी अपना रुख बदला. उसके प्रभातकालीन संस्करण में खबर थी कि सुरक्षा बलों और अधिकारियों ने नरमी का बरताव किया. साथ ही उसने अशोक सिंहल के इस दावे को बॉक्स बनाकर छापा कि वे अस्पताल से भाग आए हैं. हालांकि विशेष संस्करण में उसने सिंहल के सिर में गोली लगने की खबर छापी थी. नवभारत टाइम्स के स्थानीय संपादक आलोक मेहता मानते हैं कि कुछ 'गलतियां' गईं क्योंकि संस्करण जल्दबाजी में छूटा. वे कहते हैं, "खबर अयोध्या से मिली रिपोर्ट के आधार पर दी गई थी और सुबह के संस्करण में गलतियां सुधार दी गईं." मेहता के मुताबिक विशेष संस्करण छापने के पीछे न तो कोई मंशा थी और न इससे तनाव पैदा हुआ.

इसी प्रकार 'आज' के पटना संस्करण के प्रभारी चंद्रेश्वर विद्यार्थी ने कहा कि "हमने जो खबर छापी, थोड़ी-बहुत हेरफेर से अन्य अखबारों ने भी छापी. हां 'सेना ने गोली चलाने से इनकार किया' और 'सिंहल को गोली लगी' जैसी गलतियां हुईं. ये खबरें भी वहीं से आई थीं. लेकिन मस्जिद गिराने जैसी भयंकर गलतियां तो दूसरे अखबारों ने भी छापीं." विद्यार्थी इस बात से सहमत नहीं हैं कि 'हमारी खबरों से सांप्रदायिक हिंसा भड़की.'

विद्यार्थी चाहे जो दावा करें, राज्य सरकार उनके अखबार से काफी नाराज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही. एक हफ्ते पहले इसी अखबार के रांची संस्करण के प्रभारी चक्रवर्ती गणपति नवल और प्रबंधक ए.एन. सिंह को जिला प्रशासन ने 'पुलिस द्वारा एक मंडप तोड़ने' वाली प्रमुख खबर, जिसे प्रशासन दंगा भड़काने वाला मानता है, छापने पर गिरफ्तार कर लिया था. विद्यार्थी का दावा है कि उनके अखबार ने प्रशासन की करतूतों का परदाफाश किया था इसलिए प्रशासन बदला लेने की ताक में था. मंडल रिपोर्ट लागू करने के सवाल पर 'आज' लगातार सरकार विरोधी खबरें दे रहा था. इसी कारण इसके पटना कार्यालय पर आरक्षण समर्थकों ने कई बार हमला किया, पत्रकार-कर्मचारियों को धमकाया, अखबार के बंडल और गाड़ियां फूंक दीं. इसके बाद राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद वाला प्रकरण उठा.

अजीमाबाद टाइम्स के रिज़वान अहमद ने कहा कि अधिकांश हिंदी दैनिकों की रिपोर्टिंग में भावना का जोर था

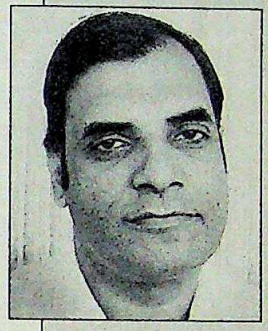

नवभारत टाइम्स के आलोक मेहता मानते हैं कि कुछ 'गलतियां' गईं जिनका सुधार सुबह के संस्करण में किया गया

'आज' के चंद्रेश्वर विद्यार्थी इस बात से सहमत नहीं हैं कि उनके अखबार में छपी खबरों से सांप्रदायिक हिंसा भड़की

इस पर इस अखबार ने जिस तरह की रिपोर्टें छापीं उससे सिर्फ बिहार में ही नहीं, उत्तर प्रदेश में भी जहां से इसके पांच संस्करण प्रकाशित होते हैं, काफी दहशत फैली. इसके मूल वाराणसी संस्करण को राज्य प्रशासन ने कुछ समय के लिए बंद करवा दिया था.

राज्य प्रशासन का कहना है कि जहां दूसरे अखबारों ने सावधानी बरती, 'आज' लगातार वहां की बातों को बढ़ा-चढ़ाकर छापता रहा. और कार्तिक पूर्णिमा के दिन जब रामभक्तों का रेला अयोध्या में पहुंच गया तो 'आज' ने बैनर छापा, "अयोध्या में रामभक्तों पर घंटों फायरिंग, सैकड़ों हताहत." खबर में यह भी लिखा गया कि सुरक्षा बलों ने औरतों, बच्चों और लाचार लोगों को भी नहीं बख्शा. विद्यार्थी इस रिपोर्टिंग को सही बताते हैं और कहते हैं कि दूसरे अखबारों ने भी ठीक ऐसी ही रिपोर्टिंग की. दरअसल लखनऊ और गोरखपुर से प्रकाशित होने वाले 'स्वतंत्र चेतना' ने "अयोध्या में शिलान्यास स्थल की ओर बढ़ते कार सेवकों को पुलिस ने भूना; 115 मरे, सैकड़ों घायल" शीर्षक से खबर छापी. 'दैनिक जागरण' के लखनऊ संस्करण ने मृतकों की संख्या 100 बताई. दूसरे अखबारों और एजेंसियों ने 2 नवंबर के गोलीकांड में मरने वालों की संख्या 16 से 18 बताई.

बाद में स्वतंत्र चेतना के मालिक-संपादक आर.सी. गुप्त को गिरफ्तार कर लिया गया. उर्दू दैनिक 'अजीमाबाद टाइम्स' के संपादक और लेखक रिज़वान अहमद ने कहा कि सिर्फ बिहार के ही नहीं, अधिकांश हिंदी दैनिकों की रिपोर्टिंग में भावनात्मकता का जोर था और यह पत्रकारिता के मान्य मूल्यों के विपरीत है. वे कहते हैं, "ऐसी परंपरा समाज में तबाही ला सकती है क्योंकि पाठक अखबारों की खबरों पर ही अधिक विश्वास करता है."

हिंदी अखबारों के विपरीत उर्दू अखबारों ने, जिन्हें 'मुस्लिम प्रेस' कहा जाता है, राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद और कार सेवा कार्यक्रम पर अधिक सावधानी बरती. वैसे, इन अखबारों पर सिर्फ मुसलमानों से जुड़े मुद्दे, सांप्रदायिक विवाद और उत्तेजक समाचार ही छापने का आरोप अक्सर लगता रहा है. 30 अक्तूबर की घटना के बारे में 'अजीमाबाद एक्सप्रेस' ने शीर्षक दिया, "बाबरी मस्जिद पूरी तरह महफूज." इसके संपादक ने मुखपृष्ठ संपादकीय लिखकर मुसलमानों से अमन बनाए रखने की अपील की और कुरान की आयतें उद्धृत करते हुए लिखा कि अल्लाह सब ठीक करेगा. इसी प्रकार मुस्लिम मुद्दों पर कभी 'आग उगलने' के लिए बदनाम पटना के दैनिक 'संगम' ने लिखा, "मुलायम के आहनी इरादे अटल, कार सेवकों को वापस आना पड़ा, मस्जिद का अहाता सील और महफूज." अपने संपादकीय में उसने लिखा, "मंदिर-मस्जिद का विवाद तो इबादत के सवाल पर है और अगर हम (हिंदू-मुस्लिम) ही न होंगे तो इबादत कौन करेगा. इसलिए पहले इनसानियत को महफूज करना जरूरी है." कलकत्ता से प्रकाशित 'अखबार-ए-मशरीफ' ने इस अफवाह का खंडन किया कि मस्जिद गिरा दी गई है. 30 अक्तूबर की कार सेवा के बारे में उसने मुख्य शीर्षक दिया, "बाबरी मस्जिद पर कार सेवकों का हमला नाकाम, पुलिस फायरिंग, पांच कार सेवक हलाक."

बिहार इंटेलेक्चुअल फोरम के अध्यक्ष एस.एम. नजमुद्दीन ने कहा कि लगता है कि उर्दू प्रेस में आखिरकार समझदारी आ गई है. वे कहते हैं कि अगर ये अखबार 'इस्लाम खतरे में है' वाली तर्ज पर खबरें देते तो यह पूरे समाज के लिए काफी बरबादी वाला होता क्योंकि हिंदी अखबार पहले ही हिंदू भावनाएं उभार रहे थे. दिल्ली से प्रकाशित लोकप्रिय उर्दू साप्ताहिक 'अखबार-ए-नौ' ने, जिसके संपादक राज्यसभा सदस्य एम.ए. फजल हैं, अपने 2-8 नवंबर के अंक में मुख्य शीर्षक दिया, "सरकार गिर सकती है, बाबरी मस्जिद नहीं, सेक्यूलरिज्म के लिए वी.पी. सिंह की अजीम कुरबानी." लेकिन इस अखबार ने अपनी पुरानी लत भी जारी रखी और लिखा, "आडवाणी की गिरफ्तारी के बाद फिरकापरस्त मुसलमानों के खून के प्यासे."

और सचमुच कुछ अखबारों ने वह स्थिति (सांप्रदायिक तनाव) पैदा करने की कोशिश की जो आडवाणी की यात्रा से नहीं बनी थी. पटना के प्रसिद्ध 'संडे क्लब' के डॉ. पी.के. सिन्हा के बकौल थोड़े समय के लिए तो कुछ हिंदी अखबार 'एक्रोमैटसोपिया' (वर्णांधता) के शिकार हो गए थे और लगता था कि वे अपनी विश्वसनीयता खो बैठे हैं.

—फरजंद अहमद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमल हासन

हरफनमौला अभिनेता

हर बार कुछ नया कर दिखाने की पुरजोर कोशिश

कमल हासन की कुछ नया कर दिखाने की ललक कभी बुझती नहीं लगती. 'पुष्पक विमान' में मूक अभिनय, 'अप्पू राजा' के बौने, 'नायकन' के दादा और 'सदमा' के भावप्रवण नायक ने 'माइकल मदन कामराजन' नामक फिल्म में एक साथ चार रूप धरे हैं. दीवाली से ही तमिलनाडु के अनेक सिनेमाघरों में 'हाउस फुल' जा रही इस फिल्म में कमल हासन ने खुद को अभिनय के शिखर पर पहुंचने वाले अभिनेता के साथ ही अपनी फिल्मों को व्यावसायिक रूप से हिट बनाने वाला स्टार भी साबित किया है.

लेकिन बॉक्स आफिस पर सफल होने के बावजूद इस 38 वर्षीय अभिनेता ने खुद अपने लिए ही मुश्किलें खड़ी कर ली हैं. अब दर्शक हर फिल्म में उनसे एकदम नए चमत्कार की उम्मीद करते हैं.

संयोग से यह क्रम अभी जारी है. किसी चैंपियन बॉक्सर की तरह कमल हासन एक के बाद एक प्रतिद्वंद्वी को ध्वस्त करते हुए (अभिनय के) शिखर पर पहुंचे हैं. अब वहां पहुंचने पर उनका कोई मुकाबला ही नहीं रह गया है. अब अपने मुकाबले वे खुद और तीन दशकों में बनी उनकी करीब 155 फिल्में ही खड़ी हैं. उन्होंने 1960 में रिलीज हुई 'कलातूर कन्नम्मा' में पहली बार अभिनय किया था.

तमिल फिल्मों में कमल का चोटी पर पहुंचना 'नायकन' के उनके शानदार अभिनय से हुआ. लेकिन अब इस ऊंचाई से वे कहां जाएंगे ? तमिल फिल्मों के लोग जानते हैं कि कमल हासन पिछले कई वर्षों से निर्देशन में बहुत दखल देते हैं. 'पुष्पक', 'अपूर्व' और 'माइकल मदन' के निर्देशक सिंगीतन श्रीनिवास राव कहते हैं, "लेकिन इससे सिर्फ उनके जुड़ाव का ही पता चलता है."

अब कमल खुद निर्देशन संभालने के लिए भी तैयार हो चुके हैं. वे कहते हैं, "मैं फिल्मों में निर्देशन करने ही आया था." यही कारण है कि 'नायकन' के बाद उन्होंने कम ही फिल्में स्वीकार की हैं. वे कहते हैं, "एक समय मैं एक ही फिल्म पर ध्यान केंद्रित करता हूं." पहले वे एक पर एक व्यावसायिक फिल्में स्वीकार करते जाते थे.

लेकिन अब वे जो फिल्म स्वीकार करते हैं उसके लिए जान लड़ा देते हैं. इसके लिए वे अपना वजन कम कर सकते हैं, सिर मुड़ा सकते हैं, दूसरी भाषा सीख सकते है और ऐंद्रजालिक बोली का अभ्यास कर सकते हैं. के. विश्वनाथ की फिल्म 'सागर संगमम' में उन्होंने जैसा भरतनाट्यम किया उससे पेशेवर नर्तक भी हैरान रह गए.

कमल हासन पर इस तरह का जुनून सर्वश्रेष्ठ बनने की ललक से ही आया है. बालाचंदर कहते हैं, "कहा चाहे जो जाए, लेकिन वह बहुत स्वार्थी है. वह निर्देशक को भी पछाड़ने की कोशिश करता है. उसे तो बस सर्वश्रेष्ठ ही होना चाहिए." दूसरे शब्दों में कहें तो वे मैदान मारने वाले हैं. श्रीदेवी जैसी अभिनेत्री के आगे भी उनकी चमक (मूनरम पिराई में जो बाद में 'सदमा' नाम से हिंदी में भी बनी) धूमिल नहीं होती. मूनरम के निर्देशक बालू महेंद्रू कहते हैं, "श्रीदेवी के आगे दूसरा हीरो तो दम ही तोड़ देता." और शायद यही कारण है कि कमल के पिता कहते हैं, "उसे ऑस्कर पुरस्कार मिलेगा."

कमल को अपनी फिल्म में रखना निर्देशक अपना सौभाग्य मानते हैं. नसीरुद्दीन शाह की तरह बड़ी आसानी से वे भी अपना व्यक्तित्व गलाकर फिल्म के चरित्र का रूप धर लेते हैं. बालाचंदर कहते हैं, "कमल की अपनी कोई छवि नहीं है और निर्देशक बड़ी आसानी से उसे अपने चरित्र के अनुरूप ढाल सकते हैं."

अभिनय के इसी गुण के कारण वे

कमल हासन के कई रूप: अभिनेताओं के अभिनेता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बातचीत

'हास्य बहुत गंभीर चीज है'

जैसे कथकली कलाकार बड़ी आसानी से अपने चेहरे पर नौ रसों के भाव दिखा देते हैं, उसी आसानी से कमल भी एक से एक मुश्किल भाव चेहरे पर ला सकते हैं. अपनी नई फिल्म 'माइकल मदन कामराजन' की शूटिंग की व्यस्तता के बीच उन्होंने विशेष संवाददाता ***मधु जैन*** *से बात की.*

● ***लंबुओं और बौनों के बारे में :***

मैं लंबा नहीं हूं तो क्या हुआ. और भी तो हैं जो लंबे नहीं हैं मगर मेरे आदर्श शिवाजी गणेशन, चार्ली चैपिलन, ब्रांडो, संजीव कुमार आदि हैं. 'अपूर्व सहोदरकल' में मैं जिस तकनीक का उपयोग करके बौना बना था उसी से लंबू भी बन सकता था. लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया.

● ***अपने चेहरे के बारे में:***

मैं विशुद्ध आर्य नहीं हूं. मेरे अंदर मोहनजोदाड़ो वाला अंश भी काफी है. मेरे होंठ और नाक को देखिए जो आर्य-द्रविड़ मिश्रण के प्रतीक हैं.

● ***हिंदी फिल्मों में आने के फैसले के बारे में :***

मैंने गलती की. मैं दुस्साहसी था.

● ***कामेडी के बारे में:***

मुझे कामेडी पसंद है. हास्य बहुत गंभीर चीज है. लेकिन कलाकार सबसे ज्यादा इस बात से डरते हैं कि बाहर भी उन्हें मसखरा न मान लिया जाए.

● ***धर्म के बारे में :***

यह बहुत निजी चीज है. धर्म लोगों को मनोविकारों से दूर रखता है.

● ***अपने परिवार के बारे में :***

मेरा परिवार कभी भी बहुत दिखावटी प्रेम वाला नहीं रहा. जिस तरह से मेरी बेटी मेरी पीठ पर कूदती है उस तरह मैं पिताजी की पीठ पर नहीं कूद सकता था. वैसे उनका स्वभाव बहुत प्यार करने वाला था. पिताजी बहुत स्वतंत्र दिमाग वाले आदमी भी थे. घर के बाहर वाली दुकानें उन्होंने यह सोचकर खरीदी थीं कि अगर मैं फिल्मों में नहीं चल पाया और निकम्मा भी हो जाऊं तो इन दुकानों से पेट तो पाल ही सकता हूं. पर ऐसी नौबत नहीं आई!

● ***दूसरे अभिनेताओं के बारे में:***

जहां तक भारतीय अभिनेताओं की बात है, अमरीश पुरी असली हीरो वाली मिट्टी के हैं. वे पश्चिम के स्टेलोनों, बानसनों और इस्टवुडों के मुकाबले के अभिनेता हैं. बेलमांडो या क्रिस्टोफर लैबर्ट वाले गुण अमिताभ बच्चन में भी हैं.

● ***'अपूर्व सहोदरकल' के बारे में:***

मैं आपको नहीं बता सकता कि मैंने इसमें कैसे अभिनय किया. यह किसी जादूगर से उसके गुर पूछने जैसी बात है. मैंने रमेश जी (सिप्पी) से कहा था कि हीरो की अंतश्चेतना को बताने के लिए बौने का उपयोग क्यों न किया जाए. मेरा पात्र खुद को बौना मानता है—उपेक्षित होने के एहसास से इसलिए मैंने बौने की भूमिका निभाने की सोची.

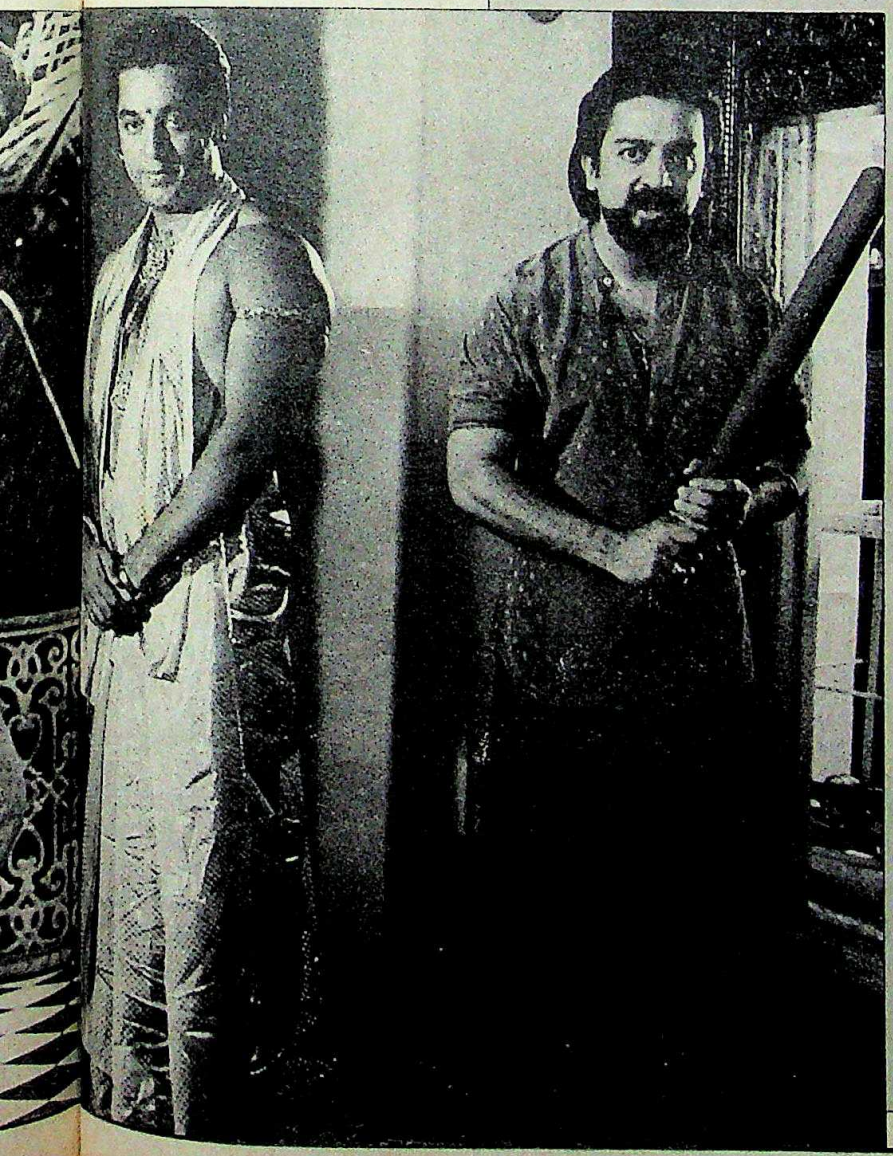

...कदम शांत हैं. कोई भी असली कमल को नहीं जानता. अभिनेत्री और उनकी दो बेटियों की मां मारिका कहती हैं, "छोटी बातचीत या पार्टी की बातचीत में कमल भी बहुत कुशल नहीं हैं." वे मानती हैं कि उन दोनों के बचपन से ही अभिनय करने के कारण अब उन्हें गोपनीयता की जरूरत है.

मद्रास के चमक-दमक भरे फिल्म जगत में भावनात्मक रूप से अकेले कमल की असली दुनिया या दोस्ती परदे से ही है. उनकी पूर्व पत्नी वाणी कहती हैं, "लोग फिल्मों में वास्तविकता लाते हैं लेकिन कमल फिल्मों को ही वास्तविकता तक ले आए हैं. वे सिनेमा में ही जीना चाहते हैं."

भले ही सिनेमा कमल के जीवन का अभिन्न अंग या विस्तार न बना हो लेकिन फिल्में ही उनकी सांस जरूर बन चुकी हैं. फिल्मों के जी' कमल हासन का असली रूप भी परदे पर ही नजर आता है. लेकिन तब भी यह वास्तविक कमल हासन नहीं हो सकता है.

—मधु जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-21

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काहे गोल्ड | खुद मुहर लगाई | स्पिक के पास | कहीं से कहीं | घायल हुए | अब सोए नहीं | बीज आदि बंद | अकूत बल | सबको हैरत | भाई की बेटी | नाटक के मध्य | पैसे के खेल | पिछड़ी जाति | पीठ में छुरा | रूप के कारण | हम बह गए | यकीन किया जाए | हम तेज हैं | पंथक प्रमुख | दो कदम आगे | अब भैया कब | जमी ही रहीं | मेरी जैसी हिट | मेकरा के | बड़े चाव से

नाम

पता

पिन

हल इस पते पर भेजें:

वर्ग पहेली-21, इंडिया टुडे,
एफ-14/15, कनॉट प्लेस,
नई दिल्ली-110001

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि:
5 दिसंबर 1990
उत्तर के लिए देखें:
16-31 दिसंबर 1990 का अंक

- यह पहेली शब्दशः इंडिया टुडे के 15 नवंबर 1990 के अंक पर आधारित है.
- वर्गों के भीतर दिए गए शब्द ही संकेत हैं
- तीर के चिन्ह बताते हैं कि शब्द कहां से शुरू होकर किधर जाते हैं
- तीर के चिन्ह के साथ दिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गों की संख्या दर्शाते हैं
- वृत्त का अर्थ है कि उसमें आने वाले शब्दांश का प्रयोग पुनः होगा
- मटमैले रंग वाले वर्ग रिक्त ही रहेंगे
- शब्द वैसे ही लिखें जैसे पत्रिका में छपे हैं
- सर्वप्रथम पहुंचने वाले **तीन सर्वशुद्ध हलों को पुरस्कारस्वरूप 500-500 रु.** दिए जाएंगे.
- लिविंग मीडिया इंडिया लि. के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते

आखिरी शासक | कच्ची भर्ती | कसी हुई काठी | श्री | दे | वी | ज | चि | दोहरे रोल | कां | अलग सुर | फ | रं | इं | त | जा | र | सु | र | जी | त | रेलवे पर | द | तुला राशि | दाम कम | वा | वी | खु | ला | मं | च | त्त | ब | बू | ल | पहले इका में | तीखे सवाल | कर दिखाया | न | अ | मि | ता | मिले तो ठीक | र | भ | वजनी नेता | श | र | द | या | द | व | घु | समय सीमा | ग | उड़ा लाई थी | पुवा प्रेमी | सिं | ज्ञानपीठ के | म | ना | व | ह | ल | दा | र | बि | ल्लि | थ | सु | त | सो | नी | रा | ज | दा | न | श | का | झा | प | बे | ल्ला | री | जा | कि | र | हृ | सै | न | रख पर कायम | र | फार्म पर छापा | ह | रा | पाक मुख्य-मंत्री | तो दूसरे में | वा | मन घायल | टं | ब | ड | गो | सह-संपादक | ग | प्रांत में तूती | रि | या | वि | मो | ह | न | दा | स | आ | सि | फ | ज | र | दा | री | द

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-19 का हल

पुरस्कार विजेता

सुधीर कुमार चौधरी
एच.वी.पी. मंडल
रूम नं.-7, दिगंबर हॉस्टल,
फिजिकल कॉलेज
अमरावती (महाराष्ट्र)

शकुंतला देवी अवस्थी
म.नं. 39, शाहगदा-अली
चौहट्टा, इटावा
इटावा-206001 (उ. प्र.)

मनोज कुमार जोशी
भदादा मोहल्ला
भीलवाड़ा- 311001 (राज.)

इन तीनों को 500-500 रु. के चेक भेजे जा रहे हैं. विजेताओं को बधाई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

What did Santa Claus of Iceland say to the Skypak Man?

"For an extra charge, could you also promise to wear a costume and a beard, when you deliver?"

We'll deliver. Wherever on earth. SKYPAK The worldwide couriers.

Skypak House, Off M. Vassanji Road, Marol, Andheri (E), Bombay 400 059.

Avenues:SC:570:90

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

◆ जिस दिन भाजपा ने सरकार को समर्थन से अपना हाथ खींचा, दूरदर्शन की खबरें बच्चों की उस कक्षा की तरह हो गई जिनसे अध्यापक जा चुका होता है. दादा तो अपनी जगह थे पर दादागीरी जा चुकी थी. लालकृष्ण आडवाणी की गिरफ्तारी के बाद सूचना तथा प्रसारणमंत्री का निर्देश आया कि अटलबिहारी वाजपेयी को दूरदर्शन पर न दिखाया जाए लेकिन इस निर्देश को कूड़ेदान के हवाले कर दिया गया. छोटे परदे पर न केवल उनकी सूरत दिखाई गई बल्कि उनका दो मिनट का इंटरव्यू भी लोगों को सुनाया गया. यानी जब शंका की स्थिति हो तो समाधान के लिए सभी को परदे पर दिखा दो.

◆ दूरदर्शन के इसी 'साहस' के चलते राजीव गांधी के दिन भी फिर गए. 31 अक्तूबर को इंदिरा गांधी की बरसी के कार्यक्रमों में उन्हें दूरदर्शन के परदे पर तीन बार दिखाया गया—एक बार तो तड़के शक्ति स्थल पर, दोबारा सुबह इंदिरा गांधी स्मारक में और तीसरी बार एम.एस. सुब्बलक्ष्मी को इंदिरा गांधी पुरस्कार प्रदान करते समय. इस दिन दूरदर्शन की खबरों ने बीते दिनों की याद दिला दी या फिर दूरदर्शन वालों को बीते दिनों में ही अपना भविष्य दिखने लगा ? जैसे-जैसे वी.पी. सिंह की विदाई का मौका करीब आता गया, उनकी खबरों को भी अंत में स्थान मिलता गया.

◆ घूरे में डाल दिए गए नामों को फिर से सजाने की भी एक प्रक्रिया, एक कला होती है. पहले उनकी झलक दिखाई जाती है फिर तस्वीर छाने लगती है. वी.पी. सिंह के जाते हुए कदमों की ओट में पिछले कुछ दिनों से चंद्रशेखर का दढ़ियल चेहरा टेलीविजन पर दिखने लगा. पर उनकी आवाज उसी दिन गूंजी जब विश्वनाथ प्रताप संसद में विश्वास मत हासिल नहीं कर सके. इस ऐतिहासिक सत्र के दिन तक यह तय नहीं दिख रहा था कि अगला प्रधानमंत्री कौन होगा, इसलिए दूरदर्शन उस दिन पीटीआई-टीवी द्वारा उनसे लिए गए इंटरव्यू पर कुंडली मार

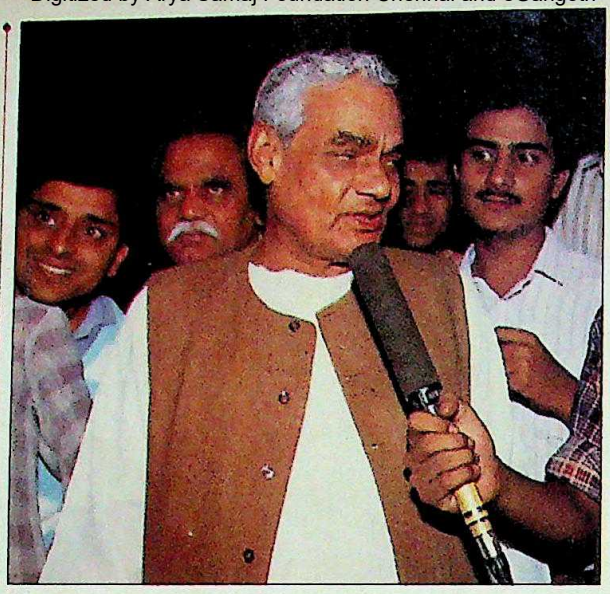

▲ वाजपेयी: रोक के बावजूद परदे पर

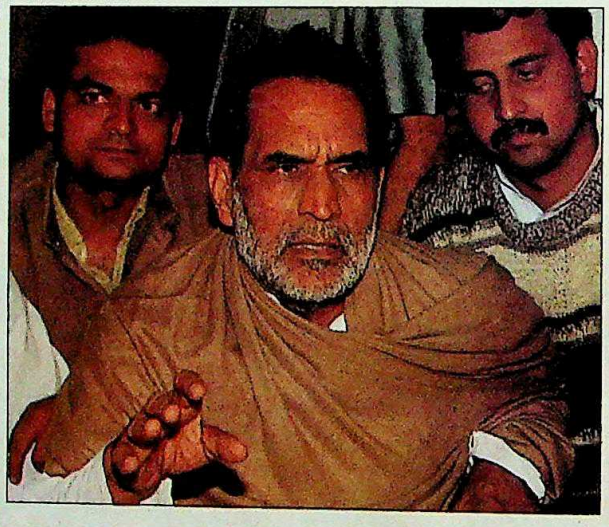

▲ चंद्रशेखर: तल्ख जवाब

▲ 'हिमालय दर्शन' में दिलीप धवन (बीच में): मोक्ष की तलाश

बैठ गया. शास्त्री भवन ने तो इसे हरी झंडी दिखा दी थी पर मंडी हाउस की हिचक बरकरार थी. पीटीआई-टीवी वालों को जब खबर मिली कि बीच लोकसभा सत्र से चंद्रशेखर दोपहर ढाई बजे इंटरव्यू देने स्टुडियो आएंगे तो वे हैरत में पड़ गए. उन्हें पता नहीं था कि इंटरव्यू देने की उनकी गुजारिश इस तरह मान ली जाएगी. इस इंटरव्यू में शशि कुमार ने जब चंद्रशेखर से पूछा कि क्या सांसदों को एक-एक करोड़ रु. में खरीदा जा रहा है ? इस पर चंद्रशेखर ने तल्ख जवाब दिया, "यह सब बकवास है. सांसद आजकल इतनी महंगी चीज नहीं है."

◆ प्रसार भारती के माई-बाप पी. उपेंद्र तो वी.पी. सिंह सरकार के साथ चले गए. अब प्रसार भारती का क्या होगा ? मंत्री जी ने जिन लोगों को इसमें लगाया था उनकी तो नींद हराम है. भाजपा ने जब सरकार से समर्थन वापस लिया तो उन्होंने प्रसार भारती के सदस्यों के चुनाव के लिए तुरत-फुरत एक तीन सदस्यीय दल गठित कर दिया. इसमें सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च के वी.ए. पणिक्कर को राष्ट्रपति के प्रतिनिधि के तौर पर रखा गया. बाकी दो नाम हैं—निखिल चक्रवर्ती और एन.राम. लेकिन स्वायत्तता अभी भी दूर की कौड़ी लगती हैं. ऐसा भी हो सकता है कि यह विधेयक धूल खाता रहे और नया मंत्री चुप्पी साधे बैठा रहे. क्या पिछली सरकार का 'मूल मंत्र' लतीफा बनकर रह जाएगा?

◆ ठेले पर हिमालय. सरबजीत सिंह का धारावाहिक 'हिमालय दर्शन' कुछ ऐसे ही घिसट रहा है. कभी इसमें अपने उस पति को खोजती हुई औरत दिखती है जो मोक्ष की प्राप्ति के लिए उसे छोड़कर चला गया है, कभी शोधार्थी रमा विज के दर्शन होते हैं जो बर्फीले दर्रों में आत्मज्ञान की खोज में लगे लोगों से मिलने चली आती हैं. लेकिन बर्फीली हवाएं और बर्फ क्या उनके वैराग्य को ठंडा करती नहीं दिखतीं ?

—मधु जैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Golden moments. McDowell moments

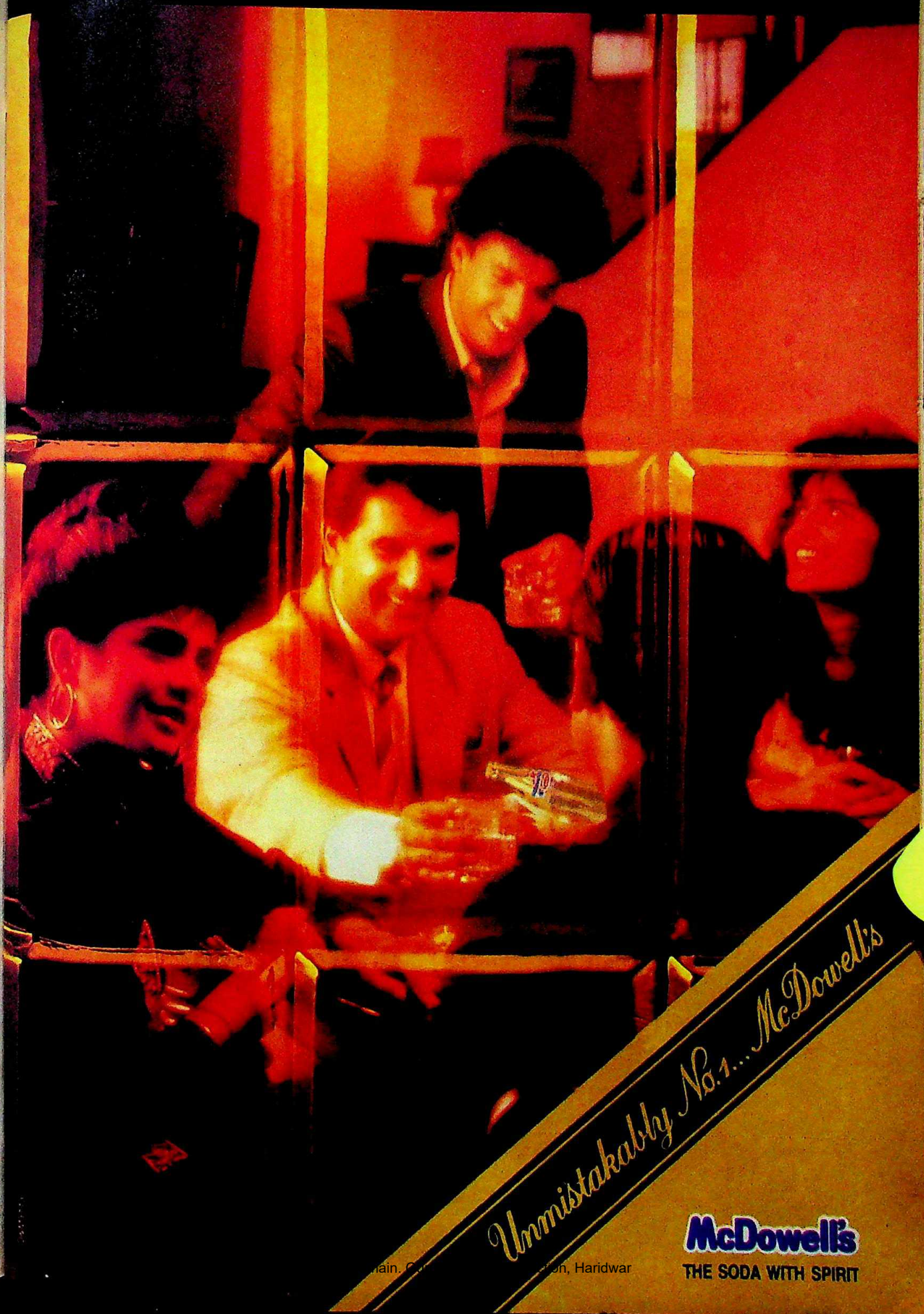

McDowell's
THE SODA WITH SPIRIT

...ain. C... ...on, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'Wrist Art'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

२५० क्वार्ट्ज मॉडलों में उपलब्ध. रु. ४०५ से रु. ३,४५० तक.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

HMT Quartz collection '91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Rediffusion/HO/90/488/HN

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाते-जाते कुछ जलवे

उस शूटिंग में हम यह सोच कर गए थे कि साड़ी में सजी **सोनम** को लजाती-शरमाती युवती की उस भूमिका में देखेंगे जिसके कुछ समय बाद सच हो जाने की संभावना है. लेकिन वहां सोनम को उस लिबास में देखकर तो हम हैरत में पड़ गए. वह लिबास तो शुरू की उस सोनम की याद दिला रहा था जिसे कपड़ों से परहेज था.

यह अचानक पलटी कैसे खा गईं सोनम ? जब से वे निर्देशक राजीव राय के प्यार में गिरफ्तार हुईं और राजीव ने उम्र के फासले की फिक्र न करते हुए उन्हें पत्नी बनाने का प्रस्ताव पास करा लिया, तब से सोनम राजीव की राय पर कपड़े पहनने लगी थीं. लेकिन फिर ढांक के तीन पात क्यों ?

सोनमः अफवाहों का खंडन

वजह है आंटी साबिया की खड़ी की हुई चुनौती. आंटी साबिया ने ही सोनम को कपड़ों से दूर रहने का गुरुमंत्र देकर सोलह की होने के पहले-पहले 'सेलेबल' बना दिया था. जब सोनम सचमुच सोने के अंडे देने लगीं तो आंटी ने अपनी मेहनत की कीमत वसूलनी शुरू की—नाम तेरा, दाम मेरा. इसी के बाद मतभेद शुरू हुए और सोनम को इस बंधन से विवाह बंधन कहीं ज्यादा बेहतर लगने लगा.

अब जब सोनम शादी के बिलकुल करीब हैं. अफवाहें चल पड़ी हैं कि सोनम की फीगर खराब हो चली थी इसलिए उन्हें कम उम्र में शादी की सोचनी पड़ी. अच्छी फिगर की मिसाल के लिए आंटी साबिया एक नई बेबी को बाला बनाकर पेश करने लगी है. सोनम को अच्छी तरह पता है कि अफवाहें उन्हें कितना नुकसान पहुंचा सकती हैं. इसलिए उन्होंने जाते-जाते कुछ जलवे दिखा देने का फैसला किया है.

बेटे का भाषण बाप का कद

अब सुनील दत्त सबको समझाते फिर रहे हैं, "नहीं यार, वो कोई खास बात नहीं थी, बाप-बेटे के बीच कभीकभार तकरार जरूरी भी है. और जब बेटे का कद बाप के कंधे तक पहुंचने लगे तब तो उसका हक भी मान लिया जाता है बराबरी की बहस का..."

लेकिन सुनील दत्त के करीबी लोगों का कहना है कि बेटे को अपना कद बाप से जरा ऊंचा ही रखने का शौक है.

यह किस्सा है 'भारत बंद' के दिन का. सड़कें सुनसान. कोई कहीं निकलने की कोशिश भी करता तो भाजपा कार्यकर्ता उसे वापस लौटने पर बाध्य कर देते. इंका सांसद की हैसियत से सुनील दत्त लोगों की मदद के लिए दौरे पर थे. जबरन बंद के सवाल पर कहा-सुनी हो गई. किसी ने उस पर ही हाथ उठा दिया. मुक्का उनके होंठ पर लगा. कट कर खून आने लगा...

बताया जाता है कि शाम को संजय दत्त ने पिता को जो भाषण पिलाए उनके आगे सुनील दत्त के वे सब भाषण फीके पड़ गए जो उन्होंने कई बार बेटे को पिलाए थे. अफवाह उड़ी कि 'सुनील दत्त के होंठ की चोट संजय का कारनामा है.' और अब सुनील दत्त सबको समझाते फिर रहे हैं, "नहीं यार..."

सुनील दत्तः बेटे की सीख

इक दिन ऐसा आएगा

डिंपल कापड़िया और **मीनाक्षी शेषाद्रि** में अगर कुश्ती हो जाए, तो? पर सचाई यह है कि करनी कथनी की जो कुश्ती इन दो अभिनेत्रियों के बीच शुरू हुई है, जल्दी खत्म होती लगती नहीं.

सफलता इन दिनों मीनाक्षी के पास-पास है. ऐसे में मीनाक्षी ने उस दिन जले पर नमक छिड़क दिया, "अनलकी हैं. जहां भी पैर रखा, फिल्म दबकर रह गई—'जय शिवशंकर', 'जूनी'...

"अपना खोटा सिक्का मेरे सिर मढ़ रही हैं," डिंपल बोलीं.

"दूसरों का हिस्सा हड़पने के बाद यह हिम्मत? चोरी और सीनाजोरी?"

अरे भई? यह चोरी का क्या जिक्र है भला? मीनाक्षी ने रहस्योद्घाटन किया है कि मुज़फ्फर अली की फिल्म 'जूनी' की हीरोइन पहले वे ही चुनी गई थीं.

जो भी हो, बाजी तब डिंपल के हाथ रही पर उस समय उन्हें यह कहां पता रहा होगा कि मीनाक्षी सिर्फ यह सोचकर चुप हैं कि "तू क्या रोंदे मोय? इक दिन ऐसा आएगा, मैं रोंदूंगी तोय."

डिंपल और मीनाक्षीः गुत्थमगुत्था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

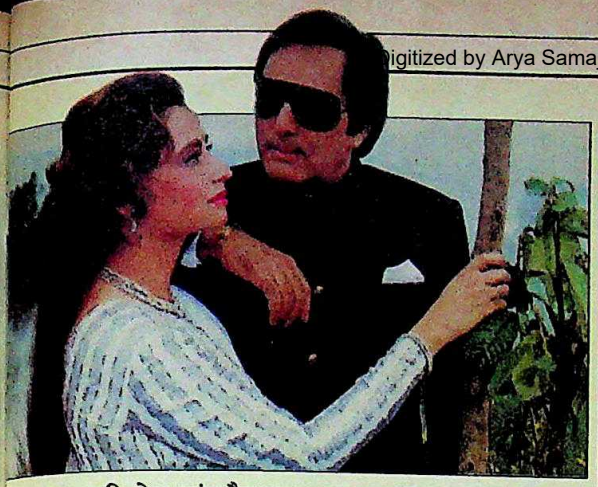

फिरोज खां और सलमा: सब्र टूटा

पुराने चावल का मजा

इस बात का बड़ा प्रचार किया जा रहा था कि बारह साल बाद फीरोज खां ने बाहर की किसी फिल्म 'मीत मेरे मन के' में एक्टिंग करना शुरू किया है. फीरोज खां ने सलमा आगा को अपने साथ रोल करने की फीस बख्श देने का दावा इतनी बार दोहराया कि सेट पर (सिर्फ सेट पर) सलमा उनके गुण गातीं न थकतीं, "क्या बात है ! पुराने एक्टरों के साथ काम का मजा ही कुछ और है."

लेकिन जिस रोज फीरोज खां का एक शॉट 16 रीटेक के बाद भी ओके नहीं हो सका और सलमा ने सांत्वना देते हुए पूछा, "लगता है आज कुछ डिस्टर्ब्ड हैं आप ? वरना आप जैसा पुराना एक्टर...", उस पल उनके सब्र का बांध टूट गया, "क्या पुराना एक्टर, पुराना एक्टर लगाए रहती हैं आप ? बोलने की तमीज नहीं है आपको?"

और जब 'मासूम' सलमा ने डायरेक्टर से पूछा, "ऐसा क्या गलत कह दिया मैंने?" तो जवाब उन्होंने ही भिजवाया, "आपके रोल की तारीफ में यह कहूं कि मुजरेवाली बनकर बड़ी रियल लगती हैं आप, तो?"

प्यार का परिणाम

गड़बड़घोटाला कुछ नहीं. मामला प्यार-मुहब्बत का है. यह मामला सेंसर बोर्ड के चार सदस्यों की मेंबरशिप पर तलवार चलवा देने वाली फिल्म 'कॉलेज गर्ल' की हीरोइन अमिता नांगिया और काबिल एक्टरों में गिने जाने वाले निर्देशक और अभिनेता टीनू आनंद के बीच इश्क का है.

नए हीरो-हीरोइन की टीम वाली इस फिल्म में टीनू ने अपनी मुहब्बत पर मुहर लगाते हुए सहनायिका ले लिया अमिता को. एक नहीं, मुहब्बत के तीन-तीन दोगाने अपने और अमिता के ऊपर फिल्मा कर प्रोड्यूसर के सामने परोस दिए.

पर निर्माता ने इन गानों को स्वीकार करने से साफ इनकार कर दिया. बड़ी कोशिशें की टीनू ने अमिता को निर्माता के गले उतारने की. मगर अंततः टीनू को वे सब गाने फिर हीरो-हीरोइन पर ही फिल्माने पड़े.

टीनू आनंद और अमिता: प्यार की पतंग कटी

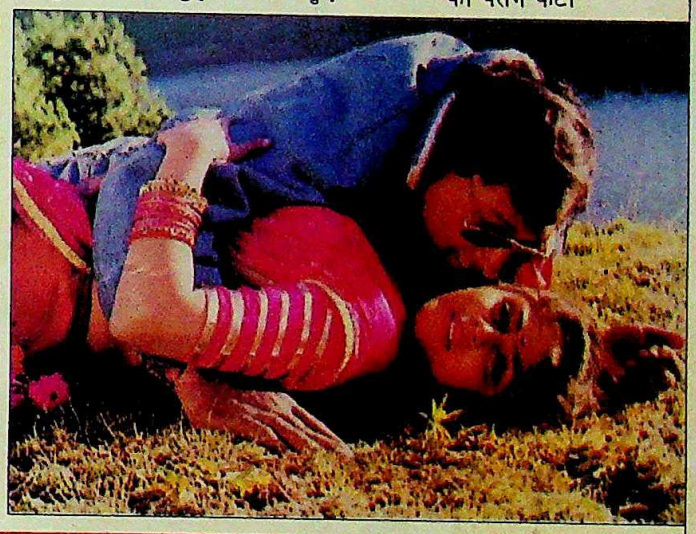

से मजबूत होगी ष्ट्रीय एकता

जुही और चिरंजीवी: एकता के सूत्र

माधुरी दीक्षित को पटखनी देने का मौका ब आए और **जुही चावला** चूक जाएं, ऐसा किन है भला कभी ? जुही की नजर में धुरी अब भी वह दीवार है जो देवी को सीधी टक्कर देने राह में खड़ी हैं. लिए अभी एक फिल्म सेट पर जब मौका ला तो जुही ने माधुरी आड़े हाथों लिया.

बात शुरू हुई राम जन्मभूमि-बरी मस्जिद विवाद पर. माधुरी किसी ने पूछा, "इस बारे में पकी क्या राय है ?" माधुरी ने ुत सीधे-सीधे कहा, "यही समझ नहीं या कि यह झगड़ा है क्या ? इसलिए मैं पने भला क्या राय दूं ?"

बाल ही के सेट पर जुही भी शूटिंग कर ी थीं. वहां तक माधुरी का जवाब पहले च गया, सवाल करने वाला बाद में. बस, उन्होंने तुरंत अपना ज्ञान बघार दिया, "हमारे देश में सबसे बड़ी कमी यह है कि लोगों को राष्ट्रीय एकता जैसी बात भी समझ नहीं आती. अरे भई, मंदिर और मस्जिद, जात-पांत के नाम पर लोग लड़ रहे हैं. इस तरह के भेदभावों को मिटाना हमारा फर्ज है. जहां इतनी छोटी बात भेजे में न घुसती हो, वहां बड़ी बातों की उम्मीद करना बेकार ही है..."

जुही ने यह भी कहा, "मैंने तय किया है कि हर धर्म के हीरोज के साथ हर प्रांतीय भाषा की फिल्मों में काम करके राष्ट्रीय एकता को मजबूत करूंगी. मैंने इसीलिए किसी भी दूसरी हीरोइन से पहले साउथ के हीरो चिरंजीवी के साथ हिंदी फिल्म स्वीकार की, हिंदी के साथ तमिल और तेलुगु में भी बन रही 'शांति क्रांति' में हीरोइन हूं, विमल कुमार की बंगला फिल्म 'दिन शोध' में हीरोइन हूं और मराठी, गुजराती, पंजाबी सभी भाषाओं की फिल्मों में काम के लिए हर वक्त तैयार हूं."

Copyright Public Domain ... Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बच्चे मॉर्टन के स्वाद पर मोहित और बड़े हैं इसकी शुद्धता के कायल। वर्षों से पूरे परिवार का मनपसंद है मॉर्टन।

चॉकलेट व कोकोनट कूकीज, रोज एक्लेयर्स, सुप्रीम चॉकलेट तथा कोकोनट टाफियाँ, लेक्टोबोनबोन्स तथा अन्य अनेक मजेदार स्वादों में उपलब्ध।

और अब केसर बाइट।
केसर का कमाल जिसका स्वाद बेमिसाल।

MORTON
SWEETS

मॉर्टन कन्फैक्शनरी एण्ड मिल्क प्रॉडक्ट्स फैक्ट्री।
पो० ओ० मढ़ौरा-८४१४१८, सारन, बिहार

चेतावनी :
MORTON स्वीट्स का लोगो एवं रैपर ऑपर गैंगेज सूगर एंड इंडस्ट्रीज लि० का पंजीकृत व्यापार-चिह्न है। किसी भी प्रकार से व्यापार-चिह्न अधिकारों का उलंघन अभियोजनीय है।
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब कुछ राम भरोसे

महंगाई आसमान पर है, कमाई जमीन पर. सामान कीमती है, इनसान सस्ते. कश्मीर में आग है, पंजाब में आतंक. लंगड़ी सरकार ने जाते-जाते ऐसी टंगड़ी अड़ाई है कि देश औंधा पड़ा है. जो भी है, राम भरोसे है. हम आततायी से चर्चा करते हैं. "देश जल रहा है और हर दल शतरंजी चालें चल रहा है."

"यह शासन की नई स्टाइल का नतीजा है."

"यह कौन सी शैली है. लोगों की जानें जा रही हैं, उनकी अठखेली है!"

"आपने यूनानी, नूरानी, होम्योपैथी, एलोपैथी, आयुर्वेदिक पद्धति का नाम सुना है?"

"क्यों नहीं ! सब दवा-दारू के तरीके हैं."

"हमारे देसी सांकोपांजा ने हवा में तलवार भांजकर इलाज की नई विधि सांकोपैथी ईजाद की है."

"यह कौन सी नई बला है?"

"उसमें लाल बुझक्कड़ नेता लल्लू-पंजू सलाहकारों की मदद से संकट खड़ा करते हैं. फिर उसके हल में असफल होकर उससे बड़ी क्राइसिस."

"इससे क्या फायदा?"

"फर्ज करें कि आपके अंगूठे में चोट है. हम सांकोपैथी के तहत पूरा हाथ काटकर आपकी तकलीफ दूर कर देते हैं."

"यह तो बर्बरता है", हमने हाथ सहलाया.

"यह पीड़ा मिटाने की आधुनिक तकनीक है. पहले मंडल लाकर नवयुवकों में आत्मदाह का नायाब चलन चलाया. फिर कमंडलवालों को भूनकर उसे भुलवाया."

"यह आपकी गलतबयानी है," हमने विरोध जताया.

"वह कैसे ?" आततायी ने चुनौती दी.

"मंडल लागू कर उन्होंने सामाजिक न्याय किया और मस्जिद बचाकर संविधान की रक्षा."

"लोकतंत्र में समस्याओं के समाधान आपसी चर्चा और सुलह-समझौते से होते हैं. निहत्थों पर बलप्रयोग करके शासन सिर्फ आतंकवादी पैदा करता है."

हम सोचने लगे. नेता करते भी तो क्या करते. अल्पसंख्यक सरकार अल्पसंख्यकों को भी नहीं पटाए? जात-पांत के सवाल उठाकर अपना वोट बैंक भी नहीं बनाए?

हमने फिर आततायी से सलाह ली. "निर्दोष इनसानों का बलिदान कैसे रुकेगा?"

"सांकोपैथी के अनुसार इन छुटपुट वारदातों को चुनाव के नरसंहार में लोग कतई भुला देंगे."

हम मुंह लटकाए बैठे हैं. नेताओं की

रेखाचित्र: जयंतो

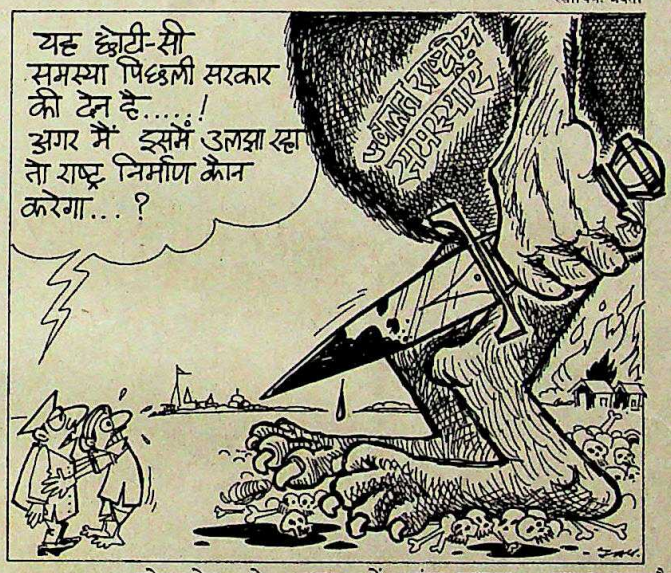

जोड़-तोड़ से शहर में दंगा-फसाद, आगजनी, लूट-खसोट का तांडव चालू है. वह भी राम-रहीम के नाम पर ! इतने में गली से बातचीत की आवाज आई. "आदाबर्ज है भाई जान ! कैसे हैं ?"

"जै सियाराम ! सब ऊपर वाले की मेहरबानी है."

"मैं तो आपके हालचाल जानने निकला था."

"आपकी इनायत है. कोई परेशानी हो तो हम हाजिर हैं."

"आपस में बात कर माहौल बिगाड़ते आपको शर्म नहीं आती है," एक कड़क स्वर गूंजा.

हम समझ गए. झगड़ा संप्रदायों का नहीं है. लड़ाई वोट के ठेकेदारों की है. कुछ ठेकेदार मजहब की जागीर के हकदार होकर जन्म लेते हैं, दूसरे धर्म का पट्टा लिखाकर.

मध्यावधि चुनाव की संभावना का ध्यान कर हम मोहल्ले के नेता के पास जा पहुंचे. सूने घर के बाहर खड़े चोबदार से हमने सवाल किया, "नेता जी क्या दौरे पर हैं?"

"हैं तो यहीं, पर बिजी हैं."

"जरूर जनसेवा के प्लान में लगे होंगे."

"हाथ कंगन को आरसी क्या ? खुद ही देख लो."

वह हमें एक खिड़की के पास ले गया. अंदर नेता आदमकद आईने के सामने दोनों हाथों में टोपी लिए खड़े थे. उन्होंने बाएं हाथ से फर-कैप लगाई और अल्ला-हो-अकबर की हुंकार भरी. फिर दूसरे से सफेद टोपी ट्राई की और "जै सियाराम" का उद्घोष किया. उनके पास एक महिला विराजमान थीं. शायद उनकी बीवी हों. उन्होंने इस परफार्मेंस की ताली बजाकर दाद दी. नेता जी संजीदे स्वर में बोले, "मामला कुछ जम नहीं रहा."

"क्यों ! इस बार क्या कमी रह गई ?"

"होना यह चाहिए कि जब हम 'जै सियाराम' कहें तो 'अल्ला-हो-अकबर' भी सुनाई पड़े. सादी टोपी के साथ फर-कैप भी नजर आए. वरना 'सैक्यूलर इमेज' कैसे बनेगी ?"

"इस स्टंट के लिए एक डुप्लीकेट का इश्तहार दे दें क्या ?"

हमें यकीन हो चला है, नेताओं के लिए कुर्सी ही मंदिर है, कुर्सी ही मस्जिद है. चाहे वे कुरान की आयतें गुनगुनाएं, चाहे गीता का पाठ करें. वे असलियत में धर्मनिरपेक्ष हैं. उनके दिल में सिर्फ कुर्सी का श्रद्धा भाव है और किसी भी धर्म का कतई अभाव. काठ की कुर्सी ही इकलौता ईश्वर है. उसकी पूजा ने अल्लाह की इबादत और भगवान की साधना दोनों को पूरी तरह पीछे छोड़ दिया है. नेता जैसे साधक और सत्ता की कुर्सी के दो पाटों के बीच फंसी जनता का हितचिंतन का सवाल ही कहां है ? बहला-फुसलाकर उससे किसी भी सूरत में वोट ही तो झटकना है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

K&CO.

प्रस्तुत करती है

अब हर सप्ताह 12 सीधी उड़ाने भाग्य की ओर

काट कर रखें

रविवार	शिवा साप्ताहिक लॉटरी	प्रथम पुरस्कार : रु. 1 लाख टिकट : रु. 1/-
सोमवार	कंचन जंगा साप्ताहिक लॉटरी	प्रथम पुरस्कार : रु. 2 लाख टिकट : रु. 1/-
सोमवार	तीस्ता साप्ताहिक लॉटरी	प्रथम पुरस्कार : रु. 1 लाख टिकट : रु. 1/-
मंगलवार	मंगल साप्ताहिक लॉटरी	प्रथम पुरस्कार : रु. 1 लाख टिकट : रु. 1/-
मंगलवार	सिक्किम एक्सप्रैस साप्ताहिक लॉटरी	प्रथम पुरस्कार : रु. 1 लाख टिकट : रु. 1/-
बुधवार	सुपर साप्ताहिक लॉटरी	प्रथम पुरस्कार : रु. 1 लाख टिकट : रु. 1/-
बुधवार	स्नो लॉयन साप्ताहिक लॉटरी	प्रथम पुरस्कार : रु. 1.10 लाख टिकट : रु. 1/-
बृहस्पतिवार	साप्ताहिक सिक्किम स्टेट लॉटरी	प्रथम पुरस्कार : रु. 1 लाख टिकट : रु. 1/-
बृहस्पतिवार	शिव गंगा साप्ताहिक लॉटरी	प्रथम पुरस्कार : रु. 1 लाख टिकट : रु. 1/-
शुक्रवार	सिक्किम लक्ष्मी साप्ताहिक लॉटरी	प्रथम पुरस्कार : रु. 1 लाख टिकट : रु. 1/-
शनिवार	कुबेर साप्ताहिक लॉटरी	प्रथम पुरस्कार : रु. 1 लाख टिकट : रु. 1/-
शनिवार	आकाश गंगा साप्ताहिक लॉटरी	प्रथम पुरस्कार : रु. 1 लाख टिकट : रु. 1/-

काट कर रखें

- पुरस्कारों का तुरन्त और आसान भुगतान।
- 5,000 रुपये तक के पुरस्कारों का तुरन्त भुगतान।
- पुरस्कृत टिकटों को भुगतान के लिये ऑर्गेनाइज़िंग एजेन्ट के पास भी जमा करा सकते हैं।

निदेशक, राज्य लॉटरीज़, सिक्किम सरकार, गंगटोक (सिक्किम)

ऑर्गेनाइजिंग एजेन्टस :

K&CO.

4, पाम्पोश एनक्लेव, नई दिल्ली-110 048

फोन : 6431869, 6445378, 6447610, 6465935

टेलेक्स : 031-71447-लोटो-इन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रवींद्र संगीत

बंधन मुक्ति

टैगोर के गीतों का हिंदी अनुवाद

प्रांतीय पूर्वाग्रहों से ग्रस्त बंगाली भद्रजन पहली बार हिंदी के दुस्साहस और सफलता से हतप्रभ हैं. रवींद्रनाथ टैगोर का संगीत उनके लिए एकदम पवित्र रहा है, जिसका न तो अनुवाद हो सकता है और न जिसे कोई और रूप दिया जा सकता है.

टैगोर के गीतों के हिंदी अनुवाद के दो कैसेट रिलीज हुए हैं. आरती मुकर्जी के गाए 'ओ मेरी मातृभूमि....' को कलकत्ता के दुलाल कोठारी ने अनूदित किया है जबकि उषा मंगेशकर और सुरेश वाडकर के द्वारा गाए गीत 'तुम कैसे ऐसा गीत गाते चलते...' को जलज भादुड़ी ने.

रवींद्र संगीत का दूसरी भाषाओं में अनुवाद के समर्थकों और 1991 तक टैगोर रचनाओं का एक ही भाषा में स्वत्वाधिकार रखने वाली विश्व भारती के बीच चली आ रही लंबी लड़ाई का यह अंत है. विश्व भारती के संगीत बोर्ड ने मूल रवींद्र संगीत से छेड़छाड़ करने से इनकार कर दिया. इसने गीतों को मंच पर प्रस्तुत करने की इजाजत तो दे दी लेकिन डिस्क के स्वत्वाधिकार देने से इनकार कर दिया,

इस वर्ष जून में पहली बार व्यावसायिक स्तर पर दो कैसेट रिलीज किए गए. प्राप्त सूचनाओं के अनुसार दस-दस गीतों वाले दोनों कैसेटों की बहुत अच्छी बिक्री हो रही है.

अनुवादक जलज भादुड़ी, जिन्होंने विश्व भारती के अड़ियल रुख को नरम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, याद करते हैं, "बंगाल ने दूसरी भाषाओं खासकर हिंदी के प्रति कड़े पूर्वाग्रह पाले हुए थे." अनुमान लगाया जा सकता है कि टैगोर खुद भी अपनी रचनाओं के अनुवाद के खिलाफ नहीं होते.

टैगोर के गीतों के हिंदी अनुवाद से भाषा समृद्ध होगी. अब तक मंच प्रस्तुति के लिए रवींद्र संगीत का अंग्रेजी से अनुवाद किया जाता रहा है. अब दूसरी भारतीय भाषाएं भी इससे प्रेरणा लेकर रवींद्र के 'राष्ट्रीयकरण' में सहायक हो सकती हैं. यह जरूर है कि अनुवाद की प्रक्रिया में रचना के भाव और प्रवाह दोनों में कमी आ जाती है.

हालांकि अनुवाद से जुड़ी जटिलताएं भी कम नहीं हैं. भाषा अक्सर प्रवाहहीन, संस्कृतनिष्ठ और हास्यास्पद तक हो जाती है. मसलन—'ये मणिमाला मुझे नहीं साजे' (ए मनिहार आमाए नहीं साजे) और 'तेरा यह अल्ह है' (तोमार होलो शुरू) जैसे अनुवाद की आप क्या कैफियत देंगे.

लेकिन 'तेरी आवाज पे कोई' (जोदि तोर डाक शुने केउ) जैसे अमर गीत भी कैसेट में हैं जिन्हें थोड़ी-बहुत खामियों के बावजूद सुनने में सुकून मिलता है.

1991 में विश्व भारती का टैगोर की रचनाओं पर स्वत्वाधिकार खत्म हो जाएगा. इसी के मद्देनजर उसने और पश्चिम बंगाल सरकार ने केंद्र को कॉपीराइट कानून में संशोधन करने की सलाह दी है ताकि विश्व भारती के पास स्वत्वाधिकार कायम रह सके. यह कदम शायद सफल न हो, तब टैगोर को शायद ज्यादा से ज्यादा लोग सुन पाएंगे.

—उत्तम सेनगुप्त

मुकर्जी (बाएं), मंगेशकरः संगीत धुन

टैगोर के गीतों का हिंदी अनुवाद भाषा को तो समृद्ध बनाएगा ही उनके 'राष्ट्रीयकरण' में भी सहायक सिद्ध होगा

भरिए

यह कूपन और
अपनी चहेती आवाज़ सुनिए:
बच्चे की खिलखिलाहट

हंसी-खुशी और मौज-मस्ती बच्चों के लिए, उतनी ही ज़रुरी हैं जितने ज़रुरी हैं खाना-पीना और हवा. और डिस्नी टुडे लेकर आया है यही मस्ती... यही मज़े.
बस तो फिर यह कूपन भर दीजिए और हर एक को खुश कर दीजिए.

आकर्षक छूट का लाभ उठाईये.

कूपन निम्नलिखित पते पर भेजें :
लिविंग मीडिया इंडिया लि.
पोस्ट बाक्स न. : 706 फरीदाबाद-121007 (हरियाणा)

मुझे अपने बच्चे के लिए सबस्क्रिपशन चाहिए। यह रहा मेरा सालाना सबस्क्रिपशन ☐ हिन्दी रु 96/- ☐ अंग्रेजी रु115/- प्रति के लिए. मैं भुगतान चैक*/डिमांड ड्राफ्ट* न. ..... द्वारा कर रहा हूं. (दिल्ली से बाहर के चैक पर रु 5/- और जमा करें) कृपया प्रति निम्नलिखित नाम व पते पर भेजें :

नाम _____

उम्र _____ लिंग _____

डाक-पता _____

_____

कृपया भुगतान लिविंग मीडिया इंडिया लि. के नाम पर बनाएं

*दिल्ली, बम्बई, मद्रास व कलकत्ता के ड्राफ्ट/चैक केवल एम.आई.सी.आर. होने चाहिए

WALT DISNEY'S
डिस्नी टुडे
अब उपलब्ध हर पखवाड़े
हिन्दी और अंग्रेज़ी में

© 1987 THE WALT DISNEY CO., USA.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिबेन

रिश्ते फ्रेंचाइज़

पेशे से वनस्पतिशास्त्र के अध्यापक दिबेन का एक कहानी संग्रह 'कांटे में फंसी मछली' और कविता संग्रह 'कांच के ताजमहल' आ चुका है. प्रस्तुत कहानी में बदलते पारिवारिक रिश्ते और आर्थिक परिवेश में मानवीय संवेदनाओं में आने वाले बदलाव का चित्रण है.

शहर के मुख्य बाजार का यह हिस्सा, जहां उनकी ये दो दुकानें थीं, मोती महल कहलाता था. कभी यह बाजार जिस्म-फरोशी और गाने, मुजरों के लिए मशहूर था. नीचे दुकानें, ऊपर कोठे....एक से एक बढ़कर कोठे! कीमती साजो-सामान से सजे, इत्र-फुलेल से महकते ! इन कोठों से उठने वाली घुंघरुओं की आवाज दिल्ली के दरबार तक जाती थी कभी ! तुलसीबाई दिल्ली दरबार में अपने मुजरों का जलवा कई बार बिखेर चुकी थी.

नीचे की दुकानों में या तो आटा-दाल बिकता था या झम्मन की पाव की रोटी .... करीम की चाय !... कुछ दुकानों में ऐसी औरतें भी बैठती थीं जो अब ऊपर के कोठों के काबिल नहीं रह गई थीं. ऊपर केवल 'ए' ग्रेड माल रहता था. और नीचे 'बी' ग्रेड और 'सी' ग्रेड माल के ग्राहकों के लिए अलग हटकर एक और जगह थी जो गोल चकला कहलाती थी.

उसके बाप का धंधा खूब अच्छा था. आटा-दाल बेचने के अलावा वह लोगों को वक्त जरूरत पर उधार रुपया-पैसा भी देता था और जमकर ब्याज वसूलता था. जमानत के तौर पर लोगों के सोने-चांदी के जेवर, घर के बरतन गिरवी रखता. दुकान के अंदर का सारा हिस्सा कपड़े की पोटलियों में बंधे चांदी के गहनों से अटा पड़ा था.

धंधे में बड़ी अच्छी कमाई थी. इसी कमाई से उसने दो-तीन बसें, तीन-चार ट्रक बना लिए थे. ट्रांसपोर्ट का पूरा धंधा बड़ा भाई देखता था. मंझला—यानी वह पिता के साथ दुकान का कारोबार देखता था. छोटा अभी पढ़ रहा था.

इस धंधे से उनके कई मकान बन गए थे. जमीन-प्लॉट खरीदे गए थे. कुछ प्लॉट पिता के नाम थे, कुछ बड़े भाई के नाम. सब भाई प्यार से एक जगह जुड़कर रहते थे.

दुकान पर अधिकतर बिक्री नकद की थी. पर कुछ बूढ़ी-बीमार औरतें जो धंधे के काबिल नहीं रह गई थीं और अब ऊपर-वालियों की दलाली करके गुजारा कर रही थीं या बूढ़े दलाल जो बेचारे दलाली भी नहीं कर सकते थे, उधार भी ले जाते थे.

शकीला, सावित्री और चंपा जैसी औरतें अपने घर पैसे भेजने के लिए उसके बाप से रुपया उधार लेती थीं. फिर धीरे- धीरे उसे उतारती रहती थीं. और अगले महीने फिर उधार उठा लेती थीं और फिर उसे उतारती रहती थीं.

सरकार ने कानून बनाकर जिस्म का धंधा करने पर रोक लगा दी तो कोठे बंद होने लगे. दुकान पर नकद की ग्राहकी कम हो गई. ज्यादा ब्याज देने वाली ग्राहक धीरे-धीरे शहर छोड़कर जाने लगी, या शहर के दूसरे हिस्सों में जाकर बसने लगीं. धंधे-वालियों का बिना धंधे गुजारा भला कैसे चलता! धंधा तो किसी तरह वो कर रही थीं पर बड़ी सावधानी से चोरी-छिपे! ... चोरी-छिपे के धंधे में कई लोग तो मालामाल हो गए थे और कई बेचारे भूख और गरीबी के दलदल में ऐसे फंस गए थे कि पिता के पास रोज एक बरतन ले आते थे और पेट भरने के लिए आटा-दाल या चावल नमक ले जाते थे.

बाजार का धंधा बंद हुआ तो उनकी दुकान का धंधा भी चौपट होने लगा.

इसी बीच एक और झटका लग गया— बड़ा भाई जाता रहा.

इसके बाद जो हुआ वह इतना कड़वा और बेस्वाद था कि रिश्तों से उसका विश्वास ही उठ गया. कौन किसका भाई!...कौन किसका भतीजा !...भाभी को तो दोष ही क्यों दें ? भाई के नाम जो जमीन-जायदाद, धंधा-व्यवसाय था वह सब कानूनी रूप से भाभी का हो गया. जहां कहीं से भी जो रुपया-पैसा मिलना था सब भाभी को मिला. और जो देना था, जो पिता के नाम से उधार आया था, सब पिता को देना पड़ गया!

केवल एक बस और एक ट्रक पिता के नाम था. भाभी ने उसमें भी अपने हिस्से के लिए कचहरी में मुकदमा ठोक दिया था. बड़े भैया के कुछ खास दोस्त भाभी के बेहद करीबी सलाहकार बन गए थे.

इस मुकदमे से पिता को बड़ी ठेस पहुंची थी. रिश्तों में उनका अटूट विश्वास और आस्था कहीं से बुरी तरह क्षत-विक्षत हो गई थी. पिता का लाल, लकदक चेहरा एकदम काला पड़ता चला गया था.

मुकदमे का समन लेकर वो सीधे भाभी

के पास गए थे—"बहू! मेरे जिंदा रहते तुझे कोर्ट-कचहरी जाने की क्या जरूरत थी बिटिया?" कहते-कहते उनका गला रुंध गया था.

भाभी कुछ बोली नहीं थी.

पिता आंखें पोंछते हुए वापस आ गए यहीं, दुकान पर.

पिता के आदेश से घर के सब लोग कोठी छोड़कर पुराने-पुश्तैनी मकान में आ गए थे. कोठी भैया के नाम थी इसलिए भाभी उसी में रह गई थीं.

दूसरी कोठी जो अभी बन ही रही थी उसके कागजात और बस तथा ट्रक में भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिस्से की रकम का बैंक ड्राफ्ट पिता ने भी को भिजवा दिया.

घर का कोई आदमी कुछ नहीं बोला.

पिता जी ने सारा कारोबार बड़े भैया ी सौंप रखा था. घर के सारे बैंक एकाउंट क बड़े भैया के नाम थे.

पता नहीं पिता जी ने यह सब बनाने में तना परिश्रम किया होगा! ... पर उनके खते ही देखते सब खत्म हो गया.

बड़े भैया जब तक जिए, उनके बाप बन- र ही जिए !..पर उनके जाते ही भाभी ो पता नहीं क्या हो गया ! उसने तो जैसे ारे रिश्ते ही भुला दिए.

* * *

"जी मैं आप से ही पूछ रही हूं !" ानकी ने कहा, "सारे दिन कहां रहे?"

"ऊं ss हां !" उसे लगा जैसे वह अब

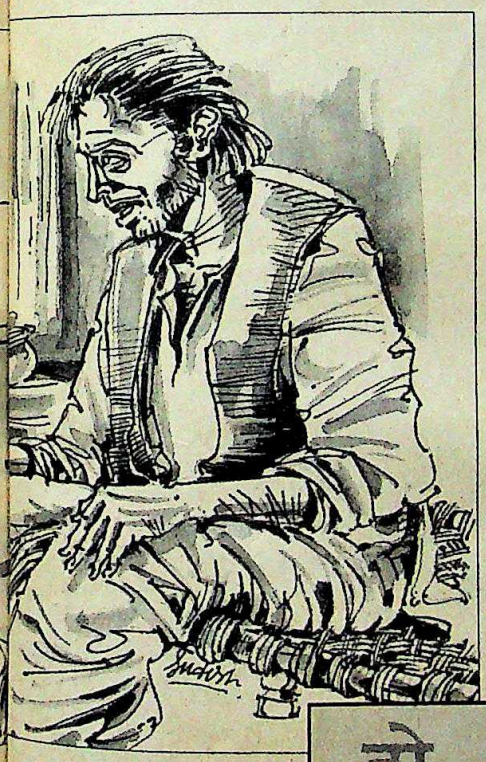

तक सो रहा था और सपना देख रहा था. सपना टूटते ही उसे अपना सारा बदन टूटता हुआ- सा लगा. पांवों में थकावट के मारे चस्...चस् हो रही थी. वह थका-हारा खाट पर बैठ गया. एक लंबी सांस खींचते हुए उसने कहा, "मंडी वालों के यहां गया था.... वो लोग पुष्पी के ब्याह की कह रहे थे."

पुष्पी उनकी बड़ी लड़की थी. निम्मो उससे छोटी. दोनों ही ब्याहने लायक हो रही थीं. तीन उससे छोटी थीं और उसके बाद सबसे छोटा और मात्र अकेला लड़का. पांच लड़कियों पर अकेला लड़का.

पिछले दिनों उसे छोटे भाई की फीस का प्रबंध करने के लिए गोदाम वाली दुकान की पगड़ी लेनी पड़ी थी.... अब छोटे का बाप भी तो वही है न ! उसे ही देखना है सब ! इन बच्चों को रोटियां भी खिलानी हैं....लड़कियों के ब्याह भी करने हैं! समझ नहीं आता यह सब होगा तो होगा कैसे ?

"क्यों जी ! मंडी वालों से क्या बात हुई?" जानकी ने पानी का गिलास उसके हाथ में थमाते हुए पूछा, "उन्हें सब कुछ बता दिया है न आपने?"

"ऊँ ss हां!" वह फिर सोते से जगा. पानी का गिलास उसने हाथ में थाम लिया—"अरी भागवान!" गिलास को मुंह तक ले जाते वह बीच में ही रुक गया, "किसी से कोई बात छिपती है क्या ? जात और बात छिपाए नहीं छिपती !... आज नहीं तो कल पता चल ही जाता है... वो भी सब कुछ जानते ही होंगे."

पुष्पी के ब्याह की बात पिता ने मंडी वालों से तब चलाई थी जब बड़े भैया भी जिंदा थे. उस समय बिरादरी में उनके बराबर किसी का काम-धंधा नहीं था.

"तो कुछ सोचा है आपने?" जानकी बोली, "या एक जोड़ी कपड़ों में ही लड़की को विदा करोगे ?"

उसके दिमाग में कनखजूरे रेंगने लगे... चिक... चिक... कनखजूरों के नुकीले पांव उसके दिमाग की नसों में गड़ जाते थे और पीड़ा की एक लहर पूरे शरीर में दौड़ जाती थी. उसके चारों ओर अंधेरा था—घनघोर अंधेरा!...कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा था. उसने दोनों हाथों से अपना माथा पकड़ लिया और आंखें मूंदकर बैठ गया.

अगले दिन वह अपनी छोटी बिटिया निम्मो के साथ शकीला बाई की संगमरमरी कोठी के बाहर गेट पर खड़ा था.

"किश्शे मिलना है ?" कोठी के बाहर खड़े नेपाली चौकीदार ने उससे पूछा.

"बाई साब से !...बाई साब से मिलना है?" वह हकलाते हुए बोला.

"कौन शा बाई शाब से ?" चौकीदार अब उसके और करीब आ गया था.

"बड़ी बाई साब से ! शकीला बाई साब से," वह बोला, "उनसे बोलना शहर से शरण सेठी आया है."

शकीला बाई पहले मोती महल में, उन्हीं के पड़ोस में रहती थी. उनकी साथ वाली दुकान के कोठे पर पहले-पहल आई थी वह.काफी दिन तक वहीं रही थी. फिर उनकी दुकान के ऊपर वाले कोठे में आ गई. बड़ा नाम था शकीला बाई था. जिसे देखो उसी के लब शकीला का नाम गुनगुना रहे होते थे. सुंदर भी बहुत थी शकीला!... एकदम परी!... और आवाज! जैसे कोयल कूक रही हो! बड़े-बड़े लोग आते थे शकीला का नाम सुनकर. कोठे पर बड़ा रसूख था शकीला का. कम-से-कम हफ्ते में एक बार रेस्ट हाउस में कलक्टर साब से मिलने जाती थी, बग्घी में बैठकर.

जब सरकार ने कानून बनाकर धंधा बंद करा दिया तो बाई मोहल्ला छोड़कर राय बहादुर सेठ साब की ऐशबाग वाली कोठी में रहने चली गई थी. कुछ दिन तो बाई चुप रही. चुपचाप गुजारा करती रही.

कुछ दिन बाद जब हालात बदले तो बाई ने सेठ जी की सहायता से कोठी में ही एक महिला सेवा आश्रम खोल दिया.

शुरू-शुरू में तो आश्रम में चार-पांच नेपाली लड़कियां ही थीं पर बाद में आश्रम ने बहुत तरक्की की. राय बहादुर चुनाव जीतकर पार्लियामेंट के मेंबर बन गए. फिर वजीर बन गए तो आश्रम के और भी चार चांद लग गए.

अब तो आश्रम के कहने ही क्या हैं!... शहर की सबसे धनी बस्ती में बाई की अपनी कोठी है. कोठी से सटा महिला योगाश्रम है. योगाश्रम से सटा सेवाश्रम है. आश्रम में पचासों देसी-विदेशी लड़कियां रहती हैं. पचासों बाहर से रोज आती हैं—योगाभ्यास करने. थाईलैंड और मलेशिया की भी कई लड़कियां आश्रम में थीं.

बाई लंबी, विदेशी काले शीशों वाली कार में बैठकर चलती है. बड़े-बड़े हाकिम-हुक्काम, मंत्री, मुख्यमंत्री बाई के आश्रम की शोभा समय-समय पर बढ़ाते रहते हैं. बाई, अब पहले वाली बाई नहीं रही. इस इलाके की सबसे बड़ी समाज सेविका है. योग विद्याओं में निपुण विदूषी योग-कन्या है.

"अरे सरण तू? " शकीला बाई की

तो कुछ सोचा भी है आपने?" जानकी बोली, "या एक जोड़ी कपड़ों में ही लड़की को विदा करोगे?" और उसके दिमाग में कनखजूरे रेंगने लगे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवाज थी, "तूने अपना हाल क्या बना रखा है ?"

नेपाली गोरखे के साथ शकीला स्वयं बाहर आई थी. श्वेत, लकदक सिल्की परिधान ! गोरा रंग ! ....भव्य व्यक्तित्व ! बाई, बाई नहीं परी लोक से आई कोई परी-सी लग रही थी.

सरण उसे देखता रह गया. बहुत दिनों बाद देखा था शकीला बाई को. कहां वह चंचल, शोख, नटखट शकीला बाई.... कहां यह धीर गंभीर श्वेतवसना शकीला मैडम! ... शकीला मेम साब !

"निम्मो ! नमस्ते कर बाई को !" उसने निम्मो से कहा और स्वयं हाथ जोड़कर खड़ा हो गया.

"अंदर आ !" शकीला उसका हाथ पकड़कर अंदर ले गई. निम्मो भी उसके पीछे-पीछे चलती गई.

इस उम्र में भी बाई कितनी सुंदर है ! ! वह सोच रहा था. तभी तो बाई का आश्रम इतना अच्छा चल रहा है !

कमरे में सफेद जालीदार परदे टंगे थे. एक कीमती सोफा, दो-चार गद्देदार कुर्सियां एक खूबसूरत गद्देदार पलंग बड़े करीने से अपने-अपने उपयुक्त स्थान पर कमरे में सजे थे. पलंग पर सफेद चादर! फर्श पर गाढ़े नीले रंग का कालीन!

"बैठो!" बाई ने उसे सोफे पर बैठने का संकेत किया और फिर पूछा, "यह लड़की कौन है ?"

"नहीं पहचाना ?" उसने उसकी आंखों में आंखें डालकर प्रति प्रश्न किया, "ये निम्मो है! निर्मला! मेरी छोटी लड़की! दूसरे नंबर की!" कहते-कहते वह हड़बड़ा गया.

"अरे निम्मो!" बाई ने उसका हाथ पकड़कर अपने पास खींच लिया और उसे सीने से सटाते हुए बोली, "तू इतनी बड़ी हो गई! ... हाय अल्ला!

बाई ने निम्मो का माथा चूमकर उसे कसकर सीने में दबोच लिया.

सरण चुप बैठा दोनों को देख रहा था.

"बिटिया ! मैंने ही तेरा नाम निर्मला रखा था. और देख मैं भी कितनी करम-जली हूं. तुझे पहचान भी नहीं पाई," बाई कह रही थी और बार-बार निम्मो को चूम रही थी, "सरण तुझे दुकान पर लाता था तो मैं तुझे घंटों खिलाया करती थी. अरे तुझे तो बस मैं ही खिलाया करती थी," वह कहती जा रही थी, "लाला बहुत अच्छा आदमी था. मैं तो उसे अपना बाप ही समझती थी. वही तो मेरी सुख-दुख की सुनने वाला था," कहते-कहते बाई भावुक हो गई. उसकी आंखों के कोर गीले हो गए.

बाई निम्मो का सिर अपनी गोद में रखकर बेड पर बैठ गई, "तू क्या पिएगा सरण ?... मेरी बेटी तो सेब का रस पिएगी."

"नहीं,नहीं! खाना-पीना कुछ नहीं है बाई! बस तुम्हारे दर्शन हो गए, यही बहुत काफी है," वह बोला.

"क्यों मुसलमान के घर खाने से तेरा ईमान चला जाएगा?" बाई ने हंसकर कहा, "...ये बाई-बाई क्या करता है? ... तो शकीला ही हूं रे! ... तेरी बहन! उसकी आंखें फिर नम हो गईं.

"काका!" बाई ने आवाज दी.

कंधे पर लाल गमछा डाले एक बूढ़ा उपस्थित हुआ.

"देखो काका ! बिटिया के लिए सेब का रस और भैया के लिए कॉफी बना लाओ," उसने आदेश दिया.

बूढ़ा उसकी बात सुनकर चला गया.

"... और सब ठीक है शकीला !" वह जैसे उसकी बात सुन ही नहीं रहा था.

"हां ! बाबा की दुआ से," वह बोली. उसके पिता को वह बाबा ही कहती थी.

उसके दिल में बेकली-सी हो रही थी. जो बात वह कहने आया था उसे कहने की हिम्मत ही नहीं जुटा पा रहा था. वह कभी इस करवट बैठता था तो कभी उस करवट. कमरे में लगी हर चीज को देखकर उसके मन में कई तरह के विचार-शंकाएं एक साथ उठतीं थीं. उसे शंका हुई कि लोग ठीक ही कहते हैं कि बाई आश्रम की लड़कियों से पेशा कराती है. आश्रम की लड़कियों को काले शीशे वाली कार में बैठाकर होटलों में भेजती है... सेठों के घर भेजती है. मन की शांति आश्रम में भजन-पूजा से, या योग विद्या से नहीं बल्कि सेठ लोगों को लड़कियों से किल्लोल-क्रीड़ा करके मिलती है.

जो बात वह कहने आया था उसे कहने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहा था. कमरे की हर चीज देख कर उसे शंका हुई कि बाई आश्रम की लड़कियों से पेशा कराती है

उसके मन में ऐसे विचार आते तो वह अपनी नजरें झट से सामने की सफेद-सपाट दीवार पर टिका देता और विचारों को दिमाग से झटककर मुक्त होने की कोशिश करता.

"तू कुछ परेशान है? शकीला ने उससे पूछा.

"नहीं, नहीं! वो बात...!" शेष बात फिर उसके मुंह में ही रह गई. वह फिर व्याकुल-सा होने लगा.

"हां! क्या बात?" शकीला उसके पास ही सोफे पर आकर बैठ गई, "हां अब बोल क्या बात ?"

उसकी जबान को फिर काठ-सा मार गया. वह किसी गूंगे आदमी की तरह मुंह बाये शकीला का मुंह ताकने लगा. शकीला उसके पास ही बैठी थी. वह उसकी ताब सह नहीं पा रहा था.

"...ब्याह है," उसने जोर लगाकर एक झटके से कहा, "बड़ी का ब्याह!"

"अच्छा! कब है ?" शकीला की आवाज निकलते ही उसके चेहरे पर कई खुशियां एक साथ नाचने लगीं. ब्याह है! आ हां! ब्याह! उसका भी कभी एक बहुत प्यारा, मीठा सपना था—ब्याह होगा. अपना घर होगा...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

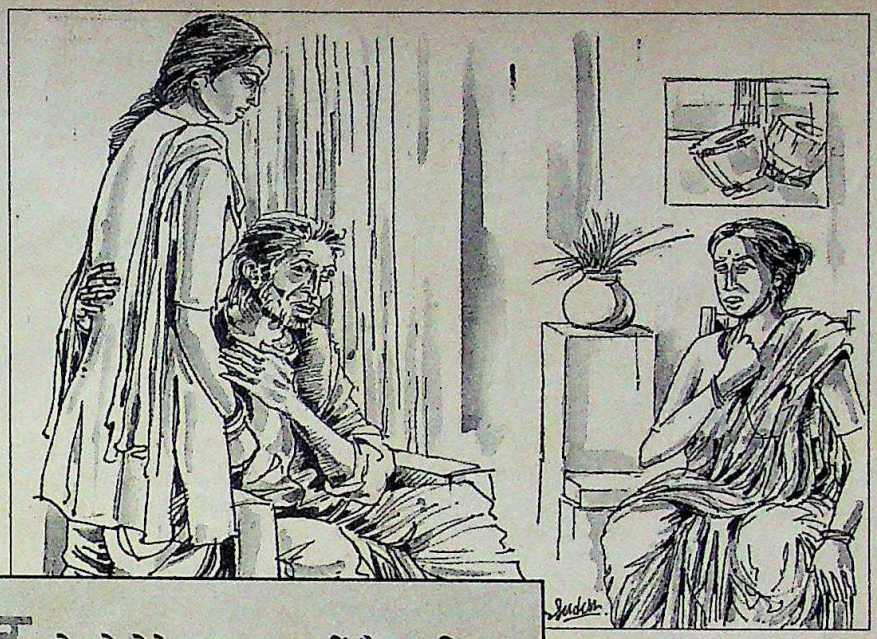

रखने को मेरे पास कुछ नहीं है. इसलिए निम्मो को यहां छोड़ जाता हूं.''
''तुम मर्द लोग होते बड़े निर्दयी हो... जवान औरत तो तुम्हारा कैश क्रॉप है!''

अपने छोट-छोटे बच्चे होंगे... आंगन में चलते प्यारे-प्यारे तुतलाते बच्चे ! अपनी अलग दुनिया होगी ! पर सब छ रेत के घरोंदों-सा हवा के एक ही झोंके से साथ उड़ गया. सब खत्म हो गया और वह बंजर धरती पर बने एक कोठे में खड़ी रह गई. असहाय शकीला!

"शकीला!" वह डरता-डरता बोला.

"हां, हां !" जैसे वह सोते से जाग गई.

"कुछ...! " वह बोल नहीं पाया. अपनी बढ़ी हुई दाढ़ी खुजाने लगा.

"कुछ, किसी चीज की जरूरत है ?" वह बोली.

"हां शकीला कुछ पैसे....!" उसने फिर अधूरा वाक्य बोला. वह अपनी बात ठीक से कह नहीं पा रहा था पर अपने मुंह से निकले हर शब्द के बाद नजरें शकीला के चेहरे पर जमा देता था. वह अपने शब्दों की प्रतिक्रिया में शकीला के चेहरे पर आते-जाते भावों को पढ़ना चाहता था.

"...पैसे-वैसे की जरूरत है?" उसकी आंखों में झांककर वह उसका वाक्य पूरा करते हुए बोली.

उसके चेहरे पर अपनी नजरें गड़ाए-गड़ाए ही वह बोला, "हां शकीला कुछ पैसे उधार!" बहुत कोशिश के बाद भी वह उसके चेहरे के किसी भाव को पढ़ नहीं पाया. उसकी कुछ भी समझ नहीं आया कि उसकी बात की शकीला के मन में क्या प्रतिक्रिया हुई है ? उसने अपनी नजरें उसके चेहरे से हटाई नहीं और बोला, "रखने को मेरे पास कुछ नहीं है. इसलिए निम्मो को यहां छोड़ जाता हूं."

"क्या ?" उसकी बात सुनकर शकीला की आंखें अजीब तरह की हो गईं.

"हां शकीला ! तू बेशक इसे योग सिखा, समाज-सेवा सिखा या नाच-गाना सिखा ! मेरे पास पैसे जुड़ गए तो मैं इसे ले जाऊंगा. नहीं तो तू इसे अपनी ही समझ," कहकर वह चुप हो गया और शकीला का चेहरा ताकने लगा.

शकीला के चेहरे की रेखाएं अजीब से कोणों पर घूमकर आपस में उलझ गईं. उसके मुंह में तेजाब-सा घुल गया.

"तू बेटी को बेचने आया है या गिरवी रखने?" उसके मुंह से अजीब तरह की आवाज निकली थी इस बार. उसके चेहरे पर कोई विशेष भाव पहचाना नहीं जा रहा था तो कभी एकदम स्याह !

वह चुप, गरदन नीची किए बैठा था.

वह सोच रही थी—वह भी एक दिन शायद इसी तरह अपने मां-बाप से अलग होकर शांता बाई के कोठे पर आई थी. उसके बूढ़े बापू की हथेली पर सौ का एक बड़ा-सा नोट किसी ने रखा था और बापू ने उसकी कलाई उस आदमी के हाथ में पकड़ा दी थी अपने आंसू पोंछते हुए. धुंधला-धुंधला-सा कुछ ऐसा ही याद है. किसी की शक्ल उसे ठीक से याद नहीं है.

"तुम मर्द लोग होते बड़े निर्दयी हो ! रिश्तों को बड़ी जल्दी भुला देते हो !" उसने जबान पर लिपटा हुआ तेजाब सटकते हुए कहा, "तुम औरत को हमेशा खरीदी और बेची जा सकने वाली जिंस से ज्यादा कुछ नहीं समझते. तुम्हारे लिए रिश्ते-नाते, प्यार-मुहब्बत किसी चीज का कोई अर्थ नहीं होता. बेटी हो, बहन हो या मां हो, औरत तुम्हारे लिए महज एक औरत है.... और जवान औरत तो तुम्हारा नकद बिकने वाला माल है.... कैश क्रॉप !"

वह उसका मुंह ताकता रह गया.

शकीला के सामने बूढ़े सेठी या झुर्रियों से अटा चेहरा घूमने लगा. एक दिन उसे उदास देखकर उसने कहा था, "मुझे अपना बाप ही समझ ! ... और फिर बेटी तो सबकी सांझली होती है. मुझे बता, तू उदास क्यूं है ?... पैसे चाहिए?... कितने चाहिए ?... जितने चाहिए ले ! उदास मत हो बेटी ! रो-रोकर जिंदगी की काली रातें नहीं कटा करतीं. देख बिटिया रानी ! कुदरत का लिखा तो मैं टाल नहीं सकता! ... मैं क्या, कोई भी नहीं टाल सकता. हां ! कुछ और तकलीफ हो तो बता."

तब से वह सेठी को बाबा कहने लगी थी. उसने घर भेजने के लिए बाबा से दो सौ रुपए उधार लिए थे. इसके बाद तो वह हर महीने बाबा से पैसे लेकर घर भेज देती थी और धीरे-धीरे उन्हें उतारती रहती थी.

पंडित सेब का रस, दो प्याले कॉफी और खाने के लिए एक प्लेट में कुछ काजू-पिश्ते और बादाम की गरियां रख गया.

शकीला उठकर दूसरे कमरे में चली गई.

जब वह वापस आई तो उसके हाथों में सौ-सौ रुपए के नोटों की एक गड्डी थी. उसकी आंखों की डोलें सूजी हुई थीं. ऐसा लगता था जैसे वह अभी रोकर आई है.

"सरण !" वह बोली, "पैसे तो तुझे जितने चाहिए ले ले पर इन बच्चियों को बेचने की बात कभी मत सोचना. बेटी तो सबकी सांझली होती है," कहते-कहते उसकी आंखें फिर छलछला आईं.

उसने निम्मो के मासूम चेहरे को देखा. उसे लगा जैसे एक और शकीला दुर्भाग्य के अंधे कुएं की कच्ची मुंडेर पर खड़ी है.

उसने झट उसे खींचकर अपने सीने में दबोच लिया और बिस्तर पर बैठ गई. जैसे कोई मादा कबूतर किसी अनिष्ट की आशंका से अपने बच्चे को पंखों में दबोचकर बैठ जाती है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यंग्य संग्रह

हमलावर व्यंग्य

बीमार समाज का आईना

एक ऐसा समाज जहां सब कुछ हास्यास्पद हो, हर आदमी बंधी-बंधाई मगर गलत लीक पर चलता हो, व्यवस्था की खामियों और मूर्खताओं संबंधी आकाशवाणी रेलवे टाइमटेबल की तरह वक्त से पहले ही सार्वजनिक दस्तावेज की तरह बांटी जा सकती हो और जहां अनहोनी को ही होनी और नियति मान लिए जाने का नियम सनातन हो चुका हो उस समाज में हास्य या व्यंग्य लेखन के आंखों देखा हाल बन जाने या फिर ठीक उलटा होने का खतरा स्वाभाविक ही है. हिंदी व्यंग्य लेखन के साथ इन दिनों यही हादसा गलबहियां डाले घूम रहा है.

खंभों का खेल
व्यंग्य संग्रह
गोपाल चतुर्वेदी
प्रभात प्रकाशन,
चावड़ी बाजार,
दिल्ली
कीमत: 70 रु.
कुल पृष्ठ: 205

हालत यह है कि हर रोज, हर जगह घटने वाली हर घटना व्यंग्य लेखक के लिए पके-पकाए हलवे जैसी सोंध बिखेर रही है और हरिशंकर परसाइयों, शरद जोशियों, रवींद्र त्यागियों, के.पी. सक्सेनाओं, गोपाल चतुर्वेदियों, किट्टुओं की सेना धड़ाधड़ टूटते छींकों के बूते पर मुटियाती चली जा रही है.

गोपाल चतुर्वेदी का नया व्यंग्य संग्रह 'खंभों का खेल' इसी हलवे की नई थाल है. इस थाल में इस बार उन्होंने खंभे परोसे हैं—वे खंभे जो आज के हिंदुस्तानी समाज की छाती में राजनेताओं, उनके चमचों और अफसरशाहों के रूप में जगह-जगह ठुके हुए हैं. ब्रह्म की रचना की तर्ज पर रची गई हिंदुस्तानी व्यवस्था में ऐसा हर खंभा एक सूर्य है जिसके इर्दगिर्द बाकी सब कुछ घूमता है. ये खंभे सिर्फ अपने ही इर्दगिर्द घूमते हैं या फिर अपने चंद्रमाओं समेत बड़े खंभों के चक्कर लगाते हैं. और इस तरह हिंदुस्तानी व्यवस्था चलती हुई दिखती है.

चतुर्वेदी ने अपने 36 व्यंग्य लेखों को चार खंडों—खंभों की ख्वाहिश, खंभों के पेशे, खंभा संस्कृति और समाज तथा खंभा होने की नियति—में बांटा है. इनमें से कुछ लेख आम चुनाव और टिकैत आंदोलन जैसी खबरीली घटनाओं के इर्दगिर्द बुने हुए हैं तो बाकी के विषय अफसरी हरामखोरी, राजनेताओं की चालबाजियों और मध्यवर्ग की आर्थिक कुंठाओं जैसे ठेठ हिंदुस्तानी और सनातन विषयों से जुड़े हैं. इन सभी का केंद्रीय पात्र खुद लेखक है जो मध्यवर्गी आम आदमी की चरित्रगत असहायता, हताशा और स्वार्थप्रेरित आदर्शवाद के माध्यम से समाज की सड़ांध को परत-दर-परत नंगा करता है.

आम तौर पर ऐसे सभी लेख चुटीले बन पड़े हैं जिनमें लेखक ने खुद को एक ही विषय पर केंद्रित रखा है (पान, पॉलिटिक्स और पटना), जबकि लगातार एक से दूसरे विषय पर कूदने की लालच ने कई जगह व्यंग्य को बहुत कमजोर कर दिया है (फोन टैप न होने का दर्द). ठीक ऐसा ही अंतर आसान और कठिन भाषा वाले लेखों में है. लेकिन कुल मिलाकर यह संग्रह शुरू से आखिर तक एक बार में पढ़ने लायक है.

—विजय क्रांति

आलोचना

घटाटोप बहस

मुक्तिबोध पर प्रचुर सामग्री

पाठक जब किसी समीक्षा-पुस्तक को पढ़ता है तो उसे अपेक्षा होती है कि अपने क्रमबद्ध सुलझे विचारों के सहारे समीक्षक उसे किसी स्पष्ट निष्कर्ष बिंदु तक पहुंचा देगा और यदि यह अपेक्षा पूर्ण नहीं होती है तो बहुत झुंझलाहट होती है. कुछ ऐसी ही झुंझलाहट प्रभात त्रिपाठी की कृति 'प्रतिबद्धता और मुक्तिबोध का काव्य' पढ़कर होती है. इसमें अभीष्ट विषय की घटाटोप विस्तृत बहसों ने ही प्रमुखता प्राप्त कर ली है. इसमें लेखक का स्वतंत्र निर्णायक चिंतन उभरते-उभरते रह जाता है.

प्रतिबद्धता और मुक्तिबोध का काव्य
प्रभात त्रिपाठी
वाग्देवी प्रकाशन,
चंदन नगर, बीकानेर
कीमत: 95 रु.
कुल पृष्ठ: 192

कुल 192 पृष्ठों के इस ग्रंथ में 218 पादटिप्पणियों और उद्धरणों का कुछ अर्थ होता है. तिस पर भी ये सभी प्रायः सोच की एक ही विशेष दिशा के, देशों से अधिक विदेशी विद्वानों के हैं. पुस्तक के आधे भाग में, भूमिका सहित पांच अध्यायों में प्रतिबद्धता पर बहस चलती है और शेष दो अध्यायों में 'मुक्तिबोध का काव्य संसार' और 'प्रतिबद्धताः मुक्तिबोध का काव्य' को उठाया गया है. अंत में उपसंहार और निष्कर्ष है. इनमें भी प्रतिबद्धता से जुड़ी बहसें ही उठती चली जाती हैं.

लेखक कुछ बातें संक्षिप्त 'निष्कर्ष के रूप में' कहने का प्रयत्न करता है. जैसे "रचना की प्रतिबद्धता' प्रथमतः रचना की सृजनात्मकता ही है." अथवा "प्रतिबद्धता अगर एक धारणा है तो कलाकार के लिए उसका अर्थ आत्मचेतस और विश्वचेतस होने से ही है." (पृ.191) ऐसे निष्कर्षों से प्रतिबद्धता और अप्रतिबद्धता के बीच अंतर करना कठिन होता है. वास्तव में कृति की मूल्यवत्ता इस बात में है कि मुक्तिबोध के बहाने प्रतिबद्धता-बोध पर एक पूरी बहस हो गई है. इस बहस में संबंधित पक्ष-विपक्ष पर अब तक उभरे मुहावरे, सवाल और समस्याएं एक साथ जुट गई हैं.

कृति में लेखक गंभीरता के साथ उस स्थिति की तलाश में उतरता है जिसके कारण पश्चिम का बुद्धिजीवी प्रतिबद्धता की ओर मुड़ता है. (पृ.28) उसने इस संदर्भ में आज के बुद्धिवादी की अन्यथा-सिद्ध हतप्रभ स्थिति का बहुत मार्मिक वर्णन किया है. प्रतिबद्धता के संदर्भ में लेखक ने मार्क्सवाद की सीमाओं और उपलब्धियों का भी विश्लेषण-मनन किया है. उसका विचार है कि गहरी वर्गचेतना के कारण ही मुक्तिबोध का सृजनात्मक संघर्ष अपने रास्ते से नहीं डिगा, न हटा. इसके साथ ही आलोचक ने मुक्तिबोध में किंचित भावुक आदर्शवादिता, भारतीय संस्कृति और प्रकृति का प्रभाव (पृ.190) भी देखा है. उनकी प्रतिबद्धता को 'कविता की खोई हुई उदात्तता और शक्ति की खोज' के संदर्भ में भी व्याख्यायित किया गया है. (पृ.167).

कुल मिलाकर प्रतिबद्धता और मुक्तिबोध के अध्येताओं के लिए लेखक ने प्रचुर अध्ययन सामग्री को इस कृति में जुटा दिया है.

—विवेकी राय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेक्नॉलॉजी, जिसने दुनिया को दी सबसे पहली क्वॉर्ट्ज़ घड़ी...

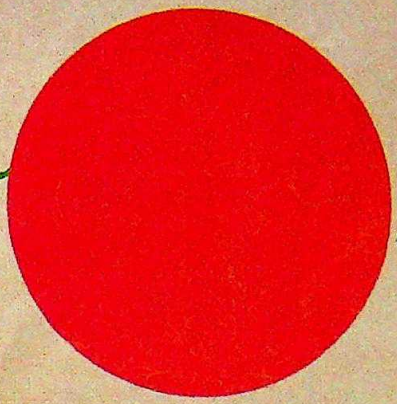

उसी से बनी है आपकी ऑल्विन क्वॉर्ट्ज़.

आप ले सकते हैं कोई खूबसूरत नज़र आनेवाली घड़ी या वह घड़ी जो भरोसेमंद हो या फिर ऑल्विन क्वॉर्ट्ज़ जिसमें दोनों ही खूबियाँ हैं. सर्वोत्तम जापानी टेक्नॉलॉजी से निर्मित. वही टेक्नॉलॉजी जिसने शुरू की क्वॉर्ट्ज़ की हलचल.

उत्कृष्टता साधनेवाले हाथों द्वारा निर्मित.

3 YEAR GUARANTEE

ALLWYN QUARTZ

R K SWAMY/BBDO HAL 8332 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल दस वर्षों में ही भारत को अपना

ए बी बी औद्योगिक उपकरण और प्रणालियों में। स्टील की कमी को पूरा करने की सहायता में।

असेया ब्राउन बोवेरी को राष्ट्र की आवश्यकताओं की समझ है। यही उसे बनाती है, भारत के मिनी स्टील संयंत्रों में एक प्रमुख साइदार। एक महत्वपूर्ण क्षेत्र जो देश का ३०% स्टील उत्पन्न करता है।

ए बी बी की, इस विकासशील उद्योग में, एक अहम भूमिका है-इलेक्ट्रिक आर्क व इन्डक्शन फ़र्नेस, कन्टिन्युअस कास्टिंग व रोलिंग मिल इलेक्ट्रिक्स सहित। एक ऐसे उद्योग को सम्पूर्ण प्रणाली सहारा देते हुए, जो मांग और आपूर्ति में सन्तुलन लाने के लिए समयोपरि कार्य कर रहा है।

आयात पर निर्भरता अल्पतम करने की दिशा में एक मजबूत क़दम।

ए बी बी के अन्य उत्पादनों में शामिल हैं स्टैटिक व डाइनैमिक वेयिंग सिस्टम्स जो लोहा, स्टील और अन्य उद्योगों के लिए भी महत्वपूर्ण हैं।

लोहे और स्टील के अधिकतम उत्पादन के लिए प्रमुख किनारा ए बी बी का ही है। औद्योगिक उपकरण व प्रणालियों में अग्रिम तकनॉलजी, संसाधन और निपुणता द्वारा।

ए बी बी। इलेक्ट्रिकल इंजिनीयरिंग के संसार में दो विशाल शक्तियों के अन्तर्राष्ट्रीय एकीकरण से उत्पन्न - असेया तथा ब्राउन बोवेरी। जिससे ए बी बी भारत को विशेष रूप से उपलब्ध है, विश्व भर की अग्रिम तकनॉलजी।

- विद्युत् शक्ति उत्पादन
- विद्युत् शक्ति संचरण
- विद्युत् शक्ति वितरण
- औद्योगिक इलेक्ट्रॉनिक्स
- औद्योगिक उपकरण व प्रणालि
- परिवहन
- दूर - संचार

ए बी बी। विश्व का सबसे बड़ा इलेक्ट्रिकल इंजिनीयरिंग ग्रूप।

असेया ब्रा
जोना टावर्स
बैंगलूर ५६०
टैलिफोन :
टैलेक्स : ०८
फैक्स : (०८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation

स्टील उत्पादन दुगुना करना पड़ेगा।

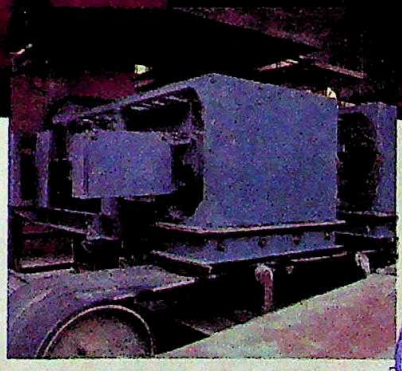

१. इंडक्शन फ़र्नेस टेल्को मे
२. वेफ़ीडर
३. सुपरचार्जर

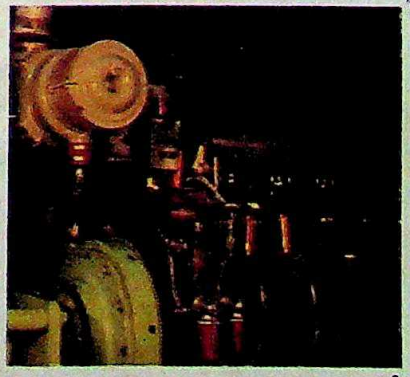

असेया ब्राउन बोवेरी लिमिटेड
सोना टावर्स, ७१, मिल्लर रोड
बैंगलूर ५६० ०५२
टेलिफोन : (०८१२) २६६३१५
टेलेक्स : ०८४५ - ८३९४ ABBL IN
फैक्स : (०८१२) - २६४१४७

ABB
ASEA BROWN BOVERI

078600

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैबल दास

राधाप्रिया: वनवासी सौंदर्य

◆ दूरदराज, एक कोने में स्थित इंफाल जैसे शहर में, जिस पर अंग्रेजों ने विश्व युद्ध के दौरान बम गिराया था, सौंदर्य प्रतियोगिता का आयोजन ! कल्पना से परे है. लेकिन पिछले हफ्ते यही हुआ. भारी वर्षा के बावजूद 5,000 लोगों की भीड़ वहां सात घंटे तक दिल थामे बैठी रही. उनके सामने से वनवासी सुंदरियां वनवासी पोशाक से लेकर मिनी स्कर्ट तक पहने हुए गुजरती जो रहीं ! सुंदरियों का स्कर्ट जितना ही छोटा होता गया, लोगों का शोर उतना ही बढ़ता गया. 'कुट क्वीन' का खिताब मिला 18 वर्षीया स्कूली छात्रा **राधाप्रिया देवी** को, जो पूरी तरह से परंपरागत पोशाक पहने हुए थी.

अब वह फिल्मों में जाना चाहती है. उसका कहना है "मैं अनिल कपूर को बहुत पसंद करती हूं, खास तौर पर उसके चुस्त शरीर को."

◆ पिछले साल उनका हृदय भारत के लिए धड़कता ही रह गया. कामयाबी नहीं मिली. लेकिन इस साल रीडिफ्यूजन विज्ञापन एजेंसी के मालिक **अरुण नंदा** के मुकद्दर ने उनका साथ दिया और उनके घोड़े ने हाल में संपन्न 4.75 लाख रु. के इनाम वाली पुणे घुड़दौड़ में अपने चार प्रतिद्वंद्वियों को पछाड़ दिया. और अब जबकि मुंबई में घुड़दौड का मौसम शुरू हो रहा है, सभी की आंखें **'अश्वमेध'** नामक इस घोड़े पर है, जिसके सामने विजय

चित्रों और बीवी के साथ अली

माल्या और एम.ए. एम. रामास्वामी जैसों के घोड़ों का रंग फीका पड़ गया. नंदा, जिनकी विज्ञापन एजेंसी पिछले साल अपने विवादास्पद इंका चुनाव अभियान के कारण सुर्खियों में छा गई थी, पिछले 15 वर्षों से घुड़दौड़ में बाजी लगाते रहे हैं. लेकिन अभी तक वे एक बार भी जीते नहीं थे. नंदा के लिए इस वर्ष सबसे महत्वपूर्ण स्लोगन होना चाहिए 'मेरा घोड़ा महान!'

◆ पिछले साल कश्मीर जब उबल पड़ा तो कवि और फिल्म निर्माता 45 वर्षीय **मुजफ्फर अली** अवाक रह गए. वजह: उस समय तक उनकी फिल्म 'जूनी' आधी ही बनी थी. अली को अपनी फिल्म का निर्माण कुछ महीने रोकना पड़ा लेकिन उन्होंने घाटी की भावना को अपनी पेंटिंग में उकेरने का फैसला किया. उन्होंने अपनी इन कलाकृतियों का प्रदर्शन पिछले हफ्ते पहली बार दिल्ली में किया.

प्रमोद पुष्करणा

अप्रैल में पेरिस में इसके प्रदर्शन की योजना है. हाल ही में तीसरी बार शादी करने वाले अली कहते हैं, "जब कुछ चीजें खो जाती हैं तो वे एक भिन्न किस्म का जादू पैदा करती हैं." शादी के बाद अब वे दिसंबर में फिर 'जूनी' का निर्माण शुरू करने जा रहे हैं.

'अश्वमेध' के साथ नंदा

आर. एम. गुप्त

◆ उसके पापा आज जीवित होते तो उसके 'लवर ब्वॉय' ने उन्हें भी अचंभे में डाल दिया होता. मशहूर गायक और संगीतकार हेमंत कुमार की खूबसूरत बेटी **रानू मुकर्जी** ने ऐसा एलबम तैयार किया है कि खुद हेमंत भी सुनकर नाचने लग जाते. रानू ने मशहूर अंतरराष्ट्रीय धुनों पर हिंदी के प्रेम गीत गाए हैं और उसी का नतीजा है 'लवर ब्वॉय' नामक एलबम. चार वर्ष की उम्र से ही गाने वाली रानू कहती हैं, "मशहूर अंतरराष्ट्रीय कलाकारों के गानों को रिकार्ड करना नितांत

रानू: पॉप के टॉप पर

अनोखा अनुभव था." और पॉप संगीत के शिखर पर पहुंचने का एक जरिया भी.

◆ उस स्कूल से **डब्ल्यू.जे. फर्नांडीस** का बहुत पुराना रिश्ता है. पिछले 65 वर्षों से वे सेंट जोसेफ हाई स्कूल के पुराने छात्रों के सालाना जलसे में भाग लेने के लिए रेलगाड़ी से मद्रास से बंगलूर आते रहे हैं. लेकिन इस वर्ष स्कूल ने उनके जन्मदिन के उपहार के

टी. रामामूर्ति

फर्नांडीस: सौ साल के युवा

रूप में एक हवाई टिकट और 100 गुलाब भेजे. कई पीढ़ियां देख चुके फर्नांडीस अपनी तंदुरुस्ती का राज बताते हैं, "मैं कभी चिंता नहीं करता. मैं चीजों को एकदम स्वाभाविक तौर पर लेता हूं." सही है, उन्हें 10+2 का इम्तहान जो नहीं देना पड़ा था.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोड़ी अनोखी मेल अनोखा

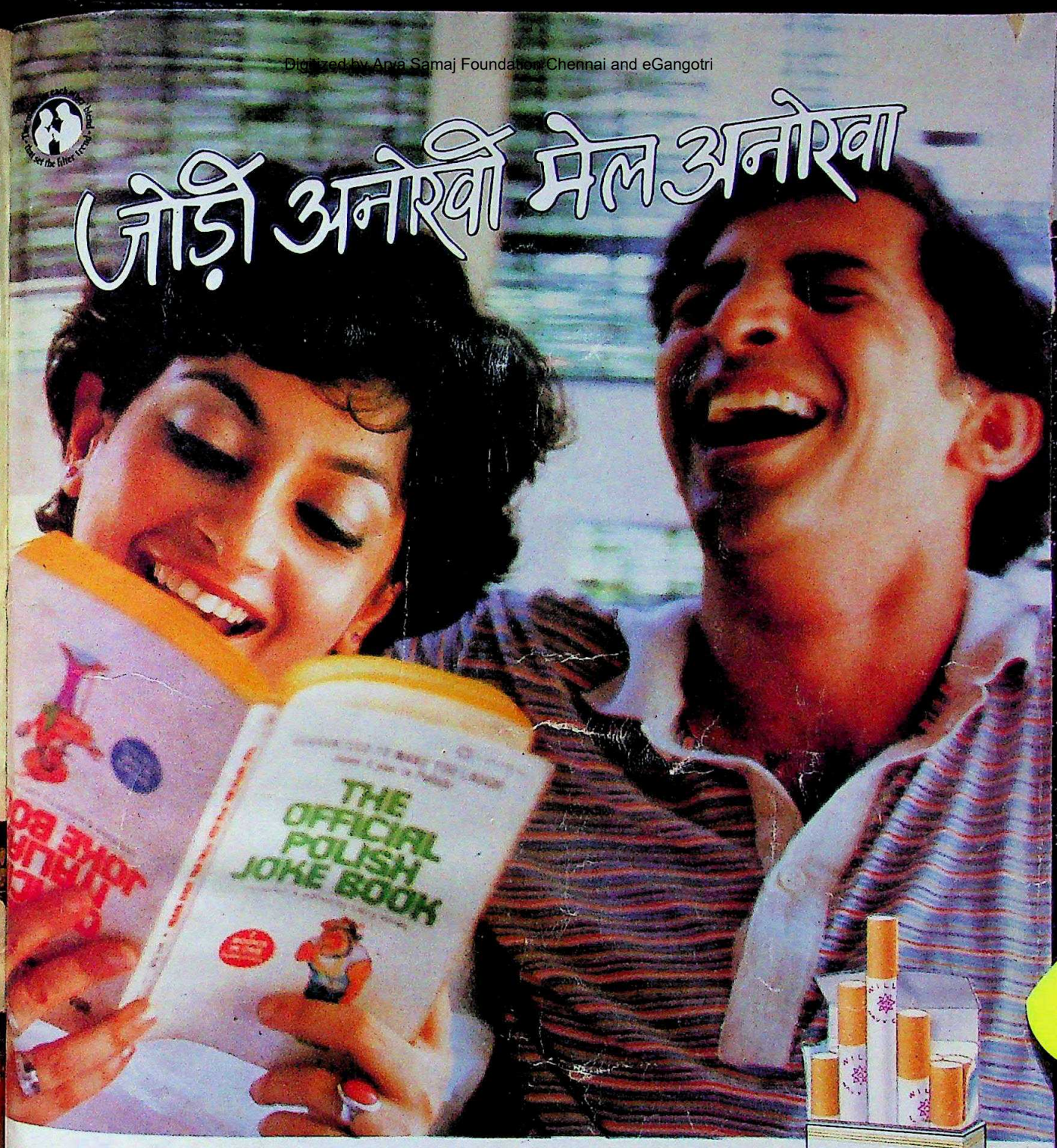

वर्षों पहले विल्स फ़िल्टर ने शुरू किया था सिगरेटों में फ़िल्टर का चलन। आज भी है यह सबसे बढ़िया। स्वाद में। तसल्ली में। हाथ से चुने वर्जीनिया तम्बाकू और शानदार फ़िल्टर के मेल का अनोखा संगम—विल्स फ़िल्टर। लाखों सिगरेट प्रेमियों ने इसे आज़माया...फिर हमेशा के लिए अपनाया।

HTA 3987

WILLS
FILTER

आई टी सी लिमिटेड
का अपना एक ब्राण्ड
भारत में निर्मित

फ़िल्टर और तम्बाकू का अनोखा मेल

वैधानिक चेतावनी:
सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है

STATUTORY WARNING
CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

REGISTRATION NO R.N. 45823/86
REGISTERED No. L.NW.FBD 46/87
D—(C) 14/86

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

एक छोटा-सा कारण
एक सुरक्षित स्कूटर लेने के लिए

बेहतर स्थिरता के लिए बेहतर संतुलन

तुरंत रुके फिसले नहीं

ख़तरनाक स्थितियों से निकाल ले जाने के लिए शक्तिशाली इंजन

आगे तथा पीछे दिशासूचक इंडिकेटर

LML vespa

बेहतर [illegible] बेहतर डिज़ाइन.

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai